उपनिषन्नामादिसूची ।

उपनिषन्नामानि	तत्संकेतनामानि	प्रथमांकः	द्वितीयांकः	तृतीयांकः
• १ अक्षमालोपनिषत्	अ. मा.	वाक्यात्मकः मंत्रात्मकश्च		
• २ अक्ष्युपनिषत्	अक्ष्युप. अक्ष्यु.	*वाक्यात्मकः *पद्यात्मकश्च		
• ३ अथर्वशिखोपनिषत्	अ.शिखो.,अ.शि.	वाक्यात्मकः		
० अथर्ववेदसंहिता	अथर्व.,अथर्व.सं.	कांडात्मकः		
• ४ अथर्वशिरउपनिषत् (शिवोप. रुद्रोप.)	अ. शिरः.	खंडात्मकः	वाक्यात्मकः मंत्रात्मकश्च	
• ५ अद्वयतारकोपनिषत्	अद्वयता.,अ.ता.	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च		
६ अद्वैतप्रकरणम् (मांडू.)	अद्वैत.	पद्यात्मकः		
• ७ अद्वैतोपनिषत्	अद्वैतो.	वाक्यात्मकः		
८ अद्वैतभावनोपनिषत्	अद्वैत.भा.	वाक्यात्मकः		
• ९ अध्यात्मोपनिषत्	अध्यात्मो.	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च		
१० अनुभवसारोपनिषत्	अनु. सा.	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च		
• ११ अन्नपूर्णोपनिषत्	अ. पू.	अध्यायात्मकः	पद्यात्मकः	
१२ अमनस्कोपनिषत्	अमन.	अध्यायात्मकः	पद्यात्मकः	
• १३ अमृतनादोपनिषत्	अमृतना.,अ.नादो.	पद्यात्मकः		
१४ अरुणोपनिषत्	अरुणो.	मंत्रात्मकः		
१५ अलातशान्तिप्र. (माण्डूक्योपनिषत्कारिकाः)	अ. शां.	पद्यात्मकः		
• १६–१ अवधूतोपनिषत्	१ अवधू.	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च		
१७–२ अवधूतोपनिषत्	२ अवधू.	पद्यात्मकः		

* गद्यं पद्यमिति प्राहुर्वाङ्मयं द्विविधं बुधैः । वर्णमात्राप्रभेदेन पद्यं बहुविधं स्मृतम् ॥ पद्यं चतुष्पदी, तच्च वृत्तं जातिरिति द्विधा । वृत्तमक्षरसङ्ख्यातं जातिर्मात्राकृता भवेत् ॥ वाक्यं स्याद्योग्यताकाङ्क्षासत्तियुक्तः पदोच्चयः । वाक्योच्चयो महावाक्यमित्थं वाक्यं द्विधा मतम् ॥ स्वार्थबोधसमाप्तानामङ्गाङ्गित्वव्यपेक्षया । वाक्यानामेकवाक्यत्वं पुनः सम्भूय जायते ॥ ॥ वह्निपुराणे— प्राप्यते ज्ञानकथनं परलोकसुभाषितम् । स्वर्गापवर्गसिद्ध्यर्थं भाषितं यत्सुशोभनम् ॥ वाक्यं मुनिवरैः शान्तैस्तद्विज्ञेयं सुभाषितम् ॥ रागद्वेषानृतक्रोधकामतृष्णानुसारि यत् ॥ वाक्यं निरयहेतुत्वात्तदभाषितमुच्यते ॥ संस्कृतेनापि किं तेन मृदुना ललितेन वा ॥ अविद्यारागवाक्येन संसारक्लेशहेतुना ॥ यच्छ्रुत्वा जायते पुण्यं रागादीनां च संक्षयः । निरुद्धमपि तद्वाक्यं विज्ञेयमतिशोभनम् ॥ [इति श. चिं. कोशः]

उपनिषन्नामानि	तत्संकेतनामानि	प्रथमांकः	द्वितीयांकः	तृतीयांकः
• १८ अव्यक्तोपनिषत्	अव्यक्तो.	वाक्यात्मकः		
१९ आगमप्रकरणम् (मांडूक्योपनिषत्कारिकाः)	आगम.	पद्यात्मकः		
• २० आचमनोपनिषत् (आचमनीयो.)	आचम.	वाक्यात्मकः		
• २१ आत्मपूजोपनिषत्	आ. पू.	वाक्यात्मकः		
• २२ आत्मप्रबोधोपनिषत् (आत्मबोधो.)	आत्मप्र.	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च		
• २३–१ आत्मोपनिषत्	१ आत्मोप.	वाक्यात्मकः		
२४–२ „	२ आत्मो.	पद्यात्मकः		
• २५ आथर्वणद्वितीयोपनिषत्	आथ. द्वि. आथर्व. द्वि.	वाक्यात्मकः मंत्रात्मकश्च		
० आपस्तम्बश्रौतसूत्रम्	आप. श्रौ.सू.			
२६ आयुर्वेदोपनिषत्	आयुर्वे.	पद्यात्मकः		
• २७ आरुणिकोपनिषत् (आरुणेय्युप.)	आरुणि.,आरु.	वाक्यात्मकः		
• २८ आर्षेयोपनिषत्	आर्षे.,आर्षेयो.	खण्डात्मकः	वाक्यात्मकः	
• २९ आश्रमोपनिषत्	आश्रमो.	वाक्यात्मकः		
• ३० इतिहासोपनिषत्	इतिहा.	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च		
• ३१ ईशावास्योपनिषत्	ईशावा.,ईशा.	मंत्रात्मकः		
३२ उपनिषत्स्तुतिः	[शिवरहस्यान्तर्गताऽध्याप्यलब्धा.		अध्या. ५४]	
• ३३ ऊर्ध्वपुण्ड्रोपनिषत्	ऊर्ध्वपु. ऊर्ध्वपुं,ऊ.पुं.	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च		
० ऋग्वेदसंहिता	ऋक्सं.,	अष्टकात्मकः	अध्यायात्मकः	वर्गात्मकः
अष्टकात्मिका	ऋ. अ.	„	„	„
मंडलात्मिका	ऋ.मं.	मण्डलात्मकश्च	सूक्तात्मकः	मंत्रात्मकः
० ऋग्वेदखिल.	ऋ.खि.श्री.सू.	मंत्रात्मकः		
• ३४ एकाक्षरोपनिषत्	एकाक्ष.ए.उ.	पद्यात्मकः		
• ३५–१ ऐतरेयोपनिषत्	१ ऐत.	अध्यायात्मकः	खण्डात्मकः	वाक्यात्मकः
३६–२ „ (आत्मषट्को.)	२ ऐत.	खण्डात्मकः	वाक्यात्मकः	
३७–३ „	३ ऐत.	अध्यायात्मकः	खंडात्मकः	वाक्यात्मकः
• ३८ कठरुद्रोपनिषत् (कण्ठो.)	कठरु.	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च		

उपनिषन्नामानि	तत्संकेतनामानि	प्रथमांकः	द्वितीयांकः	तृतीयांकः
३९ कठोपनिषत्	कठो.	वाक्यात्मकः	पद्यात्मकः	
४० कठश्रुत्युपनिषत्	कठश्रु.	वाक्यात्मकः		
४१ कलिसन्तरणोपनिषत् (हरिनामोप.)	कलिसं.	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च		
४२ कात्यायनोपनिषत्	कात्याय.	वाक्यात्मकः		
४३ कामराजकीलितो. द्धारोपनिषत्	कामरा. कामराज.	वाक्यात्मकः		
४४ कालाग्निरुद्रोपनिषत्	कालाग्नि.,का.रु.	वाक्यात्मकः		
४५ कालिकोपनिषत्	कालिको.	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च		
४६ कालीमेधादीक्षितोप.	का.मे.दी.,का.मे.	वाक्यात्मकः		
४७ कुण्डिकोपनिषत्	कुण्डि. कुंडि. कुंडिको.	पद्यात्मकः वाक्यात्मकश्च		
४८ कृष्णोपनिषत्	कृष्णो.	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च		
४९ केनोपनिषत्	केनो.	खण्डात्मकः	पद्यात्मकः वाक्यात्मकश्च	
५० कैवल्योपनिषत्	कैव.	खण्डात्मकः	पद्यात्मकः	
५१ कौलोपनिषत्	कौलो.,कौलोप.	वाक्यात्मकः		
५२ कौषीतकिब्राह्मणोप.	कौ.उ.,कौ.त.	अध्यायात्मकः	वाक्यात्मकः	
५३ क्षुरिकोपनिषत्	क्षुरिको.	पद्यात्मकः		
५४ गणपत्यथर्वशीर्षोपनिषत्	गणप.	वाक्यात्मकः		
५५ गणेशपूर्वतापिन्युपनिष. (वरदपूर्वतापिन्यु.)	ग. पू.	उपनिषदात्मकः	वाक्यात्मकः	
५६ गणेशोत्तरतापिन्यु. (वरदोत्तरतापिन्यु.)	ग. शो.	उपनिषदात्मकः	वाक्यात्मकः	
५७ गर्भोपनिषत्	गर्भो.	वाक्यात्मकः		
५८ गान्धर्वोपनिषत्	गान्धर्वो.	वाक्यात्मकः		
५९ गायत्र्युपनिषत्	गायत्र्यु.	वाक्यात्मकः		
६० गायत्रीरहस्योपनिषत्	गायत्रीर.	वाक्यात्मकः		
६१ गारुडोपनिषत्	गारुडो.	पद्यात्मकः मंत्रात्मकश्च		
६२ गुह्यकाल्युपनिषत्	गुह्यका.	पद्यात्मकः		

	उपनिषन्नामानि	ससंकेतनामानि	प्रथमांकः	द्वितीयांकः	तृतीयांकः
• ६३	गुह्यषोढान्यासोपनिषत्	गुह्यषो., गु.षो.	वाक्यात्मकः		
• ६४	गोपालपूर्वतापिन्युपनिषत्	गो. पू.	गद्यपद्यात्मकः		
• ६५	गोपालोत्तरतापिन्यु.	गोपालो.	खण्डात्मकः	गद्यपद्यात्मकः	
• ६६	गोपीचन्दनोपनिषत्	गोपीचं.	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च		
• ६७	चतुर्वेदोपनिषत्	चतुर्वे.	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च		
• ६८	चाक्षुषोपनिषत्	चाक्षुषो.	मंत्रात्मकः		
	(चक्षुरुप., चक्षूरोगोप., नेत्रोपनिषदिति नामान्तराणि.)				
६९	चित्त्युपनि.	चित्त्यु.	खण्डात्मकः	वाक्यात्मकः	
• ७०	छागलेयोपनि.	छाग., छागले.	खण्डात्मकः	वाक्यात्मकः	
• ७१	छान्दोग्योपनिषत्	छांदो., छान्दो., छां. उ., छां.	अध्यायात्मकः	खण्डात्मकः	वाक्यात्मकः
• ७२	जाबालदर्शनोपनिषत्	जा. द.	खण्डात्मकः	पद्यात्मकः	
• ७३	जाबालोपनिषत्	जाबालो. जाबा.,	वाक्यात्मकः		
• ७४	जाबाल्युपनिषत्	जाबाल्यु.	वाक्यात्मकः		
• ७५	तारसारोपनिषत्	तारसा.	गद्यपद्यात्मकः मंत्रात्मकश्च		
७६	तारोपानिषत्	तारोप.	वाक्यात्मकः		
• ७७	तुरीयातीतोपनिषत्	तुरीया.	वाक्यात्मकः		
• ७८	तुरीयोपनिषत्	तुरीयो.	वाक्यात्मकः		
• ७९	तुलस्युपनिषत्	तुलस्यु.	गद्यपद्यात्मकश्च		
०	तैत्तिरीयमारण्यकं	तै. आ.	मंत्रात्मकः		
• ८०	तेजोबिन्दूपनिषत्	ते. बिं.	अध्यायात्मकः	पद्यात्मकः	
०	तैत्तिरीयसंहिता	तै. सं.			
• ८१	तैत्तिरीयोपनिषत्	तैत्ति.	वाक्यात्मकः	अनुवाकात्मकः मंत्रात्मकश्च	वाक्यात्मकः
• ८२	त्रिपाद्विभूतिमहा-नारायणोपनिषत्	त्रि. म. ना., त्रि. म.	अध्यायात्मकः	वाक्यात्मकः	
• ८३	त्रिपुरातापिन्युपनि.	त्रि. ता.	उपनिषदात्मकः	मंत्रात्मकः वाक्यात्मकश्च	
• ८४	त्रिपुरोपनिषत्	त्रिपुरो.	मंत्रात्मकः		

	उपनिषन्नामानि	ह्रस्वसंकेतनामानि	प्रथमांकः	द्वितीयांकः	तृतीयांकः
८५	त्रिपुरामहोपनिषत्	त्रि.म.,त्रि,महो.,	मंत्रात्मकः		
• ८६	त्रिशिखिब्राह्मणोपनि.	त्रि. ब्रा.	खंडात्मकः	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च	
८७	त्रिसुपर्णोपनिषत्	त्रिसुप.	मंत्रात्मकः		
• ८८	दक्षिणामूर्त्युपनिषत्	द. मू.	वाक्यात्मकः		
• ८९	दत्तात्रेयोपनिषत्	दत्तात्रे.	खण्डात्मकः	वाक्यात्मकः	
९०	दत्तोपनिषत्	(अशुद्धमत्रुटा)			
९१	दुर्वासोपनिषत्	दुर्वासो.	पद्यात्मकः		
• ९२	१देव्युपनिषत्	देव्यु.	मंत्रात्मकः पद्यात्मकश्च		
९३	२ ,,	[शिवरहस्यान्तर्गताऽप्यप्राप्यलब्धा. अ. ११]			
• ९४	ध्रुवोपनिषत्	ध्रुवो.	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च		
• ९५	ध्यानबिन्दूपनिषत्	ध्या. बिं.	पद्यात्मकः		
• ९६	नादबिन्दूपनिषत्	ना. बिं.	पद्यात्मकः		
• ९७	नारदपरिव्राजकोपनि.	ना. प.	उपदेशात्मकः	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च	
• ९८	नारदोपनिषत्	नारदो.	वाक्यात्मकः		
• ९९	नारायणपूर्वतापिन्यु.	ना. पू. ता.	खण्डात्मकः	वाक्यात्मकः	
• १००	नारायणोत्तरतापिन्यु.	ना. उ. ता.	खण्डात्मकः	वाक्यात्मकः	
• १०१	नारायणोपनिषत् (नारायणाथर्वशीर्षोप.)	नारा.	वाक्यात्मकः		
• १०२	निरालम्बोपनिषत्	निरा.,निरा.उ. निरा. लं.	वाक्यात्मकः		
• १०३	निरुक्तोपनिषत्	निरुक्तो.	अध्यायात्मकः	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च	
• १०४	निर्वाणोपनिषत्	निर्वाणो.	वाक्यात्मकः		
• १०५	नीलरुद्रोपनिषत्	नीलरु.	खण्डात्मकः	मंत्रात्मकः	
• १०६	नृसिंहपूर्वतापिन्युपनि.	नृ. पू.	उपनिषदात्मकः	वाक्यात्मकः	
• १०७	नृसिंहषट्चक्रोपनिषत्	नृ. षट्च.	वाक्यात्मकः		
• १०८	नृसिंहोत्तरतापिन्युपनि.	नृसिंहो.	खण्डात्मकः	वाक्यात्मकः	
• १०९	पञ्चब्रह्मोपनिषत्	पञ्चब्र., पं, ब्र.	वाक्यात्मकः पद्यात्मकः		

उपनिषन्नामानि	ह्रस्वसंकेतनामानि	प्रथमांकः	द्वितीयांकः	तृतीयांकः
११० परब्रह्मोपनिषत्	परब्र.	वाक्यपद्यात्मकः		
१११ परमहंसपरिव्राजकोप.	प. हं. प.	वाक्यात्मकः		
११२ परमहंसोपनिषत्	प.हंसो.,प.हं.	वाक्यात्मकः		
११३ पारमात्मिकोपनि.	पारमा.	अनुवाकात्मकः	मंत्रात्मकः	
० पारस्करगृह्यसूत्रम्	पा. गृ. सू.			
११४ पारायणोपनिषत्	पारायणो.	मंत्रात्मकः		
११५ पाशुपतब्रह्मोपनिषत्	पा. ब्र.	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च		
११६ पिण्डोपनिषत्	पिण्डो.	पद्यात्मकः		
११७ पीताम्बरोपनिषत्	पीतांबरो.	वाक्यात्मकः		
११८ पुरुषसूक्तोपनिषत्	पु. सू.	मंत्रात्मकः		
११९ पैङ्गलोपनिषत्	पैङ्गलो.	अध्यायात्मकः	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च	
१२०–१ प्रणवोपनि.	१ प्रणवो.	पद्यात्मकः		
१२१–२ ,,	२ प्रणवो.	वाक्यात्मकः		
१२२ प्रश्नोपनिषत्	प्रश्नो.	प्रश्नात्मकः		
१२३ प्राणाग्निहोत्रोपनिषत्	प्राणाग्नि., प्रा. हो.	खण्डात्मकः	मंत्रात्मकः वाक्यात्मकश्च	
१२४ बटुकोपनिषत्. (वटुकोप.)	बटुको.	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च		
१२५ बह्वृचोपनि.	बह्वृचो.	वाक्यात्मकः		
१२६ बाष्कलमन्त्रोपनि.	बा. मं.	वाक्यात्मकः		
१२७ १ बिल्वोपनि.	१ बिल्वो.	पद्यात्मकः		
१२८ २ ,,	२ बिल्वो.	वाक्यात्मकः पद्यात्मकः		
१२९ बृहज्जाबालोपनि.	बृ. जा., बृहज्जा.	ब्राह्मणात्मकः	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च	
१३० बृहदारण्यकोपनि.	बृ.उ., बृह.	अध्यायात्मकः	ब्राह्मणात्मकः	वाक्यात्मकः
१३१ ब्रह्मबिन्दूपनिषत् (अमृतबिन्दूप.)	ब्र. बिं.	पद्यात्मकः		
१३२ ब्रह्मविद्योपनिषत्	ब्रह्मवि.,ब्र.वि.	पद्यात्मकः		
१३३ ब्रह्मोपनि.	ब्रह्मोप., ब्रह्मो.	वाक्यपद्यात्मकः		

उपनिषन्नामानि	तत्संकेतनामानि	प्रथमांकः	द्वितीयांकः	तृतीयांकः
१३४ भगवद्गीतोपनिषत्	भ. गी.	अध्यायात्मकः	पद्यात्मकः	
१३५ भवसन्तरणोपनि.	भवसं.	अध्यायात्मकः	पद्यात्मकः	
• १३६ भस्मजाबालोपनि.	भ.जा., भस्मजा.	अध्यायात्मकः	वाक्यात्मकः	
• १३७ भावनोपनि.(कापिलोप.)	भावनो.	वाक्यात्मकः		
• १३८ भिक्षुकोपनिषत्	भिक्षुको.	वाक्यात्मकः		
• १३९ मठाम्नायोपनिषत्	मठाम्ना.	वाक्यात्मकः		
• महावाक्यरत्नावलिः	म. वा. र.	प्रकरणात्मकः		
• १४० मण्डलब्राह्मणोपनि.	मं. ब्रा.	ब्राह्मणात्मकः	वाक्यात्मकः	
• १४१ मंत्रिकोपनिषत् (चूलिकोप.)	मंत्रिको.	पद्यात्मकः		
१४२ मल्लायुपनि.	(अशुद्धप्रचुरा कोशासंगृहीतवाक्या)			
• १४३ महानारायणोपनि. (बृहन्नारायणो.—उत्तरनारायणो.)	महाना., म.ना.	खण्डात्मकः	मंत्रात्मकः	
• १४४ महावाक्योपनि.	महावा.	वाक्यात्मकः		
• १४५ महोपनिषत्	महो.	अध्यायात्मकः	पद्यात्मकः	
• १४६ माण्डूक्योपनिषत्	माण्डू.	वाक्यात्मकः		
• १४७ मुक्तिकोपनिषत्	मुक्तिको., मुक्ति.	अध्यायात्मकः	वाक्यपद्यात्मकः	
• १४८ मुण्डकोपनि.	मुण्डको.,मुण्ड.	मुण्डकात्मकः	खडात्मकः	मंत्रात्मकः
• १४९ मुद्गलोपनिषत्	मुद्गलो.	खण्डात्मकः	वाक्यात्मकः मंत्रात्मकः	
• १५० मृत्युलांगूलोपनिषत्	मृत्युलां.	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च		
• १५१ मैत्रायण्युपनिषत्	मैत्रा.	प्रपाठात्मकः	वाक्यात्मकः	
• १५२ मैत्रेय्युपनिषत्	मैत्रे., मैत्रे.उ.	अध्यायात्मकः	गद्य-पद्यात्मकः	
• १५३ यज्ञोपवीतोपनिषत्	यज्ञोप.	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च		
• १५४ याज्ञवल्क्योपनिषत्	याज्ञव.	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च		
• १५५ योगकुण्डल्युपनिषत्	योगकुं.	अध्यायात्मकः	पद्यात्मकः	
• १५६ योगचूडामण्युपनिषत्	यो. चू.	पद्यात्मकः वाक्यात्मकश्च		

उपनिषन्नामानि	तत्संकेतनामानि	प्रथमांकः	द्वितीयांकः	तृतीयांकः
•१९७-१ योगतत्त्वोपनिषत्	१ यो. त.	पद्यात्मकः		
१९८-२ ,,	२ योगत.	पद्यात्मकः		
•१९९ योगराजोपनिषत्	योगरा.	पद्यात्मकः		
•१६० योगशिखोपनिषत्	यो. शि.	अध्यायात्मकः	पद्यात्मकः	
१६१ योगोपनिषत्	योगो.	पद्यात्मकः		
•१६२ राजश्यामला-रहस्योपनिषत्	रा. श्या. र.	वाक्यात्मकः		
१६३ राधिकोपनिषत्	राधिको.	वाक्यात्मकः		
•१६४ राधोपनिषत्	राधो.	प्रपाठात्मकः	वाक्यात्मकः	
•१६५ रामपूर्वतापिन्युपनि.	रा.पू.,रामपू.	उपनिषदात्मकः	पद्यात्मकः	
•१६६ रामरहस्योपनिषत्	रामर.	अध्यायात्मकः	पद्यात्मकः वाक्यात्मकः	
•१६७ रामोत्तरतापिन्युपनि.	रामो., रामोत्त.	खण्डात्मकः	मंत्रात्मकः वाक्यात्मकश्च	
•१६८ रुद्रहृदयोपनिषत्	रुद्रहृ.	पद्यात्मकः		
•१६९ रुद्राक्षजाबालोपनि.	रु. जा.	पद्यात्मकः वाक्यात्मकश्च		
•१७० रुद्रोपनिषत्	रुद्रो.,रुद्रोप.	वाक्यात्मकः		
१७१ लक्ष्म्युनिषत्	लक्ष्म्यु.	वाक्यात्मकः		
•१७२ लांगूलोपनिषत्	लांगूलो.	मंत्रात्मकः		
•१७३ लिङ्गोपनिषत्	लिङ्गो.	वाक्यात्मकः		
० वाजसनेयीसंहिता (यजुर्वे.)	वा. सं.	अध्यायात्मकः	मंत्रात्मकः (कंडिकात्मकः)	
•१७४ वज्रपञ्जरोपनिषत्	व. पं.	वाक्यात्मकः		
•१७५ वज्रसूचिकोप.	व.सू., वज्रसू.	वाक्यात्मकः		
•१७६ वनदुर्गोपनिषत्	वनदु.	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च		
•१७७ वराहोपनिषत्	वराहो.	अध्यायात्मकः	पद्यात्मकः	
•१७८ वासुदेवोपनिषत्	वासुदे., वासु.	वाक्यात्मकः		
•१७९ विश्रामोपनिषत्	विश्रामो.	पद्यात्मकः		
१८० विष्णुहृदयोपनिषत्	विष्णुहृ.	खण्डात्मकः	मन्त्रात्मकः	
१८१ वैतथ्यप्रक. (मांडू.)	वैतथ्य.	पद्यात्मकः		

उपनिषन्नामानि	संकेतनामानि	प्रथमांकः	द्वितीयांकः	तृतीयांकः
•१८२ शरमोप.	शरमोपनिषन्	पद्यात्मकः वाक्यात्मकश्च		
•१८३ शाट्यायनीयोपनिषत्	शाट्याय.	पद्यात्मकः वाक्यात्मकश्च		
•१८४ शाण्डिल्योपनिषत्	शांडि., शाण्डि., शाण्डिल्यो., शां.	अध्यायात्मकः	खण्डात्मकः	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च
•१८५ शारीरकोपनिषत्	शारीर.	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च		
•१८६—१ शिवसङ्कल्पोपनिषत्	१ शिवसं.	मन्त्रात्मकः		
•१८७—२ शिवसङ्कल्पोपनिषत्	२ शिवसं.	मन्त्रात्मकः		
•१८८ शिवोपनिषत्	शिवो.	अध्यायात्मकः	पद्यात्मकः	
•१८९ शुकरहस्योपनिषत्	शुकर., शु. र.	खण्डात्मकः	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च	
•१९० शौनकोपनिषत्	शौनको.	खण्डात्मकः	वाक्यात्मकश्च	
•१९१ श्यामोपनिषत्	श्यामोप.	वाक्यात्मकः		
•१९२ श्रीचक्रोपनिषत् (श्रीमद्भगवद्गीतोपनि.)	श्रीचक्रो.	मंत्रात्मकः	वाक्यात्मकश्च	
•१९३ श्रीविद्यातारकोपनि.	श्रीवि. ता.	पादात्मकः	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च	
१९४ श्रीसूक्तम्	श्रीसू.	मंत्रात्मकः		
•१९५ श्वेताश्वोपनिषत्	श्वेता., श्वेताश्व.	अध्यायात्मकः	पद्यात्मकः मंत्रात्मकः	
•१९६ षोढोपनिषत्	षोढो.	वाक्यात्मकः		
•१९७ सङ्कर्षणोपनिषत्	सङ्कर्ष., संक.	वाक्यात्मकः		
•१९८ सदानन्दोपनिषत्	सदानं.	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च		
१९९ संध्योपनिषत्	सन्ध्यो.	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च		
•२००—१ सन्न्यासोपनिषत्	१ सं. सो.,	अध्यायात्मकः		
•२०१—२ सन्न्यासोपनिषत्	२ सन्न्यासो.	वाक्यात्मकः पद्यात्मकः		
•२०२ सरस्वतीरहस्योप.	सरस्व.	मन्त्रात्मकः पद्यात्मकश्च		

उपनिषन्नामानि	तत्संकेतनामानि	प्रथमांकः	द्वितीयांकः	तृतीयांकः
• २०३ सर्वसारोप.	सर्वसारो.,	वाक्यात्मकः		
(सर्वोपनि.)	सर्वसा.			
२०४ सहवै. (सहव.उ.)	सहवै.	वाक्यात्मकः मंत्रात्मकश्च		
२०५ संहितोपनिषत्	संहितो.	वाक्यात्मकः मंत्रात्मकश्च		
• २०६ सामरहस्योपनिषत्	सामर.	वाक्यात्मकः		
० सामवेदः	सामवे.			
•२०७ सावित्र्युपनिषत्	सावित्र्यु.	वाक्यात्मकः		
२०८ सिद्धान्तविट्ठलोपनिषत्	सि.वि.	वाक्यात्मकः		
• २०९ सिद्धान्तशिखोपनिषत्	सि. शि.	पद्यात्मकः मन्त्रात्मकश्च		
• २१० सिद्धान्तसारोपनिषत्	सि. सा.	आवरणात्मकः	वाक्यात्मकः	
• २११ सीतोपनिषत्	सीतो.,सीतोप.	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च		
• २१२ सुदर्शनोपनिषत्	सुदर्श.	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च		
• २१३ सुबालोपनिषत्	सुबालो.	खण्डात्मकः	वाक्यात्मकः	
• २१४ सुमुख्युपनिषत्	सुमुख्यु.	गद्यात्मकः		
• २१५ सूर्यतापिन्युपनिषत्	सूर्यता.	पटलात्मकः	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च	
• २१६ सूर्योपनिषत्	सूर्यो.	वाक्यात्मकः		
• २१७ सौभाग्यलक्ष्म्युपनि.	सौभाग्य. सौ. ल.	वाक्यात्मकः पद्यात्मकश्च		
• २१८ स्कन्दोपनिषत्	स्कन्दो.	”		
• २१९ स्वसंवेद्योपनिषत्	स्वसंवे.	वाक्यात्मकः		
• २२० हयग्रीवोपनिषत्	हयग्री.	वाक्यात्मकः		
• २२१ हंसषोढोपनिषत्	हं.षोढो.,हंसषो.	मन्त्रात्मकः		
•२२२ हंसोपनिषत्	हंसो.	वाक्यात्मकः		
० हिरण्यकेशीगृह्यसूत्रम्	हि. गृ. सू.			
• २२३ हेरम्बोपनिषत्	हेरम्बो.	गद्यपद्यात्मकः		

॥ इत्युपनिषदः ॥

ॐ

ॐकारोऽयमजरोऽमरोऽभयोऽमृतः ।

ॐकारेण सर्वा वाक् सन्तृण्णा । ॐकार एवेदं सर्वम् ।

उपनिषद्वाक्यमहाकोशः

ॐ

ॐ ॐ ॐ इति त्रिरुक्त्वा
  चतुर्थः शान्त आत्माप्लुत... — अ.शिखो. १

ॐ ॐ नमो भगवते नारायणाय — त्रि.म. ना. ७।९

ॐ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय — त्रि.म. ना. ७।९

ॐ ॐ वाचि प्रतिष्ठा — बह्वृचो. २

ॐ अँ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ
  ए ऐ ओ औ अं अः — त्रि.म.ना.७।१०

ॐ अघोराय पुरुषाय पुरुषरूपाय
  वासुदेवाय नमो नमः — विष्णुहृ.२।२४

ॐ अकार मृत्युञ्जय सर्वव्यापक
  प्रथमेऽक्षे प्रतितिष्ठ — अ. मा. ४

ॐ अदामो ३ पिबा ३ मों देवो
  वरुणः सविता २ — छां.उ.१।१२।५

ॐ अनिरुद्धाय पुरुषाय पुरुषरूपाय
  वासुदेवाय नमो नमः — विष्णुहृ. २।८

ॐ अपानात्मने ॐ तत्सद्भूर्भुवः सुवः — गोपालो. ३।४

ॐ अहं वृक्षस्य रेरिव — शांतिपाठः

ॐ आकाराकर्षणात्मक सर्वगत
  द्वितीयेऽक्षे प्रतितिष्ठ — अ. मा. ४

ॐ आद्यो नम उच्चार्य ततो भगवते पदं — वृ. मू. २
  १

ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म
  भूर्भुवः सुवरोम् — महाना. ११।७

ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म
  भूर्भुवः स्वरों [मैत्रा.६।३५+ — त्रि.म.ना.७।११

ॐ आपोऽमृतमर्त्यस्य... जन्यते
  पुरुषोत्तमात् — कृ. पु. सि. ३

ॐ आप्यायन्तु ममाङ्गानि वाक्प्राणः — शांतिपाठः

ॐ इकार पुष्टिद क्षोभकर तृतीयेऽक्षे
  प्रतितिष्ठ — अ. मा. ४

ॐ इति तिस्रो मात्राः, एताभिः
  सर्वमिदमोतं प्रोतं चास्मिन् — मैत्रा. ६।३

ॐ इति प्रतिपद्यन्ते — शौनको. १।५

ॐ इतिप्रयुक्तआत्मज्योतिःसकृदावर्तते — अ. शिखो. १

ॐ इति ब्रह्म [तैत्ति. १।८।१+ — ना. प. ८।२

ॐ इति ब्रह्म भवति — तारसा. १।४

ॐ इति ब्राह्मणः प्रवक्ष्यन्नाह ब्रह्मोपा-
  प्नवानीति — तैत्ति. १।८।१

ॐ इति ब्रह्मा प्रसौति — तैत्ति. १।८।१

ॐ इति ब्रह्मेति व्यष्टिसमष्टिप्रकारेण — ना. प. ८।१

ॐ इति शंसंति — छां.उ.१।१।९

ॐ इति सत्यम् १ऐतरे. ३।६।४
ॐ इति संहरन्ननुसन्दध्यात् नृसिंहो. ४।१
ॐ इति सामानि गायन्ति तैत्ति. १।८।१
ॐ इति होवाच व्यज्ञासिष्टा इति [२, ३ बृ. उ. ५।२।१, + ६।२।१
ॐ इति होवाच[बृ.उ.३।९।१,१,१ +६।२।१
ॐ इति ह्युद्गायति तस्योपव्याख्यानं छां.उ.१।१।१ +१।४।१
ॐ इति होवानुजानाति नृसिंहो. ८।९
ॐ इति होव स्वरन्नेति छां.उ.१।५।१,३
ॐ इतीदं सर्वम् तैत्ति. १।८।१
ॐ इत्यक्षरम् सन्ध्यो. २०
ॐ इत्यग्निहोत्रमनुजानाति तैत्ति. १।८।१
ॐ इत्यग्ने व्याहरेत् अ. ना. २।३
ॐ इत्यध्वर्युः प्रतिगरं प्रतिगृणाति तैत्ति. १।८।१
ॐ इत्यनुजानीध्वं भूतेनमिति नृसिंहो. ५।१
ॐ इत्यनेनैव उपासीताजस्रं मैत्रा. ६।४
ॐ इत्यनेनोद्धृत्यानामयेऽग्नौ जुहोति मैत्रा. ६।२६
ॐ इत्यनेनोर्ध्वमुत्क्रान्तः मैत्रा. ६।२२
ॐ इत्यभिनिधापयन्ति शौनको. १।९
ॐ इत्यभ्याददते शौनको. १।५
ॐ इत्यस्याददते शौनको. १।५
ॐ इत्यात्मानं युञ्जीत महाना. १७।१३
ॐ इत्याश्रावयति छां. उ.१।१।९
ॐ इत्युद्गायति[छां.उ.१।१।१+१।१।९ +१।४।१
ॐ इत्येकाक्षरमन्तःप्रणवं विद्धि ना. प. ८।२
ॐ इत्येकाक्षरं ब्रह्म [ध्या.बिं. ९+ ब्रह्मवि.२+महाना. ११।९+सूर्यो.९ अमृ. २०+ तारसा. २।१ अ. ना. २१ +१प्रणवो+२ भ.गी.८।१३
ॐ इत्येकाक्षरमात्मस्वरूपं तारसा. १।३
ॐ इत्येकाक्षरं परं ब्रह्म तदेवोपासितव्यं तारसा. २।१
ॐ इत्येकाक्षरं ब्रह्म ध्येयं ध्या. बिं.९
ॐ इत्येकेन (एतेन) रेचयेत् अ. ना.२१
ॐ इत्येतदक्षरमादौ प्रयुक्तं ध्यानं ध्यायितव्यं अ.शिखो.१
ॐ इत्येतदक्षरमिदं सर्वं, तस्योपव्याख्यानं भूतं भव्यं भविष्यदिति नृ.पू.२।२+४।२+ माण्डू. १+ नृसिंहो. १।२
ॐ इत्येतदक्षरमुद्गीथमुपासीत छां.उ.१।१।१ +१।४।१
ॐ इत्येतदक्षरमुद्गीथः छां. उ.१।१।५
ॐ इत्येतदक्षरमुपासीत छां. उ. १।४।१
ॐ इत्येतदक्षरस्य चैतत् मैत्रा. ६।४
ॐ इत्येतदक्षरं परं ब्रह्म, अस्य पादाश्चत्वारः अ. शिखो. १
ॐ इत्येतदक्षरं परं ब्रह्म तदेवोपासितव्यं तारसा. २।१
ॐ इत्येतदनुकृति ह स्म वा अप्यो श्रावय तैत्ति. १।८।१
ॐ इत्येतदनुकृति ह स्म... आश्रावयन्ति (भा.) तैत्ति. १।८।१
ॐ इत्येतद्व्याहरेत् नारा. ३
ॐ इत्येतेन (एकेन) रेचयेत् अ. ना. २१
ॐ इत्येव तदा ह्येषा एव समृद्धिः छां. उ. १।१।८
ॐ इत्येव यदुद्भूतं ज्ञानं ज्ञेयात्मकं शिवम् । असंस्पृष्टविकल्पांशं प्राणस्पन्दो निरुच्यते शाण्डि. १।३४
ॐ इत्येवं ध्यायथ आत्मानं, स्वस्ति वः मुण्ड. २।२।६
ॐ इत्येवं ध्यायंस्तथाऽऽत्मानंयुञ्जीत मैत्रा. ६।३
ॐ ईङ्कार वाक्प्रसादकर निर्मल चतुर्थेऽक्षे प्रतितिष्ठ अ. मा. ४
ॐ ईशानाय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः विष्णुहृ.२।२६
ॐ ई ओं नमो भगवते श्रीमहागरुडाय ... गारुडो. १०
ॐ ईसञ्चरतिसञ्चरति...वज्रेण स्वाहा गारुडो. १२
ॐ उशन् ह वै वाजश्रवसः सर्ववेदसं ददौ कठो. १।१
ॐ उङ्कार सर्वबलप्रद सारतर पञ्चमेऽक्षे प्रतितिष्ठ अ. मा. ४
ॐ उदानात्मने ॐतत्सद्भूर्भुवः सुवः गोपालो.३।८
ॐ ऊङ्कारोच्चाटनकर दुस्सह षष्ठेऽक्षे प्रतितिष्ठ अ. मा. ४
ॐ ऋङ्कार सङ्क्षोभकर चञ्चल सप्तमेऽक्षे प्रतितिष्ठ अ. मा. ४
ॐ ॠङ्कार सम्मोहनकरोज्ज्वलाष्टमेक्षे प्रतितिष्ठ अ. मा. ४

ॐ लङ्कार विद्वेषणकर मोहक नवमेऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४
ॐ लृङ्कारमोहकरदशमेऽक्षेप्रतितिष्ठ	अ. मा. ४
ॐ एङ्कार सर्ववश्यकर शुद्धसत्त्वैकादशेऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४
ॐ ऐङ्कार शुद्धसात्त्विक पुरुषवश्यकर द्वादशेऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४
ॐ ऐं ह्रीं श्रीं आनन्देश्वराय विद्महे सुधादेव्यै...प्रचोदयात्,तन्नो अर्धनारीश्वरः प्रचोदयात्	वनदु. १४६
ॐ ओङ्काराखिलवाक्य नित्यशुद्ध त्रयोदशेऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४
ॐ औङ्कार सर्ववाङ्मय वश्यकर चतुर्दशेऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४
ॐ अंङ्कार गजादिवश्यकर मोहन पञ्चदशेऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४
ॐ अःकार मृत्युनाशनकर रौद्र षोडशेऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४
ॐ कङ्कार सर्वविषहर कल्याणद सप्तदशेऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४
ॐकार एवेदं सर्वं	छां.उ.२।२४।४
ॐकारध्वनिनादेन	ध्या. बिं. २३
ॐकारप्रभवं सर्वं	ध्या. बिं. १६
ॐकारमात्मानमुपविदेश	नृसिंहो. ९।१
ॐकारप्रभवा देवाः	ध्या. बिं. १६
ॐकारप्रभवाः स्वराः	ध्या. बिं. १६
ॐकारप्लवेन...पारं तीर्त्वा	मैत्रा.६।२४
ॐकारप्लवेनान्तर्हृदयाकाशस्य पारं	मैत्रा. ६।२८
ॐकारस्तु तथा योज्यः [ब्र.वि.१२+	प्रणवो. १२
ॐकारस्त्रिविधो विचित्रकरणैः प्राणश्च वायोर्जयः...	अमन.२।१०७
ॐकारस्योत्पत्तिं विप्रो न जानाति, तत्पुनरुपनयनं	२ प्रणवो. १४
ॐकारस्वरभूषितं	पञ्चब्र. १४
ॐकारं तत्र चिन्तयेत्	१ यो.शि.१।७१
ॐकारं प्रणवात्मानं तन्मेमनःशिव...	२ शिवसं. २१
ॐकारं रथमारुह्य	अमृ. बिं. २
ॐकारं सर्वेश्वरं द्वादशान्ते	नृसिंहो. ६
ॐकारात्सावित्री	बटुको. २७
ॐकाराद्व्याहृतिरभवत्	गायत्रीर. १
ॐकारान्तरालिकं मनुमावर्तयेत्	गो. पू. ३।१०
ॐकारेण सर्वा वाक् सन्तृण्णा	छां.उ. २।२३।४
ॐकारेणममात्मानं परमं ब्रह्म नृसिंहमन्विष्य ...	नृसिंहो. ७।१
ॐकारो परे ब्रह्मणि पर्यवसितः	नृसिंहो. ६।३
ॐकारो बाणः शक्तिरेव पीठं	लिङ्गोप. २
ॐकारोऽयमजरोऽमरोऽभयोऽमृतः	गोपालो. २।१४
ॐकारो यूपः	प्रा. हो. ४।३
ॐकारो वेदानामुत्तरोपनिषदं व्याख्यास्यामः	२ प्रणवो. १४
ॐ काली कपालिनी	कालिको. १
ॐ कुमारीपदत्रिहारबाणोग्रमूर्तये ... स्वाहा	लांगूलो. ७
ॐ केशवाय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः	विष्णुहृ. २।१०
ॐ क्रतो स्मर कृतं स्मर[ईशा.१७+	बृ. उ. ५।१५।१
ॐ क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजन ...स्वाहा	त्रि.म.ना.७।१०
ॐ क्षङ्कार परात्पर तत्त्वज्ञापक... शिखामणौ...	अ. मा. ४
ॐ खङ्कार सर्वक्षोभकर व्यापकाष्टादशेऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४
ॐ खं ब्रह्म, खं पुराणं वायुरंखमिति	बृ. उ. ५।१।१
ॐ खेचराय नमः...सत्त्वाय नमः	अक्ष्यु. १
ॐ गङ्कार सर्वविघ्नशमन महत्तरैकोनविंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४
ॐ गं गणपतये नमः	गणप. ७
ॐ गोविन्दाय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः	विष्णुहृ. २।११
ॐ घङ्कार सौभाग्यद स्तम्भनकर विंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४
ॐ घृणिः सूर्य आदित्यः	त्रि.म.ना.७।११
ॐ ङङ्कार सर्वविषनाशकरोग्रैकविंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४
ॐ चक्षुश्चक्षुश्चक्षुस्तेजः स्थिरो भव	चाक्षुषो. २
ॐ चङ्काराभिचारघ्न क्रूर द्वाविंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ	अ. मा. ४

ॐ छङ्कार भूतनाशकर भीषण त्रयोविंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ   अ. मा. ४
ॐ जङ्कार कृत्यादिनाशकर दुर्धर्ष चतुर्विंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ   अ. मा. ४
ॐ झङ्कार भूतनाशकर पञ्चविंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ   अ. मा. ४
ॐ ञङ्कार मृत्युप्रमथन षड्विंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ   अ. मा. ४
ॐ टङ्कार सर्वव्याधिहर सुभग सप्तविंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ   अ. मा. ४
ॐ ठङ्कार चन्द्ररूपाष्टाविंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ   अ. मा. ४
ॐ डङ्कार गरुडात्मक विषघ्न शोभनैकोनत्रिंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ   अ. मा. ४
ॐ ढङ्कार सर्वसम्पत्प्रद सुभग त्रिंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ   अ. मा. ४
ॐ णङ्कार सर्वसिद्धिप्रद मोहकरैकत्रिंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ   अ. मा.२४
ॐ तङ्कार धनधान्यादिसम्पत्प्रद प्रसन्न द्वात्रिंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ   अ. मा. ४
ॐ तत्पुरुषाय पु...पु...वासु...   विष्णुहृ. २।२५
ॐ तत्पुरोर्नमः   महाना. १६।१
ॐ तत्सदिति निर्देशः   भ. गी. १७।२३
ॐ तत्सत्यम्, ॐ तत्सर्वम्   महाना. १६।१
ॐ तत्सद्यत् परं ब्रह्म   रामो. २।४
+गणेशो. १४+   श्रीवि.ता.४।१
ॐ तत्सर्वम् ॐ तत्पुरोर्नमः   महाना. १६।१
ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि [त्रि.म.ना.७।१।११+   महाना.११।७
+वनदु.९+सूर्यो. २+   पारायणो. ११
ॐ तदात्मा ॐतत्सत्यम्   महाना. १६।१
ॐ तदेति । सद्योजातात्पृथिवी   बृ. जा. १।५९
ॐ तद्गणेशः, ॐसद्गणेशः, ॐपरं गणेशः   ग. शो. १।२
ॐ तद्ब्रह्म ॐतद्वायुः   महाना. १६।१
ॐ तद्ब्रह्मात्मकाः सच्चिदानन्दाख्याः   रामो. २
ॐ तद्ब्रह्मेति चोच्चार्य   बृ. जा. ३।२४
ॐ तद्रामभद्रः परं ज्योती रसोऽहं   रामो. २।४
ॐ तद्वायुः, ॐतदात्मा   महाना. १६।१

ॐ तस्मै महाग्रासाय महादेवाय शूलिने   शरभो. २४
ॐ त्रिविक्रमाय पुरुषाय पुरुषरूपाय...   विष्णुहृ. २।१६
ॐ थङ्कार धर्मप्राप्तिकर निर्मल त्रयस्त्रिंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ   अ. मा. ४
ॐ दक्षिणामूर्तिरीश्वरोम्   त्रि.म.ना. ७।९
ॐ दङ्कार पुष्टिवृद्धिकर प्रियदर्शन चतुस्त्रिंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ   अ. मा. ४
ॐ धङ्कार विषज्वरनिघ्न विपुल पञ्चत्रिंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ   अ. मा. ४
ॐ नङ्कार भुक्तिमुक्तिप्रद शान्त षट्त्रिंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ   अ. मा. ४
ॐ नमश्चक्षुस्तेजोदात्रे दिव्याय भास्कराय   चाक्षुषो. २
ॐ नमस्ते गणपतये   गणप. १
ॐ नमस्ते भगवति मन्त्रमातृके... विश्वामृत्यो...   अ. मा. ६
ॐ नमस्ते भगवति मन्त्रमातृकेऽक्षमाले उच्चाटन्यो...   अ. मा. ६
ॐ नमस्ते भगवति मन्त्रमातृकेऽक्षमाले शोषस्तम्भिनि   अ. मा. ६
ॐ नमस्ते भगवति मन्त्रमातृकेऽक्षमाले सर्ववशङ्करि   अ. मा. ६
ॐ नमः करुणाकरायामृताय   चाक्षुषो. २
ॐ नमः प्रत्यगानन्दं ब्रह्मपुरुषं प्रणवस्वरूपं   आ. प्र. १
ॐ नमः शिवाय   त्रि.म.ना.७।९
ॐ नमः शिवायेति याजुषमन्त्रोपासको रुद्रत्व...   त्रि.ता.५।३
ॐ नमः श्रीराधारसिकानन्दाभ्याम्   आमर. ८०
ॐ नमः सर्वकोटिसर्वविद्याराजाय क्लीं स्वाहा   त्रि.म.ना.७।९
ॐ नमो नारायणादन्यो मन्त्रः...नास्ति   ना. उ. ३।१
ॐ नमो नारायणाय इत्यष्टाक्षरो मन्त्रः   ना. पू. २।१
ॐ नमो नारायणायशङ्खचक्रगदाधराय   आ. प्र. १
ॐ नमो नारायणाय सहस्रार हुं फट् स्वाहा   ना. उ. २।३
ॐ नमो नारायणाय [त्रि.म.ना.७।९+   महाना. २।९

ॐ नमो नारायणाय स्वाहा — ना. पू. ५।२
ॐ नमो नारायणायेति मंत्रोपासको
वैकुण्ठभुवनं गमिष्यति [आ.प्र.१ +नारा. ४
ॐ नमो नारायणाष्टाक्षरसंज्ञावरण-
देवतापूजा कर्तव्या — ना. पू. ६।१
ॐ नमो नारायणेति तारकं चिदात्मक-
मित्युपासितव्यम् — तारसा.१।३
ॐ नमो ब्रह्मणे नमो अस्त्वग्नये — सहवै.१२५
ॐ नमो भगवति माहेश्वरि ह्रीं
श्रीं क्लीं... — वनदु. १,२५
ॐ नमो भगवते आदित्याय...स्वाहा — चाक्षुषो. ५
ॐ नमो भगवते कालाग्निरौद्रहनुमते... — लांगूलो. ७
ॐ नमो भगवते चण्डप्रतापहनुमते — लांगूलो. ४
ॐ नमो भगवते चिन्तामणिहनुमते... — लांगूलो. ५
ॐ नमो भगवते दत्तात्रेयाय
सर्वकामप्रदाय — दत्तात्रेयो. २।१
ॐ नमो भगवते दधिवामनाय — त्रि.म.ना. ७।९
ॐ नमो भगवते दावानलकालाग्नि-
हनुमते — लांगूलो. ३
ॐ नमो भगवते नारायणाय — त्रि.म. ना.७।९
ॐ नमो भगवते पातालगरुडहनुमते — लांगूलो. ६
ॐ नमो भगवते भद्रजानिकटरुद्र-
वीर हनुमते — लांगूलो. ८
ॐ नमो भगवते भस्माङ्गरागाय...
ह्रीं फट् स्वाहा — त्रि. ता. ३।५
ॐ नमो भगवते महागरुडाय...
हुं फट् स्वाहा — गारुडो. १३
ॐ नमो भगवतेमहासुदर्शनाय हुंफट् — त्रि.म. ना. ७।९
ॐ नमो भगवतेऽमृतवर्षाय रुद्राय — वनदु. ९८
ॐ नमो भगवते रुद्राय — वनदु. ३८
ॐ नमो भगवते वासुदेवायेति
द्वादशं परिकीर्तितं — ना. पू. ३।१
ॐ नमो भगवते विष्णवे सर्वभूता-
त्मने... — त्रि.म.ना.७।१२
ॐ नमो भगवते श्रीं श्रीमन्महागरु-
डाय...महागरुड... — वनदु. १६०
ॐ नमो भगवते श्रीमहानृसिंहाय...
पच पच स्वाहा — त्रि.म.ना. ७।९

ॐ नमो भगवते श्रीमन्नारायणाय
महाविष्णवे — ना. उ. २।१
ॐ नमो भगवते श्रीसूर्यायाक्षितेजसे — अक्ष्यु.१,चाक्षु.९
ॐ नमो भगवते श्रीसूर्यायादित्या-
याक्षितेजसेऽहोऽवाहिनि... — अक्ष्यु. ३
ॐ नमो विश्वरूपाय — गो. पू. ४।४
ॐ नमो विष्णवे इतिषडक्षरं विज्ञातं — ना. पू. ३।१
ॐ नमो विष्णवे ऐं क्लीं श्रीं ह्रीं क्ष्रौं... — त्रि.म.ना. ७।९
ॐ नमो विष्णवे सुरपतये महाबलाय
स्वाहा — त्रि.म.ना.७।१०
ॐ नारसिंहाय पुरुषाय पुरुषरूपाय...
वासुदेवाय नमो नमः — विष्णुहृ. २।२८
ॐ नारायणाय पुरुषाय पुरुषरूपाय
वासुदेवाय नमो नमः — विष्णुहृ. २।११
ॐ नित्यं शुद्धं बुद्धं निर्विकल्पं — यो. चू. ७२
ॐ नृसिंहाय विद्महे वज्रनखाय
धीमहि — नृ. पू. ४।३
ॐ पङ्कार विषविघ्ननाशन भव्य
सप्तत्रिंशेऽक्षे... — अ. मा. ४
ॐ पद्मनाभाय पुरुषाय पुरुषरूपाय
वासुदेवाय नमो नमः — विष्णुहृ. २।२०
ॐ पुरुषोत्तमाय पुरुषाय...वासु-
देवाय नमो नमः — विष्णुहृ. २।२९
ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं — शांतिपाठः
ॐ प्रणवेन्दुविष्णुसहस्रनेत्राय
पुरुषाय पुरुषरूपाय... नमः — विष्णुहृ. २।२७
ॐ प्रद्युम्नाय पुरुषाय पुरुषरूपाय... — विष्णुहृ. २।७
ॐ फङ्काराणिमादिसिद्धिप्रद ज्योती-
रूपाष्टत्रिंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ — अ. मा. ४
ॐ बङ्कार सर्वदोषहर शोभनैकोन-
चत्वारिंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ — अ. मा. ४
ॐ ब्रह्मणो महिमेत्येवैतदाह — मैत्रा. ४।४
ॐ ब्रह्ममेधया [त्रिसुप. २+ — महाना. १२।२
ॐ ब्रह्ममेधवा [त्रिसुप. ३+ — महाना. १२।३
ॐ भङ्कार भूतप्रशान्तिकर भयानक
चत्वारिंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ — अ. मा. ४
ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः... — शांतिपाठः
ॐ भद्रं नो अपि वातय मनः — शांतिपाठः
ॐ भवोद्भवाय पुरुषाय पुरुषरूपाय — विष्णुहृ. २।९

ॐ श्रीमों नमो भगवते रघु-नन्दनाय...रामाय... — त्रि.म.ना.७।११
ॐ श्री ह्रीं क्लीं नमो नारायणाय स्वाहा — ना. पू. ३।१
ॐ श्री ह्रीं नमो भगवते लक्ष्मीना-रायणाय विष्णवे — ना. पू. ३।३
ॐ षङ्कार धर्मार्थ कामद धवल सप्तचत्वारिंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ — अ. मा. ४
ॐ सङ्कर्षणाय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो नमः — विष्णुहृ. २।६
ॐ सङ्कार सर्वकारण सार्ववर्णि-काष्टचत्वारिंशेऽक्षे प्रतितिष्ठ — अ. मा. ४
ॐ सत्यमित्युपनिषत् — कालाग्नि. ५
ॐ सत्यं तदेतत्पण्डिताएव पश्यन्ति — नृसिंहो. ९।९
ॐ सद्योजाताय पुरुषाय पुरुष-रूपाय वासु...नमो नमः — विष्णुहृ. २।२३
ॐ समानात्मने ॐतत्सद्भूर्भुवःसुवः — गोपालो. ३।१०
ॐ समुद्रं गच्छ स्वाहा — ना. प. ४।४७
ॐ सह नाववतु, सह नौ भुनक्तु... — शांतिपाठः
ॐ सुदर्शन महाचक्राय दीप्तरूपाय ...स्वाहा — त्रि.म.ना.७।१०
ॐ सुवः पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय — विष्णुहृ. २।३
ॐ सोऽहं सोऽहं सोऽहं — गणेशो. २।१
ॐ सुवः सन्न्यस्तं मया — ना. प. ४।४७
ॐ स्वाहेति शिखामुत्पाट्य — ना. प. ४।४६
ॐ हङ्कार सर्ववाङ्मय निर्मलैकोन-पञ्चाशदक्षे प्रतितिष्ठ — अ. मा. ४
ॐ हंसः सोहम् — त्रि.म.ना.७।११
ॐ हि ॐहि ॐहीत्येतदुपनिषदं विन्यसेत् — आरुणि. ५
ॐ हृषीकेशाय पुरुषाय पुरुषरूपाय वासुदेवाय नमो... — विष्णुहृ. २।१९
ॐ ळङ्कार सर्वशक्तिप्रद प्रधान पञ्चाशदक्षे प्रतितिष्ठ — अ. मा. ४
ॐ ह्रीं कृष्णवाससे नारसिंहवदने... — वनदु. १६०
ॐ ह्रींदुं सर्पोलूककाककपोत... निर्विषं कुरु कुरु स्वाहा — वनदु. १६०
ॐ ह्रीं बले महादेवि ह्रीं महाबले क्लीं चतुर्विध...तत्सवितुर्वरदा-त्मिके ह्रीं वरेण्यं — सावित्र्यु. १२
ॐ ह्रीं भरताग्रज राम क्लीं स्वाहा — त्रि. म. ना. ७।९
ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ग्लां ग्लीं ग्लूं — लांगूलो. ६
ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं लक्ष्मीवासुदेवाय — त्रि. म. ना. ७।९

अ

अ इति ब्रह्म। तत्रागतमहमिति — १ ऐत. ३।८।६
अ क च ट त प य शान् सृजते — त्रि. ता. १।५
अकथ्यं सुखमुत्तमम् — वैतथ्य. ४७
अकरणमलक्षणं — नृसिंहो. ९।९
अकर्तारं च पश्यति — भ. गी.१३।३०
अकर्ता विज्ञाता भवति — छां. उ. ७।९।१
अकर्ताऽहमभोक्ताऽहम् — अध्यात्मो. ६९
अकर्तृकमरङ्गं च गगने चित्रमुत्थितं — महो. ५।५४
अकर्मणश्च बोद्धव्यं — भ. गी. ४।१७
अकर्मणि च कर्म यः — भ. गी. ४।१८
अकर्म मंत्ररहितम् — ना. प. ३।८
अकर्मा स्वामीव स्थितः — परब्र. १
अकलोऽमृतो भवति — प्रश्नो. ६।५
अकल्पकमजं ज्ञानं ज्ञेयभिन्नं प्रचक्षते — अद्वैतो. ३३
अकल्पितभिक्षाशी — निर्वाणो. १
अकस्मान्मुद्गरदण्डाद्यैस्ताडितवद्बुद्ध्या-ज्ञानाभ्यां... — पैङ्गलो. २।९
अकाण्ड इवेमा न ह वै परमित्था कश्चनाश्नोति — आर्षे. ८।१
अकाममस्थिरत्वं चञ्चलत्वं... — मैत्रा. ३।५
अकामयत बहु स्यां प्रजायेयेति — शाण्डि. ३।१।३
अकामयमानो योऽकामः — बृह. ४।४।६
अकामो निष्काम आप्तकामः — बृह. ४।४।६
अकायमव्रणमस्नाविरं — ईशा. ८
अकायो निर्गुणो ह्यात्मा, तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु — २ शिवसं. २२
अकार उकार मकार इति — माण्डू. ८
अकार उकारो मकार इति त्र्यक्षरं प्रणवं तदेतदोमिति — आ. प्र. १
अकार उकारो मकार इति [ॐ कारः] — नारा.४

अकार उकारो मकार एते प्रणवमयोर्ध्वपुण्ड्राः — वासुदे. ४
अकार उकारो मकारश्चेति त्रयो वर्णास्त्रयो वेदास्त्रयो लोकाः... एवं प्रणवः प्रकाशते — यो. चू. ७४
अकारतुरीयांशाः प्रथमद्वितीयतृतीयभूमिकाः — वराहो. ४।१
अकारणं परं ब्रह्मोम् — नारा. ४
अकारमात्रं विश्वः स्यात् — अध्युप. ४७
अकारमिममात्मानमुकारपूर्वार्धे — नृसिंहो. ७।१
अकारमूर्तिः रक्ताङ्गी...बाला गायत्री — शाण्डि.१।६।१
अकारश्चायुतावयवान्वितः[तुरीयो.१+ — ना. प. ८।३
अकारस्थूलांशे जाग्रद्विश्वः — वराहो. ४।१
अकारस्य शरीरं तु व्याख्यातं — १ प्रणवो. ४
अकारं परं ब्रह्म ओम् [पाठः] — नारा.४
अकारं ब्रह्माणं नाभौ — नृसिंहो. ३।४
अकारमुकारं पूर्वार्धमाकृष्य...[पा.] — नृसिंहो. ७।१
अकारः पीतवर्णः स्याद्रजोगुण उदीरितः — ध्या. बिं. १२
अकारः प्रथमकूटाक्षरो भवति — श्रीवि. ता.
अकारःप्रथमाक्षरो भवति [रामो.१।२+ — तार. २।१
अकारः प्रथमा मात्राऽऽप्तेरादिमत्त्वात् — माण्डू. ९
अकारः प्रथमोकारो द्वितीया मकारस्तृतीयाऽर्धमात्रा चतुर्थी — ना. प. ८।५
अकारः सद्योजातो भवति — ना. पू. १।३
अकाराक्षरसम्भूतःसौमित्रिर्विश्वभावनः — रामो. १।३
अकाराक्षरसम्भूता वाग्भवा विश्वभाविता — श्रीवि.ता.१।३
अकारादभवद्ब्रह्मा जाम्बवानिति संज्ञितः — तारसा. २।२
अकारादि स्वराध्यक्षं पञ्चब्रह्मात्मकं बृहत् — पं. ब्र. १५
अकारादिक्षकारान्तवर्णजातकलेवरं — श्रीवि. ता. १।३
अकारादिक्षकारान्तान्यक्षराणि समीरयेत् — १ यो.शि. ३।६
अकारादित्रयाणां...एकाक्षरं परं ज्योतिः...प्रणवं... — शाण्डि.१।६।१
अकारादिस्वराध्यक्षमाकाशमयविग्रहम् — पञ्चब्र. १५
अकारे जाग्रद्विश्वः — प. हं. प. १०
अकारेणेममात्मानमन्विष्य — नृसिंहो. ७।१
अकारेणेममात्मानमुकारं पूर्वार्धमाकृष्य... — नृसिंहो. ७।१
अकारे तु लयं प्राप्ते प्रथमे प्रणवांशके — ध्या. बिं. १०
अकारे रेचितं पद्ममुकारेणैव... — १ यो.त.१३८
अकारे लीयते ब्रह्मा ह्युकारे...हरिः — यो. चू. ७७
अकारे वह्निरित्याहुरुकारे हृदि... — ब्र. वि. ६९
अकारे शोचितं पद्ममुकारेणैव भिद्यते, मकारे लभते नादमर्धमात्रा तु निश्चला — २ योगत. १०
अकारे संस्थितो ब्रह्मा ह्युकारे...हरिः — ब्र. वि. ७१
अकारोकारमकाररूपोदात्तादिस्वरात्मिका (गायत्री) — गायत्रीर. ३
अकारोकार-मकारार्धमात्रानादबिन्दुकलाशक्तिश्चेति (ॐकारोऽष्टधाभिद्यते) — ना. प. ८।२
अकारोकारमकारनादबिन्दुकलानुसन्धानध्यानाष्टविधा अष्टाक्षरं भवति — ना.पू.ता.१।३
अकारोकारमकाराः (पाठः) — वासु. ४
अकारोकाररूपोऽस्मि — मैत्रे. उ. ३।११
(तस्मात्) अकारोकाराभ्यामिममात्मानमाप्ततममुत्कृष्टतमं चिन्मात्रं सर्वद्रष्टारं सर्वसाक्षिणं — नृसिंहो. ५।७
अकारो जाग्रति नेत्रे — यो. चू. ७४
अकारो दक्षिणःपक्ष उकारस्तूत्तरःस्मृतः — ना. बिं. १
अकारो नयते विश्वं — आगम. २३
अकारो मध्यमरूपम् — गणप. ७
अकारो राजसो रक्तो ब्रह्मा चेतनः — यो. चू. ७५
अकारो वै सर्वा वाक् — १ ऐत. ३।६।७
अकार्यकार्यवकीर्णी स्तेनो भ्रूणहा — महाना. ६।८
अकीर्तिकरमर्जुन — भ. गी. २।२
अकीर्तिं चापि भूतानि — भ. गी. २।३४
अकुर्वन्वापि कुर्वन्वा जीवः स्वात्मरतिक्रियः — अ. पू. २।१०
अकृतं कृतात्मा ब्रह्मलोकमभिसम्भवामि — छां.उ.८।१३।१
अकृत्वा प्रमादेन...गायत्रीं जप्त्वा... — भस्मजा. १।६
अकृत्स्न एव तावन्मन्यते — बृह. १।४।१७
अकृत्स्नो हि स प्राणन्नेव प्राणो नाम भवति — बृह. १।४।७

अकृत्स्नो हि स प्राणन्नेव प्राण- नामा...(मा. पा.)	बृह. १।४।७
अकृत्स्नो ह्येष आत्मा यद्वाक्	१ ऐत.३।५।३
अकृत्स्नो ह्येषोऽत एकैकेन भवति	बृ. उ. १।४।७
अकृष्टपच्यौषधिवनस्पतिभिः	आश्रमो. ३
अक्रिययैव जुष्टम्	निर्वाणो. ७
अक्रोधाद्या नियमाः सिद्धिबुद्धिकराः	शिवो.७।१०१
अक्लेद्योऽशोष्य एव च	भ.गी. २।२४
अक्षण्वन्तः कर्णवन्तः सखायः [ऋक्सं.८।२।२४मं.१०।७१।७]	ना.पू.ता.४।९
अक्षते अच्युते लोकेऽक्षतेऽमृतत्वं च गच्छत्योम्	आत्मप्र. १
अक्षमां हित्वा हेतुजालस्य मूलं	बटुको. २३
अक्षय्यमपरिमित...सुखं	मैत्रा. ६।३०
अक्षयं निरञ्जनं	निर्वाणो. १
(?) अक्षया शान्तिरेव च	वैतथ्य. ४०
अक्षयोऽहमलिङ्गोऽहं	ब्र. वि. ८३
अक्षरत्वाद्वरेण्यत्वात्...अवधूत इतीर्यते	१ अवधू.१
अक्षरमतिशिष्यते, त्र्यक्षरं तत्समम्	छां. २।१०।३
अक्षरमनिर्देश्यं कूटस्थमचलं ध्रुवं	त्रि.म.ना. ७।७
अक्षरमहं क्षरमहम्	अ. शिरः १।१
अक्षरं तमसि विलीयते, तमः परे देवे	सुबालो. २।२
अक्षरं दहति मृत्युं दहति	सुबालो.१५।२
अक्षरं परमं पदं (प्रभु—पा.)	महाना.९।१
अक्षरं परमं ब्रह्म निर्विशेषं निरञ्जनम्	१यो.शि.३।१६
अक्षरं परमो नादः शब्दब्रह्मेति कथ्यते	१ यो.शि. ३।२
† (?)अक्षरं प्रणवं तदेतदोमिति	आत्मप्र. १
अक्षरं ब्रह्म परमं	भ. गी. ८।३
अक्षरं ब्रह्म यत्परम्	कठो. ३।२
अक्षरं ब्रह्मसम्मितम्	महाना. ११।६
अक्षरं भित्त्वा मृत्युं भिनत्ति	सुबालो.११।२
अक्षरं वा एषः (आत्मा)	शौनको. १।६
अक्षरं वाऽन्नं मृत्युरक्षादः	सुबालो.१४।१
(?) अक्षरं वेद्यते यस्तु	प्रश्नो.४।१०
अक्षरः शुद्धः पूतो भान्तः क्षान्तः शान्तः	मैत्रा. ७।६
अक्षराज्जायते कालः कालाद्व्यापक उच्यते	बटुको.२६
अक्षराणामकारोऽस्मि	भ.गी.१०।३३
अक्षरादपि चोत्तमः	भ.गी.१५।१८
अक्षराद्विविधाः सोम्य भावाः प्रजायन्ते	मुण्ड. २।१।१
अक्षराणांन्यासमुपदिशन्तिब्रह्मवादिनः	नृ. पू. २।२
अक्षराणां सायुज्यं सरूपतां सलोकतामश्नुते पुत्री...	३ ऐत. २।२।३
(हि) अक्षरात् परतः परः	मुण्ड. २।१।४
अक्षरात्मा चिदात्मकः	ते. बिं. ४।७८
अक्षरात्सञ्जायते कालः	अ.शिरः३।१५
(तथा) अक्षरात् सम्भवतीह विश्वम्	मुण्ड. १।१।७
अक्षरे खल्विमे अविकर्षन्ननेकीकुर्वन्	३ ऐत.१।५।३
अक्षरेभ्यः पदानि स्युः पदेभ्यो वाक्यसम्भवः । सर्वे वाक्यात्मका मन्त्रा वेदशास्त्राणि सर्वशः	१ यो.शि.३।६
अक्षरोऽहमस्मि	गोपालो.२।१४
अक्षरोऽहमोङ्कारोऽयमजरोऽमरोऽभयोऽमृतो ब्रह्माभयं हि वै	गोपालो.२।१४
अक्षसूत्राङ्कुशधरा पाशपुस्तकधारिणी	सरस्व. २७
(?) अक्षाध्यक्षोऽवदातमनाः	मैत्रा. ६।१
अक्षिणि पुरुषो दृश्यत एष आत्मा	छां. ४।१५।१
अक्षिणि पुरुषो दृश्यते...तदुक्थं	छां.उ. १।७।५
अक्षिणी निरभिद्येतामक्षिभ्यां चक्षुः	२ ऐत. १।४
अक्षिण्युपस्थितो हि पुरुषः सर्वार्थेषु चरति	मैत्रा. ६।६
अक्षिण्यवस्थितो...(पा.)	मैत्रा. ६।६
अक्षितमस्यच्युतमसि	छां. ३।१७।६
अक्षिस्पन्दं च दुःस्वप्नं...सदानाशय	वनदु. १६
अक्षिभ्यां चक्षुश्चक्षुष आदित्यः	२ ऐत. १।४
अक्षुब्धा निरहङ्कारा द्वन्द्वेष्वननुपातिनी । प्रोक्ता समाधिशब्देन मेरोः स्थिरतरा स्थितिः	अ. पू. १।४९
अक्षेत्रज्ञा उपर्युपरि सञ्चरन्तः	छां. उ.८।३।२
अक्ष्यन्तस्तारकयोश्चंद्रसूर्यप्रतिफलनं...	(?)
अखण्डचिद्घनानन्दस्वरूपं (ब्रह्म)	त्रि.म.ना.४।१
अखण्डपरमानन्दविशेषं	त्रि.म.ना.७।८
अखण्डबोधोऽहमशेषसाक्षी	कुंडिको. १७
अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरं	मठाम्ना. २
अखण्डलक्षणाखण्डपरिपूर्णसच्चिदानन्दस्वप्रकाशं भवति	त्रि.म.ना.४।१

† वाक्यारम्भे (?) इत्येतच्चिह्नांकितं वाक्यं जेकब्महोदयानां उपनिषद्वाक्यकोशान्तर्गतमित्यवधेयम्। मूले तु 'त्र्यक्षरं' इति।

अखण्डशुद्धचैतन्यनिजमूर्तिविशेषविग्रहं त्रि.म.ना.७।८
अखण्डाकारमस्म्यहं मैत्रे. ३।२०
अखण्डाकाशरूपोऽस्मि मैत्रे. ३।२०
(भगवन्) अखण्डाद्वैतपरमानन्द-
लक्षणपरब्रह्मण: साकारनिराकारौ
विरुद्धधर्मौ त्रि.म.ना.७।२
अखण्डाद्वैतपरमानन्दलक्षणपरब्रह्मणः
परममूर्तिपरमतेजःपुंज... त्रि.म.ना.७।८
अखण्डानन्दतेजोराश्यन्तर्गतं त्रि.म.ना.७।९
अखण्डानन्दतेजोराश्यन्तरस्थितं त्रि.म.ना.७।९
अखण्डानन्दनिरस्तसर्वक्लेशकश्मलः मं. ब्रा. ३।३
अखण्डानन्दपीयूषपूर्णब्रह्ममहार्णवे अध्यात्मो.६६
अखण्डानन्दपूर्णः कृतार्थो भवति मं. ब्रा. ३।२
अखण्डानन्दब्रह्मचैतन्याधिदेवतास्वरूपं त्रि.म.ना.७।८
अखण्डानन्दमात्मानं विज्ञाय अध्यात्मो. २७
अखण्डानन्दविग्रहः मैत्रे. ३।८
अखण्डानन्दस्वभावमप्रमेयं
(आत्मानमपरोक्षीकृत्य) व. सू. उ. ९
अखण्डानन्दस्वरूपमनिर्वाच्यं त्रि.म.ना.७।७
अखण्डानन्दामितवैष्णव...विष्णोः
परमपदं विराजते त्रि.म.ना.१।४
अखण्डानन्दामृतविशेषं त्रि.म.ना.७।७
अखण्डैकरसं किञ्चित् ते. बिं. २।९
अखण्डैकरसं गुह्यं ते. बिं. २।१२
अखण्डैकरसं गृहं ते. बिं. २।१६
अखण्डैकरसं गोत्रं ते. बिं. २।१६
अखण्डैकरसं चान्तः ते. बिं. २।१५
अखण्डैकरसं जगत् ते. बिं. २।१
अखण्डैकरसं ज्योतिः ते. बिं. २।२२
अखण्डैकरसं दृश्यं ते. बिं. २।१
अखण्डैकरसं ध्यानं ते. बिं. २।२१
अखण्डैकरसं ब्रह्म ते.बिं.२।४,४१
अखण्डैकरसं मनः ते. बिं. २।७
अखण्डैकरसं राज्यं ते. बिं. २।२०
अखण्डैकरसं सर्वं ते. बिं. २।२८
अखण्डैकरसं सर्वं चिन्मात्रमिति
भावयेत् [२।२४ ते. बिं. २।२७
अखण्डैकरसं सुखं ते. बिं. २।७
अखण्डैकरसं सूत्रं ते. बिं. २।१४
अखण्डैकरसं स्थूलं ते. बिं. २।११
अखण्डैकरसः पतिः ते. बिं. २।१३
अखण्डैकरसः पिता ते. बिं. २।१३
अखण्डैकरसः शान्तः ते. बिं. २।१८
अखण्डैकरसादन्यन्नास्ति ते. बिं. २।९
अखण्डैकरसानन्दस्तारकब्रह्मवाचकः रामो. ५।२
अखण्डैकरसान्नास्ति ते. बिं. २।१०
अखण्डैकरसा भूमिः ते. बिं. २।३
अखण्डैकरसा माता ते. बिं. २।१३
अखण्डैकरसा विद्या ते. बिं. २।८
अखण्डैकरसास्ताराः ते. बिं. २।१७
अखण्डैकरसो गुरुः ते. बिं. २।६
अखण्डैकरसो जीवः ते. बिं. २।४
अखण्डैकरसो ज्ञाता ते. बिं. २।१२
अखण्डैकरसो देहः ते. बिं. २।७
अखण्डैकरसो बन्धुः ते. बिं. २।१९
अखण्डैकरसो ब्रह्मा ते. बिं. २।५
अखण्डैकरसो मन्त्रः ते. बिं. २।२
अखण्डैकरसो रविः ते. बिं. २।१७
अखण्डैकरसो रुद्रः [२।५ ते. बिं. ३।३५
अखण्डैकरसो वाऽहं ते. बिं. ५।७
अखण्डैकरसो विराट् ते. बिं. २।१४
अखण्डैकरसोऽस्म्यहं ते. बिं. २।५
अखण्डैकरसो हरिः ते. बिं. २।५
अखण्डैकरसो होमः ते. बिं. २।२३
अखण्डैकरसो ह्यात्मा ते. बिं. २।६
अखिलकार्यैककारणस्वरूपं (ब्रह्म) त्रि.म.ना.४।१
अखिलप्रमाणातीतं " त्रि.म.ना.७।७
अखिलमप्रमाणागोचरं ब्रह्म त्रि.म.ना. १।३
अखिलमिदमनन्तमात्मतत्त्वं अ. पू. १।५५
अखिलात्मा ह्यमेयात्मा... ते. बिं. ४।७०
अखिलापवर्गपरिपालकं(विष्वक्सेनं) त्रि.म.ना.६।६
अगदो ह भवति छां.उ.३।१६।४
अगदो हैव भवति [+४।६ छां.उ.३।१६।२
अगन्मज्योतिरुत्तमं [ऋ.मं.१।५०।१० छां.उ.३।१७।७
अगमयेति स यदाहासतो मागमयेति बृह. १।३।२८
(?)अगम्यगम्यकर्ता च (पा.) ते. बिं. १।४
अगम्यागमकर्ता यो गम्यागमन-
मानसः। मुखे... ते. बिं. १।४
अगम्यागमनात्पूतो भवति ना. उ. ३।१

अगुणमविक्रियमव्यपदेश्यं नृसिंहो. ९।९
अगस्त्यः कलशे जात इति श्रुतत्वात् व. सू. ५
अगृह्यो नहि गृह्यते [बृ.उ.३।९।२६+
 ४।२।४+४।४।२२ +४।५।१५
अगोचरं मनोवाचामवधूतादिसम्प्लवम् मैत्रे. १।१४
अगोचरे यदा लीला २ तत्त्वो. ६
अगोत्रमजरममयममृतमरजोऽशब्दं बृ. उ. (?)
अगोत्रमवर्णमचक्षुःश्रोत्रं मुंड.१।१।६
अगोत्रोऽहमगात्रोऽहं ब्र. वि. ८४
अग्न आयाहि वीतये इत्येव...कृत्वा
 साम...अधीते २ प्रणवो. २१
अग्न आयूंषि पवस आसुवोर्जमिषं च
 नः[ऋक्सं.७।२।१०=मं.९।६६।१९ सहवै. ६
अग्नय इत्याह तस्मादग्नय आधातव्याः महाना.१६।१२
अग्नयश्च स्वाध्यायप्रवचने च तैत्ति. १।९।१
अग्नये स्वाहाऽनुमतये स्वाहा देवाय
 सवित्रे सत्यप्रसवाय स्वाहेति हुत्वा बृ.उ. ६।४।१९
अग्नयो वै त्रयी विद्या देवयानः पन्थाः महाना. १७।८
अग्नावाज्यस्य हुत्वा मन्थे...अवनयेत् छां.उ. ५।२।४
अग्नावेव देवेषु लोकमिच्छन्ते बृ.उ.१।४।१५
अग्निना दाहो हिमसेचनमिव (यत्र) महो. ४।२६
अग्निदले रक्तवर्णे यदा विश्राम्यते मनः विश्रामो. २
अग्निना प्रज्वलिता रज्जुर्दृश्यमाना
 अग्निरेवाभाति सामर. ३२
अग्निना मुखेन न वै देवा अश्नन्ति... छान्दो.३।६।१
अग्निना वै होत्रा चक्रं पाञ्चजन्यं...
 धारयेत् सुदर्श. ४
अग्निनैव मुखेनैतदेवामृतं दृष्ट्वा तृप्यति छान्दो.३।६।३
अग्निनैवान्नमत्ति (पा.) मैत्रा. ६।१०
अग्निनैवायं ज्योतिषास्ते पल्ययते... बृह.४।३।४
अग्निमात्मन्यारोप्य प. हं. प. ५
अग्निमिच्छध्वं भारताः अरुणो. १
अग्निमीडे(ळे)पुरोहितं[ऋक्सं.१।१।१]
 इत्येवमादिं कृत्वा ऋग्वेदमधीते २ प्रणवो. २१
अग्निमुपसमाधाय [बृ. उ. ६।३।१+
 कौ.उ.२।३,१५ २ सन्न्यासो.१
अग्निमेवाप्येति योऽग्निमवास्तमेति सुबालो.९।६
अग्निमेवेतरेण सर्वेण सहवै. २२
अग्निरन्नादः बृह. १।४।६
अग्निराकाशेनाह्वयति छां. ७।१२।१

अग्निरिति भस्म, वायुरिति भस्म...
 [अ.शिरः ३।१।२+ जाबाल्यु. ६,
 +का.रुद्रो. २+रुद्रो.+२ बटुको.२४ भस्मजा. १।३
अग्निरित्यादिमन्त्रेण प्रमृज्य (भस्म) बृ.जा. ३।२६
अग्निरिन्द्रो विष्णुः...कर्मेन्द्रियदेवताः ग. शो. ४।४
अग्निरिव कक्षं दहति ब्रह्मपुष्पमना-
 वृतम्... संहितो. ३।७
अग्निरिव मन्यो त्विषितः सहस्व
 [ऋक्सं.८।३।१९=मं.१०।८४।२+ वनदु. १०८
अग्निरिवाग्निना विहितः मैत्रा. ६।८
अग्निरिवाधूमकस्तेजसा निर्दहन्निवा-
 त्मविद्भगवाञ्छाकायन्यः मैत्रे. १।१।२
अग्निरीकारः छां. १।१३।१
अग्निरूपं प्रणवं सन्दध्यात् रामो. ३।४
अग्निरूपान्नपानादिप्राणिनांक्षुत्तृष्णा
 त्मिका...नित्यानित्यरूपा भवति सीतो. ८
अग्निरेनास्वदनायतीदमाहरतेति १ ऐत.१।७।१
अग्निरेव सविता पृथ्वी सावित्री सावित्र्यु. १
अग्निरेवाऽस्य ज्योतिर्भवति बृह. ४।३।४
अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरो-
 हितः[सहवै.७ +ऋक्सं.७।२।१०= मं. ९।६६।२०
अग्निर्गायत्रं त्रिवृद्रथन्तरं...
 तपन्ति वर्षन्ति मैत्रा. ७।१
अग्निर्ज्योतिरहः शुक्लः भ.गी. ८।२४
अग्निर्ज्योतिरित्यादिभिरग्नौ जुहुयात् भस्मजा. २।३
अग्निर्देवता ब्रह्म इत्यार्षं महाना.११।५
अग्निर्द्विहोता चित्त्यु. ७।१
अग्निर्धूमः (तस्य) बृ.उ.६।२।११
अग्निर्भस्मेति मंत्रेण गृह्णीयाद्भस्म बृ. जा.३।२६
अग्निर्मा तस्मादिन्द्रश्च संविदानौ
 प्रमुंचतां सहवै. ९
अग्निर्मा तस्मादेनसो गार्हपत्य.. सहवै. १०
अग्निर्मा तस्मादेनसो गार्हपत्यःप्रमुंचतु सहवै. ४
अग्निर्मूर्धा चक्षुषी चन्द्रसूर्यौ मुण्ड. २।१।४
अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या
 अयम् [ऋक्सं. ६।३।३९।१=
 मं. ८।४४।१६ वनदु. २९
अग्निर्यजुर्भिः चित्त्यु. ८।१
अग्निर्यत्राभिमथ्यते श्वेता. २।६
अग्निर्यथैको भुवनं प्रविष्टो रूपं रूपं
 प्रतिरूपो बभूव [कठो.५।९+ बृ. जा. २।१

अग्निर्यष्टव्यश्चेतव्यः स्तोतव्यो-ऽभिध्यातव्यः	मैत्रा. ६।२४
अग्निर्लोको मनो ज्योतिः	बृह. ३।९।१०
अग्निर्वा अग्नेनाभिज्वलति	मैत्रा. ६।१२
(?) अग्निर्वा अग्नेनोज्ज्वलति	मैत्रा. ६।१२
अग्निर्वाग्भूत्वा मुखं प्राविशत्	२ ऐत. २।४
अग्निर्वा अहमस्मीत्यब्रवीज्जातवेदाः...	केनो. ३।४
(अथ) अग्निर्वायुरादित्य इति भास्वत्येषा	मैत्रा. ६।५
अग्निर्वायुरादित्यः कालो यः प्राणोऽन्नं	मैत्रा. ४।५
अग्निर्वायुरादित्यश्चन्द्रमा नक्षत्राणि	तैत्ति. १।७।१
अग्निर्वायुरादित्यः स उद्गीथः	छां. २।२१।१
अग्निर्वै देवाः(वेदाः)सर्वविश्वाभूतानि प्राणावा इन्द्रियाणिपशवोऽन्नममृतं सम्राट् स्वराड्विराट् तस्मान्नः प्रथमं पादं जानीयात्	नृ. पू. १।४
अग्निर्वै भर्गः	सावित्र्यु. १०
अग्निर्वै भीतस्तिष्ठति	ग. शो. ४।५
अग्निर्वै मुखात् (अजायत)	ग. शो. ३।११
अग्निर्वै मृत्युः सोऽपामन्नं	बृ.ह. ३।२।१०
अग्निर्वै वरेण्यम्	सावित्र्यु.१०
अग्निर्वै वेदा इदं सर्वं...तस्मान्नः प्रथमं पादं जानीयात्	ग. पू. २।१
अग्निर्हि वै प्राणः प्राणमेव तथा करोति	जाबा. ४
अग्निर्हि प्राणः प्राणमेवैतया करोति [+ना. प. ३।७७	याज्ञव. १
अग्निर्हिङ्कारः	छां.उ.२।२०।१
अग्निर्होता	चित्त्यु. ३।१
अग्निलोकमागच्छति स वायुः	कौ. उ. १।३
अग्निलोकाद्वायुलोकं	दुर्वासो.१।१५
अग्निवर्णं निष्क्रामति...वनं गच्छति संयतः	२ सन्न्यासो.७
अग्निश्च पृथिवी च वायुश्चान्तरिक्षं चादित्यश्च द्यौश्च चन्द्रमाश्च नक्षत्राणि चैते वसवः, एतेषु...	बृह. ३।९।३
अग्निश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च... सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा	महाना. ११।३
अग्निश्च हव्यवाहनस्तदिदं	इतिहा. ५
अग्निश्चोभे पार्श्वे भवतः	हंसो. ५

अग्निष्टएकंमुखं तेनमुखेनेमं...अत्सि	कौ. उ. २।९
अग्निष्टत् स्विष्टकृद्विद्वान् स्विष्टं सुहुतं करोतु नः स्वाहा	बृ.उ.६।४।२४
अग्निष्टे पादं वक्तेति	छान्दो.४।६।१
अग्निष्टोमसहस्राणि...तेषां पुण्यमवाप्नोति	गोपीचं. १९
अग्निसंस्थानि पूर्वाणि दारुपात्राण्यग्नौ जुहुयात्	कठश्रु. २
अग्निस्त्वां अग्ने प्रमुमोक्तु देवः	चित्त्यु.११।११
अग्निस्तृप्यत्यग्नौतृप्यतिपृथिवीतृप्यति	छां. ५।२१।२
अग्निस्थाने पित्तं	गर्भो. २
अग्निहोत्रमसिताञ्छिवभक्त...	रुद्रोप. १
अग्निहोत्रमित्याहुस्तस्मादग्निहोत्रेरमन्ते	महाना.१६।१२
अग्निहोत्रसमुद्भूतं विरजानलमनुकल्पं	बृ. जा. ३।३४
अग्निहोत्रं च स्वाध्यायप्रवचने च	तैत्ति. १।९।१
अग्निहोत्रं जुहुयात्स्वर्गकामः	मैत्रा. ६।३६
अग्निहोत्रं जुह्वानो लोभजालं भिनत्ति	मैत्रा. ६।३८
अग्निहोत्रंबलीवर्दाःकालेचातिथिरागताः निर्दहन्त्यवमानिताः	इतिहा. २१
अग्निहोत्रे समुदाते	बृह. ४।३।१
अग्निहोत्रं सायम्प्रातर्गृहाणां निष्कृतिः	महाना. १७।९
अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसं; अस्य यज्ञस्य...[ऋक्सं.१।१।२२ =मं. १।१२।१	वनदु. ४०,५३
अग्निं पृथिव्याः (प्रावृहत्)	छां.उ.४।१७।१
अग्निं प्रणीयोपसमाधाय हिराज्योपघातं जुहोति	सहवै. २२
अग्निं प्रपद्ये वायुंप्रपद्यआदित्यं प्रपद्ये	छां.उ.३।१९।६
अग्निं युगपद्धानीय धारयेत प्रयत्नतः	शिवो. ७।७१
अग्निं वागप्येति	बृ.उ. ३।२।१३
अग्निं स्तंभयति सूर्यं स्तंभयति	ग. शो. ५।१
अग्निं हृदयेन	चित्त्यु.२।११
अग्निः कला सूर्यः कला चन्द्रः कला विद्युत्कलैष वै सौम्य चतुष्कलःपादः	छां.उ. ४।७।३
अग्निः पुच्छस्य प्रथमं काण्डं	सहवै. २३
अग्निः पूर्वरूपम्	तै. उ. १।३।४
अग्निः प्रतिहारः	छां.उ. २।२।२
अग्निः प्रस्तावः	छां.उ. २।२।१
अग्निः सवितुश्च रश्मयः पुनन्त्वन्नं... यदन्यत्	मैत्रा. ६।९

अग्निः साम तदेतदेतस्यामृचि...
अग्निरमः छां.उ. १।६।१
अग्नीषोमात्मकं जगत् [बृ.जा.२।५+
रामपू.४।६+ रुद्रहृ. ९
अग्नीषोमात्मकंरूपंरामबीजे प्रतिष्ठितं रामर. ५।१०
अग्नीषोमौ पक्षावोङ्कारः शिरः हंसो. ६
अग्नीषोमात्मकं विश्वमित्यग्निराचक्षते बृ.जा. २।२१
अग्ने अत्रिवन्नमसा गृणानः [ऋ.सं. महाना.६।१६
अग्ने जातान् प्रणुदानः सपत्नान्...
जातवेदो नुदस्व सहवै.७
अग्ने त्वं पारया नव्यो अस्मान्
[महाना. ६।१५+ वनदु. ११६
अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्
[ऋक्सं. २।५।१०।१=
मं. १।१८९।१
ईशा. १८+ बृह. ५।१५।१
अग्ने पवस्वस्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यं
[ऋक्सं.७।२।११=मं.९।६।२१ सहवै. ६
अग्ने यो नोऽभितो जनो वृको वारो
जिघांसति सहवै. ७
अग्ने यो नो भिदासति समानो यश्च सहवै. ७
अग्नेरधश्चोज्ज्वलनं जगद्भवतु सर्वदा ते. विं. ६।८३
अग्नेरमृतनिष्पत्तिरमृतेनाग्निरेधते बृ.जा. २।५
अग्नेरिव ज्वलत उपशृणोति छां.उ.३।१३।८
अग्नेरापः, अद्भ्यः पृथिवी ना. उ. १५
अग्नेरापः [तै.उ.२।१।१+सुबा. १।१+
पैङ्ग. १।३+ यो. चू. ७२
अग्नेरिव शिखा नान्या यस्य ज्ञानमयी
शिखा। स शिखीत्युच्यते विद्वान्नेतरे
केशधारिणः [ब्रह्मो.१२+परब्र.१४+ ना.प. ३।८४
अग्नेरुद्गीथः छां.उ.२।२२।१
अग्नेरुपरि जलं स्थाप्य जलोपर्यन्ना-
दीनि संस्थाप्य...तेनैव सह
मारुतः प्रयाति. . शाण्डि.१।४।८
अग्नेरुपासकास्ते यज्ञकर्मवासना-
त्मक.. उत्पत्तिं भजन्ते सामर. ९९
अग्नेरूर्ध्वं भवत्येषा यावत्सौम्यं
परामृतम् बृ.जा. २।७
अग्ने रूपं स्पर्शाः, वायोरूष्माणः,
आदित्यस्य स्वराः ३ऐत.२।५।१
अग्नेरोङ्कारोऽभवत् गायत्रीर. १

अग्नेर्ज्योतिर्निचाय्य पृथिव्या
अध्याभरत् श्वेता. २।१
अग्नेर्भस्मासीति भस्म संगृह्य भस्मजा. १।५
अग्नेर्मथनं, आजेः सरणं, दृढस्य
धनुष आयमनं छां.उ.१।३।५
अग्नेर्यदौष्ण्यमाविष्टं मैत्रा. ६।३१
अग्नेर्वीर्यं च तद्भस्म सोमेनाप्लावितं बृ.जा.२।१३
अग्नेर्वीर्यमिदंप्राहुस्तद्वीर्यंभस्मयत्ततः बृ.जा. २।११
अग्नौ चाधूमके यज्ज्योतिश्चित्रतरं मैत्रा. ६।१७
अग्नौ तु चालिते कुक्षौ वेदना जायते वराहो. ५।८
अग्नौ तृप्यति पृथिवी तृप्यति छां.उ.५।२१।२
अग्नौ पुरुष एतमेवायं ब्रह्मोपासे बृ. उ. २।१।७
अग्नौ पुरुषत्वमेवाहमुपासे कौषीत.४।८
अग्नौप्रास्ताहुतिःसम्यगादित्यमुपतिष्ठते मैत्रा. ६।३७
अग्नौसन्धारयेच्चित्तमग्निनादह्यतेनसः १यो.शि.५।५०
अग्नौ हुत्वा मन्थे संस्रवमवनयति बृ. उ. ६।३।२
अग्न्ययस्कारादयो नाभिभवन्ति... मैत्रा. ६।२७
अग्न्यंशे च महेशानमीश्वरे
चानिलांशके जा. द. १०।६
अग्न्युपासका ये ब्राह्मणा ब्रह्मवर्चसो-
पासका एव ते सामर. ७५
अग्र उ एवोभयम्, अन्तरेणोभयं
व्याप्तं भवति ३ ऐत.१।३।२
अग्रं च मध्यं च बहिश्च पुरस्ताज्ज्यो-
तिरित्यहमेव अ. शिरः १।१
अग्राह्यमचलं ध्रुवं... अमन. १।११
अग्राह्यमगोत्रमवर्णं... मुण्ड. १।६
अग्राह्यमलक्षणं [ग. शो. १।४+ रामो. २।४
अग्राह्यमलक्षणमचिन्त्य-
मव्यपदेश्यं [नृ. पू. ४।२+ नृसिंहो. १।६
अग्राह्यमव्यवहार्यं स्वांतःस्थितः
स्वयमेव ना.प. ९।२०
अग्रे कामदुघा, षट्कोणे सुमुखादयः ग.पू. २।१०
अग्रेधृतोऽर्थनाशायमध्येचैवप्रजाक्षयः ३ आत्मो. १
अग्रे पर्वाणि चत्वारि...मध्ये पर्वा-
ण्यथाष्टौ च ३ आत्मो. २
अग्रे मध्यस्थमध्यस्थं मूले मध्यस्थ...
मध्ययोः ३ आत्मो. २
अग्रे मध्येऽवसाने सर्वं यथावस्थितं स्वसंवे. १

अग्रे मध्यस्थमध्यस्थं...धारयित्वा प्रयत्नेन — ३ आत्मो. २

अग्रे माहिषिकं दृष्ट्वा...निराशाः पितरो गताः — इतिहा. ७१

अघस्य त्वा धारया विध्यामि — वनदु. १६०

अघायुरिन्द्रियारामः — भ.गी. ३।१६

अघासुरो महाव्याधिः — कृष्णो. १५

अघोरबीजमंत्रेण करयोर्धारयेत्सुधीः (रुद्राक्षं) — रु. जा. २२

अघोरं सलिलं चन्द्रं...दक्षिणाग्नि-रुदाहृतम् — पञ्चब्र. ३

अघोरः सर्वसाधारणस्वरूपः — पा. ब्र. २

अघोरेण (मंत्रेण) गले धार्य (रुद्राक्षं) — रु. जा. २१

अघोराच्छ्रुतिःसत्पुरुषाच्छिवस्य — सि. शि. ९

अघोराद्वह्निः, तस्माद्विद्या — वृ. जा. १।५

अघोरा पापकाशिनी (देवस्य तनूः) — शांडि. ३।१।४

अघोरेभ्योऽथघोरेभ्योघोरघोरतरेभ्यः — महाना. १०।६

अघोरो मकारो भवति — ना.पू. १।३

अघोषमव्यञ्जनमस्वरं च — अ. ना. २५

अघ्राता रसयिता भवति — मैत्रा. ६।११

अङ्कुशेनविनामत्तो यथादुष्टमतङ्गजः — मुक्तिको.२।४४

अङ्कुशो मार्गः — निर्वाणो. ३

अङ्गचेष्टार्पणं बलिः — द. मू. १६

अङ्गहीनानिवाक्यानिगुरुर्नोपदिशेत् पुनः। सषडङ्गान्युपदिशेन्महा-वाक्यानि कृत्स्नशः — शुकर. १।१।४

अङ्गसङ्गं करिष्यामि — कृष्णो. ४

अङ्गादङ्गात्सम्भवसिहृदयादभिजायसे [बृ. उ. ६।४।९+ — कौ. उ. २।११

अङ्गादङ्गादनुप्राविशत्सर्वान्...भूतये — पारमा. ३।३

अङ्गानांमर्दनंकृत्वाश्रमसञ्जातवारिणा, कट्वम्ललवणत्यागी क्षीरभोजन-माचरेत् (क्षीरपानरतः सुखी-पा.) — यो. चू. ४१, ध्या. बिं. ७१

अङ्गानां समतां विद्यात् — ते. बिं. १।२८

अङ्गानां हि रसः — बृह. १।३।१९

अङ्गानि विना रामा विघ्नकरो भवति — हनुम. १।८

अङ्गानि वेदाश्चत्वारः...विद्या ह्येता-श्चतुर्दश — ना. पू. ५।९

अङ्गान्यन्या देवताः — तैत्ति.१।५।१

ङ्गारा भवन्ति स प्रतिहारः — छां.उ.२।१२।१

अङ्गारावर्तनं चन्दनचर्चेव (यत्र) — महो. ४।२६

अङ्गारेह सयुग्वानमिव रैक्वमात्थेति — छां. उ.४।१।५

(?) अङ्गिरसश्चन्द्रमा ऊर्ध्वा उद्यन्ति — मैत्रा.

अङ्गिरसं मन्यतेऽङ्गानां यद्रसः — छां.उ.१।२।१०

अङ्गिरसं विधिवदुपसन्नः — मुं. उ. १।१।३

अङ्गिरसो धिष्णियैरग्निभिः — चित्सु. ८।१

अङ्गीभवति, नाङ्गेन विमूर्च्छति — छां.उ.२।१९।२

अङ्गुलिस्फोटनं कुर्यात् सा मात्रा परिगीयते — १ यो. त. ४०

अङ्गुल्यग्रे देवतीर्थं, कनिष्ठिकामूले आर्षिकं — आचम. २

अङ्गुष्ठतर्जनीभ्यांतुहस्ताभ्यांधारयेदृढं — योगकुं. १।१२

अङ्गुष्ठतर्जन्योर्मध्ये पैतृकं, अङ्गुष्ठमूले ब्रह्मतीर्थं — आचम. २

अङ्गुष्ठप्रादेशशरीरमात्रं प्रदीपप्रताप-वद्विधा हि — मैत्रा. ६।३८

अङ्गुष्ठमात्रमात्मानं सधूमज्योतिरूपकं। प्रकाशयन्तमात्मानं ध्यायेत्कूटस्थ-मव्ययम् [पैङ्गलो.३।५+ — योगकुं.३।२६

अङ्गुष्ठमात्रःपुरुषोऽङ्गुष्ठंचसमाश्रितः — महाना. १६।५

अङ्गुष्ठमात्रः पुरुषो ज्योतिरिवाधूमकः — कठो. ४।१३

अङ्गुष्ठमात्रः पुरुषोऽन्तरात्मा सदा जनानांहृदयेसन्निविष्टः[कठो.६।१७ — श्वेता. ३।१३

अङ्गुष्ठमात्रः पुरुषोऽन्तर्लक्ष्यमित्येके — मं. ब्रा. १।५

अङ्गुष्ठमात्रः पुरुषो मध्य आत्मनि तिष्ठति — कठो. ४।१२

अङ्गुष्ठमात्रो रवितुल्यरूपः सङ्कल्पा-हङ्कारसमन्वितो यः — श्वेता. ५।८

अङ्गुष्ठमूले ब्रह्मतीर्थं, मध्ये अग्नितीर्थं — आचम. २

अङ्गुष्ठादिस्वावयवस्फुरणादशनैरपि, ...जानीयात्क्षयमात्मनः — त्रि.ब्रा. २।१२१

अङ्गुष्ठावधि गृह्णीयाद्धस्ताभ्यां ...पद्मासनं भवेत्प्राज्ञ — जा. द. ३।५

अङ्गुष्ठेन निबध्नीयात् ..पद्मासनं... — शाण्डि. १।३।३

अङ्गैर्यज्ञम् — चित्सु. ४।१

अचक्षुर्विश्वतश्चक्षुरकर्णो... — भस्मजा. २।७

अचक्षुश्श्रोत्रनामकं — १यो.शि.३।१९

अचक्षुश्श्रोत्रमत्यर्थं तदपाणिपदं तथा नित्यंविभुंसर्वगतंसुसूक्ष्मं[रुद्रहृ.३१ — पा. ब्र. ३४

अचक्षुश्श्रोत्रं तदपाणिपादं — मुंड. १।१।६

वाक्य	स्थान
अचक्षुष्कमनामगोत्रमशिरस्कं	सुबालो. ३।२
अचक्षुष्कमश्रोत्रमवाक्	बृह. ३।८।८
अचरं चरमेव च	भ. गी. ३।१६
अचलममृतमच्युतं ध्रुवं	मैत्रा. ६।३८
अचलश्चालेपोऽव्यग्रो निस्पृहः	मैत्रा. २।११
अचलसम्पूर्णभावाभावविहीनकैवल्य-ज्योतिर्भवति	मं. ब्रा. २।६
अचलं परंब्रह्म प्राप्नोति	मं. ब्रा. ३।१
अचलोऽयं सनातनः	भ. गी .२।२४
अचित्तचित्तमात्मानं	तेजोबिं.९
अचित्तत्वं परं पदम्	महो. ५।६०
अचित्तं चित्तमध्यस्थं...तच्च लिङ्गं निराश्रयम्	मैत्रा. ६।१९
अचिन्त्यमतिनिर्मलं	१यो.शि.३।१७
अचिन्त्यमप्रबुद्धं च न सत्यं न परं	ते. बिं. १।११
अचिन्त्यमव्यक्तमनन्तमव्ययम्	स्कन्दो. १३
अचिन्त्यमव्यक्तमनन्तरूपं	कैव. ६
अचिन्त्यमव्यपदेश्यं [ग. शो. १।४+	रामो. २।४
अचिन्त्यरूपं दिव्यं देवमसङ्गं शुद्धं तेजस्कायमरूपं सर्वेश्वरमचिन्त्यम-शरीरं(आत्मानं पश्यन्ति विद्वांसः)	सुबालो. ८।१
अचिन्त्यशक्तिमान्योगी नानारूपाणि धारयेत् संहरेच्च	१यो.शि.१।४४
अचिन्त्यशक्तिर्भगवान् गिरीशः	शरभो. २१
अचिन्त्यं गुह्यमुत्तमं	मैत्रा. ६।१९
अचिन्त्यं चाप्रमेयंच...तन्मे मनःशिव-	२ शिवसं.१२
अचिन्त्यं चिन्मयात्मानं यद्व्योम परमं स्थितम्	ते. बिं. १।९
अचिन्त्यान्भूतवत्स्पृशेत्	१अ.शि.३।१७
अचिन्त्यायाप्रमेयाय	मैत्रा. ५।४
अचिन्त्योऽमूर्तो गभीरो गुप्तोऽनवद्यः	मैत्रा. ७।१
अचिरेणेति भूमित्वं	मैत्रा. ६।२७
अचिरेणाधिगच्छति	भ. गी. ४।३९
अचेतनं चाजडं च(स्वरूपं)तन्मयो-	महो. ५।५०
अच्छायमतमोऽवायु (अक्षरं ब्रह्म)	बृह. ३।८।८
अच्छायमशरीरमलोहितं	प्रश्नो. ४।१०
अच्छिद्रया जिह्वा	चित्यु. ४।१
अच्छिन्नं तन्तुमनुसंचरेम	सहवै. ९
अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयं[भ.गी.२।२४+	भवसं. २।३९
अच्युतपाजा अग्नीत	चित्यु. ५।१
अच्युतमना उपवक्ता	चित्यु. ५।१
अच्युतक्षितये स्वाहा	महाना. १५।१
अच्युतां बहुलां श्रियम्	चित्यु.११।७
अच्युतोऽस्मि महादेव तव कारुण्य...	स्कन्दो.१
अच्युतो विष्णुर्नारायणः	मैत्रा.७।७
अच्युतोऽहमचिन्त्योऽहं	ब्र. वि. ८१
अच्योष्ठा उत्तराभ्यां स्थानाभ्या-मित्येनं ब्रूयात्	३ऐत.१।३।१
अच्योष्ठावराभ्यां स्थानाभ्या-मित्येनं ब्रूयात्	३ऐत.१।३।१
अज आत्मा महान् ध्रुवः	बृह.४।४।२०
अज आत्मा महान् परः (पा.)	बृह. ४।४।२०
अजकुक्षौ जगन्नास्ति ह्यात्मकुक्षौ जगन्नहि	ते. बिं.६।९९
अजडोगलितानन्दः [अ.पू.४।२७+	४,६३
अजत्वादमरत्वादजरत्वादमृतत्वादशो-कत्वादमोहत्वात्...नृसिंहमन्त्रिष्य	नृसिंहो.७।१
अजपा गायत्री	निर्वाणो. ३
अजपा नाम गायत्री योगिनां मोक्षदा सदा [ध्या. बिं.६३+	यो. चू. ३३
अजय्या(अजेया) वैष्णवी माया	कृष्णो. ५
अजमजेन ज्ञेयेन सर्वज्ञं	अद्वैतो. ४७
अजमनिद्रमस्वप्नं प्रभातंभवतिस्वयम्	अ. शां. ८१
अजमनिद्रमस्वप्नमनामकं...सकृ-द्विभाति (तं)	अद्वैतो. ३६
अजममरमनाद्यमाद्यमेकं पदममलं	अ. पू.३।२३
अजरमभयममृतमरजोऽशब्दम्	बृ.उ.३।८।८
अजरत्वादमृतत्वात्... परमं ब्रह्म...	नृसिंहो. ७।१
अजरममरमक्षरमव्ययं प्रपद्ये	कुंडिको. १४
अजरममरममृतमभयं (ब्रह्म)	नृसिंहो. १।२
अजरममरमक्षरमव्ययं प्रपद्यते	२सन्न्यासो.१७
अजरममृतमभयमशोकमनन्तं	सुबा. ५।१,१४
अजरममृतमभयं ब्रह्मैव...	नृसिंहो. २।३
अजरामरपिण्डो यो जीवन्मुक्तः स एव हि [१यो.शि.	१।१६१
अजरोऽमरोऽभयोऽमृतोब्रह्माभयंहिवै	गोपा. २।१।४
अजरोऽमरोऽमृतोऽभयो ब्रह्म	बृ.उ. ४।४।२५
अजरोऽमृतो न... कर्मणा	कौ. त. ३।९
अजरोऽस्म्यमरोऽस्म्यहं	ते. बिं. ३।२१
अजरोऽस्म्यमरोऽस्मीति	अध्यात्मो. ५५

वाक्य	स्थल
अजरोऽहमव्ययोऽहं	आ. प्र. ४
अजस्यावक्रचेतसः	कठो. ५।१
अजस्रं ज्योतिर्नभसा सर्पदेति	चित्त्यु. ११।८
अजस्रं ब्रह्मचीयाल्मं वाऽग्रेव	मैत्रा. ७।११
अजस्रं सृजति विसृजति वासयति	नृ. पू. २।५
अजस्रं सृजति विसृजतिवासयत्युद्भा- सत उद्भृसते	नृ. पू. २।४
अजस्रां त्वासादयामि	चित्त्यु. १५।१
अजं ध्रुवं सर्वतत्त्वैर्विशुद्धं ज्ञात्वा देवं मुच्यते सर्वपाशैः	श्वेता. २।१५
अजं वरेण्यं वरदं ब्रह्माणमीशं पुरुषं नमस्ते	विष्णुहृ. १।६
अजं सर्वमनुस्मृत्य	अद्वैतो. ४३
अजःकल्पितसंवृत्त्यापरमार्थेननाप्यजः	अ. शां. ७४
अजः स्वतन्त्रः स्वे महिम्नि तिष्ठति	मैत्रा. २।४,६।८
अजाग्रत्स्वप्ननिद्रस्य यत्ते रूपं...	महो. ५।५०
अजाचलमवस्तुत्वं विज्ञानं शान्तमद्वयं	अ. शां. ४५
अजात इत्येवं कश्चिद्भीरुः प्रतिपद्यते	श्वेता. ४।२१
अजातमग्रे स हिरण्यरेताः	एकाक्षरो. २
अजातमभूतमप्रतिष्ठितमशब्दम्	सुबालो. ३।१
अजातशत्रुं काश्यमाव्रज्योवाच (बालाकिः) [बृह. २।१।१+	कौ. उ. ४।१
अजातस्य कुतो नाशः	अध्यात्मो. ५८
अजातस्यैव धर्मस्य जातिमिच्छन्ति वादिनः	अ. शां. ६
अजातस्यैव भावस्य जातिमिच्छन्ति वादिनः	अद्वैतो. २०
अजातस्यैव सर्वस्य...	अ. शां. ७७
अजातं जायते यस्मादजातिः प्रकृतिस्ततः	अ. शां. २९
अजाति समतां गतं	अद्वैतो. ३८
अजातिं ख्यापयन्ति ते	अ. शां. ४
अजातिः परिदीपिता	अ. शां. १९
अजातिः प्रकृतिस्ततः	अ. शां. २९
अजातेस्त्रसतां तेषां	अ. शां. ४३
अजातो ह्यमृतो धर्मो मर्त्यतां कथमेष्यति	अ. शां. ६
अजातो ह्यमृतो भावो मर्त्यतां कथं...	अद्वैतो. २०
अजाद्वै जायते यस्य दृष्टान्तस्तस्य...	अ. शां. १३
अजानता महिमानं तवेदं	भ.गी.११।४१
अजायमानो बहुधा मायया जायते	अद्वैतो. २४
अजायमानो बहुधा विजायते [यजुस्सं.३१।१६+तै.आ.३।१३।३	मुद्गलो. ३।१ चित्त्यु. १३।१
अजामेकां लोहितशुक्लकृष्णां [महाना. ८।४+	ना.पू.ता.५।५
अजाऽहमनजाऽहम्	देव्यु. १
अजा हिङ्कारः	छां. २।१८।१
अजा ह्येका भोक्तृभोगार्थयुक्ता	श्वेताश्वो. १।९
अजान्ह्वैः पृश्नींस्तपस्यमानान् ब्रह्म स्वयम्भ्यभ्यानर्षन्	सह्वै. १३
अजिता हि सदा भूतिः	योगो. २९
अजिह्वः षण्डकः पङ्गुरन्धोबधिर एवच	ना.प.३।६२
अजीर्यताममृतानामुपेत्य जीयन्मर्त्यः	कठो.१।२८
अजेया वैष्णवी माया	कृष्णो. १।५
अजेष्वजमसंक्रान्तं धर्मेषु ज्ञानमिष्यते	अ. शां. ९६
अजेतराऽभवद्रुस इतरः...	बृह. १।४।४
अजे सौम्ये तु ये केचिद्भविष्यंति...	अ. शां. ९५
अजोऽतर्क्योऽचिन्त्यः	मैत्रा. ६।१७
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणः (आत्मा) [भ. गी. २।२०+	कठो. २।१८ भवसं. २।३६
अजोऽपि सन्नव्ययात्मा	भ. गी. ४।६
अजोऽमरश्चैव तथाऽजरोऽमृतः	मुक्ति. २।७५
अजोऽसि सहोऽसि बलमसि देवानां धाम नामाऽसि	महाना. १।१७
अजोऽस्मि किमतः परं	स्कन्दो. ३
अजो हिङ्कारोऽवयः प्रस्तारो गाव उद्गीथोऽश्वाः प्रतिहारः पुरुषो निधनं	छान्दो.२।६।१
अजो ह्येको जुषमाणोऽनुशेते [ना. पू. ता.५।५+	महाना. ८।५+ श्वेता. ४।५
अञ्जलौ मन्थमाधाय	छान्दो. ५।२।६
अज्ञश्चाश्रद्दधानश्च	भ. गी. ४।४०
अज्ञस्य दुःखौघमयं ज्ञस्यानन्दमयं जगत्	वराहो. २।२२
अज्ञस्यार्धप्रबुद्धस्यसर्वंब्रह्मेति योवदेत्	महो. ५।१०५
अज्ञानचक्षुर्नेक्षेत भास्वन्तं भानु- मन्धवत् [वराहो. २।१८+	महो. ४।८०
अज्ञातमपि चैतन्यं प्रमेयमितिकथ्यते	कठरु. ४३
अज्ञातस्त्रसतां तेषां...जातिदोषो न सेत्स्यति (पाठः)	अ. शां. ४३
अज्ञानपङ्कनिर्मग्नं यः समुद्धरते	शिवो. ७।४१

अज्ञानजनबोधार्थं प्रारब्धमिति
वोच्यते ना. बि. २९
अज्ञानजन्यकर्त्रादिकारकोत्पन्नकर्मणा वराहो. २।४८
अज्ञानभूः सप्तपदा ज्ञभूः सप्तपदैव हि महो. ५।१
अज्ञानमलपङ्कं यः क्षालयेज्ज्ञान-
तोयतः। स एव सर्वदा शुद्धो नान्यः
कर्मरतो हि सः जा.द.६।१४
अज्ञानमेव न कुतो जगतः प्रसङ्गो... वराहो. २।७३
अज्ञानसुघनाकारा घनाहङ्कारनाशिनी मुक्तिको.२।६२
अज्ञानहृदयग्रन्थेर्निश्शेषविलयस्तदा अध्यात्मो. १७
अज्ञानं कीदृशं चेति प्रविचार्यमुमुक्षुणा यो.शि.१।१५
अज्ञानं चाभिजातस्य भ. गी. १६।४
अज्ञानं तमसः फलम् भ.गी. १४।१६
अज्ञानं तुच्छाऽप्यसती कालत्रयेऽपि
पामराणां वास्तवी च सत्त्वबुद्धि-
र्लौकिकानामिदमित्थमित्यनिर्व-
चनीया वक्तुं न शक्यते (माया) सर्वसारो. ६
अज्ञानं यदतोऽन्यथा भ.गी.१३।१२
अज्ञानात्तु बहिस्तापेन तापितः
चिदाभासो... योगकुं. ३।३०
अज्ञानादेव संसारः १ यो. त. १६
अज्ञानान्धतमोरूपं वराहो. २।१२
अज्ञानान्मलिनो भाति ज्ञानाच्छुद्धो
विभात्ययं (आत्मा) जा. द. ५।१४
अज्ञानां कर्मसङ्गिनाम् भ. गी. ३.२६
अज्ञानां भावनार्थाय प्रतिमाः परि-
कल्पिताः जा. द. ४।५९
अज्ञानिकृतमार्गं सुष्ठु वदन्ति स्वसंवे. ३
अज्ञानेनावृतं ज्ञानं भ. गी. ५।१५
अज्ञानेनोपहतो बाल्ये यौवने
वनिताहतः महो. ६।२३
अज्ञानेबुद्धिविलयेनिद्रासाभण्यतेबुधैः वराहो.२।५६
अज्ञासिषं पूर्वमेवमहमित्यथ तत्पितुः महो. २।१७
अञ्जनागर्भसम्भूत...हनूमन्नक्ष रक्ष लांगूलो. ३
अञ्जलौ मन्थमाधाय छां. उ.५।२।६
अणिमादिकमैश्वर्यमचिरात्तस्यजायते यो.शि.२।७,२०
अणिमादिपदं प्राप्य राजते... यो.शि.१।१३८
अणिमादिर्भजत्येनं यूनं वरवधूरिव रामर. ४।७
अणिमाद्यष्टैश्वर्याशासिद्धसङ्कल्पोबन्धः निरा. २१
(?) अणिष्ठो वाङ्गोऽङ्गे समानयति मै. २।६

अणीयान् ह्यतर्क्यमणुप्रमाणात् कठो. २।८
अणीयान् व्रीहेर्वा यवाद्वा (आत्मा) छां.उ.३।१४।३
अणुकोटरविस्तीर्णेत्रैलोक्यंचेज्जगद्भवेत् ते. बि. ६।८७
अणुत्वे सति चैतन्यं भवसं. २।३१
अणुमात्रलसद्रूपमणुमात्रमिदं जगत् ते. बि. ६।४०
अणुमात्रेऽपि वैधर्म्ये जायमाने... अ. शां. ९७
(?) अणुमेतमाप्य स मोदते कठो. २।१३
अणु रक्ताश्च पीताश्च... क्षुरिको. ८
(?) अणुरेष धर्मः कठो. १।२१
अणुः पन्था विततः पुराणः बृह. ४।४।८
अणोरणीयानहमेव तद्वत् कैव. २०
अणोरणीयान्महतो महीयान् कठो. २।२०
[+ना. प.९।१३ +शरभो. १९+ महाना. ८।१
ना. उ. १।३+ पात्मा. ९।३
अणोरणीयांसमनुस्मरेद्यः भ. गी. ८।९
अणोरणीयांसमिममात्मानमोङ्कारं
नो व्याचक्ष्व नृसिंहो. ५।१
अणोरप्यण्व्यं ध्यात्वा मैत्रा. ६।३८
(?) अणोश्चाणुर्द्विरणुः कण्ठदेशे मैत्रा. ७।११
अण्डपरिपालकमहाविष्णोः स्थिति-
प्रलयौ...अहोरात्रे एकं दिनं त्रि.म.ना. ३।५
अण्डजंजीवजंभूतजमिति (बीजत्रयं) छान्दो. ६।३।१
अण्डजं स्वेदजमुद्भिज्जं जरायुजं...
मनुष्यमजीजनत् बहृचो. १
अण्डजानि च जारुजानि च
स्वेदजानि चोद्भिज्जानि... २ ऐत. ५।३
अण्डजान् स्वेदजान्वापि अ. शां. ६३
अण्डजाः सर्वखगरूपा जायन्ते ना. पू. ५।६
अण्डस्थानि तानि तेन विना
स्पन्दितुं चेष्टितुं वा न शेकुः पैङ्गलो. १।५
अण्डंज्ञानाग्निनातप्तंलीयतेकारणैःसह योगकुं. ३।२३
अण्डं ज्ञानाग्निना दग्धं कारणैः सह
परमात्मनि लीनं भवति पैङ्गलो. ३।४
अण्डाकृति तिरश्चां च द्विजानां च
चतुष्पदाम् त्रि. ब्रा. २।५९
अण्डाद्ब्रह्मा भवति [अ.शिरः ३।१५+ बटुको. २७
अण्डाद्ब्रह्माऽभवत् गायत्रीर. १
अण्व्य इवेमा धाना भगवः... छांदो.६।१२।१
अत ऊर्ध्वमनशनमपां...वा गच्छेत् कठरु. ३
अत ऊर्ध्वममन्त्रवदाचरेत् आरु. २

अत ऊर्ध्वं न संशयः — भ. गी. १२।८
अत ऊर्ध्वं मर्दयेद्गुल्फेन — बृ. जा. ३।१
अत ऊर्ध्वं विमोक्षाय ब्रूहि — बृह. ४।३।१४
अत एकेनैव भवति — बृह. १।४।७
अत एव न निमित्तमत एव न विद्या — स्वसंवे. १
अत एव शुद्धोऽवाप्यस्वरूपो
  बुद्धः सुखस्वरूप आत्मा — नृसिंहो. ९।६
अतएव सुमेरुदातारो गोदातारो वा — स्वसंवे. २
अत एवोच्यतेऽज्ञयाऽनन्ताऽलक्ष्या-
  ऽजैका नैकेति — देव्यु. २०
अतएवहि(?)कालाग्निरधस्ताच्छक्तिरूर्ध्वगा — बृ. जा. २८
अत ओमित्युक्तेनैताः प्रस्तुता
  अर्चिता...भवंति — मैत्रा. ६।५
अतस्त्वार्थवदल्पं च — भ.गी.१८।२२
अतन्द्रो देवः सदमेव प्रार्थः — चित्त्यु. १४।२
अतद्व्यावृत्तिरूपोऽसौसमाधिर्मुनिभावितः — मुक्तिको.२।५५
अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुते
  [ऋक्सं. ७।३।८=मं. ९।८।३ — सुदर्श. ५
अतमाविष्टमागच्छति — मैत्रा. ६।२४
अतमाः सच्चिदानन्दरूपः — नृसिंहो. ७।१
अन्तरतोऽलोमका हि योनिरन्तः
  [अतरतः-मा. पा.] — बृ. उ. १।४।६
अन्तरा यदाकाशः स समानः — प्रश्नो. ३।८
अतर्क्यमणुप्रमाणात् — कठो. २।८
अतर्क्योऽचिन्त्यः (आत्मा) — मैत्रा. ६।१७
अतश्च कारणं नित्यमेकमेवाद्वयं खलु — पं. ब्र. ३३
अतश्च विश्वा ओषधयो रसाश्च येनैष
  भूतस्तिष्ठत्यन्तरात्मा — महाना. ८।३
अतश्च सर्वा ओषधयो रसाश्च येनैष
  भूतैस्तिष्ठते ह्यन्तरात्मा — मुण्ड. २।१।९
अतश्चात्मनि कर्तृत्वमकर्तृत्वं च — महो. ४।१४
अतश्चिद्घन एव, नह्ययमोतोनानुज्ञाता — नृसिंहो. ८।५
अतश्चिरं ध्यात्वाऽमन्यतान्यतात्मानो
  वैतेऽसुराः — मैत्रा. ७।१०
अतस्तद्विपरीतो मुक्तः — मैत्रा. ६।३०
अतसीपुष्पसंकाशं नाभिस्थाने प्रति-
  ष्ठितं...महाविष्णुं विचिन्तयेत् — ध्या. बिं. ३०
अतस्तमोर्वेव सः — मैत्रा. ६।२६
अतस्ताभिःसहैवोपर्युपरिलोकेषुचरति — मैत्रा. ४।६
अतः कल्याणमकरवमित्युभे उ... — बृह. ४।४।२२

(?) अतः कार्यमजं यदि — अ. शां. १२
अतः परं नान्यदणीयसं हि परात्परं — महाना. १।५
(?) अतः परमाकाशम् — मैत्रा. ६।३८
अतः परं ब्रह्मभूतोभूतात्मानोपलभ्यते — आयुर्वे. २७
अतः पराऽस्य धारणा — मैत्रा. ६।२०
(अथ) अतः पवमानानामेवाभ्यारोहः — बृह. १।३।२८
अतः पापमकरवं — बृह. ४।४।२२
अतः पुरुषोऽध्यवसाय...बद्धः — मैत्रा. ६।३०
अतः पौरुषमाश्रित्य चित्तमाक्रम्य... — महो. ४।१०४
अतः प्रपञ्चानुभवः सदा नहि — वराहो. २।३१
अतः प्रैतीं तदिदं सर्वमत्ति... — १ ऐत. १।२।७
अतः सद्ब्रह्मणि सत्यभिलाषिणि
  निवृत्तो...सुखमाक्रम्य तिष्ठति — मैत्रा. ६।३०
अतः समुद्रा गिरयश्च सर्वेऽस्मात्स्यंदते
  सिंधवः सर्वरूपाः [मुण्ड.२।१।९ — महाना. ८।३
अतः सम्मोहंछित्त्वानक्रोधान्स्तुन्वानः — मैत्रा. ६।३८
(अथ) अतः सर्वजितः कौषीतके-
  स्त्रीण्युपासनानि भवन्ति — कौ. उ. २।७
अतः सर्वं जगच्चित्तगोचरम् — मं. ब्रा. ५।१
अतः सर्वा ओषधयो रसाश्च [मा.पा.] — मुण्ड. २।१।९
(अथ) अतः सांयमनं प्रातर्दनमान्तर-
  मग्निहोत्रमित्याचक्षते — कौ. उ. ४५
अतिज्वलन्नतिसर्वतोमुखः — नृसिंहो. ७।३
अतिघ्नीमानन्दस्य गत्वा शयीतैवमेष
  एतच्छेते — बृह. २।१।१९
अतितरामात्मानन्दे मग्ना अन्यरसं
  न भावयन्ति — सामर. ७५
अतिथयश्च स्वाध्यायप्रवचने च — तैत्ति. १।९।१
अतिथिदेवो भव — तैत्ति.१।११।२
अतिथिर्नमस्यः, नमस्तेऽस्तु — कठो. १।९
अतिदिव्यमङ्गलाकारं [ब्रह्म] — त्रि.म.ना. ४।१
अतिदीर्घे जीविते को रमेत — कठो. १।२८
अतिद्युम्न एव ब्राह्मणं ब्रूयात् — ३ ऐत. १।३।४
(?) अतिधन्वा शौनकः — छां. उ. १।९।३
अति नमाम्यत्यहं भूत्वा — नृसिंहो. ७।६
अतिनिर्मलानन्तकोटिरविप्रकाशैक-
  स्फुलिङ्गं (परं ब्रह्म) — त्रि.म.ना.७।७
अतिनृसिंहोऽतिभीषणः — नृसिंहो. ७।७
अतिपिता बताभूरतिपितामहो... — बृ.उ. ६।४।२८
अतिप्रश्नान् पृच्छसि ब्रह्मिष्ठोऽसीति... — प्रश्नो. ३।२

अतिबाह्यंतथाबाह्यमन्तराभ्यन्तरं भिय:	महो. २।७३
अतिभद्रोऽतिमृत्युमृत्युरतिनमामि	नृसिंहो. ७।६
अतिभयङ्करज्वर-माहेश्वरज्वर- विष्णुज्वर...भेदय भेदय ॐ ह्रांह्रीं-	लांगूलो. ४
अतिभावस्वरूपोऽहं	ते. बिं. ३।३४
अतिमहानतिविष्णुरतिज्वलन्नति- सर्वतोमुखः	नृसिंहो. ७।६
अतिमानुषचेष्टादि तथा सामर्थ्यं...	१ यो. त. ५५
अति मा स्रुजैनम्	कठो. १।२१
अतिमुच्य धीराः प्रेत्यास्मात्...	केनो. १।२
अतिमृत्युमृत्युरतिनमाम्यत्यहं भूत्वा	नृसिंहो. ७।६
अतिमोक्षा अथ सम्पदः	बृह. ३।१।६
अतिमोहकरी माया मम विष्णोश्च...	शरभो. २२
अतिवर्णाश्रमंरूपंसच्चिदानन्दलक्षणम्, यो न जानाति सोऽविद्वान्	वराहो. २।६
अतिवर्णाश्रमाणां तु स्मशानाग्नि- समुद्भवं (भस्मोपयुक्तम्)	बृ. जा. ५।७
अतिवर्णाश्रमी योगी अवधूतः सकथ्यते	१ अवधू. २
अतिवादांस्त्यजेत्तर्कान्	ना. प. ५।३६
अतिवाद्यसीत्यतिवाद्यस्मीति ब्रूयात्	छां.उ.७।१५।४
अतिवादांस्तितिक्षेत	ना. प. ३।४२
अतिष्ठाःसर्वेषांभूतानांमूर्धाराजेतिवा	बृह. २।१।२
अतिशून्यो विमर्दश्च भेरीशब्दः...	सौभाग्य. १२
अतिसर्वतोमुखोऽतिनृसिंहोऽतिभीषणः	नृसिंहो. ७।६
अतिसिंहोऽतिभीषणोऽतिभद्रः	नृसिंहो. ७।६
अतिसूक्ष्मां च तन्वीं च शुक्लां नाडीं समाश्रयेत्	क्षुरिको. ९
अतिसृष्टयां ह्यस्यैतस्यां भवति य एवं वेद	बृह. १।४।६
अतिसेवापरभक्तगुणवच्छिष्यायवदेत्	दत्तात्रे. १।३
अतिह्रस्वः (इतित्रिः)	ग. शो. २।३
अतीतः सर्वभावेभ्यो वालाग्रादप्यहं तनुः...मोक्षाय निश्चयो जायते	महो. ६।५६
अतीतानागतं वेत्ति खेचरी च भवेद्ध्रुवम्	१ यो.त. १२७
अतीतान्न स्मरेद्भोगान्न तथाऽनाग- तानपि। प्राप्तांश्च नाभिनन्देद्यः स कैवल्याश्रमे वसेत्	ना. प. ३।२५
अतीतो भवति प्रभो	भ.गी.१४।२१
अतीन्द्रियं गुणातीतं मनो लीनं यदा भवेत्। अनूपमं शिवं...सदाविशत्	ना. बिं. १८
अतीन्द्रो हैव देवानामभिप्रवव्राज (माघवपा.)	छां. उ. ८।७।२
अतीव गोप्याथ भवता प्रयत्नतो देया परस्मै न...(उपनिषत्)	१ बिल्वो. १४
अतीवनिर्मलीभूतंसानन्दंचसुलीनकं	अमन. २।९७
अतुले त्वतुलायां हि हरिरेकोऽस्ति नान्यथा	तुलस्यु. ७
(?) अतृणमहमन्तरिक्षे पौलोमान् पृथिव्यां कालकाञ्जान्	कौ. उ. ३।१
अतेजस्कमप्राणममुखममात्रं	बृह. ३।८।८
अतो ज्यायांश्च पूरुषः [ऋक्सं. मण्ड. १०।९०।३–यजुः ३१।३	८।४।१७= चित्त्यु. १२।१
अतो देवा अवन्तु इत्येतन्मन्त्रैः... धारयेत (गोपीचंदनं)	वासुदे. ३
अतो देवाअवन्तुनोयतोविष्णुर्विचक्रमे [ऋक्सं.१।२।७।१=मं. १।२२।१६	ना. पू.ता.३।१
'अतो देवा अवन्तु नः' इति विष्णु- गायत्र्या...अभिमंत्र्य	ऊर्ध्वपुं. २
'अतो देवा अवन्तु नः' इत्येताभिः अभिमंत्र्य	गोपीचं. ३
अतो दैवः परिमर एतद्वै ब्रह्म	कौ. उ. २।१२
अतो दैवस्मरो यस्य प्रियो बुभूषेत्	कौ. उ. २।४
अतोऽद्भिर्भूय एवोपरिष्टात्परिदधाति	मैत्रा. ६।९
अतोऽनग्निहोत्र्यनग्निचिदज्ञानभिध्या- यिनां ब्रह्मणः पदव्योमानुस्मरणं विरुद्धं	मैत्रा. ६।३४
अतो निर्विषयंनित्यं मनःकार्यंमुमु- क्षुणा...मनसो मुक्तिरिष्यते	त्रि. ता. ५।१
अतो नैनामभिधीयेत	मैत्रा. ७।९
अतोऽन्नमात्मेत्युपासीतेत्येवं ह्याह	मैत्रा. ६।१२
अतोऽन्नेनैवजीवन्त्यथैतदपियन्त्यन्ततः	मैत्रा. ६।११
अतोऽन्यतममेतेषामुक्तं तदिमे मूढाः	मैत्रा. ७।१०
अतोऽन्यदार्तं [बृह.३।४।२+३।५।१+	३।७।२३
अतो मृत्युञ्जयायेत्थममृतप्लावनंसताम्	बृ. जा. २।१४
अतो यद्वेदेष्वभिहितं तत्सत्यं	मैत्रा. ७।१०
अतो यो रसोऽस्रवत्स उद्गीथं वर्षति	मैत्रा. ६।३७
अतो लोके वेदे श्रीराधा गीयते	सामर. ३
अतोऽविशेषविज्ञानं विशेषमुपगच्छति	मैत्रा. ६।२४

अतो बह्यात्म्यकार्पण्यं...यथा न जायते किश्चित्	अद्वैतो. २
अतो यंचल दुर्निष्प्रपतरं...अन्नमसि	छां. ५।१०।६
अतोऽस्मि लोके वेदे च	भ.गी.१५।१८
अतो हि सर्वाणि कर्माण्युत्तिष्ठन्ति	बृह. १।६।३
अतो हि सर्वाणि नामान्युत्तिष्ठन्ति	बृह. १।६।१
अतो हि सर्वाणि रूपाण्युत्तिष्ठन्ति	बृह. १।६।२
अत्ता विश्वस्य सत्पतिः	प्रश्नो. २।११
अत्ति ह वै नामैतदत्त्रिरिति	बृह. २।२।४
अत्तृत्वादमृत्वाद्वीरत्वान्महत्त्वा-त्त्रिण्णुत्वात्	नृसिंहो. ७।५
अत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलं [ऋक्सं.८।४।१७= यजुः ३१।१+चित्त्य. १२।१	मं. १०।९०।१ श्वेता. ३।१४
अत्यन्तमलिनादेहो देहीचात्यन्त-निर्मलः। उभयोरन्तरं ज्ञात्वाकस्य शौचं विधीयते [जा. द. १।२+	मुक्ति. २।६७
(?)अत्यन्तमात्मानमाचामकृत्ते...	छां.उ.२।२३।९
अत्यन्तं पश्यति प्रिय भवति	छा. ५।१३।२
अत्यन्तं सुखमश्नुते	भ. गी. ६।२८
अत्यन्तं वासनाबद्धो जीवः	सामर. १००
अत्यन्तान्तःकरणमलिनविशेषात्	त्रि.म.ना. ५।३
अत्यर्थमचलंनित्यमादिमध्यांतवर्जितं	जा. द. ९३
अत्यल्पमपिनैवेम...ब्रह्मभूयायकल्पते	सि. शि. २६
अत्यानन्दोऽस्य लोकः	सामर. ४९
अत्याशनाद्गनीपानाद्यच्च उग्रात्प्रति-ग्रहात् । तन्नो वरुणो...ह्यवमर्शतु	महाना. ५।१८
अत्याश्रयं गतो रुद्रो बद्धाञ्जलिः सन् नारायणं स्तौति	सामर. ५४
(?)अत्याश्रमस्थः सकलेन्द्रियाणि	कैव. ५
अत्याश्रमाणांमध्ये लिङ्गधारी श्रेष्ठः	लिङ्गो. १
अत्याश्चर्यानन्तविभूतिसमष्ट्याकारं	त्रि.म.ना. ६।६
अत्याहारमनाहारंनित्यंयोगीविवर्जयेत्	अ. ना. २८
अत्युग्रोऽतिवीरोऽतिमहानतिविष्णुः	नृसिंहो. ७।६
अत्येति तत्सर्वमिदं विदित्वा	भ. गी. ८।२८
अत्र कारणमद्वैतं शुद्धचैतन्यमेव हि	पञ्चब्र. ३४
अत्रकोमोहःकःशोक एकत्वमनुपश्यतः	वराहो. ४।४२
अत्र दृष्टं नाम प्रत्ययम्	मैत्रा. ६।१०
अत्र निशाकर-चतुर्मुख-दिग्वातार्क-वरुणाश्व्यग्नीन्द्रोपेन्द्रप्रजापतियमा इत्यक्षाधिदेवतारूपैः...प्राणा एव	त्रि. ब्रा. ५
अत्र पिताऽपिता भवति	बृह. ४।३।२२
अत्र यजमानः परस्तादायुषः स्वाहा	छां.उ.२।२४।६
अत्रावकिलसत्सोम्यननिभालयसे..	छां. ६।१३।२
अत्र शूरा महेष्वासाः	भ. गी. १।४
अत्र स्तेनोऽस्तेनो भवति	बृह. ४।३।२२
(?)अत्र रामोऽनन्तरूपः	रामो. ४।५
अत्र ह न किंचन वीयाय	छान्दो.४।९।३
अत्रहि जन्तोःप्राणेषूत्क्रममाणेषुरुद्र-स्तारकंब्रह्मव्याचष्टे [जाबालो.१+ रामो. १।१+	तारसा. १।१
अत्र हि भिदामेव मन्यमानः शतधा सहस्रधा भिन्नः...मृत्युमाप्नोति	नृसिंहो. ८।७
अत्र हि सर्वे कामाः समाहिताः	मैत्रा.६।३०,३५
अत्र हि सर्वेकामाःसमाहिताइत्यत्रो-दाहरन्ति [मैत्रा.	६।३०,३५,३८
अत्र ह्यस्यैते सत्याःकामास्तद्यथापि (मा. पा.)	छां. उ. ८।३।२
अत्र ह्यस्यैते सत्याः कामा अनृता-पिधानास्तद्यथापि...	छान्दो.८।३।२
अत्र ह्येते सर्वे एकं भवन्ति	बृह. १।४।७
अत्र ह्येव न विचिकित्स्यमित्यों	नृसिंहो. ९।९
अत्रात्मत्वं दृढीकुर्वन्	अध्यात्मो. १८
अत्रान्तरंब्रह्मविदो (वेदविदो)विदित्वा	श्वेता. १।७
(?)अत्रान्तरा यदाकाशः स समानः	प्रश्नो. ३।८
अत्रायं पुरुषः स्वयञ्ज्योतिर्भवति	बृह.४।३।९,१४
अत्रैतदेकशतं नाडीनां...एकै-कस्यां...व्यानश्चरति	प्रश्नो. ३।६
(अथ) अत्रैतद्दहरं पुण्डरीकं कुमुद-मिवानेकधाविकसितंयथाकेशः...	सुबालो. ४।४
अत्रैव ते लयं यान्ति लीनाश्चा-व्यक्तशालिनः	मंत्रिको. २०
अत्रैव मा भगवान्मोहान्तमापीपिबत्	बृह. ४।५।१४
अत्रैव मा भगवानमूमुहन्न प्रेत्य संज्ञाऽस्तीति	बृह. २।४।१३
अत्रैव समवलीयन्ते (प्राणाः)	बृह. ३।२।११
अत्रैष देवः स्वप्ने पश्यति	प्रश्नो. ४।६
अत्रैष देवः स्वप्ने महिमानमनुभवति	प्रश्नो. ४।५
अत्स्यन्नंपश्यसिप्रियमत्त्यन्नंपश्यति... [१३।२+१४।२+१५।२+१६।२	छां.५।१२।२+

वाक्य	स्थल
अथ कबन्धीकात्यायन उपेत्यपप्रच्छ	प्रश्नो. १।३
(?)अथ कर्म कुर्वीय	बृ.उ.१।४।१७
अथ कर्मणामात्मेत्येतदेषामुक्थम्	बृ. उ. १।६।३
अथ किमेतैर्वान्यानां शोषणं महार्णवानां...ध्रुवस्य प्रचलनं...	मैत्रे. १।३
अथ कुंभकः, स द्विविधः सहितः केवलश्चेति	शांडि.१।७।१४
अथ कृत्स्नक्षय एकत्वमेति पुरुषस्य	मैत्रा. ४।६
अथ केन प्रयुक्तोऽयं	भ. गी. ३।३६
अथ कौण्ठरव्यस्त्रीणि षष्टिशतान्यक्षराणां	३ ऐत. २।१।१
अथ खलु क्रतुमयः पुरुषः	छांदो.३।१४।१
अथ खलु य उद्गीथः स प्रणवः	छांदो. १।५।१
अथ खलु सौम्येदं पारिव्राज्यं नैष्ठिकं	शाट्याय. २६
अथ खलूद्गीथाक्षराण्युपासीत	छां. उ. १।३।४
अथ खल्वमुमादित्यं सप्तविधं सामोपासीत	छां. उ. २।९।१
अथ खल्वात्मसम्मितमतिमृत्यु सप्तविधं सामोपासीत	छांदो.२।१०।१
अथ खल्वाहुर्निर्भुजवक्त्राः	३ ऐत. १।५।१
अथ खल्वियं दैवी वीणा भवति	३ ऐत. २।५।२
अथ खल्वियं सर्वस्यै वाच उपनिषत्	३ ऐत. २।५।१
अथ चक्षुरत्यवहत्	बृह. १।३।१४
अथ च रामकृष्णाद्यवतारेष्वद्वैतपरमानन्दलक्षणपरब्रह्मणः परम..श्रूयते	त्रि.म.ना. २।४
अथ चित्तं समाधातुं	भ. गी. १२।९
अथ चेदशक्नुवन्तं मन्येत प्राणं वशं	३ ऐत. १।४।१
अथ चेत्त्वमहङ्कारात्	भ.गी.१८।५८
अथ चेत्त्वमिमं धर्म्यं	भ. गी. २।३३
अथ चेदशुभोभावस्त्वांयोजयति	मुक्तिको. २।४
अथ चैनं नित्यजातं	भ. गी. २।२६
अथ जुहोति नम आदित्येभ्यश्च विश्वेभ्यश्च...	छां. २।२४।१४
अथ जुहोति नमोऽग्नये पृथिवीक्षिते...	छां. २।२४।५
अथ तत ऊर्ध्व उदेत्य नैवोदेता	छां.उ.३।११।१
अथैतथैवोपास्तेऽत्रैवान्वायत्तो भवति	आर्षे. ४।३
अथतथोपास्तेऽन्वायत्तोहैवास्मिन्भवति	आर्षे. २।३
अथ तस्य भयं भवति	तैत्ति. २।७
अथ तस्यायमादेशः	नृसिंहो. २।७
अथ तर्हीत एव समतिसृष्टाः...	छां. १।११।३
अथ तु कामकलाभूतं कामकूटमाहुः	त्रि. ता. १।१०
अथ तावपि(द्वावहङ्कारौ)सन्त्यज्य सर्वाहङ्कृतिवर्जितः	महो. ५।९६
अथ तैरेव रश्मिभिरूर्ध्वमाक्रमते (ऊर्ध्व आक्रमते—मा. पा.)	छां. उ. ८।६।५
अथ दक्षिणाद्दुपनिष्क्रामतितंपिता..	कौ. उ. २।१५
अथ दैवीः (समाज्ञाः)	तैत्ति.३।१०।१
अथ धीरा अमृतत्वं विदित्वा ध्रुवमध्रुवेष्विह न प्रार्थयन्ते	कठो. ४।२
अथ नध्यायतेजन्तुरालस्याच्चप्रमादतः	यो.शि. १।७६
अथ नामधेयं सत्यस्य सत्यम्	बृह. २।३।६
अथ नारदः पितामहमुवाच	ना. प. ६।१
अथ नु मीमांस्यमेव ते मन्ये विदितं	केनो. २।१
अथ नोचेत्समुत्स्रष्टुं स्वशरीरं प्रियं यदि	१यो.त. १०८
अथ परमतत्त्वरहस्यंजिज्ञासुःपरमेष्ठी..	त्रि.म.ना.१।१
अथ परमात्मानाम यथाक्षर उपासनीयः	१ आत्मो. ३
अथ परा यया तदक्षरमधिगम्यते	मुंड. १।५
अथ पितामहः स्वपितरमादिनारायणं...पप्रच्छ	प. हं. प. १
अथ पुत्रमाह—त्वं ब्रह्म त्वं यज्ञस्त्वं लोक इति	बृह. १।५।१७
अथ पुनरव्रती वा व्रती वा...विरजेत्	जाबा. ४
अथ पूर्वस्थितो लिङ्गे गर्भः...	शिवो. २।१
अथ पैप्पलादो भगवान्भो किमादौ किं जातं, सद्योजातं...	पं. ब्र. १
अथ प्रणिपत्य कात्यायनो ब्रह्माणमन्वयुङ्क्त	कात्याय. १
(?) अथ प्राणमत्यवहत्	बृ.उ.१।३।१३
अथ प्रणिपत्य नारदो ब्रह्माणं प्रायुङ्क्त	नारदो. १
अथ ब्रह्मस्वरूपं कथमिति नारदःपप्रच्छ	ना. प. ९।१
अथ ब्राह्मणः, स ब्राह्मणः केन स्यात्	बृह. ३।५।१
अथ ब्रह्माजन्मद्वारेणब्रह्माण्डान्तर्गतं..	ग.शो..३।६
अथ ब्रह्माणं भगवन्तं सनत्कुमारः पप्रच्छ	ना. पू. १।१
अथ भगवन्तं...कमलासनं सनत्कुमार उपससार	सूर्यता. १।१
अथ भगवान् कात्यायनः(न्यः) सुप्रीतोऽब्रवीद्राजानम्	मैत्रे. १।४

अथ भगवान् शाण्डिल्य:परमेष्ठिनं... अधीहि भो ब्रह्मेति — गान्धर्वो. १
अथ भर्गः...भामिर्गमिरस्य हीति भर्गः — मैत्रा. ६।७
अथ भारद्वाजः कुमारं पप्रच्छ — मि. शि. १
अथ भुसुण्डः कालाग्निरुद्रं...(भस्म-) माहात्म्यं ब्रूहि... — बृ. जा. ६।१
अथ भुसुण्डः कालाग्निरुद्रं विभूति-योगमनुब्रूहीति होवाच — बृ. जा. ३।१
अथ भुसुण्डः...भस्मस्नानविधिं... — बृ. जा. ४।१
अथ मर्त्योऽमृतो भवत्यत्र ब्रह्म समश्नुते [कठो. ६।१४+ — बृह. ४।४।७
अथ मा प्रातरुपसीदथाः — छां. ६ १३।१
अथ य आत्मा स सेतुः — छां. उ. ८।४।१
अथ य इच्छेत्पुत्रो मे पण्डितो विगीतः.. (विजिगीतः-मा. पा.) — बृ. उ. ६।४।१
(?)अथ मूत्रद्वारेण निष्क्रान्तं — मैत्रा. ३।४
अथ य इमाः परा सम्पद्यमाना एवोपास्ते — आर्षे. ८।४
अथ य एवं वेद ब्रह्मवशः स्यात् — २ प्रणवो. ९
अथ यच्छुद्धे अक्षरे अभिव्याहरति — ३ ऐत. ३।२
अथ यतेर्नियमः कथमिति पृष्टे... पितामहः...विरक्तः सन् यो... — ना. प. ७।१
अथ यदतः परो दिवो ज्योतिर्दीप्यते विश्वतः पृष्ठेषु... — छां.उ.३।१३।७
अथ यदा सुषुप्तो भवति यदा न कस्यचन...वेद — बृ.उ.२।१।१९
अथ यदि ते कर्मविचिकित्सा वा वृत्तविचिकित्सा वा स्यात् — तैत्ति.१।११।३
अथ यदिदमस्मिन्ब्रह्मपुरे दहरं — छां.उ. ८.१.१
अथ यदि द्विमात्रेण मनसि सम्पद्यते — प्रश्नो. ५।४
अथ यदि महज्जिगमिषेत् — छान्दो.५।२।४
अथ यदु चैवास्मिञ्छव्यं कुर्वन्ति — छां. ४।१५।५
अथ यदुत्तरं सा द्यौर्मूर्तिमत्स्वगृहे-ष्वभिजायते — संहितो. ४।२
अथ यद्यज्ञ इत्याचक्षते ब्रह्मचर्यमेव — छां.उ. ८।५।१
अथ यद्यल्पविच्चित्तवान् भवति — छान्दो.७।५।२
अथ यद्युदक आत्मानं पश्येत् (परिपश्येत्—मा. पा.) — बृ. उ. ६।४।६
अथ यद्येनमूष्मसूपालभेत प्रजापतिं... — छांदो.२।२२।४
अथ यद्येनं निर्भुजं ब्रुवन्तमुपवदेत् — ३ऐतरे. ३।१
अथ यद्येनं निर्भुजंब्रुवन्तं परउपवदेत् — ३ ऐतरे. ३।३
अथ यद्येनं प्रतृण्णं ब्रुवन्तमुपवदेत् — ३ ऐतरे. ३।१
अथ यद्येनं प्रतृण्णंब्रुवन्तं परउपवदेत् — ३ ऐतरे. ३।३
अथ यद्वपितमिव विरुदितमिव सा वाक् शद्रूः — संहितो. १।२
अथ यद्वयमनुसंहितमृचो ब्रीमहे — ३ ऐत. २।६।३
अथ यस्य जायामार्तवं विन्देत् त्र्यहं कंसेन पिबेत् — बृह. ६।४।१३
अथ या एता हृदयस्य नाड्यस्ताः... — छां. उ. ८।५।१
अथ या मध्यायनी संपूर्णा संसृष्टा... वाक् सा पुन्यपशव्या — संहितो. १।४
अथ यावतीयंत्रयीविद्या...एतद्वितीयं पदमाप्नुयात् — गायत्र्यु. ४
अथ यावदिदं प्राणिति यस्तावत्प्रति-गृह्णीयात् — गायत्र्यु. ५
अथ येऽस्य दक्षिणा रश्मयस्ता एवास्य दक्षिणा मधुनाड्यः — छां.उ. ३।२।१
अथ यो दक्षिणे प्रमीयते पितॄणामेव महिमानं गत्वा... — महाना. १८।१
अथयोऽन्यांदेवतामुपास्तेऽन्योऽसौ... — बृह. १।४।१०
अथ रात्रावग्निहोत्रभस्मनाऽग्नेर्भसित-मिदं विष्णुस्त्रीणि पदेति मंत्रैः... — वासुदे. १६
अथर्वणस्य शाखाः स्युः पञ्चाशद्भे-दतो हरे — मुक्तिको.१।१३
अथर्वणवेदसिद्ध स्थिरकालाग्नि-निराहारक... — लांगूलो. ३
अथर्वणां चन्द्रमा दैवतं तदेव ज्योतिः — २ प्रणवो. २१
अथर्वणे यां प्रवदेत ब्रह्माऽथर्वा तां... — मुण्ड. १।१।२
अथर्ववेदश्चतुर्थः पादः (गायत्र्याः) — गायत्रीर. ३
अथर्ववेदस्वरूपकंपञ्चाशत्स्वरवर्णाख्यं — पं. ब्र. ११
अथर्ववेदेऽनुदात्तोदात्तद्विपद अ उ इत्यर्ध...मात्राः — २ प्रणवो. १२
अथर्वशिरश्शिखाध्यापकशतमेकमेकेन तापनीयोपनिषदध्यापकेन तत्समं — नृ. पू. ५।१६
अथर्वशिरः सकृज्जप्त्वा — अ.शिरः १६
अथर्वश्चतुर्थः पादः — ग.पू १।१३
अथर्वाङ्गिरस इतिहासः पुराणं [+४।१।२+ — बृ.उ. २।४।१० ४।५।११
अथर्वाङ्गिरस एव मधुकृत इतिहास... — छान्दो. ३।४।१
अथर्वाङ्गिरसरूपसामऋग्यजुरात्मकम् — सीतो. १४

अथर्वाङ्गिरसः पुच्छः प्रतिष्ठा — तैत्ति. २।३
अथर्वाङ्गिरसश्चतुर्थात् (पादादकल्पयन्) — अव्यक्तो. ६
अथर्वा तां पुरोवाचाङ्गिरे ब्रह्मविद्यां — मुं.उ. १।१।२
(?)अथर्वा दैवो मृत्योः प्राध्वंसनान् — बृ. उ. २।६।३
अथवा कृतकृत्येऽपि...वर्तेऽहं... — अवधू. २३
अथवाग्नीश्वरीधामशिरोवस्त्रेण वेष्टयेत् — योगकुं. २।३२
अथवाचतुर्विंशतिवर्षाणिगुरुकुलवासी — आश्रमो. १
अथ लोकान् पर्यटन् सनत्कुमारो ह वैदेहः...लोकान्...प्राप — लक्ष्म्यु. १
अथवा तमपि त्यक्त्वा चैत्यांशं... जीवस्तिष्ठति संशांतो... — अ. पू. २ ११
अथवा न कुर्याद्वामेय्यामेव कुर्यात् — याज्ञव. १
अथवा नित्यकर्माणि...प्रत्याहारःसः — जा. द. ७।४
अथवा बहुनैतेन — भ.गी. १०।४२
अथवा यथाविधिश्चेज्जातरूपधरोभूत्वा — ना. प. ३।८७
अथवा योगिनामेव — भ. गी. ६।४२
अथ वायुमब्रुवन्, वायवेतद्विजानीहि किमेतद्यक्षमिति — केनो. ३।७
अथवा वायुमाकृष्य...प्रत्याहारोऽयमुक्तस्तु... — जा.द. ७।६-९
अथवा सत्यमीशानं ज्ञानमानन्दमद्वयं — जा. द. ९।३
अथवा सर्वकर्तृत्वमकर्तृत्वं च... सर्वं त्यक्त्वा...स्थिरो भव — महो. ६।४
अथ वेशान्तान् पुष्करिणीः स्रवन्तीः सृजते स हि कर्त्ता — बृ.उ. ४।३।१०
अथवेशान्तान्पुष्करिण्यःस्रवन्त्यः (मा.) — बृ.उ.४।३।१०
अथ वै तेऽहं तद्वक्ष्यामि यत्र गमिष्यामीति — बृह. ४।२।१
अथ व्यवस्थितान् दृष्ट्वा — भ. गी. १।२०
अथ शाकल्यस्य—पृथिवी पूर्वरूपं — ३ ऐत. १।२
अथ शुद्धं भवेद्वस्तु यद्वै वाचामगोचरं — ते. बिं. १।४९
अथ शैवपदं यत्र तद्ब्रह्म ब्रह्म तत्परं — कुण्डिको. २०
अथ शैवं पदं यत्र तद्ब्रह्म तत्परायणम् — ५सन्न्यासो.१९
अथ श्रीवराहरूपिणं भगवन्तं... सनत्कुमारः पप्रच्छ — ऊर्ध्वपुं. १
अथ श्रोत्रमत्यवहत् — बृह. १।३।१५
अथसांकृतिर्भगवन्तंदत्तात्रेयं...पप्रच्छ — १ अवधू. १
अथ सावित्रीं गायत्रीं त्रिरन्वाह — सहवै. १५
अथ सोऽभयं गतो भवति — तैत्ति. २।७

अथ ह कुमारः शिवं पप्रच्छाऽखण्डैकरस-चिन्मात्रस्वरूपमनुब्रूहि — ते. बिं. २।१
अथ ह चक्षुरुपासाञ्चक्रिरे — छान्दो.१।२।४
(?)अथ ह जनको वैदेहो याज्ञ...उवाच — जाबालो. ४
अथ ह पैङ्गलो याज्ञवल्क्यमुपसमेत्य... परमरहस्यकैवल्यमनुब्रूहीति... — पैङ्गलो. १।१
अथ ह प्राणा अहं श्रेयसि व्यूदिरे — छान्दो.५।१।६
(?)अथ ह प्राण उत्क्रमिष्यन् — छां.उ.५।१।१२
अथ ह प्राणउच्चिक्रमिषन्(माध्यपा.) — छां.उ.५।१।१२
अथ ह प्राण उच्चिक्रमिषन्स यथा... — छां. ५।१।१२
अथ ह प्राणमत्यवहत्, स यदा... — बृह. १।३।१२
अथ ह प्राणमूचुस्त्वं न उद्गायेति — बृह. १।३।३
अथ ह मन उद्गीथमुपासाञ्चक्रिरे — छान्दो.१।२।६
अथ ह मनोऽत्यवहत्, तद्यदा... — बृह. १।३।१६
अथ ह एवायंमुख्यःप्राणस्तमुद्गीथ-मुपासाञ्चक्रिरे — छान्दो.१।२।७
अथ ह यज्जनकश्च वैदेहो याज्ञवल्क्य-श्चाग्निहोत्रे समूदाते — बृह. ४।३।१
अथ ह याज्ञवल्क्य आवव्राज — बृह. ४।१।१
अथ ह याज्ञवल्क्यस्यद्वेभार्येबभूवतु-मैत्रेयी कात्यायनी च — बृह. ४।५।१
अथ ह याज्ञवल्क्यः स्वमेव ब्रह्म-चारिणमुवाच — बृह. ३।१।२
अथ ह वाचक्नव्युवाच — बृह. ३।८।१
अथ ह वाचमुद्गीथमुपासाञ्चक्रिरे — छान्दो.१।२।३
अथ ह वै स्वयम्भूर्ब्रह्मा प्रजाःसृजानीति — पा. ब्र. १
अथ ह शौनकंचकापेयमभिप्रतारिणं च...ब्रह्मचारी बिभिक्षे — छान्दो.४।३।५
अथ ह श्रोत्रमुपासाञ्चक्रिरे — छान्दो.१।२।५
अथहसांकृतिर्भगवानादित्यलोकंजगाम — अक्ष्यु. १
अथ ह हंसा निशायामतिपेतुः — छान्दो.४।१।१
अथ हाग्नयः समूदिरे — छां.उ.४।१०।४
(?)अथ हास्मा अर्घ्यं चकार — बृ. उ. ६।२।४
अथहास्मा एतत्कृष्णहारीतोवाग्ब्राह्मण... — ३ ऐत. २।६।१
अथ हास्य पुत्र आह—प्रातीबोधी पुत्रः — ३ऐत. १।५।३
अथ हिरण्यमेवापः कनको भवति स ह सँल्लभते — संहितो. ५।१
अथ हेन्द्रोऽप्राप्यैव देवानेतद्भयं ददर्श — छान्दो.८।९।१
अथ हैतत्पुरुषःस्वपितिनामतद्गृहीतएव — बृह. २।१।१७
अथ हैतानि नामानि गायन्ति श्रुतयः — राधिको. ६

वाक्य	स्थान
अथ हैनमत्रिः पप्रच्छ याज्ञवल्क्यम्	जाबालो. २।५
अथ हैनमथर्वाणं शाण्डिल्यः पप्रच्छ	शाण्डि.३।२।१
अथ हैनमन्वाहार्यपचनोऽनुशशास	छां.उ.४।१२।१
अथ हैनमसुरा ऊचुर्ब्रवीतु भवानिति	बृह. ५।२।३
अथ हैनमाहवनीयोऽनुशशास	छां.उ.४।१३।१
अथ हैनमुद्गातोपससाद	छां.उ.१।११।६
अथ हैनमुपससाद किंब्रवीमि भो इति	छान्दो.६।७।२
अथ हैनमृषभोऽभ्युवादसत्यकाम३इति	छान्दो.४।४।५
अथ हैनं कहोलः कौषीतकिः पप्रच्छ	बृह. ३।४।३
अथ हैनं कालाग्निरुद्रं भुसुण्डः पप्रच्छ	रु. जा. १।१
अथ हैनं कौसल्यश्चाश्वलायनः पप्रच्छ	प्रश्नो. ३।१
अथ हैनं गार्हपत्योऽनुशशास	छां.उ.४।११।१
अथ हैनं चक्षुरुवाच	छां.उ.५।१।१३
अथ हैनं जनको वैदेहो याज्ञवल्क्यमुपसमेत्योवाच	जाबालो. ४
अथ हैनंजारत्कारवआर्तभागःपप्रच्छ	बृह. ३।२।१
अथ हैनंनारदःपितामहंपप्रच्छ [ना.प.	३।१+५।१
अथ हैनं पैङ्गलः पप्रच्छ याज्ञवल्क्यं	पैङ्गलो. ४।१
अथ हैनं पैप्पलादोऽङ्गिराः सनत्कुमारश्चाथर्वणमुवाच	अ. शिखो. १
अथ हैनं पैप्पलादो ब्रह्माणमुवाच	शरभो. १
अथ हैनं प्रतिहर्तोपससाद	छां.उ.१।११।८
अथ हैनं प्रस्तोतोपससाद	छां.उ.१।११।४
अथ हैनं ब्रह्मचारिण ऊचुः किं जप्येनामृतत्वं ब्रूहीति	जाबालो. ३
अथ हैनं ब्रह्मरन्ध्रेब्रह्मरूपिणीमाप्नोति	कालिको. १
अथ हैनं भगवन्तंकालाग्निरुद्रं पप्रच्छ	रु. जा. २४
अथ हैनं भगवन्तं परमेष्ठिनं नारदः...	ना. प. ८।१
अथ हैनं भगवन्तं सर्वे...पप्रच्छुः	ना. प. २।१
अथ हैनं भार्गवो वैदर्भिः पप्रच्छ	प्रश्नो. २।१
अथ हैनं मन उवाच–यदहमायतनं	छां. ५।१।१४
अथ हैनं यजमान उवाच भगवन्तं	छां. १।११।१
अथ हैनं वागुवाच–यदहं वसिष्ठो...	छां. ५।१।१३
अथ हैनं वागुवाच–यदहंवसिष्ठोस्मि (मा. पा.)	छां.उ.५।१।१३
अथ हैनं विदग्धः शाकल्यः पप्रच्छ	बृह. ३।९।१
अथ हैनं श्रोत्रमुवाच–यदहंसम्पदस्मि	छां. ५।१।१४
अथ हैनं शैब्यः सत्यकामः पप्रच्छ	प्रश्नो. ५।१
अथ हैनं सुकेशा भरद्वाजः पप्रच्छ	प्रश्नो. ६।१

वाक्य	स्थान
अथ हैनं सौर्यायणी गार्ग्यः पप्रच्छ	प्रश्नो. ४।१
अथ हैनां ब्रह्मरन्ध्रे सुभगां ब्रह्मस्वरूपिणीमाप्नोति	पीताम्बरो. १
अथ हैनां ब्रह्मरन्ध्रे तारिणीमाप्नोति	तारोप. १
अथ होवाच जनं शार्कराक्ष्य कं त्वमात्मानमुपास्से	छां. ५।१५।१
अथ होवाच जनं शार्कराक्ष्यं, शार्कराक्ष्य कं त्वमात्मानं...(मा.पा.)	छां.उ.५।१५।१
अथहोवाचबुडिलमाश्वतराश्विं(मा.पा.)	छां.उ.५।१६।१
अथ होवाच बुडिलमाश्वतराश्विं	छां.५।१६।१
अथ होवाच सत्ययज्ञं पौलुषिं	छां. ५।१३।१
अथ होवाचेन्द्रद्युम्नं भाल्लवेयं	छां. ५।१४।१
अथ होवाचोद्दालकमारुणिं...	छां. ५।१७।१
अथाकाशोऽन्तःकरणमनोबुद्धिचित्ताहङ्काराः	त्रि. ब्रा. १।२
अथाङ्गिराः (उवाच) त्रिविधः पुरुषोऽजायत आत्मा...	१ आत्मो. १
अथाजातपुत्रस्याह–आप्यायस्वसमेतुते	कौ. उ. २।८
अथात आत्मादेश एव	छां. ७।२५।२
अथात आदेशो नेति नेति नह्येतस्मादिति	बृह. २।३।६
अथात एकधनावरोधनं यदेकधनमभिध्यायात्	कौ. उ. २।३
अथातः पितापुत्रीयं सम्प्रदानमिति चाचक्षते	कौ. उ. २।१५
अथातः पवमानानामेवाभ्यारोहः	बृह.१।३।२८
अथातः प्रजापतिसंहिता	३ ऐत. १।६।८
अथातः शौव उद्गीथस्तद्ध बको...	छां. १।१२।१
(ॐ) अथातः श्रीमद्द्वयोत्पत्तिः	द्वयोप. १
अथातः सम्प्रत्तिर्यदा प्रैष्यन्मन्यते	बृह. १।५।१७
अथातः संहिताया उपनिषत्	३ऐत. १।१।१
अथातश्चत्वार आश्रमाः षोडश भेदा भवन्ति	२ अवधू. १
अथातश्चाक्षुषीं पठितसिद्धविद्यां...	चाक्षुषो. १
अथातो धर्मजिज्ञासा	कौलो. १
अथातो निर्भुजप्रवादाः	३ ऐत. १।३।१
अथातो निश्श्रेयसादानं–एता ह वै देवताः...विवदमानाः	कौ. उ. २।१४
अथातोऽनुप्रश्नाः	तैत्ति. २।६

वाक्य	स्थल
अथातोऽनुव्याहाराः, प्राणो वंश इति	३ ऐत. १।४।१
अथातो ब्रह्मजिज्ञासा च	सीतो. ६
अथातो ब्रह्मनिष्ठानां योगिनां कोऽयं मार्गः का स्थितिरिति दत्तात्रेयो दक्षिणामूर्तिं पप्रच्छ	अनु. सा. १
अथातो महोपनिषदमेव तदाहुः	चतुर्वे. १
अथातो रहस्योपनिषदं व्याख्यास्यामः	शुकर. १।१
अथातो रेतसः सृष्टिः	१ ऐत. १।३।१
अथातो वामतो यस्यां संशयमानो वा भाषमाणो वा न विकल्पयेत...	३ ऐत. २।५।४
अथातो व्रतमीमांसा	बृह. १।५।२१
अथातोऽहङ्कारादेश एवाहमेवाधस्तादहमुपरिष्टादहं पश्चादहंपुरस्तादहं	छां.उ.७।२५।१
अथात्मनेऽन्नाद्यमागायत्	बृ.उ. १।३।१७
अथादित्य उदयन्यत्प्राचीं दिशं प्रविशति	प्रश्नो. १।६
अथार्धं शाम्भवं द्वितीयं शार्कं च	कामराज. २
अथाऽस्याये द्रष्टा भवति	छां. उ. ७।९।१
अथाऽस्याशी द्रष्टा भवति (मा.पा.)	छां. उ. ७।९।१
अथाधिदैवतम्—ज्वलिष्याम्येवाहं	बृह. १।५।२२
अथाध्यात्मम्—पुरुषो ह वा अयं सर्व...	३ ऐत. १।२।२
अथाध्यात्मम्—वाक्पूर्वरूपम्	३ ऐत. १।१।२
अथानन्दामृतेनैतांश्चतुर्धा संपूज्य	नृसिंहो. ३
(?)अथानु किमनुशिष्टोऽवोचथाः	छां. उ. ५।३।४
अथान्तरात्मा नाम पृथिव्यप्तेजो...दिभिः स्मृतिलिङ्ग उदात्तानुदात्तह्रस्व...दिभिः श्रोता घ्राता...विज्ञानात्मा पुरुषः, पुराण...कर्मविशेषणं करोत्येषोऽन्तरात्मा	१ आत्मो. २
अथापश्यन्महादेवं श्रिया जुष्टं	ग. पू. १।७
अथापरं वेदितव्यं—उत्तरो विकारोऽस्यात्मयज्ञस्य	मैत्रा. ६।१०
अथापिधानमस्यमृतत्वायोपस्पृश्य	प्रा. हो. १।१२
अथापि यत्र छिद्र इवादित्यो दृश्यते	३ऐत.२।४।५
अथापियाज्ञिकायज्ञे युक्ताअनुदिशन्ति	संहितो. ३।३
अथाप्यपिधाय कर्णा उपशृणुयात्	३ ऐत. २।४।६
अथाप्यपिधायाक्षिणी उपेक्षेत	३ ऐत. २।४।६
अथाप्यस्यारूपस्यब्रह्मणस्त्रीणिरूपाणि	शाण्डि.३।१।२
अथाभिप्रातरेव स्थालीपाकावृताज्यं चेष्टित्वा...जुहोति	बृ.उ. ६।४।१९
अथाभ्यसेत्सूर्यभेदं..स्याच्चतुष्टयकुंभकः	यो. शि. १।८८
अथाभ्याख्यातेषु—ये तत्र ब्राह्मणाः	तैत्ति. १।११।४
अथामूर्तं—प्राणश्च, यश्चायमन्तरात्मन्नाकाश एतदमृतम्	बृह. २।३।५
अथामूर्तं—वायुश्चान्तरिक्षं चैतदमृतं	बृ. उ. २।३।३
अथायमादेशः [नृ. पू. ४।२+	नृसिंहो. १।४
अथाविष्टं भित्वाऽलातचक्रमिव...पर्यपश्यत्	मैत्रा. ६।२४
अथाव्यात्तं(त्तं)वा इदमासीत्	मैत्रा. ६।६
अथाश्वलायनो भगवन्तं परमेष्ठिनं...	कैव. १।१
अथास्मै सम्प्रयच्छति, वाचंमेत्वयि...	कौ.उ. २।१५
अथास्य दक्षिणं कर्णमभिनिधाय	बृ.उ. ६।४।२५
अथास्य दक्षिणे कर्णे जपति	कौ. उ. २।११
अथास्य देवस्यात्मशक्तेरात्मक्रीडस्य..	शाण्डि. ३।१।४
अथास्य नाम करोति वेदोऽसीति...	बृह. ६।४।२६
अथास्य भजनं भवति	गोपालो.१।१६
अथास्य मातरमभिमन्त्रयते	बृ.उ.६।४।२८
अथास्य या सहजाऽस्त्यविद्या मूलप्रकृतिर्माया...तया...देवः...	शाण्डि.३।१।२
अथास्या ऊरू विहापयति	बृ.उ. ६।४।२१
अथास्यायमितरआत्माकृतकृत्यो..प्रैति	२ ऐत. ४।४
अथाह वै देवानां पत्नीं भजते	का. मे. १
अथैतरेषां पशूनामशनापिपासे एवाभिज्ञानम्	१ ऐत. ३।२।४
अथैतोऽप्यद्वैतपुरुषस्य पूर्णं ब्रह्म...	२ अद्वैतो. ३
अथैत्थम्भूततन्मात्रवेष्टितंतनुतांजहत्	महो. ५।१५२
अथैत्यऽभ्यमन्थत्स मुखाच्च योनेर्हस्ताभ्यां चाग्निमसृजत	बृह. १।४।६
अथेदानीं ज्ञानोपसर्गाः	मैत्रा. ७।८
अथेन्द्रमब्रुवन्, मघवन्नेतद्विजानीहि किमेतद्यक्षमिति	केनो. ३।११
अथेममेव नाप्नोत्	बृ.उ. १।५।२१
अथेममेवाकाशमभिनिष्पद्यन्ते	बृ.उ. ६।२।१६
अथैतन्मूलं वाचो यदनृतं	१ ऐत. ३।६।५
अथैतदप्यशक्तोऽसि	भ.गी. १२।११
अथैतयोः पथोर्न कतरेण च	छां.उ.५।१०।८
अथैतयोः पथोर्नैकतरेणचन(मा.पा.)	छां.उ.५।१०।८

अथैतस्मात्तप्यमानात्सत्यकामात्त्रीण्यक्षराण्यजायन्त, तिस्रो व्याहृतयः...	शाण्डि.३।१।३
अथैतस्मादपरं तृतीयं ह्रस्विकूटं प्रतिपद्यते	त्रि.ता. १।१४
अथैतास्तिस्रः संहिता भवंति–देवहूरेका, ऋषहूरेका, मित्रहूरेका	संहितो. ११
अथैते सर्व एवोपसमेत्योचुः	छाग. २।३
अथैनदपि यन्त्यन्ततः	तैत्ति. २।२।१
अथैनमग्नये हरन्ति तस्याग्निरेवा...	बृ.उ. ६।२।१४
अथैनमग्नूम क पारिक्षिताअभवन्निति	बृह. ३।३।१
अथैनमभिमृशति भ्रमदसि ज्वलदसि..	बृह. ६।३।४
अथैनमाचामति–तत्सवितुः...मधु वाता...भूस्स्वाहा (इतिमंत्रेण)	बृह. ६।३।६
अथैनमुद्यच्छति। आमं स्यामं हि ते...	बृह. ६।३।५
अथैनयोरेतदन्नं, य एषोऽन्तर्हृदये	बृ. उ. ४।२।३
अथैनं गार्हपत्योऽनुशशास पृथिव्यग्निरन्नमादित्य इति यः–	छां. ४।११।१
अथैनं सदानन्दः संवर्तोजैगीषव्यश्च नीललोहितं रुद्रमुवाच	सदानं. १
अथैनं शाण्डिल्योऽथर्वाणं पप्रच्छ यदेकमक्षरं...	शाण्डि.३।१।१
अथैनामभिपद्यतेऽमोऽहमस्मिसात्वं...	बृह. ६।४।२०
अथैनां मेधादीक्षितरूपिणीं भावयेत्	का. मे.दी. १
अथैवाङ्गिरास्त्रिविधः पुरुषः	२ आत्मोप. ४
अथैष आर्चिको निगदो भवति	संहितो. ३।६
अथैष ज्ञानमयेन तपसा चीयमानोऽकामयत...	शांडि. ३।१।३
अथैषा दुस्स्पृष्टा संहिता भवति सर्वेभ्यः कामेभ्यः	संहितो. १।६
अथैषा नाड्यन्नबहुमित्येषाऽग्नौहुतमादित्यं गमयति	मैत्रा. ६।३७
अथैषा निर्भुजा संहिता भवति सर्वेभ्यः कामेभ्यः	संहितो. १।७
अथैषा परमा विद्या ययाऽऽत्मा...	रुद्रहृ. ३०
अथैषा यजनीयेऽहनि लभते	संहितो. ५।१
अथैषा शुद्धा संहिता भवति, सर्वेभ्यः कामेभ्यः	संहितो. १।५
अथो अन्नेनैव जीवन्ति [तैत्ति.२।२।+	मैत्रा. ६।११
अथोअ विद्गिताद धि	केनो. १।४
अथो आवृतोवतासो न कर्तृभिः	१ ऐत. १।६।२
अथो आहुर्दर्शपूर्णमासाविति	बृह. १।५।२
अथो खल्वाहुरिंद्रो वा चैतदक्षरम्	शौनको. १।५
अथो खल्वाहुःसप्तभिरेनंस्वारयन्तीति	शौनको. ४।७
अथो तम एवापहते	अव्यक्तो. ६
अथोताप्याहुः साम नो बतेति	छान्दो. २।१।३
अथोत्तरेणतपसाब्रह्मचर्येणश्रद्धया...	प्रश्नो. १।१०
अथोत्तरौ द्वौ द्वादशकौ वर्गौ... व्याख्याता...	२ प्रणवो. १८
अथोपानेष्ट नैतदत्यगादिति किं तदिति ह्योचुः	छाग. २।१
अथो प्रज्ञातयैव प्रतिपदा छंदांसि प्रतिपद्यते	सद्वे. १५
अथो बलीयान्बलीयांसमाशंसते...	बृ.उ. १।४।१४
अथोयइषुधिस्तवारेअस्मिन्निधेहितं [वा.सं. १६।१२+	नीलरु. २।८ तै.सं.४।५।१।४
अथोयेअस्यसत्वानस्तेभ्योऽहमकरं... [वा. सं. १६।८+	नीलरु. २।३ तै.सं.४।५।१।३
अथो वागेवेदं सर्वमिति	३ ऐत. १।६।५
अथो विस्फुरन्तीव धावन्तीवोत्प्लवन्तीवोपश्लिष्यतीव...	आर्षे. ५।४
अथो ह्येवमेवैषामेकं वृणीष्वेति	इतिहा. ८५
अद उ एषबृहद्भुवनेष्वन्तरसावादित्यः	१ ऐत. १।१।३
अदत्तानामुपादानं...शारीरं त्रिविधं स्मृतम्	भवसं. ५।५
अदस्तूलमयं पितैते पुत्राः	१ ऐत. १।८।१
अदिग्देशकालं, अन्तर्बहिश्च तत्सर्वं...	त्रि.म.ना. ७।७
अदितिर्देवा गन्धर्वा मनुष्याः पितरोऽसुरास्तेषां...मातामेदिनी	महा. १०।१४
अदितिर्माता स पिता स पुत्रः [ऋक्सं. १।६।१६=	३ ऐत. १।६।८ मं. १।८९।१०
अदितिर्वेद्या, सोमो दीक्षया	चित्त्यु. ८।१
अदितिर्हीदंसर्वंयदिदंकिञ्चपिताच..	३ ऐत. १।६।८
अदितिर्ह्यजनिष्टदक्षयादुहितातव [ऋक्सं. ८।३।१।=	देव्यु. १० मं. १०।७२।५
अदीदृशत कथमिवेति	छाग. ६।१
अदीर्घत्वाच्च कालस्य गत्वादेशान्..	वैतथ्यो. २
अदीर्घमजमव्ययं, अशब्दमस्पर्शं	यो. शि. ३।१९
अदीर्घमलोहितमस्नेहमच्छायं	बृह. ३।८।८

अदुग्धा इव धेनवः अ. शिर: २।४
अदूरगमनाभ्यासया सुषुम्नस्योपलभ्यते अ. पू. १।५२
अदूषयन् सतां मार्गं ना. प. ४।१८
(?)अदृश्यत्वादग्राह्यत्वात् मैत्रा. २।७
अदृश्यं नवमे देहे दिव्यं चक्षुस्तथाऽमलं हंसो. १०
अदृश्येऽनात्म्येऽनिरुक्ते तैत्ति. २।७।१
अदृश्योऽहमवर्णोऽहमखण्डोऽस्मि ब्रह्मवि. ६
अदृष्टमव्यवहार्यमग्राह्यमलक्षणं माण्डू. ७+
[नृ. पू. ४।२+ नृसिंहो. १।६
अदृष्टपूर्वं हृषितोऽस्मि दृष्ट्वा भ.गी.११।४५
अदृष्टं द्रष्ट्रश्रुतं श्रोत्रमतं बृ.उ. ३।८।११
अदृष्टो द्रष्टाऽश्रुतः श्रोता बृ.उ.३।७।२३
अदेशकाले यद्दानम् भ.गी.१७।२२
अदोऽम्भः परेण दिवं द्यौः प्रतिष्ठा २ ऐत. १।२
अद्भिर्गात्राणि शुद्ध्यन्ति भवसं. ३।१
अद्भिर्भूय एवोपरिष्टात्परिदधाति मैत्रा. ६।९
अद्भिः पुरस्तात् परिदधाति मैत्रा. ६।९
अद्भिः पूताभिराचरेत् (स्नानादि) १सन्ध्या.२।१४
अद्भिः सोम्य शुङ्गेन तेजोमूलमन्विच्छ छां. उ.६।८।४
अद्भुतं रोमहर्षणम् भ.गी.१८।७४
अद्भुतानन्दाश्चर्यविभूतिविशेषाकारं त्रि.म.ना.४।१
अद्भ्य एव तदध्यन्नाद्यं जायते छान्दो.६।२।४
(?)अद्भ्य एव पुरुषं समुद्धृत्य २ऐत. १।३
अद्भ्यश्चैनं चंद्रमसश्च दैवः प्राण
आविशति बृ.उ. १।५।२१
अद्भ्यः पृथिवी सुबालो.१।१+
[यो. चू. ७२+पैङ्गलो १।३ तैत्ति. २।१।१
अद्भ्यः पूर्वमजायत कठो. ४।६
अद्भ्यः सम्भूतः पृथिव्यै रसाच्च चित्यु. १३।१
अद्भ्यः सम्भूतो हिरण्यगर्भः महाना. १।११
अद्भ्यः स्थावरजङ्गमो भूतग्रामः
सम्भवति २ प्रणवो. २१
अद्भ्योऽर्णवः सुवो राजकं च महाना.६।११
अद्भ्यो वा भूयोऽस्तीति तन्मे भगवान् .. छां. ७।१०।२
अद्यतेऽत्ति च भूतानि तस्मादन्नं तदुच्यते
[तैत्ति. २।२+ मैत्रा. ६।१२
अद्यजातां यथा नारीं तथा
षोडशवार्षिकीं ना. प. ३।६४

अद्या नो देव सवितः प्रजावत्सावीः
सौभगम् [ऋ.४।४।२५=मं.४।८२।४ महाना. १२।२
अद्यास्तमेतु वपुराशशितारमास्तां...
मम चिद्वपुषो विशेषः वराहो. २।६६
अद्येहाददानमश्रद्दधानमयजमानमाहुः छां. उ. ८।८।५
अद्यैकमुक्तिरायातु कल्पान्तनिचयेन वा अ.पू. १।२९
अद्यैव कुरु यच्छ्रेयो मा त्वां
कालोऽत्यगान्महान् भवसं. १।२९
(तस्मात्) अद्वय एवायमात्मा नृसिंहो. ९।५
अद्रष्टाऽश्रोताऽमन्ताऽबोद्धाऽकर्ता-
ऽविज्ञाता भवति छान्दो. ७।९।१
अद्रष्टकं स्वानुभवमनिर्देश्यमदर्शनम् महो. ५।५४
अद्रेश्यमग्राह्यमगोत्रमवर्णमचक्षुःश्रोत्रं मुण्ड.१।१।६
अद्रोहो नातिमानिता भ. गी. १६।३
अद्वयतारकोपनिषदं व्याख्यास्यामो
यतये जितेन्द्रियाय अद्वयता. १
अद्वयब्रह्मरूपेण व्याप्तोऽहं आ. प्र. १४
अद्वयं च द्वयाभासं चित्तं स्वप्ने अ. शां. ६१
अद्वयं च द्वयाभासं तथा जाग्रन्न
संशयः [अद्वैतो.३०+ अ. शां. ६२
अद्वयं च द्वयाभासं मनःस्वप्ने न संशयः अद्वैतो. ३०
अद्वयं पश्यत हंसः सोऽहमिति नृसिंहो. ९।९
अद्वयं सदानन्दचिन्मात्रमात्मैव नृसिंहो. ९।८
अद्वयानन्दमात्रोऽहं ते. बिं. ६।६५
अद्वयानन्दविज्ञानघनोऽस्म्यहं ब्र. वि. ८९
(?)अद्वयेन च कल्पितः वैतथ्य. ३३
अद्वयो ह्ययमात्मैकल एव नृसिंहो. ८।१
अद्वितीय ओतश्च प्रोतश्च नृसिंहो. ८।१
अद्वितीयत्वादविकल्पो ह्ययमोङ्कारः नृसिंहो. ८।७
अद्वितीयपरमानन्दशुद्धबुद्धमुक्त..ब्रह्म.. त्रि.म.ना. १।३
अद्वितीयपरसंविदंशकं तत्सदाऽहं वराहो. ३।८
अद्वितीयब्रह्मतत्त्वं न जानन्ति यथा तथा वराहो. २।५७
अद्वितीयमखिलोपाधिविनिर्मुक्तं तत्स-
कलशक्त्युपबृंहितं (ब्रह्म) निरालं. ५
अद्वितीयमनाद्यन्तं यदाद्यमुप... अ. पू. ५।६४
अद्वितीयमनीश्वरं भवति त्रि.म.ना. ४।१
अद्वितीयं स्वयम्प्रकाशमनिशं ज्वलति त्रि.म.ना. ७।७
(एवमाकारं) अद्वितीयाखण्डानन्द-
ब्रह्मस्वरूपं त्रि.म.ना. ४।१

अद्वितीयामेकामनन्तमोक्षप्रदात्र्य-	
लक्ष्मीम्	त्रि.म.ना. ६।७
अद्वितीयेपरेतत्त्वेव्योमवत्कल्पनाकृतः	२ आत्मो. ३०
अद्वेष्टा सर्वभूतानां	भ.गी.१२।१३
अद्वैतग्रन्थिः...यज्ञाङ्गलक्षणब्रह्म-	
स्वरूपो हंसः	पा. ब्र. ३
अद्वैतपरमानन्दलक्षणपरब्रह्मणः परमा-	
धिष्ठानमण्डल	त्रि.म.ना. ७।८
(तथाविधस्य) अद्वैतपरमानन्द-	
लक्षणस्यादिनारायणस्योन्मेष-	
निमेषाभ्यांमूलाविद्योदय...	त्रि.म.ना.२ ३
अद्वैतपरमानन्दात्मा	रामो. ५
अद्वैतपरमानन्दोविभुर्नित्योनिष्कलङ्कः	त्रि.म.ना. १।५
अद्वैतपुरुषस्य न द्वितीयो भेदोऽस्ति	अद्वैता. १
अद्वैतभावना भक्ष्यं अभक्ष्यं...	मैत्र. २।१०
(?)अद्वैतभावनां वक्ष्ये	अद्वै. भा. १
अद्वैतभावमुक्तोऽस्मिसच्चिदानन्दलक्षणः	अ. पू. ५।६८
अद्वैतमचिन्त्यमलिङ्गं स्वप्रकाशमा-	
नन्दघनं शून्यमभवत्	नृसिंहो. ६।२
अद्वैतमिति चोक्तश्च प्रकाशाव्यभि-	
चारतः	पा. ब्र. २५
अद्वैतयोगमास्थाय	त्रि.म.ना. ८।३
अद्वैतसदानन्दो देवता	निर्वाणो. ५
अद्वैतं चतुर्थं ब्रह्मविष्णुरुद्रातीतं	भस्मजा. १।१
अद्वैतं द्वैतमित्याहुस्त्रिधातंपञ्चधातथा	मंत्रिको. १५
अद्वैतं नावमाश्रित्य जीवन्मुक्तत्व-	
माप्नुयात्	सं. सो. २।९६
अद्वैतं परमानन्दं शिवं	रुद्रहृ. ४७
अद्वैतं परमार्थतः	आगम. १७
अद्वैतं परमार्थो हि द्वैतं तद्भेद उच्यते	अद्वैतो. १८
अद्वैतंभावयेद्भक्त्यागुरोर्देवस्यचात्मनः	यो.शि. ५।५९
अद्वैतं समनुप्राप्य जडवल्लोकमाचरेत्	वैतथ्यो. ३
अद्वैतं सर्वाधारमनाधारमनिरीक्ष्यं	भस्मजा. २।९
अद्वैतः सर्वभावानां देवस्तर्योविभुः	आगम. १०
अद्वैताखण्डपरिपूर्णनिरतिशयपरमा-	
नन्दशुद्धबुद्धमुक्तसत्यात्मकब्रह्म	त्रि.म.ना.२।१
(?)अद्वैते परमस्थितिः; ज्ञानदण्डो...	पर. हं. ५
अद्वैते बोधितेतत्त्वेवासनाविनिवर्तते	वराहो.२।७०
अद्वैते योजयेत्स्मृतिं	वैतथ्य. ३७
अद्वैतेस्थैर्यमायाते...तुर्यभूमिसुयोगतः	वराहो. ४।१२
अद्वैते स्थैर्यमायातेद्वैते च प्रशमं गते	अन्नपू. ३४
अधास्तमेतु वपुराशशिताराणस्ताम्	वराहो. २।६
अध एव हि मनुष्यलोकः	बृह. ३।१।८
अधमश्चाण्डालोऽपि शिव-	
भक्तोऽपि...श्रेष्ठतरः	रुद्रोप. १
अधमं चणमात्रं स्यात् (रुद्राक्षं)	रु. जा. ७
अधमामन्त्रचिन्तावतीर्थयात्रेत्यधमाधमा	मैत्रे. २।२१
अधमे द्वादश मात्राः (प्राणायामे)	यो. चू. १०४
अधमे (प्राणायामे) व्याधिपापानां	
नाशः स्यात्...	त्रि.ब्रा.२।१०६
अधमे (प्राणायामे)स्वेदजननं	यो. चू. १०५
अधरयैनं वर्तिन्या पृथिव्यावृत्ता	बृह. २।२।२
अधरा हनुः पूर्वरूपं	तैत्ति. १।३।७
अधर्मं धर्ममिति या	भ.गी.१८।३२
अधर्माभिभवात् कृष्ण	भ.गी. १।४१
अधशिरश्चोर्ध्वपादः क्षणं स्यात्...	यो. त. १२४
अधश्च नारायणः	नारा. २
अधश्च मूलान्यनुसन्ततानि	भ. गी. १५।२
अधश्चोर्ध्वश्च तिर्यक्चाहम्	देव्यु. १
अधश्चोर्ध्वं चाहं दिशश्चप्रतिदिशश्चाहं	अ. शिरः. १
अधश्चोर्ध्वं च प्रसृतं ब्रह्मवेदम्	मुण्ड.२।२।११
अधश्चोर्ध्वं चाहं	अ. शिरः १
अधश्चोर्ध्वं प्रसृतास्तस्य शाखाः	भ. गी.१५।२
अधस्तात्कुञ्चनेनाशु कण्ठसङ्कोचने	
कृते...स्यात्प्राणो ब्रह्मनाडिगः	शां. १।७।१८
अधस्ताद्भूमिमुपरिष्टादाकाशं मध्ये	
पुरुषो दिव्यः	सुबालो. १।२
अधः षष्ठी कुक्षिर्भवति	गायत्रीर. ३
अधिकारविशेषेण कैवल्यप्राप्त्युपाय-	
मन्विष्येद्यतिः	ना. प. ७।१२
अधिज्योतिषं-अग्निः पूर्वरूपम्	तैत्ति. १।३।३
अधिदैवत्वंदेवेभ्यश्चेत्यक्षय्यमपरिमितं	मैत्रा. ४।४
अधिदैवं किमुच्यते	भ. गी. ८।१
(अथ) अधिप्रजं-माता पूर्वरूपं	तैत्ति. १।३।२
अधिनो ब्रूहि सुमनस्य मानो...	
[वा.सं.१५।२+तै.सं.४।३।१२।१+ तै. आ. २।५।२	सहवै. ७
अधिप्रज्ञं दश प्रज्ञामात्राः	कौ. उ. ३।८

अधिभूतं क्षरो भावः	भ. गी ८।४
अधिभूतं च किं प्रोक्तं	भ. गी. ८।१
अधिमनसो रेतः प्रथमं यदासीत्	नृ. पू. १।१
अधियज्ञः कथं कोऽत्र	भ. गी. ८।२
अधियज्ञोऽहमेवात्र	भ. गी. ८।४
अधिलोकमधिज्यौतिषमधिविद्यमधिप्रजमध्यात्मं	तैत्ति. १।३।१
अधिष्ठिताः केन सुखेतरेषु वर्तामहे व्यवस्थाम्	श्वेता. १।१
अधिष्ठानमनौपम्यमवाङ्मनसगोचरं यत्तद्द्रेश्यं...[महो. ४।८६+	पा. ब्र. ३३
अधिष्ठानं तथा कर्ता	भ.गी.१८।१४
अधिष्ठानं परंतत्त्वमेकंसच्छिष्यते...	बह्वृचो. ३
अधिष्ठानंसमस्तस्यजगतःसत्यचिद्घनं अहमस्मीतिनिश्चित्य..[तद्ब्रह्म.४८+	अ. पू. ४।३५
अधिष्ठानेतथाज्ञातेप्रपञ्चेशून्यतांगते...	ना. बिं. २८
अधिष्ठाने परे तत्त्वे कल्पिता रज्जुसर्पवत्	अ. पू. ४।१०
अधिष्ठाय मनश्चायं विषयानुपसेवते	भ.गी. १५।९
अधिष्ठायैना अजरापुराणीमहत्तरा महिमा देवतानाम्	त्रिपुरो. १
अधीतवेद उक्तोपनिषत्कः	बृ. उ. ४।२।१
अधीत्य चतुरो वेदान्सर्वशास्त्राण्यनेकशः। ब्रह्मतत्त्वं न जानाति दर्वी पाकरसं यथा	मुक्ति. २।६५
अधीमहि भगव इति होपससाद सनत्कुमारं नारदः	छान्दो.७।१।१
अधीहि भगवन्नात्मविद्यां	हेरम्बो. १
अधीहि भगवन्नूर्ध्वपुण्ड्रविधिं...ब्रूहि [ऊ. पुं. १+	वासुदे. १
अधीहि भगवन् ब्रह्मविद्यां वरिष्ठां	कैव. १
अधीहि भगवन् सर्वविद्यां सरहस्यं (।) वरिष्ठं (।)	१ बिल्वो. १
अधीहि भगवंस्त्रिपुण्ड्रविधिं सतत्त्वं	का. रु. २
अधीहि भगवो ब्रह्मेति, तस्मा एतत्प्रोवाच	तै.३।१,२,३,४
अधीव ह समानानां जायते	१ ऐत. ३।१।३
अधीव ह्यन्ते अन्नादो भवति	१ ऐत. ३।१।३
अधेनुं धेनुमित्येव...परमंमङ्गलंवदेत्	शिवो. ७।८१
अधो गच्छन्ति तामसाः	भ.गी.१४।१८
अधोगतिमपानं वै...मूलबन्धोऽयमुच्यते	योगकुं. १।४२
अधोनिष्ठ्यावितस्त्यान्ते नाभ्यामुपरि तिष्ठति...विश्वस्यायतनं महत्	महाना. ९।७
अधोभागे स्थितः स्कन्दः	शिवो. २।५
अधो शक्तिमयोऽनलः, ताभ्यां सम्पुटितः...	बृ. जा. २।६
अध्यसृतात्सम्बभूव	तैत्ति. १।५।१
अध्यर्ध इति (देवः)ओमिति होवाच	बृह. ३।९।१
अध्यवसायसङ्कल्पाभिमाना... स्वावूनि भवन्ति	मैत्रा. ६।१०
अध्यवसायस्य दोषक्षयाद्धिमोक्षः	मैत्रा. ६।३०
अध्यवसायात्मबन्धमुपगतः	मैत्रा. ६।३०
अध्यस्तस्य कुतस्तत्त्वं	अध्यात्मो. ५८
अध्यस्तस्य कुतो जन्म	ना. बिं. २५
अध्यात्मज्ञाननित्यत्वं	भ.गी.१३।१२
अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामाः	भ.गी. १५।५
अध्यात्मनिष्ठोऽशुभकर्मनिर्मूलनपरः (परमहंसः)	जाबा. ६
अध्यात्ममधिदैवं च देवानां...	सरस्व. ११
अध्यात्ममधिदैवं च...सा मां पातु सरस्वती	सरस्व. ११
(इति)अध्यात्ममन्त्राञ्जपेत्; दीक्षामुपेयात् [कुंडिको. ९+	कठश्रु. २२
अध्यात्ममस्य ध्यायतः	कठश्रु. २३
अध्यात्मयोगाधिगमेन देवं	कठो. २।१२
अध्यात्मरतिराशान्तः	अ. पू. २।२६
अध्यात्मरतिरासीनःपूर्णः...योजीवति गतस्नेहः स जीवन्मुक्त उच्यते	महो. २।४७
अध्यात्मरतिरासीनो निरपेक्षः...	ना. प. ३।४४
अध्यात्मविद्याधिगमः साधुसङ्गतिरेव च...एतास्ता युक्तयः पुष्टाः सन्ति चित्तजये किल	मुक्ति.२।४४
अध्यात्मविद्या विद्यानां	भ.गी.१०।३२
अध्यात्मशास्त्रमन्त्रेण तृष्णा विषविषूचिका। क्षीयते...	अ. पू. ५।१४
अध्यात्मं कर्म चाखिलं	भ. गी. ७।२९

अध्यात्मं चैवाधिदैवतं(चाधिदै..मा.पा.) छां.उ.३।१८।२
अध्यात्मं चैव प्राणस्य विज्ञाया-
मृतमश्नुते प्रश्नो. ३।१२
अध्यापिता ये गुरुंनाद्रियन्तेविप्राः... शाट्याय. ३५
अध्यारोपापवादतः स्वरूपं निश्चयी-
कर्तुं शक्यते पैङ्गलो. २।१०
अध्येष्यते च य इमं भ.गी. १८।७०
अध्वर्युर्ऋत्विजा चक्षुषाऽऽदित्येन बृह. ३।१।४
अध्वगा अध्वसु पारायिष्णवः इतिहा. १८
अध्वासूर्यमनिर्दिष्टःकीटवन्निचरेन्महीं ना. प. ५।३५
अनग्निहोत्र्यनग्निचिदज्ञानभिध्यायिनां
ब्रह्मणः पद्व्योमानुस्मरणं विरुद्धं मैत्रा. ६।३४
अनग्निकस्यवेदोऽग्निः...स एषो-
ऽनामिकः स्मृतः इतिहा. ३५
अनग्नो ह भवति छां.उ. ५।२।२
अनङ्गमनाभासं निष्पन्नं ब्रह्म... अद्वैतो. ४६
अनड्वानोहिवोच्छिष्टाः पश्यन्तो
बहुविस्तरं मंत्रिको. ११
अनतिप्रश्न्यां वै देवतामति...(मा.पा.) बृ. उ. ३।६।१
अनतिप्रश्न्यां वै देवतामतिपृच्छसि बृ. उ. ३।६।१
अनद्यमानो यदन्नमत्ति छां. उ. ४।३।७
अननुमत्ताउन्मत्तवदाचरन्तः[जाबा.६ +आश्रमो. ४
अननुशिष्य वाव किल मा भगवान् छान्दो.५।३।४
अननूच्य ब्रह्मबन्धुरिव भवति छां. उ. ६।१।१
अनन्त इति चापरे वैतथ्यो.२६
अनन्त इत्येनदुपासीत बृह. ४।१।५
अनन्तकर्मशौचंच जपोयज्ञस्तथैवच पैङ्गलो. ४।१
अनन्तकोटिब्रह्माण्डानामुपरि... राधोप. १।२
अनन्तचिद्विलासविभूतिसमष्ट्याकारं त्रि.म.ना.४।१
अनन्तचिन्मयप्रासादजालसंकुलं त्रि.म.ना.६।६
अनन्तता चादिमतो मोक्षस्य
न भविष्यति म.शां. ३०
अनन्ता हि दिशः, दिशो वै सम्राट् बृह. ४।१।५
अनन्ततेजोराश्यन्तर्गतमर्धमात्रात्मकं त्रि.म. ७।१२
अनन्त देवेश जगन्निवास भ.गी.११।१७
अनन्तनित्यमुक्तैरभिव्याप्तं(वैकुण्ठपुरं) त्रि.म.ना. ६।६
अनन्तपरममूर्तिसमष्टिमण्डलं त्रि.म.ना. ७।८
अनन्तपरमानन्दामृतरसाब्धि...
तोरणादिभिरलंकृतम् सि.सा. ६

अनन्तपरिपूर्णानन्दद्दिव्यसौदामिनी
निचयाकारम् (ब्रह्म) त्रि.म.ना. ४।१
अनन्तबाहुं शशिसूर्यनेत्रं भ.गी.११।१९
अनन्तबोधाचलैरनन्तबोधानन्दाचलै-
रधिष्ठितम् त्रि.म. ना.७।८
अनन्तमजमव्यक्तमजरंशान्तमच्युतं अ. पू. ५।६४
अनन्तमजरं शिवं...यदनादि... महो.४।६८
अनन्तमपरिच्छेद्यम् [?] यो.शि. १।१८
[?]अनंतमपारं विज्ञानघन एव बृ.उ. २।४।१२
अनन्तमप्रमेयाखण्डपरिपूर्णं ब्रह्म त्रि.म.ना. १।३
अनन्तमव्ययं कविम् महाना.९।६
अनन्तमव्ययं शान्तं ते.बि.६।७२
अनन्तमेवसः,तेनलोकंजयति[३।२।१२ बृह.३।१।९+
अनन्तमोक्षसाम्राज्यलक्ष्मी त्रि.म.ना. ६।७
अनन्तयोजनंप्राहुर्दशाङ्गुलवयस्तथा मुद्गलो. १।१
अनन्तरमबाह्यं,नतदश्नाति किंचन... बृह. ३।८।८
अनन्तरस्त्वेवैनमुपमंत्रयतेवदामसइति कौ.उ. २।१,२
अनन्तरं हस्तिजिह्वा ततो विश्वोदरी.. वराहो.५।२७
अनन्तरारयुग्मेतुवारुणाचयशस्विनी वराहो.५।२४
अनन्तरोऽबाह्यः बृ.उ. ४।५।१३
अनन्तलोकाप्तिमथो प्रतिष्ठां विद्धि कठो.१।१४
अनन्तवतो ह लोकाञ्जयति छांदो. ४।६।४
अनन्तवानस्मिंल्लोके भवति छांदो. ४।६।४
अनन्तवासुकितक्षककर्कोटक...महा-
नागानां..भूतवेतालकूष्माण्ड...
विषतुण्डदंष्ट्राणां विषाङ्गानां... गारुडो.२७
अनन्तविजयं राजा भ.गी.१।१६
अनन्तवीर्यामितविक्रमस्त्वं भ.गी. ११।४०
अनन्तशक्तिर्धाता भास्करः मैत्रा. ७।२
अनन्तश्चास्मि नागानां भ.गी. १०।२९
अनन्तश्चात्माविश्वरूपः [श्वेता.१।९+ ना. प. ९।८
अनन्तश्रवणः सर्वमावृत्त्य तिष्ठति त्रि.म.ना.२।६
अनन्तस्यात्मतत्त्वस्य महो. ५।१७८
अनन्तं नाम मृद्विकारेषु मृदिवस्वर्ण-
विकारेषु स्वर्णमिव तन्तुविकारेषु
तन्तुरिवाव्यक्तादिसृष्टिप्रपञ्चेषुपूर्णं
व्यापकं चैतन्यमनन्तमित्युच्यते सर्वसारो. ६
अनन्तं ब्रह्म सुव्रत जा.द.९।५
अनन्तं विश्वतोमुखम् भ.गी. ११।११

अनन्तं वै मनोऽनन्ता विश्वेदेवाः बृह. ३।१।९
अनन्तं वै नामानन्ता विश्वेदेवाः बृह. ३।२।१२
अनन्तं सर्वतोमुखं अध्यात्मो. ६१
अनन्तं स लोकं जयति बृह. १।५।३
अनन्तः परमो गुह्यः मैत्रा. ६।२८
अनन्तादिदुष्टनागानां...विषंहनहन लांगूलो. ७
अनन्तानंदप्रवाहैरलंकृतं त्रि.म.ना.७।८
अनन्तानन्दविभूतिविशेष..रूपं त्रि.म.ना. ७।७
अनन्तानन्दसमुद्रसमष्ट्याकारं त्रि.म.ना.७।८
अनन्तानन्दसम्भोगा...शुद्धेयं चि-
न्मयी दृष्टिर्जयत्यखिलदृष्टिषु १सं.सो.२.२४
अनन्तानन्दाश्चर्यसागरं त्रि.म.ना. ७।९
अनन्ता रश्मयस्तस्य दीपवद्यः
स्थितो हृदि मैत्रा. ६।३०
अनन्ताविश्वेदेवा..सतेन लोकं जयति बृ. उ. ३।१।९
अनन्तेन्दुरविप्रभं व्याघ्रचर्माम्बरधरं भस्मजा. १।१
अनन्तेस्वर्गेलोकेज्येये प्रतितिष्ठति केनो. ४।९
अनन्तोऽक्षय्यःस्थिरः [मैत्रा.२।४ +६।२८
अनन्तोपनिषदर्थस्वरूपं [त्रि.म.७।७ +सि.सा.६।१
अनन्तोपनिषदर्थारामजालसंकुलं त्रि.म.ना.७।९
अनन्तोवामकटको..हारःकर्कोट उच्यते गारुडो. २
अनन्दानामतेलोका अन्धेन...वृताः बृह. ४।४।११
अनन्दानामतेलोकास्तान्सगच्छति कठो. १।३
अनन्धःसभवतियदिसाममन्त्रामोनैव छान्दो.८।१०।१
अनन्यचेताः सततम् भ.गी.८।१४
अनन्यवांयदायातितदामुक्तःसउच्यते यो.शि.१।१६४
अनन्यप्रोक्तेगतिरत्र नास्त्यणीयान् कठो. २।८
अनन्यभजनसिद्धाआत्मभावाभवंति सामर. ७५
अनन्यभक्ताय... दद्यात् मैत्रा. ६।२९
अनन्यभक्तिपरा काष्ठा सामर. ४४
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां भ. गी. ९।२२
अनन्येनैव योगेन भ. गी. १२।६
अनन्योद्वेगकारीणिमृदुकर्माणिसेवते अक्ष्युप. ९
अनन्वागतस्तेन भवति बृ.उ.४।३।१५
अनन्वागतं पुण्येनानन्वागतं पापेन बृ.उ.४।३।२२
अनपब्रुवः सर्वमायुरेति [ब्राह्म. ३+ भस्मजा. १।७
अनपरः प्रणवोऽव्ययः आगम. २६
अनपेक्षः शुचिर्दक्षः भ.गी.१२।१६
अनपेक्ष्य च पौरुषम् भ.गी.१८।२५

अनभिमानमयेन चैवेषुणा तं ब्रह्म-
द्वारपारं निहत्यायम् मैत्रा. ६।२८
अनभ्यासवतश्चैव वृथागोष्ठ्या
न सिद्ध्यति यो. त. ८०
अनया तीक्ष्णया तात छिन्धि बुद्धि-
शलाकया(तृष्णावासनाजालं) महो. ६।३२
अनयाकुरहंकृत्याभावात्संत्यक्तयाचिरं महो. ५।९४
(?)अनया ब्रह्मविद्यया...ब्रह्मणः
पन्थानमारूढाः मैत्रा. ६।२९
अनया विद्यया योगी खेचरीसिद्धि-
भाग्भवेत् योगकुं. २।१६
अनर्थः प्राप्यते यत्र शास्त्रितादपि
पौरुषात्...अनर्थकर्तृबलवत्तत्रज्ञेयं
स्वपौरुषम् भवसं. १।४८
अनया (अजपागायत्र्या) सदृशी
विद्या...अनयासदृशं पुण्यं न भूतं
न भविष्यति ध्या. बिं. ६४
अनर्चिषमेवाभिसम्भवन्ति छां. ४।१५।५
अनल्पमपारमनिर्देश्यमनपावृतं सुबालो. ३।२
अनवद्यो घनो गहने निर्गुणः मैत्रा. ७।१
(?)अनवस्थेष्ववस्थितम् कठो. २।२२
अनशनायत्वादपिपासायत्वाद्वैत... नृसिंहो. ७।१
अनश्नन् त्रिः स्वाध्यायं वेदमधीयीत सहवै. २०
अनश्नन्ब्राह्मणतिथिर्नमस्यः कठो. १।९
अनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति मुंड. ३।१।१+
[ऋ.सं.२।३।१७=मं.१।१६४।२० श्वेता. ४।६
अनहङ्कृतयितव्यमचेतयितव्यं नृसिंहो. ९।९
अनहङ्कृतव्यमचेतयितव्यं [मा.पा.] नृसिंहो. ९।९
अनहङ्कार एव च भ. गी. १३।९
अनाकारमविच्छिन्नमग्राह्यं (परंतत्त्व) अमन. १।११
अनाकाशमसङ्गमरसमगन्धं बृह. ३।८।८
अनाख्यत्वादगम्यत्वान्मनः-
षष्ठेन्द्रियस्थितेः महो. २।३
अनाख्यमनभिव्यक्तं सत्किंचि-
दवशिष्यते [महो. २।६५ +योगकुं. ३।२५
अनागतानांभोगानामवाञ्छनमकृत्रिमं महो. ५।१७१
अनाजानन् मनसा याचमानो... सहवै. ९
अनात्मकमसत्तुच्छकिंतुतस्यावभासकं २ आत्मो. ९
अनात्मतां परित्यज्यनिर्विकारो जग-
स्थितौ...संविन्मात्रपरो भव वराहो. २।४९

अनात्मनस्तु शत्रुत्वे भ. गी. ६।६
अनात्मदृष्टेरविवेकनिद्रां...स्वप्नगतिं
गतोऽहम् शु. र. ३।९
अनात्मनोदेहादीनामात्मत्वेनाभिमन्यते
सोऽभिमान आत्मनो बन्धः सर्वसा. २
अनात्मन्यात्मबुद्धिर्यात्वस्वेस्वमिति... भवसं. ३।९
अनात्मरूपचोरश्चेदात्मरत्नस्य रक्षणं,
नित्यानन्दमयं ब्रह्म... ते.बिं.६।१०२
अनात्मरूपोविषयसङ्कल्प एव दुःखं निरा. उ. १८
अनात्मविद्मुक्तोऽपिनमोविहरणादिकं अ. पू. ४।२
अनात्मविद्मुक्तोऽपि सिद्धिजालानि
वाञ्छति वराहो. ३।२६
अनादाविहसंसारेसंचिताःकर्मकोटयः अध्यात्मो. ३७
अनादित्वान्निर्गुणत्वात् भ.गी.१३।३२
अनादिनिधनमेकं तुरीयं (ब्रह्म) यो. चू. ७२
अनादिमत्त्वं विभुत्वेन वर्तसे श्वेता. ४।४
अनादिमत्परं ब्रह्म भ.गी.१३।१३
अनादिमध्यपर्यन्तं यदनादिनिरामयं महो. २।६८
अनादिमध्यान्तमनन्तमव्ययं ना. प. ९।१७
अनादिमध्यान्तमनन्तवीर्यं भ.गी.११।१९
अनादिमायया सुप्तो यदा जीवः... आगम. १६
अनादिरयं पुरुष एक एवास्ति सामर. ५
अनादिविष्णुदेवस्य प्रकृतिः...जग-
त्कारणभूतां तां... भवसं. ४।५
अनादिसंसिद्धोऽयंजीवश्चिदंशोभवति सामर. ९८
अनादृत्य वसतिं कुमारः प्रदुद्राव बृह. ६।२।३
अनादेरन्तवत्त्वंचसंसारस्यनसेत्स्यति अ. शां. ३०
अनाद्यन्तमनण्वस्थूलरूपमरूपं अव्यक्तो. १
अनाद्यनन्तं कलिलस्य मध्ये श्वेता. ५।१३
अनाद्यनन्तं महतः परं ध्रुवं तदेव पैङ्गलो. ३।८+
योगकुं. ३।३५
अनाद्यनन्तं महतः परं ध्रुवं निचाय्य कठो. ३।१५
अनाद्यनन्तं शुद्धं शिवं शान्तं निर्गुण-
मित्यादिवाच्यं (ब्रह्म) निरालं. ५
अनाद्यन्तः श्रीमानजो धीमान् मैत्रा. ७।१
अनाद्यन्तावभासात्मा परमात्मैव... अ. पू. २।३४
अनाद्यन्तोऽपरिमितोऽपरिच्छिन्नः मैत्रा. ७।२
अनाद्यविद्यावासनयाजातोऽह-
मित्यादिसङ्कल्पो बन्धः निरालं. २१

अनाधारमनामयं (ब्रह्म) यो.शि. ३।१८
अनाधृष्यश्च भूयासम् विस्तु. ७।३
अनाधृष्यश्चाप्रतिधृष्यश्च यज्ञस्या... विस्तु. ५।१
अनाधेयमनाश्रमं, निर्गुणंनिष्क्रियं(ब्रह्म) अध्यात्मो.६२
अनानंदमहानंद..मुक्त इत्युच्यते योगी अ. पू. २।१५
अनानन्दयितव्यममन्तव्यमबोद्धव्यं नृसिंहो. ९।९
अनानन्दसमानन्दमुग्धमुग्धमुख-
श्रुतिः (दृष्टिः) अ. पू. १।२६
अनानानन्दनातीतं दुष्प्रेक्ष्यं... ते. बिं. १।८
(?)अनापन्नादिमध्यान्तंकिमतःपरमीहते अ. शां. ८५
(?)अनाभासमजं यथा (तथा) अ. शां. ४८
अनामकमकारणं महो. ५।४५
अनामकमरूपकं [अद्वैतो. ३६+ ते. बिं. ६।७०
अनामगोत्रं मम रूपमीदृशं भजस्व... मुक्ति. २।७२
अनामयमनाभासमनामक... महो. ५।४५
(?) अनामयेऽग्नौ जुहोति मैत्रा. ६।२६
अनामिकयाऽपाने (जुहोति)... प्रा. हो. १।११
(तद्वेतः) अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यामा-
दायान्तरेण स्तनौ वा भ्रुवौ
वा निमृज्यात् बृह. ६।४।५
अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यम् भ. गी. २।२
अनाविस्त्येष वाह्यात्मा ध्यायेता-
ग्निहोत्रं जुहोमि प्रा. हो. २।३
अनावृतेविशेद्द्वारि गेहेनैवावृतेव्रजेत् ना. प. ५।१२
अनाशिनोऽप्रमेयस्य भ. गी. २।१८
अनाश्रितः कर्मफलं भ. गी. ६।१
अनास्थामात्रमभितः सुखाना-
मालयं विदुः महो. ५।८५
अनास्थायां कृतास्थायां पूर्वं संसार... शां. १।७।१७
अनास्थैवहिनिर्वाणं(सुखं)दुःखमास्था.. महो. ४।१११
अनाहतध्वनियुतं हंसं यो वेद... ब्र. वि. २०
अनाहतमतिक्रम्यविशुद्धौप्राणान्निरुध्य हंसो. ४
अनाहतमन्त्रः निर्वाणो. ७
अनाहतस्य शब्दस्य...ध्वनेरन्तर्गतं
ज्योतिः...तद्विष्णोः परमं पदं
[यो. शि. ६।२१ + मं. ब्रा. ५।१
अनाहतं तु यच्छब्दं...तत्परं विन्दते
यस्तु स योगी छिन्नसंशयः ध्या. बिं. ३

अनाहतः स्वरूपेण ज्ञानिनामूर्ध्वगो भवेत् (प्रणवः) योगचू. ७९
अनिकेतवास्यप्रयत्नो निर्ममः... देहत्यागं करोति स परमहंसः आश्र. ६
अनिकेतश्चरेत्, यत्किञ्चिन्नाश्नात् कठरु. ४
अनिकेतश्चरेद्भिक्षाशी कुंडिको. ९
अनिकेतः स्थिरमतिः [भ.गी.१२ १९ +प. हं. ९
अनिकेतः स्थिरमतिर्नानृतवादी ना. प. ७।२
अनिङ्गनमनाभासंनिष्पन्नंप्रह्यतत्तदा अद्वैत. ४६
अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय भ. गी. ३।३६
अनित्यद्रव्यैःप्राप्तवानस्मि..(मा.पा.) कठो. २।१०
अनित्यमसुखं लोकं भ. गी. ९।३३
अनित्यं जगद्यज्जनितं निर्वाणो. ३
अनित्यैर्द्रव्यैः प्राप्तवानस्मि नित्यम् कठो. २।१०
अनिन्द्यं वै व्रजेद्गेहं, निन्द्यं..वर्जयेत् ना. प. ५।२४
अनिन्द्रियमविषयमकरणं (ब्रह्म) नृसिंहो. ९।९
अनिन्द्रियोऽपि सर्वतः पश्यति नृ. पू. २।४
अनिन्धनो ज्योतिरिवोपशान्तो... शाट्याय. २१
अनिमित्तस्य चित्तस्य याऽनुत्पत्तिः समाऽद्वया अ. शां. ७७
अनिमित्तं हि जीवितम् भवसं. १।४०
(?) अनिमित्तो विपर्यासः कथं तस्य भविष्यति अ. शां. २७
अनियामकत्वनिर्मलशक्तिः निर्वाणो. ५
अनिराकरणं धारयिता भूयासं महाना. ७।७
अनिराकारमात्मानं धृत्वा यान्ति परां गतिं सदानं. ३
अनिरुक्तस्त्रयोदशस्तोभः...हुङ्कारः छां.उ.१।१३।३
अनिरुक्तः प्रजापतेः छां.उ.२।२२।१
अनिरूप्यस्वरूपं यत् अध्यात्मो. ६३
अनिर्देश्यमनपावृतं सुबालो. ३।२
अनिर्देश्यमनिरुक्तमप्रच्यवमाशास्यं भस्मजा.२।९
अनिर्देश्यमरूपं च पाणिपादाद्यसंयुतं भवसं. ३।३
अनिर्देश्यं परमं सुखं कठो. ५।१४
अनिर्देश्यः सर्वसृक् मैत्रा. ७।१
अनिर्भिण्णं यस्येदमासीदुदकात्मकं पारमा. १०।७
अनिर्वचनीयज्योतिः सर्वव्यापकं निरति...परमाकाशं मं. ब्रा. ४।१
अनिर्वचनीया सैव माया जगद्बीजं ग. शो. ४।२
अनिर्वचनोऽयं जीवः सामर. १००
अनिर्वाच्यममितबोधसागरं[सि.सा.१। १+त्रि.म.७।७
अनिर्वाच्यं चैतन्यं ब्रह्म निरालं. ५
अनिर्वाच्यं पदंवक्तुंनशक्यंतैःसुरैरपि १यो. त. ७
अनिर्वाच्या मूलप्रकृतिरासीत् पैङ्गलो. १।२
अनिर्वाच्योऽप्रमेयःपुरातनोगणेशः.. ग. शो. २।४
अनिर्वाणोऽपि निर्वाणश्चित्रदीप इव स्थितः अक्ष्युप. ४२
अनिर्विण्णः सप्तस्य लोकान् विचष्टे चिस्यु. १।१४
(?) अनिर्वृत्तिर्योगीश्वरः मैत्रा. ७।१
अनिवेद्य (गुरवे) न भुञ्जीत शिवो. ७।२४
अनिशंवाचामगोचरं(आदिनारायणं) त्रि. म. ७।१२
अनिश्चिता यथा रज्जुरन्धकारे विकल्पिता वैतथ्य. १७
अनिष्टमिष्टं मिश्रं च भ.गी. १८।१२
अनिष्टविषये बुद्धिर्दुःखबुद्धिः स. सा. ५
अनिष्टेष्विन्द्रियार्थेषु द्विष्टिः मैत्रा. ३।५
अनीशया शोचति मुह्यमानः मुण्ड. ३।१।२
अनीशश्चात्मा बध्यते भोक्तृभावात् श्वेता. १।२+ [ना. प. ९।७+ भवसं. २।५
अनुक्षणं जपश्चैवनिश्चयःपरिकीर्तितः गुह्यका. ८३
अनुग्रहरूपा उमा भवति ना.पू.ता. २।१
अनुज्ञाता ह्ययमात्मा नृसिंहो. ८।३
(?)अनुज्ञाता ह्ययमोङ्कारः नृसिंहो. ८।३
(उत) अनुज्ञात्रनुज्ञाविकल्परूपं चिन्तयन् ग्रसेत् नृसिंहो. ३।३
(उत) अनुज्ञात्रनुज्ञाविकल्पैरोतो ह्ययमात्मा नृसिंहो. २।७
(?) अनुज्ञानत्वादविकल्परूपत्वात् नृसिंहो. २।६
अनुज्ञाप्य गुरूंश्चैव चरेद्धि... ना. प. ६।३५
अनुज्ञामद्वयंलब्ध्वाउपद्रष्टारमाव्रजेत् नृसिंहो. ९।११
अनुज्ञैकरसो ह्ययमात्मा चिद्रूप एव नृसिंहो. २।७
अनुज्ञैकरसो ह्ययमात्माप्रज्ञानघनएव नृसिंहो. ८।५
अनुतिष्ठन्ति मानवाः भ. गी. ३।३१
अनुतिष्ठन्तु कर्माणि १ अवधू. १२
अनुत्तमेषूत्तमेषुलोकेषु(ज्योतिर्दीप्यते) छां.उ.३।१३।७
अनुदानयितव्यमसमानयितव्यम् नृसिंहो. ९।९
अनुद्वेगकरं वाक्यम् भ.गी. १७।१५
अनुनोऽस्मिन्नन्न आभजस्वेति बृह. १।३।१८

अनुन्मत्ता उन्मत्तवदाचरन्त- स्त्रिदण्डं कमण्डलुं...	जाबा. ६
अनुन्मत्तोऽप्युन्मत्तवदाचरन्	प. हं. प. ८
अनुपनीत उपनीतो भवति [+महो. ६।८३	अ.शिर. ३।१६ +चतुर्वे. ७
अनुपनीतशतमेकमेकेनोपनीतेनतत्समं	नृ. पू. ५।१६
अनुपनीताः क्रियाहीनाः...सर्प- योनिषु...जायन्ते	सन्ध्यो. ३
अनुपप्लुवः सर्वमायुरेति (अप्येति)	नारा. ३
अनुपलभ्यात्मानमननुविद्य व्रजतो यतर एतदुपनिषदो भविष्यंति	छान्दो. ८।८।४
अनुपश्य यथा पूर्वे प्रतिपश्य तथाऽपरे	कठो. १।६
अनुबन्धपरे जन्तावसंसर्गमनाः सदा	अ. पू. २।२९
अनुबन्धं क्षयं हिंसाम्	भ.गी.१८।२५
(?) अनु भगव इति	छान्दो.५।३।१
अनुभवैकवेद्यमपरोक्षतया भासमानं (आत्मानं)	व. सू. ९
अनुभूतं चाननुभूतं च सच्चासच्च	प्रश्नो. ४।५
अनुभूतिंविना मूढोवृथाब्रह्मणिमोदते	मैत्रे. २।२२
अनुभूतोऽप्ययं लोको व्यवहारक्षमो- ऽपि सन् । असद्रूपो यथा स्वप्नः	यो.शि.४।१०
(?)अनुमएतां भगवोदेवतां शाधि...	छान्दो. ४।२।२
अनुरक्तिः परे तत्त्वे सततं नियमः स्मृतः [त्रि. ब्रा. २।२९	+२ अवधू. २
(?)अनुव्रजज्जाश्रुमापातयेत्	कठश्रु. २
अनुशिष्टोऽन्वसि पित्रा	बृह. ६।२।१
अनुशुष्य हैवान्ततो म्रियते— इत्यध्यात्मम्	बृह. १।५।२१
अनुष्टुप् छन्दो भवति	ग. पू. २।८
अनुष्टुप्प्रथमा भवति [नृ. पू. १।१	+ग. पू. १।६
अनुष्टुप् वै पुरुषः	ग. पू. ३।१
अनुष्टुबुत्तमा भवति [नृ. पू. १।१	+ग. पू. १।६
अनुष्टुभेकविंश...उत्तरत उद्यन्ति	मैत्रा. ७।४
अनुष्टुभमनुचंचूर्यमाणमिन्द्रंनिचिक्युः	१ ऐत. ३।५।२
अनुष्टुभं प्रयन्त्यभिसंविशन्ति [नृ. पू. १।१+	ग. पू. १।६
अनुष्टुभा जातानि जीवन्ति [नृ. पू. १।१+	ग. पू. १।६
(?) अनुष्टुभा नत्वा प्रसाद्य	नृसिंहो. ४।१
अनुष्टुभाऽर्चनं कुर्यात्	नृ. पू. ५।८
अनुष्टुभावाइमानि भूतानि जायन्ते	ग. पू. १।६
अनुष्टुभा सर्वमिदं भवति	नृ. पू. ५।६
अनुष्टुभासर्वमिदंसृष्टम् [नृ.पू.२।२+	ग. पू. २।८
अनुष्टुभा सर्वमुपसंहृतं	नृ. पू. २,२,३
अनुष्टुभा होमं कुर्यात्	नृ. पू. ५।८
अनुष्टुभो वा इमानि भूतानि जायन्ते	नृ. पू. १।१
अनुष्ठायनशोचति विमुक्तश्चविमुच्यते	कठो. ५।१
अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहा... [ऋक्सं. २।५।२३=मं. २।३।११	महाना. ८।७
अनुसन्धानो नित्यः	ना. पू. १।३
अनुस्यूतोवसत्यात्मा भूतेष्वहमवस्थितः	वासु. ९
अनुस्वारश्चान्त्यरूपम्	गणप. ७
अनुस्वारः परतरः	गणप. ७
अनूपममनामयं	यो. शि. ३।१७
अनूचानमानी स्तब्ध एयाय	छां. उ. ६।१।२
अनृणा अस्मिन्ननृणाःपरस्मिंस्तृतीये लोके अनृणाः स्याम [तै. ब्रा. २।१५।१+	सहवै. १९ अथर्व.६।११७
अनृतमात्मानं कुरुते	छांदो. ६।१६।१
अनृताः कर्मवशानुगाः	मैत्रा. ६।३४
अनृतेन प्रमूढाः	छां. उ. ८।३।२
अनृतेनात्मानमन्तर्धायपरशुंतप्तं...	छां. उ.६।१६।१
अनेकचित्तविभ्रान्ताः	भ.गी. १६।१६
अनेकजन्मसंसिद्धः	भ.गी. ६।४५
अनेकजन्माभ्यासेनवामदेवेनवैयथा । सोऽपि मुक्तिसमाप्नोति तद्विष्णोः परमं पदम्	वराहो. ४।४१
अनेकजन्मार्जितपुण्यपुञ्जपक्वकैवल्य- फलोऽ...ब्रह्माहमस्मि...	मं. ब्रा. ३।३
अनेकदिव्याभरणं	भ. गी. ११।६
अनेकदोषदुष्टस्यदेहस्यैकोमहान्गुणः	शिवो.७।१२३
अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रं	भ.गी.११।१६
अनेकवक्त्रनयनं	भ.गी.११।१०
अनेकशोविद्या...सृष्टिस्थितिलयान् लभन्ते	सामर. ५५
अनेकाकारखचितमनेकवदनान्वितं... देवं..ध्यायतो..मनोवृत्तिर्विनश्यति	त्रि.ब्रा.२।१५४
अनेकाद्भुतदर्शनम्	भ.गी. ११।१०

अनेजदेकं मनसोजवीयो नैनद्देवा
आप्नुवन् पूर्वमर्शत् [ईशा. ४+ — गो.पू. ६।१७
अनेनसत्त्वीरितःपरिभ्रमतीदंशरीरं... — मैत्रा.२।६
अनेन चैतदुपस्मरत्यभीक्ष्णं सङ्कल्पः — केनो. ४।५
अनेन जीवेनात्मनाऽनुप्रविश्य — छां.उ.६।३।२
अनेन ज्ञानमाप्नोति संसारार्णवनाशनं — कैव. २४
अनेन प्रसविष्यध्वं — भ. गी. ३।१०
अनेन मंत्रेणाग्निमाजिघ्रेत् — जाबालो.४
अनेन यथाक्रमः,ततश्चोमितिध्वनिरभूत् — ग. शो. १
अनेन यदा पश्यन्पश्यति रुक्मवर्णं.. — मैत्रा. ६।१८
अनेनविधिनासम्यङ्नित्यमभ्यस्यते.. — अ. ना. २९
अनेन वै न उद्गात्रात्येष्यन्तीति — बृ. उ.१।३।२
अनेन ह रूपेणामुंलोकमभिसम्भवति — १ ऐत. ३।७।३
अनेन हिप्रजापतिर्विश्वात्मा...भवति — मैत्रा. ६।६
अनेन ह्येतत्सर्वं वेद — बृह्. १।४।७
अनेनाधीतेनाहोरात्रान् सन्दधामि — २ ऐत. ६।१
अनेनाभ्यासयोगेन..चित्तंविलीनता-
मेति बिन्दुर्नो यात्यधः — यो.शि.१।१२६
अनेनास्य तमसः पारं गमिष्यति — मैत्रा. ६।३०
अनेनेदृशेनानिष्टेनैतद्विधमिदं... — मैत्रा. २।४
अनेनेदं शरीरं चेतनवत्प्रतिष्ठापितं — मैत्रा. २।४
अनेनैमानभिभविष्याम इति — छान्दो. १।२।१
अनेनैव चतुर्दशविधस्य मार्गस्य
व्याख्या कृता — मैत्रा. ६।१०
अनेनैव चेदं ध्यायते — मैत्रा. ६।१७
अनेनैवतदुपस्मरत्यभीक्ष्णं [मा.पा.] — केनो.४।५
अनेनैव तद्बुध्यत्युदयत्युच्छ्वसित्यजस्रं — मैत्रा. ७।११
अनेनैव तु मन्त्रेण मोक्षश्च समुदीरितः — मुद्गलो. १।७
अनेनैव प्रमीयते हि कालः — मैत्रा. ६।१४
अनेनैव मुखेनालापयिष्यथा इति — छां.उ. ४।२।५
अनेनैव स्वचक्षुषा — भ. गी. ११।८
अनेनोर्ध्वंभागभवत्यन्यथाऽधःपतति — मैत्रा. ४।३
अनेनोर्ध्वमुत्क्रान्तोऽशब्देनिधनमेति — मैत्रा.६।२२
अनेशन्नस्येषव आभुरस्यनिषङ्गधिः — नीलरु. २।७
[वा.सं.१६।१०+ — तै.सं.६।५।१।४
अनौद्धत्यमदीनत्वं (यतिधर्माः) — ना. प. ४।११
अन्तकाले च मामेव — भ. गी. ८।५
अन्तकाले सर्वेप्राणा अभिसमायान्ति — बृ. उ.४।३।३३

अन्तत आचम्य पाणी प्रक्षाल्य...
अग्निं प्राक्शिराः संविशति — बृह. ६।३।६
(?) अन्ततोऽन्नं राद्धम् — तैत्ति.३।१०।१
अन्ततोऽस्मा अन्नं राध्यते — तैत्ति.३।१०।१
अन्तरङ्गसमुद्रस्य रोधेवेलायतेऽपिवा — ना.बिं.४६
अन्तरतरं यदयमात्मा — बृह. १।४।८
अन्तरतोऽलोमका हि योनिरन्तरतः — बृ. उ. १।४।६
अन्तरं ज्ञानचक्षुषा — भ.गी.१३।१५
(?)अन्तरात्मकत्यागस्याबहिरात्मनो-
ऽनुमीयते गतिः — मैत्रा. ६।१
(अथ) अन्तरात्मानाम पृथिव्यप्तेजो...
श्रोताघ्राता...विज्ञानात्मापुरुषः...
कर्मविशेषणं करोत्येषो-
ऽन्तरात्मा नाम — १आत्मो. २
अन्तरात्मा प्राणः — मैत्रा. ६।१
अन्तरात्मा भवेद्ब्रह्मापरमात्मामहेश्वरः — रुद्रहृ.१३
अन्तरात्मा मे शुद्ध्यतां — महाना.१४।१७
अन्तरादन्तरोऽस्म्यहं — मैत्रे. ३।१८
अन्तरादित्ये ज्योतिःस्वरूपो हंसः — पा. ब्र. ३
अन्तरादित्येन ज्ञातं मनुष्याणाम् — पा. ब्र. ५
अन्तरादित्ये मनसा चरन्तं — चित्यु. ११।६
अन्तरादित्ये हिरण्मयः पुरुषः — नृ. पू. १।४
अन्तरान्तररूपोऽहमवाङ्मनसगोचरः — ते. बिं. ३।८
अन्तरायदाकाशःससमानोवायुर्व्यानः — प्रश्नो. ३।८
अन्तरास्थां परित्यज्य...योऽसिसो-
ऽसिजगत्यस्मिँल्लीलया विहरानघ — महो. ६।१
अन्तरिक्षगतोवह्निर्वैद्युतःस्वान्तरात्मकः
नभःस्थःसूर्यरूपोऽग्निःनाभि... — यो.शि. ५।३२
अन्तरिक्षमथो सुवः — महाना. १।९
अन्तरिक्षमपूपः — छान्दो.३।१।१
अन्तरिक्षमात्मा — चित्यु. ४।१
अन्तरिक्षमुदरं [बृ.उ.१।१।१+ — १।२।३
अन्तरिक्षमुद्गीथः — छां.उ.२।२।१,२
अन्तरिक्षमेवर्क् — छां. उ. १।६।२
अन्तरिक्षमेव सा — छां. उ. १।६।२
अन्तरिक्षमेवोक्थम् — १ ऐत. १।२।२
अन्तरिक्षलोकं याज्यया (जयति) — बृ.उ. ३।१।१०
अन्तरिक्षलोकेषु गार्गीति — बृह. ३।६।१
अन्तरिक्षंकला,द्यौःकला,समुद्रःकला — छां. उ. ४।६।३

अन्तरिक्षं गीः — छां. उ. १।३।७
अन्तरिक्षं चतुर्होता — चित्यु. ७।२
अन्तरिक्षं दक्षिणाग्निः — मैत्रा. ६।३३
अन्तरिक्षं देवतामागोऽन्तरिक्षंत्वा...
  रिष्यतीत्येनं ब्रूयात् — ३ ऐत. १।३।३
अन्तरिक्षं पवित्रेण — चित्यु. ८।२
अन्तरिक्षं प्रजापतेर्द्वितीया चितिः — मैत्रा. ६।३३
अन्तरिक्षं प्रपद्ये दिवं प्रपद्ये — छां.उ.३।१५।५
अन्तरिक्षं प्रस्तावः — छां.उ.२।१७।१
अन्तरिक्षं मरीचयः — २ऐत. १।२
अन्तरिक्षं यजुर्भिर्नीयते सोमलोकं — प्रश्नो. ५।४
अन्तरिक्षं वा अनुपतन्ति — १ ऐत. १।२।२
अन्तरिक्षंवाएतद्यदिदमित्थेत्थोपधारय — आर्षे. २।२
अन्तरिक्षोदरःकोशोभूमिर्बुध्नोनजीर्यति — छां.उ.३।१५।१
अन्तरेणतालुकेयएषस्तनइवावलम्बते — तैत्ति. १।६।१
अन्तरेणयेन सन्धिविवर्तयतिसासंहिता — ३ ऐत. १।५।२
अन्तरेण स्तनौवाभ्रुवौवा निमृज्यात् — बृह. ६।४।५
अन्तरेणोभयं व्याप्तं भवति — ३ ऐत. ३।२
अन्तर्गतोऽनवकाशान्तर्गतसुपर्ण-
  स्वरूपो हंसः — पा. ब्र. ३
अन्तर्गृहे रेतो मूत्रं पुरीषं वा...तेन
  सिञ्चते पितॄन् — भस्मजा.२।१६
(यस्मात्) अन्तर्जलौषधिवीरुधाना-
  त्विश्येमं विश्वं भुवनानि वा अवते
  तस्मादुच्यते भगवान् बटुकेश्वरः — बटुको. २०
अन्तर्जुषाणं भुवनानि विश्वा — आर्षे. १०।१
अन्तर्ज्योतिर्विश्वभुक् (आत्मा) — आर्षे. ९।२
अन्तर्धारणशक्तेन...शैवंलिङ्गमुरस्थले — सदानं. ७
अन्तर्बहिर्धारितं परमब्रह्माभिधेयं
  शाम्भवं लिङ्गम् — सदानं. १
अन्तर्बहिश्च तत्सर्वं व्याप्य
  नारायणः स्थितः — महाना.९।५
अन्तर्बहिश्च तत्सर्वं व्याप्य परिपूर्ण.. — त्रि.म.ना.७।७
अन्तर्बहिश्चतत्सर्वंस्थितोनारायणःपरः — ना. पू. १।५
अन्तर्बहिश्च तल्लिङ्गं विधत्ते यस्तु
  शाश्वतम् — सदानं. १५
अन्तर्बहिश्च नारायणः — नारा. २
अन्तर्बहिश्चरति हंसः — पा. ब्र. ३

अन्तर्बहिश्चाकाशवदनुस्यूतं (आत्मान-
  मपरोक्षीकृत्य) — वज्रसू. ९
अन्तर्बाह्यलक्ष्ये दृष्टौ निमिषोन्मेष-
  वर्जितायां सत्यां शाम्भवी मुद्रा.. — अद्वयता. ७
अन्तर्मुखतयातिष्ठन्बहिर्वृत्तिपरोपिसन् — अक्षुप. ३९
अन्तर्मुखतयानित्यं..निद्रालुरिवलक्ष्यते — वराहो. ४।१५
अन्तर्मुखतया नित्यंसुप्तोबुद्धोव्रजन्पठन् — अ. पू. १।३४
अन्तर्मुखतया सर्वं..जुह्वतोऽन्तर्निवर्तते — अ. पू. ५।१२
अन्तर्यदिबहिःसत्यमंताभावेबहिर्नच — ते. बिं. ५।२८
अन्तर्याण्डोपयोगादिमौ स्थितौ... — मैत्रा. ६।२६
अन्तर्याममुपांशुमेतयोरंतराले चौष्णं
  मासवद्यदौष्ण्यं स पुरुषः — मैत्रा. २।८
अन्तर्याममेवाप्येति योऽन्तर्याम-
  मेवास्तमेति विज्ञानमेवाप्येति — सुबालो. ९।७
अन्तर्याम्यहमग्राह्योऽनिर्देश्योहमलक्षणः — ब्र. वि. ८४
अन्तर्याम्यात्मना विश्वं...सा मां पातु
  सरस्वती — सरस्व. १३
अन्तर्योगं बहिर्योगं...मया त्वया-
  ऽप्यसौ वन्द्यः — अमन. २।६
अन्तर्लक्ष्यं (क्ष्य)जलज्योतिस्स्वरूपं
  भवति [मं. ब्रा. १।४+ — अद्वयता. ७
अन्तर्लक्ष्यदर्शनेन जीवन्मुक्तदशायां
  स्वयमन्तर्लक्ष्योभूत्वा...भवति — मं. ब्रा.१।५
अन्तर्लक्ष्यविलीनचित्तपवनो योगी
  सदा वर्तते — शां. १।७।१५
अन्तर्लक्ष्यं बहिर्दृष्टिर्निमेषोन्मेषवर्जिता,
  एषा सा वैष्णवी मुद्रा...गोपिता — शां. १।७।१४
अन्तर्लीनसमारम्भः...शरीरं विद्धि
  भौतिकम् — अ. पू. ४।३९
अन्तर्विवरेणेक्षन्ति,अनाद्यंतो..भास्करः — मैत्रा. ७।२
अन्तर्विवरेणेक्षंति प्रणवाख्यं प्रणेतारं
  भारूपं विगतनिद्रं...विरजं विमृत्युं — मैत्रा. ७।५
अन्तर्वीथीनागवीथीभ्रुवावस्याः — गुह्यका. १०
अन्तर्वैराग्यमादाय बहिराशोन्मुखेहितः — महो.६।७०
अन्तर्हितेन जातरूपेण प्राशयति — बृ.उ.६।४।२५
अन्तर्हृदयाकाशशब्दमाकर्णयन्ति — मैत्रा. ६।२२
अन्तर्हृदयाकाशस्य पारं तीर्त्वा — मैत्रा.६।२८
अन्तर्हृदयाकाशं विनुदन्ति — मैत्रा.६।२७
अन्तर्हृदा मनसा पूयमानाः [त्रिसु.] — महाना.१२।३
  [तै.आ. १०।५०।१]

अन्तर्हृदये यथा व्रीहिर्वा यवो वा   बृ. उ. ५।६।१
अन्तवत्तु फलं तेषां   भ.गी. ७।२३
अन्तवदेवास्य तद्भवति   बृह. ३।८।१०
अन्तवद्वै किल ते शालावत्य साम   छां.उ.१।८।८
अन्तवन्त इमे देहाः   भ.गी. २।१८
(?)अन्तवन्त उपास्ते अन्तवन्तं..जयति   बृ.उ.१।५।१३
अन्तवन्तं स लोकं जयति   बृह. १।५।१३
अन्तश्चन्द्रमसि मनसा चरन्तं   चित्सु. ११।५
अन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतोमुखः   प्रा.हो. १।७
अन्तश्चरति भूतेषु गुहायां विश्वमूर्तिषु
[तै. आ. १०।३१।१+   महाना.१६।१
अन्तश्चेतसा कल्पितं त्वसत्   वैतथ्य. ९
अन्तश्शरीरे ज्योतिर्मयो हि शुभ्रो
यं पश्यंति यतयः क्षीणदोषाः   मुण्ड. ३।१।५
अन्तश्शरीरे निहितो गुहायामज
एको नित्यः [सुबालो.७।१   +अध्यात्मो.१
अन्तश्शरीरे निहितो गुहायां शुद्धः
सोऽयमात्मा सर्वस्य...मेदो...   सुबालो. ८।१
अन्तश्शांतःसमस्नेहोभवचिन्मात्रवासनः   मुक्ति. २।७०
अन्तश्शीतलया बुद्ध्या कुर्वतो
लीलया क्रियाम्   महो.६।४३
अन्तश्शीतलतायां तु लब्धायां
शीतलं जगत्   अ. पू.१।३५
अन्तश्शून्यो बहिश्शून्यः शून्यकुम्भ
इवाम्बरे [मैत्रे. २।२७+   वराहो. ४।१८
अन्तस्तृष्णोपतप्तानांदावदाहमयंजगत्   अ. पू. १।३५
अन्तस्स्थं मां परित्यज्य बहिष्ठं यस्तु
सेवते। हस्तस्थं पिण्डमुत्सृज्य
लिहेत्कूर्परमात्मनः   जा. द. ४।५८
अन्तस्थानां तु भेदानां तस्माज्जागरिते   वैतथ्य. ४
अन्तस्थानीन्द्रियाण्यन्तर्बहिष्ठान्
विषयान्बहिः...   ना.प. ३।२६
अन्तरसङ्गपरित्यागीलोके विहर...   ना.प ६।४३
अन्तरसङ्गपरित्यागीबहिस्संभारवानिव   महो. ६।७०
अन्तरसंत्यक्तसर्वाशोवीतरागोविवासनः   महो. ६।६७
अन्तरसमुद्रे मनसा चरन्तं   चित्सु.११।१
अन्तरसर्वपरित्यागीबहिःकुरुयथागतं   अ.पू. ५।११६
अन्तरसङ्गं बहिस्सङ्ग मात्मसङ्गं च यः   वराहो. २।३६
अन्तं चैव अन्नादश्च सोम एव   बृ. उ. १।५।६

(?)अन्तःकरणचतुष्टयात्मा   रामो. ५
अन्तःकरणचतुष्टयैरेव स्वप्नः   शारीरको.१०
अन्तःकरणनाशेनसंविन्मात्रस्थितोहरिः   स्कन्दो.२
अन्तःकरणप्रतिबिम्बितचैतन्यंयत्तदेवा..   पैङ्गलो. २।६
अन्तःकरणमनोबुद्धिचित्ताहङ्कारा-
स्तत्तत्तयः   पैङ्गलो. २।४
अन्तःकरणसम्भिन्नबोधःसत्स्वरूपदाभिधः अध्यात्मो. ३१
अन्तःकरणोपाधिकाः सर्वे जीवा
इति वदन्ति   त्रि.म.ना.४।९
अन्तःपूर्णो बहिःपूर्णः पूर्णकुम्भ
इवार्णवे [मैत्रे. २।२७+   वराहो.४।१८
अन्तःप्रज्ञस्तु तैजसः   आगम. १
अन्तः प्रणवनादाख्यो हंसः...   पा. ब्र. ८
अन्तः प्रणवो व्यावहारिकप्रणवः   ना. प. ८।२
अन्तः प्रत्याहृतिवशात्...मुक्त एव   अ.पू.५।९०
अन्तः प्रविष्टं कर्तारमेतम्   चि. ११।२,३
अन्तःप्रविष्टः शास्ता जनानाम्
[तै. आ. ३।११+   चित्सु.११।१
अन्तःशून्यो बहिश्शून्यः शून्यकुम्भ
इवाम्बरे [वराहो.४।१८   मैत्रे. २।२७
अन्तःशुद्धः पूतः शून्यः   मैत्रा. ७।४
अन्तःशांतः समस्नेहो भव   मुक्ति. २।७०
अन्तादाचामेति, कथमिति, लवणमिति   छां. ६।१३।२
अन्तेचशुभाशुभंकर्मैतच्छरीरस्यप्रामाण्यं   निरुक्तो. १।८
अन्ते तु किङ्किणीवंशवीणाभ्रमरनिस्व-
नः, इति नानाविधानादाः श्रूयंते...   ना. बिं. ३५
अन्ते ब्रह्माखण्डाकारम्   निर्वाणो. ८
अन्तेवास्युत्तररूपम्   तैत्ति. १।३।५
(?) अन्ते विश्वमायाप्रवृत्तिः   श्वेता. १।१०
अन्ते सहस्रस्य मुनेरंतिकमा-
जगाम [मैत्रा. १।२+   मैत्रे. १।१
अन्ते स्विष्टकृत्पूर्णाहुतिः..बलिप्रदानं   भस्मजा. १।२
अन्त्याश्रमस्थःसकलेन्द्रियाणिनिरुध्य..   कैव. ५
अन्धकारनिरोधित्वाद्गुरुरित्यभिधीयते   अद्वयता. ५
अन्धवत्कुब्जवच्चैवबधिरोन्मत्तमूकवत्
(यतिः)   ना. प. ४।२२
अन्धवज्जडवच्चापि मूकवच्च महींचरेत्   ना. प. ४।३६
अन्धवत्पश्य रूपाणि...प्रशान्तस्येति
लक्षणम्   अ. ना. १५

अन्धं तमः प्रविशन्ति येऽविद्या-
मुपासते [ईशा. ९+ बृह. ४।४।१०
अन्धं भुवनमेतस्यप्रकाशंनुसुचक्षुषाम् वराहो. २।२२
अन्धः सन्नन्धो भवति छां.उ. ८।४।२
अन्धा बधिरा मुग्धाः क्लीबा मूका
उन्मत्ता इव परिवर्तमानाः नृसिंहो. ६।३
अन्धाः खञ्जाः कुब्जावामनका भवन्ति गर्भो. ३
अन्धेन तमसावृताः बृ.उ.४।४।११
अन्धेनैव नीयमाना यथान्धाः कठो. २।५+
[मुं. उ.१।२।८+ मैत्रा. ७।९
अन्धोदपानस्थोभेकइवाहमस्मिन्संसारे
त्वं नो गतिः मैत्रा. १।८
अन्धोऽभविष्यन्नमांनागमिष्यइति छां. ५।१३।२
अन्न इत्यु हैक आहुः बृ.उ.१।३।२७
अन्नकामनेदं प्रकल्पितं ब्रह्मणा मैत्रा. ६।१२
अन्नकार्याणां(षण्णां)कोशानां समूहो-
ऽन्नमयः कोश इत्युच्यते सर्वसारो. ४
(?) अन्नत्वं न पुनरुपैति मैत्रा. ६।९
(?) अन्नदास्त्वेवैनमुपमन्त्रयते कौ. उ. २।१
अन्नपतेऽन्नस्यनोधेह्यनमीवस्यशुष्मिणः प्रा. हो. १।५
[वा.सं. ११।८३+ तै.सं.४।२।३।१
अन्नपानपरो भिक्षुः...आविकं वा
नाविकं वा...प्रतिगृह्णयतिश्चैतान्
पतत्येव न संशयः १सं.सो.२।९५
(?)अन्नपानलोकेन सम्पन्नो महीयते छां. उ. ८।२।७
अन्नपानविशेषैश्च नैवेद्यमुपकल्पयेत् शिवो. ७।७७
अन्नपाने च सर्वदा तैत्ति. १।४।१
अन्नपूर्णोपनिषदंयोऽधीते..ब्रह्मैवभवति अ.पू. ६।१२०
अन्नमभिजिघृक्षमाणानिसूर्योरश्मिभिः मैत्रा. ६।१२
(?) अन्नममृतम् , सम्राट् स्वराट्... नृ. पू. १।४
अन्नमय-प्राणमय-मनोमय-विज्ञान-
मयानंदमय-कोशाः कथं सर्वसारो. १+
[मुद्गलो. ४।२+ पैङ्गलो. २।५
अन्नमयप्राणमयमनोमयविज्ञानमया-
नंदमयमात्मा मे शुध्यतां महा. १४।१९
अन्नमयो ह्ययं प्राणः... मैत्रा. ६।११
अन्नमशितं त्रेधा विधीयते छान्दो. ६।५।१
अन्नमसि ज्योतिरसि निधनमसि बृ. उ. ६।३.४
अन्नमयंहिसोम्यमनः[छान्दो. ६।५।४+ ६।६।५

(?) अन्नमयः कोश इत्युच्यते सर्वसा. ४
अन्नमात्मन आगायानि छां.उ.२।२२।२
(अतः) अन्नमात्मेत्युपासीत मैत्रा. ६।१२
(अथ) अन्नमापश्चन्द्रमा इत्याप्या-
यनवत्येषा मैत्रा. ६।५
अन्नमायुर्वा एष यन्नायुः २ ऐत. ३।१०
अन्नमितरे पशवः १ऐत. ३।१।३
अन्नमितिहोवाच—सर्वाणिहवा..भूतानि छां. १।११।९
अन्नमिहा२ऽऽहरदन्नपते३न्नमिहा-
२ऽऽहरा२ऽऽहरों३ छां.उ.१।१२।५
अन्नमेव विजननमन्नं संवननं स्मृतं मैत्रा. ६।१३
अन्नरसविज्ञातारं विद्यात् कौ. उ. ३।८
अन्नरसान्मे त्वयि दधानीति पिता कौ.उ. २।१५
अन्नरसांस्ते मयि दध इति पुत्रः कौ. उ.२।१५
अन्नरसेनैव भूत्वाऽन्नरसेनाभिवृद्धि
प्राप्यान्नरसमयपृथिव्यां यद्वि-
लीयते सोऽन्नमयकोशः पैङ्गलो. २।५
अन्नवतो वै स लोकान् पानवतो-
ऽभिसिद्ध्यति यावदन्नस्य... छान्दो.७।९.२
अन्नवानन्नादो भवति छां.उ. १।३।७
[+१।१३।४+२।८।२+तैत्ति.३।६+ ३।७
अन्नवान्प्राणवान्मनस्वान्विज्ञानवाना-
नन्दवांश्च भवति मैत्रा. ६।१३
अन्नशुद्धयैव सत्त्वस्य विशुद्धिः... भवसं. ४।९
अन्नस्य का गतिरित्याप इति होवाच छां.उ. १।८।४
अन्नस्य परिपाकेन रसवृद्धिः प्रजायते वराहो. ५।४८
अन्नस्य रेतो रेतः १ऐत. १।३।१
अन्नस्य संक्लृप्त्यै प्राणाः सङ्कल्पंते छां.उ. ७।४।२
अन्नस्यात्मेति वा अहमेतमुपासे कौ.उ. ४।३
अन्नस्यायै द्रष्टा भवति...कर्ता भवति छां.उ. ७।९।१
अन्नस्याश्यमानस्य योऽणिमा स
ऊर्ध्वः...तन्मनो भवति छान्दो.६।६।२
अन्नं कनीयो भविष्यति छां.उ.७।१०।१
(?)अन्नंचरसंचविजानाति(विज्ञानेन) छां.उ. ७।७।१
अन्नं चैव प्राणश्च (द्वौ देवौ) बृह. ३।९।८
अन्नं चैवान्नादश्च सोम एव बृ. उ. १।४।६
अन्नं थम्, अन्ने हीदं सर्वं स्थितम् छान्दो.१।३।६
अन्नं न निन्द्यात्, तद्व्रतम् तैत्ति. ३।७
अन्नं न परिचक्षीत, तद्व्रतम् । तैत्ति. ३।८

वाक्य	स्थान
अन्नं नो भगवानागायतु	छां. १।१२।२
अन्नं पशूनां प्राणोऽन्नं ज्येष्ठमन्नं भिषक्स्मृतम्	मैत्रा. ६।१३
अन्नं पुनः पुनर्जनयते	बृ. उ. १।५।२
अन्नं प्रयन्त्यभिसंविशन्ति(भूतानि)	तैत्ति. ३।२
अन्नं प्राणं चक्षुःश्रोत्रंमनोवाचमिति	तैत्ति. ३।१
अन्नं प्राणेन सम्मितम्	इतिहा. ४
अन्नं प्राणो वृषादर्विः...	इतिहा. ५
अन्नं बहु कुर्वीत, तद्व्रतम्	तैत्ति. ३।९
अन्नं बहु भविष्यति (सुवृष्टया)	छां. ७।१०।१
अन्नं ब्रह्म यथान्नं ब्रह्म	रामोप. ४।२
अन्नं ब्रह्मेति व्यजानात्	तैत्ति. ३।२
अन्नं ब्रह्मेत्येक आहुः, तन्न, तथा पूयति वाऽन्नं, ऋते प्राणात्	बृह. ५।१२।१
अन्नं या वाग्विराट्	छां. १।१३।२
अन्नं वावबलाद्भूयः,तस्मा..नाश्नीयात्	छां. ७।९।१
अन्नं वा अस्य सर्वस्य योनिः	मैत्रा. ६।१४
अन्नं वै प्रजापतिः,ततोह्वै तद्रेतः, तस्मादिमाःप्रजाः प्रजायंते	प्रश्नो. १।१४
अन्नं वै वि,अन्ने ह्रीमानिभूतानिविष्टानि	बृह.५।१२।१
अन्नं सप्तहोता	चित्यु.७।३
अन्नं हि भूतानां ज्येष्ठम्	तैत्ति. २।२
अन्नात्पुरुषः [तैत्ति. २।१।१+	ना.उ.ता.१।५
अन्नात्प्राणा भवन्ति भूतानां	महाना.१७।१
अन्नात्प्राणो मनः सत्यंलोकाःकर्मसु..	मुण्ड. १।१।८
अन्नादश्च सोम एवान्नं...	बृह. १।४।६
अन्नादो भवति,य एतामेवं साम्नामुप..	छां.उ.१।१३।४
अन्नादो भवति, य एवेदं वेद	छां.उ. ४।३।८
अन्नादोऽधिपतिर्य एवं वेद	बृ.उ.१।३।१८
अन्नादोवसुदानो विन्दतेवसु,यएवं..	बृह. ४।४।२४
अन्नादो वाऽधिपतिः [पा.]	बृ.उ.१।३।१८
अन्नाद्भवन्ति भूतानि	भ. गी. ३।१४
अन्नाद्यायव्यूहध्वं सोमो राजाय... [पा. गृ. सू. २।६।१७+ हि. गृ. सू. १।१०।१	रामोप. ४।२
अन्नाद्ध्येवखल्विमानि भूतानिजायन्ते	तैत्ति. ३।२
अन्नाद्भूतानामुत्पत्तिः	मैत्रा. ६।३७
अन्नाद्भूतानि जायन्ते[तैत्ति.२।२+	मैत्रा. ६।१२
अन्नाद्यकामो निर्मुजं ब्रूयात्	३ ऐत. १।३।२
अन्नाद्रेतः (जायते)	ग. शो. २।५
अन्नाद्वाव भूयोऽस्तीति तन्मे..ब्रवीतु	छान्दो.७।९।२
अन्नाद्वीर्यं तपो मन्त्राः कर्म-लोकालोकेषुनाम च	प्रश्नो. ६।४
अन्नाद्वैप्रजाःप्रजायन्ते..पृथिवींश्रिताः [तैत्ति. २।२+	मैत्रा. ६।११
अन्नेन जातानि जीवन्ति,अन्नं प्रयन्ति..	तैत्ति. ३।२
अन्नेन पशूनां तृणेन तत्तज्जीवानां [तृप्तिदा]	सीतो. ७
अन्नेन प्राणाः, प्राणैर्बलं, बलेन तपः	महा. १७।१३
अन्नेन मूलेनापोमूलमन्विच्छ	छां.उ. ६।८।४
अन्नेन वाऽथवायेनशाकमूलफलेनवा	इतिहा. ९१
अन्नेन वाव सर्वे प्राणा महीयन्ते	तैत्ति. १।५।३
अन्नेन शुङ्गेनापो मूलमन्विच्छ	छां.उ. ६।८।४
अन्नेन हीदं सर्वमश्नुते [१ऐत.१।२।१,	२,३,४,५,६
अन्नेन हीमानि सर्वाणि भूतानि समनन्ति	१ऐत. १।२।३
अन्नेनाभिषिक्ताः पचन्तीमे प्राणाः	मैत्रा. ६।१२
अन्नेनेमं लोकं जयत्यन्नेनामुं...	१ऐत.१।२।७
अन्ने हीदं सर्वं स्थितम्	छां.उ. १।३।६
अन्ने हीमानि सर्वाणि भूतानि विष्टानि । रमिति प्राणो वै रं	बृ.उ.५।१२।१
अन्नैः पानैरावसथैः प्रतिकल्पन्ते	बृ.उ. ४।३।३७
अन्यकृतस्यैनसोऽवयजनमसि [+आप. श्रौ. सू. १३।१७।९	महाना. १४।१
अन्यच्छ्रेयोऽन्यदुतैव प्रेयः	कठो. २।१
अन्यजन्मकृताभ्यासात्स्वयंतत्त्वंप्रकाशते	अमन.२।११०
अन्यतरामेव वर्तनीं संस्करोति [संस्कुर्वन्ति—मा.पा.]हीयतेऽन्यतरा	छां. ४।१६।३
अन्यत्र कथं तदुपलभ्यते	कठो. ६।१२
अन्यत्र चैव सर्पेत्तु	शिवो. ७।३६
अन्यत्र धर्मादन्यत्राधर्मात्	कठो. २।१४
अन्यत्र भूताच्च भव्याच्च यत्पश्यसि...	कठो. २।१४
अन्यत्रमना अभूवं नादर्शं	बृ. उ. १।५।३
अन्यत्रमना अभूवं नाश्रौषम्	बृ. उ. १।५।३
अन्यत्र मे मनोऽभूदित्याह	कौ. उ.३।७,७
(?)अन्यत्रायतनमलब्ध्वा	छां.उ. ६।८।२
अन्यत्रास्मात्कृताकृतात्	कठो. २।१४
अन्यथा गृह्णतः स्वप्नो निद्रां स्वप्नं	आगम. १५

अप उपस्पृश्य गृहानेति ततो यत्किंच
ददाति सा दक्षिणा सद्वे. १७
अप एव भगवो राजन्निति होवाच छां. ५।१६।१
अपकारिणि कोपश्चेत्कोपेकोपः कथंनते याज्ञव. २३
अपक्वा योगहीनास्तु, पक्वा योगेन... यो.शि.१।२६
अपक्वाःपरिपक्वाश्च देहिनो द्विविधाः.. यो.शि.१।२५
अपक्वो दुःखदो भवेत् (देहः) यो.शि.१।२७
अपक्षीयमाणपक्षाद्यान्षण्मासान्
दक्षिणादित्य एति बृह. ६।२।१६
अपजहि परिघमित्युक्त्वोत्तिष्ठति छां.उ.२।२४।६
अपञ्चीकृतआकाशसम्भूतोरज्जुसर्पवत् कठरु. १६
(अथ) अपञ्चीकृतमहाभूतरजोंश...
प्राणमसृजत् पैङ्गलो. २।३
(?)अपदसि नहिपद्यसे,नमस्तेतुरीयाय बृ.उ.५।१४।७
अपध्वान्तमूर्णुहिपूर्धिचक्षुर्मुमुग्ध्यस्मा-
न्निधयेव बद्धान् [महाना.१६।७+ चाक्षु. ५+
[ऋक्सं.८।३।४=मं.१०।७३।११+
तै. आ. ४।४२।३+सामवे.१।३१९
अपश्रान्तं वरुणस्य तान् ..उपसेवेत छां. २।२२।१
अप पुनर्मृत्युं जयति बृह. ३।२।१०
अपयेसंविद्रते तदेतदन्तर्विचक्षतइति आर्षे. ८।१
अपरपक्षाद्यान्षडुदक्षिणैति मासान्... छां. ५।१०।३
अपरप्रयोज्यःस्वतंत्रोऽलिङ्गो..भास्करः मैत्रा. ७।२
अपरस्परसम्भूतम् भ.गी. १६।८
(?) अपरस्मै धारयस्व बृ.उ.३।८।५
अपरं भवतो जन्म भ. गी. ४।४
अपरं सन्त्यजेत्सर्वंयदिच्छेदात्मनोहितं यो.कुं. ३।४
(तत्र) अपरा (विद्या) ऋग्वेदो
यजुर्वेदः सामवेदो..शिक्षा कल्पो
व्याकरणं...ज्योतिषमिति मुण्ड. १।१।५
अपराजितमायतनमिन्द्रप्रजापती कौ. उ. १।३
अपराह्णः प्रतिहारः छां.उ. २।९।७
अपरिच्छिन्नमण्डलानि यथा
दृश्यन्ते तद्वत्... त्रि.म.ना.१।४
अपरिमिततेजसेधाभिहितमग्नौ..प्राणे मैत्रा. ६।३७
अपरिमितधा चात्मानं विभज्य मैत्रा. ६।२६
अपरिमितधाचोद्भूतउद्भूतत्वाद्भूतेषु
चरति, प्रतिष्ठा सर्वभूतानां... मैत्रा. ५।२
अपरिमितानन्दविशेषशुद्धबोधानन्द.. त्रि.म.ना.७।७

अपरिमितोऽजोऽतर्क्योऽचिन्त्य
एष आकाशात्मा [आत्मा] मैत्रा. ६।१७
अपरिमितोऽपरिच्छिन्नः...स्वतंत्रो-
ऽलिङ्गोऽमूर्तः.. [आत्मा] मैत्रा. ७।२
अपरे नियताहाराः भ. गी.४।३०
अपरेयमितस्त्वन्या भ.गी. ७।५
अपरोक्षतया भासमानं (आत्मानं) व. सू. ९
अपर्याप्तं तदस्माकं भ.गी. १।१०
अपवित्रमपश्यं च..भुक्तंजरयति ज्ञानी अ. पू. ५।३
अपश्यतो हि किं स्यात् बृह. ४।१।४
अपश्यद्देवदेवस्य भ.गी.११।१३
(अथ) अपश्यदृचमानुष्टुभीं...यस्या-
क्रान्यन्ये मन्त्राः अव्यक्तो. ३
अपश्यं त्वावरोहन्तं नीलग्रीवं... नीलरु. २।१
अपश्यं रुद्रमंस्यन्तं नीलग्रीवं... नीलरु. १
अपहतपाप्मादिव्योदेवएकोनारायणः अध्यात्मो. १
अपहतपाप्मानस्तिग्मतेजस ऊर्ध्व...
वालखिल्याः मैत्रा. २।३
अपहतपाप्मा ह्येष तेन यदश्नाति
यत् पिबति... छान्दो.१।२।९
अपहतपाप्मा ह्येष ब्रह्मलोकः छां.उ. ८।४।१
अपहते पापकृत्यां लोकीभवति, छां.उ.४।११।२
सर्वमायुरेति, ज्योग्जीवति +४।१२।२
अपहत्य पाप्मानमनन्ते स्वर्गे
लोके ज्येये प्रतितिष्ठति केनो. ४।९
अपहन्ता ह वै भयस्य तमसो भवति छां.उ. १।३।१
(?)अपहार्षीत्स्तेयमकार्षीत्परशुमस्मै.. छां.उ.६।१६।१
अपागाच्चन्द्राच्चन्द्रत्वं छां.उ. ६।४।३
अपागादग्नेरग्नित्वं छां.उ. ६।४।१
अपागादादित्यादादित्यत्वं छां.उ. ६।४।२
अपागाद्विद्युतो विद्युत्वं छां.उ. ६।४।४
अपाङ् प्राङेतिस्वधयागृभीतो... १ऐत. १।८।४
मर्त्येनासयोनिः [ऋक्सं.२।३।२१= मं.१।१६४।३८
अपाणिपादमचक्षुःश्रोत्रमजिह्वम-
शरीरमग्राह्यमतिदेश्यम् (ब्रह्म) शां. २।१।२
अपाणिपादमस्निग्धमलोहितं... सुबालो. ३।२
(तत्)अपाणिपादंनित्यं विभुंसर्वगतं मुण्ड. १।१।६
अपाणिपादा जननी महीत्री गुह्यका. ५१

अपाणिपादो जवनो ग्रहीता पश्यत्यचक्षुः स शृणोत्यकर्णः । स वेत्ति वेद्यं...तमाहुरग्र्यं पुरुषं महान्तं [+ना.प.९।१४+ — श्वेताश्व.३।१९ महसं. २।४५
अपाणिपादोऽहमचिन्त्यशक्तिः पश्याम्यचक्षुः स शृणोम्यकर्णः । ...न चास्ति वेत्ता मम, चिरस्सदाऽहं.. — कैव. २१
अपाण्डर उदानश्च (प्राणवायुः) — अ. ना. ३८
अपात्रेभ्यश्च दीयते — भ.गी. १७।२२
अपान उत्तरः पक्षः, आकाश आत्मा — तैत्ति. २।२
अपान (नं)रुत्सर्गे (विषये—कार्ये) — गर्भो. १
अपानप्राणयोरैक्यं...युवा भवति वृद्धोऽपि.. मूलबंधनात् — यो. चू. ४७
अपानमन्नेनाप्यायस्व — महाना. १६।४
अपानमूर्ध्वमुत्कृष्य मूलबंधोऽयमुच्यते — ध्या. बिं. ७५
अपानमूर्ध्वमुत्थाप्य...योगी जराविनिर्मुक्तः षोडशो वयसा भवेत् — शां. १।७।१३
अपानमेवाप्येति योऽपानमेवास्तमेति — सुबालो. ९।२
अपानवायुर्मूत्रादेःकरोतिच विसर्जनम् — त्रि.ब्रा. २।८४
अपानश्चन्द्रमा देहमाप्याययति — अ. पू. ५।२९
अपानश्चरति ब्रह्मन् गुदमेढ्रोरुजानुषु — त्रि.ब्रा. २।८०
अपानश्चोर्ध्वगोभूत्वा..प्रसार्यस्वशरीरं तु...सुषुम्ना..विद्युल्लेखेव संस्फुरेत् — योगकुं.१।६४
अपानस्तस्य (प्राणवायोः) मध्ये तु इन्द्रगोपसमप्रभः । समानस्तु द्वयोर्मध्ये... — अ. ना. ३७
अपानस्तु पुनर्गुदे,समानोनाभिदेशेतु — अ. ना. ३५
अपानं प्रत्यगस्यति — कठो. ५।३
अपानं मुकुलीकृत्य पायुमाकृष्य... — वराहो. ५।३३
अपानं व्यानमुदानं समानं वैरम्भं मुख्यमन्तर्यामं प्रभञ्जनं कुमारं श्येनं श्वेतं कृष्णं... दहति — सुबालो. १५।२
अपानः कर्षति प्राणं प्राणोऽपानंच कर्षति [यो. चू. ३०+ — यो. शि.६।५३
अपानः प्रतिप्रस्थाता । व्यानःप्रस्तोता — प्रा. हो.४।१
अपानाख्यस्य वायोस्तु विण्मूत्रादिविसर्जनम् [कर्म] — जा.द. ४।३१
अपानात्कर्षति प्राणोऽपानः प्राणाच्च कर्षति — ध्या. बिं. ६०
(ॐ) अपानात्मने ॐतत्सत् .. अपानात्मने... — गोपालो. ३।४
अपानात्प्रयङ्गुलादूर्ध्वमधोमेदूस्यतावता, देहमध्यं मनुष्याणां... — त्रि.ब्रा. २।६६
अपानान्निषदा यक्षराक्षसगन्धर्वाश्च [अजायन्त] — सुबालो. २।१
अपानान्मृत्युः [निरभिद्यत] — २श्वेत. १।४
अपाने चोर्ध्वगेयाते...तेन कुण्डलिनी सुप्तासन्तप्तासम्प्रबुध्यते । दण्डाहतभुजङ्गीव निश्वस्य ऋजुतां व्रजेत् — योगकुं. १।४२
अपाने जुह्वति प्राणं — भ.गी. ४।२९
अपाने तृप्यति वाक्तृप्यति — छां.उ. ५।२।२
अपानेन हि गन्धाञ्जिघ्रति [प्राणः] — बृह. ३।२।१२
अपानेन ह्ययंयतःप्राणोन पराग्भवति — १श्वेत. १।८।४
[१]अपाने निविष्टोऽमृतं जुहोमि — महाना. १६।३
अपाने मूलकन्दाख्यं कामरूपं च तज्जगुः — योगरा. ६
[१] अपाने निविश्यामृतं हुतं... — महाना. १६।४
अपानेऽस्तङ्गते प्राणो यावन्नाभ्युदितो हृदि; तावत्सा कुम्भकावस्था योगिभिर्याऽनुभूयते — मुक्ति. २।५१
अपानोऽप्यनिशंब्रह्मन्स्पन्दशक्तिःसदागतिः...देहे,अपानोऽग्रमवाक्स्थितः — अ. पू.५।२६
अपानो वर्तते नित्यंगुदमध्योरुजानुषु; उदरे सकले कट्यां नाभौजङ्घे... — जा.द. ४।२७
अपानोऽस्तङ्गतोयत्र..तच्चित्तत्वंसमाश्रय — अ. पू. ५।३१
अपान्तरतमो ब्रह्मणे ददौ — सुबालो.७।३
अपान्याभिप्राण्यादिन्द्रियेणतेरेतसारेत.. — बृह. ६।४।११
अपापमशठं वृत्तमजिह्मं नित्यमाचरेत् — ना.प. ३।७४
अपामपोऽग्निरग्नौ वा व्योम्नि व्योम... — मैत्रा. ४।१६
अपामसोममममृता अभूम [ऋक्सं.६।४।११ — अ.शिरः.३।२ ऋमं.८।४८।३
अपामूर्मिसचमानःसमुद्रंतुरीयंधाम — सुदर्श. ७
अपामोषधय ओषधीनां पुष्पाणि — बृ. उ. ६।४।१
अपामोषधयो रसः, ओषधीनांपुरुषः — छां.उ. १।१।२
अपारपारमच्छेद्यमचिन्त्यमतिनिर्मलं — यो.शि. ३।१७
अपारब्रह्मविद्यासाम्राज्याधिदेवतां... — त्रि.म.ना.६।७
अपांकागतिः,इत्यसौलोकइतिहोवाच — छां.उ. १।८।५
अपां नेतारं भुवनस्य गोपां — त्रिसु.१।१९

वाक्य	स्थान
अपां प्रवेशे वा अग्निप्रवेशे वा	जाबालो. ५
अपां यः शिवतमो रस इत्येके	मैत्रा. ६।३१
अपां रसो मधुनः सर्पिषश्च क्षीरस्य	
चान्नस्य..सरसेनश्राद्धंप्राप्नुवंति..	इतिहा. ८४
अपां वा एष ओषधीनां रसः	सद्वै. १५
अपां सोम्य पीयमानानां योऽणिमा	छां.उ. ६।६।३
अपि च येषां बुभूषति य एवं वेद	बृ. उ. ६।१।१
अपि चेत्सुदुराचारः	भ.गी.९।३०
अपि चेदसि पापेभ्यः	भ.गी. ४।३६
अपि त्रैलोक्यराज्यस्य	भ.गी. १।३
(अथ)अपिधानमस्यमृतत्वायोपस्पृश्य..	प्रा.हो. १।१२
अपिधाय कर्णौ उपशृणुयात्	३ऐत.२।४।६
(अथापि) अपिधायाक्षिणी उपेक्षेत	३ऐत. २।४।६
अपिपासएवसबभूव,सोऽतवेलायां..	छां. ३।१७।६
अपि य एनं शुष्के स्थाणौ निषिञ्चे-	
ज्जायेरञ्छाखाः प्ररोहेयुः	
पलाशानीति [बृह.६।३।७,८,	१०,११,१२
अपिवर्षसहस्रायुःशास्त्रांतंनाधिगच्छति	पैङ्गलो. ४।१६
अपि वाताद्वा सम्भाषमाणस्तिष्ठेत्	कौ.उ.२।१५
अपिवाऽस्याभिमुखत एवासीत	कौ.उ. २।१५
अपिशीतरुचावर्केसुतीक्ष्णेऽपींदुमण्डले	
अप्यधःप्रसरत्यग्नौ जीवन्मुक्तो...	अ. पू. ४।९
अपि सर्वं जीवितमल्पमेव, तवैव...	कठो. १।२६
अपिहशतं विज्ञानवतामेको बलवान्..	छान्दो.७।८।१
अपि ह्यस्य परिमोषिणोऽस्थीन्यपजह्नु-	
रन्यन्मन्यमानाः	बृह. ३।९।२६
(?)अपिहितःसहस्राक्षेणहिरण्मयेन..	मैत्रा. ६।८
अपि हि न ऋषेर्वचनं श्रुतम्	बृह. ६।२।२
अपीतिश्च भवति, य एवं वेद	माण्डू. ११
अपीदं सर्वमाप्नवीय यदिदं पृथिव्यां	केनो. ३।९
अपीदं सर्वं दहेयं यदिदं पृथिव्यां	केनो. ३।५
अपुत्राश्चैवापशवो लोके सन्ति च	
निन्दिताः रौरवे नरके...	इतिहा. ९४
अपुनर्भवया कोशं भिनत्ति	सुबालो.११।२
(?) अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः	प्राणा. १।३
अपूर्वमनपरमनन्तरमबाह्यं (ब्रह्म)	बृह. २।५।१९
अपूर्वमपरं ब्रह्म स्वात्मानंसत्यमद्वयम्;	
यः पश्यति स पश्यति	जा.द. ४।६०
अपूर्वं स्थानिधर्मो हि यथा स्वर्गे..	वैतथ्य. ८
अपूर्वोऽनन्तरोऽवाह्योऽनपरः प्रणवः	आगम. २६
अपृच्छं मातरं, सा मा प्रत्यब्रवीत्	छां.उ.४।४।४
अपैतु मृत्युरमृतं न आगन्	महाना.१३।७
अप्पजेन सा भिता पुरा (माया)	कृष्णो. ५
अप्यधः प्रसरत्यग्नौ जीवन्मुक्तः...	अ. पू. ४।९
अप्यब्धिपानान्महतः सुमेरून्मूल-	
नादपि...विषमश्चित्तनिग्रहः	महो. ३।२०
अप्रकाशोऽप्रवृत्तिश्च	भ.गी.१४।१३
अप्रतर्क्यमनूपमं, अपारपारं (ब्रह्म)	यो.शि. ३।१७
अप्रतर्क्यमप्रकाश्यमसंवृतं (ब्रह्म)	सुबालो. ३।२
अप्रतर्क्योऽहम् (जीवन्मुक्तः)	आ. प्र. ६
अप्रतिगृह्यस्य प्रतिगृह्णात्यपि तत्र	
यथाशङ्कं भवति	बृह. ४।१।३
अप्रतिष्ठो महाबाहो	भ. गी. ६।३८
अप्रतिष्ठितं वै किल ते दाल्भ्य साम	छां.१।८।६,८
अप्रमत्तस्तदा भवति, योगो हि...	कठो. ६।११
अप्रमत्तः कर्मभक्तिज्ञानसम्पन्नः..	ना. प. ३।७७
अप्रमत्तेन वेद्धव्यं शरवत्तन्मयो भवेत्	मुण्ड. २।२।४
अप्रमाणमनिर्देश्यं (परंब्रह्म)	यो.शि. ३।१८
अप्रमेयमतीन्द्रियं "	यो.शि. ३।१८
अप्रमेयमनाद्यन्तंनिष्कलं..शान्तं(शिवं)	भस्म. १।१
अप्रमेयमनाद्यन्तंयज्ज्ञात्वामुच्यतेबुधः	त्रि.ना.५।९
अप्रमेयमनाद्यं च ज्ञात्वाच परमंशिवं	ब्र. वि. ९
अप्रमेयमनिर्देश्यमवाङ्मनसगोचरम्;	
शुद्धं सूक्ष्मं निराकारं (ब्रह्म)	यो.शि. २।१६
अप्रमेयमनूपमम् (ब्रह्म) [जा.द.९।४+	अ. पू. ५।७३
अप्रमेयमह्रस्वमदीर्घमस्थूलमनणु...	सुबालो. ३।२
अप्रमेयोऽनाद्यन्तः (आत्मा)	मैत्रा. ७।१
अप्रसिद्धःकथंहेतुःफलमुत्पादयिष्यति	अ. शां. १७
(?)अप्राणतो हि किं स्यात्	बृ.उ. ४।१।३
अप्स्वङ्गुल्या मथिते मथितं	अ. शि. २।४
अप्राणन्ननपान श्स्तां निराकरोति	छां.१।३।५
अप्राणन्ननपानन्नुद्गायति	छां.उ. १।३।४
अप्राणन्ननपानन्वाचमभिव्याहरति	छां.उ. १।३।४
अप्राणन्ननपानन्नृचमभिव्याहरति	छां.उ. १।३।४
अप्राणममुखममात्रमनन्तरमबाह्यम्	बृह. ३।८।८
अप्राणममुखमश्रोत्रमवागमनः..(ब्रह्म)	सुबालो. ३।२
अप्राणयितव्यमनपानयितव्यं	नृसिंहो. ९।९
अप्राणाद्यः प्राणसंस्पर्शेनोज्ज्वलति	मैत्रा. ६।२६

अप्राणादिह्यस्मात्सम्भूतःप्राणसंज्ञको
जीवस्तस्मात्प्राणोवैतुर्याख्येधारयेत् मैत्रा. ६।१९
अप्राणोनिरात्माऽनन्तोऽक्षय्यः [मैत्रा. ६।२८+७।४
अप्राणोऽमनाः सच्चिदानन्दमात्रः... नृसिंहो. ७।६
अप्राणोऽहममनाश्चोऽहममनाश्चोऽस्मि ब्र. वि. ८१
अप्राणोह्यमनाःशुभ्रोबुद्धयादीनांहि
सर्वदा । साक्ष्यहं सर्वदा नित्यः सर्वसारो. ८
अप्राणोह्यमनाःशुभ्रोह्यक्षरात्परतःपरः मुण्ड. २।१।२
अप्राप्तशरीरसंयोगमिव कुर्वाणो सर्वसा. ५
अप्राप्तं हि परित्यज्य...सन्तुष्ट
इति कथ्यते महो. ४।३६
अप्राप्य मनसा सह [तै.उ.२।४,९ शां. २।१।३
अप्राप्य मां निवर्तते भ. गी. ९।३
अप्राप्य योगसंसिद्धिं भ. गी. ६।३७
अप्रियवेत्तेव भवत्यपि रोदितीव छां.८।१०।२,४
अप्रिया ज्ञातयः दुष्कृतं (उपयन्ति) कौ. उ. १।४
अप्सरसो मानवीयाश्चमरीचयोनाम मैत्रा. ६।३१
अप्सरासुचयामेषा गन्धर्वेषुचयन्मनः महाना.१३।४
अप्सु पुरुष एतं...ब्रह्मोपासे बृह. २।१।८
अप्सु पुरुषस्तमेवाहमुपासे कौ.उ. ४।१०
अप्सुचारिणःशाकुनिकाःसूत्रयन्त्रेणो-
द्धृत्योदरेऽग्नौ जुहोति मैत्रा. ६।२६
अप्सु ज्योतिः प्रतिष्ठितं ज्योतिष्यापः.. तैत्ति. ३।८
अप्सु प्रक्षेपो लवणस्येव घृतस्य
चौष्ण्यमिव मैत्रा. ७।११
अप्सु लोहितं च रेतश्च निधीयते बृह. ३।२।१३
अफलप्रेप्सुना कर्म भ.गी.१८।२३
अफलाकाङ्क्षिभिर्यज्ञः भ.गी.१७।११
अफलाकाङ्क्षिभिर्युक्तैः भ.गी.१७।१७
अबध्नन्पुरुषंपशुम् [ऋक्सं.८।४।१९= मं.१०।९०।१५
[वा. सं. ३१।१५ चित्यु.१२।३
अबन्ध्वेकेददतःप्रयच्छादातुं चेच्छक-
वान्स्स स्वर्ग एषां सहवै.१०
(?) अबलिमानं नीतो भवति छां.उ. ८।६।४
अबलीयान् बलीयांसमाशंसते धर्मेण बृ.उ. १।४।१४
अबंशे पूरयेद्योगी नारायणमुदग्रधीः त्रि.ब्रा.२।१४
अबाधकरहस्थलनिकेतनो.. सन्न्यासेन
देहत्यागं करोति स परमहंसः याज्ञव. ३
अबाधकोऽस्त्येव, यस्माद्भिक्षुर्हिरण्यं...
दृष्टं...चेत्स ब्रह्महा भवेत् प. हं. ९

अबाह्यं नतदश्नाति किञ्चन [ब्रह्म] बृह. ३।८।८
अभिभवप्रभागहिश्रियामापरिपातव महाना.१।१०
अबुद्धिपूर्वकमिदैवावर्तवेनेन मैत्रा. २।५
अबृहन्तमजमात्मानं मत्वा धीरो
न शोचति सुबालो. ३।१
(१) अबोद्धाऽकर्ताऽविज्ञाता भवति छां.उ. ७।९।१
अब्जकाण्डंजगन्नीभंधृतपाणौरलीलया कृष्णोप. २४
अब्जपत्रमधःपुष्पमूर्ध्वनालमधोमुखं ध्या. विं. ३३
अब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं कठो. ५।२
[ऋ.मं.४।४०।५+महाना.८।६+ नृ. पू. ३।३
अब्जोऽजुषन्तःप्रपतन्त्यपतन्तः..प्रवालः पारमा. ९।५
अब्दतेष्वेव कार्येषु मृत्युर्वैसम्प्रकर्षति भवसं. १।४०
अब्धिवद्धृतमर्यादाः [ना.प.५।२९+ महो. ४।२२
अब्रवीत्तु ते तस्यायतनं प्रतिष्ठाम् बृह. ४।१।२
अब्रवीन्म उदङ्कः शौल्बायनः
प्राणो वै ब्रह्मेति बृह. ४।१।३
अब्रवीन्मेगर्दभी विपीतो भारद्वाजः
श्रोत्रं वै ब्रह्मेति बृह. ४।१।५
अब्रवीन्मेजित्वाशैलिनिः वाग्वै ब्रह्मेति
[शैलिनो वाग्वै–मा. पा.] बृह. ४।१।२
अब्रवीन्मे वर्कुर्वार्ष्णश्चक्षुर्वै ब्रह्मेति बृह. ४।१।४
अब्रवीन्मे सत्यकामो जाबालो
मनो वै ब्रह्मेति बृह. ४।१।६
अब्रह्मचारी ब्रह्मचारी भवति गायत्रीर. ११
अब्रह्मजन्मदोषाश्च प्रणश्यन्ति दत्तात्रे. १।६
अभक्ष्यपरिहारश्च..शौचमित्यभिधीयते भवसं. ३।२२
अभक्ष्यस्य निवृत्त्या तु विशुद्धं
हृदयं भवेत् पा. ब्र. ४१
अभक्ष्यभक्षणोत्पन्नं मिथ्याज्ञानसमु-
द्भवम् । सर्वं विलीयते...कीर्तनात् रामो. ५।३
अभक्ष्यं द्वैतभावनम् मैत्रे. २।१०
अभक्ष्यं ब्रह्मविज्ञानविहीनस्यैवदेहिनः पा. ब्र.४२
अभयमशोकमनन्तम् सुबालो.७।२४
अभयमशोकमानन्दं तृप्त [ब्रह्म] [मैत्रा. ६।२३।७।३
(अथ) अभयं कृणुहि विश्वतो नः महाना.५।११
अभयंचमनुष्याणां..वायुर्वैविश्वतोमुखः योगो. १२
अभयं तितीर्षतां पारं...नाचिकेतं
शकेमहि [शकेमसि–मा. पा.] कठो. ३।२
अभयं त्वा गच्छताद्याज्ञवल्क्य यो नो.. बृह. ४।२।४

अभयं परमश्नुते अ. शां. ७८
अभयं वै जनक प्राप्तोऽसीति होवाच बृह. ४।२।४
अभयं वै ब्रह्म [बृ. उ. ४।४।२५+ नृसिंहो.८।२
अभयं सत्त्वसंशुद्धिः भ.गी. १६।१
अभयं सर्वभूतेभ्योदत्त्वाचरतियोमुनिः ना. प. ५।२८
अभयं सर्वभूतेभ्योनममेभीतिःकदाचन प्रा.हो. १।१२
अभयं सर्वभूतेभ्यो मत्तः सर्वं प्रवर्तते ना. प. ४।४६
[+आरु. ३+ प. हं. प. ६
अभयं सर्वभूतेभ्यो मत्तः स्वाहेत्युर्ध्व-
बाहुर्भूत्वा ब्रह्माहमस्मीति चिन्तयन्.. प. हं. प. ५
अभयं हि वै ब्रह्म भवति,य एवं वेद बृह.४।४।२५
[+नृसिंहो. ८।७+ गोपा. २।१४
अभयाद्भयमापतेत् ते. बिं. ५।२३
अभागः सन्नप परेतोऽस्मि वनदु. १०४
[ऋक्.८।३।१७=मं.१०।८३।५+अथर्व. ४।३२।५
अभावश्च रथादीनां श्रूयते..वैतथ्यंतेन.. वैतथ्य. ३
अभावं यातुभावना...अमनस्त्वंमनो.. अ. पू. ५।३८
अभास्करममर्यादं निरालोकमतःपरं सुबा. १५।२
अभिघ्नन्त्ययोघनैः (यदिदं) आर्षे. १।२
अभिजातस्य भारत भ.गी. १६।३
अभिजातोऽसि पाण्डव भ.गी.१६।५
अभितृन्दन्ति पक्षीशिकाभिः (यदिदं) आर्षे. १।२
अभितो ब्रह्म निर्वाणं भ.गी. ५।२८
अभि त्वा शूरनोनुमोऽदुग्धा इव धेनवः अ. शि. ३।५
[ऋक्सं. ५।३।२=मं. ७।३२।२२ +बहृचो. १
अभिधावत मम यशसा विराजं वा अयं.. कौ. उ. १।३
अभिध्यातुर्विसृतिरिवैतदित्यत्रोदाहरंति मैत्रा. ७।११
अभिध्यायन् वर्णरतिप्रमोदानतिदीर्घे
जीविते को रमेत कठो. १।२८
अभिनद्धाक्ष आनीतोऽभिनद्धाक्षो
विनष्टः, तस्य यथाऽभि... छां. ६।१४।१
(?) अभिनद्धाक्षो विनष्टः (आनीतः) छां. उ.६।१४
(?) अभिनन्दा विस्फुलिङ्गाः छां. ५।८।१+
तस्मिन्नेतस्मिन्नग्नौ देवा रेतो बृह. ६।२।१३
अभिनवजलदसङ्काशा..कालिकाध्येया कालिको.१
अभिन्नाःथौलयेनापि..लघिनरभवेत्सिद्धिः अमन. १।६७
अभिपूजितलाभांश्च जुगुप्सेतैव सर्वशः ना.प. ५।१९
अभिपूजितलाभैस्तुयतिर्मुक्तोऽपिबध्यते ना.प. ५।२२
अभिप्रतारिणं च काक्षसेनिं बिभिक्षे छां.उ.४।३।५
अभिप्रतारिन् बहुधा वसन्तं छां.उ.३।४।६
अभिप्राण्य हैवान्नमत्रप्स्यत् २ ऐत. ३।४
अभिप्राण्यापान्यादिन्द्रियेण ते रेतसा
रेत आदद इत्यरेता एव भवति बृह. ६।४।१०
(अथ) अभिप्रातरेव स्थालीपाकावृताज्यं
चेष्टित्वा स्थालीपाकस्योपघातं बृह. ६।४।१९
अभिप्राद्रवैनद्ध मोपसीदथाः छां.उ.६।१३।२
अभि प्रेहि दक्षिणतो भवा मेऽधा
वृत्राणि जङ्घनाव भूरि [ऋक्सं. ८।३।१८।७
=मं. १०।८३।७ +अथर्व. ४।३२।७ +वनदु.१०६
(अतः) अभिभूतत्वात्सम्मूढत्वं प्रयाति
(आत्मा) मैत्रा. ३।२
अभिभूतः प्राकृतैर्गुणैरित्यत... मैत्रा. २।२
अभिभूयत्ययं भूतात्मोपसंश्लिष्टत्वात् मैत्रा. ३।३
अभिमन्ता जीवो नियन्तेश्वरः नृसिंहो.९।४
अभिमन्थतिसहिङ्कारः,धूमोजायते स.. छान्दो.२।१२
अभिमानाध्यक्षःक्रोधजं...धनुर्गृहीत्वा मैत्रा. ६।२८
अभिमानित्वं प्रयाति मैत्रा. ३।२
अभिवन्दनाद्रोगनाशिनी (तुलसी) तुलस्यु. २
अभिव्याप्यायतो भूत्वा गोपी. ५
अभिव्याहाराय वाक् छां.उ.८।१२।४
अभिव्याहार्षमेव विद्यात्... ३ऐत. १।६।४
अभिव्याहृत्य हैवान्नमत्रप्स्यत् २ ऐत. ३।३
अभिशस्तं च पतितं...वर्जयित्वा
चरेद्भैक्ष्यं सर्ववर्णेषु चापदि सं. सो. २।७४
अभिषीवयन्ति वध्रीभिरभिग्रथन्ति आर्षे. १।२
अभिसंधाय तु फलं भ.गी.१७।१२
अभि हि प्राणेन मनसेप्स्यमानो वाचा
नानुभवति १ऐत.३।५।३
अभि हैनंसर्वाणिभूतानिसंवाञ्छन्ति केनो. ४।६
अभीहि मन्यो तवसस्तवीयान्...विश्वा
वसून्याभर,त्वं नः[ऋक्सं.८।३।१८ +वनदु. १०२
=मं. १०।८३।३+अथर्व.४।३२।३
अभूतस्यापरे धीरा विवदन्तः परस्परं अ.शां. ३
अभूतं नैव जायते, विवदन्तोऽद्वयाः... अ. शां. ३
अभूताभिनिवेशाद्धि...तत्प्रवर्तते अ. शां. ७९
अभूताभिनिवेशोऽस्ति द्वयंतत्रनविद्यते,
द्वयाभावं स बुद्ध्वैव... अ. शां. ७५
अभूतिमसमृद्धिंचसर्वान्निर्णुदमेपाप्मानं
(मे गृहात्) [महाना. १४।२०+ ऋ.खि.५।८७

अमूतो हि यतश्चार्थोनार्थाभासस्ततः.. अ. शां. २६
अमूमिपतितं गृह्णीयात्पात्रे पूर्वोदिते गृही, गोमयं शोषयेद्विद्वान् बृ. जा. ३।८
अभेददर्शनं ज्ञानं, ध्यानं निर्विषयं मनः, स्नानं मनोमलत्यागः शौचमिन्द्रियनिग्रहः [मैत्रे.२।२ +स्कन्दो. ११
(१) अभेदेन प्रशस्यते, नानात्वं... अद्वैत. १३
अभ्यङ्गं स्त्रीसङ्गमिव (त्यजेद्यतिः) ना. प. ७।१
अभ्यसेद्ब्रह्मविज्ञानं...श्रवणादिना ना.प. ६।७
अभ्यस्तैः किमु दीर्घकालमनिलैर्व्याधिप्रदैः अमन. २।४१
अभ्यस्यमानो नादोऽयं बाह्यमावृणुते ध्वनिः ना. बिं.३२
अभ्याशो ह यदस्मै स कामःसमृद्ध्येत छां.२।१।३।१२
अभ्याशो ह यत्ते कपूयांयोनिमापद्येरन् छां.उ.५।१०।७
अभ्याशो ह यत्ते रमणीयांयोनिमापद्येरन् छां.उ.५।१०।७
अभ्याशो ह यदेनं साधवो घोषा आच.. छां. ३।१९।४
अभ्याशो ह यदेनं साधवो धर्मा आ च गच्छेयुः [छान्दो.२।१।४ +३।१९।४
अभ्यासकाले प्रथमं शस्तं क्षीराज्यभोजनम् [यो.त.४८+ शाडि.१।७।५
अभ्यासतो मनः पूर्वविश्लिष्टंचलमुच्यते अमन.२।९६
अभ्यासभेदतो भेदः फलंतु सममेव हि यो. त. १११
अभ्यासमात्रनिरता नविन्दन्तेह मेलनं यो. कुं. २।६
अभ्यासयोगयुक्तेन भ. गी. ८।८
अभ्यासयोगेन ततः ... भ.गी.१२।९
अभ्यासवासनाशक्त्या तरन्ति भवसागरम् यो. कुं. ३।१८
अभ्यासं बहुजन्मान्ते कृत्वा.. यो. कुं. २।७
अभ्यासं मेलनंचैव युगपन्नैवसिद्ध्यति यो. कुं. २।५
अभ्यासं लभते ब्रह्मन् यो. कुं. २।६
अभ्यासात्साधुशास्त्राणां करणात्पुण्यकर्मणां...वस्तुदृष्टिः प्रसीदति अक्ष्युप. २१
अभ्यासात्तुज्ञानं क्रमेण परिपक्वं भवति त्रि.म.ना.५।४
अभ्यासाद्रमते यत्र भ.गी.१८।३६
अभ्यासान्निर्विकारं गुणरहिताकाशं भवति विस्फुरत्तारका... मं. ब्रा. १।३
अभ्यासेन तु कौन्तेय भ.गी.६।३५
अभ्यासेनपरिस्पन्दे..मनःप्रशममायाति अ. पू. २।३२
अभ्यासेऽप्यसमर्थोऽसि भ. गी.१२।१
अभ्युत्थानमधर्मस्य भ. गी. ४।७

अभ्रं धूमः (पर्जन्याग्नेः) छान्दो.५।५।१
अभ्रं भूत्वा मेघो भवति छां. ५।१०।६
अभ्रं विद्युत्स्तनयित्नुरशरीराण्येतानि छां. ८।१२।२
अभ्राणि धूमः (पर्जन्याग्नेः) बृह. ६।२।१०
अभ्राणि सम्प्लवंते स हिङ्कारः छां. २।१५।१
अभ्राणिसंप्लवन्ते सहिङ्कारो मेघोजायते छां. २।१४।१
अमतं च मतं ज्ञातमविज्ञातं च पञ्चब्र. २८
अमतं मतं (येन भवति) छान्दो.६।१।३
अमतं मन्तृ (अक्षरब्रह्म) बृह. ३।८।११
अमतो मन्ता, अविज्ञातो विज्ञाता (आत्मा) नान्योऽतोऽस्ति द्रष्टा बृह. ३।७।२३
अमदर्थं नहि प्रेयो मदर्थं नस्वतःप्रियम् वराहो. २।७
अमनसो हि स्यात्, अब्रवीत्तु ते... बृह. ४।१।६
अमनस्कमश्रोत्रमपाणिपादं ज्योतिः.. ब्रह्मो. ३
अमनस्कस्वरूपं यत्तन्मयो भव महो. ५।५१
अमनस्कं सुशिष्येषु संक्रमयेन्द्रियजं सुखम्। निवारयन्ति ते वन्द्या गुरवोऽन्ये प्रतारकाः अमन. २।४४
अमनस्कः सदा शुचिः, स तु तत्पदमाप्नोति यस्माद्भूयो न जायते कठो. ३।७
अमनस्केक्षणं लाभकामक्रोधादिबन्धनं अमन. २।८०
अमनस्केनमित्रेण..सुखीसञ्जायतेमुनिः अमन. २।८२
अमनस्ता तदोदेति परमोपशमप्रदा अ. पू. ४।४८ +मुक्ति.२।२९
अमनस्तां तदा यातिग्राह्याभावेतदग्रहं अद्वैतो. ३२
अमनीभावे द्वैतं नैवोपलभ्यते अद्वैत. ३१
अमन्तव्यमबोद्धव्यं नृसिंहो. ९।९
अमन्यतात्मनोऽसुराअतोन्यतममेतेषां मैत्रा. ७।१०
अमन्ताऽश्रोताऽस्प्रष्टा मैत्री. ६।११
अमरत्वादजरत्वात् नृसिंहो. ७।१
अमरपदं तत्स्वरूपं निर्वाणो. ३
अमरीं यः पिबेन्नित्यं नस्यं कुर्वन्... १यो.त.१२८
अमर्त्योमर्त्येनास योनिः [+ऋक्सं. १।१६४।३८ १ऐत. १।८।४
अमलान् प्रतिपद्यते भ.गी.१४।१४
अमहान्तमबृहन्तमजमात्मानं मत्वा धीरो न शोचति सुबालो. ३।१
अमात्रश्चतुर्थोऽव्यवहार्यः..शिवोऽद्वैतः माण्डू. १२
अमात्रश्चतुर्थो व्यवहार्यः प्रपञ्चोपशमः शिवोऽद्वैत ॐकार आत्मैव नृसिंहो. २।७

अमात्रोऽनन्तमात्रश्च द्वैतस्योपशमः
शिवः ...विदितो येन स मुनिः आगम. २९
अमानित्वमदम्भित्वं भ. गी.१३।८
अमानित्वादिसम्पन्नो मुमुक्षुरेकविंशति-
कुलं तारयति पैङ्गलो. ४।१
अमानित्वादिलक्षणोपलक्षितो यः
पुरुषः...निरालंबाधिकारी त्रि.म.ना.८।४
अमायममयमौपनिषदमेव नृसिंहो. ९।९
अमायमायौपनिषदमेव (पाठः) नृसिंहो. ९।९
अमावास्यायांदीक्षित्वा पौर्णमास्यां... छां.उ. ५।२।४
अमावास्यायां प्रातरेवाग्नीनुपसमाधाय २सङ्न्यासो. १
अमावास्यां सहस्रकं (भाद्रे कृष्णे) इतिहा. ९०
(?) अमावास्यां रात्रिमेतया
षोडश्या कलया वृ.उ.१।५।१४
अमा हि ते सर्वमिदं स हि ज्येष्ठः... छान्दो.५।२।६
अमितते जोराश्यन्तर्गततेजोविशेषं त्रि.म.ना.७।८
अमितबलपराक्रमाय शङ्खचक्रगदाध-
राय लक्ष्मीसमेताय..परब्रह्मरूपाय ना.उ.ता.२।३
अमितवेदान्तवेद्यं ब्रह्म त्रि.म.ना.१।३
अमितानन्दचिद्रूपाचलम्[त्रि.म.ना.८।८ सि.सा. ६।१
अमितानंदसमुद्र [सि.सा.१।१+ त्रि.म.ना.७।७
अमितौजाः पर्यङ्कः कौ. उ. १।३
अमी च त्वां धार्तराष्ट्रस्य पुत्राः भ.गी.११।२६
अमीमांस्या हि गुरवः शिवो.७।३०
अमीयेसुभगे दिविविचृतौ नामतारके सद्वै. ९
अमी हि त्वा सुरसङ्घा विशंति भ.गी. ११।२१
अमुखममात्रमनंतरमबाह्यं,नतदश्नाति बृह. ३।८।८
अमुत्र भूयादध यद्यमस्य बृहस्पते... महाना.१३।१०
अमुना रूपेणेमं लोकमा भवति १ऐत.३।७।३
अमुनावासनाजाले अध्यात्मो. ३९
(अथ खलु) अमुमादित्यं सप्तविधं
सामोपासीत छां.२।९।१,८
अमुष्मादादित्यात्प्रतायंते ता आसु छां.८।६।२
अमुष्मिन् स्वर्गे लोके सर्वान् कामा-
नाप्त्वाऽमृतः समभवत् २ ऐत. ४।६
अमुष्मिन्स्वर्गे लोके सर्वान् कामा-
नाप्त्वाऽमृतः समभवत् आ. प्र. १
अमुष्य ब्रह्मभूतत्वाद्ब्रह्मणःकुत उद्भवः २आत्मो.२७
अमुष्य लोकस्य का गतिरित्ययं.. छान्दो. १।८।७
अमुष्य लोकस्य का गतिरिति
न स्वर्गं लोकमतिनयेत् छान्दो. १।८।५
अमुष्यासुनामा सङ्ख्यायां चित्सु. १४।३
अमुष्याहं वृक्षस्यरसोऽस्म्यमुष्याहं
वृक्षस्यरसोऽस्मीति छान्दो. ६।९।२
अमुं पश्चपदं मनुमावर्तयेद्यः स
यात्यनायासतः...तत्पदं तत् गो. पू. ४।१७
अमुं यजामुं यजेत्येकैकं देवं... बृ. उ. १।४।६
अमूढो मूढइव व्यवहरन्नास्ते माययैव नृसिंहो. ९।५
अमूर्त इति च तद्विदः वैतथ्य. २३
(अथ) अमूर्तं वायुश्चान्तरिक्षं च बृह. २।३।३
अमूर्तोवर्तते नादो वीणादण्डसमुद्भवः ध्या.बिं.१०२
अमूलमनाधारमिमाः प्रजाः प्रजायन्ते सुबालो. ६।१
अमृतकरतलाग्रौ सर्वसञ्जीवनाढ्यौ... साविश्यु.११
अमृतकल्लोलनदी निर्वाणो. १
अमृतकल्लोलानन्दक्रिया निर्वाणो. ४
अमृतत्वमक्षितिं स्वर्गलोके (आप्नोति) कौ. उ. ३।२
अमृतत्वस्य तु नाशाऽस्ति वित्तेन बृह. २।४।२
अमृतत्वस्य नाशास्ति वित्तेन(मा.पा.) बृ. उ. २।४।२
अमृतत्वस्येशाने मा त्वंपुत्र्यमघंनिगाः कौ.उ. २।८
अमृतत्वं च गच्छति कठो. ६।८+
[नृ. पू. ३।३+ रामो. ४।४
अमृतत्वं देवेभ्य आगायानीत्यागायेत छां. २।२२।२
अमृतत्वं समाप्नोति यदा कामात्स
मुच्यते...छित्वा तं तु न बध्यते क्षुरिको.२९
अमृतत्वं (हि) विन्दते केनो. २।४
अमृतत्वादशोकत्वादमोहत्वादनशना-
यत्वात्...आत्मानं परमं ब्रह्म... नृसिंहो. ७।१
अमृतबिन्दूपनिषद्वेद्यं यत्परमक्षरं ब्र. विं. १
अमृतमभयमशोकमनन्तं (आत्मानं) सुबालो. ५।१
अमृतमयश्चतुरात्मा नृसिंहो. ३।२
अमृतमस्यमृतोपस्तरणमस्यमृतं प्राणे
जुहोम्यमाशिष्यान्तोऽसि प्रा.हो. १।१०
अमृतमेव श्वेतमृद्भवति नारदो. १
अमृतमेव श्वेतमृत्स्ना भवति कात्याय. १
अमृतमेवात्मन्धत्ते हुत्वा सद्वै. २२
अमृतरूपादेवानां सहस्तोमफलप्रदा सीतो. ७
अमृतस्य तु नाशाऽस्ति वित्तेन बृह. ४।५।३
अमृतस्य देवधारणो भूयासं । शरीरं
मे विचर्षणम् [ना.प.४।४५+ तैत्ति. १।४।१

अमृतस्य धारा बहुधा दोहमानम् ।
 चरणं नो लोके..दधातु [सुदर्श.५+ त्रि.म.ना.७।३
अमृतस्य परं सेतुं श्वेता. ६।१९
अमृतस्य पूर्णां तामु कलां विचक्षते चित्यु. ११।५
अमृतस्य प्राणं यज्ञमेतं चित्यु. ११।३
अमृतस्याव्ययस्य च भ.गी.१४।२७
अमृतस्याशरीरस्यात्मनाऽधिष्ठानं छां.उ.८।१२।१
अमृतस्येव चाकाङ्क्षेदवमानस्य... ना. प. ३।४०
अमृतस्यैष सेतुः(आत्मा) मुण्ड.२।२।५
अमृतं चिन्तयेन्मूर्ध्नि यो.शि.५।४९
अमृतं चैव मृत्युश्च भ.गी. ९।१९
अमृतं जायते पुरुषोत्तमात् सि. वि. ९
अमृतं तत्परं च ब्रह्म शाण्डि.२।१।३
अमृतं दृष्ट्वा तृप्यन्ति छां.उ. ३।६।१
अमृतं देवानामायुः प्रजानां चित्यु.११।१३
अमृतं प्रपद्येऽमृतकोशं प्रपद्ये सहवै. २३
अमृतं प्राणे जुहोम्यमाशिष्यान्तोऽसि प्रा. हो.१।१०
अमृतं मतं (भवति) छां. उ.६।१।३
अमृतं यत्प्रतिष्ठा सा तेजोविद्याकला
 स्वयम् । द्विविधा तेजसोवृत्तिः.. बृ. जा.२।२
अमृतःसर्वेभ्योभूतेभ्योददृशे,यएवंवेद १ऐत. १।८।४
अमृतात्प्राणाश्चाहो मम जायन्ते
 पुरुषोत्तमात् सि. वि. ३
अमृतं मा कुर्विंत्येवैतदाह बृ.उ.१।३।२८
अमृतं वा आज्यं सहवै. २२
अमृतापिधानमसि महाना.१६।३
अमृतामेवाप्येति योऽमृतामेवास्तमेति.. सुबालो. ९।६
अमृतासःश्रुतासश्चयज्वानो..स्वर्यन्तो.. अरुणो. ६
अमृता ह्येषा नाडी त्रयं चराति परब्र. १
अमृतादात्मानं जुगुप्सेत् महाना.२।११
अमृतेन तृप्तस्य पयसा किं प्रयोजनम् पैङ्गलो.४।९
अमृतेन तृप्तिं जनयन्ती देवानां सीतो. ७
अमृतेन कृतं यज्ञमेतम् चित्यु. ११।३
अमृतेनाग्निरेधते...अतएव हविःक्लृप्त-
 मग्नीषोमात्मकं जगत् बृ. जा. २।५
अमृतेऽमृतरूपासि अमृतत्वप्रदायिनि तुलस्यु. ४
अमृतैवैषा देवता शाश्वता... १ऐत. १।८।४
अमृतो जायते पुरुषोत्तमात् सि.वि. २
अमृतोदधिसङ्काशं...ध्यात्वाचान्द्रमसं
 बिम्बं प्राणायामे सुखी भवेत् यो. चू. ९६
अमृतोद्दीपिनी विद्या निरपाया...
 अमनस्कैव सा काऽपि जयत्या-
 नन्ददायिनी अमन. २।२०
अमृतोऽपस्तरणमसि महाना.१६।२
अमृतो भवति । तदेष श्लोकः प्रश्नो. ३।११
अमृतोऽसिविमुश्चासि चश्चलो..ह्यसि ते. बिं.५।६८
(अथ) अमृतोऽस्यात्मा बिन्दुरिवपुष्करे मैत्रा. ३।२
अमृतो ह वा अमुष्मिँल्लोके सम्भवति १ऐत. १।८।४
अमृतो हिरण्मयः (पुरुषः) तैत्ति. १।६।१
अमोघनिजमन्दकटाक्षेणादिमूलविद्या-
 प्रलयकरी...(लक्ष्मी) त्रि.म.ना.६।७
(?)अमो नामाऽसि, अमा हि ते सर्वं... छां. ५।२।६
अमोऽहमस्मि सा त्वं सा त्वमस्यमोहं
 सामाहमस्मि...पुत्राय वित्तये इति बृह. ६।४।२०
 [अथर्व. १४।२।७१+
अमोघा हास्याशिषो भवन्ति यावत्.. छां. ७।१४।२
अम्बया नद्यस्तमित्थंविदागच्छति, तं... कौ. उ. १।३
अम्बाश्चाम्बायवीयाश्चाप्सरसः कौ. उ. १।३
(ऐं) अम्बितमे नदीतमे देवितमे
 सरस्वति [ऋक्सं.२।८।१०= मं. २।४१।१६
 ऐ.ब्रा.५।४।१० सरस्व. २४
अम्बुः पृथगुद्गीथदोषान् भवन्तो
 ब्रुवन्त्विति । तद्वाच्युपलक्षयेत् २ प्रणवो.१७
अम्भस्यपारे भुवनस्य मध्ये नाकस्य
 पृष्ठेमहतो महीयान्[तै.आ.१०।१।१ +महाना.१।१
अम्भो जायते पुरुषोत्तमात् सि. वि. ५
अम्भोधिवत्पारविवर्जितोऽहं कुण्डिको. १६
अम्भो मरीचीर्मरमापः २ ऐत. १।२
अयजमानमाहुरासुरा बतेति छां.उ.८।८।५
अयज्ञोपवीती कथं ब्राह्मणः जाबा. ५
अयतिः श्रद्धयोपेतः भ.गी. ६।३७
अयत्नेन प्राप्तमाहरन् ब्रह्मप्रणवध्यानानु-
 सन्धानपरो भूत्वा...दिक् दग्ध्वा ना. प. ७।२
अयत्नोपनतेष्वक्षिदृग्दृश्येषु यथा मनः
 (पुनः) नीरागमेव पतति..धीरधीः ।
 [महो. ५।७०+ मुक्ति. २।२३
अयथावत् प्रजानाति भ.गी.१८।३१
अयनद्वयं वत्सरो भवति त्रि.म.ना.३।४
अयनं पुनराख्यातमेतद्योगस्य योगिभिः आयुर्वे. २३
अयनं माविवधीर्विक्रमस्व चित्यु. १५।१
अयनं ह वै समानानां भवति १ ऐत.३।१।१

अयनादादित्य इत्येवं ह्याह मैत्रा. ६।७
अयनेदक्षिणेप्राप्तेप्रपञ्चाभिमुखंगतः त्रि.ब्रा. २।१५
अयने द्वे च विषुवे सदा पश्यति... ब्र.वि.५५
अयनेषु च सर्वेषु भ. गी.१।११
अयमग्निरर्कस्तस्येमे लोका आत्मनः बृ. उ. १।२।७
अयमग्निर्वैश्वानरः,योऽयं..[बृ.उ.५।९।१ +मैत्रा.२।८
अयमग्निः सर्वेषां भूतानां मधु बृह.२।५।३
अयमनल्पोभिन्नरूपःस्वप्रकाशो ब्रह्मैव नृसिंहो. ५।६
अयमन्नमयः प्राणमयः सर्वसा.१
अयमर्वागग्निः परस्त एतो प्राणादित्यौ मैत्रा. ६।२
(अथ)अयमशरीरोऽमृतःप्राणो ब्रह्मैव बृह. ४।४।७
(एवमेव)अयमस्मिञ्छरीरेप्राणोयुक्तः छांदो. ८।१२।३
(एवमेव)अयमस्मिन्नन्धेऽन्धो भवति छां. ८।९।१,२
अयमहमस्मि नो एवेमानि भूतानि छां. ८।११।१,२
अयमाकाशः प्राणेन बृहत्या विष्टब्धः १ऐत. १।६।३
अयमाकाशः सर्वेषां भूतानां मधु बृह.२।५।१०
अयमात्मा, इदं पुच्छं प्रतिष्ठा तैत्ति. २।१।१
अयमात्मा [तैत्ति.२।१।१+नृसिंहो. ८।३,८।५,८।७
(१)अयमात्मा चिद्रूपरस एव नृसिंहो.२।७
(१)अयमात्माऽधिक्षियन्तिभुवनानि.. सुबालो. २।१
अयमात्मा नित्यसिद्धः प्रमाणे
सति भासते २आत्मो. ६
अयमात्मापुण्येभ्यःकर्मभ्यःप्रतिधीयते २ऐत. ४।४
अयमात्मा प्रज्ञानघन एव नृसिंहो. ८।५
अयमात्माब्रह्म [माण्डू.२+नृ.पू.४।२+ नृसिंहो. १।२
+शु.रह.२।४+रामो.२।१+ गणेशो. ५।६;
अयमात्मा ब्रह्म, सर्वानुभूः.. बृह. २।५।१९
अयमात्मा ब्रह्मेति वा, ब्रह्मैवाहं... बह्वृचो. ४
अयमात्माब्रह्मेत्यादि वाक्यविचारः मठाम्ना. ५
अयमात्मात्मो एकः सन्नेतत्त्रयं..अमृतं बृह. १।६।३
अयमात्मानित्यसिद्धः प्रमाणेसति..
न देशं...न शुद्धिं वाऽप्यपेक्षते २ आत्मो. ६
अयमात्मा नृसिंहः नृसिंहो. ८।१
अयमात्मा वाङ्मनोऽगोचरत्वाच्चिद्रूप-
श्चतूरूप ओङ्कार एव नृसिंहो. २।७
अयमात्मावाङ्मयोमनोमयोप्राणमयः बृह. १।५।३
अयमात्मा सर्वतः शरीरैः परिवृतः १ऐत. ३।५।४
अयमात्मा सर्वेषां भूतानामधिपतिः बृह. २।५।१५

अयमात्मा सर्वेषां भूतानां मधु बृह. २।५।१४
अयमात्मा ह्यथैवेदं सर्वमन्तकाले
कालाग्निः सूर्याग्नैः... नृसिंहो. २।७
अयमात्मा ह्यस्य सर्वस्य स्वात्मानं
ददाति, इदं सर्वं स्वात्मानमेव.. नृसिंहो. २।७
(एवमेव)अयमात्मेदं शरीरं निहत्या-
ऽविद्यां गमयित्वाऽन्यन्नवतरं
कल्याणतरं रूपं कुरुते पित्र्यं वा.. बृह. ४।४।४
(एवमेव) अयमात्मेदं शरीरं निहत्या-
ऽविद्यां गमयित्वाऽन्यमाक्रममा-
क्रम्यात्मानमुपसंहरति[बृह.४।४।३ +४.४।५
अयमात्मैकल एवाविकल्पः नृसिंहो. ८।१
अयमादित्यः सर्वेषां भूतानां मधु बृह. २।५।५
अयमायात्ययमागच्छतीत्येवंविदं... बृह. ४।३।३७
अयमारुणिः सम्प्रतीममात्मानं
वैश्वानरमभ्येति छांदो. ५।११।२
अयमावसथोऽयमावसथोऽयमा... २ऐत.३।१२
अयमास्येऽन्तरिति सोऽयास्यः बृ.उ.१।३।८
अयमुत्तरः पक्षः, अयमात्मा... तैत्ति.२।१।१
अयमेव गौतमोऽयं भरद्वाजः बृह. २।२।४
अयमेव धर्मः सनातनः सर्वपाप-
नाशको (धर्महेतुः) मोक्षहेतुः भ. जा. १।६
अयमेव प्रणवः, स परमहंसतुरी-
यातीतैरुपास्यः प. हं. प. १०
अयमेवं महान् प्रजापतिः १ऐत. १।२।४
अयमेव महाबन्धः...एवमभ्यसेत् १ यो.त.११५
अयमेव महावेधः सिद्धैरभ्यस्यते... १ यो. त.११७
अयमेव वसिष्ठोऽयं कश्यपः बृह.२।२।४
अयमेव विश्वामित्रोऽयं जमदग्निः बृह. २।२।४
अयमेव स योऽयमात्मा [बृह.२।५।१, २,३,४–१२
अयमेवान्तरात्माब्रह्मज्योतिर्यस्मान्न.. भ.जा. २।५
(१) अयमोङ्कार ओतानुज्ञाविकल्पै-
रोङ्काररूपैरात्मैव नृसिंहो.२।७
(१हि) अयमोङ्कारोऽद्वितीयत्वादेव
चिन्मयः नृसिंहो.८।७
(१)अयस्पिण्डं यथाग्न्ययस्कारादयो
नाभिभवंति मैत्रा. ६।२७
अयं कैकयः सम्प्रतीममात्मानं
वैश्वानरमभ्येति छां.उ. ५।११।४

अयं खल्वात्मा ते कतमो भगवन्वर्ण्यः मैत्रे. १।५
अयं चन्द्रः सर्वेषां भूतानां मधु बृह. २।५।७
अयं च परश्च स सर्वत्र हिरण्मये
परे कोशे, अमृता ह्येषा... परब्रह्म. १
अयं च लोकः परश्च लोकः सर्वाणि
च भूतानिवाच्यैवतस्माद्प्रजायन्ते बृह. ४।१।२
अयं च लोकः परश्च लोकः सर्वाणि
भूतानि सन्हब्धानि भवंति बृह. ३।७।२
अयं च सम्पुटो योगो मूलबन्धो-
ऽप्ययं..बन्धत्रयमनेनैवसिद्ध्यति वराहो. ५।४५
अयं चिद्घनआनन्दघनएव(आत्मा) नृसिंहो. ८।१
अयं तस्य राजा मूर्धानं विपातयतात् बृह. १।३।२४
अयं ते अस्म्युपमेह्यर्वाङ् प्रतीचीनः.. वनदु. १०५
अयं ते योनिर्ऋत्वियो(जो)यतोजातो
अरोचथाः[ना.प.३।७७+प.हं.प.३ +याज्ञव. १
अयं ते योनिर्ऋत्वियो यतो जातः
प्राणादरोचथाः,तं प्राणं जानन्.. जाबा.४
अयं दक्षिणः पक्षः तैत्ति. २।१।१
अयं धर्मः सर्वेषां भूतानां मधु बृह. २।५।११
अयं पन्था विहित उत्तरेण अ.शिरः.३।११
(एवमेव) अयं पुरुष एतस्मा अन्ताय
धावति, यत्र सुप्तो.. बृह.४।३।१९
(एवमेव) अयं पुरुषएतावुभावन्ताव-
नुसञ्चरति स्वप्नं च बुद्धान्तं च बृह.४।३।१८
(एवमेव) अयं पुरुष एभ्योऽङ्गेभ्यः
सम्मुच्य पुनः प्रतिन्यायं.. बृह. ४।३।३६
(एवमेव) अयं पुरुषः प्राज्ञेनात्मना
सम्परिष्वक्तो न बाह्यं किञ्चन
वेद, नान्तरं... बृह.४।३।२१
(तस्मिन्) अयं पुरुषो मनोमयः... तैत्ति.१।६।१
अयं पुरुषो योऽङ्गुष्ठाग्रे प्रतिष्ठितः प्रा.हो. २।२
अयं बन्धुरयंनेति गणनालघुचेतसाम्।
उदार...वसुधैव कुटुंबकम् महो. ६।७१
अयं बन्धुः परश्चायं ममायमय-
मन्यकः। इति ब्रह्मन्न जानामि... अ.पू. ५।६१
अयं ब्रह्माण्डं च सर्वं कौपीनं दण्ड-
माच्छादनंच त्यक्त्वाद्वन्द्वसहिष्णुः ना.प. ३।८७
अयं ब्रह्माण्डं च हित्वा प. हंसो. २
अयं मे हस्तो भगवानयंमेभगवत्तरः लिङ्गोप. १
[ऋक्सं.८।१।२५=मं.१०।६०।१२+
अथर्व.४।१३।६

(?) अयं य आत्मा स सेतुः छान्दो.८।४।१
अयं यस्मात्सर्वस्मात्पुरतः सुविभातः नृसिंहो.८।५
अयं यः प्राणो यश्चासावादित्यः मैत्रा. ६।१
अयं यःश्वेतोरश्मिः,परिसर्वमिदंजगत् चित्यु.११।१०
अयं लोक इति होवाच छान्दो. १।८।७
अयं लोको नास्ति पर इति मानी
पुनः पुनर्वशमापद्यते मे कठो. २।६
(अथो) अयं वा आत्मा सर्वेषां
भूतानां लोकः, स यज्जुहोति... बृह. १।४।१६
अयं वायुः सर्वेषां भूतानां मधु बृह. २।५।४
अयं वावखल्वस्यप्रतिविधिर्भूतात्मनो
यद्येवविद्याधिगमस्य धर्मस्य... मैत्रा. ४।३
अयं वाव खल्वात्मा ते कतमो
भगवान्वर्ण्यः मैत्रे. २।१
अयं वाव लोको हाउकारः छां.उ.१।१३।१
अयं वाव लोको हावुकारः [प्रा.पा.] छां.उ. १।१३।१
अयं वाव शिशुर्योऽयं मध्यमः प्राणः बृह. २।२।१
अयं वाव सयोऽयमन्तःपुरुषआकाशः छां.उ. ३।१२।८
अयं वाव स योऽयमन्तर्हृदय आकाशः छां.उ.३।१२।९
अयं वै नः श्रेष्ठः, यः सञ्चरंश्चासञ्चरं-
श्च न व्यथतेऽथो न रिष्यति बृह. १।५।२१
अयं वै लोकोऽग्निर्गौतम बृह. ६।२।११
अयं वै हरयोऽयं वै दश च सहस्राणि
बहूनि चानन्तानि च बृह. २।५।१९
(एवमेव) अयं शारीर आत्मा प्राज्ञे-
नात्मनाऽन्वारूढमुत्सर्जन्याति बृह. ४।३।३५
अयं सोऽहमिदं तन्म एतावन्मात्रकं
मनः, तदभावनमात्रेण... महो. ४।९५
अयं सोऽहमिदंतन्मे..महाजाग्रदिति.. महो. ५।१३
अयं स्तनयित्नुः सर्वेषांभूतानां मधु बृह. २।५।९
अयं हि कृष्णो यो हि प्रेष्ठः शरीर-
द्वयकारणं भवति गोपालो. १।११
अयं हृदि स्थितः साक्षी सर्वेषां... पञ्चब्र. ३६
अयं ह्योत इव सद्घनः (आत्मा) नृसिंहो. ८।१
अयाचितं यथालाभं भोजनाच्छादनं
भवेत्, परेच्छया...(यतेः) ना. प. ५।१६
अयाचितं याचितं वोत भैक्षं... शाट्याय. १९
अयाचिताद्वरं भैक्षं...भैक्षेण वर्तयेत सं. सो. २।६२
(?) अयाज्ययाजकाः शूद्रशिष्याः मैत्रा. ७।८

अयास्य उद्गाता, वाचस्पते... चित्सु. ५।१
(?) अयास्य आङ्गिरसः [बृ.उ. १।३।१९,२४
अयुक्तः कामकारेण भ.गी.५।१२
अयुक्तः प्राकृतः स्तब्धः भ.गी. १८।२८
अयोध्यानगरे रत्नचित्रे...सिंहासने
...संस्तूयमानं..(रामं)ध्यायन्.. रा.र.२।४४-४७
अयोध्यानगरे रम्ये...शुकादिभिः..
स्तूयमानं...रामं स्तुवन्
पप्रच्छ मारुतिः मुक्ति. १।१४
अयोनिं स्वात्मस्थमानन्दचिद्घनं नृसिंहो. ९।६
अरजस्कमतमस्कममायमभयं.. नृसिंहो. ९।५
अरणिदेशाद्ब्रह्ममुष्टिं पिबेदित्येके कठश्रु. १९
अरणिर्वा आरन्द आवारन्द आरन्दो-
ऽयमानन्दतेमारन्दमीशिषेस्वाहा पारमा. ५।४
अरण्ये चरितो गुप्तः शुक्लब्राह्मण-
कर्मसु। प्रायेण लभते लोकान्... सन्ध्यो. ४
अरण्येशुष्कगोमयंचूर्णीकृत्यानुसंगृह्य
गोमूत्रैः...संस्कृतमुपोपकल्पम् बृ.जा.३।३४
(?)अरण्ये श्रद्धातप इत्युपासते ते... छां.उ.५।१०।१
अरण्योर्निहितो जातवेदा गर्भ इव
सुभृतो गर्भिणीभिः। दिवे दिवे.. कठो. ४।८
[ऋक्सं.३।१।३२=मं.३।२९।२+ सा. वे. १।६९
अरतिर्जनसंसदि भ.गी. १३।११
अरमापापेन पापमिच्छयायत्स्मरति
तदभिसरूपद्यते,अपुनर्भवया कोशं
भिनत्ति, शीर्षकपालं भिनत्ति... सुबालो. ११।१
अरसमगन्धमव्ययममहान्तं... सुबालो. ३।१
(?) अरश्च ह वै ण्यश्चार्णवौ छां.उ.८।५।३
अरसं नित्यमगन्धवच्च यत् कठो. ३।१५
(?) अरं च ण्यं चार्णवौ ब्रह्मलोके
ब्रह्मचर्येणानुविन्दन्ति छां.उ.८।५।४
अरा इव रथनाभौ कला यस्मिन्प्रति-
ष्ठिताः, तं वेद्यं पुरुषं वेद... प्रश्नो. ६।६
अरा इव रथनाभौप्राणे सर्वं प्रतिष्ठितं प्रश्नो. २।६
अरा इव रथनाभौ संहता यत्र नाड्यः मुण्ड. २।२।६
अरागद्वेषतः कृतम् भ.गी.१८।२३
अराजकः समर्थः स्याद्राज्ञो..कर्मणि महो. ४।१०५
अराध्यस्मा अन्नमित्याचक्षते तैत्ति.३।१०।१
अरिशङ्खकृपाणखेटबाणान्दधानां,
भज तां महिषोत्तमाङ्गसंस्थां वनदु. १

अरिक्तुर्गमुक्तोऽस्मि मैत्रे. ३।१८
अरिष्टंकोशंप्रपद्येऽमुनाऽमुनाऽमुना.. छांदो.३।१५।३
अरिष्टं यत्किञ्च क्रियते अग्निः... अरुणो. ५
अरिष्टा विश्वान्यङ्गानि तनूः।
तनुवा मे सह नमस्ते... महाना. १६।६
अरिष्टे गोगणे कुञ्जवटे...सृष्टिः
सर्वात्मना भवेत् सामर.५७
अरुणकमलसंस्था तद्रजःपुञ्जवर्णा... सौभाग्य. २
अरुणसूर्यवेदाङ्गभान्विन्द्ररविगभस्ति-
यमसुवर्णरेतो...मासाधिपतयः सूर्यता. ५।१
अरुणीवारुणी रक्षेत्सर्वग्रहनिवारणी वनदु. ९३
अरुन्धत्येवकथितापराविद्भिःसरस्वती योगकुं.१।९
अरुन्मुखान् (अवाङ्मुखान्)यतीन्
सालावृकेभ्यः प्रायच्छं कौ.उ. ३।१
अरूढमथवा रूढं...यज्जाग्रतो मनो-
राज्यं यज्जाग्रतस्तत्र उच्यते महो.५।१४
(अथ) अरूपज्ञो भवति बृह. ४।४।१
अरूपमव्ययं तथाऽरसं नित्यं...
निचाय्य तन्मृत्युमुखात्प्रमुच्यते कठो. ३।१५
अरूपवान् भवति, गुणवान्भवति ग.शो.२।२
अरूपस्तुमनोनाशोवैदेहीमुक्तिगः.. मुक्तिको.२।३५
(?)अरूपो देहमुक्तिगः मुक्तिको. २।३२
अरेफजातमुभयोष्मवर्जितं यदक्षरं न
क्षरते कथञ्चित् अ.ना.२५
अरेषु भ्रमते जीवः...तन्तुपञ्जर-
मध्यस्था यथा भ्रमति लूतिका त्रि.ब्रा. २।६१
(एवंवा)अरेऽस्य महतो भूतस्य निःश्व-
सितमेतदृग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदो-
ऽथर्वाङ्गिरस इतिहासः पुराणं विद्या
उपनिषदः.. [बृ.उ.२।४।१० +४।५।११
(एवं वा)अरेऽहमात्माऽनन्तरोऽबाह्यः
कृत्स्नः प्रज्ञानघन एव बृ.उ.४।५।१३
अरैर्वा एतत्सुबद्धं भवति नृ.पू. ५।६
अर्कज्योतिरहं शिवः महावा. ५
अर्कं श्च्योतं(च्योतं) तं शरीरस्थमध्ये चित्सु. ११।६
अर्चतेवैमेकमभूदिति,तदेवार्कस्यार्कत्वं बृ.उ.१।२।१
अर्चयन्तितपःसत्यंमधुक्षरन्तियद्व्रतम् अ.शिरः. ३।१५
अर्चिर्मार्गविसृतं वेदार्थमभिधाय..
ब्रह्मलोके स्थापयामास गोपीचं. २५

अर्चिषमेवाभिसम्भवति [+५।१०।१ छां.उ. ४।१५।५
(?)अर्चिषो वै यशसमाश्रयवशात् मैत्रा.६।३५
अर्चिषोऽहरह्न आपूर्यमाणपक्षमापूर्य-
 माणपक्षाद्यान् [बृ.उ.६।२।१५+ छां.उ.४।१५।५
अर्थस्वरूपमज्ञानात्पश्यन्त्यन्ये कुदृष्टयः जा.द. ६।४९
अर्थं मनीतवृतंवा प्रहिणुयाद्भमतेहैव कौ.उ.२।३
अर्थादर्थान्तरं चित्ते, याति... महो.५।५
अर्थानसानि तत्स्थानीमानि भित्त्वो-
 दितः पश्चमी रश्मिभिः... मैत्रा. २।९
अर्थान्व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः ईशा.८
अर्थेभ्यश्च परं मनः कठो. ३।१०
अर्धचतस्रो रोमाणि कोश्यः निरुक्तो.२।१
अर्धचन्द्राकृतिर्दक्षिणाग्निर्भूत्वाहृदये
 तिष्ठति तत्र कोष्ठाग्निरिति.. प्रा. हो. २।४
अर्धचन्द्राकृतिजलं विष्णुस्तस्याधि-
 देवता । त्रिकोणमण्डलं... यो.शि. ५।१३
अर्धमातृका चतुर्थकूटाक्षरो भवति श्रीवि.ता. १।२
अर्धमात्रप्रणवोऽनन्तावयवान्वितः तुरीयो. १
अर्धमात्रश्चतुर्थाक्षरो भवति रामो. १।२
अर्धमात्रं (तु)च विचिन्तयेत् अ. ना. ३२
अर्धमात्रा तथा ज्ञेया प्रणवस्योपरि
 स्थिता, पद्मसूत्रनिभा.. [ब्र.वि.९ +१ प्रणवो. ९
अर्धमात्रातुरीयांशाषष्ठी (भूमिका) वराहो.४।१
अर्धमात्रात्मकः कृष्णो यस्मिन्विश्वं
 प्रतिष्ठितम् गोपालो.२।१७
अर्धमात्रात्मकं कृत्वा कोशीभूतं तु
 पङ्कजम् , कर्षयेन्नालमात्रेण भ्रुवो-
 र्मध्ये लयं नयेत् ध्या.बिं. ३९
अर्धमात्रात्मको रामो ब्रह्मानन्दै-
 कविग्रहः रामो. १।४
अर्धमात्रा परा ज्ञेया ततऊर्ध्वंपरात्परं ब्र.वि. ४०
अर्धमात्राप्रणवोऽनन्तावयवाकारः ना.प. ८।३
अर्धमात्रायां जाग्रत्तुरीयः प.हं.प. १०
अर्धमात्राषोडशीचब्रह्मानन्दैकविग्रहा श्रीवि.ता. १।४
अर्धमात्रासमायुक्तःप्रणवोमोक्षदायकः ध्या.बिं. १७
अर्धमात्रास्थूलांशे तुरीयविश्वः वराहो.४।१
अर्धमात्रा मासा ऋतवः संवत्सरश्च
 कल्पतां(...संवत्सरा इति विधृता-
 स्तिष्ठन्ति) [बृ उ. ३।८।९ म.ना. १।९
अर्धमात्राभ्यन्तरे पिण्डो भवति गर्भो. ३

अर्धास्तमित आदित्ये अर्धोदित-
 दिवाकरे । गायत्र्यास्तत्र
 सान्निध्यं संध्याकालः स उच्यते गर्भो. ३
अर्धेन्दुलसितम् गणप. ७
अर्धोन्मिलितं प्रतिपत, सर्वोन्मीलनं
 पूर्णिमा भवति मं.ब्रा. २।२
अर्धोन्मीलितलोचनः स्थिरमनानासा-
 ग्रदत्तेक्षणः...तत्वंतत्परमास्ति शांडि. १।७।१६
(?)अर्यमा चन्द्रमाः कलाकलिः
 (सर्वं नारायणः) सुबालो. ६।१
अर्वागस्तमेता आदित्यः छां.उ. ३।१०।४
अर्वाग्बिलश्चमस ऊर्ध्वबुध्न इतीदं.. बृह. २।२।३
अर्वाग्बिलश्चमस ऊर्ध्वबुध्नस्तस्मिन्.. बृह. २।२।३
अर्वाग्विचरत एतौ प्राणादित्यावेता-
 वुपासीतोमित्यक्षरेण मैत्रा. ६।२
अर्वाङ्ङायातु वसुभी रश्मिरिन्द्रः चित्यु. ११।७
अर्वाऽसुरानश्वो मनुष्यान् (अवहत्) बृ.उ.१।१।२
अलक्षणमचिन्त्यमव्यपदेश्यं... माण्डू. ७
अलक्षणमलक्ष्यं [यो.शि.३।१७ +नृसिंहो.१।६
अलक्ष्मीर्मे इति मंत्रेण गोमयं... बृ.जा.३।९
अलङ्कार स्थिरा प्रसन्नलोचना
 सर्वदेवतैः पूज्यमाना वीरलक्ष्मीः सीतो.२९
अलब्धापि फलं सम्यक् पुनर्भूत्वा
 महाकुले । पुनर्वासनयैवायं... वराहो.४।४०
अलब्धावरणाःसर्वेधर्माःप्रकृतिनिर्मलाः अ. शां. ९८
अलब्धिर्योगतत्त्वस्य दशमं(योगविघ्नं) योगकुं. १।६१
अलभ्यमानस्तनयःपितरौक्लेशयेच्चिरम् याज्ञव. १८
अलम्बुसा अधोगता शुभा नाडी त्रि.ब्रा. ८०
अलम्बुसाकुहूर्विश्वोदरीवरुणा-
 हस्तिजिह्वा.. चतुर्दश नाड्यः भावनो. ४
अलम्बुसायां अबात्मा वरुणः परि-
 कीर्तितः । कुहोः क्षुद्देवता... जा.द. ४।३७
अलम्बुसा सुषुम्णायाः कुहूर्नाडी
 वसत्यसौ वराहो. ५।२३
अलम्बुसा स्थिता पायुपर्यन्तं कन्द-
 मध्यगा । पूर्वभागे.. जा.द. ४।१७
अलं वा अर इदं विज्ञाय बृ.उ.२।४।१३
अलातचक्रमिव स्फुरन्तमादित्य-
 वर्णमूर्जस्वन्तं ब्रह्म मैत्रा.६।२४
अलातस्पन्दितं यथा अ.शां. ४७

अलाते स्पन्दमाने वै नाभासा
 अन्यतो भुवः — अ.शां. ४९
अलाभे न विषादीस्याल्लाभे..नहर्षयेत् — ना.प. ५।१८
अलिङ्गस्याभेर्यदौष्ण्यमाविष्टं च — मैत्रा. ६।३१
अलिङ्गोऽमूर्तोऽनन्तशक्तिः — मैत्रा. ७।२
अलुब्धा धर्मकामाः स्युः — तैति. १।११।४
अलेपकं सर्वगतं यदद्वयंतदेवाहं...
 विमुक्त ॐ — मुक्तिको.२।७३
अलेपकोऽहमजरोनीरागः...इति
 मत्वा न शोचति — अ.पू. ५।९२
अलोमकाह्वियोनिरन्त्वः, अतस्तद्यदि.. — बृह. १।४।६
अलोहितमप्रमेयमह्रस्वमदीर्घ(ब्रह्म) — सुबालो. ३।२
अलोहितमस्नेहमच्छायमतमो... — बृह. ३।८।८
अल्पकालभयाद्ब्रह्मन्प्राणायामपरो
 भवेत्...प्राणान्निरोधयेत् — यो.चू. ९२
अल्पकालं मयादृष्टं..सत्स्वप्नः..कथ्यते — महो.५।१६
अल्पमूत्रपुरीषश्चस्वल्पनिद्रश्च..(योगी) — १यो.त. ५७
अल्पमृष्टाशनाभ्यांच चतुर्थांशावशे
 षितम्।..भोजनं मितभोजनम् — जा.द. १।१९
अल्पाहारो यदि भवेदग्निर्देहं हरेत
 क्षणात्.. ऊर्ध्वपादः क्षणं स्यात् — १ यो.त. १२४
(?)अल्पाःकलहिनःपिशुनाउपवादिनः — छां.उ. ७।६।१
अवकाशविधूतदर्शनपिण्डीकरण-
 धारणाः...जैवतन्मात्रविषयाः — त्रि. ब्रा. १।४
अवक्तव्यमनादातव्यमगन्तव्यमविसर्ज-
 यितव्यमनानन्दयितव्यममन्तव्यं.. — नृसिंहो.९।९
अव चोर्ध्वात्तात्, अवाधरात्तात् — गणप. ३
अवजानन्ति मां मूढाः — भ.गी. ९।११
अवटेवावटकृद्धातुक्रामः संविशति — मैत्रा. ६।२८
अवतत्यधनुस्त्वं सहस्राक्षशतेषुधे — नीलरु. २।५+
 [तै.सं.४।५।१।४+वा.सं.१६।१३
अवतु मामवतु वक्तारम् — कौलोप.
 [गणप.शांतिः तै.उ.१।१३+ — २ऐत.६।१
अवतु वक्तारम्. [कौलो. गणप. शां. — २ऐत. ६।१
अव ते हेळ उदुत्तमं — सहवै. ५
अव त्वं माम्, अव वक्तारम् — गणप. १,३
अव दक्षिणात्तात् — गणप.३
अवदतो हि किं स्यादित्यब्रवीत्त ते — बृह. ४।१।२
अव दातारम्। अव धातारम् — गणप. ३
अव धातारम्। अवानूचानमव.. — गणप.३
अवधूतस्त्वनियमः..सर्ववर्णेष्वजगर-
 वृत्त्याहारपरः [ना.प.५।५ — सं. सो. २।१३
अव पश्चात्तात् — गणप.३
अव पुरस्तात् — गणप. ३
अवबोधंविदुर्ज्ञानंतदिदंसाप्तभूमिकं — महो. ५।२३
अवबोधैकरसोऽहंमोक्षानन्दैकसिन्धुः — आ.प्र. ५
अवभृथं मरणात् — प्रा. हो. ४।३
अवयः प्रस्तावो गाव उद्गीथः — छान्दो.२।१८।१
अवरो वै तर्हि किल म इतिहोवाच
 प्रतर्दनः — कौ. उ. ३।१
(?)अवरोहन्तं दिवितः पृथिवीमवः — नील. १
अवर्णलेशः कण्ठ्यो यथोक्तशेषः
 पूर्वो विवृत्तकरणस्थितश्च — २ प्रणवो. १६
अव वक्तारम्। अव श्रोतारम्। — गणप.३
अवशं प्रकृतेर्वशात् — भ.गी. ९।८
अवशिष्टमविद्याश्रयं (पादं) — त्रि.म. ना. ४।४
अवशिष्टं यत्रवागश्नाति — मैत्रा. ६+९
अवशिष्टानां पञ्चापञ्चाशानां...
 अहमित्यभिमानः — ग. शो. ४।५
अव श्रोतारम् — गणप. ३
अवष्टभ्य धरां सम्यक्तलाभ्यां तु..
 मयूरासनम् [त्रि.ब्रा. २।४७ — +शां.१।३।१०
अवस्तु सोपलम्भं च शुद्धंलौकिक-
 मिष्यते — अ.शां. ८७
अवस्त्वनुपलम्भं च लोकोत्तरमिति
 स्मृतम्, ज्ञानं ज्ञेयं च विज्ञेयं... — अ.शां. ८८
अवस्थात्रयभावाभावसाक्षीस्वयम्भा-
 वरहितं नैरन्तर्यं चैतन्यं यदातदा
 तुरीयं चैतन्यमित्युच्यते — सर्वसारो. ३
अवस्थात्रयमन्वेति न चित्तंयोगिनः
 सदा। जाग्रन्निद्राविनिर्मुक्तः... — ना.बिं. ५४
अवस्थात्रयहीनात्मा अक्षरात्मा.. — ते.बि. ४।७८
अवस्थात्रयाणामेकीकरणं ताम्बूलम् — भावनो. १०
अवस्थात्रितयंचैवजाग्रत्स्वप्नसुषुप्तयः — वराहो. १।६
अवस्थात्रितयातीतं तुरीयंसत्यचि-
 त्सुखम्.. सर्वेषां जनकं परं — पञ्चब्र. १३
अवस्थात्रितयेष्वेवबुद्धिपूर्वमघंचयत्।
 तन्मंत्रस्मरणेनैव निःशेषं.. — रामो. ५।२३
अवस्थानामधिपतयश्चत्वारःपुरुषाः
 विश्वतैजसप्राज्ञात्मानश्चेति — यो.चू. ७२

अवस्थात्रितयेष्वेवं मूलबन्धं... रामो.५।२४
अवस्थाभेदादवस्थेश्वरभेदः ना. प. ५।१२
अवस्फूर्जयमाना इव तद्गच्छेति आर्षे. १।१
अवस्यतं मुञ्चतं यन्नो अस्ति तनुषु बद्धं लिङ्गोप. १+
[ऋक्सं. मं.१०।६०।१२
अवाक्यनादरः छां.उ.३।१४।२
अवागमनोऽतेजस्कमचक्षुष्क-
मनामगोत्रं [बृ.उ. ३।८।८+ सुबालो. ३।२
अवाङ्मुखः पीड्यमानो..जंतुश्चैव.. निरुक्तो. १।७
अवाङ्मनोगोचरत्वाच्चिद्रूपः(आत्मा) नृसिंहो. २।७
(?)अवाचीदिगुरञ्चः प्राणाः बृह. ४।२।४
अवाच्यवादांश्च बहून् भ. गी.२।२६
अवाच्यं प्रणवस्याग्रं यस्तं
वेद स वेदवित् [ध्या.बिं.१८+ वराहो. ५।७०
अवाच्योर्ध्वां वा गतिं द्वन्द्वैः...
परिभ्रमामि मैत्रा. ३।१
अवाधराचात् गणप. ३
अवानूचानमवशिष्यम् गणप. ३
अवान्तरदिशो विस्फुलिङ्गाः, तस्मिन्ने-
तस्मिन्नग्नौ.. [छां.उ.५।६।१+ बृह. ६।२।९
अवाप्य भूमावसपत्नमृद्धं भ. गी. २।८
अवाय्वनाकाशम् बृ.उ. ३।८।८
अवारितं क्षयं याति वार्यमाणं तु
वर्धते (मनः) अमन. २।७०
अवासनत्वात्सततं यदा न मनुते मनः,
अमनस्ता तदोदेति..[अ.पू.४।४८+ मुक्तिको.२।२९
अवासनं स्थिरं प्रोक्तं मनोध्यानं
तदेव च । तदेव केवलीभानं.. अ. पू. १।२९
अविकल्परूपं हीदं सर्वं,नैव तत्र..भिदा नृसिंहो. २।७
(?)अविकल्पो नाविकल्पोऽपि नृसिंहो. २।१
अविकल्पोऽपि नात्र काचन
भिदाऽस्ति नृसिंहो. ८।७
अविकल्पो ह्ययमात्मा वाङ्मनो-
गोचरत्वाच्चिद्रूपश्चतूरूप
ओङ्कारो एव नृसिंहो. २।७
अविकल्पो ह्ययमोङ्कारोऽद्वितीयः नृसिंहो. २।७
अविकल्पो ह्ययमात्माऽद्वितीयत्वात् नृसिंहो. ८।७
अविकल्पोह्ययमोङ्कारोऽद्वितीयत्वादेव नृसिंहो. ८।७
अविकारोऽहमव्ययः, शुद्धो बोध... अध्यात्मो. ६९

अविकारो ह्युपलब्धः सर्वस्य सर्वत्र नृसिंहो. ९।१
अविकार्योऽयमुच्यते भ. गी. २।२५
अविक्रियमव्यपदेश्यमक्षरं.. नृसिंहो.९।९
अविक्रियेऽद्वये पश्यतेहापि सन्मात्रं नृसिंहो. ९।६
अविक्रियो महाचैतन्यांशमात्सर्वस्मात् नृसिंहो. २।३
अविचारकृतो बन्धो विचारान्मोक्ष.. पैङ्गलो. २।९
अविचिकित्सन्मकारेणेम-
मात्मानमन्विष्य मकारेण... नृसिंहो. ७।४
अविचिकित्सोऽविपाशः सत्यसङ्कल्पः मैत्रा. ७।७
(?)अविचिकित्सो ब्राह्मणो भवति बृ.उ ४।४।२३
अविच्छिन्नज्ञानाद्वैराग्यसंपत्तिमनुभूय ना. प. ७।३
अविज्ञातं विजानतां विज्ञातमविजानतां केनो. २।३
अविज्ञातं विज्ञातं [भवति] छान्दो. ६।१।३
अविज्ञातं विज्ञातृ [अक्षरं ब्रह्म] बृ.उ. ३।८।११
अविज्ञातो विज्ञाता, नान्यो-
ऽतोऽस्ति द्रष्टा.. बृह. ३।७।२३
(?)अवितथा इव लक्षिताः वैतथ्य. ६
(?)अविदितादधि–इति शुश्रुम केनो. १।४
अविद्यमानाया विद्यातया विश्वं खिलीकृतं महो.४।१३३
अविद्यया मृत्युमेति विद्ययाऽमृतमश्नुते भवसं. ३।१
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा.. [ईशा.११+ मैत्रा. ७।९
अविद्यातत्कार्यहीनः स्वात्मबन्धहरः..
आनन्दरूपः.. [नृसिंहो.२।८+ रामो. २।४
अविद्ययैवोत्तमया..विद्या सम्प्राप्यते महो. ५।१०९
अविद्यातरुसम्भूतबीजमेकं द्विधा स्थितं भवसं. ३।९
अविद्यातिमिरातीतं...आनन्दममलं अक्ष्युप. ५१
अविद्यापञ्चपर्वैषा निबध्नाति नृणां सदा भवसं. ३।१०
अविद्यापादमतिशुद्धं भवति (ब्रह्म) त्रि.म.ना. ४।१
अविद्यापादः सुविद्यापादश्चानन्दपाद-
स्तुरीयपादः(ब्रह्मणः पादचतुष्टयं) त्रि.म.ना. १।४
अविद्याप्रपंचस्य नित्यत्वमनित्यत्वं वा कथं त्रि.म.ना. ३।२
अविद्याभूतवेष्टितो जीवो देहान्तरं
प्राप्य लोकान्तरं गच्छति पैङ्गलो.२।९
अविद्यायां बहुधा वर्तमाना वयं
कृतार्था इत्यभिमन्यन्ति बालाः मुण्ड.१।२।९
अविद्यायामन्तरे वर्तमानाः स्वयं धीराः
पण्डितंमन्यमानाः [कठो.२।५+ मुं.उ. १।२।८
अविद्यायामन्तरे वेष्टयमानाः स्वयं धीराः
[मा.पा.] मुं.उ.१।२।८+ मैत्रा. ७।९

अविद्या यावदस्यास्तु नोत्पन्ना क्षयकारिणी	महो. ४।११४
अविद्यायाः स्थितिरुन्मेषकाले	त्रि.म.ना. ४।६
अविद्या विद्यमानैव नष्टप्रज्ञेषु दृश्यते	महो. ४।११२
अविद्यांशे सुखादौ वा कः क्रमः सुखदुःखयोः	महो. ५।१६७
अविनाभाविनी नित्यं जन्तूनां प्राणचेतसी। आधाराधेयवच्चैते एकाभावे विनश्यतः	अ.पू. ५।५२
अविनाशि चिदाकाशं सर्वात्मक-मखण्डितम्...सदस्मीति...	अ.पू. १।२२
अविनाशि तु तद्विद्धि	भ.गी.२।१७
अविनाशिनामदेशकालवस्तुनिमित्तेषु विनश्यत्सुयन्नविनश्यतितदविनाशि	सर्वसारो. ६
अविनाशी वा अरेऽयमात्मा-ऽनुच्छित्तिधर्मा	बृह. ४।५।१४
अविभक्तं च भूतेषु	भ.गी. १३।१७
अविभक्तं विभक्तेषु	भ.गी.१८।२०
अविभक्तांशीनेव लिङ्गरूपानेव च सम्पूज्य [ब्रह्मविष्णुरूपान्]	नृसिंहो. ३।४
अविमुक्तं न विमुंचेत्	जावा. १+
[रामो. १।१+	तारसा. १।१
अविमुक्तंवैकुरुक्षेत्रंदेवानांदेवयजनं	जावा. १+
[रामो. १।१+	तारसा. १।१
अविमुक्ते तव क्षेत्रेसर्वेषांमुक्तिसिद्धये, अहं [रामः] सन्निहितस्तत्र...	रामो. ३।५
अविमुक्तस्थिते देवे रुद्रवासे तु चेश्वरः। प्राणास्तुरुद्रा विज्ञेयाः	दुर्वासो.२।१०
अविरितरा मेष इतरः; ताश्समेवा..	बृह. १।४।४
अविरोधेन धर्मस्य सञ्चरेत्पृथिवीं...	ना. प. ६।३३
अविवादो विरुद्धश्च देशितस्तं...	अ. शां. २
अविशिष्टतयोपलभ्यमानः सर्वप्राणि-बुद्धिस्थः...कूटस्थ उच्यते	सर्वसा. ५
(?)अविशिष्टसुखस्वरूपश्चानन्द इत्युच्यते	सर्वसा. ६
अविशेषेण सर्वं तु यः पश्यति चिदन्वयात्; सएवसाक्षाद्विज्ञानी सशिवःसहरिर्विधिः [महो.४।७६	वराहो. २।६३
अविसर्जयितव्यमनानन्दयितव्यं	नृसिंहो. ९।९
अविस्मृत्यगुरोर्वाक्यमभ्यसेत्तदहर्निशं	१यो. त. ७९
(?)अविशेषविज्ञानं विशेषमुपगच्छति	मैत्रा. ६।२४
अवृक्षवृक्षरूपाऽसि वृक्षत्वं मे विनाशय	तुलस्यु. ६
अवृतेः सदसत्वाभ्यां वक्तव्ये बन्धमोक्षणे। नावृतिर्ब्रह्मणः...	२ आत्मो. २७
अवृद्धं वृद्धं चावृद्धं प्रकृष्टं चाकृष्ट-मित्येवं स्तोत्र्यतमं भवति	संहितो. ३।२
अवेक्षमाणमात्मानं [रामं]... भानुलक्षं जपेन्मनुं	रामर. २।५
अवेक्षेत गतीर्नॄणां कर्मदोषसमुद्भवाः	भवसं. १।३
अवेहि मां भार्गव वक्रतुण्डं	ग.पू. १।९
अवेदनं विदुर्योगं..योगस्थःकुरुकर्माणि	अक्ष्युप. ६
अवोत्तरात्तात्	गणप. ३
अव्यक्तत्वात्सूक्ष्मत्वाददृश्यत्वादग्रा-ह्यत्वान्निर्ममत्वाच्चानवस्थोऽकर्ता कर्तेवावस्थितः स्वस्थः(आत्मा)	मैत्रा. २।१०
अव्यक्तनिधनान्येव	भ.गी. २।२८
अव्यक्तभावैरहङ्कारैर्ज्योतिरहं...	महाना.१४.१५
अव्यक्तमक्षरे विलीयते	सुबालो. २।२
अव्यक्तमहत्तत्त्वमहदहङ्कार इति कामेश्वरी वज्रेश्वरी... देवताः	भावनो. ६
अव्यक्तलिङ्गा व्यक्ताचारा अनुन्मत्ताः [याज्ञव.२+	आश्रमो. ४
अव्यक्तलिङ्गोऽव्यक्ताचारोदिवानक्त..	प.हं.प. ८
अव्यक्तलिङ्गोऽव्यक्तार्थो मुनिरुन्मत्त.. तद्दृष्ट्या दर्शयेन्नृणाम्	ना. प. ५।३४
अव्यक्तलिङ्गोऽव्यभिचारो बालो-न्मत्तपिशाचवत् (सन्यासी)	ना. प. ३।८७
अव्यक्तलेशाज्ञानाच्छादितपारमा-र्थिकजीवस्य तत्त्वमस्यादि-वाक्यानि ब्रह्मैकतां जगुः	पैङ्गलो. २।६
अव्यक्तं चैवास्य योनिं वदन्ति	विष्णुहृ. १।४
अव्यक्तं तु (रूपं)महेश्वरं	रुद्रहृ. १०
अव्यक्तं दहति,अक्षरं दहति, मृत्युंवै..	सुबालो. १५।२
अव्यक्तं पर्युपासते	भ. गी. १२।३
अव्यक्तं भित्वाऽक्षरं भिनत्ति	सुबालो.१।१२
अव्यक्तं वाऽन्नमक्षरमन्नादं	सुबालो. १४।१
अव्यक्तं विशेद्ब्रह्माणि निरत्यनोवैश्वा-नरो यथावस्मात्..स्वरूपं व्रजति	त्रि.म.ना. ३।७

अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नं — भ. गी.७।२४
अव्यक्ता एव येऽन्तस्तु स्फुट... — वैतथ्य. १५
अव्यक्ताचारा अनुन्मत्ता उन्मत्तवदा-
  चरन्तः...आत्मानं मोक्षयन्तः — आश्रमो. ४
अव्यक्तात्तु परःपुरुषोव्यापकोऽलिङ्ग
  एवच। यज्ज्ञात्वा मुच्यते जन्तुः — कठो. ६+८
अव्यक्तात्पुरुषःपरः। अव्यक्तात्परं... — कठो. ३।११
अव्यक्तादीनि भूतानि — भ. गी. २।२८
अव्यक्ताद्व्यक्तयः सर्वाः — भ. गी. ८।१८
अव्यक्तासक्तचेतसाम् — भ. गी. १२।५
अव्यक्ता हि गतिर्दुःखं — भ.गी. १२।५
अव्यक्तान्महत्, महतोऽहङ्कारः — त्रि. ब्रा. १।१
अव्यक्तान्मूलाविर्भावो मूलाविद्या-
  विर्भावश्च — त्रि. म.ना.२।५
अव्यक्तोऽक्षर इत्युक्तः — भ. गी. ८।२१
अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयं — भ. गी. २।२५
अव्यक्तोऽव्यक्तात्सनातनः — भ. गी. ८।२०
अव्यपदेश्यम् (ब्रह्म.आत्मा) — रामो. २।४+
  [ग.शो.१।४+ ५।७
(?)अव्यभिचारिणं नित्यानन्दं — मैत्रा. २।१
अव्ययममहान्तमबृहन्तमज-
  मात्मानं मत्वा — सुबालो. ३।१
अव्यवहार्यमग्राह्यमलक्षणं(ब्रह्म-आत्मा)
  [नृ. पू.४।२+ — नृसिंहो. १।६
अव्यवहार्यं केचन तत्तदेतदात्मान-
  मोमिति पश्यन्तः पश्यत — नृसिंहो. ९।९
अव्यवहार्यमेवाद्वयम् (ब्रह्म-आत्मा) — नृसिंहो. ९।८
अव्यवहार्यःकेचनाद्वितीयः(ओङ्कारः) — नृसिंहो. ८।१
अव्यवहार्योऽप्यल्पः नाल्पः — मैत्रा. ९।७
अव्याकुलस्य चित्तस्य बन्धनं विषये.. — त्रि. ब्रा.२।२४
अव्यानयितव्यमनुदानयितव्यं (ब्रह्म) — नृसिंहो. ९।९
(?)अव्याहृतं वा इदमासीत्सत्यं
  (अथ व्यात्तंवाइदमासीत्सत्यम्) — मैत्रा. ६।६
अव्युत्पन्नमना यावत्..गुरुशास्त्र-
  प्रमाणैस्तु निर्णीतं तावदाचर — मुक्तिको.२।३०
अव्रणमस्नाविरꣳशुद्धमपापविद्धम् — ईशा. ८
(अथ पुनः) अव्रती व्रती वा
  स्नातको वा..यदहरेव विरजे-
  त्तदहरेव.. [ना. प. ३।७७+ — प.हं.प. २

अशक्तिरपरिज्ञानं क्रमकोपो-
  ऽथवा पुनः [अ.शां.१९+ — मैत्रा.४।१९
अशक्यः सोऽन्यथा द्रष्टुं ध्यायमानः
  कुमारिकैः...विकारजननीमज्ञा... — मंत्रिको. ३
अशङ्कितापिसम्प्राप्ताग्रामयात्रायथाऽध्वगैः — महो. ५।७२
अशना च पिपासा च शोकमोहौजरा
  मृतिः। एते षडूर्मयः प्रोक्ताः — वराहो. १।९
अशनापिपासे मे सोम्य विजानीहि — छान्दो. ६।८।३
अशनायया हि मृत्युः.. — बृ. ह. १।२।१
अशनाया पिपासा-शोक-मोह-जरा-
  मरणानीति षडूर्मयः — रुद्रलो. ४।२
अशनायापिपासे मे सोम्य विजा-
  नीहि (मा.पा.) — छां.उ. ६।८।३
अशनाया मृत्युस्तद्यद्रेत आसीत्स
  संवत्सरोऽभवत् — बृह. १।२।४
अशनिरङ्गाराः, ह्रादुनयो
  विस्फुलिङ्गाः — बृह.६।२।१०
अशब्दमस्पर्शमरूपमचक्षुः..[ब्रह्म] — यो.शि. ३।१९
अशब्दमस्पर्शमरूपमव्ययं — कठो.३।१५
  [योगकुं.३।३५+ पैङ्गलो.३।८+ — मुक्तिको.२।७२
अशब्दोऽहमरूपोऽहं — ब्र. वि. ८२
अशरीरमलोहितं शुभ्रमक्षरं वेदयते — प्रश्नो. ४।१०
(?)अशरीरस्यात्मनोऽधिष्ठानं.. — छां.उ. ८।१२।१
अशरीरस्यौष्ण्यमस्यैतद्भूतम् — मैत्रा. ६।७
अशरीरंवाव सन्तं नप्रियाप्रियेस्पृशतः — छान्दो.८।१२।१
अशरीरं शरीरेष्वनवस्थेष्ववस्थितं।
  महान्तं विभुमात्मानं मत्वा
  धीरो न शोचति [कठो.२।२२+ — ना. प. ९।१५
अशरीरं शरीरेषु महान्तं विभुमीश्वरं,
  आनंदमक्षरं साक्षान्मत्वा धीरो
  न मुह्यति — जा. द. ४।६२
अशरीरं सदा सन्तमिदं ब्रह्मविदं
  क्वचित्। प्रियाप्रिये न स्पृशत-
  स्तथैव च शुभाशुभे — २ आत्मो. १५
अशरीरोऽनिन्द्रियोऽप्राणोऽतमाः — नृसिंहो. ७।४
अशरीरो निरिन्द्रियोऽप्राणोऽतमाः
  सच्चिदानंदमात्रः स स्वराड्भवति — नृसिंहो.७।१
अशरीरो वायुः, अभ्रं विद्युत्.. — छांदो. ८।१२।२
अशरीरो हि प्राणः — १पैप. ३।६।७

अशक्तं शस्त्रपाणयः	भ. गी. १।४६
अशनाय मे विज्ञास्यसि	छां. उ. ६।७।३
अशान्तस्य कुतः सुखम्	भ. गी. २।६६
अशान्तस्य मनो भारो भारोऽनात्मविदो विदुः	महो. ३।१५
अशास्त्रविहितं घोरं	भ. गी. १७।५
अशिखा अयज्ञोपवीता उन्मत्तवाच्च..	नृसिंहो. ६।३
अशरीरीं शंच्छरीरममवत्तच्छरीरस्य	१ ऐत. १।४।४
अशाश्वतं मन्यमानः शरीरं	मैत्रा. १।२
अशित्वाऽऽचामन्ति (श्रोत्रियाः)	बृह. ६।१।१४
अशिरस्कमपाणिपादं [ब्रह्मात्मा]	सुबालो. ३।२
अशिवाः पाशसंयुक्ताः पशवः.. तस्मादीशः शिवः स्मृतः	शिवो.१।१०
अशीतिश्च शतं चैव सहस्राणि त्रयोदश । लक्षश्चैको विनिःश्वास अहोरात्रप्रमाणतः	अ. ना. ३४
अशीतिसहस्रं वा अर्कलिनो बृहती-रहरभि सम्पश्यन्ति	३ऐत.२।२।३
अशीर्यो नहि शीर्यते [+४।२।४+४।४।२२	बृह. ३।९।२६ +४।५।१५
अशुद्धं कामसङ्कल्पंशुद्धं कामविवर्जितम्, मनएव मनुष्याणां[ब्र.बिं.१+	त्रि.ब्रा.५।२
अशुद्धं कामसम्पर्कात् (मनः)	मैत्रा.६।३४
अशुभकर्मनिर्मूलनपरः संन्यासेन..	जाबालो.६।३४
अशुभक्षयकर्तारं फलमुक्तिप्रदायकं.. ध्याये ब्रह्म सनातनम् ।	गर्भो. ९
अशुभाचालितं याति शुभं तस्माद्-पीतरत्... चालयेच्चित्तबालकम्	मुक्तिको. २।७
अशुभाच्छुभमिष्यते..भयं यदभयं...	ते.बिं.५।२३
अशुभाशुभसङ्कल्पः संशान्तोऽस्मि...	सं.सो.२।४९
अशुभेषु समाविष्टं शुभेष्वेवावतारयेत्; अशुभाचलितं याति (चित्तं)	मुक्तिको. २।६
अशून्यं शून्यभावं तु शून्यातीतं हृदिस्थितं । न ध्यानंचनचध्याता..	ते.बिं.१।१०
अशूरेण हताः शूरा एकेनापिशतंहतं, विषं विषयवैषम्यं, न विषं...	महो. ३।५४
अशृण्वतो हि किं स्यात्	बृह.४।१।५
अशेषभूतान्तर्यामित्वेन वर्तमानं अन्तर्बहिश्चाकाशात् [आत्मानं]	व.सू.उ.९
अशेषवेदवेदान्तवेद्यं...उपासितव्यम्	अरुणजा. २।९
अशेषेण परित्यागो वासनाया..मोक्ष इत्युच्यते.. स एव विमलक्रमः	महो.२।३९
अशोकमनन्तं (आत्मानमुपासीत)	सुबालो. ५।१४
अशोकस्वादमोहत्वान्नृसिंहमनुष्य	नृसिंहो.७।१
अशोच्यानन्वशोचस्त्वं	भ.गी. २।११
अश्नन् गच्छन् स्वपन्श्वसन्	भ.गी. ५।८
अश्नन्ति दिव्यान्दिवि देवभोगान्	भ.गी.९।२०
अश्नाति प्रयतात्मनः	भ.गी.९।२६
अश्नीयातामीश्वरौजनयितवाऔक्षेण वार्षभेण वा	बृ.उ. ६।४।१८
अश्नुते सात्म्यः सायुज्यम्	बृ.उ. १।३।२२
अश्नुते ह्याविर्भूय ओषधिवनस्पतयः	१ऐत.३।२।१
अश्माभवपरशुर्भव हिरण्यमस्तृतं भव	कौ.उ. २।११
अश्रद्दधानाः पुरुषाः	भ.गी. ९।३
अश्रद्धया हुतं दत्तं	भ.गी. १७।२८
अश्रुतं श्रोतृ, अमतं मंतृ (अक्षरं ब्रह्म)	बृह.३।८।११
अश्रुतः श्रोताऽमतो मन्ता (आत्मा)	बृह. ३।७।२३
अश्रुतो बुध्यते ग्रन्थः प्रायःसारस्वतः	सरस्व.३४
अश्रुतोऽहमदृष्टोऽहमन्वेष्टव्योऽमरो..	ब्र.वि.८५
अश्रुपूर्णाकुलेक्षणम्	भ.गी.२।१
अश्रोताऽमन्ताऽबोद्धाऽकर्ताऽविज्ञाता भवति, अथाग्रस्यायं द्रष्टा..	छां.उ.७।९।१
अश्रोत्रियं ब्राह्मणं भोजयानस्य... (श्राद्धे) प्रहरन्ति वज्रं	इतिहा.२५
अश्रोत्रियः श्रोत्रियो भवति [+ऊ.पुं.६+अ.शिरः.३।१६	महो.६।८३
अश्लोणाङ्गैरहुताः स्वर्गे तत्र पश्येम पितरं पुत्रम्	सहवै.१०
अश्व इव रोमाणि विधूय पापं..	छांदो. ८।१३।१
अश्वक्रान्ते रथक्रान्ते विष्णुक्रान्ते वसुन्धरे [ऊ.पुं.१+वनदु.१५८+	महाना.४।४
अश्वत्थं प्राहुरव्ययम्	भ.गी.१५।१
अश्वत्थमेनं सुविरूढमूलं	भ.गी.१५।३
अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां	भ.गी.१०।२६
अश्वत्थामा विकर्णश्च	भ.गी.५।८

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद..[श्रीसू.३ ऋ.खि.५।८७।३
अश्वमेधं वेद य एनमेवं वेद बृ.उ.१।२।७
अश्वपतिर्वै भगवन्तोऽयं कैकयः सम्प्रतीममात्मानं वैश्वानरमध्येति छां.उ.५।११।४
अश्वत्थः सोमसवनस्तदपराजिता छां. उ. ८।५।३
अश्वमेधसहस्राणि...एकस्य ध्यानयोगस्य कलां नार्हन्ति षोडशीं ग.शो.१।५
अश्वस्य शीर्ष्णा प्रयदीमुवाच बृ.उ.२।५।१६
अश्वमेधो महायज्ञकथा पा.ब्र.५
अश्वः प्रतिहारः,पुरुषो निधनम् छान्दो.२।१८।१
अश्वः समभवद्यदश्ववत्तन्मेध्यमभूत् बृ.उ.१।२।७
अश्विनावध्वर्यू, त्वष्टाग्नीत् शिस्यु.३।९
अश्विनाद्धीचेऽश्व्यंशिरःप्रत्यैरयतं बृ. उ.२।५।१७
अश्विनोर्बाहुभ्यां...प्रतिगृह्णामि शिस्यु.१०।१
अश्विनौ पूर्वपादौ सह्वै.२३
अश्विनौ मरुतस्तथा भ.गी.११।६
अश्विनौ व्यात्तं, इष्टं मनीषाण.. शिस्यु.१३।३
अश्वो मनुष्यान् (अवहत्) बृ.उ.१।१।२
अष्टकृत्व एकादशकृत्वः गायत्रीं जपेत् सन्ध्यो.२
अष्टकृत्वः प्रयुक्ता गायत्री गायत्रेण छन्दसा सम्मिता अमुंलोकमभिजयति सन्ध्यो.२
अष्टकैः षड्भिर्विश्वरूपैकपाशं त्रिमार्गभेदं द्विनिमित्तैकमोहम् श्वेता.१।४
अष्टदलपूजा-आदित्यसवितृसूर्यखगपूषगभस्तिमार्तण्ड.. नामैः सूर्यता.४।१
अष्टदिक्पालकैर्भूमिपद्मं विकासितं जगत्। संसारार्णवसञ्जातं.. गोपालो.२।२५
(?)अष्टधैकादशधा द्वादशधा मैत्रा.५।२
अष्टपत्रं तु हृत्पद्मं द्वात्रिंशत्...तस्य मध्ये स्थितो भानुः ध्या.बि.२६
अष्टपादं शुचिं हंसं त्रिसूत्रमणुमव्ययं, द्विधर्मोन्धं,सर्वं पश्यन्..[मैत्रा.६।३५ +मंत्रिको.१
अष्टप्रकृति रूपाऽष्टधा कुण्डलीकृता कुण्डलिनी शक्तिर्भवति शां.ल्यो.१।४।५
अष्टप्रकृतिरूपासाचाष्टधाकुण्डलीकृता त्रि.ब्रा.२।६३
अष्टमं अक्षरंस्यात्परं निर्वाणसूचकं योगत.१६
अष्टमे धाम्नि...भवमागस्त्यंवागर्थकल्पमयं...प्रभाकरी विधेयं त्रि.ब्रा.२।२६
अष्टमेन तु पिण्डेन वाचं पुष्यति.. पिण्डो.७
अष्टमेऽबुद्ध्याऽध्यवस्यते निरुक्तो.१.४
अष्टममासे सर्वलक्षणसम्पूर्णो भवति गर्भो.३
अष्टमो मृदङ्गनादः (जपसिद्धौ) हंसो.७
अष्टमो यजमानो भवति ना.पू.ता.१।१
अष्टमो (यदु) य उद्गीथः छां.उ.१।१।३
अष्टगात्रव्येनापि..क्षुत्पिपासादिभावैः- अमन.१।५८
अष्टम्यां भजते रुद्रं पशूनांचपतिं.. नादबिं.१५
अष्टवक्त्रं तु रुद्राक्षमष्टमात्राधिदैवतं रु.जा.३२
अष्टवर्षा भवेत्कन्या नववर्षा तु रोहिणी...अतऊर्ध्वं रजस्वला इतिहा.६६
अष्टवसवो नारायणः ना.पू.ता.५।६
अष्टविघमाख्यातं योगिनां बलम् आयुर्वे.१३
अष्टश्राद्धान्यष्टदिनेषुवाएकदिनेवा.. ना.प.४।३९
अष्टसिद्धयोनवनिधयो..पुरुषोत्तमात् सि.वि.२
अष्टाक्षरसमायुक्तं.. यत्तत्पुरुषं.. पं.ब्र.९
अष्टाक्षरमष्टमूर्तिं भवति ना.पू.१।१
अष्टाक्षरमष्टपत्रं चक्रं भवति नृ.पू.५।४
अष्टाक्षरं ह वा एकं गायत्र्यै पदम् एतदु हैवास्याः.. (हास्याः) [बृह.५।१४।१,२,३+ गायत्र्यु.१
अष्टाक्षरःप्रथमःपादोभवति, अष्टाक्षरास्त्रयः पादा भवन्ति नृ.पू.२।२
अष्टाक्षरा वै गायत्री नृ.पू.५।४
(?)अष्टाक्षरास्त्रयः पादा भवन्ति नृ.पू.२।२
अष्टाचक्रानवद्वारा, देवानांपूरयोध्या अरुणो.१
अष्टाचत्वारिंशदक्षरा जगती जागतं तृतीयसवनं, तदस्यादित्याः .. छां.उ.३।१६।५
अष्टादशदिनान्ते च... गरिमाख्यां लभेत सिद्धिं अमन.१।६६
अष्टादशब्रह्माण्डानिजायंतेपुरुषोत्तमात् सि.वि.२
अष्टादशसहस्रे द्वे स्त्रियो जायन्ते पुरुषोत्तमात् सि.वि.२
अष्टादशसु मर्मस्थानेषु क्रमाद्धारणं प्रत्याहारः शाण्डिल्यो.१।८।१
अष्टादशभीश्कथिताहस्ताःशङ्खादिभिः रा.पू.१।९
अष्टादशोक्तमवरं येषु कर्मसु मुंड.१।२।७
अष्टाभिर्वाणकुलीदन्तैःपरिवृताग्रभिः अमदु.५१
(अथ) अष्टाक्षरमष्टपत्रं चक्रं भवति नृ.पू.५।४

अष्टावष्टसहस्रे द्वे शताभिख्यः स्त्रियः.. कृष्णो.१३
अष्टाविंशत्यहंयस्यलय:..वशित्वसिद्धि अमन.१।७१
अष्टांगं च चतुष्पादं त्रिस्थानं ध्या.विं.१३
अष्टोत्तरशतैर्मालामुपवीतं प्रकल्पयेत् रु.जा.१७
अष्टोत्तरं सन्धिशतमष्टाकपालं शिरः
 सम्पद्यते निरुक्तो.२।१
अष्टौ ग्रहा अष्टावतिग्रहाः बृह.३।२।१
अष्टौ प्रकृतयः षोडश विकाराःशरीरे
 तस्यैव देहिनः गर्भो.३
अष्टौ ब्राह्मणान् ग्राहयित्वा
 [अव्यु.३+विष्णुद्द.३।१+ गायत्री.३।११
अष्टौ ब्राह्मणान्सम्यग्ग्राहयित्वा गणप० फ. श्रु.
अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग्ग्राहयेन्मेधावी.. इतिहा.१८
अष्टौ मासानेकाकी यतिश्चरे-
 द्वावेव वा विचरेत् आरुणि.४
अष्टौ लोका अष्टौ देवा अष्टौ पुरुषाः बृह.३।९।२६
अष्टौ वसव एकादश रुद्रा द्वादशादि-
 त्यास्तएकत्रिंशत,इन्द्रश्चैवप्रजाप-
 तिश्च त्रयस्त्रिंशाविति (देवाः) बृह.३।९।२
असकृत्पाभिनादग्धंजगत्तद्भस्मसात्कृतं बृ.जा.२।११
(?)असकृदावर्तीनि भूतानि भवन्ति छां.उ.५।१०।८
(?)असकृदिहावर्तनं दृश्यते मैत्रा.१।८
असकृद्विभातो ह्येवैषब्रह्मलोकः(मा.पा.) छां.उ.८।४।२
असक्तबुद्धिः सर्वत्र भ.गी.१८।४९
असक्तं तेषु कर्मसु भ.गी.९।९
असक्तंनिर्मलंचित्तंयुक्तंसंसार्यविस्फुटं अ.पू.१।५६
असक्तं सर्वभृच्चैव भ.गी.१३।१५
असक्तः स विशिष्यते भ.गी.३।७
असक्तिरनभिष्वङ्गः भ.गी.१३।१०
असक्तो ह्याचरन् कर्म भ.गी.३।१९
असङ्कल्पनमात्रैकसाध्येसकलसिद्धिदे
 असंकल्पातिसाम्राज्ये तिष्ठ.. महो.४।९८
असङ्कल्पनशस्त्रेण.. ब्रह्मसंपद्यतेतदा महो.४।९१
असङ्कल्पेन सकलाश्चेष्टाः...श्रेयः
 सम्पादयन्ति.. अ.पू.२।७
असङ्ख्यशीर्षमसंख्यपादमनन्तकरं ग.शो.४।७
असङ्ख्याकानन्दसमुद्रं.. अलंकृतं सि.सा.५।१
असङ्ख्यातः पुराजाताजायन्तेऽद्यापि
 चामितः। उत्पत्स्यंतेऽपि(जीवाः) महो. ५।१३६

असङ्गतासद्गनातिरिक्तिमुतावरणच्युतिः अ.शां.९७
असङ्गत्वादविकारित्वादसत्त्वात् नृसिंहो.८।३
असङ्गमगुणमविक्रियमव्यपदेश्यम् नृसिंहो.९।९
असङ्गमरसमगन्धमचक्षुष्कम् बृह.३।८।८
असङ्गव्यवहारत्वात् ..वासनानप्रवर्तते मुक्तिको.२।२८
असङ्गशस्त्रेण दृढेन छित्त्वा भ.गी.१५।३
असङ्गो नहि सज्जते बृह. ३।९।२६+
 [४।२।४+४।४।२२+ ४।५।१५
असङ्गोऽहमनङ्गोऽहमलिङ्गोऽहमहंहरिः अध्यात्मो.६८
असङ्गोह्ययमात्माऽतोयूयमेवस्वप्रकाशाः नृसिंहो. ९।८
असङ्गोह्ययंपुरुषइत्येवमेवैतत [बृ.उ. ४।३।१५।१६
असच्च सच्च चिन्मात्रमाद्यन्तंचिन्मयं.. ते.बिं.२।३०
असज्जज्ञान सत भावभूव चित्सु. १४।४
असज्जागरिते दृष्टास्वप्नेपश्यतितन्मयः अ.शां.३९
असतां च प्रतिग्रहं स्वाहा प्रा.हो.१।९
असतो माययाजन्मतस्वतोनैवयुज्यते अद्वैतो.२८
असतो मा सद्गमय [बृ.उ.१।३।२८+ अव्यु.२
असत्कल्पोविकल्पोयंविश्वमित्येकवस्तुनि अध्यात्मो.२२
असत्कृतमवज्ञातं भ.गी. १७।२२
असत्कृत्यपरित्यागोह्युपायान्तरवर्जनम् भवसं. ५।१९
असत्यत्वंयदिभवेत्सत्यत्वंनघटिष्यति ते.बिं. ५।२२
असत्यत्वेनभानंतुसंसारस्यनिवर्तकम् २आत्मो.८।५
असत्यमप्रतिष्ठं ते भ.गी. १६।८
असत्यस्मिन्परानन्दस्वात्मभूतेऽखि-
 लात्मनि। कोजीवतिनरोजन्तुः.. कठरु. २७
असत्यस्य कुतो जनिः,अजातस्यकुतो.. अध्यात्मो.५८
असत्यं बुद्धिरूपकं,अहङ्कारमसद्धीति ते.बिं. ३।४८
असत्यं हि मनोरूपमसत्यं... ते.बिं. ३।४८
असत्त्वमरजस्कमतमस्कममायम् नृसिंहो.९।९
[नरकइतिच] असत्संसारविषयजन-
 संसर्ग एव नरकः निराल.२०
असत्स्वप्नेपिदृष्टाचप्रतिबुद्धोनपश्यति अ.शां.३९
असदित्युच्यते पार्थ भ.गी. १७।२८
असदेतदितिज्ञात्वा मातृभावंनिवेशय महो.५।१६६
असदेव गुणं सर्वं सन्मात्रमहं... ते.बिं.३।५९
असदेव भवोद्भवम्, असदेव गुणं.. ते.बिं.३।५८
असदेवमग्र आसीदेकमेवाद्वितीयं छान्दो.६.२।१
असदेव तदा सर्वमसदेव...... ते.बिं.३।५८
असदेवेदमग्र आसीत[छान्दो.३।१९।१ +६।२।१

असवेवेदमित्यन्तंनिश्चित्यास्यांपरित्यज महो.६।३४
असद्ब्रह्मेति वेद चेत्,अस्ति ब्रह्मेति... तैत्ति.२।६
असद्रूपो यथा स्वप्न उत्तरक्षणबाधितः यो.शि.४।१०
असद्वा इदमग्र आसीत् [तैत्ति.२।७+ सुबालो.१।१
असन्नेव स भवति, असद्ब्रह्मेति .. तैत्ति.२।६
असमानयित्यव्यमनिन्द्रियं... नृसिंहो.९।९
असमीक्ष्य प्रवल्हितानि स्तूयन्ते २प्रणवो.१९
असम्प्रज्ञातनामाऽयं समाधि-
योगिनां प्रियः मुक्तिको. २।५४
असम्बन्धात्तथा ब्रह्म ग्रामोऽपि
विपिनोपमः अ.पू. ११३३
असम्बन्धो विषाणवत् अ.शां. १६
असम्बाधानुरुगायवतोऽभिसिद्धयति छान्दो.७।१२।२
असम्मूढः स मर्त्येषु भ.गी.१०।३
असह्यः [अशक्यः] सोऽन्यथा द्रष्टुं मन्त्रिको.३
असंयतात्मना योगः भ.गी.६।३६
असंवित्स्पन्दमात्रेणयाति
चित्तमचित्तताम् अ.पू. ५।४३
असंभूतमनन्तरमबाह्यं [ब्रह्म] सुबालो.३।२
असंवेदनमशान्तमात्मवेदनमाततं महो.५।४७
असंवेदनरूपा च षष्ठीभवति भूमिका अ.पू.५।८४
असंवेदनरूपा तु षष्ठी तुर्यपदाभिधा अ.पू.५।८८
असंशयवतां मुक्तिः संशया-
विष्टचेतसां,न मुक्तिर्जन्मजन्मान्ते.. मैत्रे.२।१६
असंशयं महाबाहो भ गी.६।२५
असंशयं समग्रं मां भ.गी.७।१
असंसक्तिः पञ्चमी (भूमिका) वराहो.४।१
असंसर्गाभिधामन्यांतृतीयांयोगभूमिकां अक्ष्युप.१८
असंसिद्धस्तु रक्तशरीरसंयुक्तोभवति सामर.१००
असंस्कृताध्वगालोके मनस्यन्यत्र
संस्थिते...तच्चिद्ब्रह्मास्मि सर्वगम् अ.पू.५।२२
असंस्पृश्यमचक्षुषाम् जा.द.१।४
असा आत्माऽन्तर्बहिश्च मैत्रा.५।२
असाधुनैतमुपागादित्येव तदाहुः छान्दो.२।१।२
असाम्नैनमुपागादित्यसाधुनैन-
मुपागादिति छां.उ.२।१।२
असावहो मा प्रापदिति बृह.५।१४।७
असावन्तर्गतः सुराणाम्, योहैवंवित् मैत्रा.६।३९
असावप्राणाख्यःप्राणसंस्पर्शेनोज्ज्वलति मैत्रा.६।२६
असावभिध्यातामोमित्यनेनोर्ध्व-
मुत्क्रान्तः स्वातंत्र्यं लभते मैत्रा.६।२२
असावस्मै कामो मा समृद्धीति वा बृह.५।१४।७
असावात्माऽन्तर्बहिश्चान्तर्बहिश्च मैत्रा.५।५
असावात्माऽमुमात्मानमस्मा आत्मने
सम्प्रयच्छति १ ऐत.३।७।३
असावादित्य उद्गीथः, एष प्रणवः... मैत्रा.६।४
असावादित्यो ब्रह्म सूर्यो.५
असावादित्यो ब्रह्मेत्यजपयोपहितं
हंसः सोऽहम् महावा.२
असाविति त्रिरस्य मूर्धानमभिजिघ्रेत् कौ.उ.२।११
असाविति नामास्य गृह्णाति [कौ.उ. २।११,११,११
असावित्यथास्य दक्षिणे कर्णे जपति कौ.उ.२।११
(?)असावृक्कुर्तिरव्ययः कौ.उ.१।७
असिक्न्या (क्रिया) मरुद्वृधे वित-
स्तयाजीकीये... महाना.५।२१
असिताङ्गोरुरुश्चन्द्रक्रोधोन्मत्तकपालि-
भीषणसंहाराः सूर्यता.५।१
असितो देवलो व्यासः भ.गी.१०।१३
असितो न व्यथते, न रिष्यति बृह.३।९।२६
[४।२।४+४।४।२२+ ४।५।१५
असुखदुःखोऽद्वयः परमात्मा नृसिंहो.९।७
असुप्तः सुप्तानभिचाकशीति बृ.उ.४।३।११
असुराणां ह्येषोपनिषत्प्रेतस्य शरीरं
भिक्षयावसनेनालङ्कारेणेतिसंस्कुर्वन्ति छान्दो.८।८।५
असुरान्यक्ष्य उद्गीथेनात्ययामेति बृ.उ.१।३।१
असुरामेवाप्येति योऽसुरामेवास्तमेति सुबालो.९।१२
(?)असुरिति वा अहमेतमुपासे
[बृ.उ.२।१।१०+ कौ.उ.४।१२
असुरोऽहं, सुरोऽहं, उच्चाररहितोऽहं अद्वै.भा.१
असुर्यानामतेलोकाअन्धेनतमसावृताः ईशा.३
असूयकायानृजवे शठाय मा मा ब्रूया
वीर्यवतीयथास्याम[शाट्याय.३३+ मुक्तिको. १।५१
असृगाञ्जनं कर्मप्रतोदः छाग.६।२
असौवाआदित्यउद्गीथः [छां.उ.१।५।१ +मैत्रा.६।४
असौ किं वृश्चिकैर्दष्टो देहान्ते
वा कथं सुखी यो.शि. १।३३
असौ खलु वावैष आदित्यः सहवै. १७
असौ खल्वादित्यो ब्रह्म शौनको. ४।३

असौ गौरसावश्वः	बृ. उ. ३।४।२
असौचन्द्रस्तस्यावानेवप्राणस्तावत्य...	छान्दो.१।५।१३
असौ च सव्यन्यौ दक्षिणा चोदीची च पार्श्वे (अर्कस्य)	बृह्. १।२।३
असौ चासौ चेर्मौ	बृ. उ. १।२।३
असौ नामायमिदंरूप: (आत्मा)	बृह्. १।४।७
असौ नामायमिदंरूपं..[मा. पा.]	बृ. उ. १।४।७
असौ मया हतः शत्रुः	भ. गी. १६।१४
असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः...	नीलरु. १।९
असौ योऽपक्षीयति	सू.ता.१।२
असौयोवसर्पतिनीलग्रीवोविलोहितः	सू.ता.१।४
असौ योऽस्तमेति	सूर्यता. १।२
असौ वाऽऽदित्य उद्गीथः (मा. पा.)	छां.उ. १।५।१
असौ वा आदित्य इन्द्रः सैषो-ऽमित्वस्येमा इष्टकाः...	मैत्रा. ६।३३
असौ वा आदित्य उद्गीथः एष प्रणव ओमिति...	छान्दो. १।५।१
असौ वा आदित्यः पिङ्गलः	छान्दो.८।६।१
(?)असौ वा आदित्यः सविता	मैत्रा. ६।७
?असौ वा आदित्यो देवमधु	छान्दो. ३।१।१
असौ वा आदित्यो बहिरात्माऽन्त-रात्मा प्राणो बहिरात्मा गत्यान्तरात्मनाऽनुमीयते गतिः...	मैत्रा. ६।१
असौ वाव लोको गौतमाग्निः	छान्दो.५।४।१
असौवैलोकोऽग्निर्गौतम तस्यादित्य एव समित् ,रश्मयो धूमः	बृह्. ६।२।९
असौ स्वपुत्र-मित्र-कलत्र-बन्ध्वा-दीञ्छिखांयज्ञोपवीतं... सर्वकर्माणि... हित्वा	प. हं. २
असौ हि सर्वत्र सर्वदा सर्वात्मा सन्सर्वमत्ति	नृसिंहो. ४।२
अस्तङ्गतायां क्षीणायामस्यां (मायायां) ज्ञास्यसि...	महो. ५।११५
अस्तमित आदित्ये कथं वा-ऽस्योपस्पर्शनमिति	कठश्रु.९,१०
अस्तमित आदित्ये याज्ञवल्क्य किंज्योतिरेवायं पुरुषः	बृह्. ४।३।३
अस्तमित आदित्ये याज्ञवल्क्य चन्द्रमस्यस्तमिते..किंज्योति..	बृह्. ४।३।५
अस्तमित आदित्ये याज्ञवल्क्य चन्द्रमस्यस्तमितेशांतेऽग्नौ.. किंज्योतिरेवायं पुरुषः	बृह्. ४।३।६
अस्तं यन्निधनमेतद्बृहदादित्ये प्रोतं	छां. उ.२।१४।१
अस्ति खल्वन्योऽपरो भूतात्मा	मैत्रा. ३।२
अस्ति चेच्छवाळङ्कारवत्कर्मा-चारविद्यादूरः	सं. सो.२।५९
अस्तिचेदस्तितारूपं ब्रह्मैवास्तित्व-लक्षणम्...पश्यन्नपि सदा नैव ..स्वात्मनः पृथक्	वराहो. २।२६
अस्तितालक्षणा सत्ता, सत्ता ब्रह्म..	पा. ब्र. ४९
अस्तिनास्तीति कर्तव्यतानूपचारः	भावनो. ७
अस्ति नास्त्यस्ति नास्तीति नास्ति नास्तीति वा पुनः। चलस्थिरोभया-भावैरावृणोत्येव बालिशः	अ. शां. ८३
अस्ति ब्रह्मेति चेद्वेद परोक्षज्ञानमेव तत्। अहंब्रह्मेतिचेद्वेदसाक्षात्कारः..	वराहो. २।४१
अस्ति ब्रह्मेति ब्रह्मविद्याविदब्रवीत्	मैत्रा. ४।४
अस्ति ब्रह्मेतिचेद्वेदसन्तमेनंततोविदुः	तैत्ति.२।६।१
अस्ति भगव आकाशाद्भूयः	छांदो.७। १२।२
अस्ति भगव आशाया भूयः	छांदो.७।१४।२
अस्ति भगवश्चित्ताद्भूयइति, चित्ताद्वाव भूयोऽस्तीति तन्मे भगवान्ब्रवीतु	छां.उ.७।५।२
अस्ति भगवस्तेजसो भूयः..	छान्दो.७।११।२
अस्ति भगवःसङ्कल्पाद्भूयइति,सङ्कल्पा-द्वाव भूयोऽस्तीतितन्मेभगवान्..	छान्दो.७।४।३
अस्ति भगवः स्मराद्भूय इति, स्मरा-द्वावभूयोऽस्तीतितन्मेभगवान्..	छान्दो.७।१३।२
अस्ति भगवोऽद्भ्यो भूयः..	छान्दो.७।१०।२
अस्ति भगवो ध्यानाद्भूय इति,ध्याना-द्वावभूयोऽस्तीतितन्मेभगवान्..	छान्दो.७।६।२
अस्ति भगवो नाम्नो भूय इति..	छान्दो.७।१।५
अस्ति भगवोऽन्नाद्भूय इति, अन्नाद्वाव..	छान्दो.७।९।२
अस्ति भगवो बलाद्भूय इति बलाद्वाव..	छान्दो.७।८।२
अस्ति भगवो मनसो भूय इति, मनसो वाव भूयोऽस्तीतितन्मेभगवान्..	छान्दो.७।३।२
अस्ति भगवो वाचो भूय इति..	छान्दो.७।२।२
अस्ति भगवोविज्ञानाद्भूयइति, विज्ञा-नाद्वाव भूयोऽस्तीतितन्मे.. ब्रवीतु	छान्दो.७।७।२

अस्ति वस्तु तथोच्यते आगम.४४
अस्ति वस्तुत्ववादिनाम् आगम.४२
[?]अस्तिहिरण्मयस्योपासंगोअश्वीनां बृ.उ.६।२।७
अस्तीति प्रत्ययो यश्च यश्च नास्तीति
वस्तुनि, बुद्धेरेव गुणावेतौ न तु
नित्यस्य वस्तुनः २ आत्मो.२८
अस्तीति ब्रुवतोऽन्यत्र कथं तदुपलभ्यते कठो.६।१२
अस्तीत्युक्ते जगत्सर्वं सद्रसं तद्भवेत् वराहो.२।७१
अस्तीत्येके नायमस्तीति चैके कठो.१।२०
अस्तीत्येव प्राणानां निःश्रेयसादानं कौ.उ.३।२
अस्तीत्येवोपलब्धस्य तत्त्वभावः
प्रसीदति कठो.६।१३
अस्तीत्येवोपलब्धव्यस्तत्त्वभावेन.. कठो.६।१३
अस्तेयं नाम मनोवाक्कायकर्मभिः
परद्रव्येषु निःस्पृहता शां.ल्यो.१।१।३
अस्त्यनस्तमितो भास्वानजो देवो... महो.४।५६
अस्त्रत्रिशूलडमरुखट्वाङ्गकाल.. लांगूलो.७
अस्थिचर्मनाडीरोममांसाश्चेति
पृथिव्यंशाः शारीरको.३
[?]अस्थिचर्मस्नायुमज्जामांससंघाते.. मैत्रा.१।२
अस्थि प्रतिहारः छान्दो.२।१९।१
अस्थिमिश्रितं मांसेनानुलिप्तं चर्मणाव-
बद्धं (शरीरं) मैत्रे.१।३
अस्थिभ्यः पर्वताः, लोमभ्य ओषधि-
वनस्पतयः.. ललाटाद्रुद्रो जायते सुबालो.२।१
अस्थिभ्यो मज्जा मज्जातः शुक्रम्
[रेतः] [गर्भो. २+ निरुक्तो.१।२
अस्थिमज्जा प्रजायते पिण्डो.५
अस्थिराः सर्व एवेमे [महो.३।४+ भवसं.१।२६
अस्थिस्थूणं स्नायुबद्धं..चर्मावनद्धं दुर्ग-
न्धिपूर्णं मूत्रपुरीषयोः (शरीरं) ना.प. ३।४६
अस्थिस्नाय्वादिरूपोऽयं शरीरं भाति.. कठरु.२०
अस्थीनि चह वै त्रीणि शतानि षष्टिश्च गर्भो.११
अस्थीन्यन्तरतो दारूणि..मज्जोपमा.. बृह. ३।९।३०
अस्थीन्युपग्रहा असृगाञ्जनम् छाग. ६।२
अस्थूलमनण्वनल्पमपारं (ब्रह्म) सुबालो. ३।२
अस्थूल-मनण्वह्रस्व-मदीर्घ-मलोहित-
मस्नेह-मच्छाय-मतमो-ऽवाय्वना-
काश-मसङ्ग-मरस-मगन्ध-मचक्षु-
ष्क-मश्रोत्रमवागमनो-ऽतेजस्क-
मप्राण-ममुख-ममात्र-मनन्तर-
मबाह्यं (अक्षरब्रह्म) बृह. ३।८।८
अस्थूलमनणु ह्रस्वमदीर्घमजमव्ययं यो.शि. ३।१९
अस्थूलोऽस्थूलोऽस्थूलः (गणेशः) ग.शो. २।३
अस्नाविरं शुद्धमपापविद्धम् ईशा. ८
अस्नेह-मच्छाय-मतमोऽवाय्वनाकाशं बृ.उ. ३।८।८
अस्पन्दमानं विज्ञानमनाभासमजं यथा अ.शां.४८
अस्पन्दमानं विज्ञानमनाभासमजं तथा अ.शां.४८
अस्पर्शमरूपमरसम् [नृसिंहो. ९।९+ सुबालो. ३।१
अस्पर्शयोगो वैनामदुर्दर्शः....योगिनां अद्वै.३९
अस्पर्शयोगो वैनाम सर्वसत्त्वसुखो.. अ.शां. २
अस्रष्टाऽद्रष्टाऽवक्ताऽघ्राता (आत्मा) मैत्रा.६।११
अस्मत्कुलस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा महाना. ७।१४
अस्मदादीनां जन्म तदधीनं शाखोप. ३।३
अस्मभ्यं च सौभगमायजस्व महाना.
अस्मा इमामुपसन्नाय सम्यक्परीक्ष्य
दद्याद्वैष्णवीमात्मनिष्ठां शाट्याय. ३४
अस्माकमेवायं महिमा केनो. ३।१
अस्माकं तु विशिष्टा ये भ.गी. १।७
अस्माकं बोध्यविता तनूनां
[ऋक्सं.३।८।१९= मं.५।४।९ महाना.६।१६
अस्माकं भूत्वाविता तनूनाम् अरुणो. १
अस्माच्छरीरात्समुत्थाय परंज्योति-
रुपसम्पद्य मैत्रा.२।२
(?) अस्माच्छरीरादात्मनः बृह. ४।२।३
(?) अस्माच्छरीरादुत्क्रामति छां.उ. ८।६।५
अस्मात्पदार्थनिचयात्..माकिञ्चित्तत्र अ.पू. ५।१०६
(एवं) अस्मात्सर्वस्मात् पुरतः
सुविभातमेकरसमेव नृसिंहो. २।३
अस्मात्सर्वस्मात् प्रियतमः नृसिंहो. २।३
अस्मात् स्यन्दते सिन्धवः सर्वरूपाः
[मुं.उ.२।१।९ + महाना. ८।३
अस्माद्ध्येवात्मनो यद्यत्कामयते
तत्तत्सृजते बृह. १।४।१५
अस्मान्नातः परं किञ्चित् यो वै वेद.. ग.शो. ३।१
अस्मान्मायी सृजते विश्वमेतत्त-
स्मिंश्चान्यो मायया सन्निरुद्धः श्वेता. ४।९
अस्माभिरनुप्रतिचक्ष्याभूदोतेयन्ति
ये अपरीषु पश्यान् चित्सु.१८।१

अस्माभिरिदं जरसः परस्तात्... सहवै. ९
अस्माल्लोकात्प्रेत्य एतमन्नमयमात्मानं
[तैत्ति. २।८।१+ ३।१०।५
अस्मिञ्छरीरे किं कामोपभोगैः मैत्रा. १।४
अस्मिन्कामाः समाहिताः छान्दो.८।१।५
अस्मिन्क्षेत्रे सञ्चरत्येष देवः श्वेताश्व. ५।३
अस्मिन्नाकाशेश्येनोवासुपर्णोवा वि-
परिपत्य श्रान्तःसंहत्य पक्षौसंहृत्य बृ.उ.४।३।१९
अस्मिन्नोता इमाःप्रजाः एषआत्मा... मैत्रा. ७।७
अस्मिन्पञ्चात्मके शरीरे तत्र यत्कठिनं
सा पृथिवी, यद्द्रवं ता आपः गर्भो. १
(अथ) अस्मिन्प्राणएवैकधाभवति कौ.उ. ४।१९
(अथ) अस्मिन्प्राण एवैकधा भवति कौ.उ. ३।३
अस्मिन्प्राणे सर्वं प्रतिष्ठितं छां.उ. ७।१५।१
अस्मिन्ब्रह्मपुरेवेश्म दहरंयदिदंमुने,
पुण्डरीकं तु तन्मध्ये पञ्चब्र. ३४
अस्मिन् रणसमुद्यमे भ.गी.३.४०
अस्मिन्नृसिंहेसर्वमयंसर्वात्मानंहिसर्वं नृसिंहो. ८।१
अस्मिन्सहस्रं पुष्यासमेधमानः स्वेगृहे बृ.उ. ६।४।२४
अस्मिन्संसारे किं कामोपभोगैः मैत्रा. १।८
अस्मिन्संसारे भगवंस्त्वं नो गतिः मैत्रा. १।८
अस्मिन्हीमे प्राणाः प्रतिष्ठिताः छां.उ.३।१२।३
अस्मिंश्च आत्मनिजगत् प्रत्यस्तंयाति मैत्रा.६।१७
अस्मिंश्च लोकेऽमुष्मिंश्च य एतमेवं
विद्वानुपास्ते [छान्दो. ४।११।२+ १२।२,१३।२
अस्मिंश्च सर्वस्मिन्नेषाऽन्तर्हितेति
तस्मादेषोपासीत मैत्रा. ६।६
अस्मिंश्चेदिदं ब्रह्मपुरे सर्वं समाहितं
किं वा ततोऽतिशिष्यते छान्दो. ८।१।४
अस्मीति शब्दविद्धोऽयं समाधिः
सविकल्पकः सरस्व. ५२
अस्मीत्यैक्यपरामर्शः (शांत्) तेन
ब्रह्म भवाम्यहम् शुकर. ४।४
अस्मेदीदिहि सुमना अहेळञ्छर्म ते
स्याम त्रिवरूथ उद्भौ सहवै. ७
अस्मै प्रयन्धि मघवन्नृजीषिन्निति कौ.उ. २।११
अस्मै सम्प्रयच्छति वाचं मे त्वयि
दधानीति पिता कौ.उ. २।१५

(?) अस्य कर्ता प्रधानः मैत्रा. ६।१०
अस्यकुलेवीरोजायतेप्रतिपद्यतेस्वर्गं... छान्दो.३।१३।६
अस्य को विधिर्भूतात्मनः..येनेदं. मैत्रा. ४।१
अस्य चन्द्रस्य सर्वाणि भूतानि मधु बृह. २।५।७
अस्यतामसोंऽशोऽसौसः..योऽयंरुद्रः मैत्रा. ५।२
अस्यत्रिपुण्ड्रधारणस्यत्रिधारेखाभवति का.रु. ४
अस्य त्रैलोक्यवृक्षस्य भूमौ विटप-
शाखिनः । अग्रं मध्यं तथा मूलं
विष्णुब्रह्ममहेश्वराः । रुद्रहृ. १४
(अथ) अस्य (पुत्रस्य) दक्षिणं कर्णम-
भिनिधाय वाग्वागितित्रिः(जपेत्) बृ.उ. ६।४।२५
अस्य देहत्यागेच्छा यदा भवति तदा
वैकुण्ठपार्षदाः सर्वे समायान्ति त्रि.म.ना. ५।५
अस्य द्रष्टा गुणातीतो नित्यो
ह्येष चिदात्मकः यो.शि. ४।१२
अस्य धर्मस्य सर्वाणि भूतानि मधु बृह. २।५।११
अस्य नाम करोति वेदोऽसीति बृ.उ. ६।४।२६
अस्य पद्भ्यां पृथिवी एष सर्व.. मुंड. २।१।४
अस्य पादाश्चत्वारोदेवाश्चत्वारोवेदाः अ.शिखो. १
(अथ) अस्यपुरुषस्यचत्वारिस्थानानि
भवन्ति नाभिर्हृदयं कण्ठं मूर्धाच ब्रह्मो. २
अस्य पुरुषस्य तस्य वाचा सृष्टौ
पृथिवी चाग्निश्च ऐत. १।७।१
अस्य पृथिवी शरीरं, यःपृथिवीमन्तरे
सञ्चरन्पृथिवी न वेद अध्यात्मो. १
अस्य (कृष्णस्य) प्रकृतिः पराचीना राधिको. ३
अस्य प्रतोद्रोऽनेन खल्वीरितं परिभ्रम-
तीदं शरीरं चक्रमिव मैत्रा. २।९
(अथ) अस्य प्रतीची दिक्पुच्छं बृह. १।२।३
अस्य बीजं तमःपिण्डं मोहरूपं जडं
घनं, वर्तते कण्ठमाश्रित्य त्रि.ब्रा. २।८
अस्य ब्रह्माण्डस्य समन्ततः स्थिता-
न्येतादृशान्यनन्तकोटिब्रह्माण्डानि त्रि.म.ना. ६।२
अस्य (अन्नमयकोशस्य) मध्येऽस्तिहृदयं त्रि.ब्रा.२।७
अस्य एतस्य महतो भूतस्य निश्वसि-
तमेतद्यदृग्वेदो यजुर्वेदः बृ.उ.२।४।१०
[+४।५।११+ मैत्रा. ६।३२
अस्य महापुरुषस्य कश्चित्कश्चिदीश्वर-
साक्षात्कारो भवति त्रि.म.ना. ६।१

अस्यमातरमभिमन्त्रयते इलाऽसि मैत्रा-
वरुणी वीरे वीरमजीजनत् बृह. ६।४।२८
अस्य मात्रा अकारो ब्रह्मरूप उकारो
विष्णुरूपो मकारः कालकाल
अर्द्धकारो लिङ्गम् सदानं. ९
अस्य मानुषस्य सर्वाणि भूतानि मधु बृह.२।५।१३
अस्य यज्ञपरिवृता आहुतीर्होमयति प्रा.हो. २।३
अस्य यदेकां शाखां जीवो जहाति छांदो.६।११।२
(?)अस्य राजसांशोऽसौ सः..योऽयंब्रह्मा मैत्रा. ५।२
अस्य वायोः सर्वाणि भूतानि मधु बृह. २।५।४
अस्य विस्रंसमानस्य शरीरस्थस्य
देहिनः... किमत्र परिशिष्यते कठो. ५।४
अस्य व्यञ्जिका नित्यनिवृत्ताऽपि
मूढैरात्मेव दृष्टाऽस्य सत्त्वमसत्त्वं
च दर्शयति नृसिंहो. ९।२
अस्य शारीरयज्ञस्य यूपरशनाशोभित-
स्यात्मा यजमानः प्रा.हो.४।१
अस्य सत्यस्य सर्वाणि भूतानि मधु बृह. २।५।१२
अस्य संसारवृक्षस्य मनो मूलमिदं
स्थितम्। सङ्कल्प एव तन्मन्ये
सङ्कल्पोपशमेन तत्। शोषयाशु.. मुक्तिको.२।३७
(?) अस्य सात्त्विकांशोऽसौ सः
योऽयं विष्णुः मैत्रा. ५।२
अस्य सोम्य पुरुषस्य प्रयतो वाङ्मनसि
सम्पद्यते, मनः प्राणे, प्राणस्तेजसि छान्दो. ६।८।६
अस्य सोम्य महतो वृक्षस्ययोमूले-
ऽभ्याहन्याज्जीवन् स्रवेत... छान्दो.६।११।१
अस्य स्तनयित्नोः सर्वाणिभूतानि मधु बृह. २।५।९
अस्या मायाया अवयवैः सूक्ष्मैर्व्याप्तं
सर्वमिदं जगत् गुह्यका. ५५
(अथ) अस्या ऊरू विहापयति
विजिहाथांवापृथिवीति बृह. ६।४।२१
(अथ) अस्या एतदेव तुरीयं दर्शतं
पदं परो रजा य एष तपति बृह. ५।१४।३,६
अस्या (राधायाः) एव कायव्यूह-
रूपा गोप्यः राधिको. ५
अस्याकाशस्य सर्वाणि भूतानि मधु बृह. २।५।१०
अस्याग्नेः सर्वाणि भूतानि मधु बृह. २।५।३
अस्यात्मनः सर्वाणि भूतानि मधु बृह. २।५।१४
अस्यादित्यस्य सर्वाणि भूतानि मधु बृह. २।५।५
अस्याधिष्ठानमुच्यते भ.गी. ३।४०
अस्यामोषधयो जायन्ते (पृथिव्यां) १ऐत.१।७।१
(अथ) अस्यायमितर आत्मा कृतकृत्यो
वयोगतः प्रैति २ऐत. ४।४
अस्यास्सख्या विद्याया वीर्येण यज्ञस्य
वरिष्ठं सन्दधाति छान्दो.४।१७।८
अस्यां तुरीयावस्थायां स्थितिं प्राप्य-
विनाशिनीमानन्दैकान्तशीलत्वात् अ.पू. २।१४
अस्यांशाद्बहवो विष्णुरुद्रादयो भवन्ति राधोप. ३।३
अस्यां (पृथ्व्यां) हीदं सर्वभूतं प्रतिष्ठितं छान्दो.३।१२।२
अस्याः (अविद्यायाः) परं प्रपश्यन्त्याः
स्वात्मनाशः प्रजायते महो. ४।११५
अस्येमाश्चतस्रो दिशश्चतस्र उपदिशो
दलसंस्थाः मैत्रा. ६।२
अस्यैकैकरोमकूपान्तरेष्वनन्तकोटि-
ब्रह्माण्डानिस्थावराणिचजायन्ते त्रि.म.ना. २।७
अस्यैतदतिच्छन्दा अपहतपाप्मा... बृ.उ. ४।३।२१
(तद्वा) अस्यैतदाप्तकाममात्मकाम-
मकामंरूपंशोकान्तरं बृ.उ. ४।३।२१
अस्यैतद्भास्वरंरूपंयदमुष्मिन्नादित्येतपति मैत्रा. ६।१७
(एवं) अस्यैता हिता नाम नाड्यो-
ऽन्तर्हृदये प्रतिष्ठिता भवन्ति बृह. ४।२।३
अस्यै पृथिव्यै सर्वाणि भूतानि मधु बृह. २।५।१
अस्यैवानन्दकोशेन स्तम्बान्ता विष्णु-
पूर्वका भवन्ति सुखिनो नित्यं कठरु. ३२
अस्यैवान्नमिदंसर्वमस्मिन्नोताः.. प्रजाः मैत्रा. ७।७
अस्यै विद्युतः सर्वाणि भूतानि मधु बृह. २।५।८
अस्यैवैतानि सर्वाणि निश्श्वसितानि
[बृ.उ. २।४।१०+ ४।५।११
अस्यैव शरीरस्य नाशमन्वेष नश्यति छान्दो.८।९।१,२
अस्योपसन्द्यां मास्छैत्सीत्प्रजया च
पशुभिश्च स्वाहा बृ.उ. ६।४।२४
अस्वरं भावयेत् परम् ब्र.बिं. ७
अस्वरेणहिभावेनभावोनाभावइष्यते ब्र.बिं. ७
अस्वर्ग्यैः सह स्वर्ग्यस्यैषः मैत्रा. ७।८
अहङ्कर्तव्यमेवाप्येति योऽहङ्कर्तव्य-
मेवास्तमेति सुबालो.९।१२
अहङ्कार इतीयं मे भ.गी. ७।४

अहङ्कारकलायुक्तं बुद्धिबीजसमन्वितम् । तद्गुर्यष्टकमित्युक्तं महो. ५।१५३
अहङ्कारकलात्यागे समतायाः समुद्गमे ।..तुर्यावस्थोपतिष्ठते अ.पू. ५।१११
अहङ्कारक्षये तद्वदेहे कठिनता कुतः । सर्वकर्ता च योगीन्द्रः यो.शि. १।१५०
अहङ्कारमहान्मुक्तः स्वरूपमुपपद्यते अध्यात्मो. ११
अहङ्कारमयींत्यक्त्वावासनांलीलयैव यः ।...स जीवन्मुक्त उच्यते महो. २।४५
अहङ्कारमसद्बीति नित्योऽहं शाश्वतो.. ते. बिं. ३।४८
अहङ्कारमेवाप्येतियोऽहङ्कारमेवास्तमेति सुबालो.९।१३
अहङ्कारवशादापदहङ्काराद्दुराधयः महो. ३।१६
अहङ्कारवशादीहानाहङ्कारात्परोरिपुः महो. ३।१६
अहङ्कारवशाद्यद्यन्मयाभुक्तंचराचरं, तत्तत्सर्वमवस्त्वेव महो. ३।१७
अहङ्कारविमूढात्मा भ.गी. ३।२७
अहङ्कारवृताःकेचिज्ज्ञात्वा शास्त्रसमुच्चयम् । उपदेशं न जानन्ति.. अमन. २।३७
अहङ्कारश्चाहंकर्तव्यं च चित्तं च.. प्रश्नो.४।८
अहङ्कारश्चाहंकर्तव्यं च नारायणः सुबालो. ६।१
अहङ्कारसुतंवित्तभ्रातरंमोहमन्दिरम्, आशापत्नीं त्यजेद्यावत्तावन्मुक्तो.. मैत्रे. १।१२
अहङ्कारं बलं दर्पं [भ.गी.१६।१८ +१८।५३
अहङ्कारं महति, महदव्यक्तेऽव्यक्तं पुरुषे क्रमेण विलीयते पैङ्गलो. ३।३
अहङ्कारःप्राणयोगेनघ्राणद्वारगन्धगुणो गुदाधिष्ठितः पृथिव्यां तिष्ठति त्रि. ब्रा.१।६
अहङ्कारात्पञ्चतन्मात्राणि,पञ्चतन्मात्रेभ्यःपञ्चमहाभूतानि[त्रि.ब्रा.१।१+ त्रि.म.ना.२।५
अहङ्काराद्दुराधयः, अहङ्कारवशादीहा महो. ३।१६
अहङ्काराभिमानेन जीवः स्याद्धि सदाशिवः त्रि. ब्रा.२।१६
अहङ्कारोऽध्यात्मम्,अहङ्कर्तव्यमधिभूतं रुद्रस्तत्राधिदैवतम् सुबालो. ५।८
अहङ्कारोऽध्वर्युः (शारीरयज्ञस्य) प्रा. हो. ४।१
अहङ्कारो विनिर्णेताकलङ्कीबुद्धिः.. महो.५।१२५
अहंकृतिर्यदा यस्य नष्टा भवति तस्य वै । देहस्त्वविभवेन्नष्टो.. यो.शि.१।३४

अहतपाप्मानो देवाः स्वर्गलोकमायन् सह्वै.१३।९
अहतवासा नैनां वृषलो न वृषल्युपहन्यात्त्रिरात्रान्त आप्लुत्य.. बृह. ६।४।१३
अहतेन वाससा सम्प्रच्छन्नः स्वयं पश्येत् पत्य पुत्र उपरिष्टादभिनिपद्यते कौ.उ. २।१५
अहन्यांशे क्षते शान्ते महो. ५।७
अहमखिलं जगत् देव्यु. १
अहमग्निरहं हुतम् भ. गी. ९।१६
अहमज्ञः किंचिज्ज्ञोऽहमहं जीवो.. संसारीति भ्रमवासनाबलात्संसारः त्रि.म.ना. ५।२
अहमज्ञानजं तमः भ. गी. १०।११
अहमन्नमन्नमदन्तमद्मि नृ. पू. २।१४
अहमन्नमन्नमदन्तमा३द्मि तैत्ति. ३।१०।६
अहमन्नमहमन्नमहमन्नम् तैत्ति. ३।१०।६
अहमन्नं सदान्नादइतिहिब्रह्मवेदनम् पा. ब्र. ४३
अहमन्नादो२ऽहमन्नादो३हमन्नादः तैत्ति. ३।१०।६
अहमन्य इदंचान्यदितिभ्रांतिंत्यज.. महो. ६।१२
अहमयमित्येवाग्र उक्त्वाऽथान्यन्नाम.. बृह. १।४।१
अहमस्मि जरिता सर्वतोमुखः बा.मं.२५
अहमस्मि जरितॄणाम् दाता बा. मं. ८
अहमस्मि परश्चास्मि ब्रह्मास्मि... मैत्रे. ३।१
अहमस्मि प्रथमजा ऋता ३ स्य [तैत्ति.३।१०।६+ नृ. पू.२।१४
अहमस्मि ब्रह्माहमस्मि [महाना.६।७ +त्रि.म.ना.८।३
अहमस्मि सदा सोऽस्मिनित्योऽस्मि विमलोऽस्म्यहम् मैत्रे. ३।२
अहमस्मीति निश्चित्य वीतशोको भवेन्मुनिः [अ. पू. ४।३५+ रुद्रह्र. ४८
अहमस्मीत्यभिध्यायेद्ध्येयातीतं विमुक्तये [अ. पू. ५।७४+ जा. द. ९।५
अहमात्मा गुडाकेश भ. गी.१०।२०
अहमात्मा न चान्योऽस्मीत्येवमप्रच्युता मतिः जा. द. १।१८
अहमात्मा सदाशिवः ते. बिं. ३।९
अहमादिर्हि देवानां भ. गी.१०।२
अहमानन्दविग्रहः,इन्द्रियाभावरूपोहं ते. बिं. ३।३६

अहमादिश्च मध्यं च भ.गी.१०।२०
अहमानन्दानानन्दाः, विज्ञाना-
विज्ञाने अहम् देव्यु. १
(यत्)अहमायतनमस्मि त्वं
तदायतनमसि छांदो. ५।१।१४
अहमाशिरमहमिदं द-(ज)ग्घवान बा. मं. ८
अहमित्यनुसन्दध्यात् नृसिंहो. ४।१
अहमित्यात्मानमादाय मनसाब्रह्मणे-
कीकुर्यात् नृसिंहो. ४।१
अहमित्याह यथा यजुरेवैतत् अव्यक्तो. ३
अहमित्येकादशं स्थानं जानीयात् नृ. पू. २।३
अहमिन्नु दिशुवानो दिवे दिवे बा. मं. १६
अहमिन्नु परमो जातवेदाः बा. मं. १५
अहमिन्द्राग्नी अहमश्विनावुभौ देव्यु. २
अहमुक्थमस्मीति विद्यात् १ ऐत. १।२।४
अहमु यन्नपतता रथेन बा. मं. १६
अहमु ह प्रवर्ति यज्ञियामिमां बा. मं. १३
अहमेकः प्रथममासं वर्तामि च
भविष्यामि च, नान्यः कश्चित् अ. शिरः. १
अहमेकादशं स्थानं जानीयाद्यो
जानीते सोऽमृतत्वं च गच्छति नृ. पू. २।३
अहमेकोऽस्मि यदिदं नु किञ्च बा. मं. २५
अहमेभिः सर्वैरार्त्विज्यैः पर्यैशिषं
(पर्यैषिषं–मा.पा.) छां.उ.१।११।२
अहमेव कालः, नाहं कालः, नाहं
कालस्य.. महाना...
अहमेव जगत्त्रयस्यैकः पतिः पा. ब्र. २
अहमेव परं धाम न द्वितीयं.. अनु. सा...
अहमेव परं ब्रह्म, अहमेव गुरोर्गुरुः ते. बि.६।४४
अहमेव परंब्रह्म..समाधिः सतुविज्ञेयः
सर्ववृत्तिविवर्जितः त्रि.ब्रा.२।१६२
अहमेवपरंसर्वमिति पश्ये परं सुखम् पैङ्गलो. ४।९
अहमेव परः शिवः ते. बिं. ३।३३
अहमेवपरात्परः(शिवः)[ते.बिं.३।१७+ ६।५९
अहमेव परानन्द अहमेव परात्परः ते.बिं.६।३९
अहमेव परो विश्वाधिकः (शिवः) भस्मजा.२।५
अहमेव महानात्मा ते.बिं. ३।१७
अहमेव सदाशिवः ते.बिं.६।६४

अहमेव सर्वस्येश इति यावद्वदति
तावत्क्रूरा अजायेरन् ग.शो. ३।६
अहमेवसुखंनान्यदन्यच्चेन्नैवतत्सुखम् वराहो. २।७
अहमेव सुखात् सुखं...
आत्मनोऽन्यत्सुखं न ते.बि.६।४९
अहमेव हरिः साक्षादहमेव शिवः.. ते.बि.६।६४
अहमेव हृदाकाशश्चिदादित्यः
स्वरूपवान् ते.बि.३।२८
अहमेवंविधोऽर्जुन भ.गी.११।५४
अहमेवाक्षयः कालः भ.गी.१०।३३
अहमेवाक्षरं ब्रह्म वासुदेवाख्य-
मद्वयम् ना.प.३।२०
अहमेवाधस्तादहमुपरिष्टात् छान्दो.७।२५।१
अहमेवास्मि सिद्धोऽस्मि
शुद्धोऽस्मि परमोऽस्म्यहम् मैत्रे.३।२
अहमेवाहमेवास्मि भूमाकाश-
स्वरूपवान् ते.बि.३।१६
अहमेवाहं मां जुहोमि [महाना.६।७+ त्रि.म.ना.८।३
अहमेवेदं सर्वमसानीति छान्दो.५।२।६
अहमेवेदं सर्वोऽस्मीति मन्यते
सोऽस्य परमो लोकः बृ.उ.४।३।२०
अहमेवेदं सर्वम् छान्दो.७।२५।१
अहमेवेदं सर्वं भूयासं भूर्भुवः स्वः.. बृ.६।३।६
अहमेवैतत्पञ्चधाऽऽत्मानं प्रविभज्य.. प्रश्नो.२।३ ...
अहमेवैतत्पञ्चधा विभज्य..[मा. पा.] प्रश्नो.२।३
अहमेषां नैकंचन वेद छां.उ.५।३।५
अहमेषां पदार्थानामेते च मम जीवितं महो.६।४१
अहमों तत्सद्यत्परं ब्रह्म..
[ग. शो.१।४+ रामो. २।४+ श्रीवि.ता.४।१
अहम्भावं परित्यज्य जगद्भावमनी-
दृशम् ।.. भूयो नाप्यनुशोचति सौ.ल.१७
अहम्भावानहंभावौ त्यक्त्वा सदसती
तथा ।..स्थितं तत्तुर्यमुच्यते अ.पू.५।१०
अहम्भावोदयाभावो बोधस्य
परमावधिः ।..मर्यादोपरतेस्तु सा अध्यात्मो.४१
अहम्ममेतियोभावोदेहाक्षादावनात्मनि
अध्यासोऽयं निरस्तव्यः... अध्यात्मो.१

अहम्ममेति विण्मूत्रलेपगन्धादि-मोचनम्.. शुद्धशौचमिति प्रोक्तं मृज्जलाभ्यां तु लौकिकम्	मैत्रे.२।८
अहरहरभ्यर्च्य विश्वेश्वरं लिङ्गं	भस्मजा.२।१०
अहरहर्ब्रह्मविष्णुपुरन्दराद्यमरवरसे-वितं...मामेवोपासितव्यम्	भस्मजा.२।९
अहरहर्ह सुप्तः प्रसुतो भवति नास्यान्नं क्षीयते	बृह.२।१।३
अहरह आपूर्यमाणपक्षमापूर्यमाण-पक्षाद्यान् षडुदङ्ङेति मासान्	छान्दो.४।१५।५
अहरेव प्राणः रात्रिरपानः वागग्निः..	१ऐत.१।५।१
अहरेवं प्राणो रात्रिरेव रयिः	प्रश्नो.१।१३
अहर्यद्ब्रह्मणो विदुः	भ.गी.८।१७
अहर्वा अश्वं पुरस्तान्महिमान्वजायत	बृह.१।१।२
अहल्लिकेति होवाच याज्ञवल्क्यः	बृह.३।९।२५
अहस्तदवलुम्पतु (पापं)	महाना. ११।३
अहं कर्ता भोक्ता सुखी दुःखी काणः खञ्जो बधिरोः..	ध्या.बिं.९४
अहं कर्तास्म्यहंभोक्ताऽस्म्यहंवक्ता-ऽभिमानवान्। एतेगुणाराजसस्य	शारीरको.७
अहं कालत्रयातीत अहंवेदैरुपासितः	ते.बिं.३।१८
अहं कृत्स्नस्य जगतः	भ.गी.७।६
अहं क्रतुरहं यज्ञः	भ.गी.९।१६
अहंच (नारायणः) तस्मिन्नेवाव-स्थितः [तु.ती.३+	प.हं.प.११
अहं चरामि भुवनस्य मध्ये	बा.मं.१८
अहं छन्दसामविदं रयीणाम्	बा.मं.१४
अहं जगद्वा सकलं शून्यं व्योमसमं..	महो. ६।५८
अहं जातं जनि जनिष्यमाणं	बा. मं. २३
अहं ज्योतिरहममृतं विनद्धिः	बा. मं. २३
अहं तत्र स्थितं चक्रं भ्रामयामि स्वमायया	त्रि. ब्रा. २।६०
अहं त्यक्त्वाऽहमस्म्यहम्	ते. बिं. ३।३
अहं त्वमस्ति नास्ति कर्तव्यम-कर्तव्यः...होमः	भावनो....
अहं त्वमहमहं त्वमित्नु त्वमहं चक्षव	बा. मं. २३
अहं त्वष्टाऽहं प्रतिष्ठा	कठश्रु. २
अहं त्वं चैव चिन्मात्रं	ते. बिं. २।३३
अहं त्वं जगदित्यादौ	महो. ४।५४
(एवमेव) अहं त्वा द्वाभ्यां प्रश्नाभ्यामुपोदस्थां, तौ मे ब्रूहि..	बृह. ३।८।२
अहं सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि...	भ. गी.१८।६६
अहं दक्षिणतोऽहमुत्तरतः	छांदो. ७।२५।१
अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये ३ यजमानायसुन्वते [मं.१०।१२५।२	ऋक्सं. ८।७।९ देव्यु.३
अहं दिव्या आन्तरिक्ष्यास्तुका वहम्	बा. मं. १३
अहं दिशः प्रदिश आदिशश्च	बा. मं. १७
अहं देवानामासन्नवोदः	बा. मं. ८
अहं द्यावापृथिवी आततानः	बा. मं. १२
अहं न्वहिं पर्वते शिश्रियाणं	बा. मं. ९
अहं पचामि सरसः परस्य	बा. मं. १४
अहं पञ्चधा दशधा चैकधा च	बा. मं. १९
अहं पञ्चभूतान्यपञ्चभूतानि	देव्यु. १
अहं पश्चादहं पुरस्तात्	छान्दो.७।२५।१
(यत)अहंप्रतिष्ठाऽस्मित्वंतत्प्रतिष्ठासि	छां.उ.५।१।१३
अहं बीजप्रदः पिता	भ. गी. १४।४
'अहं ब्रह्म' इत्यादिवाक्यविचारः..	मठाम्ना. ६
अहं ब्रह्म चिदाकाशं नित्यं ब्रह्म..	ते. बिं. ६।५०
अहंब्रह्मचिदात्मकं,सच्चिदानंदमात्रोहं	ते. बिं.६।१०७
अहं ब्रह्म न सन्देहो ह्यहं ब्रह्म	ते.बिं.६।१०७
(खलु)अहं ब्रह्म सूचनात्सूत्रं.. अहमेव, विद्वान् त्रिवृत्सूत्रंत्यजेत्..	आरुणि. ३
अहं ब्रह्मस्वरूपिणी	देव्यु. १
अहं ब्रह्मास्मि[बृ.उ.१।४।१०,१०+ [त्रि.म.ना.७।१०+	शु.र.२।२ पैङ्ग्लो.३।१
अहंब्रह्मास्मिसिद्धोऽस्मिनित्यसिद्धो..	ते. बिं. ३।२०
अहं ब्रह्मास्मि नास्मीति सच्चिदा-नन्दमात्रकः	ते. बिं.४।३९
अहं ब्रह्मास्मि केवलम्	ते. बिं. ३।२६
अहं ब्रह्माऽहं यज्ञोऽहं वषट्कारो-ऽहमोङ्कारोऽहं...त्वष्टाऽहं प्रतिष्ठाऽहम्	कठरु. १
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं जन्मदोषं विनाशयेत्	ते. बिं. ६।६१
अहंब्रह्मास्मिमन्त्रोऽयंदेहदोषंविना..	ते. बिं. ३।६१
अहंब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं दृश्यपापंविना..	ते. बिं. ३।६०
अहं ब्रह्मास्मिमन्त्रोऽयमन्यमंत्रंविना..	ते. बिं. ३।६०

अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽय-
मजडत्वं प्रयच्छति ते. बिं. ३।७०
अहंब्रह्मास्मिमन्त्रोऽयमनात्मा-
सुरमर्दनः ते. बिं. ३।७१
अहं ब्रह्मास्मि वज्रोऽयमना-
त्माख्यगिरीन् हरेत् ते. बिं. ३।७१
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयमना-
त्माख्यासुरान् हरेत् ते. बिं. ३।७२
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं
सर्वांस्तान् मोक्षयिष्यति ते. बिं. ३।७२
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं
ज्ञानानन्दं प्रयच्छति ते. बिं. ३।७३
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं
मृत्युपाशं विनाशयेत् ते. बिं. ३।६२
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं द्वैतदुःखं
विनाशयेत् ते. बिं. ३।६२
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं भेदबुद्धिं
विनाशयेत् ते. बिं. ३।६३
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं बुद्धिव्याधिं
विनाशयेत् ते. बिं. ३।६४
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं चिन्तादुःखं
विनाशयेत् ते. बिं. ३।६३
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं चित्तबन्धं
विनाशयेत् ते. बिं. ३।६४
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं सर्वव्याधीन्
विनाशयेत् ते. बिं. ३।६५
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं कामादीन्
नाशयेत्क्षणात् ते. बिं. ३।६६
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं वैशोकं
विनाशयेत् ते. बिं. ३।६५
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं क्रोधशक्तिं
विनाशयेत् ते. बिं. ३।६६
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं चित्तवृत्तिं
विनाशयेत् ते. बिं. ३।६७
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं संकल्पादीन्
विनाशयेत् ते. बिं. ३।६७
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं कोटिदोषं
विनाशयेत् ते. बिं. ३।६८
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयं सर्वतन्त्रं
विनाशयेत् ते. बिं. ३।६८
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयमात्माज्ञानं
विनाशयेत् ते. बिं. ३।६९
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयमात्म-
लोकजयप्रदः ते. बिं. ३।६९
अहं ब्रह्मास्मि मन्त्रोऽयमप्रतर्क्य-
सुखप्रदः ते. बिं. ३।७०
अहं ब्रह्मास्मीति वा भाष्यते बह्वृचो. ४
अहंब्रह्मेतिचेद्वेदसाक्षात्कारःसउच्यते वराहो. २।४१
अहं ब्रह्मेति नियतं मोक्षहेतुर्महा-
त्मनाम् [वराहो.२।४३+पैङ्गलो.४।१९+ महो.४।७२
अहं ब्रह्मेतिनिश्चित्यअहम्भावंपरित्यज ते. बिं. ६।१०४
अहं ब्रह्मेतिभावनया यथापरमतेजो
महानदी...प्रविशति त्रि.म.ना..८।३
अहं ब्रह्मेति विज्ञानात्...सञ्चितं
विलयं याति अध्यात्मो. ५०
अहं ब्रह्मैव सर्वं स्यात् ते. बिं. ३।१६
अहं भूमा सदाशिवः ते. बिं. ३।५१
अहं मत्या विरहितः...इति मत्वा
न शोचति अ. पू. ५।९३
अहं मनुरभवं सूर्यश्चेति बृह. १।४।१०
अहं मनुष्य इत्यादिव्यवहारो... अवधू. १८
अहं मित्रावरुणावुभौ बिभर्मि देव्यु. २
[ऋ.सं.८।७।९मं.१०।१२५।१+ अथर्व.४।३० १
अहं राष्ट्री सङ्गमनी वसूनाम् देव्यु. ४
[ऋक्सं.मं.१०।१२५।३+ अथर्व.४।३०।२
अहंरुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यहमादित्यै.. ऋक्सं.८।७।९
[मं.१०।२५।१+अथर्व.४।३०।१ देव्यु. २
(यत्) अहं वसिष्ठोऽस्मि,
त्वं तद्वसिष्ठोऽसि छान्दो.५।१।१३
अहं वषट्कारोऽहमोङ्कारः कठश्रु. २
अहं वाव सृष्टिरस्मि बृ. उ. १।४।५
अहं विजानामि विविक्तरूपः कैव. २१
अहं विश्वं भुवनमभ्यभवाम्(मा.पा.) तैत्ति.३।१०।६
अहं विश्वं भुवनमभ्यभवां ३
सुवर्णज्योतिः [तै.उ.३।१०।६+ नृ. पू.२।१४
अहं विश्वा ओषधीर्गर्भं आधां बा. मं. १७
अहं विश्वा भुवना विचक्षन् बा. मं. ८
अहं विष्वङ्ङहमस्मि प्रसत्वान् बा. मं. २५
अहं वृक्षस्य रेरिव[तैत्ति.१।१०।१+ ना. प. ४।४४

अहं वेद भुवनस्य नाभिम् वा. मं. १३
अहं वेदानामुत यज्ञानाम् वा. मं. १४
अहं वैत्वायाज्ञवल्क्ययथाकाश्योवा.. बृह. ३।८।२
अहं वैश्वानरो भूत्वा भ. गी.१५।१४
अहं शास्त्रेणनिर्णीतअहंचित्ते..स्थित: ते. बिं. ३।१९
अहंशिष्यवदाभामिह्यंलोकत्रयाश्रय: ते. बिं. ३।१८
अहं शुद्ध इतिज्ञानं शौचमाहुर्मनीषिण: जा. द. १।२०
अहं शुद्धोऽस्मि बुद्धोऽस्मि नित्यो-
ऽस्मि प्रभुरस्म्यहम् ते. बिं. ३।४२
अहं शेषांशज्योतीरूप:..भक्तश्च गधोप. ४।१
अह९ श्रद्धया चित्त्यु. ८।२
अहंश्रेयसे विवदमाना ब्रह्म
जग्मु: (प्राणा:) छां.उ.६।१।७
अहं श्रेयानस्म्यहं श्रेयानस्मीति छां.उ. ५।१।६
अहं श्लोककृदहं श्लोककृदहं श्लोक.. तैत्ति.३।१०।६
अहं स च मम प्रिय: भ. गी. ७।१७
अहं सच्चित्परानन्दब्रह्मैवास्मिनचेतर: महो. २।११
अहं सत्यचिदात्मक: । मूर्तित्रय-
मसद्धीति.. ते. बिं. ३।५०
अहं सत्यात्मक: शुचि: ते. बिं. ३।४९
अहं सर्वमिदं विश्वं परमात्माऽहं... महो. ५।८९
अहं सर्वस्य प्रभव: भ. गी. १०।८
अहं सर्वस्येश:, मत्त: सर्वाणि भूतानि ग.शो.४।१०
(?)अहं संपदस्मि, त्वं तत्सम्पदसि छान्दो.५।१।१४
(?)अहं स: सोऽहमिति नृसिंहो.९।१०
अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्ममयोनि
रप्स्व ? न्त: समुद्रे [देव्यु. ४ ऋक्सं. ८।७।७
=मं.१०।१२५।७+ अथर्व.४।३०।७
अहं सो ममेदमित्येवं मन्यमानो
निबध्नात्यात्मनात्मानंजालेनेव
खचर: [मैत्रा. ३।२+ ६।३०
अहं सोमं त्वष्टारं पूषणं भगं दधा.. देव्यु. २
अहं स्त्री पुरुषोऽहम् अद्वै. भा. १
अहं हि सर्वयज्ञानां भ. गी. ९।२४
अहं हीदं सर्वमसृक्षीति बृ. उ. १।४।५
अहार्यवन्नित्यविनिश्चलोऽहमम्भो-
धिवत्पारविवर्जितोऽहम् कुण्डिको. १६
अहिर्न तमर्णवे शयानं वावृहाणं... आर्षे. १०।३

अहिनिर्ल्वयनी सर्पविमोकोजीव-
वर्जित:..तं सर्पोनाभिमन्यते वराहो. २।६७
अहिनिर्ल्वयनीवाप्रमुक्तदेहस्तुतिष्ठति २ आत्मो. १७
अहिरिव जनयोगं सर्वदा वर्जयेद्य: वराहो. २।३७
अहिंसन्सर्वत्रभूतान्यन्यत्र तीर्थेभ्य: छान्दो.८।१५।१
अहिंसा इष्टय: (शारीरयज्ञस्य) प्रा. हो. ४
अहिंसा क्षांतिरार्जवम् भ. गी. १३।८
अहिंसा गोमयं प्रोक्तं (हृत्कुण्डपर्थे) शिवो. १।२५
अहिंसा तु तपोयज्ञो वाङ्मन:-
कायकर्मभि: शाट्याय. १४
अहिंसाद्या यमा: पञ्च यतीनां
परिकीर्तिता: शिवो.७।१०१
अहिंसा धर्मयाग: परमहंसोऽध्वर्यु:.. पा. ब्र. ५
अहिंसा नियमेष्वेका मुख्या १ यो. त. २९
अहिंसा सत्यमक्रोध: भ. गी.१६।२
अहिंसा सत्यमस्तेयं ब्रह्मचर्यं..एते
सर्वे गुणा ज्ञेया: सात्त्विकस्य... शारीरको. ५
अहिंसा सत्यमस्तेय...यमा दश
[त्रि.ब्रा.२।३३+जा.द. १।६+ वराहो. ५।१२
अहिंसाऽसत्यास्तेयब्रह्मचर्यदयाजप-
क्षमाधृतिमिताहारशौचानि
चेति यमा दश शांडि.१।१।३
अहिंसा सत्यमस्तेयं ब्रह्मचर्या-
परिग्रह:.. एषस्वधर्मोविख्यातो.. ना.प.४।१०।१३
अहिंसा समता तुष्टि: भ. गी. १०।५
अहुतमवैश्वदेवमविधिना हुत-
मासप्तमांस्तस्यलोकान्हिनस्ति मुंड. १।२।३
अहृदयस्य हि किं स्यात् बृ. ह. ४।१।७
अहेयमनुपादेयमनाधेयं (ब्रह्म) अध्यात्मो.६२
अहेयमनुपादेयमसामान्यविशेषणं मैत्रे.१।१५
अहो अनन्यभक्तिपरा काष्ठा सामर.४४
अहो गुरुरहो गुरु: १अवधू.३२
अहो ज्ञानमहो ज्ञानमहो सुखं... १अवधू.३२
अहो दु:खोदधौ मग्नो न पश्यामि
प्रतिक्रियाम् गर्भो.६
अहो नानास्मृत्युक्तान्धर्मान् ये
कुर्वंति त इह संसारे विचरन्ति सामर.२७
अहो नु चञ्चलमिदं प्रत्याहृतमपि
स्फुटम् । चित्तमर्थेषु चरति.. अ. पू. ३।५

अहोनु चित्रं यद्योत्थैर्बद्धास्तन्तुभि- र्द्रयः.. अविद्यमाना याऽविद्या तया विश्वं खिलीकृतम् महो.४।१३३
अहोनु चित्रं यत्सत्यं ब्रह्म तद्विस्मृतं नृणाम् ।...माऽस्तु रागानुरञ्जना महो. ४।१३२
अहो पुण्यमहो पुण्यं फलितं... १ अवधू. ३१
अहोप्रपञ्चोऽयमनादिसंसिद्धोभवति सामर.९७
अहो बत महत्पापं भ. गी. १।४५
अहो मद्भक्तानां सङ्कल्प परकाष्ठा सामर.४४
अहो रसमार्गप्रपद्यमानोऽयंजीवसंघ आत्मानं तन्मयतां प्राप्नोति सामर. १०२
अहोरात्रकृतं पापं नाशयति गोपीचं. ४
अहोरात्रचतुष्केन लयभावप्रभावतः, स्पर्शं जानाति योगीन्द्रो... अमन. १।५३
अहोरात्राणिप्रतिष्ठा (मेध्यस्याश्वस्य) बृ.उ. १।१।१
अहोरात्राणिविदधद्विश्वस्य.. ऋक्सं.८।८।४८ [=मं.१०।१९०।२+तै.आ.१०।१।१४ महाना. ६।२
(१)अहोरात्रेणैतौ व्यावर्तेते मैत्रे.६।१
अहोरात्रे वै प्रजापतिः (मा.पा.) प्रश्नो. १।१३
अहोरात्रोवै प्रजापतिस्तस्याहरेवप्राणः प्रश्नो. १।१३
अहो वयमहो वयम् १ अवधू. ३१
अहो शास्त्रमहो शास्त्रम् १ अवधू. ३२
अहो सुखमहो सुखम् १ अवधू.३२
अह्न आपूर्यमाण...षडुदङ्ङेति मासां- स्तान् ...[छां.उ.४।१५।५ + ५।६३।१
अह्न आपूर्यमाणपक्षमापूर्यमाण- पक्षाद्यान् षण्मासानुदङ्ङादित्यएति बृ. उ.६।२।१५
अह्नां सायुज्यं सरूपतां सलोकता- मश्नुते... ३ ऐत. २।१।३
अह्रस्वमदीर्घमस्थूलमनणत्वनलप- मपार... [बृ. उ. ३।८।८+ सुबालो. ३।५
अह्रस्वोऽह्रस्वोऽह्रस्वः(गणेशः) ग. शो. २।३
अह्रस्वमदीर्घमलोहितमस्नेह. बृ. उ. ३।८।८
अंशुधारयइवाणुवातेरितःसंस्फुरति मैत्रा. ६।३५

आ

आकारं पादशो विद्यात्पादामात्रा... आगम.२४
आकाश एव तदोतं प्रोतं च बृह.३।८।४,७
आकाश एव लीयन्ते (भूतानि) त्रि.ता.५।२२
आकाश एव यस्यायतनं श्रोत्रंलोकः.. बृह.३।९।१३
आकाशतत्त्वतः सर्वं ज्ञातव्यं योगमिच्छता वराहो.५।२
आकाशनाभिकं सागरोदरं महीकटि- देशं(गणेशं) दृष्ट्वा स्तुवन्ति ग.शो.४।७
आकाशभावनामच्छां शब्दबीज... महो.५।१४७
आकाशमण्डलं वृत्तं श्रीमन्नारायणो- ऽत्राधिदेवता। नादरूपं भ्रुवोर्मध्ये.. यो.शि.५।१५
आकाशमभिजायत आकाशमुपास्व छां.उ.७।१२।२
आकाशमयस्तेजोमयः(आत्मा-ब्रह्म) बृह.४।४।५
आकाशमवकाशप्रदाने (शरीरस्य) गर्भो.१
आकाशमात्मा (अप्येति मृतस्य) बृह.३।२।१३
आकाशमिन्द्रियेषु (विलीयते) ......
आकाशमिव तिष्ठासेत् ......
आकाशमेकं सम्पूर्णं कुत्रचिन्नैव गच्छति। तद्वत्स्वात्मपरिज्ञानी (ब्रह्मात्मविच्छ्रेष्ठः)कुत्रचिन्नैव गच्छति [रुद्रहृ. ५१+ पा. ब्र. ४०
आकाशमेवभगवो राजन्निति होवाच छान्दो.५।१५।१
आकाशवतो वै स लोकान्प्रकाशवतो- ऽसम्बाधान्.. अभिसिध्यति छां.उ.७।१२।२
आकाशवत्कल्पविदूरगोऽहं कुंडि. १६
आकाशवत्सर्वगतं सुसूक्ष्मं शांडि.२।१।३
आकाशवत्सूक्ष्मशरीर आत्मा पैङ्गलो.४।१२
आकाशशतभागाच्छाज्ञेषु..(चित्) महो. ५।१०१
आकाशशरीरं ब्रह्म तैत्ति. १।६।३
(१) आकाशश्च प्रतिष्ठितः बृ.उ.४।४।१७
आकाशश्चाकाशमात्रा च चक्षुश्च द्रष्टव्यं च श्रोत्रं श्रोतव्यं च.. (आत्मनि संप्रतिष्ठते) प्रश्नो. ४।८
आकाशसदृशोऽस्म्यहं... सर्वातीतोऽस्म्यहंसदा ते.बिं. ३।१०
आकाशस्य च खण्डनम्; प्रथनंच तरङ्गाणामास्था नायुषि युज्यते महो. ३।११
आकाशस्तृप्यत्याकाशे तृप्यति छां.उ.५।२३।२
आकाशस्यनभेदोऽस्ति तद्वज्जीवेषु.. अद्वैतो. ६
आकाशं नोपलिप्यते भ.गी.१३।३२
आकाशं पराकाशं महाकाशं सूर्याकाशं परमाकाशमिति (आकाशानि) पञ्च भवन्ति मं. ब्रा. ४।१

आकाशं प्रत्यस्तं यन्ति (भूतानि) छान्दो. १।९।१
आकाशं प्रयन्त्यभिसंविशन्ति नृ. पू. ३।५
आकाशं बाह्यशून्यत्वादनाकाशं
तु तत्त्वतः । नकिञ्चिद्यदनिर्देश्यं.. महो. २।५
आकाशं ब्रह्मेत्युपास्ते छान्दो.७।१२।२
आकाशं भित्वा मनो भिनत्ति सुबालो. ११।२
(?) आकाशं शून्यं कृत्वा अ. बि.१२
आकाशः परायणम् (भूतानाम्) छान्दो.१।९।१
आकाशः प्रतिष्ठा, प्रज्ञा-प्रियं*
सत्य-मनन्त-आनन्द:-स्थितिः-
इत्येनदुपासीत [बृह.४।१।२, ३,४,५,६,७
आकाशः संहितेऽस्यस्य माक्षव्यो
वेदयांचक्रे ३ऐत.१।१।१
आकाशाचन्द्रमसं, एष सोमो राजा.. छान्दो.५।१०।४
आकाशात्मकमव्यक्तमोङ्कारस्वरभूषितं पञ्चब्र. १४
(?) आकाशात्मानःस्वरीयुः (स्वर्ययुः) कौ.उ.२।१४
आकाशात्मा सर्वकर्मा सर्वकामः
सर्वगन्धः सर्वरसः छांदो.३।१४।२
आकाशादपि सूक्ष्मोऽहं ते. बिं. ३।२९
आकाशादिमयविग्रहम्(पञ्चब्रह्म) पं. ब्र. १५
(?) आकाशादेव जायन्ते (भूतानि) नृ. पू. ३।३
आकाशादेव जातानि जीवन्ति(,,) नृ. पू. ३।३
अकाशाद्योनेः सम्भूतोभार्यायैरेतः.. कौ. उ. १।६
आकाशाद्वायुर्वायोर्ज्योतिर्ज्योतिषआपो
ऽद्भ्यःपृथिवी,एषांभूतानांब्रह्मप्रपद्ये कुंडिको. १४
आकाशाद्वायुसंज्ञस्तु स्पर्शो-
ऽपञ्चीकृतः पुनः कठरु. १७
आकाशाद्वायुं, वायुर्भूत्वाधूमोभवति छांदो.५।१०।५
आकाद्वायुं वायोर्वृष्टिं, वृष्टेःपृथिवीं.. बृह.६।२।१६
आकाशाद्वायुः... [तै.२।१।१+ सुबालो. १।१
+यो.चू.७२+पैङ्गलो. १।३+ नारा.उ.१।५
आकाशाद्वायुः,वायोरग्निः, अग्नेरापः,
अद्भ्यः पृथिवी, पृथिव्याओषधयः,
ओषधीभ्योऽन्नं, अन्नात्पुरुषः तैत्ति. २।१।१
आकाशाद्वायुः, वायोर्ज्योतिः,
ज्योतिष आपः २ सन्न्यासो.१६
आकाशाद्वायुः स्फुरति तद्बीजं वरेण्यं त्रि. ता. १।१४

* अत्रत्याः प्रियादयः पंच शब्दाख्यायङ्कगतपंचवाक्येषु योजनीयाः ।

आकाशाद्वाव भूयोऽस्तीति तन्मे
भगवान्ब्रवीतु छान्दो.७।१२।२
आकाशांशेमहाप्राज्ञधारयेत्तुसदाशिवं जा.द.१०।६
(?)आकाशे...अमृतमयः पुरुषः बृ.उ. २।५।१०
(?)आकाशेचह्रदिप्राज्ञः..देहेप्रतिष्ठितः आगम. २
आकाशे जायते.. आकाशमुपास्व छान्दो.७।१२।१
आकाशे तदोतं च प्रोतं च बृ. उ. ३।८।४
आकाशे तिष्ठति स ह्याकाशस्तंनवेद गोपालो.४
आकाशे तृप्यति यत्किञ्च वायुश्चा-
काशश्चाधितिष्ठतस्तत्तृप्यति छान्दो.५।२३।२
आकाशे धारयेच्चित्तमणिमादिक-
माप्नुयात् यो. शि. ५।५१
आकाशेन प्रतिशृणोति छांदो.७।१२।१
आकाशेन रमते छांदो.७।१२।१
आकाशेन शृणोति छांदो.७।१२।१
आकाशे पुरुषस्तमेवाहमुपासे कौ. उ. ४।६
(?) आकाशेनाह्वयति, आकाशेन
शृणोति... छांदो. ७।१२।१
आकाशे पृथिवी प्रतिष्ठिता तैत्ति. ३।९
आकाशे वै सूर्याचन्द्रमसावुभौविद्यु-
न्नक्षत्राण्यग्निः, आकाशेनाह्वयति.. छांदो.७।१२।१
आकाशे श्येनोवा सुपर्णोवा..श्रांतः बृह.४।३।१९
आकाशे ह्यिदं सर्वं समाप्येत १ ऐत. ३।१।२
आकाशो धूमः (पृथिव्यग्नेः) छांदो. ५।६।१
(अथ)आकाशोऽन्तःकरणमनो-
बुद्धिचित्ताहङ्काराः त्रि. ब्रा.३
आकाशोऽन्नादः तैत्ति.३।९
आकाशो ब्रह्म छां.उ.३।१८।१
आकाशोभूर्जलंवायुरग्निर्ब्रह्मा हरिःशिवः ते. बिं. २।२७
आकाशो वह्निना युक्तः सूर्यता. २।२
आकाशो वाऽन्नमिन्द्रियाण्यन्नादानि सुबालो. १४।१
आकाशो वाव तेजसो भूयान् छांदो.७।१२।१
आकाशो वै नामनामरूपयोर्निर्वहिता छांदो. ८।१४।१
आकाशो वै नामरूपयोः...(मा.पा.) छां.उ.८।१४।१
आकाशो ह वा एषदेवो वायुरग्नि-
रापः.. ते प्रकाश्याभिवदन्ति प्रश्नो. २।२
आकाशो ह्येवैभ्यो ज्यायान् छांदो. १।९।१
आकीटपतङ्गपिपीलकं छां.उ.७।२।१+
[७।७।१+७।८।१+ ७।१०।१
(?)आकीटपतङ्गेभ्यस्तत्तेऽन्नं.. बृ. उ. ६।१।१४

आकुञ्चनेन कुण्डलिन्याः कवाट-
मुद्घाट्य मोक्षद्वारं विभेदयेत् शां.१।७।३७
आकृत्यैवविरा जन्तेमैत्र्यादिगुणवृत्तिभिः महो.४।१९
आकृष्णेनरजसावर्तमानोनिवेशयन्नमृतं
मर्त्यं च [ऋक्सं..१।३।५= मं.१।३५।२+
वा.सं. ३३।४३+तै.सं.३।४।११।२ वनदु. २७
आक्रान्त्समुद्रःप्रथमेविधर्मञ्जनयन्प्रजा: ऋ.मं.९।९७।४०
[अ.वे.१।२५९+तै.आ.१०।१।१६+ महाना. ६।९
आक्षिप्तो भुजदण्डेन यथोच्चलति
कन्दुकः यो.शि. ६।५२
आक्षिप्तो भुजदण्डेन यथा चलति
कन्दुकः यो. चू. २७
आख्याहि मे को भवानुग्ररूपः भ.गी.११।३१
आगच्छ गच्छतिष्ठेति स्वागतं...
सन्माननंच न ब्रूयात् ना.प.४।७,८
आगच्छत्यपराजितमायतनं तं
ब्रह्मतेजः प्रविशति कौ. उ. १।५
आगतं ब्रह्मात्मजं नारदमवलोक्य ना. प. १।१
आगत्य भो विभूतेर्माहात्म्यं ब्रूहीति बृ. जा. १।२
आगमस्याविरोधेन...समाधिः
प्रकीर्तितः अ. ना. १७
आगमापायिनो नित्याः भ. गी. २।१४
आगमो जायते पुरुषोत्तमात् सि. वि. २
आगाव इति मंत्रेण...(भस्म)मंत्रयेत् बृ. जा. ३।३
आगाता ह वै कामानां भवति छांदो.१।१।१४
आङ्गिरसोऽङ्गानां हि रसः बृह. १।३।८
आग्नेयस्तु त्रिमात्रोऽसौ अ. ना. ३१
आग्नेयामेव(इष्टिं)कुर्यात् [ना.प.३।७७+ प. हं. प. २
आग्नेयी प्रथमा मात्रा ना. बिं. ६
आग्रामादग्निमाहृत्यपूर्ववदग्निमाजिघ्रेत् याज्ञव. १
आ च परा च पथिभिश्चरति
स सध्रीची... १ ऐत.१।६।२
(?) आ च पूर्यतेऽप च क्षीयते
(चन्द्रो रात्रिर्वा) [बृ.उ.१।५। १४,१५
आचरत्यात्मनः श्रेयः भ.गी. १६।४०
आचान्तो भूत्वाऽऽत्मेज्यानः
प्राणोऽग्निर्विश्वोऽसीति च
द्वाभ्यामभिध्यायेत् मैत्रा. ६।९

आचारः प्रथमो धर्मः..तस्मादस्मिन्
सदायुक्तः भवसं. ४।१
आचारादीप्सिताः प्रजाः (लभन्ते) भवसं. ४।२
आचाराद्धनमक्षय्यं (लभते) भवसं. ४।२
आचाराल्लभते ह्यायुः भवसं. ४।२
आचारो हंत्यलक्षणम् भवसं. ४।२
आचार्यकुलाद्वेदमधीत्ययथा विधानं.. छां.उ. ८।१५।१
आचार्यदेवो भव तैत्ति. १।११।१
आचार्य महतीं चमूम् भ. गी. १।१३
आचार्यमुपसङ्गम्य भ.गी. १।२
आचार्यवान् पुरुषो वेद, तस्य... छां.उ. ६।१४।२
आचार्यस्तु ते गतिं वक्ता... छां.उ. ४।१४।१
आचार्यस्यसम्मुखं प्रपद्येत [सुदर्श.४+ यज्ञोप.४
आचार्यहा वै त्वमसि छां.उ. ७।१५।२
आचार्यःपूर्वरूपं,अन्तेवास्युत्तररूपम् तैत्ति. १।३।५
आचार्याद्धैवविद्याविदिता साधिष्ठं
प्रापयति छान्दो. ४।९।३
आचार्याय प्रियं धनमाहृत्य
प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेत्सीः तैत्ति. १।११।१
आचार्याः पितरः पुत्राः भ. गी. १।३४
आचार्यान् मातुलान् भ्रातॄन् भ. गी. १।२६
आचार्योपासनं शौचम् भ.गी. १३।१८
(?) आचार्योऽन्तेवासिनमनुशास्ति तैत्ति. १।११।१
आचार्योऽभ्युवादोपकोसला इति छां.उ. ४।४।१
आचार्यो वेदसम्पन्नो विष्णुभक्तो
विमत्सरः [द्वयोप.२+ अद्वयता.८
आचिनोति हि शास्त्रार्थान्...
तस्मादाचार्य उच्यते द्वयोप.४
आजगाम हास्याचार्यः, तमाचार्योऽ.. छान्दो.४।१४।१
आजहारेमाः शूद्रानेनैव मुखेन... छान्दो. ४।२।५
(?) आजानजानां देवानामानन्दाः.. तैत्ति. २।८।१
आजानुकटिपर्यंतमपां स्थानं
प्रकीर्तितम् त्रि.ब्रा. २।१३६
आजानुतः सुवर्णाभं.. शतचन्द्र-
निभाननम् गारुडो. ६
आजानु पादपर्यंतंपृथिवीस्थानमिष्यते त्रि.ब्रा.२।१३५
आ जानोः पायुपर्यंतमपां स्थानं.. १ यो.त. ८७
आजेः सरणं हृदस्य धनुष आयमनं छांदो. १।३।५
(?) आज्यलेपेनाङ्गान्यनुविमृज्य कौ. उ. २।३

आज्यं रुधिरमिव त्यजेत् (यतिः)
[ना. प. ७।१+ सं.सो.२।७९
आज्यं हुत्वा मन्थे सम्पातमवनयेत् छान्दो.६।१।४
आज्ञाचक्रमष्टमं, ब्रह्मनिर्वाणचक्रम्...सौभाग्य.३१
आज्ञाचक्रं च मस्तकम् योगकुं.३।११
आज्ञानामभ्रुवोर्मध्ये द्विदलं.. [यो.शि. १।७५;५।११
आज्ञामयसंशयात्मगुणसङ्कल्पोपन्नः निरालं.२१
आढ्योऽभिजनवानस्मि भ.गी.१३।८
आणवं शाम्भवं शाक्तं ते. बिं. १
(?)आण्डजं जीवजमुद्भिज्जमिति छां.उ. ६।३।१
आण्डी भव जमा मुहुः अरुणो. १
आतपत्रमिव स्तंभशरीरं शिथिलायते अमन.२।८१
आतपत्रंब्रह्मलोकंममोर्ध्वंचरणं स्मृतं गोपालो. २।२७
आतिष्ठोत्तिष्ठ भारत भ.गी.४।४२
आतिथ्यश्राद्धयज्ञेषु..न गच्छे-
योगवित्कचित् ना. प. ६।९
आतुरकालः कथमार्यसम्मतः ना.प. ३।५
आतुरकुटीचकयोर्भूलोकभुर्वर्लोकौ सं.सो.२।५९
आतुरकुटीचकयोर्भूलोकः ना. प. ५।९
आतुरः सर्वकर्मलोपःप्राणस्योत्क्रमण-
कालसंन्यासः सनिमित्तसंन्यासः ना. प. ५।४
आतुरेऽपि क्रमे वापि प्रैषभेदो
न कुत्रचित् ना. प. ३।७
आतुरेऽपि च संन्यासे तत्तन्मंत्र-
पुरस्सरं..संन्यसेत् ना. प. ३।६
आतुरे वा क्रमे वापि तुरीयाश्रम..
अष्टश्राद्धं कुर्यात् ना. प. ४।३८
आतुरो जीवति चेत्क्रमसंन्यासः
कर्तव्यः [ना.प.५।६+ सं. सो. २।५९
आतूनइंद्रक्षुमन्तं [ऋक्सं.मं.८।८१।१० ग. पू. १।६
आतेन यातं मनसो जवीयसा १ ऐत. ३।८।७
आतो ह्ययमात्मा नृसिंहो. २।७
आत्तं वै भूयसा कनीयः १ ऐत. ६।१
आत्मकाममकामं रूपं बृ. उ.४।३।२१
आत्तो वै सशरीरः प्रियाप्रियाभ्यां छांदो.८।१२।१
आत्मकामोऽहमाकाशात् ब्र. वि. ९२
आत्मकाम आप्तकामो निष्कामो
जीर्णकामः ? सुबालो. १३।२
आत्मकृतस्यैनसोऽवयजनमसि
[वा.सं. ८।१३+ तै.आ.१०।५९ महाना. १४।१
१०

आत्मक्रीड आत्मरतिः क्रियावान् मुण्ड. ३।१।४
आत्मक्रीड आत्मरतिरात्मवान्सम-
दर्शनः। बुधोबालकवत्क्रीडेत् ना. प. ५।३७
आत्मा गुहायां निहितोऽस्यजन्तोः श्वेताश्व.३।२०
आत्मज्योतिरहंशुक्रःसर्वज्योतिरसावदों महावा. ५
आत्मज्योतिरहं शुक्रः सर्वज्योती
रसोऽहमोम् वनदु. १२२
आत्मज्योती रसोऽस्म्यहम् ते. बिं.३।१०
आत्मज्ञं ह्यर्चयेद्भूतिकामः मुण्ड. ३।१।१०
आत्मज्ञानं विना योगी ब्रह्मचारी
कथं भवेत् ....
आत्मज्ञो ह्यात्ममात्रदृक् (जीवन्मुक्तः)
[अ. पू. ४।३+ वराहो. ३।२७
आत्मत आकाशः छां.७।२६।१
आत्मत आपः, आत्मत आविर्भाव.. छांदो.७।२६।१
आत्मत आविर्भावतिरोभावौ छांदो.७।२६।२
आत्मत एष प्राणो जायते(मा. पा.) प्रश्नो. २।३
आत्मत एवेदं सर्वम् छांदो.७।२६।१
आत्मतश्चित्तमात्मतः सङ्कल्पः छांदो. ७।२६।१
आत्मतस्तेज आत्मत आपः छांदो. ७।२६।१
आत्मतः कर्माणि छांदो.७।२६।१
आत्मतः प्राण आत्मत आशा छांदो. ७।२६।१
आत्मतः सङ्कल्पः छांदो. ७।२६।१
आत्मतः स्मर आत्मत आकाशः छांदो.७।२६।१
आत्मतापरते त्यक्त्वा निर्विभागो
जगत्स्थितौ सं. सो. २।५०
आत्मतीर्थं महातीर्थमन्यत्तीर्थं
निरर्थकम् जा. द. ४।५३
आत्मतीर्थं समुत्सृज्य बहिस्तीर्थानि
यो व्रजेत्। करस्थं स महारत्नं
त्यक्त्वा काचं विमार्गते जा. द.४।५०
आत्मतुल्यसुवर्णादिदानैः..
तदप्याशु विनाशयेत् रामो. ५।२२
आत्मतृप्तश्च मानवः भ.गी. ३।१७
आत्मतो ध्यानमात्मनश्चित्तम् छांदो.७।२६।१
आत्मतो नामात्मतोमन्त्राःआत्मतः.. छांदो.७।२६।१
आत्मतो नान्यथाप्राप्तिः नृसिंहो. ९।३
आत्मतोऽन्नमात्मतो बलं छांदो.७।२६।१
आत्मतो मन आत्मतो वाक् छांदो.७।२६।१

आत्मतो मन्त्रा आत्मतः कर्माणि छांदो. ७।२६।१

आत्मतो वागात्मतो नाम छांदो. ७।२६।१

आत्मतो विज्ञानमात्मतो ध्यानम् छांदो. ७।२६।

आत्मध्यानयुक्तेनानेन विधिना यो चू. १०७

आत्मन आकाशः सम्भूतः [तै. २।१।१+ यो. चू. ७२

(तस्मात्) आत्मन एव त्रैविध्यं
 सर्वत्र योनित्वम् नृसिंहो. ९।४

आत्मन एवास्य तत्कृतं भवति २ ऐत. २।४।३

आत्मन एष प्राणो जायते प्रश्नो. ३।३

(एवमेव) आत्मनः सर्वे प्राणाः
 सर्वे लोकाः... व्युच्चरन्ति बृह. २।१।२०

आत्मनः सूक्ष्मशरीरमिदमेवोच्यते ग. शो. ४।४

आत्मनस्तावेतावर्काश्वमेधौ..(मा.पा.) बृ. उ. १।-।७

आत्मनस्तु कामाय क्षत्रं प्रियं भवति+ बृह. २।४।५

आत्मनस्तु कामाय जाया प्रिया भवति+ बृह. २।४।५

आत्मनस्तु कामाय देवाः प्रिया भवन्ति+ बृह. २।४।५

आत्मनस्तु कामाय पतिः प्रियो भवति+ बृह. २।४।५

आत्मनस्तु कामाय पशवः प्रिया भवन्ति+ बृह. ४।५।६

आत्मनस्तु कामाय पुत्राः प्रिया भवन्ति+ बृह. २।४।५

आत्मनस्तु कामाय भूतानि
 प्रियाणि भवन्ति+ बृह. २।४।५

आत्मनस्तु कामाय लोकाः प्रिया भवन्ति+ बृह. २।४।५

आत्मनस्तु कामाय वित्तं प्रियं भवति+ बृह. २।४।५+

आत्मनस्तु कामाय वेदाः प्रिया भवन्ति बृह. ४।५।६

आत्मनस्तु कामाय सर्वं प्रियं भवति+ बृ. उ. २।४।५

आत्मना चेज्जीवति प्रधिनागादित्याहुः बृह. १।५।१५

आत्मना जायते प्राणो मनः
 सर्वेन्द्रियाणि च अनु. सा. ३

आत्मनाऽऽत्मनि तृप्तोऽस्मि
 स्वरूपोऽस्म्यहमव्ययः ते. बिं. ३।२८

आत्मनाऽऽत्मनि सन्तृप्तो
 नाविद्यामनुधावति [अ. पू. ४।३+ वराहो. ३।२१

आत्मनाऽऽत्मानमभिसम्बभूव महाना. २।७

(?) आत्मना परास्य द्विषन्भ्रातृव्यो
 भवति...(मा.पा.) बृ. उ. १।३।७

आत्मनाऽऽत्मानमुद्धरेत् ना. प ५।४०

आत्मना पिहिता गुहा इतिहा. १७

\+ वाक्यांते + इति चिह्नांकितानि वाक्यानि तस्यामेवो-निषदि अध्याये ४ ब्राह्मणे ५ सन्ति ।

आत्मना विन्दते वीर्यं विद्यया..ऽमृतं केनो. २।४

आत्मना हि कर्म करोति बृह. १।४।१७

(?) आत्मनि पुरुष एत...ब्रह्मोपास्ते बृह. २।१।१२

आत्मनि खल्वरे दृष्टे श्रुते मते
 विज्ञात इदं सर्वं विदितं... बृह. ४।५।६

आत्मनि ब्रह्मण्येवानुष्टुभं जानीयात् नृ. पू. १।७

आत्मनिष्ठं कर्तृगुणं वास्तवं वा
 द्वितीयकः (भ्रमः) अ. पू. १।१४

आत्मनि सर्वेन्द्रियाणि सम्प्रतिष्ठाप्य छां. उ. ८।१५।१

आत्मनि हैवास्य तद्वैश्वानरे हुतं स्यात् छां. उ. ५।२४।४

(अथ) आत्मनेऽन्नाद्यमागायत् बृह. १।३।१७

आत्मने वा यजमानाय वा बृह. १।३।२८

आत्मने सर्वदेवाय..भूताय..मन्यते ग. शो. २।१

आत्मनेऽस्तु नमो मह्यं सं. सो. २।३१

आत्मनैवसहायेन सुखार्थी विचरेदिह ना. प. ३।४४

आत्मनैवात्मानं परमं ब्रह्म पश्यति नृसिंहो. ६।३

आत्मनवात्मनो विप्र धारये-
 दात्मनाऽऽत्मनि दुर्वासो. २।७

आत्मनोऽन्यज्जगन्नास्ति ते. बिं. ६।४५

आत्मनोऽन्यत्सुखं न च ते. बिं. ६।४९

आत्मनोऽन्यन्न किञ्चन [ते. बिं. ४।६१+६।४०

आत्मनोऽन्यन्नहि कश्चित् अ. पू. ५।५९

आत्मनोऽन्यन्नहि क्वापि [ते. बिं. ६।४६,४७

आत्मनोऽन्या गतिर्नास्ति ते. बिं. ६।४५

आत्मनो महिमा बभूव ब्रह्मो. १

(?) आत्मनो यद्यत्कामयते तत्तत्सृजते बृ. उ. १।४।१५

आत्मनो वा अरे दर्शनेन श्रवणेन
 मत्या विज्ञानेनेदं सर्वं विदितम् बृ. उ. २।४।५

आत्मनो वैश्वानरस्य मूर्धैव सुतेजाः छां. उ. ५।१८।२

(?) आत्मन्नेव सायुज्यमेति मैत्रे. ४।१

आत्मन्नेव सायुज्यमुपैति मैत्रा. ४।१४

आत्मन्यग्नीन्समारोप्य सोऽग्नि-
 होत्री महायतिः सं. सो. २।१००

आत्मन्यतीते सर्वस्मात्सर्वरूपे...
 को बन्धः अ. पू. २।२५

आत्मन्यनात्मभावेन व्यवहार...
 यत्तदस्तेयमित्युक्तं जा. द. १।१२

आत्मन्यात्मानमीडया व्याधिस्थो-
 ऽपि विमुच्यते शांडि. १।७।४८

आत्मन्येव च सन्तुष्टः	भ.गी.३।१७
आत्मन्येव धत्ते	मैत्रा. ६।३४
आत्मन्येव नृसिंहदेवेपरेब्रह्मणिवर्तते	नृसिंहो.२।३
आत्मन्येव पश्यमानो गुहाविह- रणमेव निश्चयेन ज्ञात्वा..	मं.ब्रा.३।१
आत्मन्येव वशं नयेत्	भ.गी. ६।२६
आत्मन्येवात्मना तुष्टः	भ.गी. २।५५
आत्मन्येवात्मना लीनो... लभते महिमासिद्धिं	अमन.१।६५
आत्मन्येवात्मना व्योम्नि यथा सरसि मारुतः	महो.५।११९
आत्मन्येवात्मानं पश्यति (पश्यन्-पाठः) [बृह.४।२।२३+	सुबा.९।१४
आत्मन्येवात्मानं बिभर्ति	२ पत.४ १
आत्मन्येवावतिष्ठते	भ.गी. ६।१८
आत्मन्येवास्य शान्तात्मा मूकान्ध- बधिरोपमः	अ.पू.५।११५
आत्मन्विनी ह्यस्य प्रजा भवति	बृह.२।१।१३
आत्मन्न्यनेन स्यामिति	बृह.१।२।७
आत्मप्रकाशरूपोऽस्मिह्यात्मज्योती..	ते.बिं. ३।१०
(?)आत्मप्रकाशं शून्यं जानन्तः	नृसिंहो.६।३
आत्मप्रबोधोपनिषन्मुहूर्तमुपासित्वा न स पुनरावर्तते	आ.प्र.३२
आत्मबुद्धिप्रसादजम्	भ.गी.१८।३७
आत्मप्रयत्नसापेक्षाविशिष्टा मनो- गतिः, तस्या ब्रह्मणि संयोगो योग इत्युच्यते बुधैः	भवसं. ३।१२
आत्मभावंचचिन्मात्रमखण्डैकरसंविदुः	ते.बिं.२।२६
आत्मभावा मण्डलमुपासते	सामर.७५
आत्मभूतस्य त्वमात्माऽसि	कौ.ड. १।६
आत्ममन्त्रसदाभ्यासात् परतत्त्वं प्रकाशते	यो.शि. २।१८
आत्ममात्रेण यस्तिष्ठेत्सजीवन्मुक्तः..	ते.बिं.४।१
आत्ममायारतं देवमवधूतं दिगम्बरम्	शाण्डि.३।२।२
आत्मक्रीड आत्ममिथुन आत्मानन्दः	छांदो. ७।२५।२
आत्मक्रीडआत्मरतिःक्रियावान्(आत्मा)	छांदो. ७।२५।२
आत्ममिथुन आत्मानन्दः स स्वराट्	छांदो.७।२५।२
आत्मरतय आत्मक्रीडा आत्ममिथुना आत्मानन्दाः प्रणवमेव परं-- ब्रह्मात्मप्रकाशं शून्यं जानन्त- स्तत्रैव परिसमाप्ताः	नृसिंहो. ६।३
आत्मरतिरात्मक्रीड आत्ममिथुनः	छान्दो.७।२५।२
आत्मरूपमिदं सर्वमात्मनोऽन्यन्न किञ्चन। सर्वमात्मा	ते.बिं.४।६१
आत्मरूपं समालोक्य ज्ञानरूपं..	ब्र.वि. ७७
आत्मरूपः शिवः शुद्धः (पाठः)	२ आत्मो.२
आत्मवत्सर्वभूतानि परद्रव्याणि लोष्टवत्। स्वभावादेव,नभया- द्यः पश्यति, स पश्यति	अ.पू. १।३८
आत्मवत्सर्वभूतानि पश्यन् भिक्षुश्चरेन्महीम्	ना.प.४।२२
आत्मवन्तं न कर्माणि	भ.गी. ४ ४१
आत्मवश्यैर्विधेयात्मा	भ.गी. २।६४
(अथ)आत्मविदुच्छिष्य ब्रह्मणे प्रायच्छत्तत्रानन्दी...	मैत्रा. ६।३३
आत्मविदो ज्ञानिन उत्पद्यन्तेलीयन्ते	सामर. २२
आत्मविद्यातपोमूलंतद्ब्रह्मोपनिषत्परं	श्वेता. १ १६
[ना.प.९।१२+	ब्रह्मो.२३
आत्मविद्या मया लब्धा	सास्व ३५
आत्मविन्मोक्षमः त्रैस्वधामवीर्यैः..	ना.प. ३।७७
आत्मतत्त्वेनतदासर्वं नेतरत्तत्र चाण्वपि	यो.शि.४।९
आत्मश्राद्धं विरजाहोमं कृत्वा	प.हं.प.५
आत्मश्राद्धे आत्मपितृ-पितामहान् (अर्चयेत्)	ना.प. ४।३९
आत्मसत्यात्मसाक्षी सतां धर्मः प्रतापवान् (मा. पा.)	छां.उ. ६।१७
आत्मसत्यानुबोधेननसङ्कल्पयतेयदा	अद्वैतो. ३२
आत्मसन्निधौ नित्यत्वेन प्रतीयमान आत्मोपाधिर्यस्तल्लिङ्गशरीरं हृद्ग्रन्थिरित्युच्यते	सर्वसारो. ५
आत्मसम्भाविताः स्तब्धाः	भ.गी.१६।१७
(अथ खलु) आत्मसम्मितमतिमृत्यु सप्तविधꣳसामोपासीत	छांदो.२।१०।१
आत्मसम्मितमाहारमाहरेदात्मवान्यतिः	सं.सो. २।५९
आत्मसंयमयोगाग्नौ	भ.गी. ४।२७
आत्मसंज्ञः शिवः शुद्ध एक एवाद्वयः सदा	२ आत्मो. १

आत्मसंस्थं सदा ज्ञानं	अद्वैतो. ३८
आत्मसंस्थं मनः कृत्वा	भ. गी. ६।२५
आत्मसिद्धमिति होवाच मूर्तैनमिति	नृसिंहो. ९।१०
आत्मस्थं प्रभुं...नापश्यन्	मैत्रा. ३।२
आत्मस्वरूपविज्ञानादज्ञानस्य परिक्षयः। क्षीणे ज्ञाने..	जा. द. ६।५०
आत्मा एकः सन्नेतत्त्रयं	छान्दो. १।६।३
आत्मा गुहायां निहितोऽस्य जन्तोः [पारमा.९।३+ ना. उ. ता. १।३+	महाना. ८।१
आत्मा चैव न बध्यते (इन्द्रियैः)	यो. चू. ८४
आत्मात्मकानीत्यात्मा ह्येषामुद्गन्ता नियन्ता वा	मैत्रा. ६।३१
आत्मा दक्षिणत आत्मोत्तरतः	छांदो. ७।२९।२
आत्मा देवता वेदयेति(?)	ब्रह्मो. १
आत्मा देवानां जनिता प्रजानां हिरण्यदंष्ट्रो...	छान्दो. ४।३।७
आत्मानन्दस्वरूपोऽहं सत्यानन्दो...	ते. बिं. ३।९
आत्मानन्दे मग्ना अभक्तास्न स्पृशन्ति	सामर. ७५
आत्मानन्दे मग्ना आत्मभावा भवन्ति	सामर. ७५
आत्मानमक्षरं ब्रह्म विद्धि ज्ञानात..	जा. द. १।२५
(?)आत्मानमनुविद्य व्रजतो यत्तरः..	छां.उ.८।८।४
आत्मानमञ्जसा वेद्मि	आ.प्र. २२
आत्मानमखण्डमण्डलाकारमावृत्य सकलब्रह्माण्डमण्डलं स्वप्रकाशं ध्यायेत्	भावनो.१
(?)आत्मानमन्तकाले सर्व प्राणा अभिसमायांति	बृ.उ. ४।३।३८
आत्मानमन्तरात्मानं वा..ऽर्चयेत्	रामपू.५।९
आत्मानमनन्यं ध्यायन् तदूर्ध्वबाहुर्विमुक्तमार्गो भवेत्	कठरु. ४
आत्मानमेन्तत उपसृत्य स्तुवीत	छां.१।३।१२
आत्मानमन्विच्छेत् [जाबालो.६+	ना.प.३।८७
आत्मानमपि दृष्ट्वाऽहमनात्मानं त्यजाम्यहम्	आ.प्र.१८
आत्मानमरणिं कृत्वा प्रणवं... [ब्रह्मो.१८+ कैवल्यो.११+	ध्या.बि.२२
आत्मानमरणिं कृत्वा....पाशं दहति मानवः	सदानं.१५

आत्मानमात्मना साक्षाद्ब्रह्म बुद्ध्वा...	ब्र.वि.२९
आत्मानमादाय...ब्रह्मणैकीकुर्यात्	नृसिंहो.४।१
(?)आत्मानमुपसंहरति	बृ.उ.४।४।३
आत्मानमेव, तद्भावयति	२ ऐत.४।३
आत्मानमेव प्रियमुपासीत	बृह.१।४।८
आत्मानमेव लोकमुपासीत	बृह.१।४।१५
आत्मानमेव वीक्षस्व	ते.बिं.४।८०
आत्मानमेवं ध्यात्वाऽनपेक्षमाणं..	कठश्रु....
(?)आत्मानमेवावेत्	बृ.उ.१।४।१०
आत्मानमेवेमं वैश्वानरं सम्प्रत्यध्येषि तमेव नो ब्रूहि	छान्दो.५।११।६
आत्मानमेवेहमह्ययन्नात्मानं परिचरन्नुभौ लोकाववाप्नोति	छान्दो.८।८।४
आत्मानमेवेहमह्य्यन्नात्मानं (मा.पा.)	छान्दो.८।८।४
(?)आत्मानमोमितिब्रह्मणैकीकृत्य	नृसिंहो. १।२
आत्मानं केवलं तु यः	भ. गी.१८।१६
आत्मानं क्रियाभिः सुगुप्तं करोति	कठश्रु. ३
आत्मानं गोपालमिति भावयेत्	गोपालो. २।४
आत्मानं चेद्विजानीयादयमस्मीति पूरुषः [शाट्या.२२+	बृह. ४।४।१२
(?)आत्मानं द्वेधापातयत्	बृह. १।४।३
आत्मानं द्विधाऽकरोदर्धेन स्त्री अर्धेन पुरुषः	सुबालो. २।२
आत्मानं नयति परं सन्धय	ब्रह्मो. १
(?) आत्मानं परमात्मानं...	रुद्रहृ. १२
आत्मानं परमेश्वर	भ. गी. ११।३
आत्मानं प्रार्थयते	आश्रमो.१
आत्मानं..मकारेण ब्रह्मणानुसन्दध्यात्	नृसिंहो. ७४
आत्मानं मत्परायणः	भ. गी. ९।३४
आत्मानं मोक्षयते	आश्रमो. ४
आत्मानं युञ्जतेति	मैत्रा. ६।३
आत्मानं रथिनं विद्धि [कठो. ३।३+पैङ्गलो. ४।१+	भवसं. २।१०
आत्मानं रहसि स्थितः	भ. गी. ६।१०
आत्मानं वा प्रविभज्य कथं प्रातिष्ठते	प्रश्नो. ३।१
आत्मानं सच्चिदानन्दं [अ.पू.५।७५+	जा. द. ९।५
आत्मानं सच्चिदानन्दं ब्रह्म भावयेत्	व. सू. ५
आत्मानं सततं ज्ञात्वा	ना. बिं. २१
आत्मानात्मभावो भवेत्	सामर. ७५

आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुः भ.गी. ६।५
आत्मैवाधस्तादात्मोपरिष्टात् छांदो.७।२५।२
आत्मैवास्य कर्मात्मनाहि कर्म करोति बृ.उ.१।४।१७
आत्मैवास्य ज्योतिर्भवति बृह. ४।३।६
आत्मैवास्य षोडशी कला बृह. १।५।१५
आत्मैवाहमसन्नाहं ते.बिं. ६।६२
आत्मैवाहं परं सत्यं ते.बिं.६।५८
आत्मैवेदमग्र आसीत् (एक एव).. बृह. १।४।१,१७
आत्मैवेदं सर्वं..स वा एष एवं पश्यन् छां.उ.७।२५।२
आत्मैवेह महय्य आत्मा परिचर्यः छां.उ.८।८।४
आत्मोत्तरतः, आत्मैवेदं सर्वम् छां.उ. ७।२५।२
आत्मोपरिष्टादात्मा पश्चात् छां.उ.७।२५।२
आत्मौपम्येन सर्वत्र भ.गी.६ ३२
आ.दर्वणस्य शाखाः स्युः.. मुक्ति.१।१३
आथर्वणायाश्विनौ दधीचेऽश्व्यं
शिरः प्रत्यैरयतम् बृह. २।५।१७
आदरेण यथा स्तौति धनवन्तं
धनेच्छया । तथा चेद्विश्व-
कर्तारं को न मुच्येत बन्धनात् वराहो.३।१३
(अथापि) आदर्शे वोदके वा जिह्म-
शिरसं...ऽऽत्मानं पश्येत् ३ऐत.२।४।५
(?)आदर्शे पुरुष एतमेवाहंब्रह्मोपासे बृ.उ.२।१।९
आदातव्यमेवाप्येति य आदातव्य-
मेवास्तमेति [सुबालो.९।७+ बृह.२।१ ९
आदानादादित्यः मैत्रा.६।७
आदायात्मानं परिपतन्ति छां. उ. २।२।४
आदावग्निमण्डलं,तदुपरि सूर्यमंडलं मं.ब्रा. २।२
आदावन्तेचमध्ये च जनो यस्मिन्न
विद्यते । येनेदं सततं व्याप्तं
स देशो विजनः स्मृतः ते.बिं. १।२३
आदावन्तेचमध्येचभासतेनान्यहेतुना पं.ब्र. १८
आदावन्ते च यन्नास्ति वर्तमाने-
ऽपि तत्तथा [वैतथ्यो. ६+ अ. शां. ३१
आदावन्ते च संशान्तस्वरूपं..यत् अ. पू. २।३९
आदावेव पैप्पलादेन सहोक्तमिति बृ. जा. १।४
आदिकलापुटितां श्रीकलां
श्रीकलापुटितां... षोढोप. ३
आदिक्षान्तमूर्तिः सावधानभावा अ. मा. २

आदित्यत्नस्य रेतसः...उद्धयन्त-
मसस्परि [छांदो.१।१७।७+ वा.सं.२०।२१
[ऋ.मं.१।५०।१०+तै.सं.४।१।७+ अ.वे.७।५३।७
आदित्प्रत्नस्य रेतस इत्येका ३ ऐत.२।४।४
आदित्य इति होवाच छांदो.१।११।७
आदित्य उत्तररूपम्, आपः सन्धिः तै.उ.१।३।२
(अथ) आदित्य उद्यन्यत्प्राचीं
दिशं प्रविशति प्रश्नो. १।६
आदित्य उद्गीथः, नक्षत्राणि प्रतीहारः छांदो.२।२०।१
आदित्य ऊकारो निहव एकारः छांदो.१।१३।२
आदित्य एव सविता, द्यौः सावित्री सावित्र्यु. ६
(?)आदित्य एवोत्, वायुर्गीः छां. उ. १।३।७
आदित्यजयाज्जयो भवति छांदो.२।१०।६
आदित्यज्योतिः सम्राडिति होवाच बृह. ४।३.२
आदित्यदेवत इति स आदित्यः बृह. ३।९.२०
आदित्यमण्डलं दिव्यं रश्मिज्वाला-
समाकुलम् । तस्य मध्यगतो
वह्निः प्रज्वालेत्... यो शि. ५
आदित्यमभिजयते प्रश्नो. १०
आदित्यमथ वैश्वदेवं लोकद्वार.. छां.२।२४।१३
(?) आदित्यमुदीक्षमाण ऊर्ध्व-
बाहुस्तिष्ठन् मैत्रा.१।२
आदित्यमेव भगवो राजन्निति होवाच छांदो.५।१३।१
आदित्यमेवाप्येति य आदित्य-
मेवास्तमेति सुबालो. ९।२
आदित्यलोकेषु गार्गीति
(ओताश्च प्रोताश्च) बृह.३।६।१
आदित्यवद्भास्यविलक्षणोऽहम् कुण्डिको.१६
(?)आदित्यवर्णमूर्जस्वन्तं ब्रह्म मैत्रा. ६।२४
आदित्यवर्णज्योतिस्तमसःपरिविभाति त्रि.म.ना. ४।३
आदित्यवर्णं तमसः परस्तात् भ.गी.८।९+
[श्वे.उ.३।८+चित्यु.१३।१+ त्रि.म.ना.४।३
आदित्यवर्णं तमसस्तु पारे महावा.३+
[पारमा.७।५+ चित्त्यु १२।७
आदित्यवर्णे इमे मणिकुण्डले इतिहा.८५
आदित्यवर्णेतपसोऽधिजातोवनस्पति-
स्तव वृक्षोऽथ बिल्वः, तस्य
फलानि... [ऋ.खि. ५।८७।१० श्री.सू.६

'आदित्यवर्णे तपसः' इति हरिद्रां श्रीफले धारयेत् नारदो.१
आदित्यश्चक्षुर्भूत्वाऽक्षिणी प्राविशत् २ऐत.२।४
आदित्यसन्निधौलोकश्चेष्टतेस्वयमेवतु तथामत्सन्निधावेवसमस्तंचेष्टते.. वराहो.३।१४
आदित्यस्तत्राधिदैवतम् सुबालो.५।१
आदित्यस्य सायुज्यं गच्छति महाना.१८।१
आदित्यस्य मध्य इवेदर्याक्षण्यग्नौ चैवमुखेतत्... मैत्रा.६।३५
आदित्यस्य रश्मय उभौ लोकौ गच्छन्ति... छां.उ.८।६।२
आदित्यस्यावृतमन्वावर्तयति कौ.उ.२।८
आदित्यस्यावृतमन्वावर्तन्ते कौ.उ.२।९
आदित्यं तृतीयं..अग्निं तृतीयं..(मा.पा.) बृ.उ १।२।३
आदित्यं तृतीयं वायुं तृतीयं बृह.१।२।३
(?)आदित्यं ब्रह्मेत्युपास्ते छां.उ. ३।१९।४
आदित्यं भास्करं भानुं रविं सूर्यं दिवाकरम् वनदु.१२३
आदित्यं सप्तविधं सामोपास्ते छां.उ.२।९।८
आदित्यः प्रतिहारः छां.उ. २।१।१
आदित्यः साम छान्दो.१।६।३
आदित्यः प्रस्तावः छां.उ.२।२।२
(?)आदित्यः सर्वेषां भूतानां मधु बृ.उ.२।५।५
आदित्याच्चन्द्रमसम् छान्दो.४।१५।५
आदित्याज्जायतेवृष्टिर्वृष्टेरन्नंततःप्रजाः मैत्रा.६।३७
आदित्याज्ज्योतिर्जायते सूर्यो.४
आदित्या दक्षिणाभिः चित्त्यु.८।२
आदित्यादापो जायन्ते सूर्यो.४
आदित्याद्देवा जायन्ते सूर्यो.४
आदित्याद्भूमिर्जायते सूर्यो.४
आदित्याद्वायुर्जायते सूर्यो.४
आदित्याद्वेदा जायन्ते सूर्यो.४
आदित्याद्वैद्युतम् (आदित्य एति) बृह.६।२।१५
आदित्याद्व्योम दिशो जायंते सूर्यो.४
आदित्यानामहं विष्णुः भ.गी.१०।२१
आदित्यानामेव तावदाधिपत्यं स्वाराज्यं पर्येता छान्दो.३।८।४
आदित्यानामेवैको भूत्वा छान्दो.३।८।३
आदित्यानां च विश्वेषां च देवानां तृतीयसवनम् छांदो. २।२४।१
आदित्यानां विश्वेषां देवानां च... (मा. पा.)
आदित्याय विद्महे सहस्रकिरणाय धीमहि। तन्नःसूर्य...[म.ना.३।१०+ सूर्यो. ७
आदित्यानीमानि शुक्लानि यजूंषि बृह. ६।५।३
आदित्यास्तस्मान्मा मुख्यतस्त्यतें... सह्रै. ३
आदित्या रुद्रा मरुतो वसवोऽश्विना- वृचो यजूंषि सामानि मन्त्रोऽग्नि- राज्याहुतिर्नारायणः सुबालो. ६।१
आदित्ये तृप्यति द्यौस्तृप्यति छांदो.५।१९।२
(?) आदित्ये तेजोमयोऽमृतमयःपुरुषः बृह.२।५।५
आदित्येन वाव सर्वे लोका महीयन्ते तै.स.१।५.२
आदित्येन सह सावित्री स्तौति, स्तुवति..प्रातः प्रसुवति सन्ध्यो. २१
आदित्येनैवायं ज्योतिषाऽऽस्ते पल्ययते कर्म कुरुते विपल्येतीत्येवमेवैतत् बृ.ह. ४।३।२
आदित्ये पुनः पक्वं कन्यादि सुबालो.१२।१
(?)आदित्ये पुरुष एतमेवाहंब्रह्मोपासे बृ.उ. २।१।२
आदित्यैरिन्द्रः सगणो मरुद्भिः [ऋ. मं. १०।१५७।३+ अरुणो. १ अथर्व.२०।६३।२
आदित्यैरिंद्रः सह सीषधातु अरुणो. १
आदित्यैस्ताम्रं मौक्तिकं देवतैस्तैः (लिङ्गं पूजितम्) सि. शि. २३
आदित्योऽग्निश्च दुर्गिश्च क्रमेण.. महाना. ६।१२
आदित्योऽज्योतिः प्रकाशं करोति १ऐत. १।७।४
आदित्यो नव होता चित्त्यु. ७।४
आदित्योऽन्तःकरणमनोबुद्धि- चित्ताहङ्काराः सूर्यो. ९
आदित्यो ब्रह्मेत्यादेशस्तस्योप- व्याख्यानम् छांदो.३।१९।१
आदित्यो ब्रह्मेत्येके मैत्रा. ६।१६
आदित्यो वा उद्गीथोऽसौ खल्वादित्यो ब्रह्म शौनको. ४।१
आदित्यो वा एष एतन्मण्डलं तपति [महाना. १०।१+ राधोप.२।२+ सूर्यो. ५
आदित्यो वै तेज ओजो बलम् महाना. १७।२
आदित्यो वै भर्गश्चन्द्रमा वै भर्गः सावित्र्यु.१०
आदित्यो वै वचनादानागमन- विसर्गानन्दाः सूर्यो.६
आदित्यो वै वाक्पाणिपादपायूपस्थाः सूर्यो.५

आदित्यो वै श्रोत्रत्वक्चक्षूरसनघ्राणाः सूर्यो.५
आदित्यो वै शब्दस्पर्शरूपरसगन्धाः सूर्यो.६
आदित्यो वै व्यानः समानो-
  दानोऽपानः प्राणः सूर्यो.५
आदित्यो वै सावित्री, आदित्येनसह.. सन्ध्यो.२१
आदित्यो ह वै प्राणो रयिरेव चन्द्रमाः प्रश्नो.१।५
आदित्यो ह वै बाह्यः प्राण उदयति प्रश्नो.३।८
आदिदेवमजं विभुम् भ.गी.१०।१२
आदिबुद्धाः प्रकृत्यैव सर्वे धर्माः... अ.शां.९२
आदिब्रह्मस्वसंवित् निर्वाणो.३
आदिमध्यान्तवर्जितः (आत्मा) ते.बिं.४।७६
आदिमध्यान्तशून्यं कैवल्यं..शान्तं त्रि.म.ना.७।७
आदिमध्यान्तशून्यं ब्रह्म त्रि.म.ना.१।३
आदिमध्यान्तहीनोस्मिमहाकाशसदृशः ते.बिं.३।१०
आदिमध्यान्तहीनोऽहमाकाशसदृशः.. ब्र.वि.९१
आदिमध्यावसानेषुदुःखंसर्वमिदंयतः अक्ष्युप.५०
आदिरन्तश्च चिन्मात्रं गुरुशिष्यादि
  चिन्मयं...अदृश्यं ते.बिं.२।३१
आदिरिति द्व्यक्षरं प्रतिहार इति
  चतुरक्षरं, तत इहैतत्समम् छान्दो.२।१०।२
आदिर्न विद्यते यस्य तस्य ह्यादि-
  र्न विद्यते अ.शां.२३
आदिशक्तिरमा चैषा... अमन.२।११
आदिशक्त्या भूर्भुवस्त्रीणि स्वर्गभू-
  पातालानि... त्रि.ना.१।१
आदिशान्ता ह्यनुत्पन्नाः प्रकृत्यैव... अ.शां.९३
आदिश्च भवति य एवं वेद माण्डू.९+
आदिः स संयोगनिमित्तहेतुः श्वेता.६।५
आदिसामान्यमुत्कटम् आगमो.१।१९
आदेश आत्मा, अथर्वाङ्गिरसःपुच्छम् तैत्ति. २।३
आदेहमध्यकटयन्तमग्निस्थान-
  मुदाहृतम् त्रि.ब्रा. २।१३८
आदौजलधिजीमूतभरीनिर्झरसम्भवः।
  मध्ये मर्दलशब्दाभः (सिद्धयोगे
  श्रूयमाणो नादः) ना. बिं. ३४
आदौ तारकवद्दृश्यते
  (ब्रह्मसाक्षात्कारचिह्नं) मं. ब्रा. २।३
आदौ पुरुषोत्तमस्य...लीला भवन्ति सामर. ५

आदौ बुद्धास्तथा मुक्ताः अ. शां. ९८
आदौ रोगाःप्रणश्यन्तिपश्चाज्जाड्यं
  शरीरजम्। ततः समरसोभूत्वा.. यो.शि.१।४६
आदौ विनायकं सम्पूज्य स्वेष्ट-
  देवतां नत्वा शाण्डि.१।४।२
आदौवेदादिमुच्चार्य (मंत्रोद्धारः) द. मू. ५
आदौ शमदमप्रायैर्गुणैः शिष्यं
  विशोधयेत्। पश्चात्सर्वमिदं
  ब्रह्म शुद्धस्त्वमिति बोधयेत् महो. ४।४
आद्यत्रयं ब्रह्मरूपं (अस्तिभाति-
  प्रियात्मकं) सरस्व. ४८
आद्यन्तवन्तः कौन्तेय भ. गी. ५।२२
आद्यन्तशून्याः कवयः पुराणाः वनदु. २३
आद्यन्ताभाववानहम् ते. बिं. ३।२९
आद्यं वाग्भवं द्वितीयं कामराजं...
  क्रमेण स्मरेत् कामराज. १
आद्यं पुरुषमीशानं पुरुहूतं पुरुष्टुतं विष्णुहृ. १।७
आद्यानि चत्वारि पदानि परब्रह्म-
  विकासीनि त्रि. ता. १।४
आद्या माया भवेच्छार्ङ्गं पद्मं
  विश्वं करे स्थितम् गोपालो.२।३१
आद्याविद्यागदावेद्यासर्वदामेकरेस्थिता गोपालो. ३।२
आद्या व्यक्ताद्वादशमूर्तयःसर्वेषुलोकेषु
  सर्वेषु देवेषु..तिष्ठन्तीति गोपालो. ३।२
आद्यो रा तत्पदार्थः स्यान्मकार-
  स्त्वम्पदार्थवान् रामर. ५।१३
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टीं पिङ्गलांपद्म... श्रीसू.१४
आर्द्रां यः करिणींयष्टीं सुवर्णां हेम... श्रीसू.१३
आधयो व्याधयोऽधियाम् अक्ष्युप.२६
आधानकरणी च द्विस्स्थानं सन्ध्यक्षरं २प्रणवो.१६
आधारचक्रमहसा विद्युत्पुञ्ज-
  समप्रभा। तदा मुक्तिर्न सन्देहः यो.शि.६।२६
आधारनवकमुद्राः शक्तयः भावनो.२
आधारमानन्दमखण्डबोधंयस्मिँल्लयं
  याति पुरत्रयं च कैव.१४
आधाररहितोऽस्म्यहम् मैत्रे.३।९
आधारवातरोधेन विश्वं तत्रैव दृश्यते यो. शि. ६।२९
आधारवातरोधेन शरीरं कम्पते यदा,
  ..योगी नृत्यति सर्वदा यो.शि.६।२८

आधारशक्तिरव्यक्ता यया विश्वं प्रवर्तते — यो. शि. २।१२
आधारशक्त्यावधृतः कालाग्निरयमूर्ध्वगः — बृ. जा. २।९
आधारं गुदमित्युक्तं स्वाधिष्ठानं तु लिङ्गकं — योगकुं. ३।१०
आधारं प्रथमं चक्रं स्वाधिष्ठानं द्वितीयकं — ध्या. बिं. ४३
आधारं सर्वभूतानामनाधारं (ब्रह्म).. — यो. शि. ३।१८
आधाराख्ये गुदस्थाने पङ्कजं यच्चतुर्दलं, तन्मध्ये प्रोच्यते योनिः.. — ध्या. बिं. ४२
आधाराज्जायते विश्वं विश्वं तत्रैव लीयते । ..गुरुपादं समाश्रयेत् — यो. शि. ६।२२
आधारादिषु चक्रेषु.. परं तत्त्वं न तिष्ठति — अमन. १।३
आधाराद्वायुमुत्थाप्य स्वाधिष्ठानं.. — हंसो. ४
(?)आधाराद्ब्रह्मरन्ध्रपर्यन्तं ध्यायन् — हंसो. ४
आधारे कमलालयम् (आत्मतीर्थं) — जा. द. ४।४५
आधारे दहरेऽव्यक्ते स्वर्णस्फटिकवैद्रुमम् (शिवलिङ्गं) — सदानं. २
आधारे (चक्रे) पश्चिमं लिङ्गं कवाटं तत्र विद्यते — यो. शि. ६।३१
आधारे ब्रह्मचक्रं त्रिरावृतं भगमण्डलाकारं — सौभाग्य. २४
आधारे (चक्रे) सर्वदेवताः, आधारे सर्ववेदाश्च — यो. शि. ६।२९
आधिक्ये सर्वसाम्ये वा नोपपत्तिर्हि भिद्यते — अद्वैतो. १०
(अथ)आधिदैवतमग्निः पादो वायुः पाद आदित्यः पादो दिशः पाद इत्युभयमेवादिष्टं भवति — छान्दो. ३।१८।२
आधिदैवतमाकाशो ब्रह्मेत्युभयमादिष्टं भवति — छान्दो. ३।१८।१
आधिदैविकी या सृष्टिः सा... लोकतां प्राप्नोति — सामर. ६+
आधिपत्यं स्वराज्यं पर्येता — छां. उ. ३।६।४
[+३।७।४+३।८।४+३।९।४+ — ३।१०।४
आधिभौतिकदेहं तु — योगकुं. १।७७
आधीतं बर्हिः, केतो अग्निः — चित्यु. १।१
आध्यात्मिकीं कथां मुक्त्वा भिक्षावार्तां विना.. वृथा जल्पोऽन्य उच्यते — १ सं. सो. २।८४
आनखाग्रेभ्यो यथा क्षुरः क्षुरधाने.. — बृ. उ. १।५।७
आनन्द आत्मा, ब्रह्मपुच्छं प्रतिष्ठा — तैत्ति. २।५

आनन्द इत्येनदुपासीत — बृह. ४।१।६
आनन्दक्रियामृतत्वफला — कात्याय. १
आनन्दघन एवाहमहं ब्रह्मास्मि केवलं — ते. बिं. ३।२६
आनन्दघनमव्ययम् — अध्यात्मो. ६१
आनन्दघनरूपोऽस्मि परानन्दघनो.. — ते. बिं. ४।३
आनन्दघनं ह्येवमस्मात्सर्वमात्... — नृसिंहो. २।३
आनन्दत्वं सदा मम — वराहो. ३।१०
आनन्दत्वान्न मे दुःखमज्ञानाद्भाति सत्यवत् । — आ. प्र. ३१
आनन्दनं मोदनं ज्योतिरिन्दोरेता उ वै मण्डला मण्डयन्ति — त्रिपुरो. ४
आनन्दपादस्तृतीयः (ब्रह्मणः) — त्रि. म. ना. १।४
आनन्दप्राधान्येनानन्दसाकारः — त्रि. म. ना. २।२
आनन्दभरितस्यान्तोर्वै देही मुक्त एव सः — ते. बिं. ४।३८
आनन्दभुक्चेतोमुखः प्राज्ञः [माण्डू. ५+ रामो. २।३+ [ग. शो. १।३+५।६+नृ. पू. ४।२ — नृसिंहो. १।३
आनन्दभुक्तथा प्राज्ञः [आगम. ३+ — यो. चू. ७२
आनन्दमय आत्मा तु ततोऽन्यश्चान्तरः.. — कठरु. २२
आनन्दमयस्तु पुरुषोत्तमोऽतिरिच्यते — सामर. ९७
आनन्दभिक्षाशी — निर्वाणो. ४
आनन्दमन्तर्निजमाश्रयन्तमाशापिशाचीमवमानयन्तम्.. — मैत्रे. १।१७
आनन्दमयो ज्ञानमयो विज्ञानमय आदित्यः — सूर्यो. ६
आनन्दमयो ह्यानन्दभुक् चेतोमुखः प्राज्ञस्तृतीयःपादः [रामो. २।३+ [नृ. पू. ४।२+नृसिंहो. १।३ — माण्डू. ५+
आनन्दमात्ररूपोऽस्मि...यः स जीवन्मुक्त उच्यते — ते. बिं. ४।३
आनन्दमात्रोऽयंकरपादे तेजोमयोऽमृतमयः — सामर. ३९
आनन्दमेतज्जीवस्य यज्ज्ञात्वा मुच्यते बुधः — ब्रह्मो. २२
आनन्दमेवाप्येति य आनन्दमेवास्तमेति, तुरीयमेवाप्येति.. — सुबा. ९।१,१३
आनन्दयति दुःखाढ्यं जीवात्मानं सदा जनः — कठरु. २८
आनन्दयितव्यमेवाप्येति य आनन्दयितव्यमेवास्तमेति — सुबालो. ९।९

आनन्दयिता कर्ता — मैत्रा.६।७

आनन्दरसस्तु महालीलायाः कारणं भवतितराम् — सामर.९९

आनंदरूपममृतं यद्विभाति(तत्पश्यंति) — मुण्ड.२।२।७

आनन्दरूपस्तेजोरूपः — ग.शो.२।४

आनन्दरूपास्तिष्ठन्ति कामायाश्च भविष्यति — प्रश्नो.२।१०

आनन्दरूपे आश्रिताः...तन्मयतां प्रपेदिरे — सामर.१०२

आनन्दरूपेषु पुरुषोऽयं रमते — सामर.३

आनन्दरूपोऽहमखण्डबोधः — वराहो. ३।३

आनन्दवांश्च भवति, यो हैवं वेद — मैत्रा.६।१३

आनन्दव्यूहमध्ये सहस्र... चिन्मयप्रासादम् — त्रि.म.ना.७।९

आनन्दश्च तथा प्राज्ञं विद्यावृत्तिं निबोधत — आगम.४

आनन्दसंवलितयामाययाऽऽनन्दात्मक एव भवति — सामर.९९

आनन्दं नाम सुखचैतन्यस्वरूपोऽपरिमितानन्दसमुद्रोऽवशिष्टसुखस्वरूपश्चानन्द इत्युच्यते — सर्वसारो. ६

आनन्दस्य रतेः प्रजातेर्विज्ञातारं विद्यान्नेत्यां विजिज्ञासीत — कौ. उ. ३।८

आनन्दं प्रयन्त्यभिसंविशन्ति — तैत्ति.३।६

आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान्न बिभेति कदाचन [तैत्ति.२।४ + — शरभो. १८

आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान् सच्चिदानन्दस्वरूपो भवति — ना.उ.ता.१।१

आनन्दं रतिं प्रजापतिं ते मयि दध इति पुत्रः — कौ. उ. २।१५

आनन्दं रतिं प्रजातिं मे त्वयि दधानीति पिता — कौ.उ. २।१५

आनन्दं विज्ञानस्य (रसः) — मैत्रा. ६।१३

आनन्दं परमालयं (आनन्दकोशं) — मैत्रा. ६।२७

आनन्दा नाम ते लोकाः—[मा.पा.] — कठो. १।३

(अथ)आनन्दान्मुदःप्रमुदःसृजते — बृह. ४।३।१०

आनन्दाद्ध्येव खल्विमानि भूतानि जायन्ते — तैत्ति. ३।६

आनन्दाब्धिर्यः परः सोऽहमस्मि — मैत्रे. १।१५

आनन्दामृतरूपोऽहमात्मसंस्थोऽहं.. — अ. वि. ९२

(अथ)आनन्दामृतेनैतांश्चतुर्धासम्पूज्य — नृसिंहो. ३।४

आनन्दिनः प्राणा भवन्ति,अन्नं बहु.. — छां.उ.७।१०।१

आनन्देन च सन्तुष्टो सदाभ्यासरतो भवेत् — अमन. २।५२

आनन्देन जातानि जीवन्ति(भूतानि) — तैत्ति. ३।६

आनन्देन सदा पूर्णः सदा ज्ञानमयः सुखम् । तथाऽऽनंदमयश्चापि.. — कठरु. २४

आनन्दैकघनाकारा...सप्तमी भूमिका भवेत् — अ. पू. ५।८५

आनन्दैकघनाकारा सुषुप्ताख्या तु पञ्चमी (भूमिका) — अ.पू.५।८८

आनन्दो गोष्पदायते — १अवधू. ३

आनन्दोऽजरोऽमृतः (एव प्राणः) — कौ. उ. ३।९

आनन्दोनामसुखचैतन्यस्वरूपोऽपरिमितानन्दसमुद्रोऽवशिष्टसुख..(पाठः) — सर्वसा. ४

आनन्दो ब्रह्मेति व्यजानात् — तैत्ति. ३।६

आनन्दो भवति, स नित्यो भवति — ग. शो. ५।८

आनन्दोऽसि परोऽसि त्वं — ते.बिं .५।६६

आनीय मुदितात्मानमवलोक्य ननाम च — महो. २।२८

आनुष्टुभस्य मन्त्रराजस्य नारसिंहस्य फलं नो ब्रूहि भगवः — नृ. पू. ५।९

आनुष्टुभस्यमन्त्रराजस्य नारसिंहस्य महाचक्रं नाम चक्रं नोब्रूहिभगवः — नृ.पू. ५।१

आनुष्टुभस्यमंत्र..शक्तिं बीजं नोब्रूहि — नृ. पू. ३।१

आनुष्टुभस्यमन्त्रराजस्यनारसिंहस्याङ्गमन्त्रान्नो ब्रूहि भगवः — नृ. पू.४।१

आनृशंस्यंसतांसङ्गःपारमैकान्त्यहेतवः — भवसं. ५।२१

(ह्रीं) आनोदिवो बृहतः पर्वतादा [+तै.सं.१।८।२२।१+ — ऋ.मं.५।४३।११ सरस्व. ८

आन्तरमग्निहोत्रमित्याचक्षते — कौ.उ. २।५

आन्तरं कर्म कुरुतेयत्रारम्भःसउच्यते — वराहो. ५।७३

(?)आप एवतदशितंनयन्ते,तद्यथा... — छांदो.६।८।३

आप एव भगवो राजन्निति(मा.पा.) — छां. उ.५।१६।१

आप एव यस्यायतनं,हृदयं लोको... — बृह. ३।९।१६

आप एवेदमग्र आसुः,ता आपः.. — बृह..५।५।१

आप एवेमा मूर्ताः, अप उपास्व — छांदो.७।१०।१

आप एवेमा मूर्ताः, येयं पृथिवी छांदो. ७।१०।१
(१)आप पेक्षन्त बह्व्यः स्याम छांदो. ६।२४
आप ओषधयो वनस्पतयः,
आकाश आत्मा तैत्ति. १।७।१
आपत्कार्पण्यमुत्साहो मदो मान्द्यं
महोत्सवः । यन्नयन्ति न वैरूप्यं
तस्य नष्टं मनो विदुः अ. पू. ४।१३
आपतत्सुयथाकालंसुखदुःखेष्वनारतौ,
सम्यासयोगिनौ विद्धि शान्तौ.. महो.६।४७
आपतत्सु यथाकालं.. न हृष्यति
ग्लायतियः स जीवन्मुक्तउच्यते महो.२।४३
आपदःक्षणमायान्ति क्षणमायान्ति
सम्पदः.. सर्वं नश्वरमेव तत् महो.३।२३
आपदां पतयः पापा भावा
भवविभूतये भवसं.१।२६
आपद्यमानोऽस्ति प्रकृतिपुरुषः सामर.२६
आपयतो वै तावन्योन्यस्य कामं छान्दो.१।१।७
आपयिता ह वै कामानां भवति छान्दो.१।१।७
आपश्छन्दांसि, आपो ज्योतींषि महाना.११।१
आपश्च तेजश्च तेषां संक्लृप्त्यै वर्षं छां.उ.७।४।२
आपश्च तेषां संक्लृप्त्यै वर्षं संक.. (मा.पा.),
आपश्चापो मात्रा च, तेजश्च तेजो-
मात्रा च, वायुश्च वायुमात्राच प्रश्नो.४।८
आपस्तेजसि प्रलीयंते,तेजो वायौ.. सुबालो.२।२
आपः पिण्डीकरणे (शरीरस्य) गर्भो.१
आपः पीतास्त्रेधा विधीयंते, तेषां यः
स्थविष्ठो धातुस्तन्मूत्रं भवति छान्दो.६।५।२
आपः पुनन्तु पृथिवीं पृथिवी पूता... महाना.११।२
[+ तै.आ.१०।२३।१ प्रा.हो.१।८
आपः प्राणा वा आपः पशवः महाना.११।१
आपः प्रोक्षणीभिः, ओषधयो बर्हिषा चित्त्यु.८।१
आपः शब्दस्पर्शरूपरसगंधाः त्रि.ब्रा.१।३
आपः सत्यं, आपः सर्वा देवताः महाना.११।१
आपः सन्धिः, वैद्युतः सन्धानम् तैत्ति.१।३।२
आपःसम्राट्,आपोविराट्,आपःस्वराट् महाना.११।१
आपः सर्वा देवताः, आपो भूर्भुवःस्वः महाना.११।१
आपः सृजते तेज उपास्वेति छांदो.७।११।१
आपःसृजंतु(स्रजंतु)स्निग्धानिचिक्लीत
वस मे गृहे [ऋ. खि. ५।८७।१० श्री.सू.१२

आपः स्वराट्, आपश्छन्दांसि महाना.११।१
आपाण्डुरउदानस्तु(च)व्यानोह्यर्चिः अ. ना. ३८
आपादमस्तकमहंमातापितृविवर्जितः।
इत्येको निश्चयो...बन्धाय... महो. ६।५५
आपान्तमन्युस्तृपलप्रभर्माधुनिः.. महाना. ९।४
आपायोर्हृदयान्तं च वह्निस्थानं.. १यो.त. ९१
आपा:३इत्याप इति १ऐत.१।८।१
आपिः पिता सूरमहस्य विष्वक् बा. मं. १३
आ पिपीलिकाभ्य उपजीवन्ति बृ. उ. १।४।१६
(१)आपूर्यपक्षस्य पुण्याहे द्वादशाहं.. बृ. उ. ६।३।१
आपूर्यमाणपक्षाद्यान् षडुदेति
मासांस्तान् [छांदो. ४।१५।१ +५।१०।१
आपूर्यमाणपक्षाद्यान् षण्मासानुद-
ङ्ङादित्य एति बृह. ६।२५।२
आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठं... स
शान्तिमाप्नोति..[१अवधू.७+ भ.गी. २।७०
आपो ज्योतिरन्नं बहु कुर्वीत तैत्ति. ३।११
आपोज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः
सुवरोम् [महाना.११।७+१६।१ +प्रा.हो.१।७
[राधो. ४।२+ तै.आ.१०।१५।१
आपोज्योतीरसोऽमृतं..ब्रह्म भूर्भुवः
स्वरोम[अ.शिरः३।१३+वनदु.१२१ +बह्वृको.२७
आपो ज्योतींषि, आपो यजूंषि महाना. ११।१
आपो दिशो नक्षत्राणि चन्द्रमाः छांदो.४।१२।१
आपो नैनं क्लेदयन्ति सामर.१००
आपोऽन्नम्, आपोऽमृतम् महाना.११।१
(अथ)आपोऽप्यायनादित्येवं ह्याह मैत्रा.६।७
आपोभिर्गिरः, मनो हविः चित्त्यु. ६।१
आपो भित्त्वा तेजो भिनत्ति सुबालो.११।२
आपो भूर्भुवः सुवरापओम् महाना.११।१
आपोमयः प्राणः, तेजोमयी वाक् छान्दो.६।५।४
[६।६।५+ ६।७।६
आपोमयःप्राणोनपिबतोविच्छेत्स्यते छान्दो.६।७।१
आपोऽमृतम्, आपः सम्राट् महाना.११।१
आपोमयोवायुमयआकाशमयः(आत्मा)बृह.४।४।५
आपो यजूंषि, आपः सत्यम् महाना.११।१
आपो रेतो भूत्वा शिश्नं प्राविशत् २ऐत.२।४
आपोऽर्धचन्द्रं शुक्ल च वंबीजं १यो.त.८८
आपो वरेण्यम्, चन्द्रमा वरेण्यम् सावित्र्यु.१०

आपो वा अन्नम्, ज्योतिरन्नादम् तैत्ति.३।८
आपो वा अपोऽन्तरात्मा पारमा.५।७
आपो वा अर्कस्तद्यदपां शर आसीत् बृह. १।२।२
आपो वा इदमसत्सलिलमेव नृ.उ.१।१
आपो वा इदमासंस्तत्सलिलमेव नृ.पू.१।१
आपो वा इदं सर्वं विश्वा भूतानि.. महाना.१।१।१
आपो वाऽन्नं ज्योतिरन्नादम् सुबालो.१४।१
आपो वावान्नाद्भूयस्तस्माद्यदा सुवृष्टिर्न.. छांदो.७।१०।१
आपो विराट्, आपः स्वराट् महाना.१।१।१
आपो वै खलु मे ह्यसावयं तेलोकइति कौ.उ. १।७
आपो वै सर्वा देवताः, सर्वाभ्यो
देवताभ्यो जुहोमि स्वाहा ना.प ३।७७
[+याज्ञव.१+जाबा.४+ प.हं.प. ४
आपो ह वाऽग्रे आसन् गोपीचं. २७
आपोऽहं, तेजोऽहं, गुह्योऽहम् अ.शिरः. १।१
आपो ह्यस्मै श्रद्धां सन्नमन्ते
पुण्याय कर्मणे १ऐत.१।७।६
आपो हि ष्ठा मयोभुवः[ऋ.मं.१०।९।१ महाना. ५।१२
+अ.वे.१।५।१+साम.२।११८७+ वा.सं.११।५०
आपोहिष्ठेत्यभ्युक्ष्यप्राणायामान्कृत्वा सन्ध्यो.१
आप्तकाममात्मकाममकामं रूपं... बृ.उ.४।३।२१
आप्तकाम आत्मकामो न तस्य प्राणा
उत्क्रामन्ति [बृ.उ.४।४।६ नृसिंहो. ५।२
आप्तकामस्य कामस्य का स्पृहा.. आगम. ९
आप्ततम उत्कृष्टतम एतदेव ब्रह्मापि.. नृसिंहो.९।६
आप्तेरादिमत्त्वाद्वा स्थूलत्वात्...
(चतुरात्मा) नृसिंहो. २।४
आप्तेरादिमत्त्वाद्वाआप्नोतिहवै..कामान् माण्डू. ९
आप्तोपदेशगम्योऽसौ (ब्रह्मात्मा) ब्र. वि. ३३
आप्नोति मनसस्पतिं, वाक्पति-
श्चक्षुष्पतिः तैत्ति. १।६।२
आप्नोति सर्वान्कामांस्तृप्तिमान्भवति छांदो.७।१०।२
आप्नोति स्वाराज्यं, आप्नोति मनस.. तैत्ति. १।६।२
आप्नोति ह वा इदं सर्वमादिश्च
भवति, य एवं वेद नृसिंहो. २।४
आप्नोतिहवैसर्वान्कामानादिश्चभवति माण्डू. ९
आप्नोतीहादित्यस्याजयं परो
ह्यास्यादित्यजयाज्जयो भवति छांदो.२।१०।६
आप्नोत्यमृतत्वमक्षितिं स्वर्गे लोके कौ.उ.३।२

आप्यायस्व मदिंतमसोमविश्वाभि-
रूतिभिः [ऋ.मं.१।९१।१७+ वा.सं.१२।११४
[+तै.सं.१।४।३२।१ चित्सु.१७।१
आप्यायन्तु ममाङ्गानि वाक्पाणि.. शांतिपाठः
आप्याययंस्तेतथातीतशोकभयाबभूवुः २प्रणवो.२७
आप्यायस्व समेतु ते...सं ते पयांसि
...यमादित्या...एनास्तिमन्धक्षवो.. कौ.उ.२।८
आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम
वृष्ण्यम् [ऋ.मं.१।९१।१६+ वा.सं.१२।११२
[+तै.सं.३।२।५।३+ वनदु. २६
आप्यायस्वापक्षीयस्वेति बृ.उ.६।२।१६
आ प्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सवै. १७
[ऋ.मं.१।११५।१+ अ.वे. १३।२।३५
आप्लवस्व प्रप्लवस्व आण्डीभव अरुणो. १
आब्रह्मबीजदोषाः..मंत्रेणानेननाशिताः रामो.५।२५
आब्रह्मभुवनाल्लोकाः भ. गी. ८।१६
आब्रह्मस्तम्बपर्यंतं तनुमस्याःप्रचक्षते गुह्यका. २३
आब्रह्म स्थावरान्तमनन्ताखिला-
जाण्डभूतम् महावा. २
आभासमात्रकं ब्रह्मन्.. सन्त्यज्य
निराभासो भवोत्तम अ. पू.५।३४
आभासमात्रमेवेदं..सम्यग्ज्ञानंविदुर्बुधाः अ. पू.५।३३
आभि-(कृष्णपरिवाररूपाभिः)
भिन्नो न वै विभुः कृष्णो. २५
आभूत्या सहजा वज्र सायक सहो..
[ऋ.मं.१०।८४।६+अ.वे.४।३१।६+ वनदु.११२
आ भ्रूमध्यात्तु मूर्धान्तमाकाश-
स्थानमुच्यते १यो.त. ९७
आमपात्रेऽग्निमुपसमाधाय बृह. ६।४।१२
आमंस्यामंस्हि ते महि स हि
राजेशानोऽधिपतिः स मां
राजेशानोऽधिपतिं करोतु बृह.६।३।५
आ माऽऽयन्तु ब्रह्मचारिणः स्वाहा तैत्ति. १।४।४
आ मां मेधा सुरभिर्विश्वरूपा महाना. १३।५
आयतनवतो ह लोकाञ्जयति छांदो.४।८।४
आयतनवानस्मिँल्लोके भवति छांदो.४।८।४
आयतनं जनानां (भवति)यएवंवेद बृह.५।१।४,५
आयतनं नः प्रजानीहि यस्मिन्
प्रतिष्ठिता अन्नमदामेति २ऐत. २।१

आयतनं वै जनानां, मनो वा आयतनं (मा.पा.)	बृ. उ. ६।१।५
आयतनं स्वानां भवति	बृ.उ. ६।१।५
(१)आयतनाय स्वाहेत्यग्नाज्यस्य हुत्वा मन्थे सम्पातं..	छां. उ. ५।२।५
आयतमेकांगुलं पादतगोऽस्य मूलं (पुण्ड्रं)	नारदो. १
आयुः प्राणः, प्राणो वा आयुः	कौ.उ. ३।२
आयम्य तद्भावगतेन चेतसा (धनुः)	मुंड. २।२।३
आयस्मिन्सप्त पेरवः	चित्त्यु. ११।६
आयातुवरदादेवीअक्षरंब्रह्मसंमितम्	महाना.११।६
आयासाय स्वाहा	चित्त्यु.२०।१
आयुधानामहं वज्रम्	भ.गी.१०।२८
आयुरनु सन्तनुतेति	छांदो.३।१६।६
आयुरन्नं प्रयच्छति	...
आयुरायासकारणम्	महो. ३।१०
आयुर्दा अग्ने हविषो जुषाणो घृतप्रतीको...	सहवै.६
आयुर्यशःकीर्तिज्ञानैश्वर्यवान् भवति	नृ. पू. १।३
आयुर्होपासनेऽमृतम्	बृ. उ.४।४।१६
आयुष्टे विश्वतो दधदयमग्निर्वरेण्यः	सहवै. ६
आयुःपल्लवकोणाग्रलम्बाम्बुकणभङ्गुरं	महो. ३।९
आयुः पृथिव्यां द्रविणम्	महाना. ११।९
आयुःसत्त्वबलारोग्य-सुख-प्रीति-विवर्धनाः...	भ. गी. १७।८
आयुः प्रज्ञां च सौभाग्यं.. देहि मे चण्डिके शुभे	वनदु. २५
आयुः प्रज्ञां तथा शक्तिं प्रसमीक्ष्य..	शिवो. १।६
(१)आ ये धामानि दिव्यानि तस्थुः	श्वेता. २।५
आरण्यान् ग्राम्याश्च ये [पु.सू.८ [+वा.सं.३१।६+ तै.आ.३।१२।४	ऋ.सं.१०।९०। चित्त्यु.१२।४
आरण्याः पशवो विश्वरूपाः	चित्त्यु.११।१२
आरब्धकर्मणिक्षीणेव्यवहारोनिवर्तते, कर्मक्षये त्वसौ नैव शाम्येद्ध्यानसहस्रतः	१ अवधू. १९
आरंभेथामनुसंरभेथां समानं पंथा..	सहवै. १०
आरभ्य कर्माणि गुणान्वितानि भावांश्चसर्वान्विनियोजयेद्यः। तेषां..	श्वेता. ६।४
आरभ्य कृतपे श्राद्धं...रौहिणी नैव लङ्घयेत्	इतिहा. ५९
आरभ्य चासनं पश्चात्..सर्वतममृतं पश्यंत्	जा. द. ५।५
आरम्भश्च घटश्चैव तथा परिचयः स्मृतः। निष्पत्तिश्चेत्यवस्था च..	१ यो.त. २०
आरम्भश्च घटश्चैव पुनः परिचयस्तथा। निष्पत्तिश्चैव..चतस्रस्तस्य भूमिकाः (प्रणवस्य)	वराहो.५।७१
आराग्रमात्रोऽप्यपरो(ह्यवरो)ऽपिदृष्टः	श्वेता.५।८
आराधयेद्राघवं चन्दनाद्यैः	रा.पू. ७।५
आराध्यो भगवानेको...स एव सर्वथोपास्यः...	भवसं.२।६०
आराममस्यपश्यन्तिनतंपश्यतिकश्चन	बृह.४।३।१४
आरुणिः प्राजापत्यः प्रजापतेर्लोकं जगाम	आरुणि.१
आरुरुक्षोर्मुनेर्योगम्	भ.गी.६।३
आरूढपतितापत्यं कुनखीश्यावदन्तकः..नैव संन्यस्तुमर्हति	सं.सो.२।३
आरोग्यं रूपवत्ताच..शुद्धान्नेन भवति हि	भवसं. ४।१०
आरोपितस्य जगतः परिपालनेन	वराहो.२।६५
आरो ह्रदो मुहूर्ता येष्टिहा	कौ.उ.१।३
आर्जवं नाम मनोवाक्कायकर्मणां विहिताविहितेषु...एकरूपत्वम्	शाण्डिल्यो.१।३
आर्तमिव वा एष तन्मेने	आर्षे.२।१
आर्तवोऽस्याकाशाद्योनेः सम्भृतो...	कौ.उ.१।६
आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी	भ.गी.७।१६
आर्त्विज्यं करिष्यन्वाचि स्वरमिच्छेत	बृ.उ.१।३।२५
आर्द्रे ज्वलति, ज्योतिरहमस्मि	महाना.६।७
आर्द्रे सन्दीप्तमसि विभुरसि प्रभुरसि (मा.पा.)	बृ.उ.६।३।४
आर्द्रं सन्दीप्तमसि विभूरसिप्रभूरसि	बृ.उ.६।३।४
आलम्बनतया भाति योऽस्मत्प्रत्ययशब्दयोः। अन्तःकरणसम्भिन्नबोधः स त्वंपदाभिधः	अध्यात्मो.३१
आललाटादाचक्षुषोराभ्रूण्णोराभ्रुवोर्मध्यतश्च (भस्मत्रिरेखाः)	का.रु.४
आलोकयन्तं जगदिन्द्रजालमापत्कथं मां प्रविशेदसङ्गम्	मैत्रे.१।१७

वाक्यम्	स्थलम्
आलोमभ्य आनखेभ्यः प्रतिरूपं (आत्मानं)	छान्दो.८।८।१
आवपनमाकाशः, आकाशेहीदंसर्वं..	१ऐत.३।१।२
आवपनं ह वै समानानां भवति	१ऐत.३।१।२
आवयोरन्तरं न विद्यते	त्रि.म.ना. ७।१०
आवयोः पात्रभूतः सन् सुकृती त्यक्तकल्मषः	कालिको.२
आवहन्ती वितन्वाना, कुर्वाणा...	तैत्ति.१।४।१
आविद्यकमखिलकार्यकारणजा-(त) मविद्यापाद एव	त्रि.म.ना.२।१
आविरावीर्म एधि	२ऐत.शां.
(?)आविर्भावतिरोभावज्ञातास्वयमेव	सर्वसा.५
आविर्भावतिरोभाव...जनस्य स्थिरतां यान्ति	भवसं.१।१८
आविर्भावतिरोभावहीनःस्वयंज्योतिः साक्षीत्युच्यते	सर्वसा.५
आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम् ।	गणप. ९
आविर्भूतेऽन्तराकाशे शनकैरवटेवाव-त्कष्टातुकामः संविशति	मैत्रा.६।२८
आविर्हि शरीरम्	१ऐत.३।६।७
आविष्कृतमेतेनास्य यज्ञं..	मैत्रा.६।३४
(अथ) आविः सन्नभसि निहितं... अन्तर्हृदयाकाशं वितुदन्ति	मैत्रा.६।२७
आविस्सन्निहितं गुहाचरं नाम	मुण्ड.२।२।१
आवीन्माम्, आवीद्वक्तारम्	तैत्ति.१।१२।१
आवृणोत्यपरा शक्तिः सा संसारस्य कारणम्	सरस्व. ४३
आवृतं ज्ञानमेतेन	भ. गी. ३।३९
आवृताज्यं संस्कृत्य पुंसा नक्षत्रेण मन्थं सन्नीय जुहोति	बृह. ६।३।१
आवृत्तचक्षुरमृतत्वमिच्छन्	कौ.उ.४।१
आवृत्तिं चैव योगिनः	भ.गी.८।२३
आवृत्तौतुविनष्टायांभेदेभातेऽपयाति..	सरस्व.४५
आवेदितोऽसौ याष्टीकैर्जनकाय....	महो. २।२१
आवेशश्चेतसो ज्ञानमर्थानां छन्दतः क्रिया	आयुर्वे. १२
आशया रक्ततामेति (मनः)	महो. ६।७५
आशापत्नीं त्यजेयावत्तावन्मुक्तो न संशयः	मैत्रे. २।१२
(?) आशापराकाशौ तमाददेऽसौ	बृह. ६।४।१२
आशापाशशतैर्बद्धाः	भ.गी. १६।१२
आशापिशाचीमवमानयन्तम्.. आपत्कथं मां प्रविशेद्सक्रम्	मैत्रे. १।१७
आशाप्रतीक्षे सङ्गतं सूनृतांचेष्टापूर्ते	कठो. १।८
आशाम्बरो ननमस्कारो...देव-मान्तरध्यानशून्यः	प.हं.प. ११
आशाम्बरो न नमस्कारो न दार-पुत्राभिलाषी..परिव्राट्परमेश्वरः	याज्ञव. १
आशा यातु निराशात्वमभावं यातु भावना	अ. पू. ५।३८
आशा रशना, मनो रथः,कामः पशुः	प्रा.हो.४।३
आशा वाव स्मराद्भूयसी	छांदो.७।१४।१
आशावैवश्यमुत्सृज्यनिदाघासङ्गतांव्रज	अ. पू.५।७
आशाशरशलाकाढ्या दुर्जया हीन्द्रियारयः	महो.५।७७
आशां मनुष्येभ्यः (आगायाति)	छांदो.२।२२।२
आशाः समस्ताः प्रतरन्ननु तमन्तस्तास्ता वसेत्	पारमा. ८।८
आशिष्ठोद्रढिष्ठोबलिष्ठः,तस्येयंपृथिवी	तैत्ति. २।८
आशीर्युक्तानि कर्माणि..नैव कुर्यान्न कारयेत्	ना.प. ५।३२
आशेद्धो वै स्मरः..कर्माणि कुरुते	छां.उ.७।१४।१
आश्चर्यवच्चैनमन्यः शृणोति	भ.गी. २।२९
आश्चर्यवत्पश्यति कश्चिदेनं	भ.गी. २।२९
आश्चर्यवद्वदति तथैव चान्यः	भ.गी. २।२९
आश्चर्यो ज्ञाता कुशलानुशिष्टः	कठो. २।७
आश्चर्यो वक्ता कुशलोऽस्य लब्धा..	कठो.२।७
आश्चर्योऽस्यवक्ताकुशलोऽलब्धा(मा.पा.)	कठो.२।७
आश्रमा इति तद्विदः	वैतथ्यो.२७
आश्रमास्त्रिविधा हीनमध्यमो-त्कृष्टदृष्टयः	अद्वैतो.१६
आश्रमेष्वेवावस्थितस्तपस्वीचेत्युच्यते	मैत्रा.४।३
आश्रयाश्रयहीनोऽस्मि	मैत्रे.३।९
आश्रित्य मामकपदं हृदि भावयस्व	वराहो.२।४५
आश्वयुक्छुक्लपक्षस्य द्वितीयामयुतं फलम् । अन्नेन वाऽथवा	इतिहा.९०

आसनस्थो योगी..वायुंचन्द्रेणापूर्य यथा स्वशक्त्या सम्पूर्य — शाण्डि. १।७।५
आसाद्य गच्छत — ग.पू.४।२५
आश्वासयामास च भीतमेनं — भ.गी.११।५
आसनमाहृत्योदकमाहारयाञ्चकार — वृ.उ.६।२।४
आसनं तु प्रयत्नेन बुद्ध्या पूजति.. — दुर्वासो.२।२
आसनं द्विविधं प्रोक्तं पद्मं वज्रासनं तथा — योगकुं.१।४
आसनं पद्मकं बद्ध्वा यद्वान्यदपि रोचते । नासाग्रदृष्टि.. — यो.शि.१।७०
आसनं पात्रलोपश्च, सञ्चय: — सं.सो.२।७।९
आसनं प्राणसंरोधो ध्यानं चैव समाधिकः..एतच्चतुष्टयंविद्धिसर्वयोगेषु.. — योगरा.२
आसनंप्राणसंरोधःप्रत्याहारश्चधारणा, ध्यानं समाधिरेतानियोगाङ्गानि भवन्ति षट् [यो.चू.२+ — ध्या.बि.४१
आसनं मूलबन्धश्च देहसाम्यं च.. — ते.बिं.१।१५
आसनं विजितं येन जितं तेन जगत्त्रयम् [त्रि.ब्रा.२।५२+ — जा.द.३।१३
आसनं स्वस्तिकंकृत्वापद्मपद्मासनं.. — योगो. १९
आसनानि च तावन्ति यावन्त्यो जीवजातयः — ध्या. बिं. ४२
आसनानितदङ्गानिस्वस्तिकादीनि.. — त्रि. ब्रा.२।३४
आनान्यष्टौ–त्रयः प्राणायामाः, पञ्च प्रत्याहाराः — शाण्डि.१।१।२
आसनेन रुजं हन्ति प्राणायामेन पातकम् — यो.चू. १०९
आसप्तमान् (त) पुरुषयुगान्पुनाति — अ.शिरः१६+ महो. ६।८४
आसप्तमांस्तस्य लोकान् हिनस्ति — मुण्ड. १।२।३
आसव्यकर्णान्तमूर्ध्वगा शङ्खिनी — शाण्डि. १।४।१६
आ सहस्रात् पङ्क्तिं पुनन्ति — महाना. १२।१ गणप. १,२,३
आसामङ्गैकां भिन्धीति (गुरुराह) — छांदो.६।१२।१
आसां (योगभूमिकानां) अन्तः-स्थिता मुक्तिर्यस्यां भूयोनशोचति — महो. ५।२६
आसामपां सर्वाणि भूतानि मधु — बृह. २।५।२
आसां दिशां सर्वाणि भूतानि मधु — बृह. २।५।६
आसां मुख्यतमास्तिस्रस्तिसृष्वेकोत्तमोऽत्तमा — जा.द. ४।९
आसां स्त्रीणां सुकृतं वृङ्क्ते — बृह. ६।४।३
आसिञ्चतुप्रजापतिर्धातागर्भंदधातुते [ऋ. मं. १०।१८४।१+ — बृह. ६।४।२१ अ.वे.५।२५।५
आसीनोदूरंव्रजतिशयानोयातिसर्वतः — कठो. २।२१
आसुरं भावमाश्रिताः — भ. गी. ७।१५
आसु तदा नाडीषु सृप्तो भवति — छांदो.८।६।३
आसुरं पार्थ मे शृणु — भ. गी. १६।६
आसुरीष्वेव योनिषु — भ.गी.१६।१९
आसुरीं योनिमापन्ना: — भ.गी.१६।२०
आसुवस्वरस्मै, वाचस्पतिः..पिबति — चित्यु. ३।१
आस्तिक्यं नाम वेदोक्तधर्माधर्मेषु विश्वासः — शाण्डि.१।२।१
आस्था नायुषि युज्यते — महो.३।११
आस्थामात्रमनन्तानां दुःखानामाकरं विदुः । वासनातन्तुबद्धोऽयं.. — महो.५।८५
आस्थिता जनकादयः — भ.गी.३।२०
आस्थितो योगधारणाम् — भ.गी.८।१२
आस्न्यवशिष्टैरन्नपानैश्चाऽऽस्यमाहवनीयमिति — मैत्रा.६।३६
आस्भासुनृम्णं धारस्वाहा(?) — चित्यु.१।२
आस्यनासिकयोर्मध्ये..प्राणसंज्ञोऽनिलः — जा.द.४।२६
आस्यनासिकयोर्मध्ये हृदयं नाभिमण्डलंपादाङ्गुष्ठमितिप्राणस्थानानि — त्रि.ब्रा.२।८०
आस्यनासिकाकण्ठनाभिपादांगुष्ठद्वय ...प्राणः सञ्चरति — शाण्डि.१।४।७
आऽस्य स्त्रियः सुकृतं वृञ्जते — बृह.६।४।३
आस्येनतुयदाहारंगोवन्मृगयतेमुनिः, तदासमःस्यात्सर्वेषु..सोऽमृतत्वाय कल्पते [ना.प.५।२३+ — सं.सो.२।७८
आहरिष्यामि देवानां..पुलकैश्छादयाम्यहम् — बृ.जा.३।२०
आहवनीयगार्हपत्यदक्षिणसभ्यामिषु — परब्र.३
आहवनीयः साम सुवर्गो लोको बृहत् — महाना.१७।१८
आहवनीये गार्हपत्ये..प्राणापानव्यानोदानसमानान् समारोपयेत् — कठश्रु.४

(?)आहवनीयो भूत्वा मुखे तिष्ठति — प्राणाग्नि.२।४
आहं मां देवेभ्यो वेदा ओमहंवान् वेद — १ऐत.१।८।२
आहारशुद्धौ चित्तस्य विशुद्धिर्भवति — पा.ब्र.४१
आहारशुद्धौ सत्त्वशुद्धिः, सत्त्वशुद्धौ ध्रुवा स्मृतिः — छांदो.७।२६।२
आहारस्त्वपि सर्वस्य — भ.गी.१७।७
आहारस्यचद्वौभागौतृतीयमुदकस्यच, वायोः सञ्चरणार्थाय चतुर्थमव.. — सं.सो.२।५९
आहाराचारधर्माणांयत्कुर्याद्रुद्रदीश्वरः — शिवो.७।३९
आहारा राजसस्येष्टाः — भ.गी.१७।९
आहारा विविधा भुक्ताः [गर्भो.४+ — निरुक्तो.१।६
आहाराः सात्त्विकप्रियाः — भ.गी.१७।८
आहारिमिन्नादोजायते भवत्यस्यान्नं.. — १ऐत.३।१।२
आ हास्य देवा हवं गच्छन्ति, यस्तथाऽधीते — संहितो.१।२
आहिताग्निर्विरक्तश्चेद्देशान्तरगतो यदि। प्राजापत्येष्टिमप्स्वेव... संन्यसेत — ना.प.३।१०
आहिताग्निः सदा पात्रं...शूद्रान्नं यस्य नोदरे — इतिहा.३७
आहुतीनां यज्ञेन यज्ञस्य दक्षिणाभिः — सह्वै.१९
आहुस्त्वामृषयः सर्वे — भ.गी.१०।१३
आहृदयाद्भ्रुवोर्मध्यं वायुस्थानं... — १यो.त.९४
आहो विद्वानमुंलोकं प्रेत्य कश्चित्... — तैत्ति. २।६

इ

इच्छयाऽऽप्नोति कैवल्यं षष्ठेमासि.. (योगी) — अ. ना. ३०
इच्छाज्ञानाक्रियाशक्तित्रयं यद्भाव-साधनम्। तद्ब्रह्मसत्ता सामान्यं सीतातत्त्वमुपास्महे — सीतो. १
इच्छाद्वेषसमुत्थेन [भ.गी.७।२७+ — सं. सो. २।३०
इच्छा द्वेषः सुखं दुःखं — भ.गी. १३।७
इच्छाद्वेषात्मिका तृष्णा सुख-दुःखात्प्रवर्तते — आयुर्वे. ६
इच्छामयेन चैवेषुणेमानि खलु हन्ति भूतानि — मैत्रा. ६।२८
इच्छामात्रमविद्येयंतन्नाशो मोक्ष उच्यते — महो.४।१६
इच्छामात्रं प्रभोः सृष्टिः..मन्तेकाल.. — आगम. ८
इच्छामि त्वां द्रष्टुमहं तथैव — भ.गी. ११।४६
इच्छारूपो हि योगीन्द्रःस्वतन्त्र-स्त्वजरामरः — यो.शि. १।४३
इच्छाशक्तिर्महात्रिपुरसुन्दरी — भावनो. २
इच्छाशक्तिरूपां स्वप्नावस्थान... तृतीयकूटां मन्यन्ते — श्रीवि.ता.३।१
इच्छाशक्तिस्त्रिविधा(भवति) योग-शक्तिर्भोगशक्तिर्वीरशक्तिरिति — सीतो.२६,२७
इच्छाशक्तिः क्रियाशक्तिः साक्षाच्छक्तिः (त्रिधा शक्तिः) — सीतो. ७
इज्यते भरतश्रेष्ठ — भ.गी. १७।१२
इडया प्राणमाकृष्य...पश्चाद्रिरे-चयेत्सम्यक् — जा. द. ५।७
इडया बाह्याद्वायुमापूर्य षोडशमात्रा-भिरकारं चिन्तयन् — शाण्डि. १।६।१
इडयावायुमाकृष्य..अकारंतत्रसंस्मरेत् — जा.द.६।३,५,७
इडया वायुमाकृष्य भ्रुवोर्मध्ये निरोधयेत्..व्याधिभिर्मुच्यतेहिसः — जा.द. ६।२७
इडया वायुमापूर्य..ओङ्कारं देहमध्यस्थं ध्यायेत्.. [ध्या.बि.२०+ — १यो.त.४१
इडया वायुमापूर्य ब्रह्मन् षोडशमात्रया — त्रि.ब्रा. ३।९६
इडया वायुमारोप्य शनैः ,, ,, — १यो.त.४१
इडया वेदतत्त्वज्ञस्तथा पिङ्गलयैव च, नाभौनिरोधयेत्तेनव्याधिभि-र्मुच्यतेनरः — जा.द.६।२८
इडाचपिङ्गलाचैवतस्याःपार्श्वमुपागते — यो.शि.५।१८
इडा च पिङ्गला चैव तस्याः सव्येतरे स्थिते — त्रि. ब्रा.२।७०
इडातिष्ठतिवामेन पिंगला दक्षिणेन.. — क्षुरिको. १६
इडा तिष्ठति वामेन...तयोर्मध्ये परं स्थानं.. — यो. शि. ६।६
इडा तु सव्यनासान्तं संस्थिता मुनिपुङ्गव — जा.द.४।१९
इडादिमार्गद्वयं विहाय सुषुम्ना-मार्गेणागच्छेत् — शाण्डि.१।७।३७

इडापिङ्गलयोर्मध्ये सुषुम्ना सूर्यरूपिणी सर्वं प्रतिष्ठितं..तस्मिन्. यो.शि.६।९
इडापिंगलयोर्मध्ये...तत्र सत्यं प्रतिष्ठितम् शांडि.१।७।४१
इडापिङ्गलयोर्मध्ये...वायुमूर्ध्वं च कारयेत् वराहो. ५।६७
इडापिङ्गलयोः सन्धि यदा प्राणः समागतः। अमावास्या तदा प्रोक्ता जा.द. ४।४२
इडा च पिङ्गला चैव सुषुम्ना च तृतीयका (गा) (१०नाडयः) [ध्या.बिं.५२+ यो.चू.१६
इडापिङ्गलासुषुम्नाः..नाड्यश्चतुर्दश.. शाण्डि.१।४।५
इडापिङ्गलासौषुम्नाः प्राणमार्गे च संस्थिताः यो.चू. २१
इडापृष्ठभागात्सव्यनेत्रान्तगागान्धारी शाण्डि.१।४।५
इडाया देवताहरिःपिङ्गलायाविरिंचिः जा.द. ४।३९
इडायां चन्द्रमानित्यं चरत्येवमहामुने जा.द.४।३९
इडायां चन्द्रश्चरति पिङ्गलायां रविः शाण्डि. १।४।६
इडायांपिङ्गलायांतुप्राणसंक्रमणं मुने। दक्षिणायनमित्युक्तं.. जा. द. ४।४१
इडायां वहतिप्राणेबद्ध्वापद्मासनंदृढं योगकुं.१।१०
इडायां हेमरूपेण वायुर्वामेनगच्छति यो. शि.५।१९
इडायाः कुंडली स्थानं यदा प्राणः समागतः। सोमग्रहणमित्युक्तं.. जा. द. ४।४६
इडायै सृप्तं घृतवच्चराचरम् चित्यु. ११।१३
इडा वामे स्थिता भागे पिङ्गला दक्षिणे स्थिता। सुषुम्नामध्यदेशे तु प्राणमार्गास्त्रयः स्मृताः ध्या.बिं.५५
इडा समुत्थिता कन्दाद्वामना-सापुटावधि त्रि.ब्रा.२।७०
इडा तु सव्यनासान्तं संस्थिता मुनिपुङ्गव जा.द.४।१९
इत आत्मा ततोऽप्यात्मा नास्त्य-नात्ममयं जगत् महो.६।१०
इतरत्सर्वं महात्रिपुरसुन्दरी बह्वृचो. ३
इतरत्रनकर्तव्या मनोवृत्तिर्मनीषिणा शाण्डि.१।७।३७
इतरशास्त्रप्रवृत्तिर्यतेरस्तिचे-च्छवालङ्कारवत्... ना.प.५।११
(अथ)इतरः सव्यमंसमन्ववेक्षते कौ.उ.२।१५
इतरा गर्दभीतरो गर्दभः, इतरा विश्वम्भरीतरो विश्वम्भरः सुबालो. २।२
इतरा गौरितरोऽनड्वानितरा वडवेतरोऽश्वः सुबालो.२।२
इतरान्प्राणान् समखिदत् छान्दो.५।१।१२
इतरेण चतुर्थेनानिरुद्धनारायणेन विश्वान्यासन् मुद्गलो.२।४
इतरेण तु जीवन्ति यस्मिन्नेता-वुपाश्रितौ (प्राणापानौ) कठो.५।५
(अथ)इतरे दुःखमेवापियन्ति [बृ.उ.४।४।१४+ श्वेता.३।१०
(तथा)इतरोऽभोक्ता कृष्णो भवति गोपालो.१।११
इतश्चेतश्च सुव्यग्रं व्यर्थमेवाभिधावति महो.३।१८
इतस्ततश्चाल्यमानो यत्किंचित्प्राण-वायुना..स्रोतसा नीयते दारु.. २आत्मो.१८
इति क्षेत्रं तथा ज्ञानं भ.गी.१३।१९
इतिखल्वेतस्याक्षरस्योपव्याख्यानं छां.उ.१।१।१०
इतिगर्वदर्घौयावत्तावद्व्याप्तं व्योम... ग.शो.३।१३
इति गुह्यतमं शास्त्रं भ.गी.१५।२०
इति तान्प्रजापतिरब्रवीदेतै-मैत्रैर्नित्यं देवं स्तुवध्वम् नृ.पू.४।३६
इति ते ज्ञानमाख्यातं भ.गी. १८।६३
इति त्रिशङ्कोर्वेदानुवचनम् तैत्ति.१।१०
इति नु कामयमानः (संसरति) बृह.४।४।६
इति नु जातपुत्रस्याथाजातपुत्रस्याह कौ.उ.२।८
इति न्यमीमिषदा३इत्यधिदैवतम् केनो.४।४
(?) इति प्राचीनयोग्योपास्व तैत्ति.१।६।४
इति ब्रह्मवरं लब्ध्वा श्रुतयः... कृष्णमाराधयामासुः गोपीचं.२८
इति भगवतो वचो वेदयन्ते छां.उ.८।७।३
इति मत्वा न सज्जते भ.गी.३।२८
इति मत्वा भजन्ते मां भ.गी.१०।८
इति मन्द्र-मध्यम-तालज-ध्वनिभि-र्मनसा वाचोचार्य.. ना.प.४।४६
इति मानुषीः समाज्ञाः तैत्ति.३।१०।१
इति मां योऽभिजानाति भ.गी.४।१४
इति यः पूजयेन्नित्यं...ईश्वरं.. प्राप्नोति परमं पदम्। शिवो.७।४२
इति व्याहृतिं त्रैष्टुभं छन्दः पञ्चदशं स्तोमं..गंधघ्राणमितीद्रियाण्यभवन् २प्रणवो. ३
इतिशुश्रुम पूर्वेषांयेनस्तद्व्याचचक्षिरे केनो.१।४

इतिशक्तिमयं चेतोघनाहङ्कारतां गतम् ।
कोशकारकृमिरिव स्वेच्छया
याति बन्धनम् । महो.५।१२८
इति षोडशकलावृतस्य जीवस्या-
वरणनाशनम् कलिसं. ३
इतिषोडशकं नाम्नां (हरे रामेति)
नातः परतरोपायः.. कलिसं. ३
इतिसन्निविष्टो मोहः, पुनरेषः...
क्लिष्टो भवत्यनेकाध्यं.. महो. ५।९
इति ह प्रजापतिर्देवाननुशशास नृसिंहो.९।१०
(?) इति ह प्रतीकान्युदाजहार बृ.उ.६।२।३
इतिहभगवतोवाचोवेदयन्ते (मा.पा.) छां.उ.८।७।३
इति ह स्माह कौरव्यायणी पुत्रो वेदः बृह.५।१।१
इतिहासपुराणंपञ्चमंवेदानांवेदंपित्र्यं
राशिं दैवं निधिं (अध्येमि) छांदो. ७।१।२
इतिहासपुराणं पुष्पं ता अमृता आपः छांदो. ३।४।१
इतिहासपुराणाख्यमुपाङ्गं
च प्रकीर्तितम् सीतो. २१
इतिहासपुराणानां रुद्राणां शत-
सहस्राणि...भवन्ति अ.शिरः-७
इतिहासः पुराणं विद्या उपनिषदः..
[बृह.४।१।२+४।५।११ +मैत्रा. ...
इति होक्त्वा याज्ञवल्क्यो विजहार बृह.४।५।१५
इतीति न्यमीमिषदा३इत्यधिदैवतं केनो. ४।४
इतीमा महासंहिताः तैत्ति. १।३।४
इत्थम्भूतक्षयान्नित्यं जीवितं...
उड्याणंकुरुते यस्मात्..महाखगः वराहो. ५।६
इत्थम्भूतमतिः शास्त्रगुरुसज्जन-
सेवया । सरहस्यमशेषेण यथाव-
दधिगच्छति अक्ष्युप.१७
इत्थं क्रमाद्विवृद्धेन लयाभ्यासेन
योगिनः । भुञ्जते परमानंदं.. अमन.१।८२
इत्थं भस्म सुसंपाद्य शुष्कमादाय.. बृ.जा.३।३०
इत्था जहामि शपमानमिन्नु बा.मं.७
इत्था ददृशे भुवनानि विश्वा बा.मं.११
इत्था न कश्चोरणमाचचक्षे बा.मं.२
इत्यज्ञानविमोहिताः भ.गी.१६।१५
इत्यब्रवीन्मे विदग्धः शाकल्यः,
हृदयं वै ब्रह्मेति बृह.४।१।७
इत्यर्जुनं वासुदेवस्तथोक्त्वा भ.गी.११।५
इत्यहं वासुदेवस्य भ.गी.१८।७४
इत्याह भगवान्ब्रह्माणं नारायणः तुलस्यु.१८
इत्यां ते मयि दध इति पुत्रः कौ.उ.२।१५
इत्यां मे त्वयि दधानीति पिता कौ.उ.२।१५
इत्याद्यां विद्यामभिधायैतस्याः
शक्तिकूटं...लोपामुद्रेयम् त्रि.ता.१।१६
इत्युक्तानुशासनासि मैत्रेयि एतावद्‌रे
खल्वमृतत्वम् बृह.४।५।१५
इत्युभयमादिष्टं भवत्यध्यात्मं
चाधिदैवतं च छां.उ.३।१८।१,२
इत्येकं परब्रह्मरूपं सर्वभूताधिवासं
तुरीयं जानीते त्रि.ता.५।२१
(ॐ)इत्येतदक्षरं ब्रह्म, तदेवो-
पासितव्यम् तारसा.२।१
इत्येतद्ब्रह्मजानीयाद्यः स
मुक्तो न संशयः पं.ब्र.२४
इत्येतानुविधं संहितां सन्धीयमानां
मन्य इति ह स्माह बाध्वः २ऐत.२।३।३
इत्येव तदवोचं तदवोचम् (मा.पा.) छां.उ.३।१५।७
इत्येतदवोचं तदवोचम् छां.उ. ३।१५।७
इत्येवं निर्वाणानुशासनम् सुबालो. ७।३
(?)इदन्द्रो ह वै नाम, तमिदन्द्रं सन्त-
मिन्द्र इत्याचक्षते परोक्षेण २ऐत. ३।१४
इदमथर्वशीर्षं योऽधीते स पञ्चाथर्व-
शीर्षजपफलमवाप्नोति देव्यु. ३।४
इदमथर्वशीर्षंज्ञात्वायोऽर्चांस्थापयति देव्यु. २४
इदमद्य मया लब्धमिदं प्राप्स्यामि
सुन्दरम्..आत्मनोऽन्यन्नहि.. अ.पू.५।५८
इदमद्यमयालब्धमिदंप्राप्स्येमनोरथम् भ.गी.१६।१३
इदमन्तरं ज्ञात्वा स परमहंसः प. हं. ८
इदममनस्कमतिरहस्यं यज्ज्ञानेन
कृतार्थो भवति मं. ब्रा. ३।१
इदममृतमिदं ब्रह्मेदं सर्वं बृह.२।५।१
[२,३,४,५,६,७,८ ९,१०–१४
इदमेष्टोत्तरशतं न देयं..नास्तिकाय.. मुक्तिको.१।४७
इदमस्तीदमपि मे भ.गी. १६।१३
इदमस्तु ममेत्यन्तमिच्छां..तां
तीक्ष्णशृङ्खलां विद्धि महो. ६।५१

इदमहं मामसृतयोनौ	महाना.११।३
इदमादिपुरुषरूपमात्मनः...	ग.शो. ४।४
इदमाह महीपते	भ.गी. ११२१
इदमिति ह प्रतिजज्ञे, लोकान्वाव..	छांदो.४।१४।३
इदमिदं नेत्यनुभूतिरितिकैवेतीयम्	नृसिंहो.७।३
इदमिष्टमिदं नेति योऽश्नन्नपि न सज्जति। हितं सत्यं प्रियं वक्ति तमचिह्नं प्रचक्षते	ना.प.३।६३
इदमुक्तं मयाऽनघ	भ.गी. १५।२०
इदमेव पृथिव्या रूपमिदं दिवः	३ऐत. १।२।३
इदमेव मूर्तं यदन्यत्प्राणाच	बृह. २।३।४
इदमेवास्यतद्यज्ञोपवीतं यदात्मध्यानं, विद्या शिखा.. [कठश्रु. ९	सं. सो. १।३
इदमेवास्य तद्यज्ञोपवीतंयमात्माऽऽपः प्राश्याचम्यायं विधिः (यतीनां)	जाबालो. ५
इदमेवास्यतत्साधारणमन्नंयदिदमद्यते	बृह. १।५।२
इदममयोऽद्दोमयः (आत्मा, ब्रह्म)	बृ. उ. ४।४।५
इदं चक्षुः सोऽसावादित्यः	बृ.उ.३।१।४
इदं च परलोकस्थानं च	बृह.४।३।९,९
इदं च सर्वं चिन्मात्रं	ते.बिं.२।२५
इदं जगत् सर्वं व्याप्यैव परितिष्ठति	ग.शो.३।७
इदं जगदहं सोऽयं..स जीवन्मुक्तः	वराहो.४।३०
इदं ज्ञानमुपाश्रित्य	भ.गी.१४।२
इदं तद्भरतां यातं तृणमात्रंजगत्त्रयम्	महो.४।१३४
इदं तत्पुष्करं योऽयमाकाशः	मैत्रा.६।२
इदं तु ते गुह्यतमं	भ.गी.९।१
इदं ते नातपस्काय	भ.गी. १८।६७
इदं दिवस्तत्रायमन्तरेणाकाशः	३ऐत.१।२।३
इदं नावहेलनया भवितव्यम्	महो.४।२६
इदं निरालंबोपनिषदं योऽधीते गुर्वनुग्रहतः सोऽग्निपूतः..	निरालं. ३२
इदं पुच्छं प्रतिष्ठा	तैत्ति.२।१।१
इदं प्रणवमेवास्य तद्यज्ञोपवीतं य आत्मा	याज्ञव.१
इदं प्रत्याधानं प्राणस्थूणान्नं दाम	बृह.२।२।१
इदं प्रपञ्चं नास्त्येव नोत्पन्नंनोत्थितं..	ते.बिं.५।३१
इदं प्रपञ्चं यत्किञ्चित्...सर्वं शशविषाणवत्	ते.बिं.५।७५
इदं प्राप्स्यामि सुन्दरम् (मनोरथं)	अ.पू.५।५८
इदं प्राप्स्ये मनोरथम्	भ.गी.१६।१३
इदं ब्रह्म जुषस्व मे	महाना. ११।६
इदं ब्रह्म परं ब्रह्म सत्यं ब्रह्म...	ते.बिं.६।३५
इदं ब्रह्मेदं क्षत्रमिमे लोका इमे देवा इमे वेदा इमानि भूतानीदं सर्वं यदयमात्मा [बृ.उ.२।४।६+	४।५।७
इदं भगव इति (शिष्य आह)	छान्दो.६।१२।१
(अथ)इदंभस्मान्तं शरीरं [ईशा.१७+	बृह.५।१५।१
(एवं वा) इदं महद्भूतमनन्तमपारं	बृह. २।४।१२
इदं मानुषं सर्वेषां भूतानां मधु	बृह. २।५।१३
इदं मे तृतीयसवनमायुरनुसन्तनुते	छां.उ.३।१६।६
इदं यज्ञोपवीतं तु परमं यत्परायणं	ब्रह्मो. १५
इदं यज्ञोपवीतं तु...सन्धारयेद्यः स मुक्तिभाक्	परब्र. १९
इदं यदि तदेवास्ति तदभावादिदंनच	ते.बिं. ५।१५
इदं रम्यमिदं नेति बीजंतेदुःखसन्ततेः	अ. पू. ५।७०
इदं वक्ष्याम्यशेषतः	भ.गी. ७।२
इदं वस्त्विति विश्वासं नासावात्मन्युपाययौ	महो.२।१३
इदं वाव तज्ज्येष्ठाय पुत्राय पिता ब्रूयात्...	छान्दो.३।१०।५
इदंवाव तत्पुष्करं योऽयमाकाशोऽस्येमाः दिशः...अयमर्वाग्निः...प्राणादित्यावेतावुपासीत...	मैत्रा.६।२
इदं वाव तद्यदिदमस्मिन्नन्तःपुरुषज्योतिः..	छान्दो.३।१३।७
इदं वाव तद्योऽयं बहिर्धा पुरुषादाकाशः	छान्दो. ३।१२।७
इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधे पदम् [ऋ.मं.१।२२।१७+ना.पू.ता.३।१+ वनदु.४९,६२,७४+	वा.सं.५।१५ तै.उ.१।२।१३
इदं वै कुरुक्षेत्रं देवानां देवयजनं [रामो.१।१+	जाबा.१ तारसा.१।१
इदं वै तन्मधु दध्यङ्ङाथर्वणोऽश्विभ्यामुवाच [बृह.२।५।१६,	१७,१८,१९
इदं शरीरं कौन्तेय	भ.गी.१३।२
इदं शरीरं जरया ग्रस्तं गन्धर्वनगरोपमं..भवति	सामर.१०१
इदं शरीरं प्रकृतेर्विकारं प्रोच्यते	भवसं.२।७

(अथ)इदं शरीरं पञ्चवत्यङ्गुलात्मकं भवति. .प्राणो द्वादशांगुलाधिकः शाण्डि.१।४।२
इदं शरीरं स यथा प्रयोज्य आचरणे युक्तः छांदो.८।१२।३
इदं सत्यमिदं सत्यं सत्यमेनमिदि-होच्यते । अहं सत्यं परं ब्रह्म.. वराहो.२।३८
इदं सत्यं सर्वेषां भूतानां मधु बृह.२।५।१२
इदं सर्वमन्तकाले कालाग्निः सूर्यो-स्रानुज्ञातो ह्ययमात्मा ददाति नृसिंहो.२।७
इदं सर्वमसीत्येवैनं तदाह कौ.उ.१।६
इदंसर्वमसृजत्,यदिदंकिंच[तै त्ति.२।६ +छांदो.१।२।५
(?)इदं सर्वमाददाना यन्ति बृह.३।९।५
इदं सर्वमाददीय यदिदं पृथिव्यां...(मा.पा.) केनो.३।९
इदं सर्वं तस्योपव्याख्यानं [रामो.२।१ +ग.शो.१।१
इदं सर्वं तस्योपव्याख्यानं भूतं भवत्..ओङ्कार एव माण्डू.१
इदं सर्वं न मे किंचित्..न मेकालो.. नमेध्याता न मे ध्येयं...चिदहं ..स जीवन्मुक्त उच्यते ते.बिं.११।३०
इदं सर्वं यदयमात्मा [बृह.२।४।६+ ४।५।७
इदं सर्वं यदयमात्मा मायामात्रः नृसिंहो.५।१
इदं सर्वं यदयमात्मेति भावयन्कृत-कृत्यो भवति मं.ब्रा.२।८
इदं सर्वं स्वात्मानमेव करोति नृसिंहो.२।७
इदं हि मनसैवेदं मनुते गोपालो.१।१०
इदं हि सत्संविन्मयत्वाच्छून्यमेव नृसिंहो. ९।८
इदानीमस्मि संवृत्तः भ. गी. ११।५१
इदानीमस्मीत्यहमेक एव, स्थान-भेदादवस्थाभेदः मं.ब्रा.२।७
इद्धो अग्निरिव विश्वरूपः मैत्रा.७।१
इध्मस्येव प्रक्षायतो मातस्योच्छेषि.. सहवै.८
इन्द्र एकं सूर्य एकं जजान ऋ.मं.४।५८।४
[वा.सं.१७।९२+तै.आ.१०।१०।३ महाना.८।११
इन्द्रजालमिव मायामयम् मैत्रा.४।२
इन्द्रप्रजापतीद्वारगोपौ(ब्रह्मलोकस्य) कौ.उ.१।३
इन्द्रमग्निं च ये विदुः सिकता इव संयन्ति अरुणो.७
इन्द्रमेवाप्येति य इन्द्रमेवास्तमेति सुबालो.९।७
इन्द्ररूपिणमात्मानं भावयन्... यो.शि.५।५३
इन्द्रलोकेषु (देवलोकाः) गार्गि बृह. ३।६।१
इन्द्रवज्र इति प्रोक्तं मर्मजङ्घानुकीर्तनं क्षुरिको. १३
इन्द्रश्च विश्वे च देवाः, यज्ञश्च.. अरुणो. १
इन्द्रश्चैव प्रजापतिश्च, त्रयस्त्रिंशौ बृ. उ. ३।९।२
इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि [ऋ.मं. २।२१।६ कौ. उ. २।११
इन्द्रस्त्रिष्टुप्पञ्चदशो बृहद्ग्रीष्मः मैत्रा. ७।२
इन्द्रस्त्वं प्राणतेजसा । रुद्रोऽसि परिरक्षिता प्रश्नो. २।९
इन्द्रस्य प्रियं धामोपजगाम(प्रतर्दनः) कौ.उ.३।१
इन्द्रस्य वज्रोऽसि वार्त्रघ्नः शर्ममेभव आरु.३
इन्द्रस्यात्मानं दशधाचरन्तम् चित्स्यु. ११।१
इन्द्रस्यात्मानं शतधा चरन्तम् चित्स्यु.११।५
इन्द्रस्यात्मा निहितः पञ्च होता चित्स्यु. ११।३
इन्द्रस्याभययायासुरेभ्यः क्षयायेमा-मविद्यामसृजत् (बृहस्पतिः) मैत्री.७।९
इन्द्रस्यायं वज्रः कृतः सार्गलः सपरिश्रयः बृ.उ. ६।४।२३
इन्द्रं विचिक्युः परमे व्योमन् [तै.आ.३।११।९+ चित्स्यु.११।९
इन्द्रं राजानं सवितारमेतम् [तै.आ.३।११।४+ चित्स्यु.११।४
इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः साम. २।९७०
[ऋ.मं.१।७।१०× वनदु.३९ ५२,६४,७५
अ.वे.२०।३९।१
इन्द्रं शरणं प्रपन्नोऽभूवम् छां.उ.२।२२।३
इन्द्रः स चन्द्रः परमः परात्मा हेरम्बो.७
इन्द्रः सत्यादेव नेयाय, सत्यं हीन्द्रः कौ.उ. ३।१
इन्द्राग्नी मित्रावरुणौ...ते नो मुञ्चन्त्वेनसो.. सहवै.३
इन्द्रात् परितन्वं मम इति १ऐत.३।६।३
इन्द्रादयस्तामसराजसात्मिकाः पा.ब्र. २
इन्द्रादयो दिक्पतयोऽमृतान्धसो वृन्दाग्रगाः सिद्धगणाः ससिद्धाः १बिल्वो.४
इन्द्रादयोऽष्टौ दशमे (आवरणे) सूर्यता. ५।१
इन्द्रियग्रामपदयोः श्वासनिश्वास-पक्षयोः । सञ्छिन्नयोर्मनः पक्षी स्थिरः सन्नवसीदति अमन. २।८४

इन्द्रियग्राह्यनिर्मुक्तनिर्धनी निर्मला-
मृते। अमनस्के ह्रदे स्नातः
परामृतमुपाश्नुते — अमन. २।८९
इन्द्रियबिलेऽविवशः प्रणवाख्यं प्रणे-
तारं भारूपं (यः पश्यति) सोऽपि
..विशोको भवति — मैत्रा. ६।२९
इन्द्रियस्येन्द्रियस्यार्थे — भ.गी. ३।३४
(?)इन्द्रियं वीर्यमन्नाद्यं रसोऽजायत — छां.उ. ३।१।३
इन्द्रियाग्निषु जुह्वति — भ. गी. ४।२६
इन्द्रियाणां गतिरुपरमते — प.हंसो.३,९
इन्द्रियाणां निरोधेन रागद्वेषक्षयेण
च। अहिंसया च भूतानाम-
मृतत्वाय कल्पते [ना.प. ३।४५+ — भवसं. ५।९
इन्द्रियाणां पृथग्भावमुदयास्तमयौ
च यत्। पृथगुत्पद्यमानानां
मत्वा धीरो न शोचति — कठो. ६।६
इन्द्रियाणां प्रसङ्गेन दोषमृच्छति..
सन्नियम्य..सिद्धिं निगच्छति — ना.प. ३।३६
इन्द्रियाणां मनश्चास्मि — भ.गी.१०।२२
इन्द्रियाणां मनो नाथो मनोनाथस्तु
मारुतः। मारुतस्य लयोनाथस्तं.. — वराहो. २।८०
इन्द्रियाणां मनो भवति (नारायणः) — ना.उ.ता.३।१
(एवं) इन्द्रियाणां यथाक्रमेण शब्द-
स्पर्शरूपरसगन्धाश्चेति विषयाः — शारीरको. १
इन्द्रियाणां विचरतां...बलादाहरणं
तेषां प्रत्याहारः स उच्यते — जा.द. ७।१,२
इन्द्रियाणां हि चरतां — भ.गी. २।६७
इन्द्रियाणि तन्मात्रेषु (विलीयन्ते) — सुबालो. २।२
इन्द्रियाणि दशैकं च — भ.गी. १३।६
इन्द्रियाणि पराण्याहुः — भ. गी. ३।४२
इन्द्रियाणि प्रमाथीनि — भ. गी. २।६०
इन्द्रियाणि मनो बुद्धिः — भ.गी.३।४०
इन्द्रियाणि मनोबुद्धिकामक्रोधा-
दिकं जितम्। तेनैवविजितं सर्वं
नासौ केनापि बध्यते — यो. शि. १।३९
इन्द्रियाणि वाऽन्नं मनोन्नादंमनोवाऽन्नं — सुबालो. १४।१
इन्द्रियाणि समाहृत्य कूर्मोऽङ्गानीव.. — ना.प.३।७४
इन्द्रियाणि समाहृत्य मनसाऽऽत्मनि
धारयेत्। — जा.द.८।९

न्द्रियाणिसंयोज्यमहिमानंनिरीक्षेत — मैत्रा. ६।२१
इन्द्रियाणि हयानाहुः
[कठो. ३।४+पैङ्गलो.४।२+ — भवसं. २।११
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यः
[भ.गी.२।५८+२।६८+ — योगो. २३
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेषु — भ. गी.५।९
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यो यत्प्रत्याहरणं
...प्रत्याहारः — १यो.त. ६८
इन्द्रियार्थान् विमूढात्मा — भ. गी. ३।६
इन्द्रियार्थान् पञ्चस्वादूनि भवन्ति — मैत्रा. ६।१०
इन्द्रियार्थास्तद्वयो न स्पृशति — मैत्रा. ६।१०
इन्द्रियार्थेषु वैराग्यं — भ. गी. १३।९
इन्द्रियार्थैर्यदामुक्तोबाह्यज्ञानंनजायते — अमन. १।२१
इन्द्रियेण ते यशसा यश आदद
इत्ययशो भवति — बृह.६।४।७,८
इन्द्रियेण ते रेतसा रेत आददे — बृह. ६।४।१०
इन्द्रियेण ते रेतसा रेत आदधामीति
गर्भिण्येव भवति — बृह. ६।४।११
इन्द्रियेभ्यः परं मनः [भ.गी.३।४२+ — कठो.६।७
इन्द्रियेभ्यः परा ह्यर्था ह्यर्थेभ्यश्च
परं मनः [कठो.३।१०+ — गुह्यका.४१
इन्द्रियैरस्येन्द्रियाणि संस्पृश्य — कौ.उ.२।१५
इन्द्रियैर्बध्यते जीव आत्मा चैव
न बध्यते — यो.चू.८४
(?)इन्द्रियैर्मनसि सम्पद्यमानैः — प्रश्नो.३।९
इन्द्रियैर्विवशो भवेत्, तानि गाढं
नियम्यापि... — यो.शि.१।२७
इन्द्रेण मुखेन न वै देवा अश्नन्ति न
पिबन्ति, एतदेवामृतं दृष्ट्वा तृप्यन्ति — छान्दो.३।७।१
इन्द्रेणैव मुखेनैतदेवामृतं दृष्ट्वा तृप्यति — छान्दो. ३।७।३
(?)इन्द्रे बलं ददानीति — छां.उ.२।२२।५
इन्द्रो गणेशो विष्णुर्गणेशः सूर्योगणेशः — गणेशो.२।४
इन्द्रो जायते पुरुषोत्तमात् — कृ.पु.सिं.२
इन्द्रो न यक्षो वृषभस्तुराषाद् — बा.मं.४
इन्द्रोऽप्राप्यैव देवानेतद्भयं
ददर्श यथैव.... — छान्दो.८।९।१
इन्द्रो मायाभिः पुरुरूप ईयते — बृह. २।५।१५
[ऋक्सं.अ.४।७।३३ मं.६।४७।१८
इन्द्रो मायाभिः पुरुहूत ईडे — ग.पू.२।८

इन्द्रोऽयमस्य जायेयं सव्ये चाक्षिण्य-
वस्थिता। समागमस्तयोरेव.. मैत्रा.७।११
इन्द्रो राजा जगतो य ईशे
[तै.आ.३।११।६+ चित्यु.११।६
इन्द्रो वरुणः सोमो रुद्रः पर्जन्यो यमो
मृत्युरीशानः इति तस्मात्
इन्द्रात्परं नास्ति [बृ.१।४।११+ नृ.पू.२।४
इन्द्रो वै किल देवानामनुजावर आसीत् अव्यक्तो.८
इन्द्रो वैकुण्ठोऽपराजिता सेनेति वा...
अहमेतमुपासे बृह.२।१।६
इन्द्रो ह वै (हैव) देवानामभिप्रवव्राज
विरोचनोऽसुराणां तौहासंविदानौ छान्दो.८।७।२
इन्द्रो ह वै नामैष योऽयं दक्षिणे-
ऽक्षन्पुरुषः बृह.४।२।२
इम इति ह प्रतीकान्युदाजहार बृह.६।२।३
इम एव त्रयो लोकाः, एषु हीमे.. बृह.३।९।८
इममात्मानमोङ्कारं नो व्याचक्ष्व नृसिंहो.१।१
(एवमेव)इममात्मानमन्तकाले
सर्वे प्राणा अभिसमायान्ति बृह.४।३।३८
इममात्मानमाप्ततममुत्कृष्टतमं .. नृसिंहो.५।७
इममासन्यं प्राणमूचुस्त्वं न उद्गायेति बृ.उ.१।३।७
(अथ) इममेव नाप्नोद्योऽयं मध्यमः
प्राणस्तानि ज्ञातुं दध्रिरे बृह.१।५।२१
इममग्न आयुषे वर्चसे कृधि सहवै.६
इममेव नो भगवन्नोङ्कारमात्मान-
मुपदिशेति तथेति नृसिंहो.९।१
(अथ) इममेवाकाशमभिनिष्पद्यन्ते बृह.६।२।१६
इममेवोङ्कारविद्योतं तुरीयतुरीय-
मात्मानमनुष्टुभाऽन्विष्य नृसिंहो.६।२
इमंगुणसमाहार..समाधिरिति कथ्यते अ.पू.२।२८
इमं च लोकममुं च विज्ञानेनैव
विजानाति छान्दो.७।७।१
इमंचलोकममुंचेच्छतआशामुपास्वेति छांदो.७।१४।१
इमं च लोकममुंचेच्छेयेत्यथेच्छते छांदो.७।३।१
इमं चाकृत्रिमानन्दं..साधुसमभ्यसेत् ते.बिं. १।३८
इमं चामुं चामुष्मादादित्यात्प्रतायन्ते छांदो. ८।६।२
इमं चामुं चैवमेवैता आदित्यस्य
रश्मयउभौ लोकौ गच्छन्ति छांदो. ८।६।२
इमं प्राप्य भजस्व माम् भ. गी. ९।३३
इमं प्राप्स्ये मनोरथम् भ.गी.१६।१३
इमं राजर्षयो विदुः भ.गी. ४।२
इमं विवस्वते योगं भ. गी. ४।१
इमं मानवमावर्तं नावर्तन्ते छांदो.४।१५।६
इमं मे गङ्गे इति जलमादाय
[वासुदे.३+ गोपीचं.३+ ऊर्ध्वपुं.२
इमं मे गङ्गे यमुने सरस्वति ऋ.मं.१०।७५।५+
[तै.आ.१०।१।१३+ महाना. ५।२१
इमं मे वरुण श्रुधीहवमद्याचमृडय
त्वामवस्युरा... [ऋ.अ.१।२।१९
=मं. १।२५।१९ वनदु.४३।५६
इमं लोकं हीनतरं चाविशन्ति मुण्ड. १।२।१०
इमंसंसारमखिलमाशापाशविधायकं महो. ५।१३३
इमावक्षन् लोहिन्योराजयस्ताभिरेनं बृ.उ. २।२।२
इमा आपः सर्वेषां भूतानां मधु बृ. उ. २।५।२
इमा ऋचः सर्वकामार्थदाश्च ये ते
पठन्त्यमला यान्ति मोक्षम् रामपू.५।१०
इमा एव दिश आवरीवर्तिभुवनेष्वन्तः १ऐत.१।६.२
(अथ) इमा दशदश नाड्यो भवन्ति
तासामेकैकस्य द्वासप्ततिर्द्वासप्ततिः
शाखा नाडीसहस्राणि भवन्ति सुबालो. ४।३
इमा दिशः सर्वेषां भूतानां मधु बृह. २।५।६
इमा देवता अद उ आविरभिदेवतं १ऐत. १।५।१
(?) इमानि च क्षुद्रमिश्राणीव २ऐत. ५।३
इमानि पञ्च महाभूतानि पृथिवी
वायुराकाश आपोज्योतीँषि २ऐत. ५।३
इमा नु कं भुवना सीषधेम अरुणो. १
इमामधीयानस्तर्कागमपुराणकाव्यादि-
वागीश्वरो भवति तारोप.३
इमामस्य प्राशंजहि, येनेदंविभजामहे नीलरु.३।४
इमावेव गौतमभरद्वाजौ बृह.२।२।४
इमावेव वसिष्ठकश्यपौ बृह.२।२।४
इमावेव विश्वामित्रजमदग्नी बृह.२।२।४
(अविद्यां)इमां कथमहं हन्मीत्येषा
तेऽस्तु विचारणा महो.५।११५
इमां देवीमिह वेद सर्वे..न पुत्रदाराः.. इतिहा.८३
इमां महोपनिषदं ब्राह्मणो नित्यमधीते महो.६।८३
इमां रुद्राक्षजाबालोपनिषदं
नित्यमधीते... रु.जा.४५

इमाँल्लोकान् कामान्नीकामरूप्यनु-
सञ्चरन्, एतत्साम गायन्नास्ते तैत्ति.३।१०।५
इमां शान्तिमत्यन्तमेति [कठो.१।१७+ श्वेता.४।११
इमां विहाय सुधिया मदन्ती
परिस्नुता तर्पयतः स्वपीठम् त्रिपुरो.७
इमां सप्तपदां ज्ञानभूमिमाकर्णय...
नानया...मोहपङ्के निमज्जति महो.५।२१
इमाँल्लोकानीशत ईशनीभिः अ.शिर:.५
इमा इत्तदापो वरुणः पुनात्वघमर्षणः महाना.६।४
इमांस्त्वं व्याप्य तिष्ठसि भ.गी.१०।१६
(अथ)इमाः प्राण ते प्रजाः, आनन्द-
रूपास्तिष्ठन्ति प्रश्नो.२।१०
इमाः षोडशकलाः पुरुषायणाः पुरुषं
प्राप्यास्तं गच्छन्ति प्रश्नो.६।५
इमाः सोम्य नद्यः पुरस्तात्प्राच्यः
स्यन्दन्ते समुद्रमेवापियंति.. छान्दो.६।१०।१
(१)इमे अन्य उपरे विचक्षणं...
आहुरर्पितम् प्रश्नो.१।११
इमे जीवाः शरीरोपाधिं भुञ्जानाः
सुखं दुःखं प्राप्नुवंतो भवन्ति सामर.१०१
इमे नु लोकाश्च लोकपालाश्चान्नमेभ्यः
सृजा इति २ऐत. ३।१
इमे नूनमीदृशा अन्यादृशा इती-
हाग्नीनभ्यूदे छां.उ. ४।१४।२
इमे बाला कथं त्याज्या जीविष्यंति
मयाविना । मोहाद्विचिन्तयत्येवं
परमार्थौ न पश्यति शिवो. ७।१०५
इमौ स्थितावात्मशुची तथा मैत्रा. ६।३६
इयमस्मिन्स्थितोदारासंसारेपरिपेलवा महो. ३।८
इयमियं नेत्यवचनेनैवानुभवन्नुवाच नृसिंहो.७।३
इयमेवर्गग्निःसामतदेतदेतस्यां..अमिरमः छां.१।६।१
इयमेव पृथिवीतो हीदं सर्वमुत्तिष्ठति १ऐत.१.२।१
इयं पृथिवी सर्वेषां भूतानां मधु बृह. २।५।१
इयं ब्रह्मविद्येयं ब्रह्मविद्या भस्मजा.२।१६
इयं महोपनिषत्त्रैपुर्या यामक्षयं
परमो गीर्भिरीट्टे त्रिपुरो. १६
इयं राधा यश्च कृष्णो रसाब्धि देहश्चैकदा
कृष्णार्थं द्विधाऽभूत् राधिको. ५
इयं विद्युत्सर्वेषां भूतानां मधु बृह. २।५।८

इयं हि गुह्योपनिषत्सुगूढा गुह्यका. ७४
इडासि मैत्रावरुणी वीरे वीरम-
जीजनत..सा त्वं वीरवती भव बृह. ६।४।२८
इषुभिः पञ्चभिर्धनुषा च विध्यत्यादि-
शक्तिररुणा विश्वजन्या त्रिपुरो. १३
इषुभिः प्रतियोत्स्यामि भ.गी.२।४
इषे त्वोर्जे त्वा वायवस्थोपायवः स्थो
...इत्येवमादिं कृत्वा यजुर्वेदमधीते २प्रणवो. २१
इष्टफलमेवोदानः, स एनं यजमान-
महरहर्ब्रह्म गमयति प्रश्नो. ४।४
इष्टमेवानिष्टमिव भाति, अनादि-
संसार...भ्रमात् त्रि. म.ना.५।३
इष्टविषये बुद्धिः सुखबुद्धिः सर्वसारो. ५
इष्टं मनिषाण, अमुं मनिषाण
[तै.आ.३।१३।२ चित्सु. १ ३।३
इष्टः स्यामिति मे मतिः भ.गी. १८।७०
इष्टानिष्टोपपत्तिषु भ.गी. १३।१०
इष्टान् भोगान् हि वो देवाः भ.गी. ३।१२
इष्टापूर्तं बहुधाजातं जायमानं..बिभर्ति महाना.१।६
इष्टापूर्तं मन्यमाना वरिष्ठं नान्यच्छ्रेयो.. मुण्ड.१।२।१०
(१)इष्टापूर्ते कृतमित्युपासते प्रश्नो.१।९
इष्टापूर्ते पुत्रपशूंश्च सर्वान्, एतद्वृंक्ते.. कठो.१।८
(एवं) इष्टापूर्तैः शुभाशुभैर्न लिप्यते ब्रह्मो.१
इष्टासुकृते त आददेऽसाविति बृह. ६।४।१२
इष्टोऽसि मे दृढमिति भ.गी.१८।६४
(१)इष्टेष्वभिष्वङ्गः मैत्रा.३।५
इष्ट्वा च शक्तितो यज्ञैः (सन्यासात्पूर्वं) कठश्रु.१
इह कर्मोपभोगाय तैः संसरति,
सोऽवशः मैत्रा.६।३०
इह चामुत्र चान्वेति विद्वान्देवासुरा-
नुभयान् अरुणो.४
इह चामुत्र वा काम्यं...निष्कामं
ज्ञानपूर्वं तु भवसं.५।७
इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति केनो.२।५
इह चेदशकद्बोद्धुं प्राक् शरीरस्य
विस्रसः । ततः सर्गेषु लोकेषु कठो.६।४
इहानादिसंसारे सञ्चिताःकर्मकोटयो-
ऽनेनैव विलयं यान्ति पैङ्गलो.३।३
इहापि सन्मात्रम्, असदन्यत् नृसिंहो.९।६

इहेदं सर्वं दृष्ट्वा स प्रपञ्चहीनोऽथ.. नृसिंहो.३।३
इहैकस्थं जगत् कृत्स्नम् भ.गी.११।७
इहैव तद्गायत्र्या..सोऽस्याएनत्प्रथमं
पदमाप्नुयात् गायत्र्यु.४
इहैव तैर्जितः सर्गः भ.गी.५।१९
इहैव निहितं गुहायां (ब्रह्मरूपं) मुंड.३।१।७
इहैव सन्तोऽथ विद्मस्तद्वयं न चेदवे-
दीर्महती विनष्टिः बृह.४।४।१४
इहैव मा प्रातरुपसमीयात छां.उ.१।१२।३
इहैव सर्वे प्रविलीयन्ति कामाः मुंड.३।२।२
इहैवान्तःशरीरे सोम्य स पुरुषो
यस्मिन्नेताः... प्रश्नो.६।२

ई

ईकाररूपिणि सोमामृतावयव-
दिव्यालङ्कार..ऽलंकृता सीतो. २
ईक्षणादिप्रवेशान्ता सृष्टिरीशेन
कल्पिता..संसारो कल्पितः.. वराहो. २।५४
ईक्षते योगयुक्तात्मा भ. गी. ५।२९
ईदृशी भूतमायेयं यात्मनाशेनहर्षदा महो. ५।१११
ईप्सितानीप्सिते न स्तो यस्यान्तर्वर्ति
दृष्टिषु..स जीवन्मुक्त उच्यते महो. २।४६
ईयुष्टे ये पूर्वतरामपश्यन्व्युच्छन्ति चित्त्यु. १८।१
ईश-केन-कठ-प्रश्न-मुण्ड-माण्डूक्य-
तित्तिरिः (उपनिषन्नामानि) मुक्तिको.१।३०
ईशं तं ज्ञात्वा अमृता भवन्ति श्वेता. ३।७
ईशः पञ्चीकृतभूतानामपञ्चीकरणं
कर्तुं सोऽकामयत पैङ्गलो. ३।३
ईशः पञ्चीकृतमहाभूतलेशानादाय
व्यष्टिसमष्ट्यात्मकस्थूलशरी-
राणि यथाक्रममकरोत् पैङ्गलो. २।१
ईशः सर्वस्य जगतः प्रभुः प्रीणाति.. महाना.१६।५
ईशाज्ञया मायोपाधिरव्यक्तसमन्वितो
...प्राज्ञत्वमगमत् पैङ्गलो. २।६
ईशाज्ञया विराजो व्यष्टिदेहं प्रविश्य
...वैजसत्वमगमत् पैङ्गलो.२।६
ईशाज्ञया सूत्रात्मा व्यष्टिसूक्ष्मशरीरं..
तैजसत्वमगमत् पैङ्गलो. २।६
ईशाधिष्ठितावरणशक्तितो...
महदाख्या विक्षेपशक्तिः... पैङ्गलो. १।३
ईशानमस्य जगतः स्वर्दृशमीशान-
मिन्द्रतस्थुषः।..तस्मादुच्यत ईशानः
[ऋ.मं.७।३२।२२+वा.सं.२७।३५ अ.शिरः३।५
ईशानं भूतभव्यस्य नततोविजुगुप्सते कठो.४।५+
(ईशानो.. मा.पा.) बृह.४।४।१५
ईशानं परमंविद्याप्रेरकंबुद्धिसाक्षिणं पं. ब्र. १४
ईशानं भूतभव्यस्य (मा.पा.) कठो. ४।१२
ईशानं वरदं देवमीड्यम् श्वेता. ४।११
ईशानः प्रभुरव्ययः आगम.१०
ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः
सर्वभूतानां.. [महाना.१०।८+ तै.आ.१०।४७।१
ईशानादाकाशं, तस्माच्छान्त्यतीता बृ.जा.१।६
ईशानेत्रिशिरोदेशं(भस्मलेपनं)[बृ.जा. ३।३१+४।१
ईशानो ज्योतिरव्ययः श्वेता.३।१२
ईशानो भूतभव्यस्य न ततो
विजुगुप्सते कठो.४।१२
ईशानो भूतभव्यस्य स एवाद्य
स उ श्वः कठो.४।१३
ईशानोभूतभव्यस्यसर्वेषां देवयोगिनां पं.ब्र.१
ईशा वा सर्वमिदं प्रयुक्तम् अ.शि.२
ईशावास्यबृहदारण्यजाबालहंसपरमहं-
ससुबालमन्त्रिकानिरालम्बत्रिशिखी-
ब्राह्मणमण्डलब्राह्मणाद्वयतारकपैङ्गल-
भिक्षु--तुरीयातीताध्यात्म--तारसार-
याज्ञवल्क्य-शाट्यायनी-मुक्तिकानां
शुक्लयजुर्वेदगतानामेकोनविंशति-
सङ्ख्याकानामुपनिषदां
पूर्णमद इति शान्तिः मुक्तिको.१।५४
ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च.. ईशा.१
ईशो यस्माद्धितं वितत्य.. भूयः
पराय स्वाहा पारमा.१।४
ईश्वरकृपया परमपरिपक्वचित्ता
जानन्ति, नान्ये जानन्ति सि.सा.१।१
ईश्वरमासस्तुरीयः नृसिंहो.१।५
ईश्वरत्वमवाप्नोति सदाभ्यासरतः.. ब्र.वि.२५
ईश्वरपूजनं नाम प्रसन्नस्वभावेन..
विष्णुरुद्रादिपूजनम् शाण्डि. १।२।१
ईश्वरश्चतुरूपो मकार एव नृसिंहो.२।६

ईश्वरस्य दर्शनयोग्यं भवति राधोप.२।१
ईश्वरस्य महामाया तदाज्ञा-
वशवर्तिनी त्रि.म.ना.४।८
ईश्वरः परमो देवो मकारः ब्रह्मवि.६
ईश्वरः सर्वभूतानाम् महाना.१०।८
[+भ.गी.१८।६१+ नृ.पू.१।६
ईश्वराधिष्ठितं कर्म फलतीह
शुभाशुभम् शिवो.७।११३
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये... श्रीसू.९
[ऋ.खि. ५।८७।१०+ महाना. ५।७
ईश्वरो जीवकलया प्रविष्टो
भगवानिति याज्ञव.७
ईश्वरो ह तथैव स्यात् बृ.उ.१।४।८
ईश्वरोऽहमहं भोगी. भ.गी.१६।१४
ईश्वरौ जनयितवै औक्षेण वार्षभेणवा बृह.६।४।१८
ईश्वरौ जनयितवै [बृह.६।४।१४, १५,१६।१७
ईहते कामभोगार्थं भ.गी. १६।१२
ईहानीहामयैरन्तर्याचिद्वावलितामलैः १सं.सो. २।२९
ईहितानीहितैर्मुक्तो हेयोपादेयवर्जितः १सं.सो.२।५१
ईहितानीहितैर्मुक्तोनशोचतिनकांक्षति महो. ६।६४

उ

उकारतुरीयांशा चतुर्थी भूमिका वराहो. ४।१
उकारमूर्तिः श्वेताङ्गी तार्क्ष्यवाहिनी..
सावित्री भवति शाण्डि.१।६।१
उकारवाच्यउपेन्द्रस्वरूपोहरिनायकः तारसा. ३।८
उकारश्चन्द्रसङ्काशः [ब्र.वि. ७+ १प्रणवो. ७
(?) उकारश्चापि तैजसं आगम. २३
उकारस्तूत्तरःस्मृतः(ॐकारस्य पक्षः) नादबि. १
उकारस्तैजसः स्मृतः। प्राज्ञो मकारः अक्ष्युप. ४७
उकारः शतावयवान्वितः तुरीयो.१
उकारः सहस्रावयवान्वितः ना. प. ८।२
उकारः सात्त्विकः शुक्लो विष्णुः...
[ध्या.बि. १३+ यो. चू. ७५
उकाराक्षरसम्भूत उपेन्द्रोहरिनायकः तारसा. २।२
उकाराक्षरसम्भूतःशत्रुघ्नस्तैजसात्मकः रामो. १।३
उकाराक्षरसम्भूतातेजसःकामराजका श्रीवि-ता.१।३
उकारे जाग्रत्तैजसो मकारे जाग्रत्.. प.हं.प. १०
उकारेणाविचिकित्सन्नशरीरोऽनिन्द्रियो
निरिन्द्रियो प्राणो... नृसिंहो. ७।४।६
उकारेतु लयं प्राप्ते द्वितीये परमां-
शके। द्यौः सूर्यः... ध्या. बिं. ११
उकारे लीयते हरिः, मकारे..रुद्रः यो. चू. ७७
उकारे विष्णुराश्थितः। मकारे..रुद्रः ब्र. वि. ७१
उकारः कण्ठतः स्वप्ने मकारो हृदि यो.चू. ७४
उकारो द्वितीयकूटाक्षरो भवति श्रीवि.ता. १।२
उकारो द्वितीयाक्षरो भवति
[रामो. ता. १।२+ तारसा. २।१
(?)उकारो द्वितीया मात्रा मांडू.१०
उकारो वामदेवः, अघोरो मकारः.. ना.पू.ता.१।३
(?)उक्तमवरं येषु कर्म मुण्ड.१।२।७
उक्तविकल्पं सर्वमात्मैव मं.ब्रा.१।५
उक्तानुशासनाऽसि मैत्रेयि बृ.उ.४.५।१५
उक्त्वा तूष्णीं बभूव ह भ.गी.२।९
उक्थमिति वै प्रजा वदन्ति १ ऐत. १।२।१
उक्थस्य सायुज्यं सलोकतां जयति
य एवं वेद बृह.५।१३।१
उक्थं प्राणो वा उक्थम् बृह.५।१३।१
उक्थं ब्रह्मेति ह स्माह शुष्कभृङ्गार-
स्तदृगित्युपासीत कौ.उ.२।६
उग्रत्वाद्वीरत्वान्महत्वाद्विष्णुत्वा-
ज्ज्वलनत्वात्.. एतद्ब्रह्म नृसिंहो. ७।५
उग्रमनुग्रं वीरमवीरं..नृसिंहमनृसिंहं
भीषणमभीषणं..बुबुधिरे नृसिंहो. ६।१
उग्रमित्याह उग्रःखलुवाएषमृगरूपत्वात् अव्यक्तो. ३
उग्रं च बलिश्च पुरस्ताज्ज्योतिः अ.शिरः. १
उग्रं पश्ये राष्ट्रभृत्किल्बिषाणि सहवै. ५
उग्रं प्रथमस्याद्यं ज्वलद्वितीयस्याद्यं
नृसिंहं तृतीयस्याद्यं मृत्युं चतुर्थ-
स्याद्यं साम जानीयात नृ. पू. १।४
उग्रं वीरं महाविष्णुं [त्रि.म.ना.७।१०;
[वज्रपं. २+ वनदु. ८८
उग्रः खलु वा एष मृगरूपत्वात् अव्यक्तो. ३
उग्रोभवश्चरुद्रश्चससुरःसासुरस्तथा मंत्रिको. १२
उग्रो न्वहं तवसावस्युरद्धा वा. मं.९
उद्गगीथा चेति स उद्गीथः बृ.उ.१।३।२३

उच्चाटयेद्विभीतैश्च (हुनेत्) ग. पू. २।१३
उच्चारयेत्परांशक्तिंब्रह्मरन्ध्रनिवासिनीं यो. शि. ६।१९
उच्चारितमात्र एव सर्वं शरीरं
द्योतयति (ॐ) मैत्रा. ७।११
(यस्मात्) उच्चार्यमाण एव..अन्तो
नोपलभ्यते तस्मादुच्यतेऽनन्तः बटुको. २०
(यस्मात्) उच्चार्यमाण एव क्रन्दते...
तस्मादुच्यते शुक्लम् बटुको. २०
(यस्मात्) उच्चार्यमाण एव..त्रायते
च तस्मादुच्यते तारम् बटुको. २०
(यस्मात्) उच्चार्यमाण एवाव्यक्ते
द्योतयति तस्मादुच्यते वैद्युतम् बटुको. २०
(यस्मात्) उच्चार्यमाण एव..प्रणाम-
यति.. तस्मादुच्यते प्रणवः बटुको. २०
(यस्मात्) उच्चार्यमाणएव प्राणानूर्ध्व-
मुत्क्रामयति..ओङ्कारः बटुको. २०
(यस्मात्) उच्चार्यमाण एव सर्वा-
ल्लोकान्व्याप्नोति...सर्वव्यापी बटुको. २०
(यस्मात्) उच्चार्यमाण एव सूक्ष्मः..
तस्मादुच्यते सूक्ष्मम् बटुको. २०
उच्चावचमीयमानः बृ.उ. ४।३।१३
उच्चैरुच्चारणं यथोक्तफलं (जपकर्म) शाण्डि. १।२।१
उच्चैर्जपश्च सर्वेषां यथोक्तफलदः.. जा. द. २।१६
उच्चैर्जपादुपांशुश्च सहस्रगुण उच्यते जा. द. २।१५
उच्चैःश्रवसमश्वानाम् भ.गी. १०।२७
उच्चैः पदाय परया प्रज्ञया वासना-
गणात्.. चेतोवृत्तिं पृथक्कुरु महो. ५।१७५
(तत्र) उच्छास्त्रमनर्थाय परमार्थाय
शास्त्रितम् भवसं. १।४७
उच्छास्त्रं शास्त्रितं चेति द्विविधं
पौरुषं स्मृतम् भवसं. १।४७
उच्छ्वासाविष्टम्भनेनोर्ध्वमुत्क्रान्तः मैत्रा. २।२
उच्छ्वसिते तमो भवति अ.शिरः.३।११
उच्छिन्नसर्वसङ्कल्पोनिःशेषाशेषचेष्टितः
[वराहो. २।८+ अमन. २।२२
उच्छिष्टमपि चामेध्यं भ.गी. १७।१०
उच्छिष्टं वै मे पीतं स्यादिति होवाच छां.उ. १।१०।३
उच्छिष्टं शिवनिर्माल्यंवमनंमृतकर्पटम् इतिहा. ५६
उच्छिष्टोपहतमित्यनेन तत्पावयेत् मैत्रा. ६।९
उच्यते यः प्राणोऽपानःसमानो व्यानः मैत्रा. २।६
उज्जीर्यते शरीरस्थमुदानेन नमस्त्वा त्रि. ब्रा. २।८५
उज्ज्यं धनुरधिज्यं कृत्वा बृ.उ.३।८।२
उज्ज्वलशामोदानन्दासनदानमच्यम् ...
उञ्छवृत्तिमुपयुञ्जानाः.. आश्रमो. २
उड्डियाणोऽप्ययं बन्धो मृत्युमातङ्ग-
केसरी। बध्नाति हि शिरो जातं.. ध्या. बिं. ७७
उड्डियानं तदेव स्यात्तत्र बन्धोविधीयते ध्या. बिं. ७६
उड्डियानो ह्यसौ बन्धो मृत्युमातंग-
केसरी। तस्य मुक्तिस्तनोःकायात् वराहो. ५।७
उड्डीयानं तु सहजं गुरुणा कथितं.. यो.शि.१।१०७
उड्याणपीठंजगदाकर्षणसिद्धिदंभवति सौभाग्य. २५
उड्याणं (उड्डियाणं) कुरुते यस्मात् ध्या. बिं. ७५
उड्यानाख्यं महापीठमुपरिष्टात्
प्रतिष्ठितम् [यो.शि. १।१७५+ ५।१२
उड्यानाख्योहि बन्धोऽयंयोगिभिः.. १यो.त.१२०
उत तमादेशमप्राक्ष्यः छां.उ. ६।१।२
उतत्वः पश्यन्नददर्शवाचमुतत्वः
शृण्वन्.. [ऋक्सं. १०।७१।४ सर. २२
उतत्वा विश्वाभूतानि तस्मै.. ते नमः नीलरु. २।२
उत वा षड्वा मनसोत क्लृप्ताः
[तै. आ. ३।११।५+ चित्यु. ११।५
उत ह्येवंवित्परो भवति बृह. ६।४।१२
उतामृतत्वस्येशानोयदन्नेनातिरोहति
[ऋक्.अ.८।४।१७=मं.१०।९०।२ वा. सं. ३१।२
चित्यु.१२।१+सुबालो.६।२ पु. सू. १।२
उताविद्वानमुं लोकं प्रेत्य तैत्ति. २।६
उतेवमहाब्राह्मणउतेवोच्चावचंनिगच्छति बृह.२।१।१८.
उतेव स्त्रीभिः सह मोदमानः बृह. ४।३।१३
उतेवोच्चावचं निगच्छति बृह. २।१।१८
उतैनं गोपा अदृशन्नदृशन्नुदहार्यः सूर्यता. १।४
[वा.सं. १६।७+तै.सं.४।५।१।३
उतैनंविश्वाभूतानिसदृष्टोमृडयातिनः सूर्यता. १।४
[तै.सं.४।५।१।३
उतो जरन्तं न जहात्येकम् चित्यु. १४।१
[तै. आ.३।१४।१
उतोबहूनेकमहर्जहार[तै.आ.३।१४।२ चित्यु. १४।२

उत्कर्षति ह वै ज्ञानसन्ततिं समानश्च भवति [माण्डू. १०+	नृसिंहो. २।५
उत्कर्षादुभयत्वात्स्थूलत्वात्सूक्ष्मत्वा-त्साक्षित्वाच्चोत्कर्षति ज्ञानसन्ततिं	नृसिंहो. २।५
उत्कर्षादुभयत्वाद्वा	माण्डू. १०
(?) उत्कर्षो दृश्यते स्फुटम्	आगम. ११२०
उत्कृष्टतम एतदेव	नृसिंहो. ५।६
उत्कृष्टतमं महामायं महाविभूति	नृसिंहो. ५।७
उत्कृष्टतमार्थं आत्मन्येव नृसिंहे देवे ब्रह्मणि वर्तते	नृसिंहो.५।३
उत्कृष्टत्वादुत्पादकत्वादुत्प्रवेष्टृत्वा-दुत्थापयितृत्वात्..नृसिंहमन्विष्य	नृसिंहो. ७।१
उत्क्रामन्तं स्थितं वाऽपि	भ.गी. १५।१०
उत्क्रमणेन सापोद्यं अविष्टार्थान्तं सौम्यम्। तत्रैकमात्मनो..	मैत्रा. ६।१४
उत्क्षिप्य वायुमाकाशं...रेचकस्येति लक्षणम्	अ. ना. १२
उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः	भ.गी. १५।१७
उत्तमः समानानां भवति	सहवै. १८
उत्तमा तत्त्वचिंतैव मध्यमं शास्त्रचिन्तनम्	मैत्रे. २।२१
उत्तमाधमभावश्चेत्तेषां स्यादस्ति तेन किम्। स्वप्नस्थराज्यभिक्षाभ्यांप्रबुद्धः..	वराहो. २।५८
उत्तमे (प्राणायामे) त्रिगुणाः प्रोक्ताः (मात्राः ३६)	यो. चू. १०४
उत्तमे शिखरे जाते भूम्यांपर्वतमूर्धनि	महाना .११।८
उत्तमौजाश्च वीर्यवान्	भ. गी. १।२
उत्तमे (प्राणायामे) स्थानमाप्नोति	यो. चू. १०५
(?)उत्तरत उदेता दक्षिणतोऽस्त-मेतामरुतामेव.. [छां.उ. ३।९।४+	३।१०।४
(?) उत्तरत उद्यन्ति	मैत्रा. ७।४
(?) उत्तरतोऽस्तमेता [छां.उ.३।७।४ +३।८।४	
उत्तरं त्वमूर्तिमदमनस्कमित्युच्यते	अद्वयता. ७
उत्तरं व्यानस्य रूपं चैतेषां प्रसूतिरेव..	मैत्रा. २।७
उत्तरा चतुर्थी कुक्षिर्भवति	गायत्रीर. ३
उत्तरामुखो भूत्वा भुवरिति व्याहृति-र्जागतं छन्दः सामवेदः..	चतुर्वे. १
उत्तराभिमुखो भूत्वा स्वरिति व्याहृतिर्जागतं छन्दः..	महो. १।४
उत्तरायां ज्ञानस्थानं (शिवस्थानं)	भस्मजा.२।९
उत्तरार्धेन तं सिंहमाकृष्य	नृसिंहो. ७।१
उत्तरासङ्गमेव च	कठश्रु. ४
उत्तरा हनुरुत्तररूपम्	तैत्ति. १।३।७
(अथ) उत्तरेण तपसा ब्रह्मचर्येण... आदित्यमभिजयन्ते	प्रश्नो.१।१०
उत्तरेण येन देवा यान्ति	अ. शिरः.५
उत्तरे तु सुषुम्णाया इडाख्या निवसत्यसौ	वराहो.५।२६
उत्तरो विकारोऽस्यात्मयज्ञस्य	मैत्रा. ६।१०
उत्तानबिल्वपत्रं च यः कुर्यान्मम मस्तके। मम सायुज्यमाप्नोति...	२बिल्वो. ११
उत्तानबिल्वपत्रेण पूजयेत्सर्वसिद्धये	२बिल्वो. १४
उत्तानभागपर्णेन..न्युब्जमर्पयेत्	२बिल्वो. २८
उत्तानस्त्वाङ्गिरसः प्रतिगृह्णातु	चित्यु.१०।२,५
उत्तानायाङ्गीरसायानः	चित्यु. १०।४
उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्यवरान् निबोधत	कठो. ३।१४
उत्तिष्ठत मा स्वप्त,अग्निमिच्छध्वं..	अरुणो. १
उत्तिष्ठन् परिचरिता भवति	छांदो.७।८।१
उत्तिष्ठ पुरुष हरितपिंगल लोहिताक्ष देहि देहि ददापयिता मे शुध्यंतां	महाना.१४।११
उत्तिष्ठातो विश्वावसोऽन्यामिच्छ प्रफर्व्यां सञ्जायां पत्या सह	बृह. ६।४।१९
उत्तिष्ठातो...प्रपूर्व्यां सञ्जायां(मा.पा.)	बृ.उ.६।४।१९
उत्तिष्ठोत्तिष्ठ वरं वृणीष्वेति राजान-मब्रवीत् (शाकायन्यः)	मैत्रे. १।१
उत्थानं चोत्तमं विदुः (प्राणायामकर्तुः)	जा. द. ६।१४
उत्थानं वपुषो यस्य स उत्तमः (प्राणायामः)	त्रि.ब्रा. ११२
उत्थाप्य गां प्रयत्नेन मूत्रमाहरेत्	बृ.जा. ३।६
उत्थितानुत्थितानेतानिंद्रियारीन् पुनः पुनः। हन्याद्विवेकदण्डेन..	महो. ६।२१
उत्पत्तिप्रणवो दीर्घप्लुतविराट्	तुरीयो. १
उत्पत्तिमायतिस्थानंविभुत्वंचैवपंचधा। अध्यात्मं चैव प्राणस्य विज्ञायामृतमश्नुते	प्रश्नो.३।१२
उत्पत्तिस्थितिसंहारस्फूर्तिज्ञानविव-र्जितम्। एतद्रूपं समायातः स कथं मोहसागरे। निमज्जति...	यो.शि.१।२१

उत्पत्तिस्थितिसंहारकारिणी
  त्रिकूटा मूलप्रकृतिसंज्ञिता श्रीवि.ना.१।५
उत्पत्तिस्थितिसंहारकारिणी सर्वदेहि-
  नाम् । सा सीता भवति ज्ञेया... रामो.५
उत्पन्नवैराग्यबलेन योगीध्यायेत्परं ब्रह्म भवसं. ३।३२
उत्पन्नशक्तिबोधस्य.. योगिनः
  सहजावस्थास्वयमेव प्रकाशते वराहो.२।७७
(?) उत्पत्स्यन्तेऽपि चैवान्ये (जीवाः) महो.५।१३७
उत्पथवारकत्वादुद्भासकत्वात् ..
  ओङ्कारेणेममात्मानं ब्रह्म.. नृसिंहो.७।१
उत्पद्यन्ते विलीयन्ते तथा तस्यां जग-
  त्यपि । ज्वलतः पावकाद्यद्वत्.. गुह्यका.२७
उत्पन्नसहजानन्दःसदाभ्यासरतः.. अमन.२।९९
उत्पन्ने तत्त्वविज्ञानेप्रारब्धंनैव मुञ्चति ना.बिं.२२
उत्पलमिव तिष्ठासेत् सुबालो.१३।३
उत्पादस्याप्रसिद्धत्वादजं सर्वमुदाहृतम् अ.शां.३८
उत्पाद्यमाना रागाद्या विवेकज्ञान-
  वह्निना । यदा तदैव दह्यन्ते
  कुतस्तेषां प्ररोहणम् वराहो.३।२४
उत्प्रेरकत्वादुत्थापयितृत्वात् ..
  ओंकारेणेममात्मानं.. नृसिंहो.७।१
उत्वा मदन्तु सोमाः कृणुष्व राधो-
  अद्रिवः । अव ब्रह्मद्विषो जहि वनदु.६३
 [ऋ.सं.अ.६।४।४२=मं.८।६४।१+ अ.वे.२०।९३।१
उत्सन्नकुलधर्माणां भ.गी. १।४४
उत्सन्नस्यात्मबोधस्य ह्युदासीनस्य.. अमन.२।३५
उत्सन्नाग्निरनग्निको वा (प्रव्रजेत्) ना.प. ३।७७
उत्साद्यन्ते जातिधर्माः भ. गी. १।४३
उत्सीदेयुरिमे लोकाः भ. गी. ३।२४
उत्सेक उदधेर्यद्वत् अद्वैतो. ४१
उदकमाहारयाञ्चकार बृ. उ. ३।२।४
उदकुम्भं सपात्रमुपनिधाय कौ.उ. २।१५
उदगयन आपूर्यमाण पक्षस्यपुण्याहे बृ. उ. ६।३।१
उदगादयमादित्यो विश्वेनसहसासह ऋ.मं.१।५०।१३
 [अ.वे.१७।१।२४+ सूर्यता. २।१
उदपात्रे जलतीरे केतनं २सं.सो. १।३
उदयाद्रिसमारूढमुदयन्तं...
  काश्यपं भास्करं ध्यात्वा सू.ता. १।१८
(?) उदरपात्रं पात्राणि वा (यतीनां) आरु. ५

उदरमन्तरंकुरुतेऽथतरयभयं भवति तैत्ति. २।७
(?) उदरस्थोऽथवा यः पचत्यन्नं मैत्रा. ६।१७
उदरं ब्रह्मेति शार्कराक्ष्या उपासते १ ऐत.१।४।१
उदरे गार्हपत्यः, हृदि दक्षिणाग्निः गर्भो. ११
उदरे सकले कर्ण्यां..व्यानः
  श्रोत्राक्षिमध्ये च ककुद्यां.. जा. द. ४।२७
उदशराव आत्मानमवेक्ष्य.. छां. उ. ८।८।१
(?) उदस्मात्प्राणाः क्रामंत्याहो३नेति बृ.उ.३।२।११
उदात्तानुदात्तयोरुदात्तं सेवेत संहितो. ३।३
उदान ऊर्ध्वगमनं करोति... जा. द. ४।३२
उदानमन्नेनाप्यायस्व महाना. १६।४
उदानमूर्ध्वगंकृत्वा प्राणेनसहवेगतः ।
  बन्धोऽयं सर्वनाडीनां.. वराहो. ५।४४
उदानमेवाप्येति य उदानमेवास्तमेति सुबालो. ९।४
उदानसंज्ञोविज्ञेयः पादयोर्हस्तयोरपि जा.द. ४।२९
उदानः कण्ठमाश्रितः अ. ना. ३५
उदानः सर्वसन्धिस्थः..हस्तयोरपि त्रि. ब्रा. २।८१
उदाने तृप्यति त्वक्तृप्यति छांदो.५।२३।२
उदाने तृप्यति वायुस्तृप्यति छांदो.५।२३।२
उदाने निविष्टोऽमृतं जुहोमि महाना. १६।२
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकं महो. ६।७१
उदारःपेशलाचारःसर्वाचारानुवृत्तिमान् महो. ६।७०
उदाराः सर्व एवैते भ. गी. ७।१८
उदासीनो गतव्यथः भ.गी.१२।१६
उदासीनवदासीनं (नः) [भ.गी.७।१८ +१४।२३
उदासीनस्ततो भूत्वा ना. बिं. ४०
उदासीनंध्रुवंहसं स्नातकाध्वर्यवोजगुः मंत्रिको. ८
(?) उदिति नाम स एष सर्वेभ्यः
  पापेभ्य उदितः छां. उ. १।६।७
उदितोऽस्तंगत इव ह्यस्तंगतइवोदितः अ. पू. ३।११
उदितो हंस ऋषिः,स्वयम्भूस्तिरोदधे पा. ब्र. ६
उदितौदार्यसौन्दर्य...समाधिरभि-
  धीयते महो. ४।६१
उदीची दिक् कला (ब्रह्मणः) छां. उ. ४।५।२
उदीची दिगुदञ्चः प्राणाः (आत्मनः) बृ. उ. ४।२।४
उदीच्यामग्निकायमुमाऽनुरक्ता
  ..मामुपासते भस्मजा.२।१३
उदुम्बराः प्रातरुत्थाय...अग्नि-
  परिचरणं कृत्वा आश्रमो.२,२,३

उदेति ह वै सर्वेभ्यः पापेभ्यः छांदो. १।६।७
उदेषां बाहू अतिरमुद्वर्चो अथो बलं सद्वै. ८+
[वा.सं.११।२०+तै.सं.४।१।१०।३
उदेहि सूर्य वरं वृणीष्वेति इति. ८५
उदौदनं पाचयित्वा सर्पिष्मन्त-
मश्नीयातामीश्वरौ जनयितवै बृह. ६।४।१६
उद्गन्ता चैतेषामिह कः मैत्रा...
(?)उद्गातयो देवतोद्गीथमन्वायत्ता
[छां. उ. १।१०।१०+ १।११।६
उद्गातर्या देवतोद्गीथमन्वायत्ता
तांचेदवि... [छांदो.१।१०।१० +१।११।६
उद्गातृनास्तावे स्तोष्यमाणानु-
पोपविवेश छां.उ.१।१०।८
उद्गात्रर्त्विजा वायुना प्राणेन बृह. ३।१।५
उद्गायति तन्निधनं, एतद्वैरूपं..प्रोतं छांदो.२।१५।१
उद्गारादिक्रियो नागः (प्राणवायुः) त्रि. ब्रा. २।८६
उद्गारादिगुणःप्रोक्तोव्यानाख्यस्य.. जा. द. ४।३३
उद्गारादि नागकर्म शाण्डि.१।४।९
उद्गारे नाग आख्यातः कूर्म उन्मीलने.. यो. चू. २५
उद्गीतमेतत्परमं तु ब्रह्म तस्मिंस्त्रयं... श्वेता.१।७+
भवसं.२।६
उद्गीथ इति त्र्यक्षरं, उपद्रव इति
चतुरक्षरं त्रिभिस्त्रिभिःसमंभवति छांदो.२।१०।३
उद्गीथ इति प्राण एवोत्प्राणेनह्युत्तिष्ठति छान्दो.१।३।६
उद्गीथ उपश्रीः, श्रीरुपबर्हणम् कौ.उ.१।५
उद्गीथ प्रणवोद्गीथ...सर्वं बोधय.. हयग्री.३
(?)उद्गीथभाजिनो ह्येतस्य साम्नः.. छां.उ.२।९।५
उद्गीथमस्युद्गीयमानमसि बृ.उ.६।३।४
उद्गीथमेतत्परमं तु ब्रह्म ना.प.९।६
उद्गीथं प्रणवाख्यं प्रणेतारं भारूपं... मैत्रा.६।४
(अथखलु) उद्गीथाक्षराण्युपासीत छां.१।३।६
उद्गीथे वै कुशला स्मो हन्तोद्गीथे... १।८।१
उद्गृह्णाति तन्निधनम् [छां.उ.२।३।२+ २।१५।१
उद्घाटयेत्कवाटं तु यथा कुंचिकया गृहं यो.चू. ३९
उद्दालकायारुणये... ब्रह्म प्रोवाच छां.उ. ३।११।४
उद्दालको वै भगवंतोऽयमारुणिः छान्दो.५।११।१२
उद्दालको ह्यारुणिः श्वेतकेतुं पुत्रमुवाच छान्दो.६।८।१
उद्दृष्टत्वादुत्कर्तृत्वात्...ओङ्कारेणेम-
मात्मानं परमं ब्रह्म नृसिंहमन्विष्य नृसिंहो.७।१

उद्दीप्यस्व जातवेदोपघ्नं निर्ऋतिमम महाना. ५।९
[+तै. आ. १०।१।४
उद्धतत्वमसमत्वमिति तामसानि
(एतैरभिभूतः) मैत्रा.३।५
उद्धरेदात्मनाऽऽत्मानम् भ.गी.६।५
उद्धास्मा उक्थविद्वीरस्तिष्ठति(मा.पा.) बृ.उ.५।१३।१
उद्धास्मादुक्थविद्वीरस्तिष्ठति बृह.५।१३।१
उद्धृतपरिपूताभिरद्भिः कार्यं कुर्वन्तः आश्रमो.२
उद्धृतासि वराहेण कृष्णेनशतबाहुना
[यज्ञोप.२+सुदर्श.२+ महाना.४।५
उद्धृत्य प्राश्नाति, प्राश्य इतरस्याः
प्रयच्छति (स्था. पा. आज्यं) बृह.६।४।१९
उद्धृत्य प्राश्नीयात्साज्यं हविरनामयं जाबा.४
उद्धैव तत एति [छां.उ. ३।१६।२,४,६
उद्बुध्यध्वं समनसः सखायः वनदु.३०
[ऋक्सं. मं. १०।१०१।१
उद्भवश्च भविष्यताम् भ.गी.१०।३४
उद्भवः सम्भवो दिव्यो देव एको
नारायणः सुबालो.६।१
उद्भिज्जास्तरुगुल्मलतादयः ना.पू.ता.५।६
उद्भूतत्वाद्भूतम् मैत्रा.५।२
उद्भूतत्वाद्भूतेषु चरति प्रविष्टः
सर्वभूतानां... मैत्रा. ५।५
उद्भूतत्वादुत्तीर्णविकृतत्वाच्च नृसिंहो.७।१
उद्यत्कोटिदिवाकराभं (ब्रह्माण्डस्वरूपं) त्रि.म.ना.६।२
उद्यद्भास्वत्समाभां विधृतनवजपा.. वनदु.३
उद्यन्तमादित्यमभिध्यायन्..भस्मना
त्रिपुंड्रं श्वेतेनैव.. भस्मजा.२।२
उद्यन्तमस्तं यन्तमादित्यमभिध्यायन्
कुर्वन् ब्रह्मणो विद्वान्त्सकलं भद्र-
मश्नतेऽसावादित्यो ब्रह्मेति सद्वै. २
उद्यन्तमादित्यमुपतिष्ठेत कौ. उ. २।७
उद्यन्ति तपन्ति वर्षन्ति स्तुवन्ति
पुनर्विशन्त्यन्तर्विवरेणेक्षन्ति.. मैत्रा. ७।१-५
उद्यन्नद्य मित्रमह आरोहन्नुत्तरांदिवम्
[ऋ.अ. १।४।८=मं.१।५०।११ सूर्यता. २।१
उद्यन्नद्यमिनो भज पितापुत्रेभ्योयथा सूर्यता. २।१
उद्यन्नद्येत्ययं तृचो रोगघ्नः.. सूर्यता. २।१
उद्यन् पूर्वार्धो निम्लोचञ्जघनार्धः बृ. उ. १।१।१

उद्यन्वा एष प्रजाभ्य उद्गायति छांदो. १।३।१
उद्यन्हिंकार उदितः प्रस्तावो
मध्यन्दिन उद्गीथः... छां.उ.२।१४।१
उद्यमेन हि सिद्ध्यंति कार्याणि
न मनोरथैः भवसं. १४२
उद्यंस्तमोभयमपहन्त्यपहंता ह वै.. छां.उ. १।३।१
उद्यास्यन्वा अरेऽहमस्मात्स्थानादस्मि बृ. ह.२।४।१
उद्वयं तमसस्परीति चोद्वेदभिः.. सन्ध्यो.१
उद्वयं तमसस्परिज्योतिःपश्यन्तउत्तरं
[छां.उ.३।१७।७+ऋ.मं.१।५०।१० ३ ऐत. २।४।४
उद्वर्गोऽसि पाप्मानं म उद्वृङ्धि कौ. उ. २।७
उद्वातःप्रथमःस्मृतः,मध्यमश्चद्वाविशत योगो. ५
उद्वेगानन्दरहितः ...सजीवन्मुक्तः महो. २।५७
उन्नतप्रपदाङ्गुष्ठं गूढगुल्फं... ग. पू. २।६
उन्मत्त इव सन्त्यज्य याम्यकाण्डे
शरीरकम् महो. ३।९
उन्मत्तत्वमभोज्यान्नपानपाखण्डवर्तिता अमन. २।३४
उन्मत्ता इव परिवर्तमानाः शान्ताः..
प्रणवमेव परं ब्रह्म...जानन्तः नृसिंहो. ६।३
उन्मनीभावःपार्थ्यं, सदाऽमनस्कमर्थ्यं मं. ब्रा. २।५
उन्मन्या अमनस्कं भवति मं. ब्रा. २।५
उन्मन्यां सुषुप्तप्राज्ञो मनोन्मन्यां
सुषुप्ततुरीयः प. हं. प. १०
उन्मिषन्निमिषन्नपि भ. गी. ५।९
उन्मीलते पश्यति विकासते चैतन्य-
भावं कामयत इति त्रि. ता. १।५
उन्मीलित-निमीलित-मध्यस्थ-जीव-
परमात्मनोर्मध्ये जीवात्मा क्षेत्रज्ञ
इति विज्ञायते शारीर. १०
उन्मीलितमनोमूलोजगद्वृक्षःपतिष्यति अमन.२।५७
उपकोसलो वै कामलायनः...
ब्रह्मचर्यमुवास छांदो.४।१०।१
उपकोसलैषा..तेऽस्मद्विद्याऽऽत्मविद्या छां.उ.४।१४।१
उपचारान्समर्प्यार्घ्याणि
दद्यात् [सूर्याय] सूर्यता. ५।१
(१)उपजीवन्तीन्द्रेण मुखेन छां. उ. ३।७।१
उपतापी सन्नपतापी भवति छांदो.८।४।२
उपते यज्ञ नम उपते नमः... महाना.१६।११
(१) उप त्वा नेष्ये..नमुपनीयकृशानां.. छां. ४।४।५

उपदिष्टं परं ब्रह्म प्रणवान्तर्गतं परं शुकर. १।१०
(१)उपदेक्ष्यसि मन्मंत्रम् रामो. ४
(१)उपद्रवभाजिनो ह्येतस्य साम्नः छां. उ. २।९।७
उपदेशादयं वादोज्ञाते द्वैतं न... आगम. १८
(१) उपद्रव इति चतुरक्षरम् छां.उ.२।१०।३
उपद्रष्टाऽनुमन्ता च भ.गी. १३।२२
उपद्रष्टाऽनुमन्तैष आत्मा नृसिंहो. ९।१
उपनयनादूर्ध्वमेनानिप्राग्वस्यजेत आरुणि.४
(१) उपनयनादूर्ध्वं त्रिरात्रमक्षार-
लवणाशी.. आश्रमो. १
उपनिषदमावर्तयेत... आरुणि. २
उपनिषदं भो ब्रूहीत्युक्तायउपनिद्ब्राह्मीं
वाव त उपनिषदमब्रूम केनो. ४।७
उपनीतशतमेकमेकेन
गृहस्थेन तत्समं नृ.पू. ५।१६
उपनीतैकाधिकशतं गृहस्थ-
शतैकाधिकशतं ग. शो. ५।५
उप नो नयस्वेम एव ते छाग. २।३
उप ब्रह्मा शृणवच्छस्यमानं महाना.९।१३
[ऋ.मं.४।५८।२+वा.सं.१७।९०+ तै.आ.१०।१०।२
उपमंत्रयते स हिंकारः छां.उ.२।१३।१
उपयामगृहीतोऽसिप्रजापतेत्वामहसः महा. १७।१५
उपयाम गृहीतोऽसि सूर्याय
त्वा भ्राजस्वते चित्यु. १६।१
उपरितनपादत्रयं शुद्धबोधानन्द-
लक्षणममृतं... त्रि.म.ना. १।३
उपरिष्टात्तु वैकुण्ठो..अवान्तरदिशो
याः स्युस्तासु सर्वासु माधवः विष्णुहृ. १।२
उपर्युपरि सञ्चरतो न विन्देयुः छां. उ. ८।८।२
उपलंभत्रिषु स्मृतः अ. शां. ९०
उपलंभात्समाचारादस्तिवस्तुत्व-
वादिनाम्। जातिस्तु देशितावुद्धेः अ. शां. ४२
उपलम्भात्समाचारान्माया
हस्ती यथोच्यते अ. शां. ४४
उपलम्भात्समाचारादस्तिवस्तु
तथोच्यते अ. शां. ४४
उप वयं तं भुञ्जामः (नः) छांदो. ४।११।२
[+४।१२।२+४।१३।२
उपविश्यासनं सम्यक्स्वस्तिकादि त्रि. ब्रा. २।९१

उपविश्यासने युञ्ज्यात् भ. गी. ६।१२
उपविश्योपविश्यैकां..न शक्यते
मनोजेतुं विना युक्ति.. मुक्तिको.२।४३
उपवीतलक्षणसूत्रब्रह्मगा यज्ञाः पा.ब्र.३
उपवीतं च तन्मयम् (ज्ञानशिखारूपं) ब्रह्मो. १३
उपवीतं भूमावप्सु वा विसृजेत् आरुणे. २
उपशाम्यति (सः) तन्निधनम् छांदो.२।१२।१
उपशिष्यन्तीव न हैवाभिपद्यन्ते आर्षे. ५।४
उप समीपे यो वासो जीवात्मपरमा- वराहो. २।३९
त्मनोः । उपवासः स विज्ञेयो न तु
कायस्य शोषणम् वराहो. २।३९
उपससाद सनत्कुमारं नारदः छांदो. ७।१।१
उपसीदन्द्रष्टा भवति, श्रोता भवति छांदो. ७।८।१
उपस्कंदमभिगृह्णीताभिपातयेत छांदो. ५।३
(?)उपस्तिर्ह चाक्रायण इभ्यग्रामे
प्रद्राणक उवास छां.उ. १।१०।१
उपस्थ एवास्या एकमङ्गमुदूढं, तस्या-
नन्दो रतिः प्रजातिः..प्रतिविहिता.. कौ. त. ३।५
उपस्थमस्या अभिमृश्य जपेत्
'अङ्गादङ्गात्संभवसि' इति बृह. ६।४।९
उपस्थमेवाप्येति य उपस्थमेवास्तमेति सुबालो. ९।१०
उपस्थश्चानन्दने, अपान उत्सर्गे.. गर्भो. १
उपस्थश्चानन्दयितव्यं च, पायुश्च.. प्रश्नो. ४।८
उपस्थश्चानन्दयितव्यं च नारायणः सुबालो. ६।१
उपस्थस्यानन्दग्रहणम् ना. प. ६।४
उपस्थानेन यत्प्रोक्तं भिक्षार्थं...
तात्कालिकमिति ख्यातं
भोक्तव्यं यतिभिः सदा १सं.सो.२।६९
उपस्थोऽध्यात्मं, आनन्दयितव्यमधि-
भूतं,प्रजापतिस्तत्राधिदैवतं सुबालो.५।१४
उपहन्यामिमाः प्रजाः भ. गी. ३।२४
उपादत्ते हि सा (तृष्णा) भावान्
वेदनाश्रयसंज्ञकान् आयुर्वे. ७
उपादानंप्रपञ्चस्यमृद्ब्राण्डस्येवपश्यति ना. विं. २५
उपादानंप्रपञ्चस्यब्रह्मणोऽन्यन्नविद्यते यो. शि. ४।३
उपादेयानुपतनं..यदेतन्मनसो रूपं
तद्बाह्यं विद्धि नेतरत् महो. ४।२४
उपादेयं तु सर्वेषां शांतपदमकृत्रिमम् ।
...प्राणरोधश्चेतःपरिक्षयः । एक-
स्मिन्नेव संसिद्धे संसिध्यन्ति.. अ. पू. ५।५१

उपाधिनाशाद्ब्रह्मैव सद्ब्रह्माप्येतिनिर्द्वयम् १आत्मो.२१
उपाधिरहितं स्थानं (ब्रह्मणः)
वाङ्मनोतीतगोचरम् ते. बिं. १।७
उपाधिविनिर्मुक्तघटाकाशवत्प्रारब्ध-
क्षयाद्विदेहमुक्तिः मुक्तिको. २।१
उपाधिविलयान्निर्गुणनिरवयवादि-
प्रतीतिः त्रि.म.ना.३।७
उपाधिविनिर्मुक्तघटाकाशवत्परि-
पूर्णता.. सैव कैवल्यमुक्तिः मुक्ति. १।५८
उपानच्छत्रशयनं वस्त्रमासनभूषणम् ।
..गुरुसक्तं न धारयेत् शिवो.७।१२
उपानच्छत्रवस्त्राणिपवित्रंकरकं..
धृतमन्यैर्न धारयेत् शिवो. ७।९०
उपायएकएवास्ति मनसः स्वस्यनिग्रहे मुक्तिको.२।२८
उपायं तमविज्ञाय योगमार्गे प्रवर्तते यो. शि.१।६२
उपायः सोऽवताराय नास्ति
भेदः कथंचन अद्वैत. १५
उपायेननिगृह्णीयाद्विक्षिप्तं (मनः) अद्वैतो. ४२
उपासकस्ततोभ्येत्यैवंविधंनारायणं
ध्यात्वा..नमस्कारान्विधाय.. त्रि.म.ना. ८।३
उपासकः स्वयं शुद्धबोधानन्दमया-
मृतनिरतिशयानन्दतेजो.. भूत्वा त्रि.म.ना. ८।३
उपासकानांकार्यार्थंब्रह्मणोरूपकल्पना रामपू. १।७
उपासकानां मोक्षप्राप्तिर्भवति ना.पू.ता.४।१०
उपासते पुरुषं ये ह्यकामास्ते
शुक्रमेतदतिवर्तन्ति धीराः मुण्ड. ३।२।१
उपासनया ये मुक्तिं गतास्तेषां
साकारो मुक्तसाकारः त्रि.म.ना. २।१
उपासना द्विविधा—शाम्भवंशाक्तंचेति कामरा. २
उपासनाश्रितोधर्मो..ब्रह्मणि वर्तते अद्वैतो. १
(अथ)उपांशुरन्तर्याम्यभिभवति मैत्रा. २।८
उपांशु सहस्रगुणं (जपकर्म) शाण्डि. १।२।१
उपेक्षा धैर्यमाधुर्ये तितिक्षा करुणा..
ह्रीः..एष स्वधर्मो विख्यातोयतीनां ना.प.४।१२
उपैति शान्तरजसम् भ.गी. ६।२७
उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना
सह [ऋ.खि.५।८७।१० श्री. सू. ७
उपैनं तदुपनमति यत्कामो भवति
[बृ.जा. १।३+ नृ.पू. १।१

उपेत्यह भवन्तमिति वाचा ह स्म वै पूर्व उपयन्ति बृ.उ. ६।२।७
उपोष्य पायसं स्थालीपाकंश्रपयित्वा.. हुत्वाऽन्येनान्नेन ब्राह्मणान्भोज-यित्वा चरुंस्वयंप्राश्नीयात् (दुस्स्वप्ने) ३ऐत्र.२।४।७
उभयप्राधान्येनोभयात्मकसाकार:(भेद:) त्रि.म.ना.२।२
उभयमपि मनोयुक्तमभ्यसेत(तारकं) मं. ब्रा. १।४
उभयमाश्लिष्टंभवत्यध्यात्मंचाधिदैवतंच छांदो.३।१८।१
उभयमेव सम्राडिति होवाच बृह.४।१।१
उभयमेवाविष्टं भवति अध्यात्मं चाधिदैवतं च छांदो.३।१८।२
उभयवचनहेतू देशकालौ च हित्वा.. सोऽयं देवदत्तो यथैकः शुकर.३।११
उभयं (प्रपञ्चस्य नित्यत्वानित्यत्वे) न भवति त्रि.म.ना. १।२
उभयात्मक उत्पत्तिप्रणवः तुरीयो. १
उभयात्मकत्वाद्विराट् प्रणवः तुरीयो. १
उभयात्मकं मनोजायते(इन्द्रियात्मकं) सामर.१०१
उभयोरन्तरं (देहदेहिनोः) ज्ञात्वा कस्य शौचं विधीयते मुक्त्यु. २।६७
उभयोरपि दृष्टोऽन्तः भ.गी. २।१६
उभयोरपि वैतथ्यं भेदानां स्थानयो-र्यदि। क एतान् बुद्ध्यते भेदान् को वै तेषां विभेदकः वैतथ्य. ११
उभयोर्बीजतुल्यत्वान्नपुंसको भवति गर्भो. ३
उभयोर्लोकयोर्ऋद्ध्वाऽतिमृत्युं तराम्यहम् महाना.१३।१२
उभयोर्विन्दते फलम् भ.गी. ५।४
(?)उभयोः प्राज्ञतुर्ययोः आगमो. १३
उभयोः सङ्गमादेव प्राप्यते परमं वपुः.. ध्या.बिं. ८९
उभादातारा विहसौभगानाम्(शक्तीशौ) त्रिपुरो.१४
उभाभ्यामपि पक्षाभ्यां यथा खे पक्षिणां गतिः भवसं. १।३३
उभाभ्यामकरं नमो बाहुभ्यां तव.. नीलरु. २।४
उभाभ्यामंशाभ्यां (स्त्रीपुंरूपाभ्यां) सर्वेनादिष्टः अव्यक्तो.७
उभाभ्यामेव (पुण्यपापाभ्यां)मनुष्य-लोकम् (उदानो नयति) प्रश्नो. ३।७
उभावग्निश्च वायुश्च सूर्याचंद्रमसौ (शरीरे समाहितौ) छांदो.८।१।३

उभे अस्मिन् (शरीरे) द्यावापृथिवी अन्तरेव समाहिते छांदो. ८।१।३
उभे हैवैष एते तरति बृह. ४।४।२२
उभे एते एषणे भवतः (मा. पा.) बृह.४।४।२२
उभे एव वर्तनी संस्कुर्वन्ति न हीयते-ऽन्यतरा छांदो. ४।१६।४
(?)उभेकूलेऽनुसञ्चरति (महामत्स्यः) बृह. ४।३।१८
उभे तीर्त्वाऽशनायापिपासे शोकाति-गो मोदते स्वर्गलोके कठो. १।१२
(?)उभे भवत ओदनम् (नः) कठो. २।२५
उभे नानार्थे पुरुषँ सिनीतः कठो. २।१
उभे सुकृतदुष्कृते भ.गी. २।५०
(?)उभे स्थाने पश्यतीदं च परलोक.. बृ.ह. ४।३।९
उभे ह्यन्योन्यं दृश्येते किं तदस्तीति.. अ.शां.६७
उभे ह्येते एषणेएवभवतः [बृह.३।५।१ +४।४।२२
उभे ह्येवैषएतेआत्मानंस्पृणुतेयएवंवेद तैत्ति.२।९।१
उभौ तौ न विजानीतः [कठो.२।१९ +भ.गी.२।१९
(?)उभौ येनानुपश्यति (जाग्रत्स्वप्ने) कठो. ४।४
उभौ लोकावनुसञ्चरति बृ. उ. ४।३।७
उभौ लोकाववाप्नोतीमं चामुं च छांदो.८।८।४
उभौ साम गायति सोऽमुनैव स एष ये चामुष्मात्पराञ्चो लोका-स्तांश्चाप्नोति छांदो. १।७।१
उमापतिः पशुपतिः पिनाकी ह्यमित-द्युतिः। ईशानः सर्वविद्यानां.. नृ.पू. १।६
उमारुद्रात्मिकाः सर्वाः प्रजाः स्थावरजङ्गमाः रुद्रहृ. १०
उमाशङ्करयोगोयःसयोगोविष्णुरुच्यते रुद्रहृ. ११
उमासहायं परमेश्वरं प्रभुं त्रिलोचनं नीलकण्ठं प्रशान्तं ध्यात्वा.. कैव. ७
उर एव वेदिः, लोमानिबर्हिः[आत्मनः]छांदो.५।१८।२
उरु गृणीहीत्यब्रवीत्तदुदरमभवत् १ऐत. १।४।१
उरोमुखकटिग्रीवं किञ्चिद्धृदयमुन्नतं क्षुरिको.४
उरो वेदिर्लोमानिबर्हिर्वेदः शिखा हृदयं यूपः (आत्मयज्ञस्य)[त्रिसुप.४ +महाना. १८
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय-मामृतात् [ऋ.मं. महाना.१३।१८
उर्वी पृथ्वी बहुला विश्वा महाना.१०।१४
उर्वेव मे कुर्वित्यब्रवीत्तदुरोऽभवत् १ऐत. १।४।१

उलूकस्य यथा भानुरंधकारः प्रतीयते।
स्वप्रकाशेपरानन्देतमोमूढस्यजायते आ. प्र. २६
उल्काहस्तो यथा लोके द्रव्यमालोक्य
तां त्यजेत् । ज्ञानेन ज्ञेयमालोक्य
पश्चाज्ज्ञानं परित्यजेत् ब्र.वि. ३६
(?) उल्कावत्तान्ययोत्सृजेत
(शास्त्रादीनि) अ.ना. १
उवाच्य रश्मिकला:शिन्नवोगु रा(मा.पा.) बृह.'१।१।१
उवाच पार्थ पश्यैतान् भ.गी. १।२५
उवाच मधुसूदनः भ.गी. २।१
उवाच वै सो गच्छन्वैते,तयत्राश्वमेघ-
याजिनो गच्छन्तीति बृह.३।३।२
(ॐ)उशन् ह वै वाजश्रवसः सर्व-
वेदसं ददौ कठो. १।१
(ॐ) उषा वा अश्वस्य मेध्यस्य शिरः बृह. १।१।१
उषाश्च तस्मै निर्मुक् च सर्वे पापं
समूहताम् [सहवै.८+ सूर्यता. २।१
उषित्वा शाश्वतीः समाः भ. गी. ६।४१
उषित्वा ब्रह्मचर्यं देवा ऊचुः बृह.५।२।१
उष्णिमानं संस्पर्शेन विजानाति(?) छांदो.३।१३।७
उष्णो भगवाञ्छुचिरूपः, हंसोभगवान् चाक्षुषो.२
(?) उष्णोऽयमुष्णोऽसौ.. छांदो. १।३।२

ऊ

ऊरू तदस्य यद्वैश्यः
[ऋ.ब.८।४।१९=मं.१०।९०।१२+ चित्यु. १२।६
[+वा.सं.३१।११+तै.आ.३।१२।६ सुबालो.१।४
ऊरौ चित्तसंयमात्तलातललोकज्ञानं, शांडि.१।७।९
ऊर्ध्वं सूनृता च देवानां पत्न्यः चित्यु. ९।३
ऊर्गिति देवाः (उपासते) मुद्गलो. ३।२
ऊर्जस्वती पयसा पिन्वमाना सा मां
मेधा सुप्रतीका जुषन्ताम् महाना. १३।५
ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे प्राणाग्नि. १।५
(?) ऊर्जेण पशवोऽनुनामयन्तं अ. शिरः. ५
ऊर्णनाभिर्यथातंतून्सृजतेसंहरत्यपि ।
जाग्रत्स्वप्ने तथा जीवो गच्छत्या-
गच्छते पुनः ब्रह्मो. २०
ऊर्णनाभीव तन्तुना (प्राणान्संचारयेत्) क्षुरिको. ९
ऊर्ध्वं ऋचः साम्नो जुषः छां. उ. १।४।३
ऊर्ध्वगमनं विसृजेत् आरुणि. २
ऊर्ध्वगानाडीसुषुम्नाख्या प्राणसञ्चा-
रिणी तया.. ऊर्ध्वमूर्ध्वमुत्क्रमेत् मैत्रा. ६।२१
ऊर्ध्वपोपायु(वायु)र्विमुक्तमार्गोभवति २सन्यासो.१०
(अथ) ऊर्ध्वजानुरासीनः..इत्युपतिष्ठते सन्ध्यो. २
ऊर्ध्वज्वलज्ज्वलनं ज्योतिरग्रे, तमो वै
तिरश्चीनमजरं तद्रजोऽभूत् त्रिपुरो. ४
ऊर्ध्वदण्डो(डयू)र्ध्वरेताश्च..ऊर्ध्वं
पदमवाप्नोति.. वासुदेवो. १२
ऊर्ध्वदृष्टिरधोदृष्टिरूर्ध्ववेधस्त्वधश्शिरः अमन. २।१५
ऊर्ध्वनालमधोबिन्दुस्तस्य मध्ये
स्थितं मनः । १ यो.त. १३८
ऊर्ध्वपवित्रोवाजिनीवस्वमृतमस्मि(ति) ना. प. ४।४४
[तैत्ति. १।१०।१०
ऊर्ध्वपुण्ड्रं कुटीचकस्य, त्रिपुण्ड्रं
बहूदकस्य...हंसस्य.. ना. प. ७।५
ऊर्ध्वपूर्णमधःपूर्णं मध्यपूर्णं शिवा-
त्मकम् । साक्षाद्विधिमुखो..समाधिः.. मुक्तिको.२।५६
ऊर्ध्वबाहुर्विमुक्तमार्गो भवति कुंडिको. ९
(तत्) ऊर्ध्वबाहुर्विमुक्तमार्गो भवेत् कठरु. ४
ऊर्ध्वमूलमधश्शाखं [भ.गी.१५।१+ यो. शि. ६।१४
ऊर्ध्वमूलं त्रिपाद्ब्रह्म मैत्रा. ६।४
ऊर्ध्वमूलं वा आग्रब्रह्मशाखा आकाश-
वाय्वग्न्युदकभूम्यादयः मैत्रा. ६।४
ऊर्ध्वमूलोऽवाक्शाख एषोऽश्वत्थः.. कठो. ६।१
ऊर्ध्वमेकः (रश्मिः)स्थितस्तेषां..तेन
यान्ति परां गतिम् मैत्रा.६।३०
ऊर्ध्वरेतंविश्वरूपंविरूपाक्षंमहेश्वरम् ।
सोऽहमित्यादरेणैव ध्यायेत्.. जा.द.९।२
ऊर्ध्वरेतं विरूपाक्षं विश्वरूपाय वै नमः महाना.१०।१०
ऊर्ध्वरेतं विरूपाक्षं शङ्करं नीललोहितम् नृ.पू.१।६
ऊर्ध्वलिङ्गं तु मासेन विरूपाक्षं तदर्धके मृत्युलां.४
ऊर्ध्वलिङ्गंविरूपाक्षंविश्वरूपंनमाम्यहम् मृत्युलां.३
ऊर्ध्वशक्तिनिपातेन अधश्शक्तेर्निकुञ्च-
नात्.. जायते परमं सुखम् योगरा.२१
ऊर्ध्वशक्तिमयः शिवः बृ.जा. २।१०
ऊर्ध्वशक्तिमयः सोम अधोशक्तिमयो-
ऽनलः । ताभ्यां सम्पुटितस्तस्माच्छ-
श्वद्विश्वमिदं जगत् बृ.जा.२।६
ऊर्ध्वं गच्छन्ति सत्त्वस्थाः भ.गी. १४।१८

ऊर्ध्वं चावाक् च सर्वतोऽनन्तः मैत्रा.६।१७
ऊर्ध्वं दिशश्च सर्वं नारायणः सुबालो.६।१
ऊर्ध्वं नारायणः, अधश्च नारायणः नारा. २
ऊर्ध्वजिगातु मेधरम सहवै. २५
[ऋ.खि.१०।१९१।५
ऊर्ध्वं पञ्चमी कुक्षिर्भवति गायत्रीर. ३
ऊर्ध्वं पदमवाप्नोति(यतिः) वासु. ३
ऊर्ध्वं प्राणमुन्नयत्यपानं प्रत्यगस्यति कठो. ५।३
ऊर्ध्वं मेढ्रादधो(ऽधो)नाभेःकन्दोयोऽस्ति
खगाण्डवत्, तत्रनाड्यःसमुत्पन्नाः ध्या.बिं.५०
ऊर्ध्वं मेढ्रादधो नाभेः कन्दे योनिः
खगाण्डवत्। तत्रनाड्यः समुत्पन्नाः
सहस्राणां द्विसप्ततिः यो.चू.१४
ऊर्ध्वं रुद्रः क्रमाद्वाऽपि ब्रह्मविष्णु-
महेश्वराः। एत एव त्रयो लोकाः.. शिवो.२।५
ऊर्ध्वं शिरःपिण्डमयमधःपादमयंतथा महो. ५।१९६
(१)ऊर्ध्वः सुषिः स उदानः छां.उ.३।१३।५
ऊर्ध्वा दिगूर्ध्वाः प्राणाः, अवाचीदिग-
वाञ्चः प्राणाः बृह. ४।२।४

ऊर्ध्वाधः कुण्डलीभेद उन्मन्य-
श्रमनक्रमः। योगोऽयंसिद्धिदायकः अमन. २।१४
(१)ऊर्ध्वाभिश्चतिरश्चीनाभिश्चविद्युद्भिः.. छां.उ.७।११।१
ऊर्ध्वाम्नायः, निरालम्बपीठः निर्वाणो. १
(ॐ)ऊर्ध्वाम्नायगुरूपदेश...भज
मनस्तच्छ्रीगुरुचैतन्यं मठाम्ना. १
ऊर्ध्वं सात्त्विको मध्ये राजसोऽधमे·
स्तामसः (गुणस्थानानि) शारीरको. ९
ऊर्वोरुपरिचेद्धत्ते उभे पादतले यथा।
पद्मासनं भवेदेतत् योगकुं. ११५
ऊर्वोरुपरि वै धत्ते यदा पादतले उभे।
पद्मासनं भवेदेतत् त्रि.ब्रा.२।३९
ऊर्वोर्मध्ये तु संस्थाप्य मर्मप्राण-
विमोचनम्..छिन्देत् क्षुरिको. १४
ऊर्वोर्वैश्यः (अजायत) ग.शो. ३।११
(१)ऊष्माणो ग्रस्ता निरस्ता विवृत्ता
वक्तव्याः (मा.पा.) छां.उ.२।२२।५
ऊवध्यꣳसिकताः, सिन्धवो गुदा,
यकृच्च क्लोमानश्च पर्वताः बृ.उ. १।१।१

ऋ

ऋचःसाम यजुरेव च भ.गी. ९।१७
ऋगहं यजुरहं सामाहमथर्वाङ्गिरसोहं अ.शिरः. १।१
ऋगात्मकोऽकारः, यजुरात्मकउकारः राधो. २।२
ऋग्गाथा कुम्ब्या तन्मितम् १ऐत. ३।६।४
ऋग्दक्षिणः पक्षः, सामोत्तरः पक्षः तैत्ति. २।३
ऋग्भिरेतं यजुर्भिरन्तरिक्षं स सामभि-
र्यत्तत्कवयो वेदयन्ते प्रश्नो. ५।७
ऋग्भिः पूर्वाह्णे दिवि देव ईयते सूर्यता. १।५
ऋग्भ्यो जातां सर्वशो मूर्तिमाहुः सूर्यता. १।५
ऋग्यजुस्सामरूपाय वेदाहरणकर्मणे।
प्रणवोद्गीथवपुषे महाश्वशिरसे
नमः स्वाहा.. [त्रि.म.ना.७।१० +हयग्री. २
ऋग्यजुस्सामाथर्वरूपः सूर्योऽन्तरा-
दित्ये हिरण्यः पुरुषस्तत्साम्नो
द्वितीयंपादंजानीयात् [नृ.पू.१।४+ ग.पू.१।१२
ऋग्यजुस्सामाथर्वाणश्चत्वारो वेदाः
साङ्गाःसशाखाश्चत्वारःपादाभवन्ति नृ. पू. १।२
ऋग्यजुस्सामाथर्वा..तुर्यपादंजानीयात् ग.पू. १।१२
ऋग्यजुस्सामाथर्वाणश्चत्वारो
वेदाश्चत्वारः पादाः... ग. पू. १।१३

(अथ)ऋग्यजुस्सामेतिविज्ञानवत्येषा मैत्रा. ६।५
ऋग्विधानायस्वाहा,कपोत्कायस्वाहा महाना.१४।१९
ऋग्वेद एव पुष्पं, ता अमृता आपस्ता
वा एता ऋचः छांदो. ३।१।२
ऋग्वेदमस्या आद्यात्पादादकल्पयत् ...
ऋग्वेदस्य तु शाखाः स्युरेक-
विंशतिसङ्ख्यकाः मुक्तिको. १।१२
ऋग्वेदस्य रूपं स्पर्शाः, यजुर्वेदस्यो-
ष्माणः, सामवेदस्य स्वराः ३ ऐत. २।५।१
ऋग्वेदं प्रपद्ये यजुर्वेदं प्रपद्ये सामवेदं
प्रपद्य इत्येव तदवोचम् छांदो.३।१५।७
ऋग्वेदं भगवोऽध्येमि यजुर्वेदं साम-
वेदमाथर्वणं एतदृग्भगवोऽध्येमि छांदो. ७।१।२
ऋग्वेदादिविभागेन वेदाश्चत्वारः.. मुक्त्यु. १।११
ऋग्वेदेत्रैस्वर्योदात्त एकाक्षर ओङ्कारः २ प्रणवो. १२
ऋग्वेदोगार्हपत्यंच पृथिवी ब्रह्म एव
च। अकारस्य शरीरं तु व्याख्यातं ब्र. वि. ४
ऋग्वेदो गार्हपत्यं च प्रत्यक्षस्य... १ प्रणवो. ४
ऋग्वेदोगार्हपत्यं च मन्त्राःसप्तस्वराः पञ्चब्र. २

ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्वाङ्गिरसः..
अस्यैव (महतो भूतस्य).. निश्वसितानि [बृह+२।४।१०+४।५।११ मै.६।३२
ऋग्वेदोऽस्याः (गायत्र्याः) प्रथमः पादः गायत्रीर. ३
ऋग्वै गायत्री, यजुरुष्णिक्, अनुष्टुप्
साम,स आदित्यो भवति ग. पू.१।११
ऋग्वै प्रथमः पादः ग.पू. १।१३
ऋग्वै भूः सा माया भवति ग. पू. ३।१
ऋग्वै वसुर्यजू रुद्राः सामादित्याः ग.पू. १।११
ऋङ्मयं यजुर्मयं साममयं ब्रह्ममयममृतमयं (सुदर्शनं) भवति नृ .पू. ५।७
ऋङ्मयं साममयमुद्गाता, स एष
सर्वस्यै त्रयीविद्याया आत्मा कौ. उ. २।६
ऋच एव मधुकृतः, ऋग्वेद एव पुष्पं छान्दो. ३।१।२
ऋचश्च सामानि च प्राचीनातानं कौ. उ. १।.
ऋचं ब्राह्मं जनयन्तः, देवा अग्रे.. चित्सु. १३।२
ऋचः सामानि जज्ञिरे चित्सु. १२।४
[ऋ.अ.८।४।१८मं.=१०।९०।५ वा. सं. ३१।७
ऋचः साम रसः, साम्न उद्गीथो रसः छान्दो. १।२
ऋचामेव तद्रसेनर्चां वीर्येणर्चां
यज्ञस्य विरिष्टं सन्दधाति छांदो.४।१७.४
ऋचे त्वा ऋचे त्वा समित्स्रवन्ति महाना. १२।३
[+वा. सं. १३।३९+त्रिसुप. ३+ तै.सं.४।२।९।६
ऋचो अक्षरे परमे व्योमन् [नृ.पू.४।३ +५।२
[रामो. ५।२+तै. आ. २।११।१ बह्वृचो.४+
गुह्यका.५३+सद्वै. १५+ श्वेता. ४।८;
ऋक्सं.अ.२।३।२१=मं.१।१६४।३९ २ प्रणवो. ५
ऋचोपनिषदस्ता वै ब्रह्मरूपा ऋचः
स्त्रियः। द्वेषश्चाणूरमल्ल.. कृष्णो. १३
ऋचोयजूंषिप्रसवन्तिवक्त्रात्सामानि
सम्राड्वसुरन्तरिक्षम्। त्वं यज्ञनेता.. एकाक्ष. ७
ऋचो यजूंषि सामानि [बृह.५।१४।२+ सीतो. १३
ऋचो यजूंषि सामानि दीक्षा यज्ञाः..
भुवनानि चतुर्दश गुह्यका. २९
ऋचोयजूंषिसामानियज्ञःक्षत्रंचब्रह्मच प्रश्नो. २।६
ऋचो यजूंषि सामानीत्यष्टाक्षराणि बृह. ५।१४।२
ऋचो ह यो वेद स वेद देवान् इतिहा. ९
ऋजुकायः प्राञ्जलिश्च प्रणमेदिष्टदेवताम्। ततो दक्षिणहस्तस्य.. १ यो. त. ३६

ऋजुवक्रादिकाभासमलातस्पन्दितं
यथा.. विज्ञानस्पंदितं तथा अ. शां. ४७
ऋतभुग्गुणमयेनपटेनात्मानमंतर्धायावस्थितः मैत्रा. २।११
ऋतमवादिषं, सत्यमवादिषम् तैत्ति. १।१२।१
ऋतमात्मा परब्रह्म सत्यमित्यादिका
बुधैः। कल्पिता.. संज्ञा महो.४।४५
ऋतमेकाक्षरंब्रह्मव्यक्ताव्यक्तंसनातनं विष्णुहृ. १।७
ऋतञ्च मे भूयात् चित्सु. ७।३
ऋतवोऽङ्गानि मासाश्चार्धमासाश्च
पर्वाणि, अहोरात्राणि प्रतिष्ठा बृह. १।१।१०
ऋतस्प्रशमिति सत्यं वै वागृचाम्पृष्टा १ऐत.३।६।२
ऋतस्यतन्तुंविततंविचृत्य (विवृत्य)
तदपश्यत्तदभवत्प्रजासु महाना.२।६
ऋतस्य पदे कवयो निपान्ति चित्सु.११।४,९
ऋतस्य पन्थामसि हि प्रपन्नः बा. मं. २२
ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत [ऋक्सं.अ.८।८।४८= मं.१०।१९०।१
[तै.आ.१०।१।१३+ महाना. ६।१
ऋतं तपः, सत्यं तपः, श्रुतं तपः महाना. ७।८
ऋतं नष्टं यदा काले षण्मासेन
मरिष्यति मृत्युलां.२
ऋतं पिबन्तौ सुकृतस्य लोके गुहां
प्रविष्टौ परमे परार्धे कठो. ३।१
ऋतं वदिष्यामि, सत्यं वदिष्यामि तैत्ति.१।१।१
ऋतंसत्यंपरं ब्रह्म पुरुषंकृष्णपिङ्गलम् महाना.१०।१०
[×नृ.पू.१।६× मृत्युलां. २
ऋतं सत्यं परं ब्रह्म....तन्मे मनः
शिवसङ्कल्पमस्तु २शिवसं. ३०
ऋतं सत्यं परं ब्रह्म सर्वसंसारभेषजम्
[अ.पू.५।७२+ जा.द.९।१,२
ऋतं सत्यं परं ब्रह्म...विश्वरूपाय
वै नमो नमः वनदु.१५९
ऋतं च स्वाध्यायप्रवचने च तैत्ति. १।९।१
ऋतं वच्मि, सत्यं वच्मि गणप. २
ऋतं वदिष्यामि, सत्यं वदिष्यामि
[तैत्ति.१।१+१।१२+ ऐत.कौलो.शांतिः
ऋतीयमानो अहमस्मि नाम बा.मं. २४
ऋतुकाले सम्प्रयोगादेकरात्रोषितं
कलिलं भवति गर्भो. ३

ऋतुत्रयमयनं भवति त्रि.म.ना. ३।४
ऋतुरस्म्यार्तवोऽस्याकाशयोनेः
सम्भूतो... त्वमात्माऽसि कौ. उ. १।६
ऋतुषु पञ्चविधं सामोपासीत छांदो. २।५
ऋतुसन्धौ मुण्डयेन्मुंडमात्रं, नाधो
नाक्षं जातु शिखां न वापयेत् शाट्या. २०
ऋतुं न निन्देत्तद्व्रतम् छांदो. २।१६।२
ऋतेनद्यावापृथिवी ऋतेनत्वंसरस्वति सह्वै. ३
ऋतेनापिहितागुहा,श्रुतेनापिहितागुहा इतिहा. १६
ऋतेऽपि त्वा न भविष्यन्ति सर्वे भ. गी.११।३२
ऋतूनां कुसुमाकरः भ.गी. १०।३५
ऋषयः क्षीणकल्मषाः भ.गी. ५।२५
ऋषयः सनकाद्या हिरण्यगर्भ-
मुपगत्योचुः राधिको. १
ऋषयो दीर्घसत्रत्वात्...तस्मा-
द्दीर्घामुपासीत (सन्ध्यां) सन्ध्यो. १७
ऋषयोऽनृषयो जायन्तेपुरुषोत्तमात् श्रीकृ.पु.खि.२
ऋषयो वै ब्रह्मोद्यमाह्वयितवा ऊचुः आर्षे. १।१
ऋषयो वै सरस्वत्यां सत्रमासत छाग. १।१
ऋषिभिरदात्पृश्निभिः अरुणो. ८
(यस्मात्) ऋषिभिर्नान्यैर्भक्तैर्द्रुतमस्य
रूपमुपलभ्यते तस्मादुच्यते रुद्रः बह्वृचो. २०
ऋषिभिर्बहुधा गीतं भ. गी. १३।५
ऋषिर्विप्राणां महिषो मृगाणां महाना. ८।४
[ग.पू. १।२+ त्रिसुप. ३
ऋषिर्भूत्वा ऋषीन्यक्षराक्षस-
गन्धर्वान् ग्राम्यानारण्यांश्च
पशूनसृजत् सुबालो. २।२
ऋषिश्राद्धेदेवर्षि-ब्रह्मर्षि-मनुष्य-
र्षीन्..युग्मकृत्स्या ब्राह्मणानर्चयेत् ना. प. ४।२९
ऋषिं प्रसूतं कपिलं यस्तमग्रे श्वेता. ५।२
ऋषिंविश्वेश्वरंदेवं.. तस्यमध्ये महान-
ग्निर्विश्वार्चिर्विश्वतोमुखः चतुर्वे. ३
ऋषीणामरुन्धती, पर्जन्यस्य विद्युत् विस्सु. ९।२
ऋषीणां चरितं सत्यं-अथर्वाङ्गिर-
सामसि प्रश्नो. २।८
ऋषींश्च सर्वानुरगांश्च दिव्यान् भ.गी.११।१५
ऋषे प्रियं वै मे धामोपागा वरं ददामि १ऐत.२।३।४
ऋष्यशृङ्गो मृग्याः, कौशिकः कुशात्,
जाम्बूको जम्बूकात्, जातः वज्रसू. ५

ए

एक आहुरसदेवेदमग्र आसीत् छां.उ. ६।२।१
एक आहुरेकभूयं वै प्राणा गच्छन्ति कौ.उ.३।२
एकऋषिर्भूत्वामूर्धनितिष्ठति(सूर्योऽग्निः) प्राणाग्नि.२।३
एक एव चरेन्नित्यं वर्षास्वेकत्र
संवसेत् (यतिः) ना.प.३।३१
एकएवचरेन्नित्यंसिद्ध्यर्थमसहायकः।
सिद्धिमेकस्य पश्यन्हि.. ना.प.३।५३
एक एव वसेद्द्वौ वा चरेत् ना.प.७।२
एक एव शिवो नित्यः.. शिव एव
सदा ध्येयः शरभो.३१
(?)एक एव साक्षीस्वप्रकाशः(आत्मा) नृसिंहो. ९।६
एक एव सोऽकामयतजायामेस्यात् बृह. १।४।१७
एक एव हि भूतात्मा भूतेभूते
व्यवस्थितः। एकधा बहुधा त्रि. ता. ५।१२
चैव दृश्यते जलचन्द्रवत् ब्र. बिं. ११
एक एवात्मा मन्तव्यो जाग्रत्स्वप्न-
सुषुप्तिषु [ब्र. बिं. ११+ त्रि.ता. ५।११
एक एवाद्वयः सदा, ब्रह्मरूपतया
ब्रह्म केवलं प्रतिभासते २ आत्मो. १
एक एवाहमद्वितीयः मं. ब्रा. २।७
एकजननी लक्ष्मीर्भवति ना.पू.ता. २।१
एकजन्महरं विषम् महो. ४।९९
एकतत्त्वदृढाभ्यासात् प्राणस्पन्दो
निरुध्यते मुक्ति. २।४०
एकतामागतेऽसीतितदैक्यमनुभूयतां शु. र. ३।६
(?)एकतां रसं गमयन्ति (मधुकृतः) छां. उ. ६।९।१
एकत्वेन पृथक्त्वेन भ. गी. ९।१५
एकत्रान्नं पलालमिव (त्यजेद्यतिः) ना.प. ७।१
एकत्वं नास्ति, द्वैतं कुतः सुबालो. ५।१५
एकत्वं प्राणमनसोः..योगइत्यभिधीयते मैत्रा. ६।२५
एकदण्डत्रिदण्डादिजटाभस्मादिकं अमन. २।३२
एकदण्डी त्रिदण्डी वा गोपीचं. ५
एकदन्तं चतुर्हस्तंपाशमंकुशधारिणम् गणप. ९
एकदन्तायविद्महेवक्रतुण्डायधीमहि गणप. ८

एकदा प्रजस्त्रियः सकामाः शर्वरी.. सर्वेश्वरं..ऊचिरे गोपालो. १।१
एकदा सोऽमलप्रज्ञो..पप्रच्छ पितरं कृष्णद्वैपायनं मुनिम् महो. २।१४
एकधावनुधावेवहस्यतेजल-चन्द्रवत् [ब्र. बिं. १२+ त्रि. ता. ५।१२
एकधैवानुद्रष्टव्यमेतत् बृह.४।४।२०,३
एकभक्तिर्विशिष्यते भ. गी. ७।१७
एकभूयं वै प्राणा गच्छन्ति कौ. उ. ३।२
एकपाद्वा एतत्सम्राट् बृह.४।१।२,३६
एकभूयं वै प्राणा भूत्वाएकैकंसर्वाण्ये-वैतानि प्रज्ञापयन्ति कौ.उ. ३।२
(?) एकमक्षरं खद्योतमात्रम् छां.उ.६।७।५
एकमद्वैतं निष्कलं निष्क्रियं.. शिवं.. कद्रसूक्तैरभिषिच्य भस्मजा. २।४
एकमप्यास्थितः सम्यक् भ.गी. ५।४
(?) एकमव्यक्तमनन्तरूपम् महाना. १।५
एकमस्य साधारणं द्वे देवानभाजयत् बृह. १।५।१
एकमस्य साधारणमितीदमेवास्य तत्साधारणमन्नं यदिदमद्यते..नस.. बृह. १।५।२
एकमात्रस्तथाऽऽकाशो ह्यमात्रं तु... अ. ना. ३२
एकमात्रस्तदहितं तद्ब्रह्मास्मि अ. पू. ५।६५
(?)एकमूर्ध्वमुडुंवाधारयेत् (गोपीचंद) वासु. २
एकमेव तत्परं ब्रह्म विभाति निर्वाणं ब्रह्मो. ३
एकमेव तदेक९ सन्न व्यभवत् बृह. १।४।११
एकमेव तद्भवति, एतदमृतम् नृसिंहो. ८।२
एकमेव परं ब्रह्म विभाति ब्रह्मो. २
एकमेवाद्वयं ब्रह्म मायया च चतुष्टयम् गोपालो.२।१५
एकमेवाद्वयंब्रह्मनेहनानास्ति किंचन अध्यात्मो. ६३
एकमेवाद्वितीयं तद्धैक आहुः छांदो.६।२।१
एकमेवाद्वितीयंब्रह्म [त्रि.म.ता.३।३+ पैङ्गलो. १।१
एकमेवाद्वितीयं यद्गुरोर्वाक्येन निश्चितम् । एतदेकान्तमित्युक्तं.. मैत्रे. २।१५
एकमेवाद्वितीयंसन्नामरूपविवर्जितम्, तादत्त्वं वदितीर्यते शु.र. ३।५
एकमेवाद्वितीयं सद्ब्रह्मैवाहं न संशयः ते. बिं. ३।२९
(?) एकमेवानुपश्यति ब्र.बिं. १५
एकयज्ञोपवीती तु नैव सध्यस्तुमर्हति परब्र.२०
एकया यात्यनावृत्तिम् भ.गी.८।२६
(अथ) एकयोर्ध्व उदानः पुण्येन पुण्यलोकं नयति प्रश्नो. ३।७
एकरसं पुरमेव ब्रह्म मकारेण जानीयात् नृसिंहो.५।७
एकरसोऽव्यवहार्यः केनचनाद्वितीय ओतश्च प्रोतश्च नृसिंहो. ८।१
एकरात्रद्विरात्रकृच्छ्रचान्द्रायणादि चरन्तः (हंसाः) आत्मानंप्रार्थयन्ते आश्रमो.४
एकरात्रं वसेद्ग्रामेपत्तने तु दिनद्वयम् ..नगरे पञ्चरात्रकम् (यतिः) ना.प.४।१९,२०
एकरात्रोषितं (शुक्रशोणितं) कललं भवति [गर्भो.३+ निरुक्तो.१।४
एकरूपमनामयम् (ब्रह्म) ते.बिं.६।७२
एकरूपः प्रशान्तात्मा मौनी स्वात्मसुखो भव अ.पू.५।९
एकल एव मध्ये स्थाता (सूर्यः) छां.उ. ३।११।१
एकवर्णं तु रुद्राक्षं परतत्त्वस्वरूपकम् रु.जा.२४
एकवारं प्रतिदिनं कुर्यात्केवलकुम्भकं १यो.त. ६८
एकवासा अवासा वा (यतिः) [ना.प. +३।३१+४।१७
एकविंशतिशाखायामृग्वेदः परि-कीर्तितः (अथर्ववेदे) सीतो.१५
एकविंशत्वादित्यमाप्नोति छांदो.२।१०।५
एकविंशो वा इतोऽसावादित्यो द्वाविंशेन परमादित्याज्जयति तन्नाकं तद्विशोकम् छान्दो.२।१०।५
एकशतं चान्ये साधन आगमाः... इतिहा.२
एकशतं ह वै वर्षाणि मघवान् प्रजापतौ ब्रह्मचर्यमुवास छान्दो.८।११।३
एकश्चरेन्महीमेतां निस्सङ्गः(यतिः) ना.प.५।३७
एकसङ्ख्याविहीनोऽस्मि [मैत्रे.३।७+ ते.बिं.३।२९
एकस्तथा सर्वभूतान्तरात्मा [कठो. ५।९,१०,११
एकस्तम्भेनवद्वारेत्रिस्थूणेपञ्च-देवते । ईदृशे तु शरीरे वा मतिमानुपलक्षयेत् यो.शि.१।७२
एकस्तु पिबते देवः स्वच्छन्दोऽत्र वशानुगः मंत्रिको.६
एकस्थमनुपश्यति भ. गी.१३।३१
एकस्मिन्नविद्यापादेऽनन्तकोटि-ब्रह्माण्डानि सावरणानि श्रूयन्ते त्रि.म.ना. ८।२

एकस्मिन् वशगेयान्ति चत्वारोऽपि
वशं गताः। (मोक्षद्वारपालाः) महो. ४।३
एकस्मिन्नेव पश्चाद्वादीयमानेऽप्रियं
भवति किमु... बृह. १।४।१०
एकस्मिन्नेव संसिद्धे संसिद्ध्यति
परस्परम् (प्राणश्चेतश्च) अ. पू. ५।५२
(?) एकस्य हैकत्वमेति य एवं वेद मैत्रा. ६।१७
एकस्यापि कर्मवशादनेकदेहसम्भवात्
(नजीवो ब्राह्मणः) व. सू.३
एकं चरणमन्यस्मिन्नूरौ वीरासनं.. त्रि. ब्रा. २।३७
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षि-
भूतं भावातीतं त्रिगुणरहितं.. शु.र.११९
एकं पादमथैकस्मिन्विन्यस्योरुणि..
वीरासनमुदीरितम् शाण्डि. १।३।४
एकं पुण्डरीकं धारयति (स्वप्ने) ३ ऐत. २।४।७
एकं बीजं बहुधा यः करोति
[श्वेता. ६।१२ गुह्यका. ७०
एकं ब्रह्म (राधाकृष्णौ) राधो. २।१
एकं ब्रह्म चिदाकाशं सर्वात्मक-
मखण्डितम् महो. ५।५६
एकं ब्रह्म द्वयं ब्रह्म मोहो ब्रह्म.. ते. बिं. ६।३६
एकं ब्रह्माहमस्मीति [अ. पू. ४।२८ +कठरु. १५;
एकं भद्रासनादीनां समास्थाय..
यमाख्यैर्नियमाख्यैश्च.. भवसं. ३।२४
एकं भस्म सर्वभूतान्तरात्मा रूपंरूपं
प्रतिरूपं बहिश्च बृ. जा. २।१
एकंरूपंबहुधायःकरोति [कठो.५।१२ +ब्रह्मो. १५
एकं रूपं बहुधा या करोति गुह्यका. ४४
एकं (मोक्षद्वारं) वा सर्वयत्नेन
सर्वमुत्सृज्य संश्रयेत् महो. ४।३
एकं शिर एकमेतदक्षरम् बृह. ५।५।३,४
एकं सन्न व्यभवत् बृ. उ.१।४।११
एकंसिद्धासनंप्रोक्तं द्वितीयंकमलासनं यो. चू. ३
एकं साङ्ख्यं च योगं च भ. गी. ५।५
एकः (देवः) ओमिति होवाच बृह.३।९।१
(?) एकः कर्मदेवानामानन्दः बृह. ४।३।३३
एकः कृतार्थो भवते वीतशोकः श्वेता. २।१४
एकः पुरस्ताद्य इदं बभूव, यतो बभूव
भुवनस्य गोपाः नृ. पू. २।८

एकः श्यामः पुरतो रक्तः पिनाकी
स्त्रीपुंसरूपस्तंविभज्य स्त्रीषुतस्य
स्त्रीरूपं, पुंसिच पुंरूपं व्यधात् अव्यक्तो. ७
एकः सन् बहुधा विचारः त्रिपु. १।१।१
एकः (आत्मा) सम्भिद्यते भ्रान्त्या
मायया,नस्वरूपतः[अ.पू.५।७६+ जा.द. १०।२
एकः सुपर्णः स समुद्रमाविवेश ३ऐत.१।६।७
[ऋ.अ.८।६।१६=मं.१०।११४।४
[तै. आ ३।११।६।१५
एकाऽऽकृतिः (राधाकृष्णयोः) एकंब्रह्म राधो.२।१
एका (भक्तिः)कर्ममिश्रिता देवाना-
मृषीणामुपासकानांभवतितराम् सामर. २
(?)एका कलाऽतिशिष्टा स्यात् छां.उ.६।७।३
एकाकिना समुपगम्य विविक्तदेशं.. यो.शि. ११९०
(?)एकाकी कामयते जाया मे स्यात् बृ. उ.१।४।१७
एकाकीचिन्तयेद्ब्रह्ममनोवाक्कायकर्मभिः।
मृत्युं च नाभिनंदेत जीवितंवा.. ना. प. ३।६०
एकाकी तेन दग्धोऽहं (कृतकर्मणा)
गतास्ते फलभोगिनः गर्भो.६
एकाकी निस्स्पृहस्तिष्ठेन्नहि केन
सहालपेत् । दद्यान्नारायणेत्येव
प्रतिवाक्यं सदा यतिः ना.प.३।५९
एकाकी यतचित्तात्मा भ.गी.६।६
एकाक्षरपदारूढं सर्वात्मकमखण्डितम्
..त्रिपान्नारायणं भजे एकाक्ष. ०
एकाक्षरप्रदातारंयोगुरुंनाभिनन्दति... शाट्याय.३६
एकाक्षरं त्वक्षरेऽत्रास्ति एकाक्ष.१
एकाक्षरं परमात्मानं हृदि समावेश्य ग.शो.५।६
एकाक्षरः पुनश्चायं मोमित्येवं.. शिवो.१।१९
एका गुह्या सर्वभूतान्तरात्मा गुह्यका. ४४
एकाग्रमनसा यो मां ध्यायते
हरिमव्ययं, हृत्पङ्कजेचस्वात्मानं
स मुक्तो नात्र संशयः वासुदे.७
एकाग्रमानसो भूत्वा दुर्वासो.२।६
एकाङ्गुलं पादतरोरस्य मूलम् कात्याय १
एका च दशशतंच सहस्रं चायुतं..
तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु शिवसं.१३
एकात्मकमखण्डंतदित्यन्तर्भाव्यतांदृढं महो.५।११८
एकात्मके परे तत्त्वे भेदकर्ता कथं
वसेत्..भेदः केनावलोकितः अध्यात्मो.२५

एकात्मप्रत्ययसारं प्रपञ्चोपशमं[मांडू.७ +रामो.१।१
एकादशकृत्वः प्रयुक्ता(गायत्री)...
अन्तरिक्षलोकमभिजयति सन्ध्यो.२
एकादशपदा वाऽनुष्टुब्भवति नृ.पू २।३
एकादशमुखत्वञ्च रुद्रैकादशदैवतम् रु. जा. ३६
एकादशरुद्रत्वं च गच्छति रु. जा. ४५
एकादशरुद्रा नारायणः ना.पू.ता. ५।३
एकादशरुद्रावतार द्वादशार्कतेजाः लांगूलो. ८
(?)एकादशात्मानमात्मानं नृसिंहो. ४।१
(?)एकादशरुद्रांश्च तत्र वै (ध्यायेत) रा. पू. ४।५१
(?)एकादशात्मानं नारसिंहं नृसिंहो.४।१
एकादशासनानित्युक्रकादि.. चक्रं
पद्मासनं कूर्मं मयूरं कुक्कुटं वराहो. ५।१०
एकादशी भवेन्नारी ना.बिं. ११
एकादशे धामनि भूय एवागस्त्यं... त्रि. ता. १।१६
एकादश्यां तपोलोकं ना. बिं. १६
एका देवी सर्वभूतेषु गूढा व्या-
प्तोत्येतत्सर्वभूतान्तरस्था गुह्यका. ६९
एकाध्वरपक्षेऽष्टाध्वरपक्षेवा स्वशाखा-
नुगतमंत्रैरष्टश्राद्धान्यष्टदिनेषु ना. प. ४।३९
एकान्तकेवलचिद्रेकरसस्वभावे... वराहो. २।७३
एकान्तगुहायां सुखासनसुखगोष्ठी निर्वाणो. १
एकान्तस्थानम् निर्वाणो. ४
(?)एकान्ते द्वैतवर्जिते स्कन्दो. १२
एकान्तेन श्रवणार्थानुसन्धानं
मननं भवति पैङ्गलो. ३।२
एकान्नं न तु भुञ्जीत बृहस्पति-
समादपि १सं. सो.२।७१
एकाभावे द्वितीयं न द्वितीयेऽपि
न चैकता ते. बिं. ५।२१
एकारामः परिव्रज्य भिक्षार्थं... ना. प. ३।५५
एका स आसीत्प्रथमा सा नवासी-
दासोनविंशदासोनत्रिंशत् त्रिपुरो. ३
एकांशेन स्थितो जगत् भ. गी. १०।४२
एकां हि रुद्रा यजन्ति गोपालो. १।२०
एकीकुर्यात् प्रयत्नतः (चित्तं) अद्वैत.४५
एकीभवति नजिघ्रतीत्याहुः(आत्मा) बृह.४।४।२
एकीभवति न पश्यतीत्याहुः ,, बृह. ४।४।२
एकीभवति न मनुत इत्याहुः ,, बृह. ४।४।२
एकीभवति न रसयत इत्याहुः ,, बृह.४।४।२
एकीभवति न वदतीत्याहुः (आत्मा) बृह. ४।४।२
एकीभवति न विजानातीत्याहुः ,, बृह. ४।४।२
एकीभवति न शृणोतीत्याहुः ,, बृह. ४।४।२
एकी भवति न स्पृशतीत्याहुः ,, बृह. ४।४।२
एकीभूतःपरेणासौतदाभवतिकेवलः जा.द. १०।११
एकीभूतः सुषुप्तस्थः प्रज्ञानघनवान्
सुखी। नित्यानन्दमयोऽप्यात्मा
सर्वजीवान्तरस्थितः ना. प. ८।१५
एकेन तंतुना जालं विक्षिपति ब्रह्मो. १
एकेन द्वाभ्यां त्रिभिरष्टभिर्वा कालेन
चैवात्मगुणैश्च सूक्ष्मैः। आरभ्य
कर्माणि..भावांश्च.. विनियोजयेत् श्वेता. ६।३
एकेन ध्यानयोगेन तत्पापं निर्दहेत्.. दुर्वासो. १।११
(?)एकेन नखनिकृन्तनेन सर्वं कार्ष्णा-
यसंविज्ञातं..स्यात् [छां उ.६।१।६ +पंचब्र.३०
एकेनबिल्वपत्रेणसन्तुष्टोऽस्मिमहामुने १बिल्वो. २
एकेन मारुतमाकृष्य अमृ. १९
एकेन लोहमणिना सर्वं लोहमयं यथा।
विज्ञातं स्यादथैकेन.. पञ्चब्र. ३०
एकेनैवतुपिण्डेन,मृत्तिकायाश्चगौतम।
विज्ञातं मृण्मयं सर्वं मृदभिन्नं
हि कार्यकम् पञ्चब्र. २९
एकेनैवशरीरेणयोगाभ्यासात्... चिरात्
सम्प्राप्यते मुक्तिर्मर्कटक्रमः यो.शि.१।१४०
एकेऽन्यमभिध्यायन्त्येकेऽन्यम् मैत्रा. ४।५
एके सावित्रीमनुष्टुभमन्वाहुः छां.उ.५।१४।५
एके ह कुरुनन्दन भ. गी. २।४१
एकैकमुपास्ते, न स वेदाकृत्स्नो
ह्येषोऽत एकैकेन भवति बृह.१।४।७
एकैकशो निषेव्यन्ते..तत्र सिद्धिं
प्रयच्छन्ति.. मुक्तिको. २।१२
एकैकस्यास्तु शाखायाएकैकोप-
निषन्मता मुक्तिको.१।१४
एकैव विश्वरूपिणी तस्मादुच्यतेनैका देव्यु.२०
एकैव सर्वत्र वर्तते तस्मादुच्यत एका देव्यु.२७
एकैकं जालं बहुधा विकुर्वन् श्वेताश्व.५।३
एकैकमेतानि सर्वाणि प्रज्ञापयन्ति कौ.उ.३।२
एकैकं देवमेतस्यैव सा विसृष्टिः बृह.१।४।६
एकैकः पुरुषो देवान् भुनक्ति बृह.१।४।१०

एको अश्वो वहति सप्तनामा चित्त्यु.११।९
[+ऋक्सं. अ. २२।३ मं. १।१६४।२
एको गणेशो बहुधा निविष्टः हेरम्बो. १०
(१)एकोद्धारः खद्योतमात्रः छां.उ.६।७।३
एकोत्तरं नाडिशतं तासां मध्ये वराः
स्मृताः (परास्मृता) सुषुम्ना तु
परे लीना [क्षुरिको. १५+ यो.शि.६।५
एकोऽथवाऽप्यच्युत तत्समक्षम् भ.गी.११।४२
एको दण्डद्वयं मध्ये पश्यति ज्ञान-
चक्षुषा..ब्रह्मलोकं प्रजन्ति ते योगरा. २०
एको देवः प्रापको यो वसूनां... ग. पू. १।६
एको देवः सर्वभूतेषु गूढः श्वेता. ६।११+
[ब्रह्मो.१६+ गोपालो. ३।१९
एको देवः साक्षी निर्गुणश्च तद्ब्रह्माह-
मिति व्याहरेत् ना.प.६।६
एको देवो नित्यलीलानुरक्तः राधोप.४।३
एको देवो बहुधानिविष्टः [मुद्गलो.१+ चित्त्यु.१४।१
एकोऽनन्तः प्रागनन्तो दक्षिणतो-
ऽनन्तः ऊर्ध्वचावाङ्चसर्वतोऽनन्तः मैत्रा. ६।१७
एकोनविंशतिमुखः साष्टाङ्गः सर्वगः
प्रभुः ना.प. ८।१२
एकोनविंशतिसंख्याकानामुपनिषदां
पूर्णमद इति शान्तिः मुक्ति. १।५४
एकोऽपि ब्रह्मप्रणवः सर्वाधारः
स्वयञ्ज्योतिरेष सर्वेश्वरो विभुः ना.प.८।४
एकोऽपि सन्बहुधा यो विभाति गो.पू. ३।२
एको बटुको न द्वितीयाय तस्मै बटुको. २२
एकोबहूनामसि मन्यवी ळिहतो
[ऋक्सं.अ.८।३।१९=मं.१०।८४।४ वनदु. ११०
एको बहूनां यो विदधाति कामान्
[कठो.५।१+श्वेता. ६।१३+ गो. पू. ३।३
एको भिक्षुर्यथोक्तः स्यात् ना. प. ३।५६
एको रुद्रो न द्वितीयाय तस्मै अ.शिरः. २।७
एँको वशीनिष्क्रियाणां बहूनां श्वेता. ६।१२
एको वशी सर्वगः कृष्ण ईड्यः गो. पू. ३।२
एको वशी सर्वभूतान्तरात्मा
[कठो. ५।१२ ब्रह्मो. १६
एको विश्वानि रूपाणि योनीश्चसर्वाः श्वेताश्व. ५।२

एकोविष्णुरनेकेषु..अनुस्यूतोवस-
त्यात्मा भूतेष्वहमवस्थितः वासुदे. ९
एकोविष्णुर्महद्भूतं पृथग्भूतान्यनेकशः।
त्रीन् लोकान् व्याप्य भूतात्मा.. शरभो. २९
एकोऽश्वत्थनामैतद्ब्रह्म मैत्रा. ६।४
एकोऽस्य संबोधयीतेत्येनं ह्याह मैत्रा. ६।४
एकोह देवः प्रदिशो नु सर्वाः पूर्वो ह
जातः स उगर्भे अन्तः स एव
जातः सजनि.. [अ. शिर. ३।६+ बटुको. २१
एकोऽहमविकलोऽहं निर्मलनिर्वाण-
मूर्तिरेवाहं आ. प्र. ७
एको ह वै नारायण आसीत्
[महो. १।१+ चतुर्वे. १
एको हंसो भुवनस्यास्य मध्ये स
एवाग्निः सलिले.. तमेव
विदित्वाऽति मृत्युमेति श्वेता. ६।१५
एको हि रुद्रो न द्वितीयाय तस्थुः
[तस्थौ] य इमाँल्लोकानीशते.. श्वेता. ३।२
एजत्प्राणन्निमिषचयदेतज्जनथ
[मा.पा.] मुण्डको.२।२।१
एजत्प्राणन्निमिषच्च यदेतज्जानथ मुण्ड. २।२।१
एत एव त्रयो गुणाः शिवो. २।६
एत एव त्रयो लोकाः शिवो. २।६
एत एव त्रयो वेदाः शिवो. २।६
(१)एतत्कीर्तिश्च व्युष्टिश्चेत्युपासीत छां.उ. ३।१३।४
(अथ) एतच्चक्षुः प्रविवेश तद्वाचाऽवदत् कौ.उ. २।१४
एतच्चतुर्द्वारं.लक्षसूर्यसमुज्ज्वलं राधोप. २।१
एतच्चान्यत्त्रिकालातीतंतदप्योङ्कारएव म. शौ. २।१
एतच्छ्रुत्वा वचनं केशवस्य भ.गी. ११।३५
एतच्छ्रुत्वा सम्परिगृह्य मर्त्यः प्रवृह्य
धर्म्यमणुमेतमाप्य कठो. २।१३
एतच्छ्रेयो येऽभिनन्दन्ति मूढाः,
जरामृत्युं ते पुनरेवापि यन्ति मुण्ड.१।२।७
(अथ) एतच्छ्रोत्रंप्रविवेश तद्वाचाऽवदत् कौ.उ. २।१४
एतज्ज्ञानमिति प्रोक्तं भ.गी. १३।१२
एतज्ज्ञानंचमोक्षंचशेषास्तुग्रंथविस्तराः मैत्रा. ६।३४
एतज्ज्ञानं च मोक्षं च अतोऽन्यो
ग्रन्थविस्तरः ब्र. वि. ५

एतज्ज्ञेयं नित्यमेवात्मसंस्थं [श्वेता. १।१२
[+भवसं. २।५६+ ना. प. ९।११
एतत्कुर्वाणोऽध्येताऽध्यापकश्च...
पुरुषो भवति मुद्गलो. ५।१
एतत्कोशचतुष्टयं संयुक्तं स्वकारणा-
ज्ञाने वटकणिकायामिववृक्षोयदा
वर्तते तदाऽऽनन्दमयः कोशः सर्वसारो. ४
एतत्कोशत्रयसंसक्तं तद्गतविशेषा-
विशेषज्ञो यदा भासते तदा
विज्ञानमयः कोशः.. सर्वसारो. ४
एतत्कोशत्रयं (प्राणमय–मनोमय-
विज्ञानमयात्मकं) लिङ्गशरीरम् पैङ्गलो.२।५
एतत्कोशद्वयसंसक्तमनआदिचतुर्दश-
करणैरात्माशब्दादिविषयसङ्कल्पा-
दीन् धर्मान् यदा...मनोमयकोशः सर्वसारो. ४
एतत्क्षराक्षरातीतमनक्षरमितीर्यते यो. शि. ३।५
एतत्क्षेत्रं समासेन भ.गी.१३।७
एतत्तदग्ने अनृणो भवामि जीवन्नेव... सद्वै. ४
एतत्तदाहुः—एकशतं ह वै वर्षाणि
मघवान्प्रजापतौ ब्रह्मचर्यमुवास छांदो. ८।११।३
एतत्तदुत्तमं सत्यम् अद्वैत. ४८
एतत्तदेकमयनं मुक्तेर्मोक्षस्य दर्शितम् आयुर्वे. २२
एतत्तदुत्तमं सत्यं यत्रकिञ्चिन्नजायते अ. शां. ७१
एतत्तव मनुस्वरूपम् गणप. ७
एतत्तस्य साम्नः [मा.पा.] छां.उ.२।९।४
एतत्त्रयपूरकं पूरकाणां मन्त्री
प्रथते मदनो मदन्या त्रिपुरो. ५
एतत्त्रयं वीक्षेत दमं दानं दयामिति सुबालो.३।३
एतत्तु परमं गुह्यमेतत्तु परमं शुभम्।
नातः परतरं किञ्चित्.. ब्र.वि. ४५
एतत्तुल्यं यदि मन्यसे वरं वृणीष्व.. कठो. १।२४
एतत्पञ्चेन्द्रियज्ञानमहत्त्वानुभवात्म-
कम्। जानात्यनेन योगीन्द्रः.. अमन. १।५५
एतत्परायणम् (आत्मान्वेषणम्) प्रश्नो. १।१०
(अथ) एतत्पूर्णमध्यात्मं यन्नेति १ऐत. ३।६।६
एतत्पैप्पलादं महाशास्त्रं योऽधीते..
स जन्ममरणेभ्यो मुक्तो भवति शरभो. ३७
(अथ)एतत्प्राणः प्रविवेश तत्तत एव.. कौ.उ. २।१४

एतत् (भस्म) प्रातः प्रयुञ्जानो रात्रि-
कृतात्पापात्पूतो भवति भस्मजा.१।७
(?)एतत्त्रयं सदेकमयमात्मात्मो एकः... बृ.उ.१।६।३
एतत्सङ्घातं कर्मणिसञ्चितं त्वगादियुक्तं
स्थूलशरीरं भवति पैङ्गलो.२।२
एतत्सत्यधर्मोनभसोऽन्तर्गतस्यतेजसो-
ऽशमात्रमेतत् मैत्रा.६।३५
एतत्सत्यं ब्रह्मपुरम्, अस्मिन्कामाः.. छान्दो.८।१।५
एतत्सत्यं ब्रवीमि ब्रह्मविद्यां वरिष्ठां
देवेभ्यः प्राणेभ्यः परब्र. १
एतत्समीरणे प्रकाशप्रक्षेपकौष्ण्य-
स्थानीयम् मैत्रा. ७।११
एतत्सर्वं गणेशः ग. शो.२। ४
एतत्सर्वं प्राण एवैतन्मयो वा बृह. १।५।३
(एवं ह वा) एतत्सर्वं पर आत्मनि
सम्प्रतिष्ठते प्रश्नो. ४।७
एतत्सर्वं यन्मूर्तं चामूर्तं च
तस्मान्मूर्तिरेव रयिः प्रश्नो. १।५
एतत्सर्वं भूःस्वाहेत्यप्सु परित्यज्या-
ऽऽत्मानमन्विच्छेत् जा.बा.६
एतत्सामगायन्नास्ते हा३वुहा३... तैत्ति.३।१०।५
एतत्सामवेदशिरोऽधीते नारा. ३
एतत्सुदर्शनं महाचक्रं तस्य मध्ये... नृ. पू. ५।७
एतत्सोमस्यसूर्यस्यसर्वलिंगंस्थापयति महाना. १०।३
एतत्स्थितमेतत्सत्तस्यैतस्य मूर्तस्य.. बृह. २।३।२
एतदकरणे प्रत्यवैति ब्राह्मणः भस्मजा. १।६
(?)एतदक्षरं गार्ग्यदृष्टं द्रष्टृ बृ.उ.३।८।११
एतदज्ञाय कृष्णमाराधयितुमिच्छन्
स मूढतमः (?) राधिको. ५
एतदधिविधाय ऋषिरवोचत् तैत्ति. १।७।१
एतदधीयानः सर्वक्रतुफलं लभते सङ्कर्ष. ३
एतदनृतमुभयतः सत्येन परिगृहीतम् बृह. ५।५।१
एतदन्यच्चतुर्थमन्तस्थरूपमिति ह
स्माह...माण्डूकेयः ३ऐत.२।१।२
एतदपरिमितधा चात्मानं विभज्य
पूरयतीमाँल्लोकान् मैत्रा. ६।२६
(अथ) एतदपि यन्त्यन्ततः मैत्रा. ६।११
एतदप्रमेयं ध्रुवम् (ब्रह्म–आत्मा) बृह. ४।४।२०

एतदमृतमभयमेतद्ब्रह्म [छांदो.४।१५।१ +८।३।४
[+८।७।४+८।१०।१+८।११।१+ मैत्रा.१।२
[नृसिंहो.८।२+८।४ +८।६+८।७
एतदमृतमभयमेतत्परायणम् प्रश्नो. १।१०
एतदमृतमेतद्यदेतत्त्यम् बृह.२।३।३,५
(ओं) एतदस्मिन्नक्षरे संसृज्यते छां. उ. १।१।६
एतदालम्बनं ज्ञात्वा ब्रह्म लोकेमहीयते कठो. २।१७
एतदालम्बनं परम्, एतत्... ज्ञात्वा कठो. २।१७
एतदालम्बनं श्रेष्ठमेतदालम्बनं परम् कठो. २।१७
एतदिहामुत्रोपाधिनैराश्येनामुष्मि-
न्मनःकल्पनं,एतदेव च नैष्कर्म्यम् गो. पू. २।२
एतदुक्त्वाऽन्तर्हृदयःशाकायन्यस्तस्मै
नमस्कृत्वा.. मैत्रा. ६।३०
एतदुपनिषदं विन्यसेत् आश्रमो. ५
(खलु)एतदुपनिषदं विद्वान्य एवं वेद आरुणि. ५
एतदु हास्या एतत्स यावदिदंप्राणिति गायत्र्यु. १
एतदु हैवास्या एतत्स यावदेषु त्रिषु
लोकेषु तावद्ध जयति [बृह. ६।१४।१,२,३
एतदु हैवेन्द्रो विश्वामित्राय प्रोवाच १ ऐत. २।४।२
एतदृग्वेदशिरोऽधीते नारा. १
एतदृग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदो.. शिक्षा
कल्पो व्याकरणं ... सर्वाणि
भूतानि (महतोभूतस्यनिःश्वसितं) सुबालो. २।१
एतदेकशतं नाडीनां तासां शतं शतं
एकैकस्यां... प्रतिशाखा ...
भवन्ति तासु व्यानश्चरति प्रश्नो. ३।६
एतदेव (मनोनैराश्यं) च नैष्कर्म्यम् गो. पू. २।२
एतदेव ज्वलदेतद्धि महाविभूति नृसिंहो. ५।६
एतदेव ततोभूय इत्येतदेव ततोभूयः छान्दो. ३।११।६
एतदेव नमाम्येतद्धि महाविभूति नृसिंहो. १।६।५
एतदेवनातिशयन्ते—नाति-
शीर्यन्ते (मा. पा.) छां.उ.३।१२।३
एतदेव नातिशीयन्ते [छान्दो. ३।१२।३,४
एतदेव नृसिंहमेतद्धि महाविभूति नृसिंहो. ५।६
एतदेव परमतत्त्वम् (मनोलयरूपं) मं. ब्रा. ५।१
एतदेव परं ज्ञानं शिव इत्यक्षरद्वयम् शिवो. १।१७
एतदेव परं ध्यानमेतदेव परं तपः
(गणेशज्ञानम्) ग. शो. १।५

एतदेव ब्रह्मापिसर्वज्ञंमहामायंमहाविº नृसिंहो.. ५।६
एतदेव भद्रमेतद्धि महाविभूति नृसिंहो. ५।६
एतदेव भीषणमेतद्धि महाविभूति नृसिंहो. ५।६
एतदेव महदेतद्धि महाविभूति नृसिंहो. ५।६
एतदेव मृत्युःमृत्य्वेतद्धि महाविभूति नृसिंहो. ५।६
एतदेव विष्ण्वेतद्धि महाविभूति नृसिंहो. ५।६
एतदेव वीरमेतद्धि महाविभूति नृसिंहो. ५।६
एतदेव सर्वतोमुखमेतद्धि महाविभूति नृसिंहो. ५।६
एतदेव सूक्ष्माष्टाक्षरं भवति तारसा. २।१
एतदेवाक्षरंज्ञात्वायोयदिच्छतितस्यतत् मैत्रा. ६।४
एतदेवाक्षरं परम्। एतत्.. ज्ञात्वा कठो. २।१६
एतदेवाक्षरं पुण्यम् मैत्रा. ६।४
एतदेवाक्षरंस्वरममृतमभयं प्रविशति छां. १।४।५
एतदेवामृतं दृष्ट्वा (देवाः)तृप्यन्ति छांदो. ३।६।१
[३।७।१+३।८।१+३।९।१ +३।१०।१
एतदेवाहमेतद्धि महाविभूति नृसिंहो. ५।६
एतदेवाहं मनुष्याय हिततमं मन्ये
यन्मां विजानीयात् कौ. उ. ३।१
एतदेवैकाक्षरं व्याख्यातम् दत्तात्रे. १।१
एतदेवोग्रमेतद्धि महाविभूति नृसिंहो. ५।६
एतदेषामुक्थम् [बृह. १।६।१ +१।२।३
एतदेषां ब्रह्म [छान्दो.१।६।१ बृह.१।६।१,२,३
एतदेषां साम बृह.१।६।१,२,३
एतदेष्टिकं कर्ममयमात्मानमध्वर्युः
संस्करोति कौ. उ. २।६
एतदोजश्च महश्चेत्युपासीत छां.उ. ३।१३।५
एतद्ब्रह्ममहं परम् भ. गी. १८।७
एतद्ध तदनीशानानि ह वा अस्मै
भूतानि बलिं हरन्ति १ ऐत. १।५।२
एतद्ध वै तज्जनको वैदेहो बुडिलमा-
श्वतराश्विमुवाच बृह. ५।१४।८
एतद्ध वै तज्जनको वैदेहो बुरिल-
माश्वितराश्विमुवाच गायत्र्यु. ५
एतद्ध वै पूर्वे विद्वांसोऽग्निहोत्रं
जुहुवांचक्रुः कौ. उ. २।५

एतद्ध स्म वैतद्विद्वानाह महिदास
ऐतरेयः [१ ऐत. १।८।२+ छां.उ. ३।१६।७
एतद्ध स्मवैतद्विद्वानाहहिरण्यदन्वैदो
न तस्येशयं महं न दधुः– १ ऐत. १।५।१
एतद्ध स्म वैतद्विद्वानुदालक
आरुणिराह बृह. ६।४।४
एतद्ध स्म वै तद्विद्वान् कुमार-
हारित आह बृह. ६।४।४
एतद्ध स्म वैतद्विद्वानाकोमौद्गल्यआह बृह. ६।४।४
एतद्ध स्म वै तद्विद्वांस आहुः छान्दो. ६।४।५
एतद्ध स्म वैतद्विद्वांसआहुर्ऋषयः
कावषेयाः ३ ऐत. २।६।३
एतद्ध स्म वैतत्पूर्वे विद्वांसः प्रजां
न कामयन्ते बृह.४।४।२२
एतद्धि दुर्लभतरम् भ. गी.६।४२
एतद्धि परमं तपः, आपोज्योतीरसो-
ऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों नम इति
[अ. शिरः. ३।१५ बटु. ३।२७
एतद्धि महाविभूति (नारसिंहं ब्रह्म) नृसिंहो. ५।६
एतद्धि सर्वाणि कर्माणि बिभर्ति बृह. १।६।३
एतद्धि सर्वाणि नामामि बिभर्ति बृह. १।६।१
एतद्धि सर्वाणि रूपाणि बिभर्ति बृह. १।६।२
एतद्धि सर्वैः कर्मभिः समम् बृह. १।६।३
एतद्धि सर्वैं रूपैः समम् बृह. १।६।२
एतद्धि सर्वैर्नामभिः समम्
[छान्दो. १।६।१+ बृह. १।६।१
एतद्धूमस्येव समीरणे नभसि
प्रशाखयैवोत्क्रम्य.. मैत्रा. ७।११
एतद्ध्यशब्दमस्पर्शमरूपमरसमगन्धं नृसिंहो. ९।९
एतद्ध्येवाक्षरं ज्ञात्वा यो यदिच्छति
तस्य तत् कठो. २।१६
एतद्ध्येवाक्षरं (एतद्ध्यक्षरं)ब्रह्म ह्येत-
देवाक्षरं परम् कठो. २।१६
एतद्ध्येवैतदभयं भवति बृह. १।४।१४
एतद्बाणमवष्टभ्य विधारयामः(मि) प्रश्नो. २।२,३,
एतद्बुद्ध्वा बुद्धिमान् स्यात् भ. गी. १५।२०
एतद्ब्राह्मं राधाकुण्डम् राधोप. २।१

एतद्ब्रह्म,अभयंवैब्रह्मभवति [नृसिंहो. ८।२+८।४
एतद्ब्रह्म, एतत्सत्यम् १ ऐत. १।१।१
एतद्ब्रह्मविषयमेतद्ब्रह्मानुरर्णवः मैत्रा. ६।३९
एतद्ब्रह्मैतत्सत्यंतदेतत्त्र्यक्षरम्(मा. पा.) बृ.उ. ५।३।१
एतद्ब्रह्मैतत्सर्वम्, तदेतत् बृह. ५।३।१
एतद्ब्रह्मैतदुपासितव्यम् जाबालो. ४
एतद्ब्रह्मैतमितःप्रेत्याभिसंभविताऽस्मि छान्दो.३।१४।४
एतद्यजुर्त्रंदशिरोऽधीते नारा. २
एतद्यज्ञायज्ञीयमङ्गेषु प्रोतम् छान्दो.२।१९।१
(?)एतद्यदत्रिरिति सर्वस्यात्ताभवति बृह. २।२।४
एतद्यदादित्यस्यमध्य इवेत्यक्षिण्यग्नौ
चैतद्ब्रह्मैतदमृतम् मैत्रा. ६।३५
एतद्यदिदमित्थेत्थोपधारय इति आर्षे. २।२
एतद्यदिदमित्थेत्थोपव्याख्ये आर्षे. २।२
एतद्यदृग्वेदो यजुर्वेदःसामवेदोऽथर्वा-
ङ्गिरसः (महतोभूतस्यनिश्वसितम्) बृह. ४।५।११
एतद्यदेतदादित्यस्य कृष्णं रूपम् छां.उ. ३।३।३
एतद्यद्धुक्तो रिष्येद्भूःस्वाहेतिगार्हपत्ये छान्दो.४।१७।४
एतद्योगेन परमपुरुषो जीवो
भवति, नान्यः मुद्गलो. ४।२
एतद्योनीनि भूतानि भ. गी. ७।६
एतद्यो वेत्ति तं प्राहुः भ. गी. १३।२
एतद्यो वेद निहतं गुहायां, सो-
ऽविद्याग्रन्थिं विकिरतीह सोम्य मुंड. २।१।१०
एतद्रथन्तरमग्नौ प्रोतम् छान्दो.२।१२।१
एतद्राजनं देवतासु प्रोतम् छान्दो.२।२०।१
एतद्रुद्रस्य रुद्रत्वं, एतत्तदपरिमितधा.. मैत्रा. ६।२६
एतद्रूपामधीयाना समानफलदा तारोप. ५
एतद्वस्तुचतुष्टयं यस्य लक्षणं देश-
कालवस्तुनिमित्तेष्वव्यभिचारी
तत्पदार्थः परमात्मेत्युच्यते सर्वसारो.६
एतद्वा अन्ततोऽन्नं राद्धम् तैत्ति. ३।१०।१
एतद्वा आदित्य ॐमित्येवं ध्यायं-
स्तथाऽऽत्मानं युञ्जीत मैत्रा.६।३
(अथ) एतद्वाप्रविवेश,तद्वाचाऽवदत्.. कौ.उ. २।१४
एतद्वामदेव्यं मिथुने प्रोतम् छान्दो. २।१३।१

(अथ) एतद्वामेऽक्षणि पुरुषरूपम्. बृह.४।२।३
एतद्वायुदशकसंसर्गोपाधिभेदेनरेचक-
पूरक-शोषक दाह-प्लावकाः..
पञ्चविधोऽस्ति भावनो. ९
एतद्वाव तत्स्वरूपं नभसः खे-
ऽन्तर्भूतस्य यत्परं तेजस्तत्
त्रेधाऽभिहितम् मैत्रा. ७।११
एतद्वाव तत्स्वरूपं नभसः खेऽन्तर्भू-
तस्य यदोमित्येतदक्षरम् मैत्रा. ७।११
एतद्विज्ञानं, यत्रैतत्पुरुषःसुप्तःस्वप्नं
न कंचन पश्यति कौ.उ.३।३
एतद्विज्ञानं, यत्रैतत्पुरुषआर्तोमरिष्य-
न्नाबल्यं न्येत्यसम्मोहं नैति कौ. उ. ३।३
एतद्विद्यामनुशिष्टस्त्वयाऽहं... कठो. १।२०
एतद्विधमिदं चेतनवत् प्रतिष्ठापितम् मैत्रा. १।५
एतद्विधेऽस्मिञ्छरीरे किंकामोपभोगैः मैत्रा.१।४+१।८
एतद्विष्णोःपरमंपदं(च) [मैत्रा.६।२६ + गो.पू. ३।४
एतद्वीरासनं स्थानं ब्रह्मणा... सन्ध्यो. ६
एतद्वृत्ते पुरुषस्याल्पमेधसो यस्यान-
श्नन् वसति ब्राह्मणो गृहे कठो. १।८
एतद्वृत्तंपुरस्तादुश्शक्यमेतत्प्रश्नमैक्ष्वा-
कान्यान् कामान् वृणीष्व मैत्रे. १।१
एतद्वेदितुमिच्छामि भ. गी. १३।२
एतद्वै जरामर्यमग्निहोत्रं सत्रं॰ त्रिसुप. ४
[महाना. १८।१०
एतद्वै खलु लोकद्वारं विदुषां प्रपदनं
निरोधोऽविदुषां छांदो.८।६।५
एतद्वै तदक्षरंगार्गिब्राह्मणाअभिवदंति बृह.३।८।८
एतद्वै तमसो रूपं तत्तमः खल्वीरितं
सम्प्रास्रवति मैत्रा. ५।५
एतद्वै नानात्वस्य रूपम् मैत्रा. ३।३
एतद्वै नारायणस्याष्टाक्षरं वेद परम-
पुरुषो भवति सारसा. १।४
एतद्वैपरमंतपो.. अप्याद्धति(मा.पा.) बृ.उ. ५।११।१
एतद्वै परमं तपो यद्व्याहितस्तप्यते
परमं॰हैव लोकं जयति बृह. ५।११।१
एतद्वै परमं तपो यं प्रेतमरण्यं हरन्ति
परमं॰हैव लोकं जयति बृह.५।११।१
एतद्वै परं चापरं च ब्रह्म यदो-
मित्येतदक्षरम् मैत्रा.६।५

एतद्वै प्राणानामायतनम् प्रश्नो. १।१०
एतद्वै ब्रह्म दीप्यते यच्चक्षुषा पश्यति कौ. उ. २।१३
एतद्वैब्रह्मदीप्यते यच्चन्द्रमाद्दृश्यतेतस्य.. कौ.उ. २।१२
एतद्वै ब्रह्म दीप्यते यच्छ्रोत्रेण शृणोति कौ.उ. २।१३
एतद्वै ब्रह्म दीप्यते यथाऽऽदित्योदृश्यते कौ.उ. २।१२
एतद्वै ब्रह्मदीप्यते यदग्निर्ज्वलति[कौ.उ. २।१२,१२
एतद्वै ब्रह्म दीप्यते यद्विद्युद्विद्योतते कौ. उ. २।१२
एतद्वै ब्रह्म दीप्यते यद्वाचा वदति कौ. उ. २।१३
एतद्वै ब्रह्मदीप्यते यन्मनसा ध्यायति कौ. उ. २।१३
एतद्वै मध्यतोऽन्नं राद्धम् तैत्ति.३।१०।१
एतद्वै महोपनिषद्देवानां गुह्यम् अव्यक्तो. ४
एतद्वै महोपनिषदं देवानां गुह्यम् महाना.१७।१५
एतद्वै मुखतोऽन्नं राद्धम् तैत्ति. ३।१०।१
एतद्वैयजुस्त्रयींविद्यां प्रत्येषा वागेतत्
परममक्षरम् सहवै. १५
एतद्वैरजसोरूपं, तद्रजः खल्वीरितं
विषमत्वं प्रयाति मैत्रा. ५।५
एतद्वैराजमृतुषु प्रोतम् छान्दो.२।१६।१
एतद्वैरूपं पर्जन्ये प्रोतम् छान्दो.२।१५।१
एतद्वैसत्यकाम परं चापरं च ब्रह्म
यदोङ्कारस्तस्माद्विद्वान्..
एकतरमन्वेति [प्रश्नो. ५।२+ मैत्रा. ६।५
एतद्वै सत्यकाम परं चापरं च
यदोमित्येतदक्षरमिति मैत्रा. ६।५
एतद्वैसत्येनदानेन तपसाऽनाशकेन
ब्रह्मचर्येण निर्वेदनाशकेन षडङ्गेनैव
साधयेत् सुबालो. ३।३
एतद्वै वाचः सत्यं, यदेव वाचः सत्यं
तत्प्रायुक्तम् सहवै. १५
एतद्वै सत्त्वस्य रूपं तत्सत्त्वं
सम्प्रास्रवत् मैत्रा. ५।५
एतद्वैसन्धिसन्ध्यांब्रह्मविदः.उपासते..
सोऽविमुक्त उपासते [जाबा.२+ रामो. ३।१
एतद्वैसावित्रस्याष्टाक्षरं पदं श्रिया-
भिषिक्तं [नृ. पू. ४।३+ सूर्यता. ३।१
एतद्वैस्वर्गस्य लोकस्यद्वारंयश्चन्द्रमाः.. कौ. उ. १।२
एतद्वो धनमार्याणां मन्त्राश्चैव
व्रतानि च इतिहा. ९९
एतन्नाराणस्य तारकं भवति ना. पू. ता. २।१

एतन्निर्वाणदर्शनं शिष्यंपुत्रंविनानदेयं निर्वाणो. ८
एतन्निर्वाणानुशासनं [सुबालो.५।३+ ५।१५
एतन्निर्वाणानुशासनमितिवेदानुशासनं सुबालो. २।३
एतन्मध्याह्नसायाह्नेषु त्रिकालेषु..
भस्मधारणमप्रमादेन कार्यम् भस्मजा. १।६
(अथ)एतन्मनः प्रविवेश,
वद्वाचाऽवदत्.. कौ. उ. २।१४
एतन्मन्त्रंमयोद्दिष्टं गुह्याद्गुह्यतमंमहत् सूर्यता. २।४
एतन्मयो वा अयमात्मा बृह. १।५।३
एतन्मर्त्यमेतत्स्थितमेतत्सत् बृह. २।३।२,४
एतन्मे संशयं कृष्ण भ. गी. ६।३९
एतन्मोक्षलक्षणम् (पूर्वोक्तं) मैत्रा. ६।३०
(अथ) एतन्म्रियते यन्न ज्वलति.. कौ. उ. २।१२
(अथ) एतन्म्रियते यन्न दृश्यते कौ.उ.२।१२
(अथ) एतन्म्रियते यन्न ध्यायति कौ. उ. २।१३
(अथ)एतन्म्रियते यन्नवदति(वदति) कौ. उ. २।१३
(अथ) एतन्म्रियते यन्न पश्यति कौ.उ. २।१३
(अथ) एतन्म्रियते यन्न विद्योतते कौ.उ. २।१२
(अथ) एतन्म्रियते यन्न शृणोति कौ. उ. २।१३
एतमभावध्वर्यवः (मीमांसन्ते) ३ ऐत. २।३।४
एतमग्निं तवैव प्रवक्ष्यन्ति जनासः कठो. १।१९
एतमन्नमयमात्मानमुपसंक्रम्य..
एतत्साम गायन्नास्ते तैत्ति. ३।१०।५
एतमन्नमयमात्मानमुपसंक्रामति तैत्ति. २।८
एतमस्यामेतं दिव्येतंवायावेतमाकाशः ३ ऐत. २।३।४
एतमानन्दमयमात्मानमुपसंक्रम्य..
साम गायन्नास्ते तैत्ति. ३।१०।५
एतमानन्दमयमात्मानमुपसंक्रामति तैत्ति. २।८
एतमितः प्रेत्याभिसम्भविताऽस्मि छान्दो.३।१४।४
एतमिन्धं सन्तमिन्द्र इत्याचक्षते बृ. उ. ४।२।२
एतमु एव बृहस्पतिं मन्यते वाग्घि
बृहती, तस्या एष पतिः छान्दो.१।२।११
एतमु एवायास्यं मन्यन्त
आस्याद्यदयते छान्दो.१।२।१२
एतमु एवान्ततोऽवित्त्वोत्क्रामति
व्याददात्येवान्तत इति छान्दो. १।२।९
एतमु एवाहमभ्यागासिषम् छान्दो.१।५।२,३

एतमु हैव चूलो भागवित्तिर्जानकाय
आयस्थूणायान्तेवासिन उक्त्वो-
वाचापि य एनꣳ शुष्के स्थाणौ
निषिञ्चेज्जायेरञ्छाखाः प्ररोहेयुः
पलाशानीति बृ. उ. ६।३।१०
एतमु हैव जानकिरायस्थूणः सत्य-
कामाय जाबालायान्तेवासिन
उक्त्वोवाचापि.. बृह. ६।३।११
एतमु हैव मधुकः पैङ्ग्यश्चूलाय भाग-
वित्तयेऽन्तेवासिनउक्त्वोवाचापि.. बृह. ६।३।९
एतमुहैव वाजसनेयो याज्ञवल्क्यो
मधुकाय पैङ्ग्यायान्तेवासिन
उक्त्वोवाचापि.. बृह. ६।३।७,८
एतमुहैवसत्यकामो जाबालोऽन्तेवा-
सिभ्य उक्त्वोवाचापि.. बृह. ६।३।१२
एतमु हैवैते न तरत इत्यतः पापमकरव-
मित्यतः कल्याणमकरवम् बृह. ४।४।२२
एतमृग्वेदमभ्यतपꣳस्तस्याभितप्तस्य
यशस्तेज इन्द्रियं..अजायत छान्दो.३।१।३
एतमेव तदनमनग्नं कुर्वन्तो मन्यन्ते बृह.६।१।१४
एतमेव प्रव्राजिनो लोकमिच्छन्तः
प्रव्रजन्ति बृह.४।४।२२
(अथ)एतमेवमात्मानं परमं ब्रह्मोङ्कारं
तुरीयोङ्काराग्रविद्योतं प्रणवेन
सञ्चिन्त्यानुष्टुभानत्वा.. नृसिंहो. ४।१
एतमेव (आत्मानं) विदित्वा
मुनिर्भवति बृह. ४।४।२२
(अथ) एतमेवात्मानं परमं ब्रह्मोङ्कारं
तुरीयोङ्काराग्रविद्योतमेकादशा-
त्मानं नारसिंहं नत्वोमिति
संहरन्ननुसन्दध्यात् नृसिंहो. ४।१
(अथ) एतमेवाध्वानं पुनर्निवर्तन्ते छान्दो. ५।१०।५
एतमेवाहं ब्रह्मोपासे [बृह.२।१।२, ३,४–१३
एतमेवोङ्काराग्रविद्योतं तुरीयतुरीय-
मात्मानं नृसिंहानुष्टुभैव
बुबुधिरे (देवाः) नृसिंहो. ६।१
(अथ खलु) एतयर्चा पच्छः आचा-
मति 'तत्सवितुर्वृणीमहे' इति छान्दो. ५।२।७

एतयैव त्रयो धातवो यदुत सत्त्वं रजस्तम इति — जाबालो.४ [ना. प. ३।७७+प. हं. प. २+ याज्ञ. १

एतयोरेतदन्नं य एषोऽन्तर्हृदये लोहितपिण्डः — बृह. ४।२।३

(अथ)एतयोः पथोर्न कतरेण च न तानीमानि...भूतानि भवन्ति — छांदो.५।१०।८

एतर्हि वेदाग्नानुभवति — छां. उ. ६।७।३

एतर्हि वेदाग्नानुभवसि — छां. उ. ६।७।६

एतर्ह्येकाकी कामयते — बृ.उ. १।४।१७

एतस्मा एव पञ्च पदादभूव-न्गोविन्दस्य मनवः — गो. पू. ३।७

एतस्माज्जायते प्राणो मनः सर्वेन्द्रियाणि च। खं वायुरापो.. — मुण्ड. २।१।३ [ग.पू. १।४+ कैव. १५

एतस्मादन्नरसमयात्, अन्योऽन्तर आत्मा प्राणमयः — तैत्ति. २।२

एतस्मादाकाशादेवखल्विदंचेतामात्रं.. — मैत्रा. ६।१७

एतस्माद्ध्यानादौ प्रयुज्यते — अ. शिखो. ३

एतस्माद्धीदंसर्वमुत्तिष्ठति,एतमेवाप्येति — १ऐत. ३।१।१

एतस्माद्भूर्भुवस्वरित्युपासीतान्नं हि प्रजापतिर्विश्वात्मा..उपासितोभवति — मैत्रा. ६।६

एतस्माद्रूपादुदेति [छांदो. ३।६।३+ ३।७।३+३।८।३ [३।९।३+३।१०।३

एतस्माद्रूपादुद्यन्ति [छांदो. ३।६।२+ ३।७।२+ [३।८।२+३।९।२+ ३।१०।२

एतस्माद्वै महत्तत्त्वमजायत — ग. शो. ४।३

एतस्मान्न पुनरावर्तन्त इत्येष निरोधः — प्रश्नो. १।१०

एतस्मिन्नग्नौ देवा अन्नं जुह्वति [छां.उ. ५।७।२+ बृ. उ. ६।२।१२

एतस्मिन्नग्नौ देवा रेतो जुह्वति [छां. उ. ५।८।२+ बृ. उ. ६।२।१३

एतस्मिन्नग्नौ देवा वर्षं जुह्वति [छां. उ. ५।६।२+ बृ.उ. ६।२।११

(?)एतस्मिन्नग्नौ देवाः श्रद्धां जुह्वति [छां. उ. ५।४।२+ बृ. उ. ६।२।९

एतस्मिन्नग्नौ देवाःसोमंराजानंजुह्वति [छां. उ. ५।५।२+ बृ.उ. ६।२।१०

एतस्मिन्नु खल्वक्षरे गार्ग्याकाश ओतश्च प्रोतश्च — बृ.ह. ३।८।११

एतस्मिन् वसते शीघ्रं...महाखगः — म.वि. १९

एतस्मिन्हीदं सर्वं प्रतिष्ठितम् — शुद्धलो. ३।१

एतस्मिन्नेतदाततं मनोऽधिकृतेनाया-त्यस्मिञ्छरीरे — प्रश्नो. ३।३

एतस्मिन्नेताः पञ्चविधा अधिगम्यन्ते — १ ऐत. ३।४।४

(अथ) एतस्य प्राणस्यापः शरीरं ज्योती रूपमसौ चन्द्रस्तद्यावानेव प्राणस्तावत्य आपः.. — बृह. १।५।१३

(?)एतस्य ब्रह्मलोकस्यारो ह्रदः — कौ. उ. १।३

(अथ) एतस्य मनसो द्यौः शरीरं, ज्योती रूपं, असावादित्यः — बृह. १।५।१२

(एवं वा) एतस्य महतो भूतस्य निश्श्वसितमेतत्... — मैत्रा. ६।३२

एतस्य वा अक्षरस्य प्रशासने गार्गि निमेषा मुहूर्ता अहोरात्राण्यर्ध-मासा मासा ऋतवः संवत्सरा इति विधृतास्तिष्ठन्ति — बृह. ३।८।९

एतस्य वा अक्षरस्य.. प्राच्योऽन्या नद्यः स्यन्दन्ते श्वेतेभ्यः पर्वतेभ्यः — बृह. ३।८।९

एतस्य वा अक्षरस्य प्रशासने गार्गि ददतो मनुष्याः प्रशंसन्ति यज-मानंदेवा दर्वीं पितरोऽन्वायत्ताः — बृह. ३।८।९

एतस्य वा अक्षरस्य प्रशासने गार्गि द्यावापृथिव्यौ विधृते तिष्ठतः — बृह. ३।८।९

एतस्य वा अक्षरस्य प्रशासने गार्गि सूर्याचन्द्रमसौ विधृतौ तिष्ठतः — बृह. ३।८।९

एतस्य वै सोम्यैषोऽणिम्न एवं महान्न्यग्रोधः — छान्दो. ६।१२।२

एतस्य हेतोर्व्यानमेवोद्गीथमुपासीत — छान्दो. १।३।५

एतस्याग्नेयमर्धमर्धं वारुणम् — मैत्रा. ६।१४

एतस्याज्ञानमात्रेण जीवन्मुक्तो भवेद्वै — तारोप. ४

एतस्यामिदं सर्वमन्तर्हितम् — मैत्रा. ६।६

एतस्याहं न पश्यामि — भ.गी. ६।३३

एतस्यां वाचि जनको जनक इतिवा उ जना धावन्तीति — कौ. उ. ४।१

एतस्यां ह स्म मात्रायां संवत्सरं गा रक्षयते ताक्ष्र्यः — ३ ऐत. १।६।१

एतस्यां ह स्मोपनिषदि संवत्सरं गा रक्षयते ताक्ष्र्यः — ३ ऐत. १।६।१

एतस्यैतत्तेजो यदसा आदित्यः मैत्रा. ६।४
एतस्यैव यजनेन चन्द्रध्वजो गत-
मोहमात्मानं वेदयति गो. पू. ३।१९
एतस्यैवाक्षरस्यापचित्यै महिम्नारसेन छां. उ. १।१।९
(इति खलु) एतस्यैवाक्षरस्योप-
व्याख्यानं भवति छां.उ.१।१।१०
एतस्यैवानन्दस्यान्यानि भूतानि
मात्रामुपजीवन्ति बृह. ४।३।३२
एतं त्वेव ते भूयोऽनुव्याख्यास्यामि छान्दो. ८।९।३
एतं प्राणमयमात्मानमुपसंक्रम्य..
एतत्साम गायन्नास्ते तैत्ति. ३।१०।५
एतं प्राणमयमात्मानमुपसंक्रामति तैत्ति. २।८
एतं ब्रह्मलोकं न विदन्त्यनृतेन हि
प्रत्यूढाः (प्रजाः) छान्दो. ८।३।२
एतं मनोमयमात्मानमुपसंक्रम्य..
एतत्साम गायन्नास्ते तैत्ति. ३।१०।५
एतं मनोमयमात्मानमुपसंक्रामति तैत्ति. २।८
एतं मंत्रराजं यः पश्यति स पश्यति ग. पू. १।६
एतं महाव्रते छन्दोगाः(मीमांसन्ते) ३ऐत. २।३।४
एतं यजुर्वेदमभ्यतपत्, तस्याभितप्तस्य
यशस्तेज इन्द्रियं वीर्यमन्नाद्यꣳ
रसोऽजायत छान्दो. ३।२।२
एतं विज्ञानमयमात्मानमुपसंक्रम्य..
एतत्साम गायन्नास्ते तैत्ति. ३।१०।५
एतं विज्ञानमयमात्मानमुपसंक्रामति तैत्ति. २।८
एतं वै तमात्मानं विदित्वा ब्राह्मणाः
पुत्रैषणायाश्च.. व्युत्थायाथ
भिक्षाचर्यं चरन्ति बृह. ३।५।१
एतं संयद्वाम इत्याचक्षते छान्दो.४।१५।२
एतंसामवेदमभ्यतपन्,तस्याभितप्तस्य.. छान्दो.३।३।२
एतं ह वा व न तपति, किमहꣳसाधु
नाकरवम्, किमहं पापमकरवम् तैत्ति. २।९
एतं हि सर्वाणि वामान्यभिसंयन्ति छान्दो. ४।१५।२
एतं ह्येव बह्वृचा महत्युक्थे
मीमांसन्ते ३ ऐत. २।३।४
एतामुपासीतोमित्येतदक्षरेण (इत्य-
क्षरेण) व्याहृतिभिःसावित्र्यावेति मैत्रा. ६।२
एता एव महाविद्या विभूतेरभिधारणे वज्रपं. ५
एता एव देवताः प्रीणाति सद्वै. १९
एता ऋचः एतमृग्वेदमभ्यपतन् छां.उ. ३।१।३
एता दश वह्निकलाः सर्वज्ञत्वाद्यन्त-
र्देशारगा देवताः भावनो. ५
एतादृशे शरीरे वर्तमानस्य भगवं-
स्त्वं नो गतिः मैत्रे. १।३
एता देवताः पाप्मभिरुपासृजत् बृह. १।३।६
एतानि मनसा ध्यायन्नप्रमत्तः
स्तुवीत छान्दो. २।२२।२
एतानि रूपाणिपुरस्सराणि ब्रह्मण्य-
भिव्यक्तिकराणि योगे श्वेताश्व. २।११
एतान्न हन्तुमिच्छामि भ. गी. १।३५
एतान्यष्टावायतनानि बृह. ३।९।२६
एतान्यपि तु कर्माणि भ. गी. १८।६
(१) एताभिरुपनिषद्भिः समा-
हितात्माऽसि बृह. ४।२।१
एताभिर्वा एतदास्रवति... (मा.पा.) बृह. ४।२।३
एताभिर्वा एतदास्रवदास्रवति बृह. ४।२।३
एताभिः सर्वमिदमोतं प्रोतं च मैत्रा. ६।३
एताभ्यां हि रूपाभ्यां ब्रह्माऽभवत् बृह. १।४।१५
एताभ्यां (ज्योतिर्वायुभ्यां)
हीदं सर्वमुन्नमति १ऐत. ३।१।२
एतामधीत्य द्विजोगर्भवासाद्विमुच्यते अ. शिखो.३
एतामहम्भावमयीमपुण्यां (तृष्णां)
छित्वाऽनहंभावशलाकयैव। भव.. महो. ६।४०
एता रेवत्यः पशुषु प्रोताः छांदो. २।१८।१
एतावताऽऽत्मयत्नेन जिता
भवति संसृतिः अ. पू. ५।११८
एतावतीर्हिसङ्ख्यादशदशतस्तच्छतं.. १ ऐत. ३।४।३
एतावदरे खल्वमृतत्वमिति होक्त्वा
याज्ञवल्क्यो विजहार बृह. ४।५।१५
एतावदिति निश्चिताः भ.गी. १६।११
एतावदिह गौतमो यज्ञोपवीतं
कृत्वाऽधो निपपात सूर्यता. ३।१
एतावदेवाविद्यात्वं नेदंब्रह्मेतिनिश्चयः।
एष एव क्षयस्तस्या ब्रह्मेद-
मिति निश्चयः अ. पू. ५।१९
एतावद्धीति होवाच बालाकिः कौ.उ. ४।१८
एतावद्वा इदꣳ सर्वमेतन्मासर्वꣳ
सनयमितोऽभुनजत् बृह. १।५।१७

एतावद्वाइदमन्नं चैवान्नादश्च (मा. पा.) बृह. १।४।६
एतावद्वा इद ँसर्वमन्नं चैवान्नादश्च
सोम एव बृह. १।४।६
एतावद्वाइदंसर्वमेतस्मात्सर्व ँ (मा.पा.) बृह. १।५।१७
एतावद्वाइदंसर्वंयदन्नंतदात्मनआगासीः बृह. १।३।१८
एतावन्नू ३ इत्येतावद्धीति नैतावता
विदितं भवतीति बृह. २।१।१४
एतावानस्य महिमा चित्त्यु. १२।१
[ऋक्सं.८।४।१७=मं.१०।९०।३+ वा. सं. ३१।३
एतावानिति मन्त्रेण वैभवं कथितं
हरेः, एतेन.. चतुर्व्यूहोनिरूपितः मुद्गलो. १।३
एतावान् वै कामो नेच्छंश्च नातो भूयो
विंदेत्,तस्मादप्येतदेकाकीकामयेत बृह. १।४।१७
एतावाहुती समं नयतीति स समानः प्रश्नो. ४।४
एतानुपासीतोमोमित्यक्षरेण
व्याहृतिभिः सावित्र्या च मैत्रा. ६।२
एताश्च चतुर्दशसु नाडीष्वन्या नाड्यः
सम्भवन्ति तास्वन्यास्तास्वन्या
भवन्तीति विज्ञेयाः शाण्डि. १।४।६
एतासामेव देवातानां सलोकतां
सार्ष्टितां सायुज्यं गच्छति छान्दो.२।२०।२
एतासामेव देवतानां सायुज्यं सार्ष्टितां
समानलोकतामाप्नोति (ब्रह्मवित्) महाना. १०।२
एतासां देवतानामेको भवति बृह. १।२।७
एतासां देवतानां पाप्मानंमृत्युमपहत्य
यत्रासां दिशामन्तस्तद्गमयाञ्चकार बृह. १।३।१०
एतासां प्रतिबोधनायाभ्यन्तरं
प्राविशानि मैत्रा. २।६
एतासां भूमिकानां तु गम्यं
ब्रह्माभिधं पदम् महो. ५।४३
एतास्तिस्र ऋचो जपित्वा नास्माकं
प्राणेन प्रजया पशुभि-
राप्याययिष्ठाः कौ. उ. २।८
(अथ) एतास्तिस्रः संहिता भवन्ति
वायोरिन्द्रस्याग्नेः संहितो. १।८
(अथ) एतास्तिस्रः संहिता भवन्ति
शुद्धा दुस्स्पृष्टा निर्भुजेति संहितो. १।५
एतास्यत्र यजमानः परस्तादायुषः
स्वाहाऽपजहि(जे.पा.) [छां.उ. २।२४।६,१०

एतास्वेव वां देवता स्वा भजामि २ ऐत. २।५
एता ह वै देवता अहंश्रेयसे विवद-
माना अस्माच्छरीरादुच्चक्रमुः कौ. उ. २।१४
एतां दृष्टिमवष्टभ्य [भ.गी.१६।९+ अ. पू.४।६४
एतां महामायां तरन्त्येव ये विष्णुं
भजन्ति, नान्ये तरन्ति त्रि.म.ना. ४।९
(एवं) एताँल्लोकानात्मनि प्रतिष्ठिवान्
वेदात्मैव स भवति सुबालो. १०।१
एतां विद्यामपांतरतमाय ददौ
[सुबालो. ७।३+ अध्यात्मो. ७०
एतां विभूतिं योगं च भ. गी. १०।४
एतां वृत्तिमुपासीनाः (उपासन्तः)
[२ सन्न्यासो. १।९+ कठश्रु. २७
एताँश्च सत्यान्कामा ँस्तेषां सर्वेषु
लोकेषु कामचारो भवति छांदो.८।१।६,६
एताः शक्यो लोकेषु प्रोताःवेद लोकी-
भवति, सर्वमायुरेति,ज्योग्जीवति छांदो. २।१७।२
एताः सोम्योदज सामश्रवा३इति बृह. ३।१।२
(?) एति स्वर्गं लोकं य एवं वेद बृह. ५।३।२
(?) एते अनन्ते अमृते आहुती
(पाठः—जे.) कौ. उ. २।५
(अथ) एते आनुदेशिक्यौ संहिते
याज्येन कर्मणा भवताम् संहितो. ३।१
(तस्मात्) एते ऋषयः प्रजाकामाः
दक्षिणं प्रतिपद्यन्ते प्रश्नो. १।९
एते खलु यूयं पृथगिवेमं वैश्वानरं... छांदो.५।१८।१
एते गुह्या आदेशा एतद्ब्रह्माभ्यतपत् छांदो. ३।५।२
एते त्रयस्त्रिंशत्त्वेव देवाः बृह. ३।९।२
एतेऽथर्वाङ्गिरस एतदितिहास-
पुराणमभ्यपतत् छां. उ. ३।४।२
एतेन खलु प्रतिपद्यमानाः (मा.पा.) छां.उ. ४।१५।६
एतेन जीवात्मनोर्योगेन मोक्ष-
प्रकारश्च कथितः मुद्गलो. २।५
एतेऽनन्तेमृताहुतीजाग्रच्च स्वपंश्च
सन्ततमव्यवच्छिन्नं जुहोति कौ. उ. २।५
एतेन प्रज्ञेनात्मनाऽस्माल्लोकादुत्क्रम्य आत्मप्र. १
एतेन प्रतिपद्यमाना इमं मानव-
मावर्तं नावर्तन्ते छांदो. ४।१५।६
एतेन (मंत्रेण) हीदं सर्वं सयोनि १ऐत. १।८।४

एतेन ह्यमुं लोकं जेष्यंतो मन्यन्ते छांदो. ८।८।५
एतेनैव मन्त्रेण ('एतावान्' इत्यनेन)
चतुर्व्यूहो विभाषितः मुद्गलो. १।४
एतेनैवायतनेनैकत्तरमन्वेति प्रश्नो. ५।२
एते पतन्ति चत्वारः पञ्चमश्चा-
चरंस्तु तैः (मा. पा.) छां.उ. ५।१०।९
एते पतन्ति चत्वारः पञ्चम-
श्चाचरंस्तैः छां.उ. ५।१०।९
एते भवन्ति सुकृतस्य लोके येषां
कुले सन्न्यसतीह विद्वान् शाट्याय. ३०
एतेभ्यो भूतेभ्यः समुत्थाय तान्ये·
वानुविनश्यति [बृह्. २।४।१२+ ४।५।१३
एते रसानां सरसेनश्राद्धं प्राप्नुवन्ति
वाग्यतानां संयुतानाम् इतिहा. ८४
एतेषामुपाधीनामत्यन्तभेदो नविद्यते त्रि. म.ना. ४।९
एतेषामेकमास्थाय ह्यासनं लब्ध्वा-
ऽऽहारविहारौ च दुर्वासो. २।४
एतेषां नवचक्राणामेकैकं ध्यायतो
मुनेः। सिद्धये मुक्तिसहिताः.. योगरा. १९
एतेषां पञ्चभूतानां पतयः पञ्च
सदाशिवेश्वररुद्रविष्णुब्रह्माणश्च यो.चू. ७२
एतेषां पञ्चवर्गाणां (मनआदीनां)
धर्मीभूतात्मा ज्ञानादृते न
विनश्यति सर्वसारो. ५
एतेषां ब्रह्मणो लोका देवतिर्यङ्नर-
स्थावराश्च जायन्ते यो. चू. ७२
एतेषु चैव सर्वेषु तत्त्वं च ब्रह्म तारकम् रामर. १।६
एतेषु यश्चरते भ्राजमानेषु यथाकालं
चाहुतयो ह्याददायन् मुण्ड. १।२।५
एतेषु हीदं वसु सर्वं हितमिति
तस्माद्वसवः बृह्. ३।९।३
एतेषां मे देहीतिहोवाच, तानस्मैप्रददौ छान्दो. १।१०।३
एतेऽष्टौ ग्रहाअष्टावतिग्रहाः (मा. पा.) बृ.उ. ३।२।१,९
एते सर्वे देवाः इमानि च पञ्चभूतानि २ ऐ. उ. ५।३
एते सर्वे प्रणवमयोर्ध्वपुण्ड्रत्रयात्मकाः वासु. २
एते ह त्वेव देवते एकधाभूयं भूत्वा
परमतां गच्छतः बृ. ५।१२।१
एते हीदं सर्वमाददाना यन्ति ते बृह्. ३।९।५
एते (रुद्राः) हीदं सर्वं रोदयन्ति छांदो. ३।१६।३
एते(वसवः) हीदं सर्वं वासयन्ति छांदो. ३।१६।१
एते (अग्न्यादयः)हीदंसर्वं षडिति बृह्. ३।९।७
एतैरुपायैर्यतते यस्तु विद्वांस्तस्यैष
आत्मा विशते ब्रह्मधाम मुण्ड. ३।२।४
एतैरेव रश्मिभिरूर्ध्वमाक्रमते स
ओमिति वा होद्वामीयते छांदो' ८।६।५
एतैरेषोऽपृथग्भावैः पृथगेवेति
लक्षितः (आत्मा) वैतथ्य. ३०
एतैर्विमुक्तः कौन्तेय भ. गी. १६।२२
एतैर्विमोहयत्येषः भ. गी. ३।४०
एतैर्ह वा अमृतो भवति जाबा. ३
एतैः समाधिभिः षड्भिर्नयेत्कालं
निरन्तरम् सरस्व. ५९
एतौ वा अश्वं महिमानावभितः
सम्बभूवतुः बृह्. १।१।२
एतौ वै सूर्याचन्द्रमसोर्महिमानौ
ब्राह्मणो विद्वानभिजयति[महाना. १८।१+त्रिसुप.४
एत्य पुत्र उपरिष्टादभिनिपद्यते कौ. उ. २।१५
एधमानः स्वे गृहे बृ. उ. ६।४।२४
एनद्रोदस्योरेव पर्यायेणोपवन्वीमहि.. आर्षे. ४।२
(तस्मात्) एनमकारार्थेन परेण
ब्रह्मणैकीकुर्यात् नृसिंहो. ७।६
(अथ) एनमग्नये हरन्ति तस्या-
ग्निरेवाग्निर्भवति समित् .. बृह्. ६।२।१४
एनमासुरं पाप्मानं परिग्रसाम इति नृसिंहो. ६।१
एनमाहुः (धिक्कर्तारं) पितृहा वै
त्वमसि, मातृहा वै त्वमसि छान्दो.७।१५।२
(अथह) एनमुद्दालकआरुणिःपप्रच्छ बृह्. ३।७।१
(अथह)एनमुषस्तश्चाक्रायणः पप्रच्छ बृह्. ३।४।१
(अथ)एनमेते देवाः प्राणा अमृता
आविशन्ति बृह्. १।५।१७
(अथ) एनमेतेप्राणाअभिसमायन्ति
सः(आत्मा)..हृदयमेवान्ववक्रमति बृह्. ४।४।१
(अथ) एनयोरेतत्प्रावरणं यदेतदन्त-
र्हृदये चालकमिव.. बृह्. ४।२।३
(अथ) एनयोरेषा सृतिः सञ्चरणी
यैषा हृदयादूर्ध्वा नाड्युच्चरति बृह्. ४।२।३
एनस एनसोऽवयजनमसि स्वाहा महाना. १४।२
एनं मकारार्थेन...ब्रह्मणैकीकुर्यात् नृसिंहो. ७।६

एवं चतुष्पादं मात्राभिरोङ्कारेण
 चैकीकुर्यात् नृसिंहो. २।३
(अथखलु) एवंदृष्ट्वाऽमृतत्वंगच्छति मैत्रा. ६।२४
(अथ ह) एवंभुज्युर्लाह्यायनिःपप्रच्छ बृह. ३।३।१
एवं मनोमणिंग्रथ्नन् बहुपङ्ककलङ्कितम्।
 विवेकवारिणा सिद्ध्यै प्रक्षाल्य.. महो. ५।८३
एवं मनुष्याऊचुर्ब्रवीतु नो भवानिति बृह. ५।२।२
(अथ) एवं (पुत्रं) मात्रे प्रदाय स्तनं
 प्रयच्छति यस्ते स्तनः... इति बृह. ६।४।२७
(अथह) एवं रैक्वः पप्रच्छ कस्मिन्सर्वे
 प्रतिष्ठिता भवंतीति सुबालो.१०।१
(अथह) एवं रैक्वः पप्रच्छ भगवन्
 कस्मिन्सर्वेऽस्तं गच्छन्तीति सुबालो. ९।१
(अथह) एवं रैक्वः पप्रच्छ भगवन्
 योऽयं विज्ञानघन उत्क्रामन्स.. सुबालो. ११।१
(अथ) एवं वसत्योपमन्त्रयाञ्चक्रे बृह. ६।२।३
(?) एवं साधवो धर्मा आ च
 गच्छेयुरुप च नमेयुः छां.उ. २।१।४
एवां मृत्युमत्यवहत् बृह. १।३।११
(अथ) एभिरेवं प्राणैः सह
 पुत्रमाविशति बृह. १।५।१७
एभिर्दोषैः-(कामक्रोधादिभिः) विनि-
 र्मुक्तः स जीवः केवलो मतः १ यो. त. १३
एभिस्त्रिभिर्लोकैः समोऽनेन सर्वेण.. बृह. ११।३।२२
एभिः कर्मैस्तथाऽन्यैश्च.. प्राणस्पन्दो
 निरुध्यते शाण्डि.१।७।३६
एभिः सर्वमिदं जगत् भ.गी. ७।१३
(अथ)एभ्यः सर्वमिदमत्र वा
 यत्किञ्चिच्छुभाशुभं दृश्यते मैत्रा. ६।१६
एरण्डतैलफेनवत्सर्वं परित्यजेत्
 (यतिः) ? सं. सो. २।५०
एवमक्षमालिकया जप्तो मन्त्रः
 सिद्धिकरः ...
एवमनादि परम्परा वर्तते, अनादि-
 संसारविपरीतभ्रमात् त्रि.म.ना. ४।१०
एवमन्तर्गतं चित्तं पुरुषः प्रतिमुच्यते मैत्रा. ४।१२
एवमन्या देवताः यथादैवतम् (वध्रुः) बृह. १।५।२२
एवमन्यानि कर्माणि यथाक्रमं (वध्रुः) बृह. १।५।२१
एवमभ्यसतस्तस्य न किञ्चि-
 दपि दुर्लभम् जा. द. ७।१४
एवमभ्यसतस्तस्य जितोवायुर्भवेत् जा. द. ६।४३
एवमभ्यसतस्तस्य मूलरोगो विनश्यति जा. द. ६।४४
एवमभ्यासचित्तश्चेत्स मुक्तः.. वराहो. ५।५९
एवमभ्यासतो नित्यं षण्मासाद्यत्नवान्
 भवेत्। जा. द. ६।१०
एवमभ्यासयुक्तस्य पुरुषस्य..
 क्रमाद्वेदान्तविज्ञानं विजायेत जा. द. ९।६
एवमभ्यासयुक्तस्य... सर्वपापानि
 नश्यन्ति भवरोगश्च.. जा. द. ७।९
एवमभ्यासात्तन्मयो भवति मं. ब्रा. १।४
एवममनस्काराभ्यासेनैव नित्यतृप्ति-
 रल्पमूत्रपुरीषनिद्रादृग्वायुचलना-
 भावब्रह्मदर्शनाज्ज्ञातसुखस्वरूप-
 सिद्धिर्भवति मं. ब्रा. ५।२
एवममूर्तितारकमपिमनोयुक्तेनचक्षुषैव
 दहरादिकं वेद्यं भवति अद्वयता. ६
एवमवरो वै तर्हि किल म इति
 होवाच प्रतर्दनः कौ. उ. ३।१
एवमष्टोत्तरशतं भावनात्रयनाशनम् मुक्तिको.१।४०
एवमस्मिन्प्राणे चक्षुः श्रोत्रं...सर्व
 आत्मा समाहितः ३ ऐत. २।१।१
एवमस्मिंश्चप्रतिष्ठमानेसर्वाएवप्रातिष्ठन्त
 एवं वाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्रं च ते
 प्रीताः प्राणं स्तुन्वन्ति प्रश्नो. २।४
एवमस्य यज्ञः प्रतिष्ठति, यज्ञं प्रति-
 तिष्ठन्तं यजमानोऽनु प्रतितिष्ठति छान्दो.४।१६।५
एवमस्य यज्ञो रिष्यति, यज्ञ९ रिष्यन्तं
 यजमानोऽनुरिष्यति छान्दो.४।१६।२
एवमहोरात्रे पर्यवेक्षत एवं सुकृत-
 दुष्कृते.. ब्रह्मविद्वान्ब्रह्मैवाभिप्रैति कौ. उ. १।४
एवमात्मनि जायतेऽसौ सत्येन
 तपसा योऽनुपश्यति ब्रह्मो. १९
एवमात्माऽऽत्मनि गृह्यतेऽसौ सत्येनैनं
 तपसा योऽनुपश्यति श्वेता. १।१५
एवमात्मायथायत्र समुल्लासमुपागतः।
 तिष्ठत्याशु तथा तत्र.. महो. ४।४३
एवमितरान्प्राणान्समखिदत्त९ हाभि-
 समेत्योचुः छान्दो.५।१।१२
एवमिमानि पुरुषे त्रीणि ज्योतींषि २ ऐत. १।२।२

एवमिव वै स धातुमेव प्रशशंस बृ. उ. ३।३।२
एवमिष्टापूर्तकर्मा शुभाशुभैर्न लिप्यते परब्र. १
एवमिष्टापूर्तैः शुभाशुभैर्न लिप्यते ब्रह्मो. १
एवमुक्तलक्षणो यः स एव ब्राह्मणइति श्रुतिस्मृति.. अभिप्रायः व. सू. ९
एवमुक्तो हृषीकेशः भ. गी. १।२४
एवमुक्त्वा ततो राजन् भ. गी. ११।९
एवमुक्त्वाऽर्जुनः सङ्ख्ये भ. गी. १।४६
एवमुक्त्वा हृषीकेशं भ. गी. २।९
एवमु खल्वेता देवताः पाप्मभिरुपासृजन् बृह. १।३।६
एवमु चैतदुपास्यम् तैत्ति. १।११।४
एवमुपासितव्यम् तैत्ति. १।११।४
(?) एवमुपास्ते सर्वं हैवास्मिँल्लोकआयुरेति, नैनंपुराकालात्प्राणो जहाति बृउ.२।१।१०,१८
एवमु ह स्म सर्वमात्मानमनुविधायाहेदमेव.. ३ ऐत. १।२।३
एवमु हैवैवदिति (हैतदिति) हेन्द्र उवाच कौ. उ. ३।२
एवमेतद्यथाऽऽत्थ त्वम् भ. गी. ११।३
एवमेतं चक्षुः पितरं परिचरतो द्यौश्चादित्यश्च १ऐत. १।७।४
एवमेतासां देवतानां वायुः बृह.१।५।२२
एवमेकाक्षरं मन्त्रं..ध्यायन्ति परमानन्दमया ज्ञानाम्बुराशयः देव्यु. १५
एवमेकैकः पुरुषो देवान् भुनक्ति बृह. १।४।१०
एवमेते मनः पितरं परिचरन्त्यापश्च वरुणश्च... १ ऐत. १।७।६
एवमेते श्रोत्रं पितरं परिचरन्ति ... चन्द्रमाश्च १ ऐत. १।७।५
एवमेतौ प्राणं पितरं परिचरतोऽन्तरिक्षं च वायुश्च.. १ ऐत. १।७।३
एवमेतौ वाचं पितरं परिचरतः पृथिवी चाग्निश्च १ ऐत. १।७।२
एवमेनं सर्वं तदभिसमेति यत्किञ्च प्रजाः साधु कुर्वन्ति, यस्तद्वेद.. छांदो. ४।१।४
एवमेव खलु सोम्य तन्मनो दिशंदिशं पतित्वाऽन्यत्रायतनमलब्ध्वा प्राणमेवोपश्रयते छान्दो. ६।८।२
एवमेव खलु सोम्यविद्धीतिहोवाच छान्दो. ६।११।२
एवमेव खलु सोम्यान्नमयस्याश्यमानस्य योऽणिमा स ऊर्ध्वः समुदीषति तन्मनो भवति छान्दो. ६।६।२
एवमेव खलु सोम्यान्नेन शुङ्गेनापोमूलमन्विच्छ छान्दो. ६।८।४
एवमेव खलु सोम्येमाः सर्वाः प्रजाः सत आगत्य न विदुः सत गच्छामह इति छान्दो. ६।१०।२
एवमेव खलुसोम्येमाःसर्वाःप्रजाःसति सम्पद्य न विदुःसतिसम्पद्यामहइति छान्दो. ६।९।२
एवमेव चिदानन्दावप्यवचनेनैवानुभवन्नुवाच सर्वमन्यदिति नृसिंहो.७।३
एवमेव प्रतिहर्तारमुवाच प्रतिहर्वेर्या देवता प्रतिहर्तारमन्वायत्ता.. छान्दो.१।१०।११
एवमेव यदिदं किञ्च मिथुनमापिपीलिकाभ्यस्तत्सर्वमसृजत बृ. उ. १।४।४
एवमेवंविदि पापं कर्म न श्लिष्यते छान्दो. ४।१०।३
एवमेवामुत्र पुण्यजितो लोकः क्षीयते छान्दो. ८।१।६
एवमेवानृतं वदन्नाविर्मूलमात्मानं करोति १ ऐत. ३।६।५
एवमेवायमस्मिन्नन्धेऽन्धोभवति छांदो. ८।९।१
एवमेवायमात्मेद शरीरं निहत्याविद्यां गमयित्वा..आत्मानमुपसंहरति बृ. उ. ४।४।३
एवमेवायं शरीर आत्मा प्राज्ञेनात्मनाऽन्वारूढ उत्सर्जन्याति (उत्सर्जंयाति— मा. पा.) बृ. उ. ४।३।३५
एवमेवास्य परिद्रष्टुरिमाः षोडशकलाः पुरुषायणाःपुरुषंप्राप्यास्तंगच्छंति प्रश्नो. ६।५
एवमेवास्मिन्नात्मनि सर्वाणि भूतानि सर्वे देवाः सर्वे लोकाः सर्वे प्राणाः सर्व एत आत्मानः समर्पिताः बृह. २।५।१५
एवमेवेद शरीर शेते (सर्पत्वरवत्) बृह. ४।४।७
एवमेवेद सर्वं तस्मादहमिति सर्वाभिधानं तस्याहमिति मकारः नृसिंहो. ७।२

एवमेवेमाः सर्वाः प्रजा अहरह- गच्छन्त्य एतंब्रह्मलोकंनविदन्ति छांदो. ८।३।२
एवमेवैषो भगवः साध्वलंकृतो सुवसनो परिष्कृतो च छांदो. ८।८।३
एवमेवेहाचार्यवान्पुरुषो वेद छांदो. ६।१४।२
एवमेवैतद्गाहवनीयादग्निमाहृत्य ना. प. ३।७७
एवमेवैतद्याज्ञवल्क्य [बृह. ३।९।२०, २१,२२,२३
एवमेवैतद्याज्ञवल्क्यान्तर्यामिणंब्रूहीति बृह. ३।७।२
एवमेवैतद्व्यपदिष्टं भवति बृह. ३।४।२
एवमेवैतस्मादात्मनः प्राणा यथायतनं विप्रतिष्ठन्ते कौ. उ. ३।३
एवमेवैता आदित्यस्य रश्मय उभौ लोकौ गच्छन्ति छांदो. ८।६।२
एवमेवैताभिरुपनिषद्भिः समाहितात्माऽसि बृह. ४।२।१
एवमेवैता भूतमात्राः प्रज्ञामात्रा- स्वर्पिताः प्राणे अर्पिताः कौ. उ. ३।९
एवमेवैष प्राज्ञ आत्मैतैरात्मभिर्भुङ्क्ते कौ. उ. ४।२०
एवमेवैष प्राण इतरान्प्राणान् पृथक्पृथगेव सन्निधत्ते प्रश्नो. ३।४
एवमेवैष भगवन्निति वै याज्ञवल्क्यः तारसा. १।१
एवमेवोद्गातारमुवाचोद्गातर्यादेवतो- द्गीथमन्वायत्तातांचेद्विद्वान्.. छांदो.१।१०।१०
एवमेष महाशब्दो भगवानिति... परब्रह्मस्वरूपस्य... भवसं. २।५०
एवमेषा गायत्र्यध्यात्मं प्रतिष्ठिता (मा. पा.) बृ. उ.५।१४।४
एवमेषां लोकानामासां देवतानाम- स्याक्षय्याविद्यायावीर्येणयज्ञस्य विरिष्टंसन्दधाति छांदो. ४।१७।८
एवमोङ्कारेण सर्वा वाक्सन्तृण्णा छांदो. २।२३।३
एवम्भूतस्यागाधमहिम्नः..मानसपूजया ध्यानेन..सर्वेण नित्यस्थलं प्राप्नोति राधोप. ३।३
एवम्भूतस्य कर्माणिपुण्यापुण्यानि संक्षयं प्रयान्ति, नैव लिप्यन्ति.. अमन. २।९८
एवम्भूतं जगदाधारभूतं रामं वन्दे सच्चिदानन्दरूपम्..योध्याये- न्मोक्षमाप्नोति सर्वः रा. पू. ७।८
एवं कीर्तिं श्लोकं विन्दते य एवं वेद बृह. १।४।७
एवं खल्वमुमादित्यंसप्तविधंसामोपास्ते छांदो. २।९।८
(अथ ह) एवं गार्गी वाचक्नवी पप्रच्छ बृह. ३।६।१
एवंमाह्याह भात्यग्निर्भातिसूर्योभाति.. संहितो. २.४
एवं चक्षुष्मतीविद्यया स्तुतः श्रीसूर्य- नारायणः सुप्रीतोऽब्रवीत् अक्ष्यु. ३
एवं चतुर्विंशतिभिस्तत्त्वैः सिद्धे वपुर्गृहे । जीवात्मा...वसति कर्मबन्धनैः भवसं. २।२१
एवं चतुष्पथं कृत्वा तेयान्तिपरमां गतिम् । नकर्मणा नप्रजयात्यागे- नैके अमृतत्वमानशुः अवधू. ५
एवं चतुष्पथोबन्धोमार्गत्रयनिरोधकः। येन सिद्धाः सुसङ्गताः वराहो. ५।४३
एवं च धारणाः पञ्च कुर्याद्योगी... ततो दृढशरीरः स्यान्मृत्यु- स्तस्य न विद्यते १ यो. त. १०२
एवं चाप्यातुरीयस्तु...विमुक्तः सर्व- पापेभ्यः कैवल्यायोपकल्पते गुह्यका. ८४
एवं चिरसमाधिजनितब्रह्मामृतपान- परायणोऽसौसन्न्यासी.. भवति मं. ब्रा. ५।२
एवं जीवाश्रिता भावा भवभावनयाहिताः महो. ५।१३५
एवं जीवो हि सङ्कल्पवासनारज्जु- वेष्टितः । दुःखजालपरीतात्मा क्रमादायाति नीचताम् महो. ५।१२७
एवं ज्ञाते(ने)न्द्रियाणां तु तत्तत्सौख्यं सुसाधयेत् १यो. त. ७२
एवं ज्ञात्वा कृतं कर्म भ. गी. ४।१५
एवं ज्ञात्वा विमोक्ष्यसे भ. गी. ४।३२
एवं तत्तल्लक्ष्यदर्शनात्त पो भवति मं. ब्रा. ४।१
एवं तदप आचक्षतेऽशनायेति तत्रैतच्छुङ्गमुत्पतितं विजानीहि छान्दो. ६।८।३
एवं तदप आचक्षतेऽशायेति(मा.पा.) छां. उ. ६।८।३
एवं ते ध्यायिनो विप्रा दहन्ते पातकं क्षणात् । ध्यानेन शुध्यते बुद्धिः.. दुर्वासो. १।९
एवं त्रयीधर्ममनुप्रपन्नाः भ. गी. ९।२१
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते.. ईशा. २

एवं दिनपक्षमासर्संवत्सरादिभेदाश्च
तदीयमानेन..वत्सरकालस्थितिः.. त्रि.म.ना.६।३।७
एवं दृढवैराग्याद्बोधो भवति महो. ४।२६
एवं द्वात्रिंशदक्षराणि सम्पद्यन्ते नृ. पू. २।२
एवं द्वादशाङ्गानिआध्यात्मिकान्याधि-
भौतिकान्याधिदैविकानि त्रि. ब्रा. १।४
एवं द्वारेषु सर्वेषु वायुपूरितरेचितः।
निषिद्धं तु नवद्वारे.. यो. त. १४१
एवं धर्मान् पृथक् पश्यंस्तामे-
वानुविधावति कठो. ४।१४
एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी.. गणप. ९
एवं ध्यायेत्त्रिसन्ध्यासु...
विषं नाशयते शीघ्रं गारुडो. ९
एवंनचित्तजाधर्माश्चित्तंवाऽपिनधर्मजं अ. शां. ५४
एवंनजायतेचित्तमेवंधर्माअजाःस्मृताः अ. शां. ४६
एवं न विधिना खल्वनेनात्ताऽन्नत्वं
पुनरुपैति मैत्रा. ६।९
एवं नाडीमयंचक्रं..सततंप्राणवाहिन्यः
सोमसूर्याग्निदेवताः ध्या. त्रि. ५४
एवं निर्वाणानुशासनं, वेदानुशासनं आरुणि. ५
एवं नैवमितिपृष्ट ओमित्येवाह
(प्रजापतिः) नृसिंहो. ८।१
एवं पञ्चदशाक्षरं त्रैपुरं योऽधीते स
सर्वान्कामानवाप्नोति त्रि. ता. १।१५
एवं परम्पराप्राप्तं भ. गी. ४।२
एवं परिपूर्णराजयोगिनः सर्वात्मक-
पूजोपचारः स्यात् आत्मपू. १
एवं पुण्यस्य कर्मणो दूराद्गन्धो वाति महाना. ९।७
एवं पूर्णधियो धीराः.. न नन्दन्ति
न निन्दन्ति जीवितं मरणं तथा अ.पू. ५।२४
एवं पृष्टेन मुनिना व्यासेनाखिल-
मात्मजे। यथावदखिलं प्रोक्तं.. महो. २।१६
एवं प्रधानस्य व्यक्तांगतस्यो-
पलब्धिर्भवति मैत्रा. ६।१०
एवं प्रवर्तितं चक्रं भ. गी. ३।१६
एवं प्राणमथोङ्कारं.. युनक्ति युञ्जते
वाऽपि तस्माद्योग इति स्मृतः मैत्रा. ६।२५
एवं बद्धस्तथाजीवःकर्मनाशेसदाशिवः स्कन्दो. ७

एवं बहुभिः पुनः पुनः प्रयद्भिर्न
सम्पूर्येता ३ इति बृह. ६।२।२
एवं बहुविधा यज्ञाः भ. गी. ४।३२
एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा भ. गी. ३।४३
एवं ब्रह्मपरिज्ञानादेवमर्त्योऽमृतोभवेत् महो. ४।८१
एवं ब्रह्मशालां विशेत् ततश्चतु-
र्जालं ब्रह्म कोशं प्रणुदेत् मैत्रा. ६।२८
एवं भवेद्घठावस्था सततांभ्यासयोगतः १ यो. त. ७९
एवं भस्मधारणमकृत्वानाभीया-
दापोऽन्नमन्यद्वा भस्मजा. १।६
एवंभूतसत्त्वांशभागत्रयसमष्टितो-
ऽन्तःकरणमसृजत् पैङ्गलो. २।४
एवंभूतं जगदाधारभूतं रामं वन्दे..
योध्यायेन्मोक्षमाप्नोति सर्वः रा. पू. ५।८
एवं मन्त्रान एवं विजानन्नतिवादी
भवति, तं चेद्ब्रूयुः.. छान्दो.७।१५।४
एवं मन्वान एवं विजानन्नात्मरति-
रात्मक्रीडः.. स स्वराड् भवति छां.उ. ७।२५।२
एवं मन्वानस्यैवं विजानत आत्मतः
प्राण आत्मतः सर्वमिति छान्दो. ७।२६।१
एवं मयि चिदाकाशे जीवेशौ
परिकल्पितौ वराहो. २।५१
एवं मासत्रयाभ्यासान्नाडीशुद्धिः... १ यो.त. ४४
एवं मां ब्रह्मचारिणः, धातरायान्तु.. तैत्ति. १।४।७
एवं मुनेर्विजानत आत्मा
भवति गौतम कठो. ४।१५
एवं मुहूर्तत्रयं भावनापरो जीवन्मुक्तो
भवति तस्य.. सिद्धिः भावनो. १०
एवं यथाऽश्मानमाखणमृत्वा
विध्वंसते छान्दो. १।२।८
एवं यस्तु विजानाति स्वगुरो-
रुपदेशतः.. सदा न तपति प्रभुः कठरु. ३८
एवं यः सततं ध्यायेत्.. निश्श्रेयस-
मवाप्नुयात् शाण्डि. ३।२।५
एवं यास्यसि पाण्डव भ. गी. ४।३५
एवं योगारूढो ब्रह्मण्येवानुष्टुभं
सन्दध्यादोङ्कारः नृसिंहो. ४।२
एवं यो वेत्ति तत्त्वतः भ. गी. ४।९
एवं यो वेद तत्त्वेन कल्पयेत्सः... वैतथ्य. ३०

एवं यो वेद तत्त्वेन ब्रह्मभूयायकल्पते कठरु. ४५
एवं यो वेद तत्त्वेन सर्वे पुरुषउच्यते ब्र. वि. १११
एवं यो वै स धर्मः, सत्यं वै तत् बृह. १।४।१४
एवं रूपपरिज्ञानं यस्यास्तिपरयोगिनः। कुत्रचिद्गमनं नास्ति तस्य पूर्णस्वरूपिणः रुद्रहृ. ५०
एवं रूपं कृष्णचन्द्रं चिन्तयेन्नित्यशः सुधीः। तस्याद्या प्रकृती राधिका राधोप. ३।२
एवंरूपः शक्य अहं नृलोके भ.गी.१२।१
एवंलक्षणसम्पन्नो गुरुरित्यभिधीयते द्वयोप. ३
एवं वा अर इदं महद्भूतम् बृह. २।४।१२
एवं वा अरेऽस्य महतो भूतस्य निश्श्वसितमेतत् ... बृह. २।४।१०
एवं वाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्रं च ते प्रीताः प्राणं स्तुन्वन्ति प्रश्नो. २।४
एवं वाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्रं चेति ते प्रीताः (मा. पा.) प्रश्नो. २।४
एवं वाचं च नाम च मनोऽनुभवति छान्दो.७।३।१
एवं वाव खल्वसावभिध्यातोम्.. स्वातन्त्र्यं लभते मैत्रा. ६।२२
एवं वाव खल्वसौ भूतात्माऽन्तः पुरुषेणाभिभूतो गुणैर्हन्यमानो नानात्वमुपैति मैत्रा. ३।३
एवं वाव खल्विमान्प्राणानोमित्यनेनोद्धृस्यानामयेऽग्नौ जुहोति मैत्रा. ६।२६
एवंविच्छान्तो दान्तोपरतस्तितिक्षुः समाहितो भूत्वाऽऽत्मन्येवात्मानं पश्यति बृ.उ. ४।४।२३
एवंविच्छ्रोत्रियस्य दारेण नोपहासमिच्छेत् बृह. ६।४।१२
एवं विज्ञाय शरीराभिमानं त्यजेन्न शरीराभिमानी भवति, स एव.. ना. प. ६।१
एवंवित्(आत्मवित्)स्वर्गलोकमेति छां.उ.८।३।३+५
एवंवित्स्वप्रकाशं परमेव ब्रह्म भवति नृसिंहो. ६।२
एवंविदमेव ब्रह्माणं कुर्वीत छां.उ.४।१७।१०
एवंविद९ ह वा एषा ब्रह्माणमनुगाथा छान्दो.४।१७।९
(एवं ह) एवंविदं सर्वाणि भूतानि प्रतिकल्पन्तं इदं ब्रह्मायातीदमागच्छतीति बृह. ४।३।३७
एवंविदं सर्वाणि भूतान्यवन्ति बृह. १।५।२०
एवंविदात्मन्नेवाभिध्यायति... यजतीति मैत्रा. ६।९
एवं विदित्वा गणनाथतत्त्वं हेरम्बो. १३
एवं विदित्वा परमात्मरूपं कैव. २३
एवं विदित्वा यो धारयति स सर्वकर्माऽर्हो भवति कात्याय. १
एवं विदित्वा स्वेच्छाचारपरो भूयात् अवधू. २३
एवंविदि पापं कर्म न श्लिष्यते छां. उ.४।१४।३
एवंविदुद्गाता भूयात् छां. उ. १।७।८
एवंविदेहकैवल्यं यतिर्नावर्तते पुनः २ आत्मो. २४
एवं विद्वानेतदुपास्ते बृह.४।१।२,३,७
एवं वृंदारक आढ्यः सन्नधीतवेदः.. क गमिष्यसि बृह. ४।२।१
एवंविद्ध वै ब्रह्मा यज्ञं यजमानं सर्वांश्चर्त्विजोऽभिरक्षति छान्दो.४।१७।१०
एवंविद्वान् सर्वं हि देवेभ्योऽन्नाद्यं प्रयच्छति बृ. उ. १।५।२
एवंविद्वान्सर्वेषां भूतानां प्राणमेव प्रज्ञात्मानमभिसंस्तूय सहैतैः. सर्वैरस्माच्छरीरादुत्क्रामति कौ.उ. २।१४
एवंविधश्चिदादित्यस्योदयास्तमयाभावात् सर्वकर्माभावः मं.ब्रा. २।४
(?)एवंविद्यद्यपि चांडालायोच्छिष्टं प्रयच्छेदात्मनि हैवास्य.. छांदो. ५।२४।४
एवं विविधा गोप्यः कृष्णसेवांकुर्वन्ति राधोप. १।५
एवं वैतमात्मानमेते (प्राणादयः) आत्मनोऽन्ववस्यन्ति कौ.उ. ४।२०
एवं वैतमात्मानमेत आत्मानो भुञ्जन्ति (मा. पा.) कौ. उ. ४।१
एवं वैषा गायत्र्यध्यात्मं प्रतिष्ठिता [बृ. उ. ५।१४; गायत्र्यु. ३
एवं व्यक्तमन्नमव्यक्तमन्नमस्य निर्गुणो भोक्ता, भाक्तृत्वाच्चैतन्यंप्रसिद्धंतस्य मैत्रा. ६।१०
एवं शुभाशुभैर्भावैः सा नाडीति विभावयेत् क्षुरिको. २०
एवंषण्मासाभ्यन्तरात्सर्वरोगनिवृत्तिः शाण्डि.१।७।४६
एवं संचारचक्रे कूपचक्रेण घटा इव (जन्मपरम्परा) १ यो. त. १३३

एवं सततयुक्ता ये भ. गी. १२।१
एवं स देवानां यथा ह वै बहवः
पशवः मनुष्यं भुञ्ज्युः बृह. १।४।१०
एवं स देवो भगवान्वरेण्यो
योनिस्वभावानधितिष्ठत्येकः श्वेता. ५।४
एवं समभ्यसेद्वायुंसब्रह्माण्डमयोभवेत् योगकुं. ३।१३
एवं स भगवान्देवंपश्यन्त्यन्येपुनःपुनः मंत्रिको. १९
एवं सर्वं हंसवशात्तस्मान्मनो हंसो
विचार्यते । स एव जपकोटया
नादमनुभवति हंसो. ६
एवं सर्वे हंसवशान्नादो दशविधो
जायते । चिणीति प्रथमः..
वृशमो मेघनादः हंसो. ७
एवं सर्वाणि भूतान्यग्निहोत्रमुपासते छांदो.५।२४।५
एवं सर्वाणि भूतानि मणौ सूत्र इवा-
ऽऽत्मनि । स्थिरबुद्धिरसम्मूढो
ब्रह्मविद्ब्रह्मणि स्थितः ध्या. बिं. ६
एवं सर्वाणीन्द्रियकर्माणि प्राणकर्माणि मैत्रा. ६।१०
एवं सर्वेषां गन्धानां नासिके एकायनं
(नासिकैकायनम्=मा. पा.) बृ.उ. ४।५।१२
एवं सर्वेषां स्पर्शानां त्वगेकायनम् बृ.उ. ४।५।१२
एवं संसारचक्रेण कूपचक्र घटा इव २ यो. त. ५
एवं सुकृतदुष्कृते सर्वाणि च
द्वन्द्वानि (पर्यवेक्षत) कौ. उ. १।४
एवं सुखी ब्रूते ब्रह्मो. १
एवंसूक्ष्माङ्गानि,यएवंवेदसमुक्तिभाक्.. मं. ब्रा. १।१
एवं सोम्य ते षोडशानां कलाना-
मेका कलाऽतिशिष्टा.. छांदो.६।७।६,७
एवं सोम्य स आदेशो भवति छान्दो. ६।१।६
एवं स्थूलं च सूक्ष्मं च शरीरं.. वराहो. २।६८
एवं स्वरूपविज्ञानं यस्य कस्यास्ति
योगिनः । कुत्रचिद्गमनं नास्ति
तस्य सम्पूर्णरूपिणः पा. ब्र. ३९
एवं स्वात्मानं ज्ञात्वा वेदैः किं
प्रयोजनं भवति पैङ्गलो. ४।९
एवं स्वानुभवो यस्य सोऽहमस्मि
न संशयः मैत्रे. ३।२४
एवं ह वा एनमेषा देवता
मृत्युमतिवहति, य एवं वेद बृह. १।३।१६
एवं ह वा एनं स्वा
अभिसंविशन्ति (मा. पा.) बृह. १।३।१६
एवं ह वा एष श्रिया यशसा तपति गायत्र्यु. २
एवं ह वै तत्सर्वं परे देवे मनस्येकी-
भवति । प्रश्नो. ४।२
एवं ह वै स पाप्मना विनिर्मुक्तः स
सामभिरुन्नीयते प्रश्नो. ५।५
एवं हास्य सर्वे पाप्मानः प्रदूयन्ते छान्दो.५।२४।२
एवं हि प्रणवंज्ञात्वाव्यश्नुतेपरमंपदम् आगम. २७
एवं हि यस्य शक्तयश्चानेधाऽऽह्लादिनी राधिको. ४
एवं हेतुफलां जातिं प्रविशन्ति
मनीषिणः । यावद्धेतुफलावेशः
संसारस्तावदायतः अ. शां. ५४
एवं हैव विध्वंसमानंविष्वञ्चोविनेशुः बृह. १।३।७
एवं हैव श्रिया यशसा तपति
योऽस्या एतदेवं वेद बृह. ५।१४।३
एवं हैव स प्रजया पशुभिः..सन्धीयते ३ ऐत. १।६।३
एवं हैवंविदं सर्वाणि भूतान्यवन्ति बृह. १।५।२०
एवं हैवंविदं सर्वाणि भूतानि प्रति-
कल्पन्ते, अयमागच्छति बृह. ४।३।३७
एवं हैवंविदे सर्वाणि
भूतान्यरिष्टिमिच्छन्ति बृह. १।४।१६
एवं हैवेमान्प्राणान्त्संववर्ह बृह. ६।१।१३
एवं हैवैवंविद्यद्यपि बह्विवपापं कुरुते
सर्वमेव. तत्संप्साय शुद्धः बृह. ५।१४।८
एवं हैवैवंविद्यद्यपि..तत्सर्वंसंस्थाय
(मा. पा.) बृ. उ. ५।१४।८
एवं हैवैष यन्ता(रं)निलयनं प्रापयति छाग. ३।५
एवं हैवैषोऽभिसृत्वराणामेव धुर्याणां
चंक्रमतामरीणामुत्प्लवति छाग. ५।३
एवं हैष इतश्चेतश्चामुतश्च सम्प्रद्रवत
इवोपशु(घु)ष्यत इवोपस्कन्द-
मभिगृह्णाति छाग. ३।५
एवं हैष प्राज्ञेनात्मनापोज्झितोनब्रूते.. छाग. ६।३
एवं हैष संक्रीडति छाग. ३।५
एवं होताः पञ्चविधा अनुशस्यन्ते,
यत्प्राक्तृचाशीतिभ्यः सैकविधा १ ऐत. ३।४।३
एवा ते गर्भ एजतु सहावैतुजरायुणा बृ. उ. ६।४।२३
एवा मे अस्तु धान्यं सहस्रधारमक्षितं महाना. १४।२१

एवैष कृत्स्नक्षय एको जागर्ति मैत्रा. ६।१७
एष आकाशात्मैव, एष कृत्स्नक्षय एको जागर्ति मैत्रा. ६।१७
एष आत्मा न नश्यति, यं ब्रह्मचर्येणानुविन्दते छान्दो. ८।५।३
एष आत्मा नृसिंहश्चिद्रूप एवाविकारोह्युपलब्धः नृसिंहो. ९।१
एष आत्माऽपहतपाप्माविजरोविमृत्युर्विशोको... सत्यकामः सत्यसङ्कल्पः [छां.उ.८।१।५+ मैत्रा.७।७
एष आत्माऽक्षमव्ययः ते. बिं. ५।४
एष आत्मेतिहोवाच [छांदो.८।३।४ + ८।७।४ +८।८।३+८।११।१+ मैत्रा. २।२
एष आत्मेत्याह भगवान् मैत्रिः मैत्रा. २।२
एष आदेशः, एष उपदेशः.. तैत्ति. १।११।४
एष इमं लोकमभ्यार्चत्पुरुषरूपेण य एष तपति १ ऐत. २।१।१
एष ईश्वरस्तत्सर्वगतः नृसिंहो. ५।१
(अथ) एष उ एव अकार आप्ततमार्थे आत्मन्येव नृसिंहेदेवेब्रह्मणि वर्तते नृसिंहो. ९।१
एष उ एव विभ्रद्वाजः; प्रजा वै वाजस्ता एष बिभर्ति १ ऐत. २।२।१
एष उ एव बृहस्पतिः, वाग्वै बृहती बृह. १।३।२०
एष उ एव ब्रह्मणस्पतिः, वाग्वै ब्रह्म, तस्या एष पतिः, तस्माद्ब्रह्मणस्पतिः बृह. १।३।२१
एष उ एव भामनीः एषहि सर्वेषु लोकेषु भाति छान्दो.४।१५।४
एष उ एव वामनीः, एष हि सर्वाणि वामानि नयति छान्दो.४।१५।३
एष उ एवासाधुकर्म कारयति(पाठः) कौ.उ. ३।८
एष उ एव साम बृह.१।३।२२
एष उ एवैतदिन्द्रस्यात्मा भवति कौ. उ. २।६
एष उ एवैनमसाधु कर्म कारयति तं यमेभ्यो...नुनुत्सत कौ. उ. ३।९
एष उ एवैषु सर्वेष्वेतेषु परिख्यायते छांदो. ८।७।४
एष उभयात्मैवंवित् मैत्रा. ६।९
एष उ ल एवास्यात्मै तदात्मा भवति य एवं वेद कौ. उ. २।६
एष उ वा उद्गीथः प्राणावा उद्गीथः बृ. उ. १।३।२३
एष उ स्वरोयदेतदक्षरमेतदमृतमभयं तत्प्रविश्य देवा अमृता:..अभवन् छां. उ. १।४।४
एष उ ह्येव सर्वे देवाः बृह. १।४।६
(एवमेव) एष एतत्प्राणान् गृहीत्वा स्वे शरीरे.. यथाकामं परिवर्तते बृह. २।१।१८
एष एत्यवीरहा रुद्रो जलासभेषजीः, वित्तेऽक्षेममनीनशद्वातीकारोऽप्येतु ते नीलरु. १।३
एष एव क्षयस्तस्याः (वासनायाः) ब्रह्मेदमिति निश्चयः अ. पू. ५।१९
एष एव उग्रज्वलन्नेष एव सर्वतोमुख एषएव नृसिंहः, एष एव भीषणः नृसिंहो. ४।२
एष एवज्वलन्नेषहिव्याप्ततमः, एषएव सर्वतोमुख एषएवहिव्याप्ततमः नृसिंहो. ५।१
एष एव ज्वलन्नेष ह्येवोत्कृष्टः नृसिंहो. ५।४
एषएव नमाम्येष एवाहमेव योगारूढो ब्रह्मण्यैवानुष्टुभंसन्दध्यादोङ्कारइति नृसिंहो. ४।२
एष एव नमाम्येष हि व्याप्ततमः नृसिंहो.५।१
एष एव नमाम्येषह्येवोत्कृष्टः, एष एवाहम् नृसिंहो. ५।४
एष एव नृसिंह एष एव भीषणः नृसिंहो. ४।२
एष एव नृसिंह एष हि व्याप्ततमः नृसिंहो. ५।१
एष एव नृसिंह एषह्येवोत्कृष्टः नृसिंहो. ५।४
एष एव परम आनन्दः, एषब्रह्मलोकः बृह. ४।३।३३
एष एव परमो धर्मः, सत्यात्.. कदाचिन्न प्रमदितव्यम् भस्मजा. २।७
एष एव भद्रः, एष एव न मृत्युमृत्युः नृसिंहो. ४।२
एष एव भद्रः, एष हि व्याप्ततमः नृसिंहो. ५।१
एष एव भद्रः, एष ह्येवोत्कृष्टः नृसिंहो. ५।४
एष एव भीषणः, एष एव भद्रः नृसिंहो. ४।२
एष एव भीषणः, एष एव ह्येवोत्कृष्टः नृसिंहो. ५।४
एष एव भीषणः, एष हि व्याप्ततमः नृसिंहो. ५।१
(अथ) एष एव मकारो महाविभूत्यर्थ आत्मन्येव नृसिंहेदेवेब्रह्मणिवर्तते नृसिंहो. ९।६
एष एव महानेष एव विष्णुः नृसिंहो. ४।२
एष एव मनोनाशस्त्वविद्यानाशएवच महो. ४।११०
एष एव महानेष हि व्याप्ततमः नृसिंहो. ५।१
एष एव महानेष ह्येवोत्कृष्टः नृसिंहो. ५।४

एष एव मृत्युमृत्युरेष हि व्याप्ततमः नृसिंहो. ५।१
एष एव मृत्युमृत्युरेष ह्येवोत्कृष्टः नृसिंहो. ५।४
एष एव वामनीः, एष एव सर्वाणि
वामानि नयति..य एवं वेद छां.उ. ४।१५।३
एष एव विष्णुः, एष एव ज्वलन् नृसिंहो. ४।२
एष एव विष्णुरेष हि व्याप्ततमः नृसिंहो. ५।१
एष एव विष्णुरेष ह्येवोत्कृष्टः नृसिंहो. ५।४
एष एव वीरः,एषएवमहानेषएवविष्णुः नृसिंहो. ४।२
एष एव वीरः, एष एवोत्कृष्टः नृसिंहो. ५।४
एष एव वीरः, एष व्याप्ततमः नृसिंहो. ५।१
एष एव सर्वतोमुखः, एष एव नृसिंहः नृसिंहो. ४।२
एष एव सर्वतोमुखः, एष हि व्याप्ततमः नृसिंहो. ५।१
एष एव सर्वतोमुखः, एष ह्येवोत्कृष्टः नृसिंहो. ५।४
एष(उ)एव(वा)अकार आप्ततमार्थे
आत्मन्येव नृसिंहे देवे वर्तते नृसिंहो. ५।१
एष एवात्मेति होवाच नृसिंहो. ९।१०
एष एवादेशः, एष एवोपदेशः मसमजा. २।७
एष एवाहमेष हि व्याप्ततम
आत्मैव नृसिंहः नृसिंहो. ५।१
एष एवाहमेष ह्येवोत्कृष्टस्तस्मादात्मा
ह्येवैनं जानीयात् नृसिंहो. ५।४
एष एवाहमेव योगारूढो ब्रह्मण्ये-
वानुष्टुभं सन्दध्यात् नृसिंहो. ४।२
एष एवोग्रः, एष ह्येवोत्कृष्टः नृसिंहो. ५।४
एष एवोङ्कार उत्कृष्टतमार्थः नृसिंहो. ५।२
एष एवोङ्कार उत्कृष्टतमार्थे आत्मन्येव
नृसिंहे देवे ब्रह्मणि वर्तते नृसिंहो. ५।३
एष एवोग्रः, एष एवोत्कृष्टः नृसिंहो. ५।४
एष एवोग्रः, एष हि व्याप्ततमः नृसिंहो. ५।१
एष एवोग्रः, एष एव वीरः नृसिंहो. ४।२
एष एवोत्कृष्टः, एष एव महान् नृसिंहो. ५।४
एष ओङ्कार आख्यातो धारणा-
भिर्निबोधत ना. बि. ८
एष कृत्स्नक्षय एको जागर्ति मैत्रा. ६।१७
एष वाभ्यन्तरो योगोयथातेकथितः॥ दुर्वासो. २।१२
एषणात्रयवासनात्रयममत्वाहङ्कारादि-
वमनमिव हेयमधिगम्यः॥ प. हं. प. १
एष त आत्माऽन्तर्याम्यमृतः [बृह. ३।७।३+४।२.३
एष त आत्मासर्वान्तरः [बृह.३।४।१, १;२+५।१
१७

एष तेऽग्निर्नचिकेतःस्वर्गोयमवृणीथा
द्वितीयेन वरेण कठो. १।१९
एष तत्स्थः सवितारव्यो यस्मादेवेमे
चन्द्रर्क्षग्रहसंवत्सरादयः सूयन्ते मैत्रा. ६।१६
एष तुरीय एष एवोग्र एष एव वीरः नृसिंहो. ४।२
एष तु वा अतिवदति यः सत्येना-
तिवदति छां.उ. ७।१६।१
एष तूद्देशतः प्रोक्तः भ. गी. १०।४०
एष ते कामकामाय स्वाहा महाना. १४।३
एष ते योनिः सूर्याय त्वा भ्राजस्वते चित्यु. १६।१
एष ते मन्यो मन्यवे स्वाहा महाना. १४।४
एष दृष्टोऽदृष्टोऽव्यवहार्योऽप्यल्पो
नाल्पः साक्ष्यविशेषोऽनन्यः..
अद्वयः परमात्मा नृसिंहो. ९।७
(तथैव) एष देवदत्तः स्वप्न
आनन्दमुपयाति ब्रह्मो. १
एष देवपथो ब्रह्मपथ एतेन प्रतिपद्य-
माना इमंमानवमावर्तं नावर्तन्ते छान्दो. ४।१५।६
एष देवयानः पन्थाः छान्दो. ५।१०।२
एष देवः स्वप्ने महिमानमनुभवति प्रश्नो. ४।५
एष धर्मो यातो भवत्यनन्तरस्त्वेवैन-
मुपमंत्रयते ददाम त इति कौ.उ. २।१;२
एषनित्योमहिमाब्राह्मणस्य[बृ.४।४।२३ +इतिहा.२०
एष पन्थाः, एतत्कर्म, एतद्ब्रह्म १ ऐत. १।१।१
एष पन्थाः परिव्राजकानां
वीराध्वनि वाऽनाशके वाऽपां
प्रवेशे वा .. याज्ञव. २
एष पन्था ब्रह्मणा हानुवित्तस्तेनैति
ब्रह्मवित्पुण्यकृत्तैजसश्च बृह. ४।४।९
एष पन्था ब्रह्मणा ह्यनुवित्तस्तेनैति
सन्न्यासीब्रह्मविदित्येवमेवैषभगवन् जाबा. ५
एषपरमात्माऽपरिमितोऽजोऽतर्क्यो-
ऽचिन्त्यः, एष आकाशात्मा मैत्रा. ६।१७
एष परमात्मा पुरुषो नाम आत्मो. ६
एष परमेश्वरः, एष भूताधिपतिः मैत्रा. ७।७
एष परोरजा इति, सर्वसु ह्येष रज
उपर्युपरि तपति गायत्र्यु. २
एष पर्जन्यो मघवानेष वायुरेष
पृथिवी रयिर्देवः सदसच्चामृतंच प्रश्नो. २।५

एष पुण्यकृतां लोकानेष
मृत्योर्हिरण्मयम् महाना. ६।६
एष पुरुषो न शृणोति न पश्यति प्रश्नो. ४।२
एष प्रणव इत्येवं ह्याह मैत्रा. ६।४
एष प्रणव ओमिति छान्दो. १।५।१
एष प्रजापतिर्यद्धृदयम्,एतद्ब्रह्मैतत्सर्वम् बृह. ५।३।१
(एवमेव) एष प्राज्ञ आत्मेदं शरीर-
मनुप्रविष्ट आलोमभ्य आ नखेभ्यः कौ.उ. ४।१९
एष प्राण इतरान्प्राणान् पृथक्-
पृथगेव सन्निधत्ते प्रश्नो. ३।४
एष प्राण एव प्रज्ञात्माऽऽनन्दो-
ऽजरोऽमृतो न साधुना कर्मणा
भूयान्नो एवाऽसाधुना कर्मणा.. कौ. उ. ३।९
एष प्राणजयोपायः सर्वमृत्यूपघातकः शाण्डि.१।७।४३
(तथैव) एष प्राणो यदा याति
संसृष्टमाकृष्य प्रश्नो. १
एष ब्रह्मलोकः सम्राडिति
हैनमनुशशास याज्ञवल्क्यः बृह. ४।३।३२
एष ब्रह्मलोकःसम्राडेनंप्रापितोऽसीति
होवाच याज्ञवल्क्यः बृह. ४।४।२३
एष ब्रह्मविदां वरिष्ठः, सत्येनलभ्यः मुण्ड. ३।१।४
एष ब्रह्मा च विष्णुश्च रुद्र एष
हि भास्करः सूर्यता. १।६
एष ब्रह्मैष इन्द्र एष प्रजापति-
रेते सर्वे देवा इमानि च पञ्च
महाभूतानि २ ऐत. ५।३
एष भर्ग इति रुद्रो ब्रह्मवादिनः मैत्रा. ६।७
एष भर्गाख्यः, भाभिर्गतिरस्य
हीति भर्गः मैत्रा. ६।७
एष भुवनस्य मध्ये भुवनस्य गोप्ता महाना. ६।५
एष भूतपालः [बृ.उ. ४।४।२२+ मैत्रा. ७।७
एष भूताधिपतिः [बृ.उ.४।४।२२ मैत्रा. ७।७
एष भूतानामधिपतिर्ब्रह्मणः सायुज्य॰
सलोकतामाप्नोति महाना. १०।२
एष म आत्माऽन्तर्हृदयेऽणीयान् छां. ३।१४।३,४
एष मधुकृत ऋग्वेद एव पुष्पम् छान्दो. ३।१।२
एष यज्ञस्य पुरस्ताद्युज्यते २ प्रणवो. ४
एष योगी वरो देहे सिद्धिमार्ग-
प्रदर्शकः वराहो. ५।४०

एष योनिः सर्वस्य [माण्डू. ६ +रामो. २।४
[ग. शो. १।४+५।६+ सुबालो. ५।१५;
[नृ.पू. ४।२; नृसिंहो. १।४
एष योऽयं दक्षिणेऽक्षन् पुरुषस्तंवा
एतमिन्धं॰ सन्तमिन्द्रइत्याचक्षते बृह. ४।२।२
एष रज उपर्युपरि तपति बृह. ५।१४।३
एष रसो यच्चक्षुः सतो ह्येष रसः बृह. २।३।४
एषर्ग्यजुः परमेतच्च सामायम-
थर्वेयमन्या च विद्या त्रिपुरो. १६
एषर्ग्यजुः परमेतच्च सामेवायम-
थर्वेयमन्या च विद्योम् (पाठः) त्रिपुरो. १६
एष लोकपाल एष लोकाधिपति-
रेष सर्वेश्वरः स म
आत्मेति विद्यात् कौ. उ. ३।९
एष वः पन्थाः सुकृतस्य लोके मुण्ड. १।२।१
एष वः पुण्यः सुकृतो ब्रह्मलोकः मुण्ड. २।२।६
एष वा अग्नेर्योनिर्यः प्राणः
प्राणंगच्छ स्वांयोनिंगच्छस्वाहा ना. प. ३।७७
[+याज्ञव. १ प. हं. प. ३
एष वा अर्धर्चः, एष ह्येभ्यः
सर्वेभ्योऽर्धेभ्योऽर्चत १ ऐत. २।२।८
एष वा ऋगेष ह्येभ्यः सर्वेभ्यो
भूतेभ्योऽर्चत १ ऐत. २।२।७
एष वा अक्षरम्,एष ह्येभ्यःसर्वेभ्यः
क्षरति, न चैनमतिक्षरन्ति १ ऐ. २।२।१०
एष वा उद्गीथः प्राणो वा उत्प्राणेन
हीदं॰ सर्वमुत्तब्धम् बृह. १।३।२३
एष वायुरेष पृथिवी रयिर्देवः
सदसच्चामृतं च यत् प्रश्नो. २।५
एष वाव ते गोप्यायेति
(गोपाय्यातेति) शौनको. १।३
एष वाव विजिज्ञासितव्योऽन्वेष्टव्यः मैत्रा. ६।८
एष विधिर्वीराध्वानेवाऽनाशकेवाप्स-
प्रवेशेवाऽग्निप्रवेशेवामहास्थानेवा प. हं. प. ४
एष वीरो नृसिंह एव नृसिंहो. २।८
एष वीरो नारसिंहेन वाऽनुष्टुभा
मन्त्रराजेन तुरीयं विद्यात् नृसिंहो. २।८
एष वेदो विश्वकर्मा महात्मा सदा
जनानां हृदये सन्निविष्टः श्वेता. ४।१७

एष वै कृत्स्न आत्मा यद्बृहती १ऐत.३।५।२
एष वै गोपा एष हीदं सर्वं गोपायति... १ऐत.२।६।२
एष वै पदमेष हीमानि सर्वाणि भूतानि पाति तस्मात्पदम् १ ऐत. २।२।९
एष वै पृथग्वर्त्मात्मा वैश्वानरः छान्दो. ५।१४।१
एष वै प्रतिष्ठात्मा वैश्वानरः छान्दो. ५।१६।१
एष वै बहुल आत्मा वैश्वानरो यं त्वमात्मानमुपास्से छान्दो. ५।१५।१
एष वै यजमानस्य लोकः [छान्दो. २।२४।५,९,१५
एष वै रयिरात्मा वैश्वानरः छान्दो. ५।१६।१
एष वै रयिर्यः पितृयाणः प्रश्नो. १।९
एष वै विश्वरूप आत्मा वैश्वानरः यं त्वमुपास्से छान्दो. ५।१३।१
एष वै सम्प्रति प्राणो यन्मज्जैतद्रेतो न ह वा ऋते प्राणाद्रेतः सिच्यते ३ ऐत. २।२।२
एष वै सुतेजा आत्मा वैश्वानरो यं त्वमात्मानमुपास्से छान्दो. ५।१२।१
एष वै सोम्य चतुष्कलो पादो ब्रह्मणः प्रकृतवान्... छान्दो. ५।६।२
एष वै सोम्य चतुष्कलः पादो ब्रह्मण आयतनवान्नाम छान्दो. ४।८।३
एष वोऽस्त्विष्टकामधुक् भ. गी. ३।१०
एष सर्वेश्वर एष सर्वान्तर्यामी ग. शो. ५।७
एष वै सोम्यचतुष्कलःपादोब्रह्मणो-ऽनन्तवान्नाम छान्दो. ४।६।३
एष वै सोम्य चतुष्कलः पादो ब्रह्मणो ज्योतिष्मान्नाम छान्दो. ४।७।३
एष व्योम्न्यात्मा प्रतिष्ठितः मुण्ड. २।२।७
एष वै यज्ञोयज्ञोऽहन्यहर्देवेषुदेवोऽध्यूढः १ ऐत. ३।४।१
(एवमेव) एष सम्प्रसादोऽस्माच्छरीरात्समुत्थाय परं ज्योतिरुपसम्पद्य स्वेन रूपेणाभिनिष्पद्यते छान्दो.८।१२।३
एषसर्वज्ञएषसर्वान्तर्यामी [ग.शो. १।४+रामो. २।४
एष सर्वज्ञ एष सर्वेश्वरः सुबालो. ५।१५
एष सर्वज्ञ एषोऽन्तर्याम्येष योनिः सर्वस्य, प्रभवाप्ययौहिभूतानाम् [नृ. पू. ४।२ नृसिंहो. १।५
एष सर्वभूतान्तरात्मा मुण्ड. २।१।४
एष सर्वाधिपतिः, एषोऽन्तर्यामी सुबालो. ५।१५
एष सर्वान्तर्यामी [ग. शो. ५।७+ रामो. २।४
एष सर्वेश्वरः, एष सर्वज्ञः [माण्डू.६+नृ. पू. ४।२ [नृसिंहो. १।५ + रामो. २।४+ ग. शो. १।४
एष सर्वेश्वरः, एष सर्वाधिपतिः सुबालो. ५।१
एष सर्वेश्वरः, एष भूताधिपतिः, एष भूतपालः, एष सेतुर्विधरणः बृह. ४।४।२१
एष सर्वेश्वरश्चैष सर्वज्ञः सूक्ष्मभावनः ना. प. ८।१७
एष सर्वेश्वरः, स म आत्मेति विद्यात् कौ. उ.३।९
एष सर्वेश्वरो विभुः। सर्वदेवमयः सर्वप्रपंचाधारगर्भितः। सर्वाक्षरमयः कालः [ना. प. ८।५ +तुरीयो. ३
एष सर्वेषु भूतेषु गूढोत्मा न प्रकाशते कठो. ३।१२
एष साचामश्चेति तत्साम्नः सामत्वं बृह. १।३।२२
एष सिद्धिकरः, एतस्माद्ध्यानादौ प्रयुज्यते ब्र. शिखो. ३
एष सुप्तेषु जागर्ति कामं कामं.. कठो. ५।८
एष सुविज्ञेयो बहुधा चिन्त्यमानः कठो. २।८
एष सूर्यः, एष पर्जन्यो मघवान् प्रश्नो. २।५
एषसेतुर्विधरणः, एषहिखल्वात्मेशानः शम्भुर्भवो रुद्रः प्रजापतिः.. मैत्रा. ७।७
एष सेतुर्विधरण एषां लोकानामसम्भेदाय.. बृह. ४।४।२२
एष सोमो राजा तद्देवानामन्नं, तं देवा भक्षयन्ति छांदो. ५।१०।४
एष स्वधर्माभिभूतो यो वेदेषु.. मैत्रा. ४।४।३
एष स्वधर्मोऽभिहितो यो वेदेषु न स्वधर्मातिक्रमेणाश्रमी... मैत्रा. ४।३
एष ह यन्निदं सर्वं पुनाति छां.उ. ४।१६।१
एष ह वा अग्नेर्योनिर्यः प्राणः जाबा. ४
एष शुक्ल एष नील एष पीत एष लोहितः.. छान्दो. ८।५।१
एष ह वा अश्वमेधं वेद बृह. १।२।७
एष ह वा अश्वमेधः, य एष तपति बृह. १।२।७
एष ह वा उदक्प्रवणो यज्ञः छांदो. ४।१७।९
एष ह वै तत्सर्वं वक्ष्यतीति ते ह समित्पाणयो भगवन्तं पिप्पलादमुपसन्नाः प्रश्नो. १।१

एष ह वै यज्ञस्यमात्रां वेद यएवंवेद छांदो.२।२४।१६
एष ह वै सत्यधर्मो यदादित्यस्यादित्यत्वम् मैत्रा. ६।३५
एष ह यज्ञिदं सर्वं पुनाति छान्दो.४।१६।१
एष ह वै रयिः पितृयाणः प्रश्नो. १।९
एष ह वै सत्यधर्मो यदादित्यस्यादित्यत्वं वच्छुक्रं पुरुषलिङ्गम् मैत्रा. ६।३५
एष हि खल्वात्माऽन्तर्हृदयेऽणीयानिद्धोऽग्निरिव विश्वरूपः मैत्रा. ५।७
एष हि खल्वात्मेशानः शंभुर्भवो.. मैत्रा. ६।८
एष हि खल्वात्मेशानः शम्भुर्भवो.. शास्ताऽच्युतो विष्णुः.. मैत्रा. ७।७
एष हि देवः प्रदिशो नु सर्वाः.. महाना. २।१+ [तै. आ. १०।१।३ +सूर्यता. १।३
एष हि द्रष्टास्प्रष्टाश्रोताघ्रातारसयिता मन्ताबोद्धा कर्ता विज्ञानात्मापुरुषः प्रश्नो. ४।९
एष हि वा अङ्गानां रसः, तस्माद्यस्माच्चाङ्गात्प्राण उत्क्रामति बृह. १।३।१९
एष हि व्याप्ततम इदं सर्वं यदयमात्मा मायामात्रः नृसिंहो. ५।१
एष हि सर्वत्र सर्वदा सर्वात्मा सन् सर्वमत्ति (ग्रसौहीति पाठः) नृसिंहो. ४।२
एष हि सर्वाणि वामानि नयति..य एवं वेद छांदो. ४।१५।३
एष हि सर्वेषु लोकेषुभाति.. यएवंवेद छांदो. ४।१५।४
एष हि साक्षी, एष हीश्वरः नृसिंहो. ५।१
एष हि स्वप्रकाशोऽसङ्गोऽन्यत्र वीक्षत आत्माऽतो नान्यथाप्राप्तिः नृसिंहो. ५।३
एष ह्यर्वाग्बिलश्चमस ऊर्ध्व.. प्राणा वै यशो विश्वरूपम् बृह. २।२।३
एष ह्यस्य सर्वस्य स्वात्मानमनुजानाति नहीदं सर्वं स्वत आत्मवित् नृसिंहो. ८।३
एष ह्यात्मानं प्रकाशयति, सर्वसंहारसमर्थः परिभवासहः प्रभुर्व्याप्तः नृसिंहो. २।८
एष ह्यंतर्भुवनेष्वा वरीवर्ति १ ऐत. १।६।२
एष ह्युभौ गमिष्यावः कौ. उ.
एष ह्येतद्युतमन्नं समुन्नयति तस्माद्देताः सतार्चिषो भवन्ति प्रश्नो. ३।५

एष ह्येनं चाक्षुषं प्राणमनुगृह्णानः पृथिव्यां यादेवता सैषापुरुषस्यापानमवष्टभ्य.. व्यानः प्रश्नो. ३।८
एष ह्येभ्यः सर्वेभ्यो भूतेभ्यः क्षरति, न चैनमतिक्षरन्ति १ ऐत. २।२।१०
एष ह्येव आप्ततमः, एष हि साक्षी नृसिंहो. ५।१
एष ह्येव कामगानस्येष्टे छां. उ. १।७।९
एष ह्येव साधु कर्म कारयति कौ. उ. ३।८
एष ह्येवानन्दयति तैत्ति. २।७
एष ह्येवैनं साधु कर्म कारयति तं यमेभ्यो लोकेभ्य उन्निनीषते कौ. उ. ३।९
एष ह्येष कामगानस्येष्टे (मा. पा.) छां. उ. १।७।९
(अथाह) एषा गतिरेतदमृतमेतत्सायुज्यत्वं निर्वृतत्वं तथाचेति मैत्रा. ६।२२
एषाऽग्नौ हुतमादित्यं गमयति मैत्रा. ६।३७
एषा ते काम दक्षिणा चित्यु. १०।२,५
एषा तेऽभिहिता साङ्ख्ये भ. गी. २।३९
एषाते शाम्भवीमुद्रा गुप्ताकुलवधूरिव अमन. २।९
एषात्मशक्तिः, एषा विश्वमोहिनी.. देव्यु. १२
एषाऽत्र ब्रह्मपदवी, एषोऽन्द्वारविवरः, अनेनास्य तमसःपारं गमिष्यति मैत्रा. ६।३०
एषा देवी विश्वयोनिर्महात्मा गुह्यका. ६०
एषा निदाघ सौषुप्तस्थितिरभ्यासयोगतः अ. पू. २।१३
एषा प्रज्ञात् सर्वत एतया यज्ञस्तपते ३ प्रणवो. ७
(अतः) एषा ब्रह्मसंवित्तिर्भावाभावकलाविनिर्मुक्ता महो. ३
एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ भ. गी. २।७२
एषा ब्राह्मीस्थितिःस्वच्छानिष्कामा विगतामया । आदाय विहरन्नेवं सङ्कटेषु न मुह्यति महो. ६।७३
एषामज्ञानजन्तूनांसमस्तारिष्टशान्तये । यद्बोद्धव्यं ... तद्वदाम्यहम् निरालं. ३
(एवमेव) एषा माया स्वाव्यतिरिक्तानि पूर्णानि क्षेत्राणि दर्शयित्वा जीवेशाभासेन करोति नृसिंहो. ९।३
एषा योनिः सर्वेषाम्, प्रभवाप्ययौ हि भूतानाम् श्रीवि. ता. ४।९

एषा विश्वमोहिनी पाशाङ्कुश-
 धनुर्बाणधरा देव्यु. १२
एषा वेदोपनिषत् तैत्ति. १।११।४
एषा वै नृसिंहगायत्री देवानां
 वेदानां निधनं भवति नृ.पू. ४।३
एषा वै प्रजापतिर्विश्वभृत्तनूः मैत्रा. ६।६
एषा वै ब्रह्मकला, अत्र हि सर्वे
 कामाः समाहिताइत्यत्रोदाहरन्ति मैत्रा. ६।३५
एषा वै महालक्ष्मीर्यजुर्गायत्री चतु-
 र्विंशत्यक्षरा भवति नृ. पू. ४।३
एषा वै सर्वेश्वरी सर्वाद्या सनातनी
 कृष्णप्राणाधिदेवाऽर्चेत् राधिको. ५
एषा व्याहृतिश्चतुर्णां वेदानामानु-
 पूर्व्येण भूर्भुवः सुवरिति २ प्रणवो. १८
एषा श्रीमहाविद्या, य एवं वेद देव्यु. १२
(अथ) एषा समावर्तनीयेति वेदि-
 तव्या संहिता भवति संहितो. २।१
एषा सरस्वती देवी सर्वभूतगुहाश्रया यो.शि. ३।८
एषा सर्वेश्वर्येषा सर्वोत्तमैषाऽन्तर्या-
 म्येषा योनिः, सर्वेषां प्रभवाप्ययौ
 हि भूतानाम् श्रीवि.ता. ४।१
एषा सा वैष्णवी मुद्रा सर्वतंत्रेषु
 गोपिता [शाण्डिल्यो. १।७।१४
एषा सोम्य तेऽस्मद्विद्यात्मविद्या छांदो.४।१४।१
एषाऽस्य पत्नी विराट् तयोरेष
 स५स्तावोयएषोन्तर्हृदयआकाशः बृह. ४।२।३
एषाऽस्य परमा गतिः, एषाऽस्य,परमा
 सम्पत्, एषोऽस्य परमो लोकः बृह. ४।३।३२
एषाऽस्य परमा सम्पत्, एषोऽस्य
 परमो लोकः बृह. ४।३।३२
एषा हि चञ्चलास्पन्दशक्तिश्चित्तत्व-
 संस्थिता। तांविद्धि मानसीं शक्तिं.. महो. ४।१००
एषा हि जीवन्मुक्तेषु तुर्यावस्थेति
 विद्यते।.. तुर्यातीतमतः परम् महो. ५।३५
एषा हि न प्राणोऽपानो व्यान
 उदानः समानोऽनः.. बृह. १।५।३
एषां भूतानां पृथिवी रस पृथिव्या
 आपो रसः, अपामोषधयो
 रसः, ओषधीनां पुरुषो रसः,
 पुरुषस्य वाग्रसः.. छान्दो. १।१।२
एषां वै भूतानां पृथिवी रसः,
 पृथिव्या आपः, अपामोषधयः,
 ओषधीनांपुष्पाणि,पुष्पाणांफलानि,
 फलानां पुरुषः, पुरुषस्य रेतः बृह. ६।४।१
एषां भूतानां ब्रह्म प्रपद्ये कुंडिको. १४
एषां लोकानामसम्भेदाय नैव ५.. छान्दो. ८।४।१
एषां लोकानां संतत्या एवं संतता
 हीमे लोकास्तदस्य द्वितीयं जन्म २ऐत. ४।३
एषु सर्वेषु भूतेषु गूढोत्मा न
 प्रकाशते। दृश्यतेत्वग्रया बुद्धया..
 (मा. पा.) कठो. ३।१२
एषु सुप्तेषु जागर्ति... (मा. पा.) कठो. ५।७
एषु हीमे सर्वे देवाः बृह. ३।९।८
एषैव सर्वम् (आत्मा–नृसिंहः) नृसिंहो. ९।१
एषैव सा, स यस्मा अन्वाह
 तस्य प्राणांस्त्रायते बृह. ५।१४।४
एषैवात्मा सनातनः ते. बिं. ९।८
एषैवालम्बनंज्ञात्वा ब्रह्मलोकेमहीयते गुह्यका. ४०
एषैवालम्बनं श्रेष्ठं सैषैवालम्बनंपरम् गुह्यका. ४०
एषैवास्य प्रजापतेः स्थविष्ठा तनूर्या
 लोकवतीति मैत्रा. ६।६
एषोऽग्निस्तपत्येष सूर्य एष पर्जन्यो
 मघवानेष वायुरेष पृथिवी
 सदसच्चामृतं च यत् प्रश्नो. २।५
एषोऽणुरात्मा चेतसा वेदितव्यः मुण्ड. ३।१।९
एषोऽत्र द्वारविवरः, अनेनास्य
 तमसः पारं गमिष्यति मैत्रा. ६।३०
एषोऽत्र ब्रह्मपथः सौरं द्वारं
 भित्वोर्ध्वेन विनिर्गताः मैत्रा. ६।३०
एषोऽनन्तोऽव्यक्त आत्मा
 सोऽविमुक्ते प्रतिष्ठितः रामो. ३।१
एषोऽन्तर्यामी, एष योनिः सर्वस्य, सुबालो. ९।१५
 प्रभवाप्ययौ हि भूतानाम् रामो. २।४
 [+ना.प.८।१७+ ग. शो. १।४
एषोऽन्तरे हृत्पुष्कर एवाश्रितः मैत्रा. ६।१.२

एषोऽसौ परमहंसो भानुकोटि-
प्रतीकाशः, येनेदं व्याप्तं
तस्याष्टधा वृत्तिर्भवति हंसो. ६
एषोऽस्य दोषेण दुष्यति छान्दो.८।१०।१,२
एषोऽस्य परमात्मनः परम आनन्दः बृह.४।३।३२
एषोऽस्य परमो लोकः बृह.४।३।३२
एषो ह देवः प्रदिशो नु सर्वाः
(एषहेतितै.आरण्यके)पूर्वो ह
जातः स उ गर्भे अन्तः[श्वेता.२।१६ +वा.सं.३२।४

एष्टव्या बहवः पुत्रा यद्येकोऽपि
गयां व्रजेत्। यजेत वाऽश्वमेधं.. इतिहा. ९५
एह्येवत्वाज्ञपयिष्यामि[कौ.उ.१।१ +४।१८
एह्यास्व व्याख्यास्यामि ते, व्याच-
क्षाणस्य तु मे निदिध्यासस्व बृह. २।४।४
एह्येहीति तमाहुतयः सुवर्चसः
सूर्यस्य रश्मिभिर्यजमानं वहन्ति मुण्ड. १।२।६
एं वागीश्वर्यैचविद्महे क्लींकामेश्वर्यैच
धी हि। तन्नः क्लीं प्रचोदयात् वनदु. १४७

ऐ

ऐकात्म्यप्रत्ययसारं प्रपंचोपशमं
शिवमद्वैतं चतुर्थं [ग.शो.१।४+५।७ +रामो. २।४
ऐक्यत्वानन्दभोगाच्च सोऽयमात्मा
चतुर्विधः ना. प. ८।११
ऐक्यं तत्त्वं लये कुर्वन्
ध्यायेदसिपदं सदा शु. र. २।७
ऐक्यादानन्दभोगाच्च... नृसिंहो. १।३
ऐतदात्म्यमिदं सर्वम्, तत्सत्यं स
आत्मा तत्त्वमसि श्वेतकेतो छां. उ. ६।८।७+
[६।९।४+६।१०।३+६।११।३+ ६।१२।३+
[६।१३।३+६।१४।३+६।१५।३+ ६।१६।३
ऐतदात्म्यं हीदं सर्वम् नृसिंहो. ८।५
ऐतरेयकौषीतकीनादबिन्द्वात्मप्रबोध-
निर्वाणमुद्गलाक्षमालिकात्रिपुरा-
सौभाग्यबह्वृचानामृग्वेदगतानां
दशसङ्ख्याकानामुपनिषदां 'वाङ्मे
मनसि' इति शान्तिः मुक्तिको. १।५३
ऐतरेयं च छान्दोग्यं बृहदारण्यकं.. मुक्ति. १।३०
ऐन्द्रनीलं पूजितं विष्णुनासील्लिङ्गं.. सि. शि. २१

ऐन्द्रंधनुर्मणिधनुः....स्वर्यातं
च मृतं ब्रूयात् शिवो. ७।८१
ऐरावत-पुण्डरीक-वामन-कुमुदाञ्जन..
चतुरस्रदेवताः ना.पू.ता. ६।१
ऐरावतं गजेन्द्राणां भ.गी. १०।२७
ऐहिकामुष्मिकव्रातसिद्धयै मुक्तेश्च
सिद्धये। बहु कृत्यं पुरा स्यान्मे.. अवधू. ९
ऐहिके समनुप्राप्तेमांस्मरेद्रामसेवकम्,
यो रामं संस्मरेन्नित्यं.. रामर. ४।११
ऐश्वरं पुरुषोत्तम भ. गी. ११।३
ऐश्वर्यं यस्य पूजनात् रा. पू. १।५
ऐं त्रिपुरादेव्यै च विद्महे क्लीं कामे-
श्वर्यै च धीमहि। सौः तन्नः शक्तिः
प्रचोदयात् वनदु. १४८
ऐं वद वद वाग्वादिनि ह्सौः क्लिन्ने
क्लेदिनि महाक्षोभं कुरु वज्रपं. १
ऐं वागीश्वरि विद्महे क्लीं कामेश्वरि
धीमहि। सौः तन्नः शक्तिः
प्रयोदयात् त्रि. ता. ४।६

ओ

(एवं) ओङ्कार आत्मैव, संविश-
त्यात्मनाऽऽत्मानं य एवं वेद माण्डू. १२
ओङ्कार एवेदं सर्वम् छां. उ. २।२३।४
ओङ्कारमात्रमखिलं विश्वप्राज्ञा-
विलक्षणम्। वाच्यवाचकता-
भेदाभेदेनानुपलक्षितः.. अक्ष्युप. ४६

ओङ्कारं पादशो ज्ञात्वा न
किञ्चिदपि चिन्तयेत् आगम. २४
ओङ्कारं पादशो विद्यात्पादा मात्रा न
संशयः।.. नकिंचिदपिचिन्तयेत् आगम. २
ओङ्कारं यो न जानाति ब्राह्मणो
न भवेत्तु सः ध्या. बिं. १४

ओङ्कारंसर्वेश्वरंद्वादशान्तेसप्तात्मानं चतुरात्मानं चतुस्सप्तात्मानं..	नृसिंहो. ३।४
ओङ्कारात्परतोरामवैखानसपर्वतः, तत्पर्वते.. बहुशाखा भवंति..	सीतो. ११
ओङ्कारात् सावित्री, सावित्र्या गायत्री, गायत्र्या लोका भवन्ति [अ. शि. ३।१५	+बटुको. २७
ओङ्कारार्थस्वरूपोऽस्मि..नाहमस्मि न सोऽस्म्यहम्	ते. बिं. ३।४३
ओङ्कारेण सर्वा वाक्सन्तृण्णा	छान्दो.२।२३।३
ओङ्कारेणान्तरितंयेजपन्तिगोविंदस्य पञ्चपदं मनुम्। तेषामसौ दर्शयेदात्मरूपं तस्मा-न्मुमुक्षुरभ्यसेन्नित्यशान्त्यै	गो. पू. ३।६
ओङ्कारे परे ब्रह्मणि पर्यवसितो भवेत्स आत्मन्येवात्मानं परं ब्रह्म पश्यति	नृसिंहो. ६।३
ओङ्कारोच्चारणप्रांतशब्दतत्त्वानु-भावनात्। सुषुप्ते संविदा ज्ञाते प्राणस्पन्दो निरुध्यते	शाण्डि.१।७।२९
ओङ्कारोऽधिमात्रं पादा मात्रा मात्राश्च अकार...	माण्डू. ८
ओङ्कारोविदितोयेनसमुनिर्नेतरोजनः	आगम. २९
(१) ओजश्च महश्चेत्युपासीत	छां.उ. ३।१३।५
ओजः सखायोऽसीन्द्रस्य	आरुणि. ३
ओजस्तेजो बलं दाक्ष्यं	लक्ष्म्यु. ३
ओजस्विमहस्वान्भवति यएवंवेद	छान्दो.३।१३।५
ओजोऽसि सहोऽसि बलमसि भ्राजोऽसि देवानांधामनामाऽसि	महाना. ११।६
ओड्याणमुदरे बन्धस्तत्र बन्धो विधीयते। बध्नाति हि शिरोजातं..	यो. चू. ४९
ओडयाणं (वोडयाणं)कुरुतेयस्मात्	यो. चू. ४८
ओतश्च प्रोतश्चैष ओङ्कारः	नृसिंहो. ८
ओतश्च प्रोतश्च ह्ययमात्मा नृसिंहः	नृसिंहो. ८।१
ओतमोतेनजानीयादनुज्ञातारमांतरम्	नृसिंहो. ९।११
ओतं प्रोतमसन्मयम्	ते. बिं. ३।५४
ओतानुज्ञात्रनुज्ञाविकल्परूपं चिन्तयन् ग्रसेत्	नृसिंहो.३।३
(?) ओतानुज्ञात्रनुज्ञाविकल्पैस्त्रयमपि	नृसिंहो. १।५
ओ ३ मदामो ३ पिबा ३ मों देवो वरुणः प्रजापतिः सविता २..	छान्दो.१।१२।५
ओमिति प्रतिपद्यन्ते	शौनको. १।५
ओमितिप्रयुक्तआत्मज्योतिःसकृदावर्तते	१ अ.शिखो. १
ओमिति ब्रह्म [तैत्ति. १।८।१+	ना. प. ८।२
ओमिति ब्रह्म भवति	तारसारो. १।४
ओमिति ब्राह्मणः प्रवक्ष्यन्नाह ब्रह्मोपाप्नवानीति	तैत्ति. १।८।१
ओमिति ब्रह्मा प्रसौति	तैत्ति. १।८।१
ओमिति श॰ सति, ओमित्युद्गायति	छान्दो. १।१।९
ओमिति सत्यम्	१ ऐत. ३।६।४
ओमिति संहरन्नानुसंदध्यात्	नृसिंहो. ४।१
ओमिति सामानि गायन्ति	तैत्ति. १।८।१
ओमिति ह्युद्गायति तस्योप-व्याख्यानम् [छान्दो.१।१।१	+१।४।१
ओमिति ह्येवानुजानाति	नृसिंहो. ८।५
ओमिति ह्येष स्वरन्नेति	छांदो.१।५।१,३
ओमितीद॰ सर्वम्	तैत्ति. १।८।१
ओमित्यग्निहोत्रमनुजानाति	तैत्ति. १।८।१
ओमित्यक्षरं, तत्परमित्यक्षरं गुह्यं, तत्परमं पवित्रम्	सन्ध्यो. २०
ओमित्यग्रे व्याहरेत्। [नारा. ३+	भस्मजा. २।३
ओमित्यध्वर्युः प्रतिगरं प्रतिगृणाति	तैत्ति. १।८।१
ओमित्यनेनोद्धृत्यानामयेऽग्नौजुहोति	मैत्रा. ६।२६
ओमित्यनेनोर्ध्वमुत्क्रान्तः स्वातन्त्र्यं लभते	मैत्रा. ६।२२
ओमित्यभिनिधापयन्ति	शौनको. १।५
ओमित्यस्याददते	शौनको. १।५
ओमित्यात्मानं युञ्जीत	महाना. १७।१५
ओमित्याश्रावयति	छान्दो.१।१।९
ओमित्युद्गायति [छान्दो. १।१।१+	१।४।१+१।१।९
ओमित्येकाक्षरमन्तःप्रणवं विद्धि	ना.प. ८।२
ओमित्येकाक्षरमात्मस्वरूपम्	तारसा. १३

ओमित्येकाक्षरमिदं सर्वम्
तस्योपव्याख्यानम् रामो. २।१
ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म अ. ना. २१
[महाना.११।५+सूर्यो.९+ ब्र. वि. २+
भ.गी. ८।१३ १प्रणवो. २
ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म ध्येयम् ध्या.बिं. ९
(?) ओमित्येकेन रेचयेत् (पाठः) अमृना. २१
ओमित्येतदक्षरमादौ प्रयुक्तं ध्यानं
ध्यायितव्यम् अ. शिखो. १
ओमित्येतदक्षरमिदं सर्वं तस्योप-
व्याख्यानं भूतं भवद्भविष्यदिति
सर्वमोङ्कार एव[मांडू.१;नृ.पू.४।२; नृसिंहो. १।२;
ओमित्येतदक्षरमुद्गीथमुपासीत[छां.उ. १।१।१+४।१;
ओमित्येतदक्षरमुद्गीथः छां. उ. १।१।५
ओमित्येतदक्षरमुपासीत [छां.उ. १।१।१+१।४।१
ओमित्येतदक्षरस्य चैतत् मैत्रा.६।४
ओमित्येतदक्षरंपरंब्रह्म,अस्यपादाः.. अ. शिखो. १
ओमित्येतदक्षरं परं ब्रह्म, तदेवो-
पासितव्यम् तारसा. २।१
ओमित्येतदनुकृतिर्ह स्म. (मा. पा.) तैत्ति. १।८।१
ओमित्येतदनुकृति ह स्म वा अप्यो-
श्रावयेत्याश्रावयन्ति तैत्ति. १।८।१
ओमित्येतेन रेचयेत्; दिव्यमन्त्रेण
बहुधा कुर्यादामलमुक्तये अ. ना. २१
ओमित्येव तद्वा एषा एव समृद्धिर्यः.. छान्दो. १।१।८
ओमित्येवं ध्यायथ (मा. पा.) मुण्डको.२।२।६

ओमित्येव यदुद्भूतं ज्ञानं ज्ञेयात्मकं
शिवम् ।.. प्राणस्पदो निरुध्यते शांडि. १।७।३४
ओमित्येवं ध्यायथ आत्मानं,
स्वस्ति वः मुण्ड. २।२।६
ओमित्येवं ध्यायंस्तथाऽऽत्मानं
युञ्जीत मैत्रा. ६।३
ओमीमोंनमोभगवतेश्रीमहा..हुंफट्.. गारुडो. १०
ओमीं सचरति सचरति... वज्रेण स्वाहा गारुडो. १२
ओमों वाचि प्रतिष्ठा सैव पुरत्रयं
शरीरत्रयं व्याप्य...महात्रिपुर-
सुन्दरी वै प्रत्यक् चितिः बह्वृचो.२
(?) ओषधयः पृथिव्याम् मुण्ड. २।१।५
ओषधयो बर्हिषा, अदितिर्वेद्या चित्त्यु. ८।१
ओषधयश्च वनस्पतयश्च लोमानि बृह. १।१।१
ओषधिभ्योऽन्नम् (जायते)[तै.उ.२।१; +ग.शो.२।४
ओषधिवनस्पतयो लोमानि भूत्वा
त्वचं प्राविशन् २ ऐत. २।५
ओषधिवनस्पतिभिरन्नं भवति महाना.१७।१३
ओषधिवनस्पतिषु हि रसो दृश्यते,
चित्तंप्राणभृत्सु..त्वेवाविस्तरामात्मा १ऐत. ३।२।२
ओषधिवनस्पतीन् हि प्राणभृतोऽदन्ति १ऐत. ३।१।३
ओषधीनां पुरुषो रसः छान्दो. १।१।२
ओषधीनां पुष्पाणि (रसः) बृह. ६।४।१
ओषधीनां रेतोऽन्नम् १ ऐत. १।३।१
ओषधीर्लोमानि (अपियन्ति) बृह. ३।२।१३
ओष्ठापिधानानकुलीदन्तैः परिवृता
पविः । सर्वस्यैवाचईशाना चारु
मामिह वादयेत्-इतिच वागसः हयग्री. ८

औ

औदासीन्यामृतौघेन वर्धमानेन
योगिनः । उन्मीलितमनोमूलो
जगद्वृक्षः पतिष्यति अमन. २।५७
औदुम्बरः स्रुव औदुम्बरश्चमस
औदुम्बर इध्म औदुम्बर्यौ
उपमन्थन्यौ दशग्राम्याणि
धान्यानि भवन्ति बृह.६।३।१३
औदुम्बरे कंसे चमसे वा सर्वौषधं
फलानीति सम्भृत्य बृह. ६।३।१
औपमन्यव कंत्वमात्मानमुपास्से-इति छांदो.५।१२।१

औपासनसमुत्पन्नं (भस्म) गृहस्थानां
विशेषतः । समिदग्निसमुत्पन्नं धार्यं
वै ब्रह्मचारिणा । बृ. जा. ५।४
औषधवत्प्राश्नीयात् (यथाचितान्नादि) कठश्रु. ६
औषधवदशनमाचरेत् [आरु. २+ १ सं.सो. १।२
औषधवदशनंप्राश्नीयाद्यथालाभमश्नीयात् आरु. ३
औषिष्ठदन्त? शिङ्गीनिकोशाभ्याम् चित्त्यु. २१।१
औष्ठापिधाना नकुलीदन्तैः
परिवृता पविः २ऐत. ४।५।४

क

क इदं कस्मा अदात्कामः कामय.. [तै. आ. ३।१०।१,४ +अथर्व. — चित्त्यु.१०।१,१ ३।२९।७
क इन्द्रः कः शमनः कः सूर्यः — निरा. ४
क ईश्वरः, को जीवः — निरा. ४
क उपास्यः, कः शिष्यः, कः सन्न्यासी — निरा. ४
क एतान्बुद्धयते भेदान् को वै तेषां विकल्पकः। यस्यात्मनात्मानं.. — वैतथ्य. ११
ककारादित्वात्कीलिता — कामराज. १
कक्षोपस्थलोमानि (तत्रस्थान्केशान्) वर्जयेत् — कुंडिको. ९
कक्षोपस्थवर्जं क्षौरपूर्वकं स्नात्वा — ना. प. ४।४०
कच्चिदज्ञानसम्मोहः — भ.गी.१८।७२
कच्चिदेतच्छ्रुतं पार्थ — भ.गी.१८।७२
कच्चिन्नोभयविभ्रष्टः — भ.गी. ६।३८
कटिसूत्रंचकौपीनं दण्डंवस्त्रंकमण्डलुं, ..सर्वमप्सु विसृज्य — ना.प. ३।८७
कटौ चित्तसंयमात्तलातललोकज्ञानं — शांडि.१।७।५२
कट्वम्ललवणं तिक्तममृष्टं मृष्टमेव च। सममेव च यो भुंक्ते सजीवन्मुक्तः.. — महो. २।५४
कट्वम्ललवणात्युष्ण-तीक्ष्ण-सूक्ष्म-विदाहिनः — भ. गी. १७।९
कठवल्ली–तैत्तिरीयक–ब्रह्म–कैवल्य-श्वेताश्वतर–गर्भ–नारायणामृत-बिन्द्वमृतनाद–कालाग्निरुद्र–क्षुरिकासर्वसार-शुकरहस्य–तेजोबिन्दु-ध्यानबिन्दु–ब्रह्मविद्या–योगतत्त्व-दक्षिणामूर्ति–स्कन्द–शारीरक-योगशिखैकाक्षराक्ष्यवधूत–कठरुद्र-हृदय–योगकुण्डलिनी–पञ्चब्रह्म-प्राणाग्निहोत्र-वराह–कलिसन्तरण-सरस्वतीरहस्यानां कृष्णयजुर्वेद-गतानां द्वात्रिंशत्सङ्ख्याकानामुपनिषदां सह नाववत्विति शान्तिः — मुक्तिको. १।५५
कण्ठकूपे (चित्तसंयमात्) क्षुत्पिपासानिवृत्तिः — शांडि.१।७।५२
कण्ठकूपे विशुद्धाख्यं यच्चक्रं.. तिष्ठत्यत्र चतुर्मुखः — यो. शि. ६।१०
कण्ठकूपे विशुद्धाख्यं, यच्चक्रं.. तिष्ठत्यत्र सुरेश्वरः — यो.शि.१।१७४
कण्ठकूपोद्भवा नाडी शंखिन्याख्या.. अन्नसारं समादायमूर्ध्निसंचिनुते.. — यो.शि. ५।२५
कण्ठचक्रं चतुरङ्गुलं तत्रवामे इडाचन्द्र-नाडी.. तन्मध्येसुषुम्नां..ध्यायेत् — सौभाग्य. २८
कण्ठं तु निर्गुणं प्रोक्तं — गोपालो.२।३२
कण्ठं सङ्कुच्यनाड्यादौ स्तम्भितेयेन.. — ब्र. वि. ७२
कण्ठं संकोचयेत्किञ्चिद्बंधोजालन्धरो ह्ययम्। बन्धयेत्खेचरीं मुद्रां.. — यो.शि. ५।३९
कण्ठादुपरि मूर्धान्तं शाम्भवं स्थान-मुच्यते। नाडीनामाश्रयः पिण्डः.. — वराहो. ५।९३
कण्ठे चित्तसंयमाज्जनोलोकज्ञानम् — शाण्डि.१।७।५२
कण्ठे तुलसी शङ्खचक्रं गदा परं गतिः पुरुषोत्तमस्य(जीवोत्तमस्य–पाठः) — कृ. पु. सि. ३
कण्ठे संयमात् सोमलोकज्ञानम् — शाण्डि.१।७।५२
कण्ठे स्वप्नं समाविशत् सुषुप्तं हृदयस्थं तु तुरीयं... — ना. प. ५।१३
कण्ठोपरि कृतं पापं नष्टं स्यात्तत्र धारणात् (भस्मनः) — बृ. जा. ४।३४
कतम आदित्या इति, द्वादश वै मासाः संवत्सरस्यैत आदित्याः. — बृह. ३।९।५
कतम इंद्रः कतमः प्रजापतिः? स्तनयित्नुरेवेन्द्रो यज्ञःप्रजापतिः — बृह. ३।९।६
कतम एको देव इति प्राण इति। स ब्रह्म तदित्याचक्षते — बृह. ३।९।९
कतमं वाव स तेन (ॐकारध्यानेन) लोकं जयतीति — प्रश्नो. ५।१
कतमः स्तनयित्नुरित्यशनिरिति — बृह. ३।९।६
कतमा कतमर्क्कतमत्कतमत्साम कतमः कतम उद्गीथ इति विमृष्टं भवति — छान्दो. १।१।४
कतमाकायासासत्येत्यमृतेतित्रिसिष्ठः — महाना. १।१४
कतमा सैकेति, मन एवेति — बृह. ३।१।९
कतमास्तास्तिस्र इति पुरोऽनुवाक्या च याज्या च शस्यैव तृतीया — बृह. ३।१।७

कतमास्तिस्र इति या हुता उज्ज्वलन्ति, या हुता अतिनेदन्ते या हुता अधिशेरते किं ताभिर्जयतीति बृह. ३।१।८
कतमे ते त्रयश्च त्री च शता त्रयश्च त्री च सहस्रेति बृह. ३।९।१
कतमे ते त्रयस्त्रिंशत्? अष्टौ वसव एकादश रुद्रा द्वादशादित्यास्त एकत्रिंशत् इन्द्रश्च प्रजापतिश्च ... बृह. ३।९।२
कतमे ते त्रयो देवाः? इतीम एव त्रयो लोकाः बृह. ३।९।८
कतमे रुद्रा इति, दशेमे पुरुषे प्राणा आत्मैकादशः बृह. ३।९।४
कतमे वसव इत्यग्निश्च पृथिवी च वायुश्चान्तरिक्षं चादित्यश्च द्यौश्च चन्द्रमाश्च नक्षत्राणि चैते वसवः बृह. ३।९।३
कतमे षडिति—अग्निश्च पृथिवी च वायुश्चान्तरिक्षं चादित्यश्च द्यौश्चैते षट् बृह. ३।९।७
कतमोऽध्यर्ध इति योऽयं पवत इति बृह. ३।९।८
कतमो यज्ञ इति पशव इति बृह. ३।९।६
कतमो याज्ञवल्क्य सर्वान्तरः बृह. ३।४।१,२
कतमौ तौ द्वौ देवौ, अन्नं चैव प्राणश्च बृह. ३।९।८
कतर एतत्प्रकाशयन्ते कः पुनरेषां वरिष्ठ इति प्रश्नो. २।१
कतरः स आत्मा येन वा पश्यति येन वा शृणोति .. येन वा स्वादु चास्वादु च विजानाति २ ऐत. ५।१
कति ग्रहाः कत्यतिग्रहा इत्यष्टौ ग्रहा अष्टावतिग्रहा इति बृह. ३।२।१
कतिधाऽवकीर्णी प्रविशति चतुर्धेत्याहुर्ब्रह्मवादिनः सहवै. २२
कतिधा व्यकल्पयन् [वा.सं.३१।१० ऋक्सं.८।४।१९ [=मं.१०।९०।११ +चित्यु.१२।५
कतिभिरयमद्य ब्रह्मा यज्ञं दक्षिणतो देवताभिर्गोपायतीति, एकयेति बृह. ३।१।९
कतिभिरयमद्यर्ग्भिर्होताऽस्मिन्यज्ञे करिष्यतीति, तिसृभिरिति बृह. ३।१।७
कतिमात्र इत्यादेस्तिस्रो मात्रा अभ्याधाने हिंकृवते २प्रणवो. १६
कत्ययमद्याध्वर्युरस्मिन्यज्ञ आहुतीर्होष्यतीति तिस्र इति बृह. ३।१।८
कत्ययमद्योद्गाताऽस्मिन्यज्ञे स्तोत्रियाः स्तोष्यन्तीति, तिस्र इति बृह. ३।१।१०
कथमनेनेदृशेनानिच्छेनैवाद्विधमिदं चेतनवत्प्रतिष्ठापितम् मैत्रा. २।४
कथमशकतमदृतेजीवितुं [बृह. ६।१।८, ९,१०,११,१२;
कथमसतःसज्जायेतेति, सत्त्वेवसोम्येदमग्र आसीदेकमेवाद्वितीयम् छां. उ. ६।२।२
कथमायात्यस्मिञ्छरीरे (प्राणः) आत्मानंवाप्रविभज्यकथंप्रातिष्ठते प्रश्नो. ३।१
कथमेतद्विजानीयां भ. गी. ४।४
कथयन्तश्च मां नित्यं भ. गी. १०।९
कथयिष्यन्ति तेऽव्ययाम् भ. गी. २।३४
कथं ध्यानं कथं न्यासः कथं पूजाविधानकम्.. ब्रवीतु भगवानिदम सूर्यता. २।१
कथं न ज्ञेयमस्माभिः भ. गी. १।९
कथंनुतद्विजानीयांकिमुभातिविभाति कठो. ५।१४
कथं नु भगवन् गां पर्यटन्कलिं सन्तरेयं हरिनामो. १
कथं नु भगवः स आदेशो भवतीति छान्दो.६।१।३
कथं नु माऽऽत्मान एव जनयित्वा सम्भवति हन्त तिरोऽसानीति बृह. १।४।४
कथं न्विदं मदृते स्यादिति २ऐत. ३।११
कथं बन्धः कथं मोक्षः का विद्या काऽविद्येति सर्वसारो. १
कथं भीष्ममहं सङ्ख्ये भ. गी. २।४
कथं यास्यामो जलं तीर्त्वा यमुनायाः गोपालो. १।१
कथं वा धार्यते नरैः (रुद्राक्षाः) रु. जा. उ. १
कथं वाऽस्यावतारस्य ब्रह्मता भवति गोपालो. १।१५
कथं विद्यामहं योगिन् भ. गी. १०।१७
कथं संन्यस्तो भवति(यः)आत्मानं क्रियाभिर्गुप्तं करोति कठश्रु. २
कथं स पुरुषः पार्थ भ. गी. २।२१
(अथ)कथं हस्तीभूतो वहसीति मुखं ह्यस्याःसम्राण्न विदाञ्चकारेति बृह. ५।१४।८
कथ्यं कविं कल्पकं काममीशं तुष्टुवांसो अमृतत्वं भजन्ते त्रिपुरो. ९
कदम्बगोलकाकारं .. अनन्तमानन्दमयं..ध्यायतोयोगिनस्तस्य मुक्तिः करतले स्थिता त्रि. ब्रा. २।५७

कदलीगर्भ इवासारं नटइव क्षणवेषं
चित्रभित्तिरिव मिथ्यामनोरमम् मैत्रा. ४।२
कदलीव महामाया समनस्केन्द्रि-
यच्छिदा। अमनस्कं फलं श्रुत्वा
सर्वैथैव विनश्यति अमन. २।८३
(अथ)कदाचित् परिव्राजकाभरणो
नारदः .. शान्तो दान्तः सर्वतो
निर्वेदमासाद्य .. ना. प. १।१
कदाचित्स्वेच्छया देवो भूत्वा स्वर्गे
महीयते। मनुष्यो वाऽपि यक्षो वा..
स्वेच्छया बहुग्रामियात् १यो.त. १०९
कदा त्राणं करिष्यन्ति कुलायं
वनपुत्रिकाः। सङ्कल्पपादपं..
छित्त्वा.. विहरामि..यथासुखं १सं.सो.२।५४
कदाऽन्तस्तोषमेष्यामि स्वप्रकाशपदे
स्थितः। कदोपशान्तमननः.. १सं.सो. २।५२
कद्रुद्राय प्रचेतसे [ऋ.अ.१।३।२६= मं.१।४३।१
[+ तै. आ. १०।१७।१+ महाना.१०।१२
कद्रुद्राय प्रचेतसे मीढुष्टमाय...
तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु २ शिवसं. ३१
कनिष्ठिकाङ्गुल्याङ्गुष्ठेनचप्राणेजुहोति प्रा.हो.१।११
कनीयसि भवेत्स्वेदः कम्पो भवति
मध्यमे। उत्तिष्ठत्युत्तमे प्राणरोधे
पद्मासनं महत् शाण्डि.१।७।३
कन्दमध्ये स्थिता नाडी सुषुम्णेति
प्रकीर्तिता। तिष्ठन्ति परित-
स्तस्या नाड्यो.. जा. द. ४।६
कन्दमध्येऽलम्बुसा भवति शाण्डि. १।४।६
कन्दर्पस्ययथारूपंतथास्यादपियोगिनः १यो. त. ६०
कन्दस्थानं मनुष्याणां देहमध्यं
नवांगुलम् त्रि. ब्रा. २।५८
कन्दस्थानं निभेष्ठमूलाधारं(रात्र-)
नवाङ्गुलम्। चतुरंगुलमायातं.. जा.द. ४।३०
कन्दुका इव हस्तेन मृत्युनाऽविरतं
हताः (जीवाः) महो. ५।१४३
कन्दोर्ध्वे कुण्डलीशक्तिर्मुक्तिरूपा
हि योगिनाम् यो. शि. ६।५५
कन्दोर्ध्वकुण्डलीशक्तिः स योगी
सिद्धिभाजनम् ध्या. बि. ७३

कन्दोर्ध्वे कुण्डलीशक्तिरष्टधा
कुण्डलाकृतिः यो.चू. ३६,४४
कन्यागते यदा सूर्ये ति न्तिपितरोगृहे इतिहा. ८८
कपर्दिनं शिवं शान्तं भक्तानामभय-
प्रदम्। सिद्धिबुद्ध्युभयाश्लिष्टं .. ग. पू. २।५
कपालकुहरे जिह्वा प्रविष्टा विपरी-
तगा। भ्रुवोरन्तर्गतादृष्टिर्मुद्रा
भवति खेचरी [यो.चू. ५२+ ध्या. बि. ७९
कपालकुहरेमध्ये चतुर्द्वारस्य मध्यमे।
तदात्मा राजते तत्र.. ध्या. बि. १०३
कपालचर्मान्त्रास्थिमांसनखानि
पृथिव्यंशाः पैङ्गलो. २।२
कपालविवरे जिह्वा प्रविष्टा विपरी-
तगा.. मुद्रा भवति खेचरी यो. शि. ५।४०
कपालशोधने वापि रेचयेत्पवनं शनैः।
..कृमिदोषं निहन्ति च योगकुं. १.२५
कपालसम्पुटं पीत्वा ततः पश्यन्ति
तत्पदम्। यो. शि. १।७६
कपालंवृक्षमूलानिकुचेलान्यसहायता।
समताचैवसर्वस्मिन्नेतन्मुक्तस्यलक्षणं ना.प.३।५४
कपिलाक्षं गरुत्मन्तं सुवर्णसदृश-
प्रभम् ... (गरुडं ध्यायेत्) गारुडो. ५
कपिलागोर्भस्मोक्तम्। लब्धंगोभस्म
नोचेदन्यगोक्षारं .. नहि धार्यम् बृ. जा. ३।१
कपिला वा धवला वाऽलाभे तदन्या
गौः स्याद्दोषवर्जिता बृ. जा. ३।१
कपिशा वा श्वेतजा वा धूम्रवर्णा
वा (विभूतिः) रुद्रोप. १
ककारादिविदितत्वात्कीलिता(पा.) कामरा. १
कमलाष्टपर्णेषु दण्ड एषः सूर्यता. ६।१
कमलेक्षणाय नमः, विश्वरूपाय
आदित्याय नमः चाक्षुषो. ५
कम्पनं मध्यमं विद्यात् (प्राणायामे) जा. द. ६।१४
कम्पनं वपुषो यस्य प्राणायामेषु
मध्यमः त्रि. ब्रा. २।१०५
कम्पो भवति मध्यमे (प्राणायामे) यो. चू. १०५
कम्बर एनमेतत्सन्तꣳ सयुग्वानमिव
रैक्वमात्थ .. छान्दो. ४।१.३
कम्बुकण्ठी सुताम्रोष्ठी सर्वाभरण-
भूषिता सरस्व. २८

कर्तृत्वाद्यहङ्कारसङ्कल्पो बन्धः	निरा.उ. २१
कर्तृभेदं क्रियाभेदं...अस्तदेव सदा सुखम्	ते. बिं. ६।५४
कर्दमेनप्रजाभूतामयि[ऋ.खि.८७।१०	श्री.सू. ११
कर्पूरमनले यद्वत् सैन्धवं सलिले यथा। तथा..मनस्तत्त्वे विलीयते	शांडि. १।७।२१
कर्पूरे लीयमाने किं काठिन्यं तत्र विद्यते। अहंकारक्षये तद्वत्..	यो.शि. १।१४९
कर्म कर्तुमिहार्हसि	भ.गी. १६।२४
कर्मकाण्डोपासका रसिकानन्द-मार्गं न जानन्ति	सामर. २७
कर्म कारणमुच्यते	भ.गी. ६।३
कर्मक्षये याति स तत्त्वतोऽन्यः	श्वेता. ६।४
कर्म चैव तदर्थीयं	भ. गी. १७।२७
कर्मजडानां कर्मसम्भूतवासना-जडात्मकं भवति	सामर. १०१
कर्म जन्मान्तरीयं यत्प्रारब्धमिति कीर्तितम्	ना.बिं. २३
कर्मजं बुद्धियुक्ता हि	भ.गी. २।५१
कर्मजान् विद्धि तान् सर्वान्	भ. गी. ४।३२
कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः	भ. गी. ३।८
कर्मज्ञानेन्द्रियविषयेषु प्राणतन्मात्र-विषया अन्तर्भूताः	त्रि. ब्रा. १।४
कर्मणः सुकृतस्याहुः	भ. गी. १४।१६
कर्मणाऽनुरूपंफलमनुभूय तत्क्षयसङ्क्षये पुनरिमं लोकं प्रतिपद्यते	निरुक्तो. २।२
कर्मणाऽन्योन्यं जायत इति	निरुक्तो. २।१
कर्मणा पितृलोको विद्यया देवलोकः, देवलोको वै लोकानां श्रेष्ठस्तस्मा-द्विद्यां प्रशंसन्ति	बृह. १।५।१६
कर्मणा मनसा वाचा संस्मरेत् प्रजपेत्सुधीः	ना.पू.ता. ४।१५
(अथ)कर्मणामात्मेत्येतदेषा मुक्थम्	बृह. १।६।३
कर्मणा बध्यते जन्तुर्विद्यया च विमुच्यते	१सं. सो. २।२८
कर्मणा वर्तते कर्मी तत्त्यागा-च्छान्तिमाप्नुयात्	त्रि. ब्रा. २।१९
कर्मणा स्वेन पाल्यते	शिवो. ७।१०८
कर्मणामशमः स्पृहा	भ. गी. १४।१२
कर्मणामसमारम्भः कृतानां च परिक्षयः	आयुर्वे. १७
कर्मणां संक्लृप्त्यै लोकः सङ्कल्पते	छान्दो. ७।४।२
कर्मणैव हि संसिद्धि	भ.गी. ३।२०
कर्मणो नोपपद्यते	भ. गी. १८।७
कर्मणो ह्यपि बोद्धव्यं	भ. गी. ४।१७
कर्मण्यकर्म यः पश्येत्	भ. गी. ४।१८
कर्मण्यभिप्रवृत्तोऽपि	भ. गी. ४।२०
कर्मण्यधिकृता ये तु..तेभिर्धार्यमिदं सूत्रं [परब्र.१५+ ब्रह्मो.१३	+ना. प. ३।८५
कर्मण्येवाधिकारस्ते	भ. गी. २।४७
कर्म तपो ब्रह्म परामृतं	मुंड. २।१।१०
कर्मतरः कर्षकवत्फलमनुभवति	परब्र. १
कर्मत्यागान्न सन्यासो न प्रेषोच्चारणे-न तु। सन्धौ जीवात्मनोरैक्यं सन्यासः परिकीर्तितः	मैत्रे. २।१७
कर्मदायाद्सम्बन्धादुपकारःपर-स्परम्, दृश्यते नापकारश्च मोहेनात्मनि मन्यते	शिवो. ७।११२
कर्मनिर्मूलनं कन्था	निर्वाणो. ६
कर्म प्रतोदो वाक्यं काणनम्	छाग. ६।२
कर्म प्रारभते नरः	भ. गी. १८।१५
कर्म प्राहुर्मनीषिणः	भ. गी. १८।३
कर्मबन्धं प्रहास्यसि	भ. गी. २।३९
कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि	भ. गी. ३।१५
(तर्हि) कर्म ब्राह्मण इति चेत्,तन्न, सर्वेषां प्राणिनां प्रारब्धसञ्चि-तागामिकर्म साधर्म्यदर्शनात्	व. सू. ७
कर्मभिर्न स बद्ध्यते	भ. गी. ४।१४
कर्मभिर्यद्धैतन्न कुर्यात् क्षीयेत ह सोऽन्नमत्ति प्रतीकेन..	बृह. १।५।२
कर्ममर्मज्ञाता कर्म करोति	परब्र. १
कर्म मर्म ज्ञात्वा कर्म कुर्यात्	परब्र. १
कर्मयोगेन चापरे	भ.गी. १३।२५
कर्मयोगेन योगिनाम्	भ. गी. ३।३
कर्मयोगो विशिष्यते	भ. गी. ५।२
कर्मयोगोऽहं, धर्मकर्माऽहम्	अद्वै. भा. १
कर्मसङ्गिषु जायते	भ. गी. १४।१५
कर्मसङ्गेन देहिनम्	भ. गी. १४।७

कया नश्चित्र आभुवदूती सदावृधः
सखा [वनदु. ३४+ऋक्सं. अ. ३।६।२४=
[मं. ४।३१।१+वा. सं.२७।३९ तै.सं.४।२।११।२
[तै. आ. ४।४२।३+ सा. वे. ११।६९
[अथर्व. २०।१२४।१
करणं कर्म कर्तेति भ.गी. १८।१८
करणं च पृथग्विधम् भ.गी. १८।१४
करणानि समाहृत्य त्रि. ब्रा. १२२
करणान्यश्वाः, शिरानद्धयः छाग. ६।२
करणी विपरीताख्या..
जाठराग्निविवर्धनी १यो.त.१२२,२३
करणोपरमे जाग्रत्संस्कारोत्थ-
प्रबोधवत् .. स्वप्नावस्था.. पैङ्गलो. २।७
करतलामलकवद्वाक्यमप्रति-
बद्धापरोक्षसाक्षात्कारं प्रसूयते पैङ्गलो.३।३
करतलामलकवत्साक्षा-
दपरोक्षीकृत्य (आत्मानम्).. व. सू. ९
करपात्रमाधूकरेणान्नमश्नन्.. प. हं. प. ७
करपात्रेण वा कमण्डलूदकपो
भैक्षमाचरन्.. याज्ञव. ३
करामलकवद्बोधमपरोक्षं प्रसूयते अध्यात्मो. ४०
करिष्यस्यवशोऽपि सन् भ. गी. १८।६
करिष्ये वचनं तव भ.गी. १८।७३
करुणैव केलिः निर्वाणो. १
करे कङ्कणं बाहौ केयूरं पादयोः..
पीताम्बरं धारयन्.. राधोप. ३।१
करैर्यजमानस्याऽऽत्मविदेऽन्न-
दानं करोति मैत्रा.६।३३
करैर्यजमानं दिवमुत्क्षिप्त्वेन्द्राय
प्रायच्छत् मैत्रा. ६।३३
कर्कशाः कठिना भक्ष्या जीर्यन्ते
यत्र भक्षिताः शिवो. ७।१०७
कर्णधारं गुरुं प्राप्य कृत्वा
सूक्ष्मं तरन्ति च योगकुं. ३।१७
कर्णधारं गुरुं प्राप्य
तद्वाक्यं प्लववद्दृढम् यो. शि.६।७९
कर्णयोः श्रुतं माच्योद्वमममामुष्यओम् महाना. ७।७
कर्णसङ्कोचनं कृत्वा.. ध्या.बिं. १०१

कर्णं तथाऽन्यानपि योधवीरान् भ.गी. ११।३४
कर्णाभ्यां भूरि विश्रुवं ना.प. ४।४५
कर्णाभ्यांभूरिविश्रुवम् [तै.आ.७।४।१+तै.उ. १।४।१
कर्णाभ्यां श्रोत्रं.. (निरभिद्यत) २ऐत. १।४
कर्णौ निरभिद्येताम् २ऐत. १।४
कर्तव्यमकर्तव्यमिति भावनायुक्त
उपचारः भावना. ७
कर्तव्यानीति मे पार्थ भ.गी. १८।६
कर्तव्यं नैव तस्यास्ति कृतेनासौ
न लिप्यते (योगी) यो. शि.१।४७
कर्तव्यः कुम्भको नित्यं योगकुं. १।५५
कर्ता जीवः पञ्चवर्गः क्षेत्रज्ञः साक्षी
कूटस्थोऽन्तर्यामी कथम् सर्वसारो. १
कर्ता बहिरकर्ताऽन्तः महो. ६।६८
कर्ता नास्ति क्रिया नास्ति ते. बिं. ५।३३
कर्ता भवति विज्ञाता भवति छान्दो. ७।९।१
कर्ता तामस उच्यते भ. गी. १८।२८
कर्तारमीशं पुरुषं ब्रह्मयोनिम् मुण्ड. ३।१।३
कर्तारं विद्यात् कौ. उ. ३।८
कर्ता वक्ता रसयिता घ्राता
स्पर्शयिता च (आत्मा) मैत्रा. ६।७
कर्ता सन्निधिमात्रतः ,, महो. ४।१४
कर्ता सर्वस्य विश्वस्य पाता
संहारको भवान् ग.शो. ३।७
कर्ता सात्त्विक उच्यते भ.गी. १८।२६
कर्ताऽहमिति मन्यते भ.गी. ३।२७
कर्तुं नेच्छसि यन्मोहात् भ. गी. १८।६०
कर्तुं मद्योगमाश्रितः भ.गी. १२।११
कर्तुं व्यवसिता वयम् भ.गी. १।४५
(अकर्मेतिच)कर्तृत्वभोक्तृत्वाद्यहङ्कार-
तयाबन्धरूपंजन्मादिकारणं नित्य-
नैमित्तिक-याग-व्रत-तपोदानादिषु
फलाभिसन्धानं यत्तदकर्म निरा.उ. १४
कर्तृत्वभोक्तृत्वाहङ्कारादिभिः स्पृष्टो
जीवः,जीवेतरो न स्पृष्टः ना.प. ६।७
कर्तृत्वादिदुःखनिवृत्तिद्वारा
नित्यानन्दावाप्तिःप्रयोजनंभवति मुक्तिको. २।१
[मूढ इति च] कर्तृत्वाद्यहङ्कार-
भावारूढो मूढः निरा.उ. २६

कर्तृत्वाद्यहङ्कारसङ्कल्पो बन्धः निरा.उ. २१
कर्तृभेदं क्रियाभेदं...असदेव
सदा सुखम् ते. बिं. ६।५४
कर्दमेनप्रजाभूतामयि[ऋ.खि.८७।१० श्री.सू. ११
कर्पूरमनले यद्वत् सैन्धवं सलिले यथा।
तथा..मनस्तत्त्वे विलीयते शांडि. १।७।२१
कर्पूरे लीयमाने किं काठिन्यं
तत्र विद्यते। अहंकारलये तद्वत्.. यो.शि. १।१४९
कर्म कर्तुमिहार्हसि भ.गी. १६।२४
कर्मकाण्डोपासका रसिकानन्द-
मार्गं न जानन्ति सामर. २७
कर्म कारणमुच्यते भ.गी. ६।३
कर्मक्षये याति स तत्त्वतोऽन्यः श्वेता. ६।४
कर्म चैव तदर्थीयं भ. गी. १७।२७
कर्मजडानां कर्मसम्भूतवासना-
जडात्मकं भवति सामर. १०१
कर्म जन्मान्तरीयं यत्प्रारब्धमिति
कीर्तितम् ना.बिं. २३
कर्मजं बुद्धियुक्ता हि भ.गी. २।५१
कर्मजान् विद्धि तान् सर्वान् भ. गी. ४।३२
कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः भ. गी. ३।८
कर्मज्ञानेन्द्रियविषयेषु प्राणतन्मात्र-
विषया अन्तर्भूताः त्रि. ब्रा. १।४
कर्मणः सुकृतस्याहुः भ. गी. १४।१६
कर्मणाऽनुरूपंफलमनुभूय तस्यसङ्क्षये
पुनरिमं लोकं प्रतिपद्यते निरुक्तो. २।२
कर्मणाऽन्योन्यं जायत इति निरुक्तो. २।१
कर्मणा पितृलोको विद्यया देवलोकः,
देवलोको वै लोकानां श्रेष्ठस्तस्मा-
द्विद्यां प्रशंसन्ति बृह. १।५।१६
कर्मणा मनसा वाचा संस्मरेत्
प्रजपेत्सुधीः ना.पू.ता. ४।१५
(अथ)कर्मणामात्मेत्येतदेषा मुक्थम् बृह. १।६।३
कर्मणा बध्यते जन्तुर्विद्यया
च विमुच्यते १सं. सो. २।२८
कर्मणा वर्तते कर्मी तत्त्यागा-
च्छान्तिमाप्नुयात् त्रि. ब्रा. २।१९
कर्मणा स्वेन पाल्यते शिवो. ७।१०८
कर्मणामशमः स्पृहा भ. गी. १४।१२

कर्मणामसमारम्भः कृतानां
च परिक्षयः आयुर्वे. १७
कर्मणां संक्लृप्त्यै लोकः सङ्कल्पते छान्दो. ७।४।२
कर्मणैव हि संसिद्धि भ.गी. ३।२०
कर्मणो नोपपद्यते भ. गी. १८।७
कर्मणो ह्यपि बोद्धव्यं भ. गी. ४।१७
कर्मण्यकर्म यः पश्येत् भ. गी. ४।१८
कर्मण्यभिप्रवृत्तोऽपि भ. गी. ४।२०
कर्मण्यधिकृता ये तु..तैर्भार्यमिदं
सूत्रं [परब्र.१५+ ब्रह्मो.१३ +ना. प. ३।८५
कर्मण्येवाधिकारस्ते भ. गी. २।४७
कर्म तपो ब्रह्म परामृतं मुंड. २।१।१०
कर्मतरः कर्षकवत्फलमनुभवति परब्र. १
कर्मत्यागान्न सन्न्यासो न प्रेषोच्चारणे-
न तु। सन्धौ जीवात्मनोरैक्यं
सन्न्यासः परिकीर्तितः मैत्रे. २।१७
कर्मदायादसम्बन्धादुपकारःपर-
स्परम्, दृश्यते नापकारश्च
मोहेनात्मनि मन्यते शिवो. ७।११२
कर्मनिर्मूलनं कन्था निर्वाणो. ६
कर्म प्रतोदो वाक्यं काणनम् छाग. ६।२
कर्म प्रारभते नरः भ. गी. १८।१५
कर्म प्राहुर्मनीषिणः भ. गी. १८।३
कर्मबन्धं प्रहास्यसि भ. गी. २।३९
कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि भ. गी. ३।१५
(तर्हि) कर्म ब्राह्मण इति चेत्,तन्न,
सर्वेषां प्राणिनां प्रारब्धसञ्चि-
तागामिकर्म साधर्म्यदर्शनात् व. सू. ७
कर्मभिर्न स बध्यते भ. गी. ४।१४
कर्मभिर्य्द्वैतन्न कुर्यात् क्षीयेत ह
सोऽन्नमत्ति प्रतीकेन.. बृह. १।५।२
कर्ममर्मज्ञाता कर्म करोति परब्र. १
कर्म मर्म ज्ञात्वा कर्म कुर्यात् परब्र. १
कर्मयोगेन चापरे भ.गी. १३।२५
कर्मयोगेन योगिनाम् भ. गी. ३।३
कर्मयोगो विशिष्यते भ. गी. ५।२
कर्मयोगोऽहं, धर्मकर्माऽहम् अद्वै. भा. १
कर्मसङ्गिषु जायते भ. गी. १४।१५
कर्मसङ्गेन देहिनम् भ. गी. १४।७

कल्पसूत्रे यथा वेदे धर्मशास्त्रे पुराणके ।
.. स जपः प्रोच्यते मया — जा. द. १।१२
कल्पं क्षणीकरोत्यन्तः क्षणं नयति
कल्पताम् (देहादिवासनामुक्तः) — महो. ४।६८
कल्पादौ विसृजाम्यहम् — भ. गी. ९।७
कल्पान्तपवना वान्तु यान्तु चैकत्व-
मर्णवाः..नास्ति निर्मनसः क्षतिः — महो. ४।९७
कल्पान्ते वै सर्वसंहारकर्त्री — गुह्यका. ५९
कल्पितस्य शरीरस्य तस्य
सेनादिकल्पना — रा. पू. १।१०
कल्पिताश्चर्यजालेषु नाभ्युदेति
कुतूहलम् — अ. पू. ४।१०
कल्पितेयमविद्येयमनात्मन्यात्म-
भावनात् — महो. ४।१२८
कल्पो व्याकरणं शिक्षा निरुक्तं
ज्योतिषं छन्द एतानि षडङ्गानि — सीतो. १८
कवयोऽप्यत्र मोहिताः — भ. गी. ४।१६
कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूः — ईशा. ८
कविर्मूकवदात्मानं तद्दृष्ट्यादर्शयेन्नृणां — ना. प. ५।३५
कविं कवीनामतिमेधविग्रहम् — ग. पू. १।१०
कविं पुराणमनुशासितारं — भ. गी. ८।९
कविं पुराणं पुरुषं सनातनं सर्वेश्वरं
सर्वदेवैरुपास्यम् — महो. ४।७१
कविं पुराणं पुरुषोत्तमोत्तमं सर्वेश्वरं.. — ना. प. ९।१७
कवीनामुशना कविः — भ. गी. १०।३७
कव्यं कविं कल्पकं काममीशं
.. तुष्टुवांसा अमृतत्वं भजन्ते — त्रिपुरो. ९
कश्चन गच्छती ३ — तैत्ति.२।६।१
कश्चन समश्नुता ३ उ (कश्चित्–पा.) — तैत्ति. २।६।१
कश्च विष्णुः ? परं ब्रह्मैव विष्णुः — गोपीचं. ७
कश्चाह्लादः ? एष ब्रह्मानन्दरूपः — गोपीचं. ७
कश्चाह्लादः ? गोपीचन्दनसंसक्त-
मानुषाणांपापसंहरणाच्छुद्धान्तः-
करणानां ब्रह्मज्ञानप्राप्तिः ... — गोपीचं. ७
कश्चिदर्थव्यपाश्रयः — भ. गी. ३।१८
कश्चिद्धीरः प्रत्यगात्मानमैक्षत् — कठो. ४।१
कश्चिन्न तस्याः पतिरस्ति लोके — गुह्यका. ६८
कश्चिद्यतति सिद्धये — भ. गी. ७।३
कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः — भ. गी. ७।३
कश्चिन्मे प्रियकृत्तमः — भ.गी. १८।६९
कश्यपः पश्यको भवति — सूर्यता. १।२
कश्यपादुदिताः सूर्याः पापाग्नि-
घ्नन्ति सर्वदा — सूर्यता. १।२
कश्यपोलूखलः ख्यातो रज्जुर्माता-
ऽदितिस्तथा । .. यावन्ति देव-
रूपाणि वदन्ति विबुधा जनाः — कृष्णोप. २१
कपोतकाय स्वाहा — महाना.१४।१९
कस्त्वायं जडो मूको देहो मांसमयो-
ऽशुचिः । यदर्थ..अवशःपरिभूयसे — महो. ४.१३१
कस्तं मदामदं देवं मदन्योज्ञातुमर्हति — कठो. २।२१
कस्त्वमित्यहमिति होवाच — नृसिंहो. ७।२
कस्त्वेनयोरेकधाभूयं भूत्वा परमतां
गच्छति — बृह. ९।१२।१
कस्त्वेनं (एतं) जनयेदिति कारणं
प्रतिषिध्यते — अद्वैत. २५
कस्माच्च ते न नमेरन्महात्मन् — भ.गी.११।३७
कस्मात्तानि च क्षीयन्तेऽद्यमानानि
सर्वदेति । पुरुषो वा अक्षितिः.. — बृह. १।५।२
कस्मात्तानि न क्षीयन्तेऽद्यमानानि
सर्वदा । यो वैतामक्षितिं वेद.. — बृह. १।५।१
कस्मादज्ञानप्राबल्यमिति, भक्ति-ज्ञान-
वैराग्य-वासनाभावाच्च — त्रि.म.ना.९।२
कस्माद्ध्यभेष्यत्, द्वितीयाद्वै
भयं भवति — बृह. १।४।२
(अथ) कस्मादुच्यते ईशानः, यः
सर्वान्देवानीशते ईशनीभिः
...तस्मादुच्यत ईशानः — अ.शिरः.३।५
(अथ) कस्मादुच्यते उग्रमिति,
यस्मात्स्वमहिम्ना..सर्वानात्मनः
सर्वाणिभूतानि..तस्मादुच्यत उग्रम् — नृ. पू. २।९
(अथ) कस्मादुच्यत एकः ? यः सर्वा-
न्प्राणान्संभक्ष्य..तस्मादुच्यत एकः — अ.शिरः.३।५
(अथ) कस्मादुच्यते ओङ्कारः ? यस्मा-
दुच्चार्यमाण एव प्राणानूर्ध्वमुत्क्रा-
मयति तस्मादुच्यते ॐकारः — अ.शिरः.३।५
(अथ) कस्मादुच्यते तारं, यस्मा-
दुच्चार्यमाण एव गर्भ-जन्म-व्याधि-
जरा-मरण-भयात्तारयति.. — अ.शिरः.३।५

(अथ) कस्मादुच्यते नृसिंहमिति
यस्मात्सर्वेषां भूतानां वा वीर्यतमः
श्रेष्ठतमश्च सिंहो..तस्मादुच्यते.. नृ. पू. २।९
(अथ) कस्मादुच्यतेऽनन्तः ? यस्मा-
दुच्चार्यमाण एव..अस्यान्तो नोप-
लभ्यते तस्मादुच्यतेऽनन्तः अ.शिरः.३।५
(अथ) कस्मादुच्यते परं ब्रह्म ? यस्मा-
त्परमपरं परायणं च बृहद्बृहत्या
बृंहयति तस्मादुच्यते ब्रह्म अ.शिरः.३।५
(अथ) कस्मादुच्यते प्रणवः ? यस्मा-
दुच्चार्यमाण एव ऋग्यजुः..ब्रह्म
ब्राह्मणेभ्यः प्रणामयति नामयति
च तस्मादुच्यते प्रणवः अ.शिरः.३।५
(अथ) कस्मादुच्यते नमामीति,
यस्माद्यं सर्वे देवा नमन्ति
मुमुक्षवोब्रह्मवादिनश्च.. तस्मात्.. नृ. पू. २।१३
(अथ)कस्मादुच्यते भगवान्महेश्वरः अ.शिरः.३।५
(अथ) कस्मादुच्यते भीषणमिति,
यस्माद्भीषणं यस्य रूपं दृष्ट्वा..
भूतानि पलायन्ते, स्वयं.. न
बिभेति तस्मात्.. [नृ. पू. २।४+२।१०
(अथ) कस्मादुच्यते भद्रमिति
यस्मात्स्वयं भद्रो भूत्वा..
भद्रं ददाति.. तस्मात्.. [नृ. पू. २।४+२।११
(अथ) कस्मादुच्यते महाविष्णु-
मिति, यस्मात्स्वमहिम्ना सर्वां ँ-
ल्लोकान्..सर्वाणिभूतानिव्याप्नोति.. नृ. पू. २।६
(अथ) कस्मादुच्यते मृत्युमृत्युमिति,
यस्मात्स्वमहिम्ना स्वभक्तानां स्मृत
एव मृत्युमपमृत्युं च मारयति.. नृ. पू. २।१२
(अथ)कस्मादुच्यते रुद्रः? यस्मादृ-
षिभिः.. द्रुतमस्यरूपमुपलभ्यते
तस्मादुच्यते रुद्रः अ.शिरः.३
(अथ) कस्मादुच्यते वीरमिति
यस्मात्सर्वां ँल्लोकान्..सर्वाणि
भूतानिविरमतिविरामयति..तस्मात्.. नृ. पू. २।५
(अथ) कस्मादुच्यते वैद्युतम् ?
यस्मादुच्चार्यमाण एव व्यक्ते
महसि तमसि द्योतयति तस्मा-
दुच्यते वैद्युतम् अ.शिरः. ३।५
(अथ) कस्मादुच्यते शुक्लम् ? यस्मा-
दुच्चार्यमाण एव क्रन्दते क्रामयति
च तस्मादुच्यते शुक्लम् अ.शिरः.३।५
(अथ) कस्मादुच्यते सर्वव्यापी ?
यस्मात्.. सर्वलोकान् व्याप्नोति.. अ.शिरः.३।५
(अथ) कस्मादुच्यते सूक्ष्मं ? यस्मा-
दुच्चार्यमाण एव सूक्ष्मो भूत्वा
शरीराण्यधितिष्ठति तस्मात्.. अ.शिरः. ३।५
(अथ) कस्मादुच्यते सर्वतोमुख-
मिति, यस्मात्स्वमहिम्ना सर्वां ँ-
ल्लोकान्.. सर्वाणिभूतानि स्वय-
मनिन्द्रियोऽपि सर्वतः पश्यति
तस्मादुच्यते सर्वतोमुखः नृ. पू. २।८
(अथ) कस्मादुच्यतेऽहमिति नृ. पू. २।१४
कस्मिञ्जनोलोका ओताश्च प्रोताश्चेति
तपोलोकेष्विति सुबालो.१०।१
कस्मिन्नु खलु गन्धर्वलोका ओताश्च
प्रोताश्चेत्यादित्यलोकेषु बृह. ३।६।१
कस्मिन्नु चक्षुः प्रतिष्ठितमिति
रूपेष्विति बृह. ३।९।२०
कस्मिन्नु खलु चन्द्रलोका ओताश्च
प्रोताश्च ? नक्षत्रेषु गार्गीति बृह. ३।६।१
कस्मिन्नुखलुदेवलोकाओताश्चप्रोताश्च?
इन्द्रलोकेषु गार्गीति बृह. ३।६।१
कस्मिन्नु खलु नक्षत्रलोका ओताश्च
प्रोताश्च ? देवलोकेषु गार्गीति बृह. ३।६।१
कस्मिन्नु खलु प्रजापतिलोका ओताश्च
प्रोताश्च ? ब्रह्मलोकेषु गार्गीति बृह. ३।६।१
कस्मिन्नु खलु ब्रह्मलोका
ओताश्च प्रोताश्च ? बृह. ३।६।१
कस्मिन्नु खलु वायुरोतश्च प्रोतश्च ?
अन्तरिक्षलोकेषु गार्गीति बृह. ३।६।१
कस्मिन्नु खल्वन्तरिक्षलोका ओताश्च
प्रोताश्च? गन्धर्वलोकेषु गार्गीति बृह. ३।६।१
कस्मिन्नु खल्विन्द्रलोका ओताश्च
प्रोताश्च ? प्रजापतिलोकेषु गार्गीति बृह. ३।६।१
कस्मिन्नु खल्वाकाश ओतश्च प्रोतश्च ? बृह. ३।८।७

कस्मिन्नु खल्वादित्यलोका ओताश्च प्रोताश्च ? चन्द्रलोकेषु गार्गीति　बृह. ३।६।१
कस्मिन्नु खल्वाप ओताश्च प्रोताश्च ? वायौ गार्गीति　बृह. ३।६।१
कस्मिन्नु त्वं चात्मा च प्रतिष्ठितौ स्थ इति प्राण इति　बृह. ३।९।२६
कस्मिन्नु दक्षिणा प्रतिष्ठितेति श्रद्धायामिति　बृह. ३।९।२१
कस्मिन्नु दीक्षा प्रतिष्ठिता ? सत्य इति　बृह. ३।९।२३
कस्मिन्नु भगवो विज्ञाते सर्वमिदं विज्ञातं भवति ?　मुण्ड. १।१।३
कस्मिन्नु प्राणः प्रतिष्ठितः? अपानइति　बृह ३।१।२६
कस्मिन्नु यज्ञः प्रतिष्ठितः ? दक्षिणायामिति　बृह. ३।९।२१
कस्मिन्नु रूपाणि प्रतिष्ठितानि ? हृदय इति　बृह. ३।९।२०
कस्मिन्नु रेतः प्रतिष्ठितं ? हृदय इति　बृह. ३।९।२२
कस्मिन्नु वाक्प्रतिष्ठितेति, हृदय इति　बृह. ३।९।२४
कस्मिन्नु व्यानः प्रतिष्ठित इति, उदान इति　बृह. ३।९।२६
कस्मिन्नु श्रद्धा प्रतिष्ठितेति हृदय इति　बृह. ३।९।२१
कस्मिन्नु सत्यं प्रतिष्ठितम् ? हृदयइति　बृह. ३।९।२३
कस्मिंन्नु सर्वे प्रतिष्ठिता भवन्ति ?　प्रश्नो. ४।१
कस्मिन्नु हृदयं प्रतिष्ठितमिति　बृह. ३।९।२४
कस्मिन्नूदानः प्रतिष्ठित इति, समान इति　बृह. ३।९।२६
कस्मिन्प्रजापतिलोका ओताश्च प्रोताश्चेति, ब्रह्मलोकेष्विति　सुबालो. १०।१
कस्मिन्ब्रह्मलोका ओताश्च प्रोताश्चेति सर्वलोका आत्मनि ब्रह्मणि मणय इवोताश्च प्रोताश्च　सुबालो. १०।१
कस्मिन् भुवर्लोका ओताश्च प्रोताश्चेति सुवर्लोकेष्विति　सुबालो. १०।१
कस्मिन्भूर्लोका ओताश्च प्रोताश्चेति भुवर्लोकेष्विति　सुबालो. १०।१
कस्मिन्महर्लोका ओताश्च प्रोताश्चेति जनोलोकेष्विति　सुबालो. १०।१
कस्मिन् रसातललोका ओताश्च प्रोताश्च ? भूर्लोकेष्विति　सुबालो. १०।१
कस्मिन्नपानः प्रतिष्ठित इति, व्यान इति　बृह. ३।९।२६
कस्मिन्वापः प्रतिष्ठिता इति, रेतसीति　बृह. ३।९।२२
कस्मिन्वा प्रतिष्ठिते प्रतिष्ठास्यामि　प्रश्नो. ६।३
कस्मिन्सत्यलोका ओताश्चप्रोताश्चेति प्रजापतिलोकेष्विति　सुबालो. १०।१
कस्मिन् सुवर्लोका ओताश्च प्रोताश्चेति, महर्लोकेष्विति　सुबालो. १०।१
कस्मिन् स्थितं तु किं नाम कथं वा धार्यते ?　रु. जा. १
कस्मिंस्तदोतं प्रोतं चेति　बृह. ३।८।३,६
कस्मिंस्तपोलोका ओताश्च प्रोताश्चेति सत्यलोकेष्विति　सुबालो. १०।१
कस्मैदेवायहविषाविधेम [श्वेता.४।१३ +नृ. पू. २।१२ [ऋ.अ.८।६।३=मं.१०।१२१।१-९ अथर्व.४।२।१।७
कस्यापि वन्दनमकृत्वा न नमस्कारो न स्वाहाकारो यादृच्छिको भवेत्　ना. प. ३।८७
कस्यैष खल्वीदृशो महिमाऽतीन्द्रियभूतस्य येनैतद्विधमिदं. प्रतिष्ठापितम्　मैत्रा. २।३
कस्यैष महिमा बभूव　ब्रह्मो. १
कस्स्विदेषां ब्राह्मणानामनूचानतमइति　बृह. ३।१।१
कं कं कस्मै पदे पदे पातः ..पादिते स्वाहा　पारमा. ९।१०
कं कं जनित्रे समतेजसं ते स्वाहा　पारमा. ९।५
कं घातयति हन्ति कम्　भ. गी. २।२१
कं ते काममागायानीत्येष ह्येव..　छान्दो. १।७।९
कंसवंशविनाशाय केशिचाणूरघातिने..पार्थसारथये नमः　गो. पू. ४।८
कंसे पृषदाज्यं सन्नीय..जुहोति　बृ. उ. ६।४।२४
कं ह वा अस्मै भवति य एवमेतदर्कस्यार्कत्वं वेद　बृह. १।२।१
कः कोशमङ्के कुशलं विधाय... चराय स्वाहा　पारमा. १।९
कः परमात्मा को ब्रह्मा को विष्णुः?　निरा. उ. ४
कः परमो देवः का वा तच्छक्तयः ?　राधिको. १

कः परिव्रजनाधिकारी कीदृशं परिव्राजकलक्षणम् ? प.हं.प. १
कः पुनरेषां (देवानां) वरिष्ठः ? प्रश्नो. २।१
कः पुष्करः किमयो वा ? मैत्रा. ६।२
कः स जगार भुवनस्य गोपाः, तं कापेय नाभिपश्यन्ति छान्दो.४।३।६
कः सविता, का सावित्री ? पुरुष एव सविता, स्त्री सावित्री .. ते द्वे योनिस्तदेकं मिथुनम् साविञ्यु. ९
कः सविता, का सावित्री ? अग्निरेव सविता, पृथिवी सावित्री, स यत्राग्निस्तत्पृथिवी..तदेकंमिथुनम् साविञ्यु.१
कः सविता, का सावित्री? वरुण एव सविताऽऽपः सावित्री, स यत्र वरुणः..तदेकं मिथुनम् साविञ्यु.२
कः सोऽभिध्येयोऽयं यः प्राणात्मकः (पाठान्तरम्) मैत्रा.१।१
कः सोऽभिध्येयोऽयं यः प्राणाख्यः, तस्योपव्याख्यानम् मैत्रा. १।१
कः स्वर्गः को नरकः को बन्धः ? निरालं. ४
काको वा हंसवद्गच्छेज्जगद्भवतुनिश्चलं ते.बिं.६।९२
काङ्क्षन्तः कर्मणां सिद्धिं भ.गी. ४।१२
काठिन्यदृढकौपीनं, चीराजिनवासः निर्वाणो. ७
काठिन्यंपृथिवीह्येकापानीयंतद्द्रवाकृति वराहो. ५।१
काठिन्याढ्यं ससागरं सपर्वतं... मण्डलमेवोक्तं लकारेण त्रि.ता. १।८
काण्डात्काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि [महाना. ४।२+ वनदु. १५६
[वा.सं.१३।२०+तै.सं.४।२।९।+ तै.आ.१०।१७
कातकं फलमासाद्य यथा वारि प्रसीदति । तथा विज्ञानवशतः स्वभावः सम्प्रसीदति महो. ५।६६
कात्यायनाय विद्महे कन्याकुमारि धीमहि । तन्नो दुर्गिः प्रचोदयात् महाना.३।१२
[+वनदु.१२४,१४०
कादिविद्येति वा हादिविद्येति वा सादिविद्येति वा रहस्यम् बह्वृचो. २
कादिहादिमतोक्तेन भावना प्रतिपादिता भावनो. १०

कान्तिविशेषावर्तैरभितोऽनिशं प्रज्वलंतं..आदिनारायणं ध्यायेत् त्रि.म.ना.७।११
(तत्र) का पृथिवी का आपः किं तेजः को वायुः किमाकाशं गर्भो. १
कापिलेन दध्नाऽभिषिच्य रुद्रं, सुरापानात्पूतो भवति भ.जा. २।११
कापिलेनपयसाऽभिषिच्यरुद्रसूक्तेन मामेव लिङ्गरूपिणं..पूतो भवति भस्मजा.२।११
कापिलेनाज्येनाभिषिच्य स्वर्णस्तेयात्पूतो भवति भस्मजा.२।११
का प्रीतिः स्याज्जनार्दन भ. गी. १।३६
का प्रकृतिः..का जातिः निरा. ४
काम आज्यं मन्युः पशुस्तपोऽग्निः (ब्रह्मयज्ञस्य) [त्रिष्टुप.४+ महाना.१८।१
काम एव यस्यायतनं हृदयं लोको मनो ज्योतिः.. बृह. ३।९।११
काम एवेदं तत्तद्विति ककारो गृह्यते त्रि.ता. १।५
काम एष क्रोध एषः भ.गी. ३।३७
कामकलेति विज्ञायते (देवी) बह्वृचो. १
कामक्रोधपरायणः भ.गी.१६।१२
कामक्रोधभयं.. जन्ममृत्युश्च कार्पण्यं.. एभिर्दोषैर्विनिर्मुक्तः स जीवः शिव उच्यते यो.शि. १।११
कामक्रोधलोभमोहदम्भदर्पासूया-ममत्वाहङ्कारादींस्तितीर्ये.. वृक्ष इव तिष्ठासेत् शाट्याय. १८
काम-क्रोध-लोभ-मोह-भयान्या-काशस्य (अंशाः) शारीरको. ३
काम-क्रोध-लोभ-मोह-मद-मात्सर्य-पुण्य-पापमया ब्राह्म्याद्यष्टशक्तयः भावनो. ३
काम-क्रोध-लोभ-मोह-मद-मात्सर्य-मित्यरिषड्वर्गः मुद्गलो. ४।२
काम-क्रोध-लोभ-मोह-मद-मात्सर्यादिकं दग्ध्वा.. ना.प. ७।२
काम-क्रोध-लोभ...मृत्यु-रोग-शो-काद्यैरभिहतेऽस्मिञ्छरीरे किं कामभोगाद्यैः मैत्रा. १।४
कामक्रोधवियुक्तानां भ. गी. ५।२६

कामेन मे (मा) काम आगात् चित्यु.१५।२+
[तै.आ. ३।१५।२+ अथर्व.३।५२।४
कामेनाजनयन् पुनः[तै.आ.३।१५।२+ चित्यु. १५।२
कामेन विषयाकाङ्क्षी विषयात्काम-
मोहितः। द्वावेव सन्त्यजेन्नित्यं
निरञ्जनमुपाश्रयेत् योगकुं. ३।३
कामेश्वरी वज्रेश्वरी भगमालि-
न्योऽन्तस्त्रिकोणाग्रगा देवताः भावनो. ६
कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञानाः भ.गी. ७।२०
कामोऽकार्षीत्कामःकरोति, नाहंकरोमि महाना. १४।३
कामोऽकार्षीन्नमो नमः महाना. १४।३
कामो दाता, कामः प्रतिगृहीता चित्यु.१०।१,२
कामोपभोगपरमाः भ.गी. १६।११
कामोभूत्वा प्रजानामन्तरा स्थितः
सर्वांल्लोकान्छादयन्..स्वाहा पारमा.३।२
कामो योनिः कामकला वज्रपाणिर्गुहा
हसा।मातरिश्वाभ्रमिन्द्रः[देव्यु.११ +त्रिपुरो.८
कामोऽस्मि भरतर्षभ भ.गी. ७।११
काम्यानां कर्मणां न्यासं भ.गी. १८।२
कायदण्डे स्वभोजनम् १सं.सो. २।९७
कायक्लेशभयात्त्यजेत् भ.गी. १८।८
कायस्थो दृश्यते लोको तत्त्वचर्यां
समाचरेत् अमन. १।८१
कायरूपे चित्तसंयमादन्यादृश्यरूपम् शांडि.१।७।५२
कायशोषणमात्रेणकातत्रब्रह्मविवेकिनाम् वराहो.२।४०
कायाकाशसंयमादाकाशगमनम् शांडि.१।७।५२
कायिकादिविमुक्तोऽस्मि..केवलोस्म्यहं मैत्रे. ३।२२
कायेन मनसा बुद्ध्या भ.गी. ५।११
कायेनमनसावाचा शत्रुभिःपरिपीडिते।
वृत्तिक्षोभनिवृत्तिर्या क्षमा सा.. जा.द. १।१७
कायेन मनसा वाचा स्त्रीणां परि-
विवर्जनम्। ऋतौ भार्यां तदा तस्य
ब्रह्मचर्यं तदुच्यते जा.द. १।१३
कायेन मनसा वाचा हिंसाऽहिंसा
न चान्यथा जा. द. १।७
कारणं गुणसङ्गोऽस्य भ. गी.१३।२२
कारणं तु ध्येयः सर्वैश्वर्यसम्पन्नः
सर्वेश्वरः शम्भुः अ. शिखो. ३
कारणं कस्य वै कार्यं कारणंतस्य
जायते [ते. बिं. १।४८ +अ. शां. ११
कारणात्मकं सर्वं कार्यात्मकं
सकलं नारायणः त्रि.म.ना.२।८
कारणादिविहीनात्मा तुरीयादि-
विवर्जितः ते. बिं. ४।७३
कारणाद्यद्यनन्यत्वमतःकार्यमजंयदि,
जायमानाद्धि वै कार्यात्कारणं
ते कथं ध्रुवम् अ. शां. १२
कारणाद्भिन्नजगतः सत्यत्वं पञ्चमो
भ्रमः । पञ्चभ्रमनिवृत्तिश्च
सदा स्फुरति चेतसि अ. पू. १।१५
कारणानि निबोध मे भ. गी.१८।१३
कारणाभिन्नरूपेण कार्यं कारणमेव
हि। तद्रूपेण सदा सत्यं भेदेनो-
क्तिर्मृषा खलु पञ्चब्र. ३१
कारणाव्याकृतप्राज्ञश्च मकारः यो. चू. ७५
कारणेन विना कार्यं न कदाचन
विद्यते। अहङ्कारं विना तद्वद्देहे
दुःखं कथं भवेत् यो. शि. १।२७
कारणेन विना कार्यं नोदेति (तथैव)
भक्त्या विना ब्रह्मज्ञानं
कदापि न जायते त्रि.म.ना. ८।४
कारणोपाधिरीश्वरः। कार्यकारणतां
हित्वा पूर्णबोधोऽवशिष्यते शु. र. ३।१२
कारागारविनिर्मुक्तचोरवद्दूरतो वसेत् मैत्रे. २।११
कारागृहविनिर्मुक्तचोरवत्पुत्राप्तबंधु-
भवस्थलं विहाय दूरतो वसेत् ना. प. ५।१
कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः भ. गी. २।७
कार्यकारण-(करण-) कर्तृत्वे हेतुः
प्रकृतिरुच्यते [भ.गी. १३।२१ +भवसं. २।८
कार्यकारणकर्मनिर्मुक्तं निर्वचन-
मनौपम्यं निरुपाख्यं किं
तदङ्गवाच्यम् मैत्रा. ६।७
कार्यकारणताभावाद्यतोऽचिन्त्याः
सदैव ते। द्रव्यंद्रव्यस्य हेतुः स्यात्.. अ.शां. ५२
कार्यकारणतांहित्वापूर्णबोधोऽवशिष्यते शु.र. ३।१२
कार्यकारणबद्धौ ताविष्येते विश्वतैजसौ आगम. ११
कार्यकारणवर्जितः (आत्मा) ते.बिं. ५।१

कालात्मनि मनो लीनं त्रिकालज्ञान-
कारणम्..परकायप्रवेशनम् यो. शि. ५।४८
कालात्स्रवन्ति भूतानि....
कालो मूर्तिरमूर्तिमान् मैत्रा. ६।१४
कालाद्व्यापकउच्यते,व्यापकोहि..रुद्रः अ.शिरः.२।१५
कालानलसमद्योतमानंमहाकाशंभवति अद्वयता. ४
कालानलसमं द्योतमानं मं. ब्रा. १।३
कालान्तरोपभोगार्थं सञ्चयः..(यतेः) १सं.सो.२।८२
कालाम्भोधरकान्तिकान्तमनिशं
वीरासनाध्यासिनम् रामर. २।२४
कालिकायै विद्महे श्मशानवासिन्यै
धीमहि। तन्नोऽघोरः(रा)प्रचोदयात् वनदु. १४५
कालिन्दीजलकल्लोलसङ्गिमारुत-
सेवितम्। चिन्तयंश्चेतसा कृष्णं
मुक्तो भवति संसृतेः गो. पू. १।७
कालीकरालीचमनोजवा(अग्निजिह्वाः) मुण्ड. १।२।४
कालेनात्मनि विन्दति भ. गी. ४।३८
कालेनाल्पेन विलयी देहो नाहं.. १सं. सो.२।१४
कालो नास्ति जगन्नास्ति माया-
प्रकृतिरेव न, अहमेवहरिःसाक्षात् ते. बिं. ६।६३
कालो ब्रह्म कला ब्रह्म सुखं ब्रह्म.. ते. बिं. ६।२५
कालोऽयं सर्वसंहारी तेनाक्रांतं
जगत्त्रयम् महो. ३।३८
कालोऽस्मि लोकक्षयकृत् प्रवृद्धः भ.गी. ११।३२
काशिराजश्च वीर्यवान् भ. गी. १।५
काश्यश्च परमेष्वासः भ. गी. १।१७
कावूरू पादाउच्येते[चित्यु. १२।५+ ऋ.अ. ८।४।१९
[=मं. १०।९०।११ +वा.सं.३१।१०
का वै वरणा का च नाशीति,सर्वा-
निन्द्रियदोषान्वारयतीति तेन
वरणा..सर्वानिन्द्रियकृतान्पा-
पान्नाशयतीति नाशी भवतीति जाबालो. २
काश्यां तु ब्रह्मनालेऽस्मिन् मृतो
मत्तारमाप्नुयात्। पुनरावृत्ति-
रहितां मुक्तिं प्राप्नोति मानवः मुक्तिको. १।१९
काश्यां स्थानानि चत्वारि भस्मजा. २।८
काषायग्रहणं कपालधरणं केशावली
लुञ्चनं.. सर्वं चोदरपोषणाय.. अमन. १।६
काषायवस्त्रं परिधानाय देहे..प्रायो
जराद्यक्षयितुं प्रवृत्ताः अवसं. १।५५
काषायवासाः कक्षोपस्थलो-
मानि वर्जयेत् १संन्यासो.१०
काषायवासाः सततं ध्यानयोग-
परायणः।.. वसेदेवालयेऽपि वा ना. प. ५।४९
काषायवासान्कक्षोपस्थलोमानि
वर्जयेत् (?) कठश्रु. २२
काष्ठदण्डो धृतो येन सर्वाशी ज्ञान-
वर्जितः..स पापी यतिवृत्तिहा प. हं. ६
काष्ठदण्डो धृतो येन...
स याति नरकान्घोरान्.. ना. प. ५।१४
काष्ठपाषाणजोवह्निःपार्थिवोमहणीगतः यो.शि. ५।३१
काष्ठपाषाणयोर्वह्निर्हविर्मध्ये
प्रवर्तते यो.शि. ५।३१
काष्ठवज्जायते देह उन्मन्यावस्थया
ध्रुवम्, न जानाति स शीतोष्णं.. ना.बिं. ५२
काष्ठवत् पश्य वै देहं प्रशान्तस्येति
लक्षणम् अ. ना. १५
काष्ठान्यपि हि जीर्यन्ते दरिद्राणां... अवसं. १।१३
काष्ठा भिन्दन् गोभिरितोमुतश्च बा. मं. १५
का सत्यता याज्ञवल्क्य,
चक्षुरेव सम्राट् बृह. ४।१।४
का साम्नो गतिरिति स्वरइतिहोवाच छान्दो. १।८।४
काऽसि त्वं महादेवि देव्यु. १
कास्थितितायाज्ञवल्क्यहृदयमेवसम्राट् बृह. ४।१।७
कास्वित् सा देवता, यस्या
मृत्युरन्नमित्यग्निर्वै मृत्युः बृह. ३।२।१
कां गतिं कृष्ण गच्छति भ.गी. ६।३७
कांस्यघण्टानिनादस्तु यथा लीयति
शांतये। ओङ्कारस्तुतथा योज्यः
शान्तये सर्वमिच्छता ब्र. वि. १२
कांस्यघण्टानिनादःस्याद्यदालिप्यति
शांतये। ओङ्कारस्तु तथा
योज्यः श्रुतये सर्वमिच्छति १ प्रणवो. १२
कां सोऽस्मितांहिरण्यप्राकारामार्द्रां
ज्वलन्तीं.. [ऋ.खि. ८७।१०+ श्री. सू. ४
किञ्चित्कचित्कदाचिच्चआत्मानंनस्पृश-
त्यसौ। तूष्णीमेव स्थितस्तूष्णीं.. ते.बिं. ३।४०
किञ्चित्क्षुभितरूपासा चिच्छक्तिश्चि-
न्मयार्णवे। तन्मयैव स्फुरत्यच्छा महो. १८५।१

किञ्चिद्वेद्रोचतेतुभ्यं तद्बद्धोऽसि भवस्थितौ । नकिञ्चिद्रोचते चेत्तेतन्मुक्तोऽसि भवस्थितौ — अ.पू. ५।१०५

(?) किञ्चिद्लक्षणया कृतं भवति — वृ.उ.१।५।१७

किञ्चिदस्ति धनञ्जय — भ.गी.७।७

किञ्चिदुन्मामितमुखोदंतैर्दन्तान्नचालयेत् — योगो. २१

किञ्चिद्वेदं न तस्यास्ति (आत्मनः) ..अहं त्वं तदिदं सोऽयं कालात्मा कालहीनकः — ते. बिं. ४।४२

किमकुर्वत सञ्जय — भ.गी. १।१

(अथानु) किमनुशिष्टोऽवोचथा यो हीमानि न विद्यात्कथं सोऽनुशिष्टो ब्रुवीत — छांदो.५।३।४

किमन्यत्कामहेतुकम् — भ. गी. १६।८

किमन्यत्सदन्यद्ब्रूयामेति त्रिष्टुप्... — १ऐत. ३।५।१

किमप्यव्यपदेशात्मा पूर्णात् पूर्णतराकृतिः । न सन्नासन्न सदसत्.. — महो. २।६७

किमर्थमचारीःपशूनिच्छन्नण्वन्तानिति — बृह. ४।१।१

किमर्था वयमध्येष्यामहे, किमर्था वयं यक्ष्यामहे — ३ऐत. २।६।३

किमसौ (मुक्तोऽहमिति) मननादेव मुक्तो भवति तत्क्षणात् — यो. शि. १।५४

किमस्य यज्ञोपवीतं काऽस्य (संन्यासिनः) शिखा कथं वाऽस्योपस्पर्शनम् [१सं.सो. १।३+ — कठश्रु. ८

किमस्यापागादिति-तक्षेवेति-तथैवैतत्... — छाग. ६।२

किमहं पापमकरवमिति, स य एवं विद्वानेते आत्मानं स्पृणुते — तैत्ति. २।९

किमाचारः कथं चैतान् — भ. गी. १४।२१

किमासीत व्रजेत किम् — भ. गी. २।५४

किमिच्छन्कस्य कामाय शरीरमनुसञ्ज्वरेत् (आत्मज्ञः) — शाट्याय. २२

किमु तद्ब्रह्माऽवेद्यस्मात्तत्सर्वमभवत् — बृह. १।४।९

(अथ) किमेतैर्वाऽन्यानां शोषणं महार्णवानां शिखरिणां प्रपतनं ध्रुवस्य प्रचलनं...सोऽहमित्येतद्विधेऽस्मिन् संसारे किं कामभोगैः ? यैरेवाश्रितस्यासकृदिहावर्तनं दृश्यते — मैत्रा. १।८

(अथ) किमेतैर्मान्यानां शोषणं महार्णवानां..निमज्जनं पृथिव्याः, स्थानादपसरणं सुराणां.. इत्येतस्मिन्.. संसारे किं कामोपभोगैः ? — मैत्रे. १।२

(अथ) किमेतैर्वा परेऽन्ये गन्धर्वासुर.. महादीनां निरोधनं पश्यामः — मैत्रा. १।७

(अथ) किमेतैर्वा परेऽन्ये महाधनुर्धराश्चक्रवर्तिनः केचित्सुद्युम्नभरतप्रभृतयो..महतींश्रियंत्यक्त्वाऽस्माल्लोकादमुं लोकं प्रयाताः — मैत्रा. १।६

किमेष दृष्टोऽदृष्टो वेति दृष्टो विदिताविदितात्पर इति होचुः — नृसिंहो. ९।१०

कियत्स्वतीतेष्वनेहस्सु तपसि स्थिते ब्रह्माणि पुरो भूत्वा.. — गणेशो. ३।८

किरीटिनं गदिनं चक्रहस्तं — भ.गी. ११।४६

किरीटिनं गदिनं चक्रिणं च — भ. गी. ११।१७

किल्बिषं हि क्षयं नीत्वा — अ.ना. ९

किंकरोमिक्वगच्छामि किंगृह्णामित्यजामिकिम् । यन्मया पूरितंविश्वं.. — वराहो. २।३५

किं कर्म किमकर्म — निरालं. ४

किं कर्म किमकर्मेति — भ.गी. ४।१६

किं कर्म पुरुषोत्तम — भ.गी. ८।१

किं कारणं ब्रह्म,कुतः स्म जाता जीवाम केन क्व च सम्प्रतिष्ठाः.. — श्वेताश्व. १।१

किं कुलं वृत्तिहीनस्य करिष्यति... — भवसं. २।६५

किं क्षत्रिया लोकमपालयन्तः, स्वधर्महीनास्तु...वैश्याः — भवसं. २।६४

किं ग्राह्यं किमग्राह्यम् — निरालं. ४

किं ज्ञातेन तवार्जुन — भ.गी.१०।४२

किं तद्ब्रह्म किमध्यात्मं — भ.गी.८।१

किं तत्परमरहस्यशिवतत्त्वज्ञानं — द.मू. १

किं तत्पादचतुष्टयात्मकं ब्रह्म भवति ? अविद्यापादः सुविद्यापादश्चानन्दपादस्तुरीयपादश्चेति — त्रि.म.ना. १।४

किं तदत्र विद्यते यदन्वेष्टव्यम् — छांदो. ८।१।२

किं तद्ध्यानं को वा ध्याता कश्चध्येयः — अ.शिखो. १

किं तद्यत्सत्यमिति, यदन्यद्देवेभ्यश्च प्राणेभ्यश्च तत्सत् — कौ.उ. १।६

किं ताभिर्यजतीतियत्किञ्चेदंप्राणभृत् — बृह. ३।१।७

किं ताभिर्यजतीति,याहुता उज्ज्वलन्ति देवलोकमेव ताभिर्जयति बृह. ३।१।८
किं तेन, न किञ्चनेति होचुः नृसिंहो. ९।१०
किं त्वमेतच्छिरः किन्तु उरस्तव... भवसं. २।२८
किं दुर्लभं शिवभक्तस्य लोके.. सि. शि. २५
किं दुष्करं तपो मर्त्यानां कात्याय. १
किंदेवतोऽस्यां प्रतीच्यां दिश्यसीति वरुणदेवत इति बृह. ३।९।२२
किंदेवतोऽस्यां दक्षिणायां दिश्यसीति यमदेवत इति बृह. ३।९।२१
किंदेवतोऽस्यां प्राच्यां दिश्यसीति आदित्यदेवत इति बृह. ३।९।२०
किंदेवतोऽस्यामुदीच्यां दिश्यसीति, सोमदेवत इति बृह. ३।९।२३
किंदेवतोऽस्यां ध्रुवायां दिश्यसीति अग्निदेवत इति बृह. ३।९।२४
किंदैवतमित्यृचामग्निर्दैवतं तदेव ज्योतिः २ प्रणवो. २१
किं नामेदं बत सुखं...जायते मृतये लोको म्रियते भवसं. १।२५
किं नो राज्येन गोविन्द भ.गी. १।३२
किं पुनर्ब्राह्मणाः पुण्याः भ.गी. ९।३३
किं प्रजया करिष्यामो येषां नोऽयमात्माऽयं लोकः बृह. ४।४।२२
किं ब्राह्मणा ये सुकृतं त्यजन्ति भवसं. २।६४
किं भगवन्तः परमं वदंति महाना. १७।१
किं भोगैर्जीवितेन वा भ.गी. १।३२
किंमंत्रैर्बहुभिर्विनश्वरफलैरायाससाध्यै- र्वृथा.. संसारदुःखावहैः । एकः सन्नपि सर्वमंत्रफलदो.. श्रीरामः शरणंममेतिसततंमंत्रोऽयमष्टाक्षरः रामर. २।३८
किं वर्णये त्वाम्, सहस्रकृत्वो नमस्ते लक्ष्म्यु. ७
किंवा पुनरिमे भगवइति,तत्पुरुषइति पञ्चब्र. १
किं सदितीदमिदं नेत्यनुभूतिः नृसिंहो. ७।३
किं सीमिच्छरणं मन्यमानः बा.मं. ७
किंस्विदेवैवंविदुषे साधु कुर्यां किमेवास्मै.. बृह. ५।१२।१
कीटभ्रमरन्यायेन मुक्तो भवति ना.प. ५।५२
कीर्तनात्सर्वदेवस्य सर्वपापैःप्रमुच्यते रुद्रह. १७
कीर्तिः पृष्ठं गिरेरिव उप.शांतिः
कीर्तिः श्रीर्वाक् च नारीणां भ.गी. १०।३४
कीलवो दूषिका लाला स्वेद-दुर्गन्ध-ताऽऽनने । एतानि सर्वथा तस्य न जायंते ततः परम् १यो.त. ५७
कुक्कुटाण्डवदाकारं (कन्दस्थानं).. तन्मध्ये नाभिरित्युक्तं.. जा. द. ४।४
कुक्कुटाण्डाकारं महदादिसमष्ट्याकार-मण्डं (ब्रह्माण्डं) तपनीयमयं.. त्रि.म.ना.६।२
कुक्कुटासनबन्धस्थो दोर्भ्यां सम्बध्य कन्धरं..एतदुत्तानकूर्मकं (आसनं) त्रि.ब्रा. २।४२
कुंकुमादिसहितं विष्णुचन्दनं ममाङ्गे प्रतिदिनमालिप्तं वासुदे. २
कुंकुमारुणसर्वाङ्गं कुन्देन्दुधवलाननं (गरुडं ध्यायेत्) गारुडो. ८
कुक्षिमेढ्रनपार्श्वे च स्फुरणानुप-लम्भने । मासावधिर्जीवितस्य तदर्धस्य तु दर्शने त्रि. ब्रा.२।१४२
कुक्षौ तिष्ठति यस्यान्नं वेदाभ्यासेन जीर्यते ।.. कुलं तारयते तेषां.. इतिहा. ४८
कुक्षौ(चित्तस्य) संयमाद्ध्रुवलोकज्ञानं शांडि. १।७।५२
कुचैलोऽसहाय एकाकी समाधिस्थ आत्मकाम आप्तकामो..हस्तिनि सिंहे.. मृत्यो रूपाणि विदित्वा न बिभेति कुतश्चनेति सुबालो. १३।१
कुटीचक-बहूदकयोर्देवार्चनम् ना. प. ७।९
कुटीचक-बहूदकयोर्मन्त्रजपाधिकारः ना. प. ७।९
कुटीचक-बहूदकयोर्मानुषप्रणवः ना. प. ७।१०
कुटीचक-बहूदकयोः श्रवणम् ना. प. ७।११
कुटीचक-बहूदक- हंसानां ब्रह्मचर्या-श्रमादि तुरीयाश्रमादिवत् ना. प. ५।५
कुटीचक-बहूदक-हंसानां नान्यस्यो-पदेशाधिकारः ना. प. ७।९
कुटीचकस्यैकत्र भिक्षा ना. प. ५।७
कुटीचकस्यैकान्नं, माधुकरं बहूदकस्य, हंस-परमहंसयोः करपात्रं, तुरीया-तीतस्य गोमुखं, अवधूतस्या-जगरवृत्तिः ना. प. ७।७

कुटीचकः शिखायज्ञोपवीती दण्ड-
कमण्डलुधरः कौपीनशाटीकन्था-
धरः.. त्रिदण्डः.. [ना. प. ५।६+ १सं.सो.२।१३
कुटीचका नाम गौतम-भरद्वाज..प्रभृतयोऽष्टौ ग्रामाश्चरन्तो योगमार्गे
मोक्षमेव प्रार्थयंते भिक्षुको. १
कुटीचको बहूदकत्वं प्राप्य बहूदको
हंसत्वमवलम्ब्य हंसः परमहंसो
भूत्वा..देहमात्रावशिष्टो..एकाकी
सञ्चरन्..देहत्यागं करोति यः,
सोऽवधूतः स कृतकृत्यः.. तुरीया. ३
कुटीचको बहूदकश्चापि हंसः परम-
हंस इव वृत्त्या च भिन्नाः शाटयाय. ११
कुटीचको वा बहूदको वा...
जातरूपधरश्चरेत् प.हं.प. ८
कुटीचको बहूदको हंसः परमहंसः
तुरीयातीतोऽवधूतश्चेति
(षड्विधः संन्यासः) ना. प. ५।९
(अथ...)कुटीचको बहूदको हंसः
परमहंस इत्येते परिव्राजकाश्चतुर्विधा भवन्ति शाट्याय. ११
कुटीचरा बहूदका हंसाः परमहंसा-
श्चेति (चतुर्विधाःपरिव्राजकाः) आश्रमो. ४
(तत्र)कुटीचराः स्वपुत्रगृहेषु भिक्षा-
चर्यंचरन्तआत्मानंप्रार्थयन्ते आश्रमो. ४
कुटीचरो ब्रह्मचारी कुटुम्बं विसृजेत् आरुणि २.
कुटुम्बं पुत्रदारांश्च वेदाङ्गानि.. यज्ञं
यज्ञोपवीतंचत्यक्त्वागूढश्चरेद्यतिः ना.प. ३।३२
कुटुम्बी शुचौ देशे स्वाध्याय...(मा.) छां.उ.१।१५।१
कुटुंम्बे शुचौदेशेस्वाध्यायमधीयानः छां.उ.८।१५।१
कुणपमिव सुनारीं त्यक्तुकामो विरागी।
विषमिव विषयादीन्मन्यमानो
दुरन्ताञ्जगतिपरमहंसोवासुदेवः.. वराहो. २।३७
कुण्डलिनी ज्ञानशक्तिर्गृहम् भावनो. २
कुण्डलिनीबन्धः परापवादमुक्तः.. निर्वाणो. २
कुण्डलिन्या अधश्चोर्ध्वं वारुणी
सर्वगामिनी शांडि. १।४।६
कुण्डलिन्या तया योगी मोक्षद्वारं
विभेदयेत् ध्या.बिं. ६८

कुण्डलिन्या समुद्भूता गायत्री
प्राणधारिणी यो.चू. ३५
कुण्डल्या पिहितं शश्वद्ब्रह्मरन्ध्रस्य
मध्यमम्। एवमेतासु नाडीषु
धरन्ति दश वायवः वराहो. ५।३०
कुण्डल्येव भवेच्छक्तिस्तांतुसञ्चाल-
येद्बुधः। स्वस्थानादाभ्रुवोर्मध्यं
शक्तिचालनमुच्यते योगकुं. १।७
कुण्डिकांचमसंशिक्यं..अतोऽतिरिक्तं
यत्किञ्चित् (यज्ञोपवीतं वेदांश्च कठरु.४)
सर्वंतद्वर्जयेद्यतिः [कुंडिको.९,१० +कठश्रु. २५
कुत उ एतावत्प्रतिगृह्णीयात् बृह. ५।१४।६
कुतस्तुखलु सोम्यैवंस्यादिति होवाच-
कथमसतः सज्जायेतेति छांदो. ६।२।२
कुतस्त्वा कश्मलमिदं भ.गी. २।२
कुतोजातेयमितितेद्विजमास्तुविचारणा महो. ५।११४
कुतोऽन्यः कुरुसत्तम भ.गी. २।२
कुत्सितानन्तजन्माभ्यस्त..कर्मवास-
नाजाल...देहात्मविवेको न... त्रि.म. ना. ५।३
कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः भ. गी. १।१६
कुबेरं ते मुखं रौद्रं...ज्वरं मृत्युभयं
घोरं द्विषं नाशय.. वनदु. ९७
कुमार एको विशिखः सुधन्वा एकाक्ष. ३
कुमारमेवाप्येति यः कुमारमेवास्तमेति सुबालो. ९।९
कुमारः पितरमात्मानुभवमनु-
ब्रूहीति पप्रच्छ ते.बिं. ३।१
कुमारानु त्वाशिषदिपतेत्यनु हि
भगव इति छान्दो. ५।३।१
कुमारामेवाप्येति यः कुमारा-
मेवास्तमेति सुबालो. ९।६
कुम्भकं पूर्ववत्कृत्वा रेचये-
दिडयाऽनिलम् योगकुं. १।३७
कुम्भकान्ते रेचकादौ कर्तव्यस्तूड्डि-
यानकः..प्राणस्तूड्डीयते यतः।
तस्मादुड्डीयणाख्योऽयं... योगकुं.१।४७
[यो. शि. १।१०६+
कुम्भकेनसमारोप्यकुम्भकेनैवपूरयेत् वराहो. ५।५९
कुम्भकेन हृदि स्थाने चिन्तयेत्
कमलासनम्। ब्रह्माणं..चतुर्वक्त्रं.. ध्या. बिं. ३१

कुम्भेनकुम्भयेत्कुम्भं तदन्तस्थःपरं..	वराहो.५।६०
कुम्भे विनश्यति चिरं समवस्थिते वा कुम्भाम्बरस्य न हि कोऽपि विशेषलेशः	वराहो. २।६६
कुरु कर्मैव तस्मात्त्वं	भ.गी. ४।१५
कुलकुला वलिदेवता माता	भावनो.२
कुरुक्षेत्र एवोपसमेत्य ये वालिशास्तानुपार्श्वे	छागले.३।१
कुरुक्षेत्रं कुचस्थाने प्रयागंहृत्सरोरुहे	जा.द. ४।४९
कुरुक्षेत्रं देवानां देवयजनं सर्वेषां भूतानां ब्रह्मसदनम्	जाबा. १
कुरु हर संहारं जगद्धरणाद्धरो भव	ग.शो. ३।१३
कुरुवृद्धः पितामहः	भ.गी. १।१२
कुर्याच्छ्राद्धं महालयम्, शून्याप्रेतपुरी तत्र यावद्वृश्चिकदर्शनात्	इथिहा. ९१
कुर्यादनन्तरं भक्तीं कुण्डलीमाशु बोधयेत् । भिद्यन्ते ग्रन्थयो वंशे..	यो.शि.१।११३
कुर्यादायतने शोभांगुरुस्थानेषुसर्वतः	शिवो. ७।७५
कुर्याद्विद्वांस्तथाऽसक्तः	भ.गी. ३।२५
कुर्यान्नासाग्रदृष्टिं च हस्तौ पादौ च संयतौ । मनः सर्वत्र संयम्य.... ध्यायेत,..हृत्कृत्वा परमेश्वरम्	......
कुर्वन्नपि न कुर्वाणश्चाभोक्ता फलभोग्यपि	आत्मो. १३
कुर्वन्नपि न लिप्यते	भ. गी. ५।७
कुर्वन्नभ्यासमेतस्यां भूमिकायां विवासनः	अक्ष्युप.४०
कुर्वन्नभ्यासमेतस्यां भूम्यां...सप्तमी गाढसुप्ताख्या..पुरातनी	वराहो.४।१६
कुर्वन्नाप्नोतिकिल्बिषं [भ.गी.४।२१	+१८।४७
कुर्वन्नेवेह कर्माणि	ईशा.२
कुर्वन् सिद्धिमवाप्स्यसि	भ.गी.१२।१०
कुर्वाणाऽचीरमात्मनः	तैत्ति. १।४।१
कुर्वाणो मद्व्यपाश्रयः	भ.गी.१८।५६
कुलकुमारि विद्महे मंत्रकोटिसुधी-महि । तन्नः कौलिः प्रचोदयात्	त्रि. ता. ३।६
कुलकुमार्यैविद्महे कौलदेवायधीमहि । तन्नः कौलः प्रचोदयात्	वनदु. १४४
कुलक्षयकृतं दोषं	भ. गी. १।३८
कुलक्षये प्रणश्यन्ति	भ. गी. १।४०
कुलगोत्रकरीं विद्याधनधान्ययश-स्करीम्..वन्दे तां जगदीश्वरीम्	वनदु. १९
कुलघ्नानां कुलस्य च	भ. गी. १।४२
कुल–गोत्र–जाति–वर्णाश्रम–रूपाणि षड्भ्रमाः	मुद्गलो. ४।२
कुलधर्माः सनातनाः	भ.गी.१।४०
कुलधर्माश्च शाश्वताः	भ. गी. १।४३
कुलाचाररताःसन्ति गुरवो बहवोमुने	अमन. २।१६
कुलाचारविहीनस्तुगुरुरेकोहिदुर्लभः	अमन. २।१६
कुलालचक्रन्यायेनपरिभ्रमति(जीवः)	पैङ्गलो. १।५
कुले भवति श्रीमताम्	भ.गी. ६।४२
कुशलान्न प्रमदितव्यम्	तैत्ति. १।११।१
कुशला ब्रह्मवार्तायां वृत्तिहीनाः सुरागिणः । तेऽप्यज्ञानतया नूनं पुनरायान्ति यान्ति च	ते. बिं. १।४६
कुशले नानुषज्जते	भ. गी. १८।१०
कुहाचिद्देव स्वपिता पिता नो.-	बा. मं. ५
कुहेव ते चित्रतम प्रतिष्ठा	बा. मं. ५
कुहेव मा वशमितो न यातै (सै)	बा. मं. ५
कुहोश्च हस्तिजिह्वाया मध्ये विश्वोदरी स्थिता	जा.द. ४।१५
कुहोः क्षुद्देवता प्रोक्ता गान्धारी चन्द्रदेवता (नाड्याः)	जा.द. ४।३८
कूटस्थचेतनोऽहं निष्क्रियधामाह-मप्रतर्क्योऽहम्	आ.प्र. ६
कूटस्थो दोषवर्जितः, एकः सन्भि-द्यते भ्रान्त्या मायया, न स्वरूपतः (आत्मा)	जा.द. १०।२
कूटस्थोपहितभेदानां स्वरूपलाभहेतु-र्भूत्वा सूत्रे मणिगणे सूत्रमिव सर्वक्षेत्रेष्वनुस्यूतत्वेनयदाकाश्यते आत्मा तदाऽन्तर्यामीत्युच्यते	सर्वसारो. ५
कूटस्थमचलं ध्रुवम् [त्रि.म.ना. ७।७+	भ. गी. १२।३ यो. शि. ३।२१
कूटस्थं सत्स्वरूपं किरीटंप्रवदन्तिमाम्	गोपालो. २।२१
कूटस्थोऽक्षर उच्यते	भ. गी. १५।१६
कूटस्थो विजितेन्द्रियः	भ.गी. ६।८
कूटस्थोऽहं गुरुः परः	ते.बिं. ६।६९

कूर्परिणमेव सौम्या इति (पश्यध्वं) छाग. ५।२
कूर्पराग्रे मुनिश्रेष्ठ.. दण्डवद्वपुषोऽपि संस्थितः। मयूरासनमेतस्यात्.. जा.द. ३।१०
कूर्परे स्फुरणंयस्य.. त्रैमासिकीस्थितिः त्रि.ब्रा. १३१
कूर्मनाड्यां स्थैर्यम् (चित्तसंयमात्) शांडि. १।७।५२
कूर्मरोम्णा गजेबद्धे जगदस्तु मदोत्कटे ते. बिं. ६।८२
कूर्मवत्पाणिपादाभ्यां शिरश्चात्मनि धारयेत् २ योगत. १२
कूर्मः स्वपाणिपादादि शिरश्चात्मनि धारयेत्। एवं सर्वेषु द्वारेषु वायुपूरितरेचितः १यो.त. १४०
कूर्मोऽक्षादिनिमीलनः (वायुः) त्रि.ब्रा. २।८६
कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः भ.गी. २।५८
कूर्मोऽङ्गानीव संहृत्य मनो हृदि नियम्य च। ..प्रणवेन शनैः शनैः पूरयेत्.. क्षुरिको. ३
कूश्माण्डानि तांस्तेष्वन्वविद-श्रद्धया तपसा च सहवै. ११
कृकरः क्षुतयोः कर्ता (वायुः) त्रि.ब्रा. २।८७
(अपि)कृकलासस्यैतस्या एव देवताया अपचित्यै.. बृह. १।५।१४
कृण्वन्ति फलिभिः (यदिदं) आर्षे १।२
कृतकृत्यश्च भारत भ. गी. १५।२०
कृतविद्यः सत्यधर्मयुतो जितक्रोधो.. सुशोभनमठं कृत्वा तत्र वेदान्त-श्रवणं कुर्वन्योगं समारभेत् शांडि. १।९।१
कृतस्नानो धौतवस्त्रः..गायत्र्या मूत्रमाहरेत् वृ.जा. ३।५
कृतस्फारविचारस्य मनो भोगादयो-ऽरयः। मनागपि न भिन्दन्ति.. अ.पू. २।४३
कृतस्यानु फलैरभिभूयमानः परिभ्रमति (भूतात्मा) मैत्रा. ३।२
कृतकृत्यतया तृप्तः प्राप्तप्राप्ततया पुनः। तुष्यन्नेवंस्वमनसामन्येत..धन्योहं.. अवधू. २६
कृतं दिने यदुरितं...सर्वं दहति निश्शेषं तूलराशिमिवानलः (राममंत्रः) रामो. ५।७
कृताकृतंकर्मभवति,शुभाशुभंचविंदति गर्भो. ३
कृताञ्जलिरभाषत भ.गी. ११।१४
कृताञ्जलिर्वेपमानः किरीटी भ.गी. ११।३५
कृतात्मानो वीतरागाः प्रशान्ताः, ते सर्वगं सर्वतः प्राप्य धीराः.. सर्वमेवाविशन्ति मुंड. ३।२।५
कृतार्थतया कामरागादिदोषरहितः (वर्तते स ब्राह्मणः) व. सू. ९
कृतार्थोऽहमिति मत्वा स्वाश्रमा-चारपरो भवेत् ना.प. ४।५०
कृतिस्त्वेव विजिज्ञासितव्येति कृतिं भगवो विजिज्ञास इति छान्दो.७।२१।१
कृत्वाचनैत्यकंसर्वमधीयीताज्ञयागुरोः शिवो. ७।२५
कृत्वा दूरतरे नूनमिति शब्दार्थ-भावनम्.. तच्छ्रेष्ठासङ्ग उच्यते अक्ष्युप. २९
कृत्वाऽपि न निबध्यते भ.गी. ४।२२
कृत्वा सम्पुटितौ करौ दृढतरं बध्वा-ऽथ पद्मासनं.. उपैति बोधमतुलं शक्तिप्रभावान्नरः [ध्या.विं.६९+ यो. चू. ४०
कृत्वैव निरितष्ठति छांदो. ७।२१।१
कृत्स्नजगतांमातृकाविद्याद्विंत्रिवर्ण-सहिता द्विवर्णमातात्रिवर्णसहिता पा. ब्र. २
कृत्स्नविन्न विचालयेत् भ. गी. ३।२९
कृत्स्नं लोकमिमं रविः भ.गी. १३।३०
कृत्स्नो ह्येष आत्मा यद्बृहतीतस्मा-द्बृहतीमेवाभिसम्पादयेत् १ ऐत. ३।५।४
कृदन्तमर्थवत्प्रातिपदिकमदर्शनं प्रत्ययस्य नाम सम्पद्यते २ प्रणवो. १४
कृशरोगार्तवृद्धानां त्यक्तानां (गवां) ..निर्जने वने।.. नीत्वा यस्तृण-तोयानि..प्रयच्छति..अन्तेमुक्ति-मवाप्नुयात् शिवो.७।९६९८
कृपणंतुमनोब्रह्मन्गोष्पदेऽपिनिमज्जति अ. पू. १।४३
कृपणाः फलहेतवः भ. गी. २।४९
कृपया परयाऽऽविष्टः भ. गी. १।२५
कृपया भगवान्विष्णुं विददार नखैः खरैः।..स एको रुद्रो ध्येयः शरभो. ७
कृपश्च समितिञ्जयः भ. गी. १।८
कृमयःकिंतजायन्तेकुसुमेषुसुगन्धिषु.. भवसं. २।६५

कृशो भूत्वा ग्राम एकरात्रं, नगरे पञ्चरात्रं,चतुरोमासान्वार्षिकान् ग्राममेवा..वसेत् [१सं.सो.१।२+ कठश्रु. ७
कृशो भूत्वा मेदोवृद्धिमकुर्वन्नाज्यं रुधिरमिव त्यजेत् ना. प. ७।१
कृशोऽहं दुःखबद्धोऽहं हस्तपादादिमानहं महो. ४।१२५
कृषिगोरक्ष्यवाणिज्यं भ.गी. १८।४४
कृष्ण कृष्ण हरे हरे कलिसं. २
कृष्णगोपीरतोमूर्तं पापघ्नं गोपिचन्दनम् । ..चतुर्वर्गफलप्रदम् गोपीचं. २३
कृष्णद्वैपायनाद्यैस्तु साधितो लयसंज्ञितः (मंत्रयोगः) योगरा. ४
कृष्णन्ति फलीभिः (पाठः) आर्षे. १।२
कृष्णप्राणाधिदेवाऽर्चेत्, विविक्तेति वेदाः स्तुवन्ति राधिको. ५
कृष्णमेवाप्येति यः कृष्णमेवास्तमेति सुबालो. ९।११
कृष्णवर्णे दक्षिणदले यदा विश्राम्यते मनः । निद्रालस्यभयं देवि मत्सरे च मतिर्भवेत् विश्रामो. ३
कृष्णस्तथैकोऽपि जगद्धितार्थं शब्देनासौ पञ्चपदो विभाति गो. पू. २।३
कृष्णं सन्तं विप्रा बहुधा यजन्ति गो. पू. २।२
कृष्णात्मिका जगत्कर्त्री मूलप्रकृती रुक्मिणी गोपालो. २।१७
कृष्णाय गोपीनाथाय गोविन्दाय नमोनमः गो. पू. ४।४
कृष्णां धेनुं कृष्णवत्सां नलदमाली दक्षिणामुखो व्राजयति ३ऐत. २।४।७
कृष्णो ब्रह्मैव शाश्वतम् कृष्णो. १२
कृष्णोहवैपरोदेवः षड्विधैश्वर्यपरिपूर्णोभगवान् गोपीगोपसेव्यो वृंदाराधितोवृंदावनाधिनाथः राधिको. ३
केचन तत्तदेतदात्मानमोमित्यपश्यन्तः पश्यत नृसिंहो. ९।८
केचिच्चासङ्ख्यजन्मानः (जीवाः) केचिद्वित्रिभवान्तराः महो. ५।१३८
केचित्खादन्ति धातूनखिलतनुशिरावायुसञ्चारदक्षानैतेषांदेहसिद्धिः., अमन. २।३१
केचित्तर्कवितर्ककर्कशधियोऽहङ्कारदर्पोद्धताः..दृश्यन्तेनहि निर्विकारसहजानन्दैकभाजो भुवि अमन.२।३२
केचित्तु मूर्खा वयं परमभक्ता इति वदन्तो रुदन्ति पतन्ति च स्वसंवे. ३
केचित्प्रथमजन्मानः (जीवाः) केचिज्जन्मशताधिकाः महो. ५।१३७
केचित्षट्त्रिंशत्तत्त्वानि केचित् षण्णवतीति च वराहो. १।१
केचिदर्केन्द्रवरुणारुयक्षाधोक्षज महो. ५।१३९
केचिदात्मानमात्मना भ. गी. १३।२५
केचिद्भीताः प्राञ्जलयो गृणन्ति भ. गी.११।२१
केचिद्वदन्ति चाधारं सुषुम्ना च सरस्वती यो. शि. ६।२२
केचिद्विलग्ना दशनान्तरेषु भ. गी. ११।२७
केचिन्मूत्रं पिबन्ति स्वमलमपि तथा केचिदुज्झन्तिलालां,नैतेषांदेहसिद्धिः अमन. २।३१
केचिद्ब्राह्मणभूपालवैश्यशूद्रगणाः महो. ५।१३९
केचिद्वयं देवा इति (वदन्ति) स्वसंवे. ३
केचिद्वयं देवानुग्रहवन्तः(इतिवदन्ति) स्वसंवे. ३
केचिद्वयं वैदिका इति वदन्ति स्वसंवे. ३
केचिद्वयं श्रीमद्रमारमण-(चरण)-नलिनभृङ्गा इति (वदन्ति) स्वसंवे. ३
केचिद्वयं सर्वशास्त्रज्ञा इति (वदन्ति) स्वसंवे. ३
केचिद्वयं स्वप्ने उपास्यदेवताभाषिणः (इति वदन्ति) स्वसंवे. ३
केचित् सुद्युम्नभूरिद्युम्नेन्द्रद्युम्न... राजानो मिषतो बंधुवर्गस्य महतीं श्रियं त्यक्त्वाऽस्माल्लोकादमुं लोकं प्रयाताः मैत्रा. १।६
केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो... वनदु.३५
[ऋ.अ.१।१।११=मं.१।६।३+ वा.सं. २९।३७
[अथर्व.२०।२६।६
केतो अग्निः, विज्ञातमग्निः चित्यु. १।१
केदारं तु ललाटके । वाराणसी महाप्राज्ञ भ्रुवोर्घ्राणस्य मध्यमे जा. द. ४।४८
केन कर्माणि (आप्नोति) इति, हस्ताभ्यामिति (ब्रूयात्) कौ. त. १।७

केन गन्धान् (आप्नोति) इति, प्राणेनेति (ब्रूयात्) कौ. उ. १।७
केन-छांदोग्यारुणि-मैत्रायणि-मैत्रेयी-वज्रसूचिका-योगचूडामणि-वासुदेव-महत्सन्न्यासाव्यक्त-कुण्डिका-सावित्री-रुद्राक्ष-जाबालदर्शन-जाबालीनां सामवेद-गतानां षोडश-सङ्ख्याकानामुपनिषदां 'आप्यायन्तु' इति शान्तिः मुक्ति. १।५६
केन जायमानोमृत्योराप्तिमतिमुच्यते होत्रर्त्विजाग्निना वाचा.. बृह. ३।१।३
केन त्वं चिरं जीवसि, केन वाऽऽनन्दमनुभवसि द. मू. १
केन धियो विज्ञातव्यं कामान् (आप्नोति) इति,प्रज्ञयेति प्रब्रूयात् कौ. उ. १।७
केन नपुंसकनामानि (आप्नोति) इति, मनसेति (ब्रूयात्) कौ. उ. १।७
केन प्राणः प्रथमः प्रैति युक्तः केनो. १।१
केन भगवन् कर्माण्यशेषतोविसृजामि आरुणि. १
(तमाह) केनमेपौंस्नानि नामान्याप्नोतीति, प्राणेनेति ब्रूयात् कौ. उ. १।७
केन यजमानः पूर्वपक्षापरपक्षयोराप्तिमतिमुच्यते बृह. ३।१।५
केन यजमानोऽहोरात्रयोराप्तिमतिमुच्यते बृह.३।१।४
केन रूपाणि (आप्नोति) इति, चक्षुषेति (ब्रूयात्) कौ.उ. १।७
(अथ) केन रूपेणेमं लोकमाभवती"३ १ऐत. ३।७।२
केन शब्दान् (आप्नोति) इति, श्रोत्रेणेति (ब्रूयात्) कौ. उ. १।७
केन सुकरेणामृतत्वमेति कात्याय. १
केन सुखदुःखे (आप्नोति) इति, शरीरेणेति (ब्रूयात्) कौ.उ. १।७
केन स्त्रीनामानि (आप्नोति) इति, वाचेति (ब्रूयात्) कौ.उ. १।७
केनाक्रमणेन यजमानः स्वर्गं लोकमाक्रमते, ब्रह्मणर्त्विजा मनसाचंद्रेण.. बृह. ३।१।६
केनानन्दं रतिं प्रजातिं (आप्नोति) इति, उपस्थेनेति कौ.उ.१।७
केनान्नरसान् (आप्नोति) इति, जिह्वयेति (ब्रूयात्) कौ. उ. १।७
केनाप्यबाधितत्वेन त्रिकालेप्येकरूपतः। विद्यमानत्वमस्त्येतत् सद्रूपत्वं सदा मम वराहो. ३।९
केनाहमेकेनाक्षरेण सर्वांश्च कामान् सर्वांश्च... ....
केनेत्या (आप्नोति)इति, पादाभ्यामिति (ब्रूयात्) कौ. उ. १।७
केनेषितं पतति प्रेषितं मनः केनो. १।१
केनेषितां वाचमिमां वदन्ति केनो. १।१
केनोत्क्रमते कथं बाह्यमभिसन्धत्ते (प्राणः) कथमध्यात्मम् प्रश्नो. ३।१
के मनुष्याः केपश्वादयःकेब्राह्मणादयः निरा.उ. ४
केयूराङ्गदकङ्कणैर्मणिगतैर्विद्योतमानं सदा..देवेशं भरतादिभिः परिवृतं रामं भजे श्यामलम् रामर. २।३७
केवलकुम्भके सिद्धे त्रिषु लोकेषु न तस्य दुर्लभं... शांडि. १।७।१४
केवलकुम्भकात् कुण्डलिनीबोधो...भवति शांडि. १।७।१४
केवलजीवयुक्तमेव तुरीयमिति (तुरीयावस्था) शारीरको. १०
केवलानिराकारस्य गगनस्येव परब्रह्मणोऽपि जडत्वमापद्येत त्रि.म.ना. २।४
केवलमकारोकारमकारार्धमात्रासहितं प्रणवमूह्य यो राममंत्रं जपति तस्य शुभकरोऽहं(हनूमान्)स्याम् रामर. १।६
केवलमंत्रमयदिव्यतेजोमय... महाविष्णुसायुज्यविग्रहं... त्रि.म.ना. ५।५
केवलमोक्षापेक्षासङ्कल्पो बन्धः निरा.उ. २१
केवलसिद्धिपर्यंतं सहितमभ्यसेत् शांडि.१।७।१४
केवलं केवलाभासं.. चैत्यानुपातरहितं चिन्मात्रमिह विद्यते महो. ४।१२१
केवलंक्षीणमननमास्तेऽद्वैतेऽतिनिर्भयः अक्ष्युप. ४१
केवलं चित्प्रकाशांशकलिपतास्थिरतां गता। तुर्या सा प्राप्यते दृष्टिः.. अ.पू. १।५१

केवलं चितिविश्रम्य..सर्वत्रनीरसमिह
विहस्यात्मरसं मनः अ. पू. २।९
केवलं चित्सदानन्दब्रह्मैवाहं जनार्दनः वराहो. ३।१९
केवलं ज्योतीरूपमनाद्यन्तमनण्वस्थूल-
रूपमरूपं रूपविदविज्ञेयं ज्ञानरूप-
मानन्दमयमासीत् (इदं-ब्रह्माण्डं) अव्यक्तो. १
केवलं ज्ञानरूपोऽस्मि केवलं प्रिय-
मस्म्यहम् ।.. निरीहोऽस्मि.. ते. बिं. ३।५
केवलं ज्ञानरूपोऽहं केवलं परमो-
ऽस्म्यहम् । केवलं शान्तरूपोऽहं.. ते. बिं. ३।१
केवलं तन्मनोमात्रमयेनासाद्यते पदं ।
यानि दुःखानि या तृष्णा..शान्त-
चेतस्सुतत्सर्वंतमोऽर्केष्विवनश्यति महो. ४।२८
केवलं तुर्यरूपोऽस्मि तुर्यातीतोऽस्मि
केवलः ।..चिदानन्दमयोऽस्म्यहम् ते. बिं. ३।४
केवलं नित्यरूपोऽहं केवलं शाश्वतो-
ऽस्म्यहम् ,..अहंत्यक्त्वाऽहमस्म्यहं ते. बिं. ३।२
केवलं ब्रह्ममात्रत्वान्नास्त्य-
नात्मेति निश्चिनु ते. बिं. ५।१७
केवलं ब्रह्ममात्रत्वादहमात्मासनातनः ।
अहमेवाविशेषोऽहमहं शेषः.. ते. बिं. ३।३९
केवलं ब्रह्ममात्रोऽस्मि ह्यजरोऽस्म्य-
मरोऽस्म्यहम् । स्वयमेव स्वयं.. ते. बिं. ३।२१
केवलं शान्तरूपोऽहंकेवलंचिन्मयोऽ.. ते. बिं. ३।२
केवलं सत्त्वरूपोऽहमहंत्यक्त्वा-
ऽहमस्म्यहम् ते. बिं. ३।३
केवलं साक्षिरूपेण विना भोगं
महेश्वरः । प्रकाशते स्वयं भेदः
कल्पितो मायया तयोः [रु.हृ.४२ +अ.पू.४।३३
केवलं सुसमः स्वच्छो मौनी मुदित-
मानसः । सम्पूर्ण इव शीतांशु-
रतिष्ठदमलः शुकः महो. २।२७
केवलः परमात्माऽहं...जीवेश्वरेति
वाक् केति..इति निश्चयशून्यो
यो वैदेही मुक्त एव सः ते.बिं.४।४५-४७
केवलाकाररूपोऽस्मिशुद्धरूपोऽस्म्यहं ते. बिं. ३।५
केवलाखण्डबोधोऽहं स्वानन्दोऽहं
निरन्तरः।.स्वमेव सर्वतः पश्यन्.. कुण्डिको. ३६

केवले दर्पणे नास्ति प्रतिबिम्बं
तथा जगत् (सत्यं) ते. बिं. ६।९८
केवले द्रष्टरि क्षीणं रूपं नाह-
मचेतनम् १ईसो. २।१८
केवलैरिन्द्रियैरपि भ. गी. ५।११
केवलोऽहं कविः कर्माध्यक्षोऽहम्.. ब्र. वि. ९४
केवलोऽहं सदाशिवः अध्यात्मो. ६९
केशकज्जलधारिण्यो दुस्स्पर्शा लोचन-
प्रियाः । दुष्कृताग्निशिखा नार्यो
दहन्ति तृणवन्नरम् [महो.३।४३ + याज्ञव. १२
केशकीटादिभिर्दुष्टं सूतकान्नं...
अनर्पितं च यद्विष्णोः.. भवसं. ४।१२
केशवार्जुनयोः पुण्यं भ.गी.१८।७६
केशश्मश्रुलोमनखानि वापयेत्
सोऽस्याग्निष्टोमः (सन्न्यासिनः) कठश्रु. २१
केशव क्लेशहरण नारायण जनार्दन ।
गोविन्द परमानन्द मां समुद्धर.. गो.पू. ४।१५
केशा दर्भाः (शारीरयज्ञस्य) प्रा. हो. ४।३
केशास्थीनि कपालानि कार्पासास्थि-
तुषाणि च..नाधितिष्ठेद्रजांसि च शिवो. ७।५१
केशोल्लुञ्चननग्नत्वमारक्ताम्बर-
धारणम् । इत्यादिलिङ्गग्रहणम्.. अमन. २।३३
केषु केषु च भावेषु भ.गी. १०।१७
कैकसेय पुरश्चरणविधावशक्तो यो मम
महोपनिषदं मम गीतां...रामषड-
क्षरीत्यादिभिर्मन्त्रैर्यो मां नित्यं
स्तौति तत्सदृशो भवेन्न किम् ? रामर. ५।९
(अथ) कैर्मन्त्रैः स्तुतो देवः प्रीतो
भवति स्वात्मानं दर्शयति तन्नो
ब्रूहि भगवन्निति नृ.पू. ३।४
कैर्मया सह योद्धव्यं भ.गी. १।२२
कैर्लिङ्गैस्त्रीन् गुणानेतान् भ.गी.१४।२१
कैलासशिखरावासमोङ्काररस्वरूपिणं
महादेवं.. शिवं प्रणम्य..(भुसुण्डः) भस्मजा. १।१
कैलासशिखरेरम्येशङ्करस्याशिवालये ।
देवतास्तत्र मोदन्ते तन्मे मनः
शिवसङ्कल्पमस्तु २शिवसं. २५
कैव कायस्य रम्यता । तडित्सुशरदभ्रेषु..
स्थैर्ययेनविनिर्णीतंसर्क्षिश्वसत्तुविग्रहे महो. ३।३१

कैवल्यनाडीकान्तस्थपराभूमि-
निवासिनं.. राममाश्रये क्षुरिकाशीर्षकं
कैवल्यमुक्तिरेकैव पारमार्थिकरूपिणी मुक्तिको.१।१८
कैवल्यश्रीस्वरूपेण राजमानं महो-
ऽव्ययम् । श्रीरामपदमाश्रये रामर.शीर्षकं
कैवल्यंकेवलंविद्यात्,व्यवहारपरःस्यात् लिङ्गोप. २
कैवल्यं परमं शान्तं सूक्ष्मतरं महतो
महत्तरमपरिमितानन्दविशेषम् .. त्रि.म.ना. ७।७
कैवल्यानन्दरूपं परमानन्दलक्षणा-
परिच्छिन्नानन्तज्योतिः
शाश्वतं.. विभाति सि.सा. ६।१
कैवल्योपनिषद्वेद्यंकैवल्यानंद-
तुंदिलम् । कैवल्यगिरिजारामं
स्वमात्रं कलयेन्वहम् कैवल्यशीर्षकं
को अद्धामूमभि चंक्रमीति बा. म. ३
को अद्धा वेद क इह प्र वोचत् बा. मं. १०
[ऋ.अ. ३।३।२४ =मं. ३।५४।५
को जालं विक्षिपेदेको नैनमपकर्ष-
त्यपकर्षति । प्राणदेवताश्चत्वारः परब्र. १
कोटिकोटिगणाध्यक्षं ब्रह्मांडा-
खण्डविग्रहम् पं.ब्र. ११
कोटिकोटिसहस्राणि उपपातक-
जान्यपिसर्वाण्यपिप्रणश्यन्ति
राममंत्रप्रभावतः रामो. ५।९
कोटिशः अण्डकटाहा उत्पद्यन्तेलीयन्ते सामर. ५
कोटिसूर्यप्रकाशवैभवसङ्काशं
सूर्याकाशं भवति अद्वयता. ४
कोटिसूर्यप्रकाशं सूर्याकाशं भवति मं. ब्रा. १।३
कोटयश्चतस्रः पताश्च ग्रहैर्यासां
सदावृतः । भगवानाभिर-
स्पृष्टो येन दृष्टः स सर्वदृक् अ. शां. ८४
कोटयो ब्रह्मणां याता भूपा नष्टाः
परागवत् । वराहो. ३।२२
कोणेषु तेषां (बिल्वपत्राणां)
निवसन्तिशुद्धगङ्गादितीर्था-
न्यृषयश्च सर्वे १बिल्वो. ४
कोदण्डद्वयमध्ये तु ब्रह्मरन्ध्रेषु..
स्वात्मानं पुरुषं पश्येन्मन-
स्तत्र लयं गतम् ध्या.बिं. १०४

को धातुरित्यात्तेर्धातुरवतिमप्येके २ प्रणवो. १४
को नाम स्वयम्भूः पुरुष इति । तेनां-
गुलीमध्यमानात् सलिलमभवत् गायत्रीर.१
को नु मानुशिष्याद्धोइतीहापेत्रनिह्नुते छांदो. ४।१४।२
कोऽन्योऽस्ति सदृशो मया भ. गी.१६।१५
को न्वेवं जनयेत्पुनः बृह. ३।९।३४
कोपदेष्टा मे पुरुषःपुरस्तादाविर्भूत्र गो. पू. ३।८
कोपाजगरचर्वितम् । कामाब्धि-
कल्लोलरते विस्मृतात्मपितामहम् ।
समुद्धर मनः.. महो. ५।१३४
को म भवो दाशुषो विष्वगूती .. बा. मं. ११
कोऽयमात्माख्यो योऽयं सितासितैः
कर्मफलैरभिभूयमानः सद्-
सद्योनिमापद्यतेअवीचींचोर्ध्वांग.. मैत्रा. ३।१
कोऽयमात्मेति वयमुपास्महे २ऐत. ५।१
कोऽयं मुख्य इति च यदयं मुख्यः प. हं. २
को वा मोक्षः कथंतेन संसारं प्रति-
पन्नवान् । इत्यालोकनमर्थज्ञास्तपः
शंसंति पण्डिताः जा. द. २।४
को विकारीच्यवते प्रकरणमाप्नोति-
राकारपकारौ विकार्यौ आदित
ओकारो विक्रियते २प्रणवो. १६
को वा वेत्ता महिमानं शिवस्य सि. शि. ८
कोशकारकृमिरिव (मनः) स्वेच्छया
याति बन्धनम् । .. शृंखलाबद्ध-
सिंहवत् महो. ५।१२८
कोशमाशाभुजङ्गानां संसाराडम्बरं
त्यज । असदेतदिति ज्ञात्वा
मात्.. ावं निवेशय महो. ५।१६६
कोशं भित्वा शीर्षकपालं भिनत्ति सुबालो. ११।२
कोऽभवदभिमातीविजघ्नुषः बा.मं. १०
कोष्ठाग्निर्नामाशितपीतलीढखादितानि
सम्यग्व्यष्टयांश्रपयित्वा गार्हपत्यो
भूत्वा नाभ्यां तिष्ठति प्रा.हो. २।४
(तत्र) कोष्ठाग्निर्नामाशित-
पीतलेह्यचोष्यं पचति गर्भो. ११
कोऽसि त्वमसीति तमतिसृजते कौ.उ. १।२
को ह स्मैष भवसि व्यवायो नवायो
म इह शश्वदस्ति बा.मं. २

कोऽहं कथमयं दोषः संसाराख्य उपागतः । जाग्रत्स्वप्नेऽप्यवहरन् सुषुप्तौ क गतिर्मम — योगकुं. ३।२८

कोऽहं कथमिदं किंवा कथं मरणजन्मनी । विचारयान्तरेवेत्थं.. — अ. पू. १।४०

को हि जानाति कस्याद्य मृत्युकालो भविष्यति — भवसं. १।३९

कोऽहं कथमिदं चेति संसारमलमाततम् । प्रविचार्य प्रयत्नेन.. — महो. ४।२१

को हि त्वैवमनुवन्तमर्हति प्रत्याख्यातुम् — बृह. ६।२।८

को ह्येवान्यात् कः प्राण्यात्, यदेष आकाश आनन्दो न स्यात् — तैत्ति. २।७

कौन्तेय प्रतिजानीहि — भ.गी. ९।३१

कौपीनयुगलंकन्थादण्डएकःपरिग्रहः । यतेः परमहंसस्य नाधिकं तु.. — ना.प. ३।२८

कौपीनाधारं कटिसूत्रमोमिति — ना.प. ४।५०

कौपीनं दण्डमाच्छादनं च स्वशरीरोपभोगार्थाय लोकस्योपभोगार्थाय च परिग्रहेत् — प.हं.२

कौमारं यौवनं जरा — भ. गी. २।१३

कौमारं यौवनं जरा परिणामत्वात् तदन्नत्वं, एवं प्रधानस्य व्यक्ततां गतस्योपलब्धिर्भवति — मैत्र्यु. ६।१०

(अथ खलु) क्रतुमयः पुरुषः यथा क्रतुरस्मिँल्लोकेपुरुषोभवति तथेतः प्रेत्य भवति स क्रतुं कुर्वीत — छान्दो.३।१४।१

क्रतुरसुः कामो वश इति सर्वाण्येवैतानि प्रज्ञानस्य नामधेयानि भवन्ति — २ऐत. ५।२

क्रतुशतस्यापि चतुस्सप्तत्या यत्फलं तदवाप्नोति कृत्स्नमोङ्कारगतिं च (शंभोः क्षणध्यानेन) — अ. शिखो. ३

(ॐ) क्रतो स्मर कृतं स्मर — ईशा. १७

क्रतोरानन्त्यमभयस्य पारं — कठो. २।११

क्रमते नहि बुद्धस्य ज्ञानं धर्मेषु तापिनः । सर्वे धर्मास्तथा ज्ञानं नैवबुद्धेन भाषितम् । — अ.शां. ९९

क्रमेण सर्वमभ्यस्य सर्वमनुभूय ज्ञानवैराग्याभ्यां स्वरूपानुसन्धानेन देहमात्रावशिष्टः ..स ज्ञानवैराग्यसंन्यासी [ना.प.५।३+ — १ सं.सो.२।१३

क्रव्यादाः पितरः सर्वे तिलज्योतिघृतप्रियाः — इतिहा. ९४

क्रियते तदिह प्रोक्तं — भ.गी. १७।१८

क्रियते बहुलायासं — भ.गी. १८।२४

क्रियन्ते मोक्षकाङ्क्षिभिः — भ.गी. १७।२५

क्रियमाणानि सर्वशः — भ.गी. १३।३०

[कर्मेति च-]क्रियमाणेन्द्रियैःकर्माण्यहं करोमीत्यध्यात्मनिष्ठया कृतं कर्मैव कर्म — निरा.उ. १३

क्रिया इच्छा तथा ज्ञानं..त्रिधा मात्रा स्थितिर्यत्र तत्परंज्योतिरोमिति — यो.चू. ८६

क्रियाकर्मेज्यकर्तृणामर्थं मंत्रो वदत्यथ । मननात् त्राणनान्मंत्रः.. — रा.पू. १।१२

क्रियानाशाद्भवेच्चिन्तानाशोऽस्माद्वासनाक्षयः । वासनाप्रक्षयो मोक्षः सा जीवन्मुक्तिरिष्यते — अध्यात्मो. १९

क्रियावन्तः श्रोत्रिया ब्रह्मनिष्ठाः स्वयं जुह्वत एकर्षिं श्रद्धयन्तः (एकर्षीन् —मा. पा.) — मुण्डको.३।२।१०

क्रियाविशेषबहुलां — भ.गी. २।४३

क्रियाशक्तिस्वरूपं-हरेर्मुखान्नादः, तन्नादाद्बिंदुः, बिन्दोरोङ्कारः — सीतो. ११

क्रियासु बाह्याभ्यन्तरमध्यमासु सम्यक्प्रयुक्तासु न कम्पते ज्ञः — प्रश्नो. ५।६

क्रियाशक्तिः पीठम् (विराड्रूपस्य) — भावनो. २

क्रुध्यन्तं न प्रतिक्रुध्येदाक्रुष्टः कुशलं वदेत् । सप्तद्वारावकीर्णां च न वाचमनृतां वदेत् — ना. प. ३।४३

क्रूरेण जडतां याता तृष्णाभार्यानुगामिना । वशः कौलेयकेनैव ब्रह्ममुक्तोऽस्मि चेतसा — महो. ३।१९

क्रोधमयोऽक्रोधमयो धर्ममयोऽधर्ममयः सर्वमयः (आत्मा) — बृह. ४।४।५

क्रोधः पारुष्यमेव च — भ. गी. १६।४

क्रोधाद्भवति सम्मोहः — भ. गी. २।६३

क्रौञ्चं बृहस्पतेः, अपध्वान्तं वरुणस्य, तान्सर्वानेवोपसेवेत, वारुणं त्वेव वर्जयेत्	छांदो. २।२२।१
क्लीङ्कारादसृजम्, कृष्णादाकाशं खाद्वायुरुत्तरात् सुरभिविद्याः प्रादुरकार्षम्	गो. पू. ३।९
क्लीमित्येतदादावादाय कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजनवल्लभायेति बृहन्मानन्या सकृदुच्चारयेद्योऽसौगतिस्तस्यास्ति ..नान्या गतिः..	गो. पू. २।१
क्लीमोङ्कारस्यैकतत्त्वं वदन्ति ब्रह्मवादिनः	गोपालो. २।१९
क्लृप्तान्वै स लोकान् ध्रुवान् ध्रुवः प्रतिष्ठितान्प्रतिष्ठितोऽव्यथमानानव्यथमानोऽभिसिद्धयति	छांदो. ७।४।३
क्लेशोऽधिकतरस्तेषां	भ. गी. १२।५
क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ	भ. गी. २।३
क्व गतं केनवानीतंकुत्रलीनमिदंजगत्	अध्यात्मो. ६५
क्व गताः पृथिवीपालाः... वियोगसाक्षिणीयेषां भूमिरद्यापितिष्ठति	भवसं. १।२३
क्व च सम्प्रतिष्ठाः, अधिष्ठिताः केन सुखेतरेषु । वर्तामहे ब्रह्मविदो..	श्वेताश्व. १।१
क्वचिच्चित्तमिति स्मृतं, क्वचिन्मायेति कल्पितम् । क्वचिद्बन्ध इति ख्यातं (मनः)	महो. ५।१३०
क्वचिज्ज्ञानं क्वचित् क्रिया (मनः)	महो. ५।१३०
क्वचित्कर्मेति संस्मृतम् ”	महो. ५।१३१
क्वचित्प्रकृतिरित्युक्तं ”	महो. ५।१३१
क्वचिदिच्छेति सम्मतम् ”	महो. ५।१३२
क्वचिदेतदहङ्कारः ”	महो. ५।१३०
क्वचियोगी क्वचिद्भोगी	....
क्वचिद्बन्ध इति ख्यातं ”	महो. ५।१३२
क्वचिन्मनः क्वचिद्बुद्धिः	महो. ५।१३०
क्वचिन्मलमिति प्रोक्तं ”	महो. ५।१३१
क्वचिन्मायेति कल्पितम् ”	महो. ५।१३१
क्वचिद्वा विद्यते यैषा संसारे सुखभावना । आयुस्तम्बमिवासाद्य कालस्तामपि कृन्तति	महो. ३।३७

क्वतर्हियजमानस्यलोकइति, स यस्तं न विद्यात्कथंकुर्यादथ विद्वान्कुर्यात्	छान्दो. २।२४।२
क्व धनानि महीपानां ब्राह्मणः क्व जगन्ति वा । प्राक्तनानि प्रयातानि...	वराहो. ३।२२
क्व न्वश्वमेधयाजिनो गच्छन्तीति	बृह. ३।३।२
क्व बन्धमोक्षकलने ब्रह्मैवेदं विजृंभते । सर्वमेकं परं व्योम को मोक्षः कस्य बन्धता	अ.पू. २।३६
क्व शरारुः क्व सृमरः क्व नूरणः	वा.मं. २१
क्व शरीरमशेषाणां श्लेष्मादीनां महाचयः । क्व चाङ्गशोभा सौभाग्यकमनीयादयो गुणाः	ना.प. ४।२७
क्वायं तदापुरुषो भवतीत्याहर सौम्यहस्तमार्तभागावामे वैतस्य वेदिष्यामः	बृह. ३।२।१३
क्वैतदभूत्, कुत एतदागा३त्	कौ. उ. ४।१८
क्वैष एतद्बा लोके पुरुषोऽशयिष्ट	कौ. उ. ४।१८
क्वैष तदाभूत्कुत एतदागादिति तदु ह न मेने गार्ग्यः	बृह. २।१।१६
क्वैषा कथमिति होचुः किं तेन, न किञ्चनेति	नृसिंहो. ९।१०
क्वैषाऽनुज्ञेत्येष एवात्मेति	नृसिंहो. ९।१०

क्ष

क्षणमायाति पातालं क्षणं याति नभस्तलम् । क्षणं भ्रमति दिक्कुञ्जे तृष्णा हृत्पद्मषट्पदी	महो. ३।२४
क्षणमायान्ति सम्पदः	महो. ३।५३
क्षणं जन्माथमरणं सर्वनश्वरमेवतत्	महो. ३।५३
क्षणं नयति कल्पताम् । मनोविलाससंसारः..	महो.४।६८
क्षणं भ्रमति दिक्कुञ्जे (तृष्णा)	महो. ३।२४
क्षणं याति नभस्थलम् ”	महो. ३।२४
क्षणं स्फुरति सा देवी (अविद्या) सर्वशक्तितया तथा	महो. ५।१२०
क्षणाच्चेतस्यपां शैत्यं जलसंवित्ततो भवेत् । ततस्तादृग्गुणगतं मनः..	महो. ५।१५०
क्षत्रकर्म स्वभावजम्	भ.गी. २।३
क्षत्रस्य सायुज्यं सलोकतां जयति, य एवं वेद	बृह. ५।१३।४

क्षत्रं तं परादाद्योऽन्यत्रात्मनः क्षत्रं
वेद लोकास्तं परादुः [बृह.२।४।६ +४।५।७
क्षत्रं, प्राणो वै क्षत्रं बृह. ५।१३।४
क्षत्रं यान्येतानि देवत्रा क्षत्राणीन्द्रो
वरुणः सोमो रुद्रः पर्जन्यो यमो
मृत्युरीशान इति बृह. १।४।११
क्षत्राय स्वाहेत्यग्नौ हुत्वा मन्थे
सं९स्रवमवनयति बृह. ६।३।३
क्षत्रियस्य न विद्यते भ.गी. २।३१
क्षत्रियाद्वयोऽपि परमार्थदर्शिनो-
ऽभिज्ञा बहवः सन्ति व.सू. ६
क्षत्रियाद्वयो हिरण्यदातारो
बहवः सन्ति व.सू. ८
क्षत्रियेण क्षत्रियो वैश्येन वैश्यः
शूद्रेण शूद्रस्तस्मादग्नावेव
देवेषु लोकमिच्छन्ते बृह. १।४।१५
क्षमा नाम प्रियाप्रियेषु सर्वेषु
ताडनपूजनेषु सहनम् शांडि. १।१।३
क्षमा सत्यं दमः शमः भ.गी. १०।४
क्षमां हित्वा हेतुजालस्य मूलं बुद्ध्या
सञ्चितं स्थापयित्वा तु रुद्रे अ.शिरः. ३।९
क्षयकुष्ठगुदावर्त...सस्य रोगाः क्षयं
यान्ति महामुद्रां तु योऽभ्यसेत् यो.चू. ६९
क्षयगुल्मगुदावर्तजीर्णत्वगादिदोषा
नश्यन्ति (खेचर्या मुद्रया) शांडि. १।७।४३
क्षयाय जगतोऽहिताः भ.गी. १६।९
क्षरं त्वविद्या ह्यमृतं तु विद्या
विद्याविद्ये ईशते यस्तु सोऽन्यः श्वेता. ५।१
क्षरं प्रधानममृताक्षरं हरः क्षरात्मा-
नावीशते देव एकः। तस्याभि-
ध्यानाद्योजनात्तत्त्वभावाद्भूयश्चा-
न्ते विश्वमायानिवृत्तिः [ना.प.९।९ +श्वेता.१।१०
क्षरतीः पिङ्गला एकरूपाः चित्त्यु. ११।१०
क्षरश्चाक्षर एव च भ.गी. १५।१६
क्षरः सर्वाणिभूतानि [यो.शि.३।१६ +भ.गी.१५।१६
क्षराक्षरविहीनो यो नादान्त-
ज्योतिरेव सः ते. बिं. ५।६
क्षराक्षराभ्यामधिकः पुरुषोत्तम-
संज्ञितः..संविराजते सामर. २

क्षान्तिरार्जवमेव च भ.गी.१८।४२
क्षारक उद्गारकः क्षोभको मोहको
जृम्भक इत्यपालनमुख्यत्वेन
पञ्चविधोऽस्ति (वायुः) भावनो. ५
क्षारणादापदां क्षारम् (भस्म) बृ.जा. १।६
क्षारमन्त्यजमिव (त्यजेद्यतिः) ना.प. ७।१
क्षामदेवो अतिदुरितात्यग्निः महाना. ६।१७
क्षिणोमि ब्रह्मणा मित्रानुन्नयामि
स्वा३ अहं बह्वृ. ८
क्षिपाम्यजस्रमशुभान् भ.गी. १६।१९
क्षिप्तं यथा शाल्मलितूलमग्नौ.. भवसं. १।२४
क्षिप्तोऽवमानितोऽसद्भिःप्रलब्धोऽसूयि-
तोऽपिवा..आत्मनात्मानमुद्धरेत् ना.प. ५।३९
क्षिप्रं कृत्येनिवर्तस्व कर्तुरेवगृहान्प्रति..
वीरांश्चास्य निबर्हय वनदु. १३०
क्षिप्रं भवति धर्मात्मा भ.गी. ९।३१
क्षिप्रंमरिष्यतीतिविद्याद्यस्तथाऽधीते संहितो. १।२
क्षिप्रं हि मानुषे लोके भ.गी. ४।१२
क्षीणं क्षौमं तृणं कन्थाजिने च.. शाट्या. १९
क्षीणाविद्यो विमुच्यते। कल्पितेय-
मविद्येयमनात्मन्यात्मभावनात् महो. ४।१२७
क्षीणेऽज्ञानेमहाप्राज्ञरागादीनांपरिक्षयः जा.द. ६।५
क्षीणेन्द्रियमनोवृत्तिर्निराशी (यतिः) ना.प. ३।७५
क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति भ.गी. ९।२१
क्षीणे प्राणे नासिकयोच्छ्वसीत श्वेता. २।९
क्षीणे हेतुफलावेशे नास्ति हेतुफलो-
द्भवः। यावद्धेतुफलावेशः संसार-
स्तावदायतः अ.शां. ५५
क्षीणे हेतुफलावेशे संसारं न प्रपद्यते अ.शां. ५६
क्षीणैः क्लेशैर्जन्ममृत्युप्रहाणिः श्वेता. १।११
क्षीयते दग्धसंसारो निस्सार इति
निश्चितः। (मनोविकल्पनाशात्) महो. २।३४
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि
तस्मिन्दृष्टे परावरे मुण्ड. २।२।८
क्षीयेत ह सोऽन्नमत्ति प्रतीकेनेति।
मुखं प्रतीकं, मुखेनेत्येतत्स
देवानपि गच्छति बृह. १।५।२
क्षीराब्धितः श्वेतद्वीपे क्षीरखण्डान..
आनीय.. मुक्तिसाधिका भवन्ति ऊर्ध्वपु. १

क्षीरवत्पश्यति ज्ञानी लिङ्गिनस्तु
गवां यथा — त्रि.ता. ५।१९
क्षीरवत्पश्यते ज्ञानं लिङ्गिनस्तु
गवां यथा — ब्र. बि. १९
क्षीरं क्षीरे यथा क्षिप्तं तैलं तैले
जलंजले। संयुक्तमेकतांयाति
तथाऽऽत्मन्यात्मविन्मुनिः — आत्मो. २३
क्षीरं पिबन्ति मधु ते पिबन्ति — इतिहा. ७
क्षीरं वा दधि वा तैलं...एतेषां
विक्रयी विप्रो..नरकं व्रजेत् — इतिहा. ८०
क्षीरादिभिरेतैरभिषिच्य
सर्वानवाप्नोति कामान् — भस्मजा. २।१
क्षीरेणस्नापितेदेवि.. दुर्गेऽहं शरणंगतः — त्रि. ता. २।६
क्षीरेसर्पिरिवार्पितम्। आत्मविद्या-
तपो मूलं तद्ब्रह्मोपनिषत्पदम् — ब्रह्मो. २३
क्षीरोत्तरं प्रस्फुरन्तं कुण्डलं
युगलं स्मृतम्। ध्यायेन्मम
प्रियं नित्यं स मोक्षमधिगच्छति — गोपालो. २।३४
क्षीरोदार्णवशायिनं कल्पद्रुमाधःस्थितं
वरदं..वक्रतुण्डस्वरूपिणं (गणेशं) — ग. पू. २।४
क्षीरोदार्णवशायिनं नृकेसरि-
विग्रहं योगिध्येयं परं पदं
साम जानीयात् — नृ. पू. १।५
क्षीरोदनं पाचयित्वा सर्पिष्मन्त-
मश्नीयातामीश्वरौ जनयितवै — बृह. ६।४।१४
क्षुत्तृष्णालस्यमोहमैथुनान्यग्नेः(अंशाः) — शारीरको.३
क्षुत्तृष्णोष्णमोहमैथुनाद्या अग्न्यंशाः — पैङ्गलो. २।२
क्षुत्करणं कृकरकर्म (कृकरवायोः) — शाण्डि. १।४।९
क्षुत्पिपासान्ध्यबाधिर्यकामक्रोधाद-
योऽखिलाः । लिङ्गदेहगता
ह्येते ह्यलिङ्गस्य न सन्ति हि — आ. प्र. २४
क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं
नाशयाम्यहम् — श्रीसू. ८
[ऋ.खि.८७।५।८+ — महाना.१४।२०
क्षुत्पिपासायै स्वाहा—विविट्यै स्वाहा — महाना.१४।१८
क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यम् — भ. गी.२।३

क्षुधार्तः खण्डवेतुष्यम्। नाहं ब्रह्मेति
जानाति तस्य मुक्तिर्न जायते — पैङ्गलो. ४।२२
क्षुधां देहव्यथांत्यक्त्वाबालःक्रीडति
वस्तुनि। तथैव विद्वान्रमते
निर्ममो निरहं सुखी — २ आत्मो. १०
क्षुधितस्याग्निर्भोज्यश्चेन्निमिषं
कल्पितं भवेत् — ते.बिं.६।८९
क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया
दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति — कठो.३।१४
क्षेत्रज्ञ इति तद्विदः — भ.गी.१३।२
क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोरेवं — भ. गी.१३।३५
क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोर्ज्ञानं — भ. गी.१३।३
क्षेत्रक्षेत्रज्ञसंयोगात् — भ.गी. १३।२७
क्षेत्रमित्यभिधीयते — भ. गी. १३।२
क्षेत्रज्ञमेवाप्येति यः क्षेत्रज्ञमेवास्तमेति — सुबालो. ९।१३
क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि — भ. गी. १३।३
क्षेत्रज्ञः परमात्मा च तयोरैक्यं यदा
भवेत्..चित्तं याति विलीनतां — यो.शि.१।१३४
क्षेत्रज्ञाधिष्ठितं चैव कारणैर्विद्यते
पुनः। एवं स भगवान्देवं
पश्यन्त्यन्ये पुनःपुनः — मंत्रिको. १९
क्षेत्रपालाय विद्महे तीक्ष्णदंष्ट्राय
धीमहि। तन्नो भैरवः प्रचोदयात् — वनदु. १४२
क्षेत्रं क्षत्रं वै मायैषा सम्पद्यते — नृ.पू. ५।३
क्षेत्रं क्षेत्रज्ञमेव च — भ.गी. १३।२
क्षेत्रं क्षेत्री तथा कृत्स्नं — भ.गी. १३।३४
क्षेत्रेऽस्मिंस्तव देवेश यत्रकुत्रापि
वा मृताः। कृमिकीटादयो-
ऽप्याशु मुक्ताः संतु नचान्यथा — रामो. ३।४
क्षेम इति वाचि योगक्षेमइतिप्राणाः — तैत्ति. ३।१०।२
क्षौराभ्यङ्गस्नानोर्ध्वपुंड्रादिकं विहाय,
लौकिकवैदिकमप्युपसंहृत्य...
प्रणवात्मकेन देहत्यागं करोति
यः सोऽवधूतः.. — तुरीया. ३
क्ष्मामेकांसलिलावसन्नांश्रुत्वा..स्वयं
भूत्वा वराहो जहार तस्मैदेवाय
सुकृताय पित्रे स्वाहा — पारमा. ६।४

ख

खजाग्नियोगाद्धृदि सम्प्रयुक्तमणो- र्ह्यणुर्द्विरणुः कण्ठदेशे। जिह्वाग्र- देशे त्र्यणुकं च विद्धि.. मैत्रा. ७।११

खद्गत्वेनैव लोहता। तद्वदात्मनि देहत्वं पश्यत्यज्ञानयोगतः यो.शि. ४।२४

खण्डज्ञानेन सहसाजायते क्लेशवत्तरः यो.शि. १।६२

खमध्ये कुरु चात्मानमात्ममध्ये च खं कुरु। सर्वं च खमयं कृत्वा न किञ्चिदपि चिन्तय शांडि.१।७।१९

खरैर्वराहैर्युक्तैर्याति कृष्णां धेनुं.. नलदमाली भ्राजयति (स्वप्ने) ३ ऐत. २।४।७

खल्वेतदुपनिषदं विद्वान्य एवं वेद आरुणि. ५

खल्वात्मनाऽऽत्माऽमृताख्यः.. मैत्रा. ६।७

(अथो) खल्विन्द्रः सत्यादेव नेयाय सत्यं हीन्द्रः स होवाच मामेव विजानीहि कौ. त. ३।१

(अथ) खल्वियं ब्रह्मविद्या सर्वोपनिष- द्विद्या वा राजन्नस्माकं...मैत्रेयेण व्याख्याताऽहं ते कथयिष्यामि मैत्रा.२।३

(ॐ३)खंब्रह्म खंपुराणं वायुरंखमिति ह स्माह कौरव्यायणीपुत्रः बृह. ५।१।१

खं मनो बुद्धिरेव च भ. गी. ७।४

खं वायुरापो ज्योतिः पृथिवी विश्वस्य धारिणी। पुरुष एवेदं विश्वं तपो ब्रह्म परामृतमिति ग. पू. १।४

खं वायुर्ज्योतिरापः पृथिवीन्द्रियं मनोऽन्नमन्नाद्वीर्यं तपो मंत्राः कर्म लोका लोके नाम च प्रश्नो. ६।४

खं वायुर्ज्योतिरापः पृथिवी विश्वस्य धारिणी नारा. १

खं वायुर्ज्योतिरापश्च पृथ्वी विश्वस्य.. कैव. १५

खादप्यतितरां सूक्ष्मं तद्ब्रह्मास्मि.. अ. पू. ५।६९

खादयश्चेतनापष्ठा धावव: आयुर्वे. १

खेचराधिपतिर्भूत्वा खेचरेषु सदा वसेत् योगकुं. २।१७

खेचरा भूचराः सर्वे... सध एव विमुच्यन्ते वराहो. ४।४४

खेचरावसथं वह्निमम्बुमंडल- खेचरीबीजं योगकुं. २।१७

खेचरीं तु समभ्यसेत् योगकुं. २।८२

खेचर्या मुद्रितं येन विवरं लम्बिको- र्ध्वतः। न तस्य क्षीयते बिन्दुः कामिन्यालिङ्गितस्यतु।यावद्विंदुः स्थितो देहे तावन्मृत्युभयंकुतः यो. चू. ५७

खेचर्या मुद्रितं येन विवरं लम्बि- कोर्ध्वतः। न पीयूषं पतत्यग्नौ न च वायुः प्रधावति यो. शि. ५।४१

खेदाह्लादौ न जानाति प्रतिबिम्ब- गतैरिव अ. पू. ५।९९

खे वै पश्यन्ति ते पदम् अ. शां. २८

ख्याप्यमानामजातिं तैरनुमोदामहे वयम्। विवदामो न तैः सार्धम्.. अ. शां. ५

ग

गकारः पूर्वरूपं, अकारो मध्यमरूपं गणप. ७

गगनसिद्धान्तः, अमृतकल्लोलनदी निर्वाणो. १

गगनं पवने प्राप्ते ध्वनिरुत्पद्यते महान्। घण्टादीनां प्रवाद्यानां नादसिद्धिरुदीरिता यो. चू. ११५

गगनाकारो नादः, एतत्सर्वो नादः, महानादः, स गणेशो महान्भवति ग. शो. २।२

गगने नीलिमासत्ये जगत्सत्यं.. ते. बि. ६।७६

गगनो मम त्रिशक्तिमायास्वरूपो नान्यो मदस्ति पा. ब्र. २

गङ्गायां सागरे स्नात्वा..ब्रह्मनाडी- विचारस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम् यो.शि.६।४१

गच्छतस्तिष्ठतः कार्यमुज्जायाख्यं तु कुम्भकम्। मुखेन वायुं संगृह्य घ्राणरन्ध्रेण रेचयत् यो. शि. १।९९

गच्छतस्तिष्ठतो वाऽपि...न विचारपरं चेतो यस्यासौ मृत उच्यते अ. पू. ५।१

गच्छतस्तिष्ठतो वाऽपि... नारसिंह- कृता गुप्तिर्वासुदेवमयोऽस्म्यहम् विष्णुह. ११२

गच्छन्त्यस्मिन्नागच्छन्त्यस्मादिमाः प्रजास्तस्माद्भारकत्वाद्भर्गः — मैत्रा. ६।७
गच्छन्त्यपुनरावृत्तिं — भ. गी. ५।१७
गच्छन्त्यमूढाः पदमव्ययं तत् — भ.गी. १५।५
गच्छंस्तिष्ठन्निमिषन्नुन्मिषन्वाऽस्वपञ्चा- माल्लिङ्गधारी शुचिः स्यात् — सि. शि. ११
गच्छंस्तिष्ठन्नुपविशञ्छयानो वा- ऽन्यथापिवा । यथेच्छया वसे- द्विद्वानात्मारामः सदा मुनिः — कुण्डिको. २८
गच्छंस्तिष्ठन् स्वपन् भुञ्जन्ध्यायेन्नि- श्चलमीश्वरम् । स एव लययोगः.. — यो. त. २३
गच्छेत्सूर्यसंसदम् (सूर्योपासनेन) — सूर्यता. ६।९
गणादिं पूर्वमुच्चार्य वर्णादिं तदनन्तरम् — गणप. ७
गणानां त्वं गणपतिः स प्रियाणां त्वं प्रियपतिः, स निधीनां त्वं निधिपतिः — ग. शो. २।१
गणानां त्वा गणपतिं हवामहे.. — त्रि.ता. ३।४
[वनदु.८+ऋ.ब्र.२।६।२९+ — =मं. २।२३।१
[वा.सं.२३।१९+ — तै.सं.२।३।१।४
गणानां त्वा गणनाथं सुरेन्द्रं कविं कवीनामतिमेधविग्रहम् । ज्येष्ठ- राजं वृषभं केतुमेकं सा नः शृण्वन्नूतिभिः सीद शश्वत् — ग.पू. १।१०
गणेश उवाच- महेहे ब्रह्माण्डान्तर्गतं विलोक्य तथाविधामेव सृष्टिं कुरु (हे ब्रह्मन्) — गणेशो. ३।५
गणेशतापिनीयोपनिषदध्यापकसमं मंत्रराजजापकस्य — गणेशो. ५।५
गणेशो वै ब्रह्म — गणेशो. ३।१
गणेशो वै सदजायत — गणेशो. ४।१
गण्डौ स्यातां तपोलोकसत्य- लोकौ यथाक्रमम् — गुह्यका. १२
गतसङ्गस्य मुक्तस्य — भ.गी. ४।२३
गतागतं कामकामा लभंते — भ.गी. ९।२१
गतासूनगतासूंश्च — भ.गी. २।११
गताः कलाः पञ्चदश प्रतिष्ठा देवाश्च सर्वे प्रतिदेवतासु । कर्माणि विज्ञानमयश्च आत्मा परे- ऽव्यये सर्व एकीभवन्ति — मुण्ड.३।२।७

गतिरितिपादयोः,विमुक्तिरितिहस्तयोः — तैत्ति.३।१०।१
गतिश्चैषाविदांचात्रनाज्ञस्तज्ज्ञातुमर्हति — आयुर्वे. २८
गतिर्भर्ता प्रभुः साक्षी — भ. गी. ९।१८
गत्वाऽपि मातरं मोहादगम्याश्चैव योषितः । उपास्यानेन मंत्रेण रामस्तदपि नाशयेत् (पापं) — रामो. ५।१६
गदाचक्रालिकासाक्षात्सर्वशत्रुनिबर्हणी — कृष्णो. २३
गन्तव्यदेशहीनोऽस्मि — मैत्रे. ३।२३
गन्तव्यमेवाप्येति योगंतव्यमेवास्तमेति — सुबालो. ९।८
गन्तुमिच्छन्ति ये केचित् परे ब्रह्मपदे लयम् । भवन्ति सिद्धयः सर्वा- स्तेषां विध्वंसकारकाः — अमन. १।७२
गन्धतन्मात्रमेतस्माद्भूमिसंवित्ततोभवेत् — महो. ५।१५१
गन्धद्वारांदुराधर्षांनित्यपुष्टांकरी- षिणीम् ।... — महाना. ५।७
[+वनदु. १२७+ २शिवसं.३६ — +श्री.सू. ९
गन्धद्वारेति गोमयम् — बृ. जा. ३।७
गन्धर्वे इत्यप्सरसः (उपासते) — मुद्गलो. ३।२
गन्धर्वनगरं यथा । तथा विश्वमिदं दृष्टं वेदान्तेषु विचक्षणैः — वैतथ्य. ३१
गन्धर्वनगरे सत्ये जगद्भवति सर्वदा — ते. बिं. ६।७५
गन्धर्वयक्षासुरसिद्धसङ्घाः — भ.गी.११।२२
गन्धर्वाणां चित्ररथः — भ.गी.१०।२६
गन्धर्वाणां पुरं यथा । यथाऽऽकाशे द्विचन्द्रत्वं तद्वत्सत्ये जगत्स्थितिः — यो.शि.४।१६
गन्धर्वाप्सरसः किन्नरा वादित्रवादिनः समन्तादजीजनन् — बह्वृचो. १
गन्धलेपनमशुद्धलेपनमिव क्षारमंत्यज- मिव..क्षियमहिमिव (त्यजेद्यतिः)
[ना. प. ७।१+ — १सं.सो.२।७९
गन्धवतीयं भूमिर्गन्धभूमिभ्यां भिन्ना — गोपालो. १।९
गन्धं सर्वमसद्विद्धि सर्वाज्ञानमस- न्मयम् । असदेव सदा सर्वम्.. — ते. बिं. ३।५८
गन्धः पुष्पेषु भूतेषु तथाऽऽत्मा- ऽवस्थितो ह्यहम् — वासुदे. १०
गमनविरोधं न करोति (परिव्राट्) — ना.प. ९।२१
गमनादिविवर्जितः । सर्वदा समरूपो- ऽस्मि शान्तोऽस्मि पुरुषोत्तमः — मैत्रे. ३।२३

गमागमस्थं गमनादिशून्यमोङ्कारमेकं रविकोटिदीप्तिम्। पश्यन्ति ये... हंसात्मकं ते विरजा भवन्ति — ध्या.बि.२४

गमागमस्थं गमनादिशून्यं चिद्रूपदीपं ..पश्यामि तं सर्वजनान्तरस्थं नमामि हंसं परमात्मरूपम् — ध्या. बि. २४

गम्भीरनाभिकमलः सुमुखना-सायुगलो.. महाविष्णुरास्ते — राधोप. ३।१

गरीयसे ब्रह्मणोऽप्यादिकर्त्रे — भ.गी.११।३७

गरुडो ब्रह्म विष्णुश्च नारसिंहस्तथैव च। आदित्योऽग्निश्च दुर्गिश्च.. — महाना.६।१२

गरुडो वटमाण्डीरः सुदामा नारदो मुनिः। वृन्दा भक्तिः क्रिया बुद्धिः.. — कृष्णो. २४

गर्जति गायति वाति वर्षति वरुणोऽर्यमा...कला कलिर्धाता ब्रह्मा प्रजापतिर्मघवा..ऊर्ध्वं च दिशश्च सर्वं नारायणः — सुबालो.६।१

गर्तमिव पतति यदेव जाग्रद्भयं पश्यति तदत्राविद्यया मन्यते — बृह.४।३।२०

गर्दभीतरा गर्दभ इतरस्ता ँ समेवाभवत्तत एकशफमजायत — बृह. १।४।४

गर्भ इव सुभृतो गर्भिणीभिः। दिवे दिवईड्यो जागृवद्भिर्मनुष्येभिरग्निः.. — कठो. ४।८

गर्भ एवैतच्छयानो वामदेव एवमुवाच — २ऐत. ४।५

गर्भजन्मजरामरणसंसारमहद्भयात्सन्तारयति तस्मादुच्यते षडक्षरं तत्तारकम् [अद्वयता.१+ — रामो. १।२

गर्भजन्ममरणसंसारमहद्भयात्तं तारयति। तारकमित्येतत्तारकं ब्राह्मणो नित्यं महीयते — श्रीवि.ता.१।२

गर्भवासभयाद्भीतः...गुहां प्रवेष्टुमिच्छामि परं पदमनामयम् — २सन्न्यासो.९

गर्भं धेहि सिनीवालि..[बृ.६।४।२१+ [=मं.१०।१८४।२+ — ऋ.ख.८।८।४२ अथर्व.५।२५।३

गर्भा इव मातरमभिजिघांसुः परस्तादोङ्कारप्रयुक्तयैतयैव ऋचा प्रत्याप्याययेत् — २ प्रणवो. ४

गर्भे नु सन्नन्वेषाम वेदमहं देवानां जनिमानि विश्वा। शतं मा पुर आयसीररक्षन्.. — २ ऐत. ४।५

गर्वो रक्षः खगो बकः, दया सा रोहिणी माता सत्यभामा धरेति वै — कृष्णो. ४ १

गल-वदन-नाभि-हृदय-भ्रूमध्यं स्थानम् (अन्तःकरणस्य) — पैङ्गलो. २।४

गलितद्वैतनिर्भासो मुदितोऽन्तःप्रबोधवान्। सुषुप्तमन एवास्ते पञ्चमीं भूमिकां गतः — अक्ष्युप. ३८

गलितोऽपि यदा बिन्दुः सम्प्राप्तो योनिमण्डले। व्रजत्यूर्ध्वं हठाच्छक्त्या निबद्धो योनिमुद्रया — ध्या. बि. ८५

गवामनेकवर्णानां क्षीरस्याप्येकवर्णता। क्षीरवत्पश्यते ज्ञानं (पश्यतिज्ञानी) ..गवां यथा.. [ब्र.बि. १९+ — त्रि.ता.५।१९

गवा त्वा हिङ्कारेणाभिहिंकरोमीति त्रिरस्य मूर्धानमभिहिंकुर्यात् — कौ. उ. २।११

गहना कर्मणो गतिः — भ.गी. ४।१७

गाणपत्यादिमन्त्रेषु..सफलोऽयंषडक्षरः — रामो. ५।५

गाणपत्येषु शैवेषु...राममंत्रः फलाधिकः — रामो. ५।४

गाण्डीवं संस्रते हस्तात् — भ. गी. १।२९

गातुं यज्ञाय गातुं यज्ञपतये दैवी.. [ऋ. खि. १०।१९१।५ — चित्यु. शां.

गात्रसंवाहनं रात्रौ पादाभ्यङ्गं च यत्नतः। प्रातः प्रसाधनं दत्त्वा कार्यं सम्मार्जनाशनम्(गुरोः) — शिवो. ७।३३

गानानन्दे लीयते विश्वमेतत् — गान्धर्वो. ९

गान्धर्वी राधिका धन्या रुक्मिणी परमेश्वरी। इत्येतानि तु नामानि यः पठेत्स मुक्तो भवति — राधिको. ७

गान्धारग्रामनादं हि गानमित्यभिधीयते। तेन ब्रह्मादिकीटान्ता विदन्त्यानन्दमाधुरीम् — गान्धर्वो. ८

गान्धारायाः सरस्वत्यामध्येप्रोक्ता च शङ्खिनी । अलम्बुसा स्थिता पायुपर्यन्तं कन्दमध्यगा जा.द. ४।१७
गान्धारा सव्यनेत्रान्ता प्रोक्ता वेदान्तवेदिभिः जा. द. ४।२२
गान्धारा हस्तिजिह्वा च इडायाः पृष्ठपार्श्वयोः । पूषा यशस्विनी चैव पिङ्गला पृष्ठपूर्वयोः जा. द. ४।१४
गान्धारी चन्द्रदेवता । शंखिन्या-श्चन्द्रमास्तद्वत्पयस्विन्याःप्रजापतिः जा. द. ४।३८
गान्धारीसरस्वतीमध्ये यशस्विनी.. शांडि. १।४।६
गान्धारी हस्तिजिह्वा च..नेत्रद्वयं गते यो.शि. ५।२१
गान्धारी हस्तिजिह्वा च द्वे चान्ये नाडिके स्थिते । पुरतः पृष्ठतस्तस्य ..पूषा यशस्विनी नाड्यौ.. त्रि.ब्रा. २।७१
गाभिर्जुष्टमयुजो निषिक्तं तवेन्द्र-विष्णोरनु संचरेम । नाकस्य पृष्ठमभि संवसामो वैष्णवी-लोक इह मादयन्ताम् वनदु. १२०
गामाविश्य च भूतानि भ.गी. १५।१३
गायत्रमन्वेव गायत्रीमन्वेव त्वा सर्व-रूपमिमं कृत्वा हिंकुर्वन्ति । शौनको. २।२
गायत्रं छन्दं परमात्मं स्वरूपं महाना. ११।५
गायत्रं प्रातःसवनं छान्दो.३।१६।१
गायत्रं हि छन्दः, गायत्री वै देवा-नामेकाक्षरा श्वेतवर्णा व्याख्याता २प्रणवो. १८
गायत्री कत्यक्षरा कतिपदा किंवा-ऽस्या गोत्रं किं वाऽस्या रूपं कीदृशं तस्याः शरीरं भवति सन्ध्यो.१९
गायत्री चतुर्विंशत्यक्षरा त्रिपदा षट्कुक्षिः पंचशीर्षा.. महाना. ११।७
गायत्री छन्दसामहम् भ.गी. १०।२५
गायत्री छन्दसां मातेदं ब्रह्म जुषस्व मे महाना. ११।६
गायत्री त्रिष्टुप् जगत्यनुष्टुप्पंक्ति-बृहत्युष्णिगदितिरिति त्रिरा-वृत्तेन छंदांसि प्रतिपाद्यन्ते गायत्रीर. ८
गायत्री प्रातः, सावित्री मध्यं-दिने सरस्वती सायमिति निरन्तरमजपा.. त्रि. ता. ४।७
गायत्रीमावाहयामि सावित्रीमावा-हयामि सरस्वतीमावाहयामि महाना. ११।७
गायत्रीमेव सावित्रीमनुब्रूयात् बृह. ५।१४।५
गायत्रीमेवानुब्रूयात् गायत्र्यु. ४
गायत्री वा इदं सर्वं भूतं यदिदं किञ्च छांदो.३।१२।१
गायत्री वा इदं सर्वं यदिदं किञ्च नृ. पू. ४।३
गायत्री वै देवानामेकाक्षरा श्वेतवर्णा च व्याख्याता २प्रणवो. १८
गायत्रीं च स्ववाचाऽग्नौ समारोपयेत् आरुणि. २
गायत्रीं य उपासते ते सूर्यमण्डलं लयं यान्ति सामर. २७
गायत्रो ब्राह्मणः प्राजापत्यो बृहन्निति (ब्रह्मचारिणश्चतुर्विधाः) आश्रमो. १
गायत्र्यहंसावित्र्यहं,त्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप् चाहं, छन्दोऽहं, गार्हपत्यो दक्षि-णाग्निराहवनीयोऽहं सत्योऽहम् अ.शिरः. १
गायत्र्या अक्षमालायां सायं प्रातः शतं जपेत् । चतुर्णां खलु वेदानां समग्रं लभते फलम् सन्ध्यो. १४
गायत्र्या गायत्रीछन्दः, विश्वामित्रऋषिः सविता देवताऽग्निर्मुखं, ब्रह्मा शिरः, विष्णुर्हृदयं, रुद्रः शिखा, पृथिवी योनिः महाना. ११।७
गायत्र्या लोकाः (भवन्ति) बटुको. २७ [अ. शिरः.३।१५+
गायत्र्या शतसहस्रं जप्तं भवति दत्तात्रे. ३।१
गायत्र्याःषष्टिसहस्राणिजप्तानि भवन्ति (तत्तदुपनिषत्पठनेन) [अ.शिरः.३।१६ +चतुर्वे. ७
गायत्र्याः सावित्र्यभवत् । सावित्र्याः सरस्वत्यभवत् । सरस्वत्याः सर्वे वेदा अभवन् गायत्रीर. १
गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदसि, न हि पद्यसे बृह. ५।१४।७
गायत्र्यैकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदा सा नहि पद्यते गायत्र्यु. ५

गार्गि मातिप्राक्षीर्मा ते मूर्धा व्यपप्त-
द्नतिप्रश्न्यांवैदेवतामतिपृच्छसि बृह. ३।६।१
गार्ग्यो ह वै बालाकिरनूचानः
संस्पृष्ट आस कौ.उ. ४।१
गार्हपत्यदक्षिणाग्न्याहवनीयेष्वरणि-
देशाद्ब्रह्मसुष्टिं पिबेदित्येके कठरु. २
(अथ)गार्हपत्यो दक्षिणाग्निराहव-
नीयइतिमुखवत्येषाऽग्निब्रह्मरस्यमूर्तिः मैत्रा. ६।५
गार्हपत्यो दक्षिणाग्निराहवनीयोऽहं
सत्योऽहं गौरहं गौर्यहमृगहं
यजुरहं सामाहमथर्वाङ्गिरसोऽहं..
यो मां वेद स सर्वान् देवान्वेद
सर्वांश्च वेदान् अ.शिरः. १।१
गार्हपत्योहवाएषोऽपानोव्यानोऽन्वा-
हार्यपचनो यद्गार्हपत्यात्प्रणीयते,
प्रणयनादाहवनीयः प्राणः प्रश्नो. ४।३
गावउद्गीथोश्वाःप्रतिहारःपुरुषोनिधनं छान्दो.२।१८।१
गावो भगो गावइति प्राशयेत्तर्पणं
जलम्। उपोष्य च चतुर्दश्यां
कृष्णे शुक्लेऽथवा व्रती बृ. जा. ३।४
गावो ह जज्ञिरे तस्मात् [वा.सं.३१।८+ चित्यु. १२।५
[+ऋ. अ. ४।८।१८= मं.१०।९०।९
गावो हिरण्यं धनमन्नपान९
सर्वेषा९ श्रियै स्वाहा महाना. १४।५
गां च योऽव्यभिचारेण भ.गी.१४।२६
गिरति ह वै द्विषन्तं पाप्मानं
भ्रातृव्यं पराऽस्य द्विषन् पाप्मा
भ्रातृव्यो भवति १ऐत. १।८।२
गिरामस्म्येकमक्षरम् भ.गी.१०।२५
गिरांमौनंतुबालानामयुक्तंब्रह्मवादिनाम् ते.बिं. १।२२
गिरिकन्दरेषु वसेदेक एव द्वौ वाचरेत्।
ग्रामं त्रिभिर्नगरं चतुर्भिर्ग्राम-
मित्येकश्चरेत् (यतिः) ना.प. ७।२
गुञ्जापुञ्जादि दह्येत नान्यारोपित-
वह्निना। नान्यारोपितसंसारधर्मा.. १अवधू. १५
गुडाकेशः परंतपः भ.गी. २।९
गुडाकेशेन भारत भ.गी. १।२४
गुणकर्मविभागयोः भ.गी. ३।२८
गुणकर्मविभागशः भ.गी. ४।१३
गुणतस्त्रिविधं शृणु भ.गी. १८।२९
गुणत्रयमयीं रज्जुं सुदृढामात्मबन्धि-
नीम्। अमनस्कक्षुरेणैव छित्त्वा
मोक्षमवाप्नुयात् अमन. २।८७
गुणत्रयमसद्विद्धि ह्यहं सत्यात्मकः
शुचिः। श्रुतं सर्वमसद्विद्धि वेदं
सर्वमसत्सदा।.. ह्यहं सत्य-
चिदात्मकः ते.बिं. ३।४९
गुणत्रयमिदं धेनुर्विद्याऽभूद्रोमयं
शुभम्। मूत्रं चोपनिषत्प्रोक्तं
कुर्याद्भस्म ततः परम् बृ. जा. ३।२
गुणत्रययुक्तं कारणं (शरीरं) यो. चू. ७२
गुणत्रयाश्रया विद्या सा विद्या च
तदाश्रया। गुणत्रयमिदं धेनु-
र्विद्याऽभूद्रोमयं शुभम्।...
कुर्याद्भस्म ततः परम् बृ. जा. ३।१
गुणप्रवृद्धा विषयप्रवालाः भ. गी. १५।२
गुणबद्धस्तथा जीवः प्राणापानेन
कर्षति। प्राणापानवशो जीवो
ह्यधश्चोर्ध्वं च गच्छति यो. चू. २९
गुणवान्भवति, अगुणवान् भवति,
द्वैतो भवति, अद्वैतो भवति ग. शो. २।२
गुणःप्रकृतिभेदवशादध्यवसायात्म-
बन्धमुपगतोऽध्यवसायस्य
दोषक्षयाद्विमोक्षः मैत्रा. ६।१०
गुणा इति गुणविदस्तत्त्वानीति
च तद्विदः वैतथ्य. २०
गुणा गुणेषु वर्तन्ते भ. गी. ३।२८
गुणातीतः स उच्यते भ.गी. १४।२५
गुणानेतानतीत्य त्रीन् भ.गी. १४।२०
गुणान्वयो यः फलकर्मकर्ता कृतस्य
तस्यैव नचोपभोक्ता। स विश्व-
रूपस्त्रिगुणस्त्रिवर्त्मा प्राणाधिपः
सञ्चरति स्वकर्मभिः [श्वेता.५।७+ भवसं. २।२२
गुणा मे वै न संशयः (गणेशस्य) ग. शो. ४।९
गुणा वर्तन्त इत्येव भ. गी. १४।२३

गुणांश्च सर्वान् विनियोजयेद्यः श्वेता. ५।५
गुणाः प्रकृतिसम्भवाः भ. गी. १४।५
गुणेभ्यश्च परं वेत्ति भ.गी. १४।१९
गुणेशं मां सञ्चिन्त्य राजस(ब्रह्मन्) त्वं जगत्कुरु ग. शो. ४।९
गुणैरैक्यं सम्पाद्य महास्थूलं महासूक्ष्मे महासूक्ष्मं महाकारणे च संहृत्य मात्राभिरोतानुज्ञात्रनुज्ञाविकल्परूपं चिन्तयन् ग्रसेत् नृसिंहो. ३।४
गुणैर्यो न विचाल्यते भ. गी. १४।२३
गुणैः कर्माणि सर्वशः भ. गी. ३।२७
गुणो बुद्धिरहङ्कारस्तन्मात्राणीन्द्रियाणि च। भूतानि च चतुर्विंशदिति पाशाः प्रकीर्तिताः शिवो. १।११
गुणौघैस्तृप्यमानः कलुषीकृतश्चास्थिरश्चञ्चलो.. सस्पृहो..निबध्नात्यात्मनाऽऽत्मानं,जालेनेवखचरः... मैत्रा. ३।२
गुदमाकुञ्च्य यत्नेन मूलशक्तिं प्रपूजयेत्। नाभौ लिङ्गस्य मध्ये तु उड्याणाख्यं च बन्धयेत् यो. शि. ५।३७
गुदमेढ्रान्तरालस्थं मूलाधारं त्रिकोणगम्। शिवस्य जीवरूपस्य स्थानं तद्धि प्रचक्षते वराहो. ५।५० [+यो. शि. १।१६८+५।५
गुदमेढ्रोरुजानूदरवृषणकटिजंघानाभिगुदाग्न्यगारेष्वपानः सञ्चरति शांडि. १।४।७
गुदयोनिसमायुक्त आकुञ्चत्येककालतः। अपानमूर्ध्वगं कृत्वा समानोऽन्ने नियोजयेत् वराहो. ५।३८
गुदस्य पृष्ठभागेऽस्मिन् वीणादण्डः स देहभृत्। दीर्घास्थिदेहपर्यन्तं ब्रह्मनाडीति कथ्यते यो. शि. ६।८
गुदस्य पृष्ठभागे वीणादण्डाश्रिता मूर्धपर्यंतं ब्रह्मरन्ध्रेविज्ञेयाऽव्यक्ता सूक्ष्मा वैष्णवी भवति शाण्डि. १।४।६
गुदं नियम्य गुल्फाभ्यां व्युत्क्रमेण समाहितः। योगासनं भवेदेतत्.. त्रि.ब्रा. २।३८

गुदात्तुद्व्यंगुलादूर्ध्वं मेढ्रात्तु द्व्यंगुलादधः। देहमध्यं..अनुजानीहि.. जा.द. ४।२।३
गुदाद्व्यङ्गुलादूर्ध्वं मेढ्राद्व्यंगुलादधो देहमध्यं मनुष्याणां भवति शाण्डि.१।४।४
गुरुणा चोपदिष्टोऽपि तत्र सम्बंधवर्जितः। वेदोक्तेनैव मार्गेण मंत्राभ्यासो जपः स्मृतः जा.द. २।१३
गुरुणा दत्तमेवदन्नं परब्रह्म रुद्रोप. ३
गुरुणा दर्शिते तत्त्वे दर्शनात्तन्मयो भवेत्। विमुक्तं मन्येतात्मानं.. अमन.२।४५
गुरुणाऽपि विचाल्यते भ.गी.६।२२
गुरुतल्पगमनात्पूतो भवति ना. उ. ३।१
गुरुदेवात्परंनास्तितस्मात्तंपूजयेत्सदा अमन. २।४२
गुरुभक्तिः सत्यमार्गानुरक्तिः सुखागतवस्त्वनुभवश्च तद्वस्त्वनुभवेन तुष्टिर्निःसङ्गता... वैराग्यभावश्च नियमाः मं. ब्रा. १।१
गुरुभक्तिं सदा कुर्याच्छ्रेयसे भूयसे नरः। गुरुरेव हरिः साक्षान्नान्य इत्यब्रवीच्छ्रुतिः ब्र.वि. ३०
गुरुभक्त्या लभेज्ज्ञानं ज्ञानान्मुक्तिमवाप्नुयात् शिवो.७।७४
गुरुभैषज्यसिद्ध्यर्थमपि गच्छेद्रसातलम्। यदादिशेद्गुरुः किञ्चित्तत्कुर्यादविचारतः शिवो. ७।२९
गुरुमुखात्तत्त्वमसीति महावाक्यं प्रणवपूर्वकमुपलभ्य.. निर्ममोऽध्यात्मनिष्ठः..शरीरसन्धारणार्थं..भैक्षमाणो.. ब्रह्मभूयाय भवति प. हं. प. ६
गुरुरप्येवंविच्छुचौ देशे पुण्यनक्षत्रे प्राणानायम्य पुरुषं ध्यायन्... शिष्याय.. पुरुषसूक्तार्थमुपदिशेद्विद्वान् मुद्गलो.५।१
गुरुरहं, आचार्योऽहं, आगमोऽहम् अद्वै.भा. २
गुरुरेव परं धनम् [अद्वयता. १२ +द्वयो. ६
गुरुरेव परंब्रह्म गुरुरेव परा गतिः अद्वयता. ११
गुरुरेव परा विद्या [द्वयोप. ६+ अद्वयता. ११

गुरुरेव परः कामो गुरुरेव परायणः। यस्मात्तदुपदेष्टाऽसौ तस्माद्गुरु-तरो गुरुः — द्वयोप. ७
गुरुरेव परा काष्ठा — अद्वयता. १२
गुरुरेव परा गतिः [शाट्याय.३६+ — अद्वयता.११
गुरुरेव परायणम् — अद्वयता.११
गुरुरेव परा विद्या गुरुरेव परं धनम् — द्वयोप. ६
गुरुरेव परो धर्मो गुरुरेव परा गतिः — शाट्याय. ३६
गुरुरेव पिता माता गुरुरेव परः शिवः — शिवो. ७।३८
गुरुरेवहरिःसाक्षान्नान्यइत्यब्रवीच्छ्रुतिः — ब्र.वि. ३१
गुरुरेवंविधः श्रीमानित्यं तिष्ठेत् समाहितः — शिवो. ७।४५
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवः सदाशिवः। न गुरोरधिकःकश्चित् त्रिषुलोकेषु.. — यो.शि.५।५६
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुदेवात्परंनास्तितस्मात्तंपूजयेत्.. — अमन. २।४२
गुरुवक्त्रात्तुलभ्येतप्रत्यक्षंसर्वतोमुखम् — ब्र. वि. ३४
गुरुवद्गुरुभार्यायां तत्पुत्रेषु च वर्तनम् — पैङ्गलो. ४।८
गुरुवाक्यसमाभिन्ने ब्रह्मज्ञानं प्रकाशते। कर्णधारं गुरुं प्राप्य तद्वाक्यं प्लववद्दृढम्। अभ्यासवासनाशक्त्या तरन्ति भवसागरम् — यो.शि.६।७८
गुरुवाक्यसमाभिन्नेब्रह्मज्ञानंस्फुटीभवेत् — योगकुं.३।१७
गुरुवाक्यसमुद्भूतस्वानुभूत्यादि-शुद्धया। यस्याभ्यासेन तेनात्मा सततं चावलोक्यते — महो. ४।२६
गुरुवाक्यात्सुषुम्नायां विपरीतो भवे-ज्जपः। सोऽहं सोऽहमिति प्रोक्तो मंत्रयोगः स उच्यते — यो.शि.१।१३
गुरुशास्त्रोक्तभावेन भिक्षोर्भैक्ष्यं विधीयते — मैत्रे. २।१०
गुरुशास्त्रोक्तमार्गेण स्वानुभूत्या च चिद्घने। ब्रह्मैवाहमिति ज्ञात्वा वीतशोको भवेन्मुनिः — महो.२।२५
गुरुशिष्यमसद्विद्धि गुरोर्मंत्रमस-त्ततः। यद्दृश्यं तदसद्विद्धि न मां विद्धि तथाविधम् — ते.बिं.३।५२
गुरुशिष्यसंज्ञाविनिर्मुक्तः सर्वसंसारं विसृज्य चामो-हितः परिव्राट्... — ना.प. ९।२२
गुरुशिष्यादिभेदेन ब्रह्मैव प्रति-भासते। ब्रह्मैव केवलं शुद्धं विद्यते तत्त्वदर्शने — २ आत्मो. ३
गुरुशुश्रूषानिरतः पितृमातृविधेयः वेदान्तश्रवणंकुर्वन्योगं समारभेत् — शाण्डि. १।५।१
गुरुसम्भवात्मकं लिङ्गं प्रगुरोः — लिङ्गोप.२
गुरुस्त्वं जनकस्त्वं सर्वविद्यारहस्यज्ञः सर्वज्ञस्त्वमतो मत्तो मदिष्टं रहस्यं ...त्वद्विना वक्तुं कः समर्थः — ना.प. २।१
गुरुः शिव एव लिङ्गं, उभयोर्मिश्र-प्रकाशत्वात् — रुद्रोप. ३
गुरूणां च हिते युक्तस्तत्र संवत्सरं वसेत्। नियमेष्वप्रमत्तस्तु... — ना.प. ६।२२
गुरूणां सर्वज्ञानिनां गुरुणादत्तमेत-दूर्ध्व परब्रह्म — रुद्रोप. ३
गुरूनहत्वा हि महानुभावान् — भ. गी. २।५
गुरूपदिष्टमार्गेण ध्यायन्..मत्स्वायुष्यं द्विजः सम्यग्भजेद्भ्रमरकीटवत् — मुक्तिको.१।२१
गुरूपदिष्टमार्गेण ध्यायन्नाममन-न्यधीः।..गोब्राह्मणसमीपतः — रामर. ४।४
गुरूपदेशश्रवणाच्छिष्यस्तत्त्वमयो भवेत्। तस्मादुपासितात्सम्यक् सहजं प्राप्यते गुरोः — अमन. २।४६
(तथा) गुरूपदेशेन विना कल्प-कोटिभिस्तत्त्वज्ञानं नविद्यते। — त्रि.म. ना. ५।१
गुरोर्गुरुस्तयोः पूज्यः स्वगुरुश्च तदाज्ञया — शिवो. ७।२२
गुरोर्न खण्डयेदाज्ञामपि प्राणान् परित्यजेत्। कृत्वाऽज्ञां प्राप्नु-यान्मुक्तिं लङ्घयन्नरकं व्रजेत् — शिवो. ७।२८
गुरोर्निन्दापवादं च श्रुत्वा कर्णौ पिधापयेत्। अन्यत्र नैव सर्पेत्तु निगृह्णीयादुपायतः — शिवो. ७।२६
गुरौ द्वैतमवश्यं कार्यम्, यतो न तस्मादन्यत् — स्वसंवे. ४

गुर्वर्थं ग्राममुपेत्य ध्रुवशीलोऽष्टौ मास्येकाकी चरेद्द्वावेवाचरेत् — प. हं. प. ७

गुर्वाज्ञया कर्म कृत्वा तत्समाप्तौ निवेदयेत्। कृत्वा च नैत्यकं सर्वमधीयीताज्ञया गुरोः — शिवो. ७।२५।

गुरुं च शिववद्भक्त्या नमस्कारेण पूजयेत्। कृत्वाञ्जलित्रिसन्ध्यंच भूमिविन्यस्तमस्तकः — शिवो. ७।५

गुरुः शिवो देवः,गुरुःशिवएवलिङ्गम् — रुद्रोप. ३

गुरुः साक्षादादिनारायणः पुरुषः — त्रि. म. ना.८।६

गुल्फौ च वृषणस्याधः सीवन्युभय-पार्श्वयोः।... भद्रासनं भवेत् — त्रि. ब्रा. २।४५

गुल्फौ तु वृषणस्याधः सीवन्याः पार्श्वयोः क्षिपेत्[जा.द.३।७+ — शांडि. १।३।८

गुशब्दस्त्वन्धकारः स्याद्रुशब्दस्तन्नि-रोधकः। अन्धकारनिरोधित्वा-द्गुरुरित्यभिधीयते [द्वयो. ५+ — अद्वयता. १०

गुहाग्रन्थिभ्यो विमुक्तोऽमृतोभवति — मुण्ड. ३।२।९

गुहायां निहितं साक्षादक्षरं वेद चेन्नरः। छित्त्वाऽविद्यामहा-ग्रन्थिं शिवं गच्छेत्सनातनम्। तदेतदमृतं सत्यं.. — रुद्रहृ. ३६

गुहाशया निहिताः सप्त सप्त — मुंड. २।१।८

गुहाहितं गह्वरेष्ठं पुराणम्। अध्यात्म-योगाधिगमेन देवं मत्वा धीरो हर्ष-शोकौ जहाति — कठो. २।१२

गुहां प्रविश्य तिष्ठन्तं यो भूतेभि-र्व्यपश्यत। एतद्वै तत् — कठो. ४।६

गुहां प्रविश्य तिष्ठन्तीं या भूतेभिर्व्यजायत। — कठो.४।७

गुहां प्रविष्टौ परमे परार्धे। छायातपौ ब्रह्मविदो वदन्ति पञ्चाग्नयो ये च त्रिणाचिकेताः — कठो. ३।१

गुह्यमध्यात्मसंज्ञितम् — भ.गी. ११।१

गुह्यं ब्रह्म सनातनम्। यथा च मरणं प्राप्य आत्मा भवति गौतम। योनिमन्ये प्रपद्यन्ते शरीरत्वाय देहिनः — कठो. ५।६,७

गुह्या एवादेशा मधुकृतो ब्रह्मैव पुष्पं ता अमृता आपः — छां.उ. ३।५।१

गुह्याच्छादकं कौपीनमोमिति (गृहीत्वा).. कृतार्थोऽहमिति मत्वा स्वाश्रमाचारपरो भवेत् — ना.प. ४।५०

गुह्याद्गुह्यतरं मया — भ.गी. १८।६३

गुह्याद्गुह्यतरा विद्या न देया यस्य कस्यचित्। एतज्ज्ञानी वसेद्यत्र स देशः पुण्यभाजनम् — अमन. २।१२

गुह्याद्गुह्यपरमेषानप्राकृतायोपदेष्टव्या — महावा. १

गुह्योपनिषदित्येषा गोप्याद्गोप्यतरा सदा। चतुर्भ्यश्चापि वेदेभ्य एकीकृत्यात्र योजिता — गुह्यका. ७७

गुह्योऽहमरण्योऽहमक्षरमहंक्षरमहं.. — अ.शिरः.१।१

गूढधर्माश्रितोविद्वानज्ञातचरितंचरेत्। तं दृष्ट्वा शान्तमनसं स्पृहयन्ति दिवौकसः — ना. प. ४।३५

गृहत्वेन हि काष्ठानि खड्गत्वेनैव लोहता। तद्वदात्मनि देहत्वं पश्यत्यज्ञानयोगतः — यो.शि.४।२४

गृहस्थशतमेकमेकेन वानप्रस्थेन तत्समं, वानप्रस्थशतमेकमेकेन यतिना तत्समम् — नृ.पू. ५।१६

गृहस्था अपि चतुर्विधा भवन्ति वार्ताकवृत्तयः शालीनवृत्तयो यायावरा घोरसन्न्यासिकाश्चेति — आश्रमो. २

गृहस्थानां निर्मला विभूतिः, तप-स्विभिः सर्वभस्म धार्यम् — रुद्रोप. १

गृहस्थो ब्रह्मचारी च वानप्रस्थश्च भिक्षुकः। यत्र यत्र स्थितो ज्ञानी.. — ब्र.वि.४९

गृहस्थो ब्रह्मचारी वा वानप्रस्थो वा उपवीतं भूमावप्सु वा विसृजेत्। — आरुणि.२

गृहस्थो ललाटादिस्थलेष्वनामिका-ङ्गुल्या विष्णुगायत्र्या...धारयेत् — गोपीचं.४

गृहं गृहपतिरिव देही देहान्ते परमा-त्मानं प्रविशति — हयग्री.६

गृहाद्वनी भूत्वा प्रव्रजेत् । यदि वेत-
रथा ब्रह्मचर्यादेव प्रव्रजेद्गृहाद्वा
वनाद्वा [ना.प.३।७७+याज्ञ.१+ प. हं. प.१
गृहाभिमानेन गृहस्थ इव शरीरे
जीवः संचरति ना.प. ६।४
गृहीततृष्णाशबरीवासनाजालमा-
ततम् । संसारवारिप्रसृतं चिन्ता-
तन्तुभिराततम् । अनया तीक्ष्णया
तात छिन्धि बुद्धिशलाकया महो.६।२१
गृहीतं वापि यत्किञ्चित्प्रतिबुद्धो
न पश्यति (स्वप्ने) अ.शां. ३५
गृहीता वाग्गृहीतं चक्षुर्गृहीतं श्रोत्रं
गृहीतं मनः । स यत्रैतत्स्वप्नाया-
चरति ते हास्य लोकास्तदुतेव.. बृह.२।१।१७
गृहीत्वाऽष्टोत्तरशतं ये पठन्ति...
प्रारब्धक्षयपर्यंतं जीवन्मुक्ता
भवन्ति ते मुक्तिको.१।४२
गृहीत्वैतानि संयाति भ.गी.१५।८
गृही पुत्रपौत्रमैश्वर्यवान्भवति ना.उ.ता.३।१
गृही भूत्वा वनी भवेत्, वनी भूत्वा
प्रव्रजेत्, यदि वेतरथा ब्रह्म-
चर्यादेव प्रव्रजेद्गृहाद्वा वनाद्वा जाबा. ४
गृह्यमाणे घटे यद्वन्मृत्तिका भाति वै
बलात् । वीक्ष्यमाणे प्रपञ्चे
तु ब्रह्मैवाभाति... यो.शि.४।१९
गोअश्वमिह महिमेत्याचक्षते
हस्तिहिरण्यं दासभार्यं
क्षेत्राण्यायतनानीति छान्दो.७।२४।२
गोअश्वानां दासीनां प्रवाराणां
परिधानस्य मा नो भवान्
बहोरनन्तस्या..भ्यवदान्योऽभूत् बृह.६।२।७
गोकुलं वनवैकुण्ठंतापसास्तत्र ते द्रुमाः कृष्णो.९
गोकुलाढ्ये माथुरमण्डलेगोविन्दोऽपि
निर्गुणः सगुणो निराकारः
साकारो निरीहः ..विराजते राधोप.१।४
गोकुलोऽयमग्नेः संयोगादेवाभाति सामर.३२
गोदोहदोहनं यावत्सकाले ह्यचरं
स्थितम् । धारणां धारयेद्योगी
नित्यसत्यात्मचिन्तकः योगो. २७

गोदोहमात्रमाकाङ्क्षेन्निष्क्रान्तो न
पुनर्व्रजेत् । (भिक्षार्थी यतिः) १सं. सं.२।६१
गोपगोपीगवावीतं सुरद्रुमतलाश्रितं ।
..चिन्तयंश्चेतसा कृष्णं मुक्तो
भवति संसृतेः गो. पू. ११६
गोपरूपो हरिः साक्षान्मायाविग्रह-
धारणः । दुर्बोधं कुहकं तस्य
मायया मोहितं जगत् कृष्णो. १७
गोपालसदृशं क्षीरे नापि मध्ये न
चाप्यधः । ब्रह्मपुच्छं प्रतिष्ठेति.. १अव्यू. ४
गोपालं सानुजं कृष्णं रुक्मिण्या
सह तत्परम् गोपालो. २१८
गोपालोऽहमजो नित्यः प्रद्युम्नो- गोपालो. २१८
ऽहं सनातनः । रामोऽहं..
आत्मानं चार्चयेद्बुधः
गोपीचन्दनखण्डं तु चक्राकारं
सुलक्षणम् । विष्णुरूपमिदंपुण्यं.. गोपीचं. २१
गोपीचन्दनदानस्य चाश्वमेधसमं
फलम् ।..नशुद्धिर्गोपिचन्दनात् गोपीचं. २०
गोपीचन्दनपङ्केन ललाटं यस्तु
लेपयेत् । एकदण्डी त्रिदण्डी
वा स वै मोक्षं समश्नुते गोपीचं. ९
गोपीचन्दन पापघ्न विष्णुदेहसमु-
द्भव । चक्राङ्कित नमस्तुभ्यं
धारणान्मुक्तिदो भव[वासुदे.३+ गोपीचं. २
गोपीचन्दनमायुष्यं..कामदं मोक्षदं
चैव इत्येवं मुनयोऽब्रुवन् गोपीचं. १४
गोपीचन्दनमित्युक्तं..कृष्णगोपी-
जलक्रीडाकुंकुमं चंदनैर्युतम् ।
..पुनत्यादशमं कुलम् गोपीचं. २५
गोपीचन्दनलिप्ताङ्गं पुरुषं..देवाः
सन्मुखास्तमुपासते गोपीचं. १३
गोपीचन्दनलिप्ताङ्गो व्रतं यस्तु समा-
चरेत् । ततः कोटिगुणं पुण्यं.. गोपीचं. १६
गोपीचन्दनलिप्ताङ्गो म्रियते यत्र
कुत्रचित्...देवेन्द्रपदमश्नुते गोपीचं. १९
गोपीचन्दनलिप्ताङ्गो यं यं पश्यति
चक्षुषा । तं तं पूतं विजानीया-
द्राजभिः सत्कृतो भवेत् गोपीचं. १०

गोपीचन्दनलिप्ताङ्गः पुरुषो येन पूज्यते.. विष्णुलोके महीयते	गोपीचं. १४
गोपीचन्दनलिप्ताङ्गः साक्षाद्विष्णुमयो भवेत्	गोपीचं. १५
गोपीचन्दनलिप्ताङ्गैर्जपदानादिकं कृतम्। न्यूनं सम्पूर्णतां याति विधानेन विधानतः	गोपीचं. १७
गोपीचन्दनं धारयेदक्षयपदमाप्नोति (यो विद्वान्)	गोपीचं. ८
गोपीजनवल्लभज्ञाने नैतद्विज्ञानं भवति	गो. पू. १।१
गोपीजनवल्लभो भुवनानि दध्रे स्वाहाश्रितो जगदेतत्सुरेताः	गो. पू. २।२
गोपीत्यक्षरद्वयम्, चन्दनं त्र्यक्षरम्, तस्मादक्षरपञ्चकं य एवंविद्वान् गोपीचन्दनं धारयेदक्षयं पदमाप्नोति	गोपीचं. ८
गोपीत्यम चक्षतां, चन्दनं तु ततः पश्चात्	गोपीचं. ८
गोपीभिः प्रक्षालनाद्गोपीचन्दनमाख्यातं, मदङ्गलेपेन पुण्यं मुक्तिसाधनं भवति [वासुदे०२+	गोपीचं. १
गोप्यो गाव ऋचस्तस्य यष्टिका कमलासनः। वंशस्तु भगवान् रुद्रः शृङ्गमिन्द्रः..	कृष्णो. ८
गोप्यो नाम विष्णुपत्न्यस्तासां चन्दनमाह्लादनम्	गोपीचं. ७
गोब्राह्मणपरित्राणं सकृत्कृत्वा.. मुच्यते पञ्चभिर्घोरैः..पातकैः	शिवो. ७।९९
गोभिर्जुष्टमयुजो निषिक्तं तवेन्द्र विष्णोरनुसञ्चरेम। नाकस्य पृष्ठमभिसंवसामो वैष्णवीं लोक इह मादयन्ताम्	महाना. ६।१९
गोभिर्जुष्टं धनेन ह्यायुषा च बलेन च। प्रजया पशुभिः पुष्कराक्षं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु	२शिवसं. २३
गोमयं स्वस्थं ग्राह्यम् (भस्मार्थं) शुभे स्थाने वा पतितमपरित्यज्य..	बृ. जा. ३।१
गोमयं शोधयेद्विद्वान्त्रीन्भजतु सम्मतः	बृ. जा. ५।८
गोलकस्तु यदा देहे क्षीरदण्डेन वा हतः। एतस्मिन्वसते शीघ्रमविश्रान्तं महाखगः।	ब्र. वि. ३८
गोविन्दं सन्तं बहुधा आराधयन्ति	गो. पू. २।२
गोविन्दान्मृत्युर्बिभेति	गो. पू. १।१
गोविन्दायविद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नो नारायणः प्रचोदयात्	ना. पू. ४।१
गोविंदो दक्षिणेपार्श्वे वामे च मधुसूदनः	विष्णुहृ. १।१
गोवृत्त्या प्राणसन्धारणं कुर्वन् (परमहंसः) यत्प्राप्तं तेनैव निर्लोलुपः.. सोऽवधूतः स कृतकृत्यो..	तुरीया. ३
गोवृत्त्या भैक्षमाचरन्..शुक्लध्यानपरायणः..सन्न्यासेन देहत्यागं करोति स परमहंसपरिव्राजको भवति	प.हं.प.८.
गोस्तनाद्धृतं क्षीरं पुनरारोपणे (कृते सति सत्यं) जगत्	ते. बिं. ६।८१
गोस्तेयं सुरापानं भ्रूणहत्यां तिलाः शान्तिं शमयन्तु स्वाहा	महाना. १४।६
गौरनाद्यन्तवतीसाजनित्रीभूतभावनी। सा सितासिता च रक्ता च..	मंत्रिको. ४
गौरवर्णेशानदलेयदाविश्राम्यतेमनः। तदा.. धर्मकीर्तिमतिर्भवेत्	भिक्षुको. ६
गौरीर्मिमाय सलिलानि तक्षत्येकपदी। द्विपदी सा चतुष्पदी [हयग्री.७+	श्रीचक्रो. १
गौरीं वा वरयेत्कन्यां चरेद्वाश्रवणे..	इतिहा. १७
गौः ग्मा ज्मा क्ष्मा क्षा क्षमा क्षोणिः	क्षि.वि. ६
ग्रथनं च तरङ्गाणां (भवेत्) आस्था नायुषि युज्यते	महो. ३।११
ग्रन्थमभ्यस्य मेधावी ज्ञानविज्ञानतत्त्वतः। पलालमिव धान्यार्थी त्यजेद्ग्रन्थमशेषतः [ब्र.बिं. १८	+त्रि. ता. १८
ग्रन्थान्नैवाभ्यसेद्बहून्। ..नारम्भानारभेत्कश्चित्	ना.प.५।३७
ग्रसिष्णु प्रभविष्णु च	भ.गी.१३।१७
ग्रस्त इत्युच्यते भ्रान्त्या ह्यज्ञात्वा वस्तुलक्षणम्। तद्द्देहादिबन्धेभ्यो विमुक्तं ब्रह्मवित्तमम्। पश्यन्ति देहिवन्मूढाः	२आत्मो. १६

ग्रहणाग्राहकाभासं विज्ञानस्प-
न्दितं तथा अ.शां.४७

ग्रहणाज्जागरितवत्तद्धेतुः स्वप्न
इष्यते। तद्धेतुत्वात्तु तस्यैव
सज्जागरितमिष्यते अ.शां. ३७

ग्रहणे विषुवे चैवमयने.. रुद्राक्षधारणा-
त्सद्यः सर्वपापैः प्रमुच्यते रु. जा. ४१

ग्रहमण्डल-भूतमण्डल-प्रेतपिशाच-
मण्डलसर्वोच्चाटनाय अतिभयङ्कर-
ज्वर.. अपस्मारांश्च मेदय..
स्रावय.. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं हुं फट्...स्वाहा लांगूलो. ४

ग्राहो न तत्र नोत्सर्गश्चिन्ता यत्र
न विद्यते। आत्मसंस्थं तदा ज्ञान-
मजातिसमतां गतम् अद्वैतो. ८

ग्राम एकरात्रं तीर्थे त्रिरात्रं.. नियमा-
नियममुत्सृज्य.. गोवृत्त्या भैक्ष-
माचरन्..शुक्लध्यानपरायणः.. स
परमहंसपरिव्राजको भवति प.हं.प.८

ग्राम एकरात्रं पत्तने पञ्चरात्रं..
अनिकेतः..गिरिकन्दरेषु वसेत् ना. प. ७।२

ग्रामं भिक्षित्वाऽलब्ध्वोपविशेन्ना-
ह्यमतो दत्तमश्नीयाम् कौ.उ. २।१।२

ग्रामाच्छ्रोत्रियागारादग्निमाहृत्य
स्वविध्युक्तक्रमेण पूर्ववदग्नि-
माजिघ्रेत् प.हं.प.४

ग्रामादग्निमाहृत्य पूर्ववदग्निमाघ्रापयेत् जा. बा. ४

ग्रामान्तरमभिप्रेप्सुर्गुरोः कुर्यात्
प्रदक्षिणम् शिवो. ७।८

ग्रामान्ते निर्जने देशे नियतात्मा-
ऽनिकेतनः। पर्यटेत्कीटवद्भूमौ(यतिः) ना. प. ४।१६

ग्रामान्ते वृक्षमूले वा वसेद्देवालयेऽपि
वा। भैक्षेण वर्तयेन्नित्यं.. ना.प. ५।४६

ग्रामारण्यपशुघ्नत्वं..मद्यपानेन यत्पापं
तदप्याशु विनाशयेत् रामो. ५।१२

ग्रामे मनसा स्वाध्यायमधीयीत.... अरुणे. १६

ग्राम्यासु जडचेष्टासु सततं विचि-
कित्सते। नोदाहरति मर्माणि
पुण्यकर्माणि सेवते अध्युप. ८

ग्राह्यं ग्राह्येण भावं भावेन सौम्यं
सौम्येन सूक्ष्मं सूक्ष्मेण ग्रसति
तस्मै महाग्रासाय नमः चतुर्वे. ८

ग्राह्यग्राहकसम्बन्धेक्षीणे शांतिरुदे-
त्यलम्। ..शान्तिर्मोक्षनामा-
भिधीयते १सं.सो. २।४६

ग्राह्याभावे मनः (प्रशाम्यति)
प्राणो निश्चलज्ञानसंयुतः। शुद्धे
सत्त्वे परे लीनः.. २ अवधू. ६

ग्रीवा धारापोता (शारीरयज्ञस्य) प्रा. हो. ४।२

ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः [चित्सु.१२।३ ऋ.अ. ८।४।१८
[=मं.१०।९०।६+ वा.सं.३१।१४

ग्रीष्मः प्रस्तावः, वर्षा उद्गीथः छांदो. २।१६।२

ग्लानिर्भवति भारत भ. गी. ४।७

घ

घटत्वेन यथापृथ्वीजलत्वेनमरीचिका।
..तद्वदात्मनि देहत्वं पश्यत्य-
ज्ञानयोगतः यो.शि.४।२३

घटनाम्ना यथा पृथ्वी पटनाम्ना हि
तन्तवः। जगन्नाम्ना चिदाभाति
सर्वं ब्रह्मैव केवलम् यो.शि.४।१७

घटमध्यगतो दीपो (घटमध्ये यथा
दीपो) बाह्ये नैव प्रकाशते।
भिन्ने तस्मिन्घटे चैव दीप-
ज्वाला च भासते। स्वकायं
घटमित्युक्तं... [यो.शि.६।७७+ योगकुं.३।१५

घटमध्ये यथा दीपो निवातं
कुम्भकं विदुः १यो.त.१४२

घटवद्विविधाकारं भिद्यमानंपुनःपुनः।
तद्भग्नं (तद्भेदे) नच जानाति स
जानातिच नित्यशः[ब्र.बि.१४+ त्रि.ता. ५।१४

घटसम्भूतमाकाशं लीयमाने घटे यथा। घटो लीयेत नाकाशं तद्वज्जीवो घटोपमः — ब्र.बिं.१३
घटसंभृतमाकाशं नीयमाने घटे यथा। घटो नीयेत नाकाशं... — त्रि.ब्रा. १३
घटस्थदीपवच्छश्वदन्तरेव प्रकाशते (आत्मा) — यो.कुं. ३।३२
घटाकाशमठाकाशौमहाकाशेप्रतिष्ठितौ। एवं मयि चिदाकाशे जीवेशौ.. — वराहो. २।५०
घटाकाशमठाकाशौ यथाऽऽकाश-प्रभेदतः। कल्पितौ, परमौ जीव-शिवरूपेण कल्पितौ। तत्त्वतश्च शिवः साक्षाचिज्जीवश्च स्वतः.. — रुद्रहृ. ४३
घटाकाशमिवात्मानं विलयं वेत्ति तत्त्वतः। स गच्छति निरालम्बं.. — पैङ्गलो. ४।१४
घटाकाशं महाकाश इवात्मानं परात्मनि। विलाप्याखण्डभावेन.. — अध्यात्मो. ७
घटादिवच्च सङ्घातैर्जातावेतन्निदर्शनम् — अद्वैत. ३
घटादिषु प्रलीनेषु घटाकाशादयोयथा। आकाशे सम्प्रलीयन्ते तद्वज्जीवा इहात्मनि — अद्वैत. ४
घटावभासको भानुर्घटनाशे न नश्यति। देहावभासकः साक्षी देहनाशे न नश्यति — आत्मप्र. १९
घटिकार्धलयेनापि शक्तिः सञ्चलते.. — अमन. १।४४
घटिकाविंशतिस्तस्माद्घ्राणाद्ब्रह्मबिलावधि। व्योमस्थानं नभस्तत्र.. — त्रि.ब्रा. १४१
घटे नष्टे यथा व्योम व्योमैव भवति स्वयम्। तथैवोपाधिविलये ब्रह्मैव ब्रह्मवित्स्वयम् — २आत्मो. २२
घटोऽयमितिविज्ञातुंनियमःकोन्वपेक्षते — २आत्मो. ५
घटोलीयेत नाकाशंतद्वज्जीवोघटोपमः — ब्र.बिं. १३
घनतरभवकारणं तमो यद्धरिदिन-कृत्प्रभया.. (प्रणश्यति) — वराहो. ३।११
घनमुत्सृज्य वा सूक्ष्मे सूक्ष्ममुत्सृज्य वा घने। रममाणमपि क्षिप्रं मनो नान्यत्र चालयेत् — ना.बिं. ३७
घर्मशान्तिःप्रजायेतमुहुर्निद्राचमूर्च्छना — अमन. १।३५
घनवासनमेतत्तु चेतः कर्तृत्व-भावनम्। सर्वदुःखप्रदंतस्मा-द्वासनां तनुतां व्रजेत् — अ.पू.१।३१

घृणिःसूर्यआदित्योनप्रभावात्यक्षरम्, मधु क्षरन्ति तद्रसम् — वनदु. १२१
घृणिः सूर्य आदित्य ॐनमो नारायणाय सहस्रार हुं फट् स्वाहा — ना.उ.ता. २।३
घृतमिव पयसि निगूढं भूतेभूते च वसति विज्ञानम्। सततं मन्थयितव्यं मनसा मन्थानभूतेन — ब्र.बिं. २०
घृतसूपादिसंयुक्तमन्नं नाद्यात् कदाचन। पात्रमस्यभवेत्पाणिः(यतेः) १सं.सो.२।७६
घृतस्य धारा अभिचाकशीमि — महाना.१२।३
[+ऋ.अ.३।८।१०= मं. ४।५८।५
[वा.सं. १३।३८ +तै.सं.४।२।९।६
घृतंतेजोमधुमाविन्द्रियं[तै.आ.३।११।८ +चित्सु. ११।८
घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते.. — महाना.८।७
[+ऋ.अ.२।५।२३=मं.२।३।११+ वा. सं. १७।८८
घृतं श्वमूत्रसदृशं मधुस्यात्सुरया समम्। ..घृतादीन्वर्जयेद्यतिः — १सं.सो. २।७५
घृतात्परं मण्डमिवातिसूक्ष्मं ज्ञात्वा शिवं..विश्वस्यैकं परिवेष्टितारं ज्ञात्वा देवं मुच्यते सर्वपापैः — श्वेता. ४।१६
घृतात्परं मण्डमिवाति सूक्ष्मां ज्ञात्वा काली.. मुच्यते सर्वपापैः — गुह्यका. ५९
घृतान्मंथाविरहितं घृते लीनं घृतं यथा। ब्रह्मनिष्ठस्तथा योगी.. — अमन. १।३२
घोरेण त्वा भृगूणां चक्षुषा प्रेक्षे — वनदु. १६०
घोषिणि प्रथमा मात्रा विद्यामात्रा तथाऽपरा। पतङ्गिनी तृतीया स्यात् (एतासु१२मात्रासु मरणे क्रमेण ब्रह्मप्राप्तिः) — ना.बिं. ९
घ्नतोऽपि मधुसूदन — भ.गी. १।३५
घ्राणस्य गन्धग्रहणं वचसोवाग्व्यापारः — ना.प. ६।४
घ्राणं च घ्रातव्यं च, रसश्च रसयितव्यंच(सर्व पर आत्मनि सम्प्रतिष्ठते) — प्रश्नो.४।८
घ्राणं च घ्रातव्यं च नारायणः.. सर्वं नारायणः — सुबालो.६।१
घ्रातव्यमेवाप्येति यो घ्रातव्यमेवास्तमेति... विज्ञानमेवाप्येति तदमृतमभयमशोकमनंतबीजमेवाप्येति — सुबालो.९।३

च

चक्रतुण्डाय धीमहि तीक्ष्णदंष्ट्राय धीमहि — महाना.६।११

चक्रं पद्मासनं कूर्मं मयूरं कुक्कुटं तथा । वीरासनं स्वस्तिकं च भद्रं सिंहासनं तथा । मुक्तासनं गोमुखं च..(आसनानि ११) — वराहो. ५।१५

चक्रं बिभर्ति वपुषाऽभितप्तं बलं देवानाममृतस्य विष्णोः । ..विशन्ति यतयो वीतरागाः — सुवर्ण.६

(अथ) चक्राभ्यां यत्रोपाकृते प्रातरनुवाकेन पुरा परिधानीयाया ब्रह्मा व्यववदति.. (१) — छान्दो.४।१६।४

चक्री शिखी च पाषण्डी...द्विस्त्रिवारेण कुक्ष्यस्तः..एते नार्हन्ति सन्न्यासं.. — ना.प.३।४

चक्रेण रक्षिता मथुरा, तस्मागोपालपुरी — गोपालो.१।१६

चक्षुरङ्गिराः (पुरुषाग्नेः) श्रोत्रं विस्फुलिङ्गाः, तस्मिन्नेतस्मिन्नग्नौ देवा अन्नं जुह्वति — बृह.६।२।१२

चक्षुरध्वर्युः, मनो ब्रह्मा (वितृप्यज्ञस्य) — महाना. १८।१

चक्षुरसावादित्यश्चन्द्रमा मनो दिशः श्रोत्रम् — १ऐत. १।५।१

चक्षुरस्मात्सर्वाणि रूपाण्यभिविसृजते चक्षुषा सर्वाणि रूपाण्याप्नोति — कौ.उ.३।४

चक्षुरादित्यं (अप्येति मृतस्य) — बृह.३।२।१३

चक्षुरादीन्द्रियैर्दृष्टं व्याप्तं...तस्यैवोक्तिर्भवेत्सत्यं...नान्यथा भवेत् — जा.द.१.९

चक्षुरायत्ता हि पुरुषस्य महती मात्रा — मैत्रा. ६।६

चक्षुरुदक्रामदपश्यन्त अन्धा इवमास्तैव — १ऐत. १।४।४

चक्षुरुद्गीथमुपासाञ्चक्रिरे — छान्दो. १।२।४

(अथ ह)चक्षुरूचुस्त्वं न उद्गायेति (देवाः) तथेति तेभ्यश्चक्षुरुदगायत् — बृह. १।३।४

चक्षुरेव ब्रह्मणश्चतुर्थः पादः, स आदित्येन ज्योतिषा भाति — छान्दो.३।१८।५

चक्षुरेव सम्राडिति होवाच — बृह. ४।१।४

चक्षुरेवाप्नोति यश्चक्षुरेवास्तमेति — सुबालो. ९।२

चक्षुरेवायतनमाकाशः प्रतिष्ठा सत्यमित्येनदुपासीत — बृह. ४।१।४

चक्षुरेव सा आत्माऽमस्तत्साम — छान्दो. १।७।२

चक्षुरेवास्या एकमङ्गमुदूढं तस्य रूपं परस्तात् प्रतिविहिता भूतमात्रा — कौ. उ. ३।५

चक्षुर्गात्रम् (प्राणस्य ब्रह्मणः) — कौ. उ. २।१

चक्षुर्धाता दधातु नः [सूर्यो. ६+ [=मं. १०।१५८।३ — ऋ.अ. ८।८।१६

चक्षुर्नामदेवता वरोधिनी सा मेऽमुष्माद्विमवरुन्द्धां तस्यै स्वाहा — कौ.उ. २।३

चक्षुर्नो देवः सविता [ऋ.अ.८।८।१६ [=मं.१।१५८।३ — सूर्यो. ६

चक्षुर्मयः श्रोत्रमयः पृथ्वीमयः(आत्मा) — बृह. ४।४।५

चक्षुर्मानुषं वित्तं चक्षुषा हि तद्विन्दते — बृह. १।४।१७

चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः [बह्वृचै.१७ [मं.१।११५।१+अथर्व.१३।२।३५ [वा.सं. ७।४२ तै.सं. १।४।४३।१२ — ऋ.अ. १।८।७—

चक्षुर्मे त्वयि दधानीति पिता — कौ.उ. २।१५

चक्षुर्लोको मनो ज्योतिः, यो वै तं पुरुषं विद्यात्सर्वस्यात्मनः परायणꣳ स वै वेदिता स्यात् — बृह.३।९।१२

चक्षुर्वाव प्रतिष्ठा — छान्दो. ५।१।३

चक्षुर्वै ग्रहः, स रूपेणातिग्राहेण गृहीतश्चक्षुषा हि रूपाणि.. — बृह. ३।२।५

चक्षुर्वै प्रतिष्ठा, चक्षुषा हि समे च दुर्गे च प्रतितिष्ठति — बृह. ६।१।३

चक्षुर्वै सत्यं चक्षुर्हि वै सत्यं..स्यात् — बृह.५।१४।४

चक्षुर्वै यज्ञस्याध्वर्युस्तद्यदिदं चक्षुः सोऽसावादित्यः — बृह.३।१।४

चक्षुर्वै सत्यं, चक्षुर्वै सत्यं — बृह.५।१४।४

चक्षुर्वै सम्राट् परमं ब्रह्म — बृह.४।१।४

चक्षुर्हि वै सत्यं, तस्माद्यदिदानीं द्वौ विवदमानावेयाताम् — गायत्र्यु.३

चक्षुर्होच्चक्राम तत्संवत्सरं प्रोष्यागत्योवाच कथमशकत मदृते जीवितुमिति — बृह. ६।१।९

चक्षुर्होच्चक्राम तत्.. पर्येत्योवाच कथमशकतर्ते मज्जीवितुमिति छान्दो.५।१।९
चक्षुश्च द्रष्टव्यं च नारायणः सुबालो. ६।१
चक्षुश्चैवान्तरे भ्रुवोः भ. गी. ५।२७
चक्षुष आदित्यः (निरभिद्येत) २ऐत. १।४
चक्षुषश्चक्षुरुत श्रोत्रस्य श्रोत्रं मनसो ये मनो विदुः (आत्मानं) बृह.४।४।१८
चक्षुषश्चक्षुः (आत्मा) केनो. १।२
चक्षुषश्चक्षुरस्म्यहं, चिदानन्दमयो... ब्र.वि. ९४
चक्षुषः साक्षी श्रोत्रस्य साक्षी वाचः साक्षी मनसः साक्षी बुद्धेः साक्षी.. सर्वस्य साक्षी (आत्मा) नृसिंहो. २।२
चक्षुषा मीयते जगत् इतिहा. ४
चक्षुषा रूपं श्रोत्रेण शब्दं मनसा ध्यानं एकैकं..प्रज्ञापयंति कौ. उ. ३।२
चक्षुषा वै सम्राट् पश्यन्तमाहु-रद्राक्षीरिति बृ.उ.४।१।४
चक्षुषा सर्वाणि रूपाण्याप्नोति कौ.उ. ३।४
चक्षुषा सृष्टौ द्यौश्चादित्यश्च १ऐत. १।७।४
चक्षुषा हि तद्विन्दते (मानुषंवित्तं) बृह. १।४।१७
चक्षुषा हि रूपाणि पश्यति बृह. ३।२।५
चक्षुषाहि समेच दुर्गेच प्रतितिष्ठति बृह. ६।१।३
चक्षुषा ह्ययं मात्राश्चरति मैत्रा. ६।६
चक्षुषि चित्तसंयमात्सर्वलोकज्ञानं शांडि. १।७।६२
चक्षुषी आज्यभागौ (शारीरयज्ञस्य) प्रा. हो. ४।२
चक्षुषी चन्द्रसूर्यौ (अक्षरब्रह्मणः) मुंड. २।१।४
चक्षुषी सूर्याचन्द्रमसौ सन्ध्यो. २३
चक्षुषे स्वाहा सम्पदे स्वाहेत्यग्नौ हुत्वा मन्थे स९स्रवमवनयति बृह. ६।३।२
चक्षुषो द्रष्टा श्रोत्रस्य द्रष्टा वाचो द्रष्टा (आत्मा) नृसिंहो. २।१
चक्षुषो रूपग्रहणं,श्रोत्रयोःशब्दग्रहणं ना.प. ६।४
चक्षुषो रूपं स्पर्शाः, श्रोत्रस्योष्माणः, मनसः स्वराः ३ऐत. २।५।१
चक्षुषोर्वै सूर्यः (अजायत) गणेशो. ३।११
चक्षुष्टो वा मूर्ध्नो वाऽन्येभ्यो वा शरीरदेशेभ्यस्तमुत्क्रामन्तं प्राणोऽनूत्क्रामति बृह. ४।४।२

चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि.. महाना. १३।८
[+ चित्त्यु. १९।२+ ऋ.अ.७.६।२६
= मं.१०।१८।१+ वा. सं. ३५।७
[+अथर्व. १२।२।२१ तै.आ.३।१५।२
चक्षुष्यः श्रुतो भवति छांदो. ३।१३।७
चक्षुस्ते मयि जुहोम्यसौ स्वाहा कौ. उ. २।४
चक्षुस्ते मयि दध इति पुत्रः कौ. उ.२।१५
चक्षुः परस्ताच्छ्रोत्रमारुन्धे कौ. उ. २।२
चक्षुः पश्यति रूपाणि श्रोत्रं सर्वं शृणोत्यपि। अन्यानि खानि सर्वाणि तेनैव प्रेरितानि तु। ...प्रवर्तन्ते पा. ब्र. १४
चक्षुः पश्यत्सर्वे प्राणा अनुपश्यन्ति कौ. उ. ३।२
चक्षुः श्रोत्रं क उ देवो युनक्ति केनो. १।१
चक्षुः श्रोत्रं मनो वाक् त्वक् चर्म मा९सं९ ..स्नावास्थि.. तैत्ति. १।७।१
चक्षुः श्रोत्रं मनो वाक्प्राणः श्रयन्ते १ऐत. १।४।३
चक्षुः श्रोत्रं स्पर्शनं च रसनं घ्राण-मेव च। बुद्धीन्द्रियाणि जानी-यात्पञ्च भवसं.२।१६
चक्षुःश्रोत्रे शब्दोपलब्धौ,त्वक्स्पर्शे.. गर्भो. १
चक्षुः सर्वैं रूपैः सहाप्येति (पुरुषं) [कौ.उ.३।३+ ४।१९
चक्षूरोगाः सर्वतो नश्यन्ति चाक्षुषो. १
चक्षोःसूर्योअजायत [सुबालो.१।५+ चित्त्यु. १२।६
[ऋ.अ.८।४।१९=मं.१०।९०।१३ वा. सं.३१।१२
चञ्चलत्वं मनोधर्मोवह्नेर्धर्मोयथोष्णता महो. ४।९९
चञ्चलत्वात् स्थितिं स्थिराम् भ. गी. ६।३३
चञ्चलं हि मनः कृष्ण भ. गी. ६।३४
चतस्रश्चतस्रो व्याहृतयः, ता यो वेद स वेद ब्रह्म तैति. १।५।८
चतुरङ्गुलमुत्सेधं चतुरंगुलमायतम्।.. तत्रैव नाडीचक्रं तु... वराहो. ५।२१
चतुरङ्गुलवेष्टनमिव षण्णवतितत्त्वानि तन्तुवद्विभज्य परब्र. ४
चतुरात्मेश्वरःप्राज्ञस्तृतीयःपादसंज्ञितः ना.प. ८।१६
चतुरो मासान् ध्रुवशीलतः स्यात्स यावत्सुप्तोऽन्तरात्मा पुरुषो विश्व-रूपः (यतिः) शाट्याय. २०

चतुरोवेदानधीयीत सर्वशास्त्रमयं विदुः। इतिहासपुराणानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु — २शिवसं. २७
चतुरौदुम्बरो भवत्यौदुम्बरः स्रुवः — बृह. ६।३।१३
चतुर्जालं पञ्चकोशं यं मृत्युर्नावपश्यति। तं प्रपद्ये.. — सद्वै. २३
चतुर्णामपि वेदानां यथोपनिषदः शिरः।.. इयं रहस्योपनिषत्तथा — शुकर. १।१५
चतुर्थश्चतुरात्माऽपि सच्चिदेकरसो ह्ययम्। तुरीयावसितत्वाच्च... — ना.प. ८।१९
चतुर्थं हृदये चक्रं विज्ञेयं तदधोमुखम्। ज्योतीरूपं च तन्मध्ये हंसं ध्यायेत्प्रयत्नतः — योगरा. १०,११
चतुर्थाश्रमः सन्यासः पञ्चमो लिङ्गधारणम् — लिङ्गोप. १
चतुर्थी स्वप्न इत्युक्ता (भूमिका) स्वप्नाभं तत्र वै जगत् — अ.पू. ५।८७
(ॐ)चतुर्थं दक्षिणाम्नायः शृङ्गेरीमठः... — मठाम्ना. ६
चतुर्थेधामनि शिवशक्त्याख्यं वाग्भवम् — त्रि. ता. १।१६
चतुर्थेन तु पिण्डेन अस्थिमज्जा प्रजायते — पिंडो. ५
चतुर्थे मासे गुल्फ-जठर-कटि-प्रदेशा भवन्ति (गर्भस्य) — गर्भो. ३
चतुर्थोदात्ततमान् स्वरान् व्यन्तरानुदूहन्ति — संहितो.३।१
चतुर्ध्यो ऽनुज्ञात्रनुज्ञाविकल्परूपाः (प्रणवमात्राः) — नृसिंहो. ३।१
चतुर्दशकरणोपरमाद्विशेषविज्ञानाभावाद्यदा शब्दादीन्नोपलभते तदात्मनः सुषुप्तम् — सर्वसारो. ३
चतुर्दशदिनान्ते च लयस्थो यदि तिष्ठति। अणिमाद्यष्टसिद्धिः स्यादणुत्वं प्राप्यते यथा — अमन. १।६४
चतुर्दशमुखं चाक्षं रुद्रनेत्रसमुद्भवम्। सर्वव्याधिहरं चैव... — रु. जा. ३९
चतुर्दलं स्यादाधारं स्वाधिष्ठानं च षड्दलम्। — यो.चू.४
चतुर्दृष्टिनिरोधेऽभ्रैः सूर्यो नास्तीति मन्यते। तथा..ब्रह्मनास्तीतिमन्यते — आ. प्र. २७

चतुर्धा चास्याधिकारिभेदत्वेन यजन्ति माम् — गोपालो.२।७
चतुर्धावस्थित इति सर्वदेववेदयोनिः सर्ववाच्यवस्तु प्रणवात्मकम् — अ.शिखो. १
चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च द्वाभ्यां पञ्चभिरेव च।.. स मे विष्णुः प्रसीदति — शरभो. २६
चतुर्भिः पश्यते देवान् पञ्चभिः (मासैः).. इच्छयाऽऽप्नोति कैवल्यं — अ. ना. ३०
चतुर्भुजंमहाविष्णुंपूरकेणविचिन्तयेत् — ध्या. बिं. २०
चतुर्भुजं शङ्ख-चक्र-शार्ङ्ग-पद्मगदान्वितम्।..वेणु-शृङ्गधरं तु वा (ध्यायेत्) — गोपालो. २।२२
चतुर्मात्रात्मकोङ्कारो मम प्राणात्मिका देवता — पा. ब्र. २
चतुर्मुखमुखाम्भोजवनहंसवधूर्मम। मानसे रमतां नित्यं..सरस्वती — सरस्व. २५
चतुर्मुखं च रुद्राक्षं चतुर्वक्त्रस्वरूपकम्। तद्धारणाच्चतुर्वक्त्रः प्रीयते.. — रु.जा.२७
चतुर्मुखादीनां..विना विष्णुभक्त्या...मोक्षो न विद्यते — त्रि.म.ना. ८।४
चतुर्मुखेन्द्रदेवेषु मनुष्यादिगवादिषु। चैतन्यमेकंब्रह्मातःप्रज्ञानंब्रह्ममय्यपि — शु.र. ३।२
चतुर्मुखेमनोयुञ्जञ्जगत्सृष्टिकरोभवेत् — यो.शि. ५।५२
चतुर्युगसहस्राणि ब्रह्मणो दिवा भवति... — त्रि.म.ना. ३।४
चतुर्विधब्रह्मचर्यं षड्विधं गार्हस्थ्यं चतुर्विधं वानप्रस्थधर्मं..अभ्यस्य.. — ना.प. ३।१
चतुर्विधा मनोवस्था विज्ञातव्या मनीषिभिः। विक्षिप्तंचगतायातं — अमन. २।९२
चतुर्विधा भजन्ते माम् — भ.गी. ७।१६
चतुर्विंशतितत्त्वं च यद्यदस्ति.. सर्वं शशविषाणवत् [ते.बिं. — ५।८१-८९
चतुर्विंशतितत्त्वात्मको नारायणः — ना.पू.ता. ५।४
चतुर्विंशतितत्त्वानि केचिदिच्छन्ति वादिनः — वराहो. १।१
चतुर्विंशतिरर्धमासाः संवत्सरः, संवत्सरादेवात्मानं... — सद्वै. १२
चतुर्विंशतिभिर्वर्षैः... शक्तितत्त्वमयो भवेत् — अमन. १।७९

चतुर्विंशतिरव्यक्तं प्रधानं पुरुषः परः
(तत्त्वं) शारीरको. १५
चतुर्विंशतिसङ्ख्यातं व्यक्त-
मव्यक्तमेव च मंत्रिको. १५
चतुर्विंशतिरात्रीर्दीक्षितो भवति सहवै. १२
चतुर्विंशत्यक्षरा गायत्री गायत्रं
प्रातस्सवनं छान्दो.३।१६।१
चतुर्विंशत्यक्षरा महालक्ष्मी-
र्यजुस्तत्साम्नोऽङ्गं वेद नृ. पू. १।३
चतुर्वेदज्ञोऽपि शिवभक्त्याऽन्त-
र्भवतीति स एव ब्राह्मणः रुद्रोप. १
चतुर्वेदेषु शास्त्रेषु ...
चतुर्षु वर्णेषु भैक्षचर्येण चरेत् कठश्रु. ६
चतुर्होतारंप्रदिशोनुक्लृप्तं [चित्त्यु.११।२ तै.आ.३।११।२
चतुर्होतारो यत्र सम्पदं गच्छंति
देवैः [चित्त्यु. ११।२+ तै.आ.३।११।२
चतुर्होतृणामात्मानंकवयोनिचिक्युः चित्त्यु. ११।३
[+तै.आ.३।११।३
चतुश्चत्वारिंशत्संस्कारसम्पन्नः..
सर्वविद्याभ्यासंकृत्वा..ब्रह्मचर्यं..
गार्हस्थ्यं..वानप्रस्थधर्मं..अभ्यस्य
..शान्तो दान्तः सन्न्यासी..
मुक्तो भवति ना. प. १।१
चतुश्चत्वारिंशदक्षरा त्रिष्टुप् छान्दो.३।१६।३
चतुश्शब्दो भवेदेको ह्योङ्कारश्च..
सोऽहमित्यथार्थात्मानंगोपा-
लोऽहमिति भावयेत् गोपालो. २।३
चतुश्शतसलयेनापि सप्तधातुगता
रसाः।स मे पुष्टिं प्रकुर्वन्ति अमन. १।३८
चतुष्कलासमायुक्तो भ्राम्यति..
गोलकस्तु यदा देहे.. ब्र.वि. १८
चतुष्कूटात्मिकैव सर्वकूटा-
त्मिका ब्रह्ममयी श्रीवि. ता. १।७
चतुष्कूटा परञ्ज्योतिः साऽहमोम् श्रीवि.ता. ४।१
चतुष्पदां गौरुत्तमा, लोहानां कांचनं.. इतिहा. ४९
चतुष्पदां चतुरस्रम् (अग्निस्थानं) शांडि. १।४।३
चतुष्पदां हृन्मध्यं (देहमध्यं) शाण्डि. १।४।४

चतुष्पथसमायुक्तमहाद्वारगवायुना।
सह स्थितत्रिकोणार्धगमनै-
र्दृश्यतेऽच्युतः ध्या.बि. ९४
चतुष्पलप्रमाणेन लयेनानुभवोभवेत्।
अकस्मान्निपतत्यत्र शब्दः
कर्णे शुभाशुभः अमन. १।४१
चतुष्पाज्जागरितः स्थूलः स्थूलप्रज्ञो
हि विश्वभुक् । एकोनविंशति-
मुखः..स्थूलभुक्चतुरात्मा.. ना.प. ८।१०
चतुष्पादन्तर्वर्तिनोऽन्तर्जीवब्रह्मण-
श्चत्वारि स्थानानि परब्र. ३
(तत्र) चतुष्पादं ब्रह्म विभाति जाग-
रितं स्वप्नं सुषुप्तं तुरीयमिति ब्रह्मो. २
चतुष्पादिदमक्षरं परं ब्रह्म अ.शिखो. १
चतुःकलालयेनापि निद्राभावो निव-
र्तते। हृदि स्फुलिंगवद्योगी.. अमन. १।४६
चतूरूपो ह्ययमकारः स्थूलसूक्ष्म-
बीजसाक्षिभिरकाररूपैराप्तेरादि-
मत्त्वाद्वा..आप्नोति ह वा इदं सर्वं.. नृसिंहो. २।४
चतूरूपो ह्ययं मकारः स्थूलसूक्ष्म-
बीजसाक्षिभिर्मकाररूपैरपीतेर्वा
स्थूलत्वात्.. साक्षित्वाच्च.. नृसिंहो. २।६
चतूरूपो ह्ययमुकारः स्थूलसूक्ष्मबीज-
साक्षिभिरुकाररूपैरुत्कर्षात्..
साक्षित्वाच्चोत्कर्षति ह वै ज्ञान-
सन्ततिं.. नृसिंहो. २।५
चतूरूपो ह्ययमोङ्कार ओतानुज्ञात्रनु-
ज्ञाविकल्पैरोङ्काररूपैरात्मैव नृसिंहो. २।७
चत्वारः पादाश्चत्वार्यङ्गानि भवन्ति नृ.पू. २।२
चत्वारः पुरुषा इति बाभ्वः, शरीर-
पुरुषश्छंदःपुरुषो वेदपुरुषो महा-
पुरुष इति श्वेत. २।३।१
चत्वारि वाक्परिमिता पदानि सरस्व. १६
[ना.पू.ता.५।८+ ऋ.ब्र. २।३।२२
[=मं. १।१६४।४५ +अथर्व. ९।१०।२७
चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादाः.. महाना. ८।१०
[शौनको.४।६+तै.आ.१०।१०।२ ऋ.ब्र. ३।८।१०
[=मं.४।५८।३+वा.सं.१७।९१

(७५) चत्वारिंशत्संस्कारसम्पन्नः
सर्वतोविरक्तः.. साधनचतुष्टय-
सम्पन्न एव सन्न्यस्तुमर्हति — १ सं. सो. २।१
चत्वारिंशदथतिस्रः समिधा उशती-
रिव मातरो माविशन्तु — त्रिपुरो. ३
चत्वारो दोषः प्रहरन्ति यस्य सर्वस्य
गोप्त्रे..रयिमत्प्रवृद्धयै स्वाहा — पारमा. ९।१
चत्वारो मनवस्तथा — भ. गी. १०।६
चत्वारो वेदा उपवेदाः पुराणानि...
तस्याद्युत्पद्यमानानि भवन्ति — सामर. ९२
चन्दनं चापि गोपीनां..
भुक्तिमुक्तिफलप्रदम् — गोपीचं. २२
चन्द्र इव राहोर्मुखात्प्रमुच्य शरीर-
मकृतं कृतात्मा ब्रह्मलोकमभि-
संभवामि — छान्दो.८।१३।१
चन्द्र एव,सविता नक्षत्राणि सावित्री — सावित्र्यु. ७
चन्द्रमण्डलसङ्काश...विषं हर
हर हुं फट्स्वाहा — गारुडो. ११
चन्द्रमसा वाव सर्वाणि
ज्योतींषि महीयन्ते — तैत्ति. ५।२
चन्द्रमसि तृप्यति दिशस्तृप्यन्ति — छान्दो.५।२०।२
चन्द्रमसैवायं ज्योतिषाऽऽस्ते पल्यते
कर्म कुरुते विपल्येति.. — बृह. ४।३।३
चन्द्रमसो रोहिणी, ऋषीणामरुन्धती — चित्त्यु. ९।१
चन्द्रमसो विद्युतंतत्पुरुषोऽमानवः
[छान्दो. ४।१५।५ — + ५।१०।२
चन्द्रमा अथकारः, आत्मेहकारः — छान्दो.१।१३।१
चन्द्रमा अस्मै पूर्वपक्षापरपक्षान्
विचिनोति... — १ऐत. १।७।५
चन्द्रमा एवास्य ज्योतिर्भवति — बृह. ४।३।३
चन्द्रमानिधनं,एतद्राजनंदेवतासुप्रोतं — छान्दो.२।२०।१
चन्द्रमा मनसो जातः [पु.सू.+ — चित्त्यु. १२।६
[+सुबालो. १।५+ — ऋ.अ.८।४।१९
[=मं.१०।९०।१३+ — वा.सं. ३१।१२
चन्द्रमा मनो भूत्वा हृदयं प्राविशत् — २ऐत. १।४
चन्द्रमा रयिर्वा एतत्सर्वं यन्मूर्तं
चामूर्तंच तस्मान्मूर्तिरेव रयिः — प्रश्नो. १।५
चन्द्रमाः षड्ढोता, सक्तून्.. — चित्त्यु. ७।३

चन्द्रमेवाप्येति यश्चन्द्रमेवास्तमेति — सुबालो. ९।१०
चन्द्रवद्विमलःपूर्णः सदानन्दःस्वयंप्रभः — अध्यात्मो. ११
चन्द्रवच्चरते देही स मुक्तश्चानिकेतनः — पैङ्गलो. ४।४
चन्द्रसूर्यौ समौ कृत्वा तयोर्योगः
प्रवर्तते — १यो.शि.१।११६
चन्द्रसूर्यादिकौ त्यक्त्वा राहुश्चे-
दृश्यते जगत् (तदा जगत्सत्यम्) — ते. बिं. ६।९४
चन्द्रात्रेयस्तथाऽत्रिश्च ऋष्यात्रेयो
मुनित्रयम् । एतैर्महात्मभिः
प्रोक्ताः शिवधर्माः समासतः — शिवो. ७।१३६
चन्द्रार्कमध्यमा शक्तिर्यत्रस्था
तत्र बन्धनम् — योगकुं. ३।७
चन्द्रां प्रभासां यशसा
ज्वलन्तीं श्रियं.... श्री.सू.५= — ऋ.खि.५।८७।५
चन्द्रांशेन समभ्यस्य सूर्या-
शेनाभ्यसेत्पुनः — यो.चू. ६७
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जात-
वेदो म आवह [श्रीसू. १,१४= — ऋ.खि. ५।८७
चन्द्रे चित्तसंयमात्ताराव्यूह-
ज्ञानम् (भवति) — शांडि. १।७।५२
चमूषच्छ्येनः शकुनो विभृत्वा — सुदर्श. ७
चम्पकातसीकुंकुमपिङ्गलेन्द्रनील...
घनसारसन्निभंगायत्र्याःप्रत्यक्षर-
मनुस्मृत्य.. — गायत्रीर. ९
चरणं नो लोके सुधितां दधातु
[त्रि.म.ना. ७।३ — +सुदर्श. ५
चरणं पवित्रं विततं पुराणं
[त्रि.म.ना. ७।३+महाना. ५।१० — सुदर्श. ५
चरतां चक्षुरादीनां विषयेषु यथा-
क्रमम् । यत्प्रत्याहरणंतेषांप्रत्या-
हारः स उच्यते — यो.चू. १२०
चरेन्माधुकरं भैक्षं यतिर्म्लेच्छ-
कुलादपि । एकान्नं नतु भुञ्जीत
बृहस्पतिसमादपि — १सं.सो.२।७१
चर्मखण्डं द्विधा भिन्नमपानोद्गार-
धूपितम् । ये रमन्ति नमस्तेभ्यः
साहसं किमतःपरम् — ना. प. ४।२०

चलदृष्ट्या व्योमभागवीक्षितुःपुरुषस्य दृष्ट्यग्रेज्योतिर्मयूखा वर्तन्ते; तद्दर्शनेन योगी भवति	अद्वयता. ३
चलनदृष्ट्या व्योमभागवीक्षितुः ..तद्दृष्टिः स्थिरा भवति	मं. ब्रा. १।३
चलस्थिरोभयाभावैरावृणोत्येव बालिशः	अ. शां. ८३
चलाचलनिकेतश्च यतिर्यादृच्छिको भवेत् [ना.प. ६।४४+	वैतथ्य. ३८
चले वाते चलो बिन्दुर्निश्चले निश्चलो भवेत् । योगी स्थाणुत्वमाप्नोति ततो वायुं निरोधयेत्	यो.चू. ८९
चाकश्यमानमिव जाज्वल्यमानमिव देदीप्यमानमिव लेलिहानं तदेव मे ब्रह्म	आर्षे. ५।२
चाक्षुषपंक्तिपुनाति(उपनिषत्पाठकः)	राधिको. ९
चाक्षुषस्तेजोमयोऽमृतमयः पुरुषोऽयमेव स योऽयमात्मा	बृह. २।५।५
चाक्षुषः स्वप्नचारी च सुप्तः सुप्तात्परश्च यः । भेदाश्चैतेऽस्य चत्वारस्तेभ्यस्तुर्यं महत्तरम्	मैत्रा. ७।११
चाक्षुषी दीप्तिर्मविष्यति(चा.विद्यया)	चाक्षषो. १
चाक्षुष्मतीविद्यां ब्राह्मणो यो नित्यमधीते न तस्याक्षिरोगो भवति	अक्ष्यु. ३
चाण्डालदेहे पश्वादिस्थावरे ब्रह्मविग्रहे । अन्येषु तारतम्येन..	वराहो. ३।१६
चाण्डालोऽचाण्डालः (भवति) पौल्कसोऽपौल्कसः..	बृह. ४।३।२२
चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं	भ.गी. ४।१३
चापबाणधरं श्यामं ससुग्रीवं.. रामभद्रं हृदि ध्यात्वा	रामर.२।८४,८५
चापलानि न कुर्वीत स सर्वार्थमवाप्नुयात् । नकुर्यात्केनचिद्वैरमध्रुवे जीविते सति	शिवो. ७।५८
चिचन्द्रमयीति सर्वाङ्गस्रवणं स्नानम्	भावनो. ८
चिकीर्षुर्लोकसंग्रहम्	भ.गी. ३।२५
चिचिदाकारतो भिन्ना न भिन्ना चित्त्वहानितः [अ.पू. ४।३३+	रुद्रह. ४४
चिचैतन्यस्वरूपोऽहमहमेवपरःशिवः	ते.बिं. ३।३३
चिच्चैत्यकलितो बन्धस्तन्मुक्तौ मुक्तिरुच्यते । चिदचैत्या किलात्मेति सर्वसिद्धान्तविग्रहः	महो. ६।७७
चिच्चैत्ये स्वयमम्लानं मननान्मन उच्यते । अतःसङ्कल्पसिद्धेयं सङ्कल्पेनैव नश्यति	महो. ४।१२३
चिज्जडानां तु यो द्रष्टा सोऽच्युतो ज्ञानविग्रहः । स एव हि महादेवः..	स्कंदो. ४
चितश्चिन्नचिदाकाराद्भिद्यतेजडरूपतः । भिद्यतेचेज्जडोभेदश्चिदेकासर्वदा..	रुद्रह. ४५
चितिच्छायासमावेशाज्जीवः स्याद्व्यावहारिकः । अस्यजीवत्वमारोपात् साक्षिण्यप्यवभासते	सरस्व. ४४
चिति सत्यं जगत्तथा । प्रतिभासत एवेदं न जगत्परमार्थतः	महो. ५।१०७
चितोरूपमिदंब्रह्मन्क्षेत्रज्ञ इतिकथ्यते	महो. ५।१२४
चित्तइतिचित्तविदोधर्माधर्मौचतद्विदः	वैतथ्य. २५
चित्तकाला हि येऽन्तस्तु द्वयकालाश्च ये बहिः । कल्पिता एव ते सर्वे..	वैतथ्य. १४
चित्तत्यागः परं सुखम् । अतश्चित्तं चिदाकाशे नय क्षयं..	अ. पू. ५।११७
चित्तनाशः सुखाय च । चित्तसत्तां क्षयं नीत्वा..चित्तं नाशमुपानयेत्	अ. पू. ४।१५
चित्तनाशाभिधानंहियदातेविद्यतेपुनः	मुक्तिको. २।३४
चित्तनाशे विरूपाख्ये न किञ्चिदिह विद्यते । न गुणा नागुणास्तत्र..	अ.पू. ४।२१
चित्तमध्यात्मं , चेतयितव्यमधिभूतं क्षेत्रज्ञस्तत्राधिदैवतं , नाडी तेषां निबन्धनम्	सुबालो. ५।९
चित्तमन्तर्गतंदुष्टंतीर्थस्नानैर्नशुद्ध्यति	जा. द. ४।५४
चित्तमपानयोगेन जिह्वाद्वारा रसगुणउपस्थाधिष्ठितोऽप्सु तिष्ठत्यापस्तिष्ठन्ति	त्रि. ब्रा. १।६
चित्तमर्थेषु चरति पादपेष्विव मर्कटः	अ. पू ३।६
चित्तमाज्यं,वाग्वेदिः, आधीतं बर्हिः	चित्यु. १।१
चित्तमात्मा, चित्तं प्रतिष्ठा, चित्तमुपास्वेति	छान्दो. ७।५।२
चित्तमूलं हि संसारस्तत् प्रयत्नेन शोधयेत्	वराहो. ३।२१

चित्तमूलो विकल्पोऽयं चित्ताभावे
न कश्चन । अतश्चित्तं समाधेहि
प्रत्यग्रूपे परात्मनि — अध्यात्मो. २६

चित्तमेव हि संसारस्तत्प्रयत्नेन
शोधयेत् । यच्चित्तस्तन्मयो
भवति (भाति).. — मैत्रा. ६।३४
[मैत्रे. १।९+ — शाट्याय. ३

चित्तमेव हि संसारो रोगादिक्लेश-
दूषितम् । तदेव तैर्विनिर्मुक्तं
भवान्त इति कथ्यते — महो. ४।६६

चित्तमेवाप्येति यश्चित्तमेवास्तमेति — सुबालो. ९।१३

चित्तवृत्तिनिरोधेन नादो
ज्ञानन्दसम्भवः — गान्धर्वो. ६

चित्तवृत्तेरतीतो यश्चित्तवृत्त्यव-
भासकः । सर्ववृत्तिविही-
नात्मा वैदेही मुक्त एव सः — ते. बिं. ४।५३

चित्तशुद्धिकरं शौचं वासना-
त्रयनाशनम् — मैत्रे. २।९

चित्तशुद्धिर्भवेद्यावत्तावन्नित्यं
चरेत्सुधीः — ना.प. ५।४७

चित्तशुद्धौ क्रमाज्ज्ञानं त्रुट्यन्ति
ग्रंथयः स्फुटम् — पा. ब्र. ४२

चित्तसत्ता परं दुःखं चित्तत्यागः
परं सुखम् — अ.पू. ५।११७

चित्तसत्तां क्षयं नीत्वा चित्तं
नाशमुपानये — अ.पू. ४।१५

चित्तसत्तेहदुःखायचित्तनाशःसुखाय.. — अ. पू. ४। १५

चित्तस्पन्दितमेवेदंग्राह्यग्राहकवद्द्वयं ।
चित्तं निर्विषयं नित्यं.. — अ.शां. ७२

चित्तस्य निश्चलीभावकारणं धारणां
विदुः । सोऽहं चिन्मात्रमेवेति
चिन्तनं ध्यानमुच्यते — २अवधू. ४

चित्तस्यनिश्चलीभावोधारणाधारणं.. — त्रि.ब्रा. २।३१

चित्तस्य हि प्रसादेन हन्ति कर्म
शुभाशुभम् । प्रसन्नात्माऽऽत्मनि
स्थित्वासुखमव्ययमश्नुते[मैत्रा.६।२० +मैत्रे.१।११

चित्तस्यान्तर्मुखीभावो प्रत्याहारः
[त्रि. ब्रा. ३०+ — २अवधू. ३

चित्तं कारणमर्थानां तस्मिन्सति जग-
त्त्रयम् । तस्मिन्क्षीणे जगत्क्षीणं..
[महो. ३।२१+ — यो. शि. ३।२१

चित्तं चरति खे यस्माज्जिह्वा भवति
खेगता । तेनैषा खेचरी नाम..
[ध्या.बिं. ८२+ — यो.चू. ५५

चित्तं च चेतयितव्यं च नारायणः — सुबालो. ६।१

चित्तं च चेतयितव्यं च तेजश्च
विद्योतयितव्यं च प्राणश्च
विधारयितव्यं च — प्रश्नो. ४।८

चित्तंतुशरदभ्रांशविलयं प्रविलीयते — अक्ष्युप. ३६

चित्तं दूरे परित्यज्य योऽसि
सोऽसि स्थिरो भव — महो. ५।५१

चित्तं ध्यानेन यच्चिन्त्यं शास्त्रदृष्टेन
कर्मणा । योगस्थेनैव मार्गेण
ह्येकाग्रमानसो भवेत् — दुर्वासो. २।५

चित्तं न संस्पृशत्यर्थं नार्थाभासं
तथैव च । अभूतो हि यतश्चार्थो
नार्थाभासस्ततः पृथक् — अ. शां. २६

चित्तंनिर्विषयंनित्यमसङ्गंतेनकीर्तितं — अ.शां. ७२

चित्तं प्रपञ्चमित्याहुः.. — ते. बिं. ५।३२

चित्तं प्राणभृत्सु...त्वैवाविस्तरामात्मा — १ऐत. ३।२।२

चित्तं प्राणेन सम्बद्धं सर्वजीवेषु
संस्थितम् । रज्ज्वा यद्वत्सु-
सम्बद्धः पक्षी तद्वदिदं मनः — यो. शि. १।५९

चित्तं बुद्धिरहङ्कार ऋत्विजः
सोमपं मनः — अमन. २।७

चित्तं वाव सङ्कल्पाद्भूयो यदा वै
चेतयतेऽथ सङ्कल्पयते.. — छान्दो. ७।५।१

चित्तं विनष्टं यदि भासितं स्यात्तत्र
प्रतीतो मरुतोऽपि नाशः — यो.शि. १।१२४

चित्तंसञ्जायतेजन्मजरामरणकारणं — मुक्तिको. २।२५

चित्तं सन्तानेन भवं यन्कारुद्र
(?) तन्निम्ना — चित्त्यु. २१।१

चित्तं स्थिरं यस्य विनाऽवलम्बात्
स एव योगी स गुरुः स सेव्यः — अमन. २।४३

चित्तं होता (शारीरयज्ञस्य) — प्रा. हो. ४।१

चित्तं ह्येवैषामेकायनम्, चित्तमात्मा — छान्दो.७।५।२

चित्ताकाशं चिदाकाशमाकाशं च.. — महो. ४।५८

चित्तादिविलये जाते पवनस्य लयो भवेत्। मनःपवनयोर्नाशादिन्द्रियार्थान्विमुञ्चति अमन.१।२०
चित्तादिसर्वभावेषु ब्रह्मत्वेनैव भावनात्। निरोधः सर्ववृत्तीनां प्राणयामः स उच्यते ते.बिं. १।३१
चित्तादिसर्वहीनोऽस्मि मैत्रे.३।१०
चित्ताद्वाव भूयोऽस्तीति तन्मे भगवान्ब्रवीतु छान्दो.७।५।३
चित्तान्वै सलोकान् ध्रुवान् ध्रुवः प्रतिष्ठितान् प्रतिष्ठितोऽव्यथमानानव्यथमानोऽभिसिद्धयति छान्दो.७।५।३
चित्ताहङ्कारयन्त्रारं जीवाख्यं त्वंपदं भजे शु. र. २।६
चित्तिः स्रुक्। चित्तमाज्यम् चित्यु. १।१
चित्ते चलति संसारे चलो मोक्षःप्रजायते। तस्माच्चित्तं स्थिरीकुर्यात्.. अमन. २।९१
चित्ते चलति संसारो निश्चलं मोक्ष उच्यते यो.शि.६।५८
चित्ते चैत्यदशाहीने या स्थितिः क्षीणचेतसाम्। सोच्यते शान्तकलना जाग्रत्येव सुषुप्तता अ.पू.२।१२
चित्ते तदेकतानता परिकरः द.मू. १६
चित्ते त्यक्ते लयं याति द्वैतमेतच्च सर्वतः। शिष्यते परमं शान्तमेकमच्छमनामयम् अ.पू. ५।६३
चित्तेन स्मृतिः(भवति)स्मृत्या स्मारं.. महाना.१७।१३
चित्ते शुद्धे शुचिः साक्षात्प्रत्यग्ज्योतिर्व्यवस्थितः जा.द. ६।१६
चित्तैककरणा सुषुप्तिः शारीरको. १०
चित्तैककरणा सुषुप्त्यवस्था भवति पैङ्गलो. २।८
चित्तैकाग्र्यतोज्ञानमुक्तं समुपजायते मुक्तिको. २।४९
चित्तोन्मेषनिमेषाभ्यां संसारप्रलयोदयौ अ.पू. ५।४०
चित्तोपशान्तिफलदं परमं विद्धि कारणम् (प्राणायामः) अ.पू. ४।४५
चित्परानन्दमस्म्यहम् (?) ते.बिं. ३।८
चित्त्वं चिदहमेते च लोकाश्चिदिति भावय [याज्ञव. २६+ वराहो. २।४७
चित्प्रसादोपलब्धात्मा स्पर्शो नाहमचेतनः १सं.सो. २।१६
चित्रदीप इव स्थितः अक्ष्यु. ४२
चित्रभित्तिरिव मिथ्यामनोरमं (भूतात्मानं) मैत्रा. ४।२
चित्रस्थदीपैस्तमसो नाशश्चेदस्त्विदं जगत् ते.बिं. ६।७९
चित्रं देवानामुदगादनीकं [सह.१७ कृ.अ.८।१।७
[=मं. १।११५।१+ वा.सं. ७।४२
[अथर्व.१३२॥३५+तै.सं.१।४।४३।१३ ऐत.२।३।३
चित्राख्या सीविनी नाडी शुक्र(शुक्र-)मोचनकारिणी यो.शि. ५।२७
चित्रो ह वै गार्ग्यायणिर्यक्ष्यमाण आरुणिं वव्रे.. कौ.उ. १।१
चित्सामान्यमथासाद्य सत्तामात्रात्मकं ततः। सुषुप्तपदमालम्ब्य तस्थौ गिरिरिवाचलः अ.पू. ३।१७
चित्सारमनन्ताश्चर्यसागरममिततेजोराश्यन्तर्गततेजोविशेषं..आनंद(परमकैवल्यं) प्रवाहैरलंकृतं त्रि.म.ना. ७।८
चित्सूत्रघ्राणयोः स्वनिर्गता प्रणवधारा षडंगुलदशाशीतिः पा. ब्र. ४
चित्स्वरूपोऽहमिति सदा भावयन् सम्यङ्निमीलिताक्षः.. परब्रह्मावलोकयंस्तद्रूपो भवति अद्वयता. १
चिदक्षरोऽहं सत्योऽहं वासुदेवोऽजरोऽमरः। अहंब्रह्म चिदाकाशं नित्यं.. ते.बिं. ६।६९
चिदग्निस्वरूपपरमानन्दशक्तिस्फुरणं वसनम् (ब्रह्मात्मस्वरूपस्य पूजायां) भावनो. ८
चिदग्निस्वरूपं धूपः (परमात्मपूजायां) मं.ब्रा. २।५
चिदम्बरं तु हृन्मध्ये आधारे कमलालयम् जा.द. ४।४९
चिदणोः परमस्यान्तः कोटिब्रह्माण्डरेणवः। उत्पत्तिस्थितिमभ्येत्य लीयन्ते शक्तिपर्ययात् महो.३।४
चिदहं चिदहं चेति (ब्रह्मास्मीति निश्चयात्) स जीवन्मुक्त उच्यते ते.बिं. ४।३०
चिदहं चिदिमे लोकाश्चिदाशाश्चिदिमाः प्रजाः महो. ६।७९

चिदाकारस्वरूपोऽसिचिन्मात्रोऽसि.. ते.बिं. ५।६५
चिदाकारस्वरूपोऽस्मि नाहमस्मि.. ते.बिं. ३।४३
चिदाकारं चिदाकाशं चिदेव परमं सुखम् ते.बिं. ६।६२
चिदाकाशमयोऽस्म्यहम् ते.बिं. ३।३
चिदात्मनि सदानन्दे देहरूढामहंकृतिं यम् । निवेश्य..केवलो भव.. अध्यात्मो. ९
चिदात्मानं नित्यशुद्धबुद्धमुक्तसदद्वयः ।.. वासुदेवोऽहमोमिति अध्युप. ४१
चिदात्मा भगवान् सर्वसाक्षित्वेन स्थितोऽस्म्यहम् । तेनात्मना बहुज्ञेन.. अ.पू. ३।८
चिदात्मास्मि निरंशोऽस्मि परापरविवर्जितः । रूपं स्मरन्निजं.. अ. पू. ५।१३
चिदात्माऽहं परात्माऽहं निर्गुणोऽहं परात्परः । आत्ममात्रेणयस्तिष्ठेत् स जीवन्मुक्त उच्यते ते.बिं. ४।१
चिदात्मैकरसोऽस्म्यहम् ते.बिं. ३।१४
चिदादित्यस्वरूपं दीपः(आत्मपूजायां) मं.ब्रा. २।५
चिदादीप्तिः पुष्पम् ,, आत्मपू. १
चिदाद्याद्वितीयब्रह्मसंवित्तिः सच्चिदानन्दलहरी महात्रिपुरसुन्दरीबहिरन्तरनुप्रविश्य स्वयमेकैवविभाति बह्वृचो. २
चिदानन्दतरङ्गिण्याः प्रवाहैरतिमङ्गलम् सि.सा.५।१
चिदानन्दमयानन्तपुष्पमाल्यैर्विराजमानं.. त्रि.म.ना. ७।१२
चिदानन्दमयोऽस्म्यहम् ते.बिं. ३।४
चिदानन्दरसनिर्झरैरभिव्याप्तम् त्रि.म.ना. ७।९
चिदानन्दैकरसं शिवं प्रशान्तममृतं तत्परं च ब्रह्म तत्त्वमसि शांडि. २।३
चिदानन्दोऽस्म्यहं चेता चिद्घनश्चिन्मयोऽस्म्यहम् ब्र.वि. ९५
चिदाग्निः पुष्पं, चिदग्निस्वरूपं धूपः मं.ब्रा. २।५
चिदिहास्तीति चिन्मात्रमिदं चिन्मयमेवच । चित्त्वं चिदहमेतेच लोकाश्चिदिति भावय [याज्ञव. २+ वराहो. २।४७
चिदेकत्वपरिज्ञाने नशोचतिनमुह्यति अ. पू. ४।३४
चिदेकरसो ह्ययमात्मा नृसिंहो. १।५
चिदेव परमं सुखम् ते. बिं. ६।६२
चिदेव ह्यनुज्ञाता तस्मात्परमेश्वर एवैकमेव तद्भवति (ब्रह्म) नृसिंहो. ८।६
चिद्घनश्चिन्मयोऽस्म्यहम् ब्र. वि. ९९
चिद्ग्रन्थावद्वैतग्रन्थिकृत्वानाभ्यादिब्रह्मबिलप्रमाणं.. मूलमेकं सत्यं मृण्मयं विज्ञातं स्यात् परब्र. ४
चिद्घनानन्दरूपोऽसि परिपूर्णस्वरूपकः ते.बिं. ५।६६
चिद्घनैकरसोऽस्म्यहम् ते.बिं. ६।६५
चिद्धीदं सर्वं काशते प्रकाशते च नृसिंहो. ७।३
चिद्धीदं सर्वं निरात्मकमात्मसात् करोति , तस्मात् परमेश्वर एवैकमेव तद्भवति (ब्रह्म) नृसिंहो. ८।४
चिद्रूपत्वान्न मे जाड्यं सत्यत्वान्नानृतं मम । आनन्दत्वान्नमेदुःखं आ. प्र. ३१
चिद्रूपमात्रं ब्रह्मैव सच्चिदानन्दमद्वयम् । आनन्दघन एवाहम्.. ते. बिं. ३।२६
चिद्रूपमेव प्रतिभानयुक्तं तस्मादखण्डं मम रूपमेतत् वराहो. ३।४
चिद्रूपया मायया संवलितो जीवसङ्घः सङ्ग्रासी भवति सामर. ९९
चिद्रूपादित्यमण्डलं द्वात्रिंशद्व्यूहभेदैरधिष्ठितम् त्रि.म. ना. ७।८
चिद्रूपे आश्रिता जीवास्ते तान्गुणान् प्रपद्य जडतां प्रपेदिरे सामर. १०२
चिद्रूपो जीवो ज्ञानी भवति सामर. ९८
चिद्विवर्तजगतोऽस्य कारणं तत्सदाहमिति मौनमाश्रय वराहो. ३।७
चिद्व्योमैव किलास्तीह परापरविवर्जितम् । सर्वत्रासम्भवत्वैत्यं यत्कल्पान्तेऽवशिष्यते अ. पू. ५।३६
चिन्तनंवासुदेवस्यपरस्यपरमात्मनः । स्वरूपव्याप्तदेहस्य ध्यानं कैवल्यसिद्धिदम् त्रि.ब्रा. २।१४७
चिन्तयंश्चेतसा कृष्णं मुक्तो भवति संसृतेः गो. पू. १।७
चिन्तयित्वा शरीरस्य नित्यानित्यं हि योगवित् । योगमेव प्रवक्ष्यामि.. दुर्वासो. २।९
चिन्तयेदात्मनाऽऽत्मनि अ. ना. ३२

चिन्तानलशिखादग्धं कोपाजगर-
चर्वितम् ।...समुद्धरमनोब्रह्म-
न्मातङ्गमिव कर्दमात् महो. ५।१३४
चिन्तानिचयचक्राणि नानन्दाय
धनानि मे । सम्प्रसूतकल-
त्राणि गृहाण्युग्रापदामिव महो. ३।७
चिन्तामपरिमेयां च भ.गी. १६।११
चिन्तितकार्याण्ययत्नेन सिद्ध्यंति भावनो. १०
चिन्त्यमेवं विनिर्मुक्तं शाश्वतं ध्रुव-
मच्युतम् । तद्ब्रह्मणस्तद्ध्यात्मं.. ते. बिं. १।८
चिन्त्योऽसि भगवन्मया भ.गी. १०।१७
चिन्मथनाविर्भूतं चित्सारमनंताश्चर्यं... त्रि.म.ना.७।८
चिन्मयमिदं सर्वं, तस्मात्परमेश्वर
एवैकमेवं तद्भवति (ब्रह्म) नृसिंहो. ८।२
चिन्मयस्याद्वितीयस्य निष्कलस्या-
शरीरिणः । उपासकानां
कार्यार्थं ब्रह्मणो रूपकल्पना रा. पू. १।७
चिन्मयं चोत्सृष्टदण्डम् निर्वाणो. ६
चिन्मयं परमानंदं ब्रह्मैवाहमिति
स्मरन् (सर्वत्र विचरेत्) ना. प. ५।९१
चिन्मयं हि सकलं विराजते स्फुटतरं
परमस्य योगिनः वराहो. ३।५
चिन्मयानन्ददिव्यविमानच्छत्र-
ध्वजराजिभिर्विराजमानम् त्रि.म.ना.७।१२
(ॐ) चिन्मयेऽस्मिन्महाविष्णौ जाते
दशरथे हरौ..राजते योमहीस्थितः रा. पू. १।१
चिन्मयो ह्ययमोङ्कारः नृसिंहो. ८।२
[+८।४+८।६+८।७
चिन्मात्रज्योतिरस्म्यहम् मैत्रे. ३।२१
चिन्मात्रमक्षयं शान्तमेकं ब्रह्मास्मि
नेतरत् अ. पू. ५।८
चिन्मात्रमेकमजमाद्यमनन्तमन्तः महो. ५।९३
चिन्मात्रमेव चिन्मात्रमखण्डैकरसं
परम् ।..सर्वं चिन्मात्रमेव हि ते. बिं. २।२४
चिन्मात्रमेवमात्माऽणुराकाशादपि
सूक्ष्मकः । चिदणोः परमस्यान्त-
कोटिब्रह्माण्डरेणवः महो. २।३
चिन्मात्रं केवलं चाहं नास्त्यनात्मेति
निश्चिनु । इदं प्रपञ्चं नास्त्येव.. ते. बिं. ५।३१
चिन्मात्रं चैत्यरहितमनन्तमजरं
शिवम् ..यदनादि निरामयम् महो. २।६८
चिन्मात्रं सर्वगं नित्यं सम्पूर्णं सुखम-
द्वयम् । साक्षाद्ब्रह्मैव नान्योऽस्ति.. वराहो. २।२१
चिन्मात्राद्व्यावहारिकम् ते. बिं. २।३५
चिन्मात्रान्नास्ति किञ्चन । पश्य.. महो. ५।५९
चिन्मात्रान्नास्ति कोऽपि हि ते. बिं. २।३५
चिन्मात्रान्नास्ति कोशादि ते. बिं. २।३७
चिन्मात्रान्नास्ति दिक्पालाः ते. बिं. २।३५
चिन्मात्रान्नास्ति देवता ते. बिं. २।३४
चिन्मात्रान्नास्ति पूजनम् ते. बिं. २।३६
चिन्मात्रान्नास्ति मन्तव्यं ते. बिं. २।३६
चिन्मात्रान्नास्ति मंत्रादि ते. बिं. २।३४
चिन्मात्रान्नास्ति माया च ते. बिं. २।३६
चिन्मात्रान्नास्ति मौनं च ते. बिं २।३७
चिन्मात्रान्नास्ति लक्ष्यं च ते. बिं. २।४१
चिन्मात्रान्नास्ति वेदनम् ते. बिं. २।३४
चिन्मात्रान्नास्ति वैराग्यं ते. बिं. २।३८
चिन्मात्रान्नास्ति वै वसु ते. बिं. २।३७
चिन्मात्रान्नास्ति सङ्कल्पः ते. बिं. २।३४
चिन्मात्रान्नास्ति सत्यकम् ते. बिं. २।३६
चिन्मात्रात्परमं ब्रह्म... ते. बिं. २।३५
चिन्मात्रोऽहं न संशयः सर्वसा. ८
चिन्मात्रोऽहं सदाशिवः कैव. १८
चिरकालपरिक्षीणमननादिपरि-
भ्रमः । पद्मासाद्यते पुण्यं
प्रज्ञयैवैकया तथा अ.पू. १।२७
चिरकालं हृदेकान्तव्योमसंवेदनात्..
प्राणस्पन्दो निरुध्यते शांडि. १।७।२५
चिरक्षिप्रव्यपदेशेन निमेषमारभ्य
परार्धपर्यन्तं कालचक्रं..चक्रवत्परि-
वर्तमानाः..कालस्य विभाग-
विशेषाः.. कालरूपा भवन्ति सीतो. ७
चिरजीवित्वं ब्रह्मचारी रूपवान्
न हिंसां प्रपद्यते संहितो. ४।१
चिरं सन्दर्शनाभावादप्रफुल्लं बृह-
द्दृचः । ..स्वप्नो जाग्रदिवोदितः महो. ५।१७
चीराजिनवासः, अनाहतमंत्रः निर्वाणो. ७

चुबुकं हृदि विन्यस्य पूरयेद्वायुना पुनः । कुम्भकेन यथाशक्ति धारयित्वा तु रेचयेत् १यो. त. ११२
चेतनं चित्तरिक्तं हि प्रत्यक्चेतनमुच्यते । निर्मनस्कस्वभावत्वान्न तत्र कलनामलम् १सं. सो.२।४५
चेतनाधातुरप्येकः स्मृतः पुरुषसंज्ञकः आयुर्वे. १
चेतनोऽसौ प्रकाशत्वाद्वेद्याभावाच्छिलोपमः महो. २।६
चेतयितव्यमेवाप्येति यश्चेतयितव्यमेवास्तमेति सुबालो. ९।१३
चेतसा नान्यगामिना भ. गी. ८।८
चेतसा सम्परित्यज्य सर्वभावात्मभावनाम् [महो. ४।८+ अ. पू. १।३२
चेतसा सर्वकर्माणि भ.गी. १८।५७
चेतसो यदकर्तृत्वं तत्समाधानमीरितम् । तदेव केवलीभावं सा शुभा निर्वृतिः परा महो. ४।७
चेतामन्तागन्तोत्स्रष्टानन्दयिता कर्ता वक्ता (आत्मा) मैत्रा. ६।७
चैतन्यमात्रसंसिद्धः स्वात्मारामः सुखासनः ते. बिं. ४।४७
चैतन्यशक्त्याऽलंकृतस्वात्मचैतन्यकैलासेश्वरलिङ्गाकारं सुपूजितम् सि. सा. ६
चैतन्यस्यैकरूपत्वाद्भेदो युक्तो न कर्हिचित् । जीवत्वं च तथा ज्ञेयं रज्ज्वां सर्पग्रहो यथा यो. शि. ४।१
चैतन्योऽस्मि समोऽस्म्यहम् मैत्रा. ३।४
चैत्यनिर्मुक्तचिद्रूपं पूर्णज्योतिस्स्वरूपकम् ।..संविन्मात्रमहं महत् महो. ६।८१
चैत्यवर्जितचिन्मात्रे पदे परमपावने । अक्षुब्धचित्तो विश्रान्तः स जीवन्मुक्त उच्यते वराहो. ४।२९
चैत्यानुपातरहितं सामान्येन च सर्वगम् । यच्चित्तत्वमनाख्येयं स आत्मा परमेश्वरः महो. ४।११
चैत्यानुपातरहितं चिन्मात्रमिह विद्यते । तस्मिन्नित्ये तते शुद्धे.. महो. ४।१२१
चैतन्यचित्तेजसोऽन्तरात्मा अद्वैतो. १
चैतन्यमात्मानमणुं महान्तम् । सम्पूजकः पंच महोपपातकैर्युक्तो विमुक्तः शिवरूपमेति १बिल्वो. ११
चैलाजिनकुशोत्तरम् भ. गी. ६।११
चोदको दर्शयेन्मार्गं बोधकः स्थानमाचरेत् ब्र. वि. ५२
चोदको बोधकश्चैव मोक्षदश्च परः स्मृतः । इत्येषां त्रिविधो ज्ञेय आचार्यस्तु महीतले ब्र. वि. ५१
(ब्लूं) चोदयित्री सूनृतानां चेतन्ती सुमतीनाम् सरस्व.१२+ तै.सं. ४।१।११।२ ऋ.अ. १।३।११ +वा.सं.२०।८५
चोरस्यान्नं नवश्राद्धं ब्रह्महा गुरुतल्पगः । गोस्तेयं सुरापानं भ्रूणहत्यां तिलाः शान्तिं शमयन्तु स्वाहा महाना. १४।६

छ

छन्दस्तःशिरोदक्षिणः पक्षः,उत्तरः पक्षः पुच्छमात्मेत्याख्यानम् १ऐत. ३।४।२
छन्दः पुरुष इति यमवोचामाक्षरसमाम्नाय एव ३ऐत. २।३।१
छन्दांसि जज्ञिरे तस्मात् [ऋ.अ.८।४।१८=मं.१०।९०।१० चित्यु.१२।४ +वा.सं.३१।७
छन्दांसि यज्ञाः क्रतवो व्रतानि भूतं भव्यं..अस्मान्मायी (देवी) सृजते विश्वमेतत्.. [श्वेता. ४।९+ गुह्यका. ५४
छन्दांसि यस्य पर्णानि भ.गी. १५।१
छन्दो जायते पुरुषोत्तमात् सि. वि.२
छन्दोभिर्विविधैः पृथक् भ.गी. १३।४
छन्दोभ्योऽध्यमृतात्सम्बभूवसमेन्द्रो मेधया स्पृणोतु [ना.प. ४।४५+ तैत्ति. १।४।१
छन्दोऽहं,सत्योऽहं,गार्हपत्यो दक्षिणाग्निराहवनीयोऽहम् अ.शिरः. १।१
छादयन्ति ह वा एनं छन्दांसि १ऐत. १।४।१

छायातपौब्रह्मविदो वदन्ति पञ्चा-
 ग्नयो ये च त्रिणाचिकेताः कठो. ३।१
छित्त्वाऽविद्यामहाग्रन्थिं शिवं गच्छे-
 त्सनातनम् । तदेतदमृतं सत्यं.. रुद्रहृ. ३७
छित्त्वैनं संशयं योगं भ. गी. ४।४२
छिद्यतेध्यानयोगेन,सुषुम्नैका नछिद्यते क्षुरिको. १८
छिद्यमानो न ब्रूयात् । तदेवं विद्वांस
 इहैवामृता भवन्ति शाट्याय. १८
छिद्यमानोऽपि न कुप्येत न कम्पेतो-
 त्पलमिव तिष्ठासेत्.. आकाश-
 मिव तिष्ठासेत्.. सत्येन तिष्ठासेत् ।
 सत्योऽयमात्मा सुबालो. १३।३
छिद्रं भद्रं तथा सिंहंपद्मंचेतिचतुष्टयम् ध्या. विं. ४३
छिद्रां वा छायांपश्येत् । तदप्येवमेव.. ३ऐत. २।४।५
छिन्दन्तिदातृहस्तंचजिह्वाग्रमितरस्यच इतिहा. २७
छिन्द्यान्नाडीशतं धीरः प्रभावादिह
 जन्मनि क्षुरिको १९
छिन्नद्वैधा यतात्मानः भ. गी. ५।२५
छिन्नपाशस्तथाजीवःसंसारंतरतेसदा क्षुरिको. २२
छिन्नं भिन्नं मृतं नष्टं वर्धते नास्ति
 केवलम् । इत्याद्यान्न वदेच्छ-
 ब्दान्, साक्षाद्ब्रूयात्तु मङ्गलम् शिवो. ७।८०
छिन्नाभ्रमण्डलं व्योम्नि यथा शरदि
 धूयते । वातेन कल्पकेनैव तथा-
 ऽन्तर्धूयते मनः महो. ४।९६
छिन्नाभ्रमिव नश्यति भ. गी. ६।३८
छेत्ता न ह्युपपद्यते भ. गी. ६।३९
छेत्तुमर्हस्यशेषतः भ. गी. ६।३९
छेदनचालनदोहैः..जिह्वां कृत्वा...
 दृष्टिं भ्रूमध्ये स्थाप्य कपालकुहरे
 जिह्वा विपरीतगा यदा भवति
 तदा खेचरी मुद्रा जायते.. शांडि. १।७।४३

ज

जक्षत्क्रीडन्रममाणः स्त्रीभिर्वायानैर्वा
 ज्ञातिभिर्वा नोपजनँ स्मरन् छांदो. ८।१२।३
जगज्जालपदार्थात्मा सर्वं एवाह-
 मक्षयः । तृतीयो निश्चयो
 प्रोक्तो मोक्षायैव द्विजोत्तम महो. ६।५७
जगज्जीवनं जीवनाधारभूतं...
 इति कमण्डलुं परिगृह्य..
 यथासुखं विहरेत् १सं. सो. २।१२
जगज्जीवनं जीवनाधारभूतं मा ते
 मामंत्रयस्व सर्वदा सर्वसौम्येति.. ना. प. ४।५०
जगज्जीवपरमात्मनो जीवभाव-
 जगद्भावबाधे प्रत्यगभिन्नं
 ब्रह्मैवावशिष्यते पैङ्गलो. २।१०
जगज्जीवादिरूपेण पश्यन्नपि
 परात्मवित् । न तत्पश्यति
 चिद्रूपं ब्रह्मवस्त्वेव पश्यति पा. ब्र. २९
जगतः शाश्वते मते भ. गी. ८।२६
जगति परमहंसो वासुदेवोऽहमेव वराहो. २।३७
जगत्कारणरूपस्य विकारित्वं
 चतुर्थकः (भ्रमः) अ. पू. १।१५
जगत्तस्यामवस्थायामन्तस्तमसि
 लीयते । सप्तावस्था इमाःप्रोक्ताः.. महो. ५।१९
जगत्तावदिदं नाहं सवृक्षतृणपर्वतम् ।
 यद्बाह्यं जडमत्यन्तं तत्स्यां
 कथमहं विभुः १सं.सो. २।१३
जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च भ.गी. ११।३६
जगत्प्राणायात्मनेऽस्मै नमः स्यान्नम-
 स्त्वैभ्यं प्रवदेत्प्राग्गुणेति रा. पू. ३।२
जगत्त्रयमिदं सर्वं चिन्मात्रं
 स्वविचारतः [महो. ४।८४+ वराहो. २।७२
जगत्त्यक्त्वा सुखी भवेत् याज्ञव. १७
जगत्सर्वमात्मा परमात्मैव नृसिंहो. ९।१
जगत्त्वमहमित्यादिसर्गात्मा दृश्य-
 मुच्यते । मनसैवेन्द्रजालश्री-
 र्जगति प्रवितन्यते महो. ४।४८
जगत्सर्वमिदं मिथ्याप्रतीतिः
 प्राणसंयमः [त्रि.ब्रा. २।३०+ २ अवधू. ३
जगदव्यक्तमूर्तिना भ. गी. ९।४
जगदात्मतयाभाति यदा भोज्यं भवे-
 त्तदा । ब्रह्मस्वात्मतया नित्यं
 भक्षितं सकलं तदा पा. ब्र. ४६

जगदादित्यो रोचत इति ज्ञात्वा ते मर्त्या विबुधास्तपनप्रार्थनायुक्ता आचरन्ति — पा. प्र. ५
जगदाहुरनीश्वरम् — भ. गी. १६।८
जगदुत्पत्त्यपायोन्मेषनिमेषं सोमाग्निनेत्रं (गणेशं) — ग. शो. ४।८
जगदेतद्भ्रमात्मकम् — महो. ४।६५
जगद्धरणाद्धरो भव (हे शिव) — ग. शो. ३।१३
जगद्धितं वा एतद्रूपं यदक्षरं भवति — नृ. पू. २।९
जगद्भेदोऽपि तद्भानमिति भेदोऽपि तन्मयः — महो. २।७
जगद्भासयतेऽखिलम् — भ.गी. १५।१२
जगद्रूपतयाऽप्येतद्ब्रह्मैव प्रतिभासते — २आत्मो. २
जगद्विकल्पो नोदेति चित्तस्यात्र विलापनात् (पञ्चमभूमिकायां) — अक्ष्युप. ३७
जगद्विपरिवर्तते — भ.गी. ९।१०
जगन्नाम्ना चिदाभाति सर्वं ब्रह्मैव केवलम् । — यो.शि. ४।१८
जगाम शिखरं मेरोः समाध्यर्थमखण्डितम् । (शुकः) — महो. ५।७९
जघनेनाग्निं प्राक्शिराः संविशति — बृह. ६।३।६
जघन्यगुणवृत्तिस्थाः — भ.गी. १४।१८
जङ्गमरूपवान् भवति (गणेशः) — ग.शो. २।२
जङ्गमरूपःशिवः। शिवएवजङ्गमरूपः — रुद्रोप. २
जङ्घन्यमानाः परियन्ति मूढा अन्धेनैव नीयमाना यथाऽन्धाः — मुण्ड. १।२।८
जङ्घेसंयमात्सुतललोकज्ञानं (चित्तस्य) — शांडि. १।७।५२
जजनदिन्द्रमिन्द्रियाय स्वाहा — चित्त्यु. २।१
जटाभस्मधारोऽपिप्राणलिङ्गीहि श्रेष्ठः — रुद्रोप. २
जठरान्तस्थित-यक्ष-गन्धर्व-रक्षः-किन्नरमानुषं (गणेशमस्तुवन्) — ग.शो. ४।७
जडतां वर्जयित्वैकां शिलाया हृदयं हि तत्। अमनस्कस्वरूपं यत्तन्मयो भव सर्वदा — महो. ५ ५१
जडत्व-प्रियमोदत्व-धर्माः कारणधर्मगाः। नसन्ति ममनित्यस्य.. — आ.प्र. २५
जडस्तु पार्थिवो ज्ञेयोह्यपकोदुःखदो भवेत्। ध्यानस्थोऽपि तथाप्येवमिन्द्रियैर्विवशो भवेत् — यो.शि. १।२७

जडाजडदशोर्मध्ये यत्तत्त्वं पारमार्थिकम्। अनुभूतिमयं तस्मात् सारं ब्रह्मेति कथ्यते — [illegible]
जनइतिजनलोकः,तपइतितपोलोकः — गायत्री. [illegible]
जनकस्यवैदेहस्य होताऽश्वलो बभूव — बृह. ३।१।२
जनकं ह वैदेहं याज्ञवल्क्यो जगाम — बृह. ४।३।१
जनकोनाम भूपालो विद्यते मिथिलापुरे। यथावद्वेत्त्यसौ वेद्यं.. — महो. २।१९
जनको लालयामास शुकं शशिनिभाननम् — महो. २।२९
जनको (ह) वैदेहोऽभयं त्वा गच्छतात्... — बृह. ४।२।४
जनको ह वैदेह आसाञ्चक्रे — बृह. ४।१।१
जनको ह वैदेहः कूर्चादुपावसर्पन्नुवाच — बृह. ४।२।१
जनको ह वैदेहो बहुदक्षिणेन यज्ञेनेजे — बृह. ३।१।१
जनश्च नारायणः, तपश्च नारायणः — ना.उ.ता. [illegible]
जना न विदुरासुराः — भ.गी. १६।७
जनानां पुण्यकर्मणाम् — भ.गी. ७।२८
जनाः सुकृतिनोऽर्जुन — भ.गी. ७।१६
जनेनावमतो योगी योगसिद्धिं च विन्दति। तथाऽऽचरेत वै योगी सतां धर्ममदूषयन् — ना.प. ५।४४
जनोलोकस्तु हृद्देशे कण्ठे लोकस्तपस्ततः — ना.विं. ४
जन्तोर्दक्षिणकर्णेतु मत्तारंसमुपादिशेत्। निर्धूताशेषपापौघो मत्सारूप्यं भजत्ययम् — मुक्तिको. [illegible]
जन्तोः कृतविचारस्य विज्ञानवशतः स्वभावः सम्प्रसीदति — महो.५।६१-६६
जन्मकर्मगुणाश्चैते वर्णसंज्ञाकरा नृणाम्। अन्तिमाभ्यां विहीनस्तु जन्ममात्रेण वर्णभाक् — भवसं. [illegible]
जन्मकर्म च मे दिव्यं — भ. गी. ४।९
जन्मकर्मफलप्रदाम् — भ. गी. २।४३
जन्मजराभ्यां भिन्नः स्थाणुरयमच्छेद्योऽयं योऽसौ सूर्ये तिष्ठति, योऽसौ गोषु तिष्ठति, स वो हि स्वामी भवति — गोपालो. [illegible]

जन्मनिरोधं प्रवदन्ति यस्य ब्रह्मवादिनो हि प्रवदन्ति नित्यम् — श्वेताश्व.३ । २१
जन्मपल्वलमत्स्यानां चित्तकर्दमचारिणाम् । पुंसां दुर्वासना रज्जुर्नारी बडिशपिण्डिका — याज्ञव. १५ [+ महो. ३।४६
जन्मबन्धविनिर्मुक्ताः — भ.गी. २ । ५१
जन्म मायोपमं तेषां सा च माया न विद्यते — अ. शां. ५८
जन्ममृत्युजरादुःखैः — भगी.१४।२०
जन्म-मृत्यु-जरा-व्याधि-दुःखदोषानुदर्शनम् — भ. गी. १३। ९
जन्ममृत्युसुखदुःखवर्जितं..चिद्विवर्तजगतोऽस्य कारणं, तत्सदाऽहमिति मौनमाश्रय — वराहो. ३ ।७
जन्मस्थितिविनाशेषु सोदयास्तमयेषु च । सममेव मनो यस्य स जीवन्मुक्त उच्यते — महो.२ । ५९
जन्मानि तव चार्जुन — भ. गी. ४।५
जन्मान्तरकृतान्सर्वान्दोषान्वारयतीति तेन वारणा भवतीति — रामो. ३ । १
जन्मान्तरघ्ना विषया एकजन्महरं विषम् । इति मे..चेतसि स्फुरन्ति हि न भोगाशाः — महो.३।५४
जयतीमाँल्लोकान् जित इन्वसावसत् — बृह. ५ । ४।१
जन्मान्तरसहस्रेषु यदा क्षीणं तु किल्बिषम् — यो.शि. १।७८
जन्मान्तरशताभ्यस्ता मिथ्या संसारवासना । सा चिराभ्यासयोगेन विना न क्षीयते क्वचित् — मुक्तिको.२।१४
जन्मान्तरैश्च बहुभिर्योगो ज्ञानेन लभ्यते । ज्ञानं तु जन्मनैकेन योगादेव प्रजायते । तस्माद्योगात्परतरो नास्ति मार्गस्तु मोक्षदः — यो.शि. १।२२
जन्मान्यनन्तानि विस्तीर्य भूयः शिवप्रसादात्कृतपुण्यदेशः...न संसृतौ...प्रमज्जेत् — सि. शि. ७
जन्माभावे कुतः स्थितिः — ना. बिं. २५
जन्माभावे कुतो नाशः — तै. बिं.५।२४
जपस्तु द्विविधः प्रोक्तो वाचिको मानसस्तथा — जा. द. २। १३
जपात्सिद्धीश्वरो भवेत् — कामराज. १
जपान्वितस्त्रिप्रमिताश्च शाखादिकत्वा नदाम्रानुगमार्दवानि । दलानि भक्त्या चिनुयात् — १बिल्वो. १३
जपो नाम विधिवद्गुरूपदिष्टवेदाविरुद्धमन्त्राभ्यासः — शाण्डि. १।२।१
जप्येनामृतत्वं च गच्छति — महो. ६।८५
जबाला तु नामाहमस्मि, सत्यकामो नाम त्वमसि, सत्यकाम एव जाबालो ब्रुवीथाः — छान्दो.४।४।२
जयन्तीसम्भवो वायुश्चमरो धर्मसंज्ञितः । यस्यासौ ज्वलनाभासः खड्गरूपो महेश्वरः — कृष्णोप.२०
जयाजयमसन्मयम् । शब्दं सर्वमसत् — ते.बिं.३।५६
जयेदादौ स्वकं मनः [महो. ५।७५+ — मुक्तिको.२।४२
जयोऽस्मि व्यवसायोऽस्मि — भ.गी. १०।३६
जरयावोपतपतावाऽणिमानं नियच्छति — बृह. ४।३।३५
जरा पालिनिका शान्तिरीश्वरी रतिकामिका । वरदा ह्लादिनी प्रीतिर्दीर्घा दश कला हरेः — ना. पू.ता.५।१
जरामरणधर्माधर्मादिसाम्यदर्शनात् (न देहो ब्राह्मणः) — व. सू. ४
जरामरणनिर्मुक्ताः सर्वे धर्माः स्वभावतः — अ. शां. १०
जरामरणमापन्न राज्यं दारिद्र्यमेव च । रम्यामित्येव यो भुंक्ते स जीवन्मुक्त उच्यते — महो. २ । ५५
जरामरणमिच्छन्तश्च्यवन्तेतन्मनीषया — अ. शां. १०
जरामरणमोक्षाय — भ. गी. ७।२९
जरामृत्युगदघ्नो यः खेचरीं वेत्ति भूतले । ग्रन्थतश्चार्थतश्चैव.. — योगकुं. २। २
जरा मृत्युं ते पुनरेवापियन्ति — मुंड. १।२।७
जरायुजाण्डजादीनां वाङ्मनःकायकर्मभिः । युक्तः कुर्वीत न द्रोहं.. — ना. प. ५।४३
जरायुजा नरपशुमृगादयो जायन्ते (नारायणात्) — ना. पू.ता. ५।६
जरावस्थाकाल...कारणं तत्त्वज्ञानं भवति — कठश्रो. २

जलगतसैन्धवखण्डवन्महात्मा — अ. पू. २।१६
जलतीरे केतनं हि ब्रह्मवादिनो वदन्ति — कठश्रु. ९
जलत्वेन मरीचिका । गृहत्वेन हि काष्ठानि...तद्वदात्मनि देहत्वे.. — यो. शि. ४।२३
जलमिति भस्म, स्थलमिति भस्म — रुद्रोप. २
जलस्य चलनादेव चञ्चलत्वं यथा रवेः । तथाऽहङ्कार-सम्बन्धादेव संसार आत्मनः — वराहो. ३।२०
जलं वह्नौ वह्निं वायौ वायुमाकाशे.. अव्यक्तं पुरुषे क्रमेण विलीयते.. ततो..चात्माऽऽविर्भवति — पैङ्गलो. ३।३
जलूकाभाववद्यथाकाममाजायते-श्वरात्,तावताऽऽत्मानमानन्दयति — परब्र. २
जलूका रुधिरं यद्वद्बलादाकर्षति स्वयम् । ब्रह्मनाडी तथा धातून्.. — यो.शि. १।१२५
जलेऽग्निज्वलनाच्छाखापल्लवानि भवन्ति हि — वराहो. ५।३६
जलेन श्रमजातेन गात्रमर्दन-माचरेत् । दृढता लघुता चापि तस्य गात्रस्य जायते — शांडि. १।७।४
जले वाऽपि स्थले वाऽपि लुठत्वेष जडात्मकः । नाहं विलिप्ये तद्धर्मैर्घटधर्मैर्नभो यथा — कुण्डिको. २४
जले सैन्धवपिण्डवत् (लीनो भवति) — २ अवधू. ७
जलोपरि समर्पितव्यञ्जनसंयुक्त-मन्नं वह्निसंयुक्तवारिणा पक्वमकरोत् — शांडि.१।४।८९
जहात्यहस्सु पूर्व्येषु, त्वामापो.. — चित्त्यु. १४।२
जहात्येनां भुक्तभोगामजोऽन्यः — श्वेताश्व. ४।५
[+महाना. ८।५+ — ना. पू. ता.५।१
जहि शत्रुं महाबाहो — भ. गी. ३।४३
जहि शत्रूँ अपमृधो नुदस्व(परमृधो) — महाना. ५।११
[ऋ.अ.३।३।११=मं.३।४७।२+ — वा.सं.७।३७
[+तै.सं.१।४।४।२+ — तै.आ.१०।१।११
जागतं छन्दः, द्यौः स्थानम् — २ प्रणवो. २१
(अथो खल्वाहुः) जागरितदेश एवास्यैष इति — बृह. ४।३।१४
जागरितस्थानश्चतुरात्मा विश्वो वैश्वानरश्चतूरूपोङ्कार एव — नृसिंहो. २।४
जागरितस्थानो बहिःप्रज्ञः सप्ताङ्ग एकोनविंशतिमुखः स्थूलभुग्वैश्वानरः प्रथमः पादः (आत्मनः) [माण्डू. ३+ — नृ. पू. ४।२
जागरितस्थानो वैश्वानरोऽकारः प्रथमा मात्राप्तेरादिमत्त्वाद्वा — माण्डू. ९
जागरितं स्वप्नं सुषुप्तं तुरीयं च महतां च लोकं परं च लोकं दहति — सुबालो. १५।२
जागरिते ब्रह्मा,स्वप्ने विष्णुः,सुषुप्तौ रुद्रस्तुरीयंपरमाक्षरं स आदित्यो विष्णुश्चेश्वरश्च.. — ब्रह्मो. २
जागरिते ब्रह्मा स्वप्नेविष्णुः सुषुप्तौ रुद्रस्तुरीयमक्षरं चिन्मयं, तस्माच्चतुरवस्था — परब्र. ३
जागरितेसुषुप्त्यवस्थापन्नइवयद्यच्छ्रुतं यद्यद्दृष्टं तत्तत्सर्वमविज्ञातमिवयो वसेत्तस्य स्वप्नावस्थायामपि ताद्-गवस्था भवति — ना.प. ५।१४
जागरे स्वप्नता नहि । द्वयमेव लये नास्तिलयोऽपि ह्यनयोर्न च — यो.शि. ४।११
जाग्रच्चित्तेक्षणीयास्ते नविद्येते ततः पृथक् । तथा तद्दृश्यमेवेदं जाग्रत-श्चित्तमिष्यते — अ.शां. ४६
जाग्रतः प्रत्ययाभावं यस्याहुः प्रत्ययं बुधाः । यत्सङ्कोचविकासाभ्यां जाग्रत्प्रलयदृष्टयः — महो. २।१०
जाग्रतःस्वपतश्चैवप्राणायामोऽयमुत्तमः । प्रवर्तते ह्यभिज्ञस्य.. — अ.पू. ५।२७
जाग्रतीं त्वासादयामि — चित्त्यु. १९।१
जाग्रति प्रवृत्तोजीवःप्रवृत्तिमार्गासक्तः — मं.ब्रा. २।७
जाग्रतो नैव चार्जुन — भ.गी. ६।१६
जाग्रत्काले विश्वः, स्वप्नकाले तैजसः, सुषुप्तिकाले प्राज्ञः — ना.प. ५।१२
जाग्रत्येव सुषुप्तस्थः कुरु कर्माणि.. अतःसर्वपरित्यागी बहिः कुरु.. — अ. पू. ५।११६
(ॐ)जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तितुरीयतुरीया-तीतोऽन्तर्यामी..गोपालॐभूर्भुवः सुवस्तस्मै नमोनमः — गोपालो. ३।१८

जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तितुरीयमिति
चतुर्विधा अवस्थाः शारीरको. १०
जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तितुरीयावस्थाभेदै-
रेकैकमात्रा चातुर्विध्यमेत्य.. तुरीयो. २
जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तितुरीयाश्चेत्य-
वस्थाश्चतस्रः यो.चू. ७२
जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिमूर्च्छामरणधर्मयुक्तो
घटीयंत्रवदुद्विग्नोजातो मृत इव
कुलालचक्रन्यायेन परिभ्रमति पैङ्गलो. १।५
(अथ)जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिमूर्च्छामरणाद्य-
वस्थाः पञ्च भवन्ति पैङ्गलो. २।७
जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिषुसर्वकालव्यवस्थितं ना.उ.ता. १।९
जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिमूर्च्छावस्थानां...
सर्वजीवभयप्रदा स्थूलदेहविस-
र्जनी मरणावस्था भवति पैङ्गलो. २।९
जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिष्वेकशरीरस्य जाग्र-
त्काले विश्वः, स्वप्नकाले तैजसः,
सुषुप्तिकाले प्राज्ञः ना.प. ५।११
जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यादि मनोमय-
मितीरितम् ते. बिं. ५।१०३
जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यादिप्रपञ्चं यत्प्रकाशते,
तद्ब्रह्माहमिति ज्ञात्वा सर्वबन्धैः
प्रमुच्यते कैव. १७
जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यादिष्ववस्थास्वेक-
रूपिणी। ब्रह्मानन्दमयी विद्या.. गन्धर्वो. ५
जाग्रत्स्वप्ने व्यवहरन् सुषुप्तौ क गति-
र्मम। इति चिन्तापरो भूत्वा.. योगकुं. ३।२९
जाग्रदवस्थायां जाग्रदादिचतस्रो-
ऽवस्थाः (भवन्ति) [प.हं.प.९+ ना.प. ६।६
जाग्रदवस्थायां विश्वस्य चातुर्विध्यं—
विश्वविश्वो विश्वतैजसो विश्व-
प्राज्ञो विश्वतुरीय इति प. हं. प. ९
जाग्रद्वृत्तावपि त्वन्तश्चेतसा कल्पितं
त्वसत्। बहिश्चेतो गृहीतं सद्युक्तं
वैतथ्यमेतयोः वैतथ्य. १०
जाग्रदादिविमोक्षान्तः संसारो
जीवकल्पितः। त्रिणाचिकादि-
योगान्ता ईश्वरभ्रान्तिमाश्रिताः
[वराहो. २।५४+ महो. ४।७३

जाग्रन्निन्दा- (द्रा?) तः परिज्ञानेन
ब्रह्मविद्भवति मं. ब्रा. २।६
जाग्रन्निद्राविनिर्मुक्ता सा स्वरूप-
स्थितिः परा मैत्रा. २।३०
जाग्रन्नेत्रद्वयोर्मध्ये हंसएवप्रकाशते।
सकारः खेचरी प्रोक्तस्त्वंपदं
चेति निश्चितम् यो. चू. ८२
जाग्रन्मात्राचतुष्टयमकारांशं स्वप्न-
मात्राचतुष्टयमुकारांशं.. अय-
मेव ब्रह्मप्रणवः प. हं. प. १०
जाड्यभावविनिर्मुक्तममलं चिन्मया-
त्मकम्। तस्यातिवाहिकं मुख्यं.. योगकुं. १।६७
जात इत्यनेन परमात्मनो जृम्भणम् त्रि. ता. २।३
जात इत्यादिना परमात्मा
शिव उच्यते त्रि. ता. २।३
जातएवनजायते,कोन्वेवंजनयेत्पुनः। बृह. ३।९।२४
जातमात्रेण कामी कामयते
काममित्यादिना त्रि. ता. २।३
जातमात्रेण मुनिराट् यत्सत्यं तद-
वाप्तवान्। तेनासौ स्वविवेकेन.. महो. २।१
जातरूपधरश्चरेदात्मानमन्विच्छेत् ना. प. ३।८७
जातरूपधरश्चेन्नकन्थावेशोनाध्ये-
तव्यो न श्रोतव्यमन्यत्किंचित्.. ना. प. ५।६
जातरूपधरा निर्द्वन्द्वा निष्परिग्रहा-
स्तत्त्वब्रह्ममार्गे सम्यक्सम्पन्नाः.. याज्ञव. ३
(अथ) जातरूपधरा निर्द्वन्द्वा
निष्परिग्रहाः शुक्लध्यानपरायणा
आत्मनिष्ठाः...ते परमहंसा नाम भिक्षुको. ६
जातरूपधरोभवति सः.. सन्यासी ना. प. ५।३
जातवेद एतद्विजानीहि
किमेतद्यक्षमिति केनो. ३।३
जातवेदसमण्डलंयोऽधीतेसर्वंव्याप्यते त्रि. ता. १।६
जातवेदसमव्यक्तंव्यक्ताव्यक्तंपरंसदा सवानं. ५
जातवेदसे सुनवाम सोममरातीं महाना. ६।१२
[+ऋ.अ.१।७।७ =मं. १।९९।१
[वनदु. ११;११४ + त्रि.ता. १।२
जातवेदसे सुनवामसोमंतदन्त्यम-
वाणी...महासौभाग्यमाचक्षते त्रि. ता. २।२

जातश्च वायुना स्पृष्टो न स्मरति जन्ममरणम् । अन्ते च शुभाशुभं कर्म... प्रामाण्यम् निरुक्तो. १।८

जातश्चैव मृतश्चैव जन्म चैव पुनः पुनः । यन्मया परिजनस्यार्थे कृतंकर्मशुभाशुभम् । एकाकीतेन दह्येऽहं गतास्ते फलभोगिनः गर्भो. ५

जातस्य महारोगादि कुमारस्य...उपनीतेऽप्यविद्यत्वमनुद्वाहश्च पंडिते याज्ञव. १९

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः भ.गी. २।२७

जातं मृतमिदं देहं मातापितृमलात्मकम् ।..स्पृष्ट्वा स्नानं विधीयते मैत्रे. २।५

जाताच जायमानस्य न व्यवस्था प्रसज्यते अ.शां. १३

जातानि जीवन्ति (भूतानि) आकाशं प्रयन्त्यभिसंविशन्ति ग. पू. २।९

जातान्यन्नेन वर्धन्ते, अद्यतेऽत्ति च भूतानि [तैत्ति. २।२+ मैत्रा. ६।१२

जाता रुद्राक्षा जलबिन्दवोऽस्य सद्योजातादीन् पञ्चवक्त्राणि विद्यात् (शिवस्य) सि.शि. १६

जातास्त एव जगति जन्तवः साधुजीविताः । ये पुनर्नेह जायन्ते शेषा जरठगर्दभाः महो. ३।१४

जातिदोषा न सेत्स्यन्ति दोषोऽप्यल्पो भविष्यति अ.शां. ४३

जातिर्नास्ति गतिर्नास्ति वर्णो नास्ति नलौकिकम् । सर्वंब्रह्मेति नास्त्येव ते.बिं. ५।३८

(तर्हि)जातिर्ब्राह्मण इतिचेत्, न, तत्र जात्यन्तरजन्तुष्वनेकजातिसम्भवा महर्षयो बहवः सन्ति व.सू. ५

जातिसङ्करकारकैः भ.गी. १।४३

जातिस्तु देशिता बुद्धैरजातेस्त्रसतां सदा अ.शां. ४२

जातीपुष्पसमायोगैर्यथा वास्यति तैलम् । एवं शुभाशुभैर्भावैः सा नाडीति विभावयेत् क्षुरिको. १९

जातु कर्मण्यतन्द्रितः भ. गी. ३।२३

जातु तिष्ठत्यकर्मकृत् भ.गी. ३। ५

जातेऽग्निमुपसमाधायाङ्क आधाय (पुत्रं)कꣳस पृषदाज्यꣳ संनीय.. जुहोति बृह. ६।४।२४

जातो देव एक ईश्वरःपरमोज्योतिर्मंत्रतो वेति तुरीयं वरं वृत्वा.. त्रि.ब्रा. २।२

जातौ विश्वस्य भुवनस्य गोपौ लिंगोप. १

[+ऋ.अ.२।६।८=मं.२।४०।१+ तै.सं.१।८।२२।५

जात्यन्धै रत्नविषयः सुज्ञातश्चेज्जगत्सदा (सत्यं) ते.बिं. ६।८९

जात्याभासं चलाभासं वस्त्वाभासं तथैव च । अजाचलमवस्तुत्वं विज्ञानं शान्तमद्वयम् अ.शां. ४५

(एतेषां) जात्याविनाऽप्यग्रे ज्ञानप्रतिपादिता ऋषयो बहवः सन्ति, तस्मान्न जातिर्ब्राह्मणः व. सू. ५

जानकीदेहभूषाय रक्षोघ्नाय शुभाङ्गिने । भद्राय रघुवीराय(नमः) रा.पू. ४।१४

जानन् कस्माच्छृणोम्यहम् १ अवधू. १६

जानन्नपि हि मेधावी जडवल्लोक आचरेत् १सं.सो.२।१०२

जानन्नेव ह्यन्यत्रान्यत्र विजानात्यनुभूतेः नृसिंहो. ९।१

(ॐ) जानश्रुतिर्ह पौत्रायणः श्रद्धादेयो बहुदायीबहुपाक्य आस छांदो. ४।१।१

जानाति पुरुषोत्तमम् भ. गी. १५।१९

जानाम्यहꣳ शेवधिरित्यनित्यं न ह्यध्रुवैः प्राप्यते हि ध्रुवं तत् कठो. २।१०

जानु प्रदक्षिणीकृत्य न द्रुतं न विलम्बितम् । अङ्गुलिस्फोटनं कुर्यात्सा मात्रा परिगीयते १ यो. त. ४०

जानूर्वोरन्तरे कृत्वा सम्यक् पादतले उभे । समग्रीवशिरःकायः स्वस्तिकं नित्यमभ्यसेत् जा.द. ३+३

जानूर्वोरन्तरे सम्यक्कृत्वा पादतले उभे । ऋजुकायः समासीनः स्वस्तिकं तत्प्रचक्षते शांडि. १।३।१

जानौ संयमान्महातललोकज्ञानं शांडि. १।७।५२
जान्वन्तं पृथिवी ह्यंशो ह्यपां पायंवन्तमुच्यते । हृदयांश-स्तथाग्न्यंशो..धारयेत्तु सदाशिवं जा. द्. ८।४-६
जाप्येनामृतत्वं च गच्छति चतुर्वे. ७
जायते निश्चयः साधो पुरुषस्य चतुर्विधः । आपादमस्तक-महं मातापितृविनिर्मितः । इत्येको निश्चयो ब्रह्मन्बन्धायास.. महो. ६।५४
जायते मृतयेलोकोम्रियतेजननायच भवसं. १।२५
जायत्येको म्रियत्येको अश्नात्येकः शुभाशुभम् । (पा.) ...
जायते म्रियते लोको म्रियते जननाय च । अस्थिराः सर्व एवेमे... महो. ३।४
जायते वर्णसङ्करः भ.गी. १।४१
जायमानं कथमजं भिन्नं नित्यं कथं च तत् । कारणाद्यद्यनन्यत्वमतः कार्यमजं यदि अ. शां. ११
जायमानाद्धि वै कार्यात्कारणं ते कथं ध्रुवम् अ. शां. १२
जायमानाद्विधर्मात्कथंपूर्वंनगृह्यते अ. शां. २१
जायमानेऽमनस्कत्व उदासीनस्य तिष्ठतः । मृदुत्वं खचरत्वं च शरीरस्योपजायते अमन. २।७९
[जायमानो वै ब्राह्मणस्त्रिभि-र्ऋणवा जायते] तै.सं. ६।३।१०
जायस्व म्रियस्वेत्येतत्तृतीयस्थानं तेनासौ लोको न सम्पूर्यते छान्दो.५।१०।८
जायापूर्वरूपं, पतिरुत्तररूपं... सैषाऽदितिसंहिता ३ऐत. १।६।८
जाया मे स्यादथ प्रजायेय बृह. १।४।१७
जायेरन्नेवास्मिञ्छाखाः प्ररोहेयुः.. छान्दो. ५।२।३
जारुजानिचस्वेदजानिचोद्भिज्जानि.. यत्किंचेदं प्राणि..यच्चस्थावरंतत् प्रज्ञानेत्रं प्रज्ञाने प्रतिष्ठितं २ऐत. ५।३
जालकिलक्लिन्नं पर्युषितं पूतमन्न-मयाचितमसंक्लृप्तमश्नीयान्न कञ्चन याचेत सुबालो. १२।१

जालजननमन्दिरा महाविष्णोः क्रीडाशरीररूपिणी ब्रह्मादीना-मगोचरा । एतांमहामायांतरंत्येव ये विष्णुमेव भजंति, नान्येतरन्ति.. त्रि.म.ना. ४।९
जालन्धरस्तृतीयस्तु (कुम्भकः) [योगकुं. १।४१+ यो.शि. १।१०३
जालन्धरेकृतेबन्धेकंठसङ्कोचलक्षणे । नपीयूषं पतत्यग्नौ न च वायुः प्रधावति यो.चू. ५१
जालन्धरोड्डियाणश्चमूलबन्धस्तथैवच १यो.त. २६
जालेनेवखचरःकृतस्यानुफलै-रभिभूयमानः परिभ्रमति मैत्रा. ३।२
जिघ्रन्वै तन्नजिघ्रति,न हि घ्रातुर्घ्राते-र्विपरिलोपो विद्यतेऽनाशित्वात् बृह. ४।३।२४
जिज्ञासार्थं शुकस्यासावास्थामेवे-त्यवज्ञया । उक्त्वा बभूव जनकस्तूष्णीं.. महो. २।२२
जिज्ञासुरपि योगस्य भ.गी. ६।४४
जितात्मनः प्रशान्तस्य भ.गी. ६।७
जितात्मा विगतस्पृहः भ.गी. १८।४९
जितामेवाप्येति योजितामेवास्तमेति सुबालो. ९।३
जितेन्द्रियाणां शान्तानां जितश्वास-विचेतसाम् । .. दूरदर्शनमाप्नुयात् यो.शि. ५।४६
जितेन्द्रियाय शान्ताय मन्त्रं देयमिदं महत् (सूर्यस्य) सूर्यता. १।११
जितेन्द्रियो बहिरन्तःस्नेहवर्जितः शरीरसंधारणार्थं...भैक्षमाणो ब्रह्मभूयाय भवति प.हं.प. ६
(एवं)जितेन्द्रियो भूत्वा सर्वत्र ममतामतिम् । विहाय.. वराहो. २।४
जित्वा जित्वा ततो भूतिं सारमेत ततो मुनिम् । अजित्वा च सदाभूतिः योगो. २९
जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम् भ.गी. २।३७
जित्वा क्षुधादिकं जाड्यं खेचरः स भवेन्नरः यो.शि. १।१४८
जित्वा शत्रून्भुङ्क्ष्व राज्यं समृद्धम् भ.गी. ११।३३
जिष्णुर्हापराजिष्णुर्भवत्यन्यत-स्त्यजायी बृह. २।१।६

जिह्वग्रायद्रसंह्यत्तितत्तद्गात्मेतिभावयेत् योे. त. ७१
जिह्वया वायुमाकृष्य पूर्ववत्कुम्भकादनु। शनैस्तु घ्राणरन्ध्राभ्यां रेचयेदनिलं सुधीः योगकुं. १।३०
जिह्वयावायुमाकृष्य यः पिबेत्सततं नरः। श्रमदाहविनिर्मुक्तोयोगी नीरोगतामियात् जा.द. ६।२५
जिह्वया वायुमाकृष्य जिह्वामूले निरोधयेत्। पिबेदमृतमव्यग्रं सकलं सुखमाप्नुयात् जा.द. ६।२६
जिह्वया वायुमानीय जिह्वामूले निरोधयेत्। यःपिबेमृदतंविद्वान्सकलं भद्रमश्नुते शांडि.१।७।४७
जिह्वया वायुं गृहीत्वा यथाशक्ति कुंभयित्वा नासाभ्यां रेचयेत्। तेन गुल्मप्लीहज्वरपित्तक्षुधादीनि नश्यन्ति शाण्डि.१।७।१४
जिह्वया हि रसान् विजानाति बृह. ३।२।४
जिह्वाप्रदेशे त्र्यणुकं च विद्धि मैत्रा. ७।११
जिह्वाग्रादर्शने त्रीणि दिनानि स्थितिरात्मनः। ज्वालाया दर्शने मृत्युर्द्विदिने भवति ध्रुवम् त्रि.ब्रा. २।१२७
जिह्वा च रसयितव्यं च नारायणः सुबालो. ६।१
जिह्वा चित्तंच खे चरति तेनोर्ध्वजिह्वः पुमानमृतो भवति शांडि.१।७।४३
जिह्वाऽध्यात्मं, रसयितव्यमधिभूतं, वरुणस्तत्राधिदैवतम् सुबालो. ५।४
जिह्वामर्कटिकाक्रान्तवदनद्वारभीषणम्। दृष्टदन्तास्थिशकलं नेष्टं देहगृहं मम महो.३।२९,३०
जिह्वामूलस्थितो देवि...अनलः। तदग्रे भास्करश्चन्द्रः...प्रतिष्ठितः प्रा. हो.२।४
जिह्वा मे मधुमत्तमा [तैत्ति.१।४।१+ ना.प. ४।४९
जिह्वामेवाप्येति यो जिह्वामेवास्तमेति सुबालो. ९।४
जिह्वाया ऊर्ध्वान्ते सरस्वती भवति शाण्डि.१।४।६
जिह्वाया रसास्वादनं घ्राणस्य गन्धग्रहणम् ना. प. ६।२
जिह्वारसने नासिका घ्राणे उपस्थ आनन्दे अपान उत्सर्गे गर्भो. १

जिह्वा रसं विजानाति हृदयं वेदयेऽप्रियम्। मनसा साधु पश्यति इतिहा. ३
जिह्वा वै ग्रहः, स रसेनातिग्रहेण गृहीतः बृह. ३।२।४
जिह्वां न चालयेच्चापि पाषाण इव निश्चलः। तमः प्रस्थाप्य रजसः सत्त्वेन... योगो. २२
जिह्वेडा, दन्तोष्ठौ सृक्कवाकः प्रा. हो. ४।३
जिह्वावास्याएकमङ्गमुदूढं,तस्यान्नरसः परस्तात्प्रतिविहिता भूतमात्रा कौ. उ. ३।५
जीर्णकौपीनवासाः स्यान्मुण्डी नग्नोऽथवा भवेत्। प्राज्ञो वेदान्तविद्योगी निर्ममो निरहंकृतिः ना. प. ६।३०
जीर्णवल्कलाजिनं धृत्वाऽथ त्रिकालस्नानमाचरन्..ब्रह्ममार्गे सम्यक्सम्पन्नः,, भैक्षमाणोब्रह्मभूयायभवति प. हं. प. ६
जीर्यन्ते दानवादयः। परमेष्ठ्यपि निष्ठावान् हीयते हरिरप्यजः महो. ३।५०
जीर्यन्ते वै दिगीश्वराः,ब्रह्मा..सर्वा वा भूतजातयः, नाशमेवानुधावन्ति महो. ३।५१
जीर्यन्मर्त्यः क्वधःस्थः प्रजानन् कठो. १।२८
जीवएवदुरात्माऽसौकन्दः संसारदुस्तरोः। अनेनाभिहतोजन्तुरधोऽधः परिधावति महो. ५।९३
जीव एव सदा ब्रह्म सच्चिदानन्दमस्म्यहम् ते. बिं. ६।३८
जीवतस्तत्प्रजायते (रेतः) बृह. ३।९।२८
जीवति चक्षुरपेतोऽन्धान्हिपश्यामः कौ. उ. ३।३
जीवति बाहुच्छिन्नोजीवत्यूरुच्छिन्न इत्येवं हि पश्यामः कौ. उ. ३।३
जीवति वागपेतो मूकान्हिपश्यामः कौ. उ. ३।३
जीवति श्रोत्रापेतो बधिरान् विपश्यामः कौ. उ. ३।३
जीवतो यस्य कैवल्यं विदेहोऽपि स केवलः। समाधिनिष्ठतामेत्य निर्विकल्पो भवानघ अध्यात्मो. १६
जीवत्यूरुच्छिन्न इत्येवं हि पश्यामः कौ.उ. ३।३
जीवत्पितृकश्चेत् पितरं त्यक्त्वाऽऽत्मपितामहप्रपितामहानिति सर्वत्र युग्मकल्पया ब्राह्मणानर्चयेत् ना. प. ४।२९

जीवत्वंसर्वभूतानांसर्वत्राखण्डविग्रहं। चित्ताहङ्कारयन्तारं जीवाख्यं त्वंपदं भजे — शु.र. २।६

जीवत्वं घटाकाशमहाकाशवद्व्यवधानेऽस्ति ।व्यवधानवशादेव हंसः सोऽहमिति मंत्रेणोच्छ्वासनिश्श्वासवशेनानुसन्धानं करोति — ना. प. ६।७

जीवत्वं च तथा ज्ञेयं रज्ज्वां सर्पग्रहो यथा — यो. शि. ४।१

जीवनं सर्वभूतेषु — भ. गी. ७।९

जीवन्ति मृगपक्षिणः। स जीवति मनो यस्य मननेनोपजीवति — महो. ३।१३

जीवन्नेव प्रति तत्ते दधामि — सहवै.४

जीवन्नेव सदा मुक्तः कृतार्थो ब्रह्मवित्तमः। उपाधिनाशाद्ब्रह्मैव सद्ब्रह्माप्येति निर्द्वयम् — २ आत्मो. २०

जीवन्मर्त्यः कथस्थः प्रजानन् (मा. पा.) — कठो. १।२८

जीवन्मुक्तपदं त्यक्त्वा स्वदेहे कालसात्कृते। विशत्यदेहमुक्तत्वं पवनोऽस्पन्दतामिव — पैङ्गलो. ३।७
[+महो. २।६३+ — मुक्तिको. २।७६

जीवन्मुक्तः स उच्यते — महो.६।४९-४८

जीवन्मुक्तः सदा स्वच्छः सर्वदोषविवर्जितः। विरक्ता ज्ञानिनश्चान्ये देहेन विजिताः सदा। तेकथंयोगिनस्तुल्यामांसपिण्डाः.. — यो. शि. १।४२

जीवन्मुक्तः सरूपः स्यादरूपो देहमुक्तिगः — मुक्तिको. २।३२

जीवन्मुक्तः स विज्ञेयः — पैङ्गलो. ३।७

जीवन्मुक्ता न मज्जन्ति सुखदुःखरसस्थिते। प्रकृतेनाथ कार्येण किंचित्कुर्वन्ति वा न वा — महो. ५।३७

जीवन्मुक्तिविदेहमुक्त्योरष्टोत्तरशतोपनिषदः प्रमाणम् — मुक्तिको. २।१

जीवन्मुक्तो महायोगी जायते.. — यो. शि. १।१५

जीवन्मुक्तो वसेत्‌कृतकृत्यो भवति — ना. प. ६।३

जीवभूतः सनातनः — भ. गी. १५।७

जीवभूतां महाबाहो — भ. गी. ७।५

जीवला न घारिषां मा ते बन्धाम्योषधिम् — प्रा. हो. १।४

जीवला नघषा मा ते बन्धाम्योषधिं (पाठः) — प्रा. हो. १।४

जीववाचि नमो नाम चात्मारामेति गीयते — रा. पू. ४।१

जीवस्तिष्ठति संशान्तो ज्वलन्मणिरिवात्मनि — अ. पू. २।११

जीवस्य तण्डुलस्येव मलं सहजमप्यलम्। नश्यत्येव न सन्देहस्तस्मादुद्योगवान्भवेत् — महो. ५।१८६

जीवस्य निलयःप्राणोजीवोहंसस्य चाश्रयः। हंसः शक्तेरधिष्ठानं.. — वराहो. ५।५४

जीवं कल्पयते पूर्वं ततो भावान् पृथग्विधान्। बाह्यानाध्यात्मिकांश्चैव यथाविद्यस्तथा स्मृतिः — वैतथ्य. १६

जीवःपञ्चविंशकः स्वकल्पितचतुर्विंशतितत्त्वंपरित्यज्यषड्विंशः परमात्माहमिति निश्चयाज्जीवन्मुक्तो भवति — मं.ब्रा. १।५

जीवः शिवः शिवो जीवः स जीवः केवलःशिवः। तुषेणबद्धोव्रीहिः स्यात्तुषाभावेन तण्डुलः — स्कन्दो. ६

जीवाक्षरेणैव जीवाहराप्नोति — १ऐत. ३।८।६

जीवाख्यं त्वम्पदं भजे — शु.र. २।६

जीवात्मनः परस्यापि यथैवमुभयोरपि। अहमेवपरंब्रह्म ब्रह्माहमिति संस्थितिः — त्रि.ब्रा. २।६१

जीवात्मनोरनन्यत्वमभेदेनप्रशस्यते। नानात्वं निन्द्यते यच्च तदेवं हि समञ्जसम् — अद्वैत. १३

जीवात्मनोः पृथक्त्वं यत्प्रागुत्पत्तेः प्रकीर्तितम्। भविष्यद्वृत्त्यागौणं तन्मुख्यत्वं हि न युज्यते — अद्वैत. १४

जीवापेतं वाव किलेदं म्रियते न जीवो म्रियते — छान्दो. ६।११।३

जीवाभिमानेनक्षेत्राभिमानः, शरीराभिमानेन जीवत्वम् — ना.प. ६।७

जीवाम केन कस्य सम्प्रविष्टाः — श्वेताश्व. १।१

जीवाहाजीवाक्षरमित्यनकाममारः १ऐत. ३।८।६
जीवाःपशवउक्ताः,तत्पतित्वात्पशुपतिः जाबाल्यु. ३
जीविष्यामो यावदीशिष्यसि त्वं
वरस्तु मे वरणीयः स एव कठो. १।२७
जीवितं तस्य शोभते। योऽन्त-
श्शीतलयाबुद्ध्यारागद्वेषविमुक्तया।
साक्षिवत्पश्यतीदंहि.. [१सं.सो. २।३९-४१
जीवितंवापिचञ्चलम्। विहायशास्त्र-
जालानि यत्सत्यंतदुपास्यताम् पैङ्गलो. ४।१७
जीवेश्वरप्रकृतयोनित्याश्चानादय-
स्त्रयः। विश्वकारणभूताश्च.. भवसं. २।१
जीवेश्वरादिरूपेण चेतनाचेतना-
त्मकम्। ईक्षणादिप्रवेशान्ता
सृष्टिरीशेनकल्पिता [महो.४।७३+ वराहो. २।५३
जीवेश्वरेति वाक्चेति वेदशास्त्राद्यहं
त्विति। इदंचैतन्यमेवेति.. इति
निश्चयशून्योयोवैदेहीमुक्तएवसः ते.बि. ४।४६
जीवोऽपि जाग्रत्स्वप्नप्रपञ्चे व्यवहृत्य
..अज्ञानं प्रविश्य स्वानंदं भुङ्क्ते पैङ्गलो.२।८
जीवोऽपि न स्पृष्ट इति चेत्, न;
जीवाभिमानेन क्षेत्राभिमानः,
शरीराभिमानेन जीवत्वम् ना. प. ६।६
जीवो ब्रह्मेति वाक्यार्थं यावदस्ति
मनःस्थितिः। ऐक्यं तत्त्वं लये
कुर्वन् ध्यायेदसिपदं ततः शु. र. २।७
जीवोब्राह्मणइतिचेत्, तन्न; अतीताना-
गतानेकदेहानांजीवस्यैकरूपत्वात् व. सू. ३
जीवेश्वरौ भिन्नरूपाविति प्राथ-
मिको भ्रमः अ. पू. १।१३
जीवेश्वरौ मायिकौ विज्ञाय सर्वविशेषं
नेति नेतीति विहाय यदवशिष्यते
तदद्वयं ब्रह्म अद्वयता. २
जुष्टं यदा पश्यत्यन्यमीशं यस्य
महिमानमिति वीतशोकः श्वेता. ४।७
[मुण्ड. ३।१।२+
जुह्वति ज्ञानदीपिते भ. गी. ४।२७
जेनाविर्जेनातिषां जेनातिरोजो
बलमाहृत्स्वात्मकं... तस्मै
सूक्ष्मसूक्ष्माय तेजसे स्वाहा पारमा. १०।५
जोषयेत्सर्वकर्माणि भ. गी. ३।२६
ज्यायसी चेत् कर्मणस्ते भ. गी. ३।१
ज्यायान्पृथिव्या ज्यायानन्तरिक्षात्
..ज्यायान्दिवो ज्यायानेभ्यो
लोकेभ्यः (आत्मा) छान्दो.३।१४।३
ज्येष्ठश्च श्रेष्ठश्च स्वानां भवति बृह. ६।१।१
ज्येष्ठश्च ह वै श्रेष्ठश्च भवति, प्राणो
वाव ज्येष्ठश्च छान्दो. ५।१।१
ज्येष्ठाय श्रेष्ठाय स्वाहेत्यग्नावाज्यस्य
हुत्वा मन्थे सम्पातमवनयेत् छान्दो. ५।२।४
ज्येष्ठाय स्वाहा श्रेष्ठाय स्वाहेत्यग्नौ
हुत्वा मन्थे स्रवमवनयति बृह. ६।३।२
ज्येष्ठोऽहं श्रेष्ठोऽहं वरिष्ठोऽहमापोऽहम्.. अ. शिर. १।१
ज्योग्जीवति महान्प्रजया पशुभिर्भवति छां. २।११।२
[+छान्दो. २।१२।२+—१७।२।१८
ज्योतिरन्नादम्, अप्सु ज्योतिः
प्रतिष्ठितम् तैत्ति. ३।८
ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासम् लिङ्गोप. १
[म. ना. १४।७—१४।१९
ज्योतिरिति नक्षत्रेषु, प्रजातिरमृतं.. तैत्ति. ३।१०।३
ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्माहमस्मि,योहमस्मि
ब्रह्माहमस्मि अहमस्मि ब्रह्मा.. महाना. ६।७
ज्योतिर्मयं वदन्तं स्यादवाच्यं बुद्धि-
सूक्ष्मतः। ददृशुर्ये महात्मानो
यस्तं वेद स वेदवित्। यो. चू. ८१
ज्योतिर्लिङ्गं भ्रुवोर्मध्ये नित्यं
ध्यायेत्सदा यतिः म. वि. ८०
ज्योतिर्वा पारमात्मिकं सार्वे...
पराय ईशिषे स्वाहा पारमा. १।३
ज्योतिर्वाऽन्नं, वायुरन्नादः,वायुर्वाऽन्नं.. सुबालो. १४।१
ज्योतिर्विदं त्वासादयामि चित्यु. १९।१
ज्योतिश्च वायुश्चान्नादमेताभ्यां
हीदं सर्वमन्नमत्ति १ऐत. ३।१।२
ज्योतिषामपि तज्ज्योतिः
[यो.शि.३।२२+ भ. गी. १३।१८
ज्योतिषामा ज्योतिरानन्दयत्येव-
मेव तत्परं यश्चित्तं परमात्मान-
मानंदयति परब्र. २

ज्योतिषां ज्योतिस्तद्यदात्मविदो विदुः मुण्ड. २।२।९
ज्योतिषां ज्योतिरस्म्यहं, तमसः
साक्ष्यहं.. अ.वि. ९५
ज्योतिषां रविरंशुमान् भ. गी. १०।२१
ज्योतिष्कामो ज्योतिरानन्दयते
सूर्यस्तेनैव स्वप्नाय गच्छति ब्रह्मो. १
ज्योतिष्कृदसि सूर्य। विश्वमाभासि.. चित्यु. १६।१
[ऋ. अ. १।४।७=मं.१।५०।४+
अथर्व. १३।२।१९+२०।४७।१६+ वा.सं.३३।३६
तै. सं. १।४।३१।१
ज्योतिष्कृतं त्वासादयामि चित्यु. १९।१
ज्योतिष्पश्यन्ति उत्तरम् छांदो. ३।१७।७
[ऋ. अ. १।४।८ =मं. १।५०।१०
ज्योतिष्मतीं त्वासादयामि चित्यु. १९।१
ज्योतिष्मतो ह लोकाञ्जयति छांदो. ४।७।४
ज्योतिष्मंतस्त्रयः कालास्तिस्रो-
ऽवस्थाश्च आत्मनः वासुदे. ४
ज्योतिष्मद्भ्राजमानं महस्वत् [+सुदर्श.५ त्रि.म.ना.७।३
[तै. ब्रा, ३।१२।३।४
ज्योतिष्मानस्मिँल्लोके भवति छांदो. ४।७।४
ज्योतिष्याप: प्रतिष्ठिताः तैत्ति. ३।८
ज्योतिस्स्वरूपं लिङ्गं मामेवोपासितव्यं
तदेवोपासितव्यम् भस्मजा. २।९
ज्योतीरूपमशेषबाह्यरहितं देदीप्यमानं
परं तत्त्वं तत्परमस्ति.. शाण्डि.१।७।१६
ज्वलतामति (ज्वलना अपि) दूरेऽपि
सरसा अपि नीरसाः। स्त्रियो
हि नरकाग्नीनामिन्धनं चारु
दारुणम् [महो. ३ । ४४+ याज्ञव. १३
ज्वलति स उद्गीथः, अङ्गारा भवन्ति
स प्रतिहारः छान्दो.२।१२।१
ज्वलन्त्वात्सर्वतोमुखत्वान्नृसिंहत्वात्
भीषणत्वाद्भद्रत्वात्..(नृसिंहः) नृसिंहो. ७।५
ज्वलनो ज्वालाभिः प्राणेन कोष्ठ-
मध्यगतंजलमत्युष्णमकरोत् शाण्डि. १।४८
ज्वलन्तमग्निमुत्सृज्य नहि
भस्मनि हूयते क्षुरिका. ४५.

ज्वलन्तमज्वलन्तं सर्वतोमुखमसर्वतो-
मुखं नृसिंहमनृसिंहं....आत्मानं
....जानीयात् नृसिंहो. ६।१
ज्वलन्तमित्याह—ज्वलन्निव
खल्वसाववस्थितः अव्यक्तो. ३
ज्वलन्तं न प्रदीपं च स्वयं
निर्वापयेद्बुधः शिवो. ७।७१
ज्वलतः पावकाद्यद्वत्.. स्फुलिङ्गाः
कोटिकोटिशः।..विश्वं तस्यास्तथा गुह्यका. २८
ज्वलन्तीं त्वासादयामि चित्यु. १९।१
ज्वलतोऽपि यथा बिन्दुः सम्प्राप्तश्च
हुताशनम्। व्रजत्यूर्ध्वं गतः
शक्त्या निरुद्धो योगमुद्रया यो. चू. ५९
ज्वलिष्याम्येवाहमित्यग्निर्दध्रे बृह.१।५।२१..
ज्वालाजालपरिस्पन्दो दग्धेन्धन
इवानलः। उदितोऽस्तंगतइव
ह्यस्तंगत इवोदितः अ. पू.३।११
ज्वालामालाकुलं भाति विश्वस्यायतनं
महत्।... तस्यान्ते सुषिरं सूक्ष्मं
तस्मिन्सर्वं प्रतिष्ठितम् महाना. ९।२७
ज्वालाया दर्शने मृत्युर्द्विदिने भवति
ध्रुवम् (आयुश्चिह्नम्) त्रि. ब्रा. १२७
ज्वालावह्निः शीतलश्चेदस्तिरूप-
मिदं जगत् ते. बिं. ६।८४
ज्वालाग्निमण्डले पद्मवृद्धिश्चेज्जग-
दस्त्विदम् ते. बिं. ६।८७

ज्ञ

ज्ञपयते स प्रस्तावः छान्दो.२।१३।१
ज्ञप्तिर्हि ग्रन्थिविच्छेदस्तस्मिन्
सति विमुक्तता महो. ५।४०
ज्ञमनो नाशमभ्येति मनो ज्ञस्य
हि शृङ्खला मुक्तिको.२।२९
ज्ञविज्ञसम्यग्ज्ञालम्बंनिरालम्बंहरिंभजे निरा. शीर्षके
ज्ञः कालकालो गुणी सर्वविद्यः।
तेनेशितं कर्म विवर्तते ह श्वेता. ६।२
ज्ञः सर्वगो भुवनस्यास्य गोप्ता।
य ईशेऽस्य जगतो नित्यमेव
नान्यो हेतुर्विद्यत ईशनाय श्वेता. ६।१७

ज्ञाज्ञौद्वावजावीशानीशावजाह्येका भोक्तृभोगार्थयुक्ता । अनंत-आत्माविश्वरूपोह्यकर्तात्रयं यदा विन्दते ब्रह्ममेतत् [तेनेदंसृष्टं ब्रह्मचक्रंहिसर्वम् ।][श्वेता.१।९।ना.प९।८ भवसं.२।३

ज्ञातचरदेशं चण्डालवाटिकामिव स्त्रियमहिमिव (त्यजेत्) ना.प. ७।१

ज्ञातज्ञेयास्त उच्यन्ते जीवन्मुक्ता महाधियः । पदार्थभावनादार्ढ्यं बन्ध इत्यभिधीयते महो. २।४०

ज्ञातव्यमवशिष्यते भ.गी. ७।२

ज्ञातं येन निजं रूपं कैवल्यं परमं पदम् । असौ दोषैर्विनिर्मुक्तः.. यो.शि. १। १५

ज्ञातं येन निजं रूपं कैवल्यं परमं पदं निष्कलं निर्मलं शान्तं.. एतज्ज्ञानमिति प्रोक्तम् १यो.त.१७,१८

ज्ञाता चिन्मात्ररूपश्च सर्वचिन्मयमेव हि । संभाषणं च चिन्मात्रं.. ते.बिं. २।२९

ज्ञातानुज्ञात्रननुज्ञातृविकल्पज्ञानसाधनम् । विकल्पत्रयमत्रापि.. मायामात्रं विदित्वैवं.. ना.प. ८।२०

ज्ञाता होता ज्ञानमग्निः,ज्ञेयं हविः भावनो. ३

ज्ञातुं द्रष्टुं च तत्त्वेन भ.गी. ११।५४

ज्ञातृज्ञानज्ञेयानाममेदभावनं श्रीचक्रपूजनम् भावनो. २

ज्ञातृज्ञानज्ञेयानामाविर्भावतिरोभावज्ञाता स्वयमाविर्भावतिरोभावरहितः स्वयंज्योतिः साक्षीत्युच्यते सर्वसारो. ५

ज्ञातृत्वं समानयोगेन श्रोत्रद्वारा शब्दगुणो वागधिष्ठित आकाशे तिष्ठति.... त्रि.ब्रा. १।६

ज्ञाते द्वैतं न विद्यते आगम. १८

ज्ञातोऽज्ञातश्चेति होचुर्नैनामिति होचुः नृसिंहो. ९।१०

ज्ञातोनैषविज्ञातोविदिताविदितात्परः नृसिंहो. ९।८

ज्ञात्वा (नारायणं) जीवन्मुक्तो भवति ना.पू.ता. १।१

ज्ञात्वा तमेवं मनसा हृदा च भूयो न मृत्युमुपयाहि विद्वान् महाना.१७।१४

ज्ञात्वा (शिवमात्मानं) तं मृत्युमत्येति, नान्यः पन्था विमुक्तये कैव. ९

ज्ञात्वा तां (देवीं) मृत्युपाशाञ्छिनत्ति गुह्यका. ५८

ज्ञात्वा त्रिविधमात्मानं परमात्मानमाश्रयेत् । रुद्रहृ.१२

ज्ञात्वादेवं मुच्यते सर्वपाशैः [श्वेता. १।८+२।१५+[४।१६+५।१३+६।१३ ना.प. ९।७।१०

ज्ञात्वा देवं सर्वपाशापहानिः श्वेता. १।११

ज्ञात्वा भूतादिमव्ययम् भ. गी. ९।१३

ज्ञात्वा मां शांतिमृच्छति भ. गी. ५।२९

ज्ञात्वा (मृत्युं) यतेत कैवल्यप्राप्तये त्रि.ब्रा.२।१२२

ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं भ. गी.१६।२४

ज्ञात्वा शिवं शान्तिमत्यन्तमेति श्वेताश्व. ४।१४

ज्ञात्वा शिवं सर्वभूतेषु गूढं विश्वस्यैकं परिवेष्टितारं ज्ञात्वादेवं मुच्यते सर्वपाशैः श्वेता. ४।१६

ज्ञात्वा स्वं प्रत्यगात्मानं बुद्धितद्वृत्तिसाक्षिणम् । सोऽहमित्येव तद्वृत्त्या स्वान्यत्रात्मगतिं त्यजेत् अध्यात्मो. २

ज्ञात्वैवं (ब्रह्मैवाहं) मनोदण्डं धृत्वा आशानिवृत्तो भूत्वा भ्रमरकीटन्यायेन मुक्तो भवति ना. प. ५२

ज्ञानकर्मेन्द्रियैर्ज्ञानविषयैःप्राणादिपञ्चवायुमनो बुद्धिभिश्च स्थूलकल्पितैः सोऽपि स्थूलप्रकृतिरित्युच्यते यो. चू. ७२

ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि पठतां बन्धमोचकम् ।..इदमष्टोत्तरशतं न देयं यस्यकस्यचित् मुक्तिको.१।४६

ज्ञानदण्डा ज्ञानशिखा ज्ञानयज्ञोपवीतिनः । शिखा ज्ञानमयीयस्य.. शाट्याय. १६

ज्ञानदण्डो धृतो येन एकदण्डी स उच्यते [ना.प. ५।१३+ प. हं. ५

ज्ञानदीपेन भास्वता भ. गी.१०।११

ज्ञाननिर्धूतकल्मषाः भ. गी. ५।१७

ज्ञाननिष्ठो विरक्तोऽपि धर्मज्ञो विजितेन्द्रियः । विना देहेन योगेन न मोक्षं लभते.. यो.शि.१।२४

ज्ञाननेत्रं समाधायसमहत्परमं पदम् । ..शान्तं ब्रह्माहमिति संस्मरेत् त्रि.ब्रा. ५।५०

ज्ञाननेत्रं समादाय चरेद्वह्निमतः परम् । निष्कलं निर्मलं शान्तं तद्ब्रह्माहमिति स्मृतम् — ब्र. वि. २१
ज्ञानपूतं त्रिगुणस्वरूपं त्रिमूर्तित्वं पृथग्विज्ञाय मूलमेकं सत्यं मृण्मयं विज्ञातं स्यात्.. — परब्र. ४
ज्ञानप्रबोधो यस्मिन् समये माया-मोहं सशब्दातीतोऽपिजायते — अद्वैतो. २
ज्ञानप्रसादेन विशुद्धसत्त्वस्ततस्तु तं पश्यते निष्कलं ध्यायमानः (ततस्तु तां पश्यते निष्कलां च) [मुण्ड. ३।१।८+ — गुह्यका. ३७
ज्ञानबलैश्वर्यशक्तितेजस्स्वरूपो भवति (नारायणः) — त्रि.म.ना. २।६
ज्ञानमावृत्य देहिनम् — भ. गी. ३।४
ज्ञानभूमिः शुभेच्छाख्या प्रथमा... — महो. ५।२४
ज्ञानभूमिः शुभेच्छा स्यात् ... सप्तमी तुर्यगा स्मृता — वराहो. ४।१,२
ज्ञानमेव परं तेषां पवित्रं ज्ञान-मुच्यते (ईरितं) [ब्रह्मो.११+ — परब्र. ६।१३
ज्ञानयज्ञः परन्तप — भ. गी. ४।३३
ज्ञानयज्ञः स विज्ञेयः सर्वयज्ञोत्तमो-त्तमः (पूर्वोक्तः) — शाट्याय. १६
ज्ञानयज्ञेन चाप्यन्ये — भ. गी. ९।१५
ज्ञानयज्ञेन तेनाहं — भ.गी. १८।७०
ज्ञानयुक्तयमाद्यष्टाङ्ग..योग उच्यते — मं. ब्रा. १।१
ज्ञानयोगनिधिं विश्वगुरुं योगिजन-प्रियम् । भक्तानुकंपिनं सर्व-साक्षिणं..एवं यः सततं ध्यायेद्देव-देवं..स मुक्तः — शांडि. ३।४
ज्ञानयोगपराणां तु पादप्रक्षालितं जलम् । भावशुद्ध्यर्थमज्ञानां तत्तीर्थं मुनिपुङ्गव — जा. द. ४।५६
ज्ञानयोगविनिर्मुक्तः कर्मयोगसमा-वृतः । मृतः शिवपुरं गच्छेत्तः.. — शिवो. १।२९
ज्ञानयोगव्यवस्थितिः — भ.गी. १६।१
ज्ञानयोगं न विन्दंति ये नरा मन्दबुद्धयः । ते मुच्यन्ते कथं.. — शिवो. १।३
ज्ञानयोगः कर्मयोग इति योगो द्विधा मतः — त्रि. ब्रा. २।२३
ज्ञानयोगः स विज्ञेयः सर्व-सिद्धिकरः शिवः — त्रि. ब्रा. २।२६
ज्ञानयोगेनमुच्यन्ते देहपातादनन्तरम् भोगान् भुक्त्वा च मुच्यन्ते.. — शिवो. १।३१
ज्ञानयोगेन साङ्ख्यानां — भ. गी. ३।३
ज्ञानरूपमानन्दमयमासीत् (पुरेदं ब्रह्मांडं) — अव्यक्तो. १
ज्ञानवान् मां प्रपद्यते — भ.गी. ७।१९
ज्ञानविज्ञानतृप्तात्मा — भ. गी. ६।८
ज्ञानविज्ञाननाशनम् — भ. गी. ३।४१
ज्ञानवैराग्यमृत्तोयैः क्षालनाच्छौच-मुच्यते — मैत्रे. २।९
ज्ञानवैराग्ययुक्तो वित्तस्त्रीपराङ्मुखः.. शरीररक्षणार्थं.. भैक्षमाणो ब्रह्मभूयाय भवति — प. हं. प. ६
ज्ञानशक्तिबलैश्वर्यवीर्यतेजांस्य-शेषतः । भगवच्छब्दवाच्यानि विना हेयैर्गुणादिभिः — भवसं. २।५२
ज्ञानशक्तिश्चेतनाशक्तिः क्षेत्रशक्ति-रिच्छान्तर्भूत्वा माया सत्त्व-रजस्तमोमयी — राधिको. ९
ज्ञानशिखिनो ज्ञाननिष्ठा ज्ञानयज्ञोप-वीतिनः । ज्ञानमेव परंतेषां पवित्रं ज्ञानमीरितम्(उच्यते)[ब्रह्मोप.११ +परब्र.१३ [+ना. प. ३।८३
ज्ञानशौचं परित्यज्य बाह्ये यो रमते नरः ।..लोष्टं गृह्णाति सुव्रत — जा. द. १।२२
ज्ञानसङ्कल्पनिश्चयानुसन्धानाभिमाना आकाशकार्यान्तःकरणविषयाः — त्रि. ब्रा. १।४
ज्ञानसङ्गेन चानघ — भ. गी. १४।६
ज्ञानसञ्छिन्नसंशयम् — भ. गी. ४।४१
ज्ञानसंहारसंयुक्तंशक्तिद्वयसमन्वितम् — पञ्चब्र. ७
ज्ञानस्वरूपमेवादौ ज्ञानं ज्ञेयैक-साधनम् । ज्ञातंयेननिजंरूपंकैवल्यं.. — १यो. त. १६
ज्ञानस्वरूपमेवादौ ज्ञेयं ज्ञानैक-साधनम् । अज्ञानं कीदृशं चेति प्रविचार्यं.. — यो. शि. १।१६

ज्ञानस्वरूपमेवाहुर्जगदेतद्विलक्षणम् । अर्थस्वरूपमज्ञानात्पश्यन्त्यन्ये कुदृष्टयः — जा. द. ६।४९
ज्ञानं कर्म च कर्ता च — भ. गी. १८।१९
ज्ञानं केचिद्वदन्त्यत्र केवलं, तन्न सिद्धये । योगहीनं कथं ज्ञानं मोक्षदं भवतीह भोः — यो. शि. १।१२
ज्ञानं चेदीदृशं ज्ञातमज्ञानं कीदृशं पुनः — यो. शि. १।२४
ज्ञानं ज्ञानवतामहम् — भ. गी. १०।३८
ज्ञानं ज्ञेयं च केशव — भ. गी. १३।२
ज्ञानं ज्ञेयं च विज्ञेयं सदा बुद्धैः प्रकीर्तितम् — अ. शां. ८८
ज्ञानं ज्ञेयं ज्ञानगम्यं — भ. गी. १३।१८
ज्ञानं ज्ञेयं ज्ञानगम्यादतीतं शुद्धं बुद्धं मुक्तमप्यव्ययं च । सत्यं ज्ञानं.. ध्यायेदेवं तन्महो.. — शु. र. २।५
ज्ञानंज्ञेयंचिदात्मकम् । तदेव केवलीभावं ततोऽन्यत्सकलं मृषा — महो. ४।६३
ज्ञानंज्ञेयंचिदेवहि । ज्ञाताचिन्मात्ररूपश्च सर्वं चिन्मयमेव हि — ते. बिं. २।२९
ज्ञानं ज्ञेयं परिज्ञाता — भ. गी. १८।१८
ज्ञानं ज्ञेयं समं नष्टं नान्यः पन्था द्वितीयकः — शांडि. १।७।२२
ज्ञानं ज्ञेयैकसाधनम् — १यो. त. १६
ज्ञानंतपोऽभिराहारो भन्मनोवायुपाञ्जनम् । वायुः कर्मार्ककालौ च शुद्धेः कर्तृणि देहिनाम् — भवसं. ३।२१
ज्ञानंतुजन्मनैकेन योगादेवप्रजायते । तस्माद्योगात्परतरो नास्ति मार्गस्तु मोक्षदः — यो. शि. १।५३
ज्ञानं तेऽहं सविज्ञानं — भ. गी. ७।२
ज्ञानंनाशोत्पत्तिविनाशरहितंनैरन्तर्यं चैतन्यं ज्ञानमित्युच्यते — सर्वसा. ६
ज्ञानं नारायणः परः — ना. पू. ता. १।४
ज्ञानंबुद्धिश्च । ज्ञानंमोक्षैककारणम् — कौलो. १
(वर्हि) ज्ञानंब्राह्मणइतिचेत्, तन्न; क्षत्रियादयोऽपिपरमार्थदर्शिनो-ऽभिज्ञा बहवः सन्ति — व. सू. ६
ज्ञानं माता विज्ञानं पिता, सगुणब्रह्म-निर्गुणब्रह्मार्पितं.. — अद्वैतो. ९
ज्ञानं मोक्षैककारणम् — कौलो. १
ज्ञानं यदा तदा विद्यात् — भ. गी. १४।११
ज्ञानं योगात्मकंविद्धि योगश्चाष्टाङ्ग-संयुतः । संयोगो योग इत्युक्तो जीवात्मपरमात्मनोः — भवसं. ३।१३
ज्ञानं लब्ध्वाऽचिरादेव मामकं धाम यास्यसि — मुक्तिको. १।२७
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्ति — भ. गी. ४।३९
ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं — भ. गी. १८।४२
ज्ञानं विज्ञानसहितं — भ. गी. ९।१
ज्ञानं शरीरं वैराग्यं जीवनं विद्धि — ना. प. ६।१
ज्ञानं सम्यगवेक्षणम् । तस्मिन् (चित्ते ज्ञानेन) निरोधितेनूनमुपशान्तं मनो भवेत् — शांडि. १।७।२४
ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं — भ. गी. ४।१९
ज्ञानाग्निदग्धदेहस्य न च श्राद्धं न च क्रिया — पैङ्गलो. ४।७
ज्ञानाग्निः शुभाशुभं च कर्म विन्दति — गर्भो. ११
[ज्ञा]नाग्निः सर्वकर्माणि — भ. गी. ४।३७
[ज्ञाना]त्सायुज्यमेवोक्तं तोये तोयं यथा तथा — ब्र. वि. ५७
ज्ञानात्सिद्धिर्मुक्तिरिति गुरोर्ज्ञानं च लभ्यते — अमन. २।५
ज्ञानात्स्वरूपंपरमंहंसमंत्रंसमुच्चरेत् । प्राणिनां देहमध्येतु स्थितो हंसः सदाऽच्युतः — ब्र. वि. ५९
ज्ञानादेव विमुच्यते (संसारः) — १यो. त. १६
ज्ञानादेवास्य शास्त्रस्य सर्वावस्थोऽपि मानवः । ब्रह्महत्याश्वमेधाद्यैः पुण्य-पापैर्न लिप्यते — ब्र. वि. ५०
ज्ञानाद्योगपरिक्लेशं कुप्रावरणभोजनम् । कुचर्या कुनिवासं च मोक्षार्थी न विचिन्तयेत् — शिवो. ७।११७
ज्ञानाद्ध्यानं विशिष्यते — भ. गी. १२।१२
ज्ञानानन्दघनोऽस्म्यहम् — ते. बिं. ३।३१
ज्ञानानन्दोऽस्म्यद्वयः — ते. बिं. ३।६०

ज्ञानानां चिन्मयातीता शून्यानां शून्यसाक्षिणी । यस्याः परतरं नास्ति सैषा दुर्गा प्रकीर्तिता — देव्यु. २१
ज्ञानानां ज्ञानमुत्तमम् — भ. गी. १४।१
ज्ञानान्मुक्तिमवाप्नुयात् — शिवो. ७।७४
ज्ञानामृततृप्तयोगिनो न किञ्चित् कर्तव्यमस्ति, तदस्ति चेन्न स तत्त्वविद्भवति — पैङ्गलो. ४।९
ज्ञानामृतरसो येन सकृदास्वादितो भवेत् । स सर्वकार्यमुत्सृज्य तत्रैव परिधावति — जा. द. ६।४८
ज्ञानामृतेन तृप्तस्य कृतकृत्यस्य योगिनः। न चास्ति किञ्चित्कर्तव्यं.. — जा. द. १।२३
ज्ञानावस्थितचेतसः — भ. गी. ४।२३
ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः — भ. गी. ४।३४
ज्ञानिनामूर्ध्वगो भूयादज्ञाने स्यादधोमुखः। एवं वै प्रणवस्तिष्ठेत् — यो. चू. ७८
ज्ञानिनां ज्ञानदा सत्यं दानवानां विनाशिनी (महालक्ष्मीः) — ना. पू.ता.२।३
ज्ञानिनो नित्यवैरिणा — भ. गी. ३।३९
ज्ञानिनो हृदयं मूढैर्ज्ञातं चेत् कल्पनं तदा । ध्यानेन सागरे पीते निःशेषेण जगद्भवेत् — ते. बिं. ६।९६
ज्ञानिभ्योऽपि मतोऽधिकः — भ. गी. ६। ४६
ज्ञानी च भरतर्षभ — भ. गी. ७।१६
ज्ञानी त्वात्मैव मे मतम् — भ. गी. ७।१०
ज्ञाने च त्रिविधे ज्ञेये क्रमेण विदिते स्वयम्। सर्वज्ञता हि सर्वत्र भवतीह महाधियः — अ. शां. ८९
ज्ञानेन ज्ञेयमालोक्य पश्चाज्ज्ञानं परित्यजेत् — ब्र. वि. ३६
ज्ञानेन तु तदज्ञानं — भ. गी. ५।१६
ज्ञानेन विज्ञाने ज्ञेये परमात्मनि हृदि संस्थिते देहे लब्धाशान्तिपदं गते तदा प्रभामनोबुद्धिशून्यं भवति — पैङ्गलो. ४।९
ज्ञानेनाकाशकल्पेन धर्मान्योगगनोपमान् । ज्ञेयाभिन्नेन सम्बुद्धस्तं वन्दे द्विपदां वरम् — अ.शां. १
ज्ञानेनाज्ञानकार्यस्य स मूलस्यलयो यदि । तिष्ठत्ययं कथं देह इति शङ्कावतोजडान् । समाधातुंबाह्यदृष्ट्या प्रारब्धं वदति श्रुतिः — अध्यात्मो. ५९
ज्ञानेनैव विना योगो न सिद्ध्यति कदाचन । जन्मान्तरैश्च बहुभिर्योगो ज्ञानेन लभ्यते — यो.शि. १।५२
ज्ञानेनैव हि संसारविनाशो नैव कर्मणा — रुद्रह. ३५
ज्ञानेन्द्रियकर्मेन्द्रियान्तःकरणचतुष्टयं चतुर्दशकरणयुक्तं जाग्रत् — शारीरको. १०
(अथ)ज्ञानेन्द्रियपञ्चकं कर्मेन्द्रियपञ्चकं प्राणादिपञ्चकं वियदादिपञ्चकमन्तःकरणचतुष्टयं कामकर्मतमांस्यष्टपुरम् — पैङ्गलो. २।६
ज्ञानेन्द्रियाणि पञ्चैव श्रोत्रत्वग्लोचनादयः — वराहो. १।२
ज्ञानेन्द्रियैःसहबुद्धिर्विज्ञानमयकोशः — पैङ्गलो. २।५
ज्ञानेन्द्रियैःसह मनो मनोमयकोशः — पैङ्गलो. २।५
ज्ञाने परिसमाप्यते — भ.गी. ४।३३
ज्ञानैर्बिभर्ति ज्ञायमानं च पश्येत् — श्वेता. ५।२
ज्ञानोदयात्पुरारब्धं कर्मज्ञानान्न नश्यति। अदत्वास्वफलं लक्ष्यमुद्दिश्योत्सृष्टबाणवत् — अध्यात्मो. ५३
ज्ञेयं वस्तुपरित्यागाद्विलयं याति मानसम् । मानसे विलयं याते कैवल्यमवशिष्यते — शांडि.१।७।२३
ज्ञेयं चाज्ञेयं च विकल्पासहिष्णु तत्सशक्तिकं गजवक्त्रं गजाकारं जगदेवावरुन्धे — ग.शो. ३।३
ज्ञेयं चोक्तं समासतः — भ.गी. १३।१९
ज्ञेयं यत्तत्प्रवक्ष्यामि — भ.गी. १३।१३
ज्ञेयं सर्वप्रतीतं च तज्ज्ञानं मन उच्यते । ज्ञानं ज्ञेयं समं नष्टं नान्यः पन्था द्वितीयकः — शांडि. १।७।२२

ज्ञेयः स नित्यसंन्यासी — भ.गी. ५।३
ज्ञेयोऽसि नियतात्मभिः — भ.गी. ८।२
ज्ञोऽमृतोहुतसंवित्कः शुद्धः संविष्टो निर्विघ्न इममसुनियमेऽनुभूय इहेदं सर्वं दृष्ट्वा.. स प्रपञ्चहीनः.. — नृसिंहो. ३।३

झ

झषाणां मकरश्चास्मि — भ.गी. १०।३१

ण

णकारो भगवान् भवति (नारायणः) — तारसा. १।४

त

त इमेऽवस्थिता युद्धे — भ.गी. १।३३
त इमे सत्याः कामा अनृतापिधानाः — छान्दो. ८।३।१
त इह व्याघ्रो वा सिꣳहो वा वृको वा वराहो वा कीटो वा..यद्यद्भवन्ति तदा भवन्ति [छान्दो. ६।९।३ +६।१०।२
त इह व्रीहियवा ओषधिवनस्पतयस्तिलमाषा इति जायन्ते — छान्दो. ५।१०।६
त ऋषयोऽभवंस्तदृषीणामृषित्वम् — सह्वै. १३
त ऋषीनब्रुवन्–नमोवोऽस्तु भगवतोऽस्मिन्धामनिकेनवःसमर्पयामीति — सह्वै. ११
त एतस्यैव सर्वे रूपमभवन् — बृह. १।५।२१
त एतदेवरूपमभिसंविशन्त्येतस्माद्रूपादुद्यन्ति [छान्दो. ३।६।२+७।२+८।२ +९।२+१०।२
त एतं ब्रह्मयज्ञमपश्यंतमाहरन् — सह्वै. १३
त एतानि सूक्तान्यपश्यन् यद्वा देवहेळनं यद्दीव्यं.. — सह्वै. ११
त एतावन्तो भवन्ति (पशवः) यथाप्रज्ञं हि संभवाः — १ऐत. ३।२।४
त एते सर्व एव समाः सर्वेऽनन्ताः स यो हैतानन्तवत उपास्तेऽन्तवꣳ लोकं जयति — बृह. १।५।१३
त एनं तृप्ता आयुषा तेजसा वचसा श्रिया..ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येनचतर्पयन्ति — सह्वै. १४
त एव पुनरावर्तन्ते तस्मादेते ऋषयः प्रजाकामा दक्षिणं प्रतिपद्यंते — प्रश्नो. १।९
त एव भूमतां प्राप्ताः संशान्ताशेषकिल्बिषाः..येयाता विमनस्कताम् — महो. ५।६०
त एवमेवानुपरिवर्तन्ते — बृह. ६।२।१६
त एवैनमुपमन्त्रयंते ददाम त इति — कौ.उ. २।१,२
त एषु लोकेष्वस्पर्धन्त — बृ. उ. १।३।१
त ऐक्षन्त हन्तैनमासुरं पाप्मानं प्रसाम इति — नृसिंहो. ६।१

त ऐक्षन्तास्माकमेवायं विजयोऽस्माकमेवायं महिमेति — केनो. ३।१
तकारस्तारलक्ष्म्या च वैराजः प्रस्तरः स्मृतः। इकाररूपिणी...महामाया... अव्यक्तस्वरूपा भवतीति सीतेत्युदाहरन्ति — सीतो. २,३
तक्रं क्षीरस्वरूपं चेत्क्वचिन्नित्यं जगद्भवेत् — ते.बिं. ६।८०
तक्ष्णुवन्ति वासीभिः कृण्वति फलीभिर्न हैव शक्नुवत इति — आर्षे. १।२
तच्च कारणमेकं हि न भिन्नं नोभयात्मकम्। भेदः सर्वत्र मिथ्यैव धर्मादेरनिरूपणात्। — पञ्चब्र. ३२
तच्चक्रमध्ये पापपुण्यप्रचोदितो जीवो भ्रमति — शांडि. १।४।४
तच्चक्षुषाऽजिघृक्षत्, तन्नाशक्नोच्चक्षुषा ग्रहीतुम् — २ ऐत. ३।५
तच्च न मुख्योऽस्ति, कोऽयं मुख्य इति च हृदयं मुख्यः.. — प.हं.प. २
तच्च निरतिशयानन्दाखण्डब्रह्मानन्दनिजमूर्त्याकारेण ज्वलति — त्रि.म.ना. १।४
तच्च संस्मृत्य संस्मृत्य — भ.गी. १८।७७
तच्चानन्दसमुद्रमग्ना योगिनो भवन्ति, तदपेक्षया इन्द्रादयःस्वल्पानन्दाः — मं.ब्रा. २।९
तच्चानिर्वाच्यमनिर्देश्यमखण्डानन्दैकरसात्मकं भवति — त्रि.म.ना. १।४
तच्चालौकिकपरमानन्दलक्षणाखण्डामिततेजोराशिर्ज्वलति — त्रि.म.ना. १।४
तच्चित्स्वरूपं निर्विकारमद्वैतं च — पा.शो. ४।२
तच्चेज्जिज्ञास्यसि मावगच्छेति (ब्रह्मतेजः) — अव्यक्तो. २
तच्चेत्त्वं याज्ञवल्क्य सूत्रमविद्वाꣳस्तं चान्तर्यामिणं.. — बृह. ३।७।१

तच्छब्दवर्ज्यैस्त्वंशब्दहीनो वाक्यार्थवर्जितः। क्षराक्षरविहीनो यो नादान्तज्योतिरेव सः — ते.बिं. ५।६
तच्छंयोरावृणीमहे गातुं यज्ञाय गातुं यज्ञपतये दैवी स्वस्तिरस्तु नः [सहवै. २५+ [ऋ. खि. १०।१९१।५ — चित्सु. शां.
तच्छान्तमशब्दमभयमशोकमानन्दं विष्णुसंज्ञितं सर्वापरं धामेति — मैत्रा. ७।३
*तच्छास्त्रं शास्त्रितं चेति पौरुषं द्विविधं मतम्। तत्रोच्छास्त्रमनर्थाय परमार्थाय शास्त्रितम् — मुक्तिको. २।१
तच्छिश्नेनाजिघृक्षत्, तन्नाशक्नोत्.. — २ ऐत. ३।९
तच्छुद्धमप्राप्यं प्राप्यंच ज्ञेयंचाज्ञेयं च — ग.शो. ३।३
तच्छुद्धं तच्छबलम्, ततः प्रकृतिमहत्तत्त्वानि जायन्ते — ग.शो. २।५
तच्छुभ्रं ज्योतिषां ज्योतिस्तद्यदात्मविदो विदुः — मुण्ड. २।२।९
तच्छियो(तच्छिरो)ऽश्रयत, यच्छिरोऽभवत् — १ऐत. १।४।२
तच्छ्रीरित्युपासीत, तद्यश इत्युपासीत — कौ. उ. २।६
तच्छ्रेयो रूपमत्यसृजत — बृह. १।४।११
तच्छ्रोत्रेणाजिघृक्षत्। तन्नाशक्नोच्छ्रोत्रेण ग्रहीतुम् — २ऐत. ३।६
तज्जपाल्लभते पुण्यं नरोरुद्राक्षधारणात् — रु. जा. ६
तज्जापकानां वाक्सिद्धिःश्रीसिद्धिः... — हयग्री. ६
तज्ज्ञः कर्मफलेनान्तस्तथा नायाति रञ्जनम् — अ. पू. ५।९८
तज्ज्ञानप्रवाहाधिरूढेन ज्ञेयम् — मं. ब्रा. २।१
तज्ज्ञानं विद्धि राजसम् — भ. गी.१८।२०
तज्ज्ञानं विद्धि सात्त्विकम्। — भ. गी.१८।२१
तज्ज्ञानेन संसारनिवृत्तिः — मं. ब्रा. १।४
तज्ज्ञानेन हि विजानीहि, य एको देव आत्मशक्तिप्रधानः सर्वज्ञः सर्वेश्वरो भूतान्तरात्मा.. — शाण्डि. २।४
(उत) तटस्थो द्रष्टा तटस्थो न द्रष्टा द्रष्टृत्वाच्च द्रष्टैव — ना. प. ६।६

*'उच्छास्त्रं' इति पाठान्तरं, तदेव साध्विति भाति, तृतीयचरणे तथैवोक्तत्वात्, उकारवाक्येषु तथोल्लेखाच्च। [पृ.९८पं.१०]

तडित्सु शरदभ्रेषु गन्धर्वनगरेषु च। स्थैर्यं येन विनिर्णीतं स विश्वसतु विग्रहे — महो. ३।३२
तण्डुलस्य यथा चर्म यथा ताम्रस्य कालिमा। नश्यति क्रियया विप्र पुरुषस्य तथा मलम्। — महो. ५।१८५
तत उपनिषदः श्रुतय आविर्बभूवुः — गोपीचं. २७
तत उपरि पूर्णचन्द्रमण्डलम् — मं. ब्रा. २।३
तत उपस्थगुदयोन्येतन्मूत्रपुरीषं कस्मादाहारापानसिक्तत्वादनुपचति — निरुक्तो. २।१
तत उ ह बालाकिः समित्पाणिः प्रतिचक्रमे उपायानीति — कौ. उ.४।१८
तत उ हैनं यष्ट्या विचिक्षेप स तत एव समुत्तस्थौ — कौ. उ. ४।१८
(अथ) तत ऊर्ध्व उदेत्य नैवोदेता नास्तमेतैकल एव मध्ये स्थाता — छांदो.३।११।१
तत एकशफमजायत — बृह.१।४।४
(उद्वैव) तत एत्यगदो हैव भवति — छांदो. ३।१६।६
तत एव उदेत्य नैवोदेता (मा. पा.) — छां.उ.३।११।१
तत एव च विस्तारं — भ. गी.१३।३१
तत एव पवमानपावकशुचय आविष्कृतमेतेनास्य यज्ञम् — मैत्रा. ६।३४
तत एव सत्यमात्मानं कुरुते स सत्याभिसन्धः. — छान्दो.६।१६।२
तत एवानृतमात्मानं कुरुते सोऽनृताभिसन्धोऽनृतेनात्मानमन्तर्धाय परशुं तप्तं प्रतिगृह्णाति — छांदो. ६।१६।१
तत एवास्य भयं वीयाय, कस्माद्ध्यभेष्यत् — बृह. १।४।२
तत ओङ्कारमपश्यत्ततो व्याहृतीस्ततो गायत्री, गायत्र्या वेदास्तैरिदमसृजत् — गोपीचं. २७
तत ओषधयोऽन्नं च ततः पिण्डाश्चतुर्विधाः — त्रि. ब्रा. २।५
तत एतन्नामधेयं लेभे (वसिष्ठ इति) — १ऐत. २।४।१
ततश्चतुर्जालं ब्रह्मकोशं प्रणुनेत्.. — मैत्रा. ६।२८
ततश्चतुर्जालं ब्रह्मकोशं भिन्दद्ततः परमाकाशम् — मैत्रा. ६।३८

ततश्च दशमे मासि प्रजायते।
  जातश्च वायुना स्पृष्टो न
  स्मरति जन्ममरणम् (गर्भः) निरुक्तो. १।८
ततश्च महदाद्या ब्रह्मणो महामाया-
  सम्मीलनात् पञ्चभूतेषु गन्ध-
  वती पृथिव्यासीत् गोपीचं. ८
ततश्चन्द्रः प्रजापतिशक्रौ,ततो
  माया (भवति) कामराज. १
ततश्च हृद्देशे महान्तं पुरुषं गजवक्त्रं
  ..श्रीहृत्कं..दृष्ट्वा स्तुवन्तिस्म ग. शो. ४।७
ततश्चाग्रे कोटिसूर्यप्रकाशमानन्द-
  रूपं गजवक्त्रं विलोकयति ग. शो. ३।६
ततश्चात्मानमिति मन्यते स्म। न
  चैवमतः परं किञ्चित् ग. शो. ३।६
ततश्चाधःप्रदेशे दश दिक्षु भ्रमन्तो
  न कश्चित् पश्यन्ति स्म ग. शो. ४।६
ततश्चाप्रमादेन निवसेत्... काश्यां
  लिङ्गरूपिण्याम् भस्मजा. २।१६
ततश्चाहङ्कारादिपञ्चतन्मात्राण्जायन्ते ग. शो. २।५
ततश्चाहतं वासः परिधत्ते
  पाप्मनोपहत्यै भस्मजा. २।२
ततश्चैकादशाहेन लयस्थस्य लयो-
  दयात्। मनसा सहितः सोऽपि
  गंतुमिच्छति दूरतः अमन. १।६१
ततश्चोमिति ध्वनिरभूत्स गजाकारः ग. शो. ४।६
ततस्ततो नियम्यैतत् भ.गी. ६।२६
ततस्तद्वृत्तिनैश्चल्यं कुम्भकः प्राणसं-
  यमः...प्रत्याहारः स विज्ञेयः.. ते.बिं. १।३३
ततस्तस्मान्निर्विशेषमतिनिर्मलंभवति त्रि.म.ना. ४।१
ततस्तादृग्गुणगतं मनो भावयति
  क्षणात्। गन्धतन्मात्रमेतस्मात्.. महो. ५।१५१
ततस्तु तं पश्यते निष्कलं ध्याय-
  मानः (आत्मानं) मुण्ड. ३।१।८
ततस्तुतांपश्यतिनिष्कलांच (ज्ञानेन) गुह्यका. ३७
ततस्तु सम्बभूवासौ यद्गिरामप्य-
  गोचरः। यच्छून्यवादिनां शून्यं.. अ.पू. ३।१९
ततस्तेजोहिरण्मयमण्डलम्। तत्र ब्रह्मा
  चतुर्मुखोऽजायत महो. १।४

ततस्तेमुक्तामामनुविशन्ति विज्ञान-
  मयेनाङ्गेन, न पुनरावर्तन्ते भस्मजा. २।१५
ततस्त्रयोदशाहेनलयेनापि.. सिद्धिं
  लभते चिन्तनादपि अमन. १।६३
ततःकनीयसाएवदेवाज्यायसाअसुराः बृह. १।३।१
ततःकराग्रेणाहङ्कारंसृष्टवान् (गणेशः) ग.शो. ४।२
ततःकण्ठान्तरे योगी समूहन्नाडि-
  सञ्चयम् क्षुरिको. १५
ततःकालवशादेव ह्यात्मज्ञानविवेकतः।
  योगाभ्यासं स्थितश्चरन्... त्रि.ब्रा. २।१८
ततः कालवशादेव प्रारब्धेतु क्षयंगते।
  ब्रह्मप्रणवसन्धानंनादोज्योतिर्मयः
  शिवः। स्वयमाविर्भवेदात्मा.. ना.बिं. २९
ततः कालवशादेवप्रारब्धेतुक्षयंगते।
  वैदेहीं मामकीं मुक्तिं यान्ति... मुक्तिको. १।४
ततः कुरु यतात्मवान् भ.गी. १२।११
ततः कूर्चं व्योम षष्ठस्वरबिन्दु-
  मेलनरूपम् तारोप. ३
ततः कृशवपुःप्रसन्नवदनो..निर्मुक्त-
  रोगजालो जितबिन्दुः पट्वग्नि-
  भवति शांडि. १।७।१४
ततः क्षत्रं बलमोजश्च जातम् चित्यु. ११।९
ततः पक्वकषायेण नूनंविज्ञातवस्तुना।
  शुभोऽप्यसौ त्वया त्याज्यो
  वासनौघो निराश्रिना मुक्तिको. २।३१
ततः पतिश्च पत्नी चाभवतां
  तस्मादिदमर्धबृगलमिव.. बृह. १।४।३
ततः पदं तत्परिमार्गितव्यम् भ.गी. १५।४
ततः पद्मासनं बद्ध्वा समग्रीवोदरः
  सुधीः।...प्राणं घ्राणेन रेचयेत् यो. कुं. १।१२
ततः परतरं शुद्धं व्यापकं निर्मलं
  शिवम्। सदोदितं परं ब्रह्म.. ना.बिं. १७
ततः परमेष्ठी व्यजायत,सोऽभि-
  जिज्ञासत किमेकुलं किमेकृत्यमिति अव्यक्तो. १
ततः परं ब्रह्म परं बृहन्तं यथा
  निकायं सर्वभूतेषु गूढम्।
  ..ईशं तं ज्ञात्वाऽमृता भवन्ति श्वेता. ३।७

ततः परिचयावस्था जायते-
ऽभ्यासयोगतः १यो. त. ८१
ततः पवित्रं परमेश्वराख्यमद्वैत-
रूपं... (आत्मरूपं दृश्यते) पैङ्गलो. ४।११
ततः पीयूषमिव विषं जीर्यते शांडि. १।७।४३
ततः पुण्यवशात्सिद्धो गुरुणा
सहसङ्गतः ।..सत्वरं फलमश्नुते यो.शि. १।१४२
ततः पूर्वापरे व्योम्नि...नारायण-
मनुध्यायेत्स्रवन्तममृतं सदा यो.शि. ५।४३
ततः पृथ्व्यप्तेजोवाय्वाकाशानि
पञ्चमहद्भूतानि जायन्ते ग. शो. २।५
ततः प्रकाशते परं ब्रह्म मेघापाये-
ऽशुमानिव कलिसं.
ततः प्रकृतिमहत्तत्त्वानि जायन्ते ग.शो.२।५
ततः प्रक्षाल्य (हस्तौ) तद्भस्मापः
पुनन्त्विति पिबेत् भस्मजा. १।५
ततः प्रजाः प्रजायन्ते य एवं वेद..
प्रत्यग्ज्योतिष्यात्मन्येव रन्ताऽरम् अव्यक्तो. ७
ततः प्रणतोमायानुकूलेनहृदामह्यमष्टा-
दशार्णस्वरूपं सृष्टये दत्त्वाऽन्तर्हितः गो. पू. ३।८
ततः प्रद्युम्नसंज्ञं मन आसीत् । तस्मा-
दहङ्कारनामाऽनिरुद्धः सङ्कर्षणो. १
ततः प्रवर्तते वाणी स्वच्छया ललिता-
क्षरा । गद्यपद्यात्मकैः शब्दैः... सरस्व. ३३
ततः प्रवेशयामास जनकः शुकमङ्गणे ।
तत्राहानि सप्तैव तथैवावसदुन्मनाः महो. २।२३
ततःप्रवेशयामासजनकोऽन्तःपुराजिरे ।
राजा न दृश्यते तावत्.. महो. २।२४
ततः प्रव्रज्य शुद्धात्मा सञ्चरेद्यत्रकुत्र-
चित् ।..सम्पश्यन्हि जनार्दनम् ना.प. ५।४८
ततः प्रव्रज्याख्यं धृतिदण्डं धनु-
र्गृहीत्वाऽनभिमानमयेन चैवेषुणा.. मैत्रा. ६।२८
ततः प्राणमयो ह्यात्मा विभिन्न-
श्चान्तरः स्थितः । ततो विज्ञान
आत्मा तु..आनन्दमय आत्मा
तु ततोऽन्यः कठरु. २१
ततः प्राणोऽजायत स इन्द्रः बृह. १।५।१२
ततः शङ्खाश्च भेर्यश्च भ. गी. १।१३
ततःशरीरेलघुदीप्तिवह्निवृद्धिनादाभि-
व्यक्तिर्भवति शांडि. १।५।२

ततः शुद्धश्चिदेवाहं व्योमवन्निरु-
पाधिकः । जीवेश्वरादिरूपेण.. वराहो. २।५३
ततः शुद्धःसत्त्वान्तरस्थमचलममृत-
मच्युतं ध्रुवं विष्णुसंज्ञितं
स्वमहिम्नि तिष्ठमानं पश्यति मैत्रा. ६।३८
ततः शुभाशुभकर्माणि सर्वाणि
सवासनानि नश्यंति त्रि.म.ना. ५।५
ततः शष्कवृक्षवन्मूर्च्छानिद्रामय-
निश्श्वासोच्छ्वासाभावान्नष्टद्वन्द्वः
..मनः प्रचारशून्यं परमात्मनि
लीनं भवति मं.ब्रा. ३।२
ततः शून्यं च द्वौ दिवाकरहरौ तदनु
गोत्रभृन्माया... कामरा. १
ततः श्वेतैर्हयैर्युक्ते भ.गी. १।१४
ततः सदाचारप्रवृत्तिर्जायते, सदा-
चारादखिलदुरितक्षयो भवति त्रि.म.ना. ५।४
ततः सद्गुरुकटाक्षमंतःकरणमाकाङ्क्षति त्रि.म.ना. ५।४
ततः संध्यां सकुशोऽहरहरुपासीत भस्मजा. २।३
ततः स्वर्गेषुलोकेषु शरीरत्वायकल्पते कठो. ६।४
ततः सर्वं ततः सर्वं ततः सर्वं जगत्.. ग.शो. २।५
ततः सविलासमूलविद्यासर्वकार्यो-
पाधिसमन्विता..अव्यक्तंविशति त्रि.म.ना. ३।७
ततः स विस्मयाविष्टः भ.गी. ११।१४
ततः संवत्सरस्यान्ते ज्ञानयोगमनु-
त्तमम् । आश्रमत्रयमुत्सृज्यप्राप्तश्च
परमाश्रमम् ना.प. ६।३४
ततः साधननिर्मुक्तः सिद्धो भवति
योगिराट् । तत्स्वं रूपं भवेत्तस्य
विषयो मनसो गिराम् ते.बिं. १।३९
ततः सावरण ब्रह्माण्डं विनाशमेति त्रि.म.ना. ३।५
ततः सुदुर्निरीक्षोऽभवत् (इन्द्रः)
तस्मै विद्यामानुष्टुभीं प्रादात्
प्रजापतिः अव्यक्तो. ८
ततः स्तिमितगम्भीरं न तेजो न तम-
स्ततम् । अनाख्यमनभिव्यक्तं
सत्किञ्चिदवशिष्यते महो. २।६५
ततः स्थावरजङ्गमात्मकंजगद्भविष्यति मुद्गलो. २।५
ततः स्वकार्यान्सर्वप्राणिजीवान्सृष्ट्वा
पश्चात्तयाः प्रादुर्भवन्ति मुद्गलो. २।५

ततः स्वधर्मं कीर्तिं च	भ. गी. २।३३
ततः स्वभवनं यान्ति शापं दत्त्वा सुदारुणम् (पितरः श्राद्धाकर्तारं)	इतिहा. ९३
ततः स्वमनसः स्थैर्यं मनसा विगतैनसा। अहो नु चञ्चलमिदं प्रत्याहृतमपि स्फुटम्	अ. पू. ३।५
तते ब्रह्मघने नित्ये सम्भवन्ति न कल्पिताः। न शोकोऽस्ति न मोहोऽस्ति..न जरास्ति न जन्म वा	महो. ६।१३
ततो गावोऽजायन्त, वडवेतराऽभवत्	बृह. १।४।४
ततोऽङ्गसंविदं स्वच्छां प्रतिभासमुपागताम्। सद्योजातशिशुज्ञानं प्राप्तवान्मुनिपुङ्गवः	अ. पू. ३।१५
ततो जलाद्भयं नास्ति जले मृत्युर्न विद्यते	१ यो. त. ९०
ततो जालन्धरो बन्धः कर्मदुःखौघनाशनः	ध्या. बिं. ७८
ततोऽजावयोऽजायन्त, एवमेव यदिदं किञ्च मिथुनमापिपीलिकाभ्यस्तत्सर्वमसृजत	बृह. १।४।४
ततो दक्षिणहस्तस्य अङ्गुष्ठेनैव पिङ्गलाम्। निरुध्य पूरयेद्वायुमिडयातु शनैः शनैः	१ यो. त. ३६
ततो दुःखतरं नु किम्	भ. गी. २।३६
ततो दृढतरशुद्धसात्त्विकवासनया भक्त्यतिशयो भवति	त्रि. म.ना.५।५
ततो दृढतरा वैष्णवी भक्तिर्जायते	त्रि. म.ना.५।४
ततो दृढशरीरः स्यान्मृत्युस्तस्य न विद्यते। ब्रह्मणः प्रलयेनापि न सीदति महामतिः	१यो. त.१०३
ततो देवः प्रीतो भवति स्वात्मानं दर्शयति [नृ.पू. ४।३६+	रामो. ४।४८
ततो देवा अभवन् परासुरा..	बृह.१।३।७
ततो देवास्तमाविपत्यायानुमेनिरे	अव्यक्तो. ८
ततो देवी स्वात्मानं दर्शयति	आथ. द्वि. २
ततोऽधिकतराभ्यासाद्भूमित्यागश्च जायते। पद्मासनस्थ एवासौ भूमिमुत्सृज्य वर्तते	१यो. त. ५४
ततोऽधिकतराभ्यासाद्धूलमुत्पद्यते बहु। येन भूचरसिद्धिः स्याद्भूचराणां जये क्षमः	१ यो. त. ५८
ततोऽधिकतराभ्यासाद्दार्दुरी स्वेन जायते। यथा च दर्दुरो भाव उत्प्लुत्योत्प्लुत्य गच्छति	१ यो. त.५३
ततो न जपो न माला नासनं न ध्यानावाहनादि	ग.शो. ता.५।६
ततो नवरत्नप्रभामण्डलम्	मं. ब्रा. २।३
ततो निधनपतयेत्रयोविंशज्जुहोति च	बृ. जा. ३।१४
ततो निधनसामान्यादन्तःसामिकानि निधनानि...	संहितो. ३।१
ततो निरात्मकत्वमेति, निरात्मकत्वान्न सुखदुःखभाग्भवति	मैत्रा. ६।२१
ततो नैकञ्चन वेदेति। कतमे त इति ह प्रतीकान्युदाजहार	बृह. ६।२।३
ततोऽन्नमभिजायते। अन्नात्प्राणो मनः सत्यं लोकाः कर्मसु चामृतम्	मुण्ड. १।१।८
ततोऽन्यद्विभक्तं यच्छृणुयाम्	बृह. ४।३।२७
ततोऽन्यद्विभक्तं यजिघ्रेत्	बृह. ४।३।२४
ततोऽन्यद्विभक्तं यद्रसयेत्	बृह. ४।३।२५
ततोऽन्यद्विभक्तं यत्पश्येत्	बृह. ४।३।२३
ततोऽन्यद्विभक्तं यद्वदेत्	बृह.४।३।२६
ततोऽन्यद्विभक्तं यद्विजानीयात्	बृह. ४।३।३०
ततोऽन्यद्विभक्तं यत्स्पृशेत्	बृह. ४।३।२९
ततोऽन्यद्विभक्तं यन्मन्वीत	बृह. ४।३।२८
ततोऽन्यश्चान्तरःस्वतः (विज्ञानात्मा)	कठरु. २१
ततोऽपश्यज्ज्योतिर्मयं श्रियाऽऽलिङ्गितं सुपर्णस्थं.. मृगमुखं नरवपुषं...	अव्यक्तो. ३
ततोऽपिधारणाद्वायोः क्रमेणैव शनैः शनैः। कम्पो भवति देहस्य..	१ यो. त. ५२
ततो ब्रह्मोपदिष्टं वै सच्चिदानन्दलक्षणम्। जीवन्मुक्तः सदा ध्यायन्नित्यस्त्वं विहरिष्यसि	शु. र. ३।१७
ततो ब्राह्मणः संयोगं संयुयुजे, तमादित्यात्पुरुषो भास्करवर्णो निष्क्रान्य स एवं ग्राहयाञ्चकार	इतिहा. १

ततो भवति भारत — भ. गी.१४।३

ततो भवेद्धठावस्था पवनाभ्यास-
तत्परा। प्राणोऽपानो मनो बुद्धि-
र्जीवात्मपरमात्मनोः — १ यो. त. ६५

ततो भूय इव ते तमो य उ विद्याया
रताः। [ईशा. ९ + — बृह.४।४।१०

ततोभूय इवते तमोयउसंभूत्या रताः — ईशा. १२

ततोऽभ्यासपाटवात् सहस्रशः सदा-
ऽमृतधारा वर्षति — पैङ्गलो. ३।३

ततो मदर्पितकर्मणां मदाविष्टचेतसां
मद्रूपता भवति — भस्मजा. २।१५

ततो मध्याह्नार्कमण्डलम् (दृश्यते) — मं. ब्रा. २।३

ततो मनुष्या अजायन्त — बृह. १।४।३

ततो मया नचिकेतश्चितोऽग्निर-
नित्यैर्द्रव्यैः प्राप्तवानस्मि नित्यम् — कठो. २।१०

ततो (अविद्याशबलब्रह्मतः) महत्,
महतोऽहङ्कारः, अहङ्कारात्पञ्च-
तन्मात्राणि — त्रि.म.ना. २।५

ततो मात्रा-श्रुतिर्ज्ञेया
निमिषोन्मेष एव च — योगो. ३५

ततोऽमृतत्वमश्नुते — गोपीचं. ८

ततो मां तत्त्वतो ज्ञात्वा — भ. गी. १८।२५

ततो मे श्रियमावह लोमशां
पशुभिः सह स्वाहा — तैत्ति. १।४।१

ततो यदुत्तरतरं तद्रूपमनामयम्।
य एतद्विदुरमृतास्ते भवन्त्यथेतरे
दुःखमेवापियन्ति — श्वेता. ३।१०

ततो याति परां गतिम् — भ.गी.६।४५
[+१३।२९+१६।२२

ततो यान्त्यधमां गतिम् — भ. गी.१६।२०

ततो युञ्जीत मेधावी..मनः पूर्वं
मनः सर्वं मनस्तस्मान्न लङ्घयेत् — योगो. २।१६

ततो युद्धाय युज्यस्व — भ. गी. २।३८

ततो योगविदमाः समाधि
धर्ममेवं प्राहुः — पैङ्गलो. ३।३

ततो योषाग्नी जायन्ते, लोकान्प्रत्यु-
त्थायिनस्त एवमेवानु परिवर्तन्ते — बृह. ६।२।१६

ततो योऽस्य भगाख्यस्तं
बभिनत्याधि... — कौ. उ. ६।७

ततो रक्तोत्पलाभासं पुरुषायतनं
महत्। तत्र सञ्चारयेत्प्राणा-
नूर्णनाभीव तन्तुना — क्षुरिको. १०

ततो रहस्युपाविष्टः प्रणवं प्लुत-
मात्रया।... जपेत्पूर्वार्जिता-
नां तु पापानां नाशहेतवे — १ यो. त. ६३

ततो रात्रिरजायत (रात्र्यजायत) — महाना. ६।१
[ऋ.अ.८।८।४८=मं.१०।१९०।१
[+ तै. आ. १०।१।१३

ततो वक्ष्यामि ते हितम् — भ. गी. १८।६४

ततो वह्निशिखामण्डलं क्रमाद्दृश्यते — मं. ब्रा. २।३

ततो वायुस्थैर्यम्। तच्चिह्नानि-
आदौ तारवद्दृश्यते, ततो वज्र-
दर्पणम्.. — मं. ब्रा. २।३

ततो विज्ञान आत्मा तु ततोऽन्यश्चा-
न्तरः स्वतः। आनंदमय आत्मा तु
ततोऽन्यश्चान्तरः स्थितः — कठरु. २१

ततो विलीनपाशोऽसौ विमलःकमला-
प्रभुः। तेनैव ब्रह्मभावेन
परमानन्दमश्नुते — ना.बिं. २०

ततो विशुद्धं विमलं विशोकमशेष-
लोभादिनिरस्तसङ्गम्। यत्त-
त्पदं.. तदेव स वासुदेवो.. — गो.पू. ४।३

ततो विष्वङ्(ध्वर) व्यक्रामत् — त्रि.म.ना. ४।४
[पु.सू. ऋ.अ.८।४।१७= — मं. १०।९०.४
[वा.सं. ३१।४ + — चित्यु. १२।२

ततो वै खलु दुर्निष्प्रतनं यो यो
ह्यन्नमत्ति यो रेतः सिञ्चति
तद्भूय एव भवति (मा.पा.) — छां.उ. ५।१०।६

ततो वै गृहीतायां शक्त्यां ब्रह्मणः
सृष्टिरजायत — ग.शो. ३।११

ततो वै ध्यानस्थिता अभू-
वन् (देवाः) — ग.शो. ४।६

ततो वै परस्परमसहमानाश्चोर्ध्वं
जग्मुः (देवत्रयम्) — ग.शो. ४।६

ततो वै भूतेभ्यश्चतुर्दश लोका
जायेरन् — ग.शो. ४।५

ततो वैराग्यमुदेति (भक्त्या) — त्रि.म.ना. ५।४

ततो वै सत्त्वं (विष्णुः) तामा-
द्याय जगत्पाति स्म — ग.शो. ३।१२

ततो वै सदजायत तैत्ति. २।७
ततो वै सृष्टिमचीकरत् (ब्रह्मा) ग.शो. ३।६
ततो वै सोऽहमभूत् । नैकाकिता-
त्युक्तेति गुणान् निर्ममे ग.शो. ३।४
ततो व्यैच्छत् व्येवास्मा उच्छति अव्यक्तो. ६
ततोऽश्वः समभवत्, यदश्वत्तन्मेध्यम-
भूत्, तदेवाश्वमेधस्याश्वमेधत्वम् बृह. १।२।७
ततोऽसंसक्तिनामिका (ज्ञानभूमिः) महो. ५।२५
ततोऽसौ सन्नियोगेन निरालम्बो
भवेद्यदि । तदा समरसीभूतः
परमानन्द एव सः अमन. २।९५
ततो ह बालिशा ऊचुरवात्त वा
संवत्सरमिमे ब्राह्मणाः छाग. ५।१
ततो ह वै तद्रेतस्तदिमाःप्रजाःप्रजायन्ते प्रश्नो. १।१४
ततो ह वै ते देवा रुद्रमपृच्छन्,
ते देवा रुद्रमपश्यन् अ.शिरः. ११
ततो ह वै विदाञ्चकार ब्रह्मेति(मा.पा.) केनो. ४।१
ततोऽहंनामाऽभवत् तस्मादप्येतर्ह्या-
मंत्रितोऽहमयमित्युक्त्वाऽथा-
न्यन्नाम प्रब्रूते बृह. १।४।१
ततो ह्यसुराः पुनरेवोदयन्ति, ते ह
माध्यन्दिनस्यैव सवनस्य
पवमानेषु यज्ञवास्त्वभवन् शौनको. ३।१
ततो ह्यसुराः पराभवन् [शौनको.२।४+ ३।४
ततो हिरण्यगर्भोऽजायत, तस्माद्दश
प्रजापतयो मरीच्यादयः..अजायन्त सङ्कर्षणो. १
ततो हृदयस्थिताः कामाः सर्वे विन-
श्यन्ति तस्माद्धृदयपुण्डरीक-
कर्णिकायांपरमात्माविर्भावोभवति त्रि. म.ना.५।४
ततो हेन्द्रोऽपश्यत्, स ह गायत्रीमेव
प्रतिसन्दिदेश शौनको. १।२
ततो हैव विदाञ्चकार ब्रह्मेति (इन्द्रः) केनो. ४।१
तत्कथमिति अज्ञानप्राबल्यात् त्रि.म.ना. ५।३
तत्कर्म कृत्वा विनिवर्त्य भूय-
स्तत्त्वस्य तत्त्वेन समेत्य योगम् ।
एकेन द्वाभ्यां त्रिभिरष्टभिर्वा..
आत्मगुणैश्च सूक्ष्मैः । आरभ्य कर्माणि श्वेता. ६।३
तत्कर्मणा करोति [बृहज्जा. १।१+ नृ.पू. १।१
तत्कारणशरीरम् (आनंदमयकोशः) पैङ्गलो. २।५
तत्कारणं साङ्ख्ययोगाधिगम्यं ज्ञात्वा
देवं (देवीं) मुच्यते सर्वपाशैः श्वेता.६।१३
[गुह्यका. ७१+ भवसं. २।४८
तत्किं कर्मणि घोरे मां भ.गी. ३।१
तत्कुरुष्व मदर्पणम् भ.गी. ९।२७
तत्केन कमभिवदेत्, तत्केन कं
मन्वीत, तत्केन कं विजानीयात्
येनेदꣳ सर्वꣳ विजानाति, तं
केन विजानीयाद्विज्ञातारम्.. बृह. २।४।१४
तत्केन कं जिघ्रेत्.. तत्कं विजानी-
यात्, येनेदं सर्वꣳ विजानाति, तं
केन विजानीयाद्विज्ञातारं.. बृह.२।४।१४
तत्केन कं पश्येत्तत्केन कं
जिघ्रेत्तत्केन कं रसयेत्... बृह. ४।५।१५
तत्केन कं मन्वीत बृह. २।४।१४
तत्केन कं विजानीयात्, येनेदं
सर्वꣳ विजानाति तं केन
विजानीयाद्विज्ञातारं.. बृह. ४।५।१५
तत्केन कं स्पृशेत्तत्केन कं विजानी-
यात्... बृह. ४।५।१५
तत्कैवल्यपदं विदुः अ. पू.५।१९
तत्तत्कार्यकारणभेदरूपेणांशतत्त्व-
वाचक-वाच्य-स्थानभेद-विषय-
देवताकोशभेद-विभागा भवन्ति त्रि. ब्रा. १।२
तत्क्षामये त्वामहमप्रमेयम् भ. गी.११।४२
तत्क्षेत्रं यच्च यादृक् च भ. गी. १३।४
तत्तज्जन्तुध्वनौ चित्तसंयमात्सर्व-
जन्तुरुतज्ञानं भवति शाण्डि.१।७।५२
तत्तदेवावगच्छ त्वम् भ. गी.१०।४१
तत्तदेवेतरो जनः भ. गी. ३।२१
तत्तत्पदविरक्तस्य....आनन्दः
स्वयं भाति कठ. रु. ३३
तत्तत्प्राधान्येन तत्तद्व्यपदेशः,
वस्तुतस्त्वभेद एव त्रि.म.ना. १।४
तत्तत्प्राप्य शुभाशुभम् भ. गी. २।५७

तत्तत्स्थाने (चित्तस्य) संयमा- तत्तत्सिद्धयो भवन्ति	शांडि.१।७।५२
तत्तदरश्च (तदरश्च) वै ण्यश्चार्णवौ ब्रह्मलोके तृतीयस्यामितो दिवि तदैरं मदीयᳶ सरस्तदश्वत्थः	छां. उ. ८।५।३
तत्तद्देवताग्रहान्वितैः श्रोत्रादि- ज्ञानेन्द्रियैः..जाग्रदवस्था भवति	पैङ्गलो. २।७
तत्तद्ब्रह्ममार्गे सम्यक्सम्पन्नः शुद्ध- मानसः प्राणसन्धारणार्थं.. भैक्ष्य- माचरन्..स परमहंसो नाम	जाबा. ६
तत्तद्रूपमनुप्राप्य	....
तत्तद्वृत्तिव्यापारभेदेन पृथगाचारभेदः	ना.प. ५।१२
तत्तमः खल्वीरितं तमसः संप्रास्रवति	मैत्रा. ५।५
तत्तस्माद्यज्ञोपवीत्येवाधीयीत, याजयेद्यजेत वा	सहवै. १
तत्तस्यैतत्ते यदसावादित्य ओमित्ये- तदक्षरस्य चैतत्तस्मादोमित्यने- नैतदुपासीत	मैत्रा. ६।४
तत्तामसमुदाहृतम् [२२+	भ.गी.१७।१९, १८।२२,३९
तत्तारकं द्विविधं–पूर्वार्धंतारकमुत्तरा- र्धममनस्कं चेति	अद्वयता. ४
तत्तारकं द्विविधं मूर्तितारकममूर्ति- तारकं चेति	अद्वयता. ५
तत्तुर्यातीतचिन्मात्रं स्वमात्रं चिन्तयेऽन्वहम्	तुरीया.शीर्षकं
तत्तृप्यति तस्यानुतृप्तिं तृप्यति प्रजया पशुभिरन्नाद्येन तेजसा ब्रह्म- वर्चसेनेति (मा.पा.)	छां.उ. ५।२०।२
तत्ते कर्म प्रवक्ष्यामि	भ.गी. ४।१६
तत्तेज आत्मचैतन्यरूपं बलमवष्टभ्य गुणैरैक्यं सम्पाद्य.. चिन्तयन् भवेत्	नृसिंहो. ३।४
तत्तेज आपद्य उदस्येति तत्रैत- देव शुङ्गमुत्पतितᳶ सोम्य विजानीहि	छान्दो. ६।८।५
तत्तेज ऐक्षत बहु स्यां प्रजायेयेति	छान्दो. ६।२।३
तत्तेजो विद्धि मामकम्	भ.गी. १५।१२
तत्तेजोऽसृजत, तत्तेज ऐक्षत बहुस्यां..	छान्दो. ६।२।३
तत्ते पदं संग्रहेण प्रवक्ष्ये	भ. गी. ८।११
तत्ते पदं संग्रहेण ब्रवीम्योमित्येतत्	कठो. २।१५
तत्त्रयोदशं प्राणं मनो विज्ञानमिति विज्ञाय तं तपसा द्वादश द्वाद- शानंद इति सैषा दशान्नं न निंद्यात्	तैत्ति. ३।११
तत्त्वैपदं ब्रह्मतत्त्वं स्वमात्रमवशिष्यते	यो. शि.शीर्षं.
तत्त्वग्रामोपायसिद्धं परतत्त्वस्वरूपकम् । शारीरोपनिषद्वेद्यं श्रीरामब्रह्ममेगतिः	शारी.शीर्षं.
तत्त्वचाऽजिघृक्षत्, तन्नाशक्नोत्त्वचा ग्रहीतुम्, स यद्धैनं तत्त्वचाऽग्रहीष्यत्	२ ऐत.३।७
तत्त्वज्ञानं गुहायां निविष्टमज्ञानिकृतं मार्गं सुष्ठु वदन्ति	स्वसंवे. ३
तत्त्वज्ञानं मनोनाशो वासनाक्षय एव च । मिथः कारणतां गत्वा	अ.पू. ४।८१
तत्त्वज्ञानार्थदर्शनम्	भ.गी. १३।१२
तत्त्वज्ञानोदयादूर्ध्वं प्रारब्धं नैव विद्यते	ना. बिं. २२
तत्त्वतश्च शिवः साक्षाच्चिज्जीवश्च स्वतः सदा । चिच्चिदाकारतो भिन्ना न भिन्ना चित्त्वहानितः	रुद्रहृ. ४४
तत्त्वतस्त्वेक एव सन्न्यासः, अज्ञानेना- शक्तिवशात् कर्मलोपश्च.. चातुर्विध्यमुपागतः	ना.प. ५।२
तत्त्वतो जायते यस्य जातं तस्य हि जायते	अद्वैत. २७
तत्त्वतो भिद्यमाने हि मर्त्यताममृतं व्रजेत्	अद्वैत.१९
तत्त्वदृष्ट्या तु नास्त्येव तत्त्वमेवास्ति केवलम् । व्यावहारिकदृष्टिस्तु	पा. ब्र. २४
तत्त्वप्रदीपप्रकाशं स्वात्मानं पश्यन् योगी मत्सायुज्यमवाप्नोति	वासुदे. ५
तत्त्वब्रह्ममार्गे सम्यक्सम्पन्नःशुद्ध- मानसः प्राणसन्धारणार्थं.. विमुक्तो भैक्षमाचरन्..सन्न्यासेन देहत्यागं करोति स परमहंसो नाम	याज्ञव. ३
तत्त्वब्रह्ममार्गे सम्यक् सम्पन्नः... याचिताहारमाहरन्.. समो भूत्वा निर्ममः.. सन्न्यासेनैव देहत्यागं करोति स कृतकृत्यो भवति	ना.प.३।८७

तत्त्वत्रयस्य विज्ञानं... स्वधर्माचरणं ..मन्त्रार्थचिन्तनं श्रवणं कीर्तनम्। एते ते कथिता राजन्पारमैकान्त्य-सिद्धिदाः भवसं.५।१८
तत्त्वमसि श्वेतकेतो [छान्दो.६।८।७+ ६।९।४ —६।१४।३+शु.र.।२।३+ पैङ्गलो. ३।१
तत्त्वमसि, अहं ब्रह्मास्मि, सर्वं खल्विदं ब्रह्म, नेह नानास्ति किञ्चनेत्यादि महावाक्यार्थानुभवज्ञानाद्ब्रह्मैवाहमस्मीति... निरा. ३१
तत्त्वमसि...अहंब्रह्मास्मीत्यनुसन्धानं कुर्यात् पैङ्गलो. ३।१
'तत्त्वमसि' इत्यादिवाक्यविचारः मठाम्ना. ३
तत्त्वमसीत्यभेदवाचकं ये जपन्ति ते शिवसायुज्यमुक्तिभाजो भवन्ति शु.र. ३।५
तत्त्वमसीत्यहं ब्रह्मास्मीति वाक्यार्थविचारः श्रवणं... पैङ्गलो. ३।२
तत्त्वमसीत्यपदेशेन त्वमेवाहमहमेवं त्वमिति तारक...कृतार्थो भवति मं.ब्रा. ३।२
तत्त्वमसीत्येवं सम्भाष्यते। अयमात्मा ब्रह्मेति वा.. बह्वृचो. ४
तत्त्वमस्यादिवाक्यं तु केवलं मुक्तिदं यतः रामर. ५।१५
तत्त्वमस्यादिवाक्यानिब्रह्मणैकतांजगुः पैङ्गलो.२।६
तत्त्वमात्मस्थमज्ञात्वा मूढः शास्त्रेषु मुह्यति अमन. २।१८
तत्त्वमाध्यात्मिकं दृष्ट्वा तत्त्वं दृष्ट्वा तु बाह्यतः। तत्त्वीभूतस्तदा रामस्तत्त्वादप्रच्युतो भवेत् वैतथ्य. ३९
तत्त्वमार्गे यथा दीपो दृश्यते पुरुषोत्तमः २ यो.त. २
तत्त्वमिच्छामि वेदितुम् भ.गी.१८।१
तत्त्ववित्तु महाबाहो भ.गी. ३।१८
तत्त्वस्य तत्त्वेन समेत्य योगम्। श्वेता. ६।३
तत्त्वं पूषन्नपावृणु, सत्यधर्माय दृष्टये। पूषन्नेकर्षे यम-[ईशा. १५+ बृह. ५।१५।१
तत्त्वं तत्सहजस्वभावममलं तेजोऽमनस्के ध्रुवम् अमन. २।७६
तत्त्वं नारायणः परः।..यच्च किञ्चिज्जगत्सर्वं दृश्यते श्रूयतेऽपि वा। अंतर्बहिश्च तत्सर्वं व्याप्य नारायणः स्थितः महाना.९।४
तत्त्वानीति च तद्विदः वैतथ्य. २०
तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते...[वनदु.४३,५६,६८,७९ ऋ.अ.१।२।१५ [=मं.१।२४।११+वा.सं.१८।४९+ तै.आ.२।३।१ [तै.सं.२।१।११।६+
तत्त्वावबोध एवासौ वासनातृणपावकः। प्रोक्तः समाधियोगेन न तु तूष्णीमवस्थितिः महो. ४।१२
तत्त्वाविचारपाशेन बद्धं द्वैतभयातुरम्। उज्जीवयन्निजानन्दे स्वस्वरूपेण संस्थितः द. मू. २०
तत्त्वीभूतस्तदा रामस्तत्त्वादप्रच्युतो भवेत् वैतथ्य. ३९
तत्त्वेनातश्च्यवन्ति ते भ. गी. ९।२४
तत्त्वेव भयं विदुषो भवति तैत्ति. २।७
तत्पतित्वात्पशुपतिः जाबाल्यु. ३
तत्परमरहस्यशिवतत्त्वज्ञानं (शिवसाक्षात्करणं) द.मू. २
तत्परमित्यक्षरं गुह्यम् (ओमित्यक्षरं) सन्ध्यो.२०
तत्परमित्याह, यमेतेनाप्नुवन्ति ग.शो. ३।२
तत्परं ज्योतिरोमिति [यो.शि.६।५६ +यो. चू. ८१
तत्परं नापरं त्यजति। तदेव कपालाष्टकं सन्धाय य एष स्तनइवावलम्बते सेन्द्रयोनिः परब्र. २
तत्परं यच्चित्तं परमात्मानमानन्दयति परब्र. २
तत्परः परमात्मा च श्रीरामः पुरुषोत्तमः तारसा. २।५
तत्परः संयतेन्द्रियः भ.गी. ४।३९
तत्पारेणममानमभूत् (ब्रह्माण्डं) ततः परमेष्ठी व्यजायत अव्यक्तो. १
तत्परिभाषया कामःककारंव्याप्नोति। काम एवेदं तत्तदितिककारोगृह्यते त्रि.ता. १।५
तत्प्रेरणप्रेरितं विषमत्वंप्रयाति(तमः) मैत्रा. ५।५

तत्पर्वते कर्मज्ञानमयीभिर्बहु-
शाखा भवन्ति सीतो. ११
तत्पश्चात्तत्परेणेरितं विषमत्वं प्रयाति मैत्रा. ५।५
तत्पार्श्वे (मनसः) संयमान्नि-
ऋतिलोकज्ञानम् शांडि. १।७।५२
तत्पुरुषस्य विश्वमाजानमग्रे चित्यु. १।३१
तत्पुरुषं पुरुषो निवेश्य नास्य
प्रजा संवत्सरा जायन्ते महो. १।२
तत्पुरुषाद्वायुः, तस्माच्छान्तिः, तस्याः
श्वेतवर्णा सुशीला (गौः),तस्याः
गोमयेन क्षारं जातम् बृ.जा. १।६
तत्पुरुषाय विद्महे चक्रतुण्डाय
धीमहि। तन्नो नंदिः प्रचोदयात् महाना. ३।४
तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि।
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् [महाना. ३।२+१०।७
तत्पुरुषाय विद्महे महासेनाय.. तन्नः
षण्मुखःप्रचोदयात् [महाना.३।५+ वनदु.१३३
तत्पुरुषस्य विद्महे सहस्राक्षस्य महा-
देवस्य धीमहि। तन्नो रुद्रः
प्रचोदयात् महाना. ३।१
तत्पुरुषाय विद्महे सुवर्णपक्षाय.. तन्नो
गरुडः.. [महाना. ३।६+ वनदु. १३४
तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डायधीमहि।
तन्नो दंती (दन्तिः) प्रचोदयात् महाना. ३।३+
[वनदु. १३२+ ग.शो. २।१
तत्पुरुषो नादः, बिन्दुरीशानः,
(ओङ्कारस्य) ना.पू.ता. १।३
तत्पुरुषोऽमानवः स एनान्ब्रह्म
गमयति छान्दो.५।१०।२
तत्पूजनं (मानसं) मोक्षफलप्रदम् मं.ब्रा. १।४
तत्पृथ्वीमण्डले क्षीणे वलिरायाति
देहिनाम्। तद्वदापो गणापाये
केशाः स्युः पाण्डुराः क्रमात् वराहो. ५।४
तत्पृष्ठदेशे विदले समन्तान्न्यस्ता सुधा
मानवदष्टयघृष्टया.. १ बिल्वो. ५
तत्प्रज्ञानेत्रं प्रज्ञाने प्रतिष्ठितं, प्रज्ञा-
नेत्रो लोकः, प्रज्ञा प्रतिष्ठा,
प्रज्ञानं ब्रह्म २ ऐत. ५।३

तत्प्रतिबिम्बितं यत्तत्साक्षि चैतन्य-
मासीत् पैङ्गलो. १।२
तत्प्रतिबिम्बितं यत्तदीश्वरचैतन्यमासीत् पैङ्गलो. १।२
तत्प्रतिबिम्बितं यत्तद्विराट्चैतन्यमासीत् पैङ्गलो. १।२
तत्प्रतिबिम्बितं यत्तद्धिरण्यगर्भचैतन्य-
मासीत् पैङ्गलो. १।३
तत्प्रतिष्ठेत्युपासीत तैत्ति. ३।१०।३
तत्प्रथमावरणे पश्चिमे सम्मुखे स्वर्ण-
मण्डपे देवकन्या राधोप. २।१
तत्प्रमार्जनमात्रं तु मोक्षइत्यभिधीयते अ.पू. ४।५६
तत्प्रसादात्परां शान्ति भ.गी.१८।६२
तत्प्राणेनाजिघृक्षत् तन्नाशक्नोत्
प्राणेन ग्रहीतुम् २ ऐत. ३।४
तत्प्राणेषूत्क्रान्तेषु शरीरंश्वयितुमध्रियत बृह. १।२।६
तत्प्राणोऽभिरक्षति शिरोऽन्नमथोमनः अ.शिरः.३।१४
तत्प्राप्तिहेतुज्ञानं च कर्म चोक्तं... भवसं. १।२२
तत्र का परिदेवना भ. गी. २।२८
तत्फलश्रुतिरितितस्योर्ध्वकिं वदामेति बृ. जा. १।४
तत्र को मोहः कः शोकः, एकत्व-
मनुपश्यतः [ईशा. ७+ ना. प. ९।१३
तत्र चक्रं द्वादशारं तेषु विष्णवादि-
मूर्तयः। अहं तत्र स्थितिश्चक्रं
भ्रामयामि स्वमायया त्रि.ब्रा. ६०
तत्र चत्वारः—अकारश्चायुतावयवा-
न्वितः, उकारः सहस्रावयवा-
न्वितः, मकारः शतावयवोपेतो-
ऽर्धमात्राप्रणवोऽनन्तावयवाकारः ना.प. ८।३
तत्र चान्द्रमसं ज्योतिः भ.गी. ८।२५
तत्र तत्र परंब्रह्म सर्वत्र समवस्थितम् पैङ्गलो. ४।२२
तत्र तमोनिवृत्तिः (कुण्डलिन्यां
नाड्यां)तद्दर्शनात् सर्वपाप-
निवृत्तिः मं.ब्रा. १।२
तत्र (अविद्याण्डे) तत्त्वतो
गुणातीतशुद्धसत्त्वमयो लीला-
गृहीत.. मायोपाधिको
नारायण आसीत् त्रि.म.ना. २।५
तत्र तं बुद्धिसंयोगं भ.गी. ६।४३
तत्र ता ऋचस्तदृचां मण्डलं स
ऋचां लोकः महाना. १०।१

तत्र योगरताः केचिन्नैव जानन्ति तारकम् ।.. केचिद्ध्यानविमोहिताः । जपेन केचित्क्लिश्यन्ति नैव जानन्ति तारकम् अमन. १।४
तत्र योनिं कृण्वते न हि ते पूर्वमक्षिपत् श्वेताश्व. २।७
तत्र रक्षांसिपैशाचानचविद्वेष्टियोनरः इतिहा. ६२
तत्र लोका वेदाः शास्त्राणि पुराणानि ..ज्योतींषि शिवशक्तियोगादित्येवं घटना व्यापठ्यते त्रि. ता. १।४
तत्र वषाशङ्कं भवति यां दिशमेवि प्राणस्यैव सम्राट् कामाय बृह. ४।१।३
तत्र विश्व एव जाग्रद्व्यवहारलोपा- न्नाडिमध्यं चरंस्तैजसत्व- मवाप्य...स्वभासा भासयन् यथेप्सितं स्वयं भुङ्क्ते पैङ्गलो. २।७
तत्र (मठे) वेदान्तश्रवणं कुर्वन् योगं समारभेत् शांडि. १।५।१
तत्र वैखानसा अकृष्टपच्यौषधि- वनस्पतिभिः..अग्निपरिचरणं कृत्वा..आत्मानं प्रार्थयन्ते आश्रमो. ३
तत्र श्रीर्विजयो भूतिः भ. गी.१८।७८
तत्र (नाड्यां) सञ्चारयेत्प्राणा- नूर्णनाभीव तन्तुना क्षुरिको. ९
तत्र सत्त्वं निर्मलत्वात् भ. गी. १४।७
तत्र संलीयते संविन्निर्विकल्पं च तिष्ठति । भूयो न वर्तते दुःखे तत्र लब्धपदः पुमान् अ. पू. ४।६९
तत्र सुषुम्ना विश्वधारिणी मोक्षमार्गेति चाचक्षते शांडि. १।४।६
तत्र सूर्योऽग्निर्नाम सूर्यमण्डलाकृतिः सहस्ररश्मिपरिवृत एकऋषि- र्भूत्वा मूर्धनि तिष्ठति प्रा. हो. २।४
तत्र स्थिते मनसि चक्षुर्मध्यगतनील- ज्योतिष्पश्यति । एवं हृदयेऽपि मं. ब्रा. १।३
तत्र स्थिते मनसि चक्षुर्मध्यगत- ज्योतिःस्थलं विलोक्यान्तर्दृष्ट्या निरतिशयं सुखं प्राप्नोति अद्वयता. २
तत्र (राधाकुण्डे)स्नात्वाराधाङ्गंभवति राधोप. २।१
तत्र ह कुरुपाञ्चालानां ब्राह्मणा अभिसमेता बभूवुः बृह. ३।१।१
तत्र हि रामस्य राममूर्तिः प्रद्युम्नस्य प्रद्युम्नमूर्तिः..वनेष्वेवं.. द्वादशमू- र्तयो भवन्ति गोपालो. १।१९
तत्राज्यस्य पर्णमयी जुहूर्भवति भस्मजा. १।२
तत्रादौ हरिसंस्काराः कर्तव्या मोक्षकांक्षिणाम् । अयमेव परोधर्मः प्रधानं सर्वकर्मणाम् भवसं. २।६७
तत्राधस्तनमेकंपादमविद्याशबलंभवति त्रि.म.ना.१।४
तत्रान्योऽन्यत्पश्येदन्योऽन्यज्जिघ्रेत् बृह. ४।३।३१
तत्रापरा तु विद्यैषा ऋग्वेदो यजु- रेव च ।..निरुक्तं छन्द एव च रुद्रहृ. २८
तत्रापश्यत् स्थितान् पार्थः भ. गी. १।२६
तत्रापश्यन्महामायां.. पर्यङ्कस्थां परिचरन्तीमादिदेवं... लक्ष्म्यु. २
तत्रापि दहं गगनं विशोकस्तस्मिन्स्य- दन्तस्तदुपासितव्यम् महाना. ८।१६
तत्रापि साध्यः पवनस्य नाशः षडङ्ग- योगादिनिषेवणेन अमन. २।२८
तत्राप्यविमुक्तमभ्यर्हितम् भस्मजा. २।८
तत्राश्रुबिन्दवो जाता महारुद्राक्ष- वृक्षकाः । स्थावरत्वमनुप्राप्य भक्तानुग्रहकारणात् रु. जा. उ. ३
तत्राष्टदलकेसरमध्ये मणिपीठे सप्तावरणकम् राधोप. १।४
तत्रास्य यथाकामचारो भवति छां. उ.७।१।५ [+७।२।२+—७।७।९।२
तत्राहमासीनः (शिवः रत्नवेदिकायां) ...तारकं शैवं मनुमुपदिशामि भस्मजा.२।१५
तत्रैकनाशादपरप्रवृत्तिर्विध्वस्तयोर्मोक्ष- पदस्य सिद्धिः अमन. २।२८
तत्रैकैकमात्मनो नवांशकं सचारकविधम् मैत्रा. ६।१४
तत्रैकस्थं जगत्कृत्स्नं भ. गी.११।१३
तत्रैकाग्रं मनः कृत्वा भ. गी. ६।१२
तत्रैतच्छुङ्गमुत्पतितं सोम्य विजानीहि छान्दो. ६।८।३
तत्रैतदेव शुङ्गमुत्पतितं सोम्य विजानीहि छान्दो. ६।८।५

तत्रैता देवता आवाह्य द्वादशावर-
णानि कुर्यात् सूर्यता. ५।१
तत्रैव मुक्त्यर्थमुपदिश्यते शैवोऽयं
मन्त्रः पञ्चाक्षरः भस्मजा.२।१५
तत्रैव श्वानो गर्दभा मार्जाराः कृमयश्च
मत एव, न श्वानगर्दभौ.. स्वसंवे. ३
तत्रैव सति कर्तारं भ.गी. १८।१६
तत्रैवाव्यक्तसंज्ञकम् भ. गी. ११।१८
तत्रोद्गातृनास्तावे वोष्यमाणानु-
पोपविवेश छान्दो.१।१०।८
तत्रोन्मदाभिः कान्ताभिर्भोजनैः-
र्भोगसञ्चयैः। जनको अल-
शामास शुकं.. महो. २।२५
(अथ) तत्रोमिति शब्दोऽनेनो-
र्ध्वमुत्क्रान्तोऽशब्दे निधनमेति मैत्रा. ६।२२
तत्सगुणनिर्गुणस्वरूपम्,
तद्वेत्ता विमुक्तः मं. ब्रा. २।१
तत्सङ्कल्पानुसारिणी विविधानन्त-
महामाया शक्तिसंसेवितानन्त-
महामाया... महाविष्णोः.. एतां
महामायां तरन्त्येव ये विष्णुमेव
भजन्ति, नान्ये तरन्ति त्रि.म.ना. ४।९
तत्सत्कुलप्रसूतः पितृमातृविधेयः
पितृसमीपादन्यत्र.. सद्गुरुमा-
साद्य.. विवाह्य...ततः.. वनस्थो
भूत्वा.. सन्न्यस्तुमर्हति ना. प. २।१
तत्सत्यमित्याचक्षते तैत्ति. २।६
(अत्र) तत्सत्यस्य परमं निधानम् मुण्ड. ३।१।६
तत्सत्यं तत्परं पदम् १यो.त. १३६
तत्सत्यं स आत्मा छान्दो.६।८।७
[+६।९।४–६।१६।३
तत्सत्यानृते मिथुनीकरोति।
तयोर्मिथुनात्प्रजायते,भूयान्भवति १ऐत. ३।६।६
तत्सत्त्वमेवेरितं तत्सत्त्वात्सम्प्रास्रवत् मैत्रा. ५।५
(ॐ) तत्सद्भूर्भुवः सुवस्तस्मै
प्रणात्मने नमोनमः गोपालो. २।२

तत् (शैवं व्रतं) समाचरेन्मुमु-
क्षुर्नपुनर्भवाय जाबाल्यु. ७
तत्समासेन मे शृणु भ.गी. १३।४
तत्सर्वगतो नहीदं सर्वम् (आत्मा) नृसिंहो. ५।१
तत्सदाऽऽसीत्तत्समभवत् तदाण्डं
निरवर्तत छान्दो.३।१९।१
तत्सर्वमित्याचक्षते (गाणेशं ब्रह्म) ग.शो. ३।१,१
तत्सर्वं भूतं भव्यं यत्किञ्चिद्दृश्य-
मानं स्थावरजङ्गमं तत्सर्वं कालि-
कातंत्रे ओतं प्रोतं वेद कालिको. ३
तत्सवितुरिति पूर्वेणाध्वना सूर्या-
धश्चंद्रिकां व्यालिख्य.. त्रि.ता. १।११
तत्सवितुर्वरेण्यमित्यसौ वा
आदित्यः सविता मैत्रा. ६।७
तत्सवितुर्वरेण्यमित्यादिद्वात्रिं-
शदक्षरीं पठित्वा तदिति
परमात्मा सदाशिवः.. त्रि.ता. १।१०
(ॐ) तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य
धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् महाना. ११।७
[त्रि.म.ना.७।११ +त्रि.ता.१।१
[ऋ.अ.३।४।१०=मं.३।६२।१० +वा.सं.३।३५
[+तै.सं.१।५।६।४+ साम. २।८१२
तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवः क्षीरं
सेचनीयम् त्रि. ता. १।१३
तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोऽस्याभिध्येयं मैत्रा. ६।३४
तत्सवितुर्वृणीमह इत्याचामति छान्दो. ५।२।७
मंत्रः– ऋ.अ. =मं.
[+एत. ब्रा.४।३०।३+ऐत.आ. १५।३।१
[तै.आ. १।११।३
तत्सशक्तिकं गजवक्त्रं गजाकारं
जगदेवावरुन्धे ग.शो. ३।३
तत्संवत्सरमात्रमुषित्वा द्विधाऽकरोत् सुबालो. १।२
तत्संवत्सरस्य मात्रामशयत, तन्निर-
भिद्यत, ते आण्डकपाले रजतं
सुवर्णं चाभवताम् छां.३।१९।१
तत् (मनः) संवत्सरं प्रोष्य पर्येत्यो-
वाच कथमशकतर्ते मज्जीवितु-
मिति छान्दो.५।१।११

तत् (चक्षुः) संवत्सरं प्रोष्य पर्येत्योवाच कथमशकततें मज्जीवितुमिति छान्दो. ५।१।९
तत् (चक्षुः, श्रोत्रं, मनः, रेतः) संवत्सरं प्रोष्यागत्योवाच कथमशकतमदृतेजीवितुमिति [बृह.६।१।९, १०,११,१२
तत् (भस्म) हैमे राजते ताम्रे मृण्मये वा पात्रे निधाय.. अभ्युक्ष्य..संस्थापयेत् भस्मजा. १।३
तत्सायं प्रातः प्रयुञ्जानो पापोऽपापो भवति [नारा.५+देव्यु.२६ महावा. ६
तत्साधने द्वयं मुख्यं सरस्वत्यास्तु चालनम् । प्राणरोधमथाभ्यासादृज्वी कुण्डलिनी भवेत् योगकुं. १।८
तत्सुखं राजसं स्मृतम् भ. गी.१८।३८
तत्सुखं सात्त्विकं प्रोक्तम् भ. गी.१८।३८
तत्सूत्रं विदितं येन स मुमुक्षुः स भिक्षुकः ।..स विप्रः पंक्तिपावनः परब्र. ९
तत्सूर्यो रश्मिभिर्वर्षति, तेनान्नं भवति,अन्नाद्भूतानामुत्पत्तिः मैत्रा. ६।३७
तत्सृष्ट्वा तदेवानुप्राविशत्। तदनुप्रविश्य सच्च त्यच्चाभवत् तैत्ति. २।६
तस्त्रिया आत्मभूयं गच्छति यथा स्वयमङ्गं तथा तस्मादेनां न हिनस्ति २ऐत. ४।२
तत्स्वयं योगसंसिद्धः भ. गी.४।३८
तत्स्वरूपज्ञानां वैदेही मुक्तिश्च भवति हयग्री. ६
तत्स्वरूपध्यानपरा मुनयश्चाकल्पान्ते तस्मिन्नेवात्मनि लीयन्ते अव्यक्तो. ९
तत्स्वरूपात्सृष्टिर्या समुत्पन्ना सा रसिकानन्देन सुसेव्यतां प्राप्ताऽऽसीत् सामर. ३
तथर्षीणां तथा मनुष्याणां तद्धैतत्पश्यन्नृषिर्वामदेवः प्रतिपेदे बृह. १।४।१०
तथाऽक्षरात्सम्भवतीह विश्वम् मुण्ड. १।१।७
तथा यज्ञेक्रियतेऽरण्येगेयंचाधीमहे संहितो. ३।२
तथा चरेत वै योगी सतां धर्ममदूषयन् । जना यथाऽवमन्येरन् गच्छेयुर्नैव सङ्गतिम् ना. प. ५।४२

तथा जन्म भवेत्तेषां पुत्राज्जन्म पितुर्यथा । अ. शां. १५
तथा जाग्रद्द्वयाभासं स्पन्दते मायया मनः अद्वैत. २९
तथा जीवा अमी सर्वे भवन्ति न भवन्ति च (स्वप्नवत्) अ. शां. ६८
तथा ज्ञातं च चैतन्यं फलमित्यभिधीयते कठरु. ४।४४
तथा तज्जाबालोऽब्रवीन्मनो वै ब्रह्मेत्यमनसो हि किꣳ स्यात् बृह. ४।१।६
तथा तत्प्रयोगकल्पः–प्राणायामः प्रत्याहारो ध्यानं धारणा तर्कः समाधिः षडङ्ग इत्युच्यते योगः मैत्रा. ६।१८
तथा तत्स्वामिन इव सर्वज्ञ ईशः पशुपतिः जाबाल्यु. ४
तथा तद्वार्ष्णोऽब्रवीच्चक्षुर्वै ब्रह्मेत्यपश्यतो हि किꣳ स्यात् बृह. ४।१।४
तथा तद्वृत्तिसम्बंधात्प्रमाणमिति कथ्यते कठरु. ४३
तथा तद्भारद्वाजोऽब्रवीच्छ्रोत्रं वै ब्रह्मेत्यशृण्वतो हि किꣳ स्यात् बृह. ४।१।५
तथा तवामी नरलोकवीराः भ.गी. ११।२८
तथा तेनेदमावृतम् भ.गी. ३।३८
तथाऽऽत्ममनसोरैक्यं समाधिरिति कथ्यते वराहो. २।७५
तथाऽऽत्मा नोपलिप्यते भ.गी. १३।३२
तथाऽऽत्मोपाधियोगेन तद्धर्मैर्नैव लिप्यते अध्यात्मो. ५२
तथा त्रैलोक्यवलितं ब्रह्मैकमिह दृश्यताम् महो. ५।५७
तथा देहादिसङ्घातं मोहगुणजालकलितं तद्रज्जुसर्पवत्कल्पितम् निर्वाणो. ३
तथा देहान्तरप्राप्तिः भ.गी. २।१३
तथा द्वादशभिर्वर्षैर्लयस्तस्य निरन्तरम्। व्योमवत्तस्य सिद्धिः स्याद्व्योमतत्त्वमयो भवेत् अमन. १।७८
तथा द्वादशमात्रस्तु प्राणायामो विधीयते योगो. २५

तथाऽऽनन्दमयश्चापि ब्रह्मणोऽन्येन साक्षिणा। सर्वान्तरेण पूर्णश्च ब्रह्म नान्येन केनचित्	कठरु. २४
तथा नस्त्वं तात जानीथा यथा यदहं किञ्च वेद	बृह. ६।२।४
तथा निरंशश्चिद्भावः सर्वगोऽपि न लक्ष्यते। ..सैषा चिदविनाशात्मा स्वात्मेत्यादिकृताभिधा	महो. ५।९९
तथाऽन्तर्ज्योतिरेव यः	भ.गी. ५।२४
तथापि त्वं महाबाहो	भ.गी. २।२६
तथापि दृढता नो चेद्विज्ञानस्य... द्वात्रिंशाख्योपनिषदं समभ्यस्य निवर्तय	मुक्तिको. १।२८
तथा पुरुषप्रयत्नसाध्यवेदान्तश्रवणादिजनितसमाधिना जीवन्मुक्त्यादिलाभो भवति	मुक्तिको. १।२
तथा पूयति वा अन्नमृते प्राणात्	बृह. ५।१२।१
तथाऽऽप्नोति निबोध मे	भ.गी. १८।५०
तथाप्यथर्वणं तेजसा प्रत्याप्याययेन्मंत्राश्च मामभिमुखीभवेयुर्गर्भा इव	२प्रणवो. ४
तथाप्यसिद्धं चेज्ज्ञानं दशोपनिषदंपठ	मुक्तिको.१।२७
तथाप्यानन्दभुक् चेतोमुखः सर्वगतोऽव्ययः। चतुरात्मेश्वरः प्राज्ञस्तृतीयः पादसंज्ञितः(आत्मनः)	ना. प. ५।७
तथा प्रत्यर्थिकृत्याभिमन्त्रयन्त्रादिकिल्बिषैः (मुच्यते)	सूर्यता. १।१४
तथा प्रलीनस्तमसि	भ.गी. १४।१५
तथाप्राणविपत्तौ तु क्षोभमायाति मारुतः। ततो दुःखशतैर्व्याप्तं चित्तं क्षुब्धं भवेन्नृणाम्	यो. शि. ३०
तथा ब्रह्माणमेव विष्णुमेव रुद्रमेव विभक्तांस्त्रीनेवाविभक्तांस्त्रीनेव लिङ्गरूपानेव च सम्पूज्योपचारैः.. चिन्तयन्प्रसेत्	नृसिंहो. ३।४
तथा भवत्यबुद्धानामात्माऽपि मलिनो मलैः	अद्वैत. ८
तथा भ्रान्तैर्द्विधा प्रोक्तो ह्यात्मा जीवेश्वरात्मना	जा. द. १०।४
तथा मनोमयोह्यात्मापूर्णोह्यानमयेनतु	कठरु. २३
तथा मानापमानयोः [भ.गी.६।७	+१२।१८
तथा यूयं (मुनयः) पञ्चपदं जपन्तः श्रीकृष्णं ध्यायन्तःसंसृतिंतरिष्यथ	गो.पू. ४।१६
तथाऽरसं नित्यमगन्धवच्च यत्। अनाद्यनन्तं महतः परं ध्रुवं निचाय्य तन्मृत्युमुखात्प्रमुच्यते	कठो. ३।१५
तथा लोकानकल्पयत् (गणेशः)	ग.शो.ता.३।११
तथा लोकाँऽअकल्पयन् [ऋ.अ.८।४।१९=मं.१०।९०।१४	चित्त्यु.१२।६+ वा.सं.३१।१३
तथा वायुं समारोप्य धारयेच्छिरसि स्थितम्। शिरोरोगा विनश्यंति..	जा. द. ६।३१
तथा विज्ञानवशतः स्वभावः सम्प्रसीदति	महो. ५।६६
तथा विद्वान्नामरूपाद्विमुक्तः परात्परां जगदम्बामुपैति	गुह्यका. ३८
तथा वृत्तिक्षयाच्चित्तं, स्वयोनावुपशाम्यति [मैत्रा.६।३४+	मैत्रे. १।८
तथा शुष्यति वै प्राण ऋतेऽन्नात्	बृह. ५।१२।१
तथा शरीराणि विहाय जीर्णानि	भ. गी. २।२२
तथा सर्वाणि कर्माणि योगी दग्ध्वा लयं व्रजेत्	क्षुरिको. २२
तथा सर्वाणि भूतानि	भ. गी. ९।६
तथा सूक्ष्ममनाकाशमसंस्पृश्यमचाक्षुषम्।.. आत्मानं सच्चिदानन्दमनन्तं ब्रह्म.. (ध्यायेत्)	जा. द. ९।४
तथाऽसौ त्यक्त्वा कुणपं न तत्तादृशं पुराप्राप्नुवन्ति (वह्निगतहविर्यजमानमिव)	भस्मजा. २।७
तथाऽहङ्कारसम्बन्धादेव संसार आत्मनः	वराहो. ३।२०
तथा ह निष्काम्याः सकाम्या भूगोपालचक्रेसप्तपुर्यो भवन्ति	गोपालो.२।१५
तथेतः प्रेत्य भवति स क्रतुं कुर्वीत	छान्दो.३।१४।१
तथेतित ँसमन्तं परिण्यविशन्त	बृह. १।३।१८
तथेति तेभ्य एव प्राण उदगायत्	बृह. १।३।७
तथेति तेभ्यश्चक्षुरुदगायत्, यश्चक्षुषि भोगस्तं देवेभ्य आगायत्, यत्कल्याणं पश्यति	बृह. १।३।४

तथेति तेभ्यः प्राण उदगायत् बृह. १।३।३

तथेति परमेष्ठी वक्तुमुपचक्रमे ॐ मिति ब्रह्मेति ना.प. ८।१

तथेति प्रत्यवोचद्भुसुण्डं वक्ष्यमाणं, किमिति बृ.जा. १।४

तथेति तेभ्यो मन उद्गायत्, यो मनसि भोगस्तं देवेभ्य आगायत् यत्कल्याणं सङ्कल्पयति बृह. १।३।६

तथेति तेभ्यो वागुदगायत्, यो वाचि भोगस्तं देवेभ्य आगाय-यत्कल्याणं वदति बृह. १।३।२

तथेति तेभ्यः श्रोत्रमुदगायत्, यः श्रोत्रे भोगस्तं देवेभ्य आगायद्यत्कल्याण ँ शृणोति बृह. १।३।५

तथेति समुपविविशुः स ह प्रवाहणो जैवलिरुवाच (मा. पा.) छां. उ. १।८।२

तथेन्द्रियकृता दोषा दह्यन्ते प्राण-धारणात् । प्राणायामैर्दहेद्दोषान् अ. पू. ७

तथैव च पितामहाः भ. गी. १।३४

तथैव ज्ञानकर्मभ्यां प्राप्यते ब्रह्म शाश्वतम् । भवसं. १।३३

तथैव नाशाय विशन्ति लोकाः भ.गी. ११।२९

तथैव निम्नगः सोमः शिवशक्तिपदा-स्पदः । शिवश्चोर्ध्वमयः शक्ति-रूर्ध्वशक्तिमयः शिवः । तदित्थं शिव शक्तिभ्यां नाव्याप्तमिह किञ्चन बृ.जा.२।९

तथैव ब्रह्मविच्छ्रेष्ठः सदा ब्रह्मैव नापरः २ आत्मो. २१

तथैव रसशक्तिश्च सोमात्मा चानला-त्मिका । वैद्युदादिमयं तेजो.. मधुरादिमयो रसः बृ.जा. २।३

तथैव रामबीजस्थं जगदेतच्चरा-चरम् । बीजोक्तमुभयार्थत्वं रामनामनि दृश्यते [रामर.५।११+ रा.पू.ता.२।३

तथैव विद्वान् रमते निर्ममो निरहं सुखी । कामान्निष्कामरूपी सञ्चरत्येकचरो मुनिः २ आत्मो. ११

तथैव (शनैः शनैः) सेवितो(वश्यः) वायुरन्यथा हन्ति साधकम् शांडि. १।७।६

तथैवात्मात्मशक्त्यैव स्वात्मन्येवेति लोलताम् । क्षणं स्फुरति सा देवी.. महो. ५।१२०

तथैवाद्वैतपरमानन्दलक्षणपर-ब्रह्मणो मम सर्वाद्वैतमुपपन्नं त्रि.म.ना. ८।१

तथैवान्नमये कोशे कोशास्तिष्ठन्ति चापरे । यथा कोशस्तथा जीवो यथा जीवस्तथा शिवः त्रि.ब्रा.२।१२

तथैवावशो भूयः स्पन्दते छाग. ६।१

तथैवोपाधिविलये ब्रह्मैव ब्रह्मवित्स्वयम् २आत्मो. २

तथैष देवः स्वप्न आनन्दमभियाति वेद एव ज्योतिः परब्र. २

तथो एवैवं विद्वान् सर्वेषां भूतानां प्राणमेव प्रत्यात्मानमभिसं-स्तूय सहैतैः सर्वैरस्माच्छरीरा-दुत्क्रामति कौ. उ. २।१४

तथो एवास्मै सर्वाणि भूतान्य-याचमानायैव बलिं हरन्ति कौ.उ. २।१२

तथो एवैवं विद्वान्सर्वान्पाप्म-नोऽपहत्य सर्वेषां भूतानां श्रैष्ठ्यं स्वाराज्यमाधिपत्यं पर्येति कौ.उ. ४।२०

तथो एवैवं विद्वान् सर्वेषां भूतानां श्रीमत्तमो यशस्वितमस्तेजस्वि-तमो भवति कौ.उ. २।६

तदक्षरं तत्सवितुर्वरेण्यं प्रज्ञा च तस्मा-त्प्रसूता पुराणी [श्वेता.४।१८+ गुह्यका.६१

तदक्षरे परमे व्योमन् महाना. १।२

तदग्निनैव देवेषु ब्रह्माऽभवद्ब्राह्मणो मनुष्येषु क्षत्रियेण क्षत्रियो वैश्येन वैश्यः शूद्रेण शूद्रः बृह. १।४।१५

तदग्रं ब्रह्म चोच्यते यो.चू. ८०

तदण्डमभूद्धैमं,तत्परिणममानमभूत्, ततः परमेष्ठी व्यजायत अव्यक्तो. १

तदण्डं समभवत्, तत्संवत्सरमात्र-मुषित्वा तद्विधाऽकरोत् सुबालो. १।२

तदतितरां सुशोभायमानं ब्रह्मेति पुराविदो वदन्ति सामर. ५५

तदतीता सप्तमी (योगभूमिका) वराहो. ४।१

तद्त्राविद्यया (भयं) मन्यतेऽथ यत्र देव इव राजेवाहमेवेद॰ सर्वोऽस्मीति मन्यते	बृह. ४।३।२०
तद्दितेरदितित्व॰ सर्वस्यैतस्यात्ता भवति	बृह. १।२।५
तदद्वितीयमखण्डार्थं परं ब्रह्म	बह्वृचो. ३
तदधश्चित्तसंयमादग्निलोकज्ञानम्	शांडि. १।७।५२
तदधिकारीनभवेद्यदि गृहस्थप्रार्थनापूर्वकं 'अभयं सर्वभूतेभ्यो' इत्यनेन मंत्रेण वस्त्रमेकं परिगृह्य...	प.हं.प. ६
तदधिष्ठानमात्मानं संज्वाल्य तत्तेज आत्मचैतन्यरूपं बलमवष्टभ्य मात्राभिरोतानुज्ञात्रनुज्ञाविकल्परूपं चिन्तयन् ग्रसेत्	नृसिंहो. ३।४
तदधीना विषयग्रहणबुद्धिः, बुद्ध्या बुद्ध्यति, चित्तेन चेतयत्यहङ्कारेणाहङ्कारीति	ना.प. ६। ४
तदधीनाः कर्मज्ञानवैराग्यप्रवर्तकाः पुरुषास्तदनुकूलाचाराः सन्ति	ना.प. ५।१
तदध्यात्मविद्यया लब्धं (मनःशौचं)	शांडि. १।१।३
तदनन्यत्तद्वेधाऽभूद्धरितमेकं, रक्तमपरम्। तत्र रक्तं यत्पुंसो रूपमभूत्, चरितं तन्मायायाः	अव्यक्तो. १
तदनभ्यर्च्य नाश्नीयात्फलमन्नमन्यद्वा	भस्मजा.२।१०
तदनुकृतिरसौ मानुषी वीणा भवति	२ऐत. २।५।२
तदनु च समतावशात्स्वरूपे परिणमनं महतामचिन्त्यरूपम्	अ.पू. १।५४
तदनु प्रविश्य सच त्यच्चाभवत्..	तैत्ति. २।६
तदनु विषयवासनाविनाशस्तदनु शुभः परमः स्फुटप्रकाशः	अ.पू. १।५४
तदनु सर्वशमप्रमेयमजं शिवं.. परं ब्रह्म आत्मन्येव पश्यमानो.. परं ब्रह्म प्राप्नोति	मं.ब्रा. ३।१
तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्य बाह्यतः	ईशा. ५
तदन्तरायोः पूषा वर्तते च पयस्विनी, सुषुम्ना पश्चिमे चारे	वराहो. ५।२५
तदन्तर्गतजीवात्मयः स्थूलशरीरैः सह विराडुच्यते	ग.शो.बा.४।५
तदपराजिता पूर्ब्रह्मणः प्रभुविमित॰ हिरण्मयम्	छान्दो.८।५।३
तदपश्यत्तदभवत् प्रजासु	महाना. २६
तदपाणिपादमचक्षुरश्रोत्रमजिह्वमशरीरमग्राह्यमनिर्देश्यम् (ब्रह्म)	शांडि. २।१।२
तदपानेनाजिघृक्षत् तदावयत्	२ऐत. ३।१०
तदपोऽसृजत तस्मात्तत्र क्व च शोचति स्वेदते वा पुरुषस्तेजस एव तद्ध्यापो जायन्ते	छान्दो. ६।२।३
तदभावे सत्यनन्तविरोधो विभाति	त्रि.म.ना.२।३
तदभिद्रुत्य पाप्मनाविध्यन्स यथाश्मानमृत्वा लोष्टो विध्व॰सेत	बृह. १।३।७
तदभिमृशेदनु वा मंत्रयेत 'यन्मेऽद्य रेतः पृथिवीमस्कान्त्सीद्यदोषधी...' (इति मंत्रेण)	बृह. ६।४।५
तदभिव्यक्तिचिह्नानि सिद्धिद्वाराणि मे शृणु..। दृश्यन्ते सूक्ष्मरूपेण सदा युक्तस्य योगिनः	यो.शि. २।१९
तदभेदेन मन्त्राम्रेडनं ज्ञानसाधनं	द. मू. १६
तदभ्यद्रवत्तस्मात्तिरोदधे (यक्षं)	केनो. ३।११
तदभ्यद्रवत्तमभ्यवदत् कोऽसीति	केनो. ३।४,८
तदभ्यन्तरसंस्थाने शुद्धबोधानन्दलक्षणं विभाति	त्रि.म.ना. ५।९
तदभ्यन्तरे अमिततेजोराशिस्तदुपरि ज्वलति, परममङ्गलासनं विराजते	त्रि.म.ना. ५।५
तदभ्यासादखण्डमण्डलाकारज्योतिः	मं. ब्रा. २।२
तदभ्यासान्मनःस्थैर्यं, ततोवायुस्थैर्यस्	मं. ब्रा. २।३
तदमलमरजं तदात्मतत्त्वं	अ.पू. ४।७२
तदमृतमभयमशोकमनन्तं निर्बीजमेवाप्येति	सुबा..९।१-१३
तदमृतमभयमेतद्ब्रह्मेति	छान्दो. ८।८।३
तदरश्च ह वै ण्यश्चार्णवौ ब्रह्मलोके..	छान्दो. ८।५।३
तदर्थं कर्म कौन्तेय	भ.गी. ३।९
तदलक्षणमग्राह्यं यद्ग्राह्यवह्यार्यमचिन्त्यं.. प्रपञ्चोपशमं शिवं शांतमद्वैतं चतुर्थं मन्यन्ते स ब्रह्मप्रणवः	ना.प. ८।२३
तदवस्था जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तितुरीयाः	वराहो. ४।१
तदविज्ञेयं तदव्यक्तम् (महातेजः)	अव्यक्तो. २

तदव्ययं तद्भूतयोनिं परि-
प्रश्यन्ति धीराः मुण्ड. १।१।६
तदव्ययीभूतमन्वर्थवाची शब्दो न
व्येति कदाचन २प्रणवो. १४
तदश्वत्थः सोमसवनः छान्दो. ८।५।३
तदस्ति (कर्तव्यं) चेन्न स
तत्त्वविद्भवति पैङ्गलो. ४।९
तदस्मै देवा अभिसन्नवन्तु चित्त्यु. ११।९
[अथर्व.१९।४१।१+तै.सं.५।४।७।३ तै.आ.३।११।९
तदस्य गर्भा अन्वायत्तास्तस्मात्ते
प्रतिहृता नावपद्यन्ते प्रतिहार-
भाजिनो ह्येतस्य साम्नः छान्दो. २।९।६
तदस्य देवा अन्वायत्तास्तस्मात्ते
सत्तमाः प्राजापत्यानामुद्गीथ-
भाजिनो ह्येतस्य साम्नः छान्दो. २।९।५
तदस्य पशवोऽन्वायत्तास्तस्मात्ते
हिंकुर्वन्ति हिंकारभाजिनो.. छान्दो. २।९।२
तदस्य पितरो अन्वायत्तास्तस्माता-
न्निदधाति निधनभाजिनो
ह्येतस्य साम्नः छान्दो.२।९।८
तदस्य प्रज्ञा स्रवति दृतेः पादा-
दिवोदकम्... ....
तदस्य प्रथमं जन्म (गर्भाधानम्) २ ऐत. ४।१
तदस्य मनुष्या अन्वायत्तास्तस्मात्ते
प्रस्तुतिकामाः प्रस्तावभाजिनो.. छांदो. २।९।३
तदस्य रुद्रा अन्वायत्ताः, प्राणा वाव
रुद्राः, एते हीद९ सर्व९ रोदयन्ति छांदो. ३।१६।३
तदस्य रूपं प्रतिचक्षणाय बृह. २।५।१९
तदस्य वयांस्यन्वायत्तानि तस्मात्ता-
न्यन्तरिक्षे ... आदिभाजीनि
ह्येतस्य साम्नः छान्दो. २।९।४
तदस्य वसवोऽन्वायत्ताः, प्राणा वाव
वसवः, एते हीद९ सर्वं ९
वासयन्ति छान्दो.३।१६।१
तदस्य हरति प्रज्ञां भ.गी. २।६७
तदस्यादित्या अन्वायत्ताः प्राणावाव
आदित्याः, एते हीद९सर्वमाददते छान्दो.३।१६।५
तदस्यामृतस्याशरीरस्यात्मनो-
ऽधिष्ठानम् छान्दो. ८।१२।१

तदस्यारण्या अन्वायत्तास्तस्मात्ते
पुरुषं दृष्ट्वा कक्ष९ श्वभ्रमित्यु-
पद्रवन्ति छान्दो. २।९।७
तदस्येदं वाचा तन्त्या नामभि-
र्दामभिः सर्वं सितम् १ऐत. १।६।१
तदहं भक्त्युपहृतं भ.गी. ९।२६
तदा गन्ताऽसि निर्वेदं भ.गी. २।५२
तदाचारवशात्तत्तल्लोकप्राप्तिः ना.प. ५।११
तदा जडान्यपि तानि चेतनवत्स्व-
कर्माणि चक्रिरे (हिरण्यगर्भः) पैङ्गलो. १।५
तदा (प्रलये) जीवाः सर्वे प्रकृतौ
प्रलीयन्ते त्रि. म.ना.३।४
तदाज्यभागावन्तरेणाहुतीः प्रति-
पादयेच्छ्रद्धया हुतम् मुण्ड. १।२।२
तदाज्ञया समष्टथण्डं व्याप्य
तान्यतिष्ठन् पैङ्गलो. १।५
तदाज्ञयाऽहङ्कारसमन्वितो विराट्
स्थूलान्यरक्षत् पैङ्गलो. १।५
तदाण्डं निरवर्तत, तत्संवत्सरस्य
मात्रामशयीत छान्दो. ३।१९।१
तदा(अमनस्केजाते) तत्परमं पदम् मैत्रा. ६।३४।७
तदाऽऽत्मनाऽऽत्मानं दृष्ट्वा
निरात्मा भवति मैत्रा.६।२०
तदात्मनि निरते य उपनिषत्सु
धर्मास्ते मयि सन्तु केनो.शांतिः
तदात्मानमेवावेदहं ब्रह्मास्मीति बृ. उ.१।४।१०
तदात्मानं सृजाम्यहम् भ.गी.४।७
तदात्मानं स्वयमसृजत तैत्ति. २।७
तदात्मान९ स्वयमकुरुत तस्मात्त-
त्सुकृतमुच्यते तैत्ति. २।७
तदा दृष्टिविशेषाश्च त्रिविधान्या-
सनानि च । अन्तःकरणभावश्च
योगिनो नोपयोगिनः अमन. २।३६
तदा देवमविज्ञाय दुःखस्यान्तो
भविष्यति (यदा चर्मवदाकाशं
वेष्टयिष्यन्ति मानवाः) श्वेता.६।२०
तदा न स्मरति जन्ममरणानि, नच
कर्म शुभाशुभं विन्दति गर्भो. १०

तदानीमात्मगोचरा वृत्तयः
समुत्थिता अज्ञाता भवन्ति पैङ्गलो. ३३
तदा पश्चिमाभिमुखप्रकाशः स्फटिक-
धूम्र.. प्रभा दृश्यन्ते मं ब्रा. २।४
तदाग्निर्नैव जायेत कामिन्यालिङ्गि-
तस्य च अमन. १।४२
तदा प्रभामनोबुद्धिशून्यं भवति पैङ्गलो. ४।९
तदा योगमवाप्स्यसि भ. गी. २।५३
तदा विद्वान्पुण्यपापे विहाय परे-
ऽव्यये सर्वमेकीकरोति मैत्रा. ६।१८
तदा सद्गुरुमाश्रित्य चिरकालसेवया
बन्धं मोक्षं कश्चित्प्रयाति पैङ्गलो. २।९
तदासां पाप्मनो विन्यदधात् बृह. १।३।१०
तदाऽसौ परमाकाशरूपो देहव-
तिष्ठति ।.. मरणं नास्ति तस्य वै यो. शि. १।५७
तदाऽस्य सन्मुखे तत्त्वममनस्कं
प्रकाशते । अमनस्के च सञ्जाते
चित्तादिविलयो भवेत् अमन. १।१९
तदाहुरुदक्रमीच्चित्तं, न शृणोति,
न पश्यति, न वाचा वदति कौ. उ. ३।३
तदाहुर्यदनेन रूपेणामुं लोकमभि-
सम्भवती ३ँ १ ऐत. ३।७।२
तदाहुर्यदयमेक इवैव पवतेऽथ
कथमध्यर्ध इति बृह. ३।९।
तदाहुर्निशोचति निपतति
वर्धिष्यति वा छान्दो.७।११।१
तदाहुर्यद्ब्रह्मविद्यया सर्वं भविष्यन्तो
मनुष्या मन्यन्ते बृह. १।४।९
(ॐ) तदाहुः किं तदासीत्तस्मैसहोवाच सुबालो. १।१
तदिच्छाधि यो असि सर्ववित्तगो न
त्वाभवद्ब्रह्मरिषा(रुषा)मयस्त्रि बा. मं. ३
तदितर इतरमभिवदति बृह. ४।५।१५
तदितर इतरं जानाति बृह. २।४।१४
तदितर इतरं जिघ्रति बृह.२।४।१४
तदितर इतरं पश्यति बृह.२।४।१४
तदितर इतरं मनुते [बृह.२।४।१४+ ४।५।१५
तदितर इतर ँ रसयते बृह. ४।५।१५
तदितर इतर ँ विजानाति बृह. ४।५।१५
तदितर इतर ँ शृणोति[बृ.उ.२।४।१४ +४।५।१५
तदितर इतर ँ स्पृशति बृह. ४।५।१५
तदिति तदसौ तेजोमयं तेजोऽग्निर्देवता गायत्रीर. २
तदिति परमात्मा सदाशिवोऽक्षरं
विमलं.. हकाराक्षरं शिवरूपं
निरक्षरमक्षरं व्यालिख्यतइति त्रि. ता. १।१०
†तदिति वा एतस्य महतो
भूतस्य नाम भवति ....
तदिति सोऽथर्ववेदः सन्ध्यो. २०
तदित्थं शिवशक्तिभ्यां नाव्याप्तमिह
किञ्चन बृ. जा. २।१०
तदित्यनभिसन्धाय भ.गी. १७।२५
तदिदमत्र मनः श्लेष्मरेतसः सम्भवति निरुक्तो. १।१
तदिदमन्तरिक्षं प्रजापतेर्द्वितीयाचितिः मैत्रा.६।३३
तदिदमन्तिके दवीयो नेदीय इव
दूरतोनवा अस्यमहिमानं कश्चित्.. आर्षे. ५।४
तदिदमन्नमन्नादमियमेव १ऐत. १।२।७
तदिदमप्येतर्हि नामरूपाभ्यामेव
व्याक्रियते बृह. १।४।७
तदिदमप्येतर्ँ तन्नामरूपाभ्यामेव
व्याक्रियते (पा.) बृ.उ. १।४।७
तदिदमप्येतर्हि य एवं वेदाहं ब्रह्मा-
स्मीति, स इदं सर्वं भवति बृह. १।४।१०
तदिदमस्य सकलनिष्कलं रूपम् शांडि. ३।१।२
तदिदमाप एवेदं वै मूलम् १ऐत. १।८।१
तदिदं ॐ सत्यम् सदानं. १६
तदिदं कर्मकृतमयं पुरुषो ब्रह्मलोकः १ऐत. १।३।१
तदिदं पुरं पुण्डरीकं विज्ञानघनं
तस्मात्तडिदाभमात्रम् नारा. ४
तदिदं लिङ्गं ब्रह्म, तदिदंॐ सत्यम् सदानं. १६
तदिदं योनौ रेतः सिक्तं पुरुषः
संभवति निरुक्तो. २
तदिदं सर्वमाप्नोति, य एवं वेद बृह. १।४।१७
तदिमे मूढा उपजीवन्त्यभिष्वङ्गिणः मैत्रा. ७।१०

† इयं श्रुतिः श्रीमद्भगवद्गीताया नैलकण्ठीयटीकायां ब्रह्मानन्दगिर्याख्याने व्याख्याने वाक्यमीयतत्त्वदीपिकायां च दृश्यते, न स्वसमस्तसंग्रहीतोपनिषत्स्वस्ति ।

तदीक्षणाय स्वाध्यायश्चक्षुर्योग-
स्तथाऽपरः। न मांसचक्षुषा
(द्रष्टुं) दृष्टं.. ब्रह्मभूतः स
शक्येत (?) भवसं. ३।७
तदुक्तमृषिणा—गर्भे नु सन्नन्वेषाम
वेदमहं देवानां जानिमानि विश्वा।..
शतं मा पुरआयतीः...[२ऐत.४।५ ऋ.अ.३।६।१६
[=मं.४।२७।१+ ऐ. आ. २।५।१।१४
तदु तथा न कुर्यादाग्नेयीमेव कुर्यात् जाबा. ४
तदुतापि यत्रैतद्वूलवदनुगृह्णन् सन्द-
ग्धद् अहोरात्रे वर्षति ३ऐत. १।२।१
तदुताप्याहुः साग्निनमुपागादित्यसा-
धुनैतमुपागादित्येव तदाहुः छान्दो. २।१।२
तदुनात्येतिकश्चन, एतद्वैतत् [कठो.४।९ +८५+६।१
तदुपप्रेयाय सर्वजवेन (अग्निः)
तन्न शशाक दग्धुम् (तृणम्) केनो. ३।६
तदुपप्रेयाय सर्वजवेन, तन्न शशाका-
दातुं(वायुः, तृणम्) केनो. ३।१०
तदुपरि कृष्णस्य स्थानं गोकुलाख्यं
माथुरमंडलं महत्पदम् राधोप. १।३
तदुपरि ज्वलति निरतिशयानन्दतेजो-
राशिः त्रि.म.ना. ५।६
तदुपरि सुदर्शनचक्रं त्रिकोटियोजन-
विस्तीर्णम् राधोप. १।३
तदुपायं (ब्रह्मदर्शने) लक्ष्यत्रयाव-
लोकनम् मं. ब्रा. १।२
तदुभयविलक्षणो नारायणः
(कार्यकारणभिन्नः) त्रि.म.ना.२।८
तदु सर्वस्य बाह्यतः—(मा. पा.) ईशा. ५
तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः ईशा. ५
तदु ह जमदग्निर्नानुमेने आर्तमिव
वा एष तन्मेने आर्षे. २।१
तदु ह जानश्रुतिः पौत्रायणः षट्
शतानि गवां निष्कमश्वतरीरथं
तदादाय प्रतिचक्रमे छान्दो. ४।२।१
तदु ह न मेने गौतमो यदिदमार्तमिव आर्षे. ६।१
तदु ह पुनरेव जानश्रुतिः पौत्रायणः
सहस्रं गवां.. दुहितरं तदादाय
प्रतिचक्रमे छान्दो. ४।२।३

तदु ह बालाकिर्न विजज्ञौ कौ.उ. ४।१८
तदु ह भारद्वाजो नानुमेने यदि ह
सर्वेत्थेत्थेति आर्षे. ४।१
तदु ह वा एते ब्रह्मवादिनः पूर्वाभि-
मुखाः सन्ध्यायां गायत्रियाभि-
मंत्रिता आप ऊर्ध्वं क्षिपन्ति सहवै. २
तदु ह वसिष्ठो नानुमेने, यदिमा
विस्फूर्जयत एवाभिपद्यन्ते
वीवयन्ति मिथुनं चेति.. आर्षे. ७।१
तदूर्ध्वममन्त्रवदाचरन् क्षौराभ्यङ्ग-
स्नानोर्ध्वपुण्ड्रादिकं विहाय..
देहत्यागं करोति यः सोऽवधूतः तुरीया. ३
तदूर्ध्वमुदसर्पत् ता ऊरू अभवताम् १ऐत. १।४।१
तदेकमजरममृतमभयमोमित्यनुभूय
तस्मिन्निदं सर्वं त्रिशरीरमारोप्य
तन्मयं हि..तदेवेति संहरेदोमिति नृसिंहो. १।२
तदेकममृतमजरमनुभूय तथोमिति ना. प. ८।७
तदेकं वद निश्चित्य भ.गी. ३।२
तदेके प्राजापत्यामेवेष्टिं कुर्वन्ति याज्ञव. १
तदेजति तन्नेजति (मां. पा.) ईशा. ५
तदेजति तन्नैजति तद्दूरे तद्वन्तिके ईशा. ५
तदेतच्चतुष्पाद्ब्रह्म वाक्पादः, प्राणः
पादश्चक्षुः पादः, श्रोत्रं पाद इत्य-
ध्यात्मम् छान्दो.३।१८।२
तदेतच्छ्रीश्च यशश्चेत्युपासीत, श्रीमान्
यशस्वी भवति, य एवं वेद छांदो. ३।१३।२
तदेतच्छ्लोकेऽप्युक्तम् कौ. उ. १।६
तदेतज्जडं मोहात्मकमनन्तमिदं
रूपमस्यास्य व्यञ्जिका नित्य-
निवृत्ताऽपि मूढैरात्मेव दृष्टास्य
सत्त्वमसत्त्वं च दर्शयति नृसिंहो. ९।२
तदेतत्कथितं बीजमविद्याया मया
तव। क्लेशानां च क्षयकरं
योगादन्यत्र विद्यते भवसं. ३।११
तदेतत्कामरूपाख्यं पीठं... यो.शि. ५।८
तदेतत्कीर्तिश्च व्युष्टिश्चेत्युपासीत।
कीर्तिमान्व्युष्टिमान् भवति छांदो. ३।१३।४

तदेतत्कौरुण्डेर्वचनं वेदयन्ते... स गाथादर्शी भवति संहितो. ३।९
तदेतत्तेजोऽन्नाद्यमित्युपासीत, तेजस्व्यन्नादो भवति,य एवं वेद छांदो.३।१३।१
तदेतत्त्रय ँ शिक्षेद्दमं दानं दयामिति बृह. ५।२।३
तदेतत्त्रय ँ सदेकमयमात्मात्मैकः(मा.) बृह. १।६।३
तदेतत्त्रय ँ सदेकमयमात्मो एकः बृह. १।६।३
तदेतदक्षरं जैत्रमभित्वरम् शौनको. १।५
तदेतत्त्रिवृत्त्रिवृदिव वै चक्षुः शुक्लं कृष्णं कनीनिकेति १ ऐत.१।५।३
तदेतत् त्र्यक्षरं सत्यमिति, सइत्येकमक्षरं तीत्येकमक्षरं, यमित्येकमक्षरम् बृह. ५।५।१
तदेतत् त्र्यक्षरं हृदयमिति,हृइत्येकमक्षरमभिहरन्त्यस्मै स्वाश्चान्ये च बृह. ५।३।१
तदेतत्पञ्चविधं मितममितं स्वरः सत्यानृते इति १ ऐत. ३।६।४
तदेतत्पण्डिता एव पश्यन्ति (ब्रह्म) नृसिंहो. ९।९
तदेतत्पदनीयमस्य सर्वस्य यदयमात्मा, अनेन ह्येतत्सर्वं वेद बृह. १।४।७
तदेतत्पुष्पं फलं वाचो यत्सत्यम् १ ऐत. ३।६।४
तदेतत्पूर्णमप्रवर्ति पूर्णामप्रवर्तिनी ँ श्रिय ँ लभते, य एवं वेद छान्दो.३।१२।९
तदेतत्प्रेयः पुत्रात्प्रेयो वित्तात्प्रेयोऽन्यस्मात् सर्वस्मादन्तरतरं यदयमात्मा बृह. १।४।८
तदेतत्सत्यमात्मा ब्रह्मैव, ब्रह्मात्मैव.. नृसिंहो. ९।९
तदेतत्सत्यमृषिरङ्गिराः पुरोवाच मुण्ड. ३।२।११
तदेतत्सत्यं तदमृतं तद्वेद्धव्यम्.. मुण्ड. २।२।२
तदेतत्सत्यं मन्त्रेषु कर्माणि कवयो यान्यपश्यन्, तानि त्रेतायां बहुधा सन्ततानि मुण्ड. १।२।१
तदेतत्सत्यं यथा सुदीप्तात्पावकाद्विस्फुलिङ्गाः..प्रभवन्ते .. । तथाऽक्षराद्विविधाः.. भावाः प्रजायन्ते तत्र चैवापियन्ति मुण्ड. २।१।१
तदेतत्सहस्रं तत्सर्वं तानि.. १ऐत. ३।४।३
तदेतत्सुदर्शनं महाचक्रं बालो वा युवा वा वेद स महान् भवति नृ.पू. ५।८
तदेतत्सृष्टं पराङत्यजिघांसत् १ऐत. ३।३

तदेतदक्षरं परं ब्रह्म (गणेशः) ग.पू.. १।३
तदेतदक्षरं ब्रह्मणो यं काममिच्छेत् २प्रणवो. ६
तदेतदक्षरं ब्रह्म स प्राणस्तदु वाङ्मनः मुण्ड. २।२।२
तदेतदक्षरं वेदयते यस्तु सोम्य... प्रश्नो. ४।११
तदेतदक्षरं सत्यं तद्विज्ञाय विमुच्यते रुद्रहृ. ३४
तदेतदद्वयं स्वप्रकाशं महानन्दमात्मैव नृसिंहो. ८।७
तदेतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितम्, स य एतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितं वेद प्रतितिष्ठति तैत्ति.३।७+३।८
तदेतदभयममृतमानन्दमाध्यात्मिकम् गान्धर्वो. ५।९
तदेतदमृतमुभयतः सत्येन परिगृहीत ँ सत्यभूयमेव भवति बृह. ५।५।१
तदेतदमृत ँ सत्यं तद्बोद्धव्यं मुमुक्षुभिः रुद्रहृ. ३७
तदेतदमृत ँ सत्येन छन्नम्, प्राणो वा अमृतम्, नामरूपे सत्यम्, ताभ्यामयं प्राणश्छन्नः बृह. १।६।३
तदेतदविद्वानेवास्मिन्नन्वायत्तमुपास्ते... आर्षे. २।३
तदेतदिति मन्यन्तेऽनिर्देश्यं परमं सुखम् । कथं नु तद्विजानीयां.. कठो. ५।१४
तदेतदुक्थं प्राण एव १ ऐत. १।४।६
तदेतदुपनिषदां रहस्यम् सङ्कर्षणो. ३
तदेतदूर्ध्वाभिश्च तिरश्चीभिश्च विद्युद्भिराह्लादाश्चरन्ति छान्दो.७।११।१
तदेतदृषिणोक्तं निदर्शनं स ई पाहि य ऋजीषीत रुद्रः.. [नृ.पू. ३।२ +ग.पू.२।३
तदेतदृषिः पश्यन्नवोचत् [बृह.२।५।१६, १७,१८,१९
तदेतदेवाक्षरं ज्ञात्वाऽष्टौ प्रकृतयः षोडश विकाराः शरीरे तस्यैव देहिनः गर्भो. ३
तदेतदेतस्यामृच्यध्यूढं साम छान्दो. १।६।१
तदेतदेवैषा दैवी वागनुवदति स्तनयित्नुर्द द द इति बृ. उ. ५।२।३
तदेतदोजश्च महश्चेत्युपासीत छान्दो. ३।१३।५
तदेतद्दिवाधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति सङ्कर्षणो. ३
तदेतद्दृष्टं श्रुतं चेत्युपासीत छान्दो. ३।१३।८
तदेतद्रक्षोघ्नं मृत्युतारकं गुरुणा लब्धं कण्ठे बाहौ शिखायां बध्नीत नृ.पू.५।८

तदेतद्वटुकं पशुपाशविमोक्षणाय बटुको. २४
तदेतद्विज्ञाय ब्राह्मणः परिव्रज्य.. तद्ब्रह्माहमस्मीति ब्रह्मप्रणवमनुस्मरन्...सन्न्यासेनैव देहत्यागं करोति ना.प. ३।८६
तदेतद्वेदानां रहस्यम् सङ्कर्षणो. ३
तदेतद्ब्रह्मघ्नस्य विष्टपं, यदेतन्नासिकायै विततमिव १ऐत. १।२।५
तदेतद्ब्रह्मापूर्वमनपरमनन्तरमबाह्यम् बृह.२।५।१९
तदेतद्ब्रह्म क्षत्रंविट्शूद्रः बृह. १।४।१५
तदेतद्ब्रह्मवर्चसमन्नाद्यमित्युपासीत छांदो.३।१३।३
तदेतन्मर्त्यं यदयमात्मा प्रधिर्वित्तं बृह. १।५।१५
तदेतन्नाश्रद्दधानाय प्रब्रूयात् नृ.षट्. ८
तदेतन्निदर्शनम्—हंसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसत् [ऋ.मं.४।४०।५ ग.पू.ता.२।८,९
तदेतन्निदर्शनं भवति—एको देवः प्रापको यो वसूनां.. ग.पू.ता.१।६
तदेतन्माया हंसमयी देवानाम् ग.पू.ता. २।९
तदेतन्मिथुनमोमित्येतस्मिन्नक्षरे स ँसृज्यते छांदो. १।१।६
तदेतन्मूर्तं यदन्यद्वायोश्चान्तरिक्षाच्च तन्मर्त्यम् बृह.२।३।२
तदेतया वाचाऽभिव्याह्रियते सत्यमिति कौ.उ. १।६
तदेतेनात्मन्नेतेनार्धचतुर्थेन मात्रेण शान्तिं स ँसृजन्ति अ.शिरः.३।१०
तदेव कृतकृत्यत्वं प्रति योगिपुरस्सरम् । अनुसंदधदेवायमेवं तृप्यति नित्यशः १अवधू. १०
तदेव च मध्याकारोऽङ्गुलादन्यूनः कात्याय.१
तदेव चित्तं निराश्रयं मनोन्मन्यवस्थापरिपक्वं लययोग्यं भवति मं.ब्रा. ५।१
तदेव चिद्घनं, तदेवानन्दघनम् त्रि.म.ना.७।८
तदेव तत्सर्वं निरुह्य प्रत्यूह्य सम्पीड्य सुकज्वाल्य संभक्ष्य स्वात्मानमेवैषा ददाति सू. उ.७।६
तदेव तारकं ब्रह्म त्वं विद्धि तारसा. २।१ [रामो.ता.१।२+
तदेव त्रिपाद्विभूतिवैकुण्ठस्थानं तदेव परमकैवल्यम् त्रि.म.ना.७।८
तदेव निर्भयं ब्रह्म ज्ञानलोकं समन्ततः अद्वैत. ३५
तदेव निष्कलं ब्रह्म निर्विकल्पंनिरञ्जनम् । तद्ब्रह्माहमिति ज्ञात्वा ब्रह्म संपद्यते ध्रुवम् [त्रि. ता. ५।८ ब्र. बिं. ८
तदेव परमकैवल्यं.. तदेव सद्घनं त्रि. म.ना.७।८
तदेव परमयोगिभिर्मुमुक्षुभिः सर्वैराशास्यमानम् (ब्रह्म) त्रि.म.ना. ७।८
तदेव प्रणवस्वरूपम् मं. ब्रा. २।४
तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते केनो. १।५-९
तदेव ब्रह्म परमं कवीनां महाना. १।६
तदेव ब्रह्म परमं विशुद्धं कथ्यते त्रि. म.ना.४।३
तदेव भूतं तदु भव्यमा इदं तदक्षरे परमे व्योमन् महाना. १।२
तदेव मन्त्रतारकब्रह्म त्वं विद्धि श्री. वि.ता.१।२
तदेव मम परमं धाम, तदेव शिखा तदेवोपवीतं च प. हं. प. ३
तदेव मे दर्शय देवं रूपम् भ. गी.११।४५
तदेव मे ब्रह्म आर्षे. ५।२
तदेव मे रूपमिदं प्रपश्य भ. गी.११।४९
तदेव रूपं द्विधा विधाय समाराधनतत्परोऽभूत् सामर. ५
तदेवर्तं तदुसत्यमाहुः..[महाना.१।६ + त्रि. म.ना.४।३
तदेव वह्निकुण्डाख्यं तत्त्वकुण्डलिनी तथा योगरा. ६
तदेव शाम्भवीलक्षणम् मं. ब्रा. २।२
तदेव शिष्यत्यमलं निरामयं योगकुं. ३।३५
तदेव शुक्रममृतं तद्ब्रह्म तदापः स प्रजापतिः महाना. १।७
तदेव शुक्रं तद्ब्रह्म तदेवामृतमुच्यते कठो.५।८+६।१
तदेव शुक्रं तद्ब्रह्म तदापस्तत्प्रजापतिः श्वेताश्व. ४।२
तदेव शुद्धबोधघनविशेषम् (ब्रह्म) त्रि. म.ना.७।८
तदेव सक्तः सह कर्मणैति लिङ्गं मनो यत्र निषक्तमस्य । प्राप्यान्तं कर्मणस्तस्य यत्किञ्चेह करोत्ययम् बृह. ४।४।६
तदेव सच्चिदानन्दं ब्रह्म भवति मं. ब्रा. २।२
तदेव सत्यं तदेव ब्रह्म परमं विशुद्धं त्रि.म.ना. ४।३

तदेव सदाशिव एव निष्कलमष
  आद्यो देवोऽन्त्यमक्षरं व्याक्रियते त्रि.ता. १।१३
तदेव सद्धनम्, तदेव चिद्धनम् त्रि.म.ना. ७।८
तदेव स्थूलशरीरम् (अन्नमयकोशः) पैङ्गलो. २।५
तदेव(रुद्रसूक्ताभिषिक्तस्य)स्तपनपयः
  पीत्वा महापातकेभ्यो मुच्यते भस्मजा.२।१०
तदेवं ज्ञात्वा स्वरूपानुसन्धानं
  विनाऽन्यथाचारपरो न भवेत् ना. प. ५।११
तदेवं विद्वांस इहैवामृता भवन्ति शाट्याय. १८
तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद्वायुस्तदु
  चन्द्रमाः। तदेवं शुक्रं तद्ब्रह्म श्वेता. ४।२
तदेवाकाशपीठं स्पार्शनं पीठं तेजः-
  पीठममृतपीठं रत्नपीठं जानीयात् त्रि. ता. ५।२१
तदेवाग्निस्तद्वायुस्तत्सूर्यस्तदुचन्द्रमाः।
  तदेव शुक्रममृतं तद्ब्रह्म.. महाना. १।७
तदेवाग्निस्तमसो ज्योतिरेकं तन्मे
  मनः शिवसङ्कल्पमस्तु २ शिवसं. १०
तदेवानन्तोपनिषद्विमृग्यम् त्रि.म.ना. ७।८
तदेवाथः शिवशक्त्याख्यमन्यत्तृतीयं
  चेयं चान्द्री विद्या त्रि. ता. १।१६
तदेवानन्दघनम् त्रि.म.ना.७।८
तदेवानुप्राविशत्, तदनु प्रविश्य
  सच्च त्यच्चाभवत् तैत्ति. २।६
तदेवाबाधितपरमतत्त्वम् त्रि.म.ना. ७।८
तदेवाभयमत्यन्तकल्याणं परमामृतं
  सद्रूपं परमं ब्रह्म.. कठरु. ३०
तदेवामृतमुच्यते [कठो.५।८ +६।१
तदेवार्कस्यार्कत्वं, कँ ह वा
  अस्मै भवति बृह. १।२।१
तदेवाश्वमेधस्याश्वमेधत्वम् बृह. १।२।७
तदेवाहं तदेवाहं ब्रह्मैवाहं सना-
  तनम्। ब्रह्मैवाहं न संसारी.. ते. बिं. ६।३१
तदेवाहं सदानन्दं ब्रह्मैवाहं सनातनम् ते. बिं. ३।३२
तदेवोपासितव्यम् (परं ब्रह्म) तारसा. २।१
तदेवोपासितव्यं विज्ञेयं गर्भादि-
  तारणम् दत्तात्रे. १।१
तदेष श्लोको न पश्यो मृत्युं
  पश्यति, न रोगं नोत दुःखताम् छान्दो.७।२६।२

तदेषाऽभ्यनूक्ता—कामस्तदग्रे सम-
  वर्तताधि मनसो रेतः प्रथमं
  यदासीत् [बृ.जा. १।२+ नृ.पू. १,१
  [ऋ.अ.८।७।१७+ =मं.१०।१२९।४
  [अथर्व. १९।५२।१+ तै.ब्रा.२।२।१
तदेषाभ्युक्ता सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म तैत्ति. २।१।१
तदेषां प्राणानां विज्ञानेन विज्ञान-
  मादाय य एषोन्तर्हृदय आकाश-
  स्तस्मिञ्छेते बृह. २।१।१७
तदैक्षत बहु स्यां प्रजायेय छान्दो. ६।२।३
(अथ) तदैतस्मिञ्छरीरे एत-
  त्सुखं भवति प्रश्नो. ४।६
तदैतूपमामभि। परं मृत्यो अनु-
  परेहि पंथाम् [ऋ.अ.७।६।२६+ =मं.१०।१८।१
  [चित्यु. १५।२+ वा. सं. ३५।७
  [तै. आ. ३।१५।२+ अथर्व.१२।२।२१
तदैनं वाक्सर्वैर्नामभिः सहाप्येति कौ.उ.३।३;४।१९
तदैरं मदीयं सरस्तदश्वत्थः सोम-
  सवनस्तदपराजिता पूर्ब्रह्मणः छान्दो. ८।५।३
तदैव कापालकं सन्धाय य एष
  स्तन इवावलम्बते सेन्द्रयोनिः
  स वेदयोनिः परब्र. २
तदोत्तमविदां लोकान् भ.गी. १४।१४
तद्गणेशः, सद्गणेशः, परं गणेशः ग.शो.ता. २।२
तद्गृहीत एव प्राणो भवति,
  गृहीता वाक् बृह. २।१।१७
तद्रोमयेन भक्षितं जातम् बृ.जा. १।५
तद्रोमयेन रक्षा जाता बृ.जा. १।६
तद्रोमयेन विभूतिर्जाता बृ.जा. १।५
तद्दर्शनं सदाचारमूलम् अद्वयता. ७
तद्दर्शनात्सर्वपापनिवृत्तिः मं.ब्रा. १।२
तद्दर्शने (ब्रह्मतेजसः) तिस्रो मूर्तयः,
  अमा प्रतिपत्पूर्णिमा च मं.ब्रा. २।२
तद्दर्शनेन (परमहंसस्य) सकलं
  जगत्पवित्रं भवति मं.ब्रा. ५।२
तद्दर्शी (तारकदर्शी) विमुक्तफल-
  स्ताद्दग्व्योमसमानो भवति अद्वयता. ४
तद्दानं राजसं स्मृतम् भ.गी. १७।२१

तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम् भ.गी. १७।२०
तद्वाग्भूतं शिश्येऽथ तद्वाक्प्रविवेश
तद्वाचाऽवदत् कौ.उ. २।१४
तद्दूरे तद्वन्तिके। तदन्तस्य सर्वस्य.. ईशा. ५
तद्दृष्टिः स्थिरा भवति (खज्योति-
दर्शनात्) मं.ब्रा. १।३
तद्दृष्ट्वा सर्वे लोकाः पवित्रा भवन्ति अद्वयता. ७
तद्देवा ज्योतिषां ज्योतिरायुर्हो-
पासतेऽमृतम् बृह. ४।४।१६
(तस्मात्) तद्देवानां व्रतमाचर-
न्नोङ्कारे परे ब्रह्मणि पर्यवसितो
भवेत् नृसिंहो. ६।३
तद्देवाः प्राणे निःश्रेयसं विचिन्त्य
प्राणमेव प्रज्ञात्मानमभिसंस्तूय
सहैतैः सर्वैरस्माल्लोकादुच्चक्रमुः कौ.उ. २।१४
तद्देवं तन्मन्त्रात्तनुते, तन्नो दैवं गुरुः रुद्रोप. ३
तद्ध तथा चकार तच्छश्वत्संवर्तते छान्दो.६।१३।२
तद्ध तद्वनं नाम तद्वनमित्युपासितव्यम् केनो. ४।६
तद्ध देवा उद्गीथमजह्रुरनेनैनानभि-
भविष्याम इति छान्दो. १।२।१
तद्ध बको दाल्भ्यो ग्लावो वा मैत्रेयः
स्वाध्यायमुद्वव्राज छां.उ. १।१२।३
तद्ध स्म वै तद्विद्वान् वसिष्ठो
वसिष्ठो बभूव १ऐत. २।४।१
तद्ध स्माह-प्रातृदः पितरं किंस्विदे-
वैवं विदुषे साधु कुर्यां किमे-
वास्मा असाधु कुर्यामिति बृ.उ. ५।१२।१
तद्धापि ब्रह्मदत्तश्चैकितानेयो राजानं
भक्षयन्नुवाचायं तस्य राजा
मूर्धानं विपातयतात्... बृह. १।३।२४
तद्धाम परमं मम [भ.गी. ८।२१+१५।६
तद्धाम सर्वेषां देवादीनामपि
दुर्लभतरम् सामर. ५४
तद्धावतोऽन्यानत्येति तिष्ठत्तस्मि-
न्नपो मातरिश्वा दधाति ईशा. ४
तद्धास्य विजज्ञौ न विवेद छान्दो.६।१२।१
तद्धासुराः पाप्मना विविदुः छां.१।२।४,५,६
तद्धास्यान्ततः क्षीयत एव (कर्म) बृह. १।४।१५

तद्धि तपः, तद्धि तपः तैत्ति. १।९।१
तद्धि तपः स्वस्ति तपः (व्रतेऽप्रमादः)
काश्यामेव मुक्तिकामानाम् ,
न त्याज्यं न त्याज्यम् भस्मजा. २।८
तद्धेदं तर्ह्यव्याकृतमासीत्तन्नाम-
रूपाभ्यामेव व्याक्रियते बृह. १।४।७
तद्धैके प्राजापत्यामिष्टिं कुर्वन्त्यथवा
न कुर्यादाग्नेय्यामेव कुर्यात् ना.प. ३।७७
तद्धैके प्राजापत्यामेवेष्टिं कुर्वन्ति
तदु तथा न कुर्यात् [जा.बा. ४+ प.हं.प. २
तद्धैतद्घोर आङ्गिरसः कृष्णाय
देवकीपुत्रायोक्त्वोवाचा-
पिपास एव स बभूव छान्दो.३।१७।६
तद्धैतत्सत्यकामो जाबालो गोश्रुतये
वैयाघ्रपद्यायोक्त्वोवाच यद्यप्ये-
नच्छुष्काय स्थाणवे ब्रूयाज्जायेरन्ने-
वास्मिञ्छाखाःप्ररोहेयुःपलाशानि छान्दो. ५।२।३
तद्धैतत्सत्ये प्रतिष्ठितम् (मा. पा.) बृ.उ. ५।४।१
तद्धैतदुद्दालकायारुणये ज्येष्ठायपुत्राय
पिता ब्रह्म प्रोवाच छान्दो.३।११।४
तद्धैतदेके नानाछन्दसां सहस्रं
प्रतिजानते १ऐत. ३।५।१
तद्धैतदेतदेव तदास सत्यमेव (मा.पा.) बृ.उ. ५।४।१
तद्धैतद्ब्रह्मा प्रजापतय उवाच,
प्रजापतिर्मनवे (एतामुपनिषदं) छान्दो.३।११।४
तद्धैतल्लोकजिदेव न हैवालोक्यताया
आशास्ति बृह. १।३।२८
तद्धैव हंसो हंसमभ्युवाद-हो हो हि
भल्लाक्ष भल्लाक्ष जानश्रुतेः पौत्रा-
यणस्य समं दिवाज्योतिराततं
तन्मा प्रसाङ्क्षीः छान्दो.४।१।२
तद्धैषां विजज्ञौ, तेभ्यो ह प्रादुर्बभूव
तन्न व्यजानन्त किमिदं
यक्षमिति केनो. ३।२
तद्ध्यानबलयोगेन धारणाभि-
र्निकृन्तयेत् क्षुरिको. १३
तद्ध्यानं पूजनं कार्यं (सूर्यस्य)
श्रेयस्कामैर्जितेन्द्रियैः सूर्यता. २।११

तद्ध्यानं प्रथमैरङ्गैः षड्भिर्निष्पाद्यते.. भवसं. ३।२९
तद्धोचुः को नो वसिष्ठ इति बृह. ६।१।७
तद्धोभये देवासुरा अनुबुबुधिरे; ते होचुर्हन्त तमात्मानमन्विच्छामः छान्दो. ८।७।२
तद्बुद्धयस्तदात्मानः भ.गी. ५।१७
तद्बुद्धयस्तदालापास्तद्विचेष्टास्तदात्मकाः (उपास्यदेवतायाः) सामर. २५
तद्ब्रह्म, स आत्मा, अङ्गान्यन्या देवताः तैत्ति. १।५।१
तद्ब्रह्म चानृतं शुक्रं सा गतिः मैत्रा. ६।२४
तद्ब्रह्मणस्तदध्यात्मं तद्विष्णोस्तत्परायणम् ते.बिं. १।९
तद्ब्रह्मणः परिमर इत्युपासीत तैत्ति. ३।१०।४
तद्ब्रह्म तदमृतं, स आत्मा छान्दो. ८।१४।१
तद्ब्रह्म तदुपासितव्यमेवैतत् [याज्ञव. १ +ना.प. ३।७७
तद्ब्रह्म तत्परं धाम तद्ध्येयं मोक्षकाङ्क्षिणाम्। श्रुतिवाक्योदितं सूक्ष्मं तद्विष्णोः परमं पदम् भवसं. ३।५
तद्ब्रह्म तापत्रयातीतं षट्कोशविनिर्मुक्तं षडूर्मिवर्जितं पञ्चकोशातीतं... एवमादिसर्वविलक्षणं भवति मुद्गलो. ४।१
तद्ब्रह्म परमं शान्तं तद्ब्रह्मास्मि परं पदम्। पञ्चब्रह्म परं विद्यात्.. पंचब्र. २०
तद्ब्रह्म ब्रह्म तत्परम्। तदभ्यासेन लभ्येत पूर्वजन्मार्जितात्मनाम् कुंडिको. २०
तद्ब्रह्म मनस्सहकारिचक्षुषान्तर्दृष्ट्या वेद्यं... अद्वयता. ६
तद्ब्रह्मानन्दमद्वन्द्वं निर्गुणं सत्यचिद्घनम्, विदित्वा स्वात्मनो रूपं (स्वात्मरूपेण) न बिभेति कुतश्चन वराहो. २।२०
[महो. ४।७०+ कठरु. ३७
तद्ब्रह्माभिद्रूयमानं महो देवो भुवनान्याविवेश मैत्रा. ६।३८
तद्ब्रह्मायतनं महत् (भ्रुवोर्मध्ये) ध्या.बिं. ४०
तद्ब्रह्मास्मि न संशयः अ.पू. ५।६५
तद्ब्रह्मास्मि परं पदम्। पञ्चब्रह्म परं विद्यात्.. पं.ब्र. २०

तद्ब्रह्माहमस्मीति ब्रह्मप्रणवमनुस्मरन् सन्न्यासेन देहत्यागं करोति स कृतकृत्यो भवति ना. प. ३।८७
तद्ब्रह्माहमितिज्ञात्वाकृतकृत्योभवानघ अध्यात्मो. १०
तद्ब्रह्माहमिति ज्ञात्वा ब्रह्मसम्पद्यते क्रमात्। [त्रि.ता. ५।८+ ब्र. बि. ८
तद्ब्रह्माहमितिज्ञात्वा सर्वबंधैःप्रमुच्यते कैव. १७
तद्ब्रह्मेत्यभिधीयते ना.उ.ता. १।९
तद्ब्रह्मेत्युपासीत, ब्रह्मवान् भवति तैत्ति. ३।१०।४
तद्ब्रह्मैवाहमस्मीति कृतकृत्यो भवति प.हं.प. ९
तद्भक्ता ये लब्धकामाश्च भुक्त्वा तथापदं परमं यान्ति ते च रा. पू. ५।१०
तद्भवति यत्रैते देवास्तत्प्राप्य तदमृतो भवति, यदमृता देवाः.. कौ. त. २।१४
तद्भवत्यल्पमेधसाम् भ. गी. ७।२३
तद्भस्म गायत्र्या सम्प्रोक्ष्य...रुद्रमन्त्रैः पुनरभ्युक्ष्य शुद्धदेशे संस्थापयेत् भस्मजा. १।२
तद्भामात्रमिदं विश्वमिति न स्यात्ततः पृथक्। जगद्भेदोऽपि तद्भानं.. महो. २।७
तद्भाविताः प्रपद्यन्ते पुनर्जन्मविवर्जिताः क्षुरिको. २०
तद्भासकं किमिति चेदुच्यते सच्छब्दवाच्यमविद्याशबलं ब्रह्म त्रि.मा. १।१
तद्भित्त्वा कण्ठमायाति तां नाडीं पूरयन्.. क्षुरिको. ११
तद्भूयो दर्शनेनगुणरहिताकाशंभवति अद्वयता. ४
तद्भुवः स्वलक्षणमोङ्कार एव राधोप. २।२
तद्भूर्भूस्थं भूस्थो वा विश्वरूपस्तद्भूः प्राणः भूरसि भुवोऽसि सुवरसि भूर्भूतये स्वाहा पारमा. ५।६
तद्य इत्थं विदुर्ये चेमेऽरण्ये श्रद्धातप इत्युपासते छान्दो. ५।१०।१
तद्य इमे वीणायां गायन्त्येतं ते गायन्ति तस्मात्ते धनसनयः छान्दो. १।७।६
तद्य इह रमणीयचरणा अभ्याशो ह यत्ते रमणीयां योनिमापद्येरन् छान्दो. ५।१०।७

तद्य इहात्मानमननुविद्य व्रजन्त्येताँ॰- श्चसत्यान्कामा॰स्तेषांसर्वेषुलोके- ष्वकामचारो भवति छान्दो. ८।१।६

तद्य एवैतं ब्रह्मलोकं ब्रह्मचर्येणानु- विन्दन्ति तेषामेवैष ब्रह्मलोकः... छान्दो. ८।४।३

तद्य एवैतावरं च वै ण्यं चार्णवौ... छां.उ. ८।५।४

तद्य एवैता वरं च ण्यं चार्णवौ ब्रह्मलोके ब्रह्मचर्येणानुविन्दति तेषामेवैष ब्रह्मलोकः.. छान्दो. ८।५।४

तद्यदिकञ्चोमित्याहात्रैवास्मै तद्रिच्यते १ऐत. ३।६।६

तद्यत्तत्सत्यमसौ स आदित्यः बृह. ५।५।२

तद्यत्रैतत्सुप्तः समस्तः सम्प्रसन्नः स्वप्नं न विजानात्यासु तदा नाडीषु सृप्तो भवति छान्दो. ८।६।३

तद्यत्रैतत्सुप्तः समस्तः सम्प्रसन्नः स्वप्नं न विजानाति एष आत्मेति छान्दो.८।११।१

तद्यत्पराभावयन्त तस्मादोङ्कारः पूर्वमुच्चार्यते २प्रणवो. ८

तद्यत्प्रथमममृतं तद्वसव उपजीव- न्त्यग्निना मुखेन छान्दो. ३।६।१

तद्यत्सत्तदमृतम् ,अथ यत्ति तन्मर्त्यम् छान्दो. ८।३।५

तद्यत् स्वेनैव रूपेणाविस्तरामगच्छत् शौनको. ४।४

तद्यथा क्षुरः क्षुरधानेऽवहितः स्या- द्विश्वम्भरो वा विश्वंभरकुलायः कौ.उ. ४।१९

तद्यथा गोनायोऽश्वन नाय इत्येवं तदप आचक्षते छांदो. ६।८।३,५

तद्यथा तृणजलायुका तृणस्यान्तं गत्वाऽन्यमाक्रममाक्रम्यात्मा- नमुपस॰हरत्येवमेवायमात्मा.. बृह. ४।४।३

तद्यथाऽनः सुसमाहितमुत्स- र्जद्यायात् बृह. ४।३।३५

तद्यथा महापथ आतत उभौ ग्रामौ गच्छतीमं चामुं चैवमेवैता आदित्यस्य रश्मय उभौ लोकौ गच्छन्ति छान्दो. ८।६।२

तद्यथा—रथेन धावयन्रथचक्रे पर्यवेक्षत एवमहोरात्रे पर्यवेक्षत कौ.उ. १।४

तद्यथापि हिरण्यनिधिं निहित- मक्षेत्रज्ञा उपर्युपरि सञ्चरन्तो न विन्देयुः छान्दो. ८।३।२

तद्यथा पेशस्कारी पेशसो मात्रामु- पादायान्यन्नवतरं कल्याणतर॰ रूपं तनुते, एवमेवायमात्मा.. बृह. ४।४।४

तद्यथा प्रियया स्त्रिया सम्परिष्वक्तो न बाह्यं किञ्चन वेद, नान्तरं , एवमेवाऽयं पुरुषः... बृह.४।३।२१

तद्यथा—बटरकाणि सम्पतन्तीव दृश्यन्ते तानि यदा न पश्येत् तदप्येवमेव विद्यात् ३ ऐत. २।४।६

तद्यथा—बाह्यात्माऽन्तरात्मा परमात्मा चेति (आत्मत्रयम्) १ आत्मो. १

तद्यथा—मक्षिका मधुकरराजान- मुत्क्रामन्तं सर्वा एवोत्क्रामन्ते प्रश्नो. २।४

तद्यथा—मधुमक्षिका मधुकरराजानं ...(मा. पा.) प्रश्नो. २।४

तद्यथा महामत्स्य उभे कूलेऽनुसञ्च- रति पूर्वंचापरंच एवमेवायं पुरुषः.. बृह. ४।३।१८

तद्यथाऽऽम्रं वोदुंबरं वा पिप्पलं वा बन्धनात्प्रमुच्यते एवमेवायं पुरुष एभ्योऽङ्गेभ्यः सम्प्रमुच्य.. बृह. ४।३।३६

तद्यथा रथनाभौ च रथनेमौ चाराः सर्वेसमर्पिता एवमेवास्मिन्नात्मनि.. सर्वाणि भूतानि सर्वा देवाः.. बृह. २।५।१५

तद्यथा रथस्यारेषु नेमिरर्पितो नाभावरा अर्पिताः कौ.उ. ३।९

तद्यथा राजानमायान्तमुग्राः प्रत्ये- नसः सूतग्रामण्योऽन्नैः पानैराव- सथैः प्रतिकल्पन्तेऽयमायात्य- यमागच्छतीत्येवमेवेममात्मानं.. बृह. ४।३।३७

तद्यथा राजानं प्रयियासन्तमुग्राः प्रत्येनसः सूतग्रामण्योऽभिस- मायान्त्येवमेवेममात्मानमन्त- काले सर्वे प्राणा अभिस- मायन्ति बृह. ४।३।३८

तद्यथा लवणेन सुवर्णं सन्दध्या- त्सुवर्णेनरजत॰ रजतेन त्रपु.. छान्दो.४।१७।७

तद्यथा—वातो वाति, प्रजा निर्मुच्यते, एवमेतया.. संहितो. १।३
तद्यथा शङ्कुना सर्वाणि पर्णानि संतृण्णान्येवमोङ्कारेण सर्वा वाक् सन्तृण्णा छान्दो.२।२३।३
तद्यथा श्रेष्ठैः स्वैर्भुङ्क्ते यथा वा श्रेष्ठिनं स्वा भुञ्जन्त एवमेवैष प्राज्ञ आत्मैतैरात्मभिर्भुङ्क्ते कौ.उ. ४।२०
तद्यथाऽसौ मात्रा पूर्वरूपोत्तररूपे... साम तद्भवति सामैवाहं संहितां मन्य इति ३ऐत. १।५।३
तद्यथा स्थूलया गयाश्राद्धं कृतं भवेत् स्वधासह पितॄणाम् इतिहा. १
तद्यथाऽहिनिर्ल्वयनी वल्मीके मृता प्रत्यस्ता शयीत एवमेवेदꣳ शरीरं शेते बृह. ४।४।७
तद्यथेषीकातूलमग्नौ प्रोतं प्रदूयेत, एवमेवꣳहास्य सर्वे पाप्मानः प्रदूयन्ते यः.. अग्निहोत्रं जुहोति छान्दो.५।२४।३
तद्यथेह कर्मजितो लोकः क्षीयते, एवमेवामुत्र पुण्यजितो लोकः.. छान्दो. ८।१।६
तद्यथैतच्छात्राणां श्रीमत्तमं यशस्वितमं... भवति तथो एवैवं विद्वान् सर्वेषां.. श्रीमत्तमः.. कौ.त. २।३
तद्यथैतान्यमुष्मादाकाशात्समुत्थाय परंज्योतिरुपसम्पद्य स्वेन स्वेन रूपेणाभिनिष्पद्यन्ते छांदो.८।१२।२
तद्यदपाꣳ शर आसीत्समहन्यत सा पृथिव्यभवत् बृह. १।२।२
तद्यदपीदं शरीरमन्धं भवति (मा.पा.) छां.उ. ८।१०।२
तद्यदस्येदं विश्वं मित्रमासीद्यदिदं किंच तस्माद्विश्वामित्र इत्याचक्षते १ ऐत. २।१।४
तद्यदा मृत्युमत्यमुच्यत स आदित्योऽभवत् बृह. १।३।१४
तद्यदा मृत्युमत्यमुच्यत स चन्द्रमा अभवत् बृह. १।३।१६
तद्यदा मृत्युमत्यमुच्यत ता दिशोऽभवन् बृह. १।३।१५
तद्यदा स्त्रियां सिञ्चति, अथैनं जनयति, तदस्य प्रथमं जन्म २ ऐत. ४।१
तद्यदि तमाहुरमुं यजामुं यजेति बृह. १।४।६
तद्यदिदमस्मिन्नन्तः पुरुषे ज्योतिस्तस्यैषा दृष्टिः छांदो. ३।१३।७
तद्यदिदमाहुः संवत्सरं पयसा जुह्वदपपुनं मृत्युं जयतीति बृह. १।५।२
तद्यदिदं चक्षुः सोऽसावादित्यः सोऽध्वर्युः स मुक्तिः सा मुक्तिः बृह.३।१।४
तद्यदिदं मनः सोऽसौ चन्द्रः स ब्रह्मा स मुक्तिः बृह. ३।१।६
तद्यदिह वा एवं विद्वांस उभौ पर्वतावभिप्रवर्तेयातां बृह. को.त.२।१३
तद्यदेतत्स्त्रियां लोहितं भवति, अग्नेस्तद्रूपम् १ऐत. ३।७।२
तद्यदेतदिदम्मयोऽदोमयः (आत्मा) बृह. ४।४।५
तद्यदेवैतद्बृहती सहस्रमनुष्टुप्सम्पन्नं भवति १ऐत. ३।६।२
तद्यद्गयांस्तत्रे तस्माद्गायत्री नाम बृह. ५।१४।४
तद्यद्भक्तं प्रथममागच्छेत्तद्धोमीयम् छांदो. ५।१९।१
तद्यद्यपीदꣳ शरीरमन्धं भवत्यनन्धः स भवति छांदो.८।१०।१
तद्यद्यप्यस्मिन् सर्पिर्वोदकं वा सिञ्चन्ति वर्त्मनी एव गच्छति छांदो. ४।१५।१
तद्यद्रजतं सेयं पृथिवी छांदो. ३।१९।२
तद्यद्रेत आसीत्स संवत्सरोऽभवत् बृह. १।२।४
तद्यद्रोदयन्ति तस्माद्रुद्राः बृह. ३।९।४
तद्यद्यपीदं भगवः शरीरमन्धं भवति छान्दो. ८।१०।१
तद्यश इत्युपासीत, तत्तेज इत्युपासीत कौ.उ. २।६
तद्यशः स इन्द्रः, स भूतानामधिपतिः १ऐत. ३।७।१
तद्यस्मिन्नः प्रपन्नइदं शरीरमुत्थास्यति १ऐत. २।४।५
तद्या इमा अक्षꣳल्लोहिन्यो राजयस्ताभिरेनꣳ रुद्रोऽन्वायत्तः बृह. २।२।२
तद्यावती क्षुरस्य धारा यावद्वा मक्षिकायाः पत्रं तावानन्तरेणाकाशः बृह. ३।३।२

तथावदेव मनस्तावती द्यौस्तावा-
नसावादित्यः, तौ मिथुनं
समैताम्, ततः प्राणोऽजायत बृह. १।५।१२
तथावत्येव वाक्तावती पृथिवी,
तावानयमग्निः बृह. १।५।११
तथावानेव प्राणस्तावत्य आपस्तावानसौ
चन्द्रः, त एते सर्व एव समाः बृह. १।५।१३
तद्युक्तस्तन्मयो जन्तुः ना. बिं. १९
तद्येयं वाक् सोऽयमग्निः स होता
स मुक्तिः साऽतिमुक्तिः बृह. ३।१।३
तद्ये ह वै तत्प्रजापतिव्रतं चरन्ति,
ये मिथुनमुत्पादयन्ते तेषा-
मेवैष ब्रह्मलोको येषां तपो ब्रह्म-
चर्यं येषु सत्यं प्रतिष्ठितम् प्रश्नो. १।१९
तद्येह वै तदिष्टापूर्ते कृतमित्युपासते
ते चान्द्रमसमेव लोकमभिजयन्ते प्रश्नो. १।९
तद्यैतत् (तद्ध्येतत्) अधीते वा
भाषते वा वाचि तदा
प्राणो भवति (?) ३ ऐते. १।६।६
तद्योगं च द्विधा विद्धि पूर्वोत्तर-
विधानतः। पूर्वं तु तारकं विद्या-
दमनस्कम् ..[मं. ब्रा. १।४+ अद्वयता. ५
तद्योगैरपि गम्यते भ. गी. ५।५
तद्यो न स्पृशति प्रविष्टान्सङ्गासी मैत्रा. ६।१०
तद्यो यो देवानां प्रत्यबुद्ध्यत स एव
तदभवत् बृह. १।४।१०
तद्योऽयं प्राणः स वायुः, स उद्गाता बृह. ३।१।५
तद्यो ह एवमधीते स ह स्मै
राजा भवति इतिहा. १
तद्योऽहं सोऽसौ योऽसौ सोऽहम् १ ऐत. २।४।३
तद्रजः खल्वीरितं विषमत्वं प्रयाति मैत्रा. ५।५
तद्रहितं कर्म निष्फलं रक्षांसि गृह्णीयुः कात्याय. १
तद्राजसमुदाहृतम् भ.गी. १८।२४
तद्राज्ञा ब्रह्मचर्यमाचरन्ति पा. ब्र. ५
तद्रामभद्रपरं ज्योतीरसोऽहमोम् रामो. २।४
तद्रुद्राक्षं करेण स्पृष्ट्वा धारणमात्रेण
द्विसहस्रगोदानफलं भवति रु. जा. ४५
तद्रुद्राक्षे कर्णयोर्धार्यमाणे एकादश-
सहस्रगोप्रदानफलं भवति रु. जा. ४५
तद्रुद्राक्षे वाग्विषये कृते दशगोप्र-
दानेन यत्फलमवाप्नोतितत्फलमश्नुते रु. जा. ४४
तद्रुद्राक्षे शिरसि धार्यमाणे कोटिगो-
प्रदानफलं भवति रु. जा. ४५
तद्रूपप्रत्यये चैका सन्ततिश्चान्य-
निःस्पृहा। तद्ध्यानं प्रथमैरङ्गैः.. भवसं. ३।२९
तद्रूपवशगा (योगिवशाः) नार्यः
कांक्षन्ते तस्य सङ्गमम् १ यो.त. ६१
तद्रूपं रससंवलितमानन्दरसोऽयं
पुराविदो वदन्ति सामर. ३
तद्रूपं वै रजसोरूपं तद्रजः खल्वी-
रीतं विषमत्वं प्रयाति (पा.) मैत्रा. ५।५
तद्रूपो भवति (परब्रह्मैव) मुद्गलो. ३।३
तद्वक्तारमवतु, अवतु माम् [२ऐत.शां. तैत्ति. १।१।३
तद्वक्तारमावीत्, आवीन्माम् तैत्ति. १।१२।१
तद्वज्जीवा इहात्मनि (नष्टघटाका-
शवत्) अद्वैत. ४
तद्वज्जीवाः सुखादिभिः अद्वैत. ५
तद्वदविद्यमानफल्गुविषयसुखाशयाः
सर्वे जीवाः प्रधावन्त्यसार-
संसारचक्रे त्रि.म.ना.४।१०
तद्वत्कामा ये प्रविशन्ति सर्वे भ.गी. २।७०
तद्वदात्मनि देहत्वं पश्यत्यज्ञानयोगतः यो.शि. ४।२४
तद्वदापोगणापाये केशाः स्युः पाण्डुराः
क्रमात्। तेजःक्षये क्षुधा कान्ति-
र्नश्यते मारुतक्षये वराहो. ५।४
तद्वदुद्गातृयजमानौ भवतः संहितो. ३।२
तद्वदेव ह्यभोगश्रीरवलोक्यते महो. ५।७२
तद्वद्देहादिबन्धेभ्यो विमुक्तं ब्रह्मवि-
त्तमम्। पश्यन्ति देहिवन्मूढाः २आत्मो. १६
तद्वनमित्युपासितव्यं स य एतदेवं वेद केनो. ४।६
तद्वपुरपध्वस्तसंशयविपरीतमिथ्या-
ज्ञानानां यो हेतुस्तेन नित्य-
निवृत्तः प.हंसो. ३
तद्वद्ब्रह्मणि जीवत्वं वीक्ष्यमाणे
विनश्यति यो.शि. ४।१३
तद्वद्ब्रह्मविदोऽप्यस्य ब्रह्माहमिति
वेदनम् २आत्मो. ८

तद्ब्रूतसमागमः । क गताः पृथिवी-
पालाः.. वियोगसाक्षिणी येषां
भूमिरद्यापि तिष्ठति भवसं. १।२२

तद्वा अथर्वणः शिरो देवकोशः
समुज्झितः । तत्प्राणोऽभिरक्षति.. अ.शिरः. ३।१४

तद्वा अस्यैतदतिच्छन्दा अपहत-
पाप्माऽभय९ रूपम् बृह. ४।३।२१

तद्वाअस्यैतदाप्तकाममात्मकाममकाम९
रूप९शोकान्तरम् बृह. ४।३।२१

तद्वा इदं बृहतीसहस्रं सम्पन्नं १ऐत.२।५।१
[१ऐत.३।५।१ ३।७।१

तद्वा एतत्परमं धाम मंत्रराजाध्याप-
कस्य यत्र सूर्यस्तपति...यत्र
गत्वा न निवर्तन्ते योगिनः नृ.पू. ५।१६

तद्वा एतत्सुदर्शनं नाम चक्रं
सार्वकामिकं... नृ. पू. ५।७

तद्वा एतदक्षरं गार्ग्यदृष्टं द्रष्टृश्रुत९
श्रोत्रमतं मन्त्रविज्ञातं विज्ञातृ
नान्यदतोऽस्ति द्रष्टृ; बृह. ३।८।११

तद्वा एतदनस्यान्नमनो ह वै नाम
प्रत्यक्षम् छान्दो. ५।२।१

तद्वा एतदनुज्ञाक्षरं यद्धि किञ्चानु-
जानात्योमित्येव छान्दो. १।१।८

तद्वा एतद्ब्रह्माद्वयं ब्रह्मत्वात् नृसिंहो. ९।८

तद्वा एतद्यदेतदादित्यस्य
परं कृष्णं रूपम् [छान्दो.३।३।३ +३।४।३

तद्वा एतद्यदेतदादित्यस्य मध्ये
क्षोभत इव छान्दो. ३।५।३

तद्वा एतद्यदेतदादित्यस्य शुक्लं रूपं छान्दो.३।२।३

तद्वा एतद्यदेतदादित्यस्य रोहितंरूपं छान्दो.३।१।४

तद्वा एतद्वायुमागृह्याकाशमभितपति छान्दो.७।११।१

तद्वा एतद्विदितं मीमा९सितम् बृह.१।४।१६

तद्वा एतन्मिथुनं यद्वाक्‌ च
प्राणश्चर्क्‌ साम च छां.उ.१।१।५

तद्वाचाऽजिघृक्षत्‌ , तन्नाशक्नो-
द्वाचा ग्रहीतुम् २ऐत. ३।३

तद्वाचा वदति तत्कर्मणा करोति[वृ.जा.१।१ +नृ.पू.१।१

तद्वाचा वदच्चक्षुषा पश्यच्छ्रोत्रेण कौ.उ. २।१४।

तद्वाचा वदच्चक्षुषा पश्यञ्छ्रोत्रेण
शृण्वन्मनसाध्यायञ्छिष्य एव कौ.उ. २।१४

तद्वाऽऽत्मतत्त्वं प्रसमीक्ष्य देही एकः
कृतार्थो भवते वीतशोकः श्वेता. २।१४

तद्वासनासहितैश्चतुर्दशकरणैः शब्दाद्य-
भावेऽपिवासनामयाञ्छब्दादीन्
यदोपलभते तदात्मनः स्वप्नम् सर्वसारो. ३

तद्वां नरा सनयेद९स उग्रमावि-
ष्कृणोमि तन्यतुर्न वृष्टिम् बृह. २.५।१६

तद्वांश्चक्षुरादिबाह्यप्रपञ्चोपरतो..
सर्वं जगदात्मत्वेन पश्यन्.. ब्रह्मा-
हमस्मीति... सर्वं यदयमात्मेति
भायवन्कृतकृत्यो भवति मं.ब्रा. २।८

तद्विजिज्ञासस्व, तद्ब्रह्मेति तैत्ति. ३।१

तद्विजृम्भते यद्विद्योतते यद्विधूनुते बृह. १।१।१

तद्विज्ञानार्थं स गुरुमेवाभिगच्छेत्
समित्पाणिः श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठम् मुण्ड.१।२।१२

तद्विज्ञानेन परिपश्यन्ति धीरा
आनन्दरूपममृतं यद्विभाति मुण्ड. २।२।७

तद्विज्ञाय पुनरेव वरुणं पितर-
मुपससार [तैत्ति. ३।२+ ३।४+१।५

तद्विदाप्नोति परम् ग.शो.ता. ४।१

तद्विद्धि प्रणिपातेन भ.गी. ४।३४

तद्विद्धि भरतर्षभ भ.गी. १३।२७

तद्विनायकं परं ज्योती रसोऽह-
मित्यात्मानमादाय मनसा
ब्रह्मणैकीकुर्यात् ग.शो. १।४

तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः
समिंधते । विष्णोर्यत्परमं पदम् सुबालो. ६।२
[नृ.पू. ५।१६+रामो. ५।३१+ वराहो. ५।७८
[पैङ्गलो. ४।२४+मुक्तिको.२।७८+ स्कन्दो. १५
[आरु.५;तारसा.९; ऋ.अ.१।२।७ मं.१.२२।२१

तद्विद्याद्यदिदं किञ्च ग.शो.ता. ३।१

तद्विद्याविषयं ब्रह्म... सत्यज्ञान-
सुखाद्वयम् [अ.पू.४। २७+ कठरु. १३

तद्विद्युल्लेखावच्छुक्लभास्वरम् मं.ब्रा. ३।२

तद्विद्वानक्षरं ध्यायेद्यदीच्छे-
च्छान्तिमात्मनः [ब्र.वि. १६+ त्रि.ता.५।१३

तद्विद्वांसः श्रोत्रिया अशिष्यन्त
आचमन्त्यशित्वाऽऽचामन्त्येतमेव.. बृह. ६।१।१
तद्विश्वं विष्णवे विश्वरूपाय स्वाहा पारमा. ५।५
तद्विष्णुरीशानो ब्रह्म नृसिंहो. ९।६
तद्विष्णोस्तत्परायणम् ते.बिं. १।९
तद्विष्णोः परमं पदं यत्र गत्वा न
निवर्तन्ते योगिनः ना.प. ९।२२
तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यंति
सूरयः [सुबालो.६।१+ कठो. ३।९
[ना.बि.४७+ वासु.२९+ ध्या.बि. २५
[त्रि.ता.४।४+मं.ब्रा.५।१+ यो.शि.६।२१
[वराहो.५।७७+पैङ्ग.४।२४+ रामो. ५।३०
[शाण्डिल्यो. १।७।३७+ तारसा.३।९
[नृ.पू. ५।१६+ गो.पू. ३।११+ स्कन्दो. १४
[आरुणि. ५ +मुदर्श.१०+ वा. सं. ६।५
[ऋ.सं.१।२।७+ =मं.१।२२।२०
तद्विविधं वाचिकं मानसं चेति
(जपकर्म) शांडि. १।२।१
तद्वेत्ता (सगुणनिर्गुणज्ञः) विमुक्तः मं. ब्रा. २।१
तद्वेदगुह्योपनिषत्सु गूढं तद्ब्रह्मा
वेदयते ब्रह्मयोनिम् । ये..
विदुस्ते.. अमृता वै बभूवुः श्वेताश्व. ५।६
तद्वै खलुलोकद्वारं विदुषां (मा.पा.) छां. उ. ८।६।५
तद्वै खलु समृद्धिमेव ध्यायन्नुपासीत संहितो. १।३
तद्वै तत्सत्यं बले प्रतिष्ठितम् बृह. ५।१४।४
तद्वैतत्सत्ये प्रतिष्ठितम् बृह. ५।१४।४
तद्वै तदेव तदास सत्यमेव बृह. ४।४।१
तद्वै दैवं मनो येनानन्द्येव भवत्यथो
शोचति बृह. १।५।१९
तद्वै परं ब्रह्मगणेश इत्यात्मानं मन्यते ग.शो.ता.३।३
तद्वै सर्वतः पश्यति स्म न किञ्चिद्ददर्श ग.शो.ता. ३।४
तद्वै संहतोऽभूद्रुद्रः, य एवं वेद ग.शो.ता.३।१३
तद्वै त्वं प्राणो अभवः चित्त्यु. १४।४
तद्धोभयं वै प्रणवेन देहे श्वेता. १।१३
तद्यक्षरत्तदादित्यमभितोऽश्रयत छान्दो.३।१।४
[३।२।३+३।४।३— ३।५।८
तन्तुना मणिवत्प्रोतो योऽत्र कंदः
सुषुम्नया । तन्नाभिमण्डले चक्रं
प्रोच्यते मणिपूरकम् यो. चू. १२

तन्तुपञ्जरमध्यस्थलूतिका यथा
भ्रमति तथा चासौ तत्र
प्राणश्चरति (नाभिचक्रे) शाण्डि. १।४।४
तन्त्रराजाय विद्महे महातन्त्राय
धीमहि । तन्नस्तन्त्रः प्रचोदयात् वनदु. १५१
तन्द्रा देवदत्तकर्म शाण्डि. १।४।९
तन्न इन्द्रो वरुणो बृहस्पतिः
सविता च पुनन्तु पुनः पुनः महाना. ५।१६
तन्न कश्चन पाप्मा स्पृशति छान्दो.८।६।३
तन्न तथा कुर्याद्गायत्रीमेव
सावित्री (मा.पा.) बृ.उ. ५।१४।५
तन्नम इत्युपासीत, नम्यन्तेऽस्मै
कामाः, तद्ब्रह्मेत्युपासीत तैत्ति.३।१०।४
तन्नयन्त्येताः सूर्यस्य रश्मयो यत्र
देवानां पतिरेकोऽधिवासः मुण्ड. २।५
तन्न व्यजानन्त (देवाः) किमिदं
यक्षमिति केनो. ३।२
तन्न शशाक दग्धुं (अग्निः-तृणं) केनो. ३।६
तन्न शशाकादातुं (वायुः-तृणं) केनो. ३।१०
तन्नः सिंहः प्रचोदयात् नृ.पू. ४।३
तन्नः सूर्यः प्रचोदयात् सूर्यो. ७
तन्नाकं तद्विशोकम् छान्दो.२।१०।५
तन्नातीयात् । नह्यत्यायन् पूर्वे १ऐत. १।१।१
तन्नादबिन्दुकलातीतमखण्डमण्डलं मं. ब्रा. २।१
तन्नादाद्बिन्दुः, बिन्दोरोङ्कारः सीतो. ११
तन्नाभिचक्रमित्युक्तं कुक्कुटाख्यमिव
स्थितम् । गान्धारी हस्तिजिह्वाच
तस्मान्नेत्रद्वयं गते यो.शि.५।२१
तन्नाभिमण्डलं चक्रं प्रोच्यते
मणिपूरकम् ध्या.बि. ४९
तन्नामरूपाभ्यामेव व्याक्रियते-
ऽसौनामाऽयमिदं रूप इति बृह.१।४।७
तन्नाम सङ्कीर्तयन् विष्णुसायुज्यं
गच्छति सङ्कर्षणो. ३
तन्नाशक्नोच्चक्षुषा ग्रहीतुम् २ ऐत. ३।५
तन्नाशक्नोच्छ्रोत्रेण ग्रहीतुम् २ ऐत. ३।९
तन्नाशक्नोच्छ्रोत्रेण ग्रहीतुम् २ ऐत. ३।६
तन्नाशक्नोत्प्राणेन ग्रहीतुम् २ ऐत. ३।४

तन्नाशक्नोत्त्वचा ग्रहीतुम् २ ऐत. ३।७
तन्नाशक्नोद्वाचा ग्रहीतुम् २ ऐत. ३।३
तन्नाशक्नोन्मनसा ग्रहीतुम् २ ऐत. ३।८
तन्नित्यमुक्तमविक्रियम् पैङ्गलो. १।१
तन्नित्यं शाम्भवीमुद्रासमन्वितम् मं. ब्रा. ३।१
तन्निधन ँ्सँ्शाम्यति तन्निधन-
मेतद्रथन्तरमग्नौ प्रोतम् छान्दो.२।१२।१
तन्निरासस्तु निस्सङ्कल्पक्षमालब्ध्वा-
हाराप्रमादतातत्त्वसेवनम् मं. ब्रा. १।१
तन्निवृत्तिर्मोक्षः (बन्धनिवृत्तिः) सर्वसारो. २
तनुमानसी तृतीया (योगभूमिका) वराहो. ४।१
तनुवा मे सह नमस्ते अस्तु मा
माहि ँ्सीः महाना. १६।६
तनुवासनमित्युच्चैःपदायोद्यतमुच्यते
अवासनं मनो कर्तृ.. अ. पू. १।३०
तनुं त्यजतु वा तीर्थे श्वपचस्य
गृहेऽथवा । ज्ञानसम्पत्ति-
समये मुक्तोऽसौ.. अ. पू. ५।१०१
तन्न आदित्यः प्रचोदयात् महाना. ३।१०
तन्न भुवेहमुरणो बोभुवे कम् बा. मं. २२
तन्नो अग्निः प्रचोदयात् महाना. ३।११
तन्नो गरुडः प्रचोदयात् महाना. ३।६
तन्नः षण्मुखः प्रचोदयात् महाना. ३।५
तन्नो दन्तिः प्रचोदयात् [गणप. ८ ग.शो.ता. २।१
तन्नो दुर्गिः प्रचोदयात् वन. दु. १४०
तन्नो नन्दिः प्रचोदयात् महाना. ३।४
तन्नो नारसिंहः प्रचोदयात् महाना. ३।९
तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात् महाना. ३।७
तन्नो महालक्ष्मीः प्रचोदयात् नृ. पू. ४।३
तन्नो रामः प्रचोदयात् रामर. २।८७
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् त्रि.म.ना.७।११
[महाना. ३।१,२+३।७+ पारायणो. १
तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् महाना. ३।८
तन्मण्डलमुपासमानस्तन्मयतांप्रपद्यते सामर. १०२
तन्मध्येऽखण्डब्रह्मतेजोमण्डलम् मं. ब्रा. २।२
तन्मध्ये जगल्लीनम् मं. ब्रा. २।१
तन्मध्ये तडित्कोटिसमानकान्त्या
मृणालसूत्रवत्सूक्ष्माङ्गीकुण्डलिनी अद्वयता. २

तन्मध्ये तत्त्वप्रकाशो भवति मं. ब्रा. २।१
तन्मध्ये शिवागारमभ्यर्हितम्
(काश्याम्) भस्मजा. २।९
तन्मध्ये (देहांतर्गताग्निस्थाने) शुभा
तन्वी पावकी शिखा भवति शांडि. १।४।३
तन्मध्ये सुधाचन्द्रमण्डलम्, तन्मध्ये-
ऽखण्डब्रह्मतेजोमण्डलम् मं.ब्रा. २।२
तन्मन इत्युपासीत, मानवान्भवति तैत्ति. ३।१०-३
तन्मनसाऽजिघृक्षत्, तन्नाशक्नो-
न्मनसा ग्रहीतुम् २ऐत. ३।८
तन्मनः स पर्ज्यन्यः, तदेतत्कीर्तिश्च
व्युष्टिश्चेत्युपासीत छान्दो.३।१३।४
तन्मनोऽकुरुतात्मन्वी स्यामिति बृह. १।२।१
तन्मनो दिशं दिशं पतित्वाऽन्यत्रा-
यतनमलब्ध्वा प्राणमेवोपश्रयते छान्दो. ६।८।२
तन्मनो विलयं याति तद्विष्णोः
परमं पदम् मं.ब्रा. ५।१
तन्मययज्ञो नादानुसन्धानम् पा.ब्र. ३
तन्मयविकारो जीवः । परमात्म-
स्वरूपो हंसः पा.ब्र. ३
तन्मयस्तत्परश्चैव मूर्ध्नि निर्वाण-
मृच्छति दुर्वासो. १।१४
तन्मयं (ब्रह्ममयं) तदेवेति
संहरेदोमिति नृसिंहो. १।२
तन्मयाशिखा। चिन्मयंचोत्सृष्टिदण्डम् निर्वाणो. ६
तन्मयैव स्फुरत्यच्छा तत्रैवोर्मिरि-
वार्णवे । आत्मन्येवात्मना
व्योम्नि.... महो. ५।११९
तन्मरणमेवावभृथः (मा.पा.) छां.उ.३।१७।५
तन्मरणमेवास्यावभृथः छां.उ. ३।१७।५
तन्मह इत्युपासीत, महान् भवति तैत्ति. ३।१०।३
तन्मातृपितृजायापत्यवर्गं च
मुक्तं भवति मं.ब्रा. ५।२
तन्मात्राणि भूतादौ विलीयन्ते सुबालो. २।२
तन्मात्राणि सदस्याः (शारीर-
यज्ञस्य) प्रा.हो. ४।३
तन्माप्रधाक्षीस्तत्त्वा मा प्रधाक्षीः
(मा.पा.) छां.उ. ४।१।२
तन्मा प्रसाक्षीस्तत्त्वा मा प्रधाक्षीः छान्दो. ४.१।२

तन्माभगवाञ्छोकस्य पारं
तारयतु (मा.पा.) छां.उ.७।१३
तन्मामवतु, तद्वक्तारमवतु, अवतुमां,
अवतुवक्तारम् , ॐ शान्तिः ३
[२ ऐत.शांतिः+कौषो.शां.+ तैत्ति.शां.
तन्मामावीत् , तद्वक्तारमावीत् ,
आवीन्माम् , आवीद्वक्तारम् तैत्ति. १।१२।१
तन्माया चेति सकलं परंब्रह्मैवतत् गो.पू.१।३
तन्मायाशबलमजनीत्याह ग.शो.४।२
तन्मुखं रुद्र इत्याहुस्तद्विदुः
सर्वदेवताः रु.जा. ४२
तन्मुद्रारूढज्ञानिनिवासाद्भूमिः
पवित्रा भवति अद्वयता. ७
तन्मूलादिन्दुपर्यन्तं विभाति...
योगिभिः सततं ध्येयं अमन. २।८
तन्मृत्युमुखात् प्रमुच्यते कठो. ३।१५
तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु [२शिवसं. २—२७
तन्मे क्षेमतरं भवेत् भ.गी. १।४६
तन्मे ब्रूहि सुनिश्चितम् भ.गी. ५।१
तन्वं पुपुष्यन्नमृतं वहामि बा.मं. १६
तप इति तपो नानशनात्परं यद्धि
परं तपस्तद्दुर्धर्षं तद्दुराधर्षं
तस्मात्तपसि रमन्ते महाना.१६।१२
तप इति तपोनित्यः पौरुशिष्टिः तैत्ति. १।९।१
तप इति तपोलोकः। सत्य इति.... गायत्रीर. २
सत्य इति सत्यः.. गायत्रीर. २
तपनीयमयं तप्तजाम्बूनदप्रभ-
मुद्यत्कोटिदिवाकरप्रभम्
(ब्रह्माण्डस्वरूपं) त्रि.म.ना. ६।२
तपन्तं न निन्देत् , तद्व्रतम् छान्दो.२।१।४२
तपमेवाग्नेवास्मीति होवाच १ऐत. २।३।४
तपन्वितपन्त्सन्तपन् रोचनो रोच-
मानः शोभनः शोभमानः.. नृ.पू. २।७
तपश्च स्वाध्यायप्रवचने च तैत्ति. १।९
तपश्चास्मि तपस्विषु भ.गी. ७।९
तपःश्रद्धे ये ह्युपवसन्त्यरण्ये शान्ता
विद्वांसो भैक्षचर्यां चरन्तः। सूर्य-
द्वारेण ते विरजाः प्रयान्ति.. मुण्ड. १।२।११

तपस ऋषयः सुवरन्वविन्दन् महाना. १७।२
तपसा चीयते ब्रह्म ततोऽन्नमभि-
जायते। अन्नात्प्राणा मनः सत्यं... मुण्ड. १।१।८
तपसा देवो देवतामग्र आयन् महाना. १७।२
तपसा प्राप्यते सत्त्वं सत्त्वात्स-
म्प्राप्यते मनः। मनसा प्राप्यते
ह्यात्मा ह्यात्मापत्त्या निवर्तते मैत्रे.१।६।+४।३
तपसा ब्रह्म विजिज्ञासस्व,
तपो ब्रह्मेति [तैत्ति. ३।२+ ३।४+३।५
तपसा श्रद्धा, श्रद्धया मेधा...
मनसा शान्तिः, शान्त्या चित्तं..
स्मारेण विज्ञानं विज्ञानेनात्मानं
वेदयति महाना. १७।१
तपसा सपत्नान् प्रणुदामारातीस्तपसि
सर्वं प्रतिष्ठितं, तस्मात्तपः परमं
वदन्ति महाना. १७।२
तपसि जुहोमि। भूर्भुवः सुवः चित्त्यु. ६।१
तपसि सर्वं प्रतिष्ठितं तस्मात्तपः
परमं वदन्ति महाना. १७।२
तपस्तत्त्रिविधं नरैः भ.गी. १७।१७
तपस्तप्तं कृतं च यत् भ.गी. १७।२८
तपस्विभ्योऽधिको योगी भ.गी. ६।४६
तपस्विभिः सर्वभस्म धार्यम् रुद्रोप. १
तपस्विषु बहुज्ञेषु याजकेषु नृपेषुच।
बलवत्सु गुणाढ्येषु महो. ४।३४
तपस्वी पुण्यो भवति य एवं विद्वान्
स्वाध्यायमधीते सहवै. १६
तपस्सन्तोषास्तिक्यदानेश्वरपूजन-
सिद्धान्तश्रवणह्रीमतिनय-
जपो व्रतानि दश नियमाः शांडि.१।२
तपः प्रभृतिना यस्मै हेतुनैव विना
पुनः। भोगा इह न रोचन्ते स
जीवन्मुक्त उच्यते महो. २।४२
तपः सन्तुष्टिरास्तिक्यं दानमाराधनं
हरेः। वेदान्तश्रवणं.. त्रि.ब्रा. २।३३
तपः सन्तोषमास्तिक्यं दानमीश्वर-
पूजनम्। सिद्धान्तश्रवणं चैव
ह्रीर्मतिश्च जपो व्रतम्। एते च
नियमाः [वराहो. ५।१३+ जा.द. २।१

तपः प्रभावाद्देवप्रसादाच्च ब्रह्म ह श्वेताश्वतरोऽथ विद्वान् श्वेता. ६।२१
तपाम्यहमहं वर्षम् भ.गी. ९।१९
तपांसि सर्वाणि च यद्वदन्ति । यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते पद संग्रहेण ब्रवीम्योम् कठो. २।१५
तपेद्वर्षसहस्राणि एकपादस्थितोनरः । एतस्य ध्यानयोगस्य कलां नार्हति षोडशीम् पैङ्गलो. ४।१५
तपो दम्भेन चैव यत् भ.गी. १७।१८
तपो दानं यशोऽयशः भ.गी. १०।५
तपोदीक्षामृषयः सुवर्विदः चित्त्यु. ११।९
(तत्र) तपो नाम विध्युक्तकृच्छ्रचान्द्रायणादिभिः शरीरशोषणं शांडि. १।२
तपो नानशनात्परमु यद्धि परं तपस्तदुर्द्धर्षं.. तस्मात्तपसि रमन्ते महाना. १६।१२
तपो नित्यः पौरुशिष्टिः तैत्ति. १।९।१
तपोनिधिं तपसां रथिन्दं... सुरवृन्दकर्त्रे स्वाहा पारमा. ७।१
तपो ब्रह्मेति [तैत्ति. ३।२+३,४,५
तपो मानसमुच्यते भ.गी. १७।१६
तपोऽवधिः परमा ब्राह्मणस्य इतिहा. ११
तपोविजितचित्तस्तु निःशब्दं देशमास्थितः । निःसङ्गतत्त्वयोगज्ञो निरपेक्षः शनैः शनैः क्षुरिको. २१
तपो हि स्वाध्याय इत्युत्तमं नाकं रोहति सह्वै. १८
तप्तकाञ्चनसङ्काशज्योतिर्मयूखा अपाङ्गान्ते भूमौ वा पश्यति तद्दृष्टिः स्थिराभवति अद्वयता. ३
तप्तचामीकराकारंतडिल्लेखेव विस्फुरत् ध्या बिं. ४६
तप्तायःपिण्डवदेकं भिन्नवदवभासते (शिवः-ब्रह्म) त्रि.ब्रा. १।१
तप्तो ब्रह्मचारी कुशलमग्नीन्परिचचारीन्मात्वाग्नयः परिप्रवोचं प्रभूवस्मा इति छान्दो.४।१०।२
तप्तो ब्रह्मचारी कुशलं नः पर्यचारीद्धन्तास्मै प्रब्रवामेति, तस्मै होचुः छान्दो.४।१०।४
ताप्यत्तापकरूपेण विभातमखिलं जगत् । प्रत्यगात्मतया भाति.. कठरु. ३९
तप्यन्ते ये तपो जनाः भ.गी. १७।५
तप्स्याम्यहमित्यादित्यो भास्याम्यहमिति चन्द्रमा एवमन्या देवताः.. बृह. १।५।२१
तम एव यस्यायतन हृदयं लोको मनो ज्योतिः.. बृह. ३।९।१४
तम एके ज्योतिरेकेऽवकाशमेके परमं व्योमैक आत्मानमेक इति (आहुः) आर्षे. २।३
तमक्रतुः (तुं) पश्यति वीतशोको धातुः प्रसादान्महिमान-(मीशं) मात्मनः महाना. ८।१
[ना.प.९।१३+शरभो.१९+ ना.उ.ता. १।३
[पारमा. ९।३+श्वेता.३।२०+ कठो. २।२०
तमग्निमभ्युवाद सत्यकाम ३इति छान्दो. ४।६।२
तमन्य इत्तमनं परिव्राट् पद एनं नियुजे परस्मिन् बा.मं. १
तमन्ये श्वान उपसमेत्योचुरन्नं नो भगवानागायत्वशनायाम वा इति छान्दो.१।१२।२
तमब्रुवन्–भवता मुख्येनेमान् सुराञ्जयेमेति २प्रणवो. ७
तमब्रवीत्प्रीयमाणो महात्मा वरं तवेहाद्य ददामि भूयः । तवैव नाम्ना भविताऽयमग्निः कठो. १।१६
तमभिद्रुत्य पाप्मनाऽविध्यत् [बृह. १।३।२-६
तमभ्यतपत्तस्याभितप्तस्य मुखं निरभिद्यत २ऐत. १।४
तमभ्यवदत्कोऽसीति केनो. ३।४।८
तमशनापिपासाभ्यामन्ववार्जत् २ऐत. २।१
तमशनायापिपासे अब्रूतामावाभ्यामभिप्रजानीहि २ऐत. २।५
तमसआपः(भवन्ति)[अ.शिर.१।१५ +चूडको. २७।४
तमसस्तु परंज्योतिः परमानन्दलक्षणम् । पादत्रयात्मकं ब्रह्म. त्रि.म.ना.८
तमसः परमुच्यते भ.गी. १३।१
तमसो सर्वस्य साक्षी नृसिंहो. २।२

तमसः साक्ष्यहं तुर्यतुर्योऽहं तमसः
परः। दिव्यो देवोऽस्मि दुर्दर्शः.. ब्र.वि. ९६
तमसा ग्रस्तवज्ज्ञानादग्रस्तोऽपि रवि-
र्जनैः। ग्रस्त इत्युच्यते भ्रान्त्या
ह्यज्ञात्वा वस्तुलक्षणम् २ आत्मो. १५
तमसो द्रष्टा सर्वस्य द्रष्टा नृसिंहो. १।१
तमसो भूतादिः (जायते) सुबालो. १।१
तमसो मा ज्योतिर्गमय बृ.उ. १।३।२८
[अक्ष्यु. २+ चाक्षुषो. २
तमस्त्वज्ञानजं विद्धि भ.गी. १४।८
तमस्येतानि जायन्ते भ.गी. १४।१३
तमहं कुमारमब्रुवं नाहमिमं वेद।
यद्यहमिममवेदिषं कथं ते नावक्ष्यम् प्रश्नो. ६।१
तमः परे देव एकीभवति सुबालो. २।२
‡तमः श्वभ्रनिभं दृष्टं वर्षबुद्बुदस-
न्निभम्। नाशप्रायं सुखाद्धीनं
नाशोत्तरमभावगम् वैतथ्य. ३२
तमः सत्त्वं रजस्तथा भ.गी. १४।१०
तमः सर्वभूतमधुनाध्वरेण तं सत्त्व-
मनुप्रविश्य संक्लेशयन्.. परब्रह्मणे
परे ज्योतिषि स्वाहा पारमा. १०।४
तमाक्रममाक्रम्योभयान् पाप्मन
आनन्दांश्च पश्यति बृह. ४।३।९
तमागतं पृच्छति कोऽसीति कौ.त. १।२
तमाचार्यजायोवाच ब्रह्मचारिन्नशान,
किं नु नाश्नासि छान्दो.४।१०।३
तमाचार्योऽभ्युवादोपकोसल ३ इति छान्दो.४।१४।१
तमात्मानमन्विच्छामो यमात्मान-
मन्विष्यथ सर्वा॰श्च लोका-
नाप्नोति छान्दो. ८।७।२
तमात्मस्थं येऽनुपश्यन्ति धीरा-
स्तेषा॰ सुख॰ शाश्वतं नेतरेषाम् कठो. ५।१२
तमात्मानमुपासीत [श्वेता.६।१२+ ब्रह्मो. १७
[अ.शिरः.. ३।११+बटु. १+ सदानं. ६+
[भवसं. २।१७+ सुबालो. ५।१–१४
तमादित्यं नत्वा भो भगवन्नादित्या-
त्मतत्त्वमनुब्रूहि मं.ब्रा. १।१
तमादित्यात् पुरुषो भास्करवर्णो
निष्क्रम्य स एनं प्राह्याश्चकार इतिहा. १

तमादिमध्यान्तविहीनमेकं विभुं...
ध्यात्वा मुनिर्गच्छति भूतयोनिं
समस्तसाक्षिं तमसः परस्तात् कैव. ७
तमभित आसीना आहुर्जानासि मां
जानासि मामिति स यावदस्मा-
च्छरीरादुत्क्रान्तोभवतितावज्जानाति छान्दो.८।६।४
तमाराध्य जगन्नाथं प्रणिपत्य
पितामहः-पप्रच्छ.. १यो.त. ३
तमाचार्योऽभ्युवाद सत्यकाम ३ इति छान्दो. ४।९।१
तमाह कोऽहमस्मीति सत्यमिति
ब्रूयात् कौ.त. १।६
तमाहुरग्र्यंपुरुषंमहान्तम् [श्वेता.३।१९ +ना.प.९।१४
तमाहुः पण्डितं बुधाः भ.गी. ४।१९
तमाहुः परमां गतिम् भ.गी. ८।२१
तमिच्छन्तावास्तामिति (मा.पा.)
'किमिच्छन्तावावास्तां' [इति तु
मुख्यः पाठः] छां.उ. ८।७।३
तमितरः पप्रच्छ—कतमस्त्वमनार्त
मन्यस इति [आर्षे.५।१ +७।१+९।१
तमित्थंवित्पादेनैवाग्र आरोहति, तं
ब्रह्माह कोसीत्ति तं प्रतिब्रूयात् कौ.त. १।५
तमिदन्द्र सन्तमिन्द्र इत्याचक्षते
परोक्षेण.. २ऐत. ३।१४
तमिन्द्र उवाच–ऋषे प्रियं वै मे
धामोपागाः.. १ऐत.२।२।२
तमिन्द्र निर्जहि गर्भेण सावर॰
सहेति (मा.पा.) बृ.उ. ६।४।२२
तमिन्द्र निर्जहि गर्भेण सावरा॰
सहेति बृ.उ. ६।४।२२
तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं
धियं.. [वनदु.४६।९९,७१,८२+
[ऋ.अ.१।६।१९= मं.१।८९।५+ वा. सं.२५।१८
तमीशानं पुरुषं देवमीड्यं ... अ.शिरः.३।८
तमीशानं वरदं देवमीड्यं निचाय्येमं
शान्तिमत्यन्तमेति श्वेता. ४।११
तमीश्वराणां परमं महेश्वरं... विदाम
देवं भुवनेशमीड्यम् श्वेता. ६।७

‡ 'स्वप्नमाये यथा' इत्येतस्या गौडपादीयकारिकायाः कारिकेयं शाङ्करे भाष्ये वर्तते।

तमुपदीक्ष्याभ्युवाद कुमार ३ इति बृह. ६।२।१
तमुपनीय कृशानामबलानां चतु-
 श्शता गा निराकृत्योवाच छान्दो. ४।४।५
तमुवाच हृषीकेशः [१यो.त. ४+ भ.गी.२।१०
तमु ह परः प्रत्युवाच कम्बर एव-
 मेतत्सन्तं[१] सयुग्वानमिव
 रैक्वमात्थेति छान्दो. ४।१।३
तमृचो मनुष्यलोकमुपनयन्ते, स तत्र..
 ब्रह्मचर्येण सम्पन्नो महिमान-
 मनुभवति प्रश्नो. ५।३
तमृत्वा सम्प्रतिविदो मन्यन्ति कौ.त. १।४
तमेकदन्तं गजवक्त्रमीशं विज्ञाय
 दुःखान्तमुपैति सद्यः हेरम्बो. ११
तमेकमेव पश्यन्ति परिशुभ्रं
 विभुं द्विजाः मंत्रिको. १६
तमेकनेमिं (तमेकस्मिन्) त्रिवृतं
 षोडशान्तं शतार्धारं विंशति-
 प्रत्यराभिः। अष्टकैः षड्भिर्विश्व-
 रूपैकपाशं त्रिमार्गभेदं..[श्वेता.१।४+ ना.प. ९।३
तमेकं गोविंदं सच्चिदानन्दविग्रहं
 ... मरुद्गणोऽहं परमया
 स्तुत्या स्तोष्यामि गो.पू. ४।४
तमेतन्नापुत्राय नान्तेवासिने
 वा ब्रूयात् बृह. ६।३।१२
तमेतमग्निरित्यध्वर्यव उपासते मुद्गलो. ३।१
तमेतमात्मानमेत आत्मनोऽन्ववस्यंति कौ.त. ४।२०
तमेतमात्मानमोमितिब्रह्मणैकीकृत्य.. नृसिंहो. १।२
तमेतमेष्टकं कर्ममयमात्मानमध्वर्युः
 संस्करोति कौ.उ. २।६
तमेतं ब्राह्मणा शुश्रुवांसोऽनूचाना
 उपलभन्ते सुबालो. ९।१५
तमेतं वेदानुवचनेन ब्राह्मणा विवि-
 दिषन्ति, यज्ञेन दानेन तपसाना-
 शकेन बृह. ४।४।२२
तमेतावन्तं कालमबिभः बृह. १।२।४
तमेताः सप्ताक्षितय उपतिष्ठन्ते बृह. २।२।२
तमेतैर्नामभिरामन्त्रयांचक्रे बृहन्
 पाण्डरवासः बृह. २।१।१५
तमेतैर्नामभिरामन्त्रयांचक्रे बृहन्
 पाण्डुरवासः (मा. पा.) बृ.उ. २।१।१५
तमेव चाद्यं पुरुषं प्रपद्ये भ.गी. १५।४
तमेव तत्तेजः पृष्टविड्भावं हैममुमां
 संश्लिष्य संश्लिष्य वसन्तं...
 शिवं मामेवाभिध्यायन्तो...
 मय्येव लीना भवन्ति भस्मजा. २।१६
तमेव धीरो विज्ञाय प्रज्ञां कुर्वीत
 ब्राह्मणः। नानुध्यायन्बहूञ्छब्दा-
 न्वाचो विग्लापनं हि तत् बृह. ४।४।२१
 [अ.पू.४।३७+शाट्या. २३+ वराहो. ४।३३
तमेव पापकारिणं मृतं पश्यन्नील-
 लोहितो भैरवस्तं पातयत्यग्नि-
 मण्डलेज्ज्वलज्ज्वलनकुण्डेष्वन्येष्वपि भस्मजा. २।१६
तमेव भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भासा
 सर्वमिदं विभाति कठो. ५।१५
 [मुण्ड. २।२।१०+ श्वेता. ६।१४
तमेव भुक्तिविरसं व्यापारौघं पुनः
 पुनः। दिवसे दिवसे कुर्वन्प्राज्ञः
 कस्मान्न लज्जते महो. ६।७६
तमेव मृत्युममृतं तमाहुः चित्त्यु. १४।१
तमेव विदित्वाऽतिमृत्युमेति नान्यः
 पन्था विद्यतेऽयनाय वा.सं. ३१।१८
 [+श्वेताश्व. ३।८+६।१५
तमेव शरणं गच्छ भ.गी. १८।६२
तमेव सकला वेदाः कथयन्ति
 परां गतिम् भवसं. २।४१
तमेवं ज्ञात्वा मृत्युपाशांश्छिनत्ति श्वेता. ४।१५
तमेव स्तन इवावलंबते वेददेवयोनिः ब्रह्मो. १
तमेवं ज्ञात्वा विद्वान्मृत्यु-
 मुखात्प्रमुच्यते ना.प. ९।१
तमेवं विद्वानमृत इह भवति महावा. ३
 [नृ.पू.१।६+त्रि.म.ना.४।३+
 [+चित्त्यु.१२।७+१३।१ तै.आ.३।१२
तमेवात्मानमित्येतद्ब्रह्मशब्देनवर्णितम् ना.प. ८।८
तमेवैकं जानथ आत्मानमन्यावाचो
 विमुञ्चथामृतस्यैष सेतुः मुण्ड. २।२।५

तमोङ्कारेणैवायतनेनान्वेति विद्वान्यत्तच्छांतमजरममृतमभयं परं चेति	प्रश्नो. ५।७
तमोद्वारैस्त्रिभिर्नरः	भ.गी. १६।२२
तमोमायात्मको रुद्रः	पा. ब्र. २
तमो मोहो महामोहस्तामिस्रो ह्यन्धसंज्ञितः। अविद्या पञ्चपर्वैषा निबध्नाति नृणां सदा	भवसं. ३।१०
तमोरूपश्चन्द्रः, रजोरूपो रविः	शाण्डि. १।४।६
तमो वा इदमेकमास	मैत्रा. ५।५
तमो वै तिरश्चीनमजरं तद्रजोऽभूत्	त्रिपुरो. ४
तमो हि शारीरप्रपञ्चमाब्रह्मस्थावरान्तमनन्ताखिलाजाण्डभूतम्	महा.वा. २
तया तुरीयं चतुरात्मानमन्विष्य चतुर्थपादेन च तया तुरीयेणानुचिन्तयन्ग्रसेत्	नृसिंहो. ३।१
तया त्वं विश्वतो अस्मानयक्ष्मया परिभुज	नीलरु. २।९
तयाऽपहृतचेतसाम्	भ.गी. २।४४
तया मुक्तंपुरंतद्धि मृतमित्यभिधीयते	गुह्यका. ३४
तया वाचा स्वरसम्पन्नयाऽऽर्त्विज्यं कुर्यात्	बृह. १।३।२५
तया सहायवान् देवः कृष्णपिङ्गलो ममेश्वर ईष्टे	शाण्डि.३।१।२
तयेदꣳ सर्वमाप्तꣳ सर्वमस्येदं दृष्टं भवति	छान्दो.४।३।८
तयैतर्हि वेदाननुभवत्यशानाथ मे विज्ञास्यसीति	छान्दो. ६।७।३
तयैतर्हि वेदाननुभवस्यन्नमयꣳ हि सोम्य मनः	छान्दो. ६।७।६
तयोरन्यतरां मनसा सꣳस्करोति ब्रह्मावाचा होताध्वर्युरुद्गाता..	छान्दो.४।१६।२
तयोरन्यः (जीवः) पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति [ऋ. अ.२।३।१७+ [अथर्व.	मुंड. ३।१।१ =मं.१।१६४।२० ९।९।२०
तयोरित्या परस्तात् प्रतिविहिता भूतमात्रा	कौ. उ. ३।५
तयोरेष सꣳस्रावो य एषोऽन्तर्हृदय आकाशोऽथैनयोरेतदन्नं..	बृह. ४।२।३
तयोर्ध्वमायन्नमृतत्वमेति विष्वङ्ङन्या उत्क्रमणे भवन्ति	कठो. ६।१६
तयोर्न वशमागच्छेत्	भ. गी. ३।३४
तयोर्मध्ये वरं स्थानं यस्तं वेद स वेदवित्	क्षुरिको. १७
तयोर्मिथुनात्प्रजायते भूयान् भवति	१ ऐत. ३।६।६
तयोर्वीर्यमेवमनन्दत्, तदवर्द्धत। तदण्डमभवद्धैमम्। तत्परिणममानमभूत्	अव्यक्तो. १
तयोर्ह मैत्रेयी ब्रह्मवादिनी बभूव स्त्रीप्रज्ञैव तर्हि कात्यायनी..	बृह. ४।५।१
तयोस्तु कर्मसन्न्यासात्	भ.गी. ५।२
तयोः कर्म परस्तात् प्रतिविहिता भूतमात्रा	कौ. उ. ३।५
तयोः कामेश्वरी सदानन्दघना परिपूर्णस्वात्मैक्यरूपा देवता	भावनो. ७
तयोः श्रेय आददानस्य भवति, हीयतेऽर्थाद्य उ प्रेयो वृणीते	कठो. २।१
तयोः संयोजनमसीत्यर्थे तत्त्वविदो विदुः। नमस्त्वमर्थो विज्ञेयो रामस्तत्पदमुच्यते	रामर. ५।१४
तरङ्गमालयासिन्धुर्बद्धश्चेदस्त्विदं जगत्	ते. बिं. ६।८३
तरङ्गस्थं द्रवं सिन्धुर्नवाञ्छति यथा तथा। विषयानन्दवाञ्छा मे माभूदानन्दरूपतः	आ. प्र. १६
तरणिर्विश्वदर्शतः [ऋ.अ. १।४।८= [मं. १।५०।१०	चित्सु. १६।१
तरति शोकमात्मविदिति सोऽहं भगवः शोचामि तं मा भगवाञ्छोकस्य पारं तारयत्विति	छां. ७।१।३
तरति शोकं तरति पाप्मानं गुहाग्रन्थिभ्यो विमुक्तोऽमृतो भवति	मुण्ड. ३।२।९
तरवोऽपि हि जीवन्ति जीवन्ति मृगपक्षिणः। स जीवति मनो यस्य मननेनोपजीवति	महो. ३।१३
तर्कतश्च प्रमाणाच्च चिदेकत्वव्यवस्थितेः। चिदेकत्वपरिज्ञाने न शोचति न मुह्यति[अ.पू.४।२४	तद्ब्रह्म. २६

तर्कैर्जल्पैः शास्त्रजालैः..न वशो जायते प्राणः सिद्धोपायं विना.. यो.शि. १।६१
तर्जनीमध्यमानामिकाभिरग्नेभस्मासीति भस्म संगृह्य.. भस्मजा. १।५
तर्जन्यग्रोन्मीलितकर्णरन्ध्रद्वये फूत्कारशब्दो जायते, तत्रस्थिते मनसि.. ज्योतिः पश्यति मं.ब्रा. १।३
तर्जन्यग्रोन्मीलितकर्णरन्ध्रद्वये.. ज्योतिःस्थलं विलोक्यान्तर्दृष्ट्या निरतिशयसुखं प्राप्नोति अद्वयता. २
तर्पणं मार्जनं चान्यत्र कुर्यात्तुलसीं विना तुलस्यु. १६
तर्याभिघातिनोऽनृताभिशंसिनः सत्यमिवानृतं पश्यन्ति मैत्रा. ७।१०
तलं तलातलं चैव... पादाङ्गुल्यः प्रकीर्तिताः गुह्यका. १९
तल्लक्ष्यं (आत्मलक्ष्यं) शुद्धात्मदृष्ट्या वा यः पश्यति स एव ब्रह्मनिष्ठो भवति मं.ब्रा. १।५
तल्लक्ष्यं परिपूर्णे मयि समभ्यसेत् , मनोलयकारणमहमेव मं.ब्रा. ५।१
तल्लयाच्छुद्धाद्वैतसिद्धिर्भेदाभावात् मं.ब्रा. ५।१
तल्लीलाकथा परा काष्ठा सामर. ४४
तव देवा हवमायन्ति सर्वे चित्यु. १४।३
तव पुत्रान्भ्रातॄन् वन्ध्वादीन् शिखां यज्ञोपवीतं... भूर्लोकभुवर्लोक... अतलतलातल... ब्रह्माण्डंच विसृजेत् आरुणि. १
तव वाय वृतस्पते त्वष्टुर्जामातरद्भुत [ऋ. अ. ६।२।३०= मं. ८।२६।२१+ [वा.सं.२७।३४+वनदु. ४४,५७,६९।८०
तव शिष्येण धीमता भ.गी. १।३
तव सौम्यं जनार्दन भ.गी. ११।५१
तवापि वक्त्राणि समृद्धवेगाः भ.गी. ११।२९
तस्थुस्तस्थुषां जङ्गमो जङ्गमानां पारमा. १।२
तवैव नाम्ना भविताऽयमग्निः कठो. १।१६
तवैव नाहास्तव नृत्यगीतं (मा.पा.) कठो. १।२६
तस्मा अरं गमाम वः [ऋ.अ.७।६।५ =मं. १०।९।३ [वा. सं. ११।५२+तै.आ.४।४२।४ महाना. ५।१४
तस्मा आदित्याश्च विश्वे च देवास्तृतीयꣳ सवनꣳ संप्रयच्छन्ति छां. २।२४।१६
तस्मा आसनमाहृत्योदकमाहारयाञ्चकार बृह. ६।२।४
तस्मा आहुते रेतः सम्भवति छान्दो. ५।७।२
तस्मा उ हैतदुवाच वीत्यन्नं वैति बृह. ५।१२।१
तस्मा एतौत शुश्रूयन्ते । चित्तꣳ ह्येवैषामेकायनं, चित्तमात्मा छान्दो.७।५।२
तस्मा उ ह ददुस्ते वा एते पञ्चान्ये दश सन्तस्तत्कृतां.. (मा.पा.) छां.उ. ४।३।८
तस्मा उ ह ददुस्ते वा एते पञ्चान्ये पञ्चान्ये दशसन्तस्तत्कृतं.. छान्दो. ४।३।८
तस्माच्च (परब्रह्मणः) देवा बहुधा सम्प्रसूताः मुण्ड. २।१।७
तस्माच्चित्तंस्थिरंकुर्यात् प्रज्ञयापरया विधे । चित्तं कारणमर्थानां.. यो.शि. ६।५८
तस्माच्चेन्न प्रमाद्यति (ब्रह्मज्ञानात्) शरीरे पाप्मनो हित्वा सर्वान् कामान्समश्नुते तैत्ति. २।५
तस्माच्छतर्चिन इत्याचक्षत एतमेव सन्तम् १ऐत. २।१।१
तस्माच्छतं वर्षाणि पुरुषायुषो भवन्ति १ ऐत. २।१।१
तस्माच्छनैः शनैः कार्यमभ्यासं.. (प्राणान्तसम्भवात्) योगकु. २।४७
तस्माच्छमः परमं वदन्ति महाना. १७।४
तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते भ. गी. १६।२
तस्माच्छेषादेव सर्वाणि समुत्पद्यन्ते सङ्कर्षणो. १
तस्माच्छ्रद्धया यां काञ्चिद्गां दद्यात् सा दक्षिणा.. नृ. पू. ५।८
तस्माच्छ्राम्यत्येववाक् । श्राम्यतिचक्षुः बृह. १।५।२१
तस्माच्छान्तिः, तस्याः श्वेतवर्णा सुशीला (गौः) वृ. जा. १।६
तस्माच्छान्त्यतीता , तस्याश्चित्रवर्णा (गौः) वृ. जा. १।६
तस्माच्छुक्लतेजोमयं ब्रह्मेति सिद्धम् अद्वयता. ५
तस्माज्जागतंतृतीयसवनमादित्यानाम् शौनको. ५।२

तस्माज्जाता अजावयः [चित्त्यु.१२।५ वा. सं.३१।८
[ऋ. अ. ८।४।१८= मं.१०।९०।१०

तस्माज्जाता परा शक्तिः स्वय-
ज्ज्योतिरात्मिका यो. चू. ७२

तस्माज्ज्ञानं च योगं च मुमुक्षुर्दृढ-
मभ्यसेत् १ यो. त. १५

तस्माज्ज्ञानं च वैराग्यं जीवस्य
केवलं श्रमः यो. शि.१।३२

तस्माज्ज्ञानं भवेद्योगाज्जन्मनैकेन,.
तस्माद्योगं.. नित्यमभ्यसेत् यो. शि.१।६६

तस्मात्कारणं ब्रूमो वर्णानामयमिदं
भविष्यतीति षडङ्गविदस्तथा
धीमहि २ प्रणवो. १७

तस्मात् काल एव दद्यात् काले
न दद्यात् १ ऐत. ३।६।६

तस्मात्कुमारं जातं घृतं वैवाग्रे प्रति-
लेहयन्ति, स्तनं वानु धापयन्ति बृह. १।५।२

तस्मात्क्षत्रात्परं नास्ति, तस्माद्ब्राह्मणः
क्षत्रियमधस्तादुपास्ते बृह. १।४।११

तस्मात्क्षुद्रसूक्ता इत्याचक्षत
एतमेव सन्तम् १ ऐत. २।२।५

तस्मात्खेचरीमुद्रामभ्यसेत् , तत
उन्मनी... योगनिद्रा... शाण्डि.१।७।१८

तस्माच्च ईश्वरान्पशूनधीव चरन्ति १ ऐत. ३।१।३

तस्मात्तत्प्राप्तये (भगवद्दर्शनाय)
यत्नः कर्तव्यः पण्डितैर्नरैः भवसं. १।३२

तस्मात्तत्समाचरेन्मुमुक्षुर्नपुनर्भवाय क.रुद्रो. ३

तस्मात्तत्सर्वमभवत् (ब्रह्मणः) बृ.उ.१।४।१०

तस्मात्तत्सुकृतमुच्यते तैत्ति. २।७

तस्मात्तदा तृण्णात्प्रैति रसो
वृक्षादिवाहतात् बृह. ३।९।२८

तस्मात्तदेवोपत्नीतेति
तदेवोपासीत शौनको. ४।५

तस्मात्तदैन्द्रात् प्राणाद्वहत्यै
वाचमनुष्टुभं तन्वं सन्निर्मिमीते १ऐत. ३।६।३

तस्मात्तपः परमं वदन्ति महाना.२।४

तस्मात्तमः सञ्जायते, तमसो भूतादिः सुबालो. १।१

तस्मात्तयोभयं वदति सत्यं चानृतंच,
पाप्मना ह्येष विद्धः छान्दो.१।२।३

तस्मात्तत्र बहु विश्वरूपं कुले दृश्यते छान्दो.५।१३।१

तस्मात्तव सुतं प्रसुतमासुतं कुले..
दृश्यते छांदो. ५।१२।१

तस्मात्तस्मान्न बीभत्सेत १ऐत.३।७।२,२

तस्मात्तस्य (मनसः) जयोपायः
प्राण एव हि नान्यथा यो.शि. १।६०

तस्मात्तस्योदयं प्रति प्रत्यायनं
प्रतिघोषा उल्लूलवोऽनूदतिष्ठंव छांदो.३।१९।३

तस्मात्तान्निदधति निधनभाजिनो
ह्येतस्य साम्नः छांदो.२।९।८

तस्मात्तान्यन्तरिक्षेऽनारम्भणान्यादा-
यात्मानं परियन्त्यादिभाजीनि
ह्येतस्य साम्नः छान्दो. २।९।४

तस्मात्तारक एव लक्ष्यममनस्क-
फलप्रदं भवति अद्वयता. ४

तस्मात्तां राधां रसिकानन्दां
वेदविदो विदन्ति सामर. ५

तस्मात्तुल्योऽधिको नहि (ईशात्) शरभो. ३०

तस्मात्तेनोभयं जिघ्रति सुरभि च
दुर्गन्धि च पाप्मना ह्येष विद्धः छान्दो. १।२।२

तस्मात्तेनोभयं पश्यति दर्शनीयं
चादर्शनीयं च पाप्मनाह्येतद्विद्धम् छान्दो. १।२।४

तस्मात्तेनोभयं शृणोति श्रवणीयं
चाश्रवणीयं च.. छान्दो. १।२।५

तस्मात्तेनोभयं सङ्कल्पयते
सङ्कल्पनीयं चासङ्कल्पनीयं च.. छान्दो. १।२।६

तस्मात्ते पुरुषं दृष्ट्वा कक्ष श्वभ्रमित्यु.
पद्रवन्त्युपद्रवभाजिनोह्येतस्यसाम्नः छान्दो.२।९।७

तस्मात्ते प्रतिहता नावपद्यन्ते परि-
हारभाजिनो ह्येतस्य साम्नः छांदो. २।९।६

तस्मात्ते प्रस्तुतिकामाः प्रशंसाकामाः
प्रस्तावभाजिनो ह्येतस्य साम्नः छान्दो. २।९।२

तस्मात्तेषां सर्वे च लोका आप्ताः,
सर्वे च कामाः, स सर्वांश्च
लोकानाप्नोति छान्दो.८।१२।६

तस्मात्ते सत्तमाः प्राजापत्याना-
मुद्गीथभाजिनो ह्येतस्य साम्नः छान्दो. २।९।५

तस्मात्ते हिङ्कुर्वन्ति हिङ्कारभाजिनो
ह्येतस्य साम्नः छान्दो. २।९।२

वाक्य	स्थान
तस्मात् त्रिगुणं भोज्यं भोक्ता पुरुषोऽन्तरस्थः	मैत्रा. ६।१०
तस्मात्त्वमपि सर्वोपायान्परित्यज्य भक्तिमाश्रय भक्तिनिष्ठो भव	त्रि.म.ना. ८।४
तस्मात्त्वमस्माज्जातवेदो मुमुग्धि	...
तस्मात्त्वमिन्द्रियाण्यादौ	भ.गी. ३।४१
तस्मात्त्वमुत्तिष्ठ यशो लभस्व	भ.गी. ११।३३
तस्मात्त्वमेववक्ता त्वमेवगुरुस्त्वमेव पिता त्वमेव सर्वनियन्ता...	त्रि.म.ना. १।१
तस्मात्त्वं प्रतिष्ठितोऽसि प्रजया च पशुभिश्च	छान्दो.५।१७।१
तस्मात्त्वं बहुलोऽसि प्रजया च धनेन च	छान्दो.५।१५।१
तस्मात्त्वं रयिमान्पुष्टिमानसि	छान्दो.५।१६।१
तस्मात्त्वां पृथग्बलय आयन्ति पृथग्रथश्रेणयोऽनुयन्ति	छान्दो.५।१४।१
तस्मात्पदमित्याचक्षत एतमेव सन्तम्	१ऐत. २।२।९
तस्मात् परमेश्वर एवैकमेव तद्भवति [नृसिंहो.८।४+	८।८
तस्मात्पराङ्पश्यति नान्तरात्मन्	कठो. ४।१
तस्मात्पावत्रयं परममोक्षः	त्रि.म.ना. ८।२
तस्मात्पावमान्य इत्याचक्षत एतमेव सन्तम्	१ऐत. २।२।४
तस्मात्पुत्रमनुशिष्टं लोक्यमाहुस्तस्मादेनमनुशासति	बृह. १।५।१७
तस्मात्पुरुष ओषति ह वै स तं योऽस्मादपि	बृह. १।४।१
तस्मात्पुरुषं पुरुषं सत्यादित्यो भवति	१ऐत. २।३।२
तस्मात्पौरुषमाश्रित्य सच्छास्त्रैः सत्समागमैः	भवसं. १।५०
तस्मात्प्रकाशात्मा (नारायणः)	ना.उ.ता. १।५
तस्मात्प्रगाथा इत्याचक्षत एतमेव सन्तम्	१ ऐत. २।२।३
तस्मात्प्रजननं परमं वदन्ति	महाना. १७।७
तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय कायं	भ. गी. ११।४४
तस्मात्प्रणव एव प्राणायामः	शाण्डि.१
तस्मात्प्राणो वै तुर्याख्ये धारयेत्प्राणमित्येवं	मैत्रा. ६।१९
तस्मात्प्रत्यक्षरमुभयतओङ्कारोभवति	नृ. पू. २।२
तस्मात्सञ्चालयेन्नित्यं शब्दगर्भां सरस्वतीम् । तस्याःसञ्चालनेनैव योगी रोगैः प्रमुच्यते	योगकुं. १।१७
तस्मात्स तेन बन्धुना यज्ञेषु हूयते	१ ऐत. २।४।२
तस्मात्समस्ताविद्योपाधिः साकारः सावयव एव	त्रि.म.ना.२।१
तस्मात्सत्यं परमं वदन्ति	महाना. १७।१
तस्मात्सत्यं वदन्तमाहुर्धर्मं वदतीति	बृह. १।४।१४
तस्मात् सद्गुरुकटाक्षविशेषेण सर्वे सिद्धयः सिद्ध्यन्ति	त्रि.म.ना.५।४
तस्मात्सद्गुरुकटाक्षलेशविशेषणाचिरादेव तत्त्वज्ञानं भवति	त्रि. म.ना.५।४
तस्मात्सर्गस्वर्गापवर्गहेतुर्भगवानसावादित्यः	मैत्रा. ६।२०
तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म	भ. गी. ३।१५
तस्मात्सर्वदेवत्यं प्रोक्षितं प्राजापत्यमालभन्त	बृह. १।२।७
तस्मात्सर्वप्रयत्नेनघृतादीन्वर्जयेद्यतिः । घृतसूपादिसंयुक्तमन्नं नाद्यात्कदाचन	सं.सो. २।७६
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन प्राणायामान्समभ्यसेत्	जा. ६।२०
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन मोक्षापेक्षी भवेद्यतिः	परम. ३१
तस्मात् सर्वप्रपञ्चोऽयं ब्रह्मैवास्ति न चेतरत्	यो. शि. ४।३
तस्मात् सर्वमानुष्टुभमित्याचक्षते यदिदं किञ्च [नृ. पू. १।१+	ग. पू. १।६
तस्मात्सर्वमापोमयं भूतं सर्वं भृग्वङ्गिरोमयं...	२प्रणवो. २१
तस्मात्सर्वाणि भूतानि	भ.गी. २।३०
तस्मात्सर्वात्मना चित्ते भासमानो ह्यसौ नरः । आनन्दयति दुःखाढ्यं जीवात्मानं..	कठरु. २८
तस्मात् सर्वायुषमुच्यते सर्वमेव त आयुर्यन्ति	तैत्ति. २।३

तस्मात्सर्वासु दिक्ष्वन्नमेव दशकृतं.. छान्दो. ४।३
तस्मात्सर्वानुष्टुभं जानीयाद्यो जानीते
सोऽमृतत्वं च गच्छति नृ.पू.उ. २।३
तस्मात्सर्वेषु कालेषु [भ.गी. ८।७+८।२७
तस्मात्सर्वौषधमुच्यते (अन्नं) तैत्ति. २।२।२
तस्मात्संवत्सरोवैप्रजापतिः कालोऽन्नं
ब्रह्मनीडमात्मा चेत्येवं ह्याह मैत्रा. ६।१५
तस्मात्सुक्थमित्याचक्षतएतमेवसन्तम् १ऐत.२।२।६
तस्मात्सौम्य प्रयत्नेन...भोगेच्छां
दूरतस्त्यक्त्वात्रयमेव समाश्रय मुक्तिको. २।१५
तस्मात् स्त्रियमध उपासीत बृह. ६।४।२
तस्मात् स्थूलविराट्स्वरूपो जायते त्रि.म.ना. २।६
तस्मात्स्वयमेव समाराधनमकरोत् सामर. ३
तस्मादकारेण परमं ब्रह्मान्विष्य,
मकारेण.. मनआदिसाक्षिण-
मन्विच्छेत् नृसिंहो. ७।५
तस्मादक्षरमित्याचक्षतएतमेवसन्तम् १ऐत. २।२।१०
तस्मादक्षरान्महत्, महतोऽहङ्कारः,
तस्मादहङ्कारात्पञ्चतन्मात्राणि गोपालो. २।१३
तस्मादखण्ड एवास्मि यन्मदन्यन्न
किञ्चन। दृश्यते श्रूयते यद्ब्रह्मणो-
ऽन्यन्न तद्भवेत् वराहो. ३।१
तस्मादखण्डं मम रूपमेतत् वराहो. ३।४
तस्मादग्नावेव देवेषु लोकमिच्छंते,
ब्राह्मणे मनुष्येष्वेताभ्यां
हि रूपाभ्यां ब्रह्माभवत् बृह.१।४।१५
तस्मादग्निर्यष्टव्यश्चेतव्यः स्तोतव्यो-
ऽभिध्यातव्यः मैत्रा. ६।३४
तस्मादग्निहोत्रं परमं वदन्ति महाना. १७।९
तस्मादग्निः समिद्धो यश्च सूर्यः (मा.) मुण्डको.२।१।५
तस्मादग्निः समिधो यस्य सूर्यः सोमा-
त्पर्जन्य ओषधयः पृथिव्याम् मुण्ड. २।१।५
तस्मादग्नीन् परमं वदंति महाना. १७।८
तस्मादज्ञानसम्भूतं भ.गी. ४।४२
तस्मादणिमादिसिद्धिर्भवति अद्वयता. ७
तस्मादतिसृष्टिः , अतिसृष्टयाᳫ
हास्यैतस्यां भवति बृह. १।४।६
तस्मादद्वैत एवास्मि न प्रपञ्चो न
संसृतिः अ.पू. ५।७६

तस्मादद्वैतमेवास्ति न प्रपञ्चो न
संसृतिः ज्ञा.द. १०।३
तस्मादनिष्टमेवेष्टमिव भाति त्रि.म.ना.५।३
तस्मादन्तर्दृष्ट्या तारक एवानुसन्धेयः अद्वयता. ५
तस्मादन्तःकरणमतिविमलं भवति त्रि.म. ना. ७।४
तस्मादन्नं ददत्सर्वाण्येतानि ददाति म.ना. १७।१२
तस्मादन्यन्न परं किञ्चनास्ति
[अ.शिरः ३।१४+ बटुको. २५
तस्मादन्यगता वर्णा आश्रमा अपि
नारद। आत्मन्यारोपिताः सर्वे
भ्रान्त्या तेनात्मवादिना ना.प. ६।२०
तस्मादन्योन्यमाश्रित्य ह्योतं प्रोत-
मनुक्रमात् त्रि.ब्रा. २।४
तस्मादन्वक्षरं प्रयुञ्जानः स्वरवन्ति
व्यञ्जनानि यथाक्षरं दर्शयेत् संहितो. २।४
तस्मादपक्वकषाय इममेवोङ्काराग्र-
विद्योतं तुरीयतुरीयमात्मानं
नृसिंहानुष्टुभैव जानीयात् नृसिंहो. ६।१
तस्मादपरिहार्येऽर्थे भ.गी. २।२७
तस्मादपि दीक्षितमाहुः सत्यं वदेति।
सत्ये ह्येव दीक्षा भवति बृह. ३।९।२३
तस्मादपि पृष्ठत उपस्पृष्टो मनसा
विजानाति बृह. १।५।३
तस्मादपि प्रतिरूपं जातमाहुः ,
हृदयादिव सृप्तो हृदयादिव
निर्मित इति बृह. ३।९।२२
तस्मादप्यद्येहाददानमश्रद्दधान-
मयजमानमाहुः छान्दो. ८।८।५
तस्मादप्येतर्ह्यामन्त्रितोऽहमयमित्ये-
वाग्र उक्त्वाऽथाऽन्यन्नाम प्रब्रूते बृ.उ. १।४।१
तस्मादप्येतर्ह्येकाकी कामयते जाया
मे स्यादथ प्रजायेय बृह. १।४।१७
तस्मादप्राणन्ननपानन्नुद्गायति छान्दो. १।३।४
तस्मादप्राणन्ननपानन्नृच-
मभिव्याहरति छान्दो. १।३।४
तस्मादत्रय इत्याचक्षतएतमेव सन्तं १ ऐत. २।१।६
तस्मादप्राणन्ननपानन्साम गायति छान्दो. १।३।४
तस्मादप्राणन्ननपानन्वाचमभि-
व्याहरति छान्दो. १।३।३

तस्माद्व्यध्यूढ५ साम गीयत इयमेव साऽग्निरमस्तत्साम छान्दो. १।६।१
तस्मादभ्यासयोगेन मनः प्राणान् निरोधयेत् त्रि.ब्रा. २।२१
तस्मादयमाकाशः स्त्रिया पूर्यत एव ता५ समभवत्ततो मनुष्या अजायन्त बृह. १।४।३
तस्मादयं बिल्ववनस्पतिर्महान् समस्त-देवर्षिसुतीर्थरूपः १ बिल्वो. ६
तस्मादर्धर्च इत्याचक्षत एतमेव सन्तम् १ ऐत. ३।२।८
तस्मादलिङ्गो धर्मज्ञो ब्रह्मलिङ्गमनुव्रतम् । ...अज्ञातचरितं चरेत् ना.प. ४।३५
तस्मादविमुक्तमेव निषेवेत [रामो.१।१ तारसा. १।१
तस्मादव्यक्तमेकाक्षरम् गोपालो. २।१३
तस्मादश्वा अजायन्त [पु.सू. ८+ चित्यु. १२।५
[ऋ.म.८।४।१८=मं.१०।९०।१०+ वा.सं. ३१।८
तस्मादसक्तः सततं भ.गी. ३।१९
तस्मादसतः सज्जायेत छान्दो. ६।२।१
तस्मादसतः सज्जायत इति (मा.पा.) छान्दो. ६।२।१
तस्मादहङ्कारनामाऽनिरुद्धः सङ्कर्षणो. १
तस्मादहङ्कारात्पञ्च तन्मात्राणि गोपालो. २।१३
तस्मादहमिति सर्वाभिधानं तस्यादि-त्यमकारः नृसिंहो. ७।२
तस्मादहं च तस्मिन्नेवावस्थीयते प.हं. २
तस्मादहं पशुपाशविमोचकः भस्मजा. २।७
तस्मादहं रुद्रो यः सर्वेषां परमागतिः भस्मजा. २।५
तस्मादाकाशजं बीजं विन्यात् त्रि.ता. ५।२२
तस्मादाकाशं बीजं विद्यात्, तदेव ज्यायः नृ.पू. ३।५
तस्मादाकाशं बीजं शिवो विद्यात् ग.पू. २।९
तस्मादात्मज्ञं ह्यर्चयेद्भूतिकामः मुण्ड. ३।१।१०
तस्मादात्मन आकाशः, आकाशाद्वायुः त्रि.ता. १।१४
तस्मादात्मन आकाशः सम्भूतः पैङ्गलो. १।३
तस्मादात्मन्यहङ्कारमुत्सृज्य... मोक्षोपायं विचिन्तयेत् शिवो. ७।११६
तस्मादात्मानमेवैनं जानीयात् नृसिंहो. ५।४
तस्मादादिगणेशो भवानुच्यते ग.शो. ४।५
तस्मादादित्यात्मा ब्रह्म मैत्रा. ६।१६
तस्मादानन्दमयोऽयं लोकः सामर. ५

तस्मादापेरोङ्कारः सर्वमाप्नोतीत्यर्थः २प्रणवो. १४
तस्मादार्त्विज्यं करिष्यन् वाचि स्वर-मिच्छेत तया वाचा स्वरसम्पन्नयाऽऽर्त्विज्यं कुर्यात् बृह. १।३।२५
तस्मादाहुर्बलं सत्यादोजीयः बृह. ५।१४।४
तस्मादाहुर्विद्योतयतेस्तनयति..(मा.पा.) छां.उ.७।११।१
तस्मादाहुर्विद्योतते स्तनयति वर्षिष्यति वा छां. ७।११।१
तस्मादाहुःसोष्यत्यसोष्टेतिपुनरुत्पादन-मेवास्य तन्मरणमेवास्यावभृथः छांदो.३।१७।५
तस्मादिति च मंत्रेण जगत्सृष्टिः समीरिता । वेदाहमिति मन्त्राभ्यां वैभवं कथितं हरेः मुद्गलो. १।८
तस्मादित्यैव न्यूङ्खयन्ति शौनको. ३।४
तस्मादिदन्द्रो नामेदन्द्रो ह वै नाम तमिदन्द्रं सन्तमिन्द्र इत्याचक्षते २ऐत. ३।१४
तस्मादिदमर्धबृगलमिव स्व इति ह स्माह याज्ञवल्क्यः बृह. १।४।३
तस्मादिदमानुष्टुभं साम यत्र कश्चिन्नाचष्टे ग.पू. २।१
तस्मादिदमेव मुख्यद्वारं कलौ नान्येषां भवति तस्मादिदं साङ्गं साम जानीयात् । यो जानीते सोऽमृतत्वं च गच्छति नृ. पू. १।५
तस्मादिदं जगत्सर्वं वैष्णवं..तथैव धर्मविज्ञानं वैदिकं वैष्णवं.. भवसं. ५।१६
तस्मादिदं साङ्गं साम जानीयात्, यो जानीते सोऽमृतत्वंच गच्छति नृ.पू. १।३
तस्मादिदं साम मध्यमं जपति नृ.पू. १।७
तस्मादिदं साम यत्र कुत्रचिन्नाचष्टे । यदि दातुमपेक्षते ...पुत्राय.. दास्यत्यन्यस्मै शिष्याय वा नृ.पू. १।४
तस्मादिदं साम येन केनचिदाचार्य-मुखेन यो जानीते स तेनैव शरीरेण संसारान्मुच्यते नृ.पू. १।५
तस्मादिदं साम सच्चिदानन्दमयं परं ब्रह्म, तमेवं विद्वानमृत इह भवति नृ.पू. १।६
तस्मादिदं सामाङ्गं प्रजापतिः नृ.पू.१।७

तस्मादिन्द्रो देवानां (मध्ये) अधिकोऽभवत् अव्यक्तो. ६
तस्मादिमाः प्रजाः प्रजायन्त प्रश्नो. १।१४
तस्मादीशानो महादेवो महादेवः महो. १।३
तस्मादीश्वरःकामोऽभिधीयते। तत्परिभाषया कामः ककारं व्याप्नोति त्रि.ता. १।५
तस्मादुच्यते उग्रमिति नृ.पू. २।४
तस्मादुच्यते ज्वलन्तमिति नृ. पू. २।७
तस्मादुच्यते दत्तात्रेय इति शांडि. ३।२।१
तस्मादुच्यते नमामीति नृ.पू. २।१३
तस्मादुच्यते नृसिंहमिति नृ.पू. २।४।२।९
तस्मादुच्यते भगवान्महेश्वरः अ.शिर. ३।५
तस्मादुच्यते भद्रमिति नृ.पू. २।११
तस्मादुच्यते भीषणमिति नृ.पू. २।१०
तस्मादुच्यते महाविष्णुमिति नृ.पू. २।६
तस्मादुच्यते मृत्युमृत्युमिति नृ.पू. २।१२
तस्मादुच्यते वीरमिति नृ.पू. २।५
तस्मादुच्यते सर्वतोमुखमिति नृ.पू. २।८
तस्मादुज्जृम्भते कामः कामात्कामः परः शिवः। काणोऽयं(काष्णोऽयं) कामदेवोऽयं वरेण्यं भर्ग उच्यते त्रि.ता. १।१२
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय भ.गी. २।१७
तस्मादुत्तिष्ठंतं ह वा तानि रक्षांस्यादित्यं योधयन्ति याव... सहवै. २
तस्मादुतेषुचवर१ वृणीतयंकामंकामयेतत२ स एष एवंविदुद्गातात्मने वा..यं कामं कामयते तमागायति बृह. १।३।२८
तस्मादुपसंहर्त्रे महाग्रासाय वै नमोनमः अ.शिरः. ३।३
तस्मादुपाखिलात् (गुरोः) सम्यक् सहजं प्राप्यते गुरोः।.. सततमात्माभ्यासरतो भवेत् अमन.२।४७
तस्मादु ब्रह्मणस्पतिः बृ.उ.१।३।२१
तस्मादु हैवंविदुद्गाता ब्रूयात् छां.उ.१।७।८
तस्मादु सर्वेषु लोकेषु क्षत्रस्यैव प्रशासनमभूत् छान्दो.५।३।७
तस्मादु हैवंविद्यद्यपि चाण्डालायोच्छिष्टं प्रयच्छेदात्मनि हैवास्य तद्वैश्वानरे हुतं स्यात् छान्दो.५।२४।४
तस्माद्दृगित्याचक्षत एतमेव सन्तम् १ऐत. २।२।७
तस्माद्दृग्यजुस्सामान्यपक्रान्ततेजांस्यासन् २प्रणवो. १९
तस्माद्दृचः साम यजूंषि दीक्षा यज्ञाश्च सर्वे क्रतवो दक्षिणाश्च मुण्ड. २।१।६
तस्मादेकमेव व्रतं चरेत् प्राण्याच्चैवापान्याच्च बृह. १।५।२३
तस्मादेकाकी न रमते स द्वितीयमैच्छत् स हैतावानास बृह. १।४।३
तस्मादेत ऋषयः प्रजाकामा दक्षिणं प्रतिपद्यंते प्रश्नो. १।९
तस्मादेत एतेनाख्यायन्ते प्राणा इति तेन ह वा तत्कुलमाचक्षते यस्मिन्कुले भवति बृह. १।५।२१
तस्मादेतत्पवित्रं तस्य न्यसनम् नृ.षट्च. ७
तस्मादेतत्पुरुषसूक्तार्थमतिरहस्यं राजगुह्यं देवगुह्यं गुह्यादपि गुह्यतरं नादीक्षितायोपदिशेत् मुद्गलो. ५।१
तस्मादेतदुभयमलोमकमन्तरतोऽलोमका हि योनिरन्तरतः बृह. १।४।६
तस्मादेतत् त्रयं त्यजेत् भ.गी. १६।२१
तस्मादेतद्ब्रह्म नाम रूपमन्नं च जायते मुण्ड. १।१।९
तस्मादेतमेवोकथमुपासीत कौ.त. ३।३
तस्मादेतानि ब्रह्मैव भवंतीति... यो.शि. ४।९
तस्मादेतानिषण्णां नारसिंहचक्राण्येतेष्वङ्गेषु न्यस्यानि भवन्ति नृ.षट्च. ७
तस्मादेतां तुरीयां श्रीकामराजीयामेकादशधा भिन्नामेकाक्षरं ब्रह्मेति यो जानीते स तुरीयं पदं प्राप्नोति त्रि.ता. ५।२३
तस्मादेतां रात्रिं प्राणभृतः प्राणं न विच्छिन्द्यात् बृह. १।५।१४
तस्मादेते ऋषयः शुक्लं इष्टिं कुर्वन्ति, इतर इतरस्मिन् प्रश्नो. १।१२
तस्मादेनमनुशासति बृह. १।५।१७
तस्मादेनं नित्यमावर्तयेत् गो.पू. ३।११
तस्मादेनं विदित्वैनं भ.गी. २।२५
तस्मादेनं सर्वस्मात् पुत्रो मुञ्चति, तस्मात्पुत्रो नाम बृ.उ. १।५।१७

तस्मादेनं स्वपितीत्याचक्षते, स्वं॰ ह्यपीतो भवति — छान्दो. ६।८।१
तस्मादेनां (स्त्रियं) न हिनस्ति — २ऐत. ४।२
तस्मादेव (आकाशात्) जातानि जीवन्ति (भूतानि) — त्रि.ता. ५।२२
तस्मादेव दृढतरदेहात्मभ्रमो भवति — त्रि.म.ना. ६।१
तस्मादेव परोरजसेति सोऽहमित्यवधार्यात्मानं गोपालोऽहमिति भावयेत् — गोपालो. २।१
तस्मादेवमेवेममात्मानं परं ब्रह्मानुसन्दध्यात् — नृसिंहो. २।८
तस्मादेवमेवोपासीत — आर्षे. २।२
तस्मादेव सच्छब्दवाच्यं ब्रह्मविद्याशबलं भवति — त्रि.म.ना. २।५
तस्मादेवंविच्छान्तो दान्तस्तितिक्षुः समाहितो भूत्वाऽऽत्मन्येवात्मानं पश्यति सर्वमात्मानं पश्यति — बृ.उ. ४।४।२३
तस्मादेवंविच्छ्रोत्रियस्य द्वारेण नोपहासमिच्छेत् — बृह. ६।४।१२
तस्मादेवंविदमेव ब्रह्माणं कुर्वीत, नानेवंविदम् — छां. ४।१७।१०
तस्मादेवं विदित्वैनमद्वैते योजयेत् स्मृतिम् । अद्वैतं समनुप्राप्य जडवल्लोकमाचरेत् — वैतथ्य. ३७
तस्मादेव विद्वाननशिष्यन्नाचार्ये वृशित्वा ...(मा.पा.) — बृ.उ. ६।१।१४
तस्मादेवं विद्वांश्च परस्मा अग्निं चिनुयात् — २ऐत. २।४।२
तस्मादेष एव यज्ञस्तस्य मनश्च वाक्च वर्तनी — छान्दो. ४।१६।१
तस्मादेष प्रविविक्ताहारतर इवैव भवत्यस्माच्छारीरादात्मनः — बृह. ४।२।३
तस्मादेष हि सत्यस्वरूपो महाग्निर्देशमप्रमेयममेयप्रकाशम् — नृसिंहो. ५।१
तस्मादेषां तन्न प्रियं यदेतन्मनुष्या विद्युः — बृह. १।४।१०
तस्मादोङ्कारे रम्यवति, यजुषियजुः — २प्रणवो. ९
तस्मादोङ्कारसम्भूतो गोपालो विश्वसंस्थितः — गोपालो. २।१९
तस्मादोमित्यनुजानन्ति, ओमिति प्रतिपद्यन्ते, ओमित्यस्याददते — शौनको. १।५
तस्मादोमित्यनेनैतदुपासीताजस्रमित्येकोऽस्य रसं बोधयीत — मैत्रा. ६।४
तस्मादोमित्यनेनैतदुपासीतापरिमितं तेजस्तत् त्रेधाभिहितमग्नावादित्ये प्राणे — मैत्रा. ६।२७
तस्मादोमित्यनेनैतदुपासीतापरिमितं तेजः — मैत्रा. ७।११
तस्मादोमित्युदाहृत्य — भ.गी. १७।२४
तस्मादोमित्येकाक्षरमुद्गीथमुपासीत — शौनको. ४।८
तस्माद्दत्समद इत्याचक्षत एतमेव सन्तम् — १ ऐत. २।१।३
तस्माद्दमः परमं वदन्ति — महाना. १७।३
तस्माद्दश प्रजापतयो मरीच्यादयः... अजायन्त — सङ्कर्षणो. १
तस्माद्दानं परमं वदन्ति — महाना. १७।५
तस्माद्दास्यपरां भक्तिमालम्ब्य... नित्यं नैमित्तिकं...कुर्यात् — भवसं. २।५९
तस्माद्देवेभ्यो जुह्वति च प्र च जुह्वत्यथो आहुर्दर्शपूर्णमासाविति — बृह. १।५।२
तस्माद्धर्मं परमं वदन्ति — महाना. १७।६
तस्माद्धाप्येतर्हि सुप्तो भूभूरित्येव प्रश्वसिति — १ऐत. १।८।२
तस्माद्धृदयपुण्डरीककर्णिकायां परमात्माविर्भावो भवति — त्रि.म.ना. ५।४
तस्माद्धृदयमहरहर्वा एवंवित्स्वर्गं लोकमेति — छान्दो. ८।३।३
तस्माद्धृदयस्थितानादिदुर्वासनाग्रन्थिविनाशो भवति — त्रि.म.ना. ५।४
तस्माद्ब्रह्मणि ते स्थिताः — भ.गी. ५।१९
तस्माद्ब्रह्मणो महिमानमाप्नोति — महाना. १८।१
तस्माद्ब्रह्मणो महिमानम् — महाना. १७।१५
तस्माद्ब्रह्म तदेतत्पाशुपतं पशुपाशविमोक्षणाय — अ.शिरः. ३।१२
तस्माद्ब्रह्मवादिन ॐकारमादिं कुर्वन्ति — २प्रणवो. २०
तस्माद्ब्राह्मणं ब्रह्मिष्ठं कुर्वीत — ३ऐत. २।३।१
तस्माद्ब्राह्मणवचनमावर्तव्यम् — २प्रणवो. १४

तस्माद्ब्राह्मणः क्षत्रियमधस्तादुपास्ते बृह. १।४।११
तस्माद्ब्राह्मणः पाण्डित्यं निर्विद्य
बाल्येन तिष्ठासेत् बृह. ३।५।१
तस्माद्ब्राह्मणः पुरुषरूपं परं ब्रह्मैवाह-
मिति भावयेत् मुद्गलो. ३।३
तस्माद्ब्राह्मणेभ्यो वेदविद्भ्यो दिवे
दिवे नमस्कुर्यात् रुद्र. १९
तस्माद्ब्राह्मणो नावेदिकमधीयीता-
यमयः स्यादिति मैत्रा. ७।१०
तस्माद्ब्राह्मणो मुख्यो भवति अव्यक्तो. ६
तस्माद्बृहतीमेवाभिसम्पादयेत् १ऐत. ३।५।४
तस्माद्भरद्वाज इत्याचक्षत एतमेव
सन्तम् १ऐत. २।२।१
तस्माद्भर्गो देवस्य धीमहीत्येव-
मीकाराक्षरं गृह्यते त्रि.ता. १।७
तस्माद्भावाभावौपरित्यज्यपरमात्म-
ध्यानेन मुक्तो भवति मं.ब्रा. २।६
तस्माद्भिक्षुर्हिरण्यं रसेन न दृष्टं च
न स्पृष्टं च न ग्राह्यं च प.हंसो. ९
तस्माद्भूर्भुवः स्वरित्युपासीत मैत्रा. ५।६
तस्माद्भोक्ता पुरुषो भोज्या प्रकृति-
स्तत्स्थो भुङ्क्ते मैत्रा. ६।१०
तस्माद्य इममितिहासमधीते आदित्य-
लोके स कामचारो भवति इतिहा. १
तस्माद्य इममितिहासमुपनीतो माण-
वको गृह्णीयात् । गृहीत्वाऽथ
ब्राह्मणाञ्छ्रावयेत् । इतिहा. १
तस्माद्य इममितिहासं पठन् पितृभ्य
उदकाञ्जलिं दद्यात् अपूपकूला
नद्यः.. उपतिष्ठेरन् इतिहा. १
तस्माद्य इह मनुष्याणां महत्तां प्राप्नु-
वन्ति ध्यानपादांऽशा इवैव
ते भवन्ति छान्दो. ७।६।१
तस्माद्य एतां महालक्ष्मीं याजुषीं
वेद, महतीं श्रियमश्नुते नृ.पू. ४।३
तस्माद्य एतैर्मन्त्रैर्नित्यं देवं स्तौति
स देवं पश्यति [नृ.पू. ४।३६ रामो.४।४८
तस्माद्य एतैर्मन्त्रैर्यजति स ब्रह्म
पश्यति आथ.द्वि. ८८

तस्माद्यजमानश्चित्वैतानग्नीनात्मान-
मभिध्यायेत् मैत्रा. १।१
तस्माद्यज्ञं परमं वदन्ति महाना. १७।१०
तस्माद्यज्ञात् कस्माच्चाङ्गात्प्राण
उत्क्रामति बृ.उ. १।३।१९
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि
जज्ञिरे [वा.सं. ३१।७ +चित्यु. १२।४
[ऋ.अ.८।४।१८ =मं.१०।९०।९
तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृष-
दाज्यम् [पु.सू. +चित्यु. १२।४
[ऋ.८।४।१८=मं.१०।९०।८।+ वा.सं.३१।६
तस्माद्यज्ञं स्वरवन्तं दिदृक्षन्त एव बृह. १।३।२९
तस्माद्यतिः स्वहृदयाचनमेव कुर्यात् मैत्र.२।२६
तस्माद्यत्पुरुषो मनसाऽभिगच्छति
तद्वाचा वदति नृ.पू. १।१
तस्माद्यत्र क्व च न गच्छति तदेव
मन्येत तदविमुक्तमेव जाबा. १
तस्माद्यत्र क्व चन गच्छेत्तदेव मन्येत तारसा. १।१
तस्माद्यत्र क्व च वर्षति तदेव भूयिष्ठ-
मन्नं भवत्यद्भ्य एव तदध्य-
न्नाद्यं जायते छान्दो. ६।२।४
तस्माद्यत्र क्व च शोचति स्वेदते वा
पुरुषस्तेजस एव तदध्यापो
जायन्ते छान्दो. ६।२।३
तस्माद्यत्र न गच्छति तदेव मन्येते-
तीदं वै कुरुक्षेत्रं देवानां रामो. १।१
तस्माद्यथोक्तं सायंप्रातः सन्ध्या-
मुपासीत सन्ध्यो. ३
तस्माद्यदनेनान्नमत्ति तेनैता-
स्तृप्यन्ति बृह.१।३।१८
तस्माद्यदा सुवृष्टिर्न भवति व्याधी-
यन्ते प्राणा अन्नं कनीयो भविष्य-
तीत्यथ यदा सुवृष्टिर्भवत्यान-
न्दिनः प्राणा भवन्ति छान्दो.७।१०।१
तस्माद्यदिदानीं द्वौ विवदमाना-
वेयातामहमदर्शमहमश्रौष-
मिति य एवं ब्रूयादहमदर्शमिति
तस्मा एव श्रद्दध्याम तद्वैतत्सत्यं बृह. ५।१४।४

तस्माद्यद्यपि दशरात्रीर्नाश्नीयाद्यद्यु ह जीवेदथवाऽद्रष्टा.. भवत्यथान्नस्यायै द्रष्टा भवति — छान्दो. ७।९।१

तस्माद्यद्यपि बहव आसीरन्न स्मरन्तो नैव ते कंचन शृणुयुः — छांदो.७।१३।१

तस्माद्यद्यपि बहुविदचित्तो भवति नायमस्तीत्येनमाहुः — छान्दो. ७।५।२

तस्माद्यद्यपि राजा परमतां गच्छति ब्रह्मैवान्तत उपनिश्रयति — बृह. १।४।११

तस्माद्यद्यपि सर्वज्यानिं जीयत आत्मना चेज्जीवति — बृह. १।५।१५

तस्माद्यमहरहर्वा एवंवित्स्वर्गं लोकमेति — छान्दो. ८।३।५

तस्माद्यया कया च विधया बह्वन्नं प्राप्नुयात् । अराध्यस्मा अन्नमित्याचक्षते — तैत्ति. ३।१०।१

तस्माद्यस्य महाबाहो — भ.गी. २।६८

तस्माद्यस्यै कस्यै च देवतायै हविर्गृह्यते भागिन्यावेवास्यामशनापिपासे भवतः — २ऐत. २।५

तस्माद्युक्तं सदा योगात् — योगो. १६

तस्माद्युद्ध्यस्व भारत — भ.गी. २।१८

तस्माद्ये के च सावित्रं विदुः — सूयता. ३।१

तस्माद्योगं तमेवादौ साधको नित्यमभ्यसेत् — यो.शि. १।६६

तस्माद्योगात्परतरो नास्ति मार्गस्तु मोक्षदः — यो.शि. १।५३

तस्माद्योगाय युज्यस्व — भ.गी. २।५०

तस्माद्योगी भवार्जुन — भ.गी. ६।४६

तस्माद्योमृत्योःपाप्मभ्यःसंसाराच्च विमीयात्स एतं मन्त्रराजं नारसिंहमानुष्टुभं गृह्णीयात् — नृ.पू. २।१

तस्माद्रुद्रानेव माध्यन्दिनं सवनं त्रैष्टुभंचेति — शौनको. ३।४

तस्माद्वरेण्यमेकाराक्षरं गृह्यते — त्रि.ता. १।६

तस्माद्वर्णाश्रमादीनां नित्यनैमित्तिकाः क्रियाः । श्रुतिस्मृत्युक्तमार्गेण कर्तव्या एव निश्चयः — भवसं. २।६६

तस्माद्वसिष्ठ इत्याचक्षत एतमेवसन्तं — १ऐत. २।२।२

तस्माद्वा इन्द्रोऽतितरामिवान्यान्देवान् स ह्येनन्नेदिष्ठं पस्पर्श — केनो. ४।३

तस्माद्वा एतदशिष्यन्तः पुरस्ताच्चोपरिष्टाच्चाद्भिः परिदधति लम्भुको ह वासो भवत्यनग्नो ह भवति — छान्दो. ५।२।२

तस्माद्वा एतमिमममुं चोद्गीथमुपासीत — छान्दो.१।३।२

तस्माद्वा एतस्मात्प्राणमयात् । अन्योऽन्तर आत्मा मनोमयः — तैत्ति. २।३

तस्माद्वा एतस्मादन्नरसमयात् , अन्योऽन्तर आत्मा प्राणमयः — तैत्ति. २।२

तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाशः सम्भूतः [ना.उ.ता. १५+ — तैत्ति. २।१।१

तस्माद्वा एतस्मादात्मनि सर्वे प्राणाः...भूतान्युच्चरन्ति — मैत्रा. ६।३२

तस्माद्वा एतस्माद्विज्ञानमयात् , अन्योन्तर आत्मानन्दमयः — तैत्ति. २।५

तस्माद्वा एतस्मान्मनोमयात्, अन्योऽन्तर आत्मा विज्ञानमयः — तैत्ति. २।४

तस्माद्वा एतं सेतुं तीर्त्वाऽपि नक्तमहरेवाभिनिष्पद्यते — छान्दो. ८।४।२

तस्माद्वा एतं सेतुं तीर्त्वाऽन्धः सन्ननन्धो भवति — छान्दो. ८।४।२

तस्माद्वा एते देवा अतितरामिवान्यान् देवान् यदग्निर्वायुः... ते ह्येनत्प्रथमो विदाञ्चकार ब्रह्मेति — केनो. ४।२

तस्माद्वा एष उभयात्मा, एवंविदात्मन्नेवाभिध्यायत्यात्मन्नेव यजतीति — मैत्रा. ६।९

तस्माद्वामदेव इत्याचक्षत एतमेव सन्तम् — १ऐत. २।१५

तस्माद्वायुरेव व्यष्टिर्वायुः समष्टिः.. — बृह. ३।३।२

तस्माद्वासनया युक्तं मनो बद्धं विदुर्बुधाः । सम्यग्वासनया त्यक्तं मुक्तमित्यभिधीयते — मुक्तिको.२।१६

तस्माद्विद्यया तपसा चिन्तया चोपलभ्यते ब्रह्म — मैत्रा. ४।४

तस्माद्विद्वानेतेनैवायनेनैकतरमन्वेति (मा.पा.) — प्रश्नो. ५।२

तस्माद्विद्वानेतेनैवायतनेनैकतरमन्वेति — प्रश्नो. ५।२

तस्मात् (सत्सङ्गात्) विधिनिषेध-
विवेको भवति त्रि.म.ना. ५।४
तस्माद्विराळजायत [ततो विराडिति वा.सं. ३१।५
[ऋ.अ.८।४।१७=मं.१०।९०।५ +चित्यु. १२।२
तस्माद्विराडित्यनया पादनारायणा-
द्धरेः । प्रकृतेः पुरुषस्यापि
समुत्पत्तिः प्रदर्शिता मुद्गलो. १।५
तस्माद्विराडभूतं भव्यं भविष्य-
द्भवत्यनश्वरम् ना.प. ९।१३
तस्माद्विशृङ्गमेवैतदिहानुद्रवन्ति शौनको. २।३
तस्माद्विश्वामित्र इत्याचक्षत एतमेव
सन्तम् १ऐत. २।१।४
तस्माद्विष्णुरादित्यानामधिकोऽभवत् अव्यक्तो. ६
तस्माद्विरेखं भवति तं देवकीपुत्रं
समाश्रये यज्ञोप. ४
तस्माद्वेदोदितं कर्म नित्यं कुर्या-
दतन्द्रितः।...प्राप्नोति परमां गतिम् भवसं. १।३७
तस्माद्वै सामाश्नुते, सान्तः सायुज्यं
सलोकतां जयति बृह. १।३।२२
तस्माद्वैकुण्ठं,न पुनरागमनं...गच्छति यज्ञोप. ४
तस्माद्वै गौतम पुरुषं प्रेतमाहुर्व्यस्रं-
सिषतास्याङ्गानीति बृह. ३।७।२
तस्माद्वै सम्राडपि यत्र स्वः पाणिर्न
विनिर्ज्ञायतेऽथ यत्र वागुच्चरत्-
युपैव तत्र न्येतीत्येवमेवैतत्.. बृह. ४।३।५
तस्माद्वै सम्राडपि यां कां च दिशं
गच्छति नैवास्या अन्नं गच्छति बृह. ४।१।४
तस्माद्व्यतिषिक्तान्यङ्गानि भवन्ति नृ.पू. २।२
तस्मान्न इह मुञ्चत विश्वेदेवाः
सजोषसः सहवै. ३
तस्मान्न कोऽपि ज्यायान् मुद्गलो. २।३
तस्मान्न जनमियान्नान्तमियान्नेत्पा-
प्मानं मृत्युमन्ववायानि बृह. १।३।१०
तस्मान्न जायते चित्तं चित्तदृश्यं न
जायते । तस्य पश्यन्ति ये जातिं
खे वै पश्यन्ति ते पदम् मा.शां. २८
तस्मान्न प्रमाद्येत (सत्यात्) १ऐत. १।१।१
तस्मान्न भिन्नं नाभिन्नमाभिर्भिन्नो
न वै प्रभुः कृष्णो. २६

तस्मान्न सङ्ख्याविन एष लोकः सं.सो. २।५९
तस्मान्नानारूपाण्याप्नोति (भूतात्मा) मैत्रा. ३।५
तस्मान्नारायणादण्डजस्वेदजोद्भि-
ज्जजरायुजमनसिजादयः ना.पू.ता. ५।४
तस्मान्नार्हाम्यनृतं वक्तुं स तूष्णीं
रथमारुह्य प्रवव्राज प्रश्नो. ६।१
तस्मान्नार्हा वयं हन्तुं भ.गी. १।३७
तस्मान्नित्यमकर्ताऽहमिति
भावनयेद्धिया । परमामृतनाम्नी
सा समतैवावशिष्यते महो. ४।१६
तस्मान्निरध्यवसायो निस्सङ्कल्पो
निरभिमानस्तिष्ठेत् मैत्रा. ६।३०
तस्मान्निर्विषयं नित्यं मनः कार्यं
मुमुक्षुणा ब्र.बिं. ३
तस्मान्नूनंसकलविषयान्निष्कला-
ध्यात्मयोगाद्वायोर्नाशस्तदनु
मनसस्तद्विनाशाच्च मोक्षः अमन. २।४०
तस्मान्नृसिंह आसीत् परमेश्वरो जग-
द्धितं वा एतद्रूपं यदक्षरं भवति नृ.पू. २।९
तस्मान्नेष्टियाजुकः स्यात् पशुभ्य
एकं प्रायच्छत् बृह. १।९।२
तस्मान्न्यासमेषां तपसामतिरिक्त-
माहुः महाना. १७।१२
तस्मान्मकारेण परमं ब्रह्मान्विच्छेत् नृसिंहो. ७।३
तस्मान्मन एव पूर्वरूपं, वागुत्तर-
रूपं,.. समानमेतयोरत्र पितुश्च
पुत्रस्य च ३ऐत.१।१।२
तस्मान्मनः पृथङ्नास्ति जगन्माया
च नास्ति हि जा.द. १०।७
तस्मान्मनोयुक्तान्तर्दृष्टिस्तारक-
प्रकाशा भवति अद्वयता. ६
तस्मान्मन्त्रौषधाज्यामिषपुरोडाश-
स्थालीपाकादिभिर्यष्टव्य-
मन्तर्वेद्याम् मैत्रा. ६।३६
तस्मान्ममत्वमेकोऽसीति ह कौषी-
तकिः पुत्रमुवाच छां. १।५।२,४
तस्मान्मद्रप्रातःसवनमभवत् शौनको. २।१
तस्मान्मलोद्वाससं यशस्विनीमभि-
क्रम्योपमन्त्रयेत बृह. ६।४।६

तस्मान्माध्यमा इत्याचक्षत एत-
मेव सन्तम् १ऐत. ३।१।२
तस्मान्मानसं परमं वदन्ति म.ना. १७।११
तस्मान्मायया बहिर्वेष्टितं (ब्रह्माण्डं)
भवति नृ.पू. ५।३
तस्मान्मायामेतां (परमात्मनः)
शक्तिं विद्यात् नृ.पू. ३।२
तस्मान्मायामेतां शक्तिं वेद स
मृत्युं जयति ग.पू. २।३
तस्मान्मायोपाधिक आदिनारायण-
स्तथा स्वस्वरूपं भजति त्रि.म.ना.३।७
तस्मान्मुमुक्षुभिर्नैव मतिर्जीवेश-
वादयोः । कार्या किन्तु ब्रह्मतत्त्वं
निश्चलेनविचार्यताम् [महो.४।७५+ वराहो.२।५६
तस्मान्मूढा न जानन्ति मिथ्या-
तर्केण वेष्टिताः यो.शि. १।२४
तस्मान्मूर्तिरेव रयिः प्रश्नो. १।५
तस्मान्मूलाविद्याण्डस्य सावरणस्य
विलयो भवति त्रि.म.ना. ३।६
तस्माल्लक्ष्मीनारायणं सर्वबीजम् ना.पू.ता.४।१०
तस्माल्लिङ्गशरीरात्मकोऽयं जीवस्य
स्वभावः सामर. १००
तस्माल्लोकात्पुनरैत्यस्मै लोकाय
कर्मण इति नु काम्यमानो.. न
तस्य प्राणा उत्क्रामन्ति बृह. ४।४।६
तस्माल्लोके वेदे व्रजलीला गीयते सामर. ५
तस्मिन्काले (चित्तवृत्तिहीने)
विदेहीति देहस्मरणवर्जितः ते.बि.४।५४,५५
तस्मिन् (चित्ते) क्षीणे जगत्क्षीणं
तच्चिकित्स्यं प्रयत्नतः महो. ३।२१
तस्मिञ्छुक्लमुत नीलमाहुः पिङ्गलं
हरितं लोहितं च बृह. ४।४।९
तस्मिन् गर्भं दधाम्यहम् भ.गी. १४।३
तस्मिन् दृष्टे क्रिया कर्म यातायातो
न विद्यते यो.चू. ११३
तस्मिन्नग्नौ तिष्ठति अग्निस्त्वं न वेद,
स आत्मा गोपालो. १।७
तस्मिन्नन्नमयः पिण्डो नाभिमण्डल-
संस्थितः। यस्य मध्येऽस्तिहृदयं.. त्रि.ब्रा. २।६

तस्मिन्नयं (हृदाकाशे) पुरुषो
मनोमयः तैत्ति. १।६।१
तस्मिन्नित्ये तते शुद्धे, चिन्मात्रे नि-
रुपद्रवे । शान्ते... निर्विकारे... महो. ४।१२२
तस्मिन्निदं सर्वं त्रिशरीरमारोप्य
तन्मयंहितदेवेति संहरेदोमिति नृसिंहो. १।२
तस्मिन्निमानि सर्वाणि भूतान्यन्वा-
यत्तानीति विद्यात् छान्दो. २।१।२
तस्मिन्निरस्तनिश्शेषसङ्कल्पस्थिति-
मेषिचेत् । सर्वात्मकं पदं शान्तं
तदा प्राप्नोत्यसंशयः महो. ४।६०
तस्मिन्निरोधिते नूनमुपशान्तं
मनो भवेत् शांडि. १।७।२५
तस्मिन्नुत्क्रामत्यथेतरे सर्व
एवोत्क्रामन्ते प्रश्नो. २।४
तस्मिन्नेकदिने (ब्रह्मणः) आसत्य-
लोकान्तमुदयस्थितिलया जायन्ते त्रि.म.ना. ३।४
तस्मिन्नेतस्मिन्नग्नौ देवा अन्नं जुह्वति
[छां.उ. ५।७।२+ बृह.६।२।१२
तस्मिन्नेतस्मिन्नग्नौ देवाः पुरुषं जुह्वति बृह. ६।२।१४
तस्मिन्नेतस्मिन्नग्नौ रेतो जुह्वति
[छान्दो. ५।८।२+ बृह. ६।२।१३
तस्मिन्नेतस्मिन्नग्नौ देवा वर्षं (वृष्टिं)
जुह्वति[छान्दो. ५।६।२+ बृह. ६।२।११
तस्मिन्नेतस्मिन्नग्नौ देवाः श्रद्धां
जुह्वति [छान्दो. ५।४।२+ बृह. ६।२।९
तस्मिन्नेतस्मिन्नग्नौ देवाः सोमं
राजानं जुह्वति [छान्दो.५।५।२+ बृह. ६।२।१०
तस्मिन्नेताः शरभृष्टीः प्रतिलोमाः
सर्पिषाक्ता जुहुयात् बृह. ६।४।१२
तस्मिन्नेवाखिलं विश्वं सङ्कोचित-
पटवद्वर्तते पैङ्गलो. १।२
तस्मिन् पुरुषाश्चतुर्दश जायन्ते,
एका कन्या दशेन्द्रियाणि.. महो. १।२
तस्मिन्मरुशुक्तिकास्थाणुस्फटिकादौ
जलरौप्यपुरुषरेखादिवत्.. गुण-
साम्यानिर्वाच्या मूलप्रकृतिरासीत् पैङ्गलो. १।२

तस्मिन्मां देहि स्वमानामृते लोके अक्षते अच्युते लोके अक्षते अमृतत्वं च गच्छत्यों नमः — आ.प्र. १
तस्मिन्यजुर्मयं प्रवयति — कौ.ब्रा. २।६
तस्मिन्यदन्तस्तदुपासितव्यम् — महाना. ८।१६
तस्मिन्यशो निहितं विश्वरूपम् — बृह. २।२।३
तस्मिन्यावत्सम्पातमुषित्वाऽथैतमेवा-ध्वानं पुनर्निवर्तन्ते — छांदो.५।१०।५
तस्मिन्यदन्तस्तदन्वेष्टव्यं, तद्वाव विजिज्ञासितव्यम् — छान्दो. ८।१।१
तस्मिन्योऽन्नं चान्नादं च वेद — १ऐत.३।१।२३
तस्मिन् रसिकानन्दस्वरूपपार्श्वाद्धे एव मूर्ती प्रकटिते — सामर. २
तस्मिंल्लोकाः श्रिताः सर्वे तदु नात्येति कश्चन । एतद्वैतत् [कठो. ५।८+ ६।१
तस्मिन्वसति शाश्वतीः समाः — बृह. ५।१०।१
तस्मिन्वायौ तिष्ठति वायुस्तं न वेद स ह्यात्मा — गोपालो. १।६
तस्मिन् विश्वमिदं श्रितम् — छांदो.३।१५।१
तस्मिन्सर्वं प्रतिष्ठितं, यच्च प्राणिति यच्च न — बृह. १।५।१
तस्मिन्सन्ध्ये स्थाने तिष्ठन्नेते उभे स्थाने पश्यति इदं च परलोकं च — बृह. ४।३।९
तस्मिन् सहस्रशाखे, निभगाहं त्वयि मृजे स्वाहा — तैत्ति. १।४।३
तस्मिन्सुपर्णो मधुकृत् कुलायी भज-न्नास्ते मधु देवताभ्यः[त्रिसु.३+ महाना. १२।३
तस्मिंश्च प्रतिष्ठमाने सर्व एव प्रतिष्ठन्ते — प्रश्नो. २।४
तस्मिंश्चरमसन्न्यासे समूलाः सर्ववेदनाः — आयुर्वे. २६
तस्मिंश्चिद्दर्पणे स्फारे..वस्तुदृष्टयः । ...प्रतिबिम्बन्ति — अ.पू. ४।७१
तस्मिंस्त्वयि किं वीर्यमिति (यक्षमवदत्) — केनो. ३।५
तस्मिन् ह्यस्मिन्नाकाशे प्राण आयतः — ३ऐत. १।२।२
तस्मै ककुदे वरदस्य पुष्ट्यै स्वाहा — पारमा. ८।२
तस्मै तृणं निदधावेतद्दहेति (यक्षं) [केनो.+ ३।५,९,१०
तस्मै तृणं निदधावेतद्दहेति (यक्षं) — केनो. ३।६
३२

तस्मै ते विश्वरूपाय सत्ये नभसि हिताय नमः — मैत्रा. ७।७
तस्मै नमो महादेवाय महारुद्राय.. — पं.ब्र. १
तस्मै ब्रह्म प्रब्रूयाच्छक्यमाकुर्वतेति — संहितो. ३।७
तस्मै महाग्रासाय महादेवाय शूलिने । महेश्वराय मृडाय तस्मै रुद्राय नमो अस्तु — शरभो. २४
तस्मै मृदितकषायाय तमसस्पारं दर्शयति भगवान् सनत्कुमारः — छान्दो.७।२६।२
तस्मै मृदितकषायाय... दर्शयति देवर्षये... (मा.पा.) — छान्दो.७।२६।२
तस्मै रुद्रा माध्यन्दिनं सवनं सम्प्रयच्छन्ति — छांदो.२।२४।१०
तस्मै रुद्राय नमो अस्तु — शरभो.८।१४,२४
तस्मै वरिष्ठाय वरप्रवृद्ध्यै स्वाहा — पारमा. ९।२
तस्मै वसवः प्रातस्सवनं सम्प्रयच्छति — छांदो. २।२४।६
तस्मै वा एतस्मै प्राणाय ब्रह्मण एताः सर्वा देवता अयाचनायबलिं हरन्ति — कौ. उ. २।२
तस्मै (इन्द्राय) विद्यामनुष्टुभीं प्रादात् — अव्यक्तो. ८
तस्मै श्वा श्वेतः प्रादुर्बभूव । तमन्ये श्वान उपसमेत्योचुरन्नं नो भग-वानागायत्वशनायाम वा इति — छांदो.१।१२।२
तस्मै स तत्र विजिहीते — बृह.५।१०।१,१
तस्मै स विद्वानुपसन्नाय सम्यक्-प्रशान्तचित्ताय... प्रोवाच तां तत्त्वतो ब्रह्मविद्याम् — मुण्ड.१।२।१३
तस्मै स होवाच एतद्वै सत्यकाम परं चापरं च ब्रह्म यदोङ्कार-स्तस्माद्विद्वान्...एकतरमन्वेति — प्रश्नो. ५।२
तस्मै स होवाच पितामहश्च श्रद्धा-भक्तिध्यानयोगादवेहि — कैव. २
तस्मै स होवाच ब्रह्मविद्यां वरिष्ठाम् । प्राणो ह्येष आत्मा.. (इत्यादि) — ब्रह्मो.१
तस्मै स होवाच यथा गार्ग्य मरी-चयोऽर्कस्यास्तं गच्छतः सर्वा:.. तेजोमण्डले एकीभवन्ति — प्रश्नो. ४।२
तस्मै स होवाच इहैवान्तःशरीरे सोम्य स पुरुषो यस्मिन्नेताः षोडश कलाः प्रभवन्ति — प्रश्नो. ६।२

तस्मै स होवाचातिप्रश्नान्पृच्छसि ब्रह्मिष्ठोऽसीति तस्मात्तेऽहं ब्रवीमि प्रश्नो. ३।२
तस्मै सुयन्त्रे सुशेवधये स्वाहा पारमा. ७।२
तस्मै सूक्ष्मसूक्ष्माय तेजसे स्वाहा पारमा. १०।५
तस्मै ह प्राप्तायार्हाञ्चकार । स ह प्रातः सभाग उदेयाय छान्दो. ५।३।६
तस्मै हाप्रोच्यैव प्रवासाञ्चक्रे छान्दो.४।१०।२
तस्मै हैतद्देवोवाचात्र ह न किञ्चन वीयायेति छान्दो. ४।९।३
तस्मै होवाच पृथिवी कलाऽन्तरिक्षं कला द्यौः कला समुद्रः कलैष वै सोम्य चतुष्कलः पादो ब्रह्मणोऽनन्तवान्नाम छान्दो. ४।६।३
तस्मै होवाच प्राणः कला चक्षुः कला श्रोत्रं कला मनः कला एष वै सोम्य चतुष्कलः पादो ब्रह्मणः.. छांदो. ४।८।३
तस्मै होवाच प्राची दिक्कला, प्रतीची दिक्कला..एष वै सोम्य चतुष्कलः पादो ब्रह्मणः.. छान्दो.४।५।२
तस्मै होवाचाग्निः कला, सूर्यः कला, चन्द्रः कला, विद्युत्कलैष वै सोम्य चतुष्कलः पादो ब्रह्मणो ज्योतिष्मान्नाम छान्दो.४।७।३
तस्य कर्तारमपि मां भ.गी. ४।१३
तस्य का देवतेति दिश इति होवाच बृह. ३।९।१३
तस्य का देवतेति प्रजापतिरिति होवाच बृह. ३।९।१७
तस्य का देवतेति मृत्युरिति होवाच बृह. ३।९।१४
तस्य का देवतेत्यमृतमिति होवाच बृ.उ. ३।९।१०
तस्य का देवतेति स्त्रिय इति होवाच बृह. ३।९।११
तस्य का देवतेत्यसुरिति होवाच बृह. ३।९।१५
तस्य का देवतेति सत्यमिति होवाच बृह. ३।९।१२
तस्य कार्यं न विद्यते भ.गी. ३।१७
तस्य (मासस्य) कृष्णपक्ष एव रयिः, शुक्लः प्राणः प्रश्नो. १।१२
तस्य कैवल्यं सिद्ध्यति नृ.षट्च.७
तस्य (रुद्राक्षस्य) कोटिशतं पुण्यं लभते धारणान्नरः रु.जा. ५
तस्य क्व मूलं स्यादन्यत्रान्नात् छान्दो. ६।८।४
तस्य क्व मूलं स्यादन्यत्राद्भ्यः छान्दो. ६।८।६
तस्य (घ्राणस्य) गन्धः परस्तात् प्रतिविहिता भूतमात्रा कौ.त. ३।५
तस्य चक्षुरर्कोऽन्नमशीतयोऽन्नेन हीदं सर्वमश्नुते १ऐत.१।२।६
तस्य चक्षुरेव तेजो गच्छति, प्राणं प्राण एतद्वै ब्रह्म दीप्यते, यच्चक्षुषा पश्यति कौ.त. २।१३
तस्य (मनसः) चञ्चलता यैषा त्वविद्यावासनात्मिका ।.. तां विचारेण विनाशय महो. ४।१०२
तस्य चन्द्रमसमेव तेजो गच्छति वायुं प्राण एतद्वै ब्रह्म दीप्यते यच्चन्द्रमा दृश्यते कौ.त. २।१२
तस्य तस्याचलां श्रद्धां भ.गी. ७।२१
तस्य तावत्प्रलयो भवति, प्रलये शून्यं त्रि.म.ना. ३।५
तस्य तावदेव चिरं यावन्न विमोक्ष्येऽथ सम्पत्स्य इति छां.उ. ६।१४।२
तस्य तृतीयया स्वरमात्रया दिवमादित्यं...सामवेदं स्वरिति.. चक्षुषी दर्शनमितीन्द्रियाण्यभवन् २प्रणवो. ३
तस्य त्रय आवसथास्त्रयः स्वप्ना अयमावसथोऽयमावसथोऽयं.. २ऐत. ३।१२
तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति [वा.सं.३१।१७+ चित्यु. १३।१
तस्य देवतात्मैक्यसिद्धिः भावनो. १०
तस्य देवा असन्वशे [वा.सं.३१।२१+ चित्यु.१३।२
तस्य द्यौरेव तिरश्चीनवंशोऽन्तरिक्षमपूपो मरीचयः पुत्राः छान्दो. ३।१।१
तस्य द्वितीयया स्वरमात्रयाऽन्तरिक्षं वायुं यजुर्वेदं भुव इति.. नासिके घ्राणमितीन्द्रियाण्यभवन् २प्रणवो. ३
तस्य द्वितीयेन वर्णेन तेजो ज्योतींष्यन्वभवत् २प्रणवो. ३
तस्य द्वौ स्तनौ देवा उपजीवन्ति स्वाहाकारं च वषट्कारं च हन्तकारं मनुष्याः स्वधाकारं पितरः बृह. ५।८।१

तस्य धीराः परिजानन्ति योनिम् [तै.आ.३।१३।२+ चित्यु. १३।२
तस्य ध्याननिष्ठैव शिखा प.हं.प. ११
तस्य ध्यानान्तस्थस्य यज्ञस्तोम-
मुच्यते महो. १।२
तस्य ध्यानान्तस्थस्य ललाटात्
त्र्यक्षः शूलपाणिः पुरुषोऽजायत महो. १।३
तस्य ध्यानान्तस्थस्य ललाटात्
स्वेदोऽपतत् [महो. १।४+ चतुर्वे. १
तस्य (अमनस्कस्य) न कर्मलेपः मं.ब्रा. २।४
तस्य नचिकेता नाम पुत्र आस कठो. १।१
तस्य (लीनमनसः) निश्चिन्ता ध्यानम् मं.ब्रा. २।५
(ॐ) तस्य (आत्मनः) निश्चिन्तनं
ध्यानम् आत्मपू. १
तस्य निश्वसितमेव ऋग्वेदो यजुर्वेदः
सामवेदो ह्यथर्वाङ्गिरश्चेति ना.पू.ता. ५।११
तस्य पश्यन्ति ये जातिं खे वै
पश्यन्ति ते पदम् अ.शां. २८
†तस्य (ज्ञानिनः) पुत्रा दाय-
मुपयान्ति, सुहृदः साधुकृत्यां,
द्विषन्तः पापकृत्याम् ....
तस्य पुरस्ताद्वसव आसते, रुद्रा
दक्षिणतः, आदित्याः पश्चाद्विश्वे-
देवा उत्तरतो ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा
नाभ्यां सूर्याचन्द्रमसौ पार्श्वयोः नृ.पू. ५।८
तस्य पुरुषविधतां, अन्वयं
पुरुषविधः [तै.उ.२।२, +३,४,५
तस्य पुरुषोत्तमस्य उत्तरकटाक्षात्स-
मुत्पन्ना जीवाः सामर. २
तस्य पूर्वं समुद्रे योनी रात्रिरेनं
पश्चान्महिमान्वजायत बृ.उ. १।१।२
तस्यप्रकृतिलीनस्य यः परः स
महेश्वरः [महाना. ८।१७+ शु.र.उ.३।१८
तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता [भ.गी.२।५७, +५८,६१,६८
तस्य प्रथमया (सहस्रशीर्षेत्यनया
ऋचा)विष्णोर्देशतो व्याप्तिरीरिता मुद्गलो. १।२

† इयं श्रुतिः श्रीमद्भगवद्गीताया ब्रह्मानन्दगिर्याख्याने (अ. ५, १८ श्लो. १०) दृग्गोचरा भवति।

तस्यप्रथमयास्वरमात्रया पृथिवीमग्नि-
मोषधिवनस्पतीनृग्वेदं भूरिति..
जिह्वांसमितीन्द्रियाण्यन्वभवन् २प्रणवो. २
तस्य प्रथमेन वर्णेनापस्नेहश्चान्वभवत् २प्रणवो. ३
तस्य प्राक् सायमवभृथो नमो
ब्रह्मण इति सहवै. १७
तस्य प्राची दिक् (प्राञ्चः) प्राणाः बृह. ४।२।४
तस्य प्राची दिक्शिरोऽसौचासौ चर्मौ बृ. १।२।३
तस्य प्राची दिग्जुहूर्नाम छांदो.३।१५।२
तस्य प्राण एव शिरः तैत्ति. २।२
तस्य प्राणमेव तेजो गच्छति
प्राणं प्राणः, एतद्वै ब्रह्म.. कौ.त. २।१३
तस्य प्राणेन प्रजया पशुभिरवक्षीयस्व कौ.त. २।९
तस्य प्राणोऽकौऽन्नमशीतयोऽन्नेनहीदं
सर्वमश्नुते १ऐत. १।२।५
तस्य प्रियमेव शिरः तैत्ति. २।५
तस्य प्रियं शिरः कृत्वा मोदो
दक्षिणपक्षकः। प्रमोद उत्तरः
पक्ष आनन्दो गोष्पदायते अवधू. ३
तस्या प्रिया ज्ञातयः सुकृतमुपय-
न्त्यप्रिया दुष्कृतम् कौ.त. १।४
तस्य प्रोक्ता अग्र्यास्तनवो ब्रह्मा रुद्रो
विष्णुरिति मैत्रा. ५।५
तस्य फलानि तपसानुदन्तु [श्री.सू.+ ऋ.खि.५।८७।९
तस्य बाह्याभ्यन्तःकरणानामेक-
रूपविषयग्रहणमासनम् भावनो. ८
तस्य बाह्येषु शतदलपद्मपत्रेषु योग-
पीठेषु रासक्रीडानुरक्ता
गोप्यस्तिष्ठन्ति राधोप. २।१
तस्य ब्रह्मणः स्थितिप्रलयावादि-
नारायणस्यांशेनावतीर्णस्याण्ड-
परिपालकस्य महाविष्णोरहो-
रात्रिसंज्ञकौ त्रि.म.ना. ३।५
(अथ) तस्य भयं भवति, तत्त्वेव
भयं विदुषोऽमन्वानस्य तैत्ति. २।७
तस्य भासा सर्वमिदं विभाति मुण्ड. २।२।१०
तस्य भूतं च भविष्यच्च पूर्वौ पादौ
(पर्यङ्कस्य) श्रीश्चराचारौ कौ.उ. १।५

तस्य भूरिति शिर एक९ शिर
 एकमेतदक्षरम् — बृह. ५।५।३,४

तस्य मध्ये नाभ्यां तारकं यदक्षरं
 नारसिंहमेकाक्षरं तद्भवति — नृ.पू. ५।७

तस्य मध्ये महानग्निर्विश्वार्चि-
 र्विश्वतोमुखः.. वह्निशिखा — चतुर्वे. ५

तस्य मध्ये महानग्निर्विश्वार्चिर्विश्वतो-
 मुखः । सोऽग्रभुग्विभजंस्तिष्ठ-
 न्नाहारमजरः कविः — महाना. ९।९

तस्य मध्ये महानर्चिर्विश्वार्चिर्वि-
 श्वतोमुखम् । तस्य मध्ये वह्नि-
 शिखा अणीयोर्ध्वा व्यवस्थिता — महो. १।८

तस्य मध्ये वह्निशिखा अणीयोर्ध्वा
 व्यवस्थिता । नीलतोयदमध्य-
 स्थाद्विद्युल्लेखेव भास्वरा — महाना.९।११
 [वासुदे. ५+ — गो.चं. ५

तस्य मध्ये वह्निशिखा.... तस्याः
 शिखायामध्येपरमात्माव्यवस्थित; — चतुर्वे.५

तस्य मध्ये समुद्रः समुद्रस्य मध्ये
 कोशस्तस्मिन्नाड्यश्चतस्रो भवन्ति
 तासामिच्छाऽपुनर्भवेति — सुबालो. ११

तस्य मन एव तेजो गच्छति प्राणं
 प्राण एतद्वै ब्रह्मदीप्यते यच्चक्षुषा
 पश्यति — कौ.त. २।१२

तस्यमुखमेवोक्थम्, यथा पृथिवी तथा — १ऐत. १।२।४

तस्य मे तत्र न लोम च नामीयते — कौ.त. ३।१

तस्य मेऽन्नं मित्रं दक्षिणं तद्वैश्वा-
 मित्रम्, एष तपन्नेवास्मि — १ऐत. २।३।४

तस्य य आत्मानमाविस्तरां वेद अश्नुते
 हाविर्भूय ओषधिवनस्पतयो..
 स आत्मानं.. वेद — १ऐत. ३।२।१

तस्य यजुरेव शिरः, ऋग्दक्षिणः पक्षः — तैत्ति. २।३

तस्य यत्पुरोदयात्स हिंकारस्तदस्य
 पशवोऽन्वायत्तास्तस्मात्ते
 हिंकुर्वन्ति — छान्दो. २।९।२

तस्य यथा कप्यासं पुण्डरीक-
 मेवमक्षिणी तस्योदिति नाम — छांदो. १।६।७

तस्य यथाऽभिनहनं प्रमुच्य प्रब्रूया-
 देतांदिशं गन्धारा एतां दिशं व्रज — छान्दो.६।१४।२

तस्य यदुष्णं तज्ज्योतिः — १ऐत. ३।३।२

तस्य यः स्थविष्ठो धातुस्तत्पुरीषं
 भवति, यो मध्यमस्तन्मांसं
 योऽणिष्ठस्तन्मनः — छां.उ. ६।५।१

तस्य यः स्थविष्ठो धातुस्तदस्थि भवति,
 यो मध्यमः स मज्जा, योऽणिष्ठः
 सा वाक् — छां.उ. ६।५।३

तस्य यानि व्यञ्जनानि तच्छरीरम् — १ऐत. २।४।१

तस्य यावन्न वाङ्मनसि सम्पद्यते मनः
 प्राणे प्राणस्तेजसि तेजः परस्यां
 देवतायां तावज्जानाति — छांदो. ६।१५।१

तस्य ये प्राञ्चो रश्मयस्ता एवास्य
 प्राच्यो मधुनाड्य ऋच एव
 मधुकृत ऋग्वेद एव पुष्पं ता
 अमृता आपस्ता वा एता ऋचः — छान्दो. ३।१।२

तस्य योऽयमशरीरःप्रज्ञात्मा स रसः — ३ऐत.२।३।१

तस्य रात्रय एव पंचदश कला ध्रुवै-
 वास्य षोडशी कला — बृह. १।५।१४

तस्य रूपं परस्तात् प्रतिविहिता
 भूतमात्रा — कौ.त. ३।८

तस्य लोमानि वर्णानि त्वगस्योत्पाटिका
 बहिः । त्वच एवास्य रुधिरं
 प्रस्यन्दित्वच उत्पटः — बृह. ३।९।२८

तस्य वा एतस्यपुरुषस्य द्वे एव स्थाने
 भवत इदं च परलोकस्थानं च — बृह. ४।३।९

तस्य वा एतस्य बृहतीसहस्रस्य
 षट्त्रिंशतमक्षराणां सहस्राणि
 भवन्ति — १ऐत. ३।८।६

तस्य वा एतस्य बृहतीसहस्रस्य..
 एकादशानुष्टुभां शतानि भवन्ति — १ऐत. ३।६।१

तस्य वा एतस्यबृहतीसहस्रस्य..
 षट्त्रिंशतमक्षराणां सहस्राणि
 भवन्ति — १ऐत. २।४।२

तस्य वा एतस्य यज्ञस्य मेघो हविर्धानं — सहुवै. १८

तस्य वा एतस्य बृहतीसहस्रस्य
 सम्पन्नस्य परस्तात्प्रज्ञामयो...
 अमृतमयः सम्भूय देवता अप्येति — १ऐत. २।४।२

तस्य वागर्कोऽन्नमशीतयः,
 अन्नेन हीदं सर्वमश्नुते — १ऐत. १।२।४

तस्य वागेव समित्प्राणो धूमो जिह्वाऽर्चिश्चक्षुरङ्गाराः श्रोत्रं विस्फुलिङ्गाः छान्दो. ५।७।१
तस्य वायुमेव तेजो गच्छति कौ.उ. २।१२
तस्य (पर्जन्याग्नेः) वायुरेव समिदभ्रं धूमो विद्युदर्चिरशनिरङ्गारा ह्रादुनयो विस्फुलिङ्गाः कौ.त.५।५।१
तस्य विद्युतमेव तेजो गच्छति कौ.त. २।१२
तस्य विराट्पुरुषस्य यावत् स्थितिकालस्तावत्प्रलयो भवति त्रि.म.ना. ३।६
तस्य वै वागेव प्रतिष्ठा, वाचि हि खल्वेष एतत्प्राणः प्रतिष्ठितो गीयतेऽन्न इत्यु हैक आहुः बृह. १।३।२७
तस्य वै स्वर एव सुवर्ण, भवति हास्य सुवर्णम् बृह. १।३।२६
तस्य वै स्वर एव स्वं तस्मादार्त्विज्यं करिष्यन्वाचि स्वरमिच्छेत बृह. १।३।२५
तस्य व्यानमेव समित्प्राणो धूमो वागर्चिश्चक्षुरङ्गाराः श्रोत्रं विस्फुलिङ्गाः बृह. ६।२।१३
तस्य शब्दः परस्तात् प्रतिविहिता भूतमात्रा कौ.त. ३।५
तस्य शरीर एव मन आसीत् बृह. १।२।६
तस्य श्रद्धैव शिरः, ऋतं दक्षिणः पक्षः, सत्यमुत्तरः पक्षः, योग आत्मा , महः पुच्छं प्रतिष्ठा तैत्ति. २।४
तस्य श्रान्तस्य तप्तस्य तेजो रसो निरवर्तताग्निः बृह. १।२।२
तस्य श्रान्तस्य तप्तस्य यशो वीर्यमुदक्रामत्प्राणा वै यशो वीर्यम् बृह. १।२।६
तस्य श्रोत्रमेव तेजोगच्छति प्राणं प्राण एतद् ब्रह्म दीप्यते यच्छ्रोत्रेण शृणोति कौ.त. २।१३
(अथ) तस्य षडङ्गानि प्रादुर्बभूवुः ग.पू. १।१०
तस्य संजनयन् हर्षं भ.गी. १।१२
तस्य सत्यासो गुरुभिरनुज्ञातस्य सान्ध्यस्य कठरु. २
तस्य सर्वे लोकाः सिद्ध्यन्ति नृ.षट्च. ७

तस्य सप्तकोटिपरिसहस्रपरिमिताः फणाः, तदुपरि वैकुण्ठो विष्णुलोकः रावोप. १।३
तस्य सर्वे लोकाः सिद्ध्यन्ति नृ.षट्च. ७
तस्यसर्वेषुलोकेषुकामचारो भवति छान्दो.७।२५।२
तस्य सर्वेषु लोकेषु सर्वेषु भूतेषु सर्वेष्वात्मसु हुतं भवति छान्दो.५।२४।२
तस्य संवत्सर एव समिदभ्राणि धूमो विद्युदर्चिरशनिरङ्गारा ह्रादुनयो विस्फुलिङ्गाः बृह. ६।२।१०
तस्य सुखदुःखे परस्तात्प्रतिविहिता भूतमात्रा कौ.उ. ३।५
तस्य ह जनकस्य वैदेहस्य जिज्ञासा बभूव कः स्विदेषां ब्राह्मणानामनूचानतम इति बृह. ३।१।१
तस्य ह द्वादशवर्षाण्यग्नीन्परिचचार छान्दो.४।१०।१
तस्य ह नचिकेता नाम पुत्र आस कठो. १।१
तस्य ह न देवाश्च नाभूत्या ईशते आत्मा ह्येषा ँ स भवति बृह. १।४।१०
तस्य ह ब्रह्मणो विजये देवा अमहीयन्त केनो. ३।१
तस्य ह मूर्धा विपपात बृह. ३।९।२६
तस्य ह वाचम्रं प्रथमं स्थानं जानीयाचो जानीते सोऽमृतत्वंच गच्छति नृ.पू. ५।२
तस्य ह वा एतस्य प्रणवस्य या पूर्वा मात्रा सा पृथिव्यकारः.. नृसिंहो. ३।२
तस्य ह वा एतस्य ब्रह्मणो नाम सत्यम् छान्दो. ८।३।४
तस्य ह वा एतस्य प्राणस्य ब्रह्मणो वाक्परस्ताच्चक्षुरारुन्धे कौ.त. १।२
तस्य ह वा एतस्य प्राणस्य ब्रह्मणो मनो दूतं वाक्परिवेष्ट्री चक्षुर्गोप्तृ श्रोत्रं संश्रावयितृ.. कौ.त. २।१
तस्य ह वा एतस्य ब्रह्मलोकस्यारो ह्रदो मुहूर्ता येष्टिहा... कौ.त. १।३
तस्य ह वा एतस्य हृदयस्य पञ्च देवसुषयः स योऽस्य प्राङ्सुषिः स प्राणस्तच्चक्षुः स आदित्यस्तत्तेजोऽन्नाद्यमित्युपासीततेजस्व्यन्नादो भवति छांदो.३।१३।१

तस्य ह वा एतस्यात्मनो वैश्वानरस्य मूर्धैव सुतेजाश्चक्षुर्विश्वरूपः प्राणः	छान्दो.५।१८।२
तस्य ह वा एतस्यैवं पश्यत एवं मन्वानस्यैवं विजानत आत्मतः प्राण आत्मत आशाऽऽत्मतः स्मर आत्मत आकाश....आत्मतः कर्माण्यात्मत एवेद५ सर्वमिति	छान्दो.७।२६।१
तस्य ह वा एषा प्रतिष्ठा यत्रावावा-त्मानमुपसंहृत्याजूगुपत्	शौनको. ४।५
तस्य ह वै प्रणवस्य या पूर्वा मात्रा सा प्रथमः पादो भवति	नृसिंहो. ३।१
तस्य ह वै प्रणवस्य वा (या) पूर्वा मात्रा पृथिव्यकारः स ऋग्भिरृ-ग्वेदो ब्रह्मा वसवो गायत्री.. सा साम्नः प्रथमः पादो भवति	नृ.पू. २।१
तस्य हैतस्य पञ्चाङ्गानि भवन्ति, चत्वारः पादाश्चत्वार्यङ्गानि भवन्ति, सप्रणवं सर्वं पञ्चमं भवति	नृ.पू. २।२
तस्य हैतस्य पुरुषस्य रूपं यथा महारजनं वासो यथापाण्ड्वा-विकं...ह वा अस्य श्रीर्भवति	बृह. २।३।६
तस्य हैतस्य साम्नो यः स्वं वेद भवति हास्यस्वम्	बृह. १।३।२५
तस्य हैतस्य साम्नो यः सुवर्णं वेद भवति हास्य सुवर्णम्	बृह. १।३।२६
तस्य हैतस्य साम्नो यः प्रतिष्ठां वेद प्रति ह तिष्ठति तस्य वै वागेव प्रतिष्ठा वाचि..	बृह. १।३।२७
तस्य हैतस्य हृदयस्याग्रं प्रद्योतते तेन प्रद्योतेनैष आत्मा निष्क्रामति	बृह. ४।४।२
तस्य ह्येष रस इत्यधिदैवतम्	बृह. २।३।३
तस्या (गायत्र्याः) अग्निरेव मुखम् यदिह वा अपि बह्विवाग्ना-वभ्यादधति (तस्या अग्निरेव... वापि बह्निमानग्नावभ्यादधाति) [बृह. ५।१४।८+	गायत्र्यु.५
तस्या अमितसाया एतान्यक्षराणि प्रावपन्त भूर्भुवः स्वरिति	छां.ब. २।२३।२
तस्या अंशो लक्ष्मीदुर्गा-विजयादिशक्तिरिति	रामोप. १।५
तस्या आहुतेरन्नं संभवति	छान्दो. ५।६।२
तस्या आहुतेर्गर्भः सम्भवति	छान्दो. ५।८।२
तस्या आहुतेः सोमो राजा सम्भवति	छान्दो. ५।४।२
तस्या आहुत्या अन्न५ सम्भवति	बृह. २।६।११
तस्या आहुत्यै पुरुषः सम्भवति	बृह. ६।२।१३
तस्या आहुत्यै पुरुषो भास्वरवर्णः सम्भवति	बृह.६।२।१४
तस्या आहुत्यै रेतः सम्भवति	बृह. ६।२।१२
तस्या आहुत्यै वृष्टिः सम्भवति	बृह. ६।२।१०
तस्या आहुत्यै सोमोराजा सम्भवति	बृह. ६।२।९
तस्या इन्द्रः प्रणवमेव पुरोगामकरोत्	शौनको. ४।२
तस्याउपस्थएवसमित् [छान्दो.५।८।१+	बृह.६।२।१३
तस्या उपस्थानं गायत्र्यस्येकपदी द्विपदीत्रिपदी चतुष्पद्यपदसि..	बृह. ५।१४।७
तस्या एकादशभिःपात्रैरेकादश-रुद्रान्निर्ममे	अव्यक्तो. ६
तस्या एकादशभिरेकादशादित्या-न्निर्ममे	अव्यक्तो. ६
तस्या एवर्चो द्वात्रिंशद्भिरक्षरैस्तान् देवान् निर्ममे	अव्यक्तो. ६
तस्या एव द्वितीयः पादो भर्गमयो-ऽपो भुवो भर्गो देवस्य धीमही-त्यग्निर्वै भर्ग आदित्यो वै भर्ग-श्चन्द्रमा वै भर्गः	सावित्र्यु. १०
तस्या एव प्रथमः पादो भूस्तत्सवितु-र्वरेण्यमित्यग्निर्वै वरेण्यमापो वरेण्यं चन्द्रमा वरेण्यम्	सावित्र्यु. १०
तस्या एव ब्रह्मा अजीजनत्, विष्णु-रजीजनत्, रुद्रोऽजीजनत्	बह्वृचो. १
तस्या एष तृतीयः पादः स्वर्धियो यो नः प्रचोदयादिति	सावित्र्यु. १०
तस्या एष पतिस्तस्मादु ब्रह्मणस्पतिः	बृह. १।३।२१
तस्या एष पतिस्तस्माद्बृहस्पतिः	बृह. १।३।२०
तस्याकृत्स्नतोमनएवास्यात्मा(मा.पा.)	बृह. १।४।१७
तस्याखण्डज्ञानेनाविर्भावो भवति, सोऽपि शाश्वतः	त्रि.म.ना.२।१
तस्या गोमयेन क्षारं जातम्	बृ.जा. १।६

तस्याग्निरर्कोऽन्नमशीतयः १ऐत. १।२।१

तस्याग्निरेवाग्निर्भवति बृह. ६।२।१४

तस्यादित्य एव समिद्रश्मयो धूमो-ऽहरर्चिः [छां. उ. ५।४।१।+ बृह. ६।२।९

तस्यादिरयमकारः स एव भवति सर्वं ह्ययमात्मा हि सर्वान्तरो न हीदं सर्वमहमिति नृसिंहो. ७।२

तस्याद्या प्रकृती राधिका नित्या निर्गुणा राधोप. ३।३

तस्या न कार्यं कारणं च विद्यते गुह्यका. ६७

तस्यानन्तरोमकूपेष्वनन्तकोटि-ब्रह्माण्डानि राधोप. १।३

तस्यानन्दो रतिः प्रजातिः पर-स्तात् प्रतिविहिता भूतमात्रा कौ. त. ३।५

तस्यानशनं दीक्षास्थानमुपसद् आसनं सूत्या वाग्जुहूर्मन उपभृत्.. सहवै. २१

तस्यानुतृप्तिं तृप्यति प्रजया पशुभि-रन्नाद्येन तेजसा ब्रह्मवर्चसेन [छान्दो. ५।१९।२+ ५।२३।२

तस्यान्नरसः परस्तात् प्रतिविहिता भूतमात्रा कौ. त. ३।५

तस्यान्तर्मनसि कामः समवर्तत इदं सृजेयमिति [बृ.जा.११+ नृ. पू. १।१

तस्यान्ते सुषिरं सूक्ष्मं तस्मिन्सर्वं प्रतिष्ठितम् महाना. ९।८

तस्यान्त्योऽयं मकारः स एव भवति तस्मान्मकारेण परमं ब्रह्मान्विच्छेत् नृ. उ. ७।३

तस्यापरे समुद्रे योनी रात्रिरेनं पश्चान्महिमान्वजायत बृह. १।१।२

तस्यापि हेरम्बगुरोः प्रसादात् यथा विरिञ्चिर्गरुडो मुकुन्दः हेरम्बो. ४

तस्याप्येवं तिसृष्ववस्थास्वन्नत्वं भवति मैत्रा. ६।१०

तस्या भासा सर्वमिदं विभाति गुह्यका. ४५

तस्याभितप्तस्य मुखं निरभिद्यत यथाऽण्डं मुखाद्वाग्वाचोऽग्निः.. २ ऐत. १।४

तस्याभितप्तस्य यशस्तेज इन्द्रियं वीर्यमन्नाद्यं रसोऽजायत [छान्दो. ३।१।३+ — ३।५।२

तस्यामर्थं निधाय [बृह. ६।४।९ १०,११,२१,

तस्यामश्राम्यत्तस्य श्रान्तस्य तप्तस्य तेजो रसो निरवर्तताग्निः बृह. १।२।२

तस्यायनं दक्षिणं चोत्तरं च प्रश्नो. १।९

तस्यायं भूतात्मा ह्यन्नमस्य कर्ता प्रधानः मैत्रा. ६।१०

तस्या रक्तवर्णा सुरभिः, तद्रोमयेन भस्म जातम् बृ. जा. १।५

तस्याराधनमीहते भ. गी. ७।२२

तस्यार्चत आपोऽजायन्तार्चते वै मेकमभूदिति तदेवार्कस्यार्कत्वम् बृ. उ. १।२।१

तस्यावयवभूतैस्तु व्याप्तं सर्वमिदं जगत् श्वेताश्व. ४।१०

तस्या वाचः परो देवः कूटस्थो वाक्प्र-बोधकः। सोऽहमस्मीति निश्चित्य यः सदा वर्तते पुमान् योगकुं. ३।२०

तस्या वेदिरुपस्थो लोमानि बर्हि-श्चर्माधिषवणे समिद्धो मध्यत-स्तौ मुष्कौ बृह. ६।४।३

तस्याश्चत्वारः स्तनाः स्वाहाकारो वषट्कारो हन्तकारः स्वधाकारः बृह. ५।८।१

तस्याश्चाक्षुषीविद्याया अहिर्बुध्न्य ऋषिः... चक्षूरोगनिवृत्तये जपे विनियोगः चाक्षुषो. २

तस्याश्चित्रवर्णा सुमनाः (गौः) तद्रो-मयेन रक्षा जाता बृ.जा. १।६

तस्यासत ऋषयः सप्त तीरे वागष्टमी ब्रह्मणा संविदाना बृह. २।२।३

तस्यासते हरयः सप्त तीरेस्वधां दुहाना अमृतस्य धाराम् [त्रिसुप.३ + महाना.१२।३

तस्यासावादित्योऽर्कोऽन्नमशीतयो-ऽन्नेन हीदं सर्वमश्नुते १ऐत. १।२।३

तस्यासीद्दुहिता गन्धर्वगृहीता तम-पृच्छाम कोऽसीति बृ.उ. ३।३।१

तस्यासीद्भार्या गन्धर्वगृहीता तम-पृच्छाम कोऽसीति बृह. ३।७।१

तस्यासुरः पाप्मा सच्चिदानन्दघन-ज्योतिर्भवति नृसिंहो. ६।२

तस्यास्तप्यमानाया रसान्प्रावृहद्भू-
रित्यृग्भ्यो भुवरिति यजुर्भ्यः
स्वरिति सामभ्यः छान्दो. ४।१७।२
तस्याहरेव प्राणो रात्रिरेव रयिः प्राणं
वा एते प्रस्कन्दन्ति ये दिवा रत्या
संयुज्यन्ते प्रश्नो. १।१३
तस्याहं न प्रणश्यामि भ.गी. ६।३०
तस्याहं निग्रहं मन्ये भ.गी. ६।३४
तस्याहं सुलभः पार्थ भ.गी. ८।१४
तस्यां जागर्ति संयमी भ.गी. २।६९
तस्यां प्रतिरूपः पुत्रो जायते स
आनन्दः बृह. ४।१।६
तस्यां लीलायां प्रत्ययः परा काष्ठा सामर. ४४
तस्यां (पुर्यां) हिरण्मयः कोशः अरुणो. १
तस्याः कपिलवर्णा नन्दा (गौः)
तद्गोमयेन विभूतिर्जाता बृ.जा. १।५
तस्याः कृष्णवर्णा भद्रा (गौः)
तद्गोमयेन भसितं जातम् बृ.जा. १।६
तस्याः प्राण ऋषभो मनो वत्सः बृह. ५।८।१
तस्याः शिखाया मध्ये परमात्मा
व्यवस्थितः [महाना. ९।१२+ महो. १।९+
[वासुदे. ७+चतुर्वे. ६+
तस्याः श्वेतवर्णा सुशीला (गौः)
तस्या गोमयेन क्षारं जातम् बृ.जा. १।६
तस्याः संवत्सर एव समिदाकाशो
धूमो रात्रिरर्चिर्दिशोऽङ्गारा अवा-
न्तरदिशो विस्फुलिङ्गाः छान्दो. ५।६।१
तस्येदमेव पृथिव्या रूपम् ३ ऐत. १।२।२
तस्येदमेवाधानमिदं प्रत्याधानं
प्राणः स्थूणान्नं दाम बृह. २।२।१
तस्येदं विश्वं मित्रमासीद्यदिदं किंच १ ऐत. २।१।४
तस्येन्द्रियाण्यवश्यानि (अज्ञस्य)
दुष्टाश्वा इव सारथेः कठो. ३।५
तस्येमा इष्टका यो वसन्तो ग्रीष्मो
वर्षाः शरद्धेमन्तः मैत्रा. ६।३३
तस्येमे लोका आत्मानस्तावेता-
वर्काश्वमेधौ बृह. १।२।७
तस्येयं पृथिवी सर्वा वित्तस्य पूर्णा स्यात् तैत्ति. २।८

तस्येह (कर्मणः) त्रिविधस्यापि
त्र्यधिष्ठानस्य देहिनः। मनो
...विद्यात्प्रवर्तकम् मनुसं. १२
तस्यैतदेव निरुक्तं हृद्ययमिति
तस्माद्धृदयमहरहर्वा एवंवित्
स्वर्गं लोकमेति छान्दो. ८।३।३
तस्यैतद्रूपं यन्ति मेषादिकालात्
सम्भृतं... संवत्सरम् मैत्रा. ६।१४
तस्यै तपो दमः कर्मेति प्रतिष्ठा, वेदाः
सर्वाङ्गानि, सत्यमायतनम् केनो. ४।८
तस्यैतल्लिङ्गं, अलिङ्गस्याग्नेर्यदौष्ण्यं
...चापां यः शिवतमो रसः मैत्रा. ६।३१
तस्यैतस्य तदेव रूपं, यदमुष्य
रूपं, यावमुष्य गेष्णौ तौ
गेष्णौ, यन्नाम तन्नाम छान्दो. १।७।५
तस्यैतस्य त्रयस्याह्नां मज्ज्ञां पर्वणा-
मिति त्रीणीतः षष्टिशतानि
त्रीणीतस्तानि सप्तविंशति-
शतानि भवन्ति ३ ऐत. २।१।२
तस्यैतस्य त्रयस्यास्थ्नां मज्ज्ञां पर्वणा-
मिति पंचैतश्चत्वारिंशच्छतानि
पञ्चैतस्तदशीतिसहस्रं भवति ३ ऐत. २।२।३
तस्यैतस्य ब्रह्मा रसः. तस्माद्ब्रह्माणं
ब्रह्मिष्ठं कुर्वीत ३ ऐत. २।३।१
तस्यैतस्य महतो भूतस्य निश्वसित-
मेवैतद्यदृग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदो-
ऽथर्ववेदः शिक्षाकल्पो व्याकरणं
निरुक्तं छन्दो ज्योतिषामयनं..
सर्वाणि च भूतानि सुबालो. २।१
तस्यैतस्य मूर्तस्यैतस्य मर्त्यस्यैतस्य
स्थितस्यैतस्य सत एष रसः बृह. २।३।२
तस्यैतस्य मूर्तस्यैतस्य मर्त्यस्यैतस्य
स्थितस्यैतस्य सत एष रसो
यच्चक्षुः सतो ह्येष रसः बृह. २।३।४
तस्यैतस्याकारो रसः ३ ऐत. २।३।१
तस्यैतस्यात्मनः प्राण ऊष्म रूपम-
स्थीनि स्पर्शरूपं.. लोहितमिति ३ ऐत. २।१।१

तस्यैतस्यामूर्तस्यैतस्यामृतस्यैतस्य यत एतस्य तस्यैष रसो य एष एतस्मिन्मण्डले पुरुषः बृह. २।३।३,५
तस्यैतस्यासावादित्यो रसः ३ऐत. २।३।१
तस्यैतां प्रायश्चित्तिंविदाञ्चकारसुदेवः सहवै. २२
तस्यैता१ँ शान्ति कुर्वन्ति हर वैवस्वतोदकम् कठो. १।७
तस्यै धियो विज्ञातव्यं कामाः परस्तात्प्रतिविहिता भूतमात्रा कौ.त. ३।५
तस्यै नाम परस्तात्प्रतिविहिता भूतमात्रा कौ.त. ३।५
तस्यै यदुपांशु स प्राणः १ऐत. ३।६।७
तस्यैव कल्पनाहीनस्वरूपग्रहणं हि यत्। मनसा ध्याननिष्पाद्यं समाधिः सोऽभिधीयते भवसं. ३।३०
तस्यैव स्यात् पदवित्तं विदित्वा न लिप्यते कर्मणा पापकेन बृह. ४।४।२३
तस्यैवंविदुषो यज्ञस्यात्मा यजमानः श्रद्धा पत्नी शरीरमिध्ममुरो वेदिः महाना.१८।१
तस्यैवं स्तुवतो नित्यं समभ्यर्च्य सरस्वतीम्। भक्तिश्रद्धाभियुक्तस्य षण्मासात्प्रत्ययो भवेत् सरस्व. ३२
तस्यै वाचः पृथिवी शरीरं, ज्योती रूपमयमग्निः बृह. १।५।११
तस्यैवात्मा पदवित्तं विदित्वा, न कर्मणा लिप्यते पापकेन इतिहा. २०
तस्यैष आत्मा विवृणुते तनू१ँ स्वां [मुण्ड. ३।२।३+ कठो. २।२३
तस्यैष आत्मा विशते ब्रह्म धाम मुण्ड. ३।२।४
तस्यैष आदेशो यदेतद्विद्युतो व्यद्युतदा ३ इतीति न्यमीमिषदा ३ इत्यधिदैवतम् केनो. ४।४
तस्यैष एव शारीर आत्मा तैत्ति.२।३,४,५
तस्यैषा भवति अनुष्टुप्प्रथमा भवति, अनुष्टुबुत्तमा भवति नृ.पू. १।१
तस्यैषा श्रुतिर्यत्रैतत्कर्णावपिगृह्य निनदमिव नदथुरिवाग्नेरिव ज्वलत उपशृणोति छान्दो.३।१३।८

तस्यैषैव दृष्टिरेतद्विज्ञानं यत्रैतत्पुरुषः सुप्तः स्वप्नं न कंचन पश्यति कौ.त. ३।३
तस्यैषैव सिद्धिरेतद्विज्ञानं यत्रैतत्पुरुष आर्तो मरिष्यन्नाबल्यं न्येत्य मोहं नैति कौ.त. ३।३
तस्यो कृत्स्नता मन एवास्यात्मा, वाग्जाया, प्राणः प्रजा, चक्षुर्मानुषं वित्तम् बृह. १।४।१७
तस्योत्तरतः शिरो दक्षिणतः पादौ [अ. शिरः. ३।४+ बटुको. १९
तस्योदिति नाम स एष सर्वेभ्यः पाप्मभ्य उदित उदेति छान्दो. १।६।७
तस्योर्ध्वे कुण्डलीस्थानं नाभेस्तिर्यगधोर्ध्वतः। अष्टप्रकृतिरूपा सा.. त्रि.ब्रा. २।६२
तस्योपनिषत्सत्यस्य सत्यमिति, प्राणा वै सत्यं, तेषां वै सत्यम् [बृ.उ. २।१।२०+ मैत्रा. ६।३२
तस्योपनिषदहरिति हन्ति पाप्मानं जहाति च, य एवं वेद बृह. ५।५।३
तस्योपनिषदहमिति हन्ति पाप्मानं जहाति च.. बृह. ५।५।४
तस्योपव्याख्यानं भूतं भवद्भविष्यदिति सर्वमोङ्कार एव माण्डू. १ + [नृ.पू. ४।२ + नृसिंहो. १।२
तस्योपव्याख्यानं भूतं भव्यं भविष्यद्यच्चान्यत्तत्त्वमंत्रवर्णदेवताछन्दोऋक्कलाशक्तिसृष्ट्यात्मकमिति तारसा. २।५
तस्यो मे किमन्नं किंवास इति यदिदं किञ्चाश्वभ्य आ कृमिभ्य आ कीटपतङ्गेभ्यस्तत्तेऽन्नम् बृह. ६।१।१४
तस्यो मे बलिं कुरुतेति, तथेति बृह. ६।१।१३
तस्योष्णिग्लोमानि, त्वग्गायत्री, त्रिष्टुम्मांसं, अनुष्टुप्.. १ऐत. १।६।१
तं केन विजानीयाद्विज्ञातारमरे केन कं विजानीयात् बृह. २।४।१४
तं केन विजानीयात् स एष नेति नेतीत्यात्माऽगृह्यो नहि गृह्यते.. बृह. ४।५।१५

तं गणेशं तं गणेशं तं गणेश-
सिदं श्रेष्ठम् गणेशो. २।१
तं च्यावति स भूत्वाऽसौ तद्वहः
समुपैति तम् वैतथ्य. २९
तं चेदेतस्मिन्वयसि किञ्चिदुपतपे-
त्स ब्रूयात्.. [छान्दो. ३।१६।२,४,६
तं चेन्मे न विवक्ष्यसि मूर्धा ते
विपतिष्यतीति बृह. ३।९।२६
तं चेद्ब्रूयुरतिवाद्यसीत्यतिवाद्यस्मीति
ब्रूयान्नापह्नुवीत छांदो.७।१५।४
तं चेद्ब्रूयुरस्मिꣳश्चेदिदं ब्रह्मपुरे सर्वꣳ
समाहितꣳ सर्वाणि च भूतानि..
प्रध्वꣳसते वा किं ततोऽति-
शिष्यत इति छान्दो. ८।१।४
तं चेद्ब्रूयुर्यदिदमस्मिन्ब्रह्मपुरे दहरं
पुण्डरीकं वेश्म छान्दो. ८।१।२
तं जातमभिव्याददात्स भाणकरोत्
सैव वागभवत् बृह. १।२।४
'तं जानन्नग्नऽआरोहाथा(धा)न्नो वर्धया
रयिम्' (वा.सं ३।१४ अथर्व.३।२०।१)
इत्यनेन मन्त्रेणाग्निमाजिघ्रेत् याज्ञव. १
'जायमानं घोषा उलूलवो अनू-
दतिष्ठन्त छान्दो.३।१९।३
तं जायोवाच, तप्तो ब्रह्मचारी कुशलं
मग्नीन्परिचचारीन्मा त्वाऽग्नयः
परिप्रवोचन्प्रब्रूह्यस्मा इति छान्दो.४।१०।२
तं जायोवाच हन्त पत इम एव
कुल्माषा इति छान्दो. १।१०।७
तं ज्ञात्वा मुच्यते जन्तुः (मा.पा.) कठो. ६।८
तं तथा कृपयाऽऽविष्टं भ.गी. २।१
तं तपसा द्वादश द्वादशानन्द इति तैत्ति. ३।११
तं तमेवेति कौन्तेय भ.गी. ८।६
तं तं लोकं जयते तांश्च कामांस्तस्मा-
दात्मज्ञं ह्यर्चयेद्भूतिकामः मुण्ड. ३।१।१०
तं तं तन्तुमन्वेके अनुसञ्चरन्ति सहवै. १०
तं तं नियममास्थाय भ.गी. ७।२०
तं ते गर्भं हवामहे दशमे मासि सूतवे बृह. ६।४।२२
[ऋ.सं.८।८।४२= मं.१०।१८४।४२
तं त्वा पृच्छामि क्वासौ पुरुष इति प्रश्नो. ६।१

तं त्वा भग प्रविशानि स्वाहा तै.उ. १।४।६
तं त्वौपनिषदं पुरुषं पृच्छामि तं चेन्मे
न विवक्ष्यसि मूर्धा ते विपतिष्यति बृह. ३।९।२६
तं दुर्दर्शं गूढमनुप्रविष्टं.. अध्या-
त्मयोगाधिगमेन देवं मत्वा
धीरो हर्षशोकौ जहाति कठो. २।१२
तं दृष्ट्वा शान्तमनसं स्पृहयन्ति
दिवौकसः। लिङ्गाभावात्तु कैव-
ल्यमिति ब्रह्मानुशासनम् ना.प. ४।३७
तं देवतानां परमं च दैवतं...
विदाम देवं परमेशमीड्यम् श्वेता. ६।७
तं देवदेवं शरणं प्रजानां यज्ञात्मकं
सर्वलोकप्रतिष्ठम्.. नमस्ते विष्णुहृ. १।६
तं देवा अब्रुवन् त्वमुक्थमसि त्वमिदं
सर्वमसि, तव वयं स्मः... १ऐत. १।४।७
तं देवा अब्रुवन्नयं वै नः सर्वेषां
वसिष्ठ इति १ऐत. २।२।२
तं देवा अब्रुवन्नयं वै नः सर्वेषां
वाम इति १ऐत. २।१।५
तं देवा ऊचुरनुजावरोऽसि
त्वमस्माकं कुतस्तवाधिपत्यम् अव्यक्तो. ८
तं देवा प्राणयन्त, स प्रणीतः प्राता-
यत प्रातायती ꣳ तत्प्रातरभवत् १ऐत. १।५।१
तं देवाश्चक्रिरे धर्मꣳ स एवाद्य स
उ श्व इति बृह. १।५।२३
तं देवाः सर्वेऽर्पितास्तदु नात्येति
कश्चन, एतद्वै तत् कठो. ४।९
तं दैवमुख्यं सुरतं भवाय पारमा. ९।७
तं नायतनं बोधयेदित्याहुः बृह. ४।३।१४
तं नित्यबोधस्तत्स्वयमेवास्थितिस्त्वं
शान्तमचलं.. प.हं. ३
तं पञ्चशतान्यप्सरसां प्रतिधावन्ति
शतं मालाहस्ताः ... तं ब्रह्मा-
लङ्कारेणालङ्कुर्वन्ति कौ.त. १।४
तं पश्चाद्विर्बलिं कुर्यादथवा खननं
चरेत्। पुंसः प्रव्रजनं प्रोक्तं.. पैङ्गलो. ४।५
तं पाकेन मनसा पश्यमन्तितः ३ऐत. १।६।७
[ऋक्सं.अ.८।६।१६ =मं१०।११४।४
[ऐ.आ.३।१।६।५९

तं पाणावादायोत्तस्थौ, तौ ह पुरुषं सुप्तमाजग्मतुः बृह. २।१।१५
तं पीठगं येऽनुभजन्ति धीरास्तेषां सुखं शाश्वतं नेतरेषाम् गो.पू. ३।३
तं प्रजापतिरब्रवीद्गच्छ देवाना-मधिपतिर्भवेति अव्यक्तो. ८
तं प्रजापतिरिन्द्रं त्रिकलशैरमृतपूर्णै-रानुष्टुभाभिमन्त्रितैरभिषिच्य तं सुदर्शनेन दक्षिणतो ररक्ष अव्यक्तो. ८
तं प्रतिब्रूयाद्विचक्षणादृतवो रेत आभृतं पञ्चदशात्प्रसूतात्.. कर्तर्येरयध्वम् कौ.त. १।२
तं प्रपदाभ्यां प्रापद्यत ब्रह्मेमं पुरुषम् १ऐत. १।३।११
तं प्राणं जानन्नग्न आरोहाथा नो वर्धय रयिम् जाबा. ४
तं प्रेतं दिष्टमितोऽग्नय एव हरन्ति छान्दो. ५।९।२
तं बिम्बवन्तं समदं समग्रं स्वाहा पारमा. ८।५
तं ब्रह्माह—अभिधावत मम यशसा विरजां (विजरां) वायं नदीं कौ.त. १।३
तं ब्रह्माह कोऽसीति तं प्रतिब्रूयात्.. कौ.त. १।५
तं ब्रह्मालङ्कारेणालंकुर्वन्ति कौ.त. १।४
तं (योगिनं) ब्रह्मेति स्तुवंति मं.ब्रा. २।९
तं भगवान् नृसिंहः प्रसीदति नृ.षट्च. ७
तं भर्तारं तमु गोप्तारमाहुः चित्यु. १४।१
तं भूतिरिति देवा उपासांचक्रिरे १ऐत. १।८।३
तं मद्गुरुपनिपत्याभ्युवाद सत्य-काम ३ इति छांदो. ४।८।२
तं हंस उपनिपत्याभ्युवाद सत्यकाम.. छान्दो. ४।७।२
तं मन्येत पितरं मातरं च, तस्मै न द्रुह्येत् संहितो. ३।६
तं माता रेह्लि स उ रेह्लि मातरं ३ऐत. १।६।७
[ऋ.अ.८।६।१६=मं. १०।११४।४+
[ऐ.आ. ३।१।६।१९
तं मा भगवाञ्छोकस्य पारं तारयतु छान्दो. ७।१।३
तं मामायुरमृतमित्युपास्स्वायुः प्राणः कौ.त. ३।२
तं मामेव विदित्वोपासीत भस्मजा. २।६
तं मे देवा ब्रह्मणा संविदानौ [तै.आ. ३।१४।४+ चित्यु. १४।४
तं यज्ञं विद्धि राजसम् भ.गी. १७।२१

तं विद्याद्दुःखसंयोगवियोगं योगसंज्ञितम् भ.गी. ६।२३
तद्यच्छत वर्षाण्यभ्यार्चत्तस्माच्छ-तर्चितः १ऐत. २।१।१
तद्यज्ञमिति मन्त्रेण सृष्टियज्ञः समीरितः। अनेनैव च मन्त्रेण मोक्षश्च समुदीरितः मुद्गलो. १।७
तद्यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् चित्यु. १२।३
[ऋ.अ.८।४।१८=मं.१०।९०।६+ वा.सं. ३१।९
तद्यदा लोकानामन्तानपृच्छाम बृह. ३।३।१
तद्यदावसायाश्वांस्तक्षापोह्यापा-गादथ व्यलिष्ट छाग. ६।१
तद्यदि स्वरेषूपालभेतेन्द्रं शरणं प्रपन्नो अभूवं... छान्दो. २।२२।३
तद्यद्देवा अब्रुवन्नयं वै नः सर्वेषां वसिष्ठ इति तस्माद्वसिष्ठः १ ऐत. २।२।२
तद्यद्देवा अब्रुवन्नयं वै नः सर्वेषां वाम इति तस्माद्वामदेवः १ऐत. २।१।५
तद्यथा यथोपासते तथैव भवति। तस्माद्ब्राह्मणः पुरुषरूपं परं ब्रह्मैवाहमिति भावयेत् मुद्गलो. ३।३
तद्वयं समिधं कृत्वा तुभ्यमग्ने पिदध्मसि सहवै. ७
तद्वा एतमात्मानं परमं ब्रह्मोङ्कारं तुरीयोङ्काराग्रविद्योतमनुष्टुभा नत्वा प्रसाद्योमिति संहृत्या-हमित्यनुसन्दध्यात् नृसिंहो. ४।१
तद्वा एतमात्मानं जाग्रत्यस्वप्न-मसुषुप्तं स्वप्ने जाग्रतमस्वप्नं, सुषुप्ते जाग्रतमस्वप्नं तुरीये... नृसिंहो. २।१
तद्वा एतमाहुरतिपिता बताभूरति-पितामहो बताभूः परमां बत काष्ठां प्रापत्.. बृह. ६।४।२८
तद्वा एतमिन्धं सन्तमिन्द्र इत्याचक्षते परोक्षेणैव बृह. ४।२।२
तद्वा एतं त्रिशिरमात्मानं त्रिशरीरं परं ब्रह्मानुसंदध्यात् नृसिंहो. १।२
तद्वा एतं देवा आत्मानमुपासते छान्दो. ८।१२।६
तद्विदित्वा मृत्युमत्येति हंसो. ४

त॰ विद्याकर्मणी समन्वारभेते
पूर्वप्रज्ञा च [बृह. ४।४।२+ निरुक्तो २।२
त॰ विद्याच्छुक्रममृतम् कठो. ६।१७
त॰ विन्दमानां सकलं व्रजन्तीं
तं देवमुख्यं सुरतं भवाय स्वाहा पारमा. ९।७
त॰ विरजं नित्यमनुसम्पराय स्वाहा पारमा. १०।३
त॰ विश्वरूपं भवभूतमीड्यं देवं
स्वचित्तस्थमुपास्य पूर्वम् श्वेता.६।५
त॰ वेद्यं पुरुषं वेद यथा मा वो मृत्युः
परिव्यथा इति प्रश्नो. ६।६
त॰ शतं वर्षाण्यभ्यार्चत् १ऐत. २।१।१
त॰ शान्तमचलमद्वयानन्दविज्ञान-
घन एवास्मि प.हंसो. ३
त॰ षड्विंशक इत्येते सप्तविंशं तथा-
ऽपरे । पुरुषं निर्गुणं सांख्यमथर्व-
शिरसो विदुः मंत्रिको. १४
त॰ षड्ढोतारमृतुभिः कल्पमानम् चित्स्यु. ११।५
त॰ स एष एवंविदुद्गातात्मने वा
यजमानाय वा यं कामं कामयेत
तमागायति बृह. १।३।२८
त॰ सकृद्विद्युत्तेव ह वा अस्य
श्रीर्भवति बृह. २।३।६
त॰ स द्वितीयस्याद्यार्धान्त्यं...
धाम तु जानीयात् नृ.पू. १।५
त॰ समंतं पृथ्वी द्विस्तावत्पर्येति बृह. ३।३।२
त॰ संवत्सरस्य परस्तादात्मन
आलभत बृह. १।२।७
तं सूर्यं भगवन्तं सर्वस्वरूपिणं निगमा
बहुधा वर्णयन्ति सूर्यता. १।२
त॰ स्त्री गर्भं बिभर्ति सोऽग्र एव
कुमारं जन्मनोऽग्रेऽधिभावयति २ ऐत. ४।३
त॰ स्वाच्छरीरात्प्रवृहेन्मुञ्जा-
दिवेषीका धैर्येण कठो. ६।१७
त॰ ह कुमारं सन्तं दक्षिणासु नीय-
मानासु श्रद्धाविवेश सोऽमन्यत कठो. १।२
त॰ ह चिरं वसेत्याज्ञापयांचकार छान्दो. ५।३।७
त॰ ह ततएवप्रष्टुंदध्रे होताऽश्वलः बृह. ३।१।२

त॰ ह देवमात्मबुद्धिप्रकाशं मुमुक्षुर्वै
शरणमहं प्रपद्ये श्वेता. ६।१८
त॰ ह देवमात्मबुद्धिप्रकाशं मुमुक्षुः
शरणं व्रजेत् गो.पू. ३।५
त॰ ह न मेने शाकल्यस्तस्य ह मूर्धा
विपपातापि बृह. ३।९।२६
त॰ हन्ताभ्यागच्छामेति तं
हाभ्याजग्मुः छान्दो.५।११।४
त॰ ह पाणावभिपद्य प्रवव्राज, तौ ह
सुप्तं पुरुषमीयतुः कौ.त. ४।१८
त॰ ह पितोवाच श्वेतकेतो वस
ब्रह्मचर्यं, न वै सौम्यास्मत्कुलीनो-
ऽननूच्य ब्रह्मबन्धुरिव भवतीति छां.उ. ६।१।१
त॰ ह प्रजापतिरुवाचमघवन्यच्छान्त-
हृदयः प्राव्राजीः किमिच्छन्
पुनरागम इति छां.उ.८।१०।३
त॰ ह य एवं वेदाप पुनर्मृत्युं जयति सहवै. २३
त॰ ह वागदृश्यमानाऽभ्युवाच भो
भो प्रजापते त्वमव्यक्तादु-
त्पन्नोऽसि अव्यक्तो. २
त॰ ह वागदृश्यमानाऽभ्युवाच सर्वं
बत गौतमो वद सु. ता. ३।१
त॰ ह शिलकः शालावत्यश्चैकि-
तायनं दाल्भ्यमुवाच छान्दो. १।८।६
त॰ हाङ्गिरा उद्गीथमुपासाञ्चक्रएव छान्दो.१।२।१०
त॰ हाजातशत्रुरामन्त्रयांचक्रे
बृहत्पाण्डरवासः... कौ.त. ४।१८
त॰ हाभिसमेत्योचुर्भगवन्नेधित्वंनः
श्रेष्ठोऽसि मोत्क्रमीरिति छान्दो.५।१।१२
त॰ हाभ्युवाद त्वं नु भगवः सयुग्वा
रैक्व इत्यह॰ह्यरा ३ इति छान्दो. ४।१।८
त॰ हाभ्युवाद रैक्वेदं सहस्रं गवामयं
निष्कोऽयमश्वतरीरथः छान्दो. ४।२।४
त॰ हासीनं पप्रच्छ गौतमस्य
पुत्रास्ते संवृतं लोके कौ.त. १।१
त॰ हासुराः ऋत्वा विदध्वं॰सुर्यथा-
ऽश्मानमाखणमृत्वा विध्वं॰सेत् छान्दो. १।२।७

तꣳहासुराः पाप्मना विविधुस्तस्मा-
तेनाभयं जिघ्रति　छान्दो. १।२।२

तꣳहास्मै ददौ तं सम्राडेव पूर्व
पप्रच्छ　बृह. ४।३।१

तꣳहेन्द्र उवाच न वै वरं परस्मै
वृणीते त्वमेव वृणीष्व　कौ.त. ३।१

तꣳहैतमतिधन्वा शौनक उदरशा-
ण्डिल्यायोक्त्वोवाच यावत्त एनं
प्रजायामुद्गीथं वेदयिष्यन्ते..　छांदो. १।९।३

तꣳहैतमधिधन्वा शौनकः.. (मा.पा.)　छां.उ. १।९।३

तꣳहैतमुद्दालक आरुणिर्वाजसने-
याय याज्ञवल्क्यायान्तेवासिन
उक्त्वोवाचापि य एनꣳ शुष्के
स्थाणौ निषिञ्चेज्जायेरञ्छाखाः
प्ररोहेयुः पलाशानीति　बृह. ६।३।७

तꣳहोवाच (गुरुः) यं वै सोम्यैत-
मणिमानं न निभालयस एतस्य
वै... महान्यग्रोधस्तिष्ठति　छांदो. ६।१२।२

तꣳहोवाच (पिता) मृत्यवे त्वां
ददामीति　कठो. १।४

तꣳहोवाच–यदिदमिति द्यावा-
पृथिव्योरन्तरम्भमिव नोप-
यन्ति नाभिचक्षते नाश्नुवन्ति　आर्षे. ३।१

तꣳहोवाच–विस्फुरन्तीरेवेमा
लेलायन्तीव सञ्जिहाना इव..　आर्षे. ७।१

तꣳहोवाचाजातशत्रुरेतावन्नु
बाला ३ इति　कौ.त. ४।१८

तꣳहोवाचाऽननुशिष्य वाव किल
मा भगवानब्रवीदनुत्वाशिषमिति　छान्दो. ५।३।४

ता अनेकधा समभवत्तदेतदोमिति　नारा. ४

ता अन्नमसृजन्त तस्माद्यत्र क च
वर्षति तदेव भूयिष्ठमन्नं भवति　छान्दो. ६।२।४

ता अब्रवीद्यथायतनं प्रविशतेति　२ ऐत.२।३

ता अब्रुवन् वै नोऽयमलमिति　२ऐत. २।२।२

ता अब्रुवन् सुकृतं बतेति, पुरुषो
वाव सुकृतम्　२ऐत. २।३

ता अब्रुवन् हन्तास्माच्छरीरा-
दुत्क्रामाम...　१ऐत. १।४।३

ता अब्रुवन्हन्तेदं पुनः शरीरं प्रविशाम　१ऐत. १।४।५

ता अभि प्रस्थापयन्नुवाच नासहस्रे-
णावर्तेति　छान्दो. ४।४।५

ता अमृता आपस्ता वा एता
ऋचः　[छान्दो.　३।१।२–३।५।१

ता अश्मैवाप्रबुद्धा अप्राणा स्थाणु-
रिव तिष्ठमानाः...　मैत्रा. २।६

ता अहिंसन्ताहमुक्थमस्म्यह-
मुक्थमस्मि　१ऐत. १।४।३

ता अहिंसन्ते वाऽहमुक्थमस्म्यह-
मुक्थमस्मि　१ऐत. १।४।४

ता आप ऐक्षंत बह्व्यः स्याम
प्रजायेयेति　छान्दो. ६।२।४

ता आपः सत्यमसृजन्त　बृह. ५।५।१

ता अब्रवीद्यथायतनं प्रविशतेति　२ऐत. २।३

ता आसु नाडीषु सृप्ता आभ्यो
नाडीभ्यः प्रतायन्ते　छान्दो. ८।६।२

ता इमा आपः, ता एतेनो हिरण्म-
यमण्डम्, तत्र चतुर्मुखो ब्रह्मा-
ऽजायत　चतुर्वे. १

ता इमादिशः परेण मृत्युमतिक्रान्ताः　बृह. १।३।१५

ता इमाःप्रजाअर्कमभितो निविष्टाः...　१ऐत. १।१।३

ता इमाः प्रतता आपः। ततस्तेजो
हिरण्मयमण्डम्　महो. १।४

ता एता आपो वज्रीभूत्वा तानि
रक्षांसि मंदेहारुणे द्वीपे प्रक्षिपन्ति　सहवै. २

ता एता देवताः प्राणापानयोरेव
विनष्टाः　१ऐत. ३।१।२

ता एता देवताः सृष्टा अस्मिन्महत्य-
र्णवे प्रापतन्　२ऐत. २।१

ता एताः संहिता नानन्तेवासिने
प्रब्रूयात्　३ऐत. २।६।४

ता एताः शीर्षञ्छ्रिताः　१ऐत. १।४।३

ता एते नो हिरण्मयमन्नम्　चतुर्वे. १

ता एनमब्रुवन्नायतनं नः प्रजानीहि
यस्मिन् प्रतिष्ठिता अन्नमदामेति　२ऐत. २।१

तादृग्रूपो हि पुरुषो...सम्पश्यति
यदेवैतत्खद्वस्त्विति विमुह्यति　मुक्तिको. २।५९

तादृशपरमयोगिपूजा यस्य लभ्यते
सोऽपि मुक्तो भवति　अद्वयता. ७

तानकृत्स्नविदो मन्दान् भ.गी. ३।२९
तानपरपक्षे न प्रजनयत्येतद्वै
स्वर्गस्य लोकस्य द्वारम् कौ.स. १।२
तानस्मै प्रददौ हन्तानुपानमित्यु-
च्छिष्टं वै मे पीतꣳ स्यादिति छांदो.१।१०।३
तानहं द्विषतः क्रूरान् भ.गी. १६।१९
तानि चेतनीकर्तुं सोऽकामयत ब्रह्मा-
ण्डब्रह्मरन्ध्राणि समस्तव्यष्टिमस्त-
कान्विदार्य तदेवानुप्राविशत् पैङ्गलो. १।५
तानिधर्माणिप्रथमान्यासन् [महावा.४+ चित्त्यु. १२।७
[ऋ.अ.८।४।१९=मं.१०।९०।१६ वा.सं.३१।१६
तानिन्द्रः सुपर्णो भूत्वा वायवे प्राय-
च्छत्तान्वायुरात्मनि धित्वा
तत्रागमयद्यत्राश्वमेधयाजिनो-
ऽभवन् बृह. ३।३।२
तानि पञ्च तन्मात्राणि त्रिगुणानि
भवन्ति पैङ्गलो. १।३
तानि भूतानि सूक्ष्माणि पञ्चीकृत्ये-
श्वरस्तदा कठरु. १८
तानि ह उपसीदत एव विदाञ्चक्रुः छाग. ३।२
तानि मृत्युः श्रमो भूत्वोपयेमे,
तान्याप्नोत्, तान्याप्त्वा मृत्यु-
रवारुन्धत् बृह. १।५।२१
तानि यदा गृह्णात्यथ हैतत्पुरुषो
स्वपितिनाम तद्गृहीत एव प्राणो
भवति गृहीता वाग्गृहीतं चक्षु-
र्गृहीतꣳ श्रोत्रं गृहीतं मनः बृह. २।१।१७
तानि वरमवृणीतादित्यो नो योद्धा सहवै. २
तानि वा एतानि यजूंष्येतं यजुर्वेद-
मभ्यतपꣳस्तस्याभितप्तस्य यश-
स्तेज इन्द्रियं वीर्यमन्नाद्यꣳरसो-
ऽजायत छान्दो. ३।२।२
तानि वा एतानि सामान्येतꣳ
सामवेदमभ्यतपन्.. अजायत छान्दो. ३।३।२
तानि वा एवान्यमृतानाममृतानि
वेदा ह्यमृतास्तेषामेतान्यमृतानि छान्दो. ३।५।४
तानि वा एतान्यवराणि पराꣳसि
न्यास एवात्यरेचयेद्य एवं वेद महाना. १६।१२
तानि सर्वाणि संयम्य भ. गी. २।६१

तानि सृष्टान्यन्योन्येनास्पर्धन्त बृह. १।५।२१
तानि सृष्टान्यण्डे प्राक्षिपत् पैङ्गलो. १।५
तानि ह वा इमानि गुणानि पुरुषेणे-
रितानि चक्रमिव चक्रिणा मैत्रा. ३।३
तानि ह वा एतानि चित्तैकायनानि
चित्तात्मानि चित्ते प्रतिष्ठितानि छान्दो. ७।५।२
तानि ह वा एतानि त्रीण्यक्षराणि छां.उ.८।३।५
तानि ह वा एतानि द्वाविंशति-
रक्षराणि छां.उ.२।१०।४
तानि ह वैतानिद्वाविंशति...(मा.पा.) छां.उ.२।१०।४
तानि ह वा एतानि रक्षांसि गाय-
त्रियाभिमन्त्रितेनाम्भसा शाम्यन्ति सहवै. २
तानि ह वा एतानि सङ्कल्पैकाय-
नानि सङ्कल्पात्मकानि सङ्कल्पे
प्रतिष्ठितानि छां.उ. ७।४।२
तानीमानि क्षुद्रमिश्राणि [मा.पा.] छां.उ. ५।१०।८
तानीमानिक्षुद्राण्यसकृदावर्तीनि
भूतानि भवन्ति छां.उ. ५।१०।८
तानेकधा समभवत्... वासुदे. ४
तानोङ्कारेणाग्नीध्रीया देवा असु-
रान्पराभावयन्त २ प्रणवो. ८
तान्वैद्युतान्पुरुषो मानस एत्य
ब्रह्मलोकान्गमयति तेषु.. पराः..
वसन्ति तेषां न पुनरावृत्तिः बृह. ६।२।१५
तान्येकशतꣳ संम्पेदुः छान्दो.८।१।३
तानृषयोऽब्रुवन्–पवित्रं नो ब्रूत,
येनारेपसः स्यामेति सहवै. ११
तान्खादित्वाऽमुं यज्ञं विततमेयाय छान्दो. १।१०।७
तान्प्रजापतिर्वरेणोपामंत्रयत सहवै. २
तान्निबोध द्विजोत्तम भ. गी. १।७
तान्दृष्ट्वा (ब्रह्मा) ऽबिभ्यत्
(गणेशं)तं सस्मार गणेशो.३।६
तान् पिष्टान्दधनि मधुनि घृत उप-
षिञ्चत्याज्यस्य जुहोति बृह. ६।३।१३
तान्यभ्यपतत्तेभ्योऽभितप्तेभ्य
ओङ्कारः प्रास्रवत् छान्दो.२।२३।३
तान्यस्यैतानि कर्मनामान्येव बृह. १।५।७
तान्यहं वेद सर्वाणि भ. गी. ४।५

तान्याचरथ नियतं सत्यकामा एष वः पन्थाः सुकृतस्य लोके मुण्ड. १।२।१
तान्यात्मनेऽकुरुतान्यत्रमना अभूवं नादर्शमन्यत्रमना अभूवं नाश्रौषमिति बृह. १।५।३
तान्याप्त्वा मृत्युरवारुन्धच्छ्राम्यत्येव वाक् श्राम्यति चक्षुः श्राम्यति श्रोत्रम् बृह. १।५।२१
तान्येतान्यनुव्रजन् नाश्रुमापातयेत् कठरु. १
तान्वरिष्ठः प्राण उवाच मा मोहमापद्यथाऽहमेवैतत्पञ्चधात्मानं प्रविभज्यैतद्बाणमवष्टभ्य विधारयामि प्रश्नो. २।३
तान्वायुरात्मनि धित्वा तत्रागमयद्यत्राश्वमेधयाजिनोऽभवन् बृह. ३।३।२
तान्विद्ध्यासुरनिश्चयान् भ. गी. १७।६
तान्वै वैद्युतान् पुरुषो मानव एत्य ह (मा.पा.) बृ. उ. ६।२।१५
तान्समीक्ष्य स कौन्तेयः भ. गी. १।२५
तान्सर्वानेवोपसेवेत, वारुणं त्वेव वर्जयेत् छांदो. २।२२।१
तान्ह स ऋषिरुवाच भूय एव तपसा ब्रह्मचर्येण श्रद्धया संवत्सरंसंवत्स्यथ प्रश्नो. १।२
तान्हासुरः पाप्मा परिजग्राह नृसिंहो. ६।१
तान्होवाच प्रातर्वः प्रतिवक्ताऽस्मीति छान्दो.५।११।७
तान्होवाच ब्राह्मणा भगवन्तो यो वो ब्रह्मिष्ठः स एता गा उदजतामिति ते ह ब्राह्मणा न दधृषुः बृह. ३।१।२
तान्होवाच यस्मिन्व उत्क्रान्ते शरीरं पापिष्ठतरमिव दृश्येत स वः श्रेष्ठः छान्दो. ५।१।७
तान्होवाचाश्वपतिर्वै भगवन्तोऽयं कैकयः सम्प्रतीममात्मानं वैश्वानरमध्येति छान्दो.५।११।४
तान्होवाचैतावदेवाहमेतत्परं ब्रह्म वेद नातः परमस्तीति प्रश्नो. ६।७
तान्होवाचेदैव मा प्रातरुपसमीयातेति छान्दो.१।१२।३
तापत्रयं त्वाध्यात्मिकाधिभौतिकाधिदैविकं कर्तृकर्मकार्य-ज्ञातृज्ञानज्ञेय-भोक्तृभोगभोग्यमिति त्रिविधम् मुद्गलो. ४।१
तापनीयोपनिषद्ध्यापकशतमेकमेकेन मन्त्रराजाध्यापकेन तत्समं, तद्वा एतत्परमं धाम... नृ.पू. ५।१६
तापसास्तत्र ते द्रुमाः । लोभक्रोधादयो दैत्याः कलिकालस्तिरस्कृतः। गोपरूपो हरिः साक्षात्.. कृष्णो. ९
तापसोऽतापसः (भवति) बृह. ४।३।२२
तापापहारिणीं देवीं भुक्तिमुक्तिप्रदायिनीम् । अनन्तां विजयां.. देव्यु. १३
ताप्यतापकरूपेण विभातमखिलं जगत् । प्रत्यगात्मतया भाति ज्ञानाद्वेदान्तवाक्यजात् कठरु. ३९
ताभिरेतᳲ रुद्रोऽन्वायत्तः बृह. २।२।२
ताभिः क्षुधं पाप्मानमपाघ्नन् सहवै. १३
ताभिः प्रत्यवसृप्य पुरीतति शेते बृह. २।१।१९
ताभ्यः पुरुषमानयत्ता अब्रुवन्सुकृतं बतेति, पुरुषो वाव सुकृतम् २ऐत. २।३
ताभ्यामयं प्राणश्छन्नः बृह. १।६।३
ताभ्यामिदं विश्वमेजत्समेति बृह. ६।२।२
ताभ्यो गामानयत्ता अब्रुवन्न वै नोऽयमलमिति २ऐत. २।२
ताभ्योऽभितप्ताभ्यो मूर्तिरजायत २ऐत. ३।२
ताभ्योऽश्वमानयत्ता अब्रुवन्न वै नोऽयमलमिति २ऐत. २।२
तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम् देव्यु. ६+
[वनदु. ११५,१६५+ महाना. ६।१४
[ऋ.खि. १०।१२७।१२+ तै.आ.१०।२।१
तामप्यथ (चिन्मात्रवासनां) परित्यज्य मनोबुद्धिसमन्विताम् । शेषस्थिरसमाधानो भव... मुक्तिको.२।७१
तामसत्वं हर गणेशो. ४।९
तामसं परिचक्षते भ.गी. १७।१३
तामसः परिकीर्तितः भ.गी. १८।७
तामसी चेति तां शृणु भ.गी. १७।२

तामसी दैत्यपक्षेषु माया त्रेधा-
ह्युदाहृता। अजेया वैष्णवी माया.. कृष्णो. ५
तामसी द्रव्यशक्तिः ग.शो. ४।३
तामसी राजसी सात्त्विकी मानुषी..
(मूर्तिः) भक्तियोगे तिष्ठति गोपालो. ३।२
तामस्याः पञ्च तन्मात्रा अजायन्त
पञ्च भूतान्यजायन्त ग.शो.४।४
ता महासंहिता इत्याचक्षते तैत्ति. १।३।१
तामात्मस्थां येऽनुपश्यन्ति धीराः गुह्यका. ४४
तामाहुरभ्यां महतीं महीयसीम् गुह्यका. ५१
तामिहायुषे शरणं प्रपद्ये ग. पू. २।३
तामीश्वराणां परमां महेश्वरीम् गुह्यका. ६६
तासु नाम्नीरयति नाम्नि मन्त्रा
एकं भवन्ति मन्त्रेषु कर्माणि [छान्दो. ७।४।१+७।५।१
तामेत्य सर्वविद्याज्ञानवान्भवति तारोप. ४
तामेव प्रत्यक्षं तां वदिष्यामि कौलो. शां.
तामेव भान्तीमनुभाति सर्वं गुह्यका. ४९
तामेवमनूचानां गायन्नासिष्ट अव्यक्तो. ३
तामेव विद्धाम्यहम् भ.गी. ७।२१
ता यत्राभिसायं बभूवुस्तत्राग्निमुप-
समाधाय गा उपरुध्य समिधमाधाय
पश्चादग्नेः प्राङुपोपविवेश [छान्दो. ४।६।१-४।८।१
ता यथा तत्र न विदुरियमहमस्मीति छान्दो.६।१०।१
ता यो वेद स वेद ब्रह्म तैत्ति. १।५।३
तारकत्वात्तारको भवति तारसा. २।१
[रामो. ता. १।२+ श्रीवि.ता. १।२
तारकमित्येतत्तारकं ब्राह्मणो नित्यं
महीयते श्रीवि.ता. १।२
तारकं दीर्घानलं बिन्दुपूर्वकं दीर्घो-
नलं.. इत्येतद्ब्रह्मात्मिकाः..
उपासितव्याः रामो. १।२
तारकं द्विविधं-मूर्तितारकममूर्ति-
तारकमिति मं. ब्रा. १।४
तारकं ब्रह्मेति गदितं वन्दे श्री-
रामवैभवम् अद्वयता.शीर्ष.
तारकाभ्यां तद्दर्शनमात्राण्युभयैक-
त्त्वया मनोयुक्तं ध्यायेत् अद्वयता. ६
तारकाभ्यां सूर्यचन्द्रमण्डलदर्शनं
ब्रह्माण्डमिव... अद्वयता. ६
तारकाभ्यां सदूर्ध्वस्थसत्त्वदर्शना-
न्मनोयुक्तेनान्तरीक्षणेन
सच्चिदानन्दस्वरूपं ब्रह्मैव अद्वयता. ६
तारयतीति तारा तारोप. १
ताररहिता पुनरेकजटा भवति तारोप. ५
तारसार-महावाक्य-पञ्चब्रह्मा-
ग्निहोत्रकम् मुक्तिको. १।३८
तारसंयमात्सकलविषयज्ञानं भवति शांडि. १।७।५२
तारं ज्योतिषि संयोज्य...पूर्वा-
भ्यासस्य मार्गोऽयं... शांडि. १।७।१७
तारं परं रमाबीजम् द. मू. १०
तारादिकाद्यान्ता चेत्तारा भवति तारोप. ४
तारा स्यादर्धपञ्चाक्षररूपा ब्रह्म-
विष्णुमहेश्वरसदाशिवबिन्दु-
मेलनरूपा विद्या तारोप. १
तारेण रुद्धं, एतत्तव मनुस्वरूपम् गणप.७
तारेति परमा तारा तारोप. १३
तारे (चित्तसंयमात्) सिद्धदर्शनम् शांडि. १।७।५२
ताभिर्वा एतदास्रवदास्रवति बृह. ४।२।३
तालवनं बृहद्वनं कुमुदवनं...
दधिवनं वृन्दावनमिति सामर. ५
तालुचक्रं, तत्रामृतधाराप्रवाहः सौभाग्य. २९
तालुमूलगतां यत्नाज्जिह्वयाऽऽक्रम्य
घंटिकाम्.. प्राणस्पन्दो निरुध्यते शांडि. १।७।३०
तालुमूलं समुत्कृष्य सप्तवासर-
मात्मवित्। स्वगुरूक्तप्रकारेण
मलं सर्वं विशोधयेत् योगकुं. २।२८
तालुमूले स्थितश्चन्द्रः सुधां वर्षत्यधोमुखः यो.शि. ५।३३
तालुमूलोर्ध्वभागे महाज्योतिर्मयूखो
वर्तते, तद्योगिभिर्ध्येयम् अद्वयता. ७
तालुमूलोर्ध्वभागे महाज्योतिर्विद्यते
तद्दर्शनादणिमादिसिद्धिः मं.ब्रा. १।४
तालुरसनाग्रनिपीडनाद्वाङ्मनःप्राण-
निरोधनाद्ब्रह्म तर्केण पश्यति मैत्रा. ६।२०
तालुः शंभोर्वाकः (शारीरयज्ञस्य) प्रा.हो. ४।१

तां चेदविद्वानुदगास्यो मूर्धा ते व्यपतिष्यत्तथोक्तस्य मया.. छांदो.१।११।७
तां चेदविद्वान्प्रति हरिष्यो मूर्धा... छांदो. १।११।९
तां चेदविद्वान्प्रस्तोष्यसि मूर्धा ते विपतिष्यतीति छांदो. १।११।४
तां चेदविद्वान्प्रास्तोष्यो मूर्धा ते व्यपतिष्यत् तथोक्तस्य मयेति छांदो.१।११।५
तां जीवरूपिणीं ध्यायेज्ज्योतिष्ठं मुक्तिहेतवे योगरा. ७
तां त्वहं तुभ्यं वक्ष्यामि को हि त्वैवं ब्रुवन्तमर्हति प्रत्याख्यातुमिति बृह. ६।२।८
तां दुर्गां दुर्गमां देवीं.. नमामि भवभीतोऽहं देव्यु. १०
तां (कुण्डलिनीं) दृष्ट्वा मनसैव नरः सर्वपापविनाशद्वारा मुक्तो भवति अद्वयता. २
तां देवतामुपातिष्ठत यज्ञकामाः सद्वै. १३
तां द्योतमानाꣳ स्वर्यं मनीषां चित्यु. ११।११
तां (मालां) पञ्चभिर्गन्धैरमृतैः पञ्चभिर्गव्यैस्तनुभिः शोधयित्वा ...प्रत्यक्षमादिक्षान्तैर्वर्णैर्भावयेत् अ.मा. ३
तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् [ऋ.खि.५।८७।१ श्रीसू. २,१५
तां पद्मनेमिं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मेनश्यतां..[ऋ.खि.५।८७।५ श्रीसू. ९
तां योगमिति मन्यन्ते स्थिरामिन्द्रियधारणाम्। अप्रमत्तस्तदा भवति योगो हि प्रभवाप्ययौ कठो. ६।११
तां (ब्रह्मविद्यां) विदित्वा स च रक्तं जिज्ञासयामास अव्यक्तो. ३
तां वै देवीमात्मबुद्धिप्रकाशां मुमुक्षुर्वै शरणमहं प्रपद्ये.. गुह्यका. ७२
तां (मृदं) शुद्धजलेन प्रणवेन घर्षयेत् कात्याय. १
ताꣳ समन्तं पृथिवीं द्विस्तावत्समुद्रः पर्येति बृह. ३।३।२
ताꣳ समभवत्ततो मनुष्या अजायन्त बृह. १।४।४
ताꣳ समेवाभवत्तत एकशफमजायत बृ.उ. १।४।४
ताꣳ समेवाभवत्ततो गावोऽजायन्त बृ.उ. १।४।४
ताꣳ समेवाभवत्ततोऽजावयोऽजायन्त बृ.उ.१।४।४
तां सानुमन्तो विदुषस्त्वतेजसा.. वरप्रदाय पित्रे स्वाहा पारमा. ६।५
तां सृष्ट्वाऽध उपास्ते, तस्मात्स्त्रियमध उपासीत बृह. ६।४।२
ताꣳ स्तत्र देवा यथा सोमꣳराजानमाप्यायस्वापक्षीयस्वेत्येवमेनाꣳस्तत्र भक्षयन्ति बृह. ६।२।१६
तांस्तथैव भजाम्यहम् भ.गी. ४।११
तांस्तितिक्षस्व भारत भ.गी. २।१४
ताꣳस्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति, ये के चात्महनो जनाः ईशा. ३
ताꣳस्तेष्वन्वविन्दञ्छ्रद्धयाच तपसाच सद्वै. ११
ताꣳ स्त्वं वृत्रहञ्जहि वास्मभ्यमाभर सद्वै. ७
ताꣳ ह्यसुराः पाप्मना विविधुस्तस्मात्तयोभयं वदति सत्यं चानृतं च छान्दो. १।२।३
ताꣳ हैतामेके सावित्रीमनुष्टुभमन्वाहुः बृह. ५।१४।५
ताꣳ होवाच किमेतद्यक्षमिति केनो. ३।१२
ताः पय आहुतयो देवानामभवन् सद्वै. १३
ताः पुनः पुनरुदयनः प्रचरन्त्येवं ह वै तत्सर्वं परे देवे मनस्येकीभवति प्रश्नो. ४।२
ताः पुनरुदयन्तःप्रचरन्ति..(मा.पा.) प्रश्नो. ४।२
ताःसर्वानाड्यःसुषुप्तस्येनाकाशवत् परब्र. १
ताः सृष्टा अब्रुवन् कथमन्नाद्या अभवन्निति ग.पू. १।३
ताः स्मरणादनुमीयन्ते पैङ्गलो. ३।३
तितिक्षाज्ञानवैराग्यशमादिगुणवर्जितः। भिक्षामात्रेण जीवी स्यात्स यतिर्यतिवृत्तिहा ना.प. ५।१२
तिमिरान्धं तामसम् शारीरको. ९
तिरश्चीनमजरं तद्रजोऽभूत् त्रिपुरो. ४
तिरश्ची सा प्रज्ञा, प्रज्ञया हि विपश्यति कौ.त. १।५
तिरोधानकरी पार्वती भवति ना.पू.ता. २।१
तिर्यगूर्ध्वमधश्शायी रश्मयस्तस्य सन्तताः। सन्तापयाति स्वं देहमापादतलमस्तकः महाना. ९।१०
तिर्यगूर्ध्वमधोदृष्टिं विहाय च महामतिः। स्थिरस्थायी विनिष्कम्पः सदा योगं समभ्यसेत् अ.ना. ३२

(अथ) तिर्यग्वाऽवाङ्वोर्ध्वं वाऽनूह्य एष परमात्माऽपरिमितोऽजोऽतर्क्योऽचिन्त्य एष आकाश आत्मा मैत्रा. ६।१७
तिलमध्ये यथा तैलं पाषाणेष्विव काञ्चनम् । हृदि स्थाने स्थितं पद्मं तस्यवक्त्रमधोमुखम् [योगत.८ यो.त. १३७
तिलाञ्जलिं पितॄणां ये ददति ते तन्मण्डलं प्राप्नुवन्ति सामर. ७५
तिलाञ्जुहोमि । सरसा९ सपिष्टान् गन्धार मम चित्ते रमन्तु स्वाहा महाना. १४।५
तिलानां तु (तिलेषुच) यथा तैलं पुष्पे गन्ध इवाश्रितः । पुरुषस्य शरीरेऽस्मिन् (तु) सबाह्याभ्यन्तरे (तथा)स्थितः [ध्या.बिं. ७+ ब्र.वि. ३५
तिलाः कृष्णास्तिलाः श्वेतास्तिलाः सौम्या वशानुगाः । तिलाः पुनन्तु मे पापं यत्किञ्चिद्दुरितं मयि महाना. १४।६
तिलेषु तिलवद्वेदे वेदान्तः सुप्रतिष्ठितः मुक्तिको. १।९
तिलेषु तैलं दधनीव सर्पिरापः स्रोतस्स्वरणीषु चाग्निः । एवमात्मनि जायते(गृह्यते) ऽसौ सत्येन (एनं) तपसा योऽनुपश्यति [ब्रह्मो. १९+ श्वेता. १।१५
तिलेषु तैलं दधनीव सर्पिर्यदापः स्रोतस्स्वरण्योरिवाग्निः । एवमात्माऽऽत्मनि जायते इतिहा. ४९
तिलैस्तावद्भिरभिषिच्य वायुलोककामो वायुलोकमवाप्नोति भस्मजा. २।१२
तिलौदनं पाचयित्वा सर्पिष्मन्तमश्नीयातामीश्वरौ जनयितवै बृह. ६।४।१७
तिष्ठतो व्रजतो वाऽपि यस्य चक्षुर्न दूरगम् । चतुर्युगां भुवं मुक्त्वा परिव्राट् सोऽन्ध उच्यते ना.प. ३।६६
तिष्ठत्यात्मरसे मनः अ.पू. २।९
तिष्ठन्गच्छन् स्पृशञ्जिघ्रन्नपि तल्लेपवर्जितः । अजडो गलितानन्दस्त्यक्तसंवेदनः सुखी अ.पू.४।६३

तिष्ठन्गच्छन्स्वपञ्जाग्रन्निवसन्नुत्पतन्पतन् । असदेवेदमित्यन्तं निश्चित्यास्थां परित्यज महो. ६।३४
तिष्ठन्ति परितस्तस्या नाड्यो मुनिपुङ्गव । द्विसप्तति सहस्राणि तासां मुख्याश्चतुर्दश जा.द. ४।६
तिष्ठन्तं परमेश्वरम् भ.गी. १३।२८
तिष्ठन्त्यहश्च शेषो भवति व्रतमिति.. संहितो. ५।१
तिष्ठन्नपि हि नासीनो गच्छन्नपि न गच्छति । शान्तोऽपि व्यवहारस्थः कुर्वन्नपि न लिप्यते सं.सो. २।३२
तिष्ठन्प्रातः प्राङ्मुख आयातु वरदेत्यावाह्य... महाव्याहृतिभिः.. गायत्रीं जपेत् सन्ध्यो. २
तिसृभिरुयायुषैस्त्रियम्बकैस्तिस्रो रेखाः कुर्वीत (भस्मना) जाबाल्यु. ६
तिस्रश्च रेखाः सदनानि भूमेस्त्रिविष्टपास्त्रिगुणास्त्रिप्रकाशाः । एतत्पुरं पूरक पूरणानाम्.. त्रि.महो. ९
तिस्रस्तृचाशीतयो यदूर्ध्वं सा पञ्चमी १ ऐत. ३।४।२
(ॐ)तिस्रः पुरस्त्रिपथा विश्वचर्षणा त्रिपुरो. १
तिस्रः पुरस्त्रिपथा विश्वचर्षणी त्रि.महो. १
तिस्रो मात्रा मृत्युमत्यः प्रयुक्ता अन्योन्यसक्ता अनुविप्रयुक्ताः । क्रियासु बाह्याभ्यन्तरमध्यमासु सम्यक्प्रयुक्तासु न कम्पते ज्ञः प्रश्नो. ५।६
तिस्रो मात्रार्धमात्रा च प्रत्यक्षस्य शिवस्य च १प्रणवो. ३
तिस्रो मात्रास्तथा ज्ञेयाः सोमसूर्याग्निरूपिणः ब्र.वि. ८
तिस्रो रात्रीर्दीक्षितो भवति सहवै. १२
तिस्रोरात्रीर्यदवात्सीर्गृहेमेऽनश्नन्ब्रह्मन्नतिथिर्नमस्यः । नमस्तेऽस्तु तस्मात्प्रति त्रीन्वरान्वृणीष्व कठो. १।९
तिस्रो रेखाः सदनानि भूस्त्रीस्त्रिविष्टपास्त्रिगुणास्त्रिप्रकाराः । एतत्त्रयं पूरकं पूरणानाम् त्रिपुरो. ५

तिस्रो व्याहृतयस्त्रिपदा गायत्री त्रयो वेदास्त्रयो देवास्त्रयो वर्णास्त्रयोऽग्नयश्च जायन्ते शाडि. ३।१।३
तीर्णो हि तदा सर्वाञ्छोकान्हृदयस्य भवति बृह. ४।३।२२
तीर्थदानतपोयागस्वाध्याया नैव तत्समाः (बिल्वसमाः) २ बिल्वो. २९
तीर्थभ्रान्त्यधमाधमा मैत्रे. २।२१
तीर्थानि तोयपूर्णानि देवान्काष्ठादिनिर्मितान् । योगिनो न प्रपद्यन्ते (प्रपूज्यन्ते)स्वात्मप्रत्ययकारणात् जा.द. ४।५२
तीर्थानि यानि पञ्चैते...प्राणायामस्य तत्फलम् योगो. १४
तीर्थे दाने जपे यज्ञे काष्ठे पाषाणके सदा । शिवं पश्यति मूढात्मा शिवे देहे प्रतिष्ठिते जा.द. ४।५७
तीर्थे श्वपचगृहे वा तनुं विहाय याति कैवल्यम् (ज्ञानी) पैङ्गलो. ४।५
तुन्दस्थजलमन्नं च रसादीनि समीकृतम् । तुन्दमध्यगतः प्राणस्तानि कुर्यात्पृथक्पृथक् त्रि. ब्रा. २।८३
तुन्दस्थं जलमन्नं च रसादिषु समीरितं तुन्दमध्यगतः प्राणस्तानि पृथक्कुर्यात् शाडि. १।४।८
तुन्दे तु ताणं कुर्याच्च कण्ठसङ्कोचने कृते । सरस्वत्यां चालनेन वक्षसश्चोर्ध्वगो मरुत् यो.कुं. १।१५
तुभ्यं प्राणः प्रजास्त्विमा बलिं हरन्ति... यः प्राणैः प्रतितिष्ठसि प्रश्नो. २।७
तुभ्यं मह्यमनन्ताय मह्यं तुभ्यं चिदात्मने (नमः) [वराहो.२।३४ +सं.सो. २।३२
तुमुलो व्यनुनादयन् भ.गी. १।१९
'तुरंमगस्यधीमहि' [ऋ.ब्र. ४।४।२।५ [मं=५।८२।१तै.ब्रा. १।११।३इति सर्वं पिबति छान्दो.५।२।७
(अथ) तुरीय ईश्वरग्रासः स स्वराट् स्वयमीश्वरः नृसिंहो. २।७
तुरीयगा सप्तमी (भूमिका) वराहो. ४।१
तुरीयपादस्तुरीयतुरीयंतुरीयातीतं च त्रि.म.ना. १।४
तुरीयपादस्तुरीयः (ब्राह्मणः पादः) त्रि.म.ना. १।४
तुरीयभूम्यां विहरन्ब्रह्मविद्भवति वराहो. ४।१
तुरीयमक्षरमिति श्रुतेः, तुरीयस्य नित्यत्वं.. त्रि.म.ना. ३।१
तुरीयमक्षरे साक्षात्तुरीयं सर्वं सर्वान्तर्भूतम् त्रि.ता. १।७
तुरीयमात्राचतुष्टयमर्धमात्रांशम्, अयमेव ब्रह्मप्रणवः प.हं.प. १०
तुरीयमेवाप्येति यस्तुरीयमेवास्तमेति सुबालो. ९।१,१३
तुरीयरूपां तुरीयातीतां... हिरण्यवर्णामिति पञ्चदशर्गिभर्ध्यायेत् सौ.ल. १
(अथ) तुरीयश्चतुरात्मा तुरीयावसितत्वादेकैकस्योतानुज्ञात्रनुज्ञाविकल्पैस्त्रयमप्यत्रापि सुषुप्तं स्वप्नं मायामात्रम् नृसिंहो. १।४
तुरीयं तु निराकारम् त्रि.म.ना. ३।१
तुरीयं निराकारमेकं ब्रह्म त्रि.म.ना. १।३
तुरीयं पदमक्षरम् ब्रह्मो. १
तुरीयं(सत्यचित्सुखम्)ब्रह्मसंज्ञितम् पं.ब्र. १३
तुरीयःपरमोहंसःसाक्षान्नारायणोयतिः ना.प. ४।१६
तुरीयाक्षरमीकारं पदानां मध्यवर्तीस्येवं व्याख्यातम् त्रि. ता. १।७
तुरीयातीतमवाच्यं.. निराकारं निराश्रयं निरतिशयाद्वैतपरमानन्दलक्षणमादिनारायणं ध्यायेत् त्रि.म.ना.७।१२
तुरीयातीतरूपात्मा शुभाशुभविवर्जितः तै.बिं. ४।४९
तुरीयातीतरूपोऽहं निर्विकल्पस्वरूपवान् तै.बिं. ३।४१
तुरीयातीतसन्न्यासपरिव्राजाक्षमालिका मुक्तिको. १।३६
तुरीयातीतस्यावधूतस्याजगरवृत्तिः ना.प. ५।७
तुरीयातीतावधूतयोर्ऋतुक्षौरं, कुटीचकस्य ऋतुद्वयक्षौरं बहूदकस्य न क्षौरं हंसस्य परमहंसस्य च न क्षौरम् ना.प. ७।६
तुरीयातीतावधूतयोर्न ज्येष्ठः, यो न स्वरूपज्ञः, स ज्येष्ठोऽपि कनिष्ठः ना.प. ५।८
तुरीयातीतावधूतयोर्मलत्याधिकारः ना.प. ७।९
तुरीयातीतावधूतयोर्निदिध्यासः ना. प. ७।११

तुष्टिस्त्वतुष्टिपर्यन्ता तस्माद्वाञ्छां परित्यज — अ.पू. ५।३७
तुष्टो यच्छेद्वाञ्छितार्थं महेशः — सि. शि. २५
तुष्यन्ति च रमन्ति च — भ. गी. १०।९
तूष्णीं शूद्रमजनयत्तस्माच्छूद्रो निर्विद्योऽभवत् — अव्यक्तो. ६
तुस्तूर्षमाणोदक्षिणश्चोत्तरश्च न हैवैनं स्तूष्णीयाताम् — कौ. त. २।१३
तृणकाष्ठादिगहने.. स्थाने न दीपयेदग्निं दीप्तं चापि ततः क्षिपेत् — शिवो. ७।७०
तृणं पांसुं महेन्द्रं च सुवर्णं मेरुसर्षपम्। आत्मम्भरितया सर्वमात्मसात्कर्तुमुद्यतः। कालोऽयं सर्वसंहारी तेनाक्रान्तं जगत्.. — महो. ३।३८
तृणाग्रेष्वम्बरे भानौ नरनागामरेषु च। यत्तिष्ठति तदेवाहमिति मत्वा न शोचति — अ. पू. ५।९४
तृणानलश्च नित्यश्चेत् क्षणिकं तज्जगद्भवेत् — ते. बिं. ६।८७
तृणानि ह्रीच्छन्ति कुशत्वमेव वृक्षा यूपत्वं पशोश्च गोत्वम्। सर्वाः प्रजा ब्राह्मणत्वं.. न ब्राह्मणत्वात् परमस्ति किञ्चित् — इतिहा. १४
तृणेन सत्तज्जीवानां सूर्यादिसकलभुवनप्रकाशिनी दिवा च रात्रिः (तृप्तिकर्त्री) — सीतो. ७
तृणोदकं पशुभ्यः स्वर्गं लोकं यजमानायान्नमात्मन आगायानि.. — छान्दो.२।२२।२
तृतीयसवनमनुसन्तनुत — छान्दो.३।१६।४
तृतीयस्तैजसो भवति (नारायणः) — ना. पू. ता.१।१
तृतीयं तृतीयेन (संयुज्यते) — नृ. पू. २।२
तृतीयं नाभिचक्रं स्यात्तन्मध्ये तु जगत्स्थितम् — योगरा. ९
तृतीयं नाभिचक्रं पञ्चावर्तं सर्पकुटिलाकारम् — सौभाग्य. २६
तृतीयं यः पिबेत् सामवेदः प्रीणातु — आचम. ४
तृतीयं सवमनु सन्तनुते –(मा.पा.) — छां.उ.३।१६।४
तृतीया ईकाररूपिणी अव्यक्तस्वरूपा भवतीति सीतेत्युदाहरंति — सीतो. ३
तृतीया तनुमानसी (ज्ञानभूमिः) — महो. ५।२४
तृतीया द्यौः स मकारः स सामभिः सामवेदो रुद्र आदित्या जगत्याहवनीयः सा साम्नस्तृतीयः पादो भवति — नृ. पू. २।१
तृतीया द्यौः स मकारः, स सामभिः सामवेदो रुद्रा आदित्या जगत्याहवनीयः — अ. शिखो. १
तृतीया शुभाशुभा शुक्ला रुद्रदैवत्या — अ. शिखो. १
तृतीया (मोक्षभूमिका) साङ्गभावना — अ. पू. ५।८२
तृतीयां (वृक्षशाखां) जहात्यथ सा शुष्यति, सर्वं जहाति सर्वं शुष्यति — छांदो.६।११।२
तृतीयां भूमिकां प्राप्य बुद्धोऽनुभवति स्वयम् — अक्ष्युप. २२
तृतीये उत्तराम्नायो ज्योतिर्मठः... — मठाम्ना. ५
तृतीयेनतुपिण्डेनमातस्तस्याभिजायते — पिण्डो. ५
तृतीये धामनि पूर्वस्या एव विद्याया यद्वाग्भवकूटं तेनैव मानवीं चान्द्रीं कौबेरीं विद्यामाचक्षते — त्रि. ता. १।१६
तृतीयोऽत्यन्तमात्मानमाचार्यकुलेऽवसादयन् (धर्मस्कन्धः) — छांदो. २।२३।१
तृप्तिरिति वृष्टौ, बलमिति विद्युति — तैत्ति. ३।१०।२
तृष्णया बध्यते जन्तुः सिंहः शृङ्खलया यथा — महो. ५।८७
तृष्णा क्रोधोऽनृतं माया... प्रतिषिद्धानि (२०) चैतानि सेवमानो व्रजेदधः — ना. प. ४।५-७
तृष्णाग्राहगृहीतानां संसारार्णवपातिनाम्। आवर्तैरुह्यमानानां दूरं स्वमन एव नौः — महो. ४।१०६
तृष्णा चपलमर्कटी, क्षणमायाति पातालम् — महो. ३।२३
तृष्णा च सुखदुःखानां कारणम् — आयुर्वे. १
तृष्णारज्जुगणं छित्त्वा मच्छरीरकपञ्जरात्। न जाने क्व गतोड्डीय निरहङ्कारपक्षिणी — सं. सो. २।१८

तृष्णाविषूचिकामन्त्रश्चिन्तात्यागो हि सद्द्विज । स्तोकेनानन्दमायाति स्तोकेनायाति खेदताम् महो. ३।२६
तृष्णासङ्गसमुद्भवम् भ. गी. १४।७
तृष्णा ह्रत्पद्मषट्पदी महो. ३।२४
तृष्णैका दीर्घदुःखदा । अन्तः– पुरस्थमपि या योजयत्यतिसङ्कटे महो. ३।२५
तृष्णा स्नेहो रागो लोभो हिंसा रतिः ...चञ्चलत्वं जिहीर्षार्थोपार्जनं ...परिग्रहावलम्बोऽनिष्टेष्विन्द्रियार्थेषु द्विष्टिरिष्टेष्वभिष्वङ्गपरिपूर्ण एत...इत्ययंभूतात्मा तस्मान्नानारूपाण्याप्नोति मैत्रा. ३।५
ते अब्रुवीर्देवतास्त्वेव वां देवतास्वाभजाम्येतासु भागिन्यौ करोमीति २ऐत. २।५
ते अस्यात्मेति वा अहमेतमुपास इति स यो हैतमेवमुपास्ते तेजस आत्मा भवति कौ.त. ४।४
ते उभे नानार्थे पुरुषँ सिनीतः कठो. २।१
ते कामक्रोधादयः ..साधनरूपा भवन्ति सामर. १०१
ते क्षुद्रसूक्ताश्चाभवन्महासूक्ताश्च... १ऐत. २।२।५
ते खल्विम एव पूर्वैराचार्यैः प्रोक्ता धर्माः संहितो. ३।९
तेऽग्निमब्रुवन्, जातवेद एतद्विजानीहि किमेतद्यक्षमिति केनो. ३।३
ते क्रमेण षोडशमात्रारूढाः, अकारे जाग्रद्विश्वः, उकारे जाग्रत्तैजसः. प. हं. प. १९
ते चन्द्रं प्राप्यान्नं भवन्ति बृह. ६।२।१६
ते चान्द्रमसमेव लोकमभिजयंते प्रश्नो. १।९
ते चावर्त्ये विमुच्यन्ते यावत्कर्म न सद्भवेत् शिवो. १-३४
ते छन्दोभिरच्छादयन्यदेभिरच्छादयं स्तच्छन्दसां छन्दस्त्वम् छां. उ. १।४।२
ते छन्दोभिराच्छादयन्यदभिराच्छादयन्– (मा. पा.) छां.उ. १।४।२
तेज एव तत्पूर्वं दर्शयित्वाऽथापः सृजते [छांदो. ७।११।१,१
तेजश्च तेजोमात्रा च प्रश्नो. ४।८
तेजश्च विद्योतयितव्यं च प्रश्नो. ४।८
तेजश्चास्मि विभावसौ भ. गी. ७।९
तेजस एव तद्ध्यापो जायन्ते छान्दो. ६।२।३
तेजसःसमृद्ध्यै पुण्यलोकविजित्यर्थायामृतत्वाय च (यष्टव्यम्) मैत्रा. ६।३६
तेजसःसोम्याऽश्यमानस्य योऽणिमा स ऊर्ध्वः समुदीषति सा वाग्भवति छान्दो. ६।६।४
तेजसात्याप्ताखिललोकं ब्रह्ममूर्धानं ब्रह्मादयो हीदं दृष्ट्वाऽस्तुवन् गणेशो. ४।८
तेजसा शरीरत्रयं संव्याप्य.. मात्राभिरोतानुज्ञात्रनुज्ञाविकल्परूपं चिन्तयन्ग्रसेत् नृसिंहो. ३।४
तेजसा सोम्य शुङ्गेन सन्मूलमन्विच्छ, सन्मूलाः सोम्येमाः सर्वाः प्रजाः छान्दो. ६।७।४
तेजसा हि तदा सम्पन्नो भवति छान्दो. ८।६।३
तेजसां तेजस्तेज आदधानः... तेजस्तेजसे स्वाहा पारमा. ४।४
तेजसीव तमो यत्र विलीनं भ्रान्तिकारणम् । अद्वितीये परे तत्त्वे निर्विशेषे भिदा कुतः अध्यात्मो. २४
तेजसो वाव भूयोऽस्तीति तन्मे भगवान्ब्रवीतु छांदो. ७।११।२
तेजस्कायममृतं सलिल एवेदं सलिलं वनं भूयस्तेनैव मार्गेण जाग्राय धावति सम्राट् सुबालो. ४।४
तेजस्तल्लोहितस्यात्र पिण्ड एवोभयोस्तयोः मैत्रा. ७।११
तेजस्तेजस्विनामहम् [भ.गी.७।१० +७।३६
तेजस्त्रयमकारोकारमकारप्रणवात्मकम् २ बिल्वो. २१
तेजस्यन्नादो भवति (मा. पा.) छां.उ. ३।१२।१
तेजस्विनी हास्य प्रजा भवति बृह. २।१।४
तेजस्वी भूयासम् चिस्यु. ७।४
तेजस्वी वै स तेजस्वतो लोकान् भास्वतोऽपहततमस्कानभिसिद्ध्यति छांदो. ७।११।२
तेजस्यन्नादोभवति [छान्दो. २।१४।२+ ३।१३।१
तेजः कल्पोधानम् भावनो. २
तेजः क्षमा धृतिः शौचं भ.गी. १६।३
तेजःक्षये क्षुधाकान्तिर्नश्यते मारुतक्षये वराहो. ५।५

तेजः प्रकाशने (शरीरस्य) गर्भो. १
तेजः परस्यां देवतायाम् छान्दो. ६।८।६
ते जीवा भक्तिमार्गीया एवैते सामर. २
तेजोदास्त्वमस्यग्निरसि महाना. १७।१५
तेजो-नाद-ध्यान-विद्या-योग-
तत्त्वात्मबोधकम् मुक्ति. १।३३
तेजोबिन्दुः परं ध्यानं विश्वात्महृदि
संस्थितम् । आणवं शांभवं
शांतं स्थूलं सूक्ष्मं परं च यत् ते.बिं. १।१
तेजो भित्त्वा वायुं भिनत्ति सुबालो. ११।२
तेजोभिरापूर्य जगत् समग्रं भ.गी. ११।३०
तेजोमध्ये स्थितं सत्त्वं सत्त्व-
मध्ये स्थितोऽच्युतः मैत्रा. ६।३८
तेजोमयं (यी) चिदस्ति सामर. ९७
तेजोमयं विश्वमनन्तमाद्यं भ.गी. ११।४७
तेजोमयी वागिति तद्धास्य विजिज्ञौ छांदो. ६।७।६
तेजोमयी वागिति भूय एवमा
भगवान्विज्ञापयतु [छांदो. ६।९।४+९।६
तेजो यत्ते रूपं कल्याणतमं तत्ते
पश्यामि योऽसावसौ..सोऽहमस्मि ईशा. १६
तेजोरसविभेदैस्तु वृत्तमेतच्चराचरम् बृ.जा. २।४
तेजोराशिं सर्वतो दीप्तिमन्तं भ.गी. ११।१७
तेजो वायौ विलीयते, वायुराकाशे.. सुबालो. २।२
तेजो वावाद्भ्यो भूयस्तद्वा
एतद्वायुमागृह्याकाशमभितपति छांदो. ७।११।१
तेजो वै पुत्रनामासि स जीव
शरदः शतम् कौ.त. २।११
तेजोऽशितं त्रेधा विधीयते तस्य
यःस्थविष्ठो धातुस्तदस्थि भवति,
यो मध्यमः स मज्जा, योऽणिष्ठः
सा वाक् छां.उ.६।५।३
तेजोह्वावउदानस्तस्मादुपशांततेजाः प्रश्नो. ३।९
ते तत एव द्रागिव व्यज्ञासिषुः छाग. ६।४
ते (भक्ताः)तत्र साभिमाना वर्तन्ते स्वसंवे. ३
ते तथेत्युक्त्वा तूष्णीमतिष्ठन्
..नीचैर्बभूवुः २प्रणवो. १९
तेत्वमर्चयन्तस्त्वंहिनःपिता,योऽस्माक-
मविद्यायाः परं पारं तारयसि प्रश्नो. ६।८
ते तं भुक्त्वा स्वर्गलोकं विशालं भ.गी. ९।२१

ते तेषु ब्रह्मलोकेषु पराः परावतो
वसन्ति न तेषां पुनरावृत्तिः बृह. ६।२।१५
तेऽथ (ऋषयः) कवषमैलूषं दास्याः
पुत्र इति... छाग. ११।१
ते देवा अब्रुवन्नेतावद्वा इद९ सर्वं
यदन्नं तदात्मन आगासीः बृह. १।३।१८
ते देवा इममात्मानं ज्ञातुमैच्छन्, ता९
हासुरः पाप्मा परिजग्राह नृसिंहो. ६।१
ते देवा ऊर्ध्वबाहवो रुद्रं स्तुवन्ति चतुर्वे. ८
ते देवा ज्योतिरुत्तितीर्षवो द्वितीया-
द्भयमेव पश्यन्त इममेवोकारा-
प्रविद्योतं तुरीयतुरीयमात्मान-
मनुष्टुभान्विष्य प्रणवेनैव
तस्मिन्नवस्थिताः नृसिंहो. ६।२
ते देवा देवयजनस्योत्तरार्धेऽसुरैः
संयत्ता आसन् २ प्रणवो. ८
ते देवा भावयन्तु वः भ. गी. ३।११
ते देवा भीता आसन्, क इमान-
सुरान्हनिष्यतीति २ प्रणवो. ७
ते देवाः पुत्रैषणायाश्च वित्तैषणायाश्च
लोकैषणायाश्च ससाधने व्युत्थाय
...प्रणवमेवैभ्यो परं ब्रह्मात्म-
प्रकाशं शून्यं जानन्तस्तत्रैव
परिसमाप्ताः नृ. ड. ६।३
ते देवाः सत्यमेवोपासते बृह. ५।५।१
ते द्वन्द्वमोहनिर्मुक्ताः भ. गी. ७।२८
ते द्वे ब्रह्मणि विन्देत कर्तृताकर्तृते
मुने । यत्रैवैष चमत्कारस्तमा-
श्रित्य स्थिरो भव महो. ४।१५
ते द्वे योनिस्तदेकं मिथुनम् सावित्र्यु. १।९
ते द्वे शाखे हंसवर्णे गायत्री
त्रिष्टुब्दैवत्ये नारदो. १
ते द्वे शाखे हंसवर्णे गायत्री
त्रिष्टुप्छन्दसी कात्याय. १
ते धर्माःस्कन्दनन्दिभ्यामन्यैश्च
मुनिसत्तमैः । सारमादाय
निर्दिष्टाः सम्यक्.. शिवो. १।७
तेधूममभिसम्भवन्ति धूमाद्रात्रि९
रात्रेरपरपक्षमपरपक्षाद्यान्षड्
दक्षिणैति छां.उ.५।१०।३

ते धूममभिसम्भवन्ति धूमाद्रात्रिꣳ रात्रेरपक्षीयमाणपक्षमपक्षीयमाणपक्षाद्यान्षण्मासान्दक्षिणादित्य एति	बृ. ६।२।१६
ते ध्यानयोगानुगता अपश्यन्देवात्मशक्तिं स्वगुणैर्निगूढाम् [श्वेताश्व. १।३+	ना. प. ९।२
तेन कूर्मोऽमृतेनाहमस्मि	चित्त्यु. ११।४
तेन गन्धमाल्यलोकेन सम्पन्नो महीयते	छान्दो. ८।२।६
तेन गीतवादित्रलोकेन सम्पन्नो महीयते	छांदो. ८।२।८
तेन चित्प्रतिबिम्बेन त्रिविधा भाति सा पुनः। प्रकृत्यवच्छिन्नतया	सरस्व. ३७
तेन चेतनेनेदं शरीरं चेतनवत्प्रतिष्ठापितम्	मैत्रा. २।५
तेन ततोऽपि न बहु दहेदेवꣳ सोम्य ते षोडशानां कलानामेका कला..	छान्दो. ६।७।३
तेन तर्ह्येष पुरुषो न शृणोति न पश्यति स्वपितीत्याचक्षते	प्रश्नो. ४।२
तेन तꣳह बको दाल्भ्यो विदाञ्चकार	छांदो. १।२।१३
तेन तꣳह बृहस्पतिरुद्गीथमुपासाञ्चक्रे	छांदो. १।२।११
तेन तꣳ हायास्य उद्गीथमुपासाञ्चक्रे	छांदो. १।२।१२
तेन त्रिराचामेत्। प्रथमं यः पिबेदृग्वेदः प्रीणातु	आचम. ३
तेनदेवाऽअयजन्तसाध्याऋषयश्चये [ऋ.अ. ८।४।१८ [वा.सं. ३१।९+	=मं.१०।९०।७ चित्त्यु. १२।४
तेन देवाधिपत्यं ब्रह्माधिपत्यं च गच्छति	ग.पू. १।१२
तेन देवाधिपत्यं स्वःपतित्वं च गच्छति	ग.पू. १।१२
तेन धनदादिकाष्ठापतिर्भवति	ग.पू. १।१२
तेन धीरा अपि यन्ति ब्रह्मविदः	बृह. ४।४।८
तेन नवरन्ध्ररूपो देहः	भावनो. २
तेन नित्यनिवृत्तः (परमहंसः)	प.हं. ३
तेन नो णकारषकारावुपाप्ताविति ह स्माह ह्रस्वो माण्डूकेयः	३ ऐत. २।६।२
तेन नो णकारषकारावुपाप्ताविति ह स्माह स्थविरः शाकल्यः ..	३ऐत. २।६।३
तेऽनन्योपासका भवन्ति	सामर. ७५
तेन पाप्मानमपहत्य ब्रह्मणा स्वर्गं लोकमभ्येति	१ऐत. ३।८।४
तेन पितृलोकेन सम्पन्नो महीयते	छांदो. ८।२।१
तेन प्रद्योतेनैष आत्मा निष्क्रामति	बृह. ४।४।२
तेन प्राच्यान्प्राणान्निदिमषु सन्निधत्ते	प्रश्नो. १।६
तेन भ्रातृलोकेन सम्पन्नो महीयते	छांदो. ८।२।३
तेन मनुष्याणां मोहको दाहको(वायुः) भक्ष्य-भोज्य-लेह्य-चोष्य-पेयात्मकं चतुर्विधमन्नं पाचयति	भावनो. ९
तेन मातृलोकेन सम्पन्नो महीयते	छान्दो.८।२।२
तेन मुखेन पक्षिणोऽत्सि (चन्द्रोपस्थानम्)	कौ. त. २।९
तेन मुखेन मामन्नादं कुरु। राजा त एकं मुखम्	
तेन मुखेन विशोऽत्सि	कौ. त. २।९
तेन मुखेनेमं लोकमत्सि	कौ. त. २।९
तेन मुखेन सर्वाणि भूतान्यत्सि	कौ. त. २।९
तेन मुह्यन्ति जन्तवः	भ. गी. ५।१५
तेन वक्रतुण्डाय हुमिति यो जानीयात् सोऽमृतत्वं... च गच्छति	ग. पू. १।१२
तेन वासनात्मकेन लिङ्गेनोत्पत्तिस्थितिलयानापद्यते	सामर. १००
तेन वेषेण भूम्यादिलोकं व्याप्यानन्तयोजनमत्यतिष्ठत् (विराट् पुरुषः)	मुद्गलो. २।२
तेन वै ते मृत्युमजयन्... संसारं चातरन्	नृ. पू. २।१
तेन(आनुष्टुभमन्त्रेण) वै ते मृत्युमजयन्...संसारं चातरन्	नृ.पू. २।१
तेन वै सर्वमिदमसृजत यदिदं किञ्च	नृ. पू. १।१
तेन सत्येन तपसर्तुरस्म्यार्तवोऽस्मि	कौ. त. १।२
तेन सखिलोकेन सम्पन्नो महीयते	छान्दो. ८।२।५
तेन सप्तद्वीपाधिपो भवति, भूःपतित्वं च गच्छति	ग. पू. १।१२
तेन (मन्त्रज्ञानेन) सर्वज्ञानं भवति	ग. पू. १।६

तेन सर्वमिदं प्रोतं तत्सत्यं तत्परं पदं १ यो.त.१३६
तेन सर्वदेवाधिपत्यं विष्णुलोकाधिपत्यं च गच्छति ग. पू. १।१२
तेन सर्वान्प्राणानन्निमिषु सन्निधत्ते प्रश्नो. १।६
तेन सर्वैः क्रतुभिरिष्टं भवति अ.शिरः. ३।१६
तेन सह मनोयुक्तं तारकं सुसंयोज्य ...भ्रूयुग्मं सावधानतया किञ्चिदूर्ध्वमुत्क्षेपयेत् अद्वयता.६
तेन स्त्रीलोकेन सम्पन्नो महीयते छान्दो. ८।२।९
तेन स्वयं त्वया ज्ञातं ज्ञेयं यस्य महात्मनः। भोगेभ्यो ह्यरतिर्जाता दृश्याद्वा सकलादिह महो. २।७१
तेन स्वसृलोको महीयते छान्दो. ८।२।४
तेन स्वेदमूत्रजलरक्तवीर्यरूपरसपुरुषादिकं प्राणः पृथक्कुर्यात् शाण्डि. १।४।८
तेन ह वाव तत्कुलमाचक्षते, यस्मिन्कुले भवति... बृह. १।५।२१
तेनाङ्गुलीमध्यमानात् सलिलमभवत् गायत्रीर. १
तेनातुराः क्षीणलोकाश्च्यवन्ते मुण्ड. १।२।९
तेनात्मना बहुज्ञेन निर्ज्ञाताश्चक्षुरादयः।.. दिष्ट्याऽस्मि विगतज्वरः अ. पू. ३।९
तेनाधीतं श्रुतं तेन तेन सर्वमनुष्ठितम्। मूलमंत्रं विजानाति यो विद्वान्गुरुदर्शितम् यो. शि. २।४
तेनाधीतं श्रुतं तेन... येन विप्रेण शिरसि त्रिपुण्ड्रं भस्मना धृतम् बृ. जा. ५।८
तेनान्नपानलोकेन सम्पन्नो महीयते छान्दो. ८।२।७
तेनान्योऽस्मत्समृच्छा तैतमस्मै प्रमुवामसि सहवै. ५
तेनामृतत्वमश्याम् चित्यु.१०।१,४
तेनामृतत्वस्येशानं माऽहं पौत्रमघं रुद्रमिति न ह्यस्मात्पूर्वाः प्रजाः प्रयन्तीति कौ. त. २।८
(पुत्र) ते नाम्ना मूर्धानमभिजिघ्रामि, असाविति... कौ. त. २।११
तेनायजंत यदृचोऽध्यगीषत, ताः पय आहुतयो देवानामभवन् सहवै. १२
तेनासौ स्वविवेकेन स्वयमेव महामनाः। प्रविचार्य चिरं साधु स्वात्मनिश्चयमाप्तवान् महो. २।२
तेनासौ लोको न सम्पूर्यते तस्माज्जुगुप्सेत छांदो. ५।१०।८
तेनाहं ज्योतिषा ज्योतिरानशान आक्षि, यत्कुसीदमप्रतीतं.... सहवै. ४
ते निचिक्युर्ब्रह्म पुराणमव्ययम् बृह. ४।४।१८
ते निबध्नन्ति नागेन्द्रमुन्मत्तं बिसतन्तुभिः॥(विमूढाः कर्तुमुद्युक्ता ये हठाच्चेतसो जयम्) मुक्तिको. २।४७
ते नु विद्वोर्ध्वा ऋचः साम्नो यजुषः स्वरमेव प्राविशन् छां.उ. १।४।२
तेनेतिहासपुराणानां रुद्राणां शतसहस्राणि जप्तानिफलानिभवंति पैङ्गलो. ४।२४
तेनेदं निष्कलं विद्यात् क्षीरात्सर्पिर्यथा तथा ब्र.वि. १७
तेनेदंपूर्णंपुरुषेणसर्वम् [श्वेता.३।९+ महाना.८।१४
तेनेन्द्रस्य प्रियं धामोपेयाय [१ऐत. २।३।१,२,३
तेनेमे प्राणाः, प्राणेभ्यः प्रजाः मैत्रा. ६।३७
तेनेयमिन्द्रजालश्रीर्जगतिप्रवितन्यते। द्रष्टुर्दृश्यस्य सत्तान्तर्बन्ध इत्यभिधीयते महो. ४।४७
तेनेयं त्रयी विद्या वर्तते ओमित्याश्रावयत्योमितिशंसत्योमित्युद्गायत्येतस्यैवाक्षरस्यापचित्यै छांदो. १।१।९
तेनेशितं (देवेन) कर्म निवर्तते ह श्वेताश्व. ६।२
तेनैति (मार्गेण) ब्रह्मवित्पुण्यकृत्तैजसश्च बृह. ४।४।९
तेनैव (ब्रह्मप्रणवेन) ब्रह्म प्रकाशते तेन विदेहमुक्तिः प. हं. प. १०
तेनैव मुखेन मामन्नादं कुरु। श्येनस्त एकं मुखं, तेन मुखेन पक्षिणोऽत्सि कौ. त. २।९
तेनैव रूपेण चतुर्भुजेन भ.गी.११।४६
तेनैव शरीरेण देवतादर्शनं करोति नृ. पू. १।५
तेनैषपूर्णःसवाएषपुरुषविधएव [तैत्ति. २।२+३।४
तेनैषा खेचरी नाम मुद्रा ..बिन्दुः क्षरति नोयस्य..यावद्बिन्दुःस्थितो देहे तावन्मृत्युभयं कुतः ध्या. बि. ८३

तेनो एतस्यै देवतायै सायुज्य॰
सलोकतां जयति बृ. उ. १।५।२३
तेनोभौ कुरुतो यश्चैतदेवं
वेद यश्च न वेद छांदो. १।१।१०
ते पश्वादयस्तत्स्थावरं ते ब्राह्मणा-
दयः परमात्मैव निरालं. १०
तेऽपि चातितरन्त्येव भ.गी. १३।२६
तेऽपि मामेव कौन्तेय भ. गी. ९।२३
तेऽपि यान्ति परां गतिम् भ. गी. ९।३२
ते पुण्यमासाद्य सुरेन्द्रलोकं भ. गी. ९।२०
ते पिशाचास्ते मनुष्यास्ताः
स्त्रियः (परमात्मैव) निरा. १०
ते पुनः पुरुषाग्नौ हूयन्ते बृ. उ.६।२।१६
ते पृथिवीं प्राप्यान्नं भवन्ति बृ.उ. ६।२।१६
तेऽप्यज्ञानतयानूनंपुनरायान्तियान्ति.. म.वा.र. ३
ते प्रकाश्याभिवदन्ति (आकाशादयः) प्रश्नो. २।२
ते (देवाः) प्रजापतिमुपधावन्,
तेभ्य एतं मंत्रराजं नारसिंहं
प्रायच्छत नृ. पू. २।१
ते प्रकाश्याभिवदन्ति (मा. पा.) प्रश्नो. २।२
ते प्राप्नुवन्ति मामेव भ. गी. १२।४
ते ब्रह्म तद्विदुः कृत्स्नं भ. गी. ७।२९
ते ब्रह्मलोके तु परान्तकाले परा-
मृतात्परिमुच्यंतिसर्वे [महाना.८।१५ +मुण्ड.३।२।६
ते ब्रह्मलोकेषु परान्तकाले...
परिमुच्यन्ति काले [कैव. ४+ भवसं. ३।३३
तेभिर्धार्यमिदं सूत्रं क्रियाङ्गं
तन्तुनिर्मितम् परब्र. १७
ते भोगास्तानि भोज्यानि व्यास-
पुत्रस्य तन्मनः। नाजहुः.. महो. २।२६
ते (शिवभक्ताः) भोगान्प्राप्य
मुच्यन्ते प्रळये शिवविद्यया शिवो. १।३३
तेभ्यस्तज्ज्योतिरस्य सर्वस्य पुरतः
सुविभा मविभातं...परमेव
ब्रह्म भवति नृसिंहो. ६।२
तेभ्यस्तुर्यं महत्तरं (चाक्षुषादिभेदेभ्यः) मैत्रा. ७।११
तेभ्यः (वेदानधीतेभ्यः)श्राद्धं तु यत्
वेदबाह्यश्राद्धं निष्फलं भवेत् इतिहा. ७८

तेभ्यः (मरीच्यादिभ्यः) सर्वाणि
भूतानि च सङ्कर्षणो. १
तेभ्यो जलबिन्दवो भूमौ पतितास्ते
रुद्राक्षा जाताः रु.जा. १
तेभ्यो (देवेभ्यो) एतं मंत्रराजं नार-
सिंहमानुष्टुभं प्रायच्छत् नृ. पू.२।१
तेभ्यो न सर्वमिव प्रतिपत्स्ये हन्ता-
हमन्यमभ्यनुशासानीति छांदो.५।११।३
तेभ्योऽब्रवीत्तमहं वेद तच्चेत्त्वं
याज्ञवल्क्य सूत्रमविद्वाँ स्तं
चान्तर्यामिणं...मूर्धा ते
विपतिष्यतीति बृह. ३।७।१
तेभ्योऽभितप्तेभ्यस्त्रयीविद्यासंप्रास्रवत् छांदो.२।२३।२
तेभ्यो भूतानि, तैरावृतमक्षरम् गोपालो.२।१३
तेभ्यो ह प्रादुर्बभूव तन्न व्यजानन्त केनो. ३।३
तेभ्यो ह प्राप्तेभ्यः पृथगर्हाणि
कारयाञ्चकार छांदो. ५।११।५
तेभ्योऽहं भागधेयं जुहोमि, ते मा
तृप्ताः सर्वैः कामैस्तर्पयन्तु स्वाहा बृ.उ. ६।३।१
तेभ्यो हासावासुरः पाप्मा सच्चिदा-
नन्दघनज्योतिरभवत् नृसिंहो. ६।१
तेभ्यो हैतदक्षरमुवाच द इति बृह. ५।२।१,२
तेभ्यो हैतामुपनिषदं प्रोवाच छांदो. ८।८।४
तेऽमुष्मिन्नादित्ये सृप्ताः छांदो. ८।६।२
ते मृत्योर्यन्ति विततस्य पाशम् कठो.४।२
ते मे अक्षन्नहमु ताननुक्षम् बा.मं. २१
ते मे युक्ततमा मताः भ.गी. १२।२
ते य एवमेतद्विदुर्ये चामी अरण्ये
श्रद्धाँ सत्यमुपासते तेऽर्चि-
रभिसम्भवन्ति बृ.उ.६।२।१५
ते यथा तत्र न विवेकं लभन्ते छांदो. ६।९।२
ते यदन्तरा तद्ब्रह्म तदमृतँ स आत्मा
प्रजापतेः सभां वेश्म प्रपद्ये छांदो.८।१४।१
ते यद्वयमनुसंहितमृचो धीमहे... ३ऐत. २।६।२
ते ये शतमाजानजानांदेवानामानन्दाः तैत्ति. २।८
ते ये शतमिन्द्रस्यानन्दाः तैत्ति. २।८
ते ये शतं कर्मदेवानां
देवानामानन्दाः तैत्ति. २।८

ते ये शतं देवगन्धर्वाणामानन्दाः तैत्ति. २।८
ते येऽस्मद्यक्ष्ममनागसो दूरा-
दूरमचीचतम् सह्वै. ५
ते ये शतं देवानामानन्दाः स एक
इन्द्रस्यानन्दः तैत्ति. २।८
ते ये शतं पितॄणां चिरलोकलोकाना-
मानन्दाः.. तैत्ति. २।८
ते ये शतं प्रजापतेरानन्दाः..
स एको ब्रह्मण आनंदः तैत्ति. २।८
ते ये शतं बृहस्पतेरानन्दाः स
एकः प्रजापतेरानन्दः तैत्ति. २।८
ते ये शतं मनुष्यगन्धर्वाणामानन्दाः तैत्ति. २।८
ते ये शतं मानुषा आनन्दाः स
एको मनुष्यगन्धर्वाणामानन्दः तैत्ति. २।८
ते रागादयो दोषाः शरीरसंचालिताः सामर. १०१
ते रपसोऽभवन् कर्मादिष्वेतैर्जुहुयात्
पूता देवलोकान्समश्नुते सह्वै. ११
तेऽर्चिरभिसम्भवन्त्यर्चिषोऽहरह्न
आपूर्यमाणपक्षमापूर्यमाणपक्षा-
द्यान्षण्मासानुदङ्ङादित्य एति
मासेभ्यो देवलोकम् बृह. ६।२।१५
तेऽर्चिषमभिसम्भवन्ति छांदो. ५।१०।१
तेऽर्चिषो वै यशस आश्रयवशा-
ज्जटाभिरूपा इव कृष्णवर्त्मनः मैत्रा. ६।३५
तेऽवस्थिताः प्रमुखे धार्तराष्ट्राः भ. गी. २।६
(अथ) ते वा एतस्यैवं यथेवेह
बीजस्यांकुरा वा.. मैत्रा. ६।३१
तेवाएतेगुह्याआदेशाएतद्ब्रह्माभ्यतपन् छान्दो. ३।५।२
ते वा एतेऽथर्वाङ्गिरस एतदिति-
हासपुराणमभ्यतपन् छान्दो. ३।४।२
ते वा एते पञ्च महापुरुषाः स्वर्ग-
स्य लोकस्य द्वारपाः छान्दो. ३।१३।६
ते वा एते पञ्चान्ये पञ्चान्ये दश
सन्तस्तत्कृतं दिक्ष्वन्नमेव छान्दो. ४।३।८
ते वा एते रसानां रसाः, वेदा
हि रसास्तेषामेते रसाः छान्दो. ३।५।४
ते वाऽभिवाद्यैवोप समीयुः आर्षे. १०।४
ते (देवाः) वायुप्रतिष्ठाकाशात्मानः
स्वर्ययुः कौ. उ. २।१४

ते विदुरनेन वै न उद्गात्रात्यै-
ष्यन्तीति [बृह. १।३।२, ३,४,५,६,७
ते विदुर्युक्तचेतसः भ. गी. ७।३०
ते वै माभिसंविशतेति तथेति तं
समन्तं परिण्यविशन्त बृह. १।३।१८
ते वै सूत्रविदो लोके ते च
यज्ञोपवीतिनः ब्रह्मो. ११
ते शुक्रमेतदतिवर्तन्ति धीराः मुंड. ३।२।१
तेऽश्रद्दधाना बभूवुः प्रश्नो. २।४
तेषामभ्यर्हितमन्तर्गृहम् भस्मजा. ४।८
तेषामसौ विरजो ब्रह्मलोको न
येषु जिह्ममनृतं न माया प्रश्नो. १।१६
तेषामहं समुद्धर्ता भ. गी. १२।७
तेषामात्रेयोऽच्छावदः सर्वाण्येवा-
वर्तयत् छाग. २।२
तेषामादित्यवज्ज्ञानं भ. गी. ५।१६
तेषामिन्द्रो जगतीमव प्रावसन्दिदेश शौनको. ४।१
तेषामिन्द्रो न प्रत्यपद्यत शौनको. ३।१
तेषामिन्द्रो रुद्रानेव सेनान्योक: शौनको. ३।१
तेषामिमाबिभ्यतएवाशूनुपाकल्पयत् शौनको. ४।१
तेषामेतान्यमृतानि छान्दो. ३।५।४
तेषामेते रसाः (वेदाः) छान्दो. ३।५।४
तेषामेव पुनर्भवनं नो इहास्ति स्वसंवे. १
तेषामेव सर्वदा स्वीकरणं धूपः भावनो. ८
तेषामेवानुकम्पार्थं भ. गी. १०।११
तेषामेवैष ब्रह्मलोकस्तेषां सर्वेषु
लोकेषु कामचारो भवति छान्दो. ८।४।३
तेषामेवैष ब्रह्मलोकः, येषां तपो
ब्रह्मचर्यं येषु ब्रह्म प्रतिष्ठितम् प्रश्नो. १।१५
तेषां के योगवित्तमाः भ. गी. १२।१
तेषां (कर्मेन्द्रियाणां) क्रमेण वचना-
दानगमनविसर्गानन्दाश्चैते
विषयाः... शारीरको. १
तेषां क्रमेण सङ्कल्पविकल्पाध्यवसाया-
भिमानावधारणास्वरूपाश्चैते
विषयाः शारीरको २
तेषां खल्वेषां भूतानां त्रीण्येव
बीजानि भवन्त्यण्डजं
जीवजमुद्भिज्जमिति छान्दो. ६।३।१

तेषां जरितारो विभ्यत एव वसती-
शरीरुपकल्पयन् शौनको. ३।१
तेषां ज्ञानी नित्ययुक्तः भ. गी. ७।१७
तेषां तप्यमानानां रसान्प्रावृहदग्निं
पृथिव्या वायुमंतरिक्षादादित्यंदिवः छान्दो. ४।१७।१
तेषां नाम्नां वागित्येतदेषामुक्थमतो
हि सर्वाणि नामान्युत्तिष्ठन्ति बृ. उ. १।६।१
तेषां नित्याभियुक्तानां भ. गी. ९।२२
तेषां निष्ठा तु का कृष्ण भ. गी. १७।१
तेषां नैकंचनाशकं विवक्तुमिति छान्दो. ५।३।५
तेषां नो भक्त्यागमपुराणेतिहास-
धर्मशास्त्रेषु धृताभिमानास्ते.. स्वसंवे. १
तेषां प्राणैः पूर्वपक्ष आप्यायते-
ऽपरपक्षेन प्रजनयत्येतद्वै
स्वर्गस्य लोकस्य द्वारम् कौ. त. १।२
तेषां ब्रह्मविष्णुरुद्राश्चोत्पत्तिस्थिति-
लयकर्तारः यो. चू. ७२
तेषां मनुष्यादीनां पञ्चभूतसमवायः
शरीरम् यो. चू. ७२
तेषां भेदमिमं शृणु भ. गी. १७।७
तेषां (जीवानां) मुक्तिकरं मार्गं.. १ यो. त. ५
तेषां य उभयतोदन्ताः पुरुषस्यानु-
विधां विहितास्ते तेऽन्नादाः १ एत. ३।१।३
तेषां यदा तत्पर्यवैत्यथेममे-
वाकाशमभिनिष्पद्यन्ते बृह. ६।२।१६
(अथ) तेषां (भूतानां) यः
समुदायः शरीरमित्युक्तं मैत्रा. ३।२
तेषां विश्वामित्रो विजितीयमिव
मन्यमान उवाच आर्षे. १।१
तेषां सततयुक्तानां भ. गी. १०।१०
तेषां सत्यानां सतामनृत-
मपिधानं यो यो ह्यस्येतः प्रैति
न तमिह दर्शनाय लभते छान्दो. ८।३।१
तेषां सतानामिह रन्तिरस्तु [चिस्यु. ११।१२,१३
तेषां सर्वेषु लोकेष्वकामचारोभवति छांदो. ७।२५।२
तेषां सर्वेषु लोकेषु कामचारो
भवति [छान्दो. ८।१।६+ ८।४।३+८।५।४
तेषां सर्वेषु लोकेष्वस्य काम-
चारो भवति छांदो. ८।१।६

तेषां सुखं शाश्वतं नेतरेषाम् कठो. ५।१२
[+ श्वेता. ६।१२+ गुह्यका. ४४
तेषां स्नेहमार्गोऽयमापद्यते सामर. २
तेषु प्राणादयः पञ्च मुख्याः पञ्चसु
सुव्रत । प्राणसंज्ञस्तथाऽपानः
पूज्यः प्राणस्तयोर्मुने जा. द. ४।२५
तेष्वक्षरेषु विभज्य भाविष्यज्जगद्रूपं
प्राकाशयम् । तादिह कृष्णादाकाशं.. गो.पू. ३।८
तेष्वण्डेषु सर्वेष्वेकैकनारायणा-
वतारो जायते त्रि.म.ना. २।७
तेष्वात्मनेऽन्नाद्यमागायेत् बृह. १।३।२८
ते सर्वगं सर्वतः प्राप्य धीरा युक्ता-
त्मानः सर्वमेवाविशन्ति मुंड. ३।२।५
ते सर्वे गुणाः... आत्मानं तन्मयतां
नयन्ति सामर. १०१
तेऽसुराः सम्ब्रह्म सहसैवाचरन् सहवै. १
तेसोमंप्राप्नुवन्ति [त्रिसु.१,२,३+ महाना.१२।१,२,३
ते ह खल्वथोर्ध्वरेतसोऽति-
विस्मिता आतसमेत्योचुः मंत्रा. ४।१
ते ह गृहीत्वैवैनान् पथोऽभिसमीयुः छाग. ५।१
ते ह तत एवार्तिमार्च्छस्तान-
न्विवरान्पराभावयन् शौनको. १।२
ते ह तत एवोपसमेत्य कुरुक्षेत्र-
मुपजग्मुः छाग. ३।१
ते ह तस्यैव पन्थामनुप्रातिष्ठन्नन्तं
ह स्वायाहन्यैवोपसंपादयामासुः छाग. ५।४
ते हताभिरेव जिघांसन् शौनको. ३।१
ते ह (असुराः) तृतीयस्येह सवनस्य
पवमानेषु यज्ञवास्त्वभ्यायन् शौनको. ४।१
ते ह तैरेव देवानपाजिघांसन् शौनको. ४।१
ते ह देवा ऊचुर्हन्तासुरान्यज्ञ उद्गीथे-
नात्ययामेति बृह.१।३।१
ते ह नाकं महिमानः सचन्त(न्ते)
[चिस्यु.१२।७ +महावा.४ +ऋ.अ.८।७।१९
[=मं.१०।९०।१६+ वा.सं. ३१।१६
ते ह नासिक्यं प्राणमुद्गीथमुपासां-
चक्रिरे छान्दो. १।२।२
ते ह नुनेषु नाराशंसेषु ऋषीणां
यज्ञवास्त्वभ्यायन् शौनको.३।१

ते ह पादयोरेवाभिमृश्य बालिशानूचुर्न ह वाव नस्तद्येन निष्कुर्मः... छाग. ६।४
ते ह प्राणाः प्रजापतिं पितरमेत्योचुर्भगवन् को नः श्रेष्ठ इति छांदो. ५।१।७
ते ह बालिशा ऊचुर्यदयमीदृगभूत् छाग. ६।२
ते ह बालिशानेवोपासन् छाग. ३।२
ते ह बिभ्यत एव स्तोकानुदकल्पयन् शौनको. १।२
ते ह ब्राह्मणा न दधृषुरथ ह याज्ञवल्क्यः स्वमेव ब्रह्मचारिणमुवाचैताः सोम्योदज सामश्रवा ३इति बृह. ३।१।२
ते ह ब्राह्मणाश्चुक्रुधुः कथं नो ब्रह्मिष्ठोब्रुवीत बृह. ३।१।२
ते ह यथैवेदं बहिष्पवमानेन स्तोष्यमाणाः सꣳरब्धाः सर्पन्तीत्येव छांदो. १।१२।४
ते ह माध्यन्दिनस्यैव सवनस्य ...अभ्यायन् शौनको. ३।१
ते ह वसूनेव प्रातस्सवनेषु... व्यजिगीषन्त शौनको. १।१
ते ह वाचमूचुस्त्वं न उद्गायेति तथेति तेभ्यो वागुदगायत् बृह. १।३।२
ते ह विराजः सत्यमानसा न सृजन्तेह प्रजापतयः सुबालो. १।३
ते ह सक्रीडत एव कूबरिणो रथचर्यां-(रथकट्या-) मविदन् छागले. ५।२
ते ह समित्पाणयः पूर्वाह्णे प्रतिचक्रमिरे तान् हानुपनीयैवैतदुवाच छान्दो.५।११।७
ते ह समित्पाणयो भगवन्तं पिप्पलादमुपसन्नाः प्रश्नो. १।१
ते ह समुपविश्य हिंचक्रुः छान्दो.१।१२।४
ते ह स्म पुत्रैषणायाश्च वित्तैषणायाश्च लोकैषणायाश्च व्युत्थायाथ भिक्षाचर्यं चरन्ति बृह. ४।४।२२
ते ह समारतास्तूष्णीमासाञ्चक्रिरे छान्दो.१।१०।१
ते हान्योन्यस्याभिसमीक्षामासुः छाग. ३।४
ते हापश्यन्न हास्मान्मिथुचिदेवासाववोचत्.. छाग. ३।४
ते हासुराः पुनरेवोदपतिष्यन्त शौनको. ४।१
ते हास्य लोकास्तदुतेव महाराजो भवति बृह. २।१।१८
ते हि तमर्चयन्तस्त्वं हि नः पिता...(मा.पा.) प्रश्नो. ६।८
ते हि लोके महाज्ञानास्तव लोको न गाहते अ.शां. ९५
ते हेमे प्राणा अहंश्रेयसे विवदमानाः ब्रह्म जग्मुः बृह. ६।१।७
तेहैते ब्रह्मपराब्रह्मनिष्ठाःब्रह्म..(मा.पा.) प्रश्नो. १।१
ते हैते ब्रह्मपरा ब्रह्मनिष्ठाः परं ब्रह्मान्वेषमाणाः प्रश्नो. १।१
ते हैते रक्तपर्णा नाम महावृक्षेषु यत्रास्मा उवास छान्दो. ४।२।५
ते होचुरप वा एतदृग्यजुषादप साम्न इति छाग. १।२
ते होचुरपीदं साधीया इति साधीय इति होचुः छाग. ५।४
ते होचुरुद्गीथे वै कुशलाःस्मो हन्तोद्गीथे कथां वदाम इति छान्दो. १।८।१
ते होचुर्नमस्यानतीव वचो रेचयिष्यथ छाग. ३।५
ते होचुर्न हासंवत्सरवासिनामनुब्रूयादिति छाग. ४।३
ते होचुर्नमिषेऽमी शुनकाः सत्रमासत छाग. ४।२
ते होचुर्ब्राह्मणा वाव स्मः छाग. १।२
ते होचुर्भगवन्नभिवाद्यमिवाद्यसीति मैत्रा. ४।५
ते होचुर्भगवन्नीदृशस्य कथमंशेन वर्तनमिति मैत्रा. २।५
ते होचुर्मैव स्मोपनथा गतिस्तु त्वमिति छाग. २।४
ते होचुर्यत्किमिव बालिशानुपासदत्त महाशाला वै महाश्रोत्रिया वर्षीयांसः छाग. ३।३
ते होचुर्यथैतं काष्ठभारमानद्धमनुपश्याम: छाग. ६।१
ते होचुर्यदिदमृग्यजुषेरेवोपवत्वम् छाग. १।३
ते होचुर्यद्वावकं तदेव खं, यदेव खं तदेव कमिति छांदो. ४।१०।५
ते होचुर्येन पुरुषश्चरेत् ..(मा.पा.) छां.उ.६।११।६
ते होचुर्येन हैवार्थेन पुरुषश्चरेत्तं हैव वदेवात्मानमेवेमं... ...

ते होचुर्हन्त तमात्मानमन्विच्छामो यमात्मानमन्विष्य सर्वाꣳश्च लोकानाप्नोति	छान्दो. ८।७।२
ते होचुः कथमानुष्टुभं मन्त्रराजमभिजानीमः	ग.पू. १।११
ते होचुः कथं वयमनाद्याभवामइति	ग.पू. १।६
ते होचुः कथं शिवोमायुत इति	ग.पू. २।८
ते होचुः किंवा अस्मत् प्रतीच्छथेति	छाग. ४।१
ते होचुः क नु सोऽभूद्यो न इत्यभसक्तेत्ययमास्येऽन्तरति	बृह. १।३।८
ते होचुः सम्पश्यथ्वमिति किं हीति	छाग. ५।२
तेऽहोरात्रविदो जनाः	भ.गी. ८।१७
तेऽहोरात्रे एकं दिनं भवति (महाविष्णोः)	त्रि.म.ना.३।५,६
ते ह्येनत्प्रथमो विदाञ्चकार ब्रह्मेति	केनो. ४।२
ते ह्येनन्नेदिष्ठं पस्पर्शुः	केनो. ४।२
तैजसस्तु विविक्तभुक्	आगम. ३
तैजसः प्रतिभासिकः स्वप्नकल्पित इति तैजसस्य नाम भवति	पैङ्गलो. २।६
तैजसस्तेजोमयोऽमृतमयः पुरुषोऽयमेव	बृह. २।५।८
तैजसः प्रविविक्तभुक् । आनन्दभुकथा प्राज्ञः सर्वसाक्षीत्यतः परः	यो. चू.७२
तैजसात्मकः प्रद्युम्न उकाराक्षरसम्भवः । प्राज्ञात्मकोऽनिरुद्धोऽसौ मकाराक्षरसम्भवः	गोपालो. २।१६
तैजसात्मिकां जालन्धरपीठालयां... वज्रेश्वरीं.. द्वितीयकूटां मन्यन्ते	श्रीवि. ता.२।१
तैजसानि (पात्राणि) गुरवे दद्यात्	कठरु. २
तैजस्योत्वविज्ञान उत्कर्षो दृश्यते स्फुटम् । मात्रासम्प्रतिपत्तौ स्यादुभयत्वं तथाविधम्	आगम. २७
तैरहं पूजनीयो हि भद्रकृष्णनिवासिभिः । तद्धर्मगतिहीना ये तस्यां मयि परायणाः	गोपालो. २।१०
तैर्दत्तानप्रदायैभ्यः	भ.गी. ३।१२
तैलधारामिवाच्छिन्नदीर्घघंटानिनादवत् । बिन्दुनादकलातीतं यस्तं वेद स वेदवित्	ध्या.बिं.३७
तैलधारामिवाच्छिन्नं दीर्घघण्टानिनादवत् । अवाच्यं प्रणवस्याग्रं यस्तं वेद स वेदवित् [ध्या.बिं.१८+	वराहो. ५।६१
तैलधारामिवाच्छिन्नंदीर्घघण्डानिनादवत् । प्रणवस्य ध्वनिस्तद्वत्तदग्रं ब्रह्म चोच्यते	यो.चू. ८०
तैलमध्ये यथा यथा मक्षिका एकदेहिमध्ये ब्रह्म दशधारूपं..	अद्वैतो.
तैलं तिलेषु काष्ठेषु वह्निः क्षीरे घृतं यथा । गन्धः पुष्पेषु भूतेषु तथाऽऽत्मावऽस्थितो ह्ययम्	वासुदे. १०
तैश्च न गौर्न ब्राह्मणो न सुरा न पश्यतो हरः	स्वसंवे. २
(अथ)तैः सम्भूतैर्वायुः संस्थाप्य हृदयं तपः । ऊर्ध्वं प्रपद्यते देहाद्भित्वा मूर्धानमव्ययम्	२सन्यासो.२०
तोयेन जीवान् व्यससर्ज भूम्याम्	महाना.१।४
तौ चेन्मे वक्ष्यति न वै जातु युष्माकमिमं कश्चिद्ब्रह्मोद्यं जेतेति	बृह. ३।८।१
तौ मिथुनं समेतां ततः प्राणोऽजायत	बृह. १।५।१२
तौ यत्र विहीयेते चन्द्रमा इवादित्यो दृश्यते	३ऐत. ३।४।३
तौ वा एतौ द्वौ संवर्गौ, वायुरेव देवेषु, प्राणः प्राणेषु	छान्दो. ४।३।४
तौ सम्परीत्य विविनक्ति धीरः	कठो. २।२
तौ ह द्वात्रिंशतंवर्षाणिब्रह्मचर्यमूषतुः	छान्दो. ८।७।३
तौ ह पुरुषं सुप्तमाजग्मतुः	बृह. २।१।१५
तौ ह प्रजापतिरुवाच किमिच्छन्तावावास्तमिति	छान्दो. ८।७।३
तौ ह प्रजापतिरुवाच किं पश्यथेति	छांदो. ८।८।१,२
तौ ह प्रजापतिरुवाच साध्वलंकृतौ ...भूत्वोदशरावेऽवेक्षाथां	छान्दो. ८।८।२
तौ ह यदूचतुः कर्म हैव तदूचतुः	बृह. ३।२।१३
तौ ह शान्तहृदयौ प्रवव्रजतुः	छान्दो.८।८।३
तौ ह साध्वलंकृतौ सुवसनौ परिष्कृतौ भूत्वोदशरावेऽवेक्षाञ्चक्राते	छान्दो. ८।८।२

तौ ह सुप्तं पुरुषमीयतुस्तं हाजातशत्रु-रामन्त्रयाञ्चक्रे	कौ.त. ४।१८
तौ हान्वीक्ष्य प्रजापतिरुवाच	छान्दो. ८।८।४
तौ हासंविदानावेव समित्पाणी प्रजा-पतिसकाशमाजग्मतुः	छान्दो.८।७।२
तौ होचतुर्यथैवेदमावां भगवः साध्व-लंकृतौ सुवसनौ परिष्कृतौ च एवमेवेमौ भगवः साध्वलंकृतौ	छान्दो.८।८।३
तौ होचतुः सर्वमेवेदमावां भगव आत्मानं पश्याव आ लोमभ्य आ नखेभ्यः प्रतिरूपमिति	छान्दो. ८।८।१
तौ होत्क्रम्य मन्त्रयाञ्चक्राते	बृह. ३।२।१३
तौ होदशरावेऽवेक्ष्यांचक्राते तौ ह प्रजापतिरुवाच किं पश्यथेति	छान्दो. ८।८।१
तौ ह्यस्य परिपन्थिनौ	भ.गी. ३।३४
त्यक्तवर्णाश्रमाचारःसर्वदा दिवानक्त-समत्वेनास्वप्नः (अवधूतः)	तुरीया. ३
त्यक्तवर्णाश्रमाचारो लुप्तसर्वक्रियो-ऽपि यः। सकृत्तिर्यक्त्रिपुंड्राङ्क-धारणात्सोऽपि पूज्यते	बृ. जा. ५।९
त्यक्तसङ्गो जितक्रोधो लघ्वाहारो जितेन्द्रियः। पिधाय बुद्ध्या द्वाराणि मनो ध्याने निवेशयेत्	ना.प. ६।७
त्यक्तसर्वपरिग्रहः	भ.गी. ४।२१
त्यक्ताविद्यो महायोगी कथं तेषु निमज्जति	अ.पू. ४।४
त्यक्ताहङ्कारो ब्रह्माहमस्मीति चिन्तयन्निदं सर्वं यदयमात्मेति	मं.ब्रा. २।८
त्यक्ताहंकृतिराश्वस्तमतिराकाश-शोभनः। अगृहीतकलङ्काङ्को लोके विहर शुद्धधीः	महो. ६।६९
त्यक्तुं कर्माण्यशेषतः	भ.गी. १८।११
त्यक्तैषणो ह्यनृणस्तं विदित्वा मौनी वसेदाश्रमे यत्रकुत्र	शाट्या. ६
त्यक्त्वा कर्मफलासङ्गं	भ.गी.४।२०
त्यक्त्वा कामान्संन्यस्यति...भोगां-स्त्यजति सुस्थितान्	२सन्यासो. ८
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म	भ.गी. ४।९
त्यक्त्वा लोकांश्च वेदांश्च विषया-निन्द्रियाणि च। आत्मन्येव स्थितो यस्तु स याति परमां गतिम्	ना.प. ४।१
त्यक्त्वा विष्णोर्लिङ्गमन्तर्बहिर्वा यः स्वाश्रयं सेवतेऽनाश्रमं वा। प्रत्यापत्तिं भजते..	शाट्याय. १७
त्यक्त्वा वृक्षं वृक्षमूलं श्रितासः सन्न्यस्तपुष्पारसमेवाश्नुवानाः	शाट्याय. ११
त्यक्त्वासङ्गाञ्छनैःशनैः। सर्वद्वन्द्वै-र्विनिर्मुक्तो ब्रह्मण्येवावतिष्ठते	ना.प. ३।५२
त्यक्त्वा सदसदास्थां त्वं तिष्ठाक्षुब्ध-महाब्धिवत्	महो. ६।५३
त्यक्त्वा सर्वमिदं कलेवरगतं मत्वा मनोविभ्रमं देहातीतमवाच्य-मेकमपरं तत्त्वं परं सेव्यताम्	अमन. २।१०७
त्यक्त्वा सर्वानशेषतः	भ.गी. ६।२४
त्यक्त्वा सर्वाश्रमान्धीरो वसेन्मोक्षा-श्रमे चिरम्। मोक्षाश्रमात्परिभ्रष्टो न गतिस्तस्य विद्यते	शाट्याय. २८
त्यक्त्वोत्तिष्ठ परंतप	भ.गी. २।३
त्यजत्यन्ते कलेवरं	भ.गी. ८।६
त्यज धर्ममधर्मं च उभे सत्यानृते त्यज। उभे सत्यानृते त्यक्त्वा येन त्यजति(सि) तत्त्यज	१सं.सो.२।१२
त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहम्भावेन पूजयेत्	मैत्रे.२।१
त्यजेद्भेदनिर्माल्यं	स्कन्दो. १०
त्यस्य राजा मूर्धानं विपात-यतात्... (मा. पा.)	बृ.उ.१।३।२४
त्यागस्य च हृषीकेश	भ.गी. १८।१
त्यागः शान्तिरपैशुनम्	भ.गी. १६।२
त्यागाच्छान्तिरनन्तरम्	भ.गी. १२।१२
त्यागादानपरित्यागी विज्वरो भव सर्वदा	महो. ६।१५
त्यागी सत्त्वसमाविष्टः	भ.गी. १८।१०
त्यागेनैके अमृतत्वमानशुः [कैव.३+	महाना.८।१४
त्यागे भरतसत्तम	भ.गी. १८।४
त्यागो दक्षिणा (शारीरयज्ञस्य)	प्रा.हो. ४।३
त्यागो हि पुरुषव्याघ्र	भ.गी. १८।४

त्यागो हि महता पूज्यः सद्यो मोक्षप्रदायकः ते.बिं. १।१९
त्याज्यं दोषवदित्येके भ.गी. १८।३
त्रय इमे लोकाः स प्रस्तावोऽग्नि-र्वायुरादित्यः छान्दो.२।२१।१
त्रयमप्यत्रापि सुषुप्तं स्वप्नं मायामात्रं नृसिंहो.१।४
त्रयमप्येतत्सुषुप्तं स्वप्नं मायामात्रम् नृसिंहो. १।४
त्रयश्च त्री च शता त्रयश्च त्री च सहस्रेत्योमिति बृह. ३।९।१
त्रयस्त्रिंशत्त्वेव देवाः बृह. ३।९।२
त्रयं त्वेव न एतत्प्रोक्तम् ३ ऐत. २।१।२
त्रयं मिलित्वा परस्परमुवाच अहमेव सर्वस्येश इति ग. शो. ४।६
त्रयं यदा विंदते ब्रह्ममेतत् श्वेता. १।९
त्रयं वा इदं नामरूपं कर्म, तेषां नाम्नां वागित्येतदेषामुक्थम् बृह. १।६।१
त्रयः कालास्त्रयो देवास्त्रयो लोकास्त्रयः स्वराः। त्रयो वेदाः स्थिता यत्र तत्परं ज्योतिरोमिति यो.शि. ६।५७
त्रयः प्राजापत्याः प्रजापतौ पितरि ब्रह्मचर्यमूषुः बृह. ५।२।१
त्रयाणामक्षराणां च योऽधीतेऽप्यर्धमक्षरम् १यो.त. १३५
त्रयाणामक्षरे चान्ते योऽधीतेऽप्यर्धमक्षरम्। तेन सर्वमिदं प्राप्तं लब्धं तत्परमं पदम्। २ योगत. ७
त्रयी वा कामं त्रयीमयं त्रिगुणं त्रेतात्मकम् पारमा. ५।८
त्रयी विद्या हिङ्कारस्त्रय इमे लोकाः छांदो. २।२१।१
त्रयोऽग्नयश्च त्रिगुणाः स्थिताः सर्वे त्रयाक्षरे १ यो.त. १३५
त्रयो (यतयः) ग्रामः समाख्यातः ऊर्ध्वं तु नगरायते ना.प. ३।५६
त्रयो दग्धमुखं त्वर्थं कामदंसिद्धिदंपरम् व. जा. ३८
त्रयो धर्मस्कन्धा यज्ञोऽध्ययनं दानमिति छांदो. २।२३।१
त्रयो लोका एत एव वागेवायं लोको मनोऽन्तरिक्षलोकः प्राणोऽसौ लोकः बृह. १।५।४
त्रयोलोकास्त्रयोवेदास्त्रयः संध्यास्त्रयः सुराः। त्रयोऽग्नयश्च त्रिगुणाः स्थिताः सर्वे त्रयाक्षरे १ योगत. ६
(अथ) त्रयो वाव लोकाः, मनुष्यलोकः पितृलोको देवलोक इति बृह. १।५।१६
त्रयोविंशतिरेतानि तत्त्वानि प्रकृतानि तु शारीरको. १४
त्रयो वेदा एत एव वागेवर्ग्वेदो मनो यजुर्वेदः प्राणः सामवेदः बृह. १।५।५
त्रयो हीमे लोकास्त्रयो हीमे वेदाः ग. पू. ३।१
त्रायते महतो भयात् भ.गी. १८।१९
त्रिकर्मकृत्तरति जन्ममृत्यू कठो. १।१७
त्रिकालमेतज्जस्वा क्रतुशतफलमवाप्नोति सूर्यो. ९
त्रिकालमेतत्प्रयुञ्जानः सर्ववेदपारायणफलमवाप्नोति भस्मजा. १।७
त्रिकूटा भवति ज्ञेया मूलप्रकृतिसङ्गता। प्रकृतिः प्रणवत्वाच्च.. श्रीवि.ता. १।६
त्रिकोणमण्डलं वह्नीरुद्रस्तस्याधिदेवता यो.शि. ५।१४
त्रिकोणशक्तिरकारेण महाभागेन प्रसूते.. त्रि. ता. १।६
त्रिकोणं प्रथमं भवति, द्वितीयं षट्कोणं... ना.पू.ता. ६।१
त्रिगुणं जुषाणः सकलं विधत्ते पारमा. १।७
त्रिगुणीकृतप्रेषोच्चारणं कृत्वा...तत्त्वमस्यादिवाक्यार्थस्वरूपानुसन्धानं कुर्वन्नुदीचीं दिशं गच्छेत् प. हं प. ५
त्रिचतुस्त्रिचतुस्सप्तत्रिचतुर्मासपर्यन्तं ... आचरेन्नाडीशुद्धिर्भवति शांडि. १।५।२
त्रिणाचिकेतस्त्रयमेतद्विदित्वा य एवं विद्वां२श्चिनुते नाचिकेतम्।... शोकातिगो मोदते स्वर्गलोके कठो. १।१८
त्रिणाचिकादियोगान्वा ईश्वरभ्रान्तिमाश्रिताः [महो.४।७४+ वराहो. २।५५
त्रिणाचिकेतस्त्रिभिरेत्य सन्धिं त्रिकर्मकृत्तरति जन्ममृत्यू कठो. १।१७
त्रिते देवादिविजाता यद्वाप इमं मे वरुण.. बह्वृ. ४

त्रिदण्ड-कमण्डलु-शिक्य... यज्ञोप-
वीतानां त्यागिनः (परमहंसाः) आश्रमो. ४
त्रिदण्डमवलम्बंते यतयो., तेषामपि
च कर्तव्यं सत्कृत्यमितरेषु किम् भवसं. १।३६
त्रिदण्डमुपवीतं च वासः कौपीन-
वेष्टनम् । शिक्यं पवित्रमित्ये-
तद्बिभृयाद्यावदायुषम् शाट्याय. ७
त्रिदण्डं कमण्डलुं भुक्तपात्रं...
परित्यज्यात्मानमन्विच्छेत् याज्ञव. २
त्रिदण्डं वैष्णवं लिङ्गं विप्राणां मुक्ति-
साधनम् । निर्वाणंसर्वधर्माणामिति
वेदानुशासनम् शाट्याय. १०
त्रिदण्डं शिक्यं पात्रं कमण्डलुं..
तत्सर्वं भूः स्वाहेत्यप्सु परित्यज्य..
जातरूपधरश्चरेदात्मानमन्विच्छेत् ना. प. ३।८७
त्रिदिनंज्वलनस्थिरैश्छादनंपुलकैःस्मृतम् वृ. जा. ३।२१
त्रिधा त्रिधा वा विदधे समस्तम् पारमा. १।७
त्रिधा त्रिरूपं सकलं धराय स्वाहा पारमा. १।७
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति शौनको. ४।६
[+ऋ.अ.३।८।१०=मं.४।५८।३+ वा.सं. १७।९१
त्रिधामसाक्षिणं सत्यज्ञानानन्दादि-
लक्षणम् । त्वमहंशब्दलक्ष्यार्थं-
मसक्तं सर्वदोषतः वराहो. २।१७
त्रिधाहितं पाणिभिर्गुह्यमानं गवि
देवासो घृतमन्वविन्दन् महाना. ८।११
[+ऋ.अ. ३।८।१०=मं. ४।५८।४ वा.सं. १७।९२
[+तै. आ. ३।१०।३
त्रिधैव गुणभेदतः भ.गी. १८।१९
त्रिनाभिचक्रमजरमनर्वम् चित्यु. ११।९
[+ऋ.अ.२।३।१४=मं.१।१६४।२ अथर्व.९।९।२+
[तै. आ. ३।११।९
त्रिनेत्रं त्रिगुणाधारं... स्मरभ्रमः
शिवायेति ललाटे तत्त्रिपुण्ड्रकम् वृ. जा. ४।३०
त्रिपदा गायत्री, गायत्रिया एवात्मानं
पुनीते बह्वृ. १२
त्रिपादवति चोत्तरे (ब्रह्म) मैत्रा. ७।११
त्रिपादस्यामृतंदिवि [छां.उ.३।१२।६+ त्रि.म.ना.४।९१
[+ चित्यु. १२।२+ वा. सं. ३१।३
[+ऋ. अ. ८।४।१५= मं. १०।९०।३

त्रिपादित्यनया प्रोक्तमनिरुद्धस्य
वैभवम् मुद्गलो. १।४
त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः[ऋ.अ. ८।४।१७ =मं.१०।९०।४
[+वा.सं. ३१।४+त्रि.म.ना.४।४+ चित्यु. १२।२
त्रिपाद्भस्मप्रहरणस्त्रिशिरा रक्त-
लोचनः । स मे प्रीतः सुखंदद्यात्.. वनदु. २४
त्रिपान्नारायणाकारंतद्ब्रह्मैवास्मिकेवलं तारसा. शीर्षकं
(एवं)त्रिपुट्यां निरस्तायां निस्तरङ्ग-
समुद्रवत्...अचलसम्पूर्णभावा-
भावविहीनकैवल्यज्योतिर्भवति मं. ब्रा. २।६
त्रिपुण्ड्रधारणस्य त्रिधा रेखा आ-
ललाटादाचक्षुषोराभ्रुवोर्मध्यतश्च जाबाल्यु. ८
(एवं) त्रिपुंड्रविधिं भस्मना करोति
यो विद्वान् ब्रह्मचारी यतिर्वा स
महापातकोपपातकेभ्यः पूतो
भवति का. रुद्रो. ५
त्रिपुण्ड्रं कारयेत्पश्चाद्ब्रह्मविष्णु-
शिवात्मकम् । मध्याङ्गुलिभि-
रादाय तिसृभिर्मूलमन्त्रतः वृ.जा. ४।११
त्रिपुण्ड्रं धार्यं भर्त्सनात्पातकौघगिरेर्भस्म सि. शि. १३
त्रिपुण्ड्रं ये विनन्दन्ति निन्दन्ति शिव-
मेव ते । धारयन्ति च ये भक्त्या
धारयन्ति शिवं च ते वृ. जा. ५।१६
त्रिपुरवधार्थमहं निमीलिताक्षोऽभवम् रु.जा. १
त्रिपुरातपनं देवीत्रिपुरा कण्ठभावना मुक्तिको.१।३७
त्रिपुराभिधा भगवतीत्येवमादिशक्त्या
...त्रिकूटावसाने निलये विलये
धाम्नि सहसा घोरेण प्राप्नोति त्रि.ता. ३।१
त्रिभिरेतैस्त्रिराभ्यस्तैः (त्रिभिरेभिः
समभ्यस्तैः) हृदयग्रन्थयो दृढाः ।
निःशङ्कमेव (निःशेषमेव) त्रुट्यन्ति
बिसच्छेदाद्गुणाइव [अ.पू.४।८४+ मुक्तिको.२।१३
त्रिभिर्गुणमयैर्भावैः भ.गी. ७।१३
त्रिभिर्नगरं चतुर्भिर्ग्राममित्येकश्चरेत् ना. प. ७।२
त्रिभिः सोमः पातव्यः, समाप्तमिव
भवति २ प्रणवो. १९
त्रिमुखं चैव रुद्राक्षमग्नित्रयस्वरूप-
कम् । तद्धारणाच्च हुतभुक्तस्य
तुष्यति सर्वदा रु. जा. ३६

त्रिमूर्तिरूपं शिवरूपमस्मि १बिल्वो. १३

त्रिमूर्त्यात्मा त्रिवेदात्मा सर्व-
देवमयो रविः सूर्यता. १।६

त्रियक्षं (त्र्यक्षं) वरदं रुद्रं...सुप्रसन्न-
मनुस्मरन् । धारयेत्पञ्च घटिका
वह्निनाऽसौ न दाह्यते १ यो.त. ९२

त्रियम्बकं (त्र्यंबकं) यजामहे [वनद्दु. १०+ लिङ्गोप. १

त्रियायुषमिति शिरोललाटवक्षःस्थलेषु का. रु. ३

त्रियायुषाणि कुरुते ललाटे च भुज-
द्वये । नाभौ शिरसि हृत्पार्श्वे
ब्राह्मणाः क्षत्रियास्तथा बृ.जा.५।२

त्रियायुषैस्त्र्यम्बकैस्त्रिशक्तिभिस्तिर्य-
क्तिस्रो रेखाः प्रकुर्वीत, व्रत-
मेतच्छाम्भवम् का.रु. ३

त्रिरस्य मूर्धानमभि हिंकुर्यात् कौ.त. २।११

त्रिरात्रं वा सावित्रीमन्वातिरेचयति सहवै .२०

त्रिरात्रान्त आप्लुत्य व्रीहीनवघातयेत् बृह. ६।४।१३

त्रिरात्रोपोषितः प्राङ्मुखो वाग्यतो
बर्हिष्युपविश्य सहस्रंकृत्व आवर्तयेत् २ प्रणवो. ६

त्रिरुदपात्रं प्रसिच्योद्यन्तमादित्य-
मुपतिष्ठेत कौ. त. २।७

त्रिरुन्नतं स्थाप्य समं शरीरं हृदी-
न्द्रियाणि मनसा सन्निवेश्य
(सन्निरुद्ध्य) । ब्रह्मोडुपेन प्रतरेत
विद्वान्स्रोतांसि सर्वाणि भया-
वहानि [श्वेता. २।८+ भ. सं. ३।२५

त्रिरेनामनुलोमामनुमार्ष्टि विष्णुर्योनिं
... (इति मंत्रेण) बृह. ६।४।२१

त्रिर्देवः पृथिवीमेष एताम् ना.पू.ता.४।९
[+ऋ. ब्र. ५।६।२५= मं. ७।१००।३
[+तै. ब्रा. २।४।३।५

त्रिलोचनं निष्कलमद्वितीयम् १बिल्वो. ११

त्रिवक्रं त्रिगुणं स्थानं त्रिधातुं रूपव-
र्जितम् ।...शाश्वतं ध्रुवमच्युतम् । ते. बिं. १।६

त्रिविधस्साकारोऽपिपुनर्द्विविधोभवति त्रि म.ना. २।१

त्रिविधं कर्मणः फलम् भ.गी. १८।१२

त्रिविधं नरकस्येदं भ.गी. १६।२१

त्रिविधः कर्मसंग्रहः भ.गी. १८।१८

त्रिविधः पुरुषः...बाह्यात्माऽन्तरात्मा
परमात्मा चेति २ आत्मो. ४

त्रिविधः पुरुषोऽजायतात्माऽन्त-
रात्मा परमात्मा चेति १ आत्मो. १

त्रिविधः सम्प्रकीर्तितः भ.गी. १८।४

त्रिविधा कर्मचोदना भ. गी. १८।१८

त्रिविधा भवति श्रद्धा भ. गी. १७।२

त्रिविधो ब्रह्मप्रणवः ...

त्रिविधो भवति प्रियः भ. गी. १७।७

त्रिविष्टपं त्रिमुखं विश्वमातुर्नवरेखाः
स्वरमध्यं तदीले त्रि. महो. १०

त्रिविष्टपास्त्रिगुणास्त्रिप्रकाशाः त्रि. महो. ५

त्रिवृत्त्रिवृदेकैका भवति तन्मे
विजानीहीति छान्दो. ६।४।७

त्रिवृत्सूत्रं च तद्विदुः ब्रह्मो. ४

त्रिवृदात्मनि ब्रह्मण्यभिध्यायमाने
सच्चिदानन्दः परमात्माऽऽविर्भवति महावा. २

त्रिवेदमयं त्रिमूर्तिं त्रिगुणं चतुष्पदं...
सप्ताश्वं (ध्यायेत्) सूर्यता. १।८

त्रिशङ्खवज्रमोङ्कारमूर्ध्वनालं
भ्रुवोर्मुखम् ब्र. विं. ७४

त्रिशतं त्वधमं पञ्चशतं मध्यममुच्यते ।
सहस्रमुत्तमं प्रोक्तं (रुद्राक्षाणां) रु. जा. २०

त्रिशरीरं तमात्मानं परं ब्रह्म
विनिश्चिनु ना. प. ८।८

त्रिशाखैर्बिल्वदलैर्दीप्तैर्वा योऽभि-
सम्पूजयेन्मन्मनाः...सम्पूजयेत् ।
तदहमस्मि । तं मोचयामि
संसृतिपाशात् भस्मजा. २।१०

त्रिशिखी ब्राह्मण आदित्यलोकं जगाम त्रि. ब्रा. १।१

त्रिशीर्षाणं त्वाष्ट्रमहनमवाङ्मुखा-
न्यतीन्सालावृकेभ्यः प्रायच्छम् कौ. त. ३।१

त्रिशूलगां काशीमधिश्रित्य त्यक्ता-
सवोऽपि मय्येव संविशन्ति भस्मजा. २।७

त्रिषवणस्नानं कुटीचकस्य बहूदकस्य
द्विवारं हंसस्यैकवारं परमहंसस्य
मानसस्नानं [illegible]गातीतस्य भस्म-
स्नानमवधूत[illegible]ायव्यस्नानम् ना. प. ७।४

त्रिषु धामसुयत्तुल्यं सामान्यं वेत्ति निश्चितः । स पूज्यः सर्वभूतानां वन्यश्चैव महामुनिः आगम. २२

त्रिषुधामसुयत्प्रोक्तं.. स भुञ्जानो न लिप्यते आगम. ५

त्रिषु धामसु यद्भोज्यं भोक्ता यश्च प्रकीर्तितः । वेदैस्तदुभयं यस्तु स भुञ्जानो न लिप्यते आगम. ५

त्रिषु धामसु यद्भोग्यं भोक्ता भोगश्च यद्भवेत् । तेभ्यो विलक्षणः साक्षी चिन्मात्रोऽहं सदाशिवः कैव. १८

त्रिषु लोकेषु किञ्चन भ. गी. ३।२२

त्रिषुवर्णेषु भिक्षाचर्यं चरेत् (सन्न्यासी) १ सं.सो. १।२

त्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप् चाहं छन्दोऽहम् अ.शिरः. १।१

त्रिष्वेकपाच्चरेद्ब्रह्म मैत्रा. ७।११

त्रिसन्ध्यं शक्तितः स्नानं तर्पणं मार्जनं तथा । उपस्थानं पञ्चयज्ञा-न्कुर्यादामरणान्तिकम् शाट्या. १२

त्रिसन्ध्यादौ स्नानमाचरेत् आरुणि. २

त्रिसुपर्णमयाचितं ब्राह्मणाय दद्यात् त्रिसु. १,२,३ [महाना. १२।१,२,३+

त्रिसुपर्णश्रुतिर्घोषा निष्कृतौ त्रिदले रता २बिल्वो. २५

त्रिसुपर्णं त्रिऋचां रूपं त्रिसुपर्णं त्रयीमयम् २ बिल्वो. २०

त्रिसुपर्णोपनिषदः पठनात्पंक्तिपावनः २ बिल्वो. २४

त्रिस्थानं च त्रिमात्रं च त्रिब्रह्म च त्रयाक्षरम् । त्रिमात्रमर्धमात्रं वा यस्तं वेद स वेदवित् ध्या. बिं. ३६

त्रिःसप्त समिधः कृताः चित्यु. १२।३ [ऋ.अ.८।४।१९=मं.१०।९०।१५+ वा.सं. ३१।१५

त्रिरत्नपर्वांगुलः प्राणो यत्र प्राणैः प्रतिष्ठितः । एष प्राण इति ख्यातो बाह्यप्राणस्य गोचरः अ. ना. ३३

त्रिंशत्परांस्त्रिंशदपरांस्त्रिंशच्च परतः परान् । उत्तारयति धर्मिष्ठः परिव्राडिति वै श्रुतिः शाट्याय. ३१

त्रीणि चात्र प्रशंसन्ति शौच-मक्रोधमत्सरौ इतिहा. ५७

त्रीणि ज्योतींषि सचते सषोडशी तस्मादुच्यते महाविष्णुमिति नृ. पू. २।६

त्रीणि धामानि कालः द. मू. १६

त्रीणि पदा निहिता गुहासु यस्तद्वेद स पितुः पितासत् [महाना. २।४; तै.आ.१०।१।४

त्रीणि श्राद्धे पवित्राणि दौहित्रः कुतपस्तिलाः इतिहा. ५७

त्रीणि षष्टिशतान्यक्षराणां, त्रीणिषष्टि-शतान्यूष्मणां, त्रीणि षष्टिशतानि सन्धीनाम् ३ ऐत. २।२।१

त्रीणि स्थानानि भवन्ति (अग्नेः) मुखे आहवनीयः, उदरे गार्हपत्यः, हृदि दक्षिणाग्निः गर्भो. ११

त्रीण्यक्षराणि सतीयमिति तद्यत्स-त्तदमृतमथ यत्ति तन्मर्त्यमथ यद्यं तेनोभे यच्छति छांदो. ८।३।५

त्रीण्यात्मने कुरुत पशुभ्य एकं प्रायच्छत्तस्मिन्सर्वं प्रतिष्ठितम् बृह. १।५।१

त्रीण्यात्मनेऽकुरुतेति मनो वाचं प्राणं तान्यात्मनेऽकुरुता-न्यत्रमना अभूवम् बृह. १।५।३

त्रीण्याहुरतिदानानि गावः पृथ्वी सरस्वती संहितो. ४।२

त्रीन्गुणानतिवर्तते भ.गी. १४।२१

त्रीन्वेदाननुब्रुवीत सर्वमायुरियादिति बृह. ६।४।१६

त्रेताग्न्यनुसन्धानो यागः पा.ब्र. ३

त्रेताग्न्यात्माकृतिवर्णोङ्कारहंसानु-सन्धानोऽन्तर्यागश्चित्स्वरूपव-त्तन्मयं तुरीयस्वरूपम् पा.ब्र. ३

त्रेधा विहितं वा इदमन्नमशनं पानं खादस्तदेवैराप्नोति १ऐत. ३।४।२

त्रैगुण्यविषया वेदाः भ.गी. २।४५

त्रैधातवीयामेव (इष्टिं) कुर्यात् याज्ञव. १ [+ना.प.३।७७+ प.हं.प. २

त्रैवर्णिकानां सर्वेषामग्निहोत्र-समुद्भवम् (भस्म) बृ.जा. ५।२

त्रैविद्या मां सोमपाः पूतपापाः भ.गी. ९।२०

त्रैष्टुभं छन्दोऽन्तरिक्षं स्थानम्(यजुषां) २प्रणवो. २१

त्रैष्टुभं माध्यन्दिनꣳ सवनम् छांदो. ३।१६।३
त्र्यक्षरं त्रिशिरस्कं त्रिपादं खण्डपरशुं
(मृत्युमसृजत्) सुबालो. १।३
त्र्यक्षरं ब्रह्म शाश्वतम् शिवो. ७।११५
त्र्यक्षरोऽहं पञ्चाशन्मातृका अहं अद्वै.भा. २
त्र्यम्बकमिति ललाटे, नीलग्रीवायेति
कण्ठे... यथाक्रमं भस्म धृत्वा...
तद्ब्रह्मापः पुनन्त्विति पिबेत् भस्मजा. १।९
त्र्यम्बकमिति सम्प्रोक्ष्य शुद्धंशुद्धेनेति
सम्मृज्य संशोध्य तेनैवापादशीर्ष-
मुद्धूलनमाचरेत् भस्मजा. १।४
त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिपुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय-
माऽमृतात् [महाना. १३।१८+ त्रि.ता. १।३+
[ऋ. अ. ५।४।३० =मं.७।५९।१२
[+वा. सं. ३६०+ तै.सं.१।८।६।२
त्र्यायुषमिति शिरोललाटवक्षस्स्कधे-
ष्विति तिसृभिस्त्र्यायुषैस्त्रियम्ब-
कैस्तिस्रो रेखाः प्रकुर्वीत जाबाल्यो. ६
त्र्यहं वसति तीर्थेषु त्र्यहं वसति
चाग्निषु । त्र्यहमाकाशगो भूत्वा
दिनमेकं तु वायुगः पिण्डो. ३
त्वक्च रक्तं मांसमेदोमज्जास्थीनि
(षट्कोशाः) वराहो.१।१०
त्वक्चर्ममांसरुधिरमेदोमज्जास्नायवो-
ऽस्थीनि मे शुध्यंतां, ज्योतिरहं
विरजा विपाप्मा भूयासम् महाना. १४।९
त्वक्चर्ममांसरोमाङ्गुल्यङ्गुष्ठ-
पृष्ठवंशनखगुल्फोदरनाभिकटथूरु-
कपोलश्रोत्रभ्रूललाट... अक्षीणि
भवन्ति, जायते म्रियते इत्येष
बाह्यात्मा नाम १ आत्मो. १
त्वक्च स्पर्शयितव्यंचवाक्चवक्तव्यं च.. प्रश्नो. ४।८
त्वक् च स्पर्शयितव्यं च नारायणः सुबालो. ६।१
त्वक् चैव परिदह्यते भ. गी. १।२९
त्वक्छ्रोत्रनेत्रजिह्वाघ्राणपञ्चस्वरूप-
मिति लिङ्गम् लिङ्गोप. १

त्वगध्यात्मं, स्पर्शयितव्यमधिभूतं
वायुस्तत्राधिदैवतं नाडी तेषां
निबन्धनम् सुबालो. ५।५
त्वगादिसप्तधातुभिरनेकैः संयुक्ताः
सङ्कल्पाः कल्पतरवः भावनो. २
त्वग्वै ग्रहः, स स्पर्शेनातिग्राहेणगृहीतः बृह. ३।२।९
त्वङ्निरभिद्यत, त्वचो लोमानि.. २ ऐत. १।४
त्वङ्मांसरक्तबाष्पाम्बु पृथक्कृत्वा
विलोचने । समालोकय...
परिमुह्यसि [महो. ३।४०+ याज्ञव.९
त्वङ्मांसरुधिरस्नायुमज्जामेदोस्थि-
संहतौ । विण्मूत्रपूये रमतां
क्रिमीणां कियदन्तरम् ना. प. ४।२६
त्वङ्मांसशोणितास्थिस्नायुमज्जाःषट्कोशाः मुद्गलो. ४।२
त्वच एवास्य रुधिरं प्रस्यन्दि त्वच
उत्पटः । तस्मात्तदा तृण्णात्प्रैति
रसो वृक्षादिवाहतात् बृह. ३।९।२९
त्वचमेवाप्येति यस्त्वचमेवास्तमेति.. सुबालो. ९।५
त्वचः स्पर्शग्रहणम् ना. प. ६।२
त्वचा यद्यत्स्पृशेद्योगी तत्तदात्मेति.. १ यो. त. ७१
त्वचा हि स्पर्शान् वेदयते बृह. ३।२।९
त्वचि तृप्यन्त्यां वायुस्तृप्यति छांदो.५।२३।२
त्वच्छायायां वसेल्लक्ष्मीस्त्वन्मूले
विष्णुरव्ययः तुलस्यु. ८
त्वत्तः कमलपत्राक्ष भ. गी. ११।२
त्वत्ता मत्ता च चिन्मयम् ते. बिं. २।२६
त्वत्ताऽहन्ताऽऽत्मता यत्र परता
नास्ति काचन । न कचित्रा-
वकलना न भावाभावगोचरा महो. ५।४४
त्वत्तः परतरं किञ्चिन्नैवास्ति
जगतः प्रभो ग.शो. ३।७
त्वत्तो वा ब्राह्मणो वाऽपि ये लभन्ते
षडक्षरम् । जीवन्तो मन्त्रसिद्धाः
स्युर्मुक्ता मां प्राप्नुवन्ति ते रामो. ३।७
त्वत्तो विश्रममाप्नोमि चेतसा
भ्रमता जगत् महो. २।३५
त्वत्प्रसादाद्भगवति प्रज्ञानं मे ध्रुवं
भवेत् लक्ष्म्यु. ३

त्वत्प्रसादान्महान्तो गच्छन्ति
  वैष्णवं लोकमपुनर्भवाय — लक्ष्यु. ६
त्वत्प्रसादान्मयाऽच्युत — भ.गी. १८।७३
त्वत्प्रसृष्टं माभिवदेत्प्रतीतः — कठो. १।१०
त्वदन्यः संशयस्यास्य — भ.गी. ६।३९
त्वदभिन्नं मां परिपालय कृपालय — त्रि.म.ना.८।७
त्वद्व्यतिरिक्तं यत्किञ्चित्प्रतीयते
  तत्सर्वं बाधितमिति निश्चितम् — त्रि.म.ना.१।१
त्वमग्निर्वरुणो वायुस्त्वमिन्द्रस्त्वं
  निशाकरः — मैत्रा.५।१
त्वमग्निः हव्यवाह सर्मित्से — चित्त्यु.१४।२
त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभिः — भ.गी. २।१६
त्वमक्षरं परमं वेदितव्यं — भ.गी. ११।१८
त्वमक्षरं सदसत्परं यत् — भ.गी. ११।३७
त्वमग्ने द्युभिस्त्वमाशुशुक्षणिस्त्वमद्भ्य-
  स्त्वमश्मनस्परि। त्वंवनेभ्यस्त्वमोष-
  धीभ्यस्त्वंनृणांनृपतेजायसेशुचिः — महाना.१६।१०
  [ऋ. अ. २।५।१७=मं. २।१।१
त्वमग्ने त्रिगुणोवरिष्ठःब्रह्मपरं...स्वाहा — पारमा. २।३
त्वमन्तरिक्षे चरसि सूर्यस्त्वं
  ज्योतिषां पतिः — प्रश्नो.२।९
त्वमवस्थात्रयातीतः — गणप. ६
त्वमव्ययः शाश्वतधर्मगोप्ता — भ.गी.११।१८
त्वमस्माकं गतिरन्या न विद्यते — मैत्रा.४।१
त्वमस्य पूज्यश्च गुरुर्गरीयान् — भ.गी.११।४३
त्वमस्यविश्वस्यपरंनिधानं [भ.गी.११।१८ +११।३८
त्वमहं शब्दलक्ष्यार्थमसक्तं सर्वदोषतः — वराहो.२।१७
त्वमात्माऽसि, यस्त्वमसि सोऽहमस्मि — कौ.त. १।६
त्वमादिदेवः पुरुषः पुराणः — भ.गी.११।३८
त्वमादौ प्रोक्तवानिति — भ.गी. ४।४
त्वमानन्दमयस्त्वं ब्रह्ममयः — गणप.४
त्वमिति तदिति कार्ये कारणे सत्यु-
  पाधौ द्वितयमितरथैकं सच्चिदा-
  नन्दरूपम् — शुकर. ३।११
त्वमित्यपि भवेच्चाहं त्वं नो चेदहमेव
  न। इदं यदि तदेवास्ति तदभावा-
  दिदं न च — ते.बि.५।२५

त्वमित्येतत्तदित्येतन्मत्तोऽन्यन्नास्ति
  किञ्चन। चिच्चैतन्यस्वरूपोऽह-
  महमेव परः शिवः — ते.बि.३।३३
त्वमिन्द्रस्त्वं निशाकरः — मैत्रा. ५।१
त्वमेकोऽसि बहूननुप्रविष्टः — चित्त्यु. १४।३
त्वमेव केवलं कर्ताऽसि — गणप. १
त्वमेव केवल धर्ताऽसि — गणप. १
त्वमेव केवलं हर्ताऽसि — गणप. १
त्वमेवजगतांधात्रीत्वमेवविष्णुवल्लभा — तुलस्यु.७
त्वमेवतुरीयतुरीयस्त्वमेवतुरीयातीतः — त्रि.म.ना. १।१
त्वमेव धाता वरुणश्च राजा त्वं
  वत्सरोऽर्यमा एव सर्वम् — एकाक्षरो. ११
त्वमेव निरतिशयानन्दः — त्रि.म.ना. १।१
त्वमेव परमं पदम् — अ. पू. ५।५४
त्वमेव परमात्मासि,त्वमेव परमो गुरुः — ते. बि. ५।५८
त्वमेव परिपूर्णानन्दः — त्रि.म. ना.१।१
त्वमेव प्रत्यक्षमथर्वाऽसि — सूर्यो. ३
त्वमेव प्रत्यक्षमृगसि — सूर्यो. ३
त्वमेव प्रत्यक्षं कर्म कर्ताऽसि — सूर्यो. ३
त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि — गणप. १
त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि — सूर्यो. ३
  [तैत्ति.१।१।१+१२।१+१३।१
त्वमेव प्रत्यक्षं यजुरसि — सूर्यो. ३
त्वमेव प्रत्यक्षं रुद्रोऽसि — सूर्यो. ३
त्वमेव प्रत्यक्षं विष्णुरसि — सूर्यो. ३
त्वमव प्रत्यक्षं सामासि — सूर्यो. ३
त्वमेव प्रत्यक्षं सैवासि — कौलो. शां.पा.
त्वमेव ब्रह्मेशानपुरन्दरपुरोगमैरखिला-
  मरैरखिलागमैर्विमृग्यः — त्रि.म.ना. १।१
त्वमेव मोक्षस्त्वमेव मोक्षदस्त्व-
  मेवाखिलमोक्षसाधनम् — त्रि.म.ना. १।१
त्वमेव वक्ता — त्रि.म.ना. १।१
त्वमेव वरं वृणीष्व (हे इन्द्र) — कौ. त. ३।१
त्वमेव विद्यातीतः (महाविष्णुः) — त्रि.म.ना. १।१
त्वमेव विद्यावेद्यः.. विद्यास्वरूपः — त्रि.म.ना. १।१
त्वमेव विद्यास्वरूपः... विद्यातीतः — त्रि.म.ना. १।१
त्वमेव सदसदात्मकः (महाविष्णुः) — त्रि.म.ना. १।१
त्वमेव सदसद्विलक्षणः ,, — त्रि.म.ना. १।१

त्वमेव सर्वकारणव्यष्टिः (महाविष्णुः) त्रि.म.ना. १।१
त्वमेव सर्वकारणसमष्टिः ,, त्रि.म.ना. १।१
त्वमेव सर्वकारणहेतुः ,, त्रि.म.ना. १।१
त्वमेव सर्वज्ञः ,, त्रि.म.ना. १।१
त्वमेव सर्वनियन्ता ,, त्रि.म.ना. १।१
त्वमेव सर्वनिवर्तकः ,, त्रि.म.ना. १।१
त्वमेव सर्वपालकः ,, त्रि.म.ना. १।१
त्वमेव सर्वप्रवर्तकः ,, त्रि.म.ना. १।१
त्वमेव सर्वमुमुक्षुभिर्विमृग्यः ,, त्रि.म.ना. १।१
त्वमेव सर्वमूलाविद्यानिवर्तकः ,, त्रि.म.ना. १।१
त्वमेव सर्वशक्तिः ,, त्रि.म.ना. १।१
त्वमेव सर्वस्वरूपः ,, त्रि.म.ना. १।१
त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि गणप. १
त्वमेव सर्वं छन्दोऽसि सूर्यो.३
त्वमेव सर्वं त्वमेव सदा ध्येयः त्रि.म.ना. १।१
त्वमेव सर्वं त्वमेव सर्वं त्वमेव सर्वम् त्रि.म.ना. १।१
त्वमेव सर्वाधारः (महाविष्णुः) त्रि.म.ना. १।१
त्वमेव सर्वेश्वरः ,, त्रि.म.ना. १।१
त्वमेव सुरसंसेव्या त्वमेव मोक्षदायिनी तुलस्यु. ८
त्वमेवाखंडानन्दः त्रि.म.ना. १।१
त्वमेवाखिलमोक्षसाधनम् त्रि.म.ना. १।१
त्वमेवाखिलशास्त्रैर्विमृग्यः त्रि.म.ना. १।१
त्वमेवातिमहतो महीयान् त्रि.म.ना. १।१
त्वमेवातिसूक्ष्मतरः त्रि.म.ना. १।१
त्वमेवानन्तोपनिषद्विमृग्यः त्रि.म.ना. १।१
त्वमेवान्तर्बहिर्व्यापकः त्रि.म.ना. १।१
त्वमेवामृतमयस्त्वमेवामृतमयस्त्व-
मेवामृतमयः त्रि.म.ना. १।१
त्वमेवामृतमयैर्विमृग्यः त्रि.म.ना. १।१
त्वमेवाविद्याधारकः त्रि.म.ना. १।१
त्वमेवाविद्याविहारः त्रि.म.ना. १।१
त्वमेवाहमहमेव त्वमिति तारकयोग-
मार्गेणाखण्डानन्दपूर्णः कृतार्थः मं. ब्रा. ३।२
त्वमेवाहम्, अहमेव त्वम् त्रि.म.ना. ६।१०
त्वमेवाहं न भेदोऽस्ति पूर्णत्वात्
परमात्मनः। इत्युच्चरन्समालिङ्ग्य
शिष्यं ज्ञप्तिमनीनयत् मं. ब्रा. ३।१

त्वमैश्वर्यं दापयाथ सम्प्रत्याश्वरि-
मारणम्। कुर्वीति स्तुत्य देवाद्या-
स्तेन सार्धं सुखं स्थिताः रा. पू. ४।१६
त्वम्पदार्थादौपाधिकात्तत्पदार्थादौ-
पाधिक-भेदाविलक्षणमाकाश-
वत्सूक्ष्मं केवलसत्तामात्रस्वभावं
परं ब्रह्मेत्युच्यते सर्वसारो. ६
त्वया जुष्ट ऋषिर्भवति देवि त्वया
ब्रह्मागतश्रीरुत त्वया महाना. १३।२
त्वया जुष्टश्चित्रं विन्दते वसु महाना. १३।२
त्वया जुष्टा नुदमाना (जुषमाणा)
दुरुक्तान् बृहद्वदेम विदथे
सुवीराः [महाना. १३।१+ तै.आ.१०।४९।१
त्वया ततं विश्वमनन्तरूप भ.गी. ११।३८
त्वया मन्यो सरथमारुजन्तो.. वनदु. १०७
[ऋ.अ.८।३।१९= मं. १०।८४।१
त्वयाऽऽवृतं जगदुत्त्वगर्भः एकाक्षरो. १२
त्वया व्याप्तं जगत्सर्वं गणेशो. ३।९
त्वयैकाग्रेण चेतसा भ. गी.१८।७२
त्वरितं चक्षूरोगाञ्छमय शमय चाक्षुषो. २
त्वष्टाऽमीत्, मित्र उपवक्ता चित्त्यु. ३।१
त्वष्टानो अत्र विदधातु रायोनुमार्ष्टु
तन्वो २ यद्विलिष्टम् [सहवै.५+ तै. आ.२।४।१
त्वहमस्मीति तमतिसृजते कौ. उ. १।२
त्वं कालत्रयातीतः (गणेशः) गणप. ६
त्वं गुणत्रयातीतः गणप. २६
त्वं चत्वारि वाक्पदानि गणप. ५
त्वं च मृत्यो यत्र सुज्ञेयमात्थ कठो. १।२२
त्वं चाहं च न वै भिन्नो कुरु
सृष्टिं प्रजापते ग.शो. ३।१०
त्वं निर्माता क्ष्माभृतां सरितां
सागराणां...च गणेशो. ३।७
त्वं चाहं च सर्वं विश्वं सर्वदेवता बह्वृचो. ३
त्वं जातवेदो भुवनस्य नाथः एकाक्षरो. २
त्वं जीर्णो दण्डेन वञ्चसि त्वं जातो
भवसि विश्वतोमुखः श्वेताश्व. ४।३
त्वं जीवस्त्वमापः सर्वेषां जनिता
...स्वाहा पारमा.२।४

त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि गणप. ४
त्वं तदसि त्वं ब्रह्मास्यहं ब्रह्मास्मी-
त्यनुसन्धानं कुर्यात् पैङ्गलो. ३।१
त्वं तदाप आपो ज्योती रसोऽमृतं
ब्रह्म भूर्भुवः सुवरोम् महाना. १६।१
त्वं देहत्रयातीतः गणप. ६
त्वं नाहं न चान्यं वा सर्वं ब्रह्मैव म. वा. र. १६
त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि गणप. ४
त्वं बुद्धिर्भूतानामन्तरात्मा पारमा. २।७
त्वं बुद्ध्या विचिन्वमानः
पुण्यरूपाय स्वाहा पारमा. २।७
त्वं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् गणप. ६
त्वं ब्रह्मा त्वं कर्ता त्वं प्रधानम् गणेशो. ३।१२
(पुत्रं दृष्ट्वा) त्वं ब्रह्मा त्वं यज्ञस्त्वं
लोकस्त्वं वषट्कारस्त्वमोङ्कारस्त्वं
स्वाहा त्वं स्वधा... कठश्रु. १४
त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वमिन्द्रः.. गणप. ६
त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं हरस्त्वं
प्रजापतिस्त्वमिन्द्रः...गणेश्वरः गणेशो. ३।९
त्वं ब्रह्मासि अहं ब्रह्मास्मि(आवयो-
रन्तरं न विद्यते त्वमेवाहमह-
मेव त्वम्) [त्रि.म.ना. ६।१०+ पैङ्गलो. ३।१
त्वं भर्ता मातरिश्वा प्रजानाम् चित्त्यु. १४।२
त्वं भूतानामधिपतिरसि सहवै. २३
त्वं भूतानां श्रेष्ठोऽसि सहवै. २३
त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलो नभः गणप. ५
त्वं भूर्भुवः स्वस्त्वं हि स्वयम्भूरथ
विश्वतोमुखः एकाक्षरो. १३
त्वं मनुस्त्वं यमश्च [मैत्रा. ४।१५+ ५।२
त्वं मामुद्धर कल्याणि महापापाब्धि-
दुस्तरात् तुलस्यु. १२
त्वं मूलाधारस्थितोऽसि नित्यम् गणप. ६
त्वं यज्ञनेत्रा हुतभुग्विभुश्च रुद्रास्तथा.. एकाक्षरो. ७
त्वं यज्ञस्त्वं ब्रह्मा त्वं रुद्रस्त्वं
विष्णुस्त्वं वषट्कारः प्रा. हो. १।७

त्वं यज्ञस्त्वं५ वषट्कारस्त्वमिन्द्रस्त्व५
रुद्रस्त्व५ विष्णुस्त्वं ब्रह्मस्त्वं
प्रजापतिः महाना. १६।१
त्वं लोकान् सृजसि रक्षसि हरसि ग.शो. ३।१३
त्वं वज्रभृद्भूतपतिस्त्वमेव एकाक्षरो. ५
त्वं वत्सरोऽग्न्यर्यम एव सर्वम् एकाक्षरो. ११
त्वं वनेभ्यस्त्वमोषधीभ्यस्त्वं...जायते महाना. १६।१०
[ऋ.अ.२।५।१७=मं. २।१।१+ वा.सं. ११।२७
त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयः गणप. ४
त्वं वाऽहमस्मि भगवो देव तेऽहं वै
त्वमसि वराहो. २।३४
त्वं विश्वभूर्भूतपतिः पुराणः एकाक्षरो. १
त्वं विश्वभूर्योनिपारः स्वगर्भे एकाक्षरो. ३
त्वं विष्णुर्भूतानि तु त्रासि दैत्यान् एकाक्षरो. २
त्वं वै कुमारी ह्यथ भूस्त्वमेव एकाक्षरो. ११
त्वं वै विष्णो पाहि पाहि जगत्सर्वम् ग.शो. ३।१२
त्वं शक्तित्रयात्मकः गणप. ६
त्वं सच्चिदानन्दाद्वितीयोऽसि गणप. ४
त्वं साक्षादात्माऽसि नित्यम् गणप. १
त्वं स्त्री त्वं पुमानसि त्वं कुमार
उत वा कुमारी श्वेताश्व. ४।३
त्वं स्त्री पुमांस्त्वं च कुमार एकः एकाक्षरो. ११
त्वं हि मन्यो अभिभूत्योजाः वनदु. १०३
[ऋ. अ. ८।३।१८= मं. १०।८३।४+
[अथर्व. ४।३२।४
त्वामापो अनु सर्वाश्चरन्ति जानतीः चित्त्यु. १४।२
त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि तैत्ति. १।१।१
त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्मावादिषम् तैत्ति. १।१२।१
त्वां भूतान्युपपर्यावर्तन्ते सहवै. २३
त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम् गणप. ६
त्वां सदा परिचिन्तयन् भ.गी. १०।१७
त्वांस्त्रिदिमे ब्राह्मणा अङ्गारावक्ष-
गणमकृता ३ इति बृह. ३।९।१८
त्विषिमेऽजस्रं पिनष्टि, रथो मे..
समुद्रान्याति इतिहा. ८५
त्वेष५ ह्यस्य स्थविरस्य नाम ना.पू.ता. ४।५
[ऋ.अ.५।६।२५=मं.७।१००।३+ तै.ब्रा.२।४।३।५

द

द इत्येकमक्षरं ददत्यस्मै स्वाश्चान्ये
  च य एवं वेद — बृह. ५।३।१
दक्षनाड्या समाकृष्य बहिष्ठं पवनं
  शनैः.. कृमिदोषं निहन्ति च — योगकुं. १।२५
दक्षाभ्यांकराभ्यांमुद्गरपाशौ..दधानां — पीताम्बरो. १
दक्षिणकटाक्षांदुत्पन्नाः कर्मजडा
  आसुराः ...भवन्ति — सामर. २
दक्षिणतो द्वारश्रियै गणेशाय...मायायै — सूर्यता. ४।१
दक्षिणस्यां दिशि मुक्तिस्थानं
  तन्मुक्तिमण्डपसंज्ञितं (काश्याम्) — भस्मजा. २।१५
दक्षिणस्यां दिशि विष्णुः..मामुपास्ते — भस्मजा.२।१३
दक्षिणहस्तस्था आपः अपो जाला
  इत्यप उत्सृजे — सन्ध्यो. १
दक्षिणहस्तः स्रुवः (शारीरयज्ञस्य) — प्रा. हो. ४।२
दक्षिणं बाहुमन्वावर्तते — कौ. त.२।८,९
दक्षिणं बाहुमुद्धरतेऽवधत्ते सव्य-
  मिति यज्ञोपवीतम् — सहवै.१
दक्षिणं सव्यगुल्फेन...सिंहासनं... — शाण्डि.१।३।५
दक्षिणा दिग्दक्षिणे प्राणाः — बृह. ४।२।४
दक्षिणाद्वितीया कुक्षिर्भवति — गायत्रीर. ३
दक्षिणाभिमुखे विश्वो मनस्य-
  स्तस्तु तैजसः — आगम. ३
दक्षिणाभिमुखो भूत्वा महरिति
  व्याहृतिरानुष्टुभं छन्दः — महो. १।४
दक्षिणामुखो भूत्वा जनदिति...
  अथर्ववेदः — चतुर्वे.१
दक्षिणायां विचालनस्थानं (काश्यां) — भस्मजा. २।९
दक्षिणारे सुषुम्णायाः पिङ्गला
  वर्तते क्रमात् — वराहो. ५।२४
दक्षिणा वाग्घोता प्राण उद्गाता(यज्ञस्य) — महाना. १८।१
दक्षिणावृदुपनिष्क्रामति तं पिता-
  नुमंत्रयते — कौ. त. २।१५
दक्षिणां च उदक्चोऽहं, अधश्चोर्ध्वंचाहं — अ.शिर. १।१
दक्षिणेतरपादं तु...ऋजुकायः
  समासीनो वीरासनमुदाहृतम् — जा. द. ३।६
दक्षिणेतुभुजेविप्रोबिभृयाद्वै सुदर्शनम् — सुदर्श. ११

दक्षिणे लक्ष्मणेनाऽथ सधनु-
  ष्पाणिना...कोणत्रयं भवेत् — रा. पू. ४।१०
दक्षिणे विवस्वते नैर्ऋतौ खगाय (नमः) — सूर्यता. ४।१
दक्षिणोत्तरगुल्फेन सीवनीं पीडये-
  द्दृशम् ।...जितो वायुर्भवेद्दृशं — जा. द. ६।३८
दक्षिणोत्तरौ पाणी कृत्वा सपवित्रा-
  वोमिति प्रतिपद्यते — सहवै. १९
दग्धकामाङ्गविभूतित्रिपुण्ड्रितानि..
  ललाटपट्टे लोपयन्ति दैव-
  लिखितानि.. — वज्रपं. ७
दग्धस्य दहनं नास्ति पक्वस्यपचनंयथा — पैङ्गलो. ४।७
दण्डकमण्डलुकटिसूत्रकौपीनाच्छादनं..
  अप्सु सन्न्यस्य ..अप्सुप्रणवात्मकेन
  देहत्यागं करोति यः सोऽवधूतः — तुरीया. ३
दण्डभिक्षां च यः कुर्यात्..याति
  नीचयतिर्हि सः — ना. प. ६।१३
दण्डमाच्छादनंचैवकौपीनंचपरिग्रहेत् — आरु. १
दण्डं तु वैणवं सौम्य सत्वचं सम-
  पर्वकम् ।.. नासादघ्नं शिरस्तुल्यं
  ..बिभृयाद्यतिः — १ सं. सो.२।९
दण्डात्मनोस्तु संयोगः.. न
  दण्डेन विना गच्छेत् — १सं. सो.२।११
दण्डाँल्लोकांश्च विसृजेत् (यतिः) — आरुणि. २
दण्डो दमयितामस्मि — भ.गी. १०।३८
दत्तात्रेय हरे कृष्ण उन्मत्तानन्द-
  दायक । दिगम्बर मुने बाल
  पिशाच ज्ञानसागर — दत्तात्रे. १।४५
दत्तात्रेयं शिवं शान्तं.. आत्ममाया-
  रतं देवमवधूतं.. एवं यः सततं
  ध्यायेत्...स मुक्तः सर्वपापेभ्यो
  निःश्रेयसमवाप्नुयात् — शाण्डि.३।२।२
दत्तो (वायुः) निद्रादिकमंकृत — त्रि. ब्रा.२।८७
दत्वाऽन्येभ्यस्तमानन्दं नरो याति
  परां गतिम् — गान्धर्वो. ६
ददामि बुद्धियोगं तं — भ.गी. १०।१०
ददृश इव ह्येष परो रजा इति — बृह. ५।१४।३
दद्यान्नारायणेत्येवप्रतिवाक्यंप्रदायतिः — ना. प. ३।५९

(अथ) दधि मधु घृतं सन्नीयान्तर्हितेन जातरूपेण प्राशयति भूस्ते दधामि...सर्वं त्वयि दधामीति — बृ.उ. ६।४।२५

दध्नः सोम्य मथ्यमानस्य योऽणिमा स ऊर्ध्वः समुदीषति तत्सर्पिर्भवति — छांदो. ६।६।१

दध्यङ् ह यन्मध्वाथर्वणो वामश्वस्य शीर्ष्णा प्रयदीमुवाच — बृह. २।५।१६

दध्योदनं पाचयित्वा सर्पिष्मन्तमश्नीयातामीश्वरौ जनयितवै — बृह. ६।४।१५

दन्तधावनतांबूलं क्षौराभ्यञ्जनभोजनम् । रत्यौषधं परान्नं च श्राद्धकर्ता विवर्जयेत् — इतिहा. ४०

दन्तधावनताम्बूलनखकेशनिकृन्तनम् । कर्ता चैव तु पूर्वेद्युः... — इतिहा. ३९

दन्तैर्दन्तान्न संस्पृशेत् — योगो. २१

दन्तोष्ठौ सूक्तवाकः (शारीरयज्ञस्य) — प्रा. हो. ४।३

दन्द्रम्यमाणा परियन्ति मूढाः — कठो. २।५

दभ्रमेवापिनूनं त्वं वेत्थ ब्रह्मणो रूपम् — केनो. २।१

दम इति नियतं ब्रह्मचारिणस्तस्माद्दमे रमन्ते — महाना. १६।१२

दमिति हंसः, दामिति दीर्घं तद्बीजं — दत्तात्रे. १।१

दमश्च स्वाध्यायप्रवचने च — तैत्ति. १।९।१

दमः प्रकृतिदान्तत्वादेवं विद्वाञ्छ्रमं व्रजेत् — अ. शां. ८६

दमः शमयिता (यज्ञस्य) — महाना. १८।१

दमा यान्तु ब्रह्मचारिणः स्वाहा — तैत्ति. १।४।४

दमेन दान्ताः किल्बिषमवधुन्वन्ति — महाना. १७।३

दमेन ब्रह्मचारिणः सुवरगच्छन् — महाना. १७।३

दमेनापिहिता गुहा — इतिहा. १७

दमेसर्वंप्रतिष्ठितंतस्माद्दमःपरमंवदन्ति — महाना. १७।३

दमो भूतानां दुराधर्षं, दमे सर्वं प्रतिष्ठितम् — महाना. १७।३

दम्भमानमदान्विताः — भ. गी.१६।१०

दम्भार्थमपि चैव यत् — भ. गी.१७।१२

दम्भाहङ्कारनिर्मुक्तः — ना. प.३।५९

दम्भाहङ्कारसंयुक्ताः — भ. गी. १७।५

दम्भाहङ्कारादिभिरसंस्पृष्टचेता वर्तते...(स ब्राह्मणः) — व. सू. ९

दम्भेनाविधिपूर्वकम् — भ.गी.१६।१७

दम्भो दर्पोऽति(भि)मानश्च — भ. गी. १६।४

दम्भोलिस्तम्भसारप्रहरणविवशीभूतरक्षाधिनाथम्.. कपीन्द्रं.. — लांगूलो. २

दयध्वमिति न आत्थ — बृह. ५।२।३

दयादमस्तपः शौचमार्जवं क्षान्तिरेव च — भवसं. ५।२१

दया नाम सर्वभूतेषु सर्वत्रानुग्रहः — शाण्डि. १।१।३

दया भूतेष्वलोलुप्त्वं — भ. गी. १६।२

दया सा रोहिणी माता सत्यभामा धरेति वै — कृष्णो. १५

दरिद्रो धनिकानां च सुखं भुङ्क्ते तदा जगत् (सत्यं) — ते. बिं. ६।९५

दर्भाः कोशा ओषधिवनस्पतयो लोमानि (गायत्र्याः) — सन्ध्यो. २३

दर्पः कुवलयापीडो गर्वो रक्षः.. — कृष्णो. १४

दर्शे उदीच्यां प्रागुदीच्यां वोदित आदित्ये..उपवीय..यथिराचामति तेन ऋचः प्रीणाति — सहवै. १५

दर्शनप्रथमाभासमात्मानं केवलं भज [वराहो. ४।२०+ — मैत्रे. २।२९

दर्शनस्पर्शनाभ्यां (रुद्राक्षाणां) द्विगुणं फलम् — रु. जा. १

दर्शनं स्पर्शनं केलिः कीर्तनं गुह्यभाषणम् । सङ्कल्पोऽध्यवसायश्च क्रियानिर्वृतिरेव च । एतन्मैथुनमष्टाङ्गं प्रवदन्ति मनीषिणः — कठरु. ८९

दर्शनाख्यंस्वमात्मानं सर्वदा भावयन्भव — महो. ६।३७

दर्शनाग्नी रूपाणां दर्शनं करोति — गर्भो. ११

दर्शनात्पापनाशिनी स्पर्शनात्पावनी (तुलसी)...य एवं वेद स वैष्णवो भवति — तुलस्यु. २

दर्शनादर्शने हित्वा स्वयं केवलरूपतः । य आस्ते कपिशार्दूल ब्रह्म स ब्रह्मवित् स्वयम् — मुक्तिको.२।६४

दर्शयात्मानमव्ययम् — भ. गी. ११।४

दर्शयामास पार्थाय — भ. गी. ११।९

दलानि भक्त्या चिनुयाद्दशको यद्यर्चकोऽन्यद्विजतो यतेत — १ बिल्वो. ११

दवीयसिवमा इव नेदीयसिवमा एव — आर्षे. ७।१

दश कृतऽसैषा विराडन्नादी तयेदऽ सर्वमस्येदं दृष्टं भवति — छान्दो. ४।३।८

दशकोटियोजनविस्तीर्णो रुद्रलोकः; तदुपरि विष्णुलोकः — राधोप. १।३

दश ग्राम्याणि धान्यानि भवन्ति— व्रीहियवास्तिलमाषा अणुप्रियङ्गवो गोधूमाश्च मसूराश्च खलकुलाश्च — बृ.उ.६।३।१३

दशतुल्यं व्यतीपाते पक्षमध्ये तु विंशतिः ।..अन्नेन वाऽथवा येन ..श्राद्धं कुर्यान्महालयम् — इतिहा. ८९

दश दश पादा एकैकस्याः शृङ्ग्योराबद्धा बभूवुः — बृह. ३।१।१

दशदिशः कुक्षी (गायत्र्याः) — सन्ध्यो. २३

दशद्वारपुरं देहं.. विष्ण्वालयं प्रोक्तं सिद्धिदं सर्वदेहिनाम् — यो.शि. ५।२

दशद्वारपुरं ...देहं शिवालयं प्रोक्तंसिद्धिदंसर्वदेहिनाम्[यो.शि. १।१६६+५।२

दशपञ्च त्रिशतंयत्परंच तन्मेमनः.. — २. शिवसं.७

दशभिः प्रणवैः सप्तव्याहृतिभि-श्चतुष्पदा । गायत्रीजपयज्ञश्च त्रिसन्ध्यं शिरसा सह — शाठ्याय. १३

दशमेन तु पिण्डेन — पिण्डो. ८

दशमे परमं ब्रह्म भवेद्ब्रह्मात्मसन्निधौ — हंसो. १०

दशमो मेघनादः । नवमं परित्यज्य दशममेवाभ्यसेत् — हंसो. ७

दशरात्रलयेनापि योगीन्द्रः स्वात्म-धिष्ठितः।...स्थानकानि पश्यति — अमन. १।६०

दशलक्षणकं धर्ममनुतिष्ठन्... सन्न्यसेद्द्दणो यतिः — ना. प.३।२३

दशलक्षणको धर्मः सेवितव्यः प्रयत्नतः — भवसं.५।११

दशलाक्षणिको धर्मः शिवाचारः प्रकीर्तितः — शिवो. ७।१०२

दशवक्त्रं तु रुद्राक्षं यमदैवत्यमीरितम् — रु. जा. ३५

दशवर्षा भवेद्गौरी ह्यत ऊर्ध्वं रजस्वला — इतिहा. ६६

दशाचतुष्टयाभ्यासात्प्रोक्ता संसक्ति-नामिका [वराहो. ४।७+ — महो. ५।३१

दशेन्द्रियाणि मन एकादशं तेजः द्वादशोऽहङ्कारः — महो. १।२

दशेमे पुरुषे प्राणा आत्मैकादशः — बृह. ३।९।४

दहरमेवापि नूनं त्वं वेत्थ... (मा.पा.) — केनो. २।१

दहरस्थः प्रत्यगात्मा नष्टे ज्ञाने ततः परम् । विततो व्याप्य विज्ञानं दहत्येव क्षणेन तु — योगकुं. ३।३१

दहरं पुण्डरीकं तद्वेदान्तेषु निगद्यते — क्षुरिको. १०

दहरोऽस्मिन्नन्तराकाशः — छांदो.८।१।१,२

दहेत्पापान्याशु विज्ञानदात्री न संसारे मज्जते कदाचित् — सि. शि. ४

दह्रं विपापं परवेश्मभूतं यत्पुण्डरीकं... तदुपासितव्यम् — महाना. ८।१६

दंष्ट्राकरालवदनं..रुद्रं मन्युं नमाम्यहम् — वनदु. ९९

दंष्ट्राकरालानि च ते मुखानि — भ.गी. ११।२५

दंष्ट्राकरालानि भयानकानि — भ. गी.११।२७

दाक्षायण्यां प्रसूतं समस्तं.. तस्मै प्रजेशाय धुरन्धराय स्वाहा — पारमा. ८।७

दातव्यमिति यद्दानं — भ.गी. १७।२०

दानक्रियाश्च विविधाः — भ.गी. १७।२५

दानमिति सर्वाणि भूतानि प्रशंसन्ति.. दानान्नातिदुश्चरम् — महाना.१६।१२

दानमीश्वरभावश्च — भ. गी.१८।४३

दानं दमश्च यज्ञश्च — भ. गी. १६।१

दानंनामन्यायार्जितस्यधनधान्यादेः श्रद्धयाऽर्थिभ्यः प्रदानम् — शाण्डि.१।२।१

दानं यज्ञानां वरूथं दक्षिणा, लोक-दातारऽ सर्वभूतान्युपजीवन्ति — महाना. १७।५

दानान्नास्ति दुश्चरम्,तस्माद्दाने रमन्ते — महाना.१६।१२

दानेन द्विषन्तो मित्रा भवन्ति — महाना.१७।५

दानेन सर्वान् कामानवाप्नोति — संहितो. ४।१

दानेनारातिरपानुदन्त — महाना.१७।५

दानेषु यत्पुण्यफलं प्रदिष्टं — भ. गी. ८।२८

दाने सर्वं प्रतिष्ठितं, तस्माद्दानं परमं वदन्ति — महाना. १७।५

दान्तानां कुशलानां च...शास्त्र-मेतत्प्रकाशते — अमन.२।१०

दामोदरायविद्महे वासुदेवायधीमहि । तन्नः कृष्णः प्रचोदयात् — त्रि.म.ना.७।११

दाम्यत दत्त दयध्वमिति तदेतत्त्रयंऽ शिक्षेद्दमं दानं दयामिति — बृह. ५।२।३

दाम्यतेति न आत्थेत्योमिति — बृह. ५।२।१

दारानाहृत्य पुत्रानुत्पाद्य ताननु-
रूपाभिर्वृत्तिभिर्वितत्येष्ट्वा च
शक्तितो यज्ञैः कठश्रु. १७
दारमाहृत्य सदृशमग्निमाधाय
शक्तितः । ब्राह्मीमिष्टिं यजेत्
[२सन्न्यासो३.+ कुण्डिको.२
दारिद्र्याशा यथा नास्ति सम्पन्नस्य
तथा मम । ब्रह्मानन्दे निमग्नस्य
विषयाशा न तद्भवेत् आ. प्र. १७
दारुलवं निर्ऋतिनायमेन(लिङ्गंपूजितं) सि.शि. २४
दारेषणायाश्च वित्तेषणायाश्च लोके-
षणायाश्च व्युत्थितोऽहम् ना.प. ४।४५
दाशरथाय विद्महे सीतावल्लभाय
धीमहि । तन्नो रामः प्रचोदयात् त्रि.म.ना.७।११
दाराः पुत्राः श्रियश्चैव बान्धवाः
सुहृदस्तथा । हसन्त्युन्मत्तक-
मिव नरं वार्धककम्पितम् महो. ३।३५
दास्यन्ते यज्ञभाविताः भ.गी.३।१२
दिक्कालाद्यनवच्छिन्नमात्मतत्त्वम् महो. ५।१४४
दिक्कालाद्यनवच्छिन्नमदृष्टोभयकोटि-
कम् । चिन्मात्रमक्षयं शांतमेकं
ब्रह्मास्मि शाश्वतम् अ.पू.५।८
दिक्कालाद्यनवच्छिन्नं स्वच्छं नित्यो-
दितं ततम् । सर्वार्थमयमेकार्थं
चिन्मात्रममलं भव अ.पू.५।६६
दिक्पतीनां ग्रहाणां च लोकाश्चाथ
रदावली गुह्यका. १४
दिक्पालानां राज्ञां नागानां किन्न-
राणामधिपतिर्भवति हयग्री. ६
दिगम्बरमुखोऽस्म्यहम् मैत्रे. ३।१९
(अथ) दिगम्बरः सकलसञ्चारकः
सर्वदानन्दस्वानुभवैकपूर्णहृदयः...
गिरिकन्दरेषु विसृजेद्देहम् ना.प.४।४९
दिगम्बरो भूत्वा विवर्णवल्कलाजिन-
परिग्रहमपि संत्यज्य...प्रणवात्म-
कत्वेन देहत्यागं करोति यः
सोऽवधूतः तुरीया. ३
दिक्षु तृप्यन्तीषु यत्किञ्च दिशश्चन्द्र-
माश्च... (पा.पा.) छां.उ. ५।२०।२
दिक्षु तृप्यंतीषु यत्किञ्च दिशश्च
चन्द्रमाश्चाधितिष्ठन्ति, तत्तृप्यति छांदो.५।२०।२
दिग्दोषो यस्य विदिशश्च कर्णौ...
तस्मै वरत्रे.. कस्मै स्वाहा पारमा. ७।६
दिग्भ्योहैनमायन्तीङ् दिग्भ्योविशृणोति १ऐत. १।७।५
दिग्वातार्क-प्रचेतोऽश्वि-वह्नीन्द्रोपेन्द्र-
मृत्युकाः (तथाचन्द्रश्चतुर्वक्त्रोरुद्रः
क्षेत्रज्ञ ईश्वरः) चन्द्रो विष्णुश्चतु-
र्वक्त्रः शम्भुश्च करणाधिपाः
[वराहो.१।१४+ पैङ्गलो.२।४
दिनकरकिरणैर्हि शार्वरं तमो
निबिडतरं झटिति प्रणाशमेति वराहो. ३।१०
दिनत्रयेऽथ यदि वा एकस्मिन्दिवसे-
ऽथवा । तृतीये वा चतुर्थे वा प्रातः
स्नात्वा सिताम्बरः।...ॐ तद्ब्रेति
चोचार्य पौलकं भस्म सन्त्यजेत् बृ.जा. ३।२२
दिनद्वादशकेनैव समाधिसमवाप्नुयात्।
वायुं निरुध्य मेधावी जीवन्मुक्तो
भवत्ययम् १ यो. त.१०६
दिनपादलयेनापि स्वल्पाहारो
भवेन्नरः... अमन. १।४७
दिनमात्रलयेनापिस्वात्मतन्त्रंप्रकाशते अमन. १।४९
दिनेदिने गयातुल्यं भरण्यां गयपञ्चके इतिहा. ८९
दिव आत्मान५ सवितारं बृहस्पतिं चित्यु. ११।२
दिव उग्रोऽवारुक्षत् नीलरु. १।२
दिवमनन्तशीर्षैर्दिशमनन्तकरैः..
व्याप्य तिष्ठति गणेशो. ३।३
दिवमेव भगवो राजन्निति होवाचैष
वै...यं त्वमात्मानमुपास्से तस्मा-
त्तव सुतं प्रसुतमासुतं कुले दृश्यते छांदो.५।१२।१
दिवसस्याष्टमेभागे...स कालः
कुतपो नाम इतिहा. ५८
दिवश्चैनमादित्याच्च दैवं मन आवि-
शति तद्वै दैवं मनो येनानन्द्येव
भवत्यथो न शोचति बृह. १।५।१९
दिवसाश्चार्धदिवसाश्च कलाः कल्पा-
श्चोर्ध्वं च दिशश्च सर्वे नारायणः सुबालो. ६।१
दिवं च पृथिवीं च वायुं चाकाशं
चापश्च..वागेवैतत्सर्वं विज्ञापयति
वाचमुपास्स्वेति छान्दो. ७।२।१

दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो सुवः — महाना. ६।३
दिवं देवतामारोद्यौस्त्वा देवता
रिष्यतीत्येनं ब्रूयात् — ३ ऐत. १।३।३
दिवं पृष्टं भन्दमानः सुमन्मभिः — चित्त्यु. १०।४
दिवा जाग्रन्नक्तं स्वप्नं सुषुप्तमर्धरात्रंगतं — ना. प. ६।२
दिवानक्तसमत्वेनास्वप्नः.. सन्न्यासेन
देहत्यागं करोति — प. हं. प. ८
दिवा न पूजयेद्विष्णुं रात्रौ नैव
प्रपूजयेत् । सततं पूजयेद्विष्णुं
दिवारात्रं न पूजयेत् — शांडि.१।७।३८
दिवारात्रमविच्छिन्नं यामे यामे
यदा यदा । अनेनाभ्यासयोगेन
वायुरभ्यसितो भवेत् — वराहो. ५।४६
दिवा वा यदि वा सायं याममात्रं
समभ्यसेत् — १ यो. त. ६७
दिवा सुप्तिर्निशायां तु जागरात्...
शीघ्रमुत्पद्यते रोगः — योगकुं. १।५७
दिवास्वापो वृथालापो यतेर्बन्ध-
कराणि षट् — १सं. सो.२।७९
दिवि क्षयो नभसा य एति — चित्त्यु. ११।८
दिवि तृप्यन्त्यां यत्किञ्च द्यौश्चादित्य-
श्चाधितिष्ठतस्तत्तृप्यति — छान्दो.५।१९।२
दिवि देवावृध९ होत्रा मे रयस्व स्वाहा — चित्त्यु. ४।१
दिवि देवेषु वा पुनः — भ. गी. १८।४
दिवि सूर्यसहस्रस्य — भ. गी.११।१२
दिवीव चक्षुराततम् [सुबा.६।१+ — नृ. पू. ५।१६+
[त्रि.ता.४।४+वरा.५।७७+पैङ्ग. — ४।२४+आरु.५
दिवेदिव ईड्यो जागृवद्भिर्हविष्मद्भि-
र्मनुष्येभिरग्निरेतद्वै तत् — कठो. ४।८
दिवैनाश्विद्युता जहि — सूर्यता. ३।१
दिव्यगन्धानुलेपनम् — भ. गी.११।११
दिव्यज्ञानोपदेष्टारं देशिकं परमे-
श्वरम् । पूजयेत्परया भक्त्या
तस्य ज्ञानफलं भवेत् — यो.शि. ५।५७
दिव्यदेहश्च तेजस्वी दिव्यगन्धो-
ऽप्यरोगवान् — सौभाग्य. ९
दिव्यध्वजातपत्रैस्तु चिह्नितं चरण-
द्वयम्..ध्यायेन्नित्यम् — गोपालो. २।२१
दिव्यमाल्याम्बरधरं — भ. गी.११।११

दिव्यवर्षसहस्राणि चक्षुरुन्मीलितं
मया । भूमावक्षिपुटाभ्यां तु
पतिता जलबिन्दवः — रु. जा. २
दिव्यश्राद्धे वसु-रुद्रादित्यरूपान् |...
ब्राह्मणानर्चयेत् — ना. प. ४।३९
दिव्यं ददामि ते चक्षुः — भ.गी. ११।८
दिव्यानेकोद्यतायुधम् — भ.गी. ११।१०
दिव्याम्बरधरं दिव्यगन्धानुलेपनं,
सर्वाभरणभूषितं — सूर्यता. १।८
दिव्यालङ्करणोपेतं रत्नपङ्कजमध्यगम्।..
चिन्तयंश्चेतसा कृष्णं मुक्तो
भवति संसृतेः — गो.पू. १।६।५७
दिव्याह्यात्मविभूतयः [भ.गी.१०।१६ +१०।१९
दिव्येब्रह्मपुरे सम्प्रतिष्ठिता भवन्ति
कथं सृजन्ति — प्रश्नो. १
दिव्ये ब्रह्मपुरे ह्येष व्योम्न्यात्मा
प्रतिष्ठितः — मुण्ड. २।२।७
दिव्यो देव एको नारायणः — सुबालो. ६।१
दिव्यो ह्यमूर्तः पुरुषः सबाह्याभ्यन्तरो
ह्यजः । अप्राणो ह्यमनाः शुभ्रो
ह्यक्षरात्परतः परः — मुण्ड. २।१।२
दिव्यौ शङ्खौ प्रदध्मतुः — भ. गी. १।१४
दिश एव सम्राडिति होवाच, तस्माद्वै
सम्राडपि यां कां च दिशं गच्छति
नैवास्या अन्तं गच्छति — बृह. ४।१।५
दिशमेवाप्येति यो दिशमेवास्तमेति — सुबालो. ९।२
दिशश्च नारायणः । विदिशश्च
नारायणः [नारा. २+ — त्रि.म.ना.२।८
दिशश्च प्रतिदिशश्चाहं पुमानपुमान्
स्त्रियश्चाहम् — अ. शिरः. १।१
दिशश्चानवलोकयन् — भ. गी. ६।१३
दिशस्तत्राधिदैवतं, नाडी तेषां
निबन्धनं, यः श्रोत्रे यः श्रोतव्ये
यो दिक्षु...सञ्चरति सोऽयमात्मा — सुबालो. ५।१
दिशं दिशं भित्वा सर्वाँल्लोकान्
व्याप्नोति, व्यापयतीति व्याप-
नाद्व्यापी महादेवः — अ. शिखो. २
दिशः पार्श्वे अवान्तरदिशः पर्शवः — बृह. १।१।१

दिशः पार्श्वे..परिशव ऋतवो..(मा.पा.) बृ. उ. १।१।१
दिशः श्रोत्रं भूत्वा कर्णौ प्राविशन् २ ऐत. २।४
दिशः श्रोत्रं (अप्येति) बृह. ३।२।१३
दिशः श्रोत्रात् (जज्ञिरे) ग.शो. ३।११
दिशः श्रोत्रे... वायुः प्राणो हृदयं
  विश्वमस्य..ह्येष सर्वभूतान्तरात्मा मुंड. २।१।४
दिशामेकपुण्डरीकमस्यहं मनुष्याणा-
  मेकपुण्डरीकं भूयासम् बृह. ६।३।६
दिशि पद्मान्तकयमान्तकविघ्ना-
  न्तकनरकान्तकान्.. तारोप. ११
(तस्य) दिशोऽङ्गारा अवान्तर-
  दिशो विस्फुलिङ्गास्तस्मिन्नेत-
  स्मिन्नग्नौ देवाः श्रद्धां जुह्वति बृह. ६।२।९
दिशोऽङ्गाराः...तस्मिन्नेतस्मिन्नग्नौ
  देवा वर्षं जुह्वति छान्दो.५।६।१
दिशो न जाने न लभे च शर्म भ. गी.११।२५
दिशोऽपि न हि दृश्यन्ते देशोऽप्य-
  न्योपदेशकृत् । ...अतो मां
  बोधयाशु त्वं तत्त्वज्ञानेन वै गुरो महो. ३।४९
दिशो वेद सदेवाः सप्रतिष्ठाः बृह. ३।९।१९
दिशो वै सम्राट् श्रोत्रं९ श्रोत्रं
  वै सम्राट् परमं ब्रह्म बृह. ४।१।५
दिशो ह्यस्य स्रक्त्यो द्यौरस्योत्तरं
  बिलं९ स एष कोशो वसुधान-
  स्तस्मिन्विश्वमिदं९ श्रितम् छांदो.३।१५।१
दीक्षा पत्नी, वातोऽध्वर्युः चित्सु. ६।१
दीक्षामुपेयात्काषायवासाः कुंडिको. ९
दीक्षा सन्तोषपानं च निर्वाणो. १
दीपज्वालेन्दु-खद्योत-विद्युन्नक्षत्र-
  भास्वराः । दृश्यन्ते सूक्ष्मरूपेण
  सदायुक्तस्य योगिनः यो. शि. २।१९
दीपनं च भवेत्तेजः प्रचारो वायु-
  लक्षणम् । आकाशतत्त्वतः
  सर्वं ज्ञातव्यं योगमिच्छता वराहो. ५।२
दीपमुत्सृज्य विचिन्वन्ति तमोऽघनैः मुक्तिको.२।४६
दीपशिखा तु या मात्रा सा मात्रा
  परमेश्वरे यो.शि. १।७४
दीपशिखायां या मात्रा सा मात्रा
  परमेष्ठिनः। भिदन्ति योगिनः
  सूर्यं योगाभ्यासेन... २ यो. शि. ६
दीपाकारं महादेवं ज्वलन्तं नाभि-
  मध्यमे।...हंस हंसेति यो जपेत्।
  जरामरणरोगादि न तस्य.. ब्र. वि. २३
दीप्तानलार्कद्युतिमप्रमेयम् भ.गी. ११।१७
दीप्यत इव देवलोकः बृह. ३।१।८
दीप्यमानां त्वासादयामि चित्सु. १०।१
दीयते च परिक्लिष्टं भ.गी.१७।२१
दीयतेऽनुपकारिणे भ.गी. १७।२०
दीर्घप्रणवसन्धानं सिद्धांतश्रवणंपरम् १ यो. त. २७
दीर्घस्वप्नमिदंयत्तद्दीर्घंवाचित्तविभ्रमम् वराहो. २।६४
दीर्घवापिमनोराज्यंसंसारंदुःखसागरम् वराहो. २।६४
दीर्घायुत्वस्य हेशिषे सूर्यता. २।१
दुःखं विभ्रियते सदा अ. शां. ८२
दुग्धदोहा अस्य वेदा भवन्ति ३ ऐत. २।४।१
दुग्धाब्धिवत्सम्मिलितौ सदैव तुल्य-
  क्रियौमानसमारुतौ च। यावन्मन-
  स्तत्र मरुत्प्रवृत्तिः.. अमन. २।२७
दुग्धेऽस्मै वाग्दोहं यो वाचो दोहोऽन्न-
  वानन्नादो भवति..[छांदो.१।१३।४ +२।८।२
दुग्धोदधिमध्यस्थितामृतामृत-
  कलशवद्वैष्णवं धाम त्रि.म.ना. १।४
दुन्दुभेस्तु ग्रहणेन दुन्दुभ्याघातस्य..
  शब्दो गृहीतः [बृह. २।४।७+ ४।५।८०
दुन्दुभेर्हन्यमानस्य न बाह्याञ्छब्दा-
  ञ्छक्नुयाद्ग्रहणाय [बृ.उ.२।४।७ +४।५।८
दुराचारो हि पुरुषो लोके भवति
  निन्दितः भवसं. ४।३
दुर्गतिं तात गच्छति भ. गी.६।४०
दुर्गन्धं दुर्मलोपेतं स्पृष्ट्वा स्नानं विधीयते मैत्रे. २।६
दुर्गात्संजायते यस्माद्देवी दुर्गेति
  कथ्यते देव्यु. २२
दुर्जया हीन्द्रियारयः। प्रक्षीण-
  चित्तदर्पस्य निगृहीतेन्द्रियद्विषः महो. ५।७७

दूरे ह वा अस्मान्मृत्युर्भवति बृह. १।३।९
दूरात्सुदूरे तदिहान्तिके च पश्य-
त्स्विहैव निहितं गुहायाम् मुण्ड. ३।१।७
दूरात्सुदूरे तदिहास्ति किञ्चित् गुह्यका. ३६
दूरादस्तमिताद्वित्वं भवात्मैव
स्वमात्मना अ. पू. २।३८
दूरेण ह्यवरं कर्म भ. गी. २।४९
दृक्स्वरूपावस्थानमक्षताः(आत्मार्चने) मं. ब्रा. २।५
दृग्विशिष्टात्मानमक्षताः ,, आत्मपू. १
दृग्दृश्यं यदि चिन्मात्रमस्ति चेच्चिन्मयं
जगत् (सदा) ते. बिं. २।३१
दृढभावनया त्यक्तपूर्वापरविचारणम् ।
यदादानं पदार्थस्य वासना
सा प्रकीर्तिता मुक्तिको.२.५७
दृढस्य धनुष आयमनं छां.उ. १।३।५
दृढाभ्यस्तपदार्थैकभावनादति-
चञ्चलम् । चित्तं सञ्जायते
जन्मजरामरणकारणम् मुक्तिको.२।२५
दृढाज्ञो भूत्वा सर्वं कृतकं नश्वर-
मिति देहादिकं सर्वं हेयं.. ना.प. ५।३
दृढासनो भवेद्योगी पद्माद्यासन-
संस्थितः सौभाग्य. ११
दृप्तबालाकिर्हानूचानो गार्ग्य.. आस बृह. २.१।१
दृशिस्तुशुद्धोऽहमविक्रियात्मकः मुक्तिको. २।७४
दृशिस्वरूपं गगनोपमं परं.. अलेपकं
सर्वगतं.. तदेव चाहं.. मुक्तिको.२।७३
दृश्यते जगति यद्यद्यज्जगति
वीक्ष्यते । वर्तते जगति यद्यत्सर्वं
मिथ्येति निश्चिनु ते. बिं. ५।५९
दृश्यते त्वग्र्यया बुद्ध्या सूक्ष्मया
सूक्ष्मदर्शिभिः कठो. ३।१२
दृश्यते न हि निर्विकारसहजानन्दैक-
भाजो भुवि अमन. २।३२
दृश्यते श्रूयते यच्च पञ्चब्रह्मात्मकं
स्वयम् । पञ्चधावर्तमानं तं ब्रह्म-
कार्यमिति स्मृतम् पञ्चब्र. २१
दृश्यते श्रूयते यद्यद्ब्रह्मणोऽन्यन्नतद्भवेत् वराहो. ३।२
दृश्यदर्शननिर्मुक्तः केवलात्मस्वरूप-
वान् ।.. स एव विद्वितादन्यः.. म.वा.र. १२

दृश्यदर्शनसम्बन्धे यत्सुखं पारमा-
र्थिकम् । तदतीतं पदं यस्मात्तन्न
किञ्चिदिवेव तत् (तदन्तैकान्त-
संवित्त्या ब्रह्मदृष्ट्याऽवलोकय)
[अ. पू. २।२२+ अ. पू.५।४४
दृश्यन्तं दिव्यरूपेण... हंसहंसं
वदेद्वाक्यं प्राणिनां देहमाश्रितः ब्र. वि. ७८
दृश्यमानस्यसर्वस्यजगतस्तत्त्वमीर्यते ।
ब्रह्मशब्देन तद्ब्रह्म स्वप्रकाशात्म-
रूपकम् शु. र. ३।८
दृश्यमाश्रयसीदं चेत्तत्सचित्तोऽसि
बन्धवान् महो. ६।३५
दृश्यरूपं च दृग्रूपं सर्वं शशविषाणवत् म. वा. र. ४
दृश्यशब्दानुभेदेन सविकल्पः
पुनर्द्विधा (समाधिः) सरस्व. ५०
दृश्यसंवलितो बन्धस्तन्मुक्तौ
मुक्तिरुच्यते अ. पू. २।१८
दृश्यं जडं द्वन्द्वजातमज्ञानं मानसं
स्मृतम् ...सङ्कल्पं..नास्तीति.. ते.बिं. ५।१०४
दृश्यं नास्तीति बोधेन मनसो दृश्य-
मार्जनम् । सम्पन्नं चेत्तदुत्पन्ना
परा निर्वाणनिर्वृतिः महो. २।३८
दृश्यं पश्यति यत्र पश्यति शनैरा-
घ्रेयमाजिघ्रति..मनस्तत्क्रमा-
द्वैताख्यस्य पदस्य तत्त्वपदवीं
प्राप्तस्य सद्योगिनः अमन. २।६८
दृश्यं यदि दृगप्यस्ति दृश्याभावे
दृगेव न ते. बिं. ५।२७
दृश्यं सन्त्यजसीदं चेत्तदाऽचित्तो-
ऽसि मोक्षवान् महो. ६।३५
दृश्यं ह्यदृश्यतां नीत्वा ब्रह्माकारेण
चिन्तयेत् ते. बिं. १।५०
दृश्याभावे दृगेव न ते. बिं. ५।२७
दृश्यासम्भवबोधेन रागद्वेषादि-
तानवे । रतिर्बलोदिता यासौ
समाधिरभिधीयते महो. ४।६२
दृश्यासम्भवबोधो हि ज्ञानं ज्ञेयं
चिदात्मकम् । तदेव केवलीभावं
ततोऽन्यत्सकलं मृषा महो. ४।६३

दृष्ट्वानसि मां यथा भ.गी. ११।५३
दृष्ट्वानसि यन्मम भ.गी. ११।५२
दृष्टश्रवणविषयवैतृष्ण्यमेत्य...साधन-
चतुष्टयसम्पन्नः सन्न्यस्तुमर्हति ना. प. २।१
दृष्टश्रुतानुभूतानां स्मरणात्
स्मृतिरुच्यते आर्षे. २१
दृष्टं चादृष्टं च श्रुतं चाश्रुतं च...
सर्वं पश्यति सर्वः पश्यति प्रश्नो. ४।५
दृष्टं द्रष्टव्यमखिलं भ्रान्तं भ्रान्त्या
दिशो दश। युक्त्या वै चरतो
ज्ञस्य संसारो गोष्पदाकृतिः महो. ६।९
दृष्टं श्रुतमसद्विद्धि ओतं प्रोत-
मसन्मयम् ते. बिं. ३।५४
दृष्टानुश्रविकविषयवैतृष्ण्यं...स
वैराग्यसन्न्यासी १सं.सो. २।१३
दृष्टिपूतंन्यसेत्पादंवस्त्रपूतं
पिबेज्जलम्। सत्यपूता वदे-
द्वाचं मनःपूतं समाचरेत् भवसं. ५।१०
दृष्टिरेषा हि परमा स देहादेहयोः
क्षमा। मुक्तयोः सम्भवस्येषा
तुर्यातीतपदाभिधा अ. पू. १।२५
(तस्मात्) दृष्टिविषां नारीं दूरतः
परिवर्जयेत् ना. प. ६।३७
दृष्टिस्तत्रैव कर्तव्या न नासाग्रवर्तिनी म. वा. र. १
दृष्टिं ज्ञानमयीं कृत्वा पश्येद्ब्रह्म-
मयं जगत् ते. बिं. १।२९
दृष्टिः स्थिरा यस्य विनासदृश्यं वायुः
स्थिरो यस्य विनाप्रयत्नम्। चित्तं
स्थिरं यस्य विनावलम्बं स ब्रह्म-
तारान्तरनादरूपः ना. बिं. ५६
दृष्टिः स्थिरा यस्य विनैव दृश्यात् अमन. २।४३
दृष्टे सर्वगते बोधे स्वयं ह्येषा
(अविद्या) विलीयते महो. ४।११५
दृष्टो विदिताविदितात्परः नृसिंहो. ९।१
दृष्ट्वा तु पाण्डवानीकं भ. गी. १।२
दृष्ट्वाऽद्भुतं रूपमिदं तवोग्रं भ.गी. ११।२०
दृष्ट्वा प्रदक्षिणां कुर्यात् (तुलसीम्) तुलस्यु. २
दृष्ट्वा रम्यमरम्यं वा स्थेयं पाषाण-
वत्सदा। एतावताऽऽत्मयत्नेन
जिता भवति संसृतिः अ. पू. ५।११८
दृष्ट्वा रूपं घोरमीदृङ्ममेदं भ.गी. ११।४९
दृष्ट्वा लोकाः प्रव्यथितास्तथाऽहम् भ.गी. ११।२३
दृष्ट्वा हि त्वां प्रव्यथितान्तरात्मा भ.गी. ११।२४
दृष्ट्वेदं मानुषं रूपं भ.गी. ११।५१
दृष्ट्वेमं स्वजनं कृष्ण भ. गी. १।२८
दृष्ट्वैव कालानलसन्निभानि भ.गी. ११।२५
दृष्ट्वैव गुरुमायान्तमुत्तिष्ठेद्दूरत-
स्त्वरम्। अनुज्ञातश्च गुरुणा.. शिवो. ।१७७
देव एकः कः स जगार भुवनस्य
गोपास्तंकापेयनाभिपश्यन्तिमर्त्याः छान्दो. ४।३।६
देव एकः स्वमावृणोति स नो दधातु
ब्रह्माव्ययम् श्वेता. ६।१०
देवकी ब्रह्मपुत्रा सा या वेदैरुपगीयते कृष्णोप. ६
देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते।
...त्वामहं शरणं गतः त्रि.म.ना. ७।१०
देवकृतस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा महाना. १४।१
देवजन इति देवजनविदः (उपासते) मुद्गलो. ३।२
देवता ऋषयः सर्वे ब्रह्माणमिदमब्रुवन्।
मृतस्य दीयते पिण्डं कथं
गृह्णन्त्यचेतसः पिण्डो. १
देवतासन्निधये वृत्तभानुमतीवर्णे-
मुद्धरेत् सूर्यता. ६।१
देवदत्तदिगम्बराष्टमहाशक्त्यष्टाङ्गधर लांगूलो. ८
देवदत्तस्य (वायोः) विप्रेन्द्र तन्द्रीकर्म
प्रकीर्तितम् जा.द. ४।३४
देवदत्तं धनञ्जयः भ. गी. १।१५
देवदत्तोऽहमित्येतद्विज्ञानं निरपेक्षकम् २ आत्मो. ७
देवदेव जगत्पते भ.गी. १०।१५
देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनं शौचमार्जवम् भ.गी. १७।१४
देवदेव महाप्राज्ञ...शुकस्य मम
पुत्रस्य.. ब्रह्मोपदेशकालोऽयं शु. र. १।३,४
देवपितृकर्माण्यारभमाणस्त्रयीनित्य-
मूर्ध्वपुण्ड्रं च कुर्यान्मन्त्रैः नारदो. १
देवपितृकर्माण्यारभमाणस्तयानित्य-
मूर्ध्वपुंड्रं विधयान्मन्त्रैः केशवादीनां कात्याय. १
देवपितृकार्याभ्यां न प्रमदितव्यम् तैत्ति. १।११।२

देवमनुष्याद्युपासनाकामसङ्कल्पो बन्धः निरालं. २१
देवयज्ञः पितृयज्ञो भूतयज्ञो
मनुष्ययज्ञ इति सहवै. १५
(अथ) देवरथस्तस्य वागुद्धिः १ ऐत. ३।८।६
देवर्षयो ब्रह्माणं सम्पूज्य प्रणिपत्य
पप्रच्छुः भगवन्नस्माकं.. शुकर. १।१
देवर्षि-दिव्य-मनुष्य- भूतपितृमात्रा-
त्मेत्यष्टश्राद्धानि कुर्यात् ना. प. ४।३८
देवर्षिर्नारदस्तथा भ.गी. १०।१३
देवर्षीणां च नारदः भ.गी. १०।२६
देवलोकमेव तामिर्जयति, दीप्यत इव
हि देवलोकः बृह. ३।१।८
देवलोकादादित्यमादित्याद्वैद्युतं(पतति) बृह. ६।२।१५
देवलोकेषु (नक्षत्रलोका ओताश्च
प्रोताश्च) गार्गीति बृह. ३।६।१
देवलोको ललाटं च षट्त्रिंशल्लक्ष-
योजनम् (विराट्स्वरूपस्य) गुह्यका. ९
देवलोको वै लोकानां श्रेष्ठस्तस्मा-
द्वियां प्रशंसन्ति बृह. १।५।१६
देवविद्यां ब्रह्मविद्यां भूतविद्यां....
एतद्भगवोऽध्येमि [छां.७।१।२+ ७।७।१
देवश्राद्धे ब्रह्मविष्णुमहेश्वरान्
ब्राह्मणानर्चयेत् ना. प. ४।३९
देवस्य इतीन्द्रो देवो द्योतत इति गायत्री. २
देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे चित्सु.१०।१
[ऐ.ब्रा.८।७।५वा.सं.१।२४+११।२८
[तै. सं. १।१।६।१+ अथर्व.+ १९।५१।२
देवस्य यस्यैव बलेन भूयः स्वं स्वं
हितं प्राप्य..मोदन्ते स्वे स्वे पदे.. हेरम्बो. ४
देवस्यैष महिमा तु लोके येनेदं
भ्राम्यते ब्रह्मचक्रम् श्वेताश्व. ६।१
देवहूरेका वाक्,शहूरेका,मित्रहूरेका संहितो. १।२
देवं स्वचित्तस्थमुपास्य पूर्वम् श्वेता. ६।५
देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् छांदो.३।१७।८
देवा अग्रे तदब्रुवन् चित्सु. १३।२
देवा अन्वविन्दन् गुहाहितम् चित्सु.११।१३
देवा अप्यस्य रूपस्य भ.गी.११।५२
देवा अदेवाः, वेदा अवेदाः (भवन्ति) बृह. ४।३।२२
देवा इति च ब्रह्मिवः... (जानन्ति) वैतव्य. २१
देवाग्निगुरुगोष्ठीषु...दक्षिणं
बाहुमुद्धरेत् शिवो. ७।६६
देवाग्निगुरुमित्राणां न व्रजेदन्त-
रेण तु शिवो. ७।६८
देवाग्र्यगारे तरुमूले गुहायां वसेद-
सक्तोऽलक्षितशीलवृत्तः शाट्याय. २१
देवा जायन्ते पुरुषोत्तमात् त्रि. वि. २
देवानामसि वह्नितमः पितॄणां
प्रथमा स्वधा प्रश्नो. २।८
देवानामस्मि वासवः भ.गी.१०।२२
देवानामेव महिमानं गत्वाऽऽदित्यस्य
सायुज्यं गच्छति [त्रिसुपं. ४+ महाना.१८।१
देवानां च ऋषीणां च पितॄणां स्वं
सदा प्रियें (या) तुलस्यु. १३
देवानां देवयजनं सर्वेषां भूतानां
ब्रह्मसदनम् जाबा. १।१
देवानां देवलक्ष्मीर्भवति नां.पू.ता. २।१
देवानां पूरयोध्या, तस्यां हिरण्मयः
कोशः स्वर्गो लोको ज्योतिषावृतः अरुणो. १
देवानां बन्धुं निहितं गुहासु चित्सु. ११।३
देवानां वसुधानीं विराजम् चित्सु. ११।४
देवानां वासवो भवति नां.उ.ता. ३।१
देवानां हृदयं ब्रह्मान्वविन्दत् चित्सु. ११।६
देवानु जायन्ते, देवानु जीवन्ति ग.शो. २।५
देवान् देवयजो यान्ति भ. गी. ७।२३
देवान्प्रपद्ये देवपुरं प्रपद्ये सहवै. २३
देवान् भावयताऽनेन भ. गी. ३।११
देवान्यक्षान्नागान् ब्रह्मन्मनुष्यान्
सर्वानाकर्षयति ग. शो. ५।२
देवान्ये यज्ञकर्मणा यजन्ति ते
देवलोकं... यान्ति सामर. २७
देवाः पितरो मनुष्या एत एव वागेव
देवा मनः पितरः प्राणो मनुष्याः बृह. १।५।६
देवा भस्म ऋषयो भस्म भस्मजा. १।४
देवा यज्ञमतन्वत [चित्सु.१२।३+ ऋ.म.८।९।१८
[=मं.१०।९०।६+ वा. सं.३१।१४
देवा यज्ञं तन्वानाः [चित्सु.१२।३ ऋ.म.८।९।१९
[=मं.१०।९०।१५+ वा.सं.३१।१५

देवार्चनस्नानशौचभिक्षादौ वर्ततां
वपुः । तारं जपतु वाक्तद्वत्पठत्वा-
म्नायमस्तकम् — अवधू. २४
देवा वा असुरा वा ते परा भविष्यन्ति — छान्दो. ८।८।४
देवाश्च मानुषाश्च श्रोत्रं वाव सम्पत् — छान्दो. ५।१।४
देवाश्चेति सन्धत्तां सर्वेभ्यो दुःख-
भयेभ्यः सन्तारयतीति
तारणात्तारः...संवि..न्तीति विष्णुः — अ. शिखो. २
देवासुरा संयत्ता आसन् — शौनको. १।१
देवासुरा ह वै य आत्मकामा ब्रह्मणो-
न्तिकं प्रयातास्तस्मै नमस्कृत्योचुः — मैत्रा. ७।१०
देवासुरा ह वै यत्र संयेतिर उभये
प्राजापत्यास्तद्ध देवा उद्गीथमाजह्नुः — छान्दो. १।२।१
देवास्तं परादुर्योऽन्यत्रात्मनो
देवान्वेदभूतानितंपरादुः[बृह.२।४।६ — +४।५।७
देवास्तेनाह९ सत्येन माऽविरोधिषि
ब्रह्मणेति — छान्दो.३।११।२
देवा ह वै समेत्य प्रजापतिमब्रुवन्... — कठश्रु. १२
देवा ह वै प्रजापतिमब्रुवन्...
प्रजापतिर्यस्मात्स्वमहिम्ना...
सर्वाणि भूतान्युद्गृह्णात्यजस्रं
सृजति...तस्मादुच्यते उग्रमिति
[नृ. पू. २।४+ — नृसिंहो.१।७+
देवा ह वै प्रजापतिमब्रुवन् का
सीता किं रूपमिति — सीतो. १
देवा ह वै भगवन्तमब्रुवन्नधीहि
भगवन्ब्रह्मविद्यां — कठरु. १
देवा ह वै मृत्योः पाप्मभ्यः
संसाराच्च बिभीयुः — नृ. पू. २।१
देवा ह वै रुद्रमब्रुवन् कथमेतस्योपासनं — गणेशो. ५।१
(ॐ) देवा ह वै सत्यं लोकमायन् — नृ. षट्च. १
देवा ह वै स्वर्गलोकमायन् — चतुर्वे. ८
देवा ह वै स्वर्गलोकमायंस्ते रुद्रम-
पृच्छन्को भवानिति — अ. शिरः. १
देवाः सद्विद्योपासका वैष्णवा
एवेति गुणातीताः... — तारसा. ७५
देवी ह्येकाग्र आसीत्सैव जगदण्ड-
मसृजत् — बह्वृचो. १

(सौः) देवीं वाचमजनयन्त
देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति — देव्यु. ७
[ऋ.अ. ६।७।५मं.८।१००।११ — सरस्व. २०
देवीं दुर्गां दिव्यरूपां नमामि — वनदु. २
देवीं ध्यायेत्तथा वृक्षे विष्णुरूपं च.. — २ बिल्वो.१९
देवेभ्यो लोकाः (विप्रतिष्ठन्ते) — कौ. स. ३।३
देवेषु ब्राह्मणोऽहं हि — २बिल्वो. २२
देवैरत्रापि विचिकित्सितं किल [कठो. — १।२१+१।२२
देवैरपि न लक्ष्येत योगिदेहो महाबलः — यो. शि. १।४१
देवो भूत्वा देवानप्येति [बृह.४।१।२, — ३,४,५,६,७
देवो भूत्वा देवानसृजन् — सुबालो. २।२
देवो मातरिश्वा स योऽस्माकं
भूत्यै...स्वाहा — पारमा. ३।३
देश इति च तद्विदः — वैतथ्य. २४
देशकालक्रियाशक्तिर्न यस्याः
सम्प्रकर्षणे । स्वस्वभावं विदित्वो-
च्चैरप्यनन्तपदे स्थिता — महो. ५।१२१
देशकालविमुक्तोऽस्मि दिगम्बर-
सुखोऽस्म्यहम् — मैत्रे. ३।१९
[ब्राह्ममिति च-]देशकालवस्तुपरि-
च्छेदराहित्यचिन्मात्रस्वरूपं ब्राह्मम् — निरालं. १०
देशतः कालतो वस्तुतः परिच्छेद-
रहितं ब्रह्म — त्रि.म.ना. १।३
देशदिगन्तरे च प्रत्यनुभूतं.. (मा.पा.) — प्रश्नो. ४।५
देशदिगन्तरैश्च प्रत्यनुभूतं पुनः पुनः
प्रत्यनुभवति दृष्टं चादृष्टं च..
सर्वं पश्यति सर्वः पश्यति — प्रश्नो. ४।५
देशाद्देशं गते चित्ते मध्ये यदेतयो
वपुः । अजाड्यसंविन्मननं
तन्मयो भव सर्वदा — महो. ५।४९
देशाद्देशान्तरप्राप्तौ संविदो मध्यमेव
यत् । निमिषेण चिदाकाशं तद्विद्धि — महो. ४।५९
देशे काले च पात्रे च — भ.गी. १७।२०
देशिकोक्तविधानेन.. बल्यदानं
ततः कुर्याद्भ्रातुर्व्यप्रियः सदा — सुमेधा. ६।२
देहकण्डूयनं कार्यं वंशकाष्ठीकवीरणैः — शिवो. ७।५६
देहजात्याविसम्बन्धान्वर्णाश्रमस-
मन्वितान् ।..पयसमिव त्यजेत् — म. वा. ५. १

देहत्रयमसद्विद्धि कालत्रयमसत्सदा।
गुणत्रयमसद्विद्धिह्यहं सत्यात्मकः.. ते. बिं. ३।४९
देहत्रयविहीनत्वात्कालत्रयवि-
वर्जनात् (नास्त्यनात्मा) ते. बिं. ५।१७
देहत्रयं स्थूलसूक्ष्मकारणानि विदुर्बुधाः वराहो.१।६
देहत्रयातिरिक्तोऽहं.. ब्रह्माहमिति
यस्यान्तः स जीवन्मुक्त उच्यते ते. बिं. ४।२
देहदेहिविभागैकपरित्यागेन भावना।
देहमात्रे हि विश्वासः सङ्गो
बन्धाय कथ्यते अ. पू. २।२
देहपतनपर्यंतं स्वरूपानुसन्धानेन वसेत् ना. प. ७।३
देहभावविहीनोऽस्मि चिन्ताहीनो-
ऽस्मि सर्वदा ते. बिं. ३।१४
देहमध्यगते व्योम्नि बाह्याकाशं
तु धारयेत्...धारणैषा परा
प्रोक्ता सर्वपापविशोधिनी जा. द. ८।१३
देहमध्यगतोवह्निर्वह्निमध्यगता द्युतिः।
जीवः परः परोजीवः सर्वं ब्रह्मेति.. वनदु.१७१-७३
देहमध्यं नवाङ्गुलं चतुरङ्गुलमुत्से-
धायतमण्डलाकृति। तन्मध्ये
नाभिः। तत्र.. चक्रं तच्चक्रमध्ये..
जीवो भ्रमति शांडि. १।४।४
देहमध्ये ब्रह्मनाडी सुषुम्ना सूर्यरूपिणी
..पूर्णचन्द्राभा वर्तते अद्वयता. २
देहमध्ये शिखिस्थानं तप्तजाम्बूनद-
प्रभम्। त्रिकोणं (मनुजानां तु सत्य-
मुक्तं हि सांकृते)द्विपदामन्यच्चतुरस्रं
चतुष्पदम् [त्रि. ब्रा. २।५६+ जा.द. ४।१,२
देहमध्ये शिखिस्थानं त्रिकोणं तप्त-
जाम्बूनदप्रभं मनुष्याणाम् शांडि. १।४।३
देहमात्रावशिष्टः..बालोन्मत्तपिशाचव-
देकाकी सञ्चरन्.. प्रणवात्मकत्वेन
देहत्यागं करोति यः सोऽवधूतः तुरीया. ३
देहमानं स्वांगुलिभिः षण्णवत्यङ्गुला-
यतम्। प्राणः शरीरादधिको
द्वादशाङ्गुलमानतः त्रि. ब्रा. २।५४
देहवद्भिरवाप्यते भ. गी. १२।५
देहवासनया मुक्तो देहधर्मैर्न लिप्यते महो. ४।६७
देहशून्यप्रमातृत्वनिमज्जनं बहिर्हरणम् भावनो. १०

देहस्थमनिलं देहसमुद्भूतेन वह्निना।
न्यूनं समं वा योगेन कुर्वन्
ब्रह्मविदिष्यते त्रि. ब्रा. २।५५
देहस्थः सकलो ज्ञेयो निष्कलो
देहवर्जितः ब्र. वि. ३३
देहस्य पञ्च दोषा भवंति कामक्रोध-
निःश्वासभयनिद्राः मं. ब्रा. १।२
देहस्यापि प्रपञ्चत्वात्प्रारब्धा-
वस्थितिः कुतः ना. बिं. २८
देहस्योन्नयनादिकमुदानकर्म शाण्डि. १।४।९
देहं विष्णवालयं प्रोक्तं सिद्धिदं
सर्वदेहिनाम् यो. शि. ५।४
देहं शिवालयं प्रोक्तं यो.शि. १।१६८
देहातीतमवाप्यमेकमपरं तत्त्वं बुधैः
सेव्यताम् अमन.२।१०७
देहातीतं तु तं विद्यान्नासाग्रे
द्वादशाङ्गुलम्। तदन्तं तं विजा-
नीयात्तत्रस्थो व्यापयेद्विभुः ब्र. वि. ४३
देहात्प्रकाशते तद्धृतत्त्वं देहविनाशकम् अमन. २।१७
देहात्मज्ञानवज्ज्ञानं देहात्मज्ञान-
बाधकम्। आत्मन्येव भवेद्यस्य
स नेच्छन्नपि मुच्यते वराहो. २।१५
देहात्मभावो नैवेष्टः प्रारब्धं त्यजताम् अध्यात्मो. ५६
देहात्मत्वविपर्यासं न कदाचिद्व्रजाम्यहं १ अवधू. १७
देहादन्यः परोऽस्म्यहम् महो. ४।१२७
देहादिरहितोऽस्म्यहम् मैत्रे. ३।८
देहादीनात्मत्वेनाभिमन्यते सोऽभि-
मान आत्मनो बन्धुः म. वा. १. २
देहादीनामसत्त्वात्तु यथा स्वप्ने
विबोधतः। कर्म जन्मान्तरीयं
यत्प्रारब्धमिति कीर्तितम् ना. बिं. २३
देहादुत्क्रमणं चास्मात्पुनर्गर्भेचसम्भवम् भवसं. १।५
[परमात्मेति च] देहादेः परतत्त्वा-
द्ब्रह्मैव परमात्मा निरालं. ९
देहाद्विमुच्यमानस्य किमत्र परि-
शिष्यत एतद्वैतत् कठो. ५।४
देहान्ते किं भवेज्जन्म तन्न जानंति
मानवाः। तस्माज्ज्ञाने च वैराग्यं
जीवस्य केवलं श्रमः यो.शि. १।३२

देहान्ते ज्ञानिभिः पुण्यात्पापाच्च फलमाप्यते । ईदृशं तु भवेत्तत्तु भुक्त्वा ज्ञानी पुनर्भवेत् — यो. शि. १।४९
देहान्ते वैकुण्ठमवाप्नोति — तुलस्यु. १८
देहाभावाज्जरा न च — ते. बिं. ५।१९
देहाभिमाने गलिते विज्ञाते परमात्मनि। यत्रयत्रमनोयातितत्रतत्र परामृतं — सरस्व. ५५
देहावभासकः साक्षी देहनाशे न नश्यति — आ. प्र. १९
देहावसानसमये चित्ते यद्यद्विभावयेत्। तत्तदेव भवेज्जीव इत्येवं जन्मकारणम् — यो. शि. १।३१
देहेदेहविभागैकपरित्यागेन भावना। देहमात्रे हि विश्वासः सङ्कोबन्धाय कथ्यते — अ. पू. २।२
देहिनां सा स्वभावजा — भ.गी. १७।२
देहिनो देहमायान्ति न यावन्मंत्रनायकः। तावत्पापानि गर्जति.. — सि. शि. १९
देहिनोऽस्मिन्यथा देहे — भ.गी. २।१३
देही (अन्तरात्मा) चात्यन्तनिर्मलः — जा. द. १।२१
देही देहसमुद्भवान् — भ.गी. १४।२०
देही नित्यमवध्योऽयं — भ. गी. २।३०
देहीव दृश्यते लोके (योगी) दग्धकर्पूरवत्स्वयम् — यो.शि. १।५८
देहे ज्ञानेन दीपिते बुद्धिरखण्डाकाररूपा यदा भवति तदा विद्वान्ब्रह्मज्ञानाग्निना कर्मबन्धं निर्दहेत् — पैङ्गलो. ४।११
देहे देहभृतां वर — भ. गी. ८।४
देहे देहिनमव्ययम् — भ. गी. १४।५
[ज्ञानमिति च--]देहेन्द्रियनिग्रहसद्गुरूपासन-श्रवण-मनन-निदिध्यासनैर्यद्यद्दृग्दृश्यस्वरूपं..विकारेषु चैतन्यं विना किञ्चिन्नास्तीति साक्षात्कारानुभवो ज्ञानम् — निरालं. १९
देहेन्द्रियेषु वैराग्यं यम इत्युच्यते बुधैः — त्रि. ब्रा. २।२८
देहेन्द्रियेष्वहम्भाव इदंभावस्तदन्तिके। यस्य नो भवतः क्वापि स जीवन्मुक्त इष्यते — अध्यात्मो. ४५
देहे यावदहम्भावो दृश्येऽस्मिन्यावदात्मता। यावन्ममेदमित्यास्था तावच्चित्तादिविभ्रमः — अ. पू. ५।११
देहे लब्धाशान्तिपदं गते तदा प्रभामनो बुद्धिशून्यं भवति — पैङ्गलो. ४।९
देहे सर्वस्य भारत — भ. गी. २।३०
देहेऽस्मिञ्जीवः प्राणारूढो भवेत् — शाण्डि. १।४।४
देहेऽस्मिन् पुरुषः परः — भ.गी. १३।२२
देहेऽस्मिन्मधुसूदन — भ. गी. ८।२
देहो देवालयः प्रोक्तः स जीवः केवलः शिवः। त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहंभावेन पूजयेत् [मैत्रे. उ. २।१+ — स्कन्दो. १०
देहो नवरत्नद्वीपः — भावनो. २
(तर्हि) देहो ब्राह्मण इतिचेत्तन्न, आचाण्डालादिपर्यन्तानां मनुष्याणां पाञ्चभौतिकत्वेन देहस्यैकरूपत्वात् — व. सू. ४
देहोऽयमिति या बुद्धिस्तृष्णा दोषामयः किल — ते. बिं. ५।९६
देहोऽहमिति दुःखं चेद्ब्रह्माहमिति निश्चयः — ते. बिं. ६।१००
देहोऽहमिति यज्ज्ञानं तदसद्भावमेव च — ते. बिं. ५।९३
देहोऽहमिति यज्ज्ञानं तदेव दूतम् — ते. बिं. ५।९४
देहोऽहमिति यज्ज्ञानं तदेवाज्ञानम्... — ते. बिं. ५।९३
देहोऽहमिति यज्ज्ञानं तदेव नरकं... — ते. बिं. ५।९१
देहोऽहमिति या बुद्धिः सा चाविद्या — ते. बिं. ५।९५
देहोऽहमिति सङ्कल्पस्तदुःखम् — ते. बिं. ५।९१
देहोऽहमिति सङ्कल्पः सत्यजीवः सः — ते. बिं. ५।९४
देहोऽहमिति सङ्कल्पस्तद्बन्धम् — ते. बिं. ५।९०
देहोऽहमिति सङ्कल्पो जगत्सर्वम् — ते. बिं. ५।९२
देहोऽहमिति सङ्कल्पो महत्संसारः — ते. बिं. ५।९०
देहोऽहमिति संकल्पो महापापम् — ते. बिं. ५।९६
देहोऽहमितिसङ्कल्पो हृदयग्रन्थिरीरितः — ते. बिं. ५।९२
दैत्यैर्जालं राक्षसैश्च त्रिलोहं (लिङ्गं पूजितं) — सि. शि. २३
दैन्यदोषमयी दीर्घा वर्धते वार्धके स्पृहा। सर्वापदामेकसखी हृदि दाहप्रदायिनी — महो. ३।३६

दैन्यभावात्तु भूतानां सौभगाय
 यतिश्चरेत्। पक्वं वा यदि वाऽपक्वं
 याचमानो व्रजेदधः सं. सो. २।९४
दैव असुरा एव च भ. गी. १६।६
दैवमेवापरे यज्ञं भ. गी. ४।२५
दैवं चैवात्र पंचमम् भ.गी.१८।१४
दैवाधीनं जगदिदम्, तद्दैवं.. रुद्रोप. ३
दैवी मेधा सरस्वती महाना. १३।४
दैवीमावृतमावर्त आदित्यस्यावृत-
 मन्वावर्तयति.. बाहुमन्वावर्तते कौ. ब्र.२।८,९
दैवी सम्पद्विमोक्षाय भ. गी. १६।५
दैवी ह्येषा गुणमयी भ. गी. ७।१४
दैवीं प्रकृतिमाश्रिताः भ. गी. ९।१३
दैवी स्वस्तिरस्तु नः [चित्यु.शां. [ऋ.खि. १०।१९१।५
दैवेन नीयते देहो तथा कालोपभुक्तिषु २ आत्मो. १९
(स होवाच) दैवेषु वै गौतम
 तद्द्वारेषु मानुषाणां ब्रूहीति बृह. ६।२।६
दैवो विस्तरशः प्रोक्तः भ. गी. १६।६
दोषैरेतैः कुलघ्नानां भ. गी. १।४३
द्या (म्) मेष भूयोपगतो विमनः बा. मं. १
द्यावापृथिव्योरनारम्भमिव नोपयान्ति... आर्षे. ३।१
द्यावापृथिव्योरिदमन्तरं हि भ.गी. ११।२०
द्यावापृथिव्योर्हिरण्मय९सं९स्कृत९सुवः महाना. ६।६
द्यावापृथिव्यौ समधातामित्युताप्याहुः... २ऐत. १।२।१
द्युमत्किरीटमभयं...हिरण्मयं सौम्य-
 तनुं स्वभक्तायाभयप्रदम् गोपालो. २।२३
द्युम्नोदास्त्वमसि चन्द्रमसः महाना.१७।१५
द्युलोक९ शस्यया (जयति) बृह. ३।१।१०
द्यूतं छलयतामस्मि भ. गी.१०।३६
द्यौरध्वर्युः चित्यु. २।१
द्यौरस्य होता सोऽत्राधृष्यः चित्यु. ७।४
द्यौर्हास्मै वृष्टिमन्नाद्यं सम्प्रयच्छति १ ऐत. १।७।४
द्यौरस्य होता । सोऽनाधृष्यः चित्यु. ७।३
द्यौरेवोदन्तरिक्षं गीः पृथिवी थम् छान्दो. १।३।७
द्यौर्नः पिता पितृयाच्छंभवासि सहवै. १०
द्यौर्हिङ्कार आदित्यः प्रस्तावोऽन्तरिक्ष-
 मुद्गीथोऽग्निः प्रतिहारः पृथिवी
 निधनम् छान्दो.२।२।२

द्यौः पृष्ठमन्तरिक्षमुदरं पृथिवी
 पाजस्यम् (मेध्याश्वस्य) बृह. १।१।१
द्यौः पृष्ठमन्तरिक्षमुदरमियमुरः बृह. १।२।३
द्यौः कमला समस्ताः सा मे गृहे..
 पुष्टिं स्वाहा पारमा. ८।८
द्रक्ष्यस्यात्मन्यथो मयि भ.गी. ४।३५
द्रक्ष्याम्यहमिति चक्षुः श्रोष्याम्यह-
 मिति श्रोत्रमेवमन्यानि कर्माणि बृह. १।५।२१
द्रविणं९ (मे) सवर्चसं सुमेधा
 अमृतोक्षितः [तैत्ति. १।१०।१+ ना. प. ५।४४
द्रवीभावं गण्डशैलालभन्ते (गानेन) गान्धर्वो. ९
द्रव्यदर्शनसम्बन्धे याऽनुभूति-
 रनामया । तामवष्टभ्य तिष्ठ त्वं.. अ. पू. २।१८
द्रव्यनाशे तथोत्पत्तौ पालने च तथा
 नृणाम् । भवन्त्यनेकदुःखानि
 तथैवेष्टविपत्तिषु भवसं. १।२८
द्रव्यत्वमन्यभावो वा धर्माणां नोपपद्यते अ. शां. ५३
द्रव्यमन्त्रक्रियाकालयुक्तयः साधु-
 सिद्धिदाः । परमात्मपदप्राप्तौ
 नोपकुर्वन्ति काश्चन [अ.पू.४।६+ वराहो. ४।२९
द्रव्ययज्ञास्तपोयज्ञाः भ.गी. ४।२८
द्रव्यं कालं च चिन्मात्रं ज्ञानं ज्ञेयं
 चिदेव हि । ज्ञाता चिन्मयरूपश्च
 सर्वं चिन्मयमेव हि तें. बिं. २।२९
द्रव्यं द्रव्यस्य हेतुः स्यादन्यदन्यस्य.., अ. शां. ५३
द्रव्यार्थमन्नवस्त्रार्थं यः प्रतिष्ठार्थमेव
 वा । सन्यसेदुभयभ्रष्टः स
 मुक्तिं नाप्तुमर्हति मैत्रे. २।२०
द्रष्टव्यमधिभूतमादित्यस्तत्राधिदैवतम् सुबालो. ५।१
द्रष्टव्यमेवाप्येति, यो द्रष्टव्यमेवास्तमेति सुबालो. ९।२
द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्या-
 सितव्यः [बृ. उ. २।४।५+ ४।५।६
द्रष्टव्यः सर्वसंहर्ता न मृत्युरवहेलया महो. ४।२२
द्रष्टा दृश्यवशाद्बद्धो दृश्याभावे विमु-
 च्यते । जगत्त्वमहमित्यादि-
 सर्गात्मा दृश्यमुच्यते महो. ४।४८
द्रष्टाद्रष्टुःसाक्ष्यविक्रियःसिद्धो निरवद्यः नृसिंहो. ९।७
द्रष्टा भवति श्रोता भवति...विज्ञाता
 भवत्यन्नमुपास्स्वेति छान्दो. ७।९।१

द्वादशत्रयोदशेन वद्विदेहं पित्राऽऽसं प्रवितद्विदेहं तन्म ऋतवोऽमर्त्य आरभध्वम् — कौ. त. १।२

द्वादशमात्रया इडया वायुमापूर्योदरे स्थितं....रेफबिन्दुयुक्तमग्निमण्डलयुतं ध्यायेद्रेचयेत्पिङ्गलया — शांडि. १।५।२

द्वादशमात्रोयोगस्तुकालतोनियमःस्मृतः — अ. ना. २४

द्वादशमासाः संवत्सरः — सहवै. १२

द्वादशरात्रस्यान्ते अग्नये वैश्वानराय ...प्राजापत्यं चरुं जुहुयात् — कठरु.२

द्वादशरात्रं पयोभक्षा स्यात् (सन्यासी) — कठरु. २

द्वादशरात्रीर्दीक्षितो भवति — सहवै. १२

द्वादशवर्षशुश्रूषापूर्वकं ब्रह्मचर्यम् — ना. प. १।१

द्वादशवर्षसत्रयागोपस्थिताः... शौनकादिमहर्षयः प्रत्युत्थानं कृत्वा.. — ना. प. १।१

द्वादशवर्षसेवापुरस्सरं सर्वविद्याभ्यासं कृत्वा...साधनचतुष्टयसम्पन्नः सन्न्यस्तुमर्हति — ना. प. २।१

द्वादशवैमासाःसंवत्सरस्यैत आदित्याः — बृह. ३।९।५

द्वादशसुपत्रेषुद्वादशाक्षरंवासुदेवंभवति — नृ. पू. ५।७

द्वादशाक्षरा वै जगती, जगत्या सम्मितं भवति — नृ. पू. ५।४

द्वादशाङ्गुलदैर्घ्यंच अम्बरं चतुरङ्गुलम् — योगकुं. १।११

द्वादशाङ्गुलपर्यन्ते नासाग्रे विमलेऽम्बरे । संविदृशि प्रशाम्यन्त्यां प्राणस्पन्दो निरुध्यते — शाण्डि.१।७।३२

द्वादशादित्या रुद्राः सर्वा देवता जायन्ते पुरुषोत्तमात् — सि. वि. ४

द्वादशादित्यावलोकनम् — निर्वाणो. १

द्वादशान्तपदं स्थानम् (दक्षिणामूर्तेः) — द. मू. १६

(अथ) द्वादशारं द्वादशपत्रं चक्रं भवति (नारसिंहं) — नृ. पू. ५।४

द्वादशारं महाचक्रं हृदये चाप्यनाहतम् । तदेतत्पूर्णगिर्याख्यंपीठं.. — यो.शि.१।१७३

द्वादशारे महाचक्रे...तावज्जीवो भ्रमत्येवं यावत्तत्त्वं न विन्दति — यो. चू. १३

द्वादशार्कतेजस्त्रयोदशसौमसुख वीर हनुमन् — लांगूलो. ८

द्वादशाहलयेनापि भूचरत्वं हि सिद्ध्यति — अमन. १।६२

द्वादशीति भूम्यां तिष्ठति (कृष्णमूर्तिः) तां हि ये यजन्ति ते मृत्युं तरन्ति — गोपालो.१।२०

द्वादश्यां (मात्रायां) ब्रह्म शाश्वतम् — ना. बि. १६

द्वादश्यां शतमित्याहुः (भाद्रकृष्णे श्राद्धे कृते शतगुणं पुण्यं) — इतिहा. ९०

द्वापरस्य पश्चाद्वर्तते कलिः — राधोप. २।२

द्वापरादावृषीणामेकदेशो दोषयतीह चिंतामापेदे — २ प्रणवो. १९

द्वापरान्ते नारदो ब्रह्माणं प्रति जगाम, कथं भगवन्गां पर्यटन् कलिं सन्तरेयमिति — कलिसं. १

द्वाभ्यां (चिच्चिदाकाशाभ्यां) शून्यतरं विद्धि चिदाकाशं महामुने — म. वा. र. ५

द्वाभ्यां (शुक्रशोणिताभ्याम्) समेन नपुंसको भवति — निरुक्तो. १।३

द्वा मण्डला द्वास्तना बिम्बमेकं मुखं चाधस्त्रीणि गुहा सदनानि कामी कलां..विदित्वा.. — त्रि. म. ११

द्वारं नाशनमात्मनः — भ. गी.१६।२१

द्वाराणां नव सन्निरुद्ध्य मरुतं.. आत्मध्यानयुतः.. — यो. चू. १०७

द्वाविमावपि पन्थानौ ब्रह्मप्राप्तिकरौ शिवौ । सद्योमुक्तिप्रदश्चैकः क्रममुक्तिप्रदः परः — वराहो. ४।४२

द्वाविमौ न विरज्येते विपरीतेन कर्मणा । निरारम्भो गृहस्थश्च कार्यवांश्चैव भिक्षुकः — ना. प. ६।३६

द्वाविमौ पुरुषौ लोके — भ.गी.१५।१६

द्वाविंशति दिनानि स्यात्...प्राप्तासिद्धिर्भवेत्तस्य प्रापयेद्या जगत्स्थितिम् — अमन. १।६८

द्वासप्ततिसहस्राणि प्रतिनाडीषु तैतिलम् । छिद्यते ध्यानयोगेन.. — क्षुरिको. १७

द्वासप्ततिसहस्राणि स्थूलाः सूक्ष्माश्च नाडयः — त्रि. ब्रा.२।७५

द्वाविंशेन परमादित्याज्जयति तस्माक्नाद्विशोकम् — छान्दो.२।१०।५

द्वावेतौ पक्षौ अचरंचरन्तौ नाधुरं व्यधुनीतेयश्चैकंमुनक्तिमोक्तेत्स्वाहा पारमा. ४।२

द्वावेतौ ब्रह्मतां यातौ द्वावेतौ विगत-
स्वरौ । आपतत्सु यथाकालं
सुखदुःखेष्वनारतौ — महो. ६।४७

द्वावेव (भिक्षू) मिथुनं स्मृतम् — ना. प. ३।५६

द्वा सुपर्णा भवतो ब्रह्मणोऽहं सम्भूत-
स्तथेतरो भोक्ता भवति — गोपालो.१।११

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया [ऋ. अ. २।३।१७
[=मं.१।१६४।२०+ — मुण्ड. ३।१।१
[श्वेता. ४।६+ना.उ.ता.१।१+ — भवसं. २।२

द्विचन्द्रशुक्तिकारूप्यमृगतृष्णादि-
भेदतः । अभ्यासं प्राप्य जाग्रत्त-
त्स्वप्नो नानाविधो भवेत् — महो. ५।१५

द्विजो गर्भवासाद्विमुक्तोऽपि मुच्यते — अ. शिखो. ३

द्वितीयकारणाभावादनुत्पन्नमिदंजगत् — महो. ५।५८

द्वितीयमापो भवति (नारायणः) — ना.पू. ता.१।१

द्वितीयया चास्य विष्णोः कालतो
व्याप्तिरुच्यते — मुद्गलो. १।२

द्वितीयं तु नाभौ.. (पुंड्रं) द्वादशं
कण्ठपृष्ठे मोक्षं देहि शिरसि — ऊर्ध्वपुं. ६

द्वितीयं तृतीयं (पृच्छन्तं पुत्रं)
तꣳ होवाच मृत्यवे त्वा ददामीति — कठो. १।४

द्वितीयं यः पिबेद्यजुर्वेदः प्रीणातु — आचम. ४

द्वितीयं (गायत्रमक्षरं) वायव्यम् — सन्ध्यो. २१

द्वितीयं संशयाख्यं च (योगविघ्नं) — योगकुं. १।५९

द्वितीयं स्वाधिष्ठानचक्रं षड्दलं
तन्मध्ये.. लिङ्गं.. ध्यायेत् — सौभाग्य. २५

द्वितीयाद्वितीयवान् भवति — कौषी. ४।११

द्वितीया (मात्रा) द्वितीयस्य — नृसिंहो. ३।१

द्वितीयाद्वै भयं भवति — बृह. १।४।२

द्वितीयाऽन्तरिक्षं स उकारः स यजु-
र्भिर्यजुर्वेदो विष्णुरुद्रास्त्रिष्टुप्
दक्षिणाग्निः — अ. शिखो. १

द्वितीया भूतले हलाग्रे समुत्पन्ना
(महामाया) — सीतो. २

द्वितीयायां समुत्क्रान्तौ भवेद्यक्षो
महात्मवान् । विद्याधरस्तृतीयायां
गान्धर्वस्तु चतुर्थिका — ना. बिं. १३

द्वितीया विद्युमती कृष्णा विष्णुदैवत्या — अ. शिखो. १

द्वितीया स्वप्नं, तृतीया सुषुप्तिश्चतुर्थी
तुरीयं मात्रा — अ. शिखो. ३

द्वितीयां च तृतीयां च भूमिकां
प्राप्नुयात्ततः — अक्ष्युप. ३१

द्वितीयां (महद्वृक्षस्य शाखां)
जहात्यथ सा शुष्यति — छान्दो.६।११।२

द्वितीये (हृदन्तर्भूते) नादे
गात्रभञ्जनम् — हंसो. ८

द्वितीये धामनि पूर्वेणैव मनुना
बिन्दुहीना शक्तिभूतहृल्लेखा
क्रोधमुनिनाधिष्ठिता — त्रि. ता. १।१६

द्वितीयेन तु पिण्डेन मांसत्व-
क्शोणितोद्भवः — पिंडो. ४

द्वितीये पूर्वाम्नायो गोवर्धनमठः .. — मठाम्ना. ४

द्वितीये गोपीक्रीडास्थानम् — राधोप. २।१

द्वितीयोऽन्तरिक्षं स उकारः स
यजुर्भिर्यजुर्वेदो विष्णुरुद्रास्त्रिष्टुप्
दक्षिणाग्निः सा साम्नो द्वितीयः
पादो भवति — नृ. पू. २।१

द्वितीयो (धर्मस्कन्धो) ब्रह्मचार्या-
चार्यकुलवासी — छांदो.२।२३।१

द्वितीयो मकार एवं द्विवर्ण एकाक्षर
ओमित्योङ्कारो निर्वृत्तः — २ प्रणवो. १६

द्विधर्मोन्धं तेजसेन्धं सर्वं पश्यन्पश्यति — मैत्रा. ६।२५

द्विधा त्रिधा वृद्धिस्त्वं शान्तिस्त्वं
पुष्टिस्त्वं....सर्वमसर्वम् — अ. शिरः ३।१

द्विधाभूतं वदेच्छिन्नं भिन्नं च
बहुधा स्थितम् — शिवो. ७।८३

द्विधा वा एष आत्मानं बिभर्ति — मैत्रा. ६।१

द्विप्रकारं ध्यानम् । समाधिस्त्वेकरूपः — शांडि. १।१।२

द्विप्रकारमसंसर्गं तस्य भेदमिमं शृणु — अक्ष्युप. २३

द्विभुजं ज्ञानमुद्राढ्यं वनमालिन-
मीश्वरम् ।...चिन्तयंश्चेतसा
कृष्णं मुक्तो भवति संसृतेः — गो.पू.१।५-७

द्विभुजं स्वर्णरुचिरतनुं पद्मनिभेक्षणम्
(भकारं समुद्धृत्य भरताय नमः) — रामर. २।१००

द्विभुजं स्वर्णवर्णाभं रामसेवापरायणम् ।
मौञ्जीकौपीनसहितं सुमित्रा-
तनयं भजे — रामर. २।१०४

द्विभुजं स्वर्णवर्णाभं...मां (मारुतिं)
ध्यायेद्रामसेवकम् रामर. २।१०६
द्विमासाभ्यन्तरे शिरः सम्पद्यते निरुक्तो. १।४
द्विवक्त्रं तु मुनिश्रेष्ठ चार्धनारीश्वरात्मकम् । धारणादर्धनारीशः प्रीतये
तस्य नित्यशः रु. जा. २५
द्विविधश्चित्तनाशोऽस्ति सरूपोऽरूप
एव च । जीवन्मु-(क्तौ)क्तः
सरूपः स्यादरूपो देहमुक्तिगः
[अ. पू. ४।१४+ मुक्तिको. २।३२
द्विविधा तैजसी वृत्तिः सूर्यात्मा
चानलात्मिका । तथैव रसशक्तिश्च
सोमात्मा चानलात्मिका बृ. जा. २।३
द्विविधाः सिद्धयो लोके कल्पिता-
कल्पितास्तथा यो.शि. १।१५१
द्विविधोऽयमसंसर्गः सामान्यः श्रेष्ठ
एव च अक्ष्युप. २३
द्विविधो वासनाव्यूहः शुभश्चैवाशुभश्च मुक्तिको. २।३
द्विषडारेण प्रधिनैकचक्रः बा. मं. १६
द्विषन्तं मम (मह्यं) रन्धयन्मोऽअहं
द्विषतो रथम् सूर्यता. २।१
द्विसप्ततिसहस्राणि (नाड्यः)
तासां मुख्याश्चतुर्दश जा. द. ४।६
द्विसप्ततिसहस्राणि नाडीद्वाराणि पञ्जरे यो. शि. ६।१७
द्विसप्ततिसहस्राणि नाडीभित्त्वा
तु मूर्धनि १ प्रणवो. ११
द्विसप्ततिसहस्राणि नाडीमार्गेषु वर्तते ध्या. बिं. ९८
द्विसप्ततिसहस्राणि नाडीं भित्वा
च मूर्धनि । वरदः (वायुः)
सर्वभूतानां सर्वं व्याप्यावतिष्ठति ब्र. वि. ११
द्विसप्ततिसहस्राणि नाड्यः स्युर्वायु-
गोचराः यो. शि. ६।१४
द्विसप्तरात्रादर्बुदः, पञ्चविंशति-
रात्रस्थितो (शुक्रशोणितबिन्दुः)
..घनो भवति निरुक्तो. १।४
द्विसंख्यावानहं न च । सदसद्देवहीनो-
ऽस्मि सङ्कल्परहितोऽस्म्यहम् मैत्रा. ३।७
द्विस्वरं त्रिस्वरं वापि...स्वराणां
सप्तकं वापि बिभृयात्कण्ठदेशतः रु. जा. ७. १७

द्विस्तावत्पश्चादुदेता पुरस्तादस्तमेता-
ऽऽदित्यानामेव तावदाधिपत्य९
स्वाराज्यं पर्येता छान्दो. ३।८।४
द्विस्तावद्दक्षिणत उदेतोत्तरतोऽस्तमेता
रुद्राणामेतावदाधिपत्य९ स्वाराज्यं
पर्येता छान्दो. ३।७।४
द्विस्तावदुत्तरत उदेता दक्षिणतोऽस्त-
मेता मरुतामेव...पर्येता छान्दो. ३।९।४
द्विस्तावदूर्ध्वमुदेतार्वागस्तमेता
साध्यानामेव..पर्येता छांदो. ३।१०।४
द्वे अक्षरे ब्रह्मपरे त्वनन्ते विद्याविद्ये
निहिते यत्र गूढे श्वेताश्व. ५।१
द्वे अहोरात्रे (ब्रह्मणः) एकं दिनं भवति त्रि.म.ना. ३।४
द्वे गुल्फे तु प्रकुर्वीत जङ्घे चैव त्रय-
स्त्रयः । द्वेजानुनीतथोरुभ्यां गुदे
शिश्ने त्रयस्त्रयः । वायोरायतनं
चात्र नाभिदेशे समाश्रयेत् क्षुरिको. ६,७
द्वे देवानभाजयत् बृह. १।५।१
(अथ) द्वे द्वे अक्षरे ताभ्यामुभयतो
दधार (प्रजापतिः) अव्यक्तो. ६
द्वे पदे बन्धमोक्षाय निर्ममेति ममेति
च । ममेति बध्यते जन्तुर्निर्ममेति
विमुच्यते [महो. ४।७२+ वराहो. २।४३
द्वे पदे बन्धमोक्षाय न ममेति
ममेति च पैङ्गलो. ४।१९
द्वे प्रतिष्ठे द्वे एते अक्षरे तस्योपनि-
षदहरिति हन्ति पाप्मानं जहाति
च य एवं वेद बृ.उ.५।५।३,४
द्वे बीजे चित्तवृक्षस्य प्राणस्पन्दन-
वासने । एकस्मिंश्च तयोः क्षीणे
क्षिप्रं द्वे अपि नश्यतः मुक्तिको. २।२७
द्वे बीजे चित्तवृक्षस्य वृत्तिव्रतति-
धारिणः । एकं प्राणपरिस्पन्दो
द्वितीयं दृढभावना [अ.पू.४।४१+ मुक्तिको. २।४८
द्वे (ब्रह्मणी हि मन्तव्ये) ब्रह्मणी
वेदितव्ये शब्दब्रह्म परं च यत् ।
शब्दब्रह्मणि निष्णातः परं ब्रह्मा-
धिगच्छति [मैत्रा. ६।२२+ त्रि.ता. ४।१७

द्वे वने स्तः कृष्णवनं भद्रवनम् गोपालो. १।१८
द्वे वाव खल्वेते ब्रह्मज्योतिषी रूपके शान्तमेकं समृद्धं चैकम् मैत्रा. ६।३६
द्वे वाव ब्रह्मणी अभिध्येये.. शब्दश्चाशब्दश्च मैत्रा. ६।२२
द्वे वाव ब्रह्मणो रूपे कालश्चाकालश्च मैत्रा. ६।१५
द्वे वाव ब्रह्मणो रूपे मूर्तं चामूर्तं च [बृह. २।३।१+ मैत्रा. ५।३
द्वे विद्ये वेदितव्ये इति स्म ह यद्ब्रह्मविदो वदन्ति परा चैवापरा च मुण्ड. १।१।४
द्वे विद्ये वेदितव्ये तु शब्दब्रह्म परं च यत् ब्र. विं. १७
द्वेविद्येवेदितव्येहिपराचैवापरा च ते रुद्रहृ. २८
द्वे वै विद्ये वेदितव्ये इति चाथर्वणी श्रुतिः भवसं. ३।२
द्वेषश्चाणूरमल्लोऽयं मत्सरो मुष्टिको जयः कृष्णो. १४
द्वेषोच्चाटनमारणादिकुहकैर्मन्त्रप्रपञ्चोद्भवैः।..तस्मात्तत्सकलं मनोविरचितं त्यक्त्वाऽमनस्कं भज अमन. १।७
द्वे सृती अशृणवं पितॄणामहं देवानामुत मर्त्यानाम् बृ. उ. ६।२।२
द्वैतभावविमुक्तोऽस्मि सच्चिदानंदलक्षणः। एवं भावय यत्नेन जीवन्मुक्तो भविष्यसि अ. पू. ५।६८
द्वैतस्याग्रहणं तुल्यमुभयोः प्राज्ञतुर्ययोः। बीजनिद्रायुतः प्राज्ञः सा च तुर्ये न विद्यते आगम. १३
द्वैतं यदि तदाऽद्वैतं द्वैताभावेद्वयंनच ते. बिं. ५।२७
द्वैताद्वैतमुभयं भवति आ. प्र. १
द्वैताद्वैतविहीनोऽस्मि द्वन्द्वहीनोस्मि सोऽस्म्यहम् मैत्रे. ३।४

द्वैताद्वैतसमुद्भूतैर्जगन्निर्माणलीलया। परमात्ममयी शक्तिरद्वैतैव विजृम्भते महो. ६।६२
द्वैताद्वैतसमुद्भेदैर्जरामरणविभ्रमैः। स्फुरत्यात्मभिरात्मैव चित्तैरब्धीव वीचिभिः अ.पू.२।४०,४१
द्वैताद्वैतस्वरूपात्माद्वैताद्वैतादिवर्जितः म. वा. र. १५
द्वैतासम्भवविज्ञानसंसिद्धाद्वयतारकम्। तारकं ब्रह्मेति गीतं.. [अद्वयता. शीर्षकं
द्वैतो भवति, अद्वैतो भवति ग. शो. २।२
द्वौ (देवौ) इत्योमिति होवाच बृह. ३।९।१
द्वौ क्रमौ चित्तनाशस्य योगो ज्ञानं मुनीश्वर। योगस्तद्वृत्तिरोधो हि ज्ञानं सम्यगवेक्षणम् शांडि. १।७।२४
द्वौ द्वादशकौ वर्गावितद्वै व्याकरणं धात्वर्थवचनं.. छन्दोवचनं च २ प्रणवो. १८
द्वौ बाणवन्तौ सपत्नातिव्याधिनौ हस्ते कृत्वोपोत्तिष्ठेत् बृह. ३।८।२
द्वौ भूतसर्गौ लोकेऽस्मिन् भ. गी.१६।६
(अथ) द्वौ वा एता अस्य पन्थानौ...व्यावर्तेते मैत्रा. ६।१
द्वौ वा मुख्यौ मुख्याधारौ समुखौ सानन्दौ सस्मेरौ... स्वाहा धारणा. ५।१
द्वौ वेदाननुब्रुवीत सर्वमायुरियादिति दध्योदनं पाचयित्वा सर्पिष्मन्तमश्नीयातामीश्वरौजनयितवै बृह. ६।४।१५
द्वौ सुपर्णौ शरीरेऽस्मिञ्जीवेशाख्यौ सहस्थितौ। तयोर्जीवः फलं भुङ्क्ते कर्मणो न महेश्वरः [रुद्रहृ. ४१+ अ. पू. ४।३२
द्व्यक्षरं च भवेन्मृत्युस्त्र्यक्षरं ब्रह्म शाश्वतम्। ममेति द्व्यक्षरं मृत्युस्त्र्यक्षरं न ममेति च शिवो.७।११५
द्व्यक्षरः शिवमंत्रोऽयं शिवोपनिषदि.. शिवो. १।१९

ध

धकारो धारणा, धियैव धार्यते भगवान्परमेश्वरः त्रि. ता. १।७
धनञ्जयस्य शोषादि कर्म प्रोक्तं हि सांकृते जा. द. ४।३३

धनदारेषु वृद्धेषु दुःखयुक्तं न तुष्टता। वृद्धायां मोहमायायां कः समाश्वासवानिह महो. ५।१६८
धनधान्यबहुरत्नवन्तो..बलवन्तो बहुपुत्रवन्त इति सूर्यता. १।७

धनमानमदान्विताः भ. गी.१६।१७
धनवाञ्ज्ञानाज्ज्ञानो भयातीतः
...सर्वेश्वरः सोऽहमिति ना. प. ९।२२
धनवृद्धा वयोवृद्धा विद्यावृद्धा-
स्तथैव च। ते सर्वे ज्ञानवृद्धस्य
किंकराः शिष्यकिङ्कराः मैत्रे. २।२४
धनार्थी मोदकैर्हुनेत् ग. पू. २।१३
धनुरुद्यम्य पाण्डवः भ. गी. १।२०
धनुर्गृहीत्वौपनिषदं महास्त्रं शरं
ह्युपासानिशितं सन्धयीत।
आयम्य तद्भावगतेन चेतसा
लक्ष्यं तदेवाक्षरं सोम्य विद्धि मुण्ड. २।२।३
धनुस्तारं शरो ह्यात्मा ब्रह्म तल्लक्ष्य-
मुच्यते। अप्रमत्तेन वेद्धव्यं शर-
वत्तन्मयो भवेत् रुद्रहृ. ३८
धनुः शरीरमोमित्येतच्छरः शिखा-
ऽस्य मनः मैत्रा. ६।२४
धनुः शार्ङ्गं स्वमाया च शरत्कालः
सुभोजनः कृष्णो. २३
धन्योऽहं धन्योऽहं कर्तव्यं मे न
विद्यते किञ्चित् १ अवधूतो.२९
धन्योऽहं धन्योऽहं तृप्तेर्मे कोपमा
भवेल्लोके १ अवधूतो.३०
धन्योऽहं धन्योऽहं दुःखं सांसा-
रिकं न वीक्षेऽद्य १अवधूतो.२८
धन्योऽहं धन्योऽहं धन्यो धन्यः पुनः
पुनर्धन्यः १ अवधूतो.३०
धन्योऽहं धन्योऽहं नित्यं स्वात्मान-
मञ्जसा वेद्मि १अवधू. २७
धन्योऽहं धन्योऽहं प्राप्तव्यं सर्वमत्र
सम्पन्नम् १ अवधूतो.२९
धन्योऽहं धन्योऽहं ब्रह्मानन्दो
विभाति मे स्पष्टम् १अवधू. २७
धन्योऽहं धन्योऽहं स्वस्याज्ञानं
पलायितं क्वापि १अवधू. २८
धराविवरमग्नानां कीटानां समतां गताः ...
धरो ध्रुवश्च सोमश्च कृपश्चैवानिलो-
ऽनलः। प्रत्यूषश्च प्रभासश्च वसवो-
ऽष्टावितीरिताः सू. जा.४।१७

धर्ता हर्ता विश्वरूपत्वमेति त्रिपुरो. १५
धर्म इति, धर्मेण सर्वमिदं परिगृहीतं
धर्मान्नातिदुष्करं तस्माद्धर्मे रमन्ते महाना.१६।१२
धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे भ. गी. १।१
धर्मज्ञानं राजसम् शारीरको. ९
धर्मधर्मित्ववार्ताचभेदेसतिहि विद्यते पा. ब्र. ३०
धर्ममार्गे चरित्रेण ज्ञानमार्गे च नामतः रा. पू. १।४
धर्ममेधमिमं प्राहुः समाधिं योगवित्तमाः अध्यात्मो. ३८
धर्मशास्त्रं महर्षीणामन्तःकरणसम्भृतम् सीतो. २०
धर्मसंस्थापनार्थाय भ. गी. ४।८
धर्मस्तेजोमयोऽमृतमयः पुरुषोऽयमेव
स योऽयमात्मेदममृतमिद ब्रह्मेदं सर्वम् बृह. २।५।११
धर्मस्यास्य परंतप भ.गी. ९।३
धर्मं चर स्वाध्यायान्मा प्रमदः तैत्ति.१।११।१
धर्मं चरति नाधर्मं...परं पश्यति माऽपरं इतिहा. ८
धर्मं चाधर्मं च सत्यं चानृतं च छान्दो.७।७।१
धर्मं तदेतत् क्षत्रस्य क्षत्रम् बृह. १।४।१४
धर्मं वा वदन्तं सत्यं वदतीति बृह.१।४।१४
धर्मः स्वधायां चरते ददाति इतिहा. ४४
धर्माधर्मसन्मयम्। लाभालाभावस-
द्धिद्धि जयाजयमसन्मयम् ते. बिं.३।९६
धर्माधर्मसंयमादतीतानागतज्ञानं शांडि.१।७।५२
धर्माधर्मं दहत्यभास्करममर्यादं
निरालोकमतः परं दहति सुबालो. १५।२
धर्माधर्मौ च तद्विदः वैतथ्य. २५
धर्माधर्मौ सुखं दुःखं तथा मरण-
जन्मनी। धिया येन सुसंत्यक्तं
स जीवन्मुक्त उच्यते महो. २।५६
धर्मान्न प्रमदितव्यम् तैत्ति. १।११।१
धर्मान्नातिदुष्करम् महाना. १६।१२
धर्मान्ये कुर्वन्तितइहसंसारेविचरन्ति सामर. २७
धर्मा य इति जायन्ते जायन्ते
ते न तत्त्वतः अ. शां. ५८
धर्मार्थकामकेयूरैर्दिव्यैर्दिव्यमयेरितैः।
कण्ठं तु निर्गुणं प्रोक्तं माल्यते
आद्ययाजया। माला निगद्यते गोपालो. २।३२
धर्मावहं पापनुदं भगेशं ज्ञात्वा-
त्मस्थममृतं विश्वधाम श्वेता. ६।६
धर्मावहां पापनुदां भगेशी गुह्यका. ६६

धर्माविरुद्धो भूतेषु भ. गी. ७।११
धर्मेण पापमपनुदति धर्मे सर्वं
प्रतिष्ठितं तस्माद्धर्मं परमं वदन्ति महाना. १७।६
धर्मेण सर्वमिदं परिगृहीतं
धर्मान्नातिदुष्करम् महाना.१६।१२
धर्मे नष्टे कुलं कृत्स्नम् भ. गी. १।४०
धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा महाना.१७।६
धर्मो नास्ति शुचिर्नास्ति सत्यंनास्ति
भयं न च त.विं. ५।२०
धर्म्यं संवादमावयोः भ गी.१८।७०
धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोऽन्यत् भ. गी. २।३१
धावयन्तु सर्वतः स्वाहा तै.उ. १।४
धाता विधाता कर्ता त्रिकर्ता दिव्यो
देव एको नारायणः सुबालो.६।१
धाता च सृष्टौ विष्णुश्च स्थितौ
रुद्रश्च नाशे भोगाय चन्द्र
इति प्रथमजा बभूवुः यो. चू. ७२
धाता ध्रुवसोमानिलानलप्रत्यूष-
प्रभासश्चतुर्थे सूर्यता. ५।१
धाता पुरस्ताद्यमुदाजहार
[महावा.२।+ चित्यु. १२।७ तै.आ. ३।१२।७
धाता ब्रह्मा प्रजापतिर्मघवा..
सर्वं नारायणः सुबालो. ६।१
धाता यथा पूर्वमकल्पयत् महाना.६।३
[ऋ.अ.८।८।४८=मं.१०।१९०।३ तै.आ.१०।१।१४
धाता वसूनां सुरभिः सृजानां ग. पू. १।१
धाता विधाता पवनः सुपर्णः एकाक्षरो. ६
धाताऽहं विश्वतोमुखः भ.गी.१०।३३
धातुबद्धं महारोगं पापमन्दिरमध्रुवम्
(देहं) विकाराकारविस्तीर्णं (मृतदेहं)
स्पृष्ट्वा स्नानं विधीयते मैत्रे. २।५
धातुः प्रसादान्महिमानमीशम्
[महाना. १०।१+ ना.उ.ता.१।३
धातूनां वर्धनेनैव प्रबोधो वर्धते तनौ।
दह्यन्ते सर्वपापानि.. वराहो. ५।४९
धात्रीफलप्रमाणं यच्छ्रेष्ठमेतत् (रुद्राक्षस्य) रु. जा. ६
धानारुह इव वृक्षोऽञ्जसा प्रेत्यसम्भवः बृह. ३।९।३२
धामत्रयं नियन्तारं धामत्रयसमन्वितम् पं. ब्र. ८
धामानि वेद भुवनानि विश्वा महाना.२।५
[ऋ.अ.८।३।१७= मं. १०।८२।३+
[अथर्व. २।१।३+वा.सं.१७।२७ तै.आ.१०।१।४
धारणं (लिंगस्य) देहे कैवल्यस्वरूपम् लिङ्गोप. २
धारणं देहे प्रणवस्वरूपम् लिङ्गोप. २
धारणं देहे ब्रह्मस्वरूपम् लिङ्गोप. २
धारणं देहे वेदस्वरूपम् लिङ्गोप. २
धारणं धर्मशास्त्राणां विज्ञानं विजने रतिः आयुर्वे. १६
धारणात्तस्य सूत्रस्य नोच्छिष्टो
नाशुचिर्भवेत् ब्रह्मो. १०
धारणाद्वादश प्रोक्तं ध्यानं योग-
विशारदैः । ध्यानद्वादशकेनैव
समाधिरभिधीयते यो.चू. ११२
धारणादेव मरुतस्तत्तदारोग्यमश्नुते त्रि.ब्रा. ११२
धारणाभिर्मनोधैर्यं याति चैतन्य-
मद्भुतम् । समाधौ मोक्षमाप्नोति
त्यक्त्वा कर्म शुभाशुभम्. यो. चू. ११०
धारणाभिश्च किल्बिषम् (दहेत्) योगो. २७
(अथ) धारणा—सा त्रिविधा, आत्मनि
मनोधारणं, दहराकाशे बाह्याकाश-
धारणं पृथिव्यप्तेजोवाय्वा-
काशेषु पञ्चमूर्तिधारणं च शांडि.१।८।२
धारणां धारयेद्योगी योगो. २७
धारयन्नचलं स्थिरः भ. गी. ६।१३
धारयन्नासिकामध्यं तर्जनीभ्यां
विना दृढम् योगकुं. १।२६
धारयाम्यहमोजसा भ. गी.१५।१३
धारयित्वा प्रयत्नेन स्वकर्म यथोदितं आत्मो. २
धारयेत्पादुके नित्यं...पर्यटे-
दाश्रमाद्बहिः शिवो. ७।४६
धारयेत्पूरितं विद्वान् प्रणवं सञ्जपन्
वशी । उकारमूर्तिं सन्ध्यायन् जा. द. ५।८
धारयेन्मनसा प्राणं सन्ध्याकालेषु
वा सदा । सर्वरोगविनिर्मुक्तः.. शांडि. १।७।४४
धाराभ्य इव चातकः(मनोविरमति) महो. २।११
धार्तराष्ट्रस्य दुर्बुद्धेः भ. गी. १।२३
धार्तराष्ट्रा रणे हन्युः भ. गी. १।४६
धार्तराष्ट्रान् कपिध्वजः भ. गी. १।२०
धार्तराष्ट्रान् स्वबान्धवान् भ.गी. १।३७

धार्मिको ब्राह्मण इति चेत्, न;
क्षत्रियादयो हिरण्यदातारो
बहवः संति — व. सू. ८
धिगनीशार्चनं जन्म — बृ. जा. ५।१७
धिग्राममशिवालयम् — बृ. जा. ५।१७
धिग्भस्मरहितं भालं — बृ. जा. ५।१७
धिग्विद्यामशिवाश्रयाम् — बृ. जा. ५।१७
धिय इत्यन्तरात्मा परः — गायत्रीर. २
धियायेनपरित्यक्ताः(शंकाः)सजीवन्मुक्तः म.वा.र. ८
धियैव धार्यते भगवान्परमेश्वरः — त्रि. ता. १।७
धियो यो नः प्रचोदयात्
[ऋ. अ. ३।४।१०= — मं.३।६२।१०
[वा. सं. ३।३५+ — साम. २।८।१२
धियो यो नः प्रचोदयात्
परो रजसे सावदोम् — त्रि. ता. १।१
(अथ) धियो यो नः प्रचोदया-
दिति, बुद्धयो वै धियस्ता यो-
ऽस्माकं प्रचोदयादित्याहुर्ब्रह्म-
वादिनोऽथ भर्ग इति — मैत्रा. ६।७
धियो यो नः प्रचोदयान्मधुमान्नो
वनस्पतिर्मधुमाँ३ अस्तुसूर्यः स्वस्स्वाहा बृह. ६।३।६
धियो यो नो जाते प्रचुर्यः या
प्रचोदयाग्निके..हुं फट् स्वाहा — सावित्र्यु. १२
धियो विज्ञातव्यं कामान्मे त्वयि
दधानीति पिता — कौ. त. २।१५
धियो विज्ञातव्यं कामांस्ते मयि दध
इति पुत्रः — कौ. त.२।१५
धीमहीत्यन्तरात्मा — गायत्रीर. २
धीरधीरुदितानन्दः पेशलः पुण्यकीर्तनः।
प्राज्ञः प्रसन्नमधुरो दैन्यादपगताशयः अ. पू. २।३१
धीरस्तत्र न मुह्यति — भ. गी.२।१३
धीरा अमृतत्वंविदित्वा ध्रुवमध्रुवेष्विह
न प्रार्थयन्ते — कठो. ४।२
धीराः प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवन्ति केनो.१।२+२।५
धीरो न शोचति — कठो. ६।६
धीरोऽप्यतिबहुज्ञोऽपि कुलजोऽपि
महानपि। तृष्णया बध्यते जन्तुः
सिंहः शृङ्खलया यथा — महो. ५।८७
धीरो हर्षशोकौ जहाति — कठो. २।१२

धीविक्रियासहस्राणां साक्षिणं (रामं) मुक्तिको.१।२
धूपश्च गुग्गुलुर्देयः प्राणायामसमुद्भवः शिवो. १।२७
(अथ) धूमगन्धं प्रजिघ्रायाज्य-
लेपेनाङ्गान्यनुविमृज्य.. — कौ. त.२।३,४
धूममार्गविसृतं...लोकानसृजत् — गोपीचं. २७
धूमाद्रात्रिं, रात्रेरपरपक्षमपरपक्षा-
द्यान्षड्दक्षिणैति — छांदो.५।१०।३
धूमाद्रात्रिं, रात्रेरपक्षीयमाणपक्षमप-
क्षीयमाणपक्षाद्यान् षण्मासान्
दक्षिणादित्य एति — बृह. ६।२।१६
(अथ) धूमार्चिर्विस्फुलिङ्गा इवाभेश्च मैत्रा. ६।३१
धूमेनाग्निरिवावृताः — भ.गी. १८।४८
धूमेनाव्रियते वह्निः — भ.गी. ३।३८
धूमो जायते स प्रस्तावो ज्वलति स
उद्गीथोऽङ्गारा भवन्ति — छांदो.२।१२।१
धूमो भूत्वाऽभ्रं भवति — छांदो.५।१०।५
धूमो रात्रिस्तथा कृष्णः — भ.गी.८।२५
धूर्धुराणां धूरसि धूर्वङ्क मे स्वाहा पारमा. ६।९
धूर्नो वहन्तां रतये रमन्तां...गुप्त्यै स्वाहा पारमा. ८।३
धृतिर्दीक्षा, सन्तोषश्च बुद्धीन्द्रियाणि
यज्ञपात्राणि...आहारपरिमाणात् गर्भो. ११
धृतिर्नामार्थहानौ..सर्वत्र चेतस्स्थापनम् शाण्डि.१।१।२
धृतिर्मैत्री मनस्तुष्टिर्मृदुता मृदुभाषिता।
हेयोपादेयनिर्मुक्तेज्ञेतिष्ठन्त्यपवासनम् महो. ६।३०
धृतिं न विन्दामि शमं च विष्णो भ.गी.११।२४
धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं...दशकं
धर्मलक्षणं [ना. प. ३।२४+ — अवसं. ४।१२
धृतिः सा तामसी मता — भ.गी.१८।३५
धृतिः सा पार्थ राजसी — भ.गी.१८।३४
धृतिः सा पार्थ सात्त्विकी — भ.गी.१८।३३
धृत्याऽऽत्मानं नियम्य च — भ.गी.१८।५१
धृत्या धारयतेऽर्जुन — भ.गी.१८।३४
धृत्या यया धारयते — भ.गी.१८।३३
धृत्युत्साहसमन्वितः — भ.गी.१८।२६
धृष्टकेतुश्चेकितानः — भ. गी. १।५
धृष्टद्युम्नो विराटश्च — भ. गी.१।१७
धेनूनामस्मि कामधुक् — भ.गी.१०।२८
धैर्यकन्था, उदासीनकौपीनम् — निर्वाणो. २

ध्यायन्नास्ते मुनिश्चैवमासुप्तेरामृतेस्तु यः। जीवन्मुक्तः स विज्ञेयः स धन्यः कृतकृत्यवान्	योगकुं. ३।३३
ध्यायंश्चतुर्भुजाकारं चतुर्वक्त्रं हिरण्मयम्। धारयेत्पञ्च घटिकाः पृथिवीजयमाप्नुयात्	१यो.त.८६
ध्यायेदसिपदं सदा	शु. र. २।७
ध्यायेदेव तन्महो भ्राजमानं	शु. र. २।५
ध्यायेद्दृश्यानुविद्धोऽयं समाधिः सविकल्पकः	सरस्व. ५१
ध्यायेन्मनसि मां नित्यं वेणुशृङ्गधरं तु वा। मथ्यते तु जगत्सर्वं ब्रह्मज्ञानेन येन वा	गोपालो. २।२४
ध्येयहीनोऽस्मि सोऽस्म्यहम्	मैत्रा. ३।११
ध्येया सर्वस्य लोकस्य	गुह्यका.५०
ध्येयैकगोचरं चित्तं समाधिर्भवति	पैङ्गलो.३।२
ध्रुवस्त्वमसि ध्रुवस्य क्षितमसि	सहवै. २३
ध्रुवस्य प्रचलनं व्रश्चनं वातरज्जूनां	मैत्रा. १।८
ध्रुवं जन्म मृतस्य च	भ. गी. २।२७
ध्रुवं स्तिमितगम्भीरं न तेजो न तमस्ततम्	मैत्रा. ११५
ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम	भ. गी.१८।७८
ध्रुवे (चित्तसंयमात्) तद्गतिदर्शनम्	शांडि. १।७।५०
ध्रुवैवास्य षोडशी कला	बृह. १।५।१४
ध्रुवोऽप्यध्रुवजीवनः	महो. ३।५०
ध्वनेरन्तर्गतं ज्योतिर्ज्योतिरन्तर्गतं मनः। यन्मनस्त्रिजगत्सृष्टिस्थिति-व्यसनकर्मकृत्	मं. ब्रा. ५।१
ध्वनेरन्तर्गतं ज्योतिर्ज्योतिषोन्तर्गतं मनः। तन्मनो विलयं याति तद्विष्णोः परमं पदम्	यो.शि.६।२१

न

न कञ्चन वसतौ प्रत्याचक्षीत। तद्व्रतम्	तैत्ति.३।१०।१
न कञ्चन स्वप्नं पश्यति [ग. शो. १।३+५।६+	बृ.उ.४।३।१९ सुबालो.४।४
न कञ्चन स्वप्नं पश्यति तत्सुषुप्तम् [रामो. २।३+	माण्डू. ५ गणेशो.१।३
न कञ्चनैकषष्टिरेकान्नविंशतिरेकान्नविंशतिः	तैत्ति. ३।११
न कण्ठं प्रावृतं कुर्यात्.. न पादधावनस्थानं यत्र पश्येद्गुरुः स्थितः	शिवो. ७।१८
न कण्डूयेन्नखैस्तनुम्	शिवो. ७।५४
न करोति न लिप्यते	भ.गी.१३।३२
न कर्ता नैव भोक्ता च नच भोजयिता तथा। केवलं चित्सदानन्दब्रह्मैवाहं जनार्दनः	वराहो. ३।१९
न कर्तृत्वं न कर्माणि	भ.गी. ५।१४
न कर्मणा न प्रजया धनेन त्यागेनैके अमृतत्वमानशुः [कैव. १। ३+ अवधू. ५ +	महाना.८।१४ सदानं. ५
न कर्मणा न प्रजया न चान्येनापि केनचित्...ब्रह्मवेदनमात्रेण ब्रह्माप्नोत्येव मानवः	कठरु. १२
न कर्मणामनारम्भान्नैष्कर्म्यं पुरुषोऽश्नुते। न च सन्न्यसनादेव सिद्धिं समधिगच्छति [भ.गी.३।४+	भवसं.१।५१
न कर्मणा लिप्यते पापकेन	इतिहा. २०
न कर्मणा वर्धते नो कनीयान्	इतिहा. २०
न कर्मफलसंयोगं	भ.गी.५।१४
(तस्मात्) न कर्म ब्राह्मण इति	व. सू. ७
न कर्म विजिज्ञासीत कर्तारं विद्यात्	कौ. त. ३।८
न कर्मस्वनुसज्जते	भ. गी. ६।४
न कर्माणि त्यजेद्योगी कर्मभिस्त्यज्यते ह्यसौ	अमन.२।१०३
न कश्चित् कर्तुमर्हति	भ. गी. २।१७
न कश्चिज्जायते जीवः सम्भवोऽस्य न विद्यते। एतत्तदुत्तमं सत्यं यत्र किञ्चिन्न जायते [अद्वैत.४८+	मं. शां. ७१
न कश्चित्कस्यचिच्छक्तः कर्तुं दुःखसुखानि च	शिवो. ७।१११
न कश्चित्कस्यचित्पुत्रः पिता माता न कस्यचित्	शिवो. ७।१०९
न कांक्षे विजयं कृष्ण	भ. गी. १।३१

न काञ्चन परिहरेत्तद्व्रतम् छांदो. २।१।२।२
नकार ईश्वरो भवति तारसा. १।४
नकाररहितोऽस्म्यहम् मैत्रे. ३।१९
न कारणं प्रयच्छन्त्यथापर-
पक्षीयाणां कविः...बभूव २प्रणवो. १७
नकारादियकारान्तं (नमःशिवाय)
ज्ञात्वा पञ्चाक्षरं जपेत् । सर्वं
पञ्चात्मकं विद्यात्पञ्चब्रह्मात्म-
तत्त्वतः पञ्चब्र. २५
नकारो विष्णुर्भवति तारसा. १।४
न किञ्चन द्वेष्टि तथा न किञ्चिदपि
कांक्षति । भुङ्क्ते यः प्रकृतान्भोगान्
स जीवन्मुक्त उच्यते महो. २।६०
न किञ्चिदपि चिन्तयेत् भ. गी. ६।२५
न किञ्चिच्चिन्तयेद्योगी सदा
शून्यपरो भवेत् अमन. २।५२
न किञ्चिच्चिन्तनादेव स्वयं सत्वं
प्रकाशते अमन. २।५३
न किञ्चित्कीर्तयेद्गुरोः शिवो. ७।१४
न किञ्चिदत्र पश्यामि न शृणोमि
न वेद्म्यहम् । स्वात्मनैव सदानन्द-
रूपेणास्मि स्वलक्षणः अध्यात्मो. ६७
न किञ्चिदस्ति त्वद्व्यतिरिक्तम् त्रि.म.ना. १।१
न किञ्चिद्भावनाकारं यत्तद्ब्रह्मपरं विदुः म. वा. र. १७
न किञ्चिदनिर्देश्यं वस्तुसत्तेति
किञ्चन महो. २।५
न किञ्चिद्रोचते चेत्ते
बन्धुकोऽसि भवस्थितौ अ. पू. ५।१०५
न किञ्चिन्मनसा ध्यायेत्सर्वचिन्ता-
विवर्जितः ।..जायतेतत्त्वसम्मुखः अमन. १।१८
न कुद्वारेण वेश्मानि नगरं
ग्राममाविशेत् । शिवोप. ७।६०
न कुर्यात्केनचिद्वैरमध्रुवे जीविते सति शिवो. ७।८९
न कुर्यात् कार्यणाकीर्ति
अहसूत्रस्य भिक्षवे वैकुलो. २।६
न कुर्यान्न वदेत्किञ्चिन्न ध्यायेत्साध्व-
साधु वा । आत्मारामोऽनया
वृत्त्या विचरेज्जडवन्मुनिः ना. प. ५।२४

न कुर्यां कर्म चेदहम् भ. गी. ३।२४
नकुलः सहदेवश्च भ. गी. १।१६
न कृष्णं नकृष्णं नकृष्णम् (गणेशः) ग. शो. २।३
न केवलं...नरके दुःखपद्धतिः ।
स्वर्गेऽपि पातभीतस्य क्षयिष्णो-
र्नास्ति निर्वृतिः भवसं. १।७
नक्तमधीयानो दिवसकृतं
पापं नाशयति सङ्कर्षणो. ३
नक्तादुरश्चोपवास उपवासादया-
चितः । अयाचिताद्वरं भैक्ष्यं
तस्माद्भैक्षेण वर्तयेत् १सं. सो. २।६२
न क्वचिद्भावकलना न भावाभाव-
गोचरा । सर्वं शान्तं निरालम्बं महो. ५।४४
नक्षत्रलोकेषु गार्गीति (चन्द्रलोका
ओताश्च प्रोताश्च) बृह. ३।६।१
नक्षत्राणामहं शशी भ. गी. १०।२१
नक्षत्राणि प्रतिहारश्चन्द्रमा निधनमे-
तद्राजनं देवतासु प्रोतम् छांदो. २।२०।१
नक्षत्राणि रूपम् चित्यु. १२।३
नक्षत्राणि वयांस्यि मरीचयः स
प्रतिहारः सर्पा गन्धर्वाः
पितरस्तन्निधनमेतत्साम छांदो. २।२१।१
(तस्य) नक्षत्राणि विस्फुलिङ्गाः
[छां. उ. ५।४।१+ बृह. ६।२।११
नक्षत्राण्येव सा चन्द्रमा अमस्तत्साम छां. उ. १।६।४
नक्षत्राण्येवर्क् चन्द्रमाः साम छां.उ.१।६।४
न क्षिपेदशुचिं वह्नौ न च
पादौ प्रतापयेत् शिवो. ७।६९
न क्षीणा वासना यावच्चित्तं
तावन्न शाम्यति । यावन्न
तत्त्वविज्ञानं तावच्चित्तशमः कुतः अ. पू. ४।७९
न क्षुधा न तृषा निद्रा नैवालस्यं
प्रजायते । न च मृत्युर्भवेत्तस्य
यो मुद्रां वेत्ति खेचरीम् यो. शि. ५।४२
नखानां छेदनेन च, सर्वं
कार्ष्णायसं ज्ञातं पञ्चब्र. ३०
नगरं नहि कर्तव्यं ग्रामो वा मिथुनं
तथा । एतत्सर्वं प्रकुर्वाणः
स्वधर्माच्च्यवते यतिः ना. प. ३।५७

नगङ्गयासमंतीर्थनशुद्धिर्गोपिचन्दनात् गोपीचं.२०
न गन्धं विजिज्ञासीत, घ्रातारं विद्यात् कौ. त. ३।८
नगरेषु तीर्थेषु पञ्चरात्रं वसन्तः आश्रमो. ४
न गुणा नागुणास्तत्र न श्रीर्नाश्रीर्न लोकता अ. पू. ४।२१
नगुरोरधिकः कश्चित्त्रिषुलोकेषुविद्यते यो.शि. ५।५६
न गुरोरप्रियं कुर्यात्पीडितस्ताडितोऽपि वा। नोच्चारयेच्च तद्वाक्यं.. शिवो. ७।३७
न गुरोः कीर्तयेन्नाम...नाह्वयीत तदाख्यया शिवो. ७।२२
न चक्षुषो मुखान्नीलं वेत्ति कौ. त. ३।१
न च क्रियाभिर्न तपोभिरुग्रैः भ. गी. ११।४८
न चक्षुषा गृह्यते नापि वाचा [मुं. उ. ३।१।८+ गुह्यका. ३७
न चक्षुषा पश्यति कश्चनैनम् [कठो. ६।९+श्वेता.४।२०+ [महाना. १।११+ त्रि. म. ना.६।४
न चक्षुषा पश्यति कश्चिदेनाम् गुह्यका. ६३
न चक्षुषा पश्यति कश्चिदेनं (मा.पा.) कठो. ६।९
न च जीवन्मृतो वापि न पश्यति न मीलति अमन. १।२५
न च तत्प्रेत्य नो इह भ. गी. १७।२८
न च तस्मान्मनुष्येषु भ.गी.१८।६९
न च निस्पन्दता लोके दृष्टेह शवतां विना भवसं. १।४४
न च पुनरावर्तते [छां.उ.८।१५।१+ वासुदे. १७
न च प्रमादात् तपसो वाऽप्यलिङ्गात् (आत्मलब्धिः) मुण्ड. ३।२।४
न च भावविकाराणां सत्ता क्व च न विद्यते महो. ४।१२
न च भूतपदार्थौघसदनन्ततया स्थितम् महो. २।६६
न च भूतादभूतस्य सम्भवोऽस्ति अ. शां. ३८
न च मत्स्थानि भूतानि भ. गी. ९।५
न च मध्यं हि तत्पदम् अ. पू. ४।२२
न च मां तानि कर्माणि निबध्नन्ति भ. गी. ९।९
न च मां योऽभ्यसूयति भ.गी.१८।६७
न च याति न चायाति नच नेह नचेह चित्। सैषा चिदमलाकारा निर्विकल्पा निरास्पदा महो. ५।१०२
न च मलं विमलं न च वेदनम्। चिन्मयं हि सकलं विराजते स्फुटतरं परमस्य तु योगिनः वराहो. ३।५
न च राज्यं सुखानि च भ.गी.१।३१
[जातिरिति च—] न चर्मणो न रक्तस्य न मांसस्य नचास्थिनः। न जातिरात्मनो जातिर्व्यवहारप्रकल्पिता निरालं. १२
न च लोष्टं विमृद्नीयात् शिवो. ७।५२
न च वयं पश्यामो नैव वयं वक्तुं शक्नुमो नमस्तेऽस्तु भगवन्प्रसीद नृसिंहो.९।१०
न च विद्या न चाविद्या न जगच्च न चापरम्। सत्यत्वेन जगद्भानं संसारस्य प्रवर्तकम् २ आत्मो. ४
न च शक्नोम्यवस्थातुं भ. गी. १।३०
न च श्रेयो नु पश्यामि भ. गी. १।३१
न च सत्संविन्मया एतौ हि पुरस्तात्सुविभातमव्यवहार्यमेवाद्वयं नृसिंहो. ९।८
न च संन्यसनादेव सिद्धिं समधिगच्छति [भ. गी. ३।४ भवसं. २।५१
न चाचार्यव्यतिरिक्तं श्रेयांसं दृष्ट्वा नमस्कुर्यात् अव्यक्तो. ९
न चाज्ञानमधीयीत शिवज्ञानं समभ्यसेत्। शिवज्ञानं परं ब्रह्म.. शिवो. ७।६१
न चातिस्वप्नशीलस्य भ.गी. ६।१६
न चानिलो मेऽस्ति न चाम्बरं च। एवं विदित्वा परमात्मरूपं... प्रयाति शुद्धं परमात्मरूपम् कैव. २३
न चाभावयतः शान्तिः भ. गी.२।६६
न चायुक्तस्य भावना भ. गी.२।६६
न चाशुश्रूषवे वाच्यं भ.गी.१८।६७
न चास्ति वेत्ता मम चित्सदाऽहम् कैव. २१
न चास्मादुपावरोहेत्। जीवन्मुक्तश्च भवति अव्यक्तो. ९
न चास्य कश्चिज्जनिता न चाधिपः श्वेता. ६।९
न चास्य सर्वभूतेषु भ. गी.३।१८
न चाहं तेष्ववस्थितः भ. गी. ९।४
न चाहं नच नेतरः।.. अनाख्यमनभिव्यक्तं सत्किञ्चिदवशिष्यते महो. २।६४

न चिरेणाधिगच्छति — भ.गी. ५।६
न चेतनो न च जडो (आत्मा) न चैवासन्न सन्मयः — अ. पू. २।२०
न चेत्समानपुरुषवचने तृतीयप्रभृतीनामुदात्ततमः कश्चिद्भवति — संहितो. ३।१
न चेदवेदीर्महती विनष्टिः । ये तद्विदुरमृतास्ते भवन्ति — बृ. उ.४।४।१४
न चेदिहावेदीन्महती विनष्टिः — केनो. २।५
न चेमं देहमाश्रित्य वैरं कुर्वीत केनचित् — ना. प.३।४२
न चेमां विद्यामश्रद्दधानाय ब्रूयात् — अव्यक्तो. ९
न चेशिता नैव च तस्य लिङ्गम् । स कारणं करणाधिपाधिपः — श्वेता. ६।९
न चैकान्तमनश्नतः — भ. गी.६।१६
न चैतद्विद्मः कतरन्नो गरीयः — भ. गी.२।६
न चैनमिति ह्योचुरितिब्रूतैवैवमात्मसिद्धम् — नृसिंहो.९।१०
न चैनं क्लेदयन्त्यापः — भ.गी. २।२३
न चैव न भविष्यामः — भ.गी.२।१२
न चैवमतः परं किञ्चित् — गणेशो.३।६
न चैव सुकृतं विभुः — भ.गी. ५।१५
न चैवासन्न सन्मयः (आत्मा) — अ. पू. २।२०
न चोदयो नास्तमयो न हर्षामर्षसंविदः — अ. पू. ४।२२
न जगत्सर्वद्रष्टाऽस्मि नेत्रादिरहितोऽस्म्यहम् — मैत्रे. ३।१४
न जन्म देहेन्द्रियबुद्धिरस्ति — कैव. २२
न जपो न पूजा न साधनं — गुह्यषो. १
न जरा न मृत्युर्न शोको न सुकृतं न दुष्कृतं सर्वे पाप्मानोऽतो निवर्तन्तेऽपहतपाप्मा ह्येष ब्रह्मलोकः — छान्दो.८।४।१
न जहाति मृतं वापि सर्वव्यापी धनञ्जयः (वायुः) — यो. चू. २६
न जाग्रत्स्वप्नरूपोऽहं न सुषुप्तिस्वरूपवान् — ते.बिं. ३।४५
न जाग्रन्न स्वप्नो न सुषुप्तिर्न वै तुरीया — गणेशो.३।२
न जातिरात्मनो जातिर्व्यवहारप्रकल्पिता — निराल. १२
(तस्मात्) न जातिर्ब्राह्मणः — व. सू. ५
न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति । हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्तते — ना. प.३।३७
न जानाति स शीतोष्णं न दुःखं न सुखं तथा — ना. बिं. ५३
न जायते न म्रियते किञ्चिदत्र जगत्त्रये । न च भावविकाराणां सत्ता क्वचन विद्यते — महो. ४।१२०
न जायते न म्रियते क्वचित्किञ्चित् कदाचन । परमार्थेन विप्रेन्द्र मिथ्या सर्वं तु दृश्यते — महो. ५।१६५
न जायते न म्रियते न मुह्यते न भिद्यते...सर्वदहनोयमात्मेत्याचक्षते — सुबालो.९।१४
न जायते न म्रियते न शुष्यते न दह्यते... (आत्मा) — आत्मो. ६
न जायते न म्रियते न शुष्यति न क्लियति...सोऽचिन्त्यो निर्वर्ण्यश्च पुनात्यशुद्धान्यपूतानि (आत्मा) — आत्मो. ३
न जायते म्रियते वा कदाचित् — भ. गी. २।२०
न जायते म्रियते वा विपश्चित् — कठो. २।१८
न जायते न म्रियते विपश्चिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः — भवसं. २।३६
न जीवो ब्राह्मणः — व. सू. ३
न जीवो म्रियत इति स य एषोऽणिमैतदात्म्य९सर्वं — छांदो.६।११।३
न जुहुयादग्नौ (भस्मधारणमकृत्वा) तर्पयेद्देवानृषीन्पितृादीन् — भस्मजा. १।६
न ज्ञानं नाज्ञानं नोभयतःप्रज्ञमग्राह्यमव्यवहार्यं — ना. प. ९।२०
(तस्मात्) न ज्ञानं ब्राह्मणः — व. सू. ६
नट इव क्षणवेषं चित्रभित्तिरिव मिथ्यामनोरमं (पुराकृतं) — मैत्रा. ४।२
नटादिप्रेक्षणं द्यूतं प्रमदासुहृदं तथा । भक्ष्यं भोज्यमुदक्यां च षण्न पश्येत्कदाचन — ना. प. ३।६९
न तच्छब्दः, न किंशब्दः, नसर्वशब्दाः — स्वसंवे. ४
न ततोऽन्यत्र निःस्पन्दान्न विज्ञानं विशन्ति ते — अ. शां. ५१
न ततोऽन्यत्र निस्पन्दान्नालातं प्रविशन्ति ते — अ. शां. ४९

न तस्याज्यं न तस्याज्यं मोचकोऽह-
मविमुक्ते निवसताम् । नाविमुक्ता-
त्परमं स्थानम् भस्मजा. २।८

न तत्पश्यति चिद्रूपं ब्रह्मवस्त्वेव
पश्यति । धर्मधर्मित्ववार्ता
च भेदे सति हि भिद्यते पा. ब्र. ३०

न तत्र चक्षुर्गच्छति न वाग्गच्छति केनो. १।३

न तत्र चन्द्रार्कवपुःप्रकाशते [रुद्रह.४०+ अ.पू. ४।३०

न तत्र त्वं न जरया बिभेति कठो. १।१२

न तत्र देवा अदेवाः त्रि. ता. ५।१

न तत्र देवाऋषयःपितर ईशते [ब्रह्मो.३+ त्रि. ता. ५।१

न तत्र देवा न देवलोका यज्ञा न
यज्ञा वा न माता न पिता न बन्धुर्न
बान्धवो न स्तेनो न ब्रह्महा...तेनैव
मार्गेण जाग्राय धावति सम्राट् सुबालो. ४।४

न तत्र वेशान्ताः पुष्करिण्यः
स्रवन्त्यो भवन्ति बृह. ४।३।१०

न तत्र लोका अलोकाः त्रि. ता. ५।१

न तत्र रथा न रथयोगा न पन्थानो
भवन्ति बृह. ४।३।१०

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं
नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः कठो. ५।१५
[मुं.उ. २।२।१०+श्वेता. ६।१४+ गुह्यका. ४५

न तत्समश्चाभ्यधिकश्च दृश्यते
[श्वेता. ६।८+ भवसं. २।४४

न तत्समश्चाधिकश्च दृश्यः ग. शो. ४।१

न तत्समा चाप्यधिका च दृश्यते गुह्यका. ६७

न तथा कुर्याद्गायत्रीमेवं सावित्री-
मनुब्रूयात् बृह. ५।१४।५

न तथा भवतो योगाज्जन्ममृत्यू पुनः पुनः यो. शि. १।५५

न तथा विद्याद्यदहरेव जुहोति तदहः
पुनर्मृत्युमपजयति बृह. १।५।२

न तद्भाति किञ्चन नतद्भाति
कञ्चन [बृह. ३।८।८+ सुबालो. ३।२

न तर्कं पठेन्न शब्दमपि (प्रणवंविना) ना. प. ५।६

न तदस्ति न यत्राहं न तदस्ति न
तन्मयम् । किमन्यदभिवाञ्छामि
सर्वं सच्चिन्मयं ततम् महो. ६।११

न तदस्ति पृथिव्यां वा भ.गी. १८।४०

न तदस्ति विना यत्स्यात् भ.गी. १०।३९

न तद्भासयते सूर्यः भ.गी. १५।६

न तमश्नोति कश्चन आर्षे. ९।२

न तस्मात्पूर्वं न परं तदस्ति न भूतं
नोत भव्यं यदासीत् [अ.शिरः.३।१४+ बटुको. २५

नतस्यकश्चित्पतिरस्तिलोके नचेशिता
नैव च तस्य लिङ्गम् [श्वेता.६।९+ भवसं. २।४३

न तस्य कार्यं करणं च विद्यते न
तत्समश्चाभ्यधिकश्चदृश्यते[श्वेता.६।८ +भवसं. २।४४

न तस्य कुले अन्धो भवति चाक्षुषो. ३

न तस्य कुलेऽन्धो भवति अक्ष्यु. ३

न तस्य धर्मोऽधर्मश्च न निषेधो
विधिर्न च पा. ब्र. २८

न तस्य क्षीयते बिन्दुः कामिन्या-
लिङ्गितस्य च । (खेचर्या मुद्रितं
येन विवरं लम्बिकोर्ध्वतः) यो. चू. ५७

न तस्यप्रतिमाअस्ति यस्यनाम महद्यशः
[श्वेताश्व. ४।१९+ वा. सं. ३२।३

न तस्य प्राणा उत्क्रामन्त्यत्रैव सम-
वलीयन्ते ब्रह्मैव सन्ब्रह्माप्येति बृह. ४।४।६
[सुबालो. ३।३+ नृसिंहो. ५।२

न तस्य रोगो न जरा न मृत्युः
प्राप्तस्य योगाग्निमयं शरीरम् श्वेताश्व. २।१२

न तस्यलिप्यतेप्रज्ञापद्मपत्रमिवाम्बुभिः महो. ५।१०२

न तस्य विद्यते कार्यं न लिङ्गं वा
विपश्चितः । निर्ममो निर्भयः
शान्तो निर्द्वन्द्वोऽवर्णभोजनः ना. प. ४।२१

न तस्यानूक्ते भागो अस्ति ऋग्वे. २।४।१,२

न तस्येशे कश्चन तस्य नाम महद्यशः महाना. १।१०

न तंपश्यतिकश्चन तं नायतनंबोधयेत् बृह. ४।३।१४

न तानीमानि क्षुद्राण्यसकृदावर्तीनि
...भवन्ति छांदो. ५।१०।८

न तापत्रयरूपोऽहं नेषणात्रयवानहम् ते. बि. ३।४६

न तिष्ठमहसमवुद्बुदः..मापपम मऽपिबेत् आचम. ३

न तीर्थसेवी नित्यं स्यान्नोपवास-
परो यतिः । न चाध्ययनशीलः
स्यान्न व्याख्यानपरो भवेत् ना. प. ३।७३

न तु तद्द्वितीयमस्ति, ततोऽन्य-
द्विभक्तं यत्पश्येत् [बृह.४।३।२३ +४।३।३०

न तु तद्द्वितीयमस्ति ततोऽन्य-
  द्विभक्तं यज्जिघ्रेत् — बृ. उ.४।३।२४
न तु तद्द्वितीयमस्ति...यद्रसयेत् — बृ. उ. ४।३।२५
न तु तद्द्वितीयमस्ति...यद्वदेत् — बृ. उ.४।३।२६
न तु तद्द्वितीयमस्ति...यच्छृणुयात् — बृ. उ. ४।३।२७
न तु तद्द्वितीयमस्ति...यन्मन्वीत — बृ. उ. ४।३।२८
न तु तद्द्वितीयमस्ति...यत्स्पृशेत् — बृ.उ. ४।३।२९
न तु तद्द्वितीयमस्ति...यद्विजानीयात् — बृ. उ.४।३।३०
न तत्रानन्दा मुदः प्रमुदो भवन्ति — बृ.उ.४।३।१०
न तु देहादिसत्यत्वबोधनाय
  विपश्चिताम् । परिपूर्णमनाद्य-
  न्तमप्रमेयमविक्रियम् — अध्यात्मो.६०
न तु मामभिजानंति — भ.गी. ९।२४
न तु मां शक्यसे द्रष्टुं — भ.गी. ११।८
न तुष्यामिशुभप्राप्तौ न खिद्याम्यशुभागमे — अ. पू.५।५९
न तु सन्न्यासिनां क्वचित् — भ.गी.१८।१२
न तेजो न तमः किञ्चिन्न सन्ध्या
  दिनरात्रयः । न सत्तापि न
  चासत्ता न च मध्यं हि तत्पदम् — अ. पू. ४।२२
न तेजो न तमस्ततम् — मैत्रे. १।१५
न तेऽत्र देहिनः सन्ति ये तिष्ठन्ति
  मुनिश्चलाः — शिवो.७।१२५
न तेषां धर्मो नाधर्मो न चानृतं
  (परमहंसानां) — आश्रमो. ४
न तेषु रमते बुधः — भ.गी. ५।२२
न त्यजन्ति न वाञ्छन्ति व्यवहारं
  जगद्गतम् । सर्वमेवानुवर्तन्ते पारा-
  वारविदो जनाः — महो. ५।१७७
न त्यजेद्यतिर्मुक्तो यो माधुकर-
  मासरम् । वैराग्यजनकं श्रद्धाकलत्रं
  ज्ञाननन्दनम् — मैत्रे. २।२३
न त्याज्यमिति चापरे — भ.गी. १८।३
न त्याज्यं कार्यमेव तत् — भ.गी. १८।५
न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्यः — भ.गी.११।४३
न त्वहं तेषु ते मयि — भ.गी. ७।१२
न त्वं नेमे जनाधिपाः — भ.गी. २।१२
न त्वं शोचितुमर्हसि [भ.गी. २।२७+ — २।३०
न त्वं वेत्थ परन्तप — भ. गी. ४।५
न त्वा कामा बहवो लोलुपन्ते — मैत्रा. ७।९

नत्वा च बहुधा दृष्ट्वा नृसिंहः
  स्वयमुद्बभौ — नृसिंहो. ४।३
न त्वाभवद्ब्रह्म रि(ह)ष्मा मयस्वि — बा. मं. ३
न त्वेनामसते दद्यात्, सतश्च न
  विमानयेत् — संहितो. ३।८
न त्वेवान्यत्कुशलाद्ब्राह्मणं ब्रूयात् — ३ऐत. १।३।४
न त्वेवान्यत्कुशलाद्ब्राह्मणं ब्रूयादिति-
  शुश्र एव ब्राह्मणं ब्रूयात् — ३ऐत. १।४।३
न त्वेवाहं जातु नासं — भ.गी. २।१२
न दण्डधारणेन न मुण्डनेन न
  वेषेण न दम्भाचारेण मुक्तिः — ना. प.५।१७
न दण्डं न कमण्डलुं न शिखां
  न यज्ञोपवीतं न चाच्छादनं
  चरति परमहंसः — प. हं. ३
न दन्तखादनं कुर्यात् — शिवो. ७।५३
न दन्तधावनाभ्यङ्गं...गुरोः
  कुर्वीत पश्यतः — शिवो. ७।१९
न दर्शयेच्च सामर्थ्यं दर्शनं वीर्यवत्तरम् ।
  स्वल्पं वा बहुधा दुःखं योगी
  न व्यथते तदा — १यो. त. ५६
न दर्शयेत्स्वसामर्थ्यं (यस्यकस्यापि)
  योगिराट् — १यो. त. ७६
न दह्यते न छिद्यते न कम्पते न
  कुप्यते सर्वदहनोऽयमात्मेत्याचक्षते — सुबालो. ९।१४
न दह्यते शरीरंच प्रविष्टस्याग्निमण्डले — १ यो. त. ९४
न दानेन न चेज्यया — भ.गी.११।५३
न दारपुत्राभिलाषी लक्ष्यालक्ष्य-
  निवर्तकः परिव्राट् परमेश्वरो भवति — याज्ञव. ३
न दिवा जागरितव्यं सुप्तव्यं नैव
  रात्रिभागेषु । रात्रावहनि च
  सततं शयितव्यं योगिना नित्यम् — अमन. २।१०८
न दिवा प्रावृतशिरा रात्रौ प्रावृत्य
  पर्यटेत् — शिवो.७।६०
न दिवारात्रिविभागो न संवत्सरादि-
  कालविभागः...देव एको
  नारायणो न द्वितीयोऽस्ति — त्रि.म.ना.१।५
नदीपुलिनशायी स्याद्देवागारेषु
  (वा स्वपेत्) बाह्यतः । नात्यर्थं
  सुखदुःखाभ्यां शरीरमुप(ताप)-

तापयेत् [२सन्न्यासो.१३+
[कठरु. ६+कुंडि.११।+ कठश्रु. २६
नदीवेगो निश्चलश्चेत्केनापीदं भवेज्जगत् ते. बिं. ६।८८
न दुःखं नसुखं भावं न मायाप्रकृतिस्तथा ते. बिं. ६।५
न दुःखेन विना सौख्यं ।शिवो.७।११८
न दृश्यं न दृश्यं न दृश्यम् ग. शो. २।३
न दूरं नान्तिकं नाङ्गं नोदरं न
किरीटकम् ते. बिं. ६।७
न दृष्टेर्द्रष्टारं पश्येः बृह. ३।४।२
न देयं चञ्चलाक्षाय नाभक्ताय कदाचन सूर्यता. १।१२
न देवताप्रसादग्रहणम् (यतेः) १सं.सो.२।५९
न देवः स्वात्मनः परः यो.शि.२।२०
न देवोत्सवदर्शनं कुर्यात् (यतिः) ना .प. ७।१
न देशं नापि कालं वा न शुद्धिं
वाऽप्यपेक्षते (आत्मा) आत्मो. ७
न देहं न मुखं घ्राणं न जिह्वा न च
तालुनी (ब्रह्मैव सर्वम्) ते. बिं. ६।६
न देहादित्रयोऽस्म्यहम् ते. बिं. ३।४५
न देहान्तरदर्शनं, प्रपञ्चवृत्तिं
परित्यज्य...दूरतो वसेत् ना.प. ७।१
न देहो न च कर्माणि सर्वं ब्रह्मैव
केवलम् । न भूतं न च कार्यं च... ते. बिं.६।१०५
न द्यौर्नान्तरिक्षं न पृथिवी....ज्ञान-
रूपमानन्दमयमासीत् अव्यक्तो. १
न द्वितीयोऽस्ति कश्चित् नारा. २
[+त्रि. म. ना.१।५+२।८
न द्वेष्टि सम्प्रवृत्तानि भ.गी.१४।२२
न द्वेष्ट्यकुशलं कर्म भ.गी. १८।१०
न धनान्युपकुर्वन्ति न मित्राणि न
बान्धवाः । न कायक्लेशवैधुर्यं न
तीर्थायतनाश्रयः महो. ४।२८
(तस्मात्) न धार्मिको ब्राह्मणः व. सू. ८
न ध्यानं च न च ध्याता न ध्येयो
ध्येय एव च ते. बिं. १।१०
न ध्यानं नोपासनं न लक्ष्यं
नालक्ष्यं (परिग्रहेत्)..जात-
रूपधरश्चरेदात्मानमन्विच्छेत् ना. प. ३।८७
न ध्यायेत्साध्वसाधु वा । आत्मा-
रामोऽनयावृत्त्याविचरेज्जडवन्मुनिः ना. प. ५।३६

न नखांश्च नखैर्विध्यात् शिवो. ७।५४
न नभो घटयोगेन सुरागन्धेन
लिप्यते । तथात्मोपाधियोगेन
तद्धर्मो नैव लिप्यते अध्यात्मो.५२
न नमस्कारो न स्वाहाकारो न
निन्दानस्तुतिर्यादृच्छिकोभवेत् प. हं. ८
न नमस्कारो न स्वाहाकारो न
स्वधाकारो न निन्दास्तुति-
र्यादृच्छिको भवेत् ना.प. ३।८७
न नरेणावरेण प्रोक्त एष सुविज्ञेयो
बहुधा चिन्त्यमानः कठो. २।८
न नाशयेद्बुधो जीवन्परमार्थमतिं
यतिः । नित्यमन्तर्मुखः स्वच्छः
प्रशान्तात्मा स्वपूर्णधीः ना.प.६।४२
न नाहं ब्रह्मेति व्यवहरेत् किन्तु
ब्रह्माहमस्मीत्यजस्रं जाग्रत्स्वप्न-
सुषुप्तिषु ना. प. ६।२
न निजं निजवद्भात्यन्तःकरण-
जृम्भणात् । अन्तःकरणनाशेन
संविन्मात्रस्थितो हरिः स्कन्दो. २
न निद्रां नैव च स्वप्नं तुर्ये पश्यन्ति
निश्चिताः आगम. १४
न निरग्निर्न चाक्रियः भ. गी. ६।१
न निरोधो न चोत्पत्तिः वैतथ्य. ३२
न निरोधो न चोत्पत्तिर्न वन्धो न च
शासनम् । न मुमुक्षा न मुक्तिश्च
इत्येषा परमार्थता ब्र. बि. १०
न निरोधो न चोत्पत्तिर्न बद्धो न च
साधकः।...इत्येषा परमार्थता २आत्मो. ३१
[त्रि.ता.५।१०+ १ अवधू. ८
न निर्गता अलातात्ते द्रव्यत्वाभावयोगतः अ. शां. ५०
न निर्गतास्ते विज्ञानाद्द्रव्यस्याभावयोगतः अ. शां.५२
न निवृत्तानि काङ्क्षति भ.गी.१४।४०
न नोऽद्य कश्चनाश्रुतममतमविज्ञात-
मुदाहरिष्यति छान्दो.६।४।५
नन्वागतं पुण्येनानन्वागतं पापेन
तीर्णो हि तदा सर्वाञ्छोकान्
हृदयस्य भवति बृह. ४।३।२२
न पतन्ति विपर्यये अ. शां.४६

न पञ्चधामुक्षितेद्भूमिं शिवो. ७।५४
न पन्थानो भवन्त्यथ रथान्रथयोगान् पथः सृजते बृ.उ.४।३।१०
न परस्मा एतदहः शंसेत् ३ऐत. २।४।२
न परस्मै महाव्रतेन स्तुवीत ३ऐत. २।४।२
न परा सम्पद्यमाना नो एव परेति आर्षे. ८।३
न परिव्राण्नामसङ्कीर्तनपरो यद्यत्कर्म करोति तत्तत्फलमनुभवति १सं.सो.२।५९
न पश्यन्मृत्युं पश्यति, न रोगं नोत दुःखताम् मैत्रा. ७।११
न पाणिपादचपलो न नेत्रचपलो यतिः। न च वाक्चपलश्चैव ब्रह्मभूतो जितेन्द्रियः याज्ञव. २१
न पाणिपादवाक्चक्षुःश्रोत्रशिश्नगुदो-दरैः। चापलानि न कुर्वीत.. शिवो. ७।५८
न पादौ धावयेत्कांस्ये शिवो.७।४९
न पीतं नपीतं नपीतं(गणेशंमन्यन्ते) ग.शो. २।३
न पीयूषं पतत्यग्नौ न च वायुः प्रधावति। (जालंधरेबन्धे) ध्या. बिं.७९
न पुण्यपापे मम नास्ति नाशो न जन्म देहेन्द्रियबुद्धिरस्ति कैव. २२
न पुनरावर्तन्ते हुताशनप्रतिष्ठं हविरिव (मुक्ताः) भस्मजा.२।१५
नपुंसककुमारस्य स्त्रीसुखं चेद्भवेज्जगत्। निर्मितः शशशृङ्गेण रथश्चे-जगदस्ति तत् ते.बिं. ६।९०
न पृथक्पृथगहं न सत्त्वं स सर्वं ...नैव परिग्रहेत प. हं. ९
न पृथक्पृथक्किञ्चित् वैतथ्य. ३५
न प्रकाशोऽहमित्युक्तिर्यत्प्रकाशैक-बन्धना। स्वप्रकाशं तमात्मान-मप्रकाशः कथं स्पृशेत् वराहो. २।९
न प्रज्ञं नाप्रज्ञं [ग.शो.१।४+ रामो. २।४
न प्रज्ञं नाप्रज्ञं न प्रज्ञानघनमदृष्टम-व्यवहार्यमग्राह्यमलक्षणमचिन्त्य-मव्यपदेश्यमैकात्म्यप्रत्ययसारं प्रपञ्चोपशमं शान्तं शिवमद्वैतं चतुर्थं मन्यंते स आत्मा स विज्ञेयः नृ. पू. ४।२
न प्रज्ञानघनं न प्रज्ञं नाप्रज्ञम् माण्डू. ७
न प्रज्ञो नाप्रज्ञोऽपि नो विदितं वेद्यं नास्तीत्येतन्निर्वाणानुशासनम् सुबालो. ५।१५
न प्रत्यग्ब्रह्मणोर्भेदं कदापि ब्रह्मसर्गयोः। प्रज्ञया यो विजानाति स जीव-न्मुक्त इष्यते अध्यात्मो. ४६
न प्रत्यङ्ङग्निमाचामेन्न निष्ठीवेत् छांदो.२।१२।२
न प्रतिगृह्णन्तः शतसंवत्सराभिः क्रियाभिर्यजन्त आत्मानं प्रार्थयन्ते आश्रमो. २
न प्रतिष्ठां लोकमतिनयेत् छान्दो.१।८।७
न प्रत्यसंज्ञाऽस्तीत्यरे ब्रवीमीति होवाच बृह.२।४।१२
न प्रसिद्ध्येदकर्मणः भ. गी. ३।८
न प्रसृतेनासुरान् पराभावयन् सहवै. १
न प्रहृष्येत्प्रियं प्राप्य भ.गी.५।२०
न प्राणेन नापानेन मर्त्यो जीवति कश्चन। इतरेण तु जीवन्ति यस्मिन्नेतावुपाश्रितौ कठो. ५।५
न प्रेत्य संज्ञाऽस्ति बृह. ४।५।१३
न बद्धोऽस्मि न मुक्तोस्मि ब्रह्मैवास्मि.. अ. पू. ५।६८
न बन्धुवर्गो न च रूपभावो न मातृपत्न्यौ ध्रुवं निश्चयोऽस्ति अनु. ना. ५
न बद्धो न च साधकः वैतथ्य. ३२
न बहिःप्रज्ञं नोभयतःप्रज्ञं सप्ताङ्ग एकोनविंशतिमुखः श्रीवि.ता.१।७
न बहिः प्राण आयाति पिण्डस्य पतनं कुतः। पिण्डपातेन या मुक्तिः सा मुक्तिर्न तु हन्यते यो.शि.१।१६२
न बहुश्रुतेन न बुद्धिज्ञानाश्रितेन न मेधया...आत्मानमुपलभन्ते सुबालो.९।१५
न बाह्यदेवताभ्यर्चनं कुर्यात् (यतिः) १सं.सो.२।९९
न बाह्यदेवार्चनं कुर्यात् " ना. प. ७।१
न बाह्ये नापि हृदये सद्रूपं विद्यते मनः। यदर्थं प्रतिभानं तन्मन इत्यभिधीयते महो. ४।५१
न बिभेति कदाचन तैत्ति. २।४
न बिभेति कुतश्चन तैत्ति. २।९
न बुद्धिभेदं जनयेत् भ.गी. ३।२६
न बुद्धिर्न विकल्पोऽहं न देहादि-त्रयोऽस्म्यहम् ते. बिं.१।४५

न ब्रह्मा नेशानो नापो नाग्निर्न वायुर्नेमे द्यावापृथिवी न नक्षत्राणि न सूर्यः — चतुर्वे. १

न ब्रह्मा नेशानो नापो नाग्नीषोमौ ..न सूर्यो न चन्द्रमाः (नासीरन्) — महो. १।६

न ब्रह्मा नो विष्णुर्नाथ रुद्रो नेश्वरो न बिन्दुर्नो कलेति — स्वसंवे. १

न भगव इति वेत्थ यथा पुनरावर्तन्ता३इति — छांदो. ५।३।२

न भयं न सुखं दुःखं तथा मानावमानयोः। एतद्भावविनिर्मुक्तं तद्ग्राह्यं ब्रह्म तत्परम् — ते. बिं. १।१४

न भवत्यमृतं मर्त्यं न मर्त्यममृतं तथा। प्रकृतेरन्यथाभावो न कथञ्चिद्भविष्यति [अ.शां.७+ — अद्वैत. २१

नभश्च पृथिवीं चैव — भ. गी. १।१९

नभसोऽन्तर्गतस्यतेजसोंऽशमात्रमेतत् — मैत्रा. ३।३५

नभस्थं निष्कलं ध्यात्वा मुच्यते भवबन्धनात्। अनाहतध्वनियुतं हंसं यो वेद हृद्गतम् — ब्र. वि. २०

नभस्थः सूर्यरूपोऽग्निर्नाभिमण्डलमाश्रितः — यो. शि. ५।३०

नभस्पृशं दीप्तमनेकवर्णं — भ. गी. ११।२४

न भूतं न भविष्यच्च चिन्तयामि.. — अ. पू. ५।५७

न भूतं नोत भव्यं यदासीत् [अ. शिरः. ३।१४+ — बटुको. २५

न भूमिरापो न च वह्निरस्ति.. — कैव. २३

नभूमौविन्यसेत्पादमन्तर्धानविभागुरुः — शिवो. ७।४७

न वेतव्यं पृच्छतेति होवाच कैपाङ्गुलेत्येष एवात्मेति — नृसिंहो. ९।१०

नम आदित्येभ्यश्च विश्वेभ्यश्च देवेभ्यो ...लोकं मे यजमानाय विन्दत — छां. २।२४।१४

नम आदित्याय दिविक्षिते... यजमानाय वेहि — मैत्रा. ६।३५

नम आनन्दस्वरूपिणे नमस्तद्द्रष्ट्रे — शामर. ८२

नमः सर्वाभ्यो दिशो, याश्च देवता एतस्यां... — सहवै. २४

नम ऋषिभ्यो नमःकुल्येभ्यः प्रकुल्येभ्यः — ग. पू. १।५

न मतेर्मन्तारं मन्वीथाः...एष त आत्मा सर्वान्तरः — बृह. ३।४।२

न मत्तोऽन्यत्, अहमेव सर्वम् — भस्मजा.२।१३

न मध्यं नादि नान्तं वा न सत्यं न निबन्धनम् — ते. बिं. ६।५

न मनो नेन्द्रियोऽस्म्यहम् — ते. बिं. ३।४४

न मनो विजिज्ञासीत मन्तारं विद्यात् — कौ. त. ३।८

न मन्त्रं न ध्यानं नोपासितं च न लक्ष्यं नालक्ष्यं न पृथङ्नापृथगहं — प. हं. ९

न मन्वीरन्न विजानीरन्यदा वाव ते स्मरेयुरथ शृणुयुरथ मन्वीरन्निवजानीरन् — छां. ७।१३।१

न ममेति विमुच्यते — शिवो.७।११४

नमश्चण्डिकायै महासिद्धलक्ष्म्यै — वनदु. २६

नमस्कारेण योगेन मुद्रयाऽऽरभ्य चार्चयेत् — ब्र. वि. ९६

नमस्कुर्यात्सदा गुरुम् — शिवो. ७।७

नमस्कृत्वा भूय एवाह कृष्णं — भ.गी.११।३५

नमस्तुभ्यं परेशाय नमो मह्यं शिवाय च — १सं.सो.२।३२

नमस्तुभ्यं वयं त इति ह प्रजापतिर्देवाननुशशास — नृसिंहो. ९।१०

नमस्ते अस्तु भगवति — देव्यु. १२

नमस्ते अस्तु मा मा हिंसीः — वनदु. १६०

नमस्ते अस्तु बाहुभ्यामुतोत इषवे — नीलरु. १।४

नमस्ते अस्तु सुहवो म एधि — चित्यु. १४।२

नमस्तेगणपतये। त्वमेव...तत्त्वमसि — गणप. १

नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परोरजसे सावदोम् — बृह. ५।१४।७

नमस्ते नमः सर्वं ते नमो नमः शिशुकुमाराय नमः — सहवै. २२

नमस्ते पराख्पे नमस्ते पश्यन्तीरूपे ...नमस्ते नमस्ते — अ. मा. ५

नमस्ते भवभामाय — नीलरु. १।४

नमस्ते वायो। त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि — तैत्ति. १।१।१

नमस्ते शारदे देवि काश्मीरपुर-
वासिनि ।...विद्यादानं च देहि मे सरस्व. २६
नमस्तेऽस्तु ब्रह्मन्स्वस्ति मेऽस्तु... कठो. ११९
नमस्तेऽस्तु भगवन् प्रसीदेति होचुः नृसिंहो. ९।१०
नमस्तेऽस्तु याज्ञवल्क्य यो म
एतं व्यवोचः बृह. ३।८।५
नमस्तेऽस्तु याज्ञवल्क्यानु माशाधीति बृह. ४।२।१
नमस्त्वमर्थो(र्थी) विज्ञेयो रामस्त-
त्पदमुच्यते । असीत्यर्थे चतुर्थी
स्यादेवं मंत्रेषु योजयेत् रामर. ५।१४
नमस्तेऽस्त्विमे विदेहा अयमहमस्मि बृह. ४।२।४
नमस्यन्तश्च मां भक्त्या भ.गी.९।१४
नमस्याम धूर्तैरमृतं मृतं चतुर्वे. ८
न महद्वाचो, विग्लापनं गिरा..
नोत्सवदर्शनं तीर्थयात्रावृत्तिः ना. प. ५।६
नमः कमलनेत्राय... कमलापतये नमः गो. पू. ४।६
नमः कल्याणनिधये नमस्तुभ्यं नमोनमः सामर. ४१
नमः पदं सुविज्ञेयं पूर्णानन्दैककारणम् ।
सदा नमन्ति हृदये सर्वे देवा
मुमुक्षवः रामो. ५।३
नमः परमऋषिभ्यः [प्रश्नो. ६।८+ मुंड. ३।२।११
नमः पापप्रणाशाय...तृणावर्तासुहारिणे गो. पू.४।११
नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते भ. गी.११।४०
नमः पृथिव्यै स्वाहा चित्स्यु. ५।२
नमः प्रजापतये नमो ब्रह्मणे आर्षे. १०।४
नमः प्रतीच्यै दिशे याश्चदेवताएतस्यां
प्रतिसंवसन्त्येताभ्यश्च नमः सहवै. २४
नमः प्राच्यै दिशे याश्च देवताएतस्यां
प्रतिसंवसन्त्येताभ्यश्च नमः सहवै. २४
नमः शान्तात्मने तुभ्यं मैत्रा. ५।४
नमः शिवाय गुरवे सच्चिदानन्दमूर्तये निरा.१
नमः शिशुकुमाराय सहवै. २३
नमः सवित्रे प्रसवित्रे नमो भोज्याय ग. पू. १।५
न मातृवधेन न पितृवधेन न स्तेयेन
न भ्रूणहत्यया नास्य पापं च
न चकृषो मुखान्नीलं वेत्तीति कौ. त. ३।१
न मामनीरयित्वा ब्राह्मणा ब्रह्म..
वदेयुरब्रह्म तत्स्यात् २प्रणवो. ८
न मामश्नोति जरिता न कश्चन बा. मं. २०

नमामि त्वामहं देवीं..महाकारुण्य-
रूपिणीम् देव्यु. १९
नमामि दशमं स्थानमहमेकादशं
स्थानं (जानीयात्) नृ. पू. २।३
न मामिमे नूनमित्था पथो विदुः बा. मं. ६
नमामि यामिनीनाथलेखालंकृत-
कुन्तलाम् । भवानीं भवसन्ताप-
निर्वापणसुधानदीम् सरस्व. ३०
नमामीत्याह यथा यजुरेवैतत् अव्यक्तो. ३
नमाम्यनमाम्यहमनहं नृसिंहानुष्टु-
भैव बुबुधिरे नृसिंहो. ६।१
न माया प्रकृतिस्तथा ते. बिं. ६।५
न मामश्नोति परि गोभिराभिः बा. मं. २०
न मांसं समश्नीयात् सहवै. १२
न मां कर्माणि लिम्पन्ति भ. गी.४।१४
न मां दुष्कृतिनो मूढाः भ. गी. ७।१५
न मांसचक्षुषा द्रष्टुं ब्रह्मभूतः
स शक्यते भवसं. ३।७
न मीमांसा-तर्क-ग्रह-गणित-सिद्धांत-
पठनैः.. तत्त्वावाप्तिर्निजगुरुमुखा-
देव हि भवेत् अमन. १।५
न मुखेन धमेदग्निं..न लङ्घयेत् शिवो. ७।६९
न मुमुक्षानमुक्तिश्च इत्येषापरमार्थता ब्र. बिं. १०
न मुमुक्षुर्न वै मुक्त इत्येषा परमार्थता
(वैतथ्यभाष्ये. ३२) २आत्मो. ३
न मे कर्मफले स्पृहा भ.गी. ४।१४
न मे चित्तं न मे बुद्धिः...न मे देहः..
न मे किंचिदिदं...न मे श्रोत्रं..
न मे तुरीयमिति यः स
जीवन्मुक्त उच्यते ते.बिं.४।७-११
न मे ज्ञाता न मे ज्ञानं न मे ज्ञेयं
न मे स्वयम् । न मे तुभ्यं न मे मह्यं
न मे त्वं च न मे त्वहम् ते. बिं. ४।२८
न मे देहेन सम्बन्धो मेघेनेव विहा-
यसः । अतः कुतो मे तद्धर्मा
जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिषु कुंडि. १५
न मे द्वेष्योऽस्ति न प्रियः भ.गी.९।२९
न मेधया न बहुधा श्रुतेन । यमेवैष
वृणुते तेन लभ्यस्तस्यैष आत्मा मुण्ड. ३।२।३

न मे ध्याता न मे ध्येयं न मे ध्यानं
न मे मनुः । न मे शीतं न मे चोष्णं
न मे तृष्णा न मे क्षुधा ते. बिं.४।१८
न मेऽश्वानुत दाश्वानजग्रभीत् बा. मं. २०
न मेऽन्तरायो न च कर्मलोपः हेरम्बो. १३
न मे पार्थास्ति कर्तव्यं भ.गी. ३।२२
न मे पुण्यं न मे पापं न मे कार्यं न
मे शुभम् । न मे जीव इति स्वात्मा
न मे किञ्चिज्जगत्त्रयम् ते. बिं.४।१४
न मे बन्धो न मे जन्म न मे
वाक्यं न मे रविः ते. बिं. ४।१३
न मे बन्धो न मे मुक्तिर्न मे शास्त्रं
न मे गुरुः आत्मप्र. २०
न मे भक्तः प्रणश्यति भ. गी. ९।१३
न मे भोगस्थितौ वाञ्छा १सं. सो.२।३९
न मे मित्रं न मे शत्रुर्न मे मोहो
न मे जयः । न मे पूर्वं न मे पश्चा-
न्न मे चोर्ध्वं न मे दिशः ते. बिं. ४।१९
न मे वक्तव्यमल्पं वा न मे श्रोतव्य-
मण्वपि । न मे गन्तव्यमीषद्वा.. ते. बिं. ४।२०
न मे विदुः सुरगणाः भ. गी. १०।२
न मे स्तेनो जनपदे नकदर्योनमद्यपः छांदो. ५।११।५
नमो अस्तु ब्राह्मणेभ्य इति ह स्माह
...माण्डूकेयः [१ऐत.१।२।४+ १४।३
नमो अस्तु सर्पेभ्यो ये के च
पृथिवीमनु [वनदु. ४८,६१,७३+
[अ. लि. ७।५५।१०+ वा. सं.१३।६
न मोक्षो नभसः पृष्ठे न पाताले न
भूतले । सर्वाशासङ्क्षये चेतःक्षयो
मोक्ष इतीष्यते अ. पू. २।२३
नमो गङ्गायमुनयोर्मध्ये ये वसन्ति
ते मे प्रसन्नात्मानश्चिरं जीवितं
वर्धयन्ति सहवै. २४
नमो गुह्यतमाय च मैत्रा. ५।४
नमोऽग्नये,नम इन्द्राय, नमः प्रजापतये आर्षे. १०।४
नमोऽग्नयेपृथिवीक्षिते..यजमानायधेहि मैत्रा. ६।३५
नमोऽग्नये पृथिवीक्षिते लोकक्षिते
लोकं मे यजमानाय विन्दैष
वै यजमानस्य लोक एतास्मि छांदो. २।२४।५

नमोऽग्नयेऽप्सुमते नम इन्द्राय महाना. ५।१७
नमो ज्ञाननिर्वाणदात्रे नम आनन्द-
स्वरूपिणे सामर. ८२
नमो दक्षिणायै दिशे याश्च
देवता एतस्यां.. ताभ्यश्च नमः सहवै. २४
नमो ज्ञानधर्मदात्रे नमः सुखरूपिणे सामर. ८२
नमो दिवे । नमः पृथिव्यै स्वाहा चित्यु. ५।२
नमो देवेभ्यः स्वधा पितृभ्यो
भूर्भुवः सुवरन्नमोम् महाना. ७।१
नमो देव्यै महादेव्यैशिवायैसततंनमः देव्यु. ५
नमोऽधरायै दिशे याश्च देवताएतस्यां.. सहवै. २४
नमोऽनन्तविहारायनमस्ते रसरूपिणे सामर. ४२
नमोऽनन्ताय महते वैकुण्ठाय श्रीमते.. सामर. ७९
नमो नमश्च मन्त्राश्च इतिहा. १००
नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्वः भ. गी.११।३९
नमो नारायणायेतितारकंचिदात्मकं.. तारसा. १।३
नमो नारायणायेति सप्ताक्षरं भवति ना. पू.ता.३।१
नमो अस्तु नीलशिखण्डाय.. नीलरु. २।२
नमो ब्रह्मणइतिपरिधानीयांत्रिरन्वाह सहवै. १७
नमो ब्रह्मणे नमस्ते वायो तै.उ. १।१+१।२
नमो ब्रह्मणेऽथर्वपुत्राय मीढुषे ग. पू. १।१
नमो ब्रह्मणे धारणं मे अस्त्वनिराकरणं महाना. ७।७
नमो ब्रह्मणे नमः पृथिव्यै नमोऽद्भ्यो
नमोऽग्नयेनमो वायवेनमो गुरुभ्यः कौली. शां.पा.
नमो ब्रह्मणे नमोऽस्त्वग्नये नमः
पृथिव्यै नम ओषधीभ्यः वनदु.१६०
[+सहवै. १६+ वै.आ. २।१२।१
नमो ब्रह्मणे नमो ब्राह्मणेभ्यः... ग. पू. १।५
नमो ब्रह्मणे ब्रह्मपुत्राय तुभ्यं ग. पू. १।२
नमो ब्रह्मणे सर्वक्षिते...
यजमानाय धेहि मैत्रा. ६।३५
नमो भगवति महामाये कालि.. वनदु. २६
नमो भवाय नमः शर्वाय नीलरु. ३।४
नमो मह्यं परेशाय नमस्तुभ्यं शिवाय
च । किं करोमि क गच्छामि किं
गृह्णामि त्यजामि किम् वराहो. २।३५
नमो मित्राय भानवे मृत्योर्मा पाहि सूर्यो. ६
नमो रसात्मने नमो रसलंपटरूपिणे सामर. ८२

नमो रुद्राय प्राह्णये [चित्स्यु. १३।२.
[वा. सं. ३१।२०+ तै.आ. ३।१३।२
नमो रुद्राय विष्णवे मृत्युर्मे पाहि महाना. १६।९
नमो वयं ब्रह्मिष्ठाय कुर्मः बृह. ३।१।२
नमो वाचे नमो वाचस्पतये नमो
विष्णवे बृहते (महते) करोमि सहवै. १६
नमो वामस्तु शृणुत९ हवं मे चित्स्यु. १४।३
नमो वाऽन्तराये दिशे, याश्च देवता
एतस्यां प्रतिवसन्ति ताभ्यश्च नमः सहवै. २४
नमो विज्ञानरूपाय परमानन्दरूपिणे।
कृष्णाय गोपीनाथाय गोविन्दाय
नमो नमः गो. पू. ४।९
नमो वायवेऽन्तरिक्षक्षिते लोकक्षिते
लोकं... लोक एवास्मि छांदो. २।२४।९
(ॐ) नमो विश्वरूपाय विश्व-
स्थित्यन्तहेतवे । विश्वेश्वराय
विश्वाय गोविन्दाय नमोनमः गो.पू. ४।४
नमो वेदादिरूपाय ॐकाराय नमो
नमः । रमाधराय रामाय
श्रीरामायात्ममूर्तये रा. पू. ४।१२
नमो वोऽस्तु भगवतेऽस्मिन्धाम्नि
केन वः सपर्यामेति सहवै. ११
नमो व्रातपतये नमो गणपतये...
वरदमूर्तये नमोनमः गणप. १०
नमोऽस्तु गुरवे तुभ्यं सहजानन्द-
रूपिणे । यस्य वाक्यामृतैर्हन्ति.. अमन. २।९
नमोऽस्तु ते देववर प्रसीद भ.गी. ११।३१
नमोऽस्तु ते सर्वत एव सर्व भ.गी. ११।४०
नमोऽस्तु मम कोपाय स्वाश्रयज्वालिने.. याज्ञव. २४
नमो हिरण्यबाहवे हिरण्यवर्णाय महाना.१०।१९
नम्यन्तेऽस्मैकामाः, तद्ब्रह्मेत्युपासीत।
ब्रह्मवान्भवति तैत्ति. ३।१०।४
न म्रिये न च जीवामि..अहं न किंचि-
द्विदिति मत्वा धीरो न शोचति अ. पू. ५।९१
न म्लेच्छमूर्खपतितैः..क्षुद्रैः
सह न संवदेत् शिवो. ७।८५
न यतेर्देवपूजनोत्सवदर्शनम् १ सं.सो.२।५९
न यतेर्देवपूजा नोत्सवदर्शनं
तीर्थयात्रावृत्तिः ना. प. ५।६
न यतेः किञ्चित्कर्तव्यमस्ति,
अस्ति चेत्सांकर्यम् । तस्मा-
न्मननादौसन्न्यासिनामधिकारः ना. प. ५।८
(अथ) न यद्यत्रात्यमन्ता-
ऽश्रोताऽद्रष्टा...भवति मैत्रा. ६।११
नयनात्तमः स वै हरः ग. शो. ३।४
नयुक्तंदर्शनं गत्वाकालस्यानियमाद्गतौ अ.शां. ३४
न येषु जिह्ममनृतं न माया च प्रश्नो. १।१६
न योगशास्त्रप्रवृत्तिः ...नेतरशास्त्र-
प्रवृत्तिर्यतेरस्ति १सं.सो. २।५९
न योत्स्य इति गोविंदं भ. गी. २।९
न योत्स्य इति मन्यसे भ. गी. १८।५९
नरके नियतं वासः भ. गी. १।४४
नरके यानि दुःखानि...प्राप्यन्ते
नारके राजंस्तेषां सङ्ख्या नविद्यते भवसं. १।६
न रक्तं न रक्तं न रक्तम् ग. शो. २।३
न रक्तमुल्बणं वस्त्रं धारयेत् शिवो. ७।५०
नरशृङ्गेण नष्टश्चेत्कश्चिदस्त्विद-
मेव हि । गन्धर्वनगरे सत्ये
जगद्भवति सर्वदा तै. बिं. ६।७५
न रश्मयः प्रादुर्भवन्ति ३ दैव.३।४।३
न रसं नच गन्धाख्यमप्रमेय-
मनूपमम् [अ. पू. ५।७३+ जा.द. ९।४
न रसायनपानेन न लक्ष्म्यालिङ्गि-
तेन च । न तथा सुखमाप्नोति
शमेनान्तर्यथा जनः महो. ४।३१
नराणां च नराधिपम् भ.गी. १०।२७
नरान्पशून्मृगांश्चागान्हयान्गोव्रजा-
न्सुरान्.. विलोकयतिस्म.. (ब्रह्मा) ग. शो. ३।६
न रात्रौ न च मध्याह्ने सन्ध्ययोर्नैव
पर्यटन् (पर्यटेत सदा योगी
वीक्षयन्वसुधातलम्) ना. प. ४।१९
न रूपं न नाम न गुणं न प्राप्यं
गणेशं मन्यस्ते ग. शो. २।३
न रूपं विजिज्ञासीत रूपविदं विद्यात् कौ. उ. ३।८
न रोगं नोत दुःखता९ सर्व९
ह पश्यः पश्यति छांदो. ७।२६।२

न रोगो मरणं तस्य न निद्रा न क्षुधा तृषा । न च मूर्च्छा भवेत्तस्य यो मुद्रां वेत्ति खेचरीम् — यो. चू. ५३

नवं भृग्वङ्गिरोविद्भ्यः सोमः पातव्य ऋत्विजः पराभवन्ति — २प्रणवो. २०

न लक्ष्यते स्वभावोऽस्याः (भूतमायायाः) वीक्ष्यमाणैव नश्यति — महो. ५।११२

न लिक्षाकर्षणं कुर्यात् — शिवो. ७।५५

न लिप्यते कर्मणा पापकेन — बृह. ४।४।२३

न लिप्यते लोकदुःखेन बाह्यः — कठो. ५।११

न लोकनं नावलोकनं च बाधको न चाबाधकः — प. हं. ९

न लक्ष्यं नालक्ष्यं न पृथङ्नापृथक् — प.हं. ८

नवद्वारे पुरे देही — भ.गी. ५।१३

न वयं विद्म इति होचुस्ततो यूयमेव स्वप्रकाशा इति होवाच — नृसिंहो. ९।८

नव योनीर्नव चक्राणि दधिरे नवैव योगा नव योगिन्यश्च — त्रिपुरो. २

नवरात्रलयेनापि...वाचां सिद्धिर्भवेत्तस्य — अमन. १।५९

न वर्धते कर्मणा नो कनीयान् — बृह. ४।४।२३

नववक्त्रं तु रुद्राक्षं नवशक्त्यधिदैवतम् । तस्य धारणमात्रेण प्रीयन्ते नव शक्तयः — रु. जा. ३४

नवशक्ति(मयं)रूपं श्रीचक्रम् — भावनो. २

न वशो हर्षशोकाभ्यां स समाहित उच्यते — अ. पू. १।३७

नवसूत्रान् परिचर्चितान्, तेऽपि यद्ब्रह्म चरन्ति — पा. ब्र. ४

नवस्त्रिमितिबृहती सम्पद्यमाना.. — १ऐत. ३।६।२

नवस्वेव हि चक्रेषु लयं कृत्वा... — योगरा. ५

न वक्तव्याः श्राद्धकर्मबहिष्कृताः — इतिहा.७२-७६

नवचक्रं षडाधारं त्रिलक्ष्यं व्योमपञ्चकम् । सम्यगेतन्न जानाति स योगी नामतो भवेत् — मं. ब्रा. ४।१

नवदूर्वासदृशी प्रियेऽस्तु दुर्गा — वनदु. १

न वदेयस्य कस्यापि किन्तु शिष्याय वा वदेत् — ना. पू. ता. ३।२

नवद्वारमलस्रावं (देहं)...दुर्गन्धं दुर्मलोपेतं स्पृष्ट्वा स्नानं विधीयते — मैत्रा. २।६

नवद्वारं पुरं कृत्वा गवाक्षाणीन्द्रियाण्यपि । सा पश्यत्यन्ति वहति.. — गुह्यका. ३३

नवद्वारे पुरे देही हंसो लेलायते बहिः — श्वेताश्व. ३।१८

नवद्वारे पुरे देहे ममत्वं च.. — दुर्वासो. २।८

न वधेनास्य हन्यते [छांदो.८।१।५ — १०।२,४

नवप्रसूतस्य परादयं चाहमिदं मम । इति यः प्रत्ययः स्वस्थस्तज्ज्ञात्प्रागभावनात् — महो. ५।१२

नव ब्रह्माख्यनवगुणोपेतं ज्ञात्वा नवमानमितस्त्रिगुणीकृत्य...मूलमेकं सत्यं मृण्मयं विज्ञातं स्यात् — परब्र. ४

नवभिर्व्योमरन्ध्रैः शरीरस्य वायवः कुर्वन्ति विण्मूत्रादिविसर्जनम् — शाण्डि. १।४।८

नवममाकाशचक्रं, तत्र षोडशदलपद्ममूर्ध्वमुखं तन्मध्यकर्णिकात्रिकूटाकारम् — सौभाग्य. ३२

नवमं व्योमचक्रं स्याद्दलैः षोडशभिः.. — योगरा. १७

नवमासलयेनापिपृथ्वीतत्त्वं स गच्छति — अमन. १।७४

नवमेन तु पिण्डेन सर्वेन्द्रियसमाहृतिः — पिण्डो. ८

नवमे धामनि पुनरागस्त्यं वाग्भवं ...षण्मुखीयं विद्या — त्रि. ता. १।१६

नवमे सर्वाङ्गसम्पूर्णो भवति — निरुक्तो. १।४

नवम्यां (मात्रायां) तु महर्लोकं दशम्यां तु जनं व्रजेत् — ना. बि. १६

नववक्त्रं तु रुद्राक्षं नवशक्त्यधिदैवतम् । तस्य धारणमात्रेण प्रीयन्ते नव शक्तयः — रु. जा. ३४

नवशक्तिरूपं श्रीचक्रम् — भावनो. २

न वा अजीविष्यमिमानखादन्निति होवाच काम उदपानमिति — छांदो. १।१०।४

न वा अरे क्षत्रस्य कामाय क्षत्रं प्रियं भवति । आत्मनस्तु कामाय क्षत्रं प्रियं भवति [बृह.२।४।५+ — ४।५।५

न वा अरे जायायै कामाय जाया प्रिया भवति [बृह. २।४।५+ — ४।५।६

न वा अरे देवानां कामाय देवाः प्रिया भवन्ति [बृह. २।४।५+ — ४।५।५

न वा अरे पत्युः कामाय पतिः
प्रियो भवति [बृह. २।४।५+ ४।५।६
न वा अरे पशूनां कामाय पशवः
प्रिया भवन्ति, आत्मनस्तु कामाय.. बृह. ४।५।६
न वा अरे पुत्राणां कामाय पुत्राः
प्रिया भवन्ति [बृह. २।४।५+ ४।५।६
न वा अरे बाह्यो नान्तरः सर्व-
विद्भारूपः (आत्मा) आर्षे. ९।२
न वा अरे ब्रह्मणः कामाय ब्रह्म
प्रियं भवति [बृह. २।४।५+ ४।५।५
न वा अरे भूतानां कामाय भूतानि
प्रियाणि भवन्ति [बृह. २।४।९+ ४।५।९
न वा अरे लोकानां कामाय लोकाः
प्रिया भवन्ति [बृह. २।४।५+ ४।५।६
न वा अरे वित्तस्य कामाय वित्तं
प्रियं भवति, आत्मनस्तु कामाय.. बृह. २।४।५
न वा अरे वेदानां कामाय वेदाः
प्रिया भवन्ति, आत्मनस्तु.. बृह.४।५।६
न वा अरे सर्वस्य कामाय सर्वं
प्रियं भवति [बृह. २।४।५+ ४।५।५
नवाअरेऽहंमोहंब्रवीमि [बृ.उ.२।४।१३ +४।५।१४
न वा अहमिमं विजानामि बृह. ४।५।१४
न वाक्यं न पदं वेदं नाक्षरं न
जडं कचित् ते. बिं. ६।४
न वागाच्छति नो मनः (ब्रह्मणि) केनो. १।३
न वाचं विजिज्ञासीत, वक्तारं विद्यात् कौ. त. ३।८
नवाधिकशतं शाखा यजुषो
मारुतात्मज मुक्तिको.१।१२
नवानां चक्रा अधिनाथा स्योना नव
भद्रा नव मुद्रा महीनाम् त्रिपुरो. २
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि भ. गी. २।२२
न वायुर्नाग्निर्नाकाशो नापः पृथ्वी नच.. ग. शो. २।३
न वायुः स्पर्शदोषेण नाग्निर्दहनकर्मणा १सं. सो.२।७२
न विकल्पितुमर्हसि भ. गी. २।३१
न विचित्तं प्रकुर्वीत दिशश्चैवावलोकयन् शिवो. ७।५७
न विज्ञातं वदन्ति, न विज्ञातं
पश्यन्ति (पशवः).. १ऐत. ३।२।४
न विज्ञातेर्विज्ञातारं विजानीयाः बृह. ३।४।२

न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यो लप्स्यामहे
वित्तमद्राक्ष्म चेत्त्वा कठो. १।२७
न विन्दति नरो योगं पुत्रदारादिसङ्गतः शिवो. ७।१०३
न विद्मो न विजानीमो यथैत-
दनुशिष्यात् केनो. १।३
न विद्यामूषरे वपेत् संहितो. ३।४
न विधिर्न निषेधश्च न वर्ज्यावर्ज्य-
कल्पना । ब्रह्मविज्ञानिनामस्ति.. ना. प. ६।२१
न विना प्रमाणेन प्रमेयस्योपलब्धिः मैत्रा. ६।१४
न विमुञ्चति दुर्मेधाः भ.गी. १८।३५
न विशेच्च गृहाद्गृहम् शिवो. ७।६१
न विश्वस्तैजसः प्राज्ञो विराट्
सूत्रात्मकेश्वराः ते. बिं. ६।१०
न विषं विषमुच्यते महो. ३।१४
न विस्रंसन्त इव न स्खलन्तीव
न पर्यावर्तन्त इव आर्षे. ३।२
न वृक्षमारोहणमपि (कुर्यात्) ना. प. ७।१
न वृक्षमारोहेन्न यानादिरूढो...
नानृतवादी ना. प. ९।८
न वेत्ता वेदनं वेद्यं न जाग्रत्स्वप्नसुप्तयः ते. बिं. ६।८
न वेद यज्ञाध्ययनैर्न दानैः भ. गी. ११।४८
न वेद सत्यो न च तर्कबाधा न
धारणाध्यानसमाधयोऽपि मनु.सा. ६
न वेद सुकृतस्य पन्थानमिति २ऐत. २।४।१,२
न वेद दिवा न नक्तमासीदव्याहृतम् अन्यक्तो. ६
न वेदैर्नयज्ञैर्न तपोभिरुग्रैर्न साङ्ख्यैर्न
योगैर्नाश्रमैर्नान्यैरात्मानमुपलभन्ते सुबालो. ९।१४
न वै कार्यं करणम् ग. शो.४।१
न वै जातु युष्माकमिमं
कश्चिद्ब्रह्मोद्यं जेता बृह. ३।८।१२
न वै तत्र न निम्लोच नोदियाय
कदाचन छांदो. ३।११।२
न वै तत्र निम्लोचो नोदियाय(मा.पा.) छांदो. ३।११।२
न वै देवा अश्नन्ति न पिबन्त्ये-
तदेवामृतं दृष्ट्वा तृप्यन्ति छांदो. ३।६।१
[+३।७।१+३।८।१
न वै नूनं भगवन्तस्त एतदवेदिषुः छांदो. ६।१।७
न वै मत्परं किञ्चिद्विश्वस्या-
दिरहं हरः.... ग. शो. ३।१३

न वै मा प्रतिमास्ति भो इति छांदो. ६।७।२

न वै शूरं परस्मै वृणीते कौ. त. ३।१

न वै वरोऽवरस्मै वृणीते (मा.पा.) कौ. त. ३।१

न वै वाचो न चक्षूंषि न श्रोत्राणि न मनांसीत्याचक्षते प्राणा इत्येवाचक्षते छान्दो. ५।१।१५

न व्याख्यामुपयुंजीत नारम्भानारभेत्क्वचित् ना. प. ५।३७

न वै शक्ष्यामस्त्वदृते जीवितुम् बृह. ६।१।१३

न वै सशरीरस्य सतः प्रियाप्रिययोरपहतिरस्त्यशरीरं वा प्रियाप्रिये न स्पृशतः छांदो. ८।१२।१

न वै सोम्यास्मत्कुलीनोऽननूच्य ब्रह्मबन्धुरिव भवति छान्दो. ६।१।१

न शक्नोषि मयि स्थिरम् भ. गी. १२।९

न शक्यते मनो जेतुं विना युक्तिमनिन्दिताम् अ. पू. ४।९०

न शब्दं न स्पर्शं न रूपं न रसं न गन्धं च न मनोऽपि प. हं. ३

न शब्दं विजिज्ञासीत श्रोतारं विद्यात् कौ. त. ३।८

न शत्रुर्मित्रपुत्रादिर्न माता न पिता स्वसा । न जन्म न मृतिर्वृद्धिर्न देहोऽहमिति भ्रमः ते. बिं. ५।१६

न शशाङ्को न पावकः भ. गी. १५।६

न शापेन विना सिद्धिर्दृष्टा चैव जगत्त्रये योगकुं. २।१२

न शिष्याननुबध्नीत ग्रन्थान्नैवाभ्यसेद्बहून् ।...नारम्भानारभेत्क्वचित् ना. प. ५।३४

न शीतं न चोष्णं न सुखं न दुःखं न निद्रा न मानावमाने च...परित्यज्य कटिसूत्रं च...जातरूपधरश्चरेदात्मानमन्विच्छेत् ना. प. ३।८७

न शीतं न चोष्णं न सुखं न दुःखं न मानावमान इति षडूर्मिवर्जितः प. हं. ३

न शीतं नोष्णं न वर्षं च ग. शो. २।३

न शुक्लं न रक्तं न पीतं न कृष्णं ग. शो. ३।२

न शुश्रूषार्थमासाद्य न च धर्मः प्रदृश्यते । न शक्तिर्न बलं वीर्यं न तस्मात्पापहेतुकः शिवो. ७।६५

न शूद्र-स्त्री-पतितोदक्या सम्भाषणं न यतेर्देवपूजा नोत्सवदर्शनं ना. प. ५।६

न शूद्र-स्त्री-पतितोदक्या सम्भाषणं न यतेर्देवपूजनोत्सवदर्शनम् सं. सो. २।१९

न शून्यं नापि चाका- (रो) री न दृश्यं नापि दर्शनम् महो. २।६६

न शून्ये न च दुर्गे वा प्राणिबाधाकरे न च । एकरात्रं वसेद्ग्रामे पत्तने तु दिनत्रयम् ना. प. ४।२०

न शृणोति न पश्यति न वाचा वदत्यथास्मिन्प्राण एवैकधा भवति कौ. त. ३।३

न शोकार्तश्च क्रन्तिष्ठेत् शिवो. ७।५७

न शोकोऽस्ति न मोहोऽस्ति न जराऽस्ति न जन्म वा महो. ६।१३

न शोचति न काङ्क्षति [भ.गी. १२।१७ +१८।५४

न शोचते न चोदेति स जीवन्मुक्तः म. वा. १. ८

न शोषयति मारुतः भ.गी. २।२३

न शौचं नापि चाचारः भ. गी. १६।७

नश्यत्सु न विनश्यति भ. गी. ८।२०

न श्रीर्नाश्रीर्न लोकता (चिन्तनाशे) अ. पू. ४।२१

न श्रुतेः श्रोतारं शृणुयात् बृह. ३।४।२

न श्रोतव्यमन्यत्किञ्चित्प्रणवादन्यं न तर्कं पठेत् ना. प. ५।६

न श्रोष्यसि विनङ्क्ष्यसि भ.गी. १८।५८

न श्लिष्यते यतिः किञ्चित्कदाचिन्नाविकर्मभिः अध्यात्मो. ५१

न श्वेतं न श्वेतं न श्वेतम् ग. शो. ३।१

नष्टं नष्टमुपेक्षस्व प्राप्तं प्राप्तमुपाहर महो. ५।१७०

नष्टं प्राप्तमसन्मयम् । दुःखाद्युत्तमबुद्धिर्हि ते. बिं. ३।५५

नष्टात्मानोऽल्पबुद्धयः भ. गी. १६।९

नष्टान्तःकरणस्तं मं देहमोहं कथं भवेत् अमन. २।८०

नष्टे पापे विशुद्धं स्याच्चित्तदर्पणमद्भुतं जा. द. ६।४६

नष्टेष्टानिष्टकल्पः सन्किमात्मपरोक्षयतम् म. वा. १. ९

नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा भ.गी. १८।७३

न सकामेऽङ्गचेष्टासु न चिन्तासु न वस्तुषु अ. पू. ४।१८

न स्त्रियमुपेयात् सहवै. १२
न स्थूलं नास्थूलं न ज्ञानं नाज्ञानं
नोभयतःप्रज्ञम् ना. प. ९।२०
न स्नानं न जपः पूजा न होमो
नैव साधनम् (सन्न्यासिनः).. ना. प. ६।३९
न स्वधर्मातिक्रमेणाश्रमी भवति मैत्रा. ४।३
न स्वप्रकाशे सर्वसाक्षिण्यविक्रिये-
ऽद्वये पश्यत नृसिंहो.९।६
न स्वर्गं लोकमतिनयेदिति छांदो. १।८।५
न स्विदेतेऽप्युच्छिष्टाइति न वा अजी-
विष्यमिमां न खादन् छांदो.१।१०।४
न हन्ति न निबध्यते भ. गी.१८।१७
न हत्वाहमप्रणीय स्वविष्ठामित्थाजहामि बा.मं. ७
न हन्यते हन्यमाने शरीरे
[कठो. २।१८+ भ. गी. २।२०
न हन्यमानेऽपि देहे (?) (मा.पा.) कठो. २।१८
न ह पुरा ततः संवत्सर आस बृह. १।२।४
न हर्षामर्षसंविदः अ. पू. ४।२२
न ह वा असंविदाना एवद्रागिवाभि
सूत्पद्यस्त इति आर्षे. ६।१
न ह वा अस्मा उदेति न निम्लोचति छांदो.३।११।३
न ह वा अस्यानन्नं जग्धं भवति बृह. ६।१।१४
न ह वा एतस्यर्चा न यजुषा न
साम्नाऽर्थोऽस्ति यः सावित्रं वेद नृ. पू. ।३४
न ह वा एतस्य साम्ना नर्चा न
यजुषार्थो नु विद्यते अव्यक्तो.४
न ह वा एनत्केचिद्रूपभ्रावन्तो
विन्दन्ति नाभिपश्यति आर्षे. ३।२
न ह वा एनं मिथुचिदेमीति शौनको. ४।३
न ह वा एवंविदि किञ्चनानन्नं भवति छान्दो. ५।२।१
न ह वा एष परमतीवोदेति आर्षे. ६।३
न ह वा महीयांसो भागक्लृप्ति-
मप्यायजन्ति शौनको. १।४
न ह वाव तस्तथेन निष्क्रमे इममेवे-
त्यञ्जलिं कृत्वोपास्थिषत छाग. ६।४
(स होवाच) न ह वावैष स्वद्भाग-
धेयी भवति शौनको. १।४
न ह वैतद्वायव्या एकं च न पदं प्रति(मा.) बृ.उ.५।१४।५
न ह वै देवान् पापं गच्छति बृह. १।५।२०
न ह वै परमित्था कश्चनाश्रोत्य-
संविदान इव आर्षे. ८।१
न ह वै सशरीरस्य सतः प्रिया-
प्रिययोरपहतिः (मा. पा.) छां.उ.८।१२।१
न हाप्सु प्रैत्यप्सुमान् भवति छा.उ. २।४।२
न हास्मात्पूर्वाः प्रजाः प्रैति कौ. उ. २।१०
न हास्मात् पूर्वाःप्रजाःप्रयन्तीति कौ. उ. २।८
न हास्य कर्म क्षीयते बृह. १।४।१५
न हास्य प्रियं प्रमायुकं भवति बृह. १।४।८
न हास्य प्रियं प्रमायुक्तं भवति (मा.पा.) बृह. १।४।८
न हास्योद्ग्रहणायेव स्याद्यतो यतस्त्वा-
ददीत लवणमेव बृह. २।४।१२
नहि कल्याणकृत्कश्चित् भ. गी. ६।४०
नहि कश्चन शक्नुयात्सकृद्वाचा नाम
प्रज्ञापयितुम् कौ. उ. २।३
नहिकश्चित्क्षणमपिजातु तिष्ठत्यकर्मकृत् भ. गी. ३।५
नहि किञ्चित्स्वरूपोऽस्मि निर्व्यापार-
स्वरूपवान् ते. बिं. ३।४४
नहि घ्रातुर्घ्रातेर्विपरिलोपो विद्यते-
ऽविनाशित्वात् बृह. ४।३।२४
नहि चञ्चलताहीनं मनः क्वचन दृश्यते।
चञ्चलत्वं मनोधर्मो वह्नेर्धर्मो
यथोष्णता महो. ४।९९
नहि जनिर्मरणं गमनागमौ नच मलं
विमलं न च वेदनम्। चिन्मयं
हि सकलं विराजते... वराहो. ३।५
नहि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते भ. गी. ४।३८
न हि तृप्तेः परं सुखम् यो. शि.२।२१
नहि तेभगवन्व्यक्तिं विदुर्देवानदानवाः भ.गी. १०।१४
न हि देहभृता शक्यं त्यक्तुं कर्माण्य-
शेषतः [भ. गी. १८।११+ भवसं. १।५२
न हि द्रष्टुर्दृष्टेर्विपरिलोपो विद्यते-
ऽविनाशित्वात् बृह. ४।३।२३
न हिनस्त्यात्मनाऽऽत्मानं भ.गी.१३।२९
नहि नानास्वरूपं स्यादेकंवस्तुकदाचन वराहो. ३।१
नहि पथ्यमपथ्यं वा रसाः सर्वेऽपि
नीरसाः यो. चू. ६।८१

नहि प्रजानामि तव प्रवृत्तिं भ.गी. ११।३१
नहि प्रज्ञापेत उपस्थ आनन्दं रतिं
  प्रजातिं कञ्चन प्रज्ञापयेत् कौ. त. ३।७
नहि प्रज्ञापेतं चक्षू रूपं किञ्चन
  प्रज्ञापयेत् कौ. त. ३।७
नहि प्रज्ञापेतं शरीरं सुखं दुःखं
  किञ्चन प्रज्ञापयेत् कौ. त. ३।५
नहि प्रज्ञापेतं श्रोत्रं शब्दं कञ्चन
  प्रज्ञापयेत् कौ. त. ३।७
नहि प्रज्ञापेतः प्राणो गन्धं कञ्चन
  प्रज्ञापयेत् कौ. त. ३।७
नहि प्रज्ञापेता जिह्वाऽन्नरसं कञ्चन
  प्रज्ञापयेत् कौ. त. ३।७
नहि प्रज्ञापेता धीः काचन सिद्ध्येन्न
  प्रज्ञातव्यं प्रज्ञायेत कौ. त. ३।७
नहि प्रज्ञापेता वाङ्नाम किञ्चन
  प्रज्ञापयेत् कौ. त. ३।७
नहि प्रज्ञापेतौ पादावित्यां काञ्चन
  प्रज्ञापयेताम् कौ.त. ३।७
नहि प्रज्ञापेतौ हस्तौ कर्म किञ्चन
  प्रज्ञापयेताम् कौ. त. ३।७
न हि प्रतीक्ष्यते मृत्युः कृतं वाऽस्य
  न वा कृतम् भवसं. १।३८
नहि प्रपश्यामि ममापनुद्यात् भ. गी. २।८
नहि प्रवेद सुकृतस्य पन्थाम्
  [ऋ.अ.८।२।२२=मं.१०।७१।६
  [ना.पू.ता.४।८+सहवै. १९+ तै.आ. १।३।२
नहि बीजस्य स्वादुपरिग्रहोऽस्तीति... मैत्रा. ६।१०
नहि भवन्त्यहिति जातविवेकः शुद्धा-
  द्वैतब्रह्माहमिति भिदागंधं निरस्य
  ...परिपक्वो भवति मं.ब्रा. २।७
नहि मन्तुर्मतेर्विपरिलोपो विद्यते-
  ऽविनाशित्वात्, न तु तद्द्वितीय-
  मस्ति, ततोऽन्यद्विभक्तं यन्मन्वीत बृह. ४।३।२८
नहि मरणप्रभवप्रणाशहेतुर्मम
  चरणस्मरणाहतेऽस्ति किञ्चित् वराहो. ३।१२
नहि रसयितु रसयतेर्विपरिलोपो
  विद्यतेऽविनाशित्वात् बृह. ४।३।२५

नहिवक्तुर्वक्तेर्विपरिलोपो विद्यते-
  ऽविनाशित्वात् बृह. ४।३।२६
नहि विज्ञातुर्विज्ञातेर्विपरिलोपो
  विद्यतेऽविनाशित्वात् बृह. ४।३।३०
न हि शीर्यतेऽसङ्गो नहि सज्जते म.वा.र. १२
न हि श्रोतुः श्रुतेर्विपरिलोपो
  विद्यतेऽविनाशित्वात् बृह.४।३।२७
न हि साध्यसमो हेतुः सिद्धौ
  साध्यस्य युज्यते अ. शां. २०
न हि सुज्ञेय अणुरेष धर्मः-(मा.पा.) कठो. १।२१
न हि सुविज्ञेयमणुरेष धर्मः कठो. १।२१
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति
  मुखे मृगाः भवसं. १।४२
न हि स्प्रष्टुः स्पृष्टेर्विपरिलोपो विद्यते-
  ऽविनाशित्वात्, नतुतद्द्वितीयमस्ति बृह. ४।३।२९
न हीदं सर्वं स्वत आत्मवित् नृसिंहो. ८।३
न हृष्यति ग्लायति यः सजीवन्मुक्तः म.वा.१.८
न हेम कटकात्तद्वज्जगच्छब्दार्थतापरा महो.४।४६
न हैव तद्गायत्र्या एकं च न पदं प्रति बृह.५।१४।५
न हैव शक्नुवत इति नास्येशीमहि आर्षे.१।२
न हैवालं मार्येभ्यो भवति बृह.१।३।१८
न हैवालोकताया आशाऽस्ति य एव-
  मेतत्साम वेद बृह.१।३।२८
न हैवास्मै स काम ऋध्यते (मा.पा.) बृह. ५।१४।७
नहैवास्मैसकामःसमृद्धयते [गायत्र्यु.५ बृह. ५।१४।७
न हैवैनं तृण्वीयातां कौ.त. २।१३
न ह्योत्तमातधम उपनेतेति छाग.२।४
न ह्यत्यायन् पूर्वे, येऽस्यायंस्ते
  ह पराबभूवुः १ऐत. १।१।१
न ह्यत्र किञ्चानुभूयते नृसिंहो. ९।६
न ह्यत्रोद्वस्मना गतिः मैत्रा. ६।१०
न ह्यध्रुवैः प्राप्यते हि ध्रुवं तत् कठो. २।१०
न ह्यन्यतरतो रूपं किञ्चन सिद्ध्येत् कौ.त. ३।९
न ह्यन्यदस्त्यप्रमेयमनात्मप्रकाशम् नृसिंहो. ५।३
न ह्ययमोतो नानुज्ञाताऽसङ्गत्वा-
  दविकारित्वादसत्त्वात्.. नृसिंहो. ८।३
न ह्ययमोतो नानुज्ञातैवदात्म्यंहीदंसर्वं नृसिंहो. ८।५
न ह्यशब्दमिवेहास्ति, चिन्मयो ह्यय-
  मोङ्कारश्चिन्मयमिदं सर्वम् नृसिंहो. ८।२

न ह्यसन्न्यस्तसङ्कल्पः भ. गी. ६।२
न ह्यस्ति द्वैतसिद्धिः,आत्मैव सिद्धः नृसिंहो. ९।१
न ह्यस्य प्राच्यादिदिशः कल्पन्ते मैत्रा. ६।१७
न ह्येतस्मादितिनेत्यन्यत्परमस्त्यथ
नामधेयम् बृह.२।३।६
न ह्येतन्निरात्मकमपि नात्मा पुरतो
हि सिद्धः नृसिंहो. ९।६
न ह्येष कदाचन संविशति आ च
पराच... पथिभिश्चरन्तं.. १ ऐत. १।६।२
नाकर्मसु नियोक्तव्यं नानार्येण
सहावसेत् महो. ४।२२
नाकस्य पृष्ठमभिसंवसानो वैष्णवीं
लोक इह मादयन्ताम् महाना. ६।१९
नाकस्य पृष्ठमारुह्य गच्छेद्ब्रह्मसलोकतां महाना. ५।२०
नाकस्य पृष्ठे ते सुकृतेऽनुभूत्वेमं
लोकं हीनतरं वा विशन्ति मुण्ड. १।२।१०
नाकस्य पृष्ठे महतो वसन्ति परं
धाम त्रैपुरं चाविशन्ति [त्रि.महो.७ +त्रिपुरो. ७
नाकाशस्य घटाकाशो विकारा-
वयवौ यथा अद्वैत. ७
नाकाशी कर्णं च चतुर्ऋचो भवति संहितो.५।१
नाकृतेन कृतेनार्थो न श्रुतिस्मृति-
विभ्रमैः । निर्मन्दर इवाम्भोधिः
स तिष्ठति यथास्थितः महो. ४।४१
नाकृतेनेह कश्चन भ. गी. ३।१०
नाकृत्वा निस्तिष्ठति कृत्वैव
निस्तिष्ठति कृतिरस्त्वेव छां. ७।२१।१
नाग-कूर्म-कृकर-देवदत्त-धनञ्जया
उपप्राणाः पैङ्गलो. २।३
नागदन्तादिसम्भूतं चतुरस्रं सु-
शोभनम् । हेमरत्नचितं वापि
गुरोरासनमुत्तमम् शिवो. ७।६४
नागमेवाप्येति यो नागमेवास्तमेति सुबालो. ९।१३
नागः कूर्मोऽथ(मेश्च) कृकरो देवदत्तो
धनञ्जयः [ब्र.वि. ६७+ यो. चू. २३
नागादिवायवः पञ्च त्वगस्थ्यादिषु
संस्थिताः [त्रि. ब्रा. २।८२+ जा.द. ४।३०
नागादिवायवः पञ्च त्वगस्थ्यादि-
सम्भवाः शांडि. १।४।८

नागाननोऽहं नमतां सुसिद्धः हेरम्बो. १२
नाग्निर्न पृथ्वी न तेजोनवायुर्नव्योम.. ग. शो. ३।२
नाग्नौ प्रमीयते सहवै. २३
नाङ्गेन विमूर्च्छति, सर्वमायुरेति छांदो.२।१९।२
नाचार्यहासीति न ब्राह्मणहासीति छांदो.७।१५।३
नान्येषु सर्वधर्मेषु शाश्वताशाश्वताभिधा अ.शां. ६०
नाडीनामाश्रयः पिण्डो नाड्यः
प्राणस्य चाश्रयः वराहो.५।५४
नाडीभ्यां वायुमाकृष्य कुण्डल्याः
पार्श्वयोः क्षिपेत् । धारयेदुदरे पश्चात्.. यो.शि. १।९३
नाडीभ्यां वायुमारोप्य नाभौ तुन्दस्य
पार्श्वयोः । घटिकैकां वहेद्यस्तु
व्याधिभिः स विमुच्यते शांडि.१।७।४९
नाडीशुद्धिमवाप्नोति पृथक्चिह्नोप-
लक्षितः । शरीरलघुता दीप्तिर्वह्नेः जाद.५।११
नाडीशुद्धिं च कृत्वाऽऽदौ प्राणायामं
समाचरेत् म. ब्रा. ट. १
नाडीपुञ्जं सदा सारं नरभावं
महामुने । समुत्सृज्यात्मना-
ऽऽत्मानमहमित्यवधारय जा. द. ४।६१
(एवं) नाडीस्थानं वायुस्थानं
तत्कर्म च सम्यग्ज्ञात्वा
नाडीसंशोधनं कुर्यात् शाण्डि.१।४।९
नाड्यः प्राणस्य चाश्रयः वराहो. ५।५४
नातपस्कस्यात्मज्ञानेऽधिगमःकर्मशुद्धिर्वा मैत्रा. ४।२
नातः परं वेदितव्यं हि किञ्चित् श्वेता. १।१२
नातिक्रामेद्बृहंमोहाद्यत्र दोषो न विद्यते १संसो. २।६३
नातिद्युम्नेच न ब्राह्मणं ब्रूयात् ३ ऐत.१।२।४
नातिभ्रमणशीलः स्यात् शिवो. ७।६१
नात्मज्ञस्यैष विषय आत्मज्ञो ह्यात्म-
मात्रदृक् [अ.पू. ४।३+ वराहो. ३।२७
नात्मनो बोधरूपस्य मम ते सन्ति
सर्वदा । इति यो वेद वेदान्तैः
सोऽतिवर्णाश्रमी भवेत् ना. प. ६।१७
नात्मभावेन नानेन न स्वेनापि
कथञ्चन । न पृथङ्नापृथ-
क्किञ्चिदिति तत्त्वविदो विदुः कैवल्य ३५
नात्मा देहो नेन्द्रियाण्यन्तरङ्गं
नाहङ्कारः साक्षी नित्यःप्रत्यगात्मा अथर्व. ३।२७

नात्मानमवसादयेत् भ.गी. ६।१६
नात्मानं न परं चैव न सत्यं
नापि चानृतम् आगम. १२
नात्मानं माया स्पृशति नृ.पू. ५।२
नात्मा मनुष्यो न च देवयक्षौ.. भवसं. २।२६
नात्मेन्द्रियमनोबुद्धिगोचरं कर्म... आयुर्वे. ४
नात्यर्थं सुखदुःखाभ्यां शरीरमुप(घात)-
तापयेत् [कठरु.७+ कुंडिको. ११
[२संन्यासो. १३+ कठश्रु. २७
नात्यश्नतस्तु योगोऽस्ति भ. गी. ६।१६
नात्युच्छ्रितं नातिनीचं चैलाजिन-
कुशोत्तरम् [१यो.त.३५+ भ. गी. ६।११
नात्र काचन भिदाऽस्ति म. वा. र. ४
नात्र तिरोहितमिवास्ति बृ. उ. १।३।२८
नात्र मित्रामित्रादिविचारणा तारोप. ५
नात्र ह्यत्यंतसंवासो लभ्यते
येन केनचित् भवसं. १।२०
नाथ रुद्रो नेश्वरो न बिन्दुर्नो कलेति स्वसंवे. १
नाद एवानुसन्धेयो योग-
साम्राज्यमिच्छता वराहो. २।८
नादकोटिसहस्राणि...लयं यान्ति
ब्रह्मप्रणवनादके ना. बिं. ५०
नादत्ते कस्यचित् पापं भ. गी. ५।१५
नादबिन्दुकलाध्यात्मस्वरूपं च...
निरतिशयाद्वैतपरमानन्दलक्षण-
मादिनारायणं ध्यायेत् त्रि.म.ना.७।१२
नादरूपं भ्रुवोर्मध्ये मनसो मण्डलं
विदुः [यो. शि. १।१७८ +५।१५
नादरूपापराशक्तिर्ललाटस्यतुमध्यमे यो. शि.६।४८
नादर्शमन्यत्रमना अभूवं नाश्रौषमिति बृह. १।५।३
नादस्वरूपो भरतः तारसा. ३।८
नादः षष्ठाक्षरो भवति रामो. १।२
नादः षष्ठकूटाक्षरो भवति श्रीवि.ता. १।२
नादः सन्धानम् गणप. ७
नादाधारा समाख्याता ज्वलन्ती
नादरूपिणी वराहो. ५।२९
नादान्तर्ज्योतिरूपकः ते. बिं. ५।५
नादान्तर्ज्योतिरेव सः ते. बिं. ५।६,७
नादान्ते परमात्मनि सम्प्रतिष्ठाप्य
ध्यायीतेशानम् अ. शिखो. ३
नादाभिव्यक्तिरित्येतच्चिह्नं तत्सिद्धि-
सूचकम् । यावदेतानि सम्पश्ये-
त्तावदेवं समाचरेत् जा. द. ६।१२
नादासक्तं सदा चित्तं विषयं नहि
काङ्क्षति ना. बिं. ४३
नादे चित्तं विलीयते ना. बिं.४१
नादेन ब्रह्म विजिज्ञासस्व गान्धर्वो. १
नादोऽन्तरङ्गसारङ्गबन्धनेवागुरायते ना. बिं. ४५
नादो बिन्दुश्च चित्तं च त्रिभिरैक्यं
प्रसाधयेत् यो. शि.६।७२
नादो महाप्रभुर्ज्ञेयो, भरतःशङ्खनामकः तारसा. २।४
नादो यावन्मनस्तावन्नादान्तेऽपि
मनोन्मनी ना. बिं. ४८
नादो वै ब्रह्म गान्धर्वो. १
नादोऽहं, बिन्दुरहम् अद्वैतो. १
नादो हि भूतानामानन्दः गान्धर्वो. ६
नाद्वैतवादं कुर्वीत गुरुणा सह.. यो.शि. ५।५९
नाधमानोवृषभंचर्षणीनां [चित्त्यु.१५।३ तै.आ.३।१५।२
नाधार्मिकतृषाक्रान्ते न दंशमशका-
वृते.. देशे रोगप्रदे वसेत् शिवो. ७।८६
नाधो त्याज्यं नाधो त्याज्यं (भस्मापः) भस्मजा. १।५
नाध्यात्मिकं नाधिभूतं नाधिदैवं
न मायिकम् ते. बिं. ६।९
नाध्वनि प्रमीयते सहवै. २३
नानधीतवेदायोपदिशेत् मुद्गलो. ४।१
नानन्दं न निरानन्दं न चलं नाचलं
स्थिरम् । न सन्नासन्न चैतेषां
मध्यं ज्ञानिमनो विदुः महो. ५।९८
नानन्दंनरतिंनप्रजातिं विजिज्ञासीता-
नन्दस्य रतेः प्रजातेर्विज्ञातारं विद्यात् कौ. त. ३।८
नानन्नं परिगृहीतं (भवति) बृह.६।१।१४
नानपत्यः प्रमीयते लघ्वाहारो भवति सहवै. २३
नानया ज्ञातयाभूयो मोहपङ्केनिमज्जति महो. ५।२१
नानवाप्तमवाप्तव्यं भ.गी.३।२२
नाना तु विद्या चाविद्या च, यदेव
विद्यया करोति श्रद्धयोपनिषदा
तदेव वीर्यवत्तरं भवति छांदो.१।१।१०

नानात्ममेवहीनोऽस्म्यहमखण्डानन्दविग्रहः मैत्रे. ३।८
नानात्ययानां रसानां समवहार-
मेकतां गमयन्ति (मा.पा.) छां.उ. ६।९।१
नानात्ययानां वृक्षाणा ५ रसान्
समवहारमेकता ५ रसं गमयति छां. उ.६।९।१
नानात्वमस्ति कलनासु न वस्तुतोऽन्तः अ. पू. २।४४
नानाभावान्पृथग्विधान् भ. गी. १८।२१
नानामार्गैस्तु दुष्प्रापं कैवल्यं
परमं पदम् [१यो.त.६+ यो. शि. १।३
नानायोनिशतं गत्वा शेतेऽसौ
वासनावशात् त्रि. ब्रा. २।१७
नानारूपा दशवक्त्रं विधत्ते
नानारूपान्या च बाहून्बिभर्ति गुह्यका. ७०
नानार्येण सहावसेत् महो. ४।२२
नानावर्णाकृतीनि च भ. गी. ११।५
नानाविधानि दिव्यानि भ. गी. ११।५
नानाविधानि रूपाणि हाटके
कनकादिवत् ना.पू. ता.५।७
नानाविधैर्विचारैस्तु न बाध्यं
जायते मनः यो. शि. १।६०
नानाशस्त्रप्रहरणाः भ. गी. १।९
नानिस्तिष्ठञ्छ्रद्दधाति निस्तिष्ठन्नेव
श्रद्दधाति छांदो. ७।२०।१
नानुतिष्ठन्ति मे मतम् भ. गी. ३।३२
नानुध्यायाद्बहूञ्छब्दान्वाचो विग्ला-
पनं हि तत् [बृह. ४।४।२१+
[अ.पू. ४।३७+वराहो.४।३३+ शाट्या. २३
नानुवर्तयतीह यः भ. गी. ३।१६
नानुशोचन्ति पण्डिताः भ. गी. २।११
नानुशोचितुमर्हसि भ. गी. २।२५
नानुसन्धेः परा पूजा न हि तृप्तेः
परं सुखम् यो. शि. २।२१
नानोपनिषदभ्यासः स्वाध्यायो यज्ञ
ईरितः । ज्ञानयज्ञः स विज्ञेयः शाट्याय. १५
नान्तं न मध्यं न पुनस्तवादिं भ.गी. ११।१६
नान्तःप्रज्ञं न बहिःप्रज्ञं नोभयतः-
प्रज्ञं न प्रज्ञानघनं न प्रज्ञं नाप्रज्ञम् माण्डू. ७
नान्तःप्रज्ञं न बहिःप्रज्ञं नोभयतः-
प्रज्ञं न प्रज्ञानघनमदृष्टमव्यव-
हार्यमग्राह्यं [नृ. पू. ४।२+ रामो. २।४
नान्तःप्रज्ञं न बहिःप्रज्ञं...स्वान्तः-
स्थितः स्वयमेवेति य एवं वेद
स मुक्तो भवति ना. प. ९।२०
नान्तःप्रज्ञं न बहिःप्रज्ञं नोभयतः-
प्रज्ञं न प्रज्ञं नाप्रज्ञं प्रज्ञानघनम् ग. शो. १।४
नान्तःप्रज्ञो न बहिःप्रज्ञो
नोभयतःप्रज्ञः सुबालो. ५।१५
नान्तो न चादिर्न च सम्प्रतिष्ठा भ. गी. १५।३
नान्तोऽस्ति मम दिव्यानां भ.गी. १०।४०
नान्नरसं विजिज्ञासीत अन्नरस-
विज्ञातारं विद्यात् कौ.उ. ३।८
नान्यच्छ्रेयो वेदयन्ते प्रमूढाः मुण्ड. १।२।१०
नान्यदतोऽस्ति द्रष्टृ बृह.३।८।११
नान्यदतोऽस्ति मन्तृ बृह. ३।८।११
नान्योऽतोऽस्ति विज्ञाता बृह. ३।७।२३
नान्यदतोऽस्ति विज्ञातृ बृह. ३।८।११
नान्यदतोऽस्ति श्रोतृ बृह. ३।८।११
नान्यत्किञ्चन मिषत् २ऐत. १।१
नान्यत्किञ्चन शाश्वतम् अ. पू. १।४७
नान्यत्किञ्चिद्वेदितव्यं स्वव्यतिरेकेण ना. प. ६।२
नान्यदस्तीति वादिनः भ. गी. २।४२
नान्यदस्तीति संवित्या परमा
सा ह्यहंकृतिः महो. ५।८९
नान्यन्नारायणादुपासितव्यम् ना. उ. ता. ३।१
नान्यस्मै कस्मैचन यद्यप्यस्मा
इमामद्भिः परिगृहीतां धनस्य
पूर्णां दद्यात् छांदो. ३।११।६
नान्यं गुणेभ्यः कर्तारं भ. गी.१४।१९
नान्यं शृण्वन्ति न नमन्ति नगायन्ति सामर. ७५
नान्यः कश्चिन्मत्तो व्यतिरिक्त इति अ. शि. १।१
नान्यः पन्था अयनाय विद्यते
[महावा. ३+चित्यु.१२।७+ लक्ष्मयुप. ७
नान्यः पन्था दुःखविमुक्तिहेतुः हेरम्बो. ८
नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय ना.प. ९।१
[श्वेता.३।८६।१५चित्यु.१३।११ त्रि.म.ना.४।१
नान्यः पन्था विमुक्तये कैव.९

नान्यः परमः पन्था विद्यते मोक्षाय कालिको. ३
नान्ये जानन्ति गुह्यमिदम् शि. सा. १।१
नान्येषामियं ब्रह्मविद्येयं ब्रह्मविद्या भस्मजा. २।१६
नान्यैर्देवैस्तपसा कर्मणा वा (गृह्यते) मुण्ड. ३।१।८
नान्योऽतोऽस्ति द्रष्टा बृह. ३।७।२३
नान्योऽतोऽस्ति मन्ता बृह. ३।७।२३
नान्योऽतोऽस्ति श्रोता बृह. ३।७।२३
नान्यो वरस्तुल्य एतस्य कश्चित् कठो. १।२२
नान्यो हेतुर्विद्यते ईशनाय श्वेताश्व. ६।१७
नापदि ग्लानिमायान्ति निशि हेमाम्बुजं यथा महो. ४।१८
नापानोऽस्तं गतो यत्र प्राणश्चास्तमुपागतः । नासाग्रगमनावर्तं तच्चित्तत्त्वमुपाश्रय अ. पू. ५।३२
नापुत्राय प्रदातव्यं नाशिष्याय कदाचन ब्र. वि. ४७
नापुत्राय नाशिष्याय नासंवत्सररात्रोषिताय नापरिज्ञातकुलशीलाय दातव्या, नैवचप्रवक्तव्या सुबालो. १६।१
नापुत्रायाशिष्याय वा पुनः श्वेताश्व. ६।२२
नापृष्टः कस्यचिद्ब्रूयान्न चान्यायेन पृच्छतः १सं.सो.२।१०२
नापो मूत्रपुरीषाभ्यां नान्नदोषेण मस्करी १सं.सो. २।७२
नापेक्षते भविष्यच्च वर्तमानेनतिष्ठति अ. पू. २।२८
नाप्नुवन्ति महात्मानः भ. गी. ८।१५
नाप्रज्ञमपि न प्रज्ञाघनं चादृष्टमेव च ना. प. ८।२२
नाप्रवक्रे (ब्रूयात्) इत्याचार्याः ३ऐत. २।६।४
नाप्रशान्ताय दातव्यं न चाशिष्याय वै पुनः [श्वेता. ६।२२+ अ.पू. ५।११९
नाप्रसं संपुटं सत्त्वरजस्तमोगुणरहितं तत्त्वं चेति अद्वैतो. ३
नाप्सु प्रमीयते सहवै. २३
नाब्रह्मवित्परमं प्रैति धाम शाट्याय. ४
नाभक्ताय कदाचन भ. गी. १८।६७
नाभावो विद्यते सतः भ. गी. २।१६
नाभिकन्दात्समारभ्य .. जाग्रद्वृत्तिं विजानीयात् त्रि.ब्रा. २।१४९
नाभिकन्दादधः स्थानं कुण्डल्या द्व्यङ्गुलं मुने । अष्टप्रकृतिरूपा सा कुण्डली मुनिसत्तम जा. द. ४।११
नाभिकन्दे च नासाग्रे पादाङ्गुष्ठे च यत्नवान् । धारयेन्मनसा प्राणान् सन्ध्याकालेषु वा सदा त्रि.ब्रा. २।१०९
नाभिकन्दे समौ कृत्वा प्राणापानौ.. हंसहंसेति यो जपेत्, जरामरणरोगादि न तस्य भुवि विद्यते ब्र. वि.२२-२४
नाभिचक्रे कायव्यूहज्ञानम् शाण्डि.१।७।५२
नाभिदेशे स्थितं चक्रं दशा(रं)रं मणिपूरकम् । [यो.शि.१।१७२ +५।९
नाभिनन्दति न द्वेष्टि भ.गी. २।५७
नाभिनन्दति नैष्कर्म्यं न कर्मस्वनुषज्जते । सुसमो यः परित्यागी सोऽसंसक्त इति स्मृतः अ. पू. २।५
नाभिनन्दत्यसम्प्राप्तं प्राप्तं भुङ्क्ते यथेप्सितम् । यः स सौम्यसमाचारः सन्तुष्ट इति कथ्यते महो. ४।३७
नाभिनंदेतमरणं नाभिनन्देतजीवितम् ना.प. ३।६१
(एवं) नाभिभूयत्यसौ पुरुषोऽभिभवत्ययं भूतात्मा मैत्रा. ३।३
नाभिमध्ये सर्वरोगविनाशः शाण्डि.१।७।४५
नाभिस्थाने स्थितं विश्वं शुद्धतापं सुनिर्मलम् ब्र. वि. १५
नाभिहृदयकण्ठमूर्धसु जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तितुरीयावस्थाः परब्र. ३
नाभिर्हृदयं कण्ठं मूर्धा च ब्रह्मो. २
नाभेरजः स वै ब्रह्मा ग.शो. ३।४
नाभेरधोगतास्तिस्रो नाडयःस्युरधोमुखाः यो.शि. ५।२६
नाभेरुपरि नासान्तं वायुस्थानं... त्रि.ब्रा २।१३९
नाभेर्व्योम (अजायत) ग.शो. ३।११
नाभेस्तिर्यगध ऊर्ध्वं कुण्डलिनीस्थानम् शाण्डि. १।४।५
नाभौ चित्तसंयमाद्भूलोकज्ञानम् शाण्डि.१।७।५२
नाभौ तु मणिवद्बिम्बं यो जानाति स योगवित् यो. चू. ९
नाभौ दशदलंपद्मं हृदयेद्वादशारकम् यो. चू. ५
नाभौ लिङ्गस्य मध्ये तु उड्यानाख्यं तु बन्धयेत् यो.शि. ५।३८

नाभ्या अपानोऽपानान्मृत्युः शिश्नं
निरभिद्यत २ऐत. १।४
'नाभ्या आसीत्'...'अन्नपतेऽन्नस्य'
इति मन्त्रेण...कैवल्यमुक्तिरुच्यते राधोप. ४।२
नाभ्या आसीदन्तरीक्षं [चित्त्यु.२।१६ ऋ.अ.८।४।१९
[=मं. १०।९०।१४+ वा.सं.३१।१३
नाभ्यादिब्रह्मरन्ध्रान्तप्रमाणं
धारयेत्सुधीः। तेभिर्धार्यमिदं
सूत्रं क्रियाङ्गं तंतुनिर्मितम् परब्र. १७
नाभ्यां वा एते अराः प्रतिष्ठिताः नृ. पू. ५।२
नामगोत्रादि वरणं देशं कालं श्रुतं
कुलम्।...ख्यापयेन्नैव सद्यतिः ना. प. ४।२
नामग्राहमेतेन सर्वमभिपद्यन्ते शौनको. १।५
नामजात्यादिभिर्भेदैरष्टधा...सा मां
पातु सरस्वती सरस्व. १७
नामत्वां विजानाति छांदो. ७।१८।१
(अथ) नामधेयंसत्यस्यसत्यमिति बृह. २।३।६
नामरूपमन्नं च जायते मुण्ड. १।१।९
नामरूपविमुक्तोऽहं ते. बिं. ३।३६
नामरूपविहीनात्मा...वैदेही
मुक्त एव सः [ते. बिं. ४।४९–५३
नामरूपात्मकं सर्वं...सा मां
पातु सरस्वती सरस्व. २३
नामरूपात्मकं हीदं सर्वं तुरीयत्वा-
च्चिद्रूपत्वाद्बोतत्वादनुज्ञातृत्वा-
दनुज्ञानत्वादविकल्परूपत्वात् नृसिंहो.२।७
नामरूपादिकं नास्ति ते. बिं. ५।११
नाम वा ऋग्वेदो यजुर्वेदः
सामवेद आथर्वणश्चतुर्थः छांदो. ७।१।४
नामसङ्कीर्तनादेव शिवस्या-
शेषपातकैः...प्रमुच्यते शिवो. १।२०
नामात्रे विद्यते गतिः आगम.२३
नामादिभ्यः परे भूम्नि स्वाराज्ये
चेत्स्थितोऽद्वये। प्रणमेत्कं तदा-
ऽऽत्मज्ञो न कार्यं कर्मणा तदा याज्ञव. ६
नामानि कृत्वाऽभिवदन्यदास्ते
[महावा. ३+चित्त्यु. १२।७+ पारमा. ७।९
नाम्न आत्माग्नेरात्मा ज्योतिष आत्मा कौ. ब्रा. ४।१६

नाम्नि मन्त्रा एकं भवन्ति, मन्त्रेषु
कर्माणि [छांदो.७।४।१+ ७।५।१
नाम्नो वाव भूयोऽस्तीति तन्मे
भगवान् ब्रवीत्विति छांदो. ७।१।५
नायका मम सैन्यस्य भ. गी. १।७
नायमस्तीत्येवैनमाहुर्यदयं वेद छान्दो. ७।५।२
नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न
मेधया न बहुना श्रुतेन [कठो.२।२३ +मुंड. ३।२।३
नायमात्मा बलहीनेन लभ्यो नच
प्रमादात्तपसो वाऽप्यलिङ्गात् मुण्ड. ३।२।४
नायं कुतश्चिन्न बभूव कश्चित् कठो. २।१८
नायं भूत्वा भविता वा न भूयः भ. गी. २।२०
नायं योगे विद्युत आख्यातो-
पसर्गानुपात्तेः २ प्रणवो. १६
नायं लोकोऽस्ति न परः भ. गी. ४।४०
नायं लोकोऽस्त्ययज्ञस्य भ. गी. ४।३१
नायं हन्ति न हन्यते (आत्मा)
[कठो. २।१९+ भ. गी. २।१९
नारदः पितामहमुवाच गुरुस्त्वं
जनकस्त्वम् ना. प. २।१
नारंभानारमेत् क्वचित् ना. प. ५।३३
नारसिंहेन वाऽनुष्टुभा मन्त्रराजेन
तुरीयं विद्यात् नृसिंहो. २।८
नाराजकेजनपदे चरत्येकचरो मुनिः ना. प. ६।४३
नारायण एवेदं सर्वम् [ना.पू. ९।६+ ना.उ.ता. १।५
नारायण एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यं नारा. २
नारायणक्रीडाकन्तुकं परमाणुव-
द्विष्णुलोकसुसंलग्नम् (ब्रह्माण्डं) त्रि.म.ना. ६।२
नारायणपदमवाप्नोति य एवं वेद तारसा. ३।९
नारायणपरं ब्रह्म नारायणनमोऽस्तु
ते [महाना. ९।४+ त्रि.म.ना.७।११
नारायणपरो ज्योतिरात्मा
नारायणः परः महाना. ९।४
नारायणपरो ध्याता ध्यानं
नारायणः परः महाना. ९।४
नारायणमनादिं च ना.उ.ता. १।८
नारायण महाविष्णो...हृषीकेश
नमो नमः ना.पू.ता. ३।५

नावाहनं न विसर्जनं न मन्त्रं नामन्त्रं न ध्यानं नोपासनं. ना. प. ३।८७
नाविजानन् सत्यं वदति विजानन्नेव सत्यं वदति छांदो.७।१७।१
नाविज्ञाप्य गुरुं गच्छेत् शिवो. ७।२४
नाविद्वान् स्वैरिणी --(मा. पा.) छां.उ.५।११।९
नाविद्वान् स्वैरी स्वैरिणी कुतो यक्ष्यमाणो वै भगवन्तोऽहमस्मि छां. उ.५।११।५
नाविमुक्तात्परमं स्थानम् भस्मजा. २।८
नाविद्यानुभवात्मा न स्वप्रकाशे.. नृसिंहो. ९।६
नाविद्यास्तीह नो नो माया शान्तं ब्रह्मेदमक्लमम् म. वा. र. १७
नाविरतो दुश्चरितान्नाशान्तो नासमाहितः । नाशान्तमनसो वापि प्रज्ञानेनैनमाप्नुयात् कठो. २।२४+ [ना. प. ९।१९+ महो .४।६९
नावृतिर्ब्रह्मणः काचिदन्याभावादनावृतं २आत्मो. २८
नावेदविन्मनुते तं बृहन्तं [शाट्या.४+ इतिहा. २०
नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः महाना. ६।१३ [+ऋ. अ. १।७।७=मं. १।९९।१+ त्रि. ता. १।२
नावैष्णवो व्रजेन्मुक्तिं बहुशास्त्रयुतोऽपि वा । वैष्णवोवर्णहीनोपि याति.. भवसं. ५।२३
नाशप्रायं सुखाद्धीनं (दृश्यमानं) वैतथ्य. ३२
नाशयाम्यात्मभावस्थः भ.गी.१०।११
नाशुचित्वं न चोच्छिष्टं तस्य सूत्रस्य धारणात् । परब्र. १२
नाशौचं नाग्निकार्यं च न पिण्डं नोदकक्रिया । न कुर्यात्पार्वणादीनि ब्रह्मभूताय भिक्षवे पैङ्गलो. ४।६
नाश्रद्दधन् मनुते श्रद्दधदेव मनुते श्रद्धा त्वेव विजिज्ञासितव्या छांदो.७।१९।१
नाश्लीलं कीर्तयेदेता एव देवताः प्रीणाति सहवै. १९
नासच्छास्त्रेषु सज्जेत...अतिवादांस्तितिक्षेत...पक्षं कञ्चन नाश्रयेत् ना. प. ५।३३
नासतो विद्यते भावः भ.गी. २।१६
नासनं शयनं पानं.. सोपानत्कः प्रकुर्वीत शिवपुस्तकवाचनम् शिवो. ७।८७
नासंवत्सरवासिने ब्रूयात्-इत्याचार्याः १ऐत. २।६।४

नासाग्रधारणाद्वापि जितो (वायुः) भवति.. जा.द. ६।२३
नासाग्रे अच्युतं विद्यात् तस्यान्ते तु परं पदम् ब्र. वि. ४२
नासाग्रे चित्तसंयमादिन्द्रलोकज्ञान शांडि.१।७।५२
नासाग्रे चैव हृन्मध्ये...स्रवन्तममृतं पश्येत्... वराहो. ५।३२
नासाग्रे (प्राणानां) धारणाद्दीर्घमायुः स्याद्देहलाघवम् त्रि. ब्रा.२।११
नासाग्रे वायुविजयं भवति शांडि.१।७।४५
नासाग्रे शशभृद्बिम्बे.. स्रवन्तममृतं पश्येन्नेत्राभ्यां सुसमाहितः जा. द. ५।६
नासादि केशान्तमूर्ध्वपुण्ड्रं विष्णोः कात्याय. १
नासामेवाप्येति योनासामेवास्तमेति सुबालो. ९।३
नासादिकेशपर्यन्तमूर्ध्वपुण्ड्रं तु धारयेत् [यज्ञोप. २+ सुदर्श. २
नासादिकेशान्तमूर्ध्वपुण्ड्रं विष्णोः.. चरणद्वयाकृति नारदो. १
नासाऽध्यात्मं, घ्रातव्यमधिभूतं, पृथिवी तत्राधिदैवतं... सुबालो. ५।३
नासाभ्यन्तरचारिणौ भ.गी. ५।२७
नासाभ्यां वायुमाकृष्य नेत्रद्वंद्वे निरोधयेत्..नेत्ररोगा विनश्यन्ति जा. द. ६।३०
नासाभ्यां वायुमाकृष्य...प्रत्याहारः समाख्यातः जा.द.७।१०,४
नासिकाग्रे चतुर्भिः षड्भिरष्टभिर्दशभिर्द्वादशभिः क्रमाद्वङ्कुलान्ते... स तु योगी भवति अद्वयता. ३
नासिकापुटमङ्गुल्यापिधायैकेन मारुतम् ।.. शब्दमेव विचिन्तयेत् अ. ना. २०
नासिकाभ्यां प्राणः, प्राणाद्वायुः... २ ऐत. १।४
नासिके एवोक्थं, यथाऽन्तरिक्षं तथा १ ऐत. १।२
नासिकोत्तरवेदिः (शारीरयज्ञस्य) प्रा. हो. ४।२
नासीरामेवाप्येति यो नासीरामेवास्तमेति सुबालो. ९।९
नासौ(योगी)मरणमाप्नोति पुनर्योगबलेन तु.. मृतस्य मरणं कुतः यो. शि. १।६५
नास्तमेति न चोदेति नोत्तिष्ठति न तिष्ठति (चित्) महो. ५।१०२

नास्ति काकमतादन्यदभ्यासाख्य-
मतः परम् । तेनैव प्राप्यते मुक्तिः यो.शि.१।१४४
नास्ति चित्तं न चाविद्या.. ब्रह्मैवैक-
मनाद्यन्तमब्धिवत्प्रविजृम्भते अ.पू. ५।१०
नास्ति दृष्टान्तिकं सत्ये नास्ति दार्ष्टा-
न्तिकं ह्यजे ते. बिं. ५।२९
नास्ति देहसमः शोच्यो नीचो गुण-
विवर्जितः । कलेवरमहङ्कार-
गृहस्थस्य महागृहम् महो. ३।२७
नास्ति धर्मसमं मित्रं शिवो. ६।१६७
नास्ति धर्मसमः सखा शिवो. १।१६७
नास्ति नादात्परो मन्त्रो न देवः
स्वात्मनः परः । यो.शि. २।२०
नास्ति नास्ति जगत्सर्वं
गुरुशिष्यादिकं नहि म. वा. र.४
नास्ति नास्ति विमुक्तोऽस्मि नकार-
रहितोऽस्म्यहम् मैत्रे. ३।१९
नास्ति निर्मनसः क्षतिः महो. ४।९७
नास्ति पातो लयस्थानां
महात्वस्वेऽपि वर्तिनाम् अमन. १।८३
नास्ति पुत्रः समृद्धानां विचित्रं
धातृचेष्टितम् भवसं. १।१२
नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य भ. गी.११।१९
नास्ति माया च वस्तुतः पा. ब्र. ४९
नास्ति यस्य शरीरं वा जीवो वा.. ते. बिं. ५।१०
नास्ति सत्तातिरेकेण नास्ति माया च.. पा. ब्र. ४९
नास्त्यकृतः कृतेन मुण्ड.१।२।१२
नास्त्यनात्ममयं जगत् महो. ६।१०
नास्त्यसद्धेतुकमसत् सदसद्धेतुकं तथा अ. शां. ४०
नास्त्यभावाश्रयाभावात् महो. २।८
नास्त्यन्तो विस्तरस्य मे १०।१९
नास्त्येषा परमार्थेन (माया) महो. ५।११२
नास्यावरपुरुषाः क्षीयन्ते [छांदो. ४।११।२
नास्य केन च कर्मणा लोको मीयते कौ.उ. ३।१
नास्य जरयैतज्जीर्यति छांदो. ८।१।५
नास्य तावल्लोको जीर्यते यावदेतयोर्न..
अन्तरिक्षस्य च वायोश्च १ऐत. १।७।३
नास्य तावल्लोको जीर्यते..
अपां च वरुणस्य च १ऐत. १।७।६

नास्य तावल्लोको जीर्यते यावदेतयोर्न
जीर्यते पृथिव्याश्चाग्नेश्च १ऐत. १।७।२
नास्य तावल्लोको...यावदेतयोर्न
जीर्यते दिवश्चादित्यस्य च १ऐत. १।७।४
नास्य तावल्लोको जीर्यते यावदेषां
न जीर्यते दिशां च चन्द्रमसश्च १ऐत.१।७।५
नास्यान्नं क्षीयते य एवं वेद बृह. २।१।२
नास्य (यतेः) नक्तं न वा दिवा कठश्रु. १०
नास्यपापंचनचक्षुषो मुखान्नीलं वेत्ति कौ. उ. ३।१
नास्य प्रजा पुराकालात्प्रवर्तते कौ. उ. ४।६
नास्य प्रजा पुराकालात् प्रमीयते कौ.उ. ४।१३
नास्य प्रजा पुराकालात् सम्मोहमेति कौ. उ.४।१२
नास्य स्वाम्येण स्वामाः, घ्नन्ति त्वेवैनं छां.८।१०।२
नास्याब्रह्मवित् कुले भवति [मुण्ड.३।२।९ +माण्डू.१०
नास्याश्च कश्चिज्जनिता न चाधिपः गुह्यका. ६८
नास्वादयेत्सुखं तत्र निस्सङ्गः प्रज्ञया
भवेत् । निश्चलं निश्चरच्चित्तं.. अद्वैत. ४५
नाहङ्कारात्परो रिपुः महो. ३।१६
नाहमत्र भोग्यं पश्यामि
[छान्दो.८।९।२+८।१०।२+ ८।११।२
नाहमस्मि न चान्योऽस्ति न चार्यं
न च नेतरः अ. पू.२।४
नाहमस्मि न चान्योऽस्मि
देहादिरहितोऽस्म्यहम् मैत्रे. ३।८
नाहमस्मि न सोऽस्म्यहम् ते. बिं. ३।४
नाहमेतत्कर्म प्राज्ञासिषमिति कौ. उ. ३।७
नाहमेतत्सुखं दुःखं प्राज्ञासिषमिति कौ. उ. ३।७
नाहमेतद्रूपं प्राज्ञासिषम् कौ. उ. ३।७
नाहमेतद्वेद तात यद्गोत्रस्त्वमसि छांदो. ४।४।२
नाहमेतन्नाम प्राज्ञासिषम् कौ. उ. ३।७
नाहमेतमन्नरसं प्राज्ञासिषमिति कौ. उ. ३।७
नाहमेतमानन्दं रतिं प्रजातिं प्राज्ञा-
सिषमिति नहि प्रज्ञापेतौ पादा-
वित्यां कांचन प्रज्ञापयेताम् कौ. उ. ३।७
नाहमेतं गन्धं प्राज्ञासिषमिति नहि
प्रज्ञापेतं चक्षूरूपं किञ्चन प्रज्ञापयेत् कौ. उ. ३।७
नाहमेतं शब्दं प्राज्ञासिषमिति हि
प्रज्ञापेता जिह्वान्नरसं कञ्चन प्रज्ञापयेत् कौ. उ. ३।७

नाहमेतामित्यां प्राज्ञासिषमिति नाहि प्रज्ञापेता धीः काचन सिद्धयेत् कौ. त. ३।७
नाहमेनाननुपतस्थिरद्धा बा. मं. ६
नाहमेभिर्विना किञ्चिन्नमयैते विना.... महो. ६।४१
नाहमेवं ब्रवीमि ब्रवीमीति होवाचान्यो ह्यन्यस्मिन्प्रतिष्ठितः छांदो.७।२४।२
नाहं कर्ता च भोक्ता च न बोध्यो न च बाधकः अक्ष्युप. २४
नाहं कर्ता नैव भोक्ता प्रकृतेः साक्षिरूपकः सर्वसारो. ९
नाहं कर्ता बन्धमोक्षौ कुतो मे सर्वसारो. १२
नाहंकर्तेश्वरःकर्ता कर्म वा प्राक्तनं मम अक्ष्युप. २८
नाहं खल्वयमेव९सम्प्रत्यात्मानं जानात्ययमहमस्मीति [छांदो. ८।११।१,२
नाहं चेतः शोकमोहौ कुतो मे सर्वसारो. १२
नाहं तद्भगवन्वेद यत्र गमिष्यामीति बृ. उ.४।२।१
नाहंत्वामपहायपरागामिति [कठरु.२+ कठश्रु. १८
नाहं दुःखी न मे देहो बन्धः कोऽस्यात्मनि स्थितः महो. ४।१२६
नाहं देहो जन्ममृत्यू कुतो मे सर्वसारो. १२
नाहं देहो न च प्राणो नेन्द्रियाणि मनो नहि जा.द. १०।४
नाहं न चान्यदस्तीह ब्रह्मैवाऽस्मि... महो. ५।६९
नाहं नान्यो न चैवैको न चानेको-भयोऽद्वयः अ. पू. २।२१६
नाहं नेदमिति ध्यायंस्तिष्ठ त्वमचलाचलः महो. ६।३६
नाहं पदार्थस्य न मे पदार्थ इतिभाविते। नान्तः शीतलया बुद्धया कुर्वतो लीलया क्रियाम्। यो नूनं वासनात्यागो ध्येयो ब्रह्मन्प्रकीर्तितः महो. ६।४२
नाहं प्रकाशः सर्वस्य भ. गी. ७।२५
नाहं प्राणः क्षुत्पिपासे कुतो मे सर्वसारो. १२
नाहं ब्रह्मेति जानाति तस्य मुक्तिर्न जायते पैङ्गलो. ४।२१
नाहं ब्रह्मेति सङ्कल्पात्सुदृढाद्बध्यते मनः। सर्वं ब्रह्मेति सङ्कल्पात् सुदृढान्मुच्यते मनः महो. ४।१२५

नाहं भवाम्यहं देवो नेन्द्रियाणि दशैव तु। न बुद्धिर्न मनः शश्वन्नाहङ्कारस्तथैव च सर्वसारो. ७
नाहं मन्ये सुवेदेति नो न वेदेति वेद च। यो नस्तद्वेद तद्वेद.. केनो. २।२
नाहं मांसं न चास्थीनि देहादन्यः परोऽस्म्यहम्। इति निश्चितवानन्तः क्षीणाविद्यो विमुच्यते महो. ४।१२७
नाहं विप्रो न च नरपतिर्नापि वैश्यो न शूद्रो...किन्तु...लक्ष्मीभर्तुः पदकमलयोर्दासदासानुदासः भवसं. २।३४
नाहं वेदैर्न तपसा भ. गी.११।५३
नाहं वेद्यं व्योमवातादिरूपं सर्वसारो. ११
नाहं सन्नाप्यसन्मयः अ. पू. ५।९१
निकषे हेमरेखाभा यस्य रेखा प्रदृश्यते। तदक्षमुत्तमं विद्यात् रु.जा.उ. १४
निक्षिप्ते कतके विहाय कलुषं यद्वज्जलं निर्मलं...तद्वत्सर्वमिदं विहाय सकलं...तत्त्वं तत्सहजस्वभावममलं तेजोऽमनस्के ध्रुवम् अमन.२।७६
निखानयन्ति शंकुभिः (यदिदं) आर्षे. १२
निखिलनिगमोदितसकामकर्मव्यवहारो लोकः महावा. २
(ॐ) निगमं शङ्करोऽब्रवीत् सि. वि. ६
निगमो जायते पुरुषोत्तमात् सि. वि. २
निगमोवसुदेवोयो वेदार्थः कृष्णरामयोः कृष्णो. ६
निगिरेवेत्तुङ्गसूनुर्मेरुं चलवदस्त्विदम् ते.बि. ६।८६
निगृहीतस्य मनसो निर्विकल्पस्य धीमतः।.. सुषुप्तेऽन्यो न तत्समः अद्वैतो. ३४
निगृहीतानि सर्वशः भ.गी.२।६८
निगृह्णाम्युत्सृजामि च भ. गी. ९।१९
निग्रहः किं करिष्यति भ. गी. ३।३३
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले [ऋ. खि. ५।८७।१२+ श्रीसू. १२
निचाय्येमा९(वनां)शांतिमत्यन्तमेति [कठो. १।१७+ श्वेता. ४।११
नित्यचिन्मात्ररूपोऽस्मि मैत्रे. ३।१६
नित्यतृप्तोऽप्यभुञ्जानोऽप्यसमः समदर्शनः।कुर्वन्नपि न कुर्वाणः.. २ आत्मो.१३

नित्यतृप्तो निराश्रयः म. गी. ४।२०
नित्यनिर्मलरूपात्मा ह्यात्मनोऽन्यन्न
किञ्चन ते. बिं. ६।४०
नित्यपरिपूर्णमखण्डानन्दामृतविशेषं
शाश्वतं परमं पदं त्रि.म. ना.७।७
नित्यप्रबुद्धचित्तस्त्वं कुर्वन्वाऽपि
जगत्क्रियाम् । आत्मैकत्वंविदित्वा
त्वं तिष्ठाक्षुब्धमहाब्धिवत् महो. ४।११
नित्यशुद्धविशुद्धैकसच्चिदानन्द-
मस्म्यहम् तै.बिं. ३।११
नित्यमगन्धवच्च यत् । अनाद्यनन्तं
महतः परं ध्रुवं निचाय्य तन्मृत्यु-
मुखात्प्रमुच्यते कठो. ३।१५
नित्यमङ्गलमन्दिरम् [त्रि.म.ना.७।८× सि. सा. ६।१
नित्यमन्तर्मुखः स्वच्छः स्वात्मनाऽन्तः-
प्रपूर्णधीः ।...कुरु कर्माणि वै द्विज अ. पू.५।११५
नित्यमुक्तस्वरूपं कैवल्यानन्दरूपं सि. सा. ६।१
नित्यमुक्तस्वरूपमनाधारमादि-
मध्यांतशून्यं त्रि. म.ना.७।७
नित्यमेकाग्रभक्तिः स्याद्गोपीचन्दन-
धारणात् वासुदे. १३
नित्ययुक्तस्य योगिनः भ. गी. ८।१४
नित्ययुक्ता उपासते [भ. गी. ९।१४ +१२।२
नित्यलीलाभजनानन्दोऽयं
रसोऽनिर्वचनीयः श्यामर. ४९
नित्यविहितकर्मफलत्यागःप्रत्याहारः शांडि. १।८।१
नित्यशुद्धचिदानन्दसत्तामात्रोऽहमव्ययः ते. बिं. ३।११
नित्यशुद्धबुद्धपरब्रह्मानन्दमयोभवति ना.पू.ता.२।४
नित्यशुद्धबुद्धमुक्तसत्यपरमानन्दान्ता-
द्वयपरिपूर्णः परमात्मा ब्रह्मैवाहं
रामोऽस्मि म. वा. र. ९
नित्यशुद्धविमुक्तैकमखण्डानन्द-
मद्वयम् । सत्यं ज्ञानमनन्तं यत्परं
ब्रह्माहमद्वयम् वराहो. ३।२
(तदनु) नित्यशुद्धः परमात्माऽहमेव मं. ब्रा. ३।२
नित्यशुद्धाय बुद्धाय नित्यायाद्वैत-
रूपिणे । आनन्दायात्मरूपाय
नारायण नमोऽस्तु ते ना. उ.ता. २।२

नित्यशेषस्वरूपोऽस्मि सर्वातीतो-
ऽस्म्यहं सदा तै.बिं. ३।१२
नित्यसृष्टिहेतुभूता च का राधिको. १
नित्यस्योक्ताः शरीरिणः भ. गी. २।१८
नित्यसाकारस्त्वाद्यन्तशून्यः
शाश्वतः (नारायणः) त्रि.म.ना.२।१
नित्यं च समचित्तत्वं भ. गी.१३।१०
नित्यं त्रिषवणस्नायी पयोमूल-
फलादिभुक् ।... ततः सिद्धमनु-
र्भूत्वा जीवन्मुक्तो भवेन्मुनिः रामर. ४।१-९
नित्यं दर्शनकांक्षिणः भ.गी.११।५२
नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम् भ.गी. ३।१५
नित्यं वा मन्यसे मृतम् भ.गी. २।२६
नित्यं विभुं सर्वगतं सुसूक्ष्मं तदव्ययं
तद्भूतयोनिं परिपश्यंति धीराः मुण्डको.१।१।६
नित्यं विभुं सर्वगतं सुसूक्ष्मं च तदव्ययं
[पा. ब्र. ३४+महो.४।८६+ रुद्रहृ. ३२
नित्यं विभुं सर्वगतं सुसूक्ष्मं च तद-
व्ययम् । तद्भूतयोनिं पश्यन्ति
धीरा आत्मानमात्मनि रुद्रहृ. ३२
(ॐ) नित्यं शुद्धं बुद्धं निर्विकल्पं
निराख्यातमनादिनिधनमेकं...
सर्वदाऽनवच्छिन्नं परं ब्रह्म यो. चू. ७२
नित्यं शुद्धं बुद्धं मुक्तं.. म. वा.र. १४
नित्यं शुद्धं बुद्धं मुक्तं सत्यं सूक्ष्मं
परिपूर्णमद्वयं...ब्रह्मैव नृसिंहो. ९।८
नित्यं स गच्छेत्परमनामकम् २प्रणवो. १३
नित्यं सर्वगतं विद्धि शब्दब्रह्म सनातनम् गान्धर्वो. ४
नित्यं सर्वसन्देहनाशनम् निर्वाणो. ८
नित्यः शुद्धः सदाशिवः । सर्वासर्व-
विहीनोऽस्मि मैत्रे. ३।६
(किन्तु) नित्यः शुद्धो निरञ्जनो
विभुरद्वयः शिव एकः... त्रि. ब्रा. १
नित्यः शुद्धो निरंजनो विभुरद्वयः
शिव एकः त्रि. ब्रा. १।१
नित्यः शुद्धो बुद्धमुक्तस्वभावः...
आनन्दाब्धियः परः सोहऽमस्मि मैत्रे. १।१६
नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं
सनातनः [भवसं. २।१९+ भ.गी. २।२४

नित्यः सर्वगतो ह्यात्मा कूटस्थो दोषवर्जितः। एकः सम्भिद्यते भ्रान्त्या मायया न स्वरूपतः[जा.द.१०।२+ अ.पू. ५।७५
नित्यानन्दमयंब्रह्म केवलंसर्वदास्वयम् [तै.बिं. ६।७२+ ६।१०२
नित्यानन्दमयोऽप्यात्मा ना. प.८।१६
नित्यानन्दस्वरूपोऽहम् तै.बिं.३।२७
नित्यानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञान-मूर्तिं...भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि शु. र. १।१९
नित्यानन्दं सदेकरसं (आत्मानं) नृसिंहो.१।१
नित्यानन्दः प्रसन्नात्मा ह्यन्यचिन्ता-विवर्जितः ..स जीवन्मुक्त उच्यते म.वा.र. ८
नित्यानन्दो निर्विकल्पो निराख्यः। अचिन्त्यशक्तिर्भगवान् गिरीशः शरभो. २१
[मोक्ष इति च] नित्यानित्यवस्तु-विचारादनित्य-संसार-सुख-दुःखविषयसमस्त-क्षेत्र-ममता-बन्धक्षयो मोक्षः निरा. उ. २२
नित्यानित्यविवेकश्चेहामुत्रविरागता वराहो. २।३
नित्यानित्यत्वे परस्परविरुद्धधर्मौ, तयोरेकस्मिन्नक्षणेऽत्यन्त-विरुद्धं भवति त्रि.म.ना. २।१
नित्यानित्यौ व्यक्ताव्यक्तो ब्रह्माब्रह्माहम् अ. शिरः. १
नित्यानुभवरूपस्यकोमेऽत्रानुभवःपृथक् अवधू. २१
(अथ) नित्योऽक्षरःपरमः स्वराट् त्रि. म. ना.२।८
नित्योदितं विमलमाद्यमनन्तरूपं ब्रह्मास्मि अ. पू. १।१९
नित्योदितो निराभासो द्रष्टा साक्षी चिदात्मकः महो. ६।८०
(अथ) नित्यो देव एको नारायणः नारा. २
नित्यो नित्यानां चेतनश्चेतनानां... तमात्मस्थं येऽनुपश्यन्ति धीरास्तेषां शान्तिः शाश्वती नेतरेषाम् कठो. ५।१३
नित्यो नित्यानां चेतनश्चेतनानां... तत्कारणं साङ्ख्ययोगाधिगम्यं [श्वेता. ६।१३+ अवधू. २।४८
नित्यो नित्यानां चेतनश्चेतनानां... तं पीठगं येऽनुभजन्ति धीरास्तेषां सुखं शाश्वतं नेतरेषाम् गो. पू. ३।२
नित्या नित्यानां चेतना चेतना-नामेका बहूनां विदधाति कामान् गुह्यका. ७१
नित्योऽयं धर्मो ब्राह्मणानां ब्रह्मचारि-गृहिवानप्रस्थयतीनाम् भस्मजा. १।६
नित्यो निष्कलङ्को निर्विकल्पो निरञ्जनोनिराख्यातः शुद्धो देव एको नारायणो न द्वितीयोऽस्ति कश्चित् त्रि.म.ना.१।५
नित्योऽस्मि विमलोऽस्म्यहम् मैत्रे. ३।२
नित्योऽहं निरवद्योऽहं निष्क्रियो-ऽस्मि निरञ्जनः।...निर्मलो निर्विकल्पोऽहं.. अ.बि. ९७
नित्योऽहं शाश्वतो ह्यजः तै.बिं. ३।४८
निदाघ शृणु सत्त्वस्था जाता भुवि महागुणाः। ते नित्यमेवाभ्युदिता मुदिता ख इवेन्दवः महो. ४।१७
निदाघो नाम मुनिराट् प्राप्तविद्यश्च बालकः। विहृतस्तीर्थयात्रार्थं पित्रानुज्ञातवान्स्वयम् महो. ३।१
निदाघो नाम मुनिः पप्रच्छ ऋभुं भगवन्तमात्मानात्मविवेकमनु-ब्रूहीति तै.बिं. ५।१
निदिध्यासनमित्येतत् पूर्णबोधस्य कारणम् (श्रवणं तु गुरोः पूर्वं मननं तदनन्तरम्) शु. र. ३।११
निदिध्यासनं दध्यात् कुण्डिको. ९
निद्राघरूपनाशस्तु वर्तते देहमुक्तिके म.वा.र.१०
निद्रादौ जागरस्यान्ते...लक्षणं मुक्तचेतसः अमन.२।६४
निद्रालस्यप्रमादोत्थं भ.गी.१८।३९
निद्राभयसरीसृपं हिंसादितरङ्गं तृष्णावर्तं दारपङ्कं संसारवार्धिं तर्तुं...तारकमवलोकयेत् मं.ब्रा. १।२

निरतिशयानन्दसहस्रप्राकारैरलङ्कृतं... शश्वदमितपुष्पवृष्टिभिः समन्ततः सन्ततम् । तदेव त्रिपाद्विभूति-वैकुण्ठस्थानं परमकैवल्यम् त्रि.म.ना. ७।८
निरतिशयानन्दं प्राप्य...बोधानन्द-विमानपरम्परासूपासक: परमा-नन्दं प्राप त्रि. म.ना.६।७
निरतिशयानन्दाद्वितीयोऽहमेव त्रि.म.ना. ८।६
निरतिशयानन्दानन्ततटित्पर्वताकार-मद्वितीयं स्वयम्प्रकाशमनिशं ज्वलति त्रि.म.ना. ७।७
निरतिशयानन्दैरनन्तवृन्दावनैरति-शोभितमखिलपवित्राणां परम-पवित्रं...तुलसीवैकुण्ठं प्रविश्य... निरतिशयसौन्दर्यलावण्याधि-देवतां...श्रीसखीमेवं तुलसीं ध्यात्वा...गत्वा गत्वा ब्रह्मवनेषु... तत्रानन्दतरङ्गिण्याः प्रवाहेषु स्नात्वा बोधानन्दवनं प्राप्य... तन्मध्ये च शुद्धबोधानन्दवैकुण्ठं यदेव ब्रह्मविद्यापादवैकुण्ठम् त्रि.म.ना. ६।८
निरन्तरनिरुपमनिरतिशयोत्कट-ज्ञानानन्दानन्तगुच्छफलैरलङ्कृतं ...आदिनारायणं ध्यायेत् त्रि.म-ना.७।१२
निरन्तरसमाधिपरम्पराभिर्जगदी-श्वराकाराः सर्वत्र सर्वावस्थासु विभान्ति त्रि.म.ना.५।५
निरन्तरं नारायणो वैकुण्ठे रमया रहस्यलीलां सञ्जायमानोऽभवत् चामर. ३
निरन्तराभिनव...शाश्वतं परमं पदं... स्वयम्प्रकाशमनिशं ज्वलति त्रि.म.ना.७।७
निरवद्यं निरञ्जनम् । अमृतस्यपरंसेतुं श्वेताश्व. ६।१९
निरवद्यं निरञ्जनं निराकारं निरा-श्रयं...आदिनारायणं ध्यायेत् त्रि.म.ना.७।१२
निरवधिनाराचविकिरणावो निदाघ-विनोदनधारागृहशीकरवर्षणमिव... भवितव्यमेवं दृढवैराग्याद्बोधो भवति महो. ४।२६
निरवधिनिजबोधोऽहं शुभतरभावो-ऽहमप्रमेयोऽहम् या. प्र. ७

निरवयवं निराधारं निर्विकारं... निर्मलं निरवद्यं...कूटस्थमचलं... देशतः कालतो वस्तुतः परिच्छेद-रहितं...शाश्वतं परमं पदं... ज्वलति त्रि.म.ना.७।७
'निरवयवं ब्रह्मचैतन्यं' इति सर्वोप-निषत्सु सर्वशास्त्रसिद्धान्तेषु श्रूयते त्रि.म.ना.२।१
निरवयवात्मा केवलः सूक्ष्मो निर्ममो निरञ्जनो निर्विकारः...पुनात्य-शुद्धान्यपूतानि १आत्मो. ६
निरस्तकल्पनाजालमचित्तत्वं परं पदम् महो. ४।६०
निरस्तविषयासङ्गं सन्निरुद्धं मनो हृदि । यदा यात्युन्मनीभावं तदा तत्परमं पदम् ब्र. बि. ४
निरस्तविषयासङ्गंसन्निरुध्यमनोहृदि।यदा यात्यमनीभावस्तदा तत्परमं पदम् त्रि. ना. ५।४
निरस्तातिशयाह्लादसुखभावैकलक्षणा। भेषजं भगवत्प्राप्तिरेकान्ता-त्यन्तिकी मता अवध. १।२१
निरस्ताविद्यातमोमोहो (अहं) एवेति [ग. शो. १।४+ रामो. २।४
निरंशोऽस्मि चिदाकाशमिति मत्वा न शोचति अ. पू. ५।९२
निरंशोऽस्मि निराभासो न मनो-ऽनेन्द्रियोऽस्म्यहम् ते.बि. ३।४४
निराकारं निराभासं २ सन्न्यो. ४
निराकारं निराश्रयं निरतिशयाद्वैत... आदिनारायणं ध्यायेत् त्रि.म.ना.७।१२
निराकारा निष्परिग्रहा अशिखा अयज्ञोपवीता अन्धा बधिरा मुग्धाः क्लीबा मूका उन्मत्ता इव परिवर्त-मानाः...प्रणवमेव परं ब्रह्मात्मप्रकाशं शून्यं जानन्तस्तत्रैव परिसमाप्ताः नृसिंहो. ६।३
निराकारोऽस्म्यहं सदा । केवलं ब्रह्ममात्रोऽस्मि ते. बि. ३।२१
निरात्मकत्वादसङ्ख्योऽयोनिश्चिन्त्यः मैत्रा. ६।२०
निरात्मकत्वान्न सुखदुःखभाग्भवति मैत्रा. ६।२१

निरात्मकमात्मैवेदं सर्वं तस्मात्सर्वा-
त्मकेनाकारेण सर्वात्मकमात्मान-
मन्विच्छेत् नृसिंहो.७।२
निराधारं निर्विकारं निरञ्जनमनन्तं
ब्रह्मानन्दसमष्टिकन्दं.. सि.सा. १।१
निरानन्दोऽपि सानन्दः सच्चासच्च
बभूव सः अ. पू. ३।१८
निरामयं शान्तमुमासहायं १बिल्वो. ११
निरालम्बस्तु (योगः) समस्तनाम-
रूपकर्मातिदूरतया...भावनं
निरालम्बयोगः... त्रि.म.ना.८।४
निरालम्बपीठः (पीठम्) निर्वाणो. १।४
निरालम्बं पदं प्राप्तं २ तत्त्वो. ७
निरालम्बं समाश्रित्य सालम्बं विज-
हाति यः । स सन्न्यासी च योगी
च कैवल्यं पदमश्नुते निरालं. २
निराशता निर्भयता नित्यता समता
ज्ञता ।...हेयोपादेयनिर्मुक्ते ज्ञे
तिष्ठन्त्यपवासनम् महो.६।२९,३०
निराशीरपरिग्रहः भ. गी.५।१०
निराशीर्निर्ममो भूत्वा भ.गी.३।३०
निराशीर्यतचित्तात्मा भ.गी.४।११
निराश्रयमतिनिर्मलानन्तकोटि-
रविप्रकाशैकोज्ज्वलं..कैवल्यानन्द-
रूपं..शाश्वतं शश्वद्विभाति सि.सा. ६।१
निराहारस्य देहिनः भ. गी. २।५
निरिच्छत्वादकर्ताऽसौ कर्ता सन्निधि-
मात्रतः (आत्मा) महो.४।१४
निरिच्छं प्रतिबिम्बन्ति जगन्ति
मुकुरे यथा महो. ५।९५
निरिच्छे संस्थिते रत्ने यथा लोकः
प्रवर्तते । सत्तामात्रे परे तत्त्वे
तथैवायं जगद्गणः महो. ४।१३
निरिच्छोः परिपूर्णस्य नेच्छा
सम्भवति कचित् अ. पू. ६।७
निरिन्द्रियो नियन्ताऽहं म. वा. र.९
निरिन्धनज्योतिरिवोपशान्तो न
चोद्विजेदुद्विजेयत्रकुत्र... म.वा.र. ९
निरीश्वरोऽहं निरहं च निर्ममः कुण्डिको. १७

निरीहोऽस्मि निरामयः । सदा-
ऽसङ्गस्वरूपोऽस्मि ते. बिं.३।६
निरुक्तस्त्रयोदशस्तोभः सञ्चरो हुङ्कारः छांदो.१।१३।३
निरुक्तं चानिरुक्तं च.. यदिदं
किञ्च । तत्सत्यमित्याचक्षते तैत्ति. २।६
निरुक्तः सोमस्य मृदुश्लक्ष्णवायोः
श्लक्ष्णं बलवदिन्द्रस्य...तान्सर्वा-
नेवोपसेवेत वारुणं त्वेव वर्जयेत् छां.उ.२।२२।१
निरुद्धं योगसेवया भ. गी.६।२०
निरुध्य मारुतं गाढं शक्तिचालन-
युक्तितः । अष्टधा कुण्डलीभूता-
मृज्वीं कुर्यात्तु कुण्डलीम् यो.शि. १।८२
निरुध्य वायुना दीप्तो वह्निरूहति
कुण्डलीम् । पुनः सुषुम्नया वायु-
र्वह्निना सह गच्छति जा.द.६।४२
निरुपमनिरवद्यनित्यशुद्धबुद्ध..विमान-
जालावलिभिः समाकुलम् सि. सा. ६
निरुपाधिकनित्यं यत्सुप्तौ सर्वसुखा-
त्मकम् । सुखरूपत्वमस्त्येतत्.. वराहो. ३।१०
निरुपाधिकसाकारस्त्रिविधः ब्रह्मवि-
द्यासाकारश्चानन्दसाकार
उभयात्मकसाकार इति त्रि.म.ना.२।१
(तस्मादेव) निरुपाधिकसाकारस्य
निरवयवत्वात्स्वाभिकमपि
दूरतो निरस्तम् त्रि.म.ना.२।१
निरुपाधिकी संविदेव कामेश्वरः भावनो. ९
निर्गतगुणत्रयम् निर्वाणो. ३
निर्गता विगताऽभीष्टा हेयोपादेय-
वर्जिता । ब्रह्मन्समाधिशब्देन
परिपूर्णमनोगतिः म.वा.र. १०
निर्गुणध्यानयुक्तस्य समाधिश्च ततो
भवेत् १यो.त. १०९
निर्गुणं गुणभोक्तृ च भ.गी.१३।१५
निर्गुणं निष्क्रियं सूक्ष्मं..एकमेवा-
द्वितीयं ब्रह्म अध्यात्मो.६१
निर्गुणं निष्क्रियं निर्मलं निरवद्यं..
निराकारं..आदिनारायणं ध्यायेत् त्रि.म.ना.७।१२
निर्गुणः केवलात्माऽस्मि ते. बिं. ३।२१
निर्गुणः केवलोऽस्म्यहम् मैत्रे. ३।२२

निर्गुणः साक्षीभूतः शुद्धः (आत्मा) २आत्मो. ६
निर्गुणः..निष्क्रियो निरवयव आत्मा म. वा. र. १५
निर्गुणोऽस्मि शिवोऽस्म्यहम् मैत्रे. ३।४
निर्गुणोऽस्मि समोऽस्म्यहम् मैत्रे. ३।४
निर्गुणोऽहं परात्परः ते. बिं. ४।१
निर्ग्रन्थिः शान्तसन्देहो जीवन्मुक्तो.. अनिर्वाणोऽपि निर्वाणश्चित्रदीप इव स्थितः अक्ष्युप. ४२
निर्जीवः काष्ठवत्तिष्ठेत् अमन.१।२५
निर्णिज्य कंसं चमसं वा पश्चादग्नेः.. संविशति चर्मणि वा स्थण्डिले वा छान्दो.५।२।८
निर्दग्धवासनाबीजः.. सदेहो वा विदेहो वा न भूयो दुःखभाग्भवेत् अ. पू. ५।१८
निर्दोषं हि समं ब्रह्म भ.गी.५।१९
निर्द्वन्द्वः सदाऽचलगात्रः..नित्यशुद्धः परमात्माऽहमेवेत्यखण्डानन्दः पूर्णः.. ब्रह्माहमिति कृतकृत्यो भवति म.वा.र. ८
निर्द्वन्द्वो नित्यसत्त्वस्थः भ.गी.२।४५
निर्द्वन्द्वो नित्यसत्त्वस्थः सर्वत्र समदर्शनः ना. प. ४।१३
निर्द्वन्द्वो निरहङ्कारो निराशीरपरिग्रहः ते. बिं. १।३
निर्द्वन्द्वो हि महाबाहो भ.गी. ५।३
निर्धनोऽपि सदा तुष्टोऽप्यसहायो महाबलः २ आत्मो. १२
निर्धूताशेषपापौघो मत्सायुज्यं भजत्ययम् मुक्तिको.१।२१
निर्बीजं त्रैपदं तत्त्वं तदस्मीति विचिन्तये सुबा.शीर्षकं. १
निर्बीजा वासना यत्र तत्तुर्यं सिद्धिदं स्मृतम् अ.पू. ५।१६
निर्भावंनिरहङ्कारंनिर्मनस्कमनीहितम् १सं.सो.२।३७
निर्भुजवक्ता इति ह स्माह ह्रस्वो माण्डूकेयः ३ ऐत. १।५।२
निर्मम: शुक्लध्यानपरायणोऽध्यात्मनिष्ठः.. ब्रह्माहमस्मीति ब्रह्मप्रणवमनुस्मरन्.. सन्यासेनैव देहत्यागं करोति स कृतकृत्यः.. ना. प. ३।८७
निर्ममेति विमुच्यते [पैङ्गलो.४।२०+ महो. ४।८९
निर्ममो निरञ्जनो निर्विकारः...
सोऽचिन्त्यो निर्वर्ण्यश्च पुनात्यशुद्धानि..एष परमात्मा नाम १ आत्मो. ३
निर्ममोनिरहङ्कारः[ना.प.६।२५+भ.गी.२।७१+१२।१३
निर्ममो निरहङ्कारो निरपेक्षः ना. प. ३।७६
निर्ममोऽध्यात्मनिष्ठः..ज्ञानवैराग्ययुक्तो.. भैक्षमाणो ब्रह्मभूयाय कल्पते प. हं. प. ६
निर्मलगात्रम्, निरालम्बपीठम् निर्वाणो. ४
निर्मलनिर्वाणमूर्तिरेवाहम् आ. प्र. ७
निर्मलसहजस्थितपुरुषे न दिवारात्रिभेदोऽप्यस्ति अमन.२।१०९
निर्मलं निर्मनस्कं च निराभासं सदा त्यज अमन.२।२६
निर्मलायां निराशायां स्वसंवित्तौ स्थितोऽस्म्यहम् १सं.सो.२।५१
निर्मानमोहा जितसङ्गदोषाः भ.गी.१५।५
निर्मानश्चानहङ्कारो.. नैव कुप्यति न द्वेष्टि नानृतं भाषते गिरा ना.प.५।२९
निर्मूलं कलनां त्यक्त्वा वासनां यः शमं गतः।ज्ञेयं त्यागमिमं विद्धि मुक्तं तं ब्राह्मणोत्तमम् महो. ६।४६
निर्मूलप्रविनष्टमारुततया निर्जीवकाष्ठोपमः..निर्वातस्थितदीपवत् सहजवान् पार्श्वस्थितैर्दृश्यते अमन.२।७५
निर्मोक्षायेह भूतानां लिङ्गग्रामो निरर्थकः ना. प. ४।३३
निर्यक्ष्ममचीचते कृत्यान्निर्ऋतिं च सूर्वै. ५
निर्योगक्षेम आत्मवान् भ. गी. २।४५
निर्लेपकं निरापायं कूटस्थमचलं ध्रुवम्। ज्योतिषामपि तज्ज्योतिस्तमःपारे प्रतिष्ठितम् यो. शि. ३।२१
निर्वचनमनौपम्यं निरुपाख्यं किं तद्वाच्यम् मैत्रा. ६।७
निर्वाणो देवता, निष्कुलप्रवृत्तिः निर्वाणो. १
निर्वाणोपनिषद्देयं..स्वमात्र..चिन्तयेत् निर्वाणो. शीर्ष.
निर्वाणोस्मि निरीहोऽस्मि निरंशोऽस्मि १ सं.सो.२।५६
निर्वातस्थितदीपवत् सहजाखण्डस्वभावं परं...तेजोऽमनस्कं ध्रुवम् अमन. २।७६
निर्वातस्थो यथा दीपो..जगद्व्यापारनिर्मुक्तस्तथा योगी लयङ्गतः अमन. १।२६

निर्वाणपदमाश्रित्ययोगी कैवल्यमश्नुते त्रि. ब्रा. १७३
निर्वाणवान्निर्मननः क्षीणचित्तः प्रशान्तधीः।..जाग्रत्येव सुषुप्तिस्थः कुरु कर्माणि वै द्विज अ.पू.५।११४
निर्विकल्पमनन्तं च... अप्रमेयमनाद्यन्तं यज्ज्ञात्वा मुच्यते बुधः त्रि. ता. ५।९
निर्विकल्पमनन्तं च हेतुदृष्टान्तवर्जितम्। ज्ञात्वा च.. शिवम्। न निरोधः.. इत्येषा परमार्थता ब्र. बिं. ९
निर्विकल्पस्वरूपात्मा सविकल्पविवर्जितः ते. बिं. ४।७५
निर्विकल्पस्वरूपोऽस्मि ते. बिं. ३।६
निर्विकल्पं निरञ्जनम्। एकमेवाद्वयं ब्रह्म नेह नानाऽस्ति किञ्चन अध्यात्मो. ६२
निर्विकल्पं निरञ्जनं निराख्यातमनादिनिधनमेकं परं ब्रह्म यो. चू. ७२
निर्विकल्पं परं तत्त्वं सदा भूत्वा परं भवेत् सौभाग्य. १६
निर्विकल्पः प्रसन्नात्मा प्राणायामं समाचरेत् म. वा. र. १
निर्विकल्पः समाधिः स्यान्निवातस्थितदीपवत् सरस्व. ५३
निर्विकल्पा च चिन्मात्रा वृत्तिः प्रज्ञेति कथ्यते। सा सर्वदा भवेद्यस्य स जीवन्मुक्त इष्यते (उच्यते) अध्यात्मो. ४४
निर्विकल्पेन मनसा यश्चरेच्छक्तिदेहे स कालीरूपो भवेत् श्रीचक्रो. २
निर्विकल्पो निराकाङ्क्षः सर्वव्यापी सोऽचिन्त्यो निर्वण्यश्च पुनात्यशुद्धानि.. एष परमात्मा नाम १ आत्मो. ३
निर्विकल्पोऽस्मि नित्योऽस्मि निरालम्बोऽस्मि निर्द्वयः कुण्डिको. २५
निर्विकल्पो ह्ययं दृष्टः प्रपञ्चोपशमोऽद्वयः वैतथ्य. ३६
निर्विकारतया वृत्त्या ब्रह्माकारतया पुनः। वृत्तिविस्मरणं सम्यक् समाधिरभिधीयते ते. बिं. १।३७
निर्विकारस्तथा शिवः त्रि. ब्रा. २।१३
निर्विकारं निराश्रयम्। ज्योतिषामपि तज्ज्योतिस्तमःपारे प्रतिष्ठितम् यो. शि. ३।२१
निर्विकारे निराकारे निर्विशेषे भिदा कुतः अध्यात्मो. २५
निर्विकारो निरामयः। सर्वनादान्तरोऽसि त्वं.. ते. बिं. ५।७१
निर्विकारोऽहमव्ययः ते. बिं. ३।६
निर्विचारोऽस्मि सोऽस्म्यहम् मैत्रे. ३।१०
निर्विशेषब्रह्मतत्त्वं स्वमात्रमिति चिन्तये योगकुं. शीर्ष.
निर्विशेषं निरञ्जनम्। अलक्षणमलक्ष्यं तदप्रतर्क्यमनूपमम् यो. शि. ३।१६
निर्विशेषे परानन्दे कथं शब्दः प्रवर्तते।.. तद्ब्रह्मानन्दमद्वन्द्वं.. विदित्वा स्वात्मरूपेण न बिभेति कुतश्चन कठरु. ३५
निर्वैरः शान्तो दान्तः सर्वतो निर्वेदमासाद्य.. स-रि-ग-म-प-ध-नि-स-संज्ञैर्वैराग्यबोधकरैः स्वरविशेषैः.. मोहयन्नागतं.. नारदमवलोक्य.. शौनकादिमहर्षयः... उपवेशयित्वा स्वयं सर्वेऽप्युपविष्टाः ना. प. १।१
निर्वैरः शान्तो दान्तः सन्न्यासी... देहत्यागं करोति स मुक्तो भवति ना. प. १।१
निर्वैरः सर्वभूतेषु भ.गी. ११।५५
निलयनं चानिलयनं च तैत्ति. २।६
निवर्तते तदुभयं वशित्वं चोपजायते आयुर्वे. ११
निवर्तन्ते क्रियाः सर्वास्तस्मिन्दृष्टे परावरे ध्या. बिं. १५
निवसिष्यसि मय्येव भ. गी. १२।८
निवातस्थितदीपवदचलसम्पूर्णभावाभावविहीनकैवल्यज्योतिर्भवति मं. ब्रा. २।६
निवार्यमाणयत्नेनतद्धर्तुं नावशक्यते अमन. २।७२
निवासः शरणं सुहृत् भ. गी. ९।१८
निवृत्तस्याप्रवृत्तस्यनिश्चलाहितदास्थितिः अ. शां. ८०
निवृत्तिर्विषयाणां च प्रत्याहारो न संशयः योगो.२४,२१
निवृत्तिः परमा तृप्तिरानन्दोऽनुपमः स्वतः अध्यात्मो.२९

निवृत्तेः सर्वदुःखानामीशानः प्रभुरव्ययः । अद्वैतः सर्वभावानां देवस्तुर्यो विभुः स्मृतः   आगम. १०

निवृत्तोऽपि प्रपञ्चो मे सत्यवद्भाति सर्वदा । सर्पादौ रज्जुसत्तेव ब्रह्मसत्तैव केवलम्   आ. प्र. १३

निशीथे शल्यानां मुखा शिवो नः शम्भुराभर   नीलरु. २।६

निशोचति निपतति वर्षिष्यति वा इति तेज एव तत्पूर्वं दर्शयित्वाऽथापः सृजते   छांदो. ७।११।१

निश्चयज्ञानमासनं (ब्रह्मीभूतस्य)   मं. ब्रा. २।५

निश्चयं च परित्यज्य अहं ब्रह्मेति निश्चयम् । आनन्दभरितस्वान्तो वैदेही मुक्त एव सः   ते. बिं. ४।३८

निश्चयं शृणु मे तत्र   भ. गी. १८।४

निश्चयेन सर्वाद्वैतं कर्तव्यम्   स्वसंवे. ४

निश्चलज्ञानमासनम् (आत्मनः)   आत्मपू. १

निश्चलत्वं प्रदक्षिणत्वम् [आत्मपू.१   +मं. ब्रा. २।५

निश्चलं निश्चरचित्तमेकीकुर्यात्...   अद्वैत. ४५

निश्चलं निर्विकल्पं च निराकारं निराश्रयम्   ते. बिं. १।६

निश्चलं (चित्तं) मोक्ष उच्यते   यो.शि. ६।५८

निश्चितं चात्मभूतानामरिष्टं योगसेवया   २ योगत. १५

निश्चितं मतमुत्तमम्   भ. गी. १८।६

निश्चितं युक्तियुक्तं च यत्तद्भवति नेतरत्.. मायया जायते तु सः   अद्वैत. २३

निश्चितायां यथा रज्ज्वां विकल्पो विनिवर्तते । रज्जुरेवेति चाद्वैतं तद्वदात्मविनिश्चयः   वैतथ्य. १८

निश्चिता विगताभीष्टा हेयोपादेयवर्जिता ।....परिपूर्णा मनोगतिः   अ. पू. १।५०

निश्चेष्टाः स्युः शार्दूलस्था हरिण्यो गानानन्दे लीयते विश्वमेतत्   गान्धर्वो. ९

निश्चेष्टो निरारम्भो ह्यानन्दं याति तत्त्ववित्   अमन. २।२१

निश्चेष्टो निर्विकारश्च लयो जीवति योगिनाम्   वराहो. २।८१

निश्श्रेयसकरावुभौ   भ. गी. ५।२

निश्श्रेयसाययुञ्जीतजपध्यानपरायणः   त्रि.ब्रा. २।१२८

निश्श्वासभूता मे (रामस्य) विष्णोर्वेदा जाताः सुविस्तराः । तिलेषु तिलवद्वेदे वेदान्तः सुप्रतिष्ठितः   मुक्तिको. १।९

निश्श्वासोच्छ्वासकासाश्च प्राणकर्म..   जा. द. ४।३१

निश्श्वासोच्छ्वासनं सर्वे मासानां संक्रमो भवेत्   जा. द. ४।४५

निश्शब्दं तत्परं ब्रह्म परमात्मा समीयते   ना. बिं. ४८

निश्शब्दं देशमास्थाय तत्रासनमवस्थितः   क्षुरिको. २

निश्शब्दं परमं पदं [ना. बिं. ४९+   ध्या. बिं. २

निश्शब्दः शून्यभूतस्तु मूर्ध्नि स्थाने ततोऽभ्यसेत्   मैत्रा. ६।२२

निश्शेषितजगत्कार्यः प्राप्ताखिलमनोरथः   महो. २।२९

निषिद्धैर्नवभिर्द्वारैर्निर्जने निरुपद्रवे । निश्चितं त्वात्ममात्रेणावशिष्टं योगसेवया   १यो.त. १४२

निषेधनं प्रपञ्चस्य रेचकाख्यः समीरितः । ब्रह्मैवास्मीति या वृत्तिः पूरको वायुरुच्यते   ते. बिं. १।३२

निष्कलं निर्मलं शान्तं सर्वातीतं निरामयम् । तदेव जीवरूपेण पुण्यपापफलैर्वृतम् [१यो.त.८+   यो. शि. १।९

निष्कलङ्का समा शुद्धा.. सा ब्रह्मपरमात्मेति नामभिः परिगीयते   म. वा. र. १३

निष्कलङ्को निरञ्जनो निर्विकल्पो निराख्यातः शुद्धो देव एको नारायणो न द्वितीयोऽस्ति कश्चित्   नारा. २

निष्कलात्मा निर्मलात्मा..   म. वा. र. १५

निष्कलङ्को निर्विकल्पो निरञ्जनो निराख्यातः शुद्धो देव एको नारायणो न द्वितीयोऽस्ति कश्चित्   त्रि.म.ना. १।९

निष्कलं निष्क्रियं शान्तं निरवद्यं निरञ्जनम्   श्वेता. ६।१९

निष्कलं निर्गुणं शान्तं निर्विकारं निराश्रयम् । निर्लेपकं निरापायं कूटस्थमचलं ध्रुवम् [ब्र.बिं. २१+   यो.शि. ३।२१

निष्कलं निर्मलं साक्षात् सकलं
गगनोपमम् ।..एतद्रूपं समायातः
स कथं मोहसागरे यो. शि. १।९०
निष्कलं निश्चलं शान्तं ब्रह्माहमिति
संस्मरेत् त्रि. ता. ५।२०
निष्कलं निष्क्रियं शान्तं निरवद्यं
निरञ्जनम् । अमृतस्य परं सेतुं.. श्वेताश्व.६।१९
निष्कलं निष्प्रपञ्चं च परं तत्त्वं
तदुच्यते । यस्मादुत्पद्यते सर्वं
यस्मिन्सर्वं प्रतिष्ठितम् अमन. १९
निष्कलःसकलीभावःसर्वत्रैव व्यवस्थितः ब्र. वि. ३८
निष्कलात्मा निर्मलात्मा बुद्धात्मा
पुरुषात्मकः ते. बिं. ४।६८
निष्कलाय विमोहाय शुद्धायाशुद्ध-
वैरिणे । अद्वितीयाय महते श्री-
कृष्णाय नमो नमः गो. पू. ४।१२
निष्कलां निष्क्रियां शान्तां...
वह्नाननकरांदेवीं गुह्यामेकां समाश्रये गुह्यका. ७३
निष्कले निष्क्रिये शान्ते निरवद्ये
निरञ्जने । अद्वितीये परे तत्त्वे
व्योमवत्कल्पना कुतः २आत्मो. ३०
निष्कलो निरञ्जनो निरभिमानः १आत्मो. ६
निष्कलोऽस्मि निराकृतिः कुण्डिको. २५
निष्कल्मषो भवेद्भक्तो...राजन्
शुद्धान्नभोजनात् । प्रसीदन्ती-
न्द्रियाण्याशु सत्त्वं च परिवर्धते भवसं. ४।१५
निष्कामानामेव श्रीविद्यासिद्धिः सौभाग्य. ४
निष्कुलप्रवृत्तिः, निष्केवलज्ञानम् निर्वाणो. १
निष्क्रम्य वनमास्थाय ज्ञानयज्ञो
जितेन्द्रियः । कालकाङ्क्षी चरन्नेव
ब्रह्मभूयाय कल्पते ना. प. ५।२६
निष्क्रियोऽस्म्यविकारोऽस्मि
निर्गुणोऽस्मि निराकृतिः म. वा. र. ९
निष्ठा ज्ञानस्य या परा भ.गी.१८।५०
निष्ठा त्वेव विजिज्ञासितव्या छांदो.७।२०।१
निष्ठा वेदान्तवाक्यानामथ वाचा-
मगोचरः । अहं सच्चित्परानन्द-
ब्रह्मैवास्मि न चेतरः महो. २।११

निष्ठां भगवो जिज्ञास इति छांदो. ७।२०।१
निष्पत्तौ वैष्णवः शब्दः कणतीति
कणो भवेत् सौभाग्य. १४
निष्पन्ना खिलभावशून्यनिभृति-
स्वात्मस्थितिस्तत्क्षणात्.. निर्वात-
स्थितदीपवत्सहजवान् पार्श्व-
स्थितिर्दृश्यते अमन. २।७५
निष्पन्नं ब्रह्म तत्तदा । स्वस्थं शान्तं
सनिर्वाणमकथ्यं सुखमुत्तमम् अद्वैत.४६,४७
निस्तिष्ठन्नेव श्रद्दधाति निष्ठा त्वेव
विजिज्ञासितव्या छांदो.७।२०।१
निस्स्तुतिर्निर्नमस्कारो निःस्वधाकार
एव च । चलाचलनिकेतश्च
यतिर्यादृच्छिको भवेत् [वैतथ्य.३८+ ना.प. ६।४४
निस्स्तोत्रो निर्विकारश्च पूज्यपूजा-
विवर्जितः अ.पू.५।१००
निस्स्त्रीकस्य क भोगभूः [याज्ञव.१७+ महो. ३।४८
निस्त्रैगुण्यपदोऽहं कुक्षिस्थानेकलोक-
कलनोऽहम् । कूटस्थचेतनोऽहं.. आ. प्र. ६
निस्त्रैगुण्यस्वरूपानुसन्धानं समयम् निर्वाणो. ६
निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन भ. गी. २।४५
निस्स्पृहः सर्वकामेभ्यः भ. गी. ६।१८
निस्सङ्गतत्त्वयोगज्ञो निरपेक्षः शनैः
शनैः । पाशं छित्वा यथा हंसो.. क्षुरिको. २१
निस्सङ्गव्यवहारत्वाद्भवभावनवर्जनात् ।
शरीरनाशदर्शित्वाद्वासना न प्रवर्तते अ.पू. ४।८८
निस्सङ्गः प्रज्ञया भवेत् । निश्चलं
निश्चरच्चित्तमेकीकुर्यात्प्रयत्नतः अद्वैत. ४५
निस्संशय ऋषिः, निर्वाणो देवता निर्वाणो. १
निस्सृतः सर्वभावेभ्यश्चिह्नं यस्य
न विद्यते आयुर्वे. २७
निहत्य धार्तराष्ट्रान्नः भ. गी. १।३६
निहव एकारो विश्वेदेवा औहो
इकारः प्रजापतिर्हिंकारः प्राणः
स्वरोऽन्नं या वाग्विराट् छांदो. १।१३।२
निहितमस्माभिरेतद्यथावदुक्तं मनसि मैत्रा. ४।५
निहितं गुहायाममृतं विभ्राजमान-
मानन्दं तं पश्यन्ति विद्वांसः.. सुबालो. ८।१

निहितं ब्रह्म यो वेद परमे व्योम्नि संज्ञिते। सोऽश्नुते सकलान्कामान्.. कठरु. १४
नीतिरस्मि जिगीषताम् भ.गी.१०।३८
नीरदाभं स्वरं सान्द्रं दक्षिणाग्निरुदाहृतम् पं. ब्र. ३
नीरागं निरुपासङ्गं निर्द्वन्द्वं निरुपाश्रयम् । विनिर्याति मनोमोहात्.. महो. ५।६७
नीरुजश्च युवा चैव भिक्षुर्नावसथे वसेत् । परार्थे न प्रतिग्राह्यं.. १सं.सो.२।९३
नीलजीमूतसङ्काशं.. वनमालिनं.. सुधीः संस्मरेत्प्रजपेत् ना.पू.ता.४।१२
नीलः पतङ्गो हरितो लोहिताक्षस्तडिद्गर्भ ऋतवः समुद्राः । अनादिमत्त्वं विभुत्वेन वर्तसे यतो जातानि भुवनानि विश्वा श्वेताश्व. ४।४
नीलाख्या सरस्वती तारोप. ३
नीला च मुखविद्युन्मालिनी सर्वौषधीनां सर्वप्राणिनां पोषणार्थं सर्वरूपा भवति सीतो. १०
नीलतोयदमध्यस्था विद्युल्लेखेव भास्वरा । नीवारशूकवत्तन्वी पीता भास्वत्यणूपमा । तस्याः शिखाया मध्ये परमात्मा व्यवस्थितः महाना.९।१२
[+कालिको.५+ ना.उ.ता.१।६
नीहारधूमार्कानलानिलानां खद्योतविद्युत्स्फटिकाशनीनाम् । एतानि रूपाणि पुरःसराणि ब्रह्मण्यभिव्यक्तिकराणि योगे श्वेताश्व.२।११
नूनं चैत्यांशरहिता चिच्चकात्मनि लीयते ।.. सत्तासामान्यता तदा अ. पू. १।२४
नृकेसरिविग्रहं योगिध्येयं परं पदं साम जानीयाद्यो जानीते सोऽमृतत्वं च गच्छति नृ. पू. १।६
नृचक्षसं त्वा हविषा विधेम तै.आ.३।१५।१
[महाना. १३।१३+ चित्त्यु. १५।१
नृषद्वरस दृतसद्व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत्
[कठो.५।२+महाना.८।६+१२।३+ नृ. पू. ३।१
[ऋ. सं. ३।७।१४= मै. ४।४०।५

नृसिंह इत्याह—यथा यजुर्वेदैतत् अव्यक्तो. ३
नृसिंह एवैकल एष तुरीय एष एवोग्रः नृसिंहो.४।२
नृसिंह एष एव भीषण एष एव नृसिंहो.४।२
नृसिंहत्वाद्भीषणत्वात्...एतद्ब्रह्म नृसिंहो.७।५
नृसिंह देवेश तव प्रसादतः ।.. वेदात्मकं ब्रह्म निजं विजानते स्कन्दो. १३
नृसिंहमनृसिंहं भीषणमभीषणं भद्रमभद्रं मृत्युमृत्युममृत्युमृत्युं नमाम्यनमाम्यहमनहं नृसिंहानुष्टुभैव बुबुधिरे नृसिंहो. ६।१
नृसिंहश्चिद्रूप एव नृसिंहो. ९।१
नृसिंहं लोकसंहारं सञ्जघान महाबलः शरभो. ५
नृसिंहं षष्ठं स्थानं (जानीयात्) नृ. पू. २।२
नृसिंहः स्वयमुद्बभौ नृसिंहो. ४।३
नृसिंहानुष्टुभैव जानीयात् नृसिंहो. ६।१
(ॐ) नृसिंहाय विद्महे वज्रनखाय धीमहि । तन्नः सिंहः प्रचोदयात् नृ. प. ४।३
नृसिंहोऽसौ परमेश्वरोऽसौ हि सर्वत्र सर्वदा सर्वात्मा सन्सर्वमत्ति नृसिंहो. ४।२
नेति नेति नह्येतस्मादिति नेत्यन्यत्परं बृह. २।३।६
नेङ्गते न विवर्तते न च वीत इति छाग. ६।१
नेङ्गते सोपमा स्मृता भ.गी. ६।१९
नेति नेतीति रूपत्वादशरीरो भवत्ययम् वराहो. २।६८
नेति नेतीति विहाय यदवशिष्यते सदद्वयं ब्रह्म तत्सिद्धयेलक्ष्यत्रयानुसन्धानः कर्तव्यः अद्वयता. २
नेतिनेतीत्यात्मा[बृह.३।९।२६+४।२।४ +४।४।२२
(अथ) नेति नेत्येतदित्येत्येति आर्षे. ९।२
नेति हैवोवाच वेत्थो यथाऽसौ लोक एवं बहुभिः पुनः पुनः प्रयद्भिर्न सम्पूर्यता ३ इति बृह. ६।२।२
नेति होवाच याज्ञवल्क्यो यथैवोपकरणवतां जीवितं तथैव ते जीवितं स्यादमृतत्वस्य तु नाशाऽस्ति वित्तेनेति [बृ.उ.२।४।२+ बृह. ४।५।३
नेतोऽन्ये विद्यन्ते यस्य ये म इम उपनिहिता इति छांदो.१।१०।२
नेत्पाप्मानं मृत्युमन्ववायानीति बृह. १।३।१०

नेत्यन्यत् परमस्त्यथ नामधेय९
सत्यस्य सत्यमिति प्राणा वै
सत्यं तेषामेव सत्यम् बृह. २।३।६
नेत्यमृतम्, तदेतत्पुष्पफलं वाचो
यत्सत्यम् १ ऐत.३।६।४
नेत्यां विजिज्ञासीतैतारं विद्यान्न
मनोविजिज्ञासीतमंतारंविद्यात् कौ. त. ३।८
नेत्रस्थं जागरितं विद्यात्कण्ठे स्वप्ने
समाविशेत् [ब्रह्मो. २१+ ना. प. ५।१३
नेत्रादिरहितोऽस्म्यहम् मैत्रे. ३।१४
नेदममूलं भविष्यति छां. ६।८।३,५
नेदं ब्रह्मेति निश्चयः, एष एव
क्षयस्तस्या ब्रह्मेदमिति निश्चयः अ. पू. ५।१९
नेदीयसितमो इव दवीयसि तमा एव आर्षे. ७।१
नेन्द्रियं न शरीरं न नाम न रूपम् ग. शो. ३।२
नेन्द्रियाणि नचैवार्थाः सुखदुःखस्यहेतवः आयुर्वे. २
नेन्मा पाप्मा मृत्युराप्नुवदिति यद्यु चरे-
त्समापिपयिषेत्तेनो एतस्यै देवतायै
सायुज्य९ सलोकतां जयति बृह.१।५।२३
नेमामस्पृक्षदिदुदस्यमानः वा. मं. ३
नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः कठो. ५।१५+
[मुण्ड. २।२।१०+श्वेता. ६।१४+ गुह्यका. ४५
नेमे द्यावा पृथिवी न नक्षत्राणि
न सूर्यो न चन्द्रमाः (आसन्) महो. १।१
नेशे मे कश्च महिमानमन्यः वा. मं. १२
नेष्टं देहगृहं मम ।.. नाशैकधर्मिणो
ब्रूहि कैव कायस्य रम्यता महो. ३।३०
नेह नानास्ति किञ्चन [कठो.४।११+ बृ.उ. ४।४।१९
[त्रि.म.ना. ३।३+अध्यात्मो. ६३+ निरालं. ११
नेह नानेति चाम्नायादिन्द्रो माया-
भिरित्यपि । अजायमानो बहुधा
मायया जायते तु सः अद्वैतो. २४
नेहन्ते प्रकृतावन्यद्रमन्ते शिष्टवर्त्मनि
(सत्त्वस्थाः) महो. ४।१८
नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति भ. गी. २।४०
नेन्द्रेःरदले नीलवर्णे यदा विश्राम्यते
मनः । तदा क्रोधश्च कामश्च
मनोभिभ्रमतिर्भवेत् विश्रामो. ४

नैकत्राशी न बाह्यदेवार्चनं कुर्यात् (यतिः) ना.प.७।१
नैकाकिता युक्तेति गुणान्निर्ममे ग. शो. ३।४
नैकान्नाशी भवेत्कचित् । चित्तशुद्धि-
र्भवेद्यावत्तावन्नित्यं चरेत्सुधीः ना. प. ५।५०
नैतज्जाग्रन्न च स्वप्नः सङ्कल्पानाम-
सम्भवात् । सुषुप्तभावो नाप्येत-
दभावाज्जडतास्थितेः अ. पू. ५।१०९
नैतत्त्वय्युपपद्यते भ. गी. २।३
नैतदचीर्णव्रतोऽधीते–नमः परम-
ऋषिभ्यः मुण्ड. ३।२।११
नैतदब्राह्मणो विवक्तुमर्हति समिध९
सोम्याहरोप त्वा नेष्ये छां.उ. ४।४।५
नैतदशकं विज्ञातुं, यदेतद्यक्षमिति केनो. ३।६,१०
नैतद्देवा आप्नुवन्पूर्वमर्शत् ईशा. ४
नैत९ सेतुमहोरात्रे तरतो न जरा न
मृत्युर्न शोको न सुकृतं न दुष्कृत९
..अपहतपाप्मा ह्येष ब्रह्मलोकः छान्दो. ८।४।१
नैतावता विदितं भवतीति बृह. २।१।१४
नैतां सृङ्कां वित्तमयीमवाप्तो यस्यां
मज्जन्ति बहवो मनुष्याः कठो. २।३
नैति मामेति सोऽर्जुन भ. गी. ४।९
नैते सृती पार्थ जानन् भ. गी. ८।२७
नैनमूर्ध्वं न तिर्यञ्चं न मध्ये परि-
जग्रभत् । न तस्येशे कश्चन.. महाना.१।१०
नैनमेते रश्मयः प्रत्यायन्ति बृह. ५।५।२
नैनमेते रश्मयः प्रत्यायन्ति (मा.पा.) बृ. उ. ५।४।२
नैनं कृताकृते तपतः बृह. ४।४।२२
नैनं चक्षुर्जहाति सर्वाण्येनं भूतान्य-
भिरक्षन्ति बृह. ४।१।४
नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति
पावकः [भ. गी. २।२३+ भवसं. २।३८
नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहत्यग्निः... सामर. १००
नैनं पश्यन्त्यचेतसः भ.गी.१५।११
नैनं पाप्मा तपति सर्वं पाप्मानं तपति बृह. ४।४।२३
नैनं पाप्मा तरति सर्वं पाप्मानं तरति बृह. ४।४।२३
नैनं पुरा कालात्प्राणो जहाति बृह. २।१।१०
नैनं पुरा कालान्मृत्युरागच्छति बृह. २।१।१२

नैनं प्राणो जहाति सर्वाण्येनं
भूतान्यभिरक्षन्ति बृह. ४।१।३
नैनं मनो जहाति सर्वाण्येनं
भूतान्यभिरक्षन्ति बृह. ४।१।६
नैनं मृत्युराप्नोति मृत्युरस्यात्मा
भवत्येतासां देवतानामेको भवति बृह. १।२।७
नैनं वाग्जहाति सर्वाण्येनं
भूतान्यभिरक्षन्ति बृह. ४।१।२
नैनं वाचा स्त्रियं ब्रुवन्नैनमस्त्री पुमान्ब्रुवन् १ऐत.३।८।९
नैनं विद्वांसमनृतं९ हिनस्ति बृह. ५।५।१
नैनं श्रोत्र९ जहाति सर्वाण्येनं
भूतान्यभिरक्षन्ति बृह. ४।१।५
नैनं हृदयं जहाति सर्वाण्येनं
भूतान्यभिरक्षन्ति बृह. ४।१।७
नैनामूर्ध्वं न तिर्यक्च न मध्यं
परिजग्रभत् गुह्यका. ६२
नैनां प्राप्य विमुह्यति भ.गी.२।७२
नैनेन किञ्चनानावृतं नैनेन
किञ्चनासंवृतम् बृह. २।५।१८
नैरात्म्यवादकुहकैर्मिथ्या दृष्टान्त-
हेतुभिः। भ्राम्यल्लोको न जानाति
वेदविद्यान्तरं तु यत् मैत्रा. ७।८
नैव किञ्चित् करोति सः भ.गी. ४।२०
नैव किञ्चित् करोमीति भ. गी. ५।८
नैव कुर्वन्न कारयन् भ. गी. ५।१३
नैव केनच नाप्यं, कुत उ एतावत्
प्रतिगृह्णीयात् बृह. ५।१४।६
नैव चिन्त्यं न (चाचिन्त्यमचिन्त्यं)
चाचिन्त्यं नाचिन्त्यं चिन्त्यमेव च।
पक्षपातविनिर्मुक्तं ब्रह्म सम्पद्यते
(तदा) ध्रुवम् [त्रि.ता.५।६+ ब्र. बिं. ६
नैव तत्र काचन भिदाऽस्त्यत्र हि
भिदामिव मन्यमानः शतधा
सहस्रधा भिन्नो मृत्योः स मृत्यु-
माप्नोति तदेतदद्वयं स्वप्रकाशं
महानन्दमात्मैवैतत् नृसिंहो. ८।७
नैव तत्र काचन भिदाऽस्त्यथ
तस्यायमादेशोऽमात्रश्चतुर्थोऽव्यव-
हार्यः प्रपञ्चोपशमः शिवोऽद्वैत
ॐकार आत्मैव संविशत्यात्म-
नाऽऽत्मानम् नृसिंहो. २।७
नैव तस्य कृतेनार्थो नाकृतेनेह कश्चन भ.गी. ३।१८
नैव त्यागफलं लभेत् भ.गी. १८।८
नैव देहादिसङ्घातो घटवद्दृष्टिगोचरः वराहो. २।२४
नैवमात्मा प्रवचनशतेनापि लभ्यते, न
बहुश्रुतेन, न बुद्धिज्ञानाश्रितेन, न
मेधया, न वेदैर्नयज्ञैर्नतपोभिरुग्रैः सुबालो.९।१४
नैव सव्यापसव्येन भिक्षाकाले
विशेद्गृहान् १सं.सो.२।६३
नैव स्त्री न पुमानेष न चैवायं
नपुंसकः। यद्यच्छरीरमादत्ते तेन
तेन स युज्यते [श्वेताश्व. ५।१०+ भवसं. २।२५
नैव स्त्री न पुमानेषा नैव चेयं
नपुंसका। यद्यच्छरीरमादत्ते
तेन तेनैव युज्यते गुह्यका. ६५
नैवं पापमवाप्स्यसि भ.गी.२।३८
नैवं शोचितुमर्हसि भ.गी.२।२६
नैव वाचा न मनसा प्राप्तुं शक्यो न
चक्षुषा। अस्तीति ब्रुवतोऽन्यत्र
कथं तदुपलभ्यते कठो. ६।१२
नैवातोऽद्वयो ह्ययमात्मैकल एव नृसिंहो. ८।१
नैवात्मनःसदाजीवेविकारावयवौ तथा अद्वैत. ७
नैवाददीत पाथेयं यतिः किञ्चिद-
नापदि। पक्वमापत्सु गृह्णीयात् १सं.सो.२।९२
नैवास्या अन्तं गच्छत्यनन्ता हि दिशो
दिशो वै सम्राट् बृह. ४।१।५
नैवेह किञ्चनाग्र आसीत् [बृह.१।२।१ +सुबालो. ६।१
नैवैतेन सुरभि न दुर्गन्धि विजानाति छान्दो. १।२।९
नैवैनं ब्रूयुः पितृहासीति, मातृ-
हासीति, न भ्रातृहासीति.. छांदो. ७।१५।३
नैवैषोऽस्य दोषेण दुष्यति छांदो.८।१०।१,२
नैषा तर्केण मतिरापनेया प्रोक्ताऽन्ये-
नैव सुविज्ञानाय प्रेष्ठ कठो. २।९
नैषा योगसिद्धिः (पूर्वोक्ता) महावा. २
नैषा (पूर्वोक्ता) मनोलयः महावा. २

नैषा समाधिः (पूर्वोक्ता) महावा. २
नैषोऽन्धकारोऽयमात्मा महावा. २
नैष्कर्म्यसिद्धिं परमां भ.गी. १८।४९
नैष्कर्म्यं पुरुषोऽश्नुते भ. गी. ३।४
नैष्कर्म्येण न तस्यार्थस्तस्यार्थोऽस्ति
न कर्मभिः।..यस्यनिर्वासनंमनः मुक्तिको.२।२०
नो एतन्नाना तद्यथा रथस्यारेषु नेमि-
रर्पिता नाभावरा अर्पिता एवमेवैता
भूतमात्राः प्रज्ञामात्रास्वर्पिताः
प्रज्ञामात्राः प्राणे अर्पिताः कौ. त. ३।९
नो एव स्वयं नास्य प्रजा पुरा
कालात्प्रवर्तते कौ. त. ४।६
नो एव स्वयं नास्य प्रजा पुरा-
कालात् सम्मोहमेति कौ.त. ४।१२
नो एव स्वयं नास्य प्रजा पुरा
कालात्प्रमीयते कौ. त. ४।१३
नो एवान्यत्रैतस्माद्वसाऽपराणि
पञ्च वर्षाणि छांदो.८।११।३
नो एवासाधुना कनीयानेष सर्वेश्वर
एष भूताधिपतिरेष सेतुर्विधरणः बृह. ४।४।२२
नो एवासाधुना कर्मणा कनीयानेष
ह्येवैनं साधु कर्म कारयति तं
यमन्वानुनेषत्येष एवैनमसाधु कर्म
कारयति कौ. त. ३।९
नो एवेमानि भूतानि विनाशमेवा-
पीतो भवति नाहमत्र भोग्यं
पश्यामि [छांदो. ८।११।१,२
नो चेन्मौनं समास्थाय निर्मानो
गतमत्सरः। भावयन्मनसा विष्णुं
लिपिकर्मार्पितोपमः महो. ३।५७
नोच्चारयेच्च तद्वाक्यमुच्चार्य नरकं
व्रजेत्। (न गुरोरप्रियं कुर्यात्
पीडितस्ताडितोऽपि वा) शिवो. ७।३७
नोच्छ्वसेन्न विश्वसेन्नैव गात्राणि
चालयेत्। एवं भावं नियुञ्जीयात्
कुम्भकस्येति लक्षणम् अ. ना. १४
नोत्तिष्ठति न तिष्ठति। न च याति न
चायाति न च नेह न चेह चित् महो. ५।१०२
नोत्थापयेत्सुखासीनं शयानं न
प्रबोधयेत्। आसीनो गुरुमासीनं
शयानं न प्रबोधयेत् शिवो. ७।३१
नोदेति नास्तमायाति सुखदुःखे
मनःप्रभा। यथाप्राप्तस्थितिर्यस्य
स जीवन्मुक्त उच्यते वराहो. ४।२२
नोद्विजेत् प्राप्य चाप्रियम् भ.गी.५।२०
नोद्वेगी न च तुष्टात्मा संसारे
नावसीदति महो. ६।६३
नो न वेदेति वेद च केनो. २।२
नोपजनꣳ स्मरन्निदꣳ शरीरꣳ स यथा
प्रयोज्य आचरणे युक्त एवमेवाय-
मस्मिञ्छरीरे प्राणो युक्तः छांदो.८।१२।३
नोभयतः प्रज्ञो न प्रज्ञानघनो न
प्रज्ञो नाप्रज्ञोऽपि नो विदितं वेद्यं
नास्तीत्येतन्निर्वाणानुशासनमिति सुबालो.५।१५
नोभयतः प्रज्ञां प्रज्ञानघनां...चतुर्थ-
खण्डात्मिकां मन्यंते श्रीवि.ता.४।१
नौषधानि न मन्त्राश्च न होमा न
जपस्तथा। त्रायते मृत्युनोपेतं
जरया चापि मानवम् भवसं.१।१६
न्यग्रोधफलमत आहरेतीदं भगव
इति भिन्धीति छांदो.६।१२।१
न्यमीमिषदा ३ इत्यधिदैवतम् केनो. ४।४
न्यायार्जितधनं श्रान्ते श्रद्धया वैदिके
जने। अन्यद्वा यत्प्रदीयन्ते
तद्दानं प्रोच्यते मया आ. द. २।७
न्याय्यं वा प्राप्य चाप्रियम् भ.गी.१८।१५
न्यास इति ब्रह्मा, ब्रह्मा हि परः,
परो हि ब्रह्मा महाना.१६।१२
न्यास इत्याहुर्मनीषिणो ब्रह्माणं महाना.१७।१२
न्यासोपयोगस्तथैवार्घ्यदाने च...
बीजन्यासो हंसन्यास इति..वर्णयन्ति सूर्यता. ३।१

इत्युपनिषद्वाक्यमहाकोशस्य पूर्वार्द्धः।

उपनिषद्वाक्यमहाकोशः

[उत्तरार्धः]

प

पक्कमापत्सु गृह्णीयाद्यावदन्नं न लभ्यते — १ सं.सो.२।९२
पक्वविज्ञानाज्जीवन्मुक्तो भवति — त्रि.म.ना. ५।५
पक्वायदिवापक्वंयाचमानोव्रजेदधः — १ सं.सो.२।९४
पक्षपातविनिर्मुक्तं ब्रह्म सम्पद्यते — ब्र. बिं. ६
पक्षं कञ्चन नाश्रयेत् — ना. प. ५।३२
पक्षावैमासोऽइति द्वौमासौवा वसेत् — १सं. सो. १।२
पक्षैस्तु कुक्कुटो हन्ति निकर्षेण तु सूकरः । आगतं गतया श्वानं चक्षुषा वृषलीपतिः — इतिहा. ६३
पङ्क्तिबद्धेन्द्रियपशुंवल्गत्तृष्णागृहाङ्गणम् । चित्तभृत्यजनाकीर्णं नेष्टं देहगृहं मम — महो. ३।२९
पचाम्यन्नं चतुर्विधम् — भ.गी.१५।१४
पञ्चकृत्यनियन्तारं पंचब्रह्मात्मकं बृहत् । पंचब्रह्मोपसंहारं कृत्वा स्वात्मनि संस्थितः — पञ्चब्र. १६
पञ्चकृत्यरूपा परमेश्वरी भवति — ना.पू.ता.२।१
पञ्चकृत्वः प्रस्तौति...उद्गायति... प्रतिहरति...उपद्रवति...निधनमुपयन्ति तत्स्तोभसहस्रं भवति — १ऐत.३।४।२
पञ्चकोशविवर्जितः । निर्विकल्पस्वरूपात्मा — ते.बिं. ४।७५
पञ्च चेन्द्रियगोचराः — भ. गी. १३।६
पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि पंच कर्मेन्द्रियाणि — सामर. १०१
पञ्चज्ञानेन्द्रियैर्युक्ता ज्ञानशक्तिबलोद्यताः (नागादिवायवः) — ब्र. वि. ६८
पञ्च तन्मात्राणि भूतशब्देनोच्यन्ते पंचमहाभूतानि भूतशब्देनोच्यन्तेऽथ तेषांयः समुदायः शरीरमित्युक्तम् — मैत्रा. ३।२
पञ्चतन्मात्राः पञ्च सूक्ष्मभूतान्युपादाय पञ्चीकरणे कृते पञ्चमहाभूतान्यजायन्त — ग.शो. ४।५
पञ्चतन्मात्रेभ्यः पञ्चमहाभूतानि पञ्चमहाभूतेभ्योऽखिलं जगत् — त्रि. ब्रा. १।१
पञ्चतन्मात्रेभ्यः पञ्चमहाभूतानि । पञ्चमहाभूतेभ्यो ब्रह्मैकपादव्याप्तमेकमविद्याण्डं जायते — त्रि.म.ना.२।५
पञ्चत्वं न स पश्यति (गोपीचन्दनधारकः) — गोपीचं. ८

पञ्चदशकल्पः प्रयुक्ता पञ्चदशेन वज्रेण सम्मिता (गायत्री) ब्रह्मलोकमभिजयति — सन्ध्यो. २
पञ्चदशतिथिरूपेण कालस्य परिणामावलोकनस्थितिः पञ्चदशनित्याः — भावनो. ७
पञ्चदशदिनानि पक्षो भवति, पक्षद्वयं मासो भवति, मासद्वयमृतुर्भवति, ऋतुत्रयमयनं भवति, अयनद्वयं वत्सरो भवति, वत्सरशतं ब्रह्ममानेन ब्रह्मणः परमायुःप्रमाणम् — त्रि. म.ना.३।४
पञ्चदशाहानि माशीः काममपः पिब — छान्दो.६।७।१
पञ्च द्वाराणि मनसा चक्षुरादीन्यमून्यलम् । बुद्धीन्द्रियाभिधानानि तान्येवालोकयाम्यहम् — अ. पू. ३।७
पञ्चधा वर्तमानं तं ब्रह्मकार्यमिति स्मृतम् । ब्रह्मकार्यमिति ज्ञात्वा ईशानं प्रतिपद्यते — पंचब्र. २२
पञ्चपादं पितरं द्वादशाकृतिं दिव आहुः परे अर्धे पुरीषिणम् — प्रश्नो.१।११
[ऋ. अ. २।३।१६=मं. १।१६४।१२
पञ्चप्राद्ब्रह्मणो न किञ्चन — परब्र. ३
पञ्चब्रन्धस्वरूपेण पञ्चब्रन्धा ज्ञानस्वरूपाः — लिङ्गोप. १
*पञ्चब्रह्म परं विद्यात्सद्यो जातादिपूर्वकम् — पंचब्र. २१
पञ्च ब्रह्मभिरङ्गैश्च त्रिमाला पञ्च ब्रह्म च । मथित्वा मूलमन्त्रेण सर्वाण्यक्षाणि धारयेत् — रु. जा. २३
पञ्चब्रह्ममयं रूपं स्थूलं वैराजमुच्यते । हिरण्यगर्भं सूक्ष्मं तु नादं बीजत्रयात्मकम् । परं ब्रह्म परं सत्यं सच्चिदानन्दलक्षणम् । (ब्रह्मवपुः) — यो.शि. २।१५
पञ्चब्रह्मात्मकं सर्वं स्वात्मनि प्रविलाप्य च । सोऽहमीति जानीयाद्विद्वान्ब्रह्मामृतो भवेत् — पं. ब्र. ३३
पञ्चब्रह्मात्मकातीतो भासते स्वस्वतेजसा — पंचब्र. १७
पञ्चब्रह्मात्मिकीं विद्यां योऽधीते भक्तिभावितः । स पञ्चात्मकतामेत्य भासते पञ्चधा स्वयम् — पंचब्र. २६
पञ्चभिर्गन्धैरमृतैः पञ्चभिर्गव्यैस्तनुभिः शोधयित्वा पञ्चभिर्गव्यैर्गन्धोदकेन संस्नाप्य...प्रत्यक्षमातृकान्तैर्वर्णैर्भावयेत् — अ. मा. ३
पञ्चभिर्नामभिर्मृशमैश्वर्यकारणाद्भूतिः — बृ.जा. १।६
पञ्चभूतकारणं तडित्कटाभं तद्वच्चतुःपीठम्, तन्मध्ये तत्त्वप्रकाशो भवति — मं. ब्रा. २।१
पञ्चभूतमयी तनुः — अमन.१।१७
पञ्चभूतात्मकं शङ्खं करे रजसि संस्थितम् । बालस्वरूपमित्यन्तं मनश्चक्रं निगद्यते — गोपालो.२।३०
पञ्चभूतात्मको देहः पञ्चमण्डलपूरितः — वराहो. ५।१
पञ्चभूतानां पतयः पञ्च सदाशिवेश्वररुद्रविष्णुब्रह्माणश्चेति — यो. चू. ७२
पञ्चभूतान्यहं पञ्चमहाभूतान्यहं — अद्वै. भा. ३
पञ्चभूतेषु गन्धवती पृथिव्यासीत् — गोपीचं. ८
पञ्चभूमिं समारुह्यसुषुप्तिपदनामिकाम् । शान्ताशेषविशेषांशस्तिष्ठत्यद्वैतमात्रके — वराहो. ४।१४
(अथ) पञ्चमी रश्मिर्निर्विषयामत्ति — मैत्रा. ६।२१
पञ्चम आकाशो भवति — ना.पू.ता.१।१
पञ्चमभूम्यां विहरन्ब्रह्मविद्वरो भवति — वराहो. ४।१
पञ्च महाभूतानि पंच तन्मात्राणि — सामर. १०१
(अथ) पञ्च तन्मात्राणि भूतशब्देनोच्यन्ते, पंच महाभूतानि भूतशब्देनोच्यन्तेऽथ तेषां यः समुदायः शरीरमित्युक्तम् — मैत्रा. ३।२
पञ्चमहाभूतेभ्योऽखिलं जगत् — त्रि. ब्रा. १।१
पञ्चमहाभूतेभ्यो ब्रह्मैकपादव्याप्तमेकमविद्याण्डं जायते — त्रि.म.ना.२।५
पञ्चमहायज्ञक्रियां निवर्तन्त आत्मानं प्रार्थयन्ते — आश्रमो. ३

* पञ्चब्रह्मणां सविस्तरं वर्णनं शुद्धपुराणतोऽवसेयम् ।

पञ्चमं कण्ठचक्रं स्यात्...तत्र ध्यात्वा
शुचि ज्योतिः सिद्धीनां भाजनं भवेत् योगरा.१२,१३
पञ्च मा प्रभ्रान्जन्यबन्धुरप्राक्षीत् बृह. ६।२।३
पञ्चमींभूमिकामेत्यसुषुप्तपदनामिकाम् ।
शान्ताशेषविशेषांशस्तिष्ठत्यद्वैतमात्रकः अक्ष्युप. ३७
पञ्चमुखं पञ्चस्वरूपं पञ्चाक्षरं
पञ्चसूत्रं ज्ञानम् लिङ्गोप. १
(ॐ) पञ्चमे ऊर्ध्वाम्नायः सुमेरुमठः मठाम्ना. ७
पञ्चमे कल्पतरोर्मूले उषा, षष्ठे देवाः राधोप. २।१
पञ्चमे धामनि ध्येयेयं चान्द्री कामाधः
क्षिवाधकामा त्रि.ता. १।१६
पञ्चमे मासे नखरोमण्यादेशः निरुक्तो. १।४
पञ्चमे मासे पृष्ठवंशो भवति गर्भो. ३
पञ्चमे स्रवते तालु षष्ठेऽमृतनिषेवणम् ।
सप्तमेगूढविज्ञानं परा वाचा तथाष्टमे हंसो. ९
पञ्चमो (आश्रमः) लिङ्गधारणं लिङ्गो. १
पञ्चम्यामथ मात्रायां यदि प्राणै-
र्वियुज्यते । उषितः सह देवत्वं
सोमलोके महीयते ना. बिं. १४
(इति तु) पञ्चम्यामाहुतावापः पुरुष-
वचसो भवन्तीति छांदो. ५।९।१
पञ्चयज्ञा वेदशिरःप्रविष्टाः क्रिया-
वन्तोऽमी सङ्गता ब्रह्मविद्याम् ।...
विष्ण्वात्मका विष्णुमेवापियन्ति शाट्याय. ११
पञ्चयोजनविस्तीर्णं मृत्योश्च
मुखमण्डलम् वनदु. १६८
पञ्चरात्रलयेनापि... दूरश्रवणविज्ञानं अमन. १।५४
पञ्चरात्राद्बुद्बुदः, सप्तरात्रात्पेशी निरुक्तो. १।४
पञ्चरूपपरित्यागादस्वरूपप्रहाणतः ।
अधिष्ठानंपरंतत्त्वमेकं सच्छिष्यतेमहत् बह्वृचो. ३
पञ्चवक्त्रं तु रुद्राक्षं... पञ्च ब्रह्म-
स्वरूपकम् । पञ्चवक्त्रः स्वयं ब्रह्म
पुंहत्यां च व्यपोहति रु.जा. २८
पञ्च वा एते महायज्ञाः सतति प्रता-
यन्ते सतति सन्तिष्ठन्ते देवयज्ञः
पितृयज्ञो भूतयज्ञो मनुष्ययज्ञो
ब्रह्मयज्ञ इति संन्यवै. १४
पञ्च विषयाः प्रपञ्चः, तेषां
ज्ञानस्वरूपाः कौलो. १

पञ्चविंशकमज्ञानं शिवो. १।१२
पञ्चविंशतिक इत्येके षड्विंश इति
चापरे । एकत्रिंशक इत्याहुरनन्त
इति चापरे वैतथ्य. २६
पञ्चविंशतितत्त्वात्मकः पुरुषत्वं
परब्रह्म भवेत् ना.पू.ता.५।४
पञ्चविंशतिवत्सरं गार्हस्थ्यं ना.प. १।१
पञ्चविंशतिवत्सरं वानप्रस्थाश्रमं ना. प. १।१
पञ्चविंशतिश्चानुष्टुभः १ ऐत.३।६।१
पञ्चविंशत्तमो जीवः सामर. १०१
पञ्चविंशत्यक्षराणि । पंचदशाक्षरं
पूर्वम् । दशाक्षरं परम् द्वयोप. १
पञ्च शब्दादयस्तथा वराहो. १।३
पञ्च शाखा अथर्वणः सीतो. १६
पञ्चसप्तगृहाणां तु भिक्षामिच्छेत्क्रिया-
वताम् । गोदोहमात्रमाकाङ्क्षे-
न्निष्क्रान्तो न पुनर्व्रजेत् १सं.सो.२।६१
पञ्चसंस्कारयुक्तानां वैष्णवानां
विशेषतः । गृहार्चनविधाने न
शङ्खघण्टारवं त्यजेत् सुदर्श. १५
पञ्चस्रोतोम्बुं पंचयोन्युग्र (वक्त्रां)-
रूपां पंचप्राणोर्मिं पंचबुद्ध्यादि-
मूलाम् । पंचावर्तां पंचदुःखौघ(वेगां)-
वक्त्रां पंचप्राणोर्मिं (पंचाशद्भेदां)
पंचपर्वामधीमः [श्वेताश्व.१।५+ ना.प. ९।४
पञ्चाक्षरमयं शम्भुं परब्रह्मस्वरूपिणम् पञ्चब्र. २४
पञ्चाग्निना समायुक्तं मन्त्रशक्ति-
नियामकम् पं. ब्र. १०
पञ्चात्मकमभूत् पिण्डं धातुबद्धं
गुणात्मकम् [यो.त. १०+ यो.शि. १।८
पञ्चात्मकस्य गणा ईशतोऽस्य शि. शि. ९
(ॐ) पञ्चात्मकं पञ्चसु वर्तमानं षडा-
श्रयं षड्गुणयोगयुक्तम् । तं सप्तधातु
त्रिमलं द्वियोनि चतुर्विधाहारमयं
शरीरम् गर्भो. १
पञ्चात्मकः समर्थः पञ्चात्मिका
चेतसा बुद्धिर्गन्धरसादिज्ञाना-
क्षराक्षरमोङ्कारं चिंतयतीति गर्भो. ३
पञ्चारेचक्रेपरिवर्ततेपृथु[चित्त्यु.११।८ तै.आ.३।११।८

पञ्चार्द्रतत्त्वविदुषां पंचसंस्कार-
संस्कृतम् । पञ्चावस्थास्वरूपं ते
विज्ञेयं सततं विभो — सुदर्श. १४
पञ्चावर्तां पंचदुःखौघवेगां पंचा-
शद्भेदां पंचपर्वामधीमः — श्वेताश्व. १।५
पञ्चावर्तां मध्यशक्तिं चिन्तये-
द्विद्युदाकृतिं । तां ध्यात्वा सर्व-
सिद्धीनां भाजनं जायते बुधः — योगरा.९।१०
पञ्चावस्थाः-जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तितुरीय-
तुरीयातीताः — मं. ब्रा. २।७
(एवं) पञ्चाशत्कोटियोजनं बहुलं
स्वर्णाण्डं ब्रह्माण्डमिति — राधोप. १।२
पञ्चाशत्स्वरवर्णाख्यमथर्ववेदस्वरूप-
कम् । कोटिकोटिगणाध्यक्षं
ब्रह्माण्डाखण्डविग्रहम् — पंचब्र. ११
पञ्चाशद्वर्णसंयुक्तं स्थितिरिच्छा-
क्रियान्वितम् । — पं. ब्र. ४
पञ्चाशन्मातृकामन्त्रवर्णप्रत्येकपूर्वकम् ।
लक्ष्मीवाङ्मन्मथादिश्च तारादिः
स्यादनेकधा — रा.र. २।१७
पञ्चीकृतमहाभूतसम्भवकर्म संचित-
स्थूलदेहः कर्मक्षयात्...कूटस्थे
प्रत्यगात्मनि विलीयते — पैङ्गलो. ३।४
पञ्चेन्द्रियस्य देहस्य बुद्धेश्च
मनसस्तथा । द्रव्यदेशक्रियाणां च
शुद्धिराचार इष्यते — भवसं. ४।४
पञ्चेन्द्रियस्य पुरुषस्य तदेव
स्यादनावृतम् (मा. पा.) — छां. ५।७।७
पञ्चेमानि (पंचैतानि) महाबाहो — भ.गी.१८।१३
पञ्चेष्टको वा एषोऽग्निः संवत्सरः — मैत्रा. ६।३३
पञ्चैते तस्य हेतवः — भ.गी.१८।१५
पटनाम्ना हि तन्तवः — यो. शि.४।१७
पटमध्यं तु यत्स्थानं नाभिचक्रं तदुच्यते — वराहो. ५।२९
पटवत्संस्थिता नाड्यो नानावर्णाः — वराहो. ५।२८
पटाद्घटमुपायाति घटाच्छकटमुत्कटम् ।
चित्तमर्थेषु चरति पादपेष्विव मर्कटः — अ. पू. ३।६
पठनाच्छ्रवणाद्वापि सर्वान्कामान-
वाप्नुयात् । नारायणप्रसादेन
वैकुण्ठपदमश्नुते — ना.उ.ता.१।८

पणवानकगोमुखाः — भ.गी.१।१३
पण्डिताः समदर्शिनः — भ.गी.५।१८
पतङ्गभक्तमसुरस्य मायया — चित्सु.११।१०
पतङ्गो वाचं मनसा बिभर्ति — चित्सु.११।११
पतन्ति पितरो ह्येषां — भ. गी. १।४२
पतन्ति नरकेऽशुचौ — भ.गी.१६।१६
पतिताः शास्त्रजालेषु प्रज्ञया तेन
मोहिताः [१ यो. त. ६+ — यो. शि. १।४
पतिं पतीनां परमं परस्ताद्विदाम देवं — श्वेता. ६।७
पतिं पतीनां परमां पुरस्ताद्विद्यावतां
गुह्यकालीं परेषाम् — गुह्यका. ६६
पतिं विश्वस्यात्मेश्वर ५ शाश्वत५
शिवमच्युतम् — महाना. ९।३
पतिं विश्वेश्वरं देवं समुद्रे विश्वरूपिणम् — महो. १।६
पत्रं पुष्पं फलं तोयं — भ.गी.९।२६
पत्रं पुष्पं फलं दद्यात्स्त्रियो वा
पुरुषस्य वा । अवश्यं वशमित्याहु-
रात्मना च परेण च — वनदु. ९५
पत्रैर्वा एतत्सर्वतः परिक्रामति
छन्दांसि वै पत्राणि — नृ. पू. ५।६
पत्रैः फलैर्वा जलैर्वाऽन्यैर्वाऽभिपूज्य
विश्वेश्वरं मां ततोऽश्नीयात् — भस्मजा.२।१०
पथि प्रयान्तं यान्तं च यत्नाद्वि-
श्रामयेद्बुधम् । क्षुत्पिपासातुरं
ज्ञातं ज्ञात्वा शक्तं च भोजयेत् — शिवो. ७।३२
पथ्यं मितं च शुद्धं च रस्यं हृदय-
नन्दनम् । स्निग्धं दृष्टिप्रियं
कोष्णमन्नं भोज्यं मनीषिभिः — भवसं.४।१६
पद एवं तियुयुजे परस्मिन् — वा. मं. १
पदमाद्यमनाद्यन्तं तस्य बीजं न विद्यते — अ. पू. ४।६८
पदं करोत्यलङ्घ्येऽपि तृप्ता विफल-
मीहते । चिरं तिष्ठति नैकत्र
तृष्णा चपलमर्कटी — महो. ३।२३
पदं गच्छन्त्यनामयम् — भ.गी. २।५१
पदं तदनु यातोऽस्मि केवलोऽस्मि
जयाम्यहम् — १सं.सो.२।५५
पदान्तराण्यसङ्ख्यानि प्रभवन्त्यन्य-
थैतयोः (अज्ञानभूसभुवोः) — महो. ५।२

पदार्थप्रविभागज्ञः कार्याकार्यवि-
निर्णयम् । जानात्यधिगतश्चान्यो
गृहं गृहपतिर्यथा अक्ष्युप. १५

पदार्थभावनादार्ढ्यं बन्ध इत्यभिधीयते महो. २।४१

पदार्थभावना षष्ठी (भूमिका)
[महो. ५।२५+ वराहो. ४।१

पदार्थवृन्दे देहादिधिया सन्त्यज्य
दूरतः । आशीतलान्तःकरणो
नित्यमात्मपरो भव अ.पू. ५।६९

पदेभ्यो वाक्यसम्भवः यो.शि. ३।६

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात् [ऋ.अ. ८।४।९
[=मं.१०।९०।१४+वा.सं. ३१।१३ +पु. सू. १३

पद्भ्यां शूद्रोऽअजायत पु. सू. ११
[ऋ.अ.८।४।१९=मं.१०।९०।१२+ वा.सं.३१।११

पद्मकरं पद्मासनं पद्मनयनं पद्मबान्धवं सूर्यता. १।८

पद्मकं स्वस्तिकं वापि भद्रासन-
मथापि वा । बद्ध्वा योगासनं
सम्यगुत्तराभिमुखः स्थितः ।
नासिकापुटमङ्गुल्या पिधायैकेन
मारुतम् । आकृष्य धारयेदग्निं
शब्दमेव विचिन्तयेत् अ.ना. १९,२०

पद्मकोशप्रतीकाश९ हृदयं महाना. ९।६

पद्मकोशप्रतीकाशं...हृदयं चाप्यधो-
मुखं...तस्य मध्ये महानग्निः...
तस्य मध्ये वह्निशिखा... तस्याः
शिखाया मध्ये परमात्मा व्यवस्थितः चतुर्वे. ४।६

पद्मपत्रमिव च्छिन्नमूर्ध्ववायुविमोक्षणे ।
भ्रुवोर्मध्ये ललाटस्थं तज्ज्ञेयं
च निरञ्जनम् २ योगत. १४

पद्मपत्रमिवाम्भसा भ.गी.५।१०

पद्मसूत्रनिभा सूक्ष्मा शिखाभादृश्यते
परा ।.., वरदं सर्वभूतानां सर्वं
व्याप्यैव तिष्ठति १प्रणवो.१०,११

पद्मसूत्रनिभा सूक्ष्मा शिखा सा
दृश्यते परा । सा नाडी सूर्यसंकाशा ब्र. वि. १०

पद्मस्योद्घाटनं कृत्वा बोधचन्द्राग्नि-
सूर्यकम् । तस्य हृद्बीजमाहृत्य
आत्मानं चरते ध्रुवम् ध्या.बिं. ३५

पद्माक्षे स्थापितो मेरुर्निगीर्णो भृङ्ग-
सूनुना । निदाघ विद्धि तादृक्त्वं
जगदेतद्भ्रमात्मकम् महो. ४।६५

पद्मासनगतः स्वस्थो गुदमाकुञ्च्य
साधकः।...ब्रह्मग्रन्थिं ततो भित्त्वा
विष्णुग्रन्थिं भिनत्त्यतः।...सहस्र-
कमले शक्तिः शिवेन सह मोदते योगकुं.१।८२

पद्मासनस्थ एवासौ भूमिमुत्सृज्य
वर्तते । अतिमानुषचेष्टादि तथा
सामर्थ्यमुद्भवेत् १यो. त. ५५

पद्मासनस्थितो योगी नाडीद्वारेषु
पूरयन् । मारुतं कुम्भयन्यस्तु स
मुक्तो नात्र संशयः ध्या.बिं. ७०

पद्मासनं समारुह्य समकायशिरोधरः ।
नासाग्रदृष्टिरेकान्ते जपेदोङ्कार-
मव्ययम् यो. चू. ७१

पद्मासनं सुसंस्थाप्य जानूर्वोरन्तरे
करौ । निवेश्य भूमावातिष्ठे-
द्व्योमस्थः कुक्कुटासनः त्रि.ब्रा.२।४१

पद्मासनं सुसंस्थाप्य तदङ्गुष्ठद्वयं पुनः ।
व्युत्क्रमेणैव हस्ताभ्यां बद्धपद्मासनं.. त्रि.ब्रा.२।४०

पद्मासनासीनः कृष्णध्यानपरायणः
शेषदेवोऽस्ति राधोप. ११

पद्मास्य वक्षाः परमः सुपुण्यः पद्मा
जनित्री परमस्य वासः पारमा. ७।७

पद्मिन्य इव हेमन्ते क्षीयन्ते भोग-
वासनाः [महो. ५।७८+ मुक्तिको.२।४१

पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये
श्रियम् [ऋ. खि. ५।८७।४+ श्रीसू. ४

पद्मो दक्षिणकर्णे तु महापद्मस्तु वामके ।
शङ्खः शिरःप्रदेशे तु गुलिकस्तु
भुजान्तरे गारुडो. ३

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात् [ऋ. अ. ८।४।१९
[=मं.१०।९०।१४वा.सं.३१।१३+ चित्यु. १२।६

पद्भ्या९ शूद्रो अजायत [सुबा.१।४+ चित्यु. १२।६
[+ऋ. मं. १०।९०।१२+ वा.सं.३१।११

पयसा यं प्राश्नीयात्सोऽस्य सायं
होमः । यत्प्रातः सोऽयं प्रातः ।
यद्दर्शे तद्दर्शनम् । यत्पौर्णमास्ये

तत्पौर्णमास्यम् । यद्वसन्ते केश-
श्मश्रुलोमनखानि वापयेत् सो-
ऽस्याग्निष्टोमः कठरु. ३
पयसि हीद९ सर्वं प्रतिष्ठितं यच्च
प्राणिति यच्च न बृह. १।५।२
पयस्रावानन्तरं धेनुस्तनक्षीरमिव
सर्वेन्द्रियवर्गे परिनष्टे मनो-
नाशो भवति तदेवामनस्कम् मं.ब्रा. ३।२
पयस्विनी च याम्यस्य कर्णान्तं
प्रोच्यते बुधैः जा.द. ४।२०
पयस्विन्याः प्रजापतिः (देवता) जा.द. ४।३८
पर्याप्तकामस्य कृतात्मनस्तु इहैव सर्वे
प्रविलीयन्ति कामाः मुण्ड. ३।२।२
पयो ब्राह्मणस्य व्रतं, यवागू राजन्यस्य,
आमिक्षा वैश्यस्य सहवै. १२
पयोधं च सृजेच गाम् बृ.जा. ३।५
(तत्पयः) पयो ह्येवाग्रे मनुष्याश्च
पशवश्चोपजीवन्ति तस्मात्कुमारं
जातं घृतं वैवाग्रे प्रतिलेहयन्ति
स्तनं वाऽनुधापयन्ति बृह. १।५।२
पर हंसो वा शिवप्रकोप्येयः शिवङ्करः ब्र. शिखो. ३
परकायमनोयोगः परकायप्रवेशकृत् यो. शि.५।४८
परचित्ते चित्तसंयमात्परचित्तज्ञानम् शांडि.१।७।५२
परजीवोपाधिमायाविधिं विहाय
तत्त्वं पदलक्ष्यं प्रत्यगभिन्नं ब्रह्म पैङ्गलो. ३।१
परतत्त्वंसमाख्यातंजन्मबन्धविनाशकम् अमन. १।१४
परतत्राभिसंवृत्त्या स्यान्नास्ति परमार्थतः अ. शां. ७३
परद्रव्याणि लोष्टवत् । स्वभावादेव
न भयाद्यः पश्यति स पश्यति अ.पू. १।३८
परद्रव्येष्वभिध्याने मनसाऽनिष्ट-
चिन्तनम् । वितथाभिनिवेशश्च
त्रिविधं कर्म मानसम् भवसं. ५।३
परधर्मात्स्वनुष्ठितात् [भ.गी.३।३५+ १८।४७
परधर्मो भयावहः भ.गी. ३।३५
परप्रेमास्पदतया मा न भूवमहं सदा ।
भूयासमिति यो द्रष्टा सोऽहं
विष्णुर्मुनीश्वर वराहो. २।८
(तद्वत्) परब्रह्मणः सर्वात्मकस्य
साकारनिराकारभेदविरोधोनास्त्येव त्रि.म.ना.२।३

(तस्मात्) परब्रह्मणः परमार्थतः
साकारनिराकारौ स्वभावसिद्धौ त्रि.म.ना.२।४
परब्रह्मणि लीयेत न तस्योत्क्रान्तिः १यो. त.१०८
(तस्मात्) परब्रह्मणोऽधस्तनपादे
सर्वकारणे मूलकारणाव्यक्ता-
विर्भावो भवति त्रि.म.ना.२।४
परब्रह्मपुरे विरजं निष्कलं शुभमक्षरं
विरजं विभाति परब्र. १
परब्रह्म सच्चिदानन्दानन्दराधाकृष्णयोः
परस्परसुखाभिलाषरसास्वादन
इव तत्सच्चिदानन्दामृतं कथ्यते राधो. २।२
परब्रह्मस्वयंचात्मासाक्षान्नारायणःस्मृतः ना.उ.ता.१।८
परब्रह्मस्वरूपोऽहं ते. बिं. ३।१
परमकैवल्यः स एव कैलासः शि.सा. १।१
परमगुरूपदेशेन सहस्रारे जलज्योतिर्वा
...षोडशान्तस्थतुरीयचैतन्यं
वाऽन्तर्लक्ष्यं भवति अद्वयता. ७
परमचिद्विलाससमष्ट्याकारं निर्मलं
निरवद्यं...परमानन्दलक्षणापरि-
च्छिन्नानन्तज्योतिः शाश्वतं
शश्वद्विभाति त्रि. सा. ६।१
परमतत्त्वरहस्यवक्ता त्वमेव नान्यः
कश्चिदस्ति त्रि.म.ना.१।१
(तस्मात्) परमपरं परायणं च बृह-
द्बृहत्या बृंहयति तस्मादुच्यते परं ब्रह्म बह्वृचो. २०
परमपुरुषं चिद्रूपं परमात्मा त्रि. ता. ५।१
परमपुरुषोऽहम् अद्वैतभा. १
परमप्रकृतिरहम् अद्वैतभा. १
परममङ्गलाकारमनन्तासनं विराजते त्रि.म.ना.७।९
परममङ्गलानन्तदिव्यतेजोभिर्ज्वलन्त-
मनिशं...निरतिशयाद्वैतपरमा-
नन्दलक्षणमादिनारायणं ध्यायेत् त्रि.म.ना.७।१२
परममोक्षस्त्वेक एव श्रूयते सर्वत्र त्रि.म.ना.८।२
परमन्त्र-परयन्त्र-परतन्त्र-शतसहस्र-
कोटितेजःपुञ्जं भेदय भेदय...
सर्वायुधवराय स्वाहा लांगूलो. ७
परमन्त्रपरयन्त्रपरतन्त्रांश्छिन्धिछिन्धि
...ॐनमः शिवाय दत्तात्रे. २।२

परमयोगिभिर्विमृग्यम्...शाश्वतं परमं पदं...स्वयंप्रकाशमनिशं ज्वलति त्रि.म.ना.७।७
परमहंसस्य सत्यलोकः १सं.सो.२।५९
परमरहस्यशिवतत्त्वज्ञानेन (चिरञ्जीवनमानंदानुभवश्च) रु. मू. १
परमहंसपरिव्राजकानामासनशयनादिकं...परित्यजेत् आरुणि. ४
परमहंसस्य पञ्चगृहेषु करपात्रं फलाहारो गोमुखं तुरीयातीतस्यावधूतस्याजगरवृत्तिः ना. प. ५।७
परमहंसः शिखायज्ञोपवीतरहितः [ना.प.५।५+ १सं.सो.२।१३
परमहंसः सोऽहम् निर्वाणो. १
परमहंसादित्रयाणां न कटिसूत्रं न कौपीनं न वस्त्रं न कमण्डलुर्नदण्डः ना. प. ५।६
परमहंसा न दण्डधरा मुण्डाः कन्थाकौपीनवाससः आश्रमो. ४
(तत्र) परमहंसा नाम संवर्तकारुणिश्वेतकेतुदुर्वासऋभुनिदाघदत्तात्रेयशुकवामदेवहारीतकप्रभृतयः याज्ञव. २
(अथ) परमहंसा नाम संवर्तकारुणि-श्वेतुकेतु-जडभरत-दत्तात्रेय-शुकवामदेवहारीतकप्रभृतयोऽष्टौ ग्रासांश्चरन्तो योगमार्गे मोक्षमेव प्रार्थयन्ते भिक्षुको. ४
परमहंसाश्रमणास्खलितस्वस्वरूपध्यानेन देहत्यागं करोति स मुक्तो भवति ना. प.१।१
परमहंसो ललाटे प्रणवेनैकमूर्ध्वपुंड्रं वा धारयेत् [गोपीचं. ४+ वासुदे. ४
परमहंसो वासुदेवोऽहमेव वराहो.२।३७
परमहंसस्य सत्यलोकः ना.प.५।९
परमं पुरुषं दिव्यं भ.गी.८।८
परमं पौरुषं यत्नमास्थायादाय सूद्यमम् । यथाशास्त्रमनुद्वेगमाचरन्को न सिद्धिभाक् महो. ५।८८
परमं ब्रह्म विज्ञाय उल्कावत्तान्यथोत्सृजेत् । (शास्त्राण्यधीत्य मेधावी अभ्यस्य च पुनः पुनः) अ. ना. १
परमं मंगलं वदेत् शिवो.७।८१
परमं रूपमैश्वरम् भ.गी.११।९
परमं वै शेवधेरिव परस्परोद्धरणं यन्निष्कामत्वम् मैत्रा. ६।३०
परमं व्योमैक आत्मानमेके आर्षे. ३।३
परमꣳ हैव लोकं जयति य एवं वेदैतद्वै परमं तपो यं प्रेतमरण्यꣳ हरन्ति बृह.५।११।१
परमा तारा सा देवतानां च देवता तारोप. १३
परमात्मनि यो रक्तो विरक्तोऽपरमात्मनि । सर्वैषणाविनिर्मुक्तः स भैक्षं भोक्तुमर्हति ना.प. ३।१८
परमात्मनि लीनं तत्परं ब्रह्मैव जायते योगकुं. ३।२४
परमात्मनोरेकत्वज्ञानेन तयोर्भेद एव विभग्नः सा सन्धा प. हं. ४
परमात्मपदं नित्यं तत्कथं जीवतां गतम् । सर्वभावपदातीतं ज्ञानरूपं निरञ्जनम् १ यो.त. ९
परमात्मभूः पुरुषभुवः पुरुषसुवः पुरुषभूर्भुवः सुवः सूर्यता. ४।१
परमात्मस्वरूपो हंसः पा. ब्र. ३
परमात्मा गुणातीतः सर्वात्मा भूतभावनः ते.बिं.४।४१
परमात्मानं बाह्यान्ते लब्धांशे ग. शो. ५।६
(अथ) परमात्मा नाम यथाक्षर उपासनीयः १ आत्मो.२
परमात्मा परं ज्योतिः परं धाम परा गतिः ते. बिं.६।६७
परमात्माब्रह्मगुह्यप्रकाशेनान्यत्र विदितः पा. ब्र. ४
परमात्मा महेश्वरः रुद्रहृ. १३
परमात्मा मे शुध्यन्तां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासꣳ स्वाहा महाना.१४।१८
परमात्माऽयमव्ययः भ.गी.१३।३२
परमात्मा सदाशिव आदिभूतः परः त्रि. ता.१।९
परमात्मा समाहितः भ.गी. ६।७
परमात्मास्म्यहं शिवः मैत्रे. ३।१२
परमात्माहमच्युतः महो.५।८९
परमात्मेति चाप्युक्तः भ.गी.१३।२२
परमात्मेत्युदाहृतः भ.गी.१५।१७

परमात्मैव शिष्यते	अ.पू.१।४४
परमात्मैव स्वप्रकाशः	नृसिंहो.९।१
परमाद्वैतसाम्राज्यं तन्नाम ब्रह्म मे गतिम्	महो.शीर्षकं
परमानन्दघनोऽहं परमानन्दैक- भूमरूपोऽहम्	आ. प्र. ९
परमानन्दपूर्णो यः सजीवन्मुक्त उच्यते	ते.बिं. ४।३
परमानन्दपूर्णोऽहं संसरामिकिमिच्छया	अवधू. ११
परमानन्दलक्षणापरिच्छिन्नानन्तपरं ज्योतिः शाश्वतं शश्वद्विभाति	त्रि.म.ना.७।७
परमानन्दसन्दोहो वासुदेवोऽहमोमिति	अध्युप. ४९
परमाप्नोति पूरुषः	भ.गी. ३।१९
परमार्थतस्त्वबाधितब्रह्मसुखविषये प्रवृत्तिरेव न जायते...	त्रि.म.ना.५।३
परमार्थतो न किञ्चिदस्ति क्षण- शून्यानादिमूलाविद्याविलासत्वात्	त्रि.म.ना.३।३
परमार्थदृष्ट्या तत्प्रत्ययलक्ष्याणि दृष्ट्वा...परं ब्रह्म प्राप्नोति	मं.ब्रा. ३।१
परमार्थेन विप्रेन्द्र मिथ्या सर्वं तु दृश्यते	महो.५।१६५
परमार्थैकविज्ञानं सुखात्मानं स्वय- म्प्रभम् । स्वस्वरूपतया सर्वं वेद स्वानुभवेन यः । स धीरःसतु विज्ञेयः	वराहो.२।२९
परमा वा एषा छन्दसां यदनुष्टुप् [नृ. पू. १।१++	ग.पू. १।६
परमां वत काष्ठां प्रापच्छ्रिया यशसा ब्रह्मवर्चसेन य एवं विदो ब्राह्मणस्य पुत्रो जायते	बृह.६।४।२८
परमेवाक्षरं प्रतिपद्यते स यो ह वै तदच्छायमशरीरमलोहितं शुभ्र- मक्षरं वेदयते	प्रश्नो. ४।१०
परमे व्योमन्प्रतिष्ठिता (वारुणीविद्या)	तैत्ति. ३।६
परमेश्वरस्तुतिर्मौनम्	आत्मपू. १
परमेश्वरोऽसौ हि सर्वत्र सर्वदा सर्वात्मा सन् सर्वमत्ति	नृसिंहो.४।२
परमेष्ठ्यपि निष्ठावान् हीयते हरि- रप्यजः । भावोऽप्यभावमायाति जीर्यन्ते वै दिगीश्वराः	महो. ३।५१
परमोदारः पदमेति महामनाः	महो. ६।५२
परमोऽस्मि परात्परः	मैत्रे. ३।१०
परशिवशक्तिर्जायते पुरुषोत्तमात्	शि. बि. २
परशुं तप्तं प्रतिगृह्णाति सदह्यतेऽथ हन्यते	छांदो.६।१६।१
परशुं तप्तं प्रतिगृह्णाति स न दह्यते- ऽथ मुच्यते	छां.६।१६।२
परस्तस्मात्तु भावोऽन्यः	भ.गी.८।२०
परस्तादोङ्कारप्रयुक्तयैतयैव तदृचाप्या- ययदेष यज्ञस्य पुरस्ताद्युज्यत एषा पश्चात्सर्वत एतया यज्ञस्तपते	२प्रणवो. ४
परस्ताद्यशो गुहासु मम	महाना.६।१०
परस्तान्नसन्नासन्नसदसदित्येतन्निर्वाणा- नुशासनमिति वेदानुशासनमिति [सुबालो.२।१+११।३+१३।५+२+	१४।२+१५।३
परस्परं भावयन्तः	भ.गी.३।११
परस्परं विरुद्ध्यन्ते तैरयं न विरुद्ध्यते	अद्वैत.१७
परस्परं सौम्यगुणत्वात् षड्विधो रसः	गर्भो.२
परस्योत्सादनार्थं वा	भ.गी.१७।१९
परहंसाश्रमस्थो हि स्नानादेरविधानतः। अशेषचित्तवृत्तीनां त्यागं केवलमाचरेत्	ना. प.४।२९
परं गुह्यतमं विद्धि ह्यस्ततन्द्रो निरा- श्रयः । सोमरूपकला सूक्ष्मा विष्णोस्तत्परमं पदम्	ते.बिं. १।५
परं जन्म विवस्वतः	भ.गी. ४।४
परं ज्योतिरुपसम्पद्य स्वेन रूपेणाभि- निष्पद्यत आत्मेति होवाचै- तदमृतमभयमेतद्ब्रह्मेति [मैत्रा.२।२+	छां.उ.८।३।४
परं ज्योतिरुपसम्पद्यते सर्वमायुरेति वसीयान्भवति	आर्षे. ६।३
परं ज्योतिः स्वप्रकाशमथो ब्रह्मानन्द- मयो नित्यो निर्विकल्पो निरञ्जनो निराख्यातः शुद्धो देव एको नारायणः न द्वितीयोऽस्ति कश्चित्	त्रि.म.ना.२।८
परं ज्ञानमहं वच्मि येन तत्त्वं प्रकाशते । येन सञ्छिद्यते सर्व- माशापाशादिबन्धनम्	अमन. १।२
परं तत्त्वं तदुच्यते	अमन.१।१०
परं दृष्ट्वा निवर्तते	भ.गी.२।५९
परं पौरुषमाश्रित्य नीत्वा चित्तम- चित्तताम् । ध्यानतो हृदयाकाशे चितिचित्चक्रधारया । मनो मारय निःशङ्कं त्वां निघ्नन्ति नारयः	महो. ४।९३

परानन्दरसाक्षुब्धो रमते स्वात्मनाऽऽत्मनि	म.वा.र. ८
परापरमथापरे	त्रैलक्ष्य. २७
परापवादमुक्तो जीवन्मुक्तः	निर्वाणो. २
परापश्यन्तीमध्यमावैखरीरूपा सरस्वतीति चतुर्विधा वाचो वदन्ति	ना.पू.ता.५।८
परामृतोऽस्म्यहं पूर्णः प्रभुरस्मि पुरातनः	अ.वि. १००
परामृष्टोऽस्मि लब्धोऽस्मि प्रोदितोऽस्म्यचिरादहम्	१सं.यो.२।३१
परायणं ज्योतिरेकं तपन्तम्	प्रश्नो. १।८
परायां निर्वृतेः स्थानं यत्तज्जीवितमुच्यते	महो. ३।१२
परायामङ्कुरीभूय पश्यन्त्यां द्विदलीकृता	योगकु. ३।१८
परारूपो होत्रोद्गीथः	गान्धर्वो. २
परावरसंयोगः । तारकोपदेशः	निर्वाणो. ५
परावरैक्यरसास्वादनम्	निर्वाणो. ५
परावरोऽस्म्यहं प्राज्ञः प्रपञ्चोपशमोऽस्म्यहम्	अ.वि. ९९
परास्य द्विषन् पाप्मा भ्रातृव्यो भवति [+१ऐत.१।४।४+	बृह. १।३।७ १।८।२,३
परास्य सारं पुनरस्तमेति	चित्सु. १४।४
परास्य शक्तिर्विविधैव श्रूयते स्वाभाविकी ज्ञानबलक्रिया च [श्वेता. ६।८+	भवसं. २।४४
परास्याः शक्तिर्विविधैव श्रूयते	शुह्यका. ६७
परां विश्रान्तिमेति शृङ्खलाबद्धसिंहवत् (मनः) । (स्वयं कल्पिततन्मात्राजालाभ्यन्तरवर्ति च)	महो. ५।१२९
परां सिद्धिमितो गताः	भ.गी. १४।१
परिगलितसमस्तजन्मपाशः सकलविलीनतमोमयाभिमानः । परमरसमयी परात्मसत्तां जलगतसैन्धवखण्डवन्महात्मा	अ.पू. २।१६
परिचरन्नुपसत्ता भवति	छान्दो.७।८।१
परिचर्यात्मकं कर्म	भ.गी.१८।४४
परिचीयमानयोगस्यवशात्वंयातिमारुतः	योगो. १०
परिचीयमानस्य तथा वायुर्वै विश्वतोमुखः	योगो. १२
परिज्ञातस्वभावं तं शुकं स जनको नृपः । नानीय मुदितात्मानमवलोक्य ननाम ह	महो. २।२८
परिज्ञायोपभुक्तो हि भोगो भवति तुष्टये	महो. ५।७१
परिणामेऽमृतोपमम्	भ.गी.१८।३७
परिणामे विषमिव	भ.गी.१८।३८
परित्यक्तोऽयमात्मा नस्तद्वद्देहो विरोचते	छाग.६।४
परित्राणाय साधूनां	भ.गी. ४।८
परियावापृथिवी यन्ति सद्यः परिलोकान्परिदिशः परिसुवः[ऋ.मं.१।११५।३	महाना. २।६
परिपूर्णचन्द्रामृतरसैकीकरणं नैवेद्यम् [मं.ब्रा.२।५+	आत्मपू. १
परिपूर्णपराकाशमग्नमनाःप्राप्तोन्मन्यवस्थः ..ब्रह्माहमस्मीतिकृतकृत्योभवति	मं. ब्रा. ३।२
परिपूर्णमनाद्यन्तमप्रमेयमविक्रियम्	अध्यात्मो.६०
परिपूर्णस्वरूपं तत्सत्यं कमलसम्भव । सकलं निष्कलं चैव पूर्णत्वाच्च तदेव हि	यो.शि.२।१९
परिपूर्णः परात्माऽस्मिन्देहे विद्याधिकारिणि । बुद्धेः साक्षितया स्थित्वा स्फुरन्नहमितीर्यते	शु.र. ३।२
परिप्रतिष्ठितं देभुयच्छतु दधातनाद्रयोऽर्णवः सुवो राजकं च	महाना.६।११
परिप्रश्नेन सेवया	भ.गी.४।३४
परि ये प्रिया भ्रातृव्याः	तैत्ति.३।१०।४
परिव्राड् त्रिशिखी सीता चूडा निर्वाणमण्डलम्	मुक्तिको.१।३४
परिवा व्रजेयुर्वै प्रेयाद्यदेवैनं समापयति तथा समापयितव्यो भवति	कौ.त.२।१५
परिव्राजका अपि चतुर्विधा भवन्ति कुटीचरबहूदकाहंसपरमहंसाश्चेति	आश्रमो. ४,२
परिव्राजकाः पश्चिमलिङ्गाः	निर्वाणो. १
(अथ) परिव्राड्विवर्णवासा मुण्डोऽपरिग्रहः शुचिरद्रोही भैक्षणो ब्रह्मभूयाय भवति	जाबा. ५
परिव्राडेकशाटी मुण्डोऽपरिग्रहः... जातरूपधरश्चरेदात्मानमन्विच्छेत्	ना.प. ३।८७
परिव्राडेकाकी चरति भयत्रस्तसारङ्गवत्तिष्ठति	ना.प.७।२१
परिव्राण्निर्ममो भवेत्	ना.प. ३।२२

परिश्रिते त्वेव दद्यादुल्लीका हि
पितरः स्मृताः इतिहा. ५४
परिसमुह्य परिलिप्याभिमुपसमाधाय
परिस्तीर्यावृताज्य ँ स ँस्कृत्य
पु ँसा नक्षत्रेण मन्थ ँ सन्नीय
जुहोति बृह.६।३।१
परि सर्वमिदं जगत् चित्यु.११।१.०
परिस्त्रिकालादपरोऽपि दृष्टः श्वेताश्व. ६।५
परिस्रुतं झषमांद्यं पलं च...स्वात्मी-
कृत्य सुकृती सिद्धिमेति त्रि.महो. १२
परिस्रुतं झषमाजं फलं (पलं) च भक्तानि
योनीः सुपरिष्कृताश्च। निवेदयन्
देवतायै महत्यै स्वात्मीकृते
सुकृते सिद्धिमेति त्रिपुरो. १२
परिस्रुताहविषा भावितेन प्रसङ्कोचे
गलिते वै मनस्तः त्रि. म. १५
परिस्रुता हविषा भावितेन.. वैमनस्कः त्रिपुरो. १५
परीक्षकैः स्वर्णकारैर्हेम सम्प्रोच्यते
यथा। सिद्धिभिर्लक्षयेत्सिद्धं
जीवन्मुक्तं तथैव च यो.शि.१।१५९
परीक्ष्य दद्याद्वैष्णवीमात्मनिष्ठाम् शाट्याय. ३४
परीक्ष्य लोकान् कर्मचितान् ब्राह्मणो
निर्वेदमायान्नास्त्यकृतः कृतेन मुण्ड.१।२।१२
परीत्य लोकान् परीत्य भूतानि परीत्य
सर्वाः प्रदिशो दिशश्च। प्रजापतिः
प्रथमजा ऋतस्यात्मनात्मान-
मभिसम्बभूव महाना.२।७
परीवृतो वरीवृतो ब्रह्मणा सद्दै. २३
परेच्छया च दिग्वासाः स्नानं
कुर्यात्परेच्छया ना. प. ५।१६
परेच्छाचरणम् निर्वाणो. २
परेण सन्तुं परिषिच्यमानम्। अन्तरा-
दित्ये मनसा चरन्तम्। देवाना ँ
हृदयं ब्रह्मान्वविन्दत् चित्यु.११।६
परेण नाकं निहितं गुहायां विभ्राज-
(ते यद्यतयो)-दैवयतयो
विशन्ति [महाना. ८।१४+ कैव. ३
परेणैवात्मनश्चापि परस्यैवात्मना तथा।
अभयं समवाप्नोति स परिव्राट्... ना. प. ३।२

परेद्युः प्रातरुत्थाय शुचिर्भूत्वा समा-
हितः। कृतस्नानो धौतवस्त्रः
पयोर्वै च सृजेच गाम् बृ. जा. ३।९
परे लयं गतो योगी चतुर्विंशति-
वासरान्। तस्य प्राकाम्यसिद्धिः
स्यादीप्सितं लभते ध्रुवम् अमन. १।६९
परेऽव्यये सर्व एकीभवन्ति मुण्ड. ३।२।७
परैरदृष्टबाह्यात्मा सर्ववेदान्तगोचरः ते.बिं. ४।५५
परैरबद्धो नाक्रान्तो (राजा) न राष्ट्रं
बहु मन्यते महो. ५।७४
परोक्षा प्रत्यक्षा ऋषिसंहिता भवति संहितो.१।१
परोक्षेण परोक्षप्रिया इव हि देवाः २ऐत. ३।१४
परोक्षेणैव परोक्षप्रिया इव हि देवाः बृह. ४।२।२
परोक्षप्रिया इव हि देवाः
[२ ऐत. ३।१४+ बृह. ४।२।२
परो भगवान्निर्लक्षणो निरञ्जनो
निरुपाधिराभिरहितो देवः त्रि.ता. १।५
(ॐ) परोरजसे सावदोम् त्रि.म.ना.७।११
परो रजसेऽसावदोम् [त्रि.ता.१।१,९+ पारायणो.१।१
परोरजसेऽसावदोमा प्रापदिति बृह. ५।१४।७
परोरजा य एष तपति बृह. ५।१४।३
परो लोकानामजितो जितात्मन् भवते-
भवाय पारमा. १।१
परोवरीय एव हास्मिँल्लोके जीवनं
भवति छांदो. १।९।४
परोवरीयसो ह लोकाञ्जयति छांदो. २।७।२
परोवरीयो हास्य भवति परोवरीयसो
ह लोकाञ्जयति, य एतदेवं विद्वान्
परोवरीया ँसमुद्गीथमुपास्ते छांदो. १।९।२
परोवरीयांसमभिप्रणुत्यमन्वजुषाणं
भुवनानि विश्वा आर्षे. १०।१
परोवरीयो हास्य भवति परोवरीयसो
ह लोकाञ्जयति य एतदेवं विद्वान्
प्राणेषु पंचविधं परोवरीयः
सामोपास्ते छांदो. २।७।२
परोवरीयो हैभ्यस्तावदस्मिँल्लोके
जीवनं भविष्यति छांदो.१।९।३
परो हास्यादित्यजयाज्जयो भवति छांदो.२।१०।६
पर्जन्य एको भुवनस्य गोप्ता एकाक्षरो. १

पर्जन्यस्य विद्युत् चित्स्यु. ९।१
पर्जन्यादन्नसम्भवः भ.गी. ३।१४
पर्जन्ये तृप्यति विद्युत्तृप्यति छांदो. ५।२२।२
पर्जन्येनौषधिवनस्पतयः प्रजायन्ते महाना. १७।१३
पर्जन्यो वाऽग्निर्गौतम तस्य संवत्सर एव समिदभ्राणि धूमो विद्युदर्चि-रशनिरङ्गाराह्रादुनयो विस्फुलिङ्गाः बृह. ६।२।१०
पर्जन्यो वाव गौतमाग्निस्तस्य वायुरेव समिदभ्रं धूमो विद्युदर्चिरशनि-रङ्गाराह्रादुनयो विस्फुलिङ्गाः छान्दो. ५।५।१
पर्णे वनस्पतेरिवाभि नः शयिता५ रयिः सचतां नः शचीपतिः महाना. १३।७
पर्णाग्रदेशे त्वणिमादिसिद्धयो वेदाश्च साङ्गाः सपुराणमन्त्राः । तस्मा-दयं बिल्ववनस्पतिर्महान्.. १बिल्वो. ६
पर्यटेत सदा योगी वीक्षयन्वसुधातलं ना.प.४।१९
पर्यटेत्कीटवद्भूमौ वर्षास्वेकत्र संवसेत् । एकवासा अवासा वा एकदृष्टि-रलोलुपः (भिक्षुः) ना. प. ४।१७
पर्याप्तकामस्य कृतात्मनस्तु इहैव सर्वे प्रविलीयन्ति कामाः मुण्ड. ३।२।२
पर्याप्तकामस्य कृतात्मनश्च.. (मा.पा.) मुंडको. ३।२।२
पर्याप्तं त्विदमेतेषां भ.गी. १।१०
पर्यायेण पश्यन्तीवेमं मोघं संविदाना इति आर्षे. ६।१
पर्यारणः परमेष्ठी नृचक्षाः वा. मं. २५
पर्येणं म्रियन्ते द्विषन्तः सपत्नाः तैत्ति. ३।१०।४
पर्वणि न विचिन्वेत् (तुलसीं) यदि विचिन्वति स विष्णुहा भवति तुलस्यु. २
पर्वताग्रे नदीतीरे बिल्वमूले वनेऽथवा । मनोरमे शुचौ देशे मठं कृत्वा समाहितः जा. द. ५।४
पर्वोत्सवेषु सर्वेषु दद्याद्वन्यपवित्रकम् शिवो. ७।९
पलद्वयलयेनापि ह्नत्राभ्योश्चलनं भवेत् । अनाहतः स विज्ञेयो न तत्रैवं न्यसेत्पुनः अमन. १।४०
पलालमिव धान्यार्थी त्यजेद्ग्रन्थमशेषतः । ग्रन्थमभ्यस्य मेधावी ज्ञानविज्ञान-(तत्परः) ग्रस्ततः [ब्र.बि.१८+ त्रि.ता. ५।१८
पलाष्टकलयेनापि कामस्तस्य निवर्तते अमन. १।४२
पलैः षष्टिभिरेव स्याद्घटिका कालसम्मिता अमन. १।३३
पल्ययते कर्म कुरुते विपल्येति [बृह. ४।३।३,४,५
पवनः पवतामस्मि भ.गी. १०।३१
पवनः स्थैर्यमायाति लययोगोदये सति (मनोलये) यो.शि. १।१३५
पवनात्पावमानः मैत्रा. ६।७
पवनावच्छिन्नोर्ध्वज्वलनसचिदुल्का-काशदेहो दीपः भावनो. ९
पवित्रमिदमुत्तमम् भ.गी. ९।२
पवित्रमिह विद्यते भ. गी. ४।३८
पवित्रं च एतत्तस्य न्यसनम् नृ. षट्च. ७
पवित्रं ज्ञानमुच्यते [ना. प. ३।८२+ ब्रह्मो. १२
पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते सुदर्श. ५
[ऋ.अ.५।७।३।८=मं.९।८३।१+ सा.वे.१।५६५
[तै. आ. १।११।१+ लिङ्गोप. १
पवित्रं धारयेज्जन्तुरक्षणार्थम् कुंडिको. ९
पवित्रं परमं भवान् भ.गी. १०।१२
पवित्रं स्नानशाटीं च उत्तरासङ्गमेव च । यज्ञोपवीतं वेदांश्च (अतोऽति रिक्तं यत्किञ्चित्) सर्वं तद्वर्जये-द्यतिः [कठरु. ५+ कुंडिको. १०
पवित्रे निर्जने देशे...नात्युच्चनीचे ह्यासने...बद्धपद्मासनं कृत्वा सरस्वत्यास्तु चालनम् । दक्ष-नाड्या समाकृष्य बहिष्ठं पवनं शनैः । यथेष्टं पूरयेद्वायुं.. योगकु. १।२२
पशवश्चामानवान्तं मध्यवर्तिनश्च युक्तात्मानो यतन्तेमामेकंप्राप्तुम् भस्मजा. २।७
पशवोऽपशवस्तापसो न तापसः त्रि.ता. ५।१
पशव्यासुरसंहिता भवति संहितो. १।१
पशुकुक्कुटकीटाद्या मृतिं संप्राप्नुवंति वै (अजरामरपिण्डो यो जीव-न्मुक्तः स एव हि) यो.शि. १।१६१
पशुपतिरहङ्काराविष्टः संसारी जीवः स एव पशुः जाबाल्यु. २
पशुपति५ स्थूलहृदयेन चित्स्यु. २।१।१

पशुपाशपरः शान्तः परमज्ञान-
देशिकः । शिवः शिवाय भूतानां
तं विज्ञाय विमुच्यते शिवो.१।१६
पशुभ्य एकं प्रायच्छत् बृह.१।५।१,२
पशुमान् भवति यस्तथाऽधीते संहितो. १।१
पशुषु पञ्चविधं सामोपासीत छांदो.२।६।१
पशूनांरूपमन्नस्य.. [श्रीसू.११ऋ.खि. ५।८७।११
पशून्देवताभ्यः प्रत्यौहत् बृह.१।२।७
पशून्न निन्देत्तद्व्रतम् छां. २।१८।२
पशूँश्च मह्यमावह जीवनं च
दिशो दश महाना. २।९
पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यान् [पु.सू.६+ चित्त्यु.१२।४
[+ऋ.अ.८।४।१८=मं.१०।९०।८ वा.सं.३१।६
पश्चाज्जन्मान्तरशतैर्योगादेव विमुच्यते यो.शि.१।५५
पश्चात्प्रतीच्यस्ताः समुद्रात्समुद्रः मेवा-
पियन्ति छांदो.६।१०।१
पश्चादग्नेः संविशति चर्मणि वा
स्थण्डिले वा छान्दो.५।२।८
पश्चादुभयं पुरस्तादित्युपतिष्ठते सन्ध्यो. २
पश्चाद्ध्यायीत पूर्वोक्तक्रमतः मन्त्रवित्.. अ.ना. २२
पश्चाद्भूमिमथो पुरः [चित्त्यु.१२।२+ पु.सू.५
[ऋ.अ.८।४।१७=मं.१०।९०।५+ वा.सं.३१।५
पश्चान्मायादासी प्रकटिता सामर. २
पश्चिमदलेकपिलवर्णे यदाविश्राम्यतेमनः विश्रामो. ५
पश्चिमा गरुडवाहिनी वैष्णवी गायत्रीर. ५
पश्चिमा तृतीया कुक्षिर्भवति गायत्रीर. ३
पश्चिमाभिमुखं लिङ्गं...तं ध्यात्वा-
ऽऽकर्षयेज्जगत् योगरा. ८
पश्चिमाभिमुखो भूत्वा भुवरिति
व्याहृतिस्त्रैष्टुभं... महो. १।४
पश्चिमाभिमुखो भूत्वा भूरितिव्याहृति-
र्यजुर्वेदः चतुर्वे. १
पश्चिमायां भवतु सरस्वती गायत्रीर.३
पश्चिमायां वैराग्यस्थानं भस्मजा.२।९
पश्चिमे वरुणाय वायव्ये मित्राय सूर्यता. ४।१
पश्चिमेसम्मुखेललिताः.. नैर्ऋत्यां भद्राः राधोप. १।५
पश्यञ्शृण्वन् स्पृशञ्जिघ्रन् भ. गी. ५।८
पश्यत्यकृतबुद्धित्वात् भ.गी.१८।१६
पश्यत्यचक्षुः स शृणोत्यकर्णः श्वेता. ३।१९+
[ना. पू. ५।१४+ भवसं.२।४५

पश्यत्यचक्षुः सा शृणोत्यकर्णा गुह्यका. ५१
पश्यत्यां तुरीयप्राज्ञः, परायां तुरीय-
तुरीयः प. हं. प. १०
पश्यन्तश्चक्षुषा [बृह.६।१।८,१० ११,१२,
पश्यन्तश्चक्षुषा शृण्वन्तः श्रोत्रेण
ध्यायन्तो मनसैवमिति प्रविवेश
ह वाक् छान्दो. ५।१।८
पश्यन्तश्चक्षुषा ध्यायन्तो मनसै-
वमिति प्रविवेश ह श्रोत्रम् छांदो.५।१।१०
पश्यन्तश्चक्षुषा शृण्वन्तः श्रोत्रेणैवमिति
प्रविवेश ह मनः छांदो.५।१।११
पश्यन्ति ज्ञानचक्षुषः भ.गी.१५।१०
(यं) पश्यन्ति यतयः क्षीणदोषाः मुण्ड. ३।१।५
पश्यन्ति देहिवन्मूढाः शरीराभास-
दर्शनात् । अहिनिर्ल्वयनीवायं
मुक्तदेहस्तु तिष्ठति २आत्मो. १७
पश्यन्ति यत्सुषुप्तिस्थान एकीभूत-
प्रज्ञानघन एवानन्दे ऽभूत् श्रीवि.ता. ३।१
पश्यन्ति व्यक्ततां भूयो जायन्ते
बुद्बुदा इव मंत्रिको. १८
पश्यन्ती पञ्चदश परा षोडश इति
षोडशमात्रात्मकः प्रणवः तुरीयो. २
पश्यन्नपि सदा नैव पश्यति स्वात्मनः
पृथक् वराहो. २।२७
पश्यन्त्यस्यां महात्मानः सुवर्णं
पिप्पलाशनम् मंत्रिको. ७
पश्यन्त्यात्मन्यवस्थितम् भ.गी.१५।११
पश्यन्त्यां द्विदलीकृता योगकुं. ३।१८
पश्यन्नात्मनि तुष्यति भ. गी. ६।२०
पश्यन्वेदान्तमानेन सद्य एव विमुच्यते वराहो. २।१४
पश्यन्वै तन्न पश्यति, नहि द्रष्टुर्दृष्टेर्वि-
परिलोपो विद्यतेऽविनाशित्वात् बृह. ४।३।२३
पश्य मे पार्थ रूपाणि भ.गी. ११।५
पश्य मे योगमैश्वरम् [भ.गी.९।५+ ११।८
पश्यादित्यान् वसून् रुद्रान् भ.गी. ११।६
पश्याद्य सचराचरम् भ.गी. ११।७
पश्याम एव भगवो नच वयं पश्यामो
नैव वयं वक्तुं शक्नुमो नमस्तेऽस्तु
भगवन्प्रसीद नृसिंहो.९।१०

पश्याम्यचक्षुः स शृणोम्यकर्णः । अहं
विजानामि विविक्तरूपो न चास्ति
वेत्ता मम चित्सदाहम् कैव. २१
पश्याश्चर्याणि भारत भ.गी.११।६
पश्यामि त्वा सर्वतोऽनन्तरूपम् भ.गी.११।१६
पश्यामि त्वां दीप्तहुताशवक्त्रम् भ.गी.११।१९
पश्यामि त्वां दुर्निरीक्ष्यं समन्तात् भ.गी.११।१७
पश्यामि देवांस्तव देव देहे भ.गी.११।१५
पश्यामि विश्वेश्वर विश्वरूप भ.गी.११।१६
पश्येत्त्विहैतन्निहितं गुहायाम् गुह्यका. ३६
पश्येम त्वा वय९ रा ३,३,३,३,३हुँ
३,आ३,३ जा ३, यो३,आ
३,२,१,१,१ इति छांदो.२।२४।४
पश्येम त्वा वयं वैरा३,३,३,३,३
हुं ३ आ ३,३ ज्या ३ यो
३ आ३,२,१,१,१ इति छां.२।२४।८
पश्येम त्वा वय९ साम्रा३,३,३,३,३
हुं ३ आ३,३,३ यो ३ आ
३,२,१,१,१ इति छां.२।२४।१३
पश्येम त्वा वय९ स्वारा३,३,
३,३,३हुं३आ३,३ज्या३यो३
आ३,२,१,१,१इति छां.२।२४।१२
पश्येम शरदः शतमिन्द्र जीवेत्याशिषः सन्ध्यो. ३
पश्यैतां पाण्डुपुत्राणां भ.गी. १।३
पाखण्डाः पण्डितंमन्या न ते
किमपि जानते अमन.२।१०२
पाङ्क्तमिदं सर्वं यदिदं किञ्च बृह.१।४।१७
पाङ्क्तं वा इदं सर्वम् । पाङ्क्तेनैव पांक्तं
स्पृणोतीति तैत्ति. १।७।१
पाञ्चजन्यं हृषीकेशः भ.गी. १।१५
पाणिनाऽन्तर्धाय वस्त्रान्तेन वा
प्रच्छाद्य स्वर्गाल्लोकान्कामानवाप्नुहीति कौ.त. २।१९
पाणिपादादिमात्रोऽयमहमित्येष
निश्चयः । अहङ्कारस्तृतीयोऽसौ
लौकिकस्तुच्छ एव सः महो. ५।९२
पाणिपात्रश्चरन्योगी नासकृद्भैक्षमाचरेत् ।
तिष्ठन्भुञ्ज्याच्चरन्भुञ्ज्यान्मध्येनाच-
मनं तथा ना.प. ५।२१
पाणिपात्रेणाशनं कुर्यात् [१सं.सो.१।२+ कठश्रु. ६

पाण्डवानां धनञ्जयः भ.गी.१०।३७
पाण्डरगगनम् (परमहंसस्य) निर्वाणो. ४
पाण्डरं शुक्रमित्याहुर्लोहिताख्यं
महारजः । विद्रुमद्रुमसङ्काशं
योनिस्थाने स्थितं रजः ध्या.बिं. ८७
पातालजङ्घकं मुनिचरणं कालाङ्गुष्ठकं
तारकाजाललांगूलंदंष्ट्रास्तुवन्निस्म ग. शो. ४।७
पातालानामधोभागे कालाग्निर्यः
प्रतिष्ठितः । स मूलाग्निः
शरीरेऽग्निर्यस्मान्नादः प्रजायते यो.शि.५।२९
पात्रमस्य भवेत्पाणिस्तेन नित्यं स्थितिं
नयेत् । पाणिपात्रश्चरन्योगी
नासकृद्भैक्षमाचरेत् १सं.सो.२।७७
पात्रं विसृजेत्, पवित्रं विसृजेत् आरुणि. २
पादचतुष्टयात्मकं ब्रह्म त्रि.म.ना. १।३
पादचतुष्टयात्मकं ब्रह्म, तत्रैकमविद्या-
पादं । पादत्रयममृतं भवति त्रि.म.ना.४।२
पादत्रयं परमकैवल्यम् त्रि.म.ना.८।३
पादत्रयं परमवैकुण्ठः त्रि.म.ना.८।३
पादत्रयात्मकं ब्रह्म कैवल्यं शाश्वतं परम् त्रि.म.ना.४।२
पादत्रयेऽपि किं वक्तव्यं निरतिशया-
नन्दाविर्भावो मोक्ष इति मोक्षलक्षणं
पादत्रये वर्तते त्रि.म.ना.८।२
पादभेदादिकं तु ब्रह्मस्वरूपकथनमेव त्रि.म.ना.४।२
पादयोः सञ्चारः ना.प. ६।३
पादसन्धौ संयमाज्जितलोकज्ञानम् शांडि.१।७।५२
पादस्थानानि पत्राद्यैः कृत्वा देवगृहं
विशेत् । पात्रास्तरितपादश्च नित्यं
भुञ्जीत वाग्यतः शिवो.७।४८
पादस्योपरि यन्मध्ये तद्रूपं नाम
कृन्तयेत् । मनो द्वारेण तीक्ष्णेन
योगमाश्रित्य नित्यशः क्षुरिको. १२
पादहस्तयोरपि सर्वगात्रेषु सर्वव्यापी
समानः शाण्डि.१।४।७
पाद९ षड्ढोतुर्न किला विवित्से चित्यु.११।५
पादा अकार उकार मकार इति माण्डू. ८
पादा इति पादविदो विषया इति तद्विदः वैतथ्य. २१
पादाङ्गुष्ठ-गुल्फ-जंघा-जानूरुपायुमेढ्र-
नाभिहृदयकण्ठकूपतालुनासाक्षि-

भ्रूमध्यललाटमूर्ध्नां स्थानानि तेषु क्रमादारोहावरोहक्रमेण प्रत्याहरेत् शाण्डि.१।८।१
पादाङ्गुष्ठधारणाच्छरीरलघुता भवति शांडि.१।७।४५
पादाङ्गुष्ठावधिः कन्दादधो याता च कौशिकी (नाडी) त्रि.ब्रा.२।७४
पादाङ्गुष्ठे कराङ्गुष्ठे स्फुरणं यस्य न श्रुतिः । तस्य संवत्सरादूर्ध्वं जीवितस्य क्षयो भवेत् त्रि.ब्रा.२।१२२
पादाङ्गुष्ठौ तु पाणिभ्यां गृहीत्वा श्रवणावधि । धनुराकर्षकाकृष्टं धनुरासनमीरितम् त्रि.ब्रा.२।४३
पादादिकं गुणास्तस्य शरीरं तत्त्वमुच्यते । धर्मोऽस्य दक्षिणं चक्षुरधर्मोऽथो परः स्मृतः ना. बिं. २
पादादि जानुपर्यन्तं पृथिवीस्थानमुच्यते १ यो.त. ८४
पादाद्यैरर्धचैर्ऋग्भिस्तृचेन द्वादशभिर्नामभिः...षड्बीजैः सम्पुटिताः.. सूर्यता. १।९
पादाधोभागे संयमादतललोकज्ञानं शांडि.१।७।५२
पादा मात्रा मात्राश्च पादाः (ओङ्कारस्य) माण्डू. ८
पादाभावाद्गतिर्नास्ति हस्ताभावात् क्रिया न च ते. बिं. ५।१९
पादात्रेवास्या एकमङ्गमुदूढं तयोरित्यापरस्तात्प्रतिविहिता भूतमात्रा कौ. त. ३।५
पादे संयमाद्वितललोकज्ञानम् शांडि.१।७।५२
पादौ रथः (शारीरयज्ञस्य) प्रा. हो. ४।२
पादोऽस्य विश्वा भूतानि
[त्रि. म. ना. ४।४+पू. सू. ३ चित्त्यु. १२।२
[ऋ.अ.८।४।१७=मं.१०।९०।३+ वा.सं. ३१।३
पादोऽस्य सर्वा भूतानि छां. ३।१२।६
पादोऽस्येहाभवत् पुनः पु. सू. ४
[त्रि. म. ना. ४।४+ चित्त्यु.१२।२
[ऋ.अ.८।४।१७=मं.१०।९०।४+ वा.सं. ३१।४
पादौ च गन्तव्यं च मनश्च मन्तव्यं च प्रश्नो. ५।८
पादौ च गन्तव्यं च नारायणः सुबालो. ६।१
पादौ ते व्यम्लास्येतां यन्मां नागमिष्य इति छांदो.५।१७।२
पादौ त्वेतावात्मन इति होवाच छांदो.५।१७।२
पानीयं बहुबाकृति वराहो. ६।१

पापकर्षणो गोभूमिवेदवेदितो गोपीजनविद्याकलापप्रेरकः गो. पू. १।२
पापकारी पापो भवति, पुण्यः पुण्येन कर्मणा भवति, पापः पापेन बृह. ४।४।५
पापपूर्णस्य मर्त्यस्य त्रिपुण्ड्रोद्धूलने शिवे । रुद्राक्षधारणे द्वेषः स्वत एव प्रजायते सि. शि. ६
पापफलनरकादिमांस्तु शुभकर्मफलस्वर्गमस्त्विवति काङ्क्षते मं. ब्रा. २।७
पापभाजो हि श्रोतॄणामसूयावतां पापाँश्चापक्रामन्ति इतिहा. २
पापमेवाश्रयेदस्मान् भ. गी. १।३६
पापहर वीर हनुमन् ईश्वरावतार वायुनन्दनअञ्जनासुतबन्धयबन्धय लांगूलो. ८
पापं कर्म न श्लिष्यत इति छांदो.४।१४।३
पापं चन्द्र इव राहोर्मुखात्प्रमुच्य धूत्वा शरीरमकृतं कृतात्मा ब्रह्मलोकमभिसम्भवामि छांदो.८।१३।१
पापं चरति पूरुषः भ.गी. ३।३६
पापः कर्मणा (पापेन भवति) बृह. ३।२।१३
पापादस्मान्निवर्तितुम् भ.गी. १।३९
पापाद्विभेति सततं न च भोगमपेक्षते अध्युप. ९
पापेभ्यो रक्षन्ताम् म.ना.११।२,४
पाप्मना गृहीत इव भ्राम्यमाणं मैत्रा. ४।२
पाप्मना ह्येतद्विद्धम् छां. १।२।४,५,
पाप्मना ह्येष विद्धः छांदो.१।२।२,३
पाप्मानं प्रजहि ह्येनं भ. गी. ३।४१
पाप्मानं मृत्युमन्वावायानीति बृह. १।३।१०
पायुरध्यात्मं, विसर्जयितव्यमधिभूतं, मृत्युस्तत्राधिदैवतं.. सुबालो.५।१३
पायुमूलादधोर्ध्वगाऽलम्बुसा भवति शांडि.१।४।९
पायुश्च विसर्जयितव्यं च प्रश्नो. ४।८
पायुश्च विसर्जयितव्यं च नारायणः सुबालो. ६।१
पायुमेवाप्येति यः पायुमेवास्तमेति सुबालो. ९।८
पायूपस्थेऽपानं चक्षुः श्रोत्रे मुखनासिकाभ्यां प्राणः स्वयं प्रतिष्ठते मध्ये तु समानः प्रश्नो. ३।५

पायोराकुञ्चनं कुर्यात् कुण्डलीं चालयेत्तदा । मृत्युचक्रगतस्यापि तस्य मृत्युभयं कुतः — यो.शि.१।८३
पायोरुत्सर्गः — ना.प. ६।२
पारं गच्छति तन्निधनमेतद्वामदेव्यं मिथुने प्रोतम् — छांदो.२।१३।१
पाराय तमसः परस्तात् — मुण्ड. २।२।६
पारिव्राज्यं गृहीत्वा तु यः स्वधर्मे न तिष्ठति । तमारूढच्युतं विद्यादिति वेदानुशासनम् — शाट्याय. २९
पारुष्यमनृतं चैव पैशुन्यंचापि सर्वशः । असम्बद्धप्रलापश्च वाङ्मयं स्याच्चतुर्विधम् — भवसं. ९।४
पार्थ नैवेह नामुत्र — भ.गी.६।४०
पार्थ सम्पदमासुरीम् — भ.गी.१६।४
पार्थस्य च महात्मनः — भ.गी.१८।७४
पार्थिवः पञ्चमात्रस्तु चतुर्मात्रस्तु वारुणः ।...एकमात्रस्तथाऽऽकाशो ह्यमात्रं तु विचिंतयेत् — अ.ना. ३१
पार्थिवे वायुमारोप्य लकारेण समन्वितम् । ध्यायंश्चतुर्भुजाकारं चतुर्वक्त्रं हिरण्मयम् । धारयेत्पञ्च घटिकाः पृथिवीजयमाप्नुयात् — १ यो. त. ८५
पार्श्वस्थबोधिताः सन्तः पूर्वाचारक्रमागतम् । आचारमाचरन्त्येव सुप्तबुद्धवदुत्थिताः — महो.५।३८
पार्श्वे राधिका चेति । तस्या अंशो लक्ष्मीदुर्गाविजयादिशक्तिरिति — राधोप. १।५
पार्ष्णिघातेन संपीड्य योनिमाकुञ्चयेद्दृढम् । अपानमूर्ध्वमाकृष्य मूलबन्धो विधीयते — यो.चू. ४६
पार्ष्णिभागेन सम्पीड्य योनिमाकुञ्चयेद्दृढम् (उड्डानाख्यो हि बन्धोऽयं योगिभिः समुदाहृतः) — १यो.त.१२०
पार्ष्णि वामस्य पादस्य योनिस्थाने नियोजयेत् — १यो.त.११२
पालाशमासनं शय्यां पादुके दन्तधावनम् । वर्जयेच्चापि नियतं एकं न तु समुत्सवम् — शिवो.७।९१
पालाशं बैल्वमाश्वत्थमौदुम्बरं दण्डं मौञ्जीं मेखलां यज्ञोपवीतं च त्यक्त्वा शूरो य एवं वेद — आरुणि. ५
पाल्लवैकं धारयेज्जन्तुसंरक्षणार्थं वर्षावर्षावर्जनमिति — कठश्रु. २२
पावकः शक्तिमध्ये तु नाभिचक्रे रविः स्थितः — ब्र.वि. ६८
(श्रीं) पावकानःसरस्वतीवाजेभिः — सरस्व.१०
[ऋ.मं.१।३।१०+वा.सं.२०।८४+ — सा.वे.१।१८९
पावनानि मनीषिणाम् — भ.गी. १८।५
पावनी परमोदारा शुद्धसत्त्वानुपातिनी । आत्मध्यानमयी नित्या सुषुप्तिस्थेव तिष्ठति — १सं.सो.२।४४
पाशबद्धस्तथा जीवः पाशमुक्तः सदाशिवः — स्कन्दो. ७
पाशबद्धः स्मृतो जीवः पाशमुक्तः सनातनः । तुषेण बद्धो व्रीहिः स्यात्तुषाभावेन तण्डुलः — ना.उ.ता.१।७
पाशुपतब्रह्मविद्यासंवेद्यं परमाक्षरम् । परमानन्दसम्पूर्णं रामचन्द्रपदं भजे — पा.ब्र.शीर्षकं
पाशं छित्त्वा यथा हंसो निर्विशङ्कं समुत्क्रमेत् । छिन्नपाशस्तथा जीवः संसारं तरते सदा — क्षुरिको. २२
पाशैः पशुरिव बद्धं बन्धनस्यस्यैवास्वातंत्र्यम् — मैत्रा. ४।२
पाषाण इव निश्चलः — योगो. २२
पाषाणलोहमणिमृण्मयविग्रहेषु पूजा पुनर्जननभोगकरी मुमुक्षोः — मैत्रे. २।२६
पाहि गीर्भिश्चतसृभिर्वसो स्वाहा — महाना. ७।५
पाहि नो अग्न एकया — महाना.७।५
पांसुना च प्रतिच्छन्नशून्यागारप्रतिश्रयः । वृक्षमूलनिकेतो वा.. (यतिः) — ना.प. ५।२५
पिङ्गला चोत्थिता तस्माद्दक्षनासापुटावधि — त्रि.ब्रा.२।७१
पिङ्गला चोर्ध्वगा याम्यनासान्तं भवति — शांडि.१।४।६
पिङ्गलायामिडायां तु वायोः सङ्क्रमणं तु यत् । तदुत्तरायणं प्रोक्तं.. — जा.द. ४।४०
पिङ्गलाया विरिञ्चिः स्यात् (देवता) — जा.द.४।३५

पिङ्गलायां रविः (चरति)[शांडि.१।४।६ जा.द.४।४०

पिङ्गलायाः पृष्ठतो याम्यनेत्रान्तं पूषा भवति शांडि.१।४।६

पिण्डवर्जितः पिण्डस्थोऽपि प्रत्यगात्मा सर्वव्यापी भवति पैङ्गलो. ४।९

पिण्डपातेन या मुक्तिः सा मुक्तिर्न तु हन्यते यो.शि.१।१६३

पिण्डब्रह्माण्डयोरैक्यं लिङ्गसूत्रात्मनोरिव योगकुं. १।८१

पिण्डांश्च निक्षिपेत्तत्र आद्यन्तं प्रणवेन तु।...स्वाहान्ते जुहुयात्तत्र.. बृ.जा. ३।१३

पिण्डे पिण्डे शरीरस्य पिण्डदानेन सम्भवः पिण्डो. ९

पितरं पुत्रमग्निमुपवीतं कर्म कलत्रं चान्यदपि (त्यजेत्) आरुणि. ५

पितरं मातरं कलत्रपुत्रमाप्तबन्धुवर्गं... वाऽनुमोदयित्वा...आग्नेय्यामेव कुर्यात् प.हं.प. २

पितरौ चास्य दासत्वं कुरुतस्त-त्प्रचोदितौ (येन यत्र कृतं कर्म स तत्रैव प्रजायते) शिवो.७।११०

पिता त्वं मातरिश्वनः प्रश्नो. २।११

पिता पुत्रं प्रेष्याह्वयति कौ.त. २।१५

पितामहस्तथेत्यङ्गीकृत्य (आह-) ना. प. ४।३८

पितामहं पुनः पप्रच्छ नारदः कथं यज्ञोपवीती ब्राह्मण इति ना.प. ३।७७

पिता माता प्रजैत एव मन एव पिता वाङ्माता प्राणः प्रजा बृह. १।५।७

पिता मेऽमन्यत नाननुशिष्य हरेतेति [बृह. ४।१।२, ३,४,५,६,७

पिताऽसि लोकस्य चराचरस्य भ.गी.११।४३

पिताऽहमस्य जगतः भ. गी. ९।१७

पिताऽहं, माताऽहं, पुत्रोऽहम् अद्वैत.भा. २

पितू रेतोऽतिरिक्तात्पुरुषो, मातू रेतोति-रेकात्स्त्री, उभयोर्बीजतुल्यत्वा-न्नपुंसको भवति गर्भो. ३

पितृकृतस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा महाना.१४।१

पितृगेहेषु या कन्या रजः पश्यत्य-संस्कृता। सा कन्या वृषली नाम तत्पतिर्वृषलीपतिः इतिहा. ६७

पितृघ्नो मातृघ्नो ब्रह्मघ्नो गुरुहननः कोटियतिघ्नोऽनेककृतपापो यो मम षण्णवतिकोटिनामानि जपति स तेभ्यः पापेभ्यः प्रमुच्यते रामर. १।९

पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव तैत्ति.१।११।२

पितृमातृगुरुशुश्रूषाध्यानवान् स्वर्गीयः कांचनदाता... भवति संहितो.४।१

पितृमातृवधोत्पन्नं बुद्धिपूर्वमघं च यत्। तदनुष्ठानमात्रेण सर्वमेतद्विलीयते रामो. ५।१८

पितृमातृसहोदरदारापत्यगृहारामक्षेत्र-ममतासंसारावरणसङ्कल्पो बन्धः निरा. २१

पितृयागोक्तविधानेन ब्राह्मणानभ्यर्च्य... ना.प.४।३१९

पितृलोकाच्चन्द्रं, ते चन्द्रं प्राप्यान्नं भवन्ति बृह.६।२।१६

पितृलोकादाकाशं छांदो.५।१०।४

पितृश्राद्धे पितृ-पितामह-प्रपिता-महान्...युग्मकॢप्त्या ब्राह्मणा-नर्चयेत् ना.प. ४।२९

पितृहा वै त्वमसि मातृहा वै त्वमसि छांदो.७।१५।२

पितॄणामर्यमा चास्मि भ.गी.१०।२९

पितॄनथ पितामहान् भ.गी. १।२६

पितॄन् यान्ति पितृव्रताः भ.गी. ९।२५

पितॄणामेव महिमानं गत्वा चन्द्रमसः सायुज्यं सलोकतामाप्नोति महाना. १८।१

पितॄणां प्रथमा स्वधा प्रश्नो. २।८

पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः भ.गी.११।४४

पितोत्तररूपम्। प्रजा सन्धिः तैत्ति.१।३।६

पित्रादिशरीरदहने पुत्रादीनां ब्रह्म-हत्यादिदोषसम्भवाच्च, तस्मान्न देहो ब्राह्मणः व. सू. ४

पित्र्यं वा गान्धर्वं वा दैवं वा प्राजा-पत्यं वा ब्राह्मं वाऽन्येषां वा भूतानाम् बृह.४।४।४

पिधाय बुद्ध्या द्वाराणि मनो ध्याने निवेशयेत् ना.प. ६।७

पिपीलिका यथा लग्ना देहे ध्याना-द्विमुच्यते। असौ किं वृश्चिकैर्दष्टो देहान्ते वा कथं सुखी यो.शि. १।३३

पिपीलिकायांलग्नायांकण्डूस्तत्रप्रवर्तते यो.शि. १।११४

पुनन्तु ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्मपूता पुनातु माम् [महाना. ११।२+ प्राणाग्नि. ८
पुनन्तु वसवः पुनातु वरुणः पुनात्वघमर्षणः महाना. ६।५
(अथ) पुन-(र्व्रतीवाऽव्रती-)-रव्रती वा व्रती वा स्नातको वाऽस्नातको (वोत्सन्नाग्निरनग्निको) वा यदहरेव विरजेत्तदहरेव प्रव्रजेत् [जाबालो.४ याज्ञ. १
पुनराचम्य कर्म स्वं कर्तुमर्हति सत्तमः । (आचम्य वसनं धौतं ततश्चैतत्प्रधारयेत्) बृ.जा. ३।२३
पुनरावर्तिनोऽर्जुन भ.गी.८।१६
पुनरुचावचं व्यश्नुवानः बा.मं. १८
पुनरेतस्यां (मालायां) सर्वात्मकत्वं भावयित्वा...आदिक्षान्तैरक्षैरक्षमालामष्टोत्तरशतं स्पृशेत् अ. मा. ५
(अथ) पुनरेव नारायणः सोऽन्यत्कामो मनसाध्यायत महो.१।३,४
पुनर्गुहा सकला मायया च पुरूच्येषा विश्वमाताऽऽदिविद्या त्रिपु. म. ८
पुनर्जन्मनिवृत्त्यर्थं मोक्षस्याहर्निशं स्मरेत् परब्र. ८
पुनर्जन्मकरी प्रोक्ता मलिना वासना बुधैः । पुनर्जन्माङ्कुरं त्यक्त्वा स्थितिः संभृष्टबीजवत् मुक्तिको.२।६२
पुनर्जन्म न विद्यते भ.गी.८।१६
पुनर्नाभिजायते पुनर्नाभिजायते निरा. उ. ३३
पुनर्भवमिन्द्रियैर्मनसि सम्पद्यमानैः प्रश्नो. ३.९
पुनर्भोजनमध्वानं भाराध्ययनसङ्गमम् । दानं प्रतिग्रहं होमं श्राद्धभुक् चाष्ट वर्जयेत् इतिहा. ३८
पुनर्मनः पुनरायुर्म आगात् सहवै. ८
पुनर्योगं च शंससि भ. गी. ५।१
पुनर्वत्सरशतं तस्य प्रलयो भवति । तदा जीवाः सर्वे प्रकृतौ लीयन्ते त्रि.म.ना.३।४
पुनश्चक्षुः पुनः श्रोत्रं म आगात् सहवै. ८
पुनश्च जन्मान्तरकर्मयोगात्स एव जीवः स्वपिति प्रबुद्धः कैव. १४
पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते भ.गी.११।३९
पुनश्चतुष्पष्टिमात्राः प्रकृतिपुरुषद्वैविध्यमापाद्य ... सगुणनिर्गुणत्वमेत्य एकोऽपि ब्रह्मप्रणवः तुरीयो. २
पुनश्चित्तं पुनराधीतं म आगात् सहवै. ८
पुनश्चैकादशः स्मृतः छांदो.७।२६।२
पुनस्ते प्राण आयाति परो यक्ष्मं सुवामि ते सहवै. ६
पुनस्ते सिसृक्षतो मे प्रादुरभूवन् गो. पू. ३।८
पुनस्त्यजेत्पिङ्गलयाशनैरेव न वेगतः । पुनः पिङ्गलयाऽऽपूर्य पूरयेदुदरं शनैः १ यो.त. ३८
पुनः पञ्चधा ज्ञेयं निहितं गुहायां मैत्रा. ६।४
पुनः पिङ्गलयाऽऽपूर्यतन्मात्रैःषोडशभिस्तथा । अकारमूर्तिमत्रापि स्मरेत् जा.द. ६।७
पुनः पिङ्गलयाऽऽपूर्यकुम्भित्वा रेचयेदिडया शांडि.१।५।२
पुनः पिङ्गलयाऽऽपूर्यवह्निबीजमनुस्मरेत् । पुनर्विरेचयेद्धीमान् जा. द. ५।९
पुनः पुनः सर्वावस्थासु ज्ञानज्ञेयौ ध्यानध्येयौ लक्ष्यालक्ष्ये दृश्यादृश्ये चोहापोहादिं परित्यज्य मुक्तो भवति मं. ब्रा. २।६
पुनः प्रतिन्यायं प्रतियोन्या द्रवति प्राणायैव बृह. ४।३।३६
पुनः प्रतिन्यायं प्रतियोन्या द्रवति स्वप्नायैव बृह. ४।३।१५
पुनः प्रतिन्यायं प्रतियोन्या द्रवति स्वप्नान्तायैव बृह. ४।३।१७
पुनः स्वाश्रमाचारपरो भवेदित्युच्यते ना. प. ५।१
पुनात्यशुद्धान्यपूतानि १ आत्मो. ३
पुनः प्रतिन्यायं प्रतियोन्या द्रवति बुद्धान्तायैव [बृह. ४।३।१६,३४
पुनः प्राणः पुनराकूतं म आगात् सहवै. ८
पुमानपुमान् स्त्रियश्चाहं अ.शिरः १
पुमान्रेतः सिञ्चति योषितायां मुण्ड. २।१।५
पुमांश्चरति निःस्पृहः भ.गी. २।७१
पुरतोऽस्मात्सर्वस्मात्सुविभातमन्विष्यात्तमसुत्कृष्टतमं...पुरमेव ब्रह्म मकारेण जानीयात् नृसिंहो.५।७

पुरत्रये क्रीडति यश्च जीवस्ततः
सुजातं सकलं विचित्रम् कैवल्य. १४
पुरमेकादशद्वारमजस्यावक्रचेतसः ।
अनुष्ठाय न शोचति विमुक्तश्च
विमुच्यत एतद्वैतत् कठो. ५।१
पुरश्चक्रे द्विपदः पुरश्चक्रे चतुष्पदः ।
पुरः स पक्षी भूत्वा पुरः पुरुष
आविशदिति बृह २।५।१८
पुरस्तात्सुविभातमन्यवहार्यमेवाद्वयं नृसिंहो. ९।८
पुरस्ताद्ब्रह्मणस्तस्य विष्णोरद्भुतकर्मणः ।
रहस्यं ब्रह्मविद्याया धृताग्नि
सम्प्रचक्षते १प्रणवो. १
पुरं जनपदं ग्राममरण्यमिव पश्यति अ.पू. १।३४
पुरं इन्त्रीमुखं विश्वमातू रवे रेखा
...स षोडशीकं पुरमध्यं बिभर्ति त्रिपुरो. १०
पुरं (पुरीं) हिरण्मयीं ब्रह्मा
विवेशापराजिता अरुणो. ३
पुरः प्रजानामुदयत्येष सूर्यः चाक्षुषो. ४
पुरा किलेदं न किंचनासीन्न
द्यौर्नान्तरिक्षं न पृथिवी अव्यक्तो. १
पुरा जगन्मातृतपःप्रभावादासीन्महा-
बिल्ववनस्पतिर्महान् १ बिल्वो. २
पुराणपठितामभृतोद्भवाममृतरसमञ्जरीं
...दर्शनात्पापनाशिनीं...य एवं
वेद स वैष्णवो भवति तुलस्यु. २
पुराणपुरुषाय शुद्धबुद्धाय...घृणिः सूर्य
आदित्य ॐ नमो नारायणाय ना.उ.ता.२।३
पुरातनोऽहं पुरुषोऽहमीशो हिरण्मयो-
ऽहं शिवरूपमस्मि [कैव.२+ १बिल्वो. १३
पुरा तत्स्वरूपज्ञानेन महान्तः सर्वे
ब्रह्मभावं गताः त्रि.म.ना.१।२
पुरा देवाः पशुपाशाद्विमुक्ताः शिवं
पूज्यैव हरिपद्माद्योऽपि । ऐन्द्र-
नीलं पूजितं विष्णुनाऽऽसील्लिङ्गं
वैडूर्यं विधिना पद्मरागम् शि.शि. २१
पुरा तृतीयसवनस्योपाकरणाज्जघनेना-
हवनीयस्योदङ्मुख उपविश्य स
आदित्यं स वैश्वदेवं सामा-
भिगायति छां.२।२४।११

पुरान्तकोऽहं पुरुषोऽहमीशः कुण्डिको. १७
पुरा प्रातरनुवाकस्योपाकरणाज्जघनेन
गार्हपत्यो प्राङ्मुख उपविश्य
स वासवं सामाभिगायति छांदो.२।२४।३
पुरा प्रोक्ता मयाऽनघ भ.गी. ३।३
पुरा मत्पुत्र पुरुषसूक्तोपनिषद्रहस्य-
प्रकारं...विराट्पुरुषेणोपदिष्टं
रहस्यं ते विविच्योच्यते ना. प. २।१
पुरा माध्यन्दिनस्य सवनस्योपाकरणा-
ज्जघनेनाग्नीध्रो यस्योदङ्मुख उपविश्य
स रौद्रं सामाभिगायति छां. २।२४।७
पुरा रुद्रेण गदिताः शिवो. १।५
पुरा व्यासो महातेजाः सर्ववेद-
तपोनिधिः । प्रणिपत्य शिवं
साम्बं कृताञ्जलिरुवाच ह शुकर. १।१
पुरुजित्कुन्तिभोजश्च भ. गी. १।५
पुरुष एव सविता स्त्री सावित्री स यत्र
पुरुषस्तत्स्त्री यत्र वा स्त्री स
पुरुषस्ते द्वे योनिस्तदेकं मिथुनम् सावित्र्यु. ९
पुरुष एवेदं विश्वं-कर्म तपो
ब्रह्मपरामृतम् [मुण्ड. २।१।१०+ ग. पू. १।४
पुरुष एवेदं सर्वम् [शि. वि.३+ नृ. पू. ५।५
पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यम्
(भाव्यम्) [ऋ.अ.८।४।१७= मं. १०।९०।२
[+श्वेताश्व.३।१५+वा.सं.३१।२+ पु. सू. २
पुरुष एवोक्थम् १ ऐत.१।२।४
पुरुषप्रयत्नसाध्यवेदान्तश्रवणादि-
जनितसमाधिना जीवन्मुक्त्यादि-
लाभो भवति मुक्तिको. २।१
पुरुषविदस्तदिदमन्तरिक्षं प्रजापते-
र्द्वितीया चितिः मैत्रा. ६।३३
पुरुषविदः सेयं प्रजापतेः प्रथमा चितिः मैत्रा. ६।३३
पुरुषविदः सैषा द्यौः प्रजापतेस्तृतीया
चितिः मैत्रा. ६।३३
पुरुषविधः सोऽनुवीक्ष्य नान्यदात्मनो-
ऽपश्यत् बृह. १।४।१

पुरुषश्चाक्षुषो योऽयं दक्षिणेऽक्षिण्यव-
स्थितः। इन्द्रोऽयमस्य जायेयं सव्ये
चाक्षिण्यवस्थिता मैत्रा. ७।११
पुरुषश्चाधिदैवतम् भ.गी. ८।४
पुरुषश्चेता प्रधानान्तस्स्थः स एव
भोक्ता प्राकृतमन्नं भुङ्क्ते इति मैत्रा. ६।१०
पुरुषसंज्ञको(संज्ञो-) ऽबुद्धिपूर्वमिहै-
वावर्ततेंऽशेनेति मैत्रा. २।५
पुरुषस्य कर्तृत्वभोक्तृत्वसुखदुःखादि-
लक्षणश्चित्तधर्मः क्लेशरूपत्वाद्बन्धो
भवति, तन्निरोधनं जीवन्मुक्तिः मुक्तिको. २।१
पुरुषस्य वाग्रसः छांदो. १।१।२
पुरुषस्य रेतः (रसः) बृह. ६।४।१
पुरुषस्य विपश्चितः भ.गी.२।६०
पुरुषं जातमग्रतः [चित्यु.१२।३+
[ऋ.अ.८।४।१८=मं.१०।९०।६ वा. सं.३१।९
पुरुषं कृष्णपिङ्गलमूर्ध्वरेतसं विश्वरूपं भस्मजा. २।४
पुरुषं कृष्णं कृष्णदन्तं पश्यति
(स्वप्ने) स एनं हन्ति ३ऐत.२।४।७
पुरुषं निर्गुणं साङ्ख्यमथर्वशिरसो विदुः मंत्रिको. १४
पुरुषं पुरुषर्षभ भ.गी.२।१५
पुरुषं शाश्वतं दिव्यं भ.गी.१०।१२
पुरुषं सोम्योत हस्तगृहीतमानय-
न्त्यपहार्षीत् छांदो.६।१६।१
पुरुषं सोम्योतोपतापिनं ज्ञातयः
पर्युपासते छांदो.६।१५।४
पुरुषः परमात्माऽहं पुराणः परमोऽस्म्यहं ब्र.वि. ९९
पुरुषः प्रकृतिस्थोहि भुङ्क्ते प्रकृति-
जान्गुणान् [भ.गी.१३।२२+ भवसं. २।९
पुरुषः स परः पार्थ भ.गी.८।२२
पुरुषः साङ्ख्यदृष्टीनामीश्वरो योग-
वादिनाम् अ.पू.३।२०
पुरुषः सुखदुःखानां भ.गी.१३।२१
पुरुषः स्थापको ज्ञेयः सत्यं सम्मार्जनं
स्मृतम्। अहिंसा गोमयं प्रोक्तं
शान्तिश्च सलिलं परम् शिवो. १।२५
पुरुषात्केशलोमानि जायन्ते च
क्षरन्त्यपि गुह्यका. २७
पुरुषात्तु परा देवी सा काष्ठा सा परा गतिः गुह्यका. ४२

पुरुषार्थैर्किन्तैस्तृचेन सर्वोपचारोपयोगः सूर्यता. ४।१
पुरुषान्नपरंकिञ्चित्सा काष्ठासापरा गतिः कठो. ३।११
पुरुषार्थाः सागराः भावनो. २
पुरुषेण सम्मितं भवति मायया परि-
वेष्टितं भवति (षोडशारं चक्रं) नृ.पू. ५।९
पुरुषे त्वेवाविस्तरामात्मा १ऐत. ३।२।३
पुरुषे सर्वशास्तारं बोधानन्दामयं
शिवम्। धारयेद्बुद्धिमान्नित्यं
सर्वपापविशुद्धये जा.द. ८।७
पुरुषे ह वा अयमादितो गर्भो भवति २ ऐत. ४।१
पुरुषोत्तमात्सकलानि तीर्थानि जायन्ते सि. वि. ३
पुरुषो नारायणो भूतं भव्यं भविष्य-
च्चासीत् मुद्गलो. २।२
पुरुषो निधनम् छांदो.२।१८।१
पुरुषो वा अक्षितिः स हीदमन्नं धिया
धिया जनयते बृ.उ. १।५।२
पुरुषो वा अक्षितिः स हीदमन्नं पुनः
पुनर्जनयते बृह. १।५।२
पुरुषो वाऽग्निर्गौतम तस्य व्यात्तमेव
समित्प्राणो धूमो वागर्चिश्चक्षुरङ्गाराः बृह. ६।२।१२
पुरुषो वाव गौतमाग्निस्तस्य वागेव
समिद्युपमन्त्रयते स धूमो योनि-
रर्चिर्यदन्तः करोति तेऽङ्गारा
अभिनन्दा विस्फुलिङ्गाः छांदो. ५।७।१
पुरुषो वाव यज्ञस्तस्य यानि चतु-
र्विंशतानि वर्षाणि तत्प्रातःसवनम् छांदो. ३।१६।१
पुरुषो वाव सुकृतम् २ऐत. २।३
पुरुषो वै रुद्रस्तन्महो नमोनमः महाना. १०।११
पुरुषो ह वा अयं सर्वे आं दं द्वे विद्ले ३ऐत. १।१।२
(अथ) पुरुषो ह वै नारायणो-
ऽकामयत प्रजाः सृजेयेति नारा. १
पुरुहूतमृग्मिणं विश्ववेदसम् आर्षे. १०।२
पुरूच्येषा विश्वमातादिविद्या त्रिपुरो. ८
पुरो देवाः प्रपद्यन्ते पश्चादेवं विसर्जयेत् इतिहा. ६२
पुरोधसां च मुख्यं मां भ.गी.१०।२४
पुरोनुवाक्या च याज्या च शस्यैव
तृतीया बृह.३।१।१०
पुरोवाच प्रजापतिः भ.गी. ३।१०
रो वातो हिङ्कारो मेघो जायते छांदो.२।३।१

पुल्लिङ्गं सर्वमीशानं स्त्रीलिङ्गं भगवत्युमा रुद्रहृ. ९
पुष्करमहं पवित्रमहमुग्रं च मध्यं च
बहिश्च पुरस्ताज्ज्योतिरित्यहमेव अ.शिर:. १
पुष्णामि चौषधीः सर्वाः भ.गी.१५।१३
पुष्पमध्ये यथा गन्धः पयोमध्ये
(ऽस्ति सर्पिवत्) यथा घृतम्।
तिलमध्ये यथा तैलं पाषाणेष्विव
काञ्चनम् [ध्या.बिं.५+१यो.त.१३६+ २यो.त.८
पुष्पवत्सकलं विद्याद्गन्धस्तस्य तु
निष्कलः ब्र. बिं. ३७
पुष्पाणां फलानि (रसः) बृह. ६।४।१
पुष्पाण्यादायावयतो वै च जगान्य-
स्याश्चाम्बावयवाश्चाप्सरसः कौ. त. १।३
पुष्पात्प्रकाशते यद्वत्फलं पुष्पविनाशकं अमन. २।१५
पुष्पितवचनेन मोहितास्ते भवन्ति स्वसंवे. ३
पुंसः प्रव्रजनं प्रोक्तं नेतराय कदाचन पैङ्गलो. ४।५
पुंसा कर्त्रा मातरि मासिषिक्तः कौ. त. १।२
पुंसांदुर्वासनारज्जुर्नारीबडिशपिण्डिका
[महो. ३।४६+ याज्ञव. १५
पुंसो वत्सो रुद्रो देवता २ प्रणवो.१४
पूजनाद्दौर्भाग्यनाशो भवेत् कामराज. १
पूजयित्वा विवस्वन्तमर्घ्यदानं
समाचरेत् सूर्यता. २।५
पूजयेच्च शिवज्ञानं वाचयीत च पर्वसु शिवो. ७।७८
पूजयेद्ध्यानयोगेन सन्तोषैः
कुसुमैः सितैः शिवो. १।२६
पूजार्हावरिसूदन भ. गी. २।४
पूजितो वन्दितश्चैव सुप्रसन्नो यथा
भवेत्। तथा चेत्ताड्यमानस्तु
तदा भवति भैक्ष्यभुक् ना.प. ३।१९
पूर्णमद्वयमखण्डचेतनं विश्वभेदकलना-
दिवर्जितम्। ...तत्सदाऽहमिति
मौनमाश्रय म. वा. र. ५
पूतं पावनं नमामि सद्यः समस्ताघ-
शासकं भस्मजा. १।४
पूतं प्रातरुदयाद्रोमयं ब्रह्मपर्णे निधाय
त्र्यम्बकमिति मन्त्रेण शोषयेत् भस्मजा. १।२
पूता मद्भावमागताः भ.गी. ४।१०
पूति पर्युषितं च यत् भ.गी.१७।१०
पूते वामहस्ते वामदेवायेति निधाय...
तेनैवापादशीर्षमुद्धूलनमाचरेत् भस्मजा. १।४
पूतो देवलोकान् समश्नुते सद्वै. ११
पूरककुम्भकरेचकैः षोडशचतुःषष्टि-
द्वात्रिंशत्संख्यया यथाक्रमं
प्राणायामः मं. ब्रा. १।१३
पूरकं द्वादशं कुर्यात् कुम्भकं षोडशं
भवेत्। रेचकं दश चोङ्कारः
प्राणायामः स उच्यते यो.चू. १०८
पूरकं शास्त्रविज्ञानं कुम्भकं स्वगतं स्मृतम् वराहो. ५।५
पूरकः कुंभकस्तद्वद्रेचकः पूरकः पुनः वराहो. ५।१८
पूरकाद्यनिलायामाद्दृढाभ्यासादखेद-
जात्। एकान्तध्यानयोगाच्च मनः-
स्पंदो निरुद्ध्यते शांडि.१।७।२७
पूरकान्ते तु कर्तव्यो बन्धो जाल-
न्धराभिधः [शाण्डि.१।७।११+
[यो. शि. १।१०९+ यो. कुं. १।५१
पूरयेत्सर्वमात्मानं सर्वद्वारं निरुध्य च... क्षुरिको. ४
पूरितं कुम्भयेत्पश्चाच्चतुःषष्ट्या तु मात्रया त्रि.ब्रा.२।९७
पूरितं धारयेत्पश्चाच्चतुष्षष्ट्या तु
मात्रया। उकारमूर्तिमत्रापि
संस्मरन्प्रणवं जपेत् जा.द. ६।४
पूरितं पिङ्गलया द्वात्रिंशन्मात्रया
मकारमूर्तिध्यानेन.. शांडि.१।६।२
पूरितं रेचयेत्पश्चान्मकारेणानिलं बुधः जा. द. ६।५
पूर्णत्वमस्ति चेत्किञ्चिदपूर्णत्वं
प्रसज्यते। तस्मादेतत्कचिन्नास्ति.. ते.बिं.५।२९
पूर्णबोधकरं स्वयम् पं. ब्र. ८
पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते शान्तिपाठः
पूर्णमद्वयमखण्डचेतनं वराहो.३।८
पूर्णरूपो महानात्मा प्रीतात्मा... ते.बिं.४।६३
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते शांतिपाठः
पूर्णानन्दैकविज्ञानं रामो.४।१
पूर्णानन्दो हरिर्मायारहितः पुरुषोत्तमः त्रि. वि. १
पूर्णापूर्णमसद्विद्धि ते.बिं.३।५६
पूर्णोऽहं शिवोऽहमद्वैतरूपोऽहम् कामराज. २
पूर्णानन्दैकबोधस्तद्ब्रह्माहमस्मि ना. प. ३।८७
पूर्णानन्दैकबोधोऽहं प्रत्यगेकरसो-
ऽस्म्यहम् ब्र.वि.१०७

पूर्णात्पूर्ण सुखात्मकम् महो. ५।४६
पूर्येते प्रजया पशुभिर्नास्यास्माल्लोका-
 त्प्रजोद्वर्तते बृ. उ. २।१।५
पूर्वजन्मकृताभ्यासात्सत्वरं फल-
 मश्नुते । एतदेव हि विज्ञेयं तत्काक-
 मतमुच्यते यो.शि.१।१४३
पूर्वजातीः स्मरति (गर्भस्थो जीवः) गर्भो. ३
(ॐ) पूर्वदले श्वेतवर्णे यदा
 विश्राम्यते मनः । तदा धैर्यमुदारं
 च धर्मकीर्तिमतिर्भवेत् विश्रामो. १
पूर्वदृष्टमदृष्टं वा यदस्याः प्रतिभासते ।
 संविदस्तत्प्रयत्नेन मार्जनीयं
 विजानता अ. पू. ४।५५
पूर्वपत्रे सूर्यायाग्नेयपत्रे रवये दक्षिणे
 विवस्वते नैर्ऋतौ खगाय पश्चिमे
 वरुणाय वायव्ये मित्राय सौम्ये
 आदित्याय ईशान्ये नमो महसे सूर्यता. ४।१
पूर्वपूर्वं प्रकुर्वीत यावदुत्थानसम्भवः ।
 सम्भवत्युत्तमे प्राज्ञः प्राणायामे
 सुखी भवेत् जा.द.६।१५
पूर्वब्रह्मणः प्रभुविमितं हिरण्यम् छांदो. ८।५।३
पूर्वभागे सुषुम्नाया राकाया संस्थिता कुहूः जा.द.४।१८
पूर्वभागे ह्यधोलिङ्गं शिखिन्यां चैव
 पश्चिमम् । ज्योतिर्लिङ्गं भ्रुवोर्मध्ये
 नित्यं ध्यायेत्सदा यतिः ब्र. वि. ८०
पूर्वमक्षरं पूर्वरूपं, उत्तरमुत्तररूपं,
 योऽवकाशः पूर्वरूपोत्तररूपे,
 अन्तरेण सा संहितेति ३ऐत. १।५।१
पूर्वमेकमेवाद्वितीयं ब्रह्मासीत् गोपालो.२।१३
पूर्वमेवाक्षरं पूर्वरूपं, उत्तरमुत्तररूपं,
 योऽवकाशः पूर्वरूपोत्तररूपे
 अन्तरेण येन सन्धिं विवर्तयति येन
 स्वरात् स्वरं विजानाति येन मात्रा
 मात्रां विभजते सा संहिता ३ऐत. १।५।२
पूर्वयोनिसहस्राणि दृष्ट्वा चैव ततो
 मया । आहारा विविधा भुक्ताः
 पीता नानाविधाः स्तनाः गर्भो. ४
पूर्ववासनया युक्तः शरीरं
 चान्यदाप्नुयात् यो.शि. १।१४१

पूर्वस्मिन्विशीला, आग्नेय्यां श्रद्धा
(तत्र) पूर्वस्यां दिशि ब्रह्मा
 कृताञ्जलिरहर्निशं मामुपास्ते भस्मजा. २।१३
पूर्वं तु तारकं विद्यादमनस्कं तदुत्तरम्
 [मं. ब्रा. १।४+ अद्वयता. ५
पूर्वं देवेभ्योऽमृतस्य ना३भाई (मा.पा.) तैत्ति.३।१०।६
पूर्वं देवेभ्यो अमृतस्य नाभिः नृ.पू.२।१४
पूर्वं देवेभ्योऽमृतस्य ना ३ भायि तैत्ति.३।१०।६
पूर्वं बीजयुता विद्या ह्याख्याता
 याऽतिदुर्लभा योगकुं. २।३७
पूर्वं मनः समुदितं परमात्मतत्त्वात् महो. ५।५२
पूर्वं यथोदिता या वाग्विलोमेनास्तगा
 भवेत् योगकुं. ३।१९
पूर्वं यः कथितोऽभ्यासश्चतुर्थांशं परि-
 ग्रहेत् । दिवा वा यदि वा सायं
 याममात्रं समभ्यसेत् १यो.त. ६७
पूर्वाभ्यासेन तेनैव भ.गी.६।४४
पूर्वा सन्ध्या हंसवाहिनी ब्राह्मी मध्यमा
 वृषभवाहिनी माहेश्वरी । पश्चिमा
 गरुडवाहिनी वैष्णवी गायत्रीर. ५
पूर्वादिदिशि गणेशबटुकक्षेत्रपाल-
 योगिन्यः तारोप. ११
पूर्वा दिक्प्रथमा कुक्षिर्भवति गायत्रीर. ३
पूर्वापरापरिज्ञानमजातेः परिदीपकं अ. शां. २१
पूर्वाभिमुखो भूत्वा भूरिति व्याहृति-
 गायत्रं छंद ऋग्वेदोऽग्निर्देवता महो.३।४
पूर्वायां भवतु गायत्री गायत्रीर.५
पूर्वावस्थात्रयं यत्र जाग्रदित्येव संस्थितं अ.पू. ३।८७
पूर्वाऽस्य मात्रा जागर्ति जागरितं
 द्वितीया स्वप्नं तृतीया सुषुप्तिश्चतुर्थी ब्र.शिखो.३
पूर्वाऽस्य मात्रा पृथिव्यकारः स
 ऋग्भिर्ऋग्वेदो ब्रह्मा वसवो गायत्री
 गार्हपत्यः ब्र.शिखो. १
पूर्वाह्ना कालिका सन्ध्या गायत्री कुमारी गायत्रीर. ६
पूर्वां दृष्टिमवष्टभ्य ध्येयत्यागविला-
 सिनीम् । जीवन्मुक्ततया स्वस्थो
 लोके विहर विज्वरः महो. ६।६६

पूर्वे महाशाला महाश्रोत्रियाः, न नोऽद्य कश्चनाश्रुतममतमविज्ञातमुदाहरिष्यतीति ह्येभ्यो विदांचक्रुः — छांदो. ६।४।५
पूर्वैरपि मुमुक्षुभिः — भ.गी. ४।१५
पूर्वैः पूर्वतरं कृतम् — भ.गी.४।१५
पूर्वोक्तत्रिकोणस्थानादुपरि पृथिव्यादिपञ्चवर्णकं ध्येयम् — ध्या. बिं. ९५
पूर्वोक्तेन क्रमेणैव सम्यगासनमास्थितः । चालनं तु सरस्वत्याः कृत्वा प्राणं निरोधयेत् — योगकुं. १।९३
पूर्वो नारायणः प्रोक्तोऽनादिसिद्धो मन्त्ररत्नः सदाचार्यमूलः — द्वयोप. १
पूर्वो यो देवेभ्यो जातः — चित्त्यु. १३।२
पूर्वो विवृतकरणस्थितश्च । द्वितीयः स्पष्टकरणस्थितश्च — २प्रणवो.१६
पूर्वो हि (ह)जातः स उ गर्भे अन्तः
[अ. शी.२।६+तै.आ.१०।१।३ — श्वेता.२।१६
[वा.सं.३२।४+सूर्यता.१।३+ — महाना.२।१
पूश्च पृथ्वी बहुला न उर्वी — महाना.६।१५
पूर्वो हि भोक्ता भवति [गोपालो. — १।१।११
पूषणमियं वै पूषे य९ हीद९ सर्वं पुष्यति यदिदं किञ्च — बृह. १।४।१३
पूषन्नेकर्षे यमसूर्यप्राजापत्य व्यूहरश्मीन्, समूह तेजो यत्ते रूपं कल्याणतमं तत्ते पश्यामि [ईशा. १६+ — बृह. ५।१५।१
पूषा चालम्बुसा चैव श्रोत्रद्वयमुपागते (नाड्यौ) — यो.शि.५।२२
पूषा यशस्विनी चैव पिङ्गला पृष्ठपूर्वयोः — जा.द.४।१५
पूषाधिदेवता प्रोक्ता वरुणा वायुदेवता — जा.द. ४।३६
पूषा यशस्विनी नाड्यौ तस्मादेव समुत्थिते — त्रि.ब्रा. २।७२
पूषायाश्च सरस्वत्या मध्ये प्रोक्ता यशस्विनी — जा.द.४।१६
पूषा वामाक्षिपर्यन्ता पिङ्गलायास्तु पृष्ठतः — जा.द.४।२०
पूषा सरस्वतीमध्ये पयस्विनी भवति — शांडि.१।४।६
पूषा स्वाकारेण — चित्त्यु. ८।२
पूष्णो हस्ताभ्यां प्रतिगृह्णामि — चित्त्यु. १०।१

पृतनाजित९ सहमानमुग्रमग्नि९ हुवेमपरमात्सधस्थात् [महाना.६।१७+ — वनदु. ११८
पृच्छामि त्वा धर्मसम्मूढचेताः — भ.गी. २।७
पृथक्केशिनिषूदन — भ.गी. १८।१
पृथक्त्वेन तु यज्ज्ञानं — भ.गी.१८।२१
पृथक्त्वेन धनञ्जय — भ.गी.१८।२९
पृथगात्मानं प्रेरितारं च मत्वा जुष्टस्ततस्तेनामृतत्वमेति — श्वेताश्व. १।६
पृथग्भावेन तत्त्वानां — दुर्वासो.२।१७
पृथग्भूते षोडशकलाः...पृथिव्यादिषु संस्थिताः — त्रि.ब्रा. २।१२
पृथां प्रस्खलन्तीं प्रमृज्यामृजाङ्गीय ऊर्वोरुपादधात् तस्मै मुख्याय वरदाय पित्रे स्वाहा — पारमा.६।६
पृथक्प्रथश्रेणयोऽनुयन्ति — छांदो.५।१४।१
पृथिवी कलाऽन्तरिक्षं कला द्यौः कला समुद्रः कलैष वै सोम्य चतुष्कलः पादो ब्रह्मणोऽनन्तवान्नाम — छांदो.४।६।३
पृथिवी गार्हपत्योऽन्तरिक्षं दक्षिणाग्निः द्यौराहवनीयः — मैत्रा.६।३४
पृथिवीच पृथिवीमात्रा चापश्चापमात्राच — प्रश्नो. ४।८
पृथिवीचतुरस्रं च पीतवर्णं लवर्णकं — १यो.त. ८५
पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्त्वा मुखे जुहोमि स्वाहा — राधोप. ४।२
पृथिवीतो हीदं सर्वमुत्तिष्ठति यदिदंकिञ्च — १ऐत. १।२।७
पृथिवी त्रिहोता — चित्त्यु. ७।१
पृथिवी त्वमथाच्युतः — मैत्रा. ९।२
पृथिवी देवतामारः पृथिवी त्वा देवता रिष्यंतीत्येनं ब्रूयात् — ३ऐत. १।३।३
(तत्र) पृथिवी धारणे आपः पिण्डीकरणे तेजः प्रकाशने वायुर्व्यूहने आकाशमवकाशप्रदाने — गर्भो. १
पृथिवी पाद उच्यते — गुह्यका. १८
पृथिवी पुच्छं प्रतिष्ठा — तैत्ति. २।२
पृथिवी पूता पुनातु माम् — महाना.११।२
पृथिवी पूर्वरूपम् — तै. उ. १।३।१
पृथिवी पूर्वरूपम् , द्यौरुत्तररूपं, वायुः संहितेति माण्डूकेयः — ३ऐत. १।१।१

पृथिवी पूर्वरूपं, द्यौरुत्तररूपं, वृष्टिः सन्धिः, पर्जन्यः सन्धाता ३ऐत.१।२।१
पृथिवीमय आपोमयः (आत्मा) बृह.४।४।५
पृथिवी मरो या अधस्तात्ता आपः २ऐत. १।२
पृथिवीमेवाप्येति यः पृथिवीमेवास्तमेति सुबालो. ९।३
पृथिवीमेव भगवो राजन्निति होवाच छांदो.५।१७।१
पृथिवीयोगतो मृत्युर्न भवेदस्य योगिनः १यो.त. ८७
पृथिवीलोकमेव पुरोनुवाक्यया जयत्य-न्तरिक्षलोकं याज्यया द्युलोकं शस्यया बृह.३।१।१०
पृथिवी वा अन्नम् तैत्ति. ३।९
पृथिवी वाक्पाणि-पाद-पायूपस्थाः त्रि.ब्रा. १।३
पृथिवी वाव गौतमाग्निस्तस्याः संवत्सर एव समिदाकाशो धूमो रात्रिरर्चिर्दिशोऽङ्गारा अवान्तर-दिशो विस्फुलिङ्गाः छां.उ.५।६।१
(ॐ)पृथिवी वाऽन्नमापोऽन्नादाः सुबालो.१४।१
पृथिवी वायुराकाश आपो ज्योतींषी-त्येतानीमानि च क्षुद्रमिश्राणीव २ऐत. ५।३
पृथिवी वायुराकाश आपो ज्योतींषीति १ऐत.३।१।१
पृथिवी विश्वस्य धारिणी [मुण्ड.२।१।३+ ग.पू. ता.१।४
पृथिवी श्रोणी (गायत्र्याः) सन्ध्यो. २३
पृथिवी सुवर्चा युवतिः सजोषाः ग.शो. ३।२
पृथिवी हिंकारोऽग्निः प्रस्तावो अंतरिक्ष-मुद्गीथ आदित्यः प्रतिहारो द्यौर्निधनमित्यूर्ध्वेषु छांदो.२।२।१
पृथिवी हिङ्कारोऽन्तरिक्षं प्रस्तावो द्यौरुद्गीथो दिशः प्रतिहारः समुद्रो निधनमेताः शक्वर्यो लोकेषु प्रोताः छांदो.२।१७।१
पृथिवी होता चित्त्यु.२।१
पृथिवीं प्रपद्येऽन्तरिक्षं प्रपद्ये दिवं प्रपद्ये इत्येव तद्वोचम् छांदो.३।१५।५
पृथिवीं भित्वाऽऽपो भिनत्ति सुबालो.११।२
पृथिवी१ शरीरं (अप्येति) बृह. ३।२।१३
पृथिवी शरीरैः चित्त्यु. ४।१
पृथिव्यग्निरन्नमादित्यः छांदो.४।११।१
पृथिव्यन्तरिक्षं द्यौर्दिशोऽवान्तरदिशा अग्निर्वायुरादित्यश्चन्द्रमानक्षत्राणि। आप ओषधयो वनस्पतय आकाश आत्मा। इत्यधिभूतम् तैत्ति. १।७।१

पृथिव्यग्नितेजोवाय्वाकाशश्रोत्रत्वक्च-क्षुर्जिह्वाघ्राणवाक्पाणिपादपायूप-स्थमनोविकाराः षोडश शक्तयः भावनो. ३
पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशगन्धरसरूप-स्पर्शशब्दवाक्यानि पादपायूप-स्थत्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणमनो-बुद्ध्यहङ्कारचित्तज्ञानानि गायत्रीर. ९
पृथिव्यप्सु प्रलीयते सुबालो. २।२
पृथिव्यंशे तु देहस्य चतुर्बाहुं किरीटिनं त्रि.ब्रा.२।१४२
पृथिव्या आपः (रसः) बृह. ६।४।१
पृथिव्या आपो रसः छांदो. १।१।२
पृथिव्याइत्येषांभूतानांब्रह्म सम्पद्यते २सन्न्यासो.१६
पृथिव्या ओषधयः, ओषधीभ्योऽन्नम्। अन्नात्पुरुषः [ना. उ. ता.१।५+ तै.उ. २।१।१
पृथिव्या ओषधयः। ओषधीभ्योऽन्नम्, अन्नाद्रेतः। ततः पुरुषः ग. शो. २।५
(अथातः) पृथिव्यादिमहाभूतानां समवायं शरीरम् शारीरको. १
पृथिव्यादि-शिवान्तं तु अकाराद्याश्च वर्णकाः। कूटान्ता हंस एव स्यात्... ब्र. त्रि. ६२
पृथिव्यापश्च तेजश्च वायुराकाश-पञ्चमः दुर्वासो.२।१४
पृथिव्यापस्तथा तेजो वायुराकाश-मेव च [वराहो. १।९+ भवसं. २।१५
पृथिव्यापस्तेजो वायुराकाश-मित्यस्मिन्पञ्चात्मके शरीरे.. गर्भो. १
पृथिव्यापस्तेजोवायुराकाश इति पञ्चस्वरूपं लिङ्गम् लिङ्गोप. १
पृथिव्यापस्तेजो वाय्वाकाशं दहति सुबालो.१५।२
पृथिव्यापस्तेजोवायुराकाशा मे शुद्धयंतां महाना.१४।१२
पृथिव्यामाकाश एकादशैकादश तैत्ति.३।११।१
पृथिव्यामाकाशः प्रतिष्ठितः। आकाशे पृथिवी प्रतिष्ठिता तैत्ति. ३।९
पृथिव्यायतनं निर्भुंज, दिव्यायतनं प्रतृण्णं,... ३ ऐत.१।३।१
पृथिव्या रूपं स्पर्शाः, अन्तरिक्षस्यो-ष्माणः, दिवः स्वराः ३ ऐत.२।५।१

पृथिव्याश्च वैभवाणवमेदा पीतवर्णा मृदो जायन्ते	गोपीचं. ८
पृथिव्यां तृप्यन्त्यां यत्किञ्च पृथिवी चाग्निश्चाधितिष्ठतस्तत्तृप्यति...	छांदो.५।२१।२
पृथिव्यां धारयेच्चित्तं पातालगमनं भवेत्	यो.शि.६।४९
पृथिव्यां नाश्रु पातयेत्	कुंडिको. ४
पृथिव्यां यत्किञ्चिद्वस्तुमात्रं तस्याभिदैविकं रूपं तत्रैवास्ति	सामर. १०
पृथिव्यां या देवता सैषा पुरुषस्यापानमवष्टभ्यान्तरा यदाकाशः स समानो वायुर्व्यानः	प्रश्नो. ३।८
(तस्य) पृथिव्येव समिदग्निर्धूमो रात्रिरर्चिश्चन्द्रमा अङ्गारा नक्षत्राणि विस्फुलिङ्गाः	बृह. ६।२।११
पृथिव्येव यस्यायतनमग्निर्लोको मनो ज्योतिः	बृह. ३।९।१०
पृथिव्यै चैनमग्नेश्च दैवी वागाविशति	बृह. १।५।१८
पृथुः समस्तान्प्रचचार लोकानव्याहतो वैरिविदारिचक्रः। स कालवाताभिहतो विनष्टः क्षिप्तं यथा शाल्मलितूलमग्नौ	भवसं.१।२४
पृथ्वी देवी महीत्यनेन व्याचक्षते	त्रि. ता.१।८
पृथ्वी विश्वस्य धारिणी [कैव.१५+	नारा. १
पृथ्व्यप्तेजोनिलखानि चिन्त्यं	श्वेता. ६।२
पृथ्व्यप्तेजोऽनिलखे समुत्थिते पञ्चात्मके योगगुणे प्रवृत्ते। न तस्य रोगो न जरा न मृत्युः प्राप्तस्य योगाग्निमयं शरीरम्	श्वेताश्व.२।१२
पृषदाज्य१ सन्नीय पृषदाज्यस्योपघातं जुहोति	बृ.उ.६।४।२४
पृष्ठभागेऽमृतं न्यस्तं देवैर्ब्रह्मादिभिः पुरा	१बिल्वो. १४
पृष्ठभागेऽमृतं यस्मादर्चयेन्मम तुष्टये	१बिल्वो. १०
पृष्ठभागे संयमाद्वरुणलोकज्ञानम्	शांडि.१।७।५२
पृष्ठमध्यस्थितेनास्था...सुषुम्ना सुप्रतिष्ठिता	ज्ञा.द. ४।१०
पेहरिन्द्राय पिन्वते	चित्सु. ११।७
पेलवो नियताकारो गन्धोनाहमचेतनः	१सं.सो.२।१९
पैप्पलादं महाशास्त्रं न देयं यस्य कस्यचित्। नास्तिकाय कृतघ्नाय दुर्वृत्ताय दुरात्मने	शरभो. ३३
पोपूयन्त्यद्भिरभिषीवयन्ति (यदिदं)	आर्षे. १२
पोषणादि शरीरस्य समानः कुरुते सदा	त्रि.ब्रा.२।८६
पौण्ड्रकालिकनागाभ्यां चामराभ्यां सुवीजितम्।...‘ विष्णुवाह नमस्तुभ्यं क्षेमं कुरु सदा मम ’ एवं ध्यायेत्त्रिसन्ध्यासु गरुडंनागभूषणम्	गारुडो. ४
पौण्ड्रं दध्मौ महाशङ्खं	भ.गी. १।१५
पौरुषेण प्रयत्नेन यस्मिन्नेव पदे मनः। योज्यते तत्पदं प्राप्य निर्विकल्पो भवानघ	महो. ४।१०३
पौरुषेण प्रयत्नेन लालयेच्चित्तबालकम्	मुक्तिको. २।७
पौर्णमासी चामावास्या च स्तनौ	सन्ध्यो. २३
(अथ) पौर्णमास्यां पुरस्ताच्चन्द्रमसं दृश्यमानमुपतिष्ठेत	कौ. त. २।९
पौर्णमास्यां वाऽमावास्यायां वा शुक्लपक्षे वा पुण्ये नक्षत्रेऽग्निमुपसमाधाय...आज्याहुतीर्जुहोति	कौ. त.२।३
पौल्कसोऽपौल्कसः (भवति)	बृह. ४।३।२२
पौल्कसो न पौल्कसो विप्रा न विप्राः	त्रि.ता.५।१
पौष्करेऽथ पलाशे वा पात्रे गोशृङ्ग एव वा। आदधीत हि गोमूत्रं गन्धद्वारेति गोमयम्	बृ.जा.३।७
प्रकाश उपजायते	भ.गी.१४।११
प्रकाश एव सततं तस्माद्द्वैत एव हि। अद्वैतमिति चोक्तिश्च प्रकाशाव्यभिचारतः	पा. ब्र. २५
प्रकाश एव सततं तस्मान्मौनं हि युज्यते	पा. ब्र. २६
प्रकाशकमनामयम्	भ.गी. १४।६
प्रकाशते स्वयं भेदः कल्पितो मायया तयोः	अ. पू. ४।३२
प्रकाशभूता वै तस्करा असंवार्याः	मैत्रा. ७।८
प्रकाशमध्ये माया करोति	अद्वैतो. ४
प्रकाशयति तत्परम्	भ.गी. ५।१६
प्रकाशयति भारत	भ.गी.१३।३४
प्रकाशयन्तमन्तस्थं ध्यायेत्कूटस्थमव्ययम्	पैङ्गलो. ३।६

प्रकाशवानस्मिँल्लोके भवति प्रकाशवतो ह लोकाञ्जयति छांदो. ४।५।३
प्रकाशः परमेश्वरः म. ब्रि. १०१
प्रकाशं च प्रवृत्तिं च भ.गी.१४।२२
प्रकाशात्मकं लिङ्गं विद्यालिङ्गम् लिङ्गोप. २
प्रकाशेभ्यः सदोमित्यन्तश्शरीरे विद्युद्द्योतयति मुहुर्मुहुरिति विद्युत्प्रतीयात् अ.शिखो. २
प्रकृतिस्त्वंततःसृष्टं तत्त्वादिगुणसाम्यतः सरस्व. ३६
प्रकृतिभिरभिपरीत्य तैजसं शरीरं कृत्वा... पुनरिमं लोकं प्रतिपद्यते निरुक्तो. २।२
प्रकृतिमहदहमाद्या महामायाः गोपीचं. ७
प्रकृतिर्माया पुरुषः शिवः ग. पू. २।८
प्रकृतिस्त्वां नियोक्ष्यति भ.गी.१८।५९
प्रकृतिस्थानि कर्षति भ.गी. १५।७
प्रकृतिं च गुणैः सह भ.गी.१३।३४
प्रकृतिं पुरुषं चैव [भ.गी.१३।२ +१३।२०
प्रकृतिं मोहिनीं श्रिताः भ. गी. ९।१२
प्रकृतिं यान्ति भूतानि भ.गी.१३।३४
प्रकृतिं यान्ति मामिकाम् भ. गी. ९।७
प्रकृतिं विद्धि मे पराम् भ. गी. ७।५
प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय भ. गी. ४।६
प्रकृतिं स्वामवष्टभ्य भ. गी. ९।८
प्रकृतिः पुरुषश्चोभौ समाया-ब्रह्मणः स्मृतौ रामर. ५।९
प्रकृतिः स्वेति विज्ञेया, स्वभावं न जहाति या अ. शां. ९
प्रकृतेरन्यथाभावो न कथञ्चिद्भविष्यति [अ. शां. २९+ अद्वैत. २१
प्रकृतेर्गुणसम्मूढाः भ.गी. ३।२९
प्रकृतेर्ज्ञानवानपि भ.गी. ३।३३
प्रकृतेस्तु जगत्सर्वं विकारं प्रोच्यते बुधैः । तस्मादेतद्विकारोऽपि सर्वं तु त्रिगुणात्मकम् भवसं. ४।६
प्रकृतेः क्रियमाणानि भ.गी. ३।२७
प्रकृत्यष्टकरूपंचस्थानंगच्छति कुण्डली योगकुं. १।७४
प्रकृत्याकाशवज्ज्ञेयाः सर्वे धर्मा अनादयः अ. शां. ९१
प्रकृत्या परमेश्वर्या जगद्योन्याङ्किताङ्कभृत रा. पू. ४।८
प्रकृत्या नियताः स्वया भ.गी. ७।२०
प्रकृत्या सहितः श्यामः पीतवासा जटाधरः रा.पू.ता.४।७
प्रकृत्यैव च कर्माणि भ.गी.१३।३०
प्र क्षत्रमत्रमाप्नोति क्षत्रस्य सायुज्यं सलोकतां जयति बृह. ५।१३।४
प्रक्षाल्य पाणी उदपात्रं पूरयित्वा तेनैनां त्रिरभ्युक्षति ' उत्तिष्ठातो विश्वावसोऽन्यामिच्छ ' इति बृह. ६।४।१९
प्रक्षिप्तं लवणं तोये क्रमाद्यद्वद्विलीयते । मनोऽप्यभ्यासयोगेन तद्वद्ब्रह्मणि लीयते अमन. १।२८
प्रक्षीणचित्तदर्पस्य निगृहीतेन्द्रियद्विषः। पद्मिन्य इव हेमन्ते क्षीयन्ते भोग-वासनाः [महो.५।७७+ मुक्तिको.२।४१
प्रक्ष्यन्ति मामिमे महाशाला महाश्रोत्रियाः छांदो.५।११।३
प्रगलितनिजमायोऽहं निस्तुल-दृशिस्वरूपमात्रोऽहम् आ. प्र. २
प्र च जुह्वत्यथो आहुर्दर्शपूर्णमासाविति बृह.१।५।२
प्रचारण-विलेखन-स्थूलाद्युन्मेष-निमेषादि वायोः शारीरको. ३
प्रचारणोत्तारणश्वासादिका वाय्वंशाः पैङ्गलो.२।२
प्रचारो वायुलक्षणम् वराहो. ५।२
प्रचोदयादिति प्रचोदितकाम इमांल्लोकान् प्रत्याश्रयते गायत्रीर. २
प्रचोदयिता चैषोऽस्य मैत्रा.२।४,९,१
प्रचोदयिताऽस्य को भगवन्नेतदस्माकं ब्रूहीति तान्होवाच मैत्रा. २।३
प्रजन इति भूयांसस्तस्माद्भूयिष्ठाः प्रजायन्ते महाना.१६।१३
प्रजनश्च स्वाध्यायप्रवचने च तैत्ति.१।९।१
प्रजनश्चास्मि कन्दर्पः भ.गी.१०।२८
प्रजहाति यदा कामान् भ.गी. २।५५
प्रजननं वै प्रतिष्ठा लोके साधु... महाना.१७।७
प्रजननं सन्धानम् तैत्ति.१।३।३
प्रजया पशुभिरन्नाद्येन तेजसा ब्रह्मवर्चसेति छां.उ.५।२१।२

प्रजहाति यदा कामान्सर्वांश्चित्तगता-
न्मुने । मयि सर्वात्मके तुष्टः स
जीवन्मुक्त उच्यते वराहो.४।२८
प्रजाकामो वै प्रजापतिः स तपोऽतप्यत प्रश्नो. १।४
प्रजाकामो ह वै प्रजापतिः (मा.पा.) प्रश्नो. १।४
प्रजा च स्वाध्यायप्रवचने च तैत्ति.१।९।१
प्रजातिश्च स्वाध्यायप्रवचने च तैत्ति. १।९।१
प्रजानां रेतो हृदयम् १ऐत. १।३।१
प्रजापतये पुरुषं चित्त्यु.१०।२
प्रजापतये स्वाहेत्यग्नौ हुत्वा मन्थे
सं९ स्रवमवनयति बृह.६।३।३
प्रजापतिमेवाप्येति यः प्रजापति-
मेवात्तमेति सुबालो. ९।९
प्रजापतिरमृतमानन्द इत्युपस्थे तैत्ति.३।१०।३
प्रजापतिरुद्गीथेन चित्त्यु.८।२
प्रजापतिर्जायते पुरुषोत्तमात् सि. वि.२
प्रजापतिर्दश होता चित्त्यु. ७।४
प्रजापतिर्देवान् (असृजत्) बृह.५।५।१
प्रजापतिर्मनवे मनुः प्रजाभ्यः छांदो.८।१५।१
प्रजापतिर्लोकानभ्यतपत् [छां.२।२३।२ +४।१७।१
(अथ)प्रजापतिर्लोकान्निसृक्षमाण-
स्तस्या एव विद्याया यानि त्रिंश-
दक्षराणि तेभ्यस्त्रीं९ लोकान्... अव्यक्तो.६
प्रजापतिर्वा एषोऽग्रेऽतिष्ठत्स नारमतैकः मैत्रा. २।६
प्रजापतिर्विराट् चैव पुरुषः सलिल-
मेव च । स्तूयते.. विभु.. मंत्रिको. १३
प्रजापतिर्हि कर्माणि ससृजे । तानि
सृष्टान्यन्योन्येनास्पर्धन्त बृह. १।५।२१
प्रजापतिर्हिंकारः प्राणः स्वरोऽन्नं
या वाग्विराट् छांदो.१।१३।२
प्रजापतिलोकेषु गार्गीति बृह.३।६।१
प्रजापतिश्चरति गर्भे अंतः वा.सं.३१।१९
[महाना. १।१+ चित्त्यु.१३।१
प्रजापतिश्चरसि गर्भे त्वमेव प्रतिजायसे प्रश्नो.२।७
प्रजापतिश्छन्दमयो विगर्भः एका. ७.९
(सत्यं) प्रजापतिस्तपस्तत्वाऽनुव्याहर-
न्नुर्भुवस्स्वरित्येषा ह्यस्य प्रजापतेः
स्थविष्ठा तनूर्या लोकवतीति मैत्रा. ६।६

प्रजापतिस्त्वं यज्ञाय वसीयांसमात्मानं
मन्यमानो मनो यज्ञेनेजे अव्यक्तो.५
प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च भ.गी.११।३९
प्रजापतिं९ शरणं प्रपन्नोऽभूवं, स त्वा... छांदो.२।२२।४
प्रजापतिं यो भुवनस्य गोपाः महाना.१३।९
प्रजापतिः कथं न्विमाः प्रजाः सृजेय-
मिति चिन्तयन्.. अव्यक्तो. ७
प्रजापतिः प्रजा असृजत ग. पू. १।२
प्रजापतिः प्रजायते, तस्मान्नारायणः
प्रजायते ना.पू.ता. ५।३
प्रजापतिः प्रजायते ह प्रजया पशुभिः बृह.६।१।६
प्रजापतिः प्रजया संविदानः
[नृ. पू. २।६+ चित्त्यु. ११,१२,१३
प्रजापतिः प्रजाः सृष्ट्वा व्यस्रंसत... ३ऐत. २।६।१
प्रजापतिः प्रथमजा ऋतस्यात्मना-
ऽऽत्मानमभिसम्बभूव महाना.२।७
प्रजापतिः प्रथमजा ऋतस्य । अस्माभि-
र्दत्तं जरसः परस्तादच्छिन्नं
तंतुमनुसञ्चरेम [अथर्व.१२।१।६१ सहवै. ९
प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा
जातानि परिता बभूव [पारमा.६।८+ म.ना.१३।१६
[ऋ.मं.१०।१२१।१०+वा.सं.१०।२०+ २३।६५
प्रजापतेरनुमतिः चित्त्यु. ९।२
प्रजापतेः सभां वेश्म प्रपद्ये यशोऽहं
भवामि छांदो.८।१४।१
प्रजा प्रतिष्ठा तन्तूनामिष्टापूर्तं परायणम् इतिहा. ६
प्रजायते ह प्रजया पशुभिः, य एवं वेद बृह.६।१।६
प्रजा सन्धिः । प्रजननं सन्धानम् तै.उ.१।३।६
प्रजा ह तिस्रो अत्यायमीयुः १ऐत.१।१।२
प्रजां पशून्धनानि अस्माकं ददातु चित्त्यु.११।१०
प्रजां मा मे रीरिष आयुरुग्र नृचक्षसं
त्वा...[महाना.१३।१३+ चित्त्यु.१५।१
प्रज्वलद्वह्निगं हविर्यथा न यजमान-
मासादयति भस्मजा.२।७
प्रज्ञप्तेः सनिमित्तत्वमिष्यते युक्तिदर्शनात् अ.शां. २५
प्रज्ञप्तेः सनिमित्तत्वमन्यथाद्वयनाशतः अ.शां.२४
प्रज्ञया चक्षुः समारुह्य चक्षुषा सर्वाणि
रूपाण्याप्नोति कौ.उ.३।६

प्रज्ञया जिह्वां समारुह्य जिह्वया सर्वा-
न्नरसानाप्नोति कौ. त. ३।६
प्रज्ञया पादौ समारुह्य पादाभ्यां
सर्वा इत्या आप्नोति कौ. त. ३।६
प्रज्ञया प्राणं समारुह्य प्राणेन सर्वा-
न्गन्धानाप्नोति कौ. त. ३।६
प्रज्ञया यो विजानाति (प्रत्यगात्मब्रह्म-
णोर्भेदं) स जीवन्मुक्त उच्यते म.वा.र. ८
प्रज्ञया वाचं समारुह्य वाचा सर्वाणि
नामान्याप्नोति कौ. त. ३।६
प्रज्ञया शरीरं समारुह्य शरीरेण सुख-
दुःखे आप्नोति कौ. त. ३।६
प्रज्ञया श्रोत्रं समारुह्य श्रोत्रेण सर्वान्
शब्दानाप्नोति कौ. त. ३।६
प्रज्ञया सत्यसङ्कल्पं (आप्नोति) कौ.त. ३।२
प्रज्ञया हस्तौ समारुह्य हस्ताभ्यां
सर्वाणि कर्माण्याप्नोति कौ. त. ३।६
प्रज्ञया हि विपश्यति कौ. त. १।५
प्रज्ञयैव धियं समारुह्य प्रज्ञयैव धियो
विज्ञातव्यं कामानाप्नोति कौ. त. ३।६
प्रज्ञयोपस्थं समारुह्योपस्थेनानन्दं रतिं
प्रजातिमाप्नोति कौ. त. ३।६
प्रज्ञा च यस्मात्प्रसृता पुराणी
[शाण्डिल्यो. २।२।३+ श्वेताश्व.४।१८
प्रज्ञा च तस्याः प्रसृता परा सा गुह्यका. ६१
प्रज्ञातोऽहंप्रशान्तोऽहंप्रकाशःपरमेश्वरः।
एकधा चिन्त्यमानोऽहंद्वैताद्वैतविलक्षणः ब्र.वि. १०१
प्रज्ञानघन एवानन्दमयो ह्यात्मा-
ऽऽनन्दभुक् चेतोमुखः प्राज्ञस्तृतीयः
पादः [ग. शो. १।३+५।६+ रामो. ता.२।३
प्रज्ञानघन एवायं नृसिंहो. ८।५
(न)प्रज्ञानघनमदृश्यमव्यवहार्यमग्राह्यम-
लक्षणमचिन्त्यमव्यपदेश्यमेकात्म-
प्रत्ययसारं प्रपञ्चोपशमं शान्तं
शिवमद्वैतं चतुर्थं मन्यन्ते रामो. २।४
प्रज्ञानघनमानन्दं ब्रह्मास्मीति विभावयेत् अध्युप. ६१
प्रज्ञानघनमानन्दं यः पश्यति स पश्यति जा.द.४।६०
' प्रज्ञानमानन्दं ब्रह्म ' इत्यादि-
वाक्यविचारः मठाम्ना. ४

प्रज्ञानमेव तद्ब्रह्म सत्यप्रज्ञानलक्षणम् ।
एवंब्रह्मपरिज्ञानादेव मर्त्योऽमृतो भवेत् वराहो. २।१९
प्रज्ञानं ते मयि जुहोम्यसौ स्वाहा कौ. त.२।४
प्रज्ञानं ब्रह्म [२ऐत.५।३+शु.र.२।१+ आ. प्र. १
प्रज्ञानं ब्रह्म मय्यपि शु. र. ३।२
प्रज्ञानं ब्रह्मेति वा अहं ब्रह्मास्मीति वा
भाष्यते बह्वृचो. ४
प्रज्ञानादिमहावाक्यरहस्यादिकलेवरम्।
विकलेवरकैवल्यं त्रिपाद्राममहं भजे शुकर.शीर्षकं
प्रज्ञा नाम देवतावरोधिनीत्सामेऽमुष्मा-
दिदमवरुन्धां तस्यै स्वाहा कौ. त. २।३
प्रज्ञानेत्रो लोकः, प्रज्ञा प्रतिष्ठा,
प्रज्ञानं ब्रह्म [२ऐत.५।३+ आ. प्र. १
प्रज्ञानेनैनमाप्नुयात् ना.प. ९।१९
प्रज्ञा प्रतिष्ठा तन्तूनामिष्टापूर्तैः परायणम् इतिहा. ६
प्रज्ञामयोदेवतामयोब्रह्ममयोऽमृतमयः
सम्भूय देवता अप्येति १ऐत. २।४।३
प्रज्ञामात्रा न स्युर्न भूतमात्राः स्युः कौ. त. ३।८
प्रज्ञामात्राः प्राणे अर्पिताः कौ. त. ३।९
प्रज्ञारूपा हि पश्यन्ती तुरीयस्य
परा मता गान्धर्वो. १
प्रज्ञावादांश्च भाषसे भ. गी. २।११
प्रज्ञेत्येनदुपासीत बृह. ४।१।२
प्रज्ञैषा विद्या जगत्सर्वमात्मा नृसिंहो. ९।१
प्रज्ञैवास्या एकमङ्गमुदूढम् कौ.त. ३।५।१
प्रणतः सर्वदा तिष्ठेत् सर्वजीवेषु भोगतः यो. चू. ७२
प्रणम्य शिरसा देवं भ.गी.११।१४
प्रणय उपवीतम् परब्र. ६
प्रणव इत्येवं ह्याहोद्गीथः मैत्रा. ६।४
प्रणवत्वात्प्रकृतिरिति वदन्ति
ब्रह्मवादिनः सीतो. ५
प्रणवप्रकृतिरूपत्वात् सा सीता
प्रकृतिरुच्यते सीतो. १
प्रणवमेव परं ब्रह्मात्मप्रकाशं शून्यं
जानन्तस्तत्रैव परिसमाप्तास्तस्मा-
द्देवानां व्रतमाचरन्नोङ्कारे परे
ब्रह्मणि पर्यवसितो भवेत् नृसिंहो. ६।३
प्रणवरूपस्यास्य परमात्मनोऽङ्गानि
जानीते ग.शो. ५।१

प्रणवस्य ध्वनिस्तद्वत्तदग्रे ब्रह्म चोच्यते यो. चू. ८०
प्रणवस्वरूपं लिङ्गं ब्रह्मलिङ्गम् लिङ्गो. २
प्रणवहंसशिखोपवीतित्वमवलम्ब्य मोक्षसाधनं कुर्यात् परब्र. २२
प्रणवहंसः परं ब्रह्म । न प्राणहंसः परब्र. २
प्रणवहंसान्तर्ध्यानप्रकृतिं विना न मुक्तिः पा. ब्र. ४
प्रणवहंसोनादत्रिवृत्सूत्रं स्वहृदि चैतन्ये तिष्ठति त्रिविधं ब्रह्म परब्र. ७
प्रणवं ब्रह्मविष्णुशिवात्मकं... सत्त्वरजस्तमःस्वरूपं सत्यत्रेताद्वापरानुगीतम् राधो. २।२
प्रणवं ब्रह्मसूत्रं ब्रह्मयज्ञमयम् पा. ब्र. ३
प्रणवं सावित्रीं यजुर्लक्ष्मीं नृसिंहगायत्रीमित्यङ्गानि जानीयाद्यो जानीते सोऽमृतत्वं च गच्छति नृ. पू. ४।१
प्रणवं हीश्वरं विद्यात्सर्वस्य हृदि संस्थितम् आगम.२८
प्रणवः सर्वभूतेषु भ.गी. ७।८
प्रणवाख्यं प्रणेतारं नामरूपं विपरमिदं ... पुनः पञ्चधा ज्ञेयं निहितं गुहायाम् मैत्रा. ६।४
प्रणवात्प्रभवो ब्रह्मा प्रणवात्प्रभवो हरिः यो. चू. ७६
प्रणवात्प्रभवो रुद्रः प्रणवो हि परो भवेत् यो. चू. ७७
प्रणवात्मकं ब्रह्म, प्रणवात्मकेवोक्तं ब्रह्म त्रि.म.ना.१।३
प्रणवात्मकत्वेन देहत्यागं करोति यः सोऽवधूतः स कृतकृत्यः तुरीया. ३
प्रणवात्मिकाभूमिका अकारोकारमकारार्धमात्रात्मिका वराहो. ४।१
प्रणवाद्यखिलमन्त्रात्मकं ब्रह्म त्रि.म.ना.१।२
प्रणवानामयुतं जप्तं भवति [ब्र.शि.१६+ पैङ्गलो. ४।२४
[महो. ६।८३+ तारसा. ३।९+ चतुर्वे. ७
प्रणवान्तर्वर्ती हंसो ब्रह्मसूत्रम् पा. ब्र. ३
प्रणवेन नियुक्तेन भिक्षुयुक्तेन बुद्धिमान् । मूलाधारस्य विप्रेन्द्र मध्ये तं तु निरोधयेत् जा.द. ६।४१
प्रणवेन विसृज्याथ सततं प्रणवेनाभिमन्त्रितयोगेन तु तेनैव दिग्बन्धनं कारयेत् यू.जा. ४।१
प्रणवेन शिखामुत्कृष्य यज्ञोपवीतं छित्त्वा...तत्त्वमस्यादिवाक्यार्थस्वरूपानुसन्धानं कुर्वन्नुदीचीं दिशं गच्छेत् प. हं. प. ५
प्रणवेनाहरेद्विद्वान् बृहतो वटकानथ । अणोरणीयानिति हि मन्त्रेण च विचक्षणः बृ.जा. ३।२९
प्रणवे नित्ययुक्तस्य न भयं विद्यते आगम. २५
प्रणवेनैव तस्मिन्नवस्थिताः नृसिंहो. ६।२
प्रणवो जायते पुरुषोत्तमात् सि. वि. २
प्रणवो जीवः परब्र. २
प्रणवोद्गीथवपुषे महाश्वशिरसे नमः त्रि.म.ना.७।१०
प्रणवो धनुः शरो ह्यात्मा ब्रह्म तल्लक्ष्यमुच्यते [मुं.उ. २।२।४+ ध्या.बिं. १४
प्रणवो ब्रह्म निर्भयम् आगम. २५
प्रणवो हि प्रकाशते यो.चू. ७८
प्रणवो ह्यपरं ब्रह्म प्रणवश्च परः स्मृतः आगम. २६
प्रणश्यति चित्तं तथाऽऽश्रयेण सहैवं मैत्रा. ६।२७
प्रणोदेवीसरस्वतीवाजेभिर्वाजिनीवती सरस्व. ६
[ऋ. मं. ६।६१।४+ तै.सं.१।८।२२
प्रतद्विष्णुस्तवते वीर्याय (वीर्येण) मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः [नृ.पू.२।९+ना.पू.ता.४।७
[ऋ. मं. १।१५४।२+ वा.सं. ५।२०
प्रतद्वोचे अमृतं नु विद्वान् महाना.२।४
प्रतर्दन वरं ते ददानि कौ.त. ३।१
प्रतर्दनो ह वै दैवोदासिरिन्द्रस्य प्रियं धामोपजगाम कौ.त. ३।१
प्रतिग्रहेषु दारिद्र्यं दानं निष्फलमेव च ।...स्वाध्यायैर्मृत्युमाप्नुयात् इतिहा. ४२
प्रतिजाने प्रियोऽसि मे भ.गी.१८।६५
(स होवाच) प्रतिज्ञातो म एष वरः यां तु कुमारस्यान्ते वाचमभाषथास्तां मे ब्रूहीति बृह.६।२।५
प्रतितिष्ठति स मे प्रतितिष्ठति दुर्गे, य एवं वेद बृह. ६।१।२,३
प्रतिपदिनतोऽकाले अमावास्या तथैव च । पौर्णमास्यां स्थिरीकुर्यात्स च पन्था हि नान्यथा योगकुं.३।२

प्रतिपद्यते स्वर्गं लोकं य एवमेवं वेद ब्रह्मपुरुषान्स्वर्गस्य लोकस्य द्वारपान्वेद — छांदो.३।१३।६
प्रतिबिम्बन्ति सरसीव तटद्रुमाः — अ. पू. ४।७१
प्रतिबिम्बा एव जीवा इति कथ्यन्ते — त्रि.म.ना.४।९
प्रतिबुद्धः सर्वविदिति — प्रश्नो. १
प्रतिबोधविदितं मतममृतत्वं हि विन्दते — केनो.२।४
प्रतिबोधविदितं मतममृतत्वं विदन्ते (मा. पा.) — केनो. २।४
प्रतिभासत एवेदं न जगत्परमार्थतः। ज्ञानदृष्टौ प्रसन्नायां प्रबोधविततोदये — महो.५।१०८
प्रतिमुञ्चस्व स्वां पुरम् — आरुणो.१
प्रतियोगिविनिर्मुक्तं तुर्यतुर्यमहं महः — नृ.पू.शीर्षकं
प्रतियोगिविनिर्मुक्तं श्रीरामपदमाश्रये — रामर.शीर्षकं
प्रतिरूप इति वा अहमेतमुपास इति स य एतमेवमुपास्ते प्रतिरूपꣳ हैवैनमुपगच्छति, ना प्रतिरूपमथो प्रतिरूपोऽस्माज्जायते — बृह. २।१।८
प्रतिरूप इति वा अहमेतमुपास इति स यो हैतमेवमुपास्ते प्रतिरूपो हैवास्य प्रजायामाजायतेनातिप्रतिरूपः — कौ.त.४।१०
प्रतिलोमरूपमेव स्याद्यत्क्षत्रियो ब्राह्मणमुपनयीत — कौ.त. ४।१८
प्रतिलोमं चैतद्यद्ब्राह्मणः क्षत्रियमुपेयाद्ब्रह्म मे वक्ष्यतीति — बृह. २।१।१५
प्रतिलोमꣳ शरबर्हिस्तीर्त्वा तस्मिन्नेताः शरभृष्टीः प्रतिलोमाः सर्पिषाक्ता जुहुयात् — बृह. ६।४।१२
प्रतिवातेऽनुवाते वा न तिष्ठेद्गुरुणा सह — शिवो. ७।१५
प्रतिवेशोऽसि प्र मा पाहि प्र मा पद्यस्व — तै.उ.१।४।७
प्रतिषिद्धानि चैतानि सेवमानो व्रजेद्वधः (सन्यासी) — १सं.सो.२।८९
प्रतिष्ठा च मे भूयात् — चित्यु.७।१
प्रतिष्ठायै स्वाहेत्यग्नावाज्यस्य हुत्वा मन्थे सम्पातमवनयेत् — छांदो. ५।२।५
प्रतिष्ठावान् भवति — तैत्ति.३।१०।३
प्रतिष्ठा वेदाः सर्वाङ्गाणि, सत्यमायतनम् — केनो. ४।८
प्रतिष्ठा सर्वभूतानां प्रज्ञानघनलक्षणः। तद्विद्याविषयं ब्रह्म सत्यज्ञानसुखाद्वयम् — अ.पू. ४।२७
प्रतिष्ठा सर्वभूतानां प्रज्ञानघनलक्षणः — कठरु. ११
प्रतिष्ठा सूकरीविष्ठासमा गीता महर्षिभिः... तस्मादेनां परित्यज्य कीटवत्पर्यटेद्यतिः — ना.प.५।१९
प्रतिष्ठा ह वा एषा, यत् प्रणवः — शौनको. ४।५
प्रतिष्ठां वयं लोकꣳ सामाभिसꣳस्थापयामः प्रतिष्ठासꣳस्ताव ꣳहि सामेति — छांदो. १।८।७
प्रतिष्ठां वेद प्रति ह तिष्ठति, अस्मिꣳश्च लोकेऽमुष्मिꣳश्च चक्षुर्वाव प्रतिष्ठा — छांदो. ५।१।३
प्रतिष्ठित इव ह्येवं लोकः — संहितो. ४।२
प्रतिष्ठितोऽन्ने हृदयं सन्निधाय — मुण्ड. २।२।७
प्रतिष्ठितोऽन्यथमाकान-(नन्यथ) मानो...(मा.पा.)[छां.उ.७।४।२+ — ७।५।२
(अथ) प्रतिसृप्याञ्जलौ मन्थमाधाय जपत्यमो नामास्यमा हि ते सर्वमिदꣳ स हि ज्येष्ठः श्रेष्ठो राजाधिपतिः — छांदो.५।२।६
प्रतिहर्तर्या देवता प्रतिहारमन्वायत्ता.. तां चेदविद्वान्प्रहरिष्यसि मूर्धा ते विपतिष्यति — छां.१।१०।११
प्रतिहास्मै मरुतः प्राणानन्दधति — बह्वृ. २२
प्रतीची दिक् प्रत्यञ्चः प्राणाः — बृह. ४।२।४
प्रतीच्यामिन्द्रः सन्नताङ्ग उपास्ते — भस्मजा.२।११
प्रतीच्योऽन्याः [नद्यः] यां यां च दिशमनु.. [स्यन्दन्ते] — बृह. ३।८।९
प्रतीच्यो यां यां च..वा अक्षरस्य(मा.पा.) — बृ.उ. ३।८।९
प्रतीतिमंत्रयोगाच्च जायते पश्चिमेपथि — यो.शि.१।१२२
प्र ते ब्रवीमि तदु मे निबोध — कठो. १।१४
प्रत्नोषि कमीड्यो अध्वरेषु सनाच्च होता नव्यश्च सत्सि[महाना.६।१८+ — वनदु. ११९
प्रत्यक्षदैवतं भानुः परोक्षं सर्वदेवताः — सूर्यता.१।१०
प्रत्यक्षमादिक्षान्तैर्वर्णैर्भावयेत् (मालां) — अ. मा. ३
प्रत्यक्षफलदं देहे संक्षेपाच्छृणु गौतम — म. शि. ५३
प्रत्यक्षरमुभयतो माया लक्ष्मीश्च भवति — ग. पू. २।२
प्रत्यक्षाकारं भस्म — भ.जी. ५।२

प्रत्यगभिन्नपरोऽहं विध्वस्ताशेषविधिनिषेधोऽहम् आ. प्र. ३
प्रत्यगभिन्नं ब्रह्मैवावशिष्यत इति पैङ्गलो.२।१०
प्रत्यगात्मानमज्ञानमायाशक्तेश्च साक्षिणम् । एकं ब्रह्माहमस्मीति ब्रह्मैव भवति स्वयम् कठरु.१५
प्रत्यगात्मा परं ज्योतिर्माया सा तु महत्तमः पा.ब्र.२१
प्रत्यगात्मा परात्मा माया चेति कथं.. सर्वसारो. १
प्रत्यगानन्दरूपात्मा मूर्ध्नि स्थाने परे पदे । अनन्तशक्तिसंयुक्तो जगद्रूपेण भासते त्रि. ब्रा. २।९
प्रत्यगानन्दं ब्रह्मपुरुषं प्रणवस्वरूपम् । अकार उकारो मकार इति नारा. ४
प्रत्यगेकरसं पूर्णमनन्तं सर्वतोमुखम् अध्यात्मो.६१
प्रत्यग्दृष्टिर्निमेषः त्रि.म.ना. ४।६
प्रत्यग्दृष्ट्यात्मस्वरूपचिन्तनमेवोन्मेषः त्रि.म.ना.४।६
प्रत्यग्धातुर्नात्र संशीतिरस्ति मैत्रे. १।१६
प्रत्यङ्वाक् प्राङ्गितरौ च नेह.. बा.मं. ६
प्रत्यङ् जनास्तिष्ठति सञ्चुकोचान्तकाले [श्वेताश्व. ३।२+ बटुको. २२
प्रत्यङ् जनास्तिष्ठति सर्वतोमुखः श्वेता. २।१६
प्रत्यङ्मुखस्तिष्ठति विश्वतोमुखः महाना. २।१
प्रत्यवायो न विद्यते भ.गी. ९।२
प्रत्याहाराद्विपक्कैन जायते धारणा शुभा यो. चू.१११
प्रत्याहारस्तथा ध्यानं प्राणायामोऽथ धारणा । तर्कश्चैव समाधिश्च षडङ्गो योग उच्यते अ. ना. ६
(अथ) प्रत्याहारः, स पञ्चविधः शांडि. १।८।१
प्रत्येकं सप्तविंशतिधा भिन्नत्वेनेच्छाज्ञानक्रियात्मकब्रह्मग्रन्थिमद्रसतन्तुब्रह्मनाडी ब्रह्मसूत्रम् भावनो. ८
प्रत्येवास्याहुतयस्तिष्ठन्त्यथो प्रतिष्ठित्यै महाना.१०।१३
प्रत्यौहतामश्विना मृत्युमस्मद्देवानामग्ने भिषजा शचीभिः महाना.१३।१०
(ततः) प्रथमपादादुग्ररूपो देवः प्रादुरभूत् अव्यक्तो. ७
प्रथममाग्नेयं... चतुर्विंशं ब्राह्ममिति प्रत्यक्षरं दैवतानि गायत्रीर. ७
प्रथममाग्नेयं...द्विव्यं विंशम् । दिग्देवतानि चत्वार्यक्षराणि सन्ध्यो. २१
प्रथमरूपः पृथिवीरूपो भवति ना.पू.ता.१।१
प्रथमस्तप एव (धर्मस्कन्धः) छां. २।२३।१
प्रथमं कामस्ततः शक्तिस्तदनु तुरीयं द्वावेतौ परेतानि पञ्चाक्षराणि भवन्ति कामराज.१
प्रथमं चेतनं यत्स्यादनाख्यं चेतनं... चितः...बीजजाग्रत्तदुच्यते महो. ५।१०
प्रथमं तु ललाटके...द्वादशं कण्ठपृष्ठे मोक्षं देहि शिरसि ऊर्ध्वपुं. ६
प्रथमं निस्सृता दृष्टिः संलग्ना यत्र कुत्रचित् । स्थिरीभूता च तत्रैव विनश्यति शनैः शनैः अमन. २।६५
प्रथमं प्रथमेन द्वितीयं द्वितीयेन तृतीयं तृतीयेन चतुर्थं चतुर्थेन पञ्चमं पञ्चमेन षष्ठं षष्ठेन प्रत्यक्षरमुभयतो माया लक्ष्मीश्च भवति ग. पू. २।२
प्रथमं प्रथमेन संयुज्यते, द्वितीयं द्वितीयेन तृतीयं तृतीयेन चतुर्थं चतुर्थेन पञ्चमं पञ्चमेन नृ. पू. २।२
प्रथमं ब्रह्मचक्रं स्यात्त्रिरावृत्तं भगाकृति योगरा. ५
प्रथमं यः पिबेदृग्वेदः प्रीणातु आचम. ४
प्रथमं पृथिवीतत्त्वं जलतत्त्वं द्वितीयकम् । तेजस्तत्त्वं तृतीयं स्याद्वायुतत्त्वं चतुर्थकम् । आकाशं पञ्चमं तत्त्वं मनः षष्ठमुदीरितम् । सप्तमं परमं तत्त्वं यो जानाति स मोक्षभाक् अमन. १।१२
प्रथमं वासिष्ठं......चतुर्विंशमाङ्गिरसं वैश्वामित्रमिति प्रत्यक्षराणामृषयो भवन्ति गायत्रीर. ७
प्रथमं सत्यवसुसंज्ञकान् विश्वान्देवान् ...सर्वत्र युग्मकृत्या ब्राह्मणानर्चयेत् ना.प. ४।३९
प्रथमा भक्तिसुन्दरी प्रकटिता । पश्चान्मायादासी प्रकटिता सामर. २
प्रथमभूमिकैवोक्ता मुमुक्षुत्वप्रदायिनी अ. पू. ५।८१
प्रथमाभ्यासकाले तु विघ्नाः स्युः १ यो.त. ३०
प्रथमायां तु मात्रायां यदि प्राणैर्वियुज्यते । भरते वर्षराजाऽसौ सार्वभौमः प्रजायते ना. बि. १२

प्रथमारक्तपीतामहद्ब्रह्मदैवत्या (मात्रा) अ.शिखो. १
प्रथमावरणे मित्रादयो द्वादशमन्त्राद्याः सूर्यता. ५।१
प्रथमा शब्दब्रह्ममयी स्वाध्यायकाले
 प्रसन्ना उद्भावनकरी सात्मिका सीतो. ३
प्रथमे चिञ्चिणीगात्रं द्वितीये गात्रभंजनम्।
 तृतीये खेदनं याति चतुर्थे कम्पते
 शिरः ॥ पञ्चमे स्रवते तालु षष्ठेऽमृतनि-
 षेवणम् । सप्तमे गूढविज्ञानं परावाचा
 तथाऽष्टमे ॥ अदृयं नवमे देहं दिव्यं
 चक्षुस्तथामलम् । दशमे परमं ब्रह्म
 भवेद्ब्रह्मात्मसन्निधौ (१०नादफलानि) हंसो.८-१०
प्रथमेन तु पिण्डेन कलानां तस्य सम्भवः पिण्डो. ४
प्रथमे दिवसे कार्यं कुम्भकानां चतुष्टयं योगकुं.१।५४
(ॐ) प्रथमे पश्चिमाम्नायाः
 शारदामठः कीटवारीसंप्रदायः मठाम्ना. ३
प्रथमोत्तमे अक्षरे सत्यं मध्यतोऽनृतं
 तदेतदमृतमुभयतः सत्येन परि-
 गृहीतं सत्यभूयमेव भवति बृह. ५।५।१
प्रथमो मूलबन्धस्तु द्वितीयोड्डीयनाभिधः
 (कुम्भकः) [योगकुं. १।४१+ यो.शि.१।१०३
प्रथमौ द्वावहङ्कारावङ्गीकृत्वा त्वलौ-
 किकौ । तृतीयाऽहङ्कृतिस्त्याज्या
 लौकिकी दुःखदायिनी महो. ५।९५
प्रथितः पुरुषोत्तमः भ.गी.१५।१८
प्रदक्षिणमावृत्त्यैतचैतद्यानवेक्षमाणाः
 प्रत्यायन्ति कठरु. २
प्रदक्षिणात्रयं कृत्वा शिवरूपमिति स्फुटम् १ बिल्वो. ८
प्रदद्याच्च गवां हितम् शिवो.७।९२
प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रियः भ.गी. १।४१
प्रद्युम्नमग्नौ वाय्वंशे सङ्कर्षणमतः परम्।
 व्योमांशे परमात्मानं वासुदेवं सदा
 स्मरेत् त्रि.ब्रा.२।१४४
प्रद्विषन्तोऽभ्यसूयकाः भ.गी.१६।१८
प्रधानक्षेत्रज्ञपतिर्गुणेशः संसारमोक्ष-
 स्थितिबन्धहेतुः [श्वेता.६।१६+ भवसं.२।४६
प्रधानं प्रकृतिः शक्तिर्नित्या चाविकृति-
 स्तथा । एतानि तस्या नामानि
 विष्णुमाश्रित्य या स्थिता भवसं.२।१४

प्रधानाः प्राणवाहिन्यो भूयस्तासु
 दश स्मृताः यो. चू. १६
प्रनष्टस्ते धनञ्जय (मोहः) १८।७२
प्र नूनं ब्रह्मणस्पतिर्मन्त्रं वदत्युक्थ्यं नृ.पू. २।१३
प्रध्यायितव्यं सर्वमिदं अ.शिखो. ३
प्रपञ्चमखिलं यस्तु ज्ञानाग्नौ जुहुया-
 द्यतिः । आत्मन्यग्नीन्समारोप्य
 सोऽग्निहोत्री महायतिः १सं.सो.२।१००
प्रपञ्चमुक्तचित्तोऽस्मि प्रपञ्चरहितो-
 ऽस्म्यहम् मैत्रे. ३।२०
प्रपञ्चलयः सम्पद्यते प्रपञ्चस्य मनः-
 कल्पितत्वात् मं.ब्रा.२।६
प्रपञ्चवृत्तिपरित्यज्यजीवन्मुक्तोभवेत् सं.सो.२।७९
प्रपञ्चावाङ्मुखः स्वरूपानुसन्धानेन ना.प.५।५४
प्रपञ्चे यदि विद्येत (द्वैतं) निवर्तेत
 न संशयः म.वा.र. ४
प्रपञ्चोऽपि द्विविधः, विद्याप्रपञ्च-
 श्चाविद्याप्रपञ्चश्चेति त्रि.म.ना.३।२
प्रपञ्चोपशमं शिवम् ना.प.८।२३
प्रपञ्चो यदि वक्तव्यः सोऽपि शब्द-
 विवर्जितः ते.बिं.उ.१।२१
प्रपञ्चो यदि विद्येत निवर्तेत न संशयः आगम. १७
(अहो) प्रपञ्चोऽयमनादिसिद्धो भवति सामर.१७
प्रपदाश्च स्फिचश्चैव सर्वाङ्गानि प्रचक्षते गुह्यका.२२
प्रपद्यन्ते नराधमाः भ.गी.७।१५
प्रपद्यन्तेऽन्यदेवताः भ.गी.७।२०
प्रपद्ये शरणं देवीं दुंदुर्गे दुरितं हर देव्यु.२३
प्रपश्यद्भिर्जनार्दन भ.गी.१।३९
प्र पूर्व्ये मनसा वन्दमानः चित्यु.१५।३
प्र प्र यज्ञपतिं तिर चित्यु.११।१२
प्रबुद्धबुद्धेः प्रक्षीणभोगेच्छस्य निरा-
 शिषः । नास्त्यविद्यामलमिति
 प्राज्ञस्तूपदिशेद्गुरुः महो. ५।१०६
प्रबुद्धा यत्र ते, विद्वान्सुषुप्तिं याति
 योगिराट् याज्ञव. २५
प्रबुद्धा वह्नियोगेन मनसा मरुता सह।
 सूचीवद्गात्रमादाय व्रजत्यूर्ध्वं
 सुषुम्नया यो. चू. ३८

प्रबुद्धोऽपि सुषुप्तिस्थः सुषिप्तिस्थः प्रबुद्धवान्	अ-पू.३।१२
प्रबुद्धोऽस्मि प्रबुद्धोऽस्मि दुष्टश्चोरोऽयमात्मनः । मनोनाम निहन्म्येनं मनसाऽस्मि चिरं हृतः	महो. ६।२७
प्रब्रूहि त्वं श्रद्दधानाय मह्यं-(मा.पा.)	कठो. १।१३
प्रभञ्जनमेवाप्येतिय:प्रभञ्जनमेवास्तमेति	सुबालो. ९।८
प्रभवत्यहरागमे	भ. गी. ८।१९
प्रभवन्त्यहरागमे	भ.गी.१८।१८
प्रभवन्त्युग्रकर्माणः	भ.गी. १६।९
प्रभवं न महर्षयः	भ.गी.१०।२
प्रभवः प्रलयस्तथा	भ.गी. ७।६
प्रभवः प्रलयं स्थानं	भ.गी.९।१८
प्रभवः सर्वभावानां सतामिति विनिश्चयः	आगम. ६
प्रभवाप्ययौ हि भूतानां [नृ.पू.४।२+	नृसिंहो. १।४
[+रामो. २।४+	ग.शो. १।४
प्रभामध्यगतं पीतं नानारत्नप्रवेष्टितम्	ध्या. बिं. २७
प्रभाशून्यं मनश्शून्यं बुद्धिशून्यं चिदात्मकम् । अतद्व्यावृत्तिरूपोऽसौ समाधिर्मुनिभावितः	मुक्तिको.२।५५
प्रभाशून्यं मनश्शून्यं बुद्धिशून्यं निरामयम् । सर्वशून्यं निराभासं समाधिरभिधीयते	सौभाग्य. २१
प्रभाऽस्मि शशिसूर्ययोः	भ. गी. ७।८
प्रभीमकर्मा तपसोपविद्धात्	ब्रा. मं. ४
प्रभुरस्मि पुरातनः	ब्र.वि. १००
प्रभुविमितं हिरण्मयं	छांदो.८।५।३
प्रभुं वरेण्यं पितरं महेशं यो ब्रह्माणं विदधाति तस्मै	शरभो. ३
प्रभुः प्रभूणामपिविघ्नराजः सिन्दूरवर्णः पुरुषः पुराणः	हेरम्बो. ९
प्रमंहमाणो बहुला श्रियम्	चित्यु. ११।७
प्रमाणप्रमेयादस्मान्मार्गाद्व्यतिरिक्तोऽयं मार्गो रसात्मकः	सामर. ३
प्रमाथि बलवद्दृढम्	भ.गी. ६।३४
प्रमादमोहौ तमसः	भ.गी.१४।१७
प्रमादात्पतितो भवति	भस्मजा. १।६
प्रमादात्त्यक्त्वा भस्मधारणं न गायत्रीं जपेत्	भस्मजा. १।६
प्रमादालस्यनिद्राभिः	भ.गी. १४।८
प्रमादिनो बहिश्चित्ताः पिशुनाः कलहोत्सुकाः । सन्न्यासिनोऽपि दृश्यन्ते देवसन्दूषिताशयाः	याज्ञव. ५
प्रमादेनापि नान्तर्देवसदनेपुरीषंकुर्यात्	भस्मजा. २।८
प्रमादे सञ्जयत्युत	भ.गी. १४।९
प्रमादो ब्रह्मनिष्ठायां न कर्तव्यः कदाचन । प्रमादो मृत्युरित्याहुर्विद्यायां ब्रह्मवादिनः	अध्यात्मो.१४
प्रमादो मोह एव च	भ.गी.१४।१३
प्रमेयोऽपि प्रमाणतां पृथक्त्वादुपेत्यात्मसम्बोधनार्थं	मैत्रा. ६।१४
प्रमोद उत्तरः पक्षः	तैत्ति. २।५
प्रयतः प्रणवोङ्कारं प्रणवं पुरुषोत्तमम् । ओङ्कारं प्रणवात्मानं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु	२शिवसं. २१
प्रयताञ्जलिः कवातियङ्ङिमभिमंत्रयेत	सहवै. २२
प्रयत्नाद्यतमानस्तु	भ.गी. ६।४५
प्रयागं हृत्सरोरुहे	जा.द. ४।४९
प्रयाणकाले च कथं	भ. गी. ८।२
प्रयाणकालेऽपि च मां	भ.गी. ७।३०
प्रयाणकाले मनसाऽचलेन	भ.गी. ८।१०
प्रयाता यान्ति तं कालं	भ.गी. ८।२३
प्रयाति शुद्धं परमात्मरूपम्	कैव. २४
प्रयासाय स्वाहा	चित्यु. २०।१
प्रयोजनार्थं रुद्रेण मूर्तिरेका त्रिधा कृता	रुद्रहृ. १५
प्रलपन्विसृजन्गृह्णन्नुन्मिषन्निमिषन्नपि [१ सं. सो. २।४७+	भ. गी. ५।९
प्रलयं याति देहभृत्	भ.गी.१४।१४
प्रलयादिकं श्रूयमाणत्वादनित्यत्वं वदन्त्यन्ये (प्रपञ्चस्य)	त्रि.म.ना.३।२
प्रलयान्तामुपाश्रिताः	भ.गी.१६।११
प्रलयावस्थायां विश्रमणार्थं भगवतो दक्षिणवक्षःस्थले श्रीवत्साकृतिर्भूत्वा विश्राम्यतीति सा योगशक्तिः	सीतो. २६
प्रलये न व्यथन्ति च	भ.गी. १४।२
प्रलये सर्वशून्यं भवति	त्रि.म.ना.३।४

प्रवक्ष्याम्यनसूयवे भ. गी. ९।१
प्रवक्षणा अभिदं पर्वतानां यत्सीमिन्द्रो अकरोद्नीकैः बा. मं. १०
प्रवचत९ सन्धानम् तै.उ. १।३।५
प्रवचनेन प्रशंसया व्युत्थानेन, तमेतं ब्राह्मणाः शुश्रुवांसोऽनूचाना उपलभन्ते सुबालो.९।१४
प्रवदन्ति न पण्डिताः भ. गी. ५।४
प्रवदन्त्यविपश्चितः भ. गी. २।४२
प्रवर्तन्ते विधानोक्ताः भ.गी. १७।२४
प्रवर्तन्तेऽशुचिव्रताः भ.गी. १६।१०
प्रवालमौक्तिकस्फटिकशङ्खरजताष्टापद-चन्दनपुत्रजीविकाब्जे रुद्राक्षाः अ. मा. २
प्रवाहतो नित्यत्वं वदन्ति केचन (प्रपञ्चस्य) त्रि.म.ना.३।२
प्रविचार्य चिरं ज्ञानं मुक्तोऽहमिति मन्यते यो.शि.१।५४
प्रविचार्य चिरं साधु स्वात्मनिश्चय-मासवान् महो. २।२
प्रविभक्तमनेकधा भ.गी. ११।१३
प्रविविक्तभुक् तैजसः [ग.शो.५।६+ रामो.ता. १।२
प्रविविक्तं तु तैजसम् आगम. ४
प्रविवेश ह चक्षुः बृह. ६।१।९
प्रविवेश ह मनः बृह. ६।१।११
प्रविवेश ह रेतः बृह. ६।१।१२
प्रविवेश ह वाक् बृह.६।१।८
प्रविवेश ह श्रोत्रम् बृह. ६।१।१०
प्रविष्णुरस्तु तवसस्तवीयान् [ऋक्सं. ना.पू.ता. ४।५
प्रवृत्तोऽश्वतरीरथो दासीनिष्को-ऽस्यन्नं पश्यसि छांदो.५।१३।२
प्रवृत्तिर्द्विविधा प्रोक्ता मार्जारी चैव वानरी १सं.सो.२।१०२
प्रवृत्तिलक्षणं कर्म ज्ञानं सन्यास-लक्षणम् ना.प.३।६१
प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च [भ.गी.१६।७+ १८।३०
प्रवृत्ते शस्त्रसम्पाते भ.गी. १।२०
प्रवृह्यधर्म्यमणुमेनमाप्य—(मा. पा.) कठो. २।१३
प्रबुद्धोऽस्मि प्रबुद्धोऽस्मि प्रसन्नोऽस्मि परोऽस्म्यहम् मैत्रे.उ. ३।१४
प्रवृह्य धर्म्यमणुमेतमाप्य कठो. २।१३
प्रवेपनाय मृत्यवे चित्यु. १५।१
प्रवेष्टुं च परंतप भ.गी.११।५४
प्रव्रजिष्यन्वा अरेऽयमस्मात्स्थानादस्मि बृह. ४।५।२
प्रव्रजेद्ब्रह्मचर्येण प्रव्रजेच्च गृहादपि। वनाद्वा प्रव्रजेद्विद्वानातुरे वाऽथ दुःखितः भवसं. १।२
प्रशस्तगोमयमाहरेत् बृ. जा.३।१
प्रशस्ते कर्मणि तथा भ.गी.१७।२६
प्रशान्तचापलं वीतशोकमस्तसमी-हितम्। मनो मम मुने शान्तं तेन जीवाम्यनामयः अ.पू. ५।६।२
प्रशान्तचित्ताय शमान्विताय मुण्ड.१।२।१३
प्रशान्तमनसं ह्येनं भ.गी. ६।२७
प्रशान्तवृत्तिकं चित्तं परमानन्ददाय-कम्। असम्प्रज्ञातनामाऽयं समाधि-र्योगिनां प्रियः मुक्तिको.२।५४
प्रशान्तसर्वसङ्कल्पं विगताखिल-कौतुकम्। विमताशेषसंरम्भं चिदात्मानं समाश्रय अ.पू. ५।२३
प्रशान्तात्मा विगतभीः भ.गी. ६।१४
प्रशान्तेन्द्रियसङ्घातः शुद्धबुद्धि-समन्वितः। प्राणापानौ ततो जित्वा मनःशत्रून् सुखी भवेत् अमन. २।८६
प्रशान्तोऽहमनन्तोऽहं परिपूर्णश्चिरन्तनः अध्यात्मो.६८
प्रशासितारं सर्वेषामणीयांसमणोरपि। रुक्माभं स्वप्नधीगम्यं विद्यात्तं पुरुषं परम् भवसं. २।४३
प्रश्न-मुण्डक-माण्डूक्याथर्वशिरो-ऽथर्व-शिखाबृहज्जाबालनृसिंहतापनीनारद-परिव्राजक-सीता-शरभ-महानारा-यण-रामरहस्यरामतापनीशांडिल्य-परमहंस-परिव्राजकान्नपूर्णा-सूर्यात्म-पाशुपत-परब्रह्म-त्रिपुरातपन-देवी-भावना-ब्रह्म-जाबाल-गणपतिमहा-वाक्य-गोपालतपन-कृष्ण-हयग्रीव-दत्तात्रेयगारुडानामथर्ववेदगतानां-मेकत्रिंशत्सङ्ख्याकानामुपनिषदां भद्रं कर्णेभिरिति शान्तिः मुक्तिको.१।५७

प्रसक्ताः कामभोगेषु भ.गी.१६।१६
प्रसङ्गेन फलाकाङ्क्षी भ.गी.१८।३४
प्रसन्नचेतसो ह्याशु भ.गी. २।६५
प्रसन्नवदनो जेता धृष्टयष्टकविभूषितः रा.पू.ता.४।८
प्रसन्नं सामवेदाख्यं नानाष्टकसमन्वितम् पं. ब्र. ६
प्रसन्नात्मात्मनि स्थित्वा सुखमक्षयमश्नुते मैत्रे. १।११
प्रसन्नात्माऽऽत्मनि स्थित्वा सुखम-
व्ययमश्नुते [मैत्रा. ६।२०+ ६।३४।४
प्रसन्नोऽस्मि परोऽस्म्यहम् मैत्रे. ३।१४
प्रसन्नोऽहं प्रसन्नोऽहं वरान्वरयेति ग.शो. ३।८
प्रसह्य सङ्कल्पपरम्पराणां सञ्छेदने
सन्ततसावधानः। आलम्बनाशाद-
पचीयमानं शनैः शनैः शान्ति-
मुपैति चेतः अमन. २।६६
प्रसादमधिगच्छति भ.गी. २।६४
प्रसादये त्वामहमीशमीड्यं भ.गी.११।४४
प्रसादाद्ब्रह्मणस्तस्य विष्णोरद्भुतकर्मणः ब्र. वि. २
प्रसादे सर्वदुःखानां भ.गी. २।६५
प्रसार्य भुवि पादौ तु दोर्भ्यामङ्गुष्ठ-
मादरात्। जानूपरि ललाटं तु
पश्चिमं तानमुच्यते त्रि.ब्रा.२।५०
प्रसासहिस्तपसा मा विचक्षे बा. मं. ४
प्रसीद देवेश जगन्निवास भ.गी.११।२५
प्रसीद परमानन्द प्रसीद परमेश्वर।
आधिव्याधिभुजङ्गेन दष्टं मा-
मुद्धर प्रभो गो. पू. ४।१३
प्रसूतेन वै यज्ञेन देवाः स्वर्गं लोकमायन् सहवै. १
प्रसूतो ह वै यज्ञोपवीतिनो यज्ञः सहवै. १
प्रस्तोतर्या देवता प्रस्तावमन्वायत्ता तां
चेदविद्वान् प्रस्तोष्यसि मूर्धा ते
विपतिष्यतीति [छांदो.१।१०।९+ ११।४
प्रस्थानं वृद्धाश्रमं वा गच्छेत् कठश्रु. २०
प्रस्वेदजनको यस्तु प्राणायामेषु
सोऽधमः। प्रस्वेदजननं यस्य प्राणा-
यामस्तु सोऽधमः [जा.द.६।१४+ त्रि.ब्रा.२।१०४
प्रस्वेदः प्रथमः पश्चात्कम्पनं मुनि-
पुङ्गव। उत्थानं च शरीरस्य चिह्न-
मेतज्जितेऽनिले जा.द. ६।४३
प्रस्वेदो जायते पूर्वं मर्दनं तेन कारयेत् १यो.त. ५१

प्र ह षोडशं वर्षं जीवति छांदो.३।१६।७
प्रहसन्निव भारत भ. गी. २।१०
प्रहितां वा अहमध्यात्मं सयोगं
निविष्टं वेद १ ऐत. १।५।२
प्रह्लादश्चास्मि दैत्यानां भ.गी.१०।३०
प्रह्लादिनी प्रज्ञा विश्वभद्रा विलासिनी गायत्रीर. ९
प्राकृतमन्नं त्रिगुणभेदपरिणामत्वान्मह-
दाद्यं विशेषान्तं लिङ्गम् मैत्रा.६।१०
प्राक्कर्मनिर्मितं सर्वमीश्वराधीनमेव वा अक्ष्युप. २५
प्राक्कर्मफलपाकेनावर्तान्तरकीटव-
द्विश्रान्तिं नैव गच्छति पैङ्गलो. २।९
प्राक्तनानि प्रयातानि गताः सर्ग-
परम्पराः। कोटयो ब्रह्मणां याता
भूपा नष्टाः परागवत् वराहो. ३।२२
प्राक्प्रत्यगात्मनो रूपं स्वाम्यं
दास्यमिति स्थितिः भवसं.२।५७
प्राक्शरीरविमोक्षणात् भ.गी. ५।२३
प्रागुत्पत्तेरजं सर्वं तेनासौ कृपणःस्मृतः अद्वैत. १
प्रागुदयान्निर्वर्त्यशौचादिकंततः स्नायात् भस्मजा.२।२
प्राग्दले पुण्यावृत्तिराग्नेय्यां निद्रालस्यौ ना.प. ६।५
प्राग्वोदग्वा ग्रामान्निष्क्रम्य सन्ध्यो. १
प्राङासीनः स्वाध्यायमधीयीत सहवै. १५
प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा बद्धशिखो
यज्ञोपवीती...त्रिराचामेत् आचम. १
प्राङ्मुखाश्च सुरा हव्यं पितरश्चाप्युद-
ङ्मुखाः। प्रतिगृह्णन्ति सम्बाध-
मग्निना ब्राह्मणेन च इतिहा. ५१
प्राङ्मुखोऽध्यापयेद्गुरुः शिवो. ७।६३
प्राचीदिक्कला प्रतीची दिक्कला दक्षिणा
दिक्कलोदीची दिक्कलैष वै सोम्य
चतुष्कलः पादो ब्रह्मणः प्रकाश-
वान्नाम छांदो. ४।५।२
प्राचीनयोग्य कं त्वमात्मानमुपास्स इति छां. ५।१३।१
प्राचीनशाल औपमन्यवः सत्ययज्ञः छां. ५।११।१
प्राचीमुदीचीं वा निवर्तयंश्चरेत पात्री
दण्डी युगमात्रावलोकी शाट्याय.१८
प्राजापत्यं आप्रयाणाद्गुरोरपरित्यागी आश्रमो. १
प्राजापत्यमासहस्रसंवत्सरान्तक्रतुनेति
(यजति) मैत्रा. ६।३६

प्राजापत्यं गृहस्थानां वि. पु.
(ततः) प्राजापत्यं रायस्पोषं गौपत्यं
यश्च एतद्रहस्यं सायम्प्रातर्ध्यायेदहोरात्रकृतं पापं नाशयति गोपीचं. ८
प्राजापत्यो हारुणिः सुपर्णेयः प्रजापतिं
पितरमुपससार महाना.१७।१
प्राज्ञरूपा हि पश्यन्ती तुरीयस्य परा मता गान्धर्वो. १
प्राज्ञस्त्वस्वप्ननिद्रया आगम.१४
प्राज्ञः कारणबद्धस्तु द्वौ तौ तुर्ये न
सिद्ध्यतः आगम.११
प्राज्ञः किञ्चन संवेत्ति तुर्यं तत्सर्वदृक् सदा मां.आगम.१२
प्राज्ञः प्रसन्नमधुरो दैन्यादपगताशयः अ.पू.२।३१
प्राज्ञात्मकस्तु भरतो मकाराक्षरसम्भवः । अर्धमात्रात्मको
रामो ब्रह्मानन्दैकविग्रहः रामो.ता.१।४
प्राज्ञात्मकोऽनिरुद्धोऽसौ मकाराक्षरसम्भवः । अर्धमात्रात्मकः कृष्णो
यस्मिन्विश्वं प्रतिष्ठितम् गोपालो.२।६
प्राज्ञास्तु पुरुषार्थेन पदमुत्तममागताः भवसं. १।४४
प्राज्ञेनात्मनापोज्झितो..न चैत्यपि
न श्वस(सि)त्यपि...शिवा
जिघत्सन्निति छाग. ६।३
प्राज्ञो मकार इत्येवं परिपश्येत्क्रमेण तु अक्ष्युप. ४७
प्राज्ञो मकारसम्भूता तार्तीया च
तृतीयका श्रीवि.ता.१।४
प्राज्ञोऽविच्छिन्नः पारमार्थिकः सुषुप्त्यभिमानीति प्राज्ञस्य नाम भवति पैङ्गलो. २।६
प्राञ्चः प्रत्यञ्चोऽहम् अशिर. १
प्राण आकाशो द्यौर्विद्युदिति छां. ४।१३।१
प्राण आचार्यः प्राणो ब्राह्मणः छां. ७।१५।१
प्राण आद्यो हृदि स्थाने अपानस्तु
गुदे । समानो नाभिदेशे तु
उदानः कण्ठमाश्रितः । व्यानः
सर्वेषु चाङ्गेषु व्याप्य तिष्ठति सर्वदा अ.ना. ३५
प्राण इति होवाच। सर्वाणि ह वा इमानि
भूतानि प्राणमेवाभिसंविशन्ति छां.१।११।५
प्राण इति प्राणविदो भूतानीति च
तद्विदः वैतथ्यप्र.२०

प्राण उक्थमित्येव विद्यात् १ऐत.१।४।६
(अथ ह) प्राण उत्क्रमिष्यन् यथा
महासुहयः सैन्धवः पड्वीशशङ्कून्
संवृहेदेवᳪ हैवेमान्प्राणान्संववर्ह बृह. ६।१।१३
प्राण उदक्रामत्तत्प्राण उत्क्रान्तेऽपद्यत १ऐत. १।४।४
प्राण उद्गाता (यज्ञस्य) महाना.१८।१
प्राण ऋच इत्येव विद्यात् १ऐत.२।२।११
प्राण एवं तद्भूत्वाऽवति बृह.१।५।१०
(अथ खलु) प्राण एव प्रज्ञात्मेदं
शरीरं परिगृह्योत्थापयति कौ. त. ३।३
प्राण एव ब्रह्मणश्चतुर्थः पादः छां. ३।१८।४
प्राण एव सम्राडिति होवाच बृह.४।१।२४
प्राण एवामृतम् ...
प्राण एवायतनमाकाशः प्रतिष्ठा बृह. ४।१।२
प्राणकर्माणि चापरे भ.गी.४।२७
प्राणक्षयसमीपस्थमपानोदयकोटिगम् । अपानप्राणयोरैक्यं
चिदात्मानं समाश्रय अ.पू.५।३०
प्राणदेवताश्चत्वारः परब्र. १
प्राणदेवतास्ताः सर्वा नाड्यः ब्रह्मो. १
प्राणन्तः प्राणेन [छांदो.५।१।८, ९,१०,११
[+बृ.उ.६।१।८,९,१०,११,१२
प्राणबन्धनᳪ हि सोम्य मनः छांदो.६।८।२
प्राणभृत्सु त्वेवाविस्तरामात्मा, तेषु हि
रसो दृश्यते १ऐत.३।२।२
प्राणमनूत्क्रामन्तᳪ सर्वे प्राणा
अनूत्क्रामन्ति बृह.४।४।२
प्राणमन्नेनाप्यायस्व । श्रद्धायामपाने
निविश्यामृतᳪ हुतम् महाना.१६।४
प्राणमभ्युज्जिहते सैषा देवता प्रस्तावमन्वायत्ता छांदो.१।११।५
प्राणमय इन्द्रियात्मा मनोमयः
सङ्कल्पात्मा सुबालो.५।१९
प्राणमयश्चक्षुर्मयः (आत्मा) बृह. ४।४।५
प्राणमुख्यत्वेन पञ्चविधोऽस्ति भावनो. ६
प्राणमेवाप्येति यः प्राणमेवास्तमेति सुबालो.९।२
प्राणमेवैतया करोति याज्ञव. १

प्राणयात्रानिमित्तं च व्यङ्गारे भुक्त-
बज्जने । काले प्रशस्ते वर्णानां
भिक्षार्थं पर्यटेद्गृहान् ना.प.५।२०
प्राणयात्रिकमात्रः स्यान्मात्रासङ्गा-
द्विनिर्गतः ना.प.५।१८
प्राणलिङ्गिनां शुद्धसिद्धिर्न भवति रुद्रोप. २
प्राणलिङ्गी शिवरूपः रुद्रोप. २
प्राणवत्वान्महेश्वरत्वाच्च शिवस्तदेव गुरुः रुद्रोप. ३
प्राणवायोस्तु संरोधात्प्राणायामस्तु
पठ्यते योगो.३०
प्राणश्च देहगो वायुरायामः कुम्भकःस्मृतः योगकुं.१।१९
प्राणश्च निवारयितव्यं च प्रश्नो.४।८
प्राणश्च मे भूयात् चित्यु.७।२
प्राणश्चित्तेन संयुक्तः परमात्मनि तिष्ठति जा.द.६।१७
प्राणसन्धारणार्थं यथोक्तकाले विमुक्तो
भैक्षमाचरन्नुदरमात्रसंग्रहः याज्ञव. ३
प्राणसन्धारणार्थं यथोक्तकाले विमुक्तो
भैक्षमाचरन् ... सन्न्यासेन
देहत्यागं करोति स परमहंसः जावा. ६
प्राणसन्धारणार्थं यथोक्तकाले करपात्रे-
णान्येन याचिताहारमाहरन्...
देहत्यागं करोति स कृतकृत्यः ना. प.३।८७
प्राणसंज्ञस्तथाऽपानः पूज्यः प्राण-
स्तयोर्मुने जा.द.४।२५
प्राणसंज्ञो मुनिश्रेष्ठ मूर्धानं प्राविशद्यदा ।
तदन्त्यं विषुवं प्रोक्तं जा.द.४।४४
प्राणसंयमनं चैव प्रत्याहारश्च धारणा ।
आत्मध्यानं समाधिश्च प्रोक्तान्य-
ङ्गानि वै क्रमात् ते.बिं. १।१६
प्राणसंयमनेनैव ज्ञानान्मुक्तो भविष्यति जा.द.६।१२
प्राणसंशितमसीति तत्रैते द्वे ऋचौ भवतः छांदो.३।१७।६
प्राणस्त उदक्रमिष्यद्यन्मां नागमिष्य इति छांदो.५।१४।२
प्राणस्तेजसा युक्त सहात्मना यथा-
संकल्पितं लोकं नयति प्रश्नो. ३।१०
प्राणस्तेजोमयोऽमृतमयः पुरुषोऽयमेव बृह.२।५।४
प्राणस्त्वं प्राप्य सर्वाणि भूतानि १ऐत.२।३।४
प्राणस्त्वा वशो ह्यस्यतीत्येनं ब्रूयात् २ऐत. १।४।१
प्राणस्त्वैष आत्मन इति होवाच छां. ५।१४।२
प्राणस्पन्दजये यत्नः कर्तव्यो
धीमतोत्तकैः अ.पू.४।८९
प्राणस्य प्राणमुत चक्षुषश्चक्षुरुत श्रोत्रस्य
श्रोत्रं मनसो ये मनो विदुः बृह.४।४।१८
प्राणस्य का गतिरित्यन्नमिति होवाच छांदो.१।८।४
प्राणस्य च मे प्राणो भूयात् चित्यु.७।३
प्राणस्य रूपं स्पर्शाः, अपानस्योष्माणः,
व्यानस्य स्वराः ३ऐत.२।५।१
प्राणस्य वै सम्राट्, कामाय याज्यं
याजयति बृह.४।१।३,३
प्राणस्य शोधयेन्मार्गं रेचपूरककुम्भकैः यो.शि.५।३७
प्राणस्य ह्यन्नपानमेता अपियन्ति १ऐत. ३।३।३
प्राणस्येदं वशेसर्वं त्रिदिवे यत्प्रतिष्ठितम् प्रश्नो.२।१३
प्राणस्यैतद्वशे सर्वं–(मा. पा.) प्रश्नो. २।१३
प्राणस्यैव सम्राट् कामाय बृह.४।१।३
प्राणस्योत्क्रमणासन्नकालस्त्वातुरसंज्ञकः ना.प.३।५
प्राणं गच्छ स्वाहेत्येवमेवैतदाह जावा. ४
प्राणं च हास्मै तदाकाशं चोचुः छां.४।१०।५
प्राणं चेदिडया पिबेन्नियमितं भूयो-
ऽन्यथा रेचयेत् ।...शुद्धा नाडिगणा
भवन्ति यमिनो मासद्वयादूर्ध्वतः यो.चू. ९८
प्राणं तदा वाचि जुहोति यावद्वै
पुरुषः प्राणिति कौ. त. २।५
प्राणं ते मयि जुहोम्यसौ स्वाहा कौ.त. २।४
प्राणं ते मयि दध इति पुत्रः कौ.त.२।१५
प्राणं देवा अनुप्राणन्ति । मनुष्याः
पशवश्च ये तैत्ति. २।३
प्राणं प्रपद्येऽमुनाऽमुनाऽमुना छांदो.३।१५।३
प्राणं प्रयन्त्यभिसंविशन्ति तैत्ति. ३।३
प्राणं प्रागिडया पिबेन्नियमितं भूयोन्य-
था रेचयेत्पीत्वा पिङ्गलया समीरण-
मथो बद्ध्वा त्यजेद्वामया । सूर्या-
चन्द्रमसोरनेन विधिनाऽभ्यासं
सदा तन्वतां शुद्धा नाडिगणा
भवन्ति यमिनां मासत्रयादूर्ध्वतः शांडि.१।७।१
प्राणं प्राणान्तं सर्वे प्राणा अनुप्राणन्ति कौ. त. ३।२
प्राणं प्राणः (गच्छति) कौ. त.२।१३
प्राणं मे त्वयि दधानीति पिता कौ.त.२।१५

प्राणं वा एते प्रस्कन्दन्ति ये दिवा रत्या संयुज्यन्ते	प्रश्नो.१।१३
प्राण१ सितमसीति तत्रैते ऋचौ भवतः–(मा. पा.)	छां. ३।१७।६
प्राणः क्षुधितोः प्रक्षत्रमत्रमाप्नोति	बृ.उ.५।१३।४
प्राणः पवमानेन, पवमानो विश्वैर्देवैः, विश्वेदेवाः स्वर्गेण लोकेन, स्वर्गो लोको ब्रह्मणा, सैषावरपरा संहिता	३ऐत. १।६।३
प्राणः प्रज्ञा	बृह. १।५।७
प्राणः प्रजानामुदयत्येष सूर्यः	प्रश्नो.१।८
प्राणः प्रसूतिर्भुवनस्य योनिर्व्याप्तं त्वया एकपदेन विश्वम्	एका. उ. ३
प्राणः प्राणेन याति प्राणः प्राणं ददाति प्राणाय ददाति प्राणोऽहं पिता प्राणो माता प्राणो भ्राता प्राणः स्वसा प्राण आचार्यः प्राणो ब्राह्मणः	छां.७।१५।१
प्राणः प्राविशत्तत्प्राणे प्रपन्न उदतिष्ठत्	१ऐत.१।४।६
प्राणः शरीरमन्नं न परिचक्षीत	तै.उ.३।११।१
प्राणः शरीरं परिरक्षति	सुबालो. ४।३
प्राणः शरीरादधिको द्वादशाङ्गुलमानतः	त्रि.ब्रा.२।५१
प्राणः सर्वाणि भूतानि	१ऐत. २।३।४
प्राणः साम	छांदो.१।७।१
प्राणः सामवेदः	बृह.१।५।५
प्राणः सूर्योऽग्निरथ वा पचत्यन्तरिदं वपुः	अ.पू.२।५९
प्राणः स्वरोऽन्नं या वाग्विराट्	छां. १।१३।२
प्राणा अह१ श्रेयसि व्यूदिरेऽह१ श्रेयानस्म्यह१ श्रेयानस्मीति	छांदो.५।१।६
प्राणा आदित्या इदं मे तृतीयसवनं	छां. ३।१६।६
प्राणा इत्येवाचक्षते	छां. ५।१।१५
प्राणा गुहाशयानिहिताः सप्त सप्त	महाना.८।२
प्राणाग्नय एवैतस्मिन् पुरे जाग्रति	प्रश्नो. ४।३
प्राणाङ्गनामा संस्पर्शो यः स पूरक उच्यते	अ. पू.५।२८
प्राणाच्छ्रद्धां खं वायुर्ज्योतिरापः पृथिवीन्द्रियम्	प्रश्नो. ६।४
प्राणात्प्राणो ब्रह्मेत्येव आहुः	बृ.उ.५।१२।१
प्राणादयस्तु पञ्चैव पञ्च शब्दादयस्तथा	वराहो.१।३
प्राणादयो वै पुनरेव तस्माद्भ्युच्चरन्तीह यथाक्रमेण [मैत्र्यु.६।२६+	६।३१
प्राणादि चतुर्दशवायुभेदा अन्नमयकोशे यदा वर्तन्ते तदा प्राणमयः कोश इत्युच्यते	सर्वसारो. ४
प्राणादिपञ्चकं तेषु प्रधानं तत्र च द्वयम्	त्रि.ब्रा.२।७८
प्राणादिपञ्चवायुश्च बीजं वर्णं च स्थानकम्	ध्या.बिं.९५
प्राणादिभिरनन्तैस्तु भावैरेतैर्विकल्पितः	वैतथ्य. १९
प्राणादिलिङ्गस्वरूपं गुरोर्लिङ्गम्	लिङ्गोप. २
प्राणादिस्पन्दनं वरम्	अ. पू. ४।४३
प्राणाद्यनिलसंशान्तौ युक्त्या ये पदमागताः । अनामयमनाद्यन्तं ते स्मृता योगयोगिनः	अ. पू. ५।५०
प्राणाद्याः पञ्च विख्याता नागाद्याः पञ्च वायवः	ध्या. बिं. ५७
प्राणाद्वा एष उदेति प्राणेऽस्तमेति तं देवाश्चक्रिरे धर्म१...	बृह.१।५।२३
प्राणाद्ध्येव खल्विमानि भूतानि जायन्ते	तैत्ति. ३।३
प्राणाद्वायुः, अक्षिणी निरभिद्येताम्	२ऐत.१।४
प्राणाद्वायुरजायत [ऋ.अ.८।४।१९=	चित्त्यु.१२।६ मं.१०।९०।१३
प्राणाद्वायुः (अजायत)	ग.शो.३।११
प्राणाधिपः सञ्चरति स्वकर्मभिः	श्वेताश्व.५।७
प्राणानवकीर्य याति कैवल्यम्	पैङ्गलो.४।५
प्राणानायम्य देशकालौ सङ्कीर्त्य	सूर्यता.१।८
प्राणानां ग्रन्थिरसि रुद्रो मा विशान्तकः । तेनान्नेनाप्यायस्व	महाना.१६।८
प्राणाना१ सङ्कॢप्त्यै मन्त्राः सङ्कल्पन्ते	छांदो. ७।४।२
प्राणानेतदाह तस्यासत ऋषयः सप्त तीर इति प्राणा वा ऋषयः	बृह.२।२।३
प्राणानेतदाह वागष्टमी ब्रह्मणा संविदानेति	बृह.२।२।३
प्राणान् प्रपीड्येह स युक्तचेष्टः क्षीणे प्राणे नासिकयोच्छ्वसीत । दुष्टाश्वयुक्तमिव वाहमेनं विद्वान्मनो धारयेताप्रमत्तः [श्वेताश्व. २।९+	भवसं.३।२६
प्राणान् प्राणेषु जुह्वति	भ.गी.४।३०
प्राणान्सर्वान्परमात्मनि प्रणामयतीत्येतस्मात्प्रणवः	अ.शिखो. १
प्राणान्सर्वान्प्रलीयत इति प्रलयः	अ.शिखो. १

प्राणान्सन्धारयेत्तस्मिन्नासाभ्यन्तर-चारिणः । भूत्वा तत्रायतप्राणः शनैरेव समभ्यसेत् योे.शि.६।७
प्राणान् सन्धारयेत्तस्मिन्नासाभ्यन्तर-चारिणः । भूत्वा तत्र गतप्राणः शनैरथ समुत्सृजेत् क्षुरिको. ५
प्राणापानगती रुद्ध्वा भ.गी.४।२९
प्राणापानयोरैक्यं कृत्वा धृतकुम्भको नासाग्रदर्शनदृढभावनया द्विकराङ्गुलिभिः षण्मुखीकरणेन प्रणवध्वनिं निशम्य मनस्तत्र लीनं भवति मं. ब्रा.२।४
प्राणायामव्यानोदानसमाननाग-कूर्मकृकरदेवदत्तधनञ्जया इति दश वायवः भावनो. ४
प्राणापानसमानोदानव्यानानाग-कूर्मकृकरदेवदत्तधनञ्जया एते दश वायवः सर्वासु नाडीषु चरन्ति शांडि. १।४।७
प्राणापानवशो जीवो ह्यधश्चोर्ध्वं च (प्र-) धावति [ध्या.बिं. ५८+ यो. चू. २८
प्राणापानव्यानोदानसमाना मे शुद्ध्यन्तां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासꣳ स्वाहा महाना.१४।७
प्राणापानव्यानोदानसमानाः प्राणवृत्तयः पैङ्गलो.२।३
प्राणापानसमाक्षिप्तस्तथा जीवो न विश्रमेत् यो.शि.६।५२
प्राणापानसमाक्षिप्तस्तद्वज्जीवो न विश्रमेत् ध्या. बिं.६०
प्राणापानसमाक्षिप्तस्तथा जीवोन तिष्ठति यो.चू.२७
प्राणापानसमानाख्या व्यानोदानौ च वायवः यो.चू. २२
प्राणापानसमायुक्तः भ.गी.१५।१४
प्राणापानसमायोगो ज्ञेयं योगचतुष्टयं यो.शि.१।१२८
प्राणापानसमायोगः प्राणायामो भवति शांडि.१।६।१
प्राणापानसमायोगाचंद्रसूर्यैकता भवेत् यो.शि.१।५६
प्राणापानादिचेष्टादि क्रियते व्यान-वायुना त्रि.ब्रा.२।८५
प्राणापानाभ्यां प्रतिलोमानुलोमाभ्यां... सच्चिदानन्दः परमात्माऽऽविर्भवति महावा. २
प्राणापानावजिरꣳ सञ्चरन्तौ चित्सु.१४।३
प्राणापानौ नादबिन्दू मूलबन्धेन चैकताम् । गत्वा योगस्य संसिद्धिं यच्छतो नात्र संशयः यो.त. १२१
प्राणापानौ व्रीहियवौ तपश्च मुंड.२।१।७
प्राणापानौ समानश्च उदानो व्यान एव च । नागः कूर्मश्च कृकरो देवदत्तो धनञ्जयः (१० प्राणाः) त्रि.ब्रा.२।७७
प्राणापानौ समौ कृत्वा भ.गी.५।२७
प्राणापानौ संविदानौ जहि तम् चित्सु. १४।३
प्राणा भूत्वा एकैकमेतानि सर्वाण्येवैतानि प्रज्ञापयन्ति कौ.त. ३।२
प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहाव्यानाय स्वाहाउदानाय स्वाहा प्रा.हो. १।११
प्राणाय स्वाहाऽपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा समानाय स्वाहोदानाय स्वाहेति पञ्चभिरभिजुहोति मैत्रा. ६।९
प्राणाय स्वाहा वसिष्ठायै स्वाहेत्यग्नौ हुत्वा मन्थे सꣳस्रवमवनयति बृह.६।३।२
प्राणायाम इति प्रोक्तो रेचपूरककुम्भकैः जा.द. ६।१
प्राणायामदृढाभ्यासैर्युक्त्या च गुरुदत्तया । आसनाशनयोगेन प्राणस्पन्दो निरुध्यते अ.पू.४।८७
प्राणायामद्विषट्केन प्रत्याहारः प्रकीर्तितः यो.चू.१११
प्राणायामनिरोधैश्च मन्त्रैर्द्वादशभिस्तथा । न तद्दादशमात्रास्तु ध्रुद्रातः प्रथमः स्मृतः योगो. ५
प्राणायामपरस्यास्य पुरुषस्य महात्मनः । देहश्चोत्तिष्ठते तेन किञ्चिज्ज्ञानाद्विमुक्तता जा.द.६।१७
प्राणायामसुतीक्ष्णेन मात्राधारेण योगवित् । वैराग्योपलघृष्टेन छित्वा तं तु न बध्यते क्षुरिको.२४
प्राणायामस्ततः कार्यो नित्यं सत्त्वस्थया धिया योगकुं.१।६२
प्राणायामस्तथाप्राणःप्राणस्यायामउच्यते योगो. ४
प्राणायामस्तथा ब्रह्मन्प्रत्याहारस्ततः परम् जा.द.१।५
प्राणायामं ततः कुर्यात्पद्मासनगतः स्वयम् १यो.त.३२
प्राणायामेन चित्तं तु शुद्धं भवति सुव्रत जा.द. ६।१६

प्राणायामेन युक्तस्य विप्रस्य नियता-
त्मनः । ...सत्यस्थं चैव जायते योगो. १३
प्राणायामेन युक्तेन सर्वरोगक्षयो भवेत्।
प्राणायामवियुक्तेभ्यः सर्वरोग-
समुद्भवः यो.चू.११६
प्राणायामैकनिष्ठस्य न किञ्चिदपि
दुर्लभम् जा.द. ६।२०
प्राणायामैर्दहेद्दोषान् धारणाभिश्च
किल्बिषम् । प्रत्याहारेण विषया-
न्ध्यानेनानीश्वरान्गुणान्[अ.ना.८+ योगो. १५
प्राणायामैर्वशीकृत्वा सर्वामिन्द्रिय-
वाहिनीम् । ततो युञ्जीत मेधावी
प्राणं च मनसा मुनिः दुर्वासो. २।१५
प्राणायामो भवेदेवंपातकेन्धनपावकः यो. चू.१०८
प्राणा रुद्रा इदं मे माध्यन्दिनं सवनं छांदो.३।१६।४
प्राणा वसव इदं मे प्रातस्सवनं छांदो.३।१६।२
प्राणा वा ऋषयः बृह. २।२।३
प्राणा वाव रुद्रा एते हीद९ सर्व९
रोदयन्ति छांदो.३।१६।३
प्राणा वाव वसव एते हीद९ सर्वं
वासयन्ति छांदो.३।१६।१
प्राणा वावादित्या एते हीदंसर्वमाददते छांदो.३।१६।५
प्राणाविरुद्धश्चरतिजीवस्तेन विना नहि त्रि.ब्रा.२।६२
प्राणा वै गयास्तत्प्राणा९स्तत्रे तद्य-
द्गया९स्तत्रे बृह.५।१४।४
प्राणा वै यशो विश्वरूपं बृह.२।२।३
प्राणा वै यशो वीर्यं तत्प्राणेषूत्क्रान्तेषु
शरीर९ श्वयितुमध्रियत तस्य शरीर
एव मन आसीत् बृह.१।२।६
प्राणा वै सत्यं तेषामेव सत्यम् बृह.२।१।२०
प्राणाश्चलन्तु तद्धर्मैः कामैर्वा हन्यतां
मनः । आनन्दबुद्धिपूर्णस्य मम
दुःखं कथं भवेत् आ.प्र.२१
प्राणास्तु रुद्रा विज्ञेया ह्यविमुक्तं
परं स्मृतम् दुर्वासो.२।११
प्राणा९स्त्वं भूमानमभिगायताद्बहवो
मे भविष्यन्तीति छांदो.१।५।४
प्राणांस्त्यक्त्वा धनानि च भ.गी.१।३३

प्राणिकर्मवशादेव पटो यद्वत्प्रसारितः
प्राणिकर्मक्षयात् पुनस्तिरोभावयति ।
तस्मिन्नेवाखिलं विश्वं सङ्कोचित-
पटवद्वर्तते पैङ्गलो.१।२
प्राणिनां देहमध्ये तु स्थितो हंसः
सदाच्युतः ब्र. वि. ६९
प्राणिनां देहमाश्रितः भ.गी.१५।१४
प्राणी भवति सर्वमायुरेति, ज्यो-
ग्जीवति,महान्प्रजया पशुभिर्भवति छांदो.२।११।२
प्राणेगते यथादेहःसुखंदुःखंनविन्दति ।
तथा चेत्प्राणयुक्तोऽपि स कैवल्या-
श्रमे वसेत् ना. प. ३।२७
प्राणे गलितसंवित्तौ तालूर्ध्वं
द्वादशान्तगे । अभ्यासादूर्ध्व-
रन्ध्रेण प्राणस्पन्दो निरुध्यते शांडि.१।७।३१
प्राणे तृप्यति चक्षुस्तृप्यति छांदो.५।१९।२
प्राणे त्वमसि सन्धाता ब्रह्मन् महाना.१७।१९
प्राणेन च स्वराख्येन प्रथिता
वैखरी पुनः यो.शि. ३।५
प्राणेन जातानि जीवन्ति तैत्ति. ३।३
प्राणेन रक्षन्नवरं कुलायं बहिष्कुलाया-
दमृतश्चरित्वा । स ईयतेऽमृतो
यत्र काम९ हिरण्मयः पुरुष
एक ह९सः बृह. ४।३।१२
प्राणेन सर्वान्गन्धानाप्नोति कौ. उ. ३।४
प्राणेन ह्येवामुष्मिँल्लोकेऽमृतत्वमाप्नोति कौ. उ. ३।२
(परमं पदमिति च) प्राणेन्द्रियाद्यन्तः-
करणगुणादेः परतरं सच्चिदानन्द-
मयं नित्यमुक्तब्रह्मस्थानं परमं पदम् निरा.उ. २९
प्राणेऽपानं तथाऽपरे भ.गी. ४।२९
प्राणेभ्यो देवा देवेभ्यो लोकाः
(विप्रतिष्ठन्ते)[कौ.उ.३।३, ३+४।१९
प्राणे शरीरं प्रतिष्ठितम् तैत्ति. ३।७
प्राणेषुपञ्चविधंपरोवरीयः सामोपासीत छांदो. २।७।१
प्राणे सर्व९ समर्पितं प्राणः प्राणेन
याति प्राणः प्राणं ददाति प्राणो
ह पिता प्राणो माता प्राणो
भ्राता प्राणः स्वसा प्राण आचार्यः
प्राणो ब्राह्मणः छांदो.७।१५।१

प्राणे हीमानि सर्वाणि भूतानि युज्यन्ते बृह. ५।१३।२
प्राणे हीमानि सर्वाणि भूतानि रमन्ते बृह. ५।१२।१
प्राणे हीमानि सर्वाणि भूतानि सम्यञ्चि बृह. ५।१३।३
प्राणैरयमस्मिन् स यदोत्क्रमिष्यन् भवति बृह. ६।५।२
प्राणैर्बलं बलेन तपस्तपसा श्रद्धा... स्मारेण विज्ञानं विज्ञानेनात्मानं वेदयति म.ना. १७।१३
प्राणैर्मनः, मनसश्च विज्ञानं, विज्ञानादानन्दो ब्रह्मयोनिः म.ना. १७।१३
प्राणैश्चित्तं सर्वमोतं प्रजानां यस्मिन्विशुद्धे विभवत्येष आत्मा मुण्ड. ३।१।९
प्राणो अग्निः परमात्मा पञ्चवायुभिरावृतः प्रा.हो. १।१२
प्राणोऽग्निस्तस्येमा इष्टकाः मैत्रा. ६।३३
प्राणोऽग्निः परमात्मा वै पञ्चवायुः समाश्रितः। स प्रीतः प्रीणातु विश्वं विश्वभुक् मैत्रा. ६।९
प्राणोऽग्निः सूर्य इति प्रतापवत्येषा(तनूः) मैत्रा. ६।९
प्राणो देहस्थितो यावदपानं तु निरोधयेत् यो. चू. १००
(तस्य)प्राणोधूमोवागर्चिश्चक्षुरङ्गाराः श्रोत्रं विस्फुलिंगास्तस्मिन्नेतस्मिन्नग्नौ देवा अन्नं जुह्वति तस्या आहुत्यै रेतः सम्भवति बृह. ६।२।१२
प्राणो नाम देवताऽवरोधिनी सा... तस्यै स्वाहा कौ. त. २।३
प्राणोन्मेषनिमेषाभ्यां संसृतेः प्रलयोदयौ अ.पू. ५।४१
प्राणोऽपानस्तथा व्यानः समानोदान एव च। नागः कूर्मश्च कृकरो देवदत्तो धनञ्जयः। एते नाडीषु सर्वासु चरंति दश वायवः जा.द. ४।२३
प्राणोऽपानो व्यान इत्यष्टावक्षराणि बृह. ५।१४।३
प्राणोऽपानो व्यान इति प्राणवत्येषा(तनूः) मैत्रा. ६।५
प्राणोऽपानः समानश्चोदानो व्यानस्तथैव च। नागः कूर्मः कृकरको देवदत्तो धनञ्जयः। प्राणाद्याःपञ्च विख्याता नागाद्याः पञ्च वायवः ध्या. बिं. ९६
प्राणोऽपानः समानश्चोदानव्यानौ च वायवः। पञ्च कर्मेन्द्रियैर्युक्ताज्ञानशक्तिबलोद्यताः ब्र. वि. ६६
प्राणो ब्रह्म, कं ब्रह्म, खं ब्रह्म छांदो. ४।१०।५
प्राणो ब्रह्मेति व्यजानात् तैत्ति. ३।३
प्राणो ब्रह्मेति ह स्मा ह कौषीतकिस्तस्य ह वा एतस्य प्राणस्य ब्रह्मणो मनो दूतं चक्षुर्गोप्तृ श्रोत्रं संश्रावयितृ कौ. त. २।१
प्राणो ब्रह्मेति ह स्माह पैङ्ग्यस्तस्य हवा एतस्य प्राणस्य ब्रह्मणो वाक्परस्ताच्चक्षुरारुन्धे चक्षुः परस्ताच्छ्रोत्रमारुन्धे श्रोत्रं परस्तान्मन आरुन्धे मनः परस्तात्प्राण आरुंधे कौ. त. २।२
प्राणो ब्रह्मेत्येक आहु स्तन्न, तथा शुष्यति वै प्राण ऋतेऽन्नात् बृह. ५।१२।१
प्राणो भ्राताप्राणः स्वसा प्राण आचार्यः छां. ७।१५।१
प्राणो मनुष्याः बृह. १।५।६
प्राणोऽयमनिशं ब्रह्मन्स्पन्दशक्तिः सदागतिः अ. पू. ५।२५
प्राणो वंश इति विद्यात् ३ऐत. १।४।१
प्राणो वंश इति स्थविरः शाकल्यः ३ऐत. २।१।१
प्राणो वा अन्नम् तैत्ति. ३।७
प्राणो वा अन्नस्य रसः, मनःप्राणस्य, विज्ञानं मनसः मैत्रा. ६।१३
प्राणो वा अमृतं नामरूपे सत्यं ताभ्यामयं प्राणश्छन्नः बृह. १।६।३
प्राणो वा आयुः कौ. त. ३।२
प्राणो वा अहमस्म्यृषे, प्राणः सर्वाणि भूतानि प्राणो ह्येष य एष तपति १ऐत. २।३।४
प्राणो वा इद९ सर्वं भूतं यदिदं किञ्च छां. ३।१५।४
(उक्थं)प्राणो वा उक्थं प्राणो हीद९ सर्वमुत्थापयत्युद्धास्मादुक्थविद्वीरस्तिष्ठत्युक्थस्य सायुज्य९सलोकतां जयति बृह. ५।१३।१
प्राणो वा आशाया भूयान् यथा वा अरा नाभौ समर्पिता एवमस्मिन्प्राणे सर्व९ समर्पितम् छांदो. ७।१५।१
प्राणो वा उत्प्राणेन हीद९ सर्वमुत्तब्धम् बृ.उ. १।३।२३
प्राणो वाव ज्येष्ठश्च श्रेष्ठश्च छांदो. ५।१।१

प्राणो वाव तदस्यार्चेत् १ऐत. २।१।१
प्राणो वाव संवर्गः, स यदा स्वपिति, प्राणमेव वागप्येति, प्राणं चक्षुः, प्राणꣳ श्रोत्रं, प्राणं मनः, प्राणो ह्येवैतान्सर्वान्संवृङ्क्ते छांदो. ४।३।३
(क्षत्रं-)प्राणो वै क्षत्रं, प्राणो हि त्रायते.. बृह. ५।१३।४
प्राणो वै गृत्सोऽपानो मदः १ऐत. २।१।३
प्राणो वै ग्रहः, सोऽपानेन नातिग्रहेण गृहीतोऽपानेन हि गन्धाञ्जिघ्रति बृह. ३।२।२
प्राणो वै ज्येष्ठश्च श्रेष्ठश्च, ज्येष्ठश्च श्रेष्ठश्च स्वानां भवति बृह. ६।१।१
प्राणो वै बलं, तत्प्राणे प्रतिष्ठितम् बृह. ५।१४।४
प्राणो वै ब्रह्मेत्यप्राणतो हि किꣳस्यात् बृह. ४।१।३
प्राणो वै यज्ञस्योद्गाता बृह. ३।१।५
प्राणो वै रं प्राणे हीमानि सर्वाणि भूतानि रमन्ते बृह. ५।१२।१
प्राणो वै वायुः मैत्रा. ६।३३
प्राणो वै सम्राट् परमं ब्रह्म, नैनं प्राणो जहाति बृह. ४।१।३
प्राणो व्यानोऽपान उदानः समानः तैत्ति. १।७।१
प्राणोऽसौ लोकः बृ.उ. १।५।४
प्राणो हीदꣳ सर्वमुत्थापयति बृह. ५।१३।१
प्राणो(घ्राणो)ऽस्मात्सर्वान् गन्धानभिविसृजते कौ. त. ३।४
प्राणोऽस्मि प्रज्ञात्मा तं मामायुरमृतमित्युपास्व कौ. त. ३।२
प्राणो ह पिता, प्राणो माता, प्राणो भ्राता, प्राणःस्वसा, प्राणआचार्यः, प्राणो ब्राह्मणः छांदो.७।१५।१
प्राणो हविः चित्त्यु.१।१
प्राणो हिङ्कारो वाक्प्रस्तावश्चक्षुरुद्गीथः श्रोत्रं प्रतिहारो मनो निधनं परोवरीयाꣳसि वैतानि छांदो. २।७।१
प्राणो हि भूतानामायुः तैत्ति. २।३
प्राणो हि वा अङ्गानाꣳ रसः बृह. १।३।१९
प्राणो हि वै क्षत्रं त्रायते हैनं प्राणः बृह. ५।१३।४
प्राणो ह्यविज्ञातः प्राणघनं तद्भूत्वाऽवति बृह. १।५।१०
प्राणो ह्येवैतानि सर्वाणि भवति छां.७।१५।१४
प्राणो ह्येवैतानि सर्वाणि भवन्ति छां. ५।१।१५
प्राणो ह्येवैतान्सर्वान्संवृङ्क्त इति छांदो. ४।३।३
प्राणो ह्येष आत्मा प्रश्नो. १
प्राणो ह्येष यएषतपति [१ऐत.२।१।१+ ३।४
प्राणो ह्येष यः सर्वभूतैर्विभाति विजानन्विद्वान्भवतेनातिवादी। आत्मक्रीड आत्मरतिः क्रियावानेष ब्रह्मविदां वरिष्ठः मुण्डो. ३।१।४
प्राणो ह्येष सर्वभूतैर्विभाति (मा.पा.) मुण्डो.३।१।४
प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति [अ. मा. ७+नारा.५+ देव्यु. २६
प्रातरादित्यमुपतिष्ठते-दिशामेकपुण्डरीकमस्यहं मनुष्याणामेकपुण्डरीकं भूयासमिति बृह. ६।३।६
प्रातर्मध्यन्दिने सायमर्धरात्रे च (तु) कुम्भकान्। शनैरशीतिपर्यन्तं चतुर्वारं समभ्यसेत् [त्रि.ब्रा.२।१०१+ [शाण्डिल्यो. १।७।२ यो. त. ४३
प्रातर्मध्याह्नयोः षण्मासकृतानि पापानि नाशयति गायत्रीर.११
प्रातश्चित्रादिवर्णाखण्डसूर्यचक्रवद्वह्निज्वालावलीवत्तद्विहीनान्तरिक्षंवत्पश्यति अद्वयता. ४
प्रातःकाले च पूर्वैर्गुर्वैद्धक्तैः प्रार्थितं मुहुः। तद्वैक्षं प्राक्प्रणीतंस्यात्स्थितिं कुर्यात्तथापि वा १सं.सो.२।६७
प्रातः प्रसाधनं दत्त्वा कार्यं सम्मार्जनाञ्जनम्। शिवो. ७।२४
प्रातः स्नात्वा विधानेन सन्ध्याकर्म समाप्य च। भूतिरुद्राक्षभरण उदीचीं दिशमाश्रयेत् २ बिल्वो.७
प्रातःस्नानोपवासादिकायक्लेशांश्च वर्जयेत् १यो.त. ४८
प्रादक्षिण्याद्दारिद्र्यनाशिनीं घ्राणतर्पणादन्तर्मलनाशिनीं च एवं वेद स वैष्णवो भवति तुलस्यु. २
प्रादुर्भावश्च भूतानां देहत्यागस्तथैव च। प्राप्तिर्व्यायामयोगश्च विधानमनुवर्तते भवसं. १।११
प्रादुर्भूतोसुराष्ट्रेऽस्मिन् [श्रीसू.७+क. खि.५।८।७७
प्राधान्यतः कुरुश्रेष्ठ भ.गी.१०।१९

प्राधान्येनात्र भेद एव, स भेदः
वस्तुतस्त्वभेद एव त्रि.मं.ना.२।२

प्राप्तकर्मकरो नित्यं शत्रुमित्रसमान-
दृक् । ईहितानीहितैर्मुक्तो न
शोचति न काङ्क्षति महो. ६।६४

प्राप्तं प्राप्तव्यमखिलं भवता पूर्णचेतसा ।
स्वरूपे तपसि ब्रह्मन्मुक्तस्त्वं
भ्रान्तिमुत्सृज महो. २।७२

(एवं) प्राप्तानन्दः परमयोगी भवति मं. ब्रा. २।९

प्राप्तानुत्तमविश्रान्तिर्न किञ्चिदिह
वाञ्छति महो. २।४७

प्राप्तुं तत्सहजस्वभावमनिशं सेवध्व-
मेकं गुरुम् अमन. २।४१

प्राप्ते ज्ञानेन विज्ञाने ज्ञेये च परमात्मनि
...हृदि संस्थिते ...

प्राप्नुयात् पुण्यकर्मणाम् भ.गी.१८।७१

प्राप्य चान्ते ततश्चैव ज्ञानयोगमनुत्त-
मम् । अविरोधेन धर्मस्य सञ्चरेत्
पृथिवीमिमाम् ना.प. ६।३३

प्राप्य ज्ञानदशामेतां पशुम्लेच्छादयो-
ऽपि ये । सदेहा वाऽप्यदेहा वा ते
मुक्ता नात्र संशयः महो. ५।३९

प्राप्यन्ते मां न पुनरावर्तन्ते भस्मजा. २।७

प्राप्य पुण्यकृतां लोकान् भ.गी. ६।४१

प्राप्य सर्वज्ञतां कृत्स्नां ब्राह्मण्यं पद-
मद्वयम् । अनापन्नादिमध्यान्तं
किमतः परमीहते अ.शां. ८५

प्राप्यं सम्प्राप्यते येन भूयो येन न
शोच्यते । पराया निर्वृतेः स्थानं
यत्तज्जीवितमुच्यते महो. ३।१२

प्राप्यान्तं कर्मणस्तस्य यत्किञ्चेह
करोत्ययम् । तस्माल्लोकात्पुनरैति.. बृह. ४.४।६

प्रायश्चित्तीयस्त्वधस्तात्तिर्यक्त्विमो
हिमांशुप्रभाभिः प्रजननकर्मा(अग्निः) प्रा.हो. २।४

प्रायेण श्रीमतां लोके भोक्तुं शक्तिर्न
विद्यते भवसं. १।१३

प्रारब्धकर्मपर्यन्तमहिनिर्मोकव-
द्व्यवहरति पैङ्गलो. ४।४

प्रारब्धकल्पनाप्यस्य देहस्य
भ्रान्तिरेव हि अध्यात्मो. ५७

प्रारब्धनाशात्प्रतिभाननाशः.. वराहो. २।६९

प्रारब्धप्रतिभासनाशपर्यन्तं चतुर्विधं
स्वरूपं ज्ञात्वा देहपतनपर्यन्तं
स्वरूपानुसन्धानेन वसेत् ना. प. ७।३

प्रारब्धमसतः कुतः अध्यात्मो. ५८

प्रारब्धं सिद्ध्यति तदा यदा देहात्मना
स्थितिः । देहात्मभावो नैवेष्टः
प्रारब्धं त्यजतामतः अध्यात्मो.५६

प्रारब्धागाम्यर्जितानिकर्मत्रयमितीरितम् वराहो. १।१२

प्रारब्धान्ते देहहानिर्माययेति
क्षीयतेऽखिला वराहो. ३।७१

प्रावृट्कालप्रारम्भे यथा मण्डूकादीनां
प्रादुर्भावस्तद्वत्सर्वात्मना नष्टाया
अविद्याया उन्मेषकाले पुनरुदयो
भवति त्रि.म.ना.५।१

प्राश्याचम्यायं निधिरथवा परिव्राड्वि-
वर्णवासामुण्डोपरिग्रहःशुचिरद्रोही
भैक्षमाणो ब्रह्मभूयाय भवति याज्ञव. २

प्रास्मा आशा अशृण्वन् चित्यु. १५।२

प्राहुस्त्यागं विचक्षणाः भ. गी. १८।२

प्रियमित्येनदुपासीत बृह. ४।१।३०

प्रियं भवत्यस्य ब्रह्मवर्चसं कुले य
एतमेवमात्मानं वैश्वानरमुपास्ते छां. ५।१२।२
५।१३।२+१४।२।+१५।२+१६।२+ १७।२

प्रियं ब्रुवाणं ब्रूयात्प्रियꣳरोत्स्यतीतीश्वरो
ह तथैव स्यात् बृह. १।४।८

प्रियः प्रियायार्हसि देव सोढुम् भ.गी.११।४४

प्रिया च मानसी, प्रतिरूपा च चाक्षुषी कौ.त. १।३

प्रियात्मजनन-वर्धन-परिणाम-क्षय-
नाशाः षड्भावाः मुद्गलो. ४।२

प्रियाप्रिये न स्पृशतस्तथैव च शुभा-
शुभे । तमसा ग्रस्तवद्भानादग्रतो-
ऽपि रविर्जनैः आत्मो. १५

प्रिया बतारे नः सती प्रियं भाषसे बृह.२।४।५

प्रिया वै खलु नो भवति सती
प्रियमवृधत् बृह. ४।५।१

प्रियां वाचमभिवदन्त्योऽर्चयन्त्य एष वः पुण्यः सुकृतो ब्रह्मलोकः मुण्ड. १।२।६
प्रियेषु स्वेषु सुकृतमप्रियेषु च दुष्कृतम्। विसृज्य ध्यानयोगेन ब्रह्माप्येति सनातनम् ना.प. ३।५१
प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यर्थं भ.गी. ७।१७
प्रियो हैव भवति स्मरन्ति हैवास्य कौ.त. २.४
प्रीतिः प्रीत्या भवति सामर. ९९
प्रेतान् भूतगणांश्चान्ये भ.गी. १७।४
प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवन्ति केनो. २।५
प्रेत्येन्द्रो भूत्वैषु लोकेषु राजति १ऐत. ३।७।२
प्रेमानन्द एव सृष्टिस्त्वाधिदैविकी सामर. ३९
प्रेमानन्दमनुभवन्तो भक्तास्तल्लीलोपयोग्या भवन्ति सामर. ९२
प्रेयो मन्दो योगक्षेमौ वृणीते कठो. २।२
प्रेरयेद्वा तथा भिक्षुः स्वप्नेऽपि न कदाचन ना.प. ४।९
प्रेक्षामृतस्य यच्छतामेतद्बुद्धकमोचनम् सद्वै. ९
प्रेहि तु तत्र प्रतीत्य ब्रह्मचर्यं वत्स्याव इति भवानेव गच्छत्विति बृह. ६।२।४
प्रैहि तु तत्र प्रतीत्य ब्रह्मचर्यं वत्स्यावः (मा. पा.) बृ.उ. ६।२।४
प्रोक्तमादित्यमाहात्म्यं यन्मां त्वमनुपृच्छसि सूर्यता. १।१०
प्रोक्तवानहमव्ययम् भ.गी. ४।१
प्रोक्तं कश्चिदविद्येति कश्चिदिच्छेति सम्मतम् महो. ५।१३२
प्रोक्ता च सात्त्विकी रुद्रे भक्ते ब्रह्माणि राजसी कृष्णो. ४
प्रोच्यते गुणसङ्ख्याने भ.गी. १८।१९
प्रोच्यमानमशेषेण भ.गी. १८।२९
प्रोता त्वमेता विचितिः क्रमाणां प्रजापतिश्छन्दमयो विगर्भः एका. ७. ९
प्रोवाच तां तत्त्वतो ब्रह्मविद्याम् मुंड. १।२।१३
(अथ) प्रोष्याऽऽयन् पुत्रस्य मूर्धानमभिमृशति कौ.त. २।११
प्लवदाचरणम् निर्वाणो. ८
प्लवा ह्येते अदृढा यज्ञरूपा अष्टादशोक्तमवरं येषु कर्म मुण्ड. १।२।७
प्लावयेद्योगमार्गेण सोऽमृतत्वाय कल्पते बृ.जा. २।१७
प्लुतप्रणवप्रयोगेण समस्तमोमिति प्रयुक्त आत्मज्योतिः सकृदावर्तते अ.शिखो. १
प्लुतप्लुत्युपसंहारः तुरीयो. १

फ

फट्फट्ब्रूहि महाकृत्ये विधूमाग्निसमप्रभे। हन शत्रूंस्त्रिशूलेन कुद्धास्ये पिब शोणितम् वनदु. १४
फलपत्रोदकाहारः पर्वतवनवनदेवतालयेषु सञ्चरेत् ना.प. ४।४८
फलमुद्दिश्य वा पुनः भ.गी. १७।२१
(पुरुषः) फलमूलोदकान्वितं तपोवनं प्राप्य... फलमूलपुष्पवारिभिः... वेदान्तश्रवणं कुर्वन्योगं समारभेत् शांडि. १।५।१
फलविशुद्धाङ्गी सन्न्यासं लभतेऽर्चिवान् २सन्न्यासो. ६
फलं कतकवृक्षस्य यद्यप्यम्बुप्रसादकृत्। न नामग्रहणादेव तस्य वारि प्रसीदति भवसं. १।५०
फलं त्यक्त्वा मनीषिणः भ.गी. २।५१
फलं यज्ञतपःक्रियाः भ.गी. १७।२५
फलादुत्पद्यमानःसन्नतेहेतुःप्रसिद्ध्यति अ.सां. १७
फलानां पुरुषः, पुरुषस्य रेतः बृह. ६।४।१
फले सक्तो निबध्यते भ.गी. ५।१२
फलोदयः क्रियापूर्वो निष्क्रियो नहि कुत्रचित् अध्यात्मो. ११
फलो वा एष लोकानामजरो महात्मा विश्वं यः पाति पारमा. ८।२
फालोर्ध्वगललाटविशेषमण्डले निरन्तरं तेजस्कारकयोगविस्फुरणेन पश्यति चेत् सिद्धो भवति अद्वयता. २
फेनपा उन्मादकाः शीर्षपर्णफलभोजिनो यत्र तत्र वसन्तोऽपरिचरणं कृत्वा...आत्मानं प्रार्थयन्ते आश्रमो. ३
फेनादण्डं भवत्यण्डाद्ब्रह्मा भवति [अ. शिरः. ३।१५+ बह्वृचो. २७
फेनाद्बुद्बुदमभवत्। अण्डाद्ब्रह्माऽभवत् गायत्री. १

ब

बटरकाणि सम्पतन्तीव दृश्यन्ते तानि
तदा न पश्येत्तदप्येवमेव विद्यात् ३ऐत. २।४।६
बटुको हि शाश्वतेन पुराणेन वेषमूर्जेण
तपसा नियन्ता बटुको. २३
बदरीफलमात्रं तु (रुद्राक्षस्य)
मध्यमं प्रोच्यते बुधैः । अधमं
चणमात्रं स्यात् ... रु.जा. ७
बद्धपद्मासनस्तिष्ठन्नर्धोन्मीलितलोचनः।
..स्पर्शान् परिहरञ्छनैः अ. पू. ३।४
बद्धपद्मासनं कृत्वा सरस्वत्यास्तु
चालनम् । दक्षनाड्या समाकृष्य
बहिष्ठं पवनं शनैः । यथेष्टं पूरयेद्वायुं.. योगकुं. १।२३
बद्धपद्मासनो योगी प्राणं चन्द्रेण
पूरयेत् ..भूयः सूर्येण रेचयेत् यो. चू. ९५
बद्धपद्मासनो योगी नमस्कृत्य गुरुं
शिवम् । नासाग्रदृष्टिरेकाकी
प्राणायामं समभ्यसेत् यो. चू. १०६
बद्धमुक्तो महीपालो ग्रासमात्रेण
तुष्यति । परैरबद्धो नाक्रान्तो
न राष्ट्रं बहु मन्यते महो. ५।७४
बद्धः खेचरतां (रसः) धत्ते ब्रह्मत्वं
स्वचेतसि वराहो. २।७९
बद्धः सुनादगन्धेन सद्यः सन्त्यक्तचा-
पलः । नादग्रहणतश्चित्तमन्तरङ्ग-
भुजङ्गमः ना. बिं. ४३
बद्धो मुच्येत बन्धनात् सूर्यता. १।१३
बद्धो मुक्तोऽहमद्भुतात्माऽहम् आ. प्र. १०
बद्धो हि वासनाबद्धो मोक्षः स्याद्वा-
सनाक्षयः मुक्ति. २।६८
बध्नन्कराभ्यां श्रोत्रादि करणानि
यथातथम् । युञ्जानस्य यथोक्तेन
वर्त्मना स्ववशं मनः त्रि.ब्रा. २।११६
बध्नाति हि शिरोजातमधोगामि
नभोजलम् । ततो जालन्धरो
बन्धः कष्टदुःखौघनाशनः यो. चू. ५०
बध्वा प्रागासनं विप्रो ऋजुकायः समा-
हितः । नासाग्रन्यस्तनयनः त्रि.ब्रा. २।९२
बध्वा योगासनं पूर्वं हृद्देशे हृदयाञ्जलिः त्रि.ब्रा. २।१४५
बन्धत्वमपिचेन्मोक्षो बन्धाभावे क
मोक्षता ते.बिं. ५।२४
बन्धनस्थस्येवास्वातंत्र्यं, यमविषयस्थ-
स्यैव बहुभयावस्थम् मैत्रा. ४।२
बन्धमुक्तिविहीनोऽहंशाश्वतानन्दविग्रहः ते. बिं. ३।३७
बन्धमुद्रा कृता येन नासाग्रे तु
स्वलोचने ब्र. वि. ६९
बन्धमोक्षस्वरूपात्मा बन्धमोक्षविवर्जितः ते.बिं. ४।६६
बन्धमोक्षादिकं नास्ति सद्वाऽसद्वा
सुखादि वा ते. बिं. ५।३८
बन्धमोक्षादिहीनोऽस्मि शुद्धब्रह्मास्मि
सोऽस्म्यहम् मैत्रे. ३।९
बन्धमोक्षौ न चात्मनि २आत्मो. २९
बन्धं कुर्वन्ति धातवः अमन. १।३७
बन्धं मोक्षं च या वेत्ति भ.गी. १८।३०
बन्धाय विषयासक्तं मुक्तं (मुक्त्यै,
मुक्ता) निर्विषयं स्मृतम् (मनः)
[ब्र. बिं. २+ मैत्रा. ४।१७+ अमन. २।७५
बन्धास्थामथ मोक्षास्थां सुखदुःख-
दशामपि । त्यक्त्वा सदसदास्थां
त्वं तिष्ठाक्षुब्धमहाब्धिवत् महो. ६।५३
बन्धुपुत्रमनुमोदयित्वाऽनवेक्ष्यमाणो
द्वन्द्वसहः प्रशान्तः । प्राचीमुदीचीं
वा निवर्तयंश्चरेत शाट्याय. १८
बन्धुरात्माऽऽत्मनस्तस्य भ. गी. ६।६
बन्धो जालन्धराख्योऽयममृता-
प्यायकारकः यो.त. १।१११
बन्धोजालंधराख्योऽयंमृत्युमातङ्गकेसरी १यो.त. ११९
बन्धो मोक्षः सुखं दुःखं ध्यानं चित्तं
सुरासुराः । गौणं मुख्यं परं
चान्यत् सर्वं मिथ्या न संशयः ते.बिं. ५।४४
बभ्रुश्च बभ्रुकर्णश्च नीलग्रीवश्चयःशिवः नीलरु. ३।२
बभ्रम्यमाणमिव चाकश्यमानमिव
जाज्वल्यमानमिव देदीप्यमानमिव
लेलिहानं सदैव मे ब्रह्म आर्षे. ५।३

बर्हापीडाभिरामाय रामायाकुण्ठमेधसे ।
रमामानसहंसाय गोविन्दाय
नमो नमः गो. पू. ४।७
बलमिति विद्युति तैत्ति.३।१०।२
बल्लवीवदनाम्भोजमालिने नृत्तशालिने ।
नमः प्रणतपालाय श्रीकृष्णाय
नमोनमः गो.पू. ४।१०
बलं ज्ञानं सुराणां वै तेषां
ज्ञानं हृतं क्षणात् कृष्णो. १२
बलं देवानाममृतस्य विष्णोः सुदर्श. ६
बलं बलवतां चाहं भ.गी. ७।११
बलं वाव विज्ञानाद्भूयोऽपि ह
शतं विज्ञानवतामेको बलवा-
नाकम्पयते छान्दो.७।८।१
बलं भीमाभिरक्षितम् भ.गी. १।१०
बलं भीष्माभिरक्षितम् भ.गी. १।१०
बलंवावविज्ञानाद्भूयोऽपीहशतं (मा.पा.) छां.उ. ७।८।१
बलात्कामपिशाचेन विवशः परिभूयते महो. ३।३४
बलादिव नियोजितः भ.गी. ३।३६
बलाद्वाव भूयोऽस्तीति तन्मे भगवान्
ब्रवीतु छांदो. ७।८।२
बलेचित्तसंयमाद्धनुमदादिबलम् शांडि.१।७।५२
बलेन तपः, तपसा श्रद्धा (भवति) महाना.१७।१३
बलेन पर्वताः (तिष्ठन्ति) छांदो.७।८।१
बलेन लोकस्तिष्ठति, बलमुपास्व छांदो. ७।८।१
बलेनापःपर्वताबलेनदेवमनुष्याः(मा.पा.) छां.उ. ७।८।१
बलेन वै पृथिवी तिष्ठति, बलेनान्तरिक्षं
बलेन द्यौर्बलेन पर्वता बलेन देव-
मनुष्या बलेन पशवश्च वयांसि च
तृणवनस्पतयः श्वापदान्याकीटपिपी-
लकंबलेनलोकस्तिष्ठतिबलमुपास्वेति छांदो.७।८।१
बलेन वै लोकास्तिष्ठन्ति (मा. पा.) छां.उ. ७।८।१
बस्तिस्त्वेव्यमत्स्ययन्मां नागमिष्य इति छांदो.५।१६।२
बस्तिस्त्वेव आत्मन इति होवाच छांदो.५।१६।२
बहव इमेऽस्मिन्पुरुषे कामा नाना-
त्यया व्याधिभिः परिपूर्णोऽस्मि
नाशिष्यामीति छांदो.४।१०।३
बहवो ज्ञानतपसा भ.गी. ४।१०
बहवो नैकमार्गेण प्राप्ता नित्यत्वमागताः ब्र. वि.२५
बहवो मर्या ब्राह्मणायना निरिन्द्रिया
विमुक्तोऽस्माल्लोकात्प्रयन्ति बृह.६।४।४
बहिरङ्गा जगत्कारणभूता सैवाविद्या-
रूपेण जीवबन्धभूता क्रिया शक्तिश्च
लीलाशक्तिश्चेति राधिको. ९
बहिरन्तश्च भूतानां भ.गी.१३।१६
बहिरन्तश्चोपवीती विप्रः सन्न्यस्तुमर्हति ।
एकयज्ञोपवीती तु नैव सन्न्यस्तुमर्हति परब्र. २०
बहिरस्तङ्गते प्राणे यावन्नापान उद्गतः ।
तावत्पूर्णां समावस्थां बहिष्ठं
कुम्भकं विदुः मुक्तिको.२।५२
बहिरुपशमिते चराचरात्मा स्वयमनु-
भूयत एव देवदेवः अ.पू.१।५५
बहिर्मायया वेष्टितं भवति चक्रं नृ. पू. ५।१
बहिर्लक्ष्यं तु नासाग्रे चतुष्षडष्टदश-
द्वादशाङ्गुलीभिः... व्योमत्वं
पश्यति स तु योगी मं. ब्रा. १।३
बहिर्विरेचनं वायोरुदराद्रेचकः स्मृतः जा.द.६।१३
बहिश्चेतो गृहीतं सद्दृष्टं वैतथ्यमेतयोः वैतथ्य. ९
बहिश्चेतो गृहीतं सद्युक्तं वैतथ्यमेतयोः वैतथ्य. १०
बहिस्तीर्थात्परं तीर्थमन्तस्तीर्थं
महामुने । आत्मतीर्थं महा-
तीर्थमन्यत्तीर्थं निरर्थकम् जा.द. ४।५३
बहिः कुर्वन्नकुर्वन्वा कर्ता भोक्ता
नहि कश्चित् अ. पू. १।५७
(अथ) बहिःकृतेन्द्रियार्थान्स्वशरीरा-
दुपलभते मैत्रा. ६।८
बहिः कृत्रिमसंरम्भो हृदि संरम्भ-
वर्जितः । कर्ता बहिरकर्तान्तर्लोके
विहर शुद्धधीः महो. ६।६८
बहिः प्रज्ञो विभुर्विश्वो ह्यन्तः-
प्रज्ञस्तु तैजसः आगम. १
बहिः प्रपञ्चशिखोपवीतित्वमनादृत्य
प्रणवहंसशिखोपवीतित्वमवलम्ब्य
मोक्षसाधनं कुर्यात् परब्र. २२
बहिःसर्वसमाचारो लोकेविहर विज्वरः महो. ६।६७

बहिःसूत्रं त्यजेद्विद्वान्योगमुत्तम-
मास्थितः । ब्रह्मभावमिदं सूत्रं
धारयेद्यः स चेतनः [ब्रह्मो. ९+ ना. प. ३।८०

बहिःसूत्रं त्यजेद्विप्रो योगविज्ञान-
तत्परः । ब्रह्मभावमिदं सूत्रं
धारयेद्यः स मुक्तिभाक् परब्र. ११

बहुधा विश्वतोमुखम् भ.गी. ९।१५

बहुनाऽत्र किमुक्तेन गोपीचन्दन-
मण्डनम् । न तत्तुल्यं भवेल्लोके
नात्र कार्या विचारणा गोपीचं. २१

बहु वा इव ५ सुप्तस्य वा जाग्रतो
वा रेतः स्कन्दति बृह. ६।४।४

बहुशाखा ह्यनन्ताश्च भ.गी. २।४१

बहुशास्त्रकथाकन्थारोमन्थेन वृथैव
किम् । अन्वेष्टव्यं प्रयत्नेन मारुते
ज्योतिरान्तरम् मुक्ति. २।६३

बहुशोभमानामुमां हैमवतीं ता ५ होवाच
किमेतद्यक्षमिति केनो. ३।१२

बहु स्यां प्रजायेय [छां.उ.६।२।३+
[तैत्ति. २।६+ शांडि.३।१।३

बहूदकस्य स्वर्गलोकः [ना.प.५।९+ १सं.सो.२।५९

बहूदकस्याऽसंक्लृप्तं माधुकरम् ना. प. ५।७

बहूदकः शिखादिकन्थाधरस्त्रिपुण्ड्र-
धारी कुटीचकवत्सर्वसमो मधुकर-
वृत्त्याऽष्टकवलाशी [ना.प.५।५+ १सं.सो.२।१४

(अथ) बहूदका नाम त्रिदण्ड-कम-
ण्डलु-शिखा-यज्ञोपवीत-काषाय-
वस्त्रधारिणो ब्रह्मर्षिगृहे मधुमांसं
वर्जयित्वाऽष्टौ ग्रासान्भैक्षाचरणं
कृत्वा योगमार्गे मोक्षमेव प्रार्थयन्ते भिक्षुको. २

बहूदकास्त्रिदण्डकमण्डलुशिक्यपक्ष-
जलपवित्रपात्रपादुकासनशिखा-
यज्ञोपवीत-कौपीन-काषायवेष-
धारिणः साधुवृत्तेषु ब्राह्मणकुलेषु
भैक्षाचर्यं चरन्त आत्मानं प्रार्थयन्ते आश्रमो. ४

बहूदको हंसत्वमवलम्ब्य...तुरीयातीत-
तावधूतवेषेणाद्वैतनिष्ठापरः प्रण-
वात्मकत्वेन देहत्यागं करोति यः
सोऽवधूतः तुरीया. ३

बहूदरं बहुदंष्ट्राकरालं भ.गी.११।२३

बहूनामेमि प्रथमो बहूनामेमि मध्यमः ।
कि ५ स्विद्यमस्य कर्तव्यं यन्मयाऽद्य
करिष्यति कठो. १।५

बहूनि पुण्यानि कृतानि येन तेनैव
लभ्यः परमेश्वरोऽसौ शरभो. २

बहूनि मे व्यतीतानि भ.गी.४।५

बहून्यदृष्टपूर्वाणि भ.गी.११।६

बह्वश्वामिन्द्रगोमतीम् चित्र्यु.१।१।६,

बह्वहं चरन्ती परिचरन्ती परिचारिणी
यौवने त्वामलभे साऽहमेतन्न वेद
यद्गोत्रस्त्वमसि जबाला तु नामाऽह-
मस्मि सत्यकामो नाम त्वमसि छांदो.४।४।२

बह्वीं प्रजां जनयन्तीं ५ सरूपाम् ।
अजो ह्येको जुषमाणोऽनुशेते महाना.८।४५

बह्वीः प्रजा असृजत मैत्रा. २।६

बह्वीः प्रजा पुरुषात्सम्प्रसूताः मुण्ड. २।१।५

बह्वीः सन्धा अतिक्रम्य दिवि प्रह्लादीन-
तृणवहमन्तरिक्षे पौलोमान्पृथिव्यां
कालकाश्यांस्तस्य मे तत्र न लोम
च नामीयते कौ. त. ३।१

बह्वृचाख्यब्रह्मविद्यामहाखण्डार्थ-
वैभवम् । अखण्डानन्दसाम्राज्यं
रामचन्द्रपदं भजे बह्वृच.शीर्षकं

बह्वयः स्याम प्रजायेमहि छांदो.६।२।४

बाधियं महानुपचय इवेदं नावहेलनया
भवितव्यमेवं दृढवैराग्याद्बोधो भवति महो. ४।२६

बालस्वभावोऽसङ्गो निरवद्यो मौनेन
पाण्डित्येन निरवधिकारतयो-
पलभ्येत कैवल्यमुक्तं निगमनं सुबालो.१३।१

बालं प्रमाद्यन्तं वित्तमोहेन मूढं कठो.२।६

बालाग्रमात्रं हृदयस्य मध्ये विश्वं देवं
जातरूपं वरेण्यम् । तमात्मस्थं येऽनु-
पश्यन्ति धीरास्तेषां शान्तिर्भवति
नेतरेषाम् बटुको. १

बालाश्च कुलवृद्धाश्च निर्दहन्त्यवमानिताः इतिहा. २१

बालैर्बद्धस्तु लोकोऽयं मुसलेनाभिहन्यते शिवो.७।१०४

बालोन्मत्तपिशाचवदनुन्मत्तोन्मत्तवदाचरंस्त्रिदण्डं शिक्यं पात्रं कमण्डलुं कटिसूत्रं कौपीनं च परित्यज्य...जातरूपधरश्चरेदात्मानमन्विच्छेत् — ना. प. ३।८७
बालोन्मत्तपिशाचवन्मरणं जीवितं वा न काङ्क्षेत कालमेव प्रतीक्षेत निर्देशमृतकन्यायेन परिव्राडिति — ना.प. ५।१५
बालो बालेषु वृद्धेषु वृद्धो धीरेषु धैर्यवान्। युवा यौवनवृत्तेषु दुःखितेषु सुदुःखधीः — अ.पू.२।३०
बाल्यमल्पदिनैरेव यौवनश्रीस्ततो जरा। देहेऽपि नैकरूपत्वं काऽऽस्था बाह्येषु वस्तुषु — भवसं. १।२१
बाल्यं च पाण्डित्यं च निर्विद्याथ-मुनिरमौनं मौनं च निर्विद्य... — बृह. ३।५।१
बाल्येन तिष्ठासेत् — सुबालो.१३।१
बाल्येनैव हि तिष्ठासेन्निर्विद्य ब्रह्मवेदनम्। ब्रह्मविद्यां च बाल्यं च निर्विद्य... मुनिरात्मवान् [अ. पू. ४।३८+ — शाट्याय. २४
बाहू राजन्यः कृतः [ऋक्सं. — मं.१०।९०।१२
[वा.सं. ३१।११+सुबा.१।४+ — चित्सु. १२।५
बाह्यचिन्ता न कर्तव्या तथैवान्तरचिन्तिका। सर्वचिन्तां परित्यज्य चिन्मात्रपरमो भव।(सर्वचिन्तां समुत्सृज्य स्वस्थो भव सदा ऋभो) [शांडि. १।७।२०+ — वराहो.२।४४
बाह्यज्ञाने विनष्टे च ततः सर्वसमो भवेत् — अमन. १।२१
बाह्यप्रणव आर्षप्रणवः, उभयात्मको विराट्प्रणवः — ना. प. ८।१
बाह्यवदान्तरेऽप्यात्मनश्चक्षुःसंयोगेनैव रूपग्रहणकार्योदयात् — अद्वयता. ६
बाह्यस्थविषयं सर्वं रेचकः समुदाहृतः। पूरकं शास्त्रविज्ञानं कुम्भकं स्वगतं स्मृतम् — वराहो. ५।५८
बाह्यस्पर्शेष्वसक्तात्मा — भ. गी. ५।२१
बाह्यस्याभ्यन्तरे कालानलसदृशं पराकाशम् — मं.ब्रा. ४।१

बाह्यं प्राणं समाकृष्य पूरयित्वोदरेण च। नासाग्रे नाभिमध्ये च पादाङ्गुष्ठे च धारयेत् — जा.द. ६।२२
बाह्यात्प्राणं समाकृष्य पूरयित्वोदरे स्थितम्। नाभिमध्ये च नासाग्रे पादाङ्गुष्ठे च यत्नतः। धारयेन्मनसा प्राणं सन्ध्याकालेषु वा सदा। सर्वरोगविनिर्मुक्तो भवेद्योगी. — शां. १।७।४३
बाह्यात्माऽन्तरात्मा परमात्मा च — १ आत्मो. १
बाह्यादापूरणं वायोरुदरे पूरको हि सः — जा.द. ६।१२
बाह्यान्ततारकाकारं व्योमपञ्चकविग्रहम्। राजयोगैकसंसिद्धं रामचन्द्रमुपास्महे — मं.ब्रा. शीर्षकं
बाह्याभ्यन्तरमन्धकारमयमाकाशम् — मं. ब्रा. ४।१
बाह्याभ्यन्तरवीक्षणाद्विस्फुटतमः स परस्ताद्भूतैष दृष्टोऽदृष्टोऽव्यवहार्योऽप्यल्पोनाल्पःसाक्ष्यविशेषोऽनन्यो सुखदुःखोऽद्वयः परमात्मा — नृसिंहो. ९।७
(एवं) बाह्याभ्यन्तरस्थव्योमपञ्चकं तारकलक्ष्यम् — अद्वयता. ४
बाह्याभ्यन्तःकरणानां रूपग्रहणयोग्यतास्त्वित्यावाहनम् — भावनो. ८
बाह्यार्चनं परिहरेदपुनर्भवाय — मैत्रे. २।२६
बाह्यार्थवासनोद्भूता तृष्णा बद्धेति कथ्यते। सर्वार्थवासनोन्मुक्ता तृष्णा मुक्तेति भण्यते — महो. ६।५०
बाह्वोः क्षत्रं (अजायत) — ग. शो. ३।११
बिन्दुनादकलाज्योतीरवीन्दुध्रुवतारकम्। शान्तं च तदतीतं च परं ब्रह्म तदुच्यते — यो.शि. ६।८६
बिन्दुनादसमायुक्तमग्निबीजं विचिन्तयेत्। पश्चाद्विरेचयेत्सम्यक्प्राणं.. — जा. द. ५।८
बिन्दुनादमहालिङ्गविष्णुलक्ष्मीनिकेतनम्। देहं विष्ण्वालयं प्रोक्तं सिद्धिदं सर्वदेहिनाम् — यो.शि. ५।४
बिन्दुनादात्मकं बीजं वह्निसोमकलात्मकम् — रामर. ५।९
बिन्दुमूलशरीराणिशिरास्तत्रप्रतिष्ठिताः — यो. चू. ५६
बिन्दुरीशानः — ना.पू.ता.१।३

बुद्धियुक्तो जहातीह भ.गी.२।५०
बुद्धियोगमुपाश्रित्य भ.गी.१८।५७
बुद्धियोगाद्धनञ्जय भ.गी.२।४९
बुद्धिरध्यात्मं, बोद्धव्यमधिभूतं, ब्रह्मा तत्राधिदैवतम्... सुबालो. ५।७
बुद्धिरव्यक्तमेव च भ.गी.१३।६
बुद्धिरुदानयोगेन चक्षुर्द्वारा रूपगुणः पादाधिष्ठितोऽग्नौ तिष्ठति.. त्रि. ब्रा.१।६
बुद्धिर्ज्ञानमसम्मोहः भ.गी.१०।४
बुद्धिर्धृतिः स्मृतिः प्रज्ञानमित्येके मैत्रा.६।३१
बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मि भ.गी.७।१०
बुद्धिर्मनोऽहङ्कार इति चेतनवत्येषा मैत्रा. ६।५
बुद्धिर्यस्य न लिप्यते भ.गी.१८।१७
बुद्धिर्योगे त्विमां शृणु भ.गी.२।३९
बुद्धिर्वाऽन्नमव्यक्तमन्नादं सुबालो.१४।१
बुद्धिर्व्यतितरिष्यति भ.गी.२।५२
बुद्धिश्च बोद्धव्यं च नारायणः सुबलो. ६।१
बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च [कठो. ३।३+ पैङ्गलो. ४।१
बुद्धिं मोहयसीव मे भ.गी.३।२
बुद्धिः पत्नी (शारीरयज्ञस्य) प्रा.हो.४।१
बुद्धिः पर्यवतिष्ठते भ.गी. २।६५
बुद्धिः सा पार्थ तामसी भ.गी.१८।३२
बुद्धिः सा पार्थ राजसी भ.गी.१८।३१
बुद्धिः सा पार्थ सात्त्विकी भ.गी.१८।३०
बुद्धीन्द्रियाणि यज्ञपात्राणि [गर्भो.११+ प्रा. हो.४।३
बुद्धीन्द्रियाणि यानीमान्येतान्यस्य रश्मयः मैत्रा. २।९
बुद्धेरात्मा महान्परः कठो. ३।१०
बुद्धेर्गुणेनात्मगुणेन चैव आराग्रमात्रो-ऽप्यपरोऽपि दृष्टः श्वेताश्व. ५।८
बुद्धेर्भेदं धृतेश्चैव भ.गी.१८।२९
बुद्धेःपूर्णविकासोऽयंजागरःपरिकीर्त्यते वराहो. २।६०
बुद्धौ शरणमन्विच्छ भ.गी. २।४९
बुद्ध्या धृतिगृहीतया भ.गी. ६।२५
बुद्ध्या बुद्ध्यति, मनसा सङ्कल्पयति, वाचा वदति गर्भो. १
बुद्ध्या युक्तो यया पार्थ भ.गी. २।३९
बुद्ध्या बुध्यति, चित्तेन चेतयत्य-हङ्कारेणाहङ्करोति ना. प. ६।४
बुद्ध्या विशुद्धया युक्तः भ.गी.१८।५१
बुद्ध्या सञ्चितं स्थापयित्वा तु रुद्रे अ.शिरः. ३।९
बुद्ध्याऽनिमित्ततां सत्यां हेतुं पृथगनाप्नुवन् । वीतशोकं तथा काममभयं पदमश्नुते अ. शां. ७८
बुद्ध्वा पदमनानात्वं नमस्कुर्मोयथाबलम् अ.शां. १००
बुद्बुदादिविकारान्तस्तरङ्गः सागरेयथा आ. प्र. १५
बुद्बुदादण्डमभवत् गायत्रीर. १
बुधा भावसमन्विताः भ.गी.१०।८
बुधो बालकवत्क्रीडेत्कुशलो जडवच्चरेत् । वदेदुन्मत्तवद्विद्वान्गोचर्यां नैगमश्चरेत् ना.प.५।२८
बृहच्च तद्दिव्यमचिन्त्यरूपं सूक्ष्माच्च तत्सूक्ष्मतरंविभाति [मुण्ड.३।१।७+ गुह्यका. ३७
बृहज्जाबालाभिधां मुक्तिश्रुतिं ममोपदेशं कुरुष्व बृ. जा. १।४
बृहज्ज्योतिःकरिष्यतः सविता प्रसुवातितान् श्वेताश्व.२।३
बृहज्ज्योतिषं त्वासादयामि चित्यु.१९।१
बृहतीमभिसम्पादयेदेष वै कृत्स्न आत्मा यद्बृहती १ऐत.३।५।३
(एवमेव) बृहती सर्वतः छन्दोभिः शरीरैः परिवृता १ऐत. ३।५।४
बृहत्तिथिर्देश पञ्चच नित्यासषोडशीकं पुरमध्यं बिभर्ति त्रिपुरो. १०
बृहत्पाण्डरवासः सोमराजन्निति कौ.त. ४।१८
बृहत्पाण्डरवासा अतिष्ठाः सर्वेषां भूतानां मूर्धेति कौ. त. ४।२
बृहत्पाण्डरवासाः सोमो राजेति वा बृह. २।१।३
बृहत्पाण्डुरवासाः सोमो राजेति (मा. पा.) बृ.उ. २।१।३
बृहत्साम तथा साम्नां भ.गी.१०।३५
बृहद्बृहद्वनं मधोर्मधुवनं तालस्तालवनं काम्यं काम्यवनं बहुला बहुलवनं कुमुदः कुमुदवनं खदिरः खदिरवनं भद्रो भद्रवनं भाण्डीर इति भाण्डीरवनं श्रीवनं लोहवनं वृन्दावनमेतैरावृता पुरी भवति (मथुरा) गोपालो.१।१६

बृहद्रथन्तरयो रूपेण संहिता सन्धीयते
इति तार्क्ष्यः ३ऐत.१।६।१
बृहद्रथन्तरे अनूच्ये भद्रयज्ञायज्ञीये कौ.त. १।५
बृहद्रथन्तरे सामनी पूर्वौ पादौ भ्यैत कौ. त. १।५
(ॐ) बृहद्रथो (ह) वै नाम राजा
राज्ये ज्येष्ठं पुत्रं निधापयित्वेदम-
शाश्वतं मन्यमानः शरीरं वैराग्य-
मुपेतोऽरण्यं निर्जगाम [मैत्रा.१।१ +मैत्रे. १।१
बृहन् पाण्डरवासः सोमराजन्निति बृह.२।१।१५
बृहस्पतिरुपवक्ता चित्त्युप.२।१
बृहस्पतिर्वै शुक्रो भूत्वेन्द्रस्याभयाया-
सुरेभ्यः क्षयायेमामविद्यामसृजत् मैत्रा. ७।९
बृहस्पतिः पुरोधया चित्त्यु. ८।२
बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति
क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋत
प्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् वनदु. ३१
[ऋ.मं.२।२३।१५+वा.सं.२६।३
[+तै. सं. १।८।२२।२
बृहस्पते न परः साम्नो विदुः ३ऐत.१।५।४
बोद्धव्यमेवाप्येति यो बोद्धव्यमेवास्तमेति सुबालो. ९।१
बोद्धव्यं च विकर्मणा भ.गी. ४।१७
बोद्धा भवति कर्ता भवति विज्ञाता
भवत्यन्नमुपास्स्वेति छांदो.७।९।१
बोधचन्द्रमसि पूर्णविग्रहे मोहराहुमु-
षितात्मतेजसि। स्नानदानयजना-
दिकाः क्रिया मोचनावधि वृथैव
तिष्ठते वराहो.२।७४
बोधयन्तः परस्परम् भ.गी.१०।९
बोधयन्तीं त्वासादयामि चित्त्यु.१९।१
बोधस्योपरतिः फलम् अध्यात्मो.२८
बोधानन्दमयानन्तधूपदीपावलिभिरति-
शोभितं...निरतिशयाद्वैतपरमा-
नन्दलक्षणमादिनारायणं ध्यायेत् त्रि.म.ना.७।१२
बोधानन्दमयानन्तपरमविलासविभूति-
विशेषसमष्टिमण्डल..चिद्रूपादित्य-
मण्डलं द्वात्रिंशद्व्यूहभेदैरधिष्ठितम् त्रि.म.ना.७।८
बोधानन्दमयै-रनन्तनित्यपरिजनैः
परिसेविता श्रीसखीमेवं लक्ष्मीं
ध्यात्वा...बोधानन्दवनं प्राप्य...
यदेव ब्रह्मविद्यापादवैकुण्ठं सह-
स्रानन्दप्राकारैः समुज्ज्वलति त्रि.म.ना.६।८
बोधानन्दमयैरनन्तनित्यमुक्तैःपरिसेवितं शि. सा. ६
बोधानन्दमहोज्ज्वलम् शि.सा. ६
ब्रह्मकर्मसमाधिना भ.गी. ४।२४
ब्रह्मकर्म स्वभावजम् भ.गी.१८।४२
ब्रह्मकल्पवनामृतपुष्पवृष्टिभिः सन्तत-
मानन्दं ब्रह्मानन्दरसनिर्भरैरसंख्यै-
रतिमङ्गलं... निरतिशयाद्वैतपरमा-
नन्दलक्षणमादिनारायणं... त्रि.म.ना.७।१२
ब्रह्मकार्यमिति ज्ञात्वा ईशानं
प्रतिपद्यते पञ्चब्र. २२
ब्रह्म-कैवल्य-जाबाल-श्वेताश्वौ हंस
आरुणिः मुक्ति. १।३१
ब्रह्मक्षत्रादिकं सर्वं यस्य स्यादोदनंसदा पा. ब्र. ४४
ब्रह्मक्षत्रियवैश्यशूद्रा इति चत्वारो
वर्णास्तेषां वर्णानां ब्राह्मण एव
प्रधान इति वेदवचनानुरूपं
स्मृतिभिरप्युक्तम् व. सू. उ. २
ब्रह्म खल्विदं वाव सर्वम् मैत्रा. ४।६
ब्रह्मग्रन्थिं ततो भित्वा विष्णुग्रन्थिं
भिनत्त्यसौ। विष्णुग्रन्थिं ततो
भित्त्वा रुद्रग्रन्थिं भिनत्त्यसौ वराहो.५।६५
ब्रह्मग्रन्थिं ततो भित्त्वा विष्णुग्रन्थिं
भिनत्त्यतः। रुद्रग्रन्थिं च भित्त्वैव
कमलानि भिनत्ति षट् यो.कुं. १।८५
ब्रह्मघ्नश्च कृतघ्नश्च गोघ्नश्चगुरुतल्पगः।
तेषां पापानि नश्यन्ति गोपी-
चन्दनधारणात् गोपीचं. ११
ब्रह्मचर्यमहिंसा च शारीरं तपउच्यते भ.गी.१७।१४
ब्रह्मचर्यमहिंसांचसत्यास्तेयापरिग्रहान्।
सेवेत योगी निष्कामो योग्यतां
स्वमनो नयन् भवसं. ३।१६
ब्रह्मचर्यमहिंसां चापरिग्रहं च सत्यं च
यत्नेन हे रक्षत हे रक्षतं... आरुणि. ३
ब्रह्मचर्यमेव तद्यद्रात्रौ रत्या संयुज्यन्ते प्रश्नो. १।१३
ब्रह्मचर्यशान्तिसंग्रहणम् निर्वाणो. ८
(यदि वेतरथा) ब्रह्मचर्यादेव प्रव्रजेत्
गृहाद्वा वनाद्वा प. हं. प. १

ब्रह्मचर्यं नाम सर्वावस्थासु मनो-
वाक्कायकर्मभिः सर्वत्र मैथुनत्यागः शांडि.१।१।३

ब्रह्मचर्यं परिसमाप्य गृही भवेत् जाबालो. ४

ब्रह्मचर्यं भवति...। किं गोत्रोन्वह-
मस्मीति...[मा. पा.] छां.उ.४।४।१

ब्रह्मचर्यं भवति विवत्स्यामि किं गोत्रो-
ऽहमस्मीति छांदो.४।४।१

ब्रह्मचर्यमृत्पात्रंवाऽलाबुपात्रंदारुपात्रंवा आरुणि. ४

ब्रह्मचर्यं समाप्य गृही भवेत्। गृहाद्वनी
भूत्वा प्रव्रजेत् [ना. प. ३।७७+ याज्ञव. १

ब्रह्मचर्यं समाप्य गृही भूत्वा वानप्रस्था-
श्रममेत्य वैराग्यभावेऽप्याश्रमक्रमा-
नुसारेण यः सन्न्यस्यति स कर्म-
सन्न्यासीति [१सं. सो. २।१३+ ना. प. ५।३

ब्रह्मचर्यापरिग्रहाहिंसासत्यं यत्नेन रक्षन्
...भैक्षमाणो ब्रह्मभूयाय भवति प. हं. प. ६

ब्रह्मचर्याश्रमे क्षीणे(खिन्नो)गुरुशुश्रूषणे
रतः। वेदानधीत्यानुज्ञात उच्यते
गुरुणाऽऽश्रमी [कुण्डिको. १।६+ २सन्न्यासो.२

ब्रह्मचर्याश्रमेऽधीत्यवानप्रस्थाश्रमेऽधीत्य
सर्वसर्वसंविन्न्यासंसन्न्यासंसन्न्यासम् निर्वाणो. ८

ब्रह्मचर्येण सन्तिष्ठेदप्रमादेन मस्करी कठरु. ८

ब्रह्मचर्येण सन्न्यस्य सन्न्यासाज्जातरूप-
धरो वैराग्यसन्न्यासी ना. प. ५।३

ब्रह्मचर्येण हरन्ति देवाः पा. ब्र. ३

ब्रह्मचर्येण ह्येव यो ज्ञाता तं विन्दतेऽथ
यदिष्टमित्याचक्षते ब्रह्मचर्यमेव
तद्ब्रह्मचर्येण ह्येवेष्टात्मानमनुविन्दते छांदो.८।५।१

ब्रह्मचर्येण ह्येव सत आत्मनस्त्राणं विन्दते-
ऽथ यन्मौनमित्याचक्षते ब्रह्मचर्यमेव
तद्ब्रह्मचर्येण ह्येवात्मानमनुविद्य मनुते छांदो.८।५।२

ब्रह्मचर्यं भगवति वत्स्याम्युपयां
भगवन्तमिति छां. ४।४।३

ब्रह्मचर्येण ह्येवात्मानमनुविन्दते छांदो.८।५।१

ब्रह्मचर्येण ह्येवात्मानमनु विद्य मनुते छां. ८।५।२

ब्रह्मचात्मानमोमित्येकीकृत्य तदेक-
मजरममृतमभयमोमित्यनुभूय
तस्मिन्निदंसर्वं त्रिशरीरमारोप्य
तन्मयं हि तदेवेति संहरेत् नृसिंहो. १।२

ब्रह्मचारिव्रते स्थितः भ.गी. ६।१४

ब्रह्मचारी गृहस्थश्च २ तर्को. ३

ब्रह्मचारी गृहस्थो वा ललाटहृदयकण्ठ-
बाहुमूलेषु वैष्णवगायत्र्या कृष्णा-
दिनामभिर्वा धारयेत् वासुदेवो. ४

ब्रह्मचारी गृही वानप्रस्थो वा मुख्य-
वृत्तिकाचेद्ब्रह्मचर्यसमाप्यगृहीभवेत् ना. प. ३।७७

ब्रह्मचारी ज्ञानवान्भवति ना.उ.ता.३।१

ब्रह्मचारी धनदायी मेधावी श्रोत्रियः
प्रियो विद्यया वा विद्यां यः प्राह
तानि तीर्थानि षण्मम संहितो. ३.५

ब्रह्मचारी मिताहारी योगी योग-
परायणः। अब्दादूर्ध्वं भवेत्सिद्धो
नात्रकार्या विचारणा [यो.चू.४२+ ध्या.बिं. ७२

ब्रह्मचारी वानप्रस्थो (वा) ललाट-
कण्ठ-हृदय-बाहुमूलेषु वैष्णव-
गायत्र्या कृष्णादिपञ्चनामभिर्वा
धारयेत् [वासुदेवो. ३+ गोपीचं.४

ब्रह्मचारी वेदमधीत्य वेदोक्ताचरित-
ब्रह्मचर्येण दारानाहृत्य पुत्रानुत्पाद्य
ताननुपाधिभिर्वितत्येष्ट्वा च
शक्तितो यज्ञैः कठरु. २

ब्रह्मचारी वेदमधीत्य वेदौ वेदान्वा
चरेद्ब्रह्मचर्यम् कठश्रु. १७

ब्रह्म चिद्ब्रह्म भुवनं ब्रह्मभूतपरम्परा।
ब्रह्माहं ब्रह्मचिच्छत्रुब्रह्मचिन्मित्र-
बान्धवाः अ.पू. ५।२०

ब्रह्मचैतन्यं तेषु प्रतिबिम्बितं भवति त्रि.म.ना.४।१

ब्रह्मजज्ञं देवमीड्यं विदित्वा निचा-
य्येमां शान्तिमत्यन्तमेति कठो. १।१७

ब्रह्मजज्ञानंप्रथमंपुरस्तात् [महाना.५।५+ २शिवसं. ३२
[वा. सं.१३।३+अथर्व. ४।१।१+
[तै. सं.४।२।८।२+ साम.१।३२१

ब्रह्मज्येष्ठमुपासते तैत्ति. २।५

ब्रह्मज्ञानप्रभासन्ध्याकालो गच्छति
धीमताम् पा. ब्र. ७

ब्रह्मज्ञानोत्पत्तेः प्रकृतिं व्याख्यास्यामः।
को नाम स्वयम्भूः पुरुष इति गायत्रीर. १

ब्रह्मज्ञानोपायतया यद्विभूतिः प्रकीर्तिता का.रु.शीर्षके

ब्रह्मज्ञेयमजं नित्यमजेनाजं विबुद्ध्यते अद्वैत. ३३
ब्रह्मणः पादचतुष्टयं निर्विशेषं भवति त्रि.म.ना.४।१
ब्रह्मणःसोम्यतेपादंब्रवाणीति[छां.४।६।३ +७।३+८।३
ब्रह्मणश्च ते पादं ब्रवाणीति छांदो. ४।५।२
ब्रह्मणस्त्वा शपथेन शपामि वनदु. १६०
ब्रह्मणस्त्रिविधः स्मृतः भ.गी.१७।२३
ब्रह्मणस्पतिमेकाक्षरं ग.शो. ५।६
ब्रह्मण्यं बहुपुत्रताम्। श्रद्धामेधे प्रज्ञा तु
जातवेदः संददातु महाना.१४।५
ब्रह्मणः कुत उद्भवः १आत्मो. २६
ब्रह्मणः कोशोऽसि मेधया पिहितः
[तैत्ति. १।४।१ ना.प. ४।४९
ब्रह्मणः सकाशात्पञ्चमहाभूतानि
तन्मात्राणि जायन्ते ना.पू.ता.५।३
(प्रकृतिरिति च–) ब्रह्मणः सका-
शान्नानाविचित्रजगन्निर्माणसामर्थ्य-
बुद्धिरूपा ब्रह्मशक्तिरेव प्रकृतिः निरा. ८
ब्रह्मणः सर्वभूतानि जायन्ते परमात्मनः यो.शि. ४।५
ब्रह्मणः सलोकतांसार्ष्टितांसायुज्यं यान्ति नृ. पू. १।७
ब्रह्मणः सायुज्यमृषयोऽगच्छन् सहवै. १३
ब्रह्मणा कल्पिताकारा लक्षशोऽप्यथ
कोटिशः। संख्यातीताः पुरा जाता
जायन्तेऽद्यापि चाभितः (जीवाः) महो.५।१३६
ब्रह्मणा तन्यते विश्वं मनसैव स्वयम्भुवा।
मनोमयमतो विश्वं यन्नाम परिदृश्यते महो. ४।५०
ब्रह्मणा त्वा शपामि वनदु. १६०
ब्रह्मणा पिहिता गुहा इतिहा. १७
ब्रह्मणा मुखेन न वै देवा अश्नन्ति न
पिबन्त्येतदेवामृतं दृष्ट्वा तृप्यन्ति छांदो.३।१०।१
ब्रह्मणा वाव सर्वे वेदा महीयन्ते तैत्ति. १।५।३
ब्रह्मणि म आत्माऽमृतत्वाय म.ना.१६।२,३
ब्रह्मणे त्वामहसाॐ मित्यात्मानंयुञ्जीत म.ना.१७।१५
ब्रह्मणेदक्षिणांदद्याशान्त्यैपुलकमाहरेत् बृ.जा. ३।१९
ब्रह्मणे स्वाहेत्यग्नौ हुत्वा मन्थे संस्रव-
मवनयति बृह. ६।३।२
ब्रह्मणैव मुखेनैतदेवामृतंदृष्ट्वा तृप्यन्ति छांदो.३।१०।३
ब्रह्मणो जायमानस्य ब्रह्मत्वं च तथा
भवेत् (सुवर्णाज्जायमानस्य सुव-
र्णत्वं च शाश्वतम्) यो. शि. ४।७

ब्रह्मणोऽन्यतरन्नास्तिब्रह्मणोऽन्यज्जगन्नच ते.बिं. ६।४९
ब्रह्मणोऽन्यत्पदं नहि ते.बिं. ६।५०
ब्रह्मणोऽन्यत्फलं नहि ते.बिं. ६।५०
ब्रह्मणोऽन्यन्न किञ्चन ते.बिं. ३।३२
ब्रह्मणोऽपि मायोपाधिवशात्सगुण-
परिच्छिन्नादिप्रतीतिरुपाधिवि-
लयान्निर्गुणनिरवयवादिप्रतीति-
रित्युपनिषत् त्रि.म.ना.३।७
ब्रह्मणोवाएतद्विजयेदेवामहीयध्वम् (मा.पा.)केनो. ४।१
ब्रह्मणो वा एतद्विजये महीयध्वम् केनो. ४।१
ब्रह्मणो वायुरभवत् गायत्रीर. १
ब्रह्मणो वायुर्वायोरोङ्कार ओङ्कारात्सा-
वित्री सावित्र्या गायत्री गायत्र्या
लोकाः भवन्ति [ब्र.शिरः.३।१५+ बटुको. २७
ब्रह्मणो वावैतत्तेजः परस्यामृतस्य.. मैत्रा. ६।२७
ब्रह्मणो वावैता अग्र्यास्तनवः परस्या-
मृतस्याशरीरस्य मैत्रा. ४।६
ब्रह्मणो विवरं यावद्विगुदाभासनाल-
कम्। वैष्णवी ब्रह्मनाडी च निर्वाण-
प्राप्तिपद्धतिः त्रि.ब्रा. २।६
ब्रह्मणोऽव्यक्तम् त्रि.ब्रा. १।१
ब्रह्मणो हि प्रतिष्ठाऽहं भ.गी.१४।२७
ब्रह्मणो हृदयस्थानं कण्ठे विष्णुः
समाश्रितः। तालुमध्ये स्थितो
रुद्रो ललाटस्थो महेश्वरः ब्र. वि.४१
ब्रह्मण्यमृते तेजोमये परञ्ज्योतिर्मये...
रमते... (गणेशः) ग. शो.५।७
ब्रह्मण्यः पुण्डरीकाक्षो ब्रह्मण्यो विष्णु-
रच्युतः [नारा. ४+ आ. प्र. १
ब्रह्मण्याधाय कर्माणि भ.गी. ५।१०
ब्रह्मण्येव विलीनात्मा निर्विकारो
विनिष्क्रियः अध्यात्मो.४३
ब्रह्मण्यो देवकीपुत्रो ब्रह्मण्यो मधुसूदनः।
ब्रह्मण्यः पुण्डरीकाक्षो ब्रह्मण्यो
विष्णुरच्युतः [नारा. ४ आ. प्र. १
ब्रह्मण्यो ब्रह्मकृच्छ्रब्रह्मलोके महीयते इतिहा. १३
ब्रह्म तल्लक्ष्यमुच्यते मुण्ड. २।२।४
ब्रह्म तं परादाद्योऽन्यत्रात्मनो ब्रह्म वेद बृह.४।५।७

ब्रह्मतेजोमयानन्दरसप्रवाहैरतिशोभितं
ब्रह्मविद्या-तरङ्गिण्याः प्रवाहैः
सुमङ्गलं निरतिशयानन्तदिव्यानन्द-
तेजोज्वालाराशिमण्डलं ज्वलति सि.सा. ३।१
ब्रह्मतेजोराश्यभ्यन्तरसमासीनं...
विष्वक्सेनं ध्यात्वा...विद्याविभूतिं
व्याप्य...परमानन्दं प्राप त्रि.म.ना.६।६
ब्रह्मत्वं रसचेतसि वराहो.२।७९
ब्रह्मत्वे योजिते स्वामिञ्जीवभावो
न गच्छति वराहो.२।७०
ब्रह्म देहत्वमापन्नं वारिबुद्बुदतामिव।
दशद्वारपुरं देहं दशनाडीमहापथम् यो.शि.१।१६५
ब्रह्मद्वारमिदमित्येवैतदाह यस्तपसा-
हतपाप्मा मैत्रा. ४।४
ब्रह्मद्वारे प्रविष्टे तु सम्यक्कुथनमाचरेत् योगकुं.२।४२
ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति भ.गी. २।७२
ब्रह्मनिष्ठस्तथा योगी पृथग्भावं
न विन्दति अमन. १।३१
ब्रह्मन्नतिथिर्नमस्यः कठो. १।९
ब्रह्मन्निधिं मनसा वेदयन्तः पश्यन्तो
गुह्यमपरं परं च। अनध्वगा
अध्वसु पारयिष्णवः ब्राह्मणास्तु
सदृशाः सूर्येण इतिहा. १८
ब्रह्मंस्त्वमसि विश्वधृत्तेजोदास्त्वमसि म.ना.१७।१५
ब्रह्मन् देवदर्शीत्याख्याथर्वणशाखायां
परमतत्त्वरहस्याख्याथर्वणमहा-
नारायणोपनिषदि त्रि.म.ना.१।२
(ॐ) ब्रह्मन् ॐ ब्रह्मन्
ॐ ब्रह्मन् ग. शो. २।१
(एवं) ब्रह्मपरिज्ञानादेव मर्त्योऽमृतो
भवेत् वराहो. २।१९
ब्रह्म पश्चात् ब्रह्म दक्षिणतश्चोत्तरेण मुण्ड.२।२।११
ब्रह्म पुच्छं प्रतिष्ठा तैत्ति. २।५
ब्रह्मपुत्रस्तपस्तेपे सिद्धक्षेत्रे महायशाः
स सर्वस्य वक्ता ग. पू. १।६
ब्रह्मपूता पुनातु माम् महाना.११।२
ब्रह्म प्रजापतिं (असृजत् (बृह. ५।५।१
ब्रह्मप्रणवध्यानानुसन्धानपरो भूत्वा
सर्वकर्मनिर्मुक्तः...सत्यवाक्शुचि-
रद्रोही ग्राम एकरात्रं पत्तने पञ्चरात्रं
क्षेत्रे पञ्चरात्रंतीर्थे पञ्चरात्रमनिकेतः
स्थिरमतिर्नानृतवादी गिरिकन्दरेषु
वसेदेक एव ना.प. ७।२
ब्रह्मप्रणवमनुस्मरन् भ्रमरकीटन्यायेन
शरीरत्रयमुत्सृज्य सन्यासेनैव
देहत्यागं करोति, स कृतकृत्यो
भवति ना.प. ३।८७
ब्रह्मप्रणवसन्धानं नादोज्योतिर्मयःशिवः ना. बिं. ३०
ब्रह्मप्रणवसँल्लग्ननादो ज्योतिर्मयात्मकः ना. बिं. ४६
ब्रह्मप्रणवः षोडशमात्रात्मकः सोऽवस्था-
चतुष्टयचतुष्टयगोचरः प. हं. पं. ९
ब्रह्म प्रपद्ये ब्रह्मकोशं प्रपद्ये सह्वै. २३
ब्रह्मप्रवृत्तौ तत्प्रणवहंसस्त्रेणैव ध्यान-
माचरन्ति पा. ब्र. ३
ब्रह्म ब्रह्मविदां च यत् अ.पू. ३।१९
ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः भ.गी. ८।२४
ब्रह्म ब्रह्मेत्यथायान्ति ये विदुर्ब्राह्मणा-
स्तथा। अत्रैव ते लयं यान्ति
लीनाश्चाव्यक्तशालिनः मंत्रिको. २०
ब्रह्म ब्राह्मणैश्च गां, गोभिर्ब्राह्मणान्
ब्राह्मण्येन हविर्हविषा आयुरायुषा
सत्येन सत्यं धर्मेण धर्मं तर्पयामि... अ.शिरः.१।१
ब्रह्म ब्राह्मीं व्याहृतिं ब्रह्मदैवतं...भूतानि
स्थावरजङ्गमान्यभवत् २ प्रणवो. २
ब्रह्मभावमिदं सूत्रं धारयेद्यः स चेतनः
[ब्रह्मो. ९+ ना. प.३।८०
ब्रह्मभावमिदं सूत्रं धारयेद्यः स मुक्तिभाक् परब्र. ११
ब्रह्मभावं प्रपद्यैव यतिर्नावर्तते पुनः २आत्मो.२५
ब्रह्मभावे मनश्चारं ब्रह्मचर्यं जा.द. १।१४
ब्रह्मभूतमकल्मषम् भ.गी.६।२७
ब्रह्मभूतः प्रशान्तात्मा ब्रह्मानन्दमयः
सुखी। स्वच्छरूपो महामौनी
वैदेही मुक्त एव सः ते.बिं. ४।३३
ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा भ.गी.१८।५४
ब्रह्मभूतोऽधिगच्छति भ.गी. ५।२४
ब्रह्मभूयाय कल्पते [भ.गी.१४।२६+ १८।५३
ब्रह्मभेदो न कथितो ब्रह्मव्यतिरिक्तं
न किञ्चिदस्ति त्रि.म.ना.४।२

ब्रह्ममात्रमिदं सर्वं ब्रह्मणोऽन्यन्न किञ्चन ते.बिं.३।३२
ब्रह्ममात्रं जगदिदं ते.बिं.५।३०
ब्रह्ममार्गे सम्यक्सम्पन्नः...ब्रह्मभूयाय भवति प.हं. प. ६
ब्रह्ममूर्धानं दिक्श्रवणं ब्रह्माण्डगण्डं... दृष्ट्वा स्तुवन्तिस्म ग.शो. ४।७
ब्रह्ममेतु माम्। मधु मेतुमाम्। ब्रह्मैव मधुमेतु माम्। [तै.आ.१०।४८+ त्रिसु. १+ म.ना.१२।१
ब्रह्ममेधया। मधु मेधया ब्रह्ममेव मधुमेधया। अद्या नो देवसेवितः प्रजावत्सावीः सौभगम् [त्रिसु.२+ म.ना.१२।२
ब्रह्म मेधवा। मधु मेधवा ब्रह्ममेव मधु मेधवा [म. ना. १२।३ त्रिसु. ३
ब्रह्ममेव मधु मेधवा [त्रिसु. ३+महाना [तै. आ.+ १२।३+ १०।५०
ब्रह्मयज्ञेन यक्ष्यमाणः प्राच्यां दिशि ग्रामादच्छदिर्दर्शउदीच्यांप्रागुदीच्यां वोदित आदित्ये दक्षिणत उपवीयोपविश्यहस्तावविनिज्यत्रिराचामेत् सहवै. १५
ब्रह्मयज्ञो वा एष यत्पूर्वेषां वचनं मैत्रा. १।१
ब्रह्मरन्ध्रं गते वायौ नादश्चोत्पद्यतेऽनघ जा.द. ६।३६
ब्रह्मरन्ध्रं सुषुम्णाया वदनेन पिधाय सा। अलम्बुसा सुषुम्णायाः कुहूर्नाडी वसत्यसौ वराहो. ५।२३
ब्रह्मरन्ध्रे भ्रुवोर्मध्ये हृदये चित्रविं हरिम्। गोपीचन्दनमालिप्य तत्र ध्यात्वाऽऽप्नुयात्परम् वासुदेवो.११
ब्रह्मरन्ध्रे महास्थानेवर्ततेसततं शिवा। चिच्छक्तिः परमा देवी मध्यमे सुप्रतिष्ठिता यो.शि.६।४७
ब्रह्मरूपतयां पश्यन्ब्रह्मैव भवति स्वयम् वराहो.२।१३
ब्रह्मरूपतया ब्रह्म केवलं प्रतिभासते २ आत्मो. १
ब्रह्मरूपं च विज्ञेयं सर्वरूपं विभावयेत् २ बिल्वो. ९
ब्रह्मलोकपदान्वेषी रुद्राराधनतत्परः अ. ना. २
(अत एव) ब्रह्मलोकस्था अपि ब्रह्ममुखाद्वेदान्तश्रवणादि कृत्वा तेन सह कैवल्यं लभन्ते मुक्ति.१।५८
ब्रह्मलोको गलः प्रोक्तो वायवः प्राणरूपिणः। वनस्पत्य ओषध्यो लोमानि परिचक्षते सुबाका.१७

ब्रह्मवर्चसेन मे सम्त्विष्टस्व महाना.१६।११
ब्रह्मवर्चस्यन्नादो भवति [मा. पा.] छां.उ.२।१२।२
ब्रह्मवर्चस्यर्षिसंहिता भवति संहितो. १।१
ब्रह्मवर्चस्वी भवति यस्तथाऽधीते संहितो. १।१
ब्रह्मवर्चस्यन्नादो भवति सर्वमायुरेति ज्योग्जीवति महान्प्रजयां पशुभिर्भवति महान्कीर्त्या न प्रत्यङ्ग्निमाचामेन्न निष्ठीवेत्तद्व्रतम् छांदो.२।१२।२
ब्रह्म वा इदमग्र आसीत् बृह. १।४।१
ब्रह्म वा इदं सर्वम् नृसिंहो. ७।५
ब्रह्मवाक्यं तत् महावा. २
(ॐ) ब्रह्मवादिनो वदन्ति। किं कारणं किंब्रह्म कुतः स्म जाताजीवाम केन क्व च सम्प्रतिष्ठाः श्वेताश्व. १।१
ब्रह्मवादिनो वदन्ति यद्वसूनां प्रातः सवनᳩ रुद्राणां माध्यन्दिनᳩ सवनमादित्यानां च विश्वेषां च देवानां तृतीयसवनम् छांदो.२।२४।१
ब्रह्मवादिनो वदन्त्यस्तमित आदित्ये कथं वास्योपस्पर्शनमिति १सं.सो. १।२
ब्रह्मवान् भवति (ब्रह्मोपासकः) तैति.३।१०।४
ब्रह्मविज्ञानी किं गृह्णाति जहाति किम् पा. ब्र.३२
ब्रह्मविज्ञानलाभाय...शान्तिदान्त्यादिभिः सर्वैः साधनैः सहितो भवेत् ना.प. ६।२८
ब्रह्मविज्ञानसम्पन्नः प्रतीतमखिलं जगत्। पश्यन्नपि सदा नैव पश्यति स्वात्मनः पृथक् [पा. ब्र. ५१+ वराहो.२।२७
ब्रह्मविद इव सोम्य ते मुखं भाति को नु त्वाऽनुशशासेति छांदो.४।१४।२
ब्रह्मविदाप्नोति परम् [तैत्ति.२।१।१+ भस्मजा. २।७
ब्रह्मविदित्येवमेवैष भगवन्निति वै याज्ञवल्क्य जाबा. ५
ब्रह्मविदिदमयमिदमेकविᳪशतिरन्नादन्नरसमयात्प्राणो व्यानोऽपान आकाशः पृथिवी पुच्छᳪषड्विंशतिः तैत्ति. २।१०
ब्रह्मविदिवसोम्यभासि, कोनुत्वानुशशास छांदो.४।९।२
ब्रह्मविद्भवति ज्ञानात्सर्वं ब्रह्मात्मनैव तु। ब्रह्मक्षत्रादिकं सर्वं यस्य स्यादोदनं सदा पा. ब्र. ४४

ब्रह्मविद्ब्रह्मणि स्थितः भ.गी.५।२०
ब्रह्मविद्य एवं वेदेत्युपनिषत् तैत्ति. २।१०
ब्रह्मविद्यापरिज्ञानं ब्रह्मप्राप्तिकरं स्थितम् शु.र.उ. ३।१
ब्रह्मविद्यासाकारश्चानन्दसाकार उभयात्मकसाकारश्चेति त्रि.म.ना.२।१
ब्रह्मविद्यासेविनो ज्ञानिन आत्मवेदनेन तां लीलां न प्राप्नुवन्ति सामर. ५२
ब्रह्मविद्यां च बाल्यं च निर्विद्य मुनिरात्मवान् [अ. पू. ४।३८ शाट्या. २४
ब्रह्मविन्मात्रेणाकुलमेकोत्तरशतं तारयति पैङ्गलो. ४।१
ब्रह्मविष्णुमयो रुद्रः, अग्नीषोमात्मकं जगत् । पुल्लिङ्गं सर्वमीशानं स्त्रीलिङ्गं भगवत्युमा रुद्रहृ. ९
ब्रह्मविष्णुमहेशानां त्र्यग्नीनांच धारणं बृ.जा.४।३७
ब्रह्मविष्णुमहेश्वरत्वमनुसन्धाय... मूलमेकं सत्यं मृण्मयं विज्ञातं स्यात् परब्र. ४
ब्रह्मविष्णुमहेश्वरात्मकमग्नित्रयकलोपेतं चिद्ग्रन्थिबन्धनम् पा. ब्र. ३
ब्रह्मविष्णुरुद्रादयो यस्मादुत्पद्यन्ते लीयन्ते सामर. २२
ब्रह्म-विष्णु-रुद्रादीनामेकलक्ष्यं सर्वकारणं परं ब्रह्मात्मन्येव पश्यमानो गुह्याविहरणमेव निश्चयेन ज्ञात्वा... परं ब्रह्म प्राप्नोति मं.ब्रा. ३।१
ब्रह्मविष्णुरुद्रेन्द्रास्ते सम्प्रसूयन्ते सर्वाणि चेन्द्रियाणि सह भूतैः अ.शिखो. ३
ब्रह्मविष्णुशिवरूपिणी चैतन्यदीप्ता (माया) नृसिंहो. ९।३
ब्रह्मविष्णुशिवादीनां मन्त्रं जाप्यं विशारदैः योगरा. ३
ब्रह्मविष्ण्वादिगणानामीशभूतमित्याह वद्गणेश इति ग. शो. ३।१
ब्रह्मविष्ण्वादिभिः सेव्यं सर्वेषां जनकं परम् (ब्रह्म) पञ्चब्र. १३
[आसुरमिति च-]ब्रह्मविष्ण्वीशानेंद्रादीनामैश्वर्यकामनया निरशनजपाग्निहोत्रादिष्वन्तरात्मानं सन्तापयति चात्युग्ररागद्वेषविहिंसादम्भाद्यपेक्षितं तप आसुरम् निरा. २७

[जीव इति च-] ब्रह्मविष्ण्वीशानेन्द्रादीनां नामरूपद्वारा स्थूलोऽहमिति मिथ्याध्यासवशाज्जीवः निरालं. ७
ब्रह्मवृत्त्या हि पूर्णत्वं तथा पूर्णत्वमभ्यसेत् ते. बिं. १।४२
ब्रह्मवेदनमात्रेण ब्रह्माप्नोत्येव मानवः कठरु. १२
ब्रह्मवेदस्याथर्वणं शुक्रमत एव मन्त्राः प्रादुर्बभूवुः २ प्रणवो. ४
ब्रह्मव्यतिरिक्तं न किञ्चिदस्ति त्रि.म.ना.४।२
(तस्मात्) ब्रह्मव्यतिरिक्तं सर्वं बाधितमेवं त्रि.म.ना.३।३
ब्रह्मव्यतिरिक्तं सर्वं नश्वरमिति निश्चित्याथो क्रमेण यः सन्न्यसति स सन्न्यासोऽनिमित्तसन्न्यासः ना. प. ५।४
ब्रह्मशब्देन तद्ब्रह्म स्वप्रकाशात्मरूपकम् शु. र. उ. ३।८
ब्रह्म शाश्वतम् त्रि. ना. १।५
[तप इति च-] ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्येत्यपरोक्षज्ञानाग्निना ब्रह्माद्यैश्वर्याशासिद्धसङ्कल्पबीजसन्तापं तपः निरालं.२८
ब्रह्मसदनं चरतो मे ध्यातः स्तुतः परमेश्वरः... परार्धान्ते सोऽबुध्यत गो. पू. ३।८
ब्रह्मसन्ध्याक्रिया मनोयागः पा. ब्र. ३
ब्रह्म स ब्रह्मवित्स्वयम् मुक्तिको.२।६४
ब्रह्म सम्पद्यते तदा भ.गी.१३।३१
ब्रह्म सम्पद्यते योगी न भूयः संसृतिं व्रजेत् त्रि.ब्रा.२।१६२
ब्रह्म सरूपमनुमेनमायायनं मा विवधीर्विक्रमस्व[महाना.१३।११+ चित्यु. १५।१
(तथा) ब्रह्म सर्वान्तरात्मा मध्ये प्रकाशितम् अद्वैतो. ३
ब्रह्मसंस्थोऽमृतत्वमेति छां.२।२३।१
ब्रह्मसाक्षात्कारानुभवविशेषबोधसारतरानन्तप्राकारैः समुज्ज्वलितम् त्रि. ता. ३।१
ब्रह्मसूत्रपदं ज्ञेयं ब्राह्मं विष्णुकलक्षणम् पा. ब्र. ११
ब्रह्मसूत्रपदैश्चैव भ.गी. १३।५
ब्रह्मसूत्रमहमेव, विद्वान्त्रिवृत्सूत्रं त्यजेद्विद्वान्य एवं वेद आरुणि. ३
ब्रह्म सोमोऽहं पवनः सोमोऽहं पवते सोमोऽहं... भस्मजा. २।५

ब्रह्मस्थाने तु नादः स्याच्छाकिन्यमृतवर्षिणी । षट्चक्रमण्डलोद्धारं ज्ञानदीपं प्रकाशयेत् — ब्र.वि. ७६
ब्रह्म स्वयम्भु ब्रह्मणे स्वयम्भुवे स्वाहा — चित्यु. ६।१
ब्रह्मस्वरूपविज्ञानाज्जगद्भोज्यं भवेत्खलु — पा. ब्र. ४५
ब्रह्मस्वरूपं निरञ्जनं परमं व्योमकं तत्साम्नश्चतुर्थं पादं जानीयाद्यो जानीते सोऽमृतत्वं च गच्छति — नृ. पू. १।२
ब्रह्मस्वरूपं निरञ्जनं परमव्योम्निकं तत्साम्नः षष्ठं पादं जानीयात्तेन वक्रतुण्डाय हुमिति यो जानीयात्सोऽमृतत्वं च गच्छति — ग.पू. १।१२
ब्रह्मस्वात्मतया नित्यं भक्षितं सकलं तदा — पा. ब्र. ४६
ब्रह्म स्वानुभूतिः, गुरुः शिवो देवः — रुद्रोप. २
ब्रह्महत्या-सुरापान-स्वर्णस्तेय-गुरुतल्पगमन-तत्संयोगिपातकेभ्यः पूतो भवति — पैङ्गलो. ४।२४
ब्रह्महत्यां वा एते घ्नन्ति [त्रिसु. १+ — महाना. १२।१
ब्रह्म ह देवेभ्यो विजिग्ये तस्य ह ब्रह्मणो विजये देवा अमहीयन्त त ऐक्षन्तास्माकमेवायं विजयोऽस्माकमेवायं महिमेति — केनो. ३।१
ब्रह्म ह वा इदमग्र आसीत् — मैत्रा. ६।१७
ब्रह्म (ह) वै ब्रह्माणं पुष्करे पुष्करे ससृजे — २ प्रणवो. १
ब्रह्म ह श्वेताश्वतरोऽथ विद्वान् — श्वेताश्व.६।२१
ब्रह्मांस्तपस्व तपस्वेत्युक्त्वाऽन्तर्हिते सति ब्रह्मा तपश्चचार — ग. शो. ३।८
ब्रह्मांस्त्वेन्द्रियाणि याजकानि ध्यात्वा ...शब्दतु रसं ध्यात्वैवमग्नौ हुत्वाऽङ्कुस्पर्शात्कलेवरोव अंहीष्यते — मुद्गलो. २।५
ब्रह्माकारमनोवृत्तिप्रवाहोऽहङ्कृतिं विना ...
ब्रह्माक्षरसमुद्भवम् — भ.गी. ३।१५
ब्रह्माग्नावपरे यज्ञं — भ.गी. ४।२५
ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम् — भ.गी. ४।२४
ब्रह्माङ्गलक्षणयुक्तो यज्ञसूत्रम् , ब्रह्मसूत्रम् । — पा. ब्र. ३
ब्रह्मा च नारायणः — नारा. २
ब्रह्माणमीशं कमलासनस्थं — भ.गी. ११।१५
ब्रह्माणमुपदिशति स्म ब्रह्मन् कुरु सृष्टिं — ग. शो. ३।४
ब्रह्माणमेवाप्येति यो ब्रह्माणमेवास्तमेति — सुबालो. ९।११
ब्रह्माणं पृथिवीभागे विष्णुं तोयांशके तथा — जा.द. ८।५
ब्रह्माण्डतद्गतलोकान्कार्यरूपांश्च कारणत्वं प्रापयित्वा...सर्वाणि भौतिकानि कारणे भूतपञ्चके संयोज्य भूमिं जले जलं वह्नौ वह्निं वायौ वायुमाकाशे चाकाशमहङ्कारे चाहङ्कारं महति महदव्यक्तेऽव्यक्तं पुरुषे क्रमेण विलीयते — पैङ्गलो. ३।४
ब्रह्माण्डमपि पिण्डाण्डं त्यजतां मलभाण्डवत् । चिदात्मनि सदानन्दे देहरूढामहं धियम् । निवेश्य लिङ्गमुत्सृज्य केवलो भव सर्वदा — अध्यात्मो. ८।९
ब्रह्माण्डस्योदरे देवा दानवा यक्षकिन्नराः । मनुष्याः पशुपक्ष्याद्यास्तत्तत्कर्मानुसारतः — कठरु. १९
ब्रह्माण्डं चैव पिण्डाण्डं लोका भूरादयः क्रमात्...स्वस्वोपाधिलयादेव लीयन्ते प्रत्यगात्मनि — योगकुं. ३।२२
ब्रह्माण्डं पञ्चभूतस्थं पञ्चभूतमयी तनुः । सर्वं भूतमयं चेति त्यक्त्वा नास्तीति भावयेत् — अमन. १।१७
ब्रह्माण्डं सकलं पश्येत् पाणिस्थमिव मौक्तिकम् — अमन. १।८०
ब्रह्माण्डाखण्डविग्रहम् (महेशं) — पं. ब्र. ११
ब्रह्माण्डाद्बहिरूर्ध्वे हि महत्तत्त्वमहङ्कृतिः — गुह्यका. ७
ब्रह्माण्डार्धं कपालं हि शिरस्तस्या विभावयेत् — गुह्यका. ८
ब्रह्माण्डावरणं विनश्यति तद्धि विष्णोः स्वरूपम् — त्रि.म.ना. ३।५
ब्रह्मात्मसच्चिदानन्दात्मकमंत्रमित्युपासितव्यम् — श्रीवि.ता. १।१
ब्रह्मात्मैकत्वविज्ञानं हेयं मिथ्यात्वकारणात् — परब्र. ३
ब्रह्मात्मैवात्र ह्येव न विचिकित्स्यमित्योंसत्यं तदेतत्पण्डिता एव पश्यन्ति — नृ.उ.ता. ९।८

ब्रह्मादयश्च (इंद्रादयश्च) यक्षान्ता
वृन्तभागे व्यवस्थिताः (बिल्ववृक्षस्य) २बिल्वो. १०
ब्रह्मादयस्त्रयो मूर्तयः...अकारोकारम-
कारा एते सर्वे प्रणवमयोर्ध्वपुण्ड्र-
त्रयात्मकास्तदेतदोमित्येकधा
समभवन् गोपीचं. ४
ब्रह्मादयस्त्रयो मूर्तयस्तिस्रो व्याहृतय-
स्त्रीणि छन्दांसि त्रयोऽग्नय इति वासुदे. ४
ब्रह्मादिकार्यरूपाणि स्वे स्वे संहृत्य
कारणे। सर्वकारणमव्यक्तमनिरूप्य-
मचेतनम्। साक्षादात्मनि सम्पूर्णे
धारयेत्प्रणवेन तु। इन्द्रियाणि
समाहृत्यमनसाऽऽत्मनि योजयेत् जा.द.८।८-९
ब्रह्मादिकीटपर्यन्ता प्राणिनो मयि
कल्पिताः। बुद्बुदादिविकारान्त-
स्तरङ्गः सागरे यथा आ. प्र. १५
ब्रह्मादिपञ्चब्रह्माणोयत्रविश्रान्तिमाययुः।
तदखण्डं सुखाकारं रामचन्द्रपदंभजे पं. ब्र. शीर्षकं
ब्रह्मादिपिपीलिकापर्यन्तं सर्वप्राणि-
बुद्धिष्ववशिष्टतयोपलभ्यमानः सर्व-
प्राणिबुद्धिस्थो यदा तदा कूटस्थः
इत्युच्यते सर्वसारो. ५
ब्रह्मादिलोकपर्यन्ताद्विरक्त्या यल्लभेत्
प्रियम्। सर्वत्र विगतस्नेहः
सन्तोषं परमं विदुः जा.द. २।६
ब्रह्मादिस्तम्बपर्यन्तं मृषामात्रा उपाधयः।
ततः पूर्णं स्वमात्मानं पश्येदेका-
त्मना स्थितम् अध्यात्मो.१९
ब्रह्मादीनामगोचरा (अनन्तमहामाया) त्रि.म.ना.४।९
ब्रह्मादीनां वाचकानां मन्त्रोऽन्वर्था-
दिसंज्ञकः। जप्तव्यो मन्त्रिणा नैवं
विना देवः प्रसीदति रा. पू. १।११
ब्रह्मा देवानां पदवीः कवीनामृषि-
र्विप्राणां महिषो मृगाणाम्
[महाना. ८।४+१२।३+ वनदु. ४७,६०
ब्रह्मा देवानां प्रथमः सम्बभूव यो.चू. ७२
ब्रह्मा देवानां प्रथमः सम्बभूवविश्वस्य
कर्ता भुवनस्य गोप्ता मुंडको. १।१

ब्रह्मा देवानां सवितुः कवीनामृषि-
र्विप्राणां महिषो मृगाणाम् ग.पू. १।१
ब्रह्माद्यं स्थावरान्तं च पश्यन्ति
ज्ञानचक्षुषः मंत्रिको.१६
ब्रह्माद्वितीयमेव सत्यम् त्रि.म.ना.४।२
ब्रह्माघोराङ्गिरसे ददौ (ब्रह्मविद्यां) सुबालो.७।२
ब्रह्मानन्दकारणम् (गोपीचंदनम्) गोपीचं. ६
ब्रह्मानन्दमयविमानकोटिभिरतिमङ्गल-
मनन्तोपनिषदर्थारामजालसङ्कुलं...
प्रणवाख्यं विमानं विराजते त्रि.म.ना.७।९
ब्रह्मानन्दमयानन्त-प्राकार-प्रासाद-
तोरणविमानोपवनावलिभिर्ज्वल-
च्छिखरैरुपलक्षितो निरुपमनित्य-
निरवद्यनिरतिशयनिरवधिकब्रह्मा-
नन्दाचलो विराजते [त्रि.म.ना.५।५+ सि.सा.१।१
ब्रह्मानन्दपरं ज्योतिः ते.बिं.४।७९
ब्रह्मानन्दमयी विद्यायापरा सा परा गतिः गान्धर्वो. ५
ब्रह्मानन्दरसनिर्भरैरसङ्ख्यैरतिमङ्गलं...
निरतिशयाद्वैतपरमानन्दलक्षण-
मादिनारायणं ध्यायेत् त्रि.म.ना.७।१२
ब्रह्मानन्दरसारूढो ब्रह्मानन्दैकचिद्घनः ते. बिं. ४।६०
ब्रह्मामृतरसे तृप्तो ब्रह्मानन्दानुभावकः ते.बिं. ४।५८
ब्रह्मानन्दसमष्टिकन्द...ब्रह्मानन्द-
मयानन्तनिरतिशयानन्दसागरा-
कारम्। आत्मसमानानन्दविभूति-
पुरुषानन्तानन्दमण्डितं नित्य-
मङ्गलमनन्तविभवम् सि.सा. १।१
ब्रह्मानन्दं परमं दक्षिणे च ब्रह्मानन्दं
परमं चोत्तरे च पा. ब्र. ३५
ब्रह्मानन्दं सदा पश्यन्कथंबध्येतकर्मणा वराहो.२।१६
ब्रह्मानन्दानुसन्धाने नास्मादन्यत्तु
किञ्चन। सुलभं त्रिषु लोकेषु
यज्ज्ञात्वाऽमृतमश्नुते गान्धर्वो. ११
ब्रह्मानन्दामृतरसाम्भोनिधितरङ्गिण्याः
प्रवाहैरतिमङ्गलम् सि. सा. ६।१
ब्रह्मानन्दाश्रुसंजातेवृन्दावननिवासिनि।
सर्वावयवसम्पूर्णे अमृतोपनिषद्रसे।
त्वं मामुद्धरकल्याणि महापापाब्धि-
दुस्तरात् तुलस्यु. ११

ब्रह्मानन्दे निमग्नस्य विषयाशानतद्भवेत् आ.प्र. १७
(यद्वा) ब्रह्मानन्दे विलीयताम् (धीः) १अवधू.२५
ब्रह्मा नारायणः, शिवश्च नारायणः त्रि.म.ना.२।८
ब्रह्मान्वविन्दद्दश होतारमर्णे चित्त्यु.११।१
ब्रह्मा पूरक इत्युक्तो विष्णुः कुम्भक उच्यते । रेचो रुद्र इति प्रोक्तः प्राणायामस्य देवताः ध्या. बिं.२१
ब्रह्मा ब्रह्मणी वेदितव्ये देव्यु. १
ब्रह्माब्रह्माऽहं प्राञ्चः प्रत्यञ्चोऽहम् अ. शिरः. २
ब्रह्माभयं वै ब्रह्माभयꣳ हि वै ब्रह्म भवति य एवं वेद बृह.४।४।२६
ब्रह्मामृतरसासक्तो ब्रह्मामृतरसः स्वयम् ते.बिं.४।५७
ब्रह्मामृतरसास्वादो ब्रह्मामृतरसायनः ते.बिं.४।५६
ब्रह्मामृतरसे मग्नो ब्रह्मानन्दशिवार्चनः ते.बिं. ४।५७
ब्रह्मामृतं पिबेद्भैक्षमाचरेद्देहरक्षणे । वसेदेकान्तिको भूत्वा चैकान्ते [स्कन्दो. १२+ मैत्रे. २।३
(अथ) ब्रह्मा रुद्रो विष्णुरित्यधिपतिवस्त्येषा मैत्रा. ६।५
ब्रह्मा रुद्रो विष्णुरित्येकेऽन्यमभिध्यायन्त्येकेऽन्यम् मैत्रा. ४।५
ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम् । ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना [शरभो. २७+ भ.गी. ४।२४
ब्रह्मावर्ते महाभांडीरवटमूले महासत्राय समेता महर्षयः शौनकादयस्ते ह समित्पाणयस्तत्त्वजिज्ञासवो मार्कण्डेयं चिरजीविनमुपसमेत्य पप्रच्छुः केन त्वं चिरं जीवसि केन वाऽऽनन्दमनुभवसीति द. मू. १
ब्रह्माह्मोऽसि गौतम यो मामुपागा एहि त्वा ज्ञपयिष्यामीति कौ. त. १।१
ब्रह्मविलोकनधियं न जहाति योगी वराहो.२।८२
ब्रह्मावलोकयंस्तद्रूपो भवति अद्वयता. १
ब्रह्मावलोकयोगपट्टः निर्वाणो. २
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च सर्वा वा भूतजातयः । नाशमेवानुधावन्ति सलिलानीव वाडवम् महो. ३।५२
ब्रह्मा विश्वः कतमः स्वयम्भूः प्रजापतिः संवत्सरः म.ना.१७।१२
ब्रह्मा शक्तिर्महादेवोजन्यतेपुरुषोत्तमात् सि. वि. ३
ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम् भस्मजा. २।७
ब्रह्मासाध्यं च यो गच्छेद्ब्रह्महा स प्रकीर्तितः शिवो. ७।६२
ब्रह्माऽसि पूर्णोऽसि परात्परोऽसि ते.बिं. ५।६१
ब्रह्मा सृजति लोकान्वै ते.बिं.५।८८
ब्रह्मास्त्रां महाविद्यां शाम्भवीं...देवीमाहूय ध्यायेत् पीताम्बरो.१
ब्रह्मास्मि नेतरकलाकलनं हि किञ्चित् अ.पू. १।६९
ब्रह्मास्मि प्रभवोऽस्म्यहम् मैत्रे. ३।१
ब्रह्माहमस्मि अहमस्मि त्रि.म.ना.८।३
ब्रह्माहमस्मि, योऽहमस्मि,ब्रह्माहमस्मि महाना.६।७
ब्रह्माहमस्मीति कृतकृत्यो भवति मं.ब्रा. ३।३
ब्रह्माहमस्मीति चिन्तयन्निदं सर्वं यदयमात्मेति भावयन्कृतकृत्यो भवति मं.ब्रा. २।८
ब्रह्माहमस्मीति तत्त्वमस्यादिवाक्यार्थस्वरूपानुसंधानं कुर्वन्नुदीचीं दिशं गच्छेत् प. हं. प. ५
ब्रह्माहमस्मीति भावयन्गुर्वर्थं ग्राममुपेत्य ध्रुवशीलोऽष्टौ मास्येकाकी चरेद्द्वावेवाचरेत् प. हं. प. ७
ब्रह्माहमिति यस्यान्तः स जीवन्मुक्त उच्यते ते.बिं. ४।२
ब्रह्माहं ब्रह्म चिच्छत्रुर्ब्रह्म चिन्मित्रबान्धवाः अ.पू. ५।२०
ब्रह्माहं, विष्णुरहं, सौरोऽहं, ब्राह्मोऽहम् अक्षि. भा. १
ब्रह्मा हि परः परो हि ब्रह्मा म.ना.१६।१२
ब्रह्मा हैव ता ३ इ ऊर्ध्वं स्वेवोदसर्पत् १ऐत.१।४।२
ब्रह्मेदं बृंहिताकारं बृहद्बृहदवस्थितम् अ. पू.२।३७
ब्रह्मेन्द्रमग्निं जगतः प्रतिष्ठाम् । दिव आत्मानꣳ सवितारं बृहस्पतिम् । चतुर्होतारं प्रदिशो नु क्लृप्तम् । वाचो वीर्यं तपसाऽन्वविन्दत् चित्त्यु.११।२
ब्रह्मैकमेव, ब्राह्मणत्वमेकमेव परब्र. ६
ब्रह्मैकस्त्वं द्विधा त्रिधा शांतिस्त्वं चतुर्वे. ८
ब्रह्मैतद्ब्रह्मण उज्ज्ञार चित्त्यु.११।६
ब्रह्मैव केवलमहं परिपूर्णमस्मि वराहो.२।७१

ब्रह्मैव केवलं शुद्धं विद्यते तत्त्वदर्शने २ आत्मो. ३
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं भ.गी. ४।२४
ब्रह्मैव पुष्पं ता अमृता आपः छांदो. ३।५।१
ब्रह्मैव ब्रह्मवित् स्वयम् २आत्मो.२३
ब्रह्मैव भवति, इत्याह भगवान्ब्रह्मा शरभो. ३७
ब्रह्मैव भवति स्वयम् कठरु. १५
ब्रह्मैव वित्तं पुरुषस्य केवलम् इतिहा. ४४
ब्रह्मैवविद्यते साक्षाद्वस्तुतोऽवस्तुतोऽपिच पा. ब्र. ३२
ब्रह्मैव सकलं स्वयम् ते.बिं.६।४३
ब्रह्मैव सन्ब्रह्माप्येति [बृह.४।४।६+ सुबा. ३।३+
[नृसिंहो. ९।२,५।९,५।८+ सद्वै. २
ब्रह्मैव सर्वमित्येव भाविते ब्रह्म वै पुमान्।
सर्वत्रावस्थितं शान्तं चिद्ब्रह्मेत्य-
नुभूयते अ. पू.५।२१
ब्रह्मैव सर्वनामानि रूपाणि विविधानि
च। कर्माण्यपि समग्राणि
बिभर्तीति विभावय यो.शि. ४।६
ब्रह्मैव सर्वं चिन्मात्रं ब्रह्ममात्रं जगत्त्रयम् ते. बिं.६।४२
ब्रह्मैव सर्वं नान्योऽस्ति ते.बिं. ६।३१
[ईश्वर इति च–] ब्रह्मैव स्वशक्तिं
प्रकृत्यभिधेयामाश्रित्य लोकान्
सृष्ट्वा प्रविश्यांतर्यामित्वेन ब्रह्मा-
दीनांबुद्धीन्द्रियनियन्तृत्वादीश्वरः निरालं. ६
ब्रह्मैनान्तत उपनिश्रयति स्वां योनिं
स य एनं॰ हिनस्ति बृह. ।४।११
ब्रह्मैवास्मि न चेतरः महो.२।११
ब्रह्मैवावाप्नोति ग.शो. ३।१
ब्रह्मैवास्मि निरामयम् अ.पू. ५।६८
ब्रह्मैवाहमस्मीति निश्चित्य निर्विकल्प-
समाधिना स्वतन्त्रो यश्चरति स
सन्न्यासी निरालं.३२
ब्रह्मैवास्मीति यावृत्तिः पूरकोवायुरुच्यते ते.बिं.१।३२
ब्रह्मैवास्मीति सद्वृत्त्या निरालम्बतया
स्थितिः ते.बिं.१।३६
ब्रह्मैवाहमस्मीति..या भाव्यते सैषा
षोडशी श्रीविद्या पञ्चदशाक्षरी... बह्वृचो.४
ब्रह्मैवाहमस्मीत्यनवरतं ब्रह्मप्रणवानु-
सन्धानेन यः कृतकृत्यो भवति स
ह परमहंसपरिव्राट् प.हं.प.११

ब्रह्मैवाहमिति स्मरन्...मुक्तो भवति ना.प. ५।५०
ब्रह्मैवाहमिति ज्ञात्वावीतशोकोभवेन्मुनिः महो.४।२९
ब्रह्मैवाहं न जीवोऽहं ब्रह्मैवाहं न
भेदभूः ते.बिं.६।३३
ब्रह्मैवाहं न देहोऽहं ब्रह्मैवाहं न गोचरः ते.बिं. ६।३३
ब्रह्मैवाहं न संसारी ब्रह्मैवाहं न मे मनः ते. बिं.६।३२
ब्रह्मैवाहं परात्परः ते.बिं.६।३४
ब्रह्मैवाहं न संशयः ते.बिं. ३।३९
ब्रह्मैवाहं सच्चिदानन्दरूपं सर्वसारो.११
ब्रह्मैवाहं सनातनम् [ते.बिं. ३।३२+ ६।३१
ब्रह्मैवाहं सर्ववेदान्तवेद्यं नाहं वेद्यं
व्योमवातादिरूपम् सर्वसारो. ११
ब्रह्मैवेदममृतं तत्पुरस्ताद्ब्रह्मानन्दं परमं
चैव पश्चात् पा. ब्र. ३५
ब्रह्मैवेदममृतं पुरस्ताद्ब्रह्म पश्चाद्ब्रह्म
दक्षिणतश्चोत्तरेण मुंड. २।२।११
ब्रह्मैवेदं विजृंभते अ. पू. ३।३६
ब्रह्मैवेदं विश्वमिदं वरिष्ठम् मुण्ड.२।२।११
ब्रह्मैवेदं सर्वं सच्चिदानन्दरूपं नृसिंहो. ७।३
ब्रह्मैवैकमनाद्यन्तमब्धिवत्प्रविजृम्भते अ. पू. ५।१०
ब्रह्मैवोपाप्नोति तैत्ति. १।८।१
ब्रह्मोडुपेन प्रतरेत विद्वान् स्रोतांसि
सर्वाणि भयावहानि श्वेता. २।८
ब्रह्मोपनिषदो ब्रह्म पा. ब्र. ५
ब्रह्मोवाच नाहं वेद्मि ग. शो. ३।९
ब्राह्मण एकहोता। ब्रह्मणे
स्वयम्भुवे स्वाहा चित्यु. ७।१
ब्राह्मणक्षत्रियविशां भ.गी.१८।४१
ब्राह्मणत्वं ब्रह्म भानार्हत्वं यतित्वम-
लक्षितान्तःशिखोपवीतत्वम् परब्र.५
ब्राह्मणस्त एकं मुखं, तेन मुखेन राज्ञो-
ऽत्सि, तेन मुखेन मामन्नादं कुरु कौ. त. २।९
ब्राह्मणस्य दक्षिणे हस्ते पञ्च तीर्थानि
भवन्ति आचम. २
ब्राह्मणस्य विजानतः भ.गी. २।४६
ब्राह्मणस्य शरीरं जायते यज्ञोप. १
ब्राह्मणं क्षत्रियं वैश्यं शूद्रं हत्वा च
किल्बिषम्। सञ्चिनोति नरो
मोहाद्यत्तदपि नाशयेत् रामो. ५।१५

ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यश्चैवो
वर्णा द्विजातयः — भवसं. २।६२
ब्राह्मणः पञ्चाक्षरमनुभवति — रुद्रोप. १
ब्राह्मणः शिवपूजारतः — रुद्रोप. १
ब्राह्मणः श्वेतवर्णः क्षत्रियोरक्तवर्णोवैश्यः
पीतवर्णः शूद्रः कृष्णवर्ण इति
नियमाभावात् (न देहो ब्राह्मणः) — व. सू. उ. ४
अथ ब्राह्मणः, स ब्राह्मणः केन स्या-
येन स्यात्तेनेदृश एवातोऽन्यदार्तम् — बृह. ३।५।१
(ततो) ब्राह्मणः समाहितो भूत्वा
तत्स्वरूपदैक्यमेव सदा कुर्यात् — पैङ्गलो. ३।४
ब्राह्मणातिक्रमो नास्ति मूर्खो मन्त्रं
विवर्जयेत् । ज्वलन्तमग्निमुत्सृज्य
नहि भस्मनि हूयते — इतिहा. ४९
ब्राह्मणानामयमेव धर्मोऽयमेव धर्मः — भस्मजा. १।६
ब्राह्मणानां तु सर्वेषां वैदिकानामनु-
त्तमम् । गोपीचन्दनवारिभ्यामूर्ध्व-
पुण्ड्रं विधीयते — वासुदे. १४
ब्राह्मणानां यशो राज्ञां यशो विशां
यशोऽहमनुप्रापत्सि — छां.८।१४।१
ब्राह्मणानां सहस्रेषु भुक्त्वा तु नव
सप्त च । भवन्ति क्षायिके भूत्वा
व्यायिके च न संशयेत् — इतिहा. ४७
ब्राह्मणानीतिहासान् पुराणानिकल्पान्
गाथानाराशंसीः प्रीणाति — सहवै. १५
ब्राह्मणान्न निन्देत्तद्व्रतम् — छां.२।२०।२
ब्राह्मणा भगवन्तस्तदेव बहु मन्येध्वम् — बृह.३।८।१२
ब्राह्मणा भगवन्तो यो वो ब्रह्मिष्ठः स
एता गा उदजताम् — बृह.३।१।२
ब्राह्मणा भगवन्तो यो वः कामयते
स मा पृच्छतु — बृह.३।९।२७
ब्राह्मणा भगवन्तो हन्ताहमिमं द्वौ
प्रश्नौ प्रक्ष्यामि — बृह.३।८।१
ब्राह्मणा ये भक्तिमार्गं न विदन्ति
तेषां सम्भाषणं स्पर्शं न कुर्यात् — सामर. २२
ब्राह्मणा वाव समस्तेषामेवमिति — छाग. १।२

ब्राह्मणास्तु सदृशाः सूर्येण — इतिहा. १८
ब्राह्मणास्तेन वेदाश्च — भ.गी.१७।२३
ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्याः(रुद्राक्षजातयः) — रु. जा. ८
ब्राह्मणाः पुत्रैषणायाश्च वित्तैषणायाश्च
लोकैषणायाश्च व्युत्थायाथ भिक्षा-
चर्यं चरन्ति — बृह.३।५।१
ब्राह्मणे गवि हस्तिनि — भ.गी.५।१८
ब्राह्मणे मनुष्येष्वेताभ्यां हि रूपाभ्यां
ब्रह्माऽभवत् — बृह.१।४।१५
ब्राह्मणेमनुष्येष्वेताभ्यांरूपाभ्यां..(मापा.) बृ.उ.१।४।१५
ब्राह्मणेष्वमृतमिति तज्जलं शिरसि क्षिपेत् — बृ.जा.३।१८
ब्राह्मणो द्विपदां वरः — इतिहा. ४९
ब्राह्मणो निर्वेदमायात् — मुंड.१।२।१२
ब्राह्मणो बिभृयाच्छ्वेतान्रक्तान्राजा
तु धारयेत् । पीतान्वैश्यस्तु बिभृया-
त्कृष्णाञ्छूद्रस्तु धारयेत् (रुद्राक्षान्) — रु. जा. १०
ब्राह्मणो मनुष्येषु, क्षत्रियो क्षत्रियेण.. — बृह.१।४।१५
ब्राह्मणो यजेत; न सुरां पिबेत्
ब्राह्मणो वै मुखाज्जज्ञे बाह्वोः क्षत्रं
ऊर्वोर्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रः — ग.शो.३।११
ब्राह्मणोऽष्टाचत्वारिंशद्वर्षवासी च — आश्रमो. १
ब्राह्मणोऽस्यमुखमासीत् [चित्त्यु.१२।५ +सुबालो.१।४
[ऋ.अ.८।४।१९=मं.१०।९०।१२ — वा.सं.३१।११
ब्राह्मण्यं कुलगोत्रे च नामसौन्दर्य-
जातयः । स्थूलदेहगता एते स्थूला-
द्भिन्नस्य मे नहि — आ. प्र. २३
ब्राह्मण्यं सकलं तस्य इति ब्रह्मविदो विदुः — ब्रह्मो. १९
ब्राह्मी नारायणी माहेश्वरी कौमारी
अपराजिता वाराही नारसिंहिका
चेत्यष्टपत्रगाः — कालिको. १
ब्राह्मीमिष्टिं यजेत्तासामहोरात्रेण निर्वपेत् — कुण्डिको. २
ब्राह्मीं वाव त उपनिषदमब्रूमेति — केनो. ४।७
ब्राह्म्यादयः सप्त मातरो नवमे — सूर्यता. ५।१
ब्रूयाद्भद्रमभद्रकम् — शिवो. ७।८१
ब्लुं चोदयित्री सूनृतानां चेतन्ती
सुमतीनाम् [ऋ. सं. १।३।११+
[वा. सं. १२।१२+ — तै.सं.१।५।११

भ

भक्तवत्सलः स्वयमेव सर्वेभ्यो मोक्षविघ्नेभ्यो भक्तिनिष्ठान्सर्वान् परिपालयति त्रि.म.ना.८।४
भक्तानां धारणात्पापं (रुद्राक्षस्य) दिवारात्रिकृतं हरेत्। लक्षं तु दर्शनात्पुण्यं कोटिस्तद्धारणाद्भवेत् रु. जा. उ. ४
भक्तानां भक्त एव ज्ञातिः सामर. २२
भक्तानां भक्तैः सह कार्यं, नान्यैः सामर. २२
भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम् गणपत्यु.१२
भक्ता राजर्षयस्तथा भ.गी. ९।३३
भक्तास्तेऽतीव मे प्रियाः भ.गी.१२।२०
भक्तास्त्वां पर्युपासते भ.गी. १२।१
भक्तिमान् मे प्रियो नरः भ.गी.१२।१९
भक्तिमान्यः स मे प्रियः भ.गी.१२।१७
भक्तियोगान्मुक्तिः त्रि.म.ना.८।४
भक्तियोगेन सेवते भ.गी.१४।२६
भक्तियोगो निरुपद्रवः त्रि.म.ना.८।४
भक्तिरव्यभिचारिणी भ.गी.१३।११
भक्तिरस्य (कृष्णस्य) भजनम् गो.पू. २।२
भक्तिर्भक्त्या भवति सामर. ९५
भक्तिं मयि परां कृत्वा भ.गी.१८।६८
भक्तोऽसि मे सखा चेति भ. गी. ४।३
भक्त्या त्वनन्यया शक्यः भ.गी.११।५४
भक्त्या मामभिजानाति भ.गी.१८।५५
भक्त्या युक्तो योगबलेन चैव भ.गी. ८।१०
भक्त्या लभ्यस्त्वनन्यया भ.गी. ८।२२
भक्त्या नम्रतनोर्विष्णोः प्रसादमकरोद्विभुः शरभो. १८
भक्त्या विना ब्रह्मज्ञानं कदापि न जायते त्रि.म.ना.८।४
भक्त्या सर्वसिद्धयः सिद्ध्यन्ति त्रि.म.ना.८।४
भक्त्याऽसाध्यं न किञ्चिदस्ति त्रि.म.ना.८।४
भक्षणाद्युनप्रांप्रादक्षिण्यादारित्र्यनाशिनी...य एवं वेद स वैष्णवो भवति (तुलसी) तुलस्यु. २
भगव इति तं प्रतिशुश्राव छांदो. ४।८।२
भगव इति ह प्रतिशुश्राव [छान्दो. ४।५।१+६।२+७।२ +८।२+९।२
भगवञ्छरीरमिदं मैथुनादेवोद्भूतं संविदपेतं...निरयएवमूत्रद्वारेण मैत्रे. १।४
भगवत आदिपुरुषस्य नारायणस्य नामोच्चारणमात्रेणनिर्धूतकलिर्भवति कलिसं. १
भगवतो वा अहमविद्त्याऽन्यानवृषि छां.१।११।२
भगवन् देवाः प्रजां विधारयन्ते प्रश्नो. २।१
भगवन्कत्येव प्रजा विधारयन्ते(मा.पा.) प्रश्नो. २।१
भगवन् किमादौ प्रयुक्तं ध्यानं ध्यायितव्यं किं तद्ध्यानं को वा ध्याता कश्च ध्येयः ब्र.शिखो. १
भगवन् कुत एष प्राणो जायते प्रश्नो. ३।१
भगवन् कुतो ह वा इमाः प्रजाः प्रजायन्ते प्रश्नो. १।३
भगवन्कोऽवधूतः, तस्य का स्थितिः किं लक्ष्म किं संसरणमिति १ अवधू. १
भगवन् तदभ्यासवशाद्भ्रमरकीटन्यायात्तदभ्यासः कथमिति ना. प. ६।१
भगवन्तावप्ये वदतां ब्राह्मणयोर्विवदतोर्वाचं श्रोष्यामीति छांदो.१।८।२
भगवन् भक्तिनिष्ठां मे प्रयच्छ त्रि.म.ना.८।७
भगवन्यद्येवमस्यात्मनो महिमानं सूचयसीत्यन्यो वा परःकोऽयमात्मा मैत्रा. ३।१
भगवंस्त्वं नो गतिः मैत्रे. १।४
भगवन् सर्वविजय सहस्रारापराजित। शरणं त्वां प्रपन्नोऽस्मि श्रीकरं श्रीसुदर्शनम् ब्रनसु. ९२
भगवानाभिरस्पृष्टो येन दृष्टः स सर्वदृक् अ. शां. ८४
भगः शक्तिर्भगवान्काम ईश उभा दातारावहि सौभगानाम्। समप्रधानौ समसत्त्वौ समोजौ तयोः शक्तिरजरा विश्वयोनिः त्रिपुरो. १४
भजतां प्रीतिपूर्वकम् भ.गी.१०।१०
भजते मामनन्यभाक् भ.गी. ९।३०
भजत्येकत्वमास्थितः भ.गी. ६।३१

भजनानन्दोपासकानां न वर्णो न
देशो न कालोऽस्ति सामर. २२
भजन्ते मां दृढव्रताः भ.गी. ७।२८
भजन्त्यनन्यमनसः भ.गी.९।१३
भजेद्भ्रमरकीटवत् सैव सायुज्यमुक्तिः मुक्ति.१।२४
भद्रमित्याह भद्रः खल्वयं श्रिया जुष्टः अव्यक्तो. ३
भद्रं पश्यन्त उपसेदुरग्रे चित्त्यु.११।९
[तै.सं.५।७।४।३+ तै.आ.३।११।९
भयप्रदमकल्याणं वैर्यसर्वस्वहारिणम् ।
मनःपिशाचमुत्सार्य योऽसि
सोऽसि स्थिरो भव अ.पू. ५।३५
भयमोहशोकक्रोधत्यागस्त्यागः निर्वाणो. ५
भयं क्रोधमथालस्यमतिस्वप्राति-
जागरम् । अत्याहारमनाहारं
नित्यं योगी विवर्जयेत् अ.ना. २८
भयं चाभयमेव च भ.गी. १०।४
भयाज्ञानाभ्यामिंद्रियसङ्घातैः कम्पन्निव
मृततुल्या मूर्च्छा भवति पैङ्गलो. २।९
भयादस्याग्निस्तपति भयात्तपति सूर्यः ।
भयादिंद्रश्चवायुश्च मृत्युर्धावति पंचमः कठो. ६।३
भयात्सारङ्गवदेकत्र न तिष्ठेत् ना.प. ७।१
भयाद्रणादुपरतं भ.गी. २।३५
भयेन च प्रव्यथितं मनो मे भ.गी.११।४५
भरद्वाजोऽङ्गिरसे परावरां (ब्रह्मविद्यां
प्रोवाच) मुण्डो. १।२
भरद्वाजो बृहद्दाचक्रे अग्नेः ३ऐत.१।६।२
भरे भरेषु समुपह्वयाम प्रसासहि आर्षे.१०।२
(अथ)भर्ग इति भासयतीमाँल्लोका-
निति रञ्जयतीमानि भूतानि
गच्छत इति गच्छत्यस्मिन्ना-
गच्छत्यस्मा इमाः प्रजास्तस्मा-
द्भारकत्वाद्भर्गः मैत्रा. ६।७
(अथ)भर्ग इति योह वा अस्मिन्नादित्ये
निहितस्तारकेऽक्षिणि चैष भर्गाख्यो
भाभिर्गतिरस्य हीति भर्गो भर्जति
चैष भर्ग इति मैत्रा. ६।७
भर्ग इत्यापो ह वै भर्गः गायत्रीर.२

भर्गो देवस्य धीमहि मधुनक्तमुतोषसो
मधुमत्पार्थिवꣳरजः मधु द्यौरस्तु
नः पिता भुवः स्वाहा बृह. ६।३।६
भर्ता भोक्ता महेश्वरः भ.गी.१३।२२
भर्ता च मे भूयात् चित्त्यु.७।१
भर्ता सम्भ्रियमाणो बिभर्ति चित्त्यु.१४।१
भर्ता स्वानाꣳ श्रेष्ठः पुर एताः बृह.१।३।१८
भवताऽप्येष एवार्थः कथितो
वाग्विदांवर महो. २।३३
भवति च सर्वेषु पादेषु चतुरात्मा नृसिंहो. ३।२
भवति हास्य सुवर्णं य एवमेतत्साम्नः
सुवर्णं वेद बृह.१।३।२६
भवति हास्य स्वं य एवमेतत्साम्नः
स्वं वेद बृह. १।३।२५
भवतीत्यनुशुश्रुम भ.गी. १।४
भवतोऽज्ञानमेव च भ.गी.१४।१७
भवत्यत्यागिनां प्रेत्य भ.गी.१८।१२
भवन्तः सर्व एव हि भ. गी. १।११
भवत्यखिलजन्तूनां यदन्तस्तद्बहिः
स्थितम् अ. पू. १।३६
भवत्यन्नादोऽधिपतिर्य एवं वेद बृह. १।३।१८
भवत्यस्यान्नमापश्च पृथिवीचान्नमेत-
न्मयानि ह्यन्नानि भवन्ति १ऐत. ३।१।२
भवत्यस्यान्नमोषधिवनस्पतयोऽन्नम् १ऐत. ३।१।३
भवन्ति भावा भूतानां भ.गी. १०।५
भवन्ति विविधा रोगाः पवनव्यत्यय-
क्रमात् यो. चू. ११७
भवन्ति सम्पदं दैवीं भ.गी. १६।३
भवन्ति हास्य पशवः, पशुमान्भवति छांदो. २।६।२
भवन्तो (देवाः) वै न मद्गिराः गणेशो.४।१०
भव भावनया युक्तो मुक्तः परमया
धिया । धारयात्मानमव्यग्रो
ग्रस्तचित्तं चितः पदम् महो. ४।९२
भव वर्जितचिन्मात्रं सर्वं
चिन्मात्रमेव हि ते. बिं. २।२५
भवं यत्काद्रुतनिद्रा चित्त्यु. २१।१
भवानः सप्रथस्तमः चित्त्यु. १७।१
भवानिदं जगत्सर्वं व्याप्यैव परितिष्ठति गणेशो. ३।७
भवानेव गच्छत्विति बृह. ६।२।४

भवान् भीष्मश्च कर्णश्च म. गी. १।८
भवाप्ययौ हि भूतानां भ.गी. ११।२
भवामि न चिरात्पार्थ भ.गी. १२।७
भविता न च मे तस्मात् भ.गी.१८।६९
भविष्यति पुनर्धनम् भ.गी.१६।१३
भविष्यते स्वाहेत्यग्नौ हुत्वा मन्थे संस्रवमवनयति बृह. ६।३।३
भविष्याणि च भूतानि भ.गी. ७।२६
भवेदनर्थाय विना प्रमाणं (परमार्थः) ब्र. वि. ३२
भवेद्युगपदुत्थिता भ.गी.११।१२
भस्मदिग्धाङ्गो रुद्राक्षभूषणो मामेव सर्वभावेन प्रपन्नो मदेकपूजानिरतः सम्पूजयेत् भस्मजा.२।१०
भस्मधारणमकृत्वा नाश्नीयादापोऽन्नमन्यद्वा भस्मजा. १।६
भस्मनिष्ठस्य दह्यन्ते दोषा भस्माग्निसङ्गमात् । भस्मस्नानविशुद्धात्मा भस्मनिष्ठ इति स्मृतः बृ.जा. ५।१९
भस्मनो यद्यभावस्तदान्यभस्मद्वाहनन्यमन्यद्वावश्यं मन्त्रपूतं धार्यम् भस्मजा.१।७
भस्ममुष्टिं समादाय संहितामन्त्रमन्त्रिताम् । मस्तकात्पादपर्यन्तं मलस्नानं पुरोदितम् बृ. जा. ४।२
भस्म व्यापांडुरांगः शशिशकलधरो ज्ञानमुद्राक्षमालावीणापुस्तैर्विराजत्करकमलधरोयोगपट्टाभिरामः । ...सव्यालः कृत्तिवासाः सततमवतु नो दक्षिणामूर्तिरीशः द. मू. ९
भस्मसन्दिग्धसर्वाङ्गो भस्मदीप्तत्रिपुण्ड्रकः । भस्मशायी च पुरुषो भस्मनिष्ठ इति स्मृतः बृ.जा. ५।२०
भस्म सर्वाघभक्षणात् बृ. जा. १।६
भस्मसात्कुरुते तथा भ.गी. ४।३७
भस्मसात्कुरुतेऽर्जुन भ.गी. ४।३७
भस्माग्निकृत्यमभीप्सुस्तु अधिकं गोमयं हरेत् बृ.जा. १।२२
भस्मायुधाय विद्महे तीक्ष्णदंष्ट्राय धीमहि । तन्नो ज्वरः प्रचोदयात् बनदु.२५।१८

भस्मोद्धूलितसर्वाङ्गं जटाजूटधरं विभुम्...एवं यः सततं ध्यायेद्देवदेवं सनातनम् । स मुक्तः सर्वपापेभ्यो निःश्रेयसमवाप्नुयात् शांडि.३।२।२
भागमेकं न्यसेद्भूमौ द्वितीयं वेदिमध्यतः। तृतीयभागे पूजा स्यादिति लिङ्गं त्रिधा स्थितम् शिवो. २।३
भागार्थं सृष्टिरित्यन्ये क्रीडार्थमिति चापरे । देवस्यैष स्वभावोऽयमाप्तकामस्य का स्पृहा आगम. ९
भातीत्युक्ते जगत्सर्वं भानं ब्रह्मैव केवलम् वराहो.२।७३
भानाभानविहीनात्मावेदेहीमुक्तएवसः ते.बिं.४।७९
भानुकोटिसमप्रभम् । प्रसन्नं सामवेदाख्यं पञ्चब्र. ६
भानुनेव जगत्सर्वं भास्यतेयस्यतेजसा २आत्मो. ८
भानुमध्यगतः शशी ध्या.बि. २६
भाभिर्गतिरस्य हीति भर्गः मैत्रा. ६।७
भारो विवेकिनः शास्त्रं भारो ज्ञानं च रागिणः । अशान्तस्य मनो भारो भारोऽनात्मविदो वपुः महो. ३।१५
भार्या पुत्रो गृहं धनं सर्वं तेभ्यो देयम् स्वसंवे. ४
भार्यायै रेतः संवत्सरस्य तेजोभूतस्य भूतस्यात्मभूतस्य त्वमात्माऽसि कौ. उ. १।६
भावग्राह्यमनीडाख्यं भावाभावकरं शिवम् । कलासर्गकरं देवं ये विदुस्ते जहुस्तनुम् श्वेता. ५।१४
भावतीर्थं परं तीर्थं प्रमाणं सर्वकर्मसु जा.द.४।५१
भावनाभावमात्रेणसङ्कल्पःक्षीयतेस्वयम् महो. ५।१८१
भावनामखिलांत्यक्त्वा यच्छिष्टं तन्मयो भव [मैत्रे.२।२८-अ.पू.५।१०५] वराहो.४।१९
भावनामात्रमेवात्र कारणम् यो.शि.३।२३
भावना सर्वभावेभ्यः समुत्सृज्य समुत्थितः । अवशिष्टं परं ब्रह्म केवलोऽस्मीति भावय अ.पू. ५।१५
भावमव्ययमीक्षते भ.गी. १८।२०
भावमात्सर्यतृष्णाशामोहादिरहितः (वर्तते स ब्राह्मणः) व. सू. ९
भावयन्ति चितिश्चैत्यं व्यतिरिक्तमिवात्मनः । सङ्कल्पतामिवायाति बीजमङ्कुरतामिव महो. ५।१८०

भावयन्मनसा विष्णुं परमात्मान-
मीश्वरम् (यतिः) ना.प.५।४९
भाववृत्त्या हि भावत्वं शून्यवृत्त्या हि
शून्यता ते.बिं.१।४२
भावशुद्धिहरेर्भक्तिस्तितिक्षा करुणा
तथा ।...आनृशंस्यं सतां सङ्गः
पारमैकान्त्यहेतवः भवसं.५।२०
भावसंवित्प्रकटितामनुरूपा च
मारुते । चित्तस्योत्पत्त्युपरमा
वासनां मुनयो विदुः मुक्तिको.२।२४
भावसंशुद्धिरित्येतत् भ.गी.१७।१६
भावं भावेन सौम्यं सौम्येन...प्रसति
स्वेन तेजसा अ.शिरः.३।३
भावा अप्यद्वयेनैव तस्माद्द्वयता शिवा वैतथ्य. ३३
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि गु.र. १।१९
भावाभावदशाकोशं दुःखरत्नसमु-
द्गकम् । बीजमस्य शरीरस्य चित्त-
माशावशानुगम् अ.पू. ४।४०
भावाभावदहनं निर्वाणो.७५
भावाभावद्वयातीतं स्वप्नजागरणा-
दिगम् । मृत्युजीवननिर्मुक्तं तत्त्वं
तत्त्वविदो विदुः अमन. २।६१
भावाभावमजं सर्वमितिमत्वासुखीभव अ.पू.५।६७
भावाभावविनिर्मुक्तं जरामरणवर्जितम् ।
प्रशान्तकलनारम्यं नीरागं पद-
माश्रय महो.६।७२
भावाभावविनिर्मुक्तं भावनामात्रगोचरं यो.शि.३।२२
भावाभावविहीनोऽस्मि भासा हीनो-
ऽस्मि भास्यहम् मैत्रे. ३।५
भावाभावादिद्वन्द्वातीतः...परं ब्रह्म
प्राप्नोति मं. ब्रा. ३।१
भावाभावेपदार्थानांहर्षामर्षविकारदा ।
मलिना वासना यैषा सा सङ्ग
इति कथ्यते अ. पू. ५।५
भावाभावौ ततस्त्यक्त्वा निर्विकल्पः
सुखी भव महो.४।१०९
भावा विभवभूमयः । अयश्शलाका-
सदृशाः परस्परमसङ्गिनः महो. ३।४
भवांश्च सर्वान् विनियोजयेद्यः ।
तेषामभावे कृतकर्मनाशः श्वेता. ६।४
भावितं तीव्रवेगेन यद्वस्तु निश्चया-
त्मकम् । दृश्यं ह्यदृश्यतां नीत्वा
ब्रह्माकारेण चिन्तयेत् ते.बिं. १।२०
भावितं तीव्रसंवेगादात्मना यत्तदेव
सः । भवत्याशु कपिश्रेष्ठ विगते-
तरवासनः मुक्ति.२।५८
भावेनगलितेभावे स्वस्थस्तिष्ठामिकेवलः १सं.सो.२।३६
भावेष्वरतिरायाता पथिकस्य मरुष्विव महो. ३।६
भावैरसद्भिरेवायमद्वयेन च कल्पितः वैतथ्य. ३३
भावोऽप्यभावमायाति जीर्यन्ते वै
दिगीश्वराः महो. ३।५१
भासनाद्भसितम् बृ.जा. १।६
भासमानमिदं सर्वं मानरूपं परं पदम् ।
पश्यन्वेदान्तमानेनसद्यएवविमुच्यते वराहो.२।१४
भासस्तवोग्राः प्रतपन्ति विष्णो भ.गी.११।३०
भासस्तस्य महात्मनः भ.गी.११।१२
भासा त्वया व्योम्नि कृतः सुतार्क्ष्यस्त्वं
वै कुमारस्त्वमरिष्टनेमिः एका.उ. ४
भासा हीनोऽस्मि भाऽस्म्यहं मैत्रे. ३।५
भास्कराय विद्महे महाद्युतिकराय
धीमहि । तन्नो आदित्यःप्रचोदयात् वनदु. १२१
भास्कराय विद्महे महद्द्युतिधराय
धीमहि। तन्नो आदित्यः प्रचोदयात् महाना.३।१०
भास्याम्यहमिति चन्द्रमाः बृह.१।५।२२
भास्वतीमेवाप्येति यो भास्वती-
मेवास्तमेति सुबालो.९।१३
भास्वती स्मृता चतुर्थः पादो भवति
भवति च सर्वेषु पादेषु चतुरात्मा नृसिंहो. ३।३
भास्वतीं त्वासादयामि चित्त्यु.१९।१
भाः सत्यस्तस्मिन्नन्तर्हृदये यथा
व्रीहिर्वा यवो वा स एष सर्वस्ये-
शानः सर्वस्याधिपतिः सर्वमिदं
प्रशास्ति बृह. ५।६।१
भिक्षाटनसमुद्योगाद्येन केन नि-
मन्त्रितम् । भक्षयेत् तु तद्रैक्षं
भोक्तव्यं च मुमुक्षुभिः सं.यो. २।१८

भिक्षादि वैदलं पात्रं स्नानद्रव्यम-
बारितम् । एवं वृत्तिमुपासीना
घातयन्तीन्द्रियाणि च — २सन्यासो.१५

भिक्षादि वैदलं पात्रं स्नानद्रव्यम-
बारितम् । एवं वृत्तिमुपासीनो
यतेन्द्रियो जपेत्सदा — कुण्डिको. १३

भिक्षामात्रेण जीवी स्यात्स यति-
र्यतिवृत्तिहा — ना.प. ५।१२

भिक्षामात्रेण यो जीवेत्स पापी
यतिवृत्तिहा — प. हं. ७

भिक्षार्थमटनं यस्य विण्मूत्रकरणाय
च । योजनान्न परं याति सर्वथा
पङ्गुरेव सः — ना.प. ३।६५

भिक्षाशी यत्किञ्चिन्नाद्यात् — कठरु. ४

भिक्षा सर्वत्र लभ्यते — १सं.सो.२।९९

भिक्षुर्नैहिकामुष्मिकापेक्षः — ना. प. ५।११

भिक्षाशनं दद्यात्पवित्रं धारयेज्जन्तु-
संरक्षणार्थम् — २सन्यासो.१०

भिक्षुश्चतुर्दशकरणानां न तत्रावकाशं
दद्यात् — ना. प. ७।३

भिक्षूणां पटलं यत्र विश्रांतिमगम-
त्सदा । तत्पदं ब्रह्म सत्वं ब्रह्ममात्रं
करोतु माम् — भिक्षुको.शीर्षकं

(ॐ अथ) भिक्षूणां मोक्षार्थिनां
कुटीचक-बहूदक-हंस-परम-
हंसाश्चेति चत्वारः (भेदाः) — भिक्षुको. १

भिद्यते चेज्जडो भेदश्चिदेका सर्वदाखलु — रुद्रह. ४५

भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्व-
संशयाः । क्षीयन्ते चास्य कर्माणि
तस्मिन्दृष्टे परावरे [मुण्ड.२।२।८+ — यो.शि.५।४९
[महो. ४।८२+ अ. पू. ४।३१+ — सरस्व. ५६

भिद्यते हृदयग्रन्थिः...क्षीयन्ते परमा-
काशे ते यान्ति परमां गतिम् — यो.शि.६।४०

भिद्येते तासां नामरूपे समुद्र इत्येवं
प्रोच्यते एवमेवास्य..षोडशकलाः
...अस्तं गच्छन्ति — प्रश्नो. ६।५

भिद्येते तासां नामरूपे पुरुष इत्येवं
प्रोच्यते । एषोऽकलोऽमृतो भवति — प्रश्नो. ६।५

भिन्दन्ति योगिनः सूर्यं योगाभ्यासेन
वै पुनः — यो.शि.१।७५

भिन्नं भगव इति (शिष्य आह) — छां. ६।१२।१

भिन्ना प्रकृतिरष्टधा — भ. गी. ७।४

भिन्नाभिन्नं न पश्यन्ति — ...

भिन्ने तमसि चैकत्वमेक (मे) पश्यानु-
पश्यति [ब्र. बिं. १५+ — त्रि.ब्रा. ५।१५

भिन्ने पञ्चात्मके देहे गते पञ्चसु
पञ्चधा । हंसस्त्यक्त्वा गतो देहं
कस्मिन्स्थाने व्यवस्थितः — पिंडो. २

भिया देयम् — तैत्ति.१।११।३

भीमकर्मा वृकोदरः — भ. गी. १।१५

भीमार्जुनसमा युधि — भ. गी. १।४

भीषणमभीषणं — नृसिंहो. ६।१

भीषणमित्याह-भीषावा अस्मादादित्य
उदेति भीतश्चन्द्रमा भीतोवायुर्वाति
भीतोऽग्निर्दहतिभीतः पर्जन्यो वर्षति — अव्यक्तो. ३

भीषणं सप्तमं स्थानं (जानीयात्) — नृ. पू. २।३

भीषाऽस्मादग्निश्चेन्द्रश्च — भस्मजा. २।६

भीषाऽस्मादग्निश्चेन्द्रश्च मृत्युर्धावति
पञ्चमः [तैत्ति. २।७+ — नृ. प. २।१०

भीषाऽस्माद्वातः पवते — तैत्ति. २।८
[नृ. पू. २।१०+ — भस्मजा. २।६

भीषोदेति सूर्यः — तैत्ति. २।८
[नृ. पू. २।१०+ — भस्मजा. २।६

भीष्मद्रोणप्रमुखतः — भ.गी. १।२५

भीष्ममेवाभिरक्षन्तु — भ. गी. १।११

भीष्मो द्रोणः सूतपुत्रस्तथाऽसौ — भ.गी.११।२६

भुङ्क्ते प्रकृतिजान् गुणान् — भ.गी.१३।२१

भुञ्जते ते त्वघं पापाः — भ.गी. ३।१३

भुञ्जानं वा गुणान्वितम् — भ.गी. ५।१०

भुञ्जीय भोगान् रुधिरप्रदिग्धान् — भ. गी. २।५

भुव इति बाहू, द्वौ बाहू द्वे एते अक्षरे — बृह.५।५।३,४

भुव इति वायुः — तैत्ति. १।५।२

भुव इति वायौ — तैत्ति. १।६।१

भुव इति सामानि — तैत्ति. १।५।२

भुव इत्यन्तरिक्षं — तैत्ति. १।५।१

भुव इत्यन्तरिक्षलोकः — गायत्री. २

भुव इत्यपानः — तैत्ति. १।५।३

भूतावासमिमं (शरीरं) त्यजेत् ना.प. ३।४८
भूतिर्भूतिमतां सुकृतं कृताय स्वाहा पारमा. ३।६
भूतेन पञ्चमः प्रोक्तः षष्ठः षोडशतः
स्वरात् सूर्यता.२।३
भूतेन्द्रियार्थानतिक्रम्य ततः प्रव्रज्याख्यं
धृतिदण्डं धनुर्गृहीत्वाऽनभिमान-
मयेन चैवेषुणा तं...निहत्याद्यम् मैत्रा. ६।२८
भूतैर्देवैरभिष्टुतोऽहमेव भस्मजा.२।५
भूतेषु भूतेषु विचित्य धीराः प्रेत्यास्मा-
ल्लोकादमृता भवन्ति केनो. २।५
भूतेष्वहमवस्थितः वासुदे. ९
भूत्यै न प्रमदितव्यम् तैत्ति.१।११।१
भूत्वा तत्र गतप्राणः शनैरथ
समुत्सृजेत् क्षुरिको. ५
भूत्वा पुनः सौम्यवपुर्महात्मा भ.गी.११।५०
भूत्वा भूत्वा प्रलीयते भ.गी.८।१९
भूत्वा भूत्वा स्थिरं योगी योगो. २३
भूत्वा यास्यसि लाघवम् भ.गी. २।३५
भूदेवी ससागराम्भस्सप्तद्वीपा वसुन्धरा
भूरादिचतुर्दशभुवनानामाधाराधेया
प्रणवात्मिका भवति सीतो.१०
भूः प्रपद्येऽमुनाऽमुनाऽमुना छां.३।१५।३
भूमारमखिलं निचखान सङ्कर्षणो. २
भूमा त्वेव विजिज्ञासितव्यः छां.७।२३।१
भूमानन्दस्वरूपोऽस्मि ते.बिं. ३।१३
भूमानंप्रकृतिंध्यात्वाकृतकृत्योऽमृतोभवेत् सौ. ल. १५
भूमानं भगवो विजिज्ञासे छां.७।२३।१
भूमावयस्पिण्डं निहितं यथाऽचिरेणैति
भूमित्वम्...प्रणश्यति चित्तं तथा मैत्रा. ६।२७
भूमिकात्रितयं जाग्रच्चतुर्थी स्वप्न उच्यते अक्ष्युप. ३९
भूमिकात्रितयाभ्यासात् (सत्त्वापत्ति-
ज्ञानभूः) महो. ५।३०
भूमिकात्रितयाभ्यासादज्ञाने क्षय-
मागते । समं सर्वत्र पश्यन्ति
चतुर्थीं भूमिकां गताः अक्ष्युप. ३३
भूमिकापञ्चकाभ्यासाच्चित्ते(ऽर्थे-)तु
विरतेर्वशात् । सत्त्वात्मनिस्थितेशुद्धे
सत्त्वापत्तिरुदाहृता [महो.५।३०+ वराहो. ४।६
भूमिकापञ्चमाभ्यासात्स्वात्मारामतया
भृशम् । पदार्थभावना नाम षष्ठी
भवति भूमिका वराहो.४।८,९
भूमिकासप्तकं चैतद्धीमतामेव गोचरम् महो. ५।३९
भूमित्रयेषु विहरन्मुमुक्षुर्भवति वराहो. ४।१
भूमिप्राऽस्य कीर्तिर्भवति ३ऐत.२।५।३
(ॐ) भूमिरन्तरिक्षं द्यौरित्यष्टाक्ष-
राणि [बृ.उ. ५।१४।१+ गायत्र्यु.१
भूमिरापोऽनलो वायुराकाशश्चेतिपञ्चकः १यो.त. ८३
भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धि-
रेव च [ते.बिं. ५।७६+ भ.गी. ७।४
भूमिरापस्तथा तेजो वायुर्व्योम च
चन्द्रमाः । सूर्यः पुमांस्तथा चेति
मूर्तयश्चाष्ट कीर्तिताः ना.पू.ता.१।२
भूमिर्धेनुर्धरणी लोकधारिणी
[महाना.४।५+सुदर्श. ३+ यज्ञोप. ३
भूमिर्माता दितिर्नो जनित्रं भ्राताऽन्त-
रिक्षमभिशस्त्या नः सहवै. १०
[अथर्व. ६।१२०।२+ तै.ब्रा.२।६।२
भूमिशायी ब्रह्मचारी निष्कामो गुरु-
भक्तिमान् (राममंत्रं जपेत्) रामर. ४।३
भूमिषट्कचिराभ्यासाद्भेदस्यानुपलं-
भनात् । यत्स्वभावैकनिष्ठत्वं
सा ज्ञेया तुर्यगा गतिः महो. ५।३४
भूमिं जले जलं वह्नौ वह्निं वायौ वायु-
माकाशे चाकाशमहङ्कारे चाहङ्कारं
महति महदव्यक्तेऽव्यक्तं पुरुषे
क्रमेण विलीयते पैङ्गलो. ३।३
भूमिः शय्याऽस्ति विस्तीर्णा यतयः
केन दुःखिताः १सं.सो.२।९९
भूमेर्वितन्वन् प्रतरन्प्रकामः पोपूयमानः
पञ्चभिः स्वगुणैः प्रसन्नैः सर्वाणि
मां धारयिष्यसि स्वाहा पारमा. २।५
भूमैव सुखं भूमात्वेवविजिज्ञासितव्यः छां. ७।२३।१
भूमौ तिष्ठति भूमिस्त्वं न वेद स ह्यात्मा गोपालो. १।९
भूमौ दर्भासने रम्ये..कृत्वामनोमयीं.. अ.ना.१८-२१
भूमौ वा पतितं व्योम व्योमपुष्पं
सुगन्धकम् ते.बिं. ६।९७

भूम्यादित्यान्तरे यस्तु छादयेच्चतुरङ्गुलम् । तां तु सन्ध्यां परां विद्याच्छायासम्भेदने परे सन्ध्यो. ११
भूय एव तपसा ब्रह्मचर्येण श्रद्धया संवत्सरं संवत्स्यथ यथाकामं प्रश्नान्पृच्छथ प्रश्नो. १।२
भूय एव नो भगवन्विज्ञापयत्विति नृसिंहो. ७।१
भूय एव महाबाहो भ.गी. १०।१
भूय एव मा भगवान् विज्ञापयतु +१०।३+
[छांदो. ६।८।७+९।४+१०।३+ ११।३+१२।३
भूयश्च सृष्ट्वा त्रिदशानथेशीसर्वाधिपत्यं कुरुते भवानी गुह्यका. ६४
भूयश्चान्ते विश्वमायानिवृत्तिः
[श्वेता. १।१०+ ना. प. ९।९
भूयस्तेनैव मार्गेण जाग्राय धावति सम्राट् सुबालो. ४।४
भूयस्तेनैव मार्गेण स्वप्रस्थानं नियच्छति परब्र. २
भूयस्तेनैव स्वप्नाय गच्छति जलौकावत् ब्रह्मो. १
भूयः कथय तृप्तिर्हि भ.गी.१०।१८
भूयः सृष्ट्वा यतयस्तथेशः सर्वाधिपत्यं कुरुते महात्मा श्वेता. ५।३
भूयात्सूयो द्विपद्माभयवरदकरातप्तकार्तस्वराभाशुभ्राभ्राभेभयुग्मद्वयकरधृतकुम्भाद्भिरासिच्यमाना सौभाग्य. ३
भूयासमिति यो द्रष्टा सोऽहं विष्णुर्मुनीश्वर वराहो. २।८
भूयासं चाक्षयं चापपुनर्मृत्युं जयति, ब्रह्मणः सायुज्यं गच्छति सहवै. १८
भूयोजन्मविनिर्मुक्तं जीवन्मुक्तस्य तन्मनः । सरूपोऽसौ मनोनाशो जीवन्मुक्तस्य विद्यते मुक्ति. २।३४
भूयो येन (जीवितेन) न शोच्यते महो. ३।१२
भूरग्नये च पृथिव्यै च महते च स्वाहा महाना. ७।३
भूरग्नये पृथिव्यै स्वाहा महाना.७।२५
भूरसोऽस्यो समुत्पन्ने जगद्भवतु सर्वदा ते.बि. ६।८१
भूरन्नमग्नये पृथिव्यै स्वाहा, भुवोऽन्नं वायवेऽन्तरिक्षाय स्वाहा महाना. ७।१
भूरसि भुवोऽसि सुवरसि भूर्भूतयेस्वाहा पारमा. ५।६

भूरिति भुवो लोकः । भुव इत्यन्तरिक्षलोकः । स्वरिति स्वर्गलोकः । महरिति महर्लोकः । जन इति जनो लोकः । तप इति तपोलोकः । सत्यमिति सत्यलोकः गायत्रीर. २
भूरिति वा अग्निः तैत्ति.१।५।२
भूरिति वा अयं लोकः तैत्ति.१।५।१
भूरिति वा ऋचः तैत्ति. १।५।२
भूरिति वै प्राणः तैत्ति. १।५।३
भूरितिव्याहृतिर्गायत्रं छन्दस्त्रिवृतं स्तोमं प्राचीं दिशं वसन्तमृतुं वाचमध्यात्मं जिह्वां रसमितीन्द्रियाण्यन्वभवन् २प्रणवो. ३
भूरित्यग्नौ प्रतितिष्ठति तैत्ति. १।६।१
भूरित्यृग्भ्यो भुवरिति यजुर्भ्यः स्वरिति सामभ्यः छां. ४।१७।२
भूर्भुवं वा भुवो वा सुवो वा किञ्चित्स्वनन्तं सुभुवे सर्वस्य दातारमजरं जरित्रे स्वाहा पारमा. ८।६
(अथ) भूर्भुवः स्वरिति लोकवत्येषा मैत्रा. ६।५
भूर्भुवः स्वरित्येषैवास्य प्रजापतेः स्थविष्ठा तनूर्या लोकवतीति । स्वरित्यस्याः शिरो नाभिर्भुवो भूः पादा आदित्यश्चक्षुः मैत्रा. ६।६
भूर्भुवः स्वस्त्रीणि स्वर्गभूपातालानि त्रिपुराणि त्रि.ता. १।१
भूर्भुवः सुवरन्न ओम् महाना. ७।२
भूर्भुवः सुवरन्नमोम् महाना. ७।१
भूर्भुवः सुवरन्नं चन्द्रमसे दिग्भ्यः स्वाहा महाना. ७।१
भूर्भुवः सुवः ब्रह्म स्वयम्भु चित्यु. ६।१
भूर्भुवः सुवरिति वा एतास्तिस्रो व्याहृतयः तैत्ति. १।५।१
भूर्भुवः सुवर्ब्रह्मैतदुपास्यैतत्तपः म. ना. ७।८
भूर्भुवः सुवर्महरोम् महाना. ७।३
भूर्भुवः सुवश्चन्द्रमसे दिग्भ्यः स्वाहा महाना. ७।२
भूर्भुवः सुवश्चन्द्रमसे च नक्षत्रेभ्यश्च दिग्भ्यश्च महते च स्वाहा महाना. ७।३
भूर्भुवः सुवश्छन्द ओम् महाना. ७।६
(ॐ) भूर्भुवः सुवरिति व्याहृतयः २प्रणवो. १८

भूर्भुवः स्वरिमे लोकाश्चन्द्रसूर्याग्नि-
देवताः । यासुमात्रासु तिष्ठन्ति
तत्परं ज्योतिरोमिति — यो.शि. ६।५६

भूर्भुवः स्वरिमे लोकाः सोमसूर्याग्नि-
देवताः । यस्य मात्रासु तिष्ठन्ति
तत्परं ज्योतिरोमिति — यो. चू. ८५

भूर्भुवः स्वर्महर्जनस्तपः सत्यं तलं
वितलं सुतलं रसातलं तलातलं
महातलं पातालं..एवं..ब्रह्मांडं.. — राधोप. १।२

भूर्भुवः स्वः, तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो
देवस्य धीमहि [प्रवर्ग्या. ३+ — वा.सं. ३६।३

भूर्भुवः स्वःपते रायस्पते वाजिपते
गोपते ऋग्यजुस्सामाथर्वाङ्गिरः-
पते नमो ब्रह्मपुत्राय — ग. पू. १।५

भूर्भुवः स्वः स्वाहेत्यग्नौ हुत्वा मन्थे
स॰ स्रवमवनयति — बृह. ६।३।३

भूर्लोकः पादयोस्तस्य भुवर्लोकस्तु
जानुनि । भुवर्लोकः कटीदेशे
नाभिदेशे महर्जगत् — ना. बिं. ३

भूश्च नारायणः, भुवश्च नारायणः — ना.उ.ता.१।५

भूषणं नक्षत्राणि — सन्ध्यो. २३

भूस्ते आदिर्मध्यं भुवः स्वस्ते शीर्षं
[अ. शिरः. ३।१+ — वटुको. १७

भूस्ते दधामि, भुवस्ते दधामि, स्वस्ते
दधामि सर्वं त्वयि दधामीति — बृह. ६।४।२५

भूस्त्वादिर्मध्यं भुवस्ते स्वस्ते शीर्षं
विश्वरूपोऽसि — चतुर्वे. ८

भूः प्रपद्ये भुवः प्रपद्ये स्वः प्रपद्ये
भूर्भुवः स्वः प्रपद्ये — ब्रह्वै. २२

भूः स्वाहेत्यग्नौ हुत्वा मन्थे
स॰ स्रवमवनयति — बृह. ६।३।३

भृगुपुत्रः प्रकृतिपुरुषमयो हि स धनद
इति प्रकृतिर्माया पुरुषः शिव इति — ग. पू. २।८

भृगुर्वै वारुणिर्वरुणं पितरमुपससार
अधीहि भगवन्ब्रह्मेति — तैत्ति. ३।१

भृगुस्तस्मै यतो विशन्ति तद्विजिज्ञासस्व — तैत्ति. ३।११

भृत्योऽभिमतकर्तृत्वान्मन्त्री सर्वार्थ-
कारणात् । सामन्तश्चेन्द्रियाक्रान्ते-
र्मैत्रो मन्ये विवेकिनः — महो. ५।७१

भृष्टबीजसमुत्पन्नवृद्धिश्चेज्जगदस्तु सत् — ते. बिं. ६।९४

भेददृष्टिरविद्येयं सर्वथा तां विसर्जयेत् — महो. ५।११३

भेदनिम्नाः (भिन्नाः) पृथग्वादा-
स्तस्मात्ते कृपणाः स्मृताः — अ.शां. ९४

भेदस्तयोर्विकारः स्यात्सर्गे न ब्रह्मणि
क्वचित् (विभाति ब्रह्मसर्गयोः) — सरस्व. ४७

भेदः सर्वत्र मिथ्यैव धर्मादेरनिरूपणात् ।
अतश्च कारणं नित्यमेकमेवाद्वयं खलु — पञ्चब्र. ३३

(ततः) भेदाभावात् कदाचिद्बहि-
र्गतेऽपि मिथ्यात्वभानात् — मं.ब्रा. २।६

भेदाभेदस्तथा भेदाभेदः साक्षात्परात्मनः।
नास्ति स्वात्मातिरेकेण स्वयमेवास्ति
सर्वदा — पा. ब्र. ३१

भेषजकृतो ह वा एष यज्ञो
यत्रैवंविद्ब्रह्मा भवति — छांदो.४।१७।८

भैक्षाशनं च मौनित्वं तपो ध्यानं
विशेषतः । सम्यग्ज्ञानं च वैराग्यं
धर्मोऽयं भिक्षुके मतः — ना. प.५।४४

भैक्षेण वर्तयेन्नित्यं नैकान्नाशी भवेत्
क्वचित् । निरीक्षन्ते त्वनुद्विग्नास्त-
द्गृहं यत्नतो व्रजेत् — १सं.सो.२।६०

भैक्षेण वर्तयेन्नित्यं नैकान्नाशी भवेत्
क्वचित् । चित्तशुद्धिर्भवेद्यावत्ताव-
न्नित्यं चरेत्सुधीः — ना.प.५।४६

भैषज्याहारपात्राणि वस्त्रशय्यासनं
गुरोः । आनयेत्सर्वयत्नेन प्रार्थ-
यित्वा धनेश्वरान् — शिवो. ७।२७

भो किमादौ किं जातमिति सद्योजातं — पं. ब्र. १

भोक्ता च प्रभुरेव च — भ.गी.९।२४

भोक्ता भोग्यश्च यद्भवेत् — कैव. १८

भोक्ता भोग्यं प्रेरितारं च मत्वा सर्वं
प्रोक्तं त्रिविधं ब्रह्ममेतत् — श्वेताश्व.१।१२

भोक्तारं यज्ञतपसां — भ.गी. ५।२९

भोक्तृत्वे हेतुरुच्यते — भ.गी.१३।२१

भोक्तेति वै (च) भोक्तृविदो भोज्य-
मिति च तद्विदः — मैत्र्य. २२

भोगशक्तिर्भोगरूपा... सर्वं क्रियते — सीतो. २७

भोगान्ददाति विपुलान् लिङ्गे
सम्पूजितः शिवः — शिवो. ७।७१

भ्रूचक्रं सप्तमं विद्याद्बिन्दुस्थानं च वह्निदुः। भ्रुवोर्मध्ये वर्तुलं च ध्यात्वा ज्योतिः प्रमुच्यते — योगरा. १५
भ्रूणहत्यां वा एते घ्नन्ति [त्रिसुप.२+ — महाना.१२।२
भ्रूणहाऽभ्रूणहा (भवति) — बृह.४।३।२२
भ्रूदहरादुपरि सच्चिदानन्दतेजःकूटरूपं परं ब्रह्मावलोकयंस्तद्रूपो भवति — अद्वयता. १
भ्रूमध्यदृष्टिरप्येषा मुद्रा भवति खेचरी — १यो.त.११८
भ्रूमध्यनिलयो बिन्दुः शुद्धस्फटिकसन्निभः। महाविष्णोश्च देवस्य तत्सूक्ष्मं रूपमुच्यते — यो.शि.५।३४
(तत्र) भ्रूमध्यं गतो जीव आपादमस्तकं व्याप्य कृषिश्रवणाद्यखिलक्रियाकर्ता भवति — पैङ्गलो. २।७
भ्रूमध्ये चित्तसंयमात्तपोलोकज्ञानं — शांडि.१।७।५२
भ्रूमध्ये तारकालोकशान्तावंतमुपागते। चेतनैकतने बद्धे प्राणस्पंदो निरुध्यते — शांडि.१।७।३३
भ्रूमध्ये सच्चिदानन्दतेजःकूटरूपं तारकं ब्रह्म — मं.ब्रा. १।२
भ्रूयुगमध्यबिले दृष्टिं तद्द्वारोर्ध्वस्थिततेज आविर्भूतं तारकयोगो भवति — अद्वयता. ६
भ्रूयुगमध्यबिले तेजस आविर्भावः — मं.ब्रा. १।४

म

मकरन्दं पिबन्भृङ्गो गन्धान्नापेक्षते यथा। नादासक्तं सदा चित्तं विषयं न हि काङ्क्षति — ना. बिं. ४२
मकारतुरीयांशा पञ्चमी — वराहो. ४।१
मकाराभावे प्राज्ञस्य मानसामान्यमुत्कटम्। मात्रासम्प्रतिपत्तौ तु लयसामान्यमेव च — आगम. २१
मकारमूर्तिः कृष्णाङ्गी वृषवाहिनी वृद्धा त्रिशूलधारिणी सरस्वती भवति — शांडि. १।६।१
मकारवाच्यः शिवस्वरूपो हनुमान् — तारसा. ३।८
मकारश्चतुर्थी किंस्थानमित्युभावोष्ठौ स्थानम्.. — २ प्रणवो. १६
मकारश्च पुनः प्राज्ञः — आगम. २३
मकारश्चाग्नि-(स्वग्नि-)सङ्काशो विधूमो विद्युतोपमः [ब्र.वि.८+ — १ प्रणवो. ८
मकारश्चाप्यकारश्च हुकारश्चेति कीलकम् — गुह्यका. ८२
मकारस्तामसः कृष्णो रुद्रश्चेति तथोच्यते — यो. चू. ७६
मकारस्तृतीयकूटाक्षरो भवति — श्रीवि. ता. १।२
मकारस्तृतीयाक्षरो भवति — रामो. १।२
मकारस्त्वम्पदार्थवान् — रामर. ५।१३
मकारस्थूलांशे सुषुप्तविश्वः — वराहो. ४।१
मकारं तु स्मरन् पश्चाद्रेचयेद्विद्ययाऽनिलम् — जा. द. ६।९
मकारः शतावयवोपेतः — ना. प. ८।९
मकारः सहस्रावयवान्वितः — तुरीयो. १
मकाराक्षरसम्भूतः शिवस्तु हनुमान् स्मृतः। बिन्दुरीश्वरसंज्ञस्तु शत्रुघ्नश्चक्रराट् स्वयम् — तारसा. २।२
मकारे च भ्रुवोर्मध्ये प्राणशक्त्या प्रबोधयेत् — ब्र.वि. ७०
मकारे जाग्रत्प्राज्ञः — प. हं. प. १०
मकारेण ब्रह्मणाऽनुसन्दध्यात् — नृसिंहो. ७।४
मकारेण मनआद्यवितारं मनआदिसाक्षिणमन्विच्छेत् — नृसिंहो. ७।५
मकारे तु लयं प्राप्ते तृतीये प्रणवांशके — ध्या. बि. १२
मकारे लभते नादमर्धमात्रा तु निश्चला — १ यो. त. १२९
मकारे लीयते रुद्रः प्रणवो हि प्रकाशते — यो. चू. ७८
मकारे व्यञ्जनमित्याहुः — २ प्रणवो. १२
मकारोऽभ्युदयार्थत्वात् स मायेति च कीर्त्यते... — रामर. ३।७
मकारो रुद्रो भवति — तारसा. १।४
मकारोऽस्मि सनातनः — मैत्रे. ३।११
मकारो हृदि सुस्थितः — यो. चू. ७४
मघवन्यच्छांतहृदयः प्राव्राजीः सार्धं विरोचनेन किमिच्छन्पुनरागमः [छान्दो. ८।९।२+१०।३+ +११।२
मघवन्नेतद्विजानीहि किमेतद्यक्षमिति — केनो. ३।११

मघवन्मर्त्यं वा इद*ं* शरीरमात्तं मृत्युना छांदो. ८।१२।१

मघायं श्रविष्ठार्धमाग्नेयं क्रमेणोत्क्रमेणसार्पाद्यं श्रविष्ठार्धान्तं सौम्यम् मैत्रा. ६।१४

मच्चित्तः सततं भव भ. गी. १८।५७

मच्चित्तः सर्वदुर्गाणि भ. गी. १८।५८

मच्चित्ता मद्गतप्राणाः भ. गी. १०।९

मच्चिन्तनं मत्कथनमन्योन्यं मत्प्रभाषणम् । मदेकपरमो भूत्वा कालं नय महामते वराहो. २। ४६

मज्जातः शुक्रं, शुक्रशोणितसंयोगादावर्तते गर्भः गर्भो. २

मज्जा निधनम् छांदो. २।१९।१

मज्जामेदोभ्यां सम्पूर्णे शिराजालसमावृते । नवद्वारे पुरे देहे ममत्वं च शरीरके दुर्वासो. २।७

मञ्चकं शुक्लवस्त्रं च स्त्रीकथालौल्यमेव च । दिवा स्वापं च यानं च यतीनां पतनानि षट् ना. प. ३।७१

मटचीहतेषु कुरुष्वाटिक्या सह जाययोषस्तिर्ह चाक्रायण इभ्यग्रामे प्रद्राणक उवास छांदो. १।१०।१

मटचीहवेषु कुरुष्वाढिक्यासह[मा.पा.]छां. १।१०।१

मणिकर्ण्यां मम क्षेत्रे गङ्गायांवातटे पुनः । म्रियेत देही तज्जन्तोर्मुक्तिर्नातो वरान्तरम् रामो. ता. ३।३

मणिपूरकचक्रं हृदयचक्रं, अष्टदलमधोमुखम् । तन्मध्ये ज्योतिर्मयलिङ्गाकारं ध्यायेत् सौभाग्य. २७

मणिपूरं नाभिदेशं हृदयस्थमनाहतम् । विशुद्धिः कण्ठमूले च आज्ञाचक्रं च मस्तकम् योगकुं. ३।११

मणिबन्धे तथा गुल्फे स्फुरणं यस्य नश्यति । षण्मासावधिरेतस्य जीवितस्य स्थितिर्भवेत् त्रि. ब्रा. १२२

मणिबन्धे द्वादशैव स्कन्धे पञ्चशतं वहेत् । अष्टोत्तरशतैर्मालामुपवीतं प्रकल्पयेत् रु. जा. १६

(यद्वा) मण्डलाद्वा स्तनबिम्बमेकं मुखं चाधस्त्रीणि गुहासदनानि त्रिपुरी. ११

मत एव केषाञ्चित्कैश्चिद्भेदः स्वसंवे. ३

मत एव तन्निष्ठाः मत एव न निर्वाणं नो निरय इति स्वसंवे. २

मत एव न श्वानगर्दभौ स्वसंवे. ३

मत एव यत्र विरिञ्चिविष्णुरुद्रा ईश्वरश्च गच्छन्ति स्वसंवे. ३

मतङ्ग भगवन्गुरो राजश्यामलारहस्योपनिषदं मेऽनुब्रूहि राजश्या. १

मतं यस्य न वेद सः केनो. २।३

मतश्च मन्तयितव्यं च नारायणः सुबालो. १

मता बुद्धिर्जनार्दन भ. गी. ३।१

मतिर्नाम वेदविहितकर्ममार्गेषुश्रद्धा शांडि. १।२।१

मतिविज्ञानसम्पत्तिशुद्धये (रुद्राक्षं) धारयेत्सुधीः रु. जा. ३०

मतिस्त्वेव विजिज्ञासितव्या छांदो. ७।१८।१

मत्कर्मकृन्मत्परमः भ. गी. ११।५५

मत्कर्मपरमो भव भ. गी. १२।१०

मत्त एव पृथग्विधाः भ. गी. १०।५

मत्त एवेति तान् विद्धि भ. गी. ७।१२

मत्तैरावतोबद्धःसर्षपीकोणकोटरे महो. ४।६४

मत्तः कश्चिन्नान्यो व्यतिरिक्त इति फलपत्रोदकाहारः पर्वतवनदेवतालयेषु सञ्चरेत् ना. प. ४।४८

मत्तः परतरं नान्यत् भ. गी. ७।७

मत्तः प्रकृतिपुरुषात्मकं जगच्छून्यं चाशून्यं च अहमानन्दानानन्दाः विज्ञानाविज्ञाने अहम् देव्यु. १

मत्तः सर्वं प्रवर्तते भ. गी. १०।८

मत्तः सर्वाणि भूतानि मत्तः सर्वं चराचरम् , भवन्तो वै न मद्भिन्नाः गणेशो. ४।९

मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च भ. गी. १५।१५

मत्तो न कश्चिन्नान्यो व्यतिरिक्त इत्यात्मन्यालोच्य...देहपतनपर्यन्तं स्वरूपानुसन्धानेन वसेत् ना. प. ७।२

मत्तोऽन्यदस्ति चेन्मिथ्या यथा मरुमरीचिका ते. बि. ६।७२

मत्तो व्यतिरिक्तः कश्चिन्नास्तीति तुरीयातो. २

मत्पादाकृतयश्चऊर्ध्वपुण्ड्रानासादयः
  स्मृताः रेखा द्वादशकस्थाने ऊर्ध्वपुं. ६
मत्प्रसादात्तरिष्यसि भ. गी. १८।६८
मत्प्रसादादवाप्नोति भ. गी. १८।५६
मत्वा धीरो न शोचति कठो. ६।६
मत्सरो मुष्टिकोऽजयः कृष्णो. १४
मत्संस्थामधिगच्छति भ. गी. ६।१५
मत्साभिप्यात्प्रवर्तन्ते देहाद्या
  अजडा इव सर्वसारो. ९
मत्सारभूतं यद्यत्स्यान्मथुरा सा
  निगद्यते गोपालो. २।२५
मत्स्थानि सर्वभूतानि भ. गी. ९।४
मत्स्थानीत्युपधारय भ. गी. ९।६
मत्स्यकूर्मवराहनारसिंहवामनराम-
  रामकृष्णबुद्धकल्किसद्योजात-
  वामदेवा अघोरतत्पुरुषेशानपर-
  मेश्वराः षोडशदलाः ना. पू. ता. ६।१
मत्स्वरूपपरिज्ञानात्कर्मभिर्नसबध्यते वराहो. २।२८
मत्स्वरूपमेव सर्वं मद्व्यतिरिक्तमणु-
  मात्रं न विद्यते त्रि. म. ना. ८।१
मत्स्वरूपस्स्वयं ज्ञेयो बिल्ववृक्षो
  विधानतः १ बिल्वो. २
मथुरावन-मधुवनमहावन-खादिरवन-
  भांडीरवननंदीश्वरवननंदवनानंद-
  वनखांडववनपलाशवनाशोकवन
  केतकवन-द्रुमवन-गन्धमादनवन-
  शेषशायिवन-श्यामायुवन-भुज्यु-
  वन-दधिवन-वृषभानुवनसङ्केत-
  वनदीपवन-रासवन-क्रीडावनो-
  त्सुकवनान्येतानि चतुर्विंशति-
  वनानि राधोप. ३।१
मथुरायां विशेषेण मां ध्यायन्मोक्ष-
  मश्नुते गोपालो. २।२०
मथुरायां स्थितिर्ब्रह्मन्सर्वदा मे
  भविष्यति गोपालो. २।४
मद्गुलेपनं पुण्यं चक्रतीर्थान्तः-
  स्थितं चक्रसमायुक्तं पीतवर्णं
  मुक्तिसाधनं भवति गोपीचं. १

मदनाथः शिवं वाग्भवम्, तदूर्ध्वं
  कामकलामयं त्रि. ता. १।१६
मदनुग्रहाय परमं भ. गी. ११।१
मदन्तिका मानिनी मङ्गला च
  सुभा(भ)गा च सा [त्रि.म.६+ त्रिपुरो. ६
मदमोहेन यः शूद्र्यां पुत्रमुत्पादये-
  द्द्विजः । यावत्तिष्ठत्स वै भूमौ
  तावत्तिष्ठेत् सुदारुणे इतिहा. ७९
मदर्थमपि कर्माणि भ. गी. १२।१०
मदर्थे त्यक्तजीविताः भ. गी. १।९
मदाभिमानमात्सर्यलोभमोहाति-
  शायिताम् । बहिरण्यास्थिता-
  मीषत्त्यजत्यहिरिव त्वचम् अक्ष्युप. १६
मदीयं च त्वदीयं च ममेति च तवेति
  च । मह्यं तुभ्यं मयेत्यादि तत्सर्वं
  वितथं भवेत् ते. बिं. ५।५०
मदीयोपासकस्यासाध्यंनकिञ्चिदस्ति त्रि. म. ना. ८।७
मदीयोपासनां कुरु, मामेव प्राप्स्यसि त्रि. म. ना. ८।६
मदुपासकस्तस्मान्निरतिशयाद्वैतपर-
  मानन्दलक्षणं परब्रह्म भवति त्रि. म. ना. ८।७
मदुपासकः सर्वोत्कृष्टः स भवति त्रि. म. ना. ८।७
मदुपासनकः सर्ववन्द्यो भवति त्रि. म. ना. ८।७
मदुपासनया सर्वमङ्गलानि भवन्ति त्रि. म. ना. ८।७
मदुपासनया सर्वं जयति त्रि. म. ना. ८।७
मदेकपूजानिरतः सम्पूजयेत्,
  तदहमश्नामि भस्मजा. २।१०
मद्गतेनान्तरात्मना भ. गी. ६।४७
मद्दृष्टे पादं वक्ता छांदो. ४।८।१
मद्भक्त एतद्विज्ञाय भ. गी. १३।१८
मद्भक्तः सङ्गवर्जितः भ. गी. ११।५५
मद्भक्ता यान्ति मामपि भ. गी. ७।२३
मद्भक्तिनिष्ठो भव त्रि. म. ना. ८।६
मद्भक्तिं लभते पराम् भ. गी. १८।५४
मद्भक्तेष्वभिधास्यति भ. गी. १८।६८
मद्भावं सोऽधिगच्छति भ. गी. १४।१९
मद्भावा मानसा जाताः भ. गी. १०।६
मद्भावायोपपद्यते भ. गी. १३।१८
मद्यं मांसंच लशुनंपलाण्डुं शिग्रु-
  मेव च । श्लेष्मातकं विड्वराह-
  मभक्ष्यं वर्जयेन्नरः द. जा. ४०

मद्याजी मां नमस्कुरु [भ.गी.९।३४+ १८।६५
मद्रूपमव्ययं ब्रह्म आदिमध्यान्त-
वर्जितम् । स्वप्रभं सच्चिदानन्दं
भक्त्या जानाति चाव्ययम् वासुदे. ८
मद्रेषु चरकाः पर्यव्रजाम बृह. ३।३।१
मद्रेष्ववसाम पतञ्चलस्य काप्यस्य
गृहेषु यज्ञमधीयानाः बृह. ३।७।१
मद्व्यतिरिक्तमणुमात्रं न विद्यते त्रि. म. ना. ८।६
मद्व्यतिरिक्तमबाधितं न
किञ्चिदस्ति त्रि. म. ना. ८।६
मद्व्यतिरिक्तं सर्वं बाधितम् त्रि. म. ना. ८।६
मधुकरराजानं माक्षिकवत् ब्रह्मो. १
मधुकरवृत्त्याऽऽहारमाहरन् कृशो
भूत्वा... कारागृहविनिर्मुक्त-
चोरवत् पुत्राप्तबन्धुभवस्थलं
विहाय दूरतो वसेत् ना. प. ७।१
मधु क्षरंति तद्रसम् महाना. ११।१०
मधुनक्तमुतोषसि मधुमत्
पार्थिव॰ रजः बृह. ६।३।६
[महाना. १२।२+ऋ.मं. १।९०।७ +त्रिसुप. ३+
[वा. सं. १३।२८+ तै. सं. ४।२।९।३
मधुनाऽभिषिच्य गुरुदारगमनात्
पूतो भवति भस्मजा. २।११
मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमा॰
अस्तु सूर्यः [त्रिसुप. ३ महाना. १२।२
मधुमेतु माम् । ब्रह्ममेव मधुमेतुमाम्
[त्रिसुप. १+ महाना. १२।१
मधुमेधया । ब्रह्ममेव मधुमेधया
[त्रिसुप. २+ महाना. १२।२
मधुमेधवा । ब्रह्ममेव मधुमेधवा
[त्रिसुप. ३+ महाना. १२।३
मधुराम्ल-लवण-तिक्त-कटु-कषाय-
रसान्विन्दति गर्भो. १
मधुरादिमयो रसः बृ. जा. २।४
मधुवाता ऋतायते मधु क्षरंति
सिन्धवः [बृ. ६।३।६+महाना. १२।२+ ऋक्सं.
[मं. १।९०।६+वा.सं. १३।२७
[तै. सं. ४।२।९।३+ त्रिसुप. ३

मध्यतोऽनृतं तदेतदनृतमुभयतः
सत्येन परिगृहीत॰ सत्यभूय-
मेव भवति नैनं विद्वा॰समन-
नृत॰ हिनस्ति बृह. ५।५।१
मध्यतोऽस्मा अन्न॰ राध्यते तैत्ति. ३।१०।१
मध्यन्दिनमादित्याभिमुखो-
ऽधीयानः पञ्चमहापात-
कोपपातकात्प्रमुच्यते नारा. ५
मध्यन्दिने प्रबलमधीयीत सहवै. १७
मध्यन्दिने माध्यन्दिनं (कर्म)
कृत्वोपस्थानान्तं ध्यायमान
आदित्याभिमुखोऽधीयानः
सुरापानात्पूतो भवति भस्मजा. १।७
मध्यमश्च द्वाविंशत्कनिष्ठो-
विंशतिमात्रकः योगो. ६
मध्यमं शास्त्रचिन्तनम् मैत्रे. २।२१
मध्यमा (मात्रा) चतुर्दशी,
पश्यन्ती पञ्चदशी परा ना. प. ८।४
मध्यमां तैजसात्मनः गान्धर्वो. १
मध्यमामेवाप्येति यो मध्यमामेवा-
स्तमेति सुबालो. ९।८
मध्यमायां भवतु सावित्री गायत्रीर. ५
मध्यमायां मुकुलिता वैखर्यां विकसी-
कृता । पूर्वं यथोदिता या वा-
ग्विलोमेनास्तगा भवेत् योगकुं. ३।१९
मध्यमा वृषभवाहिनी माहेश्वरी गायत्रीर. ५
मध्यलक्ष्यं तु प्रायश्चित्तादिवर्ण-
सूर्यचन्द्रवह्निज्वालावलीव-
त्तद्विहीनान्तरिक्षवत्पश्यति मं. ब्रा. १।२
मध्यस्थकुण्डलिनीमाश्रित्य
मुख्या नाड्यश्चतुर्दश भवन्ति शांडि. १।४।५
मध्यं चैवाहमर्जुन भ. गी. १०।३२
मध्यं छन्दसां बृहती १ऐत. ३।५।४
मध्यं ह्येषामङ्गानामात्मा १ऐत. ३।५।४
मध्यादाचामेति, कथमिति, लवणमिति छांदो. ६।१३।२
मध्याह्नकालिका सन्ध्या सावित्री
युवती..भुवोलोके व्यवस्थिता गायत्रीर. ६
(अथ) मध्याह्ने तीक्ष्णं रुद्रस्तपति सन्ध्यो. २३
मध्याह्ने सूर्याभिमुखः पठेत् सूर्यो. ९

मध्ये कैवल्यात्मा अद्वैतो. १
मध्ये तिष्ठन्ति राजसाः भ. गी. १४।१८
मध्ये नाभिर्भवति नृ. पू. ५।२
मध्ये बिन्दुं त्रिकोणं तदनु ऋतुगणं.. ग. पू. २।१०
मध्ये बीजात्मकं देवं यजेत् ग. पू. २।१०
मध्ये भास्करं ध्यायेदुपचारान्
 समर्प्यार्घ्याणि दद्यात् सूर्यता. ५।१
मध्ये लक्ष्मीनारायणं विक्षेप-
 शक्त्यावरणं ना. पू.ता. ६।१
मध्ये वामनमासीनं विश्वेदेवा उपासते कठो. ५।३
मध्वश्नाति, बिसानि भक्षयति
 (दुःस्वप्ने) २ऐत. २।४।७
मनआदिचतुर्दशकरणैः पुष्कलै-
 रादित्याद्यनुगृहीतैः शब्दादी-
 न्विषयान्स्थूलान्यदोपलभते
 तदात्मनो जागरणम् सर्वसारो. ३
मनआदिश्च प्राणादिश्चेच्छादिश्च
 सत्त्वादिश्चपुण्यादिश्चैतेपञ्चवर्गाः सर्वसारो. ५
मन इति मनोविदो बुद्धिरिति च
 तद्विदः । चित्तमिति चित्तविदो
 धर्माधर्मौ च तद्विदः वैतथ्य. २५
मन उदक्रामन्मीलित इवाश्नन्
 पिबन्नास्तैव १ ऐत. १।४।४
(अथ ह) मन उद्गीथमुपासाञ्च-
 क्रिरेतद्धासुराःपाप्मनाविविधुः छांदो. १।२।६
मन उपवक्ता चित्यु. ११
(अथ ह) मन ऊचुस्त्वं न उद्गायेति
 तथेति तेभ्यो मन उद्गायत् बृह. १।३।६
मन एतानि चक्षूंषि यस्माद्व्रतमिदं
 पाशुपतं यन्नस्मनाऽङ्गानि संस्पृशे-
 त्तस्माद्ब्रह्म तदेतत्पाशुपतं पशु-
 पाशविमोक्षणाय अ.शिरः. ३।११
मन एतानि चक्षूंषि...तदेतद्बटुकं
 पशुपाशविमोक्षणाय बटुको. २४
मन एनं तन्भूत्वाऽवति बृह. १।५।९
मन एव जगत्सर्वं मन एव
 महारिपुः ते. बिं. ५।९८
मन एव पिता वाङ्माता प्राणः प्रजा बृह. १।५।७

मन एव मनुष्याणां कारणं बन्ध-
 मोक्षयोः । बन्धनं (बन्धाय-
 बन्धस्य) विषयासक्तं (विषया-
 सक्ति) मुक्त्यै [मुक्तं-मोक्षे-
 मुक्तौ-मुक्तेः) निर्विषयं स्मृतम्
 (मनः-तथा) [ब्र.बि.२+ शाट्याय. १
 [मैत्रा. ६।३४,११+ अमन. १।७७
 [भवसं. ३।१४+ त्रि. ता. ५।३
मन एव महद्दुःखं मन एव
 जरादिकम् ते. बिं. ५।९९
मन एव महद्बन्धं मनोऽन्तःकरणं
 च तत् ते. बिं. ५।१०१
मन एव महारिपुः ते. बिं. ५।९८
मन एव समर्थं हि मनसो दृढनिग्रहे महो. ४।१०९
मन एव सम्राडिति होवाच बृह. ४।१।६
मन एव सविता वाक्सावित्री सावित्र्यु. ८
मन एव हि कालश्च मन एव मलं तथा ते. बिं. ५।९९
मन एव हि तेजश्च मन एव
 मरुन्महान् ते. बिं. ५।१०२
मन एव हि बिन्दुश्च उत्पत्तिस्थिति-
 कारणम् । मनसोत्पद्यते बिन्दुर्यथा
 क्षीरं गता-(घृता-) त्मकम्
 [यो. शि. ६।७३+ योगकुं. ३।५
मन एव हि भूमिश्च मन एव हि
 तोयकम् ते. बिं. ५।१०१
मन एव हि सङ्कल्पो मन एव हि
 जीवकः ते. बिं. ५।१००
मन एव हि संसारो मन एव
 जगत्त्रयम् ते. बिं. ५।९८
मन एवाप्येति यो मन एवास्तमेति सुबालो. ९।१०
मन एवायतनमाकाशः प्रतिष्ठा-
 ऽऽनन्द इत्येनदुपासीत बृह. ४।१।६
मन एवास्यात्मा वाग्जाया प्राणः प्रजा बृह. १।४।१७
मननात् त्राणनान्मंत्रः सर्ववाच्यस्य
 वाचकः रा. पू. १।१२
(तस्मात्) मननाद्धी सन्न्यासि-
 नामधिकारः ना. प. ५।८
म (मा) ननान्मन उच्यते महो. ४।१२३
मननोत्थेमनस्येष बंधःसांसारिकोदृढः अ. पू. २।२४

मनश्चञ्चलमस्थिरम् भ. गी. ६।२४
मनश्च मन्तव्यं च प्रश्नो. ४।८
मनश्चन्द्रं (अप्येति) बृह. ३।२।१३
मनश्चन्द्रो रविर्वायुर्दृष्टिरग्निरुदाहृताः। बिन्दुनादकला ब्रह्मन्विष्णु-ब्रह्मेशदेवताः यो. शि. ६।७०
मनश्चेदुन्मनीभूयान्न पुण्यं न च पातकम् यो. शि. ६।६१
मनश्शुद्धिरान्तरं (शौचं) शांडि. १।१।३
मनसश्चन्द्रमा [२ ऐत. १।४+ ग. शो. ३।११
मनसश्च विज्ञानं विज्ञानादानन्दो ब्रह्मयोनिः महाना. १७।१३
मनसश्चेन्द्रियग्रामं भ. गी. ६।२४
मनसस्तु क्षुरं गृह्य सुतीक्ष्णं बुद्धि-निर्मलम्। पादस्योपरि यन्मध्ये तद्रूपं नाम कृन्तयेत् क्षुरिको. ११
मनसस्तु परा बुद्धिर्बुद्धेरात्मामहान्परः [कठो.३।१०+४।४+गुह्यका.४१ भ. गी. ३।४२
मनसः काममाकूतिं वाचः सत्य... श्रीसू. १०
मनसः सत्त्वमुत्तमम्। सत्त्वादधि-महानात्मा महतोऽव्यक्तमुत्तमम् कठो. ६।७
मनसः साक्षी बुद्धेः साक्षी प्राणस्य साक्षी तमसः साक्षी सर्वस्य साक्षी नृसिंहो. २।२
मनसा कर्मणा वाचा सज्जनानुप-सेवते। यतः कुतश्चिदानीय नित्यं शास्त्राण्यवेक्षते॥ तदासौ प्रथमामेकां प्राप्तो भवति भूमिकाम् अक्ष्युप. ११
मनसाऽऽकाशश्चाकाशाद्वायुर्वायो-र्ज्योतिर्ज्योतिष आपोऽद्भ्यः पृथिवी पृथिव्या इत्येषां भूतानां ब्रह्म सम्पद्यते २ सन्न्यासो. १६
मनसा धारयेच्चापि धारणं नाति-विस्मृति। निवृत्तिर्विषयाणां च प्रत्याहारो न संशयः योगो. ३१
मनसा मन आलोक्य उन्मन्यन्तं सदा स्मरेत् यो. शि. ६।६३
मनसा मन आलोक्य तत्त्यजेत्परमं पदम् योगकुं. ३।५
मनसा मन आलोक्य दृश्यन्ते प्रत्यया दश यो. शि. ६।६५
मनसा मन आलोक्य मुक्तो भवति योगवित् यो. शि. ६।६३
मनसा मन आलोक्य योगनिष्ठः सदा भवेत् यो. शि. ६।६४
मनसा मन आलोक्य वृत्तिशून्यं यदा भवेत्। ततः परं परब्रह्म दृश्यते च सुदुर्लभम [शाण्डि. १।७।१८+ यो. शि. ६।६२
मनसा मनसि च्छिन्ने निरहङ्कारतां गते। भावेन गलिते भावे स्वस्थस्तिष्ठामि केवलः १ सं.सो. २।२६
मनसा परमात्मानं ध्यात्वा तद्रूप-तामियात् त्रि. ब्रा. २।२९
मनसा प्राप्यते त्वात्मा ह्यात्मा-पत्त्या निवर्तते [मैत्रा. ४।३+ मैत्रे. १।७
मनसा भाव्यमानो हि देहतां याति देहकः। देहवासनया मुक्तो देहधर्मैर्न लिप्यते महो. ४।६७
मनसा वा अग्रे सङ्कल्पयति। अथ वाचा व्याहरति। तस्मान्मन एव पूर्वरूपं, वागुत्तररूपम् ३ऐत. १।१।२
मनसा वाचं नयति चक्षुषा नीयते जगत्। भूतस्य कर्णौ श्रोतारा-वन्नं प्राणेन सम्मितम् इतिहा. ४
मनसा वाऽथ विष्णुक्तमंत्रा-वृत्त्याथवा जले ना. प. ३।११
मनसा वै सम्राट् स्त्रियमभिहार्यते तस्यां प्रतिरूपः पुत्रो जायते स आनन्दः बृह. ४।१।६
मनसा शान्तिः, शान्त्या चित्तं, चित्तेन स्मृतिः, स्मृत्या स्मारं स्मारेण विज्ञानं, विज्ञानेनात्मानं वेदयति महाना. १७।१३
मनसा शृणोति मैत्रा. ६।३०
मनसा सङ्कल्पयति, वाचा वदति गर्भो. १

मनसा सर्वाणि ध्यातान्याप्नोति — कौ. त. ३।४
मनसा हि कामान्कामयते — बृह. ३।२।७
मनसा सृष्टा आपश्च वरुणश्च — १ ऐत. १।७।६
मनसा ह्येव खल्विमानि भूतानि जायंते, मनसा जातानि जीवंति, मनः प्रयन्त्यभिसंविशन्तीति — तैत्ति. ३।४
मनसा ह्येव पश्यति मनसा शृणोति [बृ. उ. १।५।३+ — मैत्रा. ६।३०
मनसिजा नारदादयः सर्वे ऋषयः — ना. पू. ता. ५।६
मनसि तृप्यति पर्जन्यस्तृप्यति — छांदो. ५।२२।२
मनसि निषण्णः श्रीप्राणाय प्रज्ञानाय स्वराट् पुरुषोत्तमः — सि. वि. ३
मनसि सङ्कल्पविकल्पे दग्धे पुण्यपापे सदाशिवः शक्त्यात्मा सर्वत्रावस्थितः स्वयंज्योतिः शुद्धो बुद्धो नित्यो निरञ्जनः शान्तः प्रकाशत इति — हंसो. ११
मनसे स्वाहा प्रजात्यै स्वाहेत्यग्नौ हुत्वा मन्थे संस्रवमवनयति — बृह. ६।३।२
मनसैतान्कामान्पश्यन्रमते — छांदो. ८।१२।५
मनसैव मनश्छित्त्वा सा स्वयं लभ्यते गतिः — अ. पू. १।५३
मनसैव मनश्छित्त्वा कुठारेणेव पादपम् । पदं पावनमासाद्य सद्य एव स्थिरो भव — महो. ६।३३
मनसैव मनश्छित्त्वा पाशं परमबन्धनम् । भवादुत्तारयात्मानं नासावन्येन तार्यते — महो. ४।१०७
मनसैवानुद्रष्टव्यं नेह नानास्ति किञ्चन । मृत्योः स मृत्युमाप्नोति य इह नानेव पश्यति — बृह. ४।४।१९
मनसैवेदमाप्तव्यं नेह नानास्ति किञ्चन । मृत्योः स मृत्युं गच्छति य इह नानेव पश्यति — कठो. ४।११
मनसैवेन्द्रजालश्रीर्जगति प्रवितन्यते । यावदेतत्सम्भवति तावन्मोक्षो न विद्यते — महो. ४।४९
मनसोत्पद्यते बिन्दुर्यथा क्षीरं घृतात्मकम् । न च बन्धनमध्यस्थं तद्वै कारणमानसम् — योगकु. ३।६
मनसो धारणं यत्तद्युक्तस्य च यमादिभिः । धारणा सा च संसारसागरोत्तारकारणम् — त्रि. ब्रा. २।१३४
मनसो धारणादेव पवनो धारितो भवेत् । मनसः स्थापनेहेतुरुच्यते.. — त्रि. ब्रा. २।११४
मनसो निगृहीतस्य लीलाभोगोऽल्पकोऽपि यः । तमेवालब्धविस्तारं क्लिष्टत्वाद्बहु मन्यते — महो. ५।७३
मनसो निग्रहायत्तमभयं सर्वयोगिनाम् — अद्वैत. ४०
मनसोऽप्युन्मनीभावाद्द्वैताभावं प्रचक्षते — अमन. २।७८
मनसोऽभ्युदयो नाशा मनोनाशो महोदयः [महो.५।९७+ — मुक्तिको. २।२९
मनसो मनः यत् — केनो. १।२
मनसो ये मनो विदुः । ते निचिक्युर्ब्रह्म पुराणमग्र्यम् — बृह. ४।४।१८
मनसो रेतः प्रथमं यदासीत् [बृ. जा. १।२+ — नृ. पू. १।१
मनसो वाव भूयोऽस्तीति तस्मै भगवान्ब्रवीतु — छांदो. ७।३।२
मनसो विजयान्नान्या गतिरस्ति भवार्णवे — महो. ४।७६
मनसो ह्युन्मनीभावे द्वैतं नैवोपलभ्यते — पैङ्गलो. ४।२०
मनस्तत्र लयं याति तद्विष्णोः परमं पदम् — ना. बि. ४७
मनस्ताद्दग्गुणगतं रसतन्मात्रवेदनम् — महो. ५।१५०
मनस्तां मूढतां विद्धि यदा नश्यति साऽनघ । चित्तनाशाभिधानं हि तत्स्वरूपमितीरितम् — अ. पू. ४।१६
मनस्ते मयि जुहोम्यसौ स्वाहा — कौ. त. २।४
मनस्ते मयि दध इति पुत्रोऽस्य मनांसि त्वयि दधानीति पिता — कौ. त. २।१५

मनस्त्वं भूत्वा मनः प्रदोमेत्वत्तो भूतं सम्भावयिष्यसि सर्वेषां कायानामर्हमर्हते स्वाहा पारमा: २।६
मनस्स्थानं गलान्तं बुद्धेर्वदनमहङ्कारस्य हृदयं चित्तस्य नाभिरिति शारीरको. २
मनस्यन्तस्तु तैजसः आगम. २
मनस्सङ्कल्परहितांस्त्रीन्गृहान् पञ्च सप्त वा । मधुमक्षिकवत्कृत्वा माधूकरमिति स्मृतम् १सं. सो. २।६६
मनस्सर्वेन्द्रियाणि जायन्ते पुरुषोत्तमात् क्षि. चि. २
मनः कर्माणि जायन्ते मनो लिप्यति पातकैः । मनश्चेदुन्मनीभूयान्न पुण्यं न च पातकम् यो. शि. ६।६१
मनः कायाग्निमाहन्ति स प्रेरयति मारुतम् । मारुतस्तूरसि चरन्मन्द्रं जनयति स्वरम् मैत्रा. ७।११
मनः परस्तात्प्राण आरुन्धे कौ. उ. २।२
मनःपवनयोर्नाशादिन्द्रियार्थान् विमुञ्चति अमन. १।२०
मनः पितरः प्राणो मनुष्याः बृ. उ. १।५।६
मनःपूतिमुच्छिष्टोपहतमित्यनेन तत्पावयेत् मैत्रा. ६।९
मनः पूर्वरूपं, वागुत्तररूपम् ३ ऐत. १।१।२
मनः पूर्वं मनः सर्वं मनस्तस्मान्न लक्षयेत् दुर्वासो. २।१६
मनः प्रचारशून्यं परमात्मनि लीनं भवति मं. ब्रा. ३।२
मनःप्रशमनोपायोयोगइत्यभिधीयते महो. ५।४२
मनःप्रसादः सौम्यत्वं भ. गी. १७।१६
मनः प्राणे प्राणस्तेजसि तेजः परस्यां देवतायां [छांदो.६।८।६ +।१५।१,२
मनःप्राणेन्द्रियक्रियाः भ. गी. १८।३३
मनः प्राविशद्धृदयदेव १ ऐत. १।४।६
मनःषष्ठानीन्द्रियाणि भ. गी. १५।७
मनः षष्ठेन्द्रियातीतं तन्मयो भव वै मुने अ. पू. १।२१

मनःसङ्कल्पकं ध्यात्वा संक्षिप्यात्मनि बुद्धिमान् । धारयित्वा तथात्मानं धारणा परिकीर्तिता अ. ना. १६
मनः सत्येन शुद्ध्यति भवसं. ३।१८
मनः सर्वत्र संयम्य ओङ्कारं तत्र चिन्तयेत् यो. शि. ३
मनः सर्वेन्द्रियाणि च । खं वायुर्ज्योतिरापः पृथिवी विश्वस्य धारिणी । नारायणाद्ब्रह्मा जायते । नारायणाद्रुद्रो जायते नारा. १
मनः संयम्य मच्चित्तः भ. गी. ६।१४
मनः सर्वैर्ध्यातैः सहाप्येति कौ. उ. ३।३
मनस्स्पन्दोपशान्त्याऽयं संसारः प्रविलीयते शांडि. १।७।२५
मनः स्वात्मनि चाध्यस्तं प्रविश्य परमेश्वरः । मनस्स्थं तस्य सत्त्वस्थो ददाति नियमेन तु पा. ब्र. १७
मनागपि मनो व्योम्नि वासनारजनीक्षये । कलिका तनुतामेति चिदादित्यप्रकाशनात् महो. ४।११७
मनागपि विचारेण चेतसः स्वस्य निग्रहः । पुरुषेण कृतो येन तेनाप्तं जन्मनः फलम् अ. पू. ४।९२
मनागूर्ध्वासनो भूत्वा सङ्कृत्य चरणावुभौ । संवृतास्योन्मीलनाभ उपविष्टश्च वाग्यतः योगो. २०
मनीषया मनः महाना. १७।१३
मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत् भ. गी. ४।१
मनुष्यकृतस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा महाना. १४।१
मनुष्यश्राद्धे सनक-सनन्दन-सनत्कुमार-सनत्सुजातान्... ब्राह्मणानर्चयेत् मा. प. ४।३९
मनुष्या एत एव छांदो. १।५।६
मनुष्याणां जनार्दन भ. गी. १।४४
मनुष्याणां सहस्रेषु भ. गी. ७।३
मनुष्याः पशवश्च ये तैत्ति. २।३
मनुष्याः पार्थ सर्वशः [भ.गी.३।२३+ ४।११

मनुष्यो वाऽपि यक्षो वा स्वेच्छया-
ऽपीक्षणाद्भवेत् । सिंहो व्याघ्रो
गजो वाऽश्वः स्वेच्छया बहुता-
मियात् — १ यो. त. ११०

मनो घनविकल्पं तु यच्छती-
न्द्रियतां शनैः — महो. ५।१२६

मनोऽङ्गस्य हि शृङ्खला [महो.५।९८+ — मुक्तिको. २।३९

मनो दुर्निग्रहं चलम् — भ. गी. ६।३५

मनो दूतं वेद दूतवान्भवति — कौ. त. २।१

मनोदूरतरं याति ग्रामे कालेयको यथा — महो. ३।१८

मनो दृश्यमिदं द्वैतं यत्किञ्चित्स-
चराचरम् । मनसो ह्यमनीभावे
द्वैतं नैवोपलभ्यते — अद्वैत. ३१

मनोदृश्यमिदं सर्वं यत्किञ्चित्स-
चराचरम् । मनसोऽप्युन्मनी-
भावाद्द्वैताभावं प्रचक्षते — अमन. २।७८

मनोऽस्य दैवं चक्षुः स वा एष एतेन
दैवेन चक्षुषा मनसैतान्कामान्
पश्यन्रमते — छांदो. ८।१२।५

मनोद्वारेण तीक्ष्णेन योगमाश्रित्य
नित्यशः — क्षुरिको. १२

मनोऽध्यात्मं, मंतव्यमधिभूतं, चन्द्र-
स्तत्राधिदैवतं, नाडी तेषां
निबन्धनम् — सुबालो. ५।६

मनोऽध्यात्मं ज्ञानं ज्ञेयमिती-
न्द्रियाण्यन्वभवत् — २ प्रणवो. ३

मनोध्यानयोगेन त्वग्द्वारा स्पर्श-
गुणः पाण्यधिष्ठितो वायौ
तिष्ठति वायुस्तिष्ठति — त्रि. ब्रा. १।६

मनोध्यायत्सर्वेप्राणा मनुध्यायन्ति — कौ. त. ३।२

मनोनाथस्तु मारुतः — वराहो. २।८०

मनो नाम देवतावरोधिनी सा मे
ऽमुष्मादिदमवरुन्धां तस्यै स्वाहा — कौ. त. २।३

मनोनाशोमहोदयः [महो.५।९७+ — मुक्तिको. २।२९

मनो नियन्ता प्रकृतिमयोऽस्य
प्रवोदनेन खल्वीरितं परि-
भ्रमतीदं शरीरं चक्रमिव — मैत्रा. २।९

मनोनिरोधिनी कन्था — निर्वाणो. ३

मनोनिर्मथनादेव विकल्पा बहवस्तथा — त्रि. ब्रा. २।१४

मनोनुकूले न तु चक्षुपीडने
गुहानिवाताश्रयणे प्रयोजयेत् — श्वेताश्व. २।१०

मनोऽन्तरिक्षलोकःप्राणोऽसौलोकः — बृह. १।५।४

मनोऽप्यन्यत्र निक्षिप्तं चक्षुरन्यत्र
पातितम् । तथापि योगिनां
योगो ह्यविच्छिन्नः प्रवर्तते — ब्र. वि. ४४

मनो बुद्धिरहङ्कारश्चित्तमित्यन्तः-
करणचतुष्टयम् — शारीरको. २

मनोबुद्धिरहङ्कारचित्तसङ्घातका
अमी । न त्वं नाहं न चान्यद्वा
सर्वं ब्रह्मैव केवलम् — ते. बिं. ६।३४

मनोबुद्धिरहङ्कारश्चित्त चेति चतुष्टयम् — वराहो. १।४

मनो बुद्धिरहङ्कारः खानिलाग्नि-
जलानि भूः । एताः प्रकृतय-
स्त्वष्टौ विकाराः षोडशापरे — शारीरको. १२

मनोबुद्धिसमाधानमर्थतत्त्वपरी-
क्षणम् । तत्त्वस्मृतेरुपस्थाना-
त्सर्वमेतत्प्रवर्तते — आयुर्वे. १८

मनोबुद्धिस्तथैवात्माह्यव्यक्तं नृप-
सत्तम । इन्द्रियेभ्यः पराणीह
चत्वारि कथितानि च — अवधू. २।३९

मनोबुद्ध्योश्चित्ताहङ्कारौ चांतर्मुखौ — त्रि. ब्रा. १।४

मनोब्रह्मा (यज्ञस्य) [महाना.१८।१+ — गर्भो. ११

मनो ब्रह्मेति व्यजानात् — तैत्ति. ३।४

मनो ब्रह्मेत्युपासीतेत्यध्यात्मम् — ३।१८।१

मनो भित्त्वा भूतादिं भिनत्ति — सुबालो. ११।९

मनोमयज्ञानमयान् सम्यग्दग्ध्वा
क्रमेण तु । घटस्थदीपवच्छम्भु-
रन्तरेव प्रकाशते — योगकुं. ३।१२

मनोमयः प्राणशरीरनेता प्रतिष्ठितो-
ऽन्ने हृदयं सन्निधाय — मुण्ड. २।२।७

मनोमयः प्राणमयः (आत्मा) — बृह. ४।४।५

मनोमयः प्राणशरीरो भारूपः
सत्यसङ्कल्प आत्मेति — मैत्रा. २।९

मनोमयः प्राणशरीरो भारूपः
सत्यसङ्कल्प आकाशात्मा
सर्वकर्मा सर्वकामः सर्वगन्धः
सर्वरसः सर्वमिदमभ्यात्तो-
ऽवाक्यनादरः — छान्दो. ३।१४।२

मनोमयः सङ्कल्पात्मा विज्ञान-
मयः कालात्माऽऽनन्दमयो
लयात्मैकत्वं नास्ति द्वैतं कुतः सुबालो. ५।१५
मनोमयेन प्राणोऽपि तथा पूर्णः
स्वभावतः । तथा मनोमयो
ज्ञात्मा पूर्णो ज्ञानमयेन तु कठरु. २३
मनोमयोऽयं पुरुषो भाः सत्यं बृह. ५।६।१
मनो मारय निश्शङ्कं त्वां
प्रबध्नन्ति नारयः महो. ४।९४
मनो मे त्वयि दधानीति पिता
मनस्ते मयि दध इति पुत्रः कौ. व. २।१५
मनो मे दिशतु वैष्णवी लक्ष्म्यु. ३
मनो मे वाचि प्रतिष्ठितं [२ ऐत. शांतिपा.
मनो यजुर्वेदः प्राणः सामवेदः बृह. १।५।५
मनो यजुः प्रपद्ये [प्रवर्ग्या. १+ वा. सं. ३६।१
मनो यज्ञस्य हंसो यज्ञसूत्रम् पा. ब्र. ३
मनोयुक्तान्तरदृष्टिस्तारक-
प्रकाशाय भवति मं. ब्रा. १।४
मनो रथः (शारीरयज्ञस्य) प्रा. हो. ४।३
मनोलयकारणमहमेव मं. ब्रा. ५।१
मनोवचोभिरग्राह्यं पूर्णात्पूर्णं
सुखात्सुखम् महो. ५।४६
मनोवशात् प्राणवायुः स्ववशे
स्थाप्यते सदा । नासिकापुटयोः
प्राणः पर्यायेण प्रवर्तते त्रि. ब्रा. २।११६
मनो वा आयतनम् बृह. ६।१।५
मनोवाक्कायकर्माणि मे शुध्यन्तां
ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा
भूयास९ स्वाहा महाना. १४।१४
मनोवागगोचरम् निर्बाणो. ३
मनोवाचामगोचरं ब्रह्म त्रि. म. ना. १।३
मनोवाचामगोचरम् त्रि. म. ना. ७।७
[+अध्यात्मो. ६३ +शि. सा. ६।१
मनो वाव वाचो भूयो यथा वै द्वे
वाऽऽमलके द्वे वा कोले द्वौ
वाक्षौ मुष्टिरनुभवत्येवं वाचं च
नाम मनोऽनुभवति छान्दो. ७।३।१
मनो वाऽस्य बुद्धिरात्मा सुबालो. १४।१

मनो विकल्पसङ्खातं तद्विकल्प-
परिक्षयात् । क्षीयते दग्ध-
संसारो निःसार इति निश्चितः महो. २।३४
मनोविनाशस्तु गुरुप्रसादान्निमेष-
मात्रेण तु साध्य एव अमन. २।२९
मनोविरचितं त्यक्त्वाऽमनस्कं भज अमन. १।७
मनोविलाससंसार इति मे
निश्चिता मतिः महो. ४।६८
मनो वै ग्रहः, स कामेनातिग्रहेण
गृहीतः बृह. ३।२।७
मनो वै ब्रह्मेति बृह. ४।१।६
मनो वै यज्ञस्य ब्रह्मा, तद्यदिदं
मनः सोऽसौ चन्द्रः स ब्रह्मा
स मुक्तिः साऽतिमुक्तिः... बृह. ३।१।६
मनो वै सम्राट् परमं ब्रह्म बृह. ४।१।६
मनोव्याधेश्चिकित्सार्थमुपायं
कथयामि ते । यद्यत्स्वाभिमतं
वस्तु तत्त्यजन्मोक्षमश्नुते महो. ४।८८
मनोव्यानयोगेन त्वग्द्वारा स्पर्श-
गुणः पाण्यधिष्ठितो वायौ
तिष्ठति वायुस्तिष्ठति त्रि. ब्रा. १।६
मनोऽस्मात्सर्वाणि ध्यातान्य-
भिविसृजते कौ. ब्र. ३।४
मनोऽस्य दैवं चक्षुः स वा एष
एतेन दैवेन चक्षुषा मनसै-
तान्कामान्पश्यन्रमते छान्दो. ८।१२।५
मनोऽहङ्कार एव च ते. बिं. ५।१००
मनो ह वा आयतनम् छान्दो. ५।१।५
मनो ह वाव यजमान इष्टफलमेवो-
दानः स एनं यजमानमहरह-
र्ब्रह्म गमयति प्रश्नो. ४।४
मनो हविः चित्यु. ६।१
मनोऽहं गगनाकारं मनोऽहं सर्वतो-
मुखम् । मनोऽहं सर्वमात्मा च
न मनः केवलः परः यो. शि. ६।६०
मनो हिङ्कारो वाक्प्रस्तावश्चक्षु-
रुद्गीथः श्रोत्रं प्रतिहारः प्राणो
निधनमेतद्गायत्रं प्राणेषु प्रोतं छान्दो. २।११।१

मनो हि द्विविधं प्रोक्तं-शुद्धं चाशुद्धमेव च। अशुद्धं कामसङ्कल्पं (ल्पात्) शुद्धं कामविवर्जितम् ब्र. वि. १
[+ त्रि. ता. ५।२+ मैत्रा. ६।३४
मनो हि ब्रह्म मन उपास्व छान्दो. ७।३।१
मनो हि विजिज्ञास्यं बृह. १।५।९
मनो होच्चक्राम तत्संवत्सरं प्रोष्यागत्योवाच कथमशकत मदृते जीवितुमिति बृह. ६।१।११
मनो हृदि निरुध्य च भ. गी. ८।१२
मनो ह्यात्मा, मनो हि लोको मनो ब्रह्म, मन उपास्वेति छान्दो. ७।३।१
मन्तव्यमेवाप्येति मन्तव्यमेवास्तमेति सुबालो. ९।१०
मन्त्रकल्पो ब्राह्मणमृग्यजुस्सामाथर्वण्येषा व्याहृतिश्चतुर्णां वेदानामानुपूर्व्येण २ प्रणवो. १८
मन्त्रपूतं तु यच्छ्राद्धममन्त्राय प्रयच्छति (छिन्दन्ति दातृहस्तं च जिह्वाग्रमितरस्य च) इतिहा. २७,२८
मन्त्रमित्युच्यते ब्रह्मन् मदधिष्ठानतोऽपि वा। मूलत्वात् सर्वमन्त्राणां मूलाधारसमुद्भवात् ...मूलमन्त्र इति स्मृतः यो. शि. २।८-९
मन्त्रयोगो लयश्चैव राजयोगो हठस्तथा। योगश्चतुर्विधो प्रोक्तो योगिभिस्तत्त्वदर्शिभिः योगराजो. १,२
मन्त्रराजाय विद्महे महामन्त्राय धीमहि। तन्नो मन्त्रः प्रचोदयात् वनदु. १५२
मन्त्रहीनमदक्षिणम् भ. गी. १७।१३
मन्त्रं विना कर्म कुर्याद्भस्मन्याहुतिवद्भवेत् ना. प. ३।८
मन्त्राणांपरमोमन्त्रस्तारेतिपरमा तारा सा देवतानां च देवता तारोप. १३
मन्त्राणां मातृका देवी देव्यु. २१
मन्त्राणां सङ्क्लृप्त्यै कर्माणि सङ्कल्पन्ते कर्मणां संक्लृप्त्यै लोकः सङ्कल्पते छान्दो. ७।४।२
मन्त्रानधीयीतेत्यथाऽधीते कर्माणि कुर्वीतेत्यथ कुरुते पुत्रांश्च पशूंश्चेच्छेयेत्यथेच्छत इमं च लोकममुं चेच्छेयेत्यथेच्छते छान्दो. ७।३।१
मन्त्राश्च मामभिमुखीभवेयुः २ प्रणवो. ४
मन्त्रोपनिषदं ब्रह्म पदक्रमसमन्वितम्। पठन्ति भार्गवा ह्येते ह्याथर्वाणो भृगूत्तमाः मन्त्रिको. १०
मन्त्रो लयो हठो राजयोगोऽन्तर्भूमिकाः क्रमात्। एक एव चतुर्धाऽयं महायोगोऽभिधीयते यो. शि. १।१२९
मन्त्रोऽहमहमेवाज्यं भ. गी. ९।१६
मन्थे सꣳस्रवमवनयति बृह. ६।३।२
मन्दं परिहरन्कर्म स्वदेहमनुपालयेत्। वर्षासुजीर्णकटवत्तिष्ठन्प्यवसीदति शिवो. ७।१२४
मन्मथक्षेत्रपालाः निर्वाणो. १
मन्मना भव मद्भक्तः [भ.गी.९।३४+ १८।६५
मन्मना मय्याहितासुर्मय्येवार्पिताखिलकर्मा भस्मदिग्धाङ्गो रुद्राक्षभूषणो मामेव सर्वभावेन प्रपन्नो मदेक-पूजा-निरतः सम्पूजयेत् भस्मजा. २।१०
मन्मया मामुपाश्रिताः भ. गी. ४।१०
मन्यन्तां संशयापन्ना न मन्येऽहमसंशयः १ अवधू. १६
मन्यते तमसाऽऽवृता भ. गी. १८।३२
मन्यते नाधिकं ततः भ. गी. ६।२२
मन्यन्ते मामबुद्धयः भ. गी. ७।२४
मन्यसे यदि तच्छक्यं भ. गी. ११।४
मन्युरकार्षीन्मन्युः करोति, नाहं करोमि महाना. १४।४
मन्युरिन्द्रो मन्युरेवास देवो मन्युर्होता वरुणो जातवेदाः वनदु. १०१
[+ऋ.मं.१०।८३।२+ अथर्व. ३२।२
मन्युः कारयिता नाहं कारयिता महाना. १४।४
मन्युः कर्ता, नाहं कर्ता महाना. १४।४
मन्युः पशुः (यज्ञस्य) महाना. १८।१

मन्येऽहं मां तद्विद्वांसं माहं पौत्र-
मघं रुद्रमिति न ह्यास्मात्पूर्वाः
प्रजाः प्रैति कौ. उ. २।१०
मन्वानो वै तन्न मनुते बृह. ४।३।२८
मम चरणस्मरणेन पूजया च
स्वकृतमसः परिमुच्यते हि जन्तुः वराहो. ३।१२
मम जातरूपं तेजो दर्शय दर्शय चाक्षुषो. २
मम तेजोंशसम्भवम् भ. गी. १०।४१
ममत्वेनभवेज्जीवोनिर्ममत्वेनकेवलः यो. चू. ८४
मम देहे गुडाकेश भ. गी. ११।७
मम पुत्रो मम धनमहं सोऽयमिदं
मम । इतीयमिन्द्रजालेन
वासनेव विवल्गति महो. ४।१२९
मम प्रतिष्ठां भुव आण्डकोशा
विचैमि सं च हि नु यो विरुपी बा. मं. ९
मम प्रसादं कुरु कुरु लाङ्गलो. ६
मम प्रियेण बिल्वेन त्वं कुरुष्व
मदर्चनम् १ बिल्वो. ४
मम भूतमहेश्वरम् भ. गी. ९।११
मम माया दुरत्यया भ. गी. ७।१४
मम यशसा विरजां वा अयं नदीं
प्रापन्न वायं जिगीष्यतीति कौ. उ. १।३
मम योनिरप्स्वन्तःसमुद्रे । य
एवं वेद स देवीपदमाप्नोति देव्यु. ४
मम योनिर्महद्ब्रह्म भ. गी. १४।३
मम यो वेत्ति तत्त्वतः भ. गी. १०।७
मम रूपमिति ज्ञेयं सर्वरूपं तदेव हि १ बिल्वो. ६
मम रूपा रवेस्तेजश्चन्द्रनक्षत्र-
ग्रहतेजांसि च पा. ब्र. २
मम वचमसुवेनावभावे कात्यायनाय महाना. ६।१२
मम वर्त्मानुवर्तन्ते [भ.गी.३।२३+ ४।११
मम वशानि सर्वाणि युगान्यपि पा. ब्र. २
मम समिद्धेऽहौषीः प्राणापानौ त
आददेऽसाविति (जुहुयात्) बृह. ६।४।१२
मम समिद्धेऽहौषीः पुत्रपशूँस्त
आददेऽसाविति (जुहुयात्) बृह. ६।४।१२
मम समिद्धेऽहौषीरिष्टासुकृते त
आददेऽसाविति बृह. ६।४।१२
मम समिद्धेऽहौषीराशापराकाशौ
त आददेऽसाविति (जुहुयात्) बृह. ६।४।१२
मम सर्वकार्याणि साधय साधय लाङ्गूलो. ६
मम साधर्म्यमागताः भ. गी. १४।२
ममाकर्तुरलेपस्य यथारब्धं प्रवर्तताम् १ अवधू. २२
(ॐ) ममाग्रतः सदा विष्णुः
पृष्ठतश्चापि केशवः । गोविन्दो
दक्षिणे पार्श्वे वामे च मधुसूदनः विष्णुहृ. १।१
ममाऽत्मा भूतभावनः भ. गी. ९।५
ममाव्ययमनुत्तमम् भ. गी. ७।२४
ममेति द्व्यक्षरं मृत्युस्त्र्यक्षरं न
ममेति च शिवो. ७।११५
ममेति बध्यते जन्तुर्निर्ममेति विमुच्यते पैङ्गलो. ४।२०
[महो. ४।७२+वराहो.२।४४+ शिवो. ७।११४
ममैवांशो जीवलोके भ. गी. १५।७
मम्लुला भवन्ती त्वासादयामि चित्स्यु. १९।१
मया ततमितीदमश्नुते तद्यथा-
सद्यदि मे असद्विदुः बा. मं. १९
मया ततमिदं सर्वं भ. गी. ९।४
मयाऽतिरिक्तं यत्तद्वा तत्तन्नास्तीति
निश्चिनु । अहं ब्रह्मास्मि सिद्धो-
ऽस्मि नित्यशुद्धोऽस्म्यहं सदा ते. बि. ३।२०
मया द्रष्टुमिति प्रभो भ. गी. ११।४
मयाऽध्यक्षेण प्रकृतिः भ. गी. ९।१०
मया प्रमादात्प्रणयेन वाऽपि भ. गी. ११।४१
मया प्रसन्नेन तवार्जुनेदं भ. गी. ११।४७
मया भूतं चराचरम् भ. गी. १०।३९
मया हतांस्त्वं जहि मा व्यथिष्ठाः भ. गी. ११।३४
मयि चानन्ययोगेन भ. गी. १३।११
मयि जीवत्वमीशत्वं कल्पितं
वस्तुतो नहि । इति यस्तु वि-
जानाति स मुक्तो नात्र संशयः सरस्व. ९७
मयि तेज इन्द्रियं यशो द्रविणं सुकृतं बृह. ६।४।६
मयि ते तेऽपि चाप्यहम् भ. गी. ९।२९
मयि प्राणांस्त्वयि मनसा जुहोमि
स्वाहा बृ. उ. ६।४।२४
मयि बुद्धिं निवेशय भ. गी. १२।८

मयि मेधां मयि प्रजां मयि सूर्यो
  भ्राजो दधातु महाना. १३।६
  [तै. सं. ३।३।१।२+ तै.आ.४।४२।२
मयि मेधां मयि प्रजां मयीन्द्र
  इन्द्रियं दधातु महाना. १३।६
मयि मेधां मयि प्रजां मय्यग्निस्तेजो
  दधातु महाना. १३।६
मयि सन्न्यस्य मत्परः भ. गी. १८।५७
मयि सन्न्यस्य मत्पराः भ. गी. १२।६
मयि सर्वमिदं प्रोतं भ. गी. ७।७
मयि सर्वं लयं याति तद्ब्रह्माद्वय-
  मस्म्यहम् कैव. १९
मयि सर्वं प्रतिष्ठितम् कैव. १९
  [+भस्मजा. २।६+ २।१३
मयि सर्वाणि कर्माणि भ. गी. ३।३०
मयैव चेतनेनेमे सर्वे घटपटादयः ।
  सूर्यान्ता अवभासन्ते दीपेने-
  वात्मतेजसा १ सं. सो. २।२२
मयैव विहितान्हि तान् भ. गी. ७।२२
मयैवैताः स्फुरन्तीह विचित्रेन्द्रिय-
  वृत्तयः । तेजसाऽन्तःप्रकाशेन
  यथाऽग्निकणपङ्क्तयः १ सं. सो. २।२३
मयैवैते निहताः पूर्वमेव भ. गी. ११।३३
मयोपदिष्टे कैवल्ये साक्षाद्ब्रह्मणि
  शाश्वते । विहाय पुत्रो निर्वेदा-
  त्प्रकाशं यास्यति स्वयम् शु. र. १।४
मयो मह्यमस्तु प्रतिगृहीत्रे चित्यु. १०।१,४
मय्यखण्डसुखाम्भोधौ बहुधा
  विश्ववीचयः । उत्पद्यन्ते
  विलीयंते मायामारुतविभ्रमात् कुं. उ. १४
मय्यग्नौ स्वात्मानं हविर्ध्यायेत्
  तयैवानुष्टुभर्चा । ध्यान-
  योगोऽयमेव अव्यक्तो. ४
मय्ययमग्निर्दधातु चित्यु. ११।८
मय्यर्पितमनोबुद्धिः [भ.गी. ८।७ +१२।१४
मय्यावेशितचेतसाम् भ. गी. १२।७
मय्यावेश्य मनो ये मां भ. गी. १२।२
मय्यासक्तमनाः पार्थ भ. गी. ७।१
मय्येव मन आधत्स्व भ. गी. १२।८

मय्येव सकलं जातं मयि सर्वं
  प्रतिष्ठितम् कैव. १९
मरणं न तु वायोश्च भयं भवति
  योगिनः १ यो. त. ५७
मरणं यत्र सर्वेषां तत्रासौ परि-
  जीवति । यत्र जीवन्ति
  मूढास्तु तत्रासौ मृत एव वै यो. शि. १।४६
मरणं यदि चेज्जन्म जन्माभावे
  मृतिर्न च ते. बि. ५।२४
मरणादतिरिच्यते भ. गी. २।३४
मरणे सम्भवे चैव गत्यागमन-
  योरपि । स्थितौ सर्वशरीरेषु
  आकाशेनाविलक्षणः अद्वैत. ९
मरीचयः स्वायम्भुवः अरुणी. १
मरीचयोऽर्कस्यास्तं गच्छतः सर्वा
  एतस्मिंस्तेजोमण्डल एकी-
  भवन्ति । ताः पुनः पुनरुदयतः
  प्रचरन्त्येवं ह वै तत्सर्वं परे देवे
  मनस्येकीभवन्ति प्रश्नो. ४।२
मरीचिर्मरुतामस्मि भ. गी. १०।२१
मरीचीनां पदमिच्छन्ति वेधसः
  [चित्यु. ११।११+ १३।२
मरुज्जयो यस्य सिद्धः सेवयेत्तं
  गुरुं सदा यो. शि. १।८०
मरुतः प्राणैरिन्द्रं बलेन बृहस्पतिं
  ब्रह्मवर्चसेन... सहवै. २२
मरुतः सदो हविर्धानाभ्यां चित्यु. ८।१
मरुतामेव तावदाधिपत्यं
  स्वाराज्यं पर्येता छान्दो. ३।९।४
मरुतामेवैको भूत्वा सोमेनैव
  मुखेनैतदेवामृतं दृष्ट्वा तृप्यति छान्दो. ३।९।२
मरुतो जगती सप्तदशो वै रूपं
  वर्षा अपानः शुक्र आदित्याः
  पश्चादुद्यन्ति मैत्रा. ७।२
मरुत्वन्तं वृषभं वावृधान- [ऋ.मं. ३।४७।५+
  [६।१९।११+ शौनको. ४
  [वा.सं.७।३६+तै.सं.१।४।१७।१

मरुदभ्यसनं सर्वमनोयुक्तं समभ्यसेत् । इतरत्र न कर्तव्या मनोवृत्तिर्मनीषिणा शांडि. १।७।३७
मरुभूमौ जलं सर्वं मरुभूमात्रमेव तत् [महो. ४।८४+ वराहो. २।७२
मर्कट एनमास्कन्दयति (दुःस्वप्ने) ३ ऐत्र. २।४।७
मर्त्यं चामृतं च स्थितं च यच्च सच्च त्यच्च बृह. २।३।१
मर्त्ये नास्त्यमृतं कुतः सुबालो. ५।१०
मर्त्यः स्विन्मृत्युना वृक्णः कस्मान्मूलात्प्ररोहति । जात एव न जायते को न्वेवं जनयेत्पुनः बृह ३।९।३१
मर्त्यं वा इदं शरीरमात्तं मृत्युना छांदो. ८।१२।१
मर्त्यानि हीमानि शरीराणी ३ अमृतैषा देवता... १ ऐत. १।८।४
मर्त्येनामृतमीप्सत्येवं सम्पन्नः १ ऐत. ३।२।३
मलं त्यजेत्कुहूर्नाडी मूत्रं मुञ्चति वारुणी यो. शि. ५।२६
मलं संवेद्यमुत्सृज्य मनो निर्मूलयन् परम् । आशापाशानलं छित्त्वा संविन्मात्रपरोऽस्म्यहम् १ सं. सो.२ ४८
मलिना (वासना) जन्महेतुःस्याच्छुद्धा जन्मविनाशिनी मुक्तिको. २।६१
मलिना वासना यैषा साऽसङ्ग इति कथ्यते अ. पू. २।५
मशकेन कृतं युद्धं सिंहौघैरेणुकोटरे महो. ४।६४
मशकेन हतेसिंहेजगत्सत्यं तदास्तु ते ते. बिं. ६।८६
मस्तकस्थामृतास्वादं पीत्वा ध्यानेन सादरम् । दीपाकारं महादेवं ज्वलन्तं नाभिमध्यमे । अभिषिच्यामृतेनैव हंस हंसेति यो जपेत् । जरामरणरोगादि न तस्य भुवि विद्यते ब्र. वि. २२
मस्तिष्कादूर्ध्वं प्रेरयत्यवमानोऽधिशीर्षतः । तद्वा अथर्वणः शिरो देवकोशः समुज्झितः अ. शिरः. ३।१४
मह इति चन्द्रमाः तैत्ति. १।५।२
मह इति ब्रह्म तैत्ति. १।५।३
मह इति ब्रह्मणि तैत्ति. १।६।२
मह इति महर्लोकः गायत्रीर. २
मह इत्यन्नम् । अन्नेन वाव सर्वे प्राणा महीयन्ते तैत्ति. १।५।३
मह इत्यादित्यः । आदित्येन वाव सर्वे लोका महीयन्ते तैत्ति. १।५।२
महच्छैलेन्द्रनीलं वा सम्भवेच्चेदिदं जगत् । मेरुरागत्य पद्माक्षे स्थितश्चेदस्त्विदं जगत् ते. बिं. ६।८५
महच्छोकभयं प्राप्ताः स्मो न चैतत्सर्वैः समभिहितं ते वयं भगवन्तमेवोपधावाम २ प्रणवो. १९
महतः परमव्यक्तमव्यक्तात्पुरुषः परः । पुरुषात्तु परा देवी सा काष्ठा सा परा गतिः गुह्यका. ४२
महतः परमव्यक्तमव्यक्तात्पुरुषः परः । पुरुषान्न परं किञ्चित्सा काष्ठा सा परा गतिः कठो. ३।११
महता दुःखेन जातमात्रस्तु वैष्णवेन वायुना संस्पृष्टस्तदा न स्मरति जन्ममरणानि न च कर्म शुभाशुभं विन्दति गर्भो. १०
महतां च लोकं परं च लोकं दहति सुबालो. १५।२
महतां वा अयं महान्रोदसी व्याप्य स्थितः अव्यक्तो. ३
महति स्यन्दने स्थितौ भ. गी. १।१४
महति श्रूयमाणे तु महाभेर्यादिकध्वनौ । तत्र सूक्ष्मं सूक्ष्मतरं नादमेव परामृशेत् ना. बिं. ३६
महतीं श्रियमश्नुते नृ. पू. ३।२
महती ज्ञानसंपत्तिः शुचिर्धारणतः सदा (रुद्राक्षाणां) रु. जा. ९
महतो महत्तरं (ब्रह्म) त्रि. म. ना. ७।७
महतोऽव्यक्तमुत्तमम् कठो. ६।७
महतोऽहङ्कारः [+त्रि.म.ना.२।५+ [त्रि. ब्रा. १।१+ गोपालो. २।१३
महत्तरा महिमा देवतानाम् त्रि. महो. १
महत्पदमत्रैतत्समर्पितम् मुण्ड. २।२।१
महत्पदमत्रैतत्सर्वमर्पितम् (मा.पा.) मुण्ड. २।२।१
महत्पदं ज्ञात्वा वृक्षमूले वसेत सुबालो. १३।२

महत्यज्ञानतमसि मग्नो जरामरण-
द्वंद्वैरभिभूयमानः...निर्मुच्यते — निरुक्तो. २।२

महत्त्वं जडत्वं काठिन्यं विद्यते
यस्मिन्नक्षतेरेतन्महि लकारः
परं धाम — त्रि. ता. १।८

महत्त्वान्महत्त्वान्मानत्वान्मुक्त-
त्वान्महादेवत्वात्...सच्चिदान-
न्दमात्रः स स्वराद् भवति — नृसिंहो. ७।१

महदव्यक्तेऽव्यक्तं पुरुषे
क्रमेण विलीयते — पैङ्गलो. ३।४

महदहङ्कार-पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाश-
त्वेन बृहद्रूपेणाण्डकोशेन कर्म-
ज्ञानार्थरूपतया भासमानमद्वि-
तीयमखिलोपाधिविनिर्मुक्तं...
चैतन्यं ब्रह्म — निरा. ५

महदहङ्कृतितमोभिश्च मूलप्रकृत्या
परिवेष्टितं (ब्रह्माण्डं) — त्रि. म. ना. ६।२

महदादि जगन्मायामयं मय्येव
केवलम् — वराहो. ३।१५

महद्भयं वज्रमुद्यतं य एतद्विदु-
रमृतास्ते भवन्ति — कठो. ६।२

महद्देहा जिह्वया स्रुवं लिहानाः
दंष्ट्राव्याप्ताकाशा महच्छब्दाः
(प्राणिनः) ब्रह्माणं हंतुमुद्युक्ताः — ग. शो. ३।६

महर्षयः सप्त पूर्वे — भ. गी. १०।६

महर्षिर्वेधं अन्तर्बाह्येन्द्रियैरदृश्यम् — मं. ब्रा. १।४

महर्षीणां च सर्वशः — भ. गी. १०।२

महर्षीणां भृगुरहं — भ. गी. १०।२५

महः पुच्छं प्रतिष्ठा — तैत्ति. २।४

महा५ इन्द्रो वज्रबाहुः षोडशी — महाना. ५।८

महाकर्ता महाभोक्ता महात्यागी
भवानघ — अ. पू. १।१८

महाकालाय विद्महे श्मशानवासिने
धीमहि । तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् — पारायणो. १

महाखरो वा विहेन युध्यते चे-
ज्जगत्स्थितिः — ते. बि. ६।९२

महाखरो गजगतिं गतश्चे-
ज्जगदस्तु तत् — ते. बिं. ६।९३

महाचमस्यः प्रवेदयते — तैत्ति. १।५।१

महाचिदेकैवेहास्ति महासत्तेति
योच्यते — अ. पू. ५।५५

महात्मनश्चतुरो देव एकः — छांदो. ४।३।६

महात्मानस्तु मां पार्थ — भ. गी. ९।१०

महात्रिपुरसुन्दरी वै प्रत्यक् चितिः — बह्वृचो. २

महात्रिपुरसुन्दरी बहिरन्तरनुप्रविश्य
स्वयमेकैव विभाति — बह्वृचो. २

महादेवमन्तःपार्श्वेनौषिष्ठहन५
शिङ्गीनिकोशाभ्याम् — चित्यु. २१।१

महादेवे त्रिपुण्ड्रस्य धारणे भस्म-
कुण्ठने । पुण्यलेशविहीनस्य
श्रद्धा नैव प्रजायते — सि. शि. ५

महादेवो भगवान्नन्दिकेशः षडा-
ननस्तुम्बुरुर्नारदश्च । सरस्वती
पर्वत-श्चित्रकेतु-र्हाहाहूहूश्चेति
गाने रसज्ञाः — गान्धर्वो. १०

महादेव्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै
(त्नीं)च धीमहि । तन्नो लक्ष्मीः
प्रचोदयात् [ना.पू. ता.४।३+ — वनदु. १२५

महाधियः शान्तधियो ये याता
विमनस्कतां... — महो. ५।६१

महानग्निः काष्ठमार्द्रं च शुष्कं
कृत्वा दहेदीश्वरोत्कृष्टबुद्धिः ।
दहेत्पापान्याशु विज्ञानदात्री
न संसारे मज्जते वा कदाचित् — सि. शि. ४

महानन्दमुदकमुपस्पृश्यापोऽवगाह्य... — सूर्यता. १।८

महानदीषूर्मय इवानिवर्तकमस्य
यत्पुराकृतम् — मैत्रा. ४।२

महानरकसाम्राज्ये मत्तदुष्कृत-
वारणाः । आशाशरशला-
काढ्या दुर्जया हीन्द्रियारयः — महो. ५।७६

महानवोऽयं पुरुषो योऽङ्गुष्ठाग्रे
प्रतिष्ठितः । तमद्भिः परिषि-
ञ्चामि सोऽस्यान्ते अमृतायच — प्रा. हो. २।२

महानव्यक्ते विलीयतेऽव्यक्तमक्षरे
विलीयते, अक्षरं तमसि विली-
यते, तमः परे देव एकीभवति — सुबालो. २।२

महानहं विश्वमहं विचित्रम् — कैव. २।१

महानुकम्पासिन्धुर्बन्धुर्भुवनस्य गोप्ता — हेरम्बो. २

महान्कीर्त्यर्तुं न निन्देत्तद्व्रतम् छांदो. २।१६।२
महान्कीर्त्या तपन्तं न निन्देत्तद्व्रतम् छांदो. २।१४।२
महान्कीर्त्या न काञ्चन परिहरे-
त्तद्व्रतम् छांदो. २।१३।२
महान्कीर्त्या न प्रत्यङ्ङग्निमाचामेन्न
निष्ठीवेत्तद्व्रतम् छांदो. २।१२।२
महान्कीर्त्या पशून्न निन्देत्तद्व्रतम् छांदो. २।१८।२
महान्कीर्त्या ब्राह्मणान्न निन्दे-
त्तद्व्रतम् छांदो. २।२०।२
महान्कीर्त्या महामनाः स्यात्तद्व्रतम् छांदो. २।११।२
महान्कीर्त्यालोकान्न निन्देत्तद्व्रतम् छांदो. २।१७।२
महान्कीर्त्या वर्षन्तं न निन्देत्तद्व्रतम् छांदो. २।१५।२
महान्कीर्त्या संवत्सरं मज्ज्ञो नाश्नी-
यात्तद्व्रतम् छांदो. २।१९।२
महान्प्रजया पशुभिर्भवति [छांदो. २।११।२–२।२०।२
महान्तमस्य महिमानमाहुः, अन-
श्नमानो यदनन्नमत्तीति वै वयं
ब्रह्मचारिन्नेदमुपास्महे छांदो. ४।३।७
महान्तं दहत्यव्यक्तं दहत्यक्षरं
दहति मृत्युं दहति मृत्युर्वै
परे देव एकीभवति सुबालो. १५।२
महान्तं भिनत्ति, महान्तं भित्त्वा-
ऽव्यक्तं भिनत्त्यव्यक्तं भित्त्वा-
ऽक्षरं भिनत्त्यक्षरं भित्वा मृत्युं
भिनत्ति, मृत्युर्वै परे देव एकी-
भवति सुबालो. ११
महान्तममहान्तं विष्णुमविष्णुं...
नमाम्यनमाम्यहमनहं नृसिंहा-
नुष्टुभैव बुबुधिरे नृसिंहो. ६।१
महान्तं विभुमात्मानं मत्वा धीरो
न शोचति [कठो.२।२१+४।४+ ना. प. ९।१५
महान्धकार इव रागान्धमिन्द्र-
जालमिव मायामयं मैत्रा. ४।२
महान् प्रभुर्वै पुरुषः सत्त्वस्यैष प्रवर्तकः श्वेताश्व. ३।१२
महान् भवति तैत्ति. ३।१०।३
महान्भवति प्रजया पशुभिर्ब्रह्म-
वर्चसेन महान्कीर्त्या तैत्ति. ३।६
महान् घोषः प्रजापतेः चित्त्यु. १४।४
महान् वा अस्य महिमा शौनको. १।४

महापातकपापिष्ठसङ्गत्या सञ्चितं
च यत् । नाशयेत्तत्कथालाप-
शयनासनभोजनैः रामो. ५।१७
महापातकयुक्तानां पूर्वजन्मार्जि-
तागसाम् । त्रिपुण्ड्रोद्धूलनद्वेषो
जायते सुदृढं बुधाः बृ. जा. ५।११
महापातकात्पूतो भवति मुद्गलो. ५।१
महापातालपादान्तलम्बा तस्या
जयं स्मरेत् । ब्रह्माण्डार्धं कपालं
हि शिरस्तस्या विभावयेत् गुह्यका. ८
(अथ) महापीठे सपरिवारं समेतं
चतुस्सप्तात्मानं चतुरात्मानं मूला-
ग्नावग्निरूपं प्रणवं संदध्यात् नृसिंहो. ३।४
महापुरुष आत्मानं चतुर्धा कृत्वा
त्रिपादेन परमे व्योम्नि चासीत् मुद्गलो. ३।४
महापुरुषइतियमवोचाम संवत्सरएव ३ ऐत. २।३।१
महापुरुषोपेतं यो वेद स एव
नित्यपूतस्थः लिङ्गोप. २
महापुरुषो यच्चित्तं तत्सदा मय्ये-
वावतिष्ठते प. हं. २
महापुरुषो यस्तच्चित्तं मय्येव तिष्ठते तुरीया.३
महाप्रथमान्तार्धस्याद्यन्तवन्तो
द्वितीयान्तार्धस्याद्यं षणं तृतीया-
न्तार्धस्याद्यं नाम चतुर्थ्यन्तार्ध-
स्याद्यं साम जानीते सोऽमृतत्वं
च गच्छति नृ. पू. १।६
महाप्रलयसम्पत्तौ ह्यसत्तां समुपा-
गते । अशेषदृश्ये सर्गादौ शान्त-
मेवावशिष्यते मुण्डो. ४।५५
महाबाहो बहुबाहूरुपादं भ. गी. ११।२३
महाभारतमाख्यानं कुरुक्षेत्रं
सरस्वतीम् । केशवं गां च
गङ्गां च कीर्तयन्नावसीदति विष्णुहृ. १।८
महाभूतानि प्रयाजाः प्रा. हो. ४।३
महाभूतान्यहङ्कारः भ. गी. १३।५
महाभूतैः पंचभिरावृतं महदहंकृति-
तमोभिश्च मूलप्रकृत्या परिवे-
ष्टितम् (ब्रह्माण्डं) त्रि. म. ना. ६।२

महाभूतोत्थसूक्ष्माङ्गोपाधिकाः सर्वे जीवा इत्येके वदन्ति — त्रि. म. ना. ४।९

महामनुसमुद्भवं तदिति ब्रह्म शाश्वतम् — त्रि. ता. १।५

महामायं महाविभूति सच्चिदानन्दमात्रमेकरसं पुरमेव ब्रह्म मकारेण जानीयात् — नृसिंहो. ५।७

महामाया महालक्ष्मीर्महादेवी सरस्वती। आधारशक्तिरव्यक्ता यया विश्वं प्रवर्तते — यो. शि. २।११

महामुद्रा नभोमुद्रा ओड्याणं च जलन्धरम्। मूलबन्धं च यो वेत्ति स योगी मुक्तिभाजनम् — यो. चू. ४५

महामुद्रा महाबन्धो महावेधश्च खेचरी — १ यो. त. २६

महामेघे वा मरीचिरिव पश्येत्, तदप्येतमेव विद्यात् — ३ ऐत. २।४।६

महायोगेश्वरो हरिः — भ. गी. ११।९

महाराज बृहद्रथेक्ष्वाकुवंशध्वजशीर्षात्मज्ञः कृतकृत्यस्त्वं मरुन्नाम्नो विश्रुतोऽसीत्ययंखल्वात्मातेकतमोभगवान्वर्ण्यइति — मैत्रे. १।५

महारात्र उषस्युदिते व्रज ५-स्तिष्ठन्नासीनः शयानोऽरण्ये ग्रामे वा यावत्तरस ५ स्वाध्यायमधीतेसर्वांल्लोकाञ्जयति — सह्वै. १९

महालक्ष्मीर्महादेवी सर्वलोकैकमोहिनी — ना. पू. ता. २।२

महालक्ष्मीर्मूलप्रकृतिर्भवति — ना. पू. ता. २।४

महालक्ष्मीश्च विद्महे सर्वसिद्धिश्च धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात् — देव्यु. ९

महालीलास्थानं क्षराक्षराभ्यामधिकं पुरुषोत्तमाधिष्ठानम् — सामर. ५

महावाक्यत्रयं भवेत् — गुह्यका. ८०

महावाक्यान्युपदिशेत्सषडङ्गानि देशिकः — शु. र. ३।१५

महावाक्यार्थतो दूरो ब्रह्मात्मीत्यविदूरतः — ते. बिं. ५।१

महावाक्यार्थमनुस्मरन् ब्रह्माहमस्मि अहमस्मिब्रह्माहमस्मियोऽहमस्मि ब्रह्माहमस्मि अहमेवाहं मां जुहोमि स्वाहा — त्रि. म. ना. ८।३

महाविज्ञानमिव प्रतिपदेनाध्यवसायमिव यत्रैतदित्त्थेत्त्थेत्यभिपश्यति — आर्षे. ९।१

महाविद्या जगन्माता मुनीनां मोक्षदायिनी — ना. पू. ता. २।३

महाविद्यावतां पुंसां मनःक्षोभं करोति यः। सप्तरात्रौ व्यतीतायां सचशत्रुर्विनश्यति — वनदु. ९६

महाविभूति सच्चिदानन्दमात्रमेकरसं पुरमेव ब्रह्म मकारेण जानीयात् — नृसिंहो. ५।७

महाविष्णुमहेशानां प्रलयेष्वपि योगिनाम्। नास्ति पातो लयस्थानां महातत्त्वेऽपि वर्तिनाम् — अमन. १।८३

महाविष्णुमित्याह—महतां वा अयं महानोदसी व्याप्य स्थितः — अव्यक्तो. ३

महाविष्णुं तृतीयं स्थानं(जानीयात्) — नृ. पू. २।२

महाविष्णोरेकैकरोमकूपान्तरेष्वनन्तकोटिब्रह्माण्डानि सावरणानि भवन्ति — त्रि. म. ना. ६।३

महाविष्णोश्च देवस्य तत्सूक्ष्मं रूपमुच्यते — यो. शि. १।२४

महाविष्णोः करतले विलसंत्यनन्तकोटिब्रह्माण्डानि — त्रि. म. ना. ६।३

महाविष्णोः क्रीडाशरीररूपिणी ब्रह्मादीनामगोचरा (महामाया) — त्रि. म. ना. ४।९

महाव्याहृतिभिः सन्धाय गायत्रीं जपेत् — सन्ध्यो. २

महाशनो महापाप्मा — भ. गी. ३।३७

महाशून्यं ततो याति सर्वसिद्धिसमाश्रयम् — सौभाग्य. ११

महाश्मशानेऽप्यानन्दवने वासः — निर्वाणो. ४

महाश्रेयांसि सेवन्ते — त्रि.म.ना. ८।७

महासिद्धान्तः — निर्वाणो. ४

महास्थूलं महासूक्ष्मे महासूक्ष्मं महाकारणे च संहृत्य मात्राभिरोतानुज्ञात्रनुज्ञाविकल्परूपं चिन्तयन् ग्रसेत् नृसिंहो. ३।४
महाहविर्होता चित्यु. ५।१
महिमान एवैषामेते त्रय५ स्त्रिंशस्त्वेव देवा इति बृह. ३।९।२
महिमानमस्या वक्तुं स्वायुर्मानेनापि वक्तुं न चोत्सहे राधिको. ५
महिमानं त्वमुष्येह पश्यामीति यदिदमस्मिन्नन्वायत्तमिति आर्षे. २।२
महिमानं त्वेवास्योपासे, स एतदस्मिन्नन्तर्हिरण्मयः पुरुषो हिरण्यवर्णो हिरण्यश्मश्रुरा नखाग्रेभ्यो दीप्यमान इव.. आर्षे. ६।२
महिमानं त्वेवास्योपासे यदिदमत्रान्वायत्तमिति आर्षे. ४।२
महिम्न एवाश्नोति सर्वमायुरेति वसीयान् भवति आर्षे. ८।२
महिम्नः पश्येमाविज्ञान इति आर्षे. ८।१
महिषीत्युच्यते भार्या भगेनोपार्जितं धनम्। तदुच्यमुपजीवन्यः स वै माहिषिकः स्मृतः इतिहा. ६९
महीत्यनेनाशेषं काम्यं रमणीयं हृदये शक्तिकूटं स्पष्टीकृतमिति त्रि. ता. १।१५
महेश्वरत्वान्महासत्त्वान्महाचित्त्वान्महानन्दत्वान्महाप्रभुत्वाच्च मकारार्थेनानेनात्मनैकीकुर्यात् नृसिंहो. ७।१
(धीः) महो अर्णः सरस्वती प्रचेतयति केतुना। धियो विश्वा विराजति सरस्व. १४
[ऋ. मं. १।३।१२+ वा. सं. २०।६
महोरगदष्ट इव विपदष्टं (भूतात्मानं) मैत्र्य. ४।२
महोल्काय वीरोल्काय वृद्धोल्काय पृथूल्काय विद्युदुल्काय ज्वलदुल्काय च पङ्क्तिकल्पिता नमः स्वाहा वषड्वौषट्पदान्ता अवस्थाया भवन्ति ना. पू. ता. ५।११
मांकिर्नो विचरन्तु चित्यु. १३।५

मंस्यन्ते त्वां महारथाः भ. गी. २।३५
मा कर्मफलहेतुर्भूः भ. गी. २।४७
मा खेदं भज हेयेषु नोपादेयपरो भव। हेयादेयदृशौ त्यक्त्वा शेषस्थः सुस्थिरो भव महो. ६।२८
मा गृधः कस्यस्विद्धनम् ईशो. १
मा च तेरुद्यास्म तीरिषत् अरुणो. १
मा छिदो मृत्यो मावधीर्मा मे बलं विवृहो मा प्रमोषीः महाना. १३।१३
मा छिदो मृत्यो मावधीः.. चित्यु. १५।१
माण्डूक्यमेकमेवालं मुमुक्षूणां विमुक्तये मुक्तिको. १।२६
मातरं पितरं भार्यां पुत्रान्... अनुमोदयित्वा... कठश्रु. ३
मातरिश्वा वा अहमस्मीति केनो. ३।८
मातरीव परं यान्ति विषमाणि मृदूनि च। विश्वासमिह भूतानि सर्वाणि शमशालिनि महो. ४।३०
मातरो विविधा दृष्टाः पितरः सुहृदस्तथा निरुक्तो. १।६
मातर्मे मधुकैटभघ्नि महिषप्राणापहारोद्यमे...शुम्भध्वंसिनि कालि सर्वदुरितं दुर्गे नमस्तेऽहर बह्वृ. १६६
माता धाता पितामहः भ. गी. ९।१७
माता पिता भ्राता निवासः शरणं सुहृद्गतिर्नारायणो विराजा सुबालो. ६।१
मातापित्रोर्मलोद्भूतंमलमांसमयंवपुः अध्यात्मो. ६
माता पूर्वरूपम् तैत्ति. १।३।६
मातामही सावित्री गायत्री जगत्युर्वी पृथ्वी बहुला विश्वा भूता कतमा का या सा सत्येत्यमृतेति वसिष्ठः महात्वा. १०।१४
माताऽमाता (भवति) बृह. ४।३।२२
मातुलाः श्वशुराः पौत्राः भ. गी. १।३४
मातृ रेतोधिकात्स्त्री भवति गर्भो. ३
मातृकाक्षियुतं मंत्रं द्वादशाब्दं तु यो जपेत्। क्रमेण लभते ज्ञानमणिमादिगुणान्वितम् १ मो. उ. २१

मातृकामालया मंत्री मनसैव मनुं जपेत् । अभ्यर्च्य वैष्णवे पीठे जपेदक्षरलक्षकम् — रामर. ४।७
मातृकारहितं मंत्रमादिशन्ते न कुत्रचित् — अ. वि. ६३
मातृदेवो भव — तैत्ति. १।११
मातृमानविहीनोऽस्मि मेयहीनो शिवोऽस्म्यहम् — मैत्रे. ३।१३
मातृश्राद्धे मातृ-पितामही-प्रपितामहीः — ना. प. ४।२९
मातृसूतकसम्बंधसूतकेसह जायते । मृतसूतकजं देहं स्पृष्ट्वा स्नानं विधीयते — मैत्रे. २।७
मातृहा वै त्वमसि — छांदो. ७।१५।२
मा ते मूर्धा व्यतप्तदनतिप्रश्न्यां वै देवतामतिपृच्छसि, गार्गि मातिप्राक्षीः — बृह. ३।६।१
मातेव पुत्रान्...विधेहि नः (मा.पा.) — प्रश्नो. २।१३
मातेवास्मा अदिते शर्म यच्छ — सहवै. ६
मातेव पुत्रान्रक्षस्व श्रीश्च प्रज्ञां च विधेहि — प्रश्नो. २।१३
मा ते व्यथा मा च विमूढभावः — भ. गी. ११।३९
मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि — भ. गी. २।४७
मात्राद्वादशयोगेन प्रणवेन शनैः शनैः । पूरयेत्सर्वमात्मानं सर्व-द्वारं निरुध्य च — क्षुरिको. ३
मात्राद्वादशसंयुक्तौ दिवाकरनि-शाकरौ । दोषजालमवध्नन्तौ ज्ञातव्यौ योगिभिः सदा — यो. चू. १०२
मात्रा बलम् — तैत्ति. १।२।१
मात्राभिरोतानुज्ञात्रनुज्ञाविकल्प-रूपं चिन्तयन् ग्रसेत् — नृसिंहो. ३।४
मात्रामात्राः प्रतिमात्राः कुर्यात् — नृसिंहो. २।७
मात्रामात्राः प्रतिमात्रागताः कृत्स्नमस्तामपिवाद्यातीति स्वयम्प्रकाशः स्वयं ब्रह्म भवति — ब्र. शिखो. ३
मात्रालिङ्गपदं त्यक्त्वा शब्दव्य-ञ्जनवर्जितम् । अस्वरेण मका-रेण पदं सूक्ष्मं च गच्छति — अ. ना. ४
(अथ) मात्राऽशितपीतनाडी-सूत्रगतेन प्राण आप्यायते — गर्भो. ३
मात्राश्च पादाः, अकार उकारो मकार इति — माण्डू. ८
मात्रासङ्गाद्विनिर्गतः — ना. प. ५।६
मात्रासम्प्रतिपत्तौ तु लयस्था-मान्यमेव च — आगम. २१
मात्रासम्प्रतिपत्तौ स्यादाप्तिसा-मान्यमेव च — आगम. १९
मात्रासम्प्रतिपत्तौ स्यादुभयस्त्वं तथाविधम् — आगम. २०
मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय — भ. गी. २।१४
मा त्वं मामपहाय परागाः, नाहं त्वामपहाय परागामिति — कठरु. २
मादकं दुर्जरं चैव दग्धान्नं विष-मिश्रितम् ।...प्राप्तं यत्पीड-नाज्जन्तोरभक्ष्यं तत्प्रचक्षते — भवसं. ४।१३,१४
मा देव्यस्तंतुछेदि मा मनुष्यः — चित्त्यु. ५।२
माद्यति प्रमदां दृष्ट्वा सुरां पीत्वा च माद्यति । तस्माद्दृष्टिविषां नारीं दूरतः परिवर्जयेत् — ना. प. ६।३७
माधवः पाण्डवश्चैव — भ. गी. १।१४
माधुकरेण करपात्रेणास्यपात्रेण कालं नयेत् (यतिः) — १सं. सो. २।९१
माधूकरमसंक्लृप्तं प्राक्प्रणीतमयाचि-तम् । मधुमक्षिकवत्कृत्वा भैक्षं पञ्चविधं स्मृतम् — १ सं. सो. २।६५
माध्यन्दिनᳪ सवनमनुसन्तनुतेति — छांदो. ३।१६।२
मानवान् भवति — तैत्ति. ३।१०।३
मानवो ब्रह्मैवैक ऋत्विक्कुरूनश्वाभि-रक्षत्येवंविद्ध वै ब्रह्मा यज्ञं यजमानᳪ सर्वांश्चर्त्विजो-ऽभिरक्षति — छांदो. ४।१७।१०
मानसपूजया जपेन ध्यानेन कीर्तनेन स्तुत्या मानसेन सर्वेण नित्यस्थलं प्राप्नोति — रामोप. ३।६+३।७
मानसमिति विद्वाᳪसस्तस्मा-द्विद्वाᳪस एव मानसे रमन्ते — महाना. १६।१२

मानसश्च तथोपांशोः सहस्रगुण
उच्यते (जपः) जा. द. २।१५
मानसस्तेजोमयोऽमृतमयः पुरुषः बृह. २।५।७
मानसं कोटिगुणं (जपकर्म) शांडिल्यो.१।२।१
मानसं तु मनसाध्यानयुक्तं (जपकर्म) शांडि. १।२।१
मानसं ब्रह्म माहेश्वरं ब्रह्म मानसं
हंसः सोऽहं हंसः पा. ब्र. ३
मानसं मननं विदुः (शौचं) जा. द. १।२०
मानसं वै प्राजापत्यं पवित्रं
मानसेन मनसा साधु पश्यति महाना. १७।११
मानसा ऋषयः प्रजा असृजन्त महाना. १७।११
मानसीर्वासनाः पूर्वं त्यक्त्वा
विषयवासनाः । मैत्र्यादि-
वासनानाम्नीर्गृह्णाणामलवासनाः मुक्तिको. २।६९
मानसे च विलीने तु यत्सुखं...
तद्ब्रह्म चामृतं शुक्रं.. सागतिः मैत्रा. ६।२४
मानसे तु कृते दण्डे प्राणायामो
विधीयते १सं. सो. २।९७
मानसेन मनसा साधु पश्यति महाना. १७।११
मानसे विलयं याते कैवल्य-
मवशिष्यते शांडि. १।७।२३
मानसे सर्वं प्रतिष्ठितं तस्मान्मानसं
परमं वदन्ति महाना. १७।११
मानसो मननध्यानभेदाद्वैविध्य-
माश्रितः जा. द. २।१४
मानस्तोक इति सद्योजातमित्या-
दिपञ्चब्रह्ममन्त्रैर्भस्मसङ्गृह्याग्नि-
रिति भस्म वायुरिति..जलमिति
भस्म स्थलमिति भस्म व्योमेति
भस्म देवा भस्म ऋषयो भस्म
सर्वं ह वा एतदिदं भस्म पूतं
पावनं नमामि भस्मजा. १।४
मानस्तोक इति समुद्धृत्य मानो
महान्तमिति जलेन त्रियायुष-
मिति शिरोललाटवक्षःस्कन्धेषु
...तिस्रो रेखाः प्रकुर्वीत का. रुद्रो. २
मानस्तोक इति समुद्धृत्य जलेन
संसृज्य त्र्यायुषमिति शिरो-
ललाटवक्षःस्कन्धेष्विति... जाबाल्यु. ६

मा नस्तोके तनये मान आयुषि
मानो गोषु मानो अश्वेषु
रीरिषः ।...तन्मे मनः शिव-
सङ्कल्पमस्तु २ शिवसं. २९
मा नस्तोके तनये मा न आयुषि
...हविष्मन्तः सदमित्त्वा
हवामहे (नमसा विधेम ते) महाना. १३।१९
[श्वेता.४।२२+ऋ.नं.१।११४।८+
[वा. सं. २०।१६ तै.सं. ३।४।११।२
मानस्तोकेतिमंत्रेण मन्त्रितं भस्म
धारयेत् बृ. जा. ५।१
मा नः प्रजाᳪरीरिषो मोत वीरान्
[महाना. १३।८+ चिरयु. १५।२
मानापमानयोस्तुल्यः भ. गी. १४।२५
मानावमानहीनोऽस्मि मैत्रे. ३।४
मानुषस्य भगवन्गौतम वित्तस्य
वरं वृणीथाः... छान्दो. ५।३।६
मानुषं च स्वाध्यायप्रवचने च तैत्ति. १।९।१
मानुषीं तनुमाश्रितम् भ. गी. ९।११
मानुषे तेजोमयोऽमृतमयः पुरुषः बृह. २।५।१३
मा नो महान्तमिति जलेन सम्मृज्य का. रुद्रो. २
मा नो महान्तमुत मानो अर्भकं
मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम् महाना. १३।१४
[ऋ.मं.१।११४।७+वा.सं.१६।१७ अथर्व.११।२।२९
मा नो महान्तमुत मानो अर्भकं...
तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु २ शिवसं. २८
मा नो हिᳪसीज्जातवेदो
गामश्वं पुरुषं जगत् महाना. २।१०
मा नो भवान् बहोरनन्तस्या-
पर्यन्तस्याभ्यवदान्योऽभूदिति बृह. ६।२।७
मा पुत्र रोदᳪ रुदम् छान्दो. ३।१५।२
मा फलेषु कदाचन भ. गी. २।४७
(ते होचुः) मा भगव उत्क्रमीर्न
वै शक्ष्यामस्त्वदृते जीवितुं बृह. ६।१।१३
मा भगवानवोचत्कतमा सा देवतेति छांदो. १।११,४६
मा भव ग्राह्यभावात्मा ग्राहकात्मा
च मा भव । भावनामखिलां
त्यक्त्वा यच्छिष्टं तन्मयो भव मैत्रे. २।२८
[अ. पू. ५।१०४+ वराहो. ४।१९

मा भवाङ्गो भवङ्गस्त्वं जहि संसार-
भावनाम् । अनात्मन्यात्म-
भावेन किमन्य इव रोदिषि महो. ४।१३०
मा भैषीर्गौतम जितो वै ते लोक इति सूर्यता. ३।१
मामकाः पाण्डवाश्चैव भ. गी. १।१
मामनुस्मरतश्चित्तंमामेवात्र विलीयते यो. शि. ३।२५
मामनुस्मर युद्ध्य च भ. गी. ८।७
मामन्तेवासिनमनुशासयामोक्षमिति भस्मजा. १।१
मामप्राप्यैव कौन्तेय भ. गी. १६।२०
मामात्मगुप्तां वहते स्वभूत्यै तां
राजिमन्तां धूर्धूरयन्तीं धूरसि
ध्रुवाय स्वाहा पारमा. ९।६
मामात्मपरदेहेषु भ. गी. १६।१८
मा मा ब्रह्म निराकरोदनिराकरणं
मेऽस्त्वनिराकरणं मेऽस्तु.. केनो. शां. पा.
मामायुरमृतमित्युपास्व कौ. उ. ३।२
मामाश्रित्य यतन्ति ये भ. गीं. ७।२९
मामिकामेवव्याहृतिमादिवः कृणुध्व-
मित्येवं मामका अधीयन्ते २ प्रणवो. २०
मामिच्छाप्तुं धनञ्जय भ. गी. १२।९
मामुपेत्य तु कौन्तेय भ. गी. ८।१६
मामुपेत्य पुनर्जन्म भ. गी. ८।१५
मामेकं शरणं व्रज [त्रि.म.ना.८।६+ भ. गी. १८।६६
मा मे बलं विवृहो मा प्रमोषीः चित्यु. १५।१
[महाना. १३।१३+ तै. आ. ३।१५।१
मामेभ्यः परमव्ययम् भ. गी. ७।१३
मामेव ये प्रपद्यन्ते भ. गी. ७।१४
मामेव विजानीहि, एतदेवाहं
मनुष्याय हिततमं मन्ये कौ. त. ३।१
मामेव विदित्वाऽमृतत्वमेति
तरति शोकम् भस्मजा. २।५
मामेव विदित्वा सांसृतिकीं रुजं
द्रावयति भस्मजा. २।५
मामेव वेदाश्चतुर्मूर्तिधराः भस्मजा. २।१३
मामेव स्तुवन्ति वेदाः साङ्गाः
सोपनिषदः भस्मजा. २।११
मामेव विदित्वा संसृति-
पाशात्प्रमुच्यते भस्मजा. २।७

मामेवानुत्तमां गतिम् भ. गी. ७।१८
मामेवैष्यसि युक्त्वैवं भ. गी. ९।३४
मामेवैष्यसि सत्यं ते भ. गी. १८।६५
मामेवैष्यत्यसंशयः भ. गी. १८।६८
मामेवैष्यस्यसंशयः भ. गी. ८।७
मामैतस्मिन् संवदिष्ठा अतिष्ठाः
सर्वेषां भूतानां राजेति बृह. २।१।२,३,६
मामैतस्मिन् संवादयिष्ठाअसुरितिवा कौ. त. ४।१२
मा मैतस्मिन्संवदिष्ठाः असुरिति
वा अहमेतमुपासे बृह. २।१।१०
मामैतस्मिन्संवदिष्ठा आत्मन्वीति
वा अहमेतमुपासे बृह. २।१।१३
मामैतस्मिन् संवादयिष्ठाः इन्द्रो
वैकुण्ठोऽपराजिता सेनेति वा कौ. त. ४।७
मा मैतस्मिन्संवदिष्ठा इन्द्रो
वैकुण्ठोऽपराजिता सेनेति बृह. २।१।६
मा मैतस्मिन्संवदिष्ठास्तेजस्वीति
वा अहमेतमुपास इति स य
एतमेवमुपास्ते तेजस्वी ह भवति बृह. २।१।४
मा मैतस्मिन्संवदिष्ठाः, (समवाद-
यिष्ठाः) द्वितीयोऽनपग इति
वा अहमेतमुपासे [बृह.२।१।११+ कौ.त. ४।११
मा मैतस्मिन् संवादयिष्ठा नाम्न
आत्माऽग्निरात्मा ज्योतिष्ट
आत्मेति वा अहमेतमुपास इति कौ. त. ४।१६
मा मैतस्मिन् संवादयिष्ठा नाम्न्य-
स्यात्मेति वा अहमेतमुपास इति कौ. त. ४।९
मा मैतस्मिन्संवादयिष्ठाः पूर्णम-
प्रवर्तीति वा अहमेतमुपास इति बृह. २।१।५
मा मैतस्मिन्संवादयिष्ठाः पूर्ण-
मप्रवर्ति ब्रह्मेति वा... कौ. त. ४।६
मा मैतस्मिन् संवादयिष्ठाः प्रजा-
पतिरिति वा अहमेतमुपास इति कौ. त. ४।१४
मा मैतस्मिन्संवदिष्ठाः प्रतिरूप
इति वा अहमेतमुपास इति
[बृह. २।१।८+ कौ. त. ४।१०
मा मैतस्मिन्संवदिष्ठा अतिष्ठाः
सर्वेषां भूतानां मूर्धा राजेति वा बृह. २।१२

मा मैतस्मिन्संवदिष्ठा बृहत्पाण्डर-
वासाः सोमो राजेति बृह. २।१।३
मा मैतस्मिन्संवदिष्ठाः, मृत्युरिति
वा अहमेतमुपास इति बृह. २।१।१२
मा मैतस्मिन् संवादयिष्ठा मृत्यु-
रिति वा अहमेतमुपास इति कौ. त. ४।१३
मा मैतस्मिन् संवादयिष्ठा यमो
राजेति वा अहमेतमुपास इति कौ. त. ४।१५
मा मैतस्मिन्संवदिष्ठा रोचिष्णुरिति
वा अहमेतमुपास इति बृह. २।१।९
मा मैतस्मिन्संवादिष्ठाः, विषासहि-
रिति वा अहमेतमुपास इति बृह. २।१।७
मा मैतस्मिन्संवादयिष्ठा विषास-
हिरिति वा अहमेतमुपास इति कौ. त. ४।८
मा मैतस्मिन् संवादयिष्ठाः शब्द-
स्यात्मेति वा अहमेतमुपास इति कौ. त. ४।५
मामैतस्मिन् संवादयिष्ठाः सत्य-
स्यात्मा विद्युत आत्मा तेजस
आत्मेति वा अहमेतमुपास इति कौ. त. ४।१७
मा मैतस्मिन्संवादयिष्ठाः सोमो
राजान्नस्यात्मेति वा कौ. त. ४।३
मामैतस्मिन्समवादयिष्ठास्तेजस
आत्मेति वा अहमेतमुपास इति कौ. त. ४।४
मा मोपरोत्सीरति मा सृजैनं कठो. १।२१
मायया एतत्सर्वं वेष्टितं भवति नृ. पू. ५।२
मययाऽपहृतज्ञानाः भ. गी. ७।१५
माययाभिद्यतेह्येतन्नान्यथाजंकथञ्चन अद्वैत. १९
मायया मोहिताः शम्भोर्महादेवं
जगद्गुरुम् । न जानन्ति सुराः
सर्वे सर्वकारणकारणम् पञ्चब्र. १८,१९
मायया ह्यन्यदिव नृसिंहो. ९।१
मायाकार्यमिदं भेदमस्ति चेद्ब्रह्म-
भावनम् ते. बिं. ६।१००
मायाकार्यादिकंनास्तिमायानास्ति ते. बिं. ५।३३
मायाकुण्डलिनी क्रियामधुमती
कालीकलामालिनी...ह्रीङ्कारी
त्रिपुरा परा परमयी माता
कुमारीत्यसि वनदु. ५

मायाक्लृप्तौ बन्धमोक्षौ न स्तः
स्वात्मनि वस्तुतः आत्मो. २६
माया च तमोरूपानुभूतिः नृसिंहो. ९।२
माया चाविद्या च स्वयमेव भवति नृसिंहो. ९।३
मायातत्कार्यविलये नेश्वरत्वं
न जीवता वराहो. २।५२
मायातीतं गुणातीतं ब्रह्म त्रि. म. ना. १।३
मायादेवो वलगहनो ब्रह्मारातीस्तं
देवमीडे दक्षिणास्यम् ग. पू. १।६
मायानाम अनादिरन्तवती प्रमाणा-
प्रमाणसाधारणा न सती
नासती न सदसती स्वय-
मधिका विकाररहितानिरूप्य-
मागा सतीतरलक्षणशून्या
सा मायेत्युच्यते सर्वसारो. ६
मायाऽन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः
[श्रीसू. ६+ ऋ. खि. ५।८७।६
मायाभिरेको अभिचाकशानः वा. मं. ११
मायाममताहङ्कारदहनम् निर्वाणो. ६
मायामात्र एष एवोग्रः नृसिंहो. ५।१
मायामात्रमिदंद्वैतमद्वैतं परमार्थतः आगम. १७
मायामात्रविकासत्वान्मायातीतो-
ऽहमद्वयः आ. प्र. २०
मायामात्रं जगत्कृत्स्नं तदा भवति
निर्वृतिः जा. द. १०।१२
मायामात्रं विदित्वैवं सच्चिदेक-
रसो ह्ययम् ना. प. ८।२१
मायामेतां तरन्ति ते भ. गी. ७।१४
मायायाः समुत्पन्ना आसुराः कर्म-
जडा अन्यधर्मरता एव भवन्ति सामर. २
मायावशादेव देवा मोहिता
ममतादिभिः शरभो. २८
माया वा एषा नारसिंही सर्वमिदं
सृजति नृ. पू. ३।२
माया वा एषा वैनायकी सर्वमिदं
सृजति, सर्वमिदं रक्षति, सर्व-
मिदं संहरति ग. पू. ना. ४।३

मायावादस्पदान्धकारमुषितप्रज्ञोऽस्मि यस्मादहं ब्रह्मास्मीति मुहुर्मुहुर्वद-सि रे जीव त्वमुन्मत्तवत् | अवधू. २।३३
मायाविद्ये विहायैव उपाधी परजी-वयोः । अखण्डं सच्चिदानंदं परं ब्रह्म विलक्ष्यते | अध्यात्मो. ३२
मायावी मायया क्रीडति स ब्रह्मा | शाण्डि. ३।१।३
मायाशक्तिर्ललाटाग्रभागो व्योमा-म्बुजे तथा । नादरूपा परा शक्तिर्ललाटस्य तु मध्यमे | यो. शि. ६।४८
(अथ) मायाशबलितब्रह्मासीत् | गोपीचं. ८
मायाशरीरो मधुरस्वभावस्तस्य ध्यानात्पूजनाच्चत्स्वरूपाः | हेरम्बो. ६
माया सत्त्वरजस्तमोमयी | राधिको. ९
मायासम्बन्धतश्चेशो..अन्तःकरण-सम्बन्धात् प्रमातेत्यभिधीयते | कठरु. ४२
माया सा त्रिविधा प्रोक्ता सत्त्व-राजसतामसी | कृष्णोप.४
मायां तु प्रकृतिं विद्यान्मायिनं तु महेश्वरम् । तस्यावयवभूतैस्तु व्याप्तं सर्वमिदं जगत् | श्वेता. ४।१०
मायां तु प्रकृतिं विद्यात्प्रभुं तस्या महेश्वरीम् । अस्या अव-यवैः सूक्ष्मैर्व्याप्तं सर्वमिदंजगत् | गुह्यका. ५९
मायेत्यसुराः (उपासते) | मुद्गलो. ३।२
मायैषा तस्य देवस्य ययाऽयं मोहितः स्वयम् | वैतथ्य. १९
मायोपाधिर्जगद्योनिः सर्वज्ञत्वा-दिलक्षणः | अध्यात्मो. ३०
मायोपाधिविनिर्मुक्तं शुद्धमित्य-भिधीयते | कठरु. ४१
मायोपाधिः सच्चिदानन्दलक्षणो जगद्योनिस्तत्पदवाच्यो भवति | पैङ्गलो. ३।१
मारणमोहनवशीकरणस्तम्भन-जृम्भणाकर्षणोच्चाटनमिलन-विद्वेषणयुक्तकर्मकर्माणि बन्धय.. | लाङ्गूलो. ७
मारय मारय नमः सम्पन्नाय सम्पन्नाय स्वाहा | दत्तात्रे. २।२
मार्तण्डविम्बगतं (हुनेत्) | रा. पू. ४।१३
मारुतक्षये वेपथुः सम्भवेन्नित्यं नाम्भसैव जीवति | वराहो. ५।९
मारुतस्तूरसि चरन्मन्द्रं जनयति स्वरम् | मैत्रा. ७।११
मारुतस्य लयो नाथस्तन्नाथं लयमाश्रय | वराहो. २।८०
मारुते मध्यसञ्चारे मनस्स्थैर्यं प्रजायते । यो मनःसुस्थिरो भावः सैवावस्था मनोन्मनी | शांडि. १।७।१०
मारुतो नैनं शोषयति | सामर. १००
मारूपत्वादतो रामो भुक्तिमुक्ति-फलप्रदः । आद्यो रा तत्पदार्थः स्यान्मकारस्त्वम्पदार्थवान् | रामर. ५।१२
मार्गे बिन्दुं समाबध्य वह्निं प्रज्वाल्य जीवने । शोषयित्वा तु सलिलं तेन कायं दृढं भवेत् | वराहो. ५।३०
मार्दवं ह्रीरचापलम् | भ. गी. १६।२
माला निमग्ने ब्रह्मन् | गोपालो. २।३१
मा शुचः सम्पदं दैवीं | भ. गी. १६।५
मा शोचीरात्मविज्ञानी शोक-स्यान्तं गमिष्यति | शांडिल्यो. २।४
माषमात्रां तथा दृष्टिं श्रोत्रे स्थाप्य तथा शुचि । श्रवणे नासिके गन्धा यतः स्वं न च संश्रयेत् | कुण्डिको. १९
माषैरेतावद्भिरभिषिच्य वरुणलोक-कामो वरुणलोकमवाप्नोति | अक्षमा. २।१२
मासचतुष्केण त्वग्व्यादेशः | निरुक्तो. २।४
मासत्रयेण ग्रीवाव्यादेशः | निरुक्तो. २।४
मासत्रयेण पादप्रदेशो भवति | गर्भो. ३
मासद्वयमृतुर्भवति | त्रि. म. ना. २।४
मासद्वयेन शिरः सम्पद्यते | गर्भो. ३
माससात्रं त्रिसन्ध्यायां जिह्वया-ऽऽरोप्य मारुतम् । अमृतं च पिबेन्नाभौ मन्दं मन्दं निरोधयेत् | जा. द. ६।२९
मासमात्रात्कठिनौ भवति | निरुक्तो. २।४
मासमेकं त्रिसन्ध्यं तु जिह्वया-रोप्य मारुतम् ।... जराः सर्वेऽपि नश्यन्ति... | शांडि. १।७।१०

मासमेकं लयो यस्य लभ्रस्तिष्ठेद-खण्डितः । प्रजागर्ति स योगीन्द्रो यावन्मोक्षं स गच्छति	अमन. १।७३
मा सङ्कल्पय सङ्कल्पं मा भावं भावय स्थितौ । सङ्कल्पनाशने यत्तो न भूयोऽननुगच्छति	महो.५।१८२
मा सर्वं सनयमितोऽसुनजदिति	बृह. १५।१७
मासं दीक्षितो भवति, यो मासः स संवत्सरः, संवत्सरादेवात्मानं पुनीते	सहवै. १२
मासात्पूर्वं मृतो मर्त्यो ह्यागतश्चे-त्स्वयंद्रवेत्	ते. बिं. ६।८०
मासानां मार्गशीर्षोऽहं	भ. गी. १०।३५
मासाभ्यन्तरे कठिनो भवति	गर्भो. ३
मासाभ्यन्तरे पिण्डो भवति	गर्भो. ३
मासि मासि कुशाग्रेण जलबिन्दुं च यः पिबेत्	योगो. १७
(अथ) मासि मास्यमावास्यायां पश्चाच्चन्द्रमसं दृश्यमानमुप-तिष्ठेत	कौ. त. २।८
मासेभ्यः पितृलोकं पितृलोका-च्चन्द्रं प्राप्यान्नं भवन्ति	बृह. ६।२।१६
मासेभ्यः संवत्सरं	छांदो. ४।१९।५
मासेभ्यो देवलोकं, देवलोका-दादित्यमादित्याद्वैद्युतं तान् वैद्युतान्पुरुषो मानस एत्य ब्रह्मलोकान् गमयति	बृह. ६।२।१५
मासो वै प्रजापतिस्तस्य कृष्णपक्ष एव रयिः शुक्लः प्राणः	प्रश्नो. १।१२
माऽस्माकं प्राणेन प्रजया पशुभि-रवक्षेष्ठाः	कौ. त. २।९
माहात्म्यमपि चाव्ययम्	भ. गी. ११।२
माऽहं पौत्रमघं रुदं [कौ.त.२।८+	आ.श्व.गृ.१।१३।७
माहं प्राणानामादित्यानां मध्ये यज्ञो विलोप्सीय	छांदो. ३।१६।६
माहं प्राणानां मध्ये वसूनां यज्ञो विलोप्सीय	छांदो. ३।१६।२
माहं प्राणानां रुद्राणां मध्ये यज्ञो विलोप्सीय	छांदो. ३।१६।४
माहं ब्रह्म निराकुर्यां मा मा..	केनो. शां. पा.
मां च योऽव्यभिचारेण	भ. गी. १४।२६
मां चवान्तःशरीरस्थं	भ. गी. १७।६
मां तु वेद न कश्चन	भ. गी. ७।२६
मां ध्यायन्त उपासते	भ. गी. २।६
मां प्रति मां प्रतीति सर्वेण समस्तेन साम	छान्दो. २।९।१
मांसपाञ्चालिकायास्तु यंत्रलोले-ऽङ्गपञ्जरे ।...स्त्रियः किमिव शोभनम्	याज्ञव. ८
मांसमुद्गीथः	छांदो. २।१९।१
मांसान्मेदः	गर्भो. १
मांसान्यस्य शकाराणि किनाटं स्नाव तत्स्थिरम्	बृह. ३।९।३०
मांसासृक्पूयविण्मूत्रस्नायुमज्जास्थि-संहतौ । देहे चेत्प्रीतिमान्मूढो भविता नरकेऽपिसः [ना.प.३।४८	+४।२८
मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य	भ. गी. ४।३०
मिताहारो नाम चतुर्थांशावशेषक-सुस्निग्धमधुराहारः	शांडिल्यो. १।१।३
मितेरपीतेर्वा मिनोति ह वा इदं सर्वमपीतिश्च भवति	माण्डू. ११
मितेरपीतेर्वा स्थूलत्वात्सूक्ष्मत्वा-द्बीजत्वात्साक्षित्वाच्च मिनोति ह वा इदं सर्वमपीतिश्च भवति	नृसिंहो. २।६
मित्रद्रोहे च पातकम्	भ. गी. १।३८
मित्र उपवक्ता	चित्यु. ३।१
मित्ररविसूर्यभानुखगपूषहिरण्य-गर्भमरीच्यादित्यसवित्रर्क-भास्कराख्यैःषड्बीजैः संपुटिताः	सूर्यता. १।९
मित्रस्य श्रद्धा	चित्यु. ९।१
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षे [प्रवर्ग्या.१८	+वा.सं. ३६।१८
मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे [प्रवर्ग्या. १८+	वा. सं. ३६।१८
मित्रस्वजनबन्धूनां कुर्यान्नाम शिवात्मकम्	शिवो. १।२२
मित्रादिषु समो मैत्रः समस्तेष्वेव जन्तुषु । एकोज्ञानी प्रशान्तात्मा स संतरति नेतरः	ना. प. ६।२१

मित्रार्थैः सह सम्मन्त्र्य सम्बद्धो न प्रपद्यते — अ. शां. ३५
मित्रावरुणावपरपादौ — सद्वै. २३
मित्रावरुणावाशिषा — चित्त्यु. ८।१
मित्रावरुणौ पङ्क्तिस्त्रिणवत्रयस्त्रिंशौ शाक्वररैवते — मैत्रा. ७।५
मित्राह्लादकं मूत्रमिव (त्यजेत्) — ना. प. ७।१
मित्रः सुपर्णश्चन्द्र इन्द्रो वरुणो रुद्रस्त्वष्टा विष्णुः सविता गोपतिस्त्वम् — एका. १२
मिथुनान्मिथुनात्प्रजायते सर्वमायुरेति ज्योग्जीवति महान्प्रजया पशुभिर्भवति — छान्दो. २।१३।२
मिथ्याचारः स उच्यते — भ. गी. ३।६
मिथ्याभूतान् स्वप्नतुल्यान् विषयभोगाननुभूय...अतृप्तः सदा परिधावति — त्रि. म. ना. ५।३
मिथ्यैव व्यवसायस्ते — भ. गी. १८।५९
मिनोति ह वा इदं सर्वमपीतिश्च भवति [माण्डू. ११+ — नृसिंहो. २।६
मिश्रं ह्येतद्वै देवानभाजयदिति हुतं च प्रहुतं च — बृह. १।५।२
मीमांसते ब्रह्मवादिनो ह्रस्वा दीर्घा प्लुता चेति — नृ. पू. ३।३
मीमांसते ब्रह्मवादिनो ह्रस्वा वा दीर्घा वा प्लुता वेति — ग. पू.२।३
मुक्तसङ्गः समाचर — भ. गी. ३।९
मुक्तसङ्गोऽनहंवादी — भ. गी. १८।२६
मुक्ताकारस्त्वैच्छिकः — त्रि. म. ना. २।१
मुक्तारमानः सर्वमेवापियन्ति (मा.) — मुण्डको. ३।२।५
मुक्ता वेणुमिवोत्तमम् — महो. ६।१६
मुक्ता हर्षविषादाभ्यां शुद्धा भवति वासना — अ.पू.५।६
मुक्तिस्तु ज्ञेयमित्युक्ता भूमिकासप्तकात्परम् — महो.५।२३
मुक्तिहीनोऽस्मि मुक्तोऽस्मि — मैत्रे. ३।२२
मुक्तोऽखण्डानन्दबोधो ब्रह्मभूयाय कल्पते — १ बिल्वो. २३
मुक्तो यः स च मे प्रियः — भ. गी. १२।१५
मुक्तोऽहं मोक्षरूपोऽहं निर्वाणसुखरूपवान् — ते. बिं. ३।४०
मुखतोऽस्मा अन्नꣳ राध्यते — तैत्ति. ३।१०।१
मुखमग्नितृप्तं सर्वं प्रोक्षति — आचम. ५
मुखं किमस्य कौ बाहू [ऋ.मं.१०।९०।११+ — चित्त्यु. १२।५; वा. सं. ३१।१०
मुखं च परिशुष्यति — भ. गी. १।२८
मुखं च रोदसी ज्ञेयं द्यौर्लोकश्चिबुकं तथा (देव्याः) — गुह्यका. १६
मुखं प्रतीकं, मुखेनेत्येतत्स देवानपि गच्छति — बृह. १।५।२
मुखꣳ ह्यस्याः सम्राण्न विदाञ्चकारेति होवाच — बृह. ५।१४।८
मुखꣳ ह्यस्याः ससम्भ्रमं विदांचकारेति होवाच — गायत्र्यु. ५
मुखात् सत्त्वं स वै विष्णुः — गणेशो. ३।४
मुखादग्निरजायत [पु.सू.१२+ — वा. सं. ३१।१२
मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत [ऋ. मं.१०।९०।१३+ — चित्त्यु. १२।६
मुखाद्वाग्वाचोऽग्निर्नासिके निरभिद्येतां नासिकाभ्यां प्राणः — २ ऐत. १।४
मुखे आहवनीय उदरे गार्हपत्यो हृदि दक्षिणाग्निः — गर्भो. ११
मुखेन मुखꣳ सन्धाय [बृह.६।४।९, — १०,११,२१
मुखेन वायुं संगृह्य घ्राणरन्ध्रेण रेचयेत् — यो. शि. १।९५
मुख्यमेवाप्येति यो मुख्यमेवास्तमेति — सुबालो. ९।६
मुख्यात्पूर्वोत्तरैर्भागैर्भूते भूते चतुश्चतुः । पूर्वमाकाशमाश्रित्य पृथिव्यादिषु संश्रिताः — त्रि. ब्रा. २।२
मुख्यादूर्ध्वे परा ज्ञेया न परानुत्तरान्विदुः — त्रि. ब्रा. २।३
मुच्यन्ते तेऽपि कर्मभिः — भ. गी. ३।३१
मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः — भ. गी. ३।१३
मुण्डोऽपरिग्रहः शुचिरद्रोही भैक्षमाणो ब्रह्मभूयाय भवति — याज्ञव. २
मुदिता करुणा मैत्री उपेक्षा च चतुष्टयम् — वराहो. १।१३

मुदितामुदिताख्योऽस्मि मैत्रेय्यु. ३।१६
मुद्रा-पुस्तक-वह्नि-नागविलसद्बाहुं प्रसन्नाननं मुक्ताहारविभूषणं शशिकला-भास्वत्किरीटोज्ज्वलम्।...न्यग्रोधान्तनिवासिनं परगुरुं ध्यायाम्यभीष्टाप्तये द. मू. १५
मुद्रा भवति खेचरी यो. शि. ५।४७
मुद्रां भद्रार्थदात्रीं सपरशुहरिणं बाहुभिर्बाहुमेकं जान्वासक्तं दधानो भुजगबिलसमाबद्ध-कक्ष्यो वटाधः...दद्यादाद्यः शुकाद्यैर्मुनिभिरभिसृतो भावशुद्धिं भवो नः द. मू. ६
मुद्रेयं खलु खेचरी भवति सा लक्ष्यैकताना शिवा शून्याशून्यविवर्जितं स्फुरति सा तत्त्वं पदं वैष्णवी शांडि. १।७।१५
मुनयो वाग्वदन्ति न तस्य ग्रहणं अ. शिरः. ३।१०
(अथ) मुनिरमौनं च मौनं च निर्विद्य बृह. ३।५।१
मुनिरुन्मत्तबालवत्। कविर्मूकवदात्मानं तद्दृष्ट्यादर्शयेन्नृणाम् ना. प. ५।३४
मुनिर्मोक्षपरायणः भ. गी. ५।२८
मुनिः कौपीनवासाः स्यान्नग्नो वा ध्यानतत्परः। एवं ज्ञानपरो योगी ब्रह्मभूयाय कल्पते ना. प. ४।३२
मुनिः स्यात्सर्वनिस्पृहः ना. प. ३।३४
मुनीनामप्यहं व्यासः भ. गी. १०।३७
मुनीनां विवेकबुद्धिर्भवति ना. पू. ता. २।१
मुनीनां सम्प्रयुक्तं च न देवा न परं विदुः तै. बिं. १।१२
मुने तत्त्वावाप्तिर्निजगुरुमुखादेव हि भवेत् अमन. १।५
मुने नासाग्रतस्तद्विपदमक्षयमुच्यते महो. ५।११४
मुमुक्षवः काश्यमेवासीना वीर्यवन्तो विद्यावन्तः भस्मजा. २।१६
मुमुक्षवः पुरुषाः... सुकुलभवं श्रोत्रियं... सद्गुरुं विधिवदुपसङ्गम्योपहारपाणयोऽष्टोत्तरशतोपनिषदं विधिवदधीत्य... विदेहमुक्तिः सैव कैवल्यमुक्तिरिति मुक्तिको. १।५८
मुमुक्षवो ब्रह्मवादिनश्च (यंनमन्ति) नृ. पू. २।१३
मुमुक्षुर्भवति जपात् नृ. पू. १।५
मुमुक्षुभिः प्राणजयः कर्तव्यो मोक्षहेतवे यो. शि. १।६६
मुमुक्षुः परहंसाख्यः साक्षान्मोक्षैकसाधनम् ना. प. ६।२७
मुमुक्षुः सर्वदा संसारतारकं तारकमनुस्मरन् जीवन्मुक्तो वसेत् ना. प. ७।१२
मुमुक्षूणां विरक्तानां तथा चाश्रमवासिनाम्। प्रणवत्वात्सदाध्येयो.. रामर. ५।१६
मुमुक्षूणां मोक्षलक्ष्मीर्भवति ना. पू. ता. २।१
मुमुक्षोरन्तःशिखोपवीतधारणम् परब्र. २
मुहुर्मुहुः शिरः श्मश्रु न स्पृशेत्करजैर्बुधः। न लिङ्गाकर्षणं कुर्यादात्मनो वा परस्य वा शिवो. ७।५५
(एवं)* मुहूर्तत्रयं भावनापरो जीवन्मुक्तो भवति भावनो. १०
मुहूर्तमपि यो नित्यं नासाग्रेमनसा सह। सर्वं तरति पाप्मानं तस्य जन्म शतार्जितम् शांडि. १।७।५१
मुहूर्तं चिन्तयेन्मां यः सर्वबन्धैः प्रमुच्यते वराहो. २।३२
मुमूर्षोर्दक्षिणे कर्णे यस्य कस्यापि वा स्वयम्। उपदेक्ष्यसि मन्मन्त्रं स मुक्तो भविता शिव रामो. ३।८
मूकीकरणमाशुमुत्रेव बाधिर्यं महालुपचय इवेदं नात्रहेलनया भवितव्यमेवं दृढवैराग्याद्बोधो भवति महो. ४।२६
मूढग्राहेणात्मनो यत् भ. गी. १७।१९
मूढयोनिषु जायते भ. गी. १४।१५
मूढा जन्मनि जन्मनि भ. गी. १६।२०

* (एवं) मुहूर्तत्रितये मुहूर्तद्वितयं मुहूर्तमात्रं वा भावनापरो जीवन्मुक्तो भवति इति पाठान्तरम्।

मूढैः प्रकल्पितं दैवं तत्परास्ते क्षयं
गताः । प्राज्ञास्तु पुरुषार्थेन
पदमुत्तममागताः भवसं· १।४४
मूढोऽयं नाभिजानाति भ. गी· ७।२५
मूत्रश्लेष्मरक्तशुक्रस्वेदा अवंशाः शारीरको· ३
मूत्रं मुञ्चति वारुणी यो· शि· ५।२६
मूत्रं (धेनोः) चोपनिषत्प्रोक्तं
कुर्याद्भस्म ततः परम् बृ. जा· ३।२
मूर्च्छितो हरति व्याधिं मृतो
जीवयति स्वयम् । बद्धः
खेचरतां धत्ते ब्रह्मत्वं रसचेतसि वराहो· २।७९
मूर्त इति मूर्तविदोऽमूर्त इति
च तद्विदः वैतथ्य· २३
मूर्तयः सम्भवन्ति याः भ. गी· १४।४
मूर्तं भगवतो रूपं सर्वापाश्रय-
निःस्पृहम् । एषा वै धारणा
ज्ञेया यच्चित्तं तत्र धारयेत् भवसं· ३।२८
मूर्तामूर्तं च नारायणः त्रि· म· ना· २।८
मूर्तामूर्तादि चिन्मयम् ते· बिं· २।३३
मूर्तित्रयमसद्विद्धि सर्वभूतमसत्
सदा । सर्वतत्त्वमसद्विद्धि
ह्यहं भूमा सदाशिवः ते· बिं· ३।५१
मूर्तिमद्भिरनन्तमहामायाजाल-
विशेषैः परिवेविता (योगमाया) त्रि· मं· ना· ६।५
(अथ) मूत्रद्वारेण निष्क्रान्त-
मस्थिभिश्चितं शरीरं.. मैत्रा· ३।४
मूर्धा ते व्यपतिष्यद्यन्मां नागमिष्यः छांदो· ५।१२।२
मूर्धा त्वेष आत्मन इति होवाच छांदो· ५।१२।२
मूर्धा ब्रोमकलशः प्रा· हो· ४।२
मूर्धानमस्य संसेव्याप्यथर्वा
हृदयं च यत् अ· शिर· ३।६४
मूर्धानमिति मूर्धन्यग्रे न्यसेत् भस्मजा· १।५
मूर्धा ब्रह्मा शिखान्तः गायत्रीर· १०
मूर्ध्नि चित्तसंयमात्सत्यलोकज्ञानं शांडि· १।७।५२
मूर्ध्नि धारयेत्परम् अ· ना· २७
मूर्ध्नि शतक्रतुः आचम· ५
मूर्ध्नि संयमाद्ब्रह्मलोकज्ञानं (मनसः) शांडि· १।७।५२
मूर्ध्न्याधायात्मनः प्राणं भ. गी· ८।१२

मूर्ध्न्याधायात्मनः प्राणान् योगा-
भ्यासं स्थितश्चरन् त्रि· ब्रा· २।१९
मूलच्छेदादिव द्रुमः अ· पू· ४।५४
मूलप्रकृतिजननीमविद्यालक्ष्मीमेवं
ध्यात्वा विविधोपचारैराराध्य
...महाविराट्पदं प्राप त्रि· म· ना· ६।२
मूलप्रकृतिरूपत्वात् सा सीता
प्रकृतिः स्मृता सीतो· १
मूलमन्त्रद्वयं च ' विष्णोर्नुकम् '
' गन्धद्वाराम् ' इत्येताभिरभि-
मन्त्रयेत् नारदो· १
मूलमृल्लेपनान्महापापभञ्जिनीं
तर्पणादन्तर्मलनाशिनीं य
एवं वेद स वैष्णवो भवति तुलस्यु· २
मूलमेकं सत्यं मृण्मयं विज्ञातं स्यात् परम· ४
मूलशृङ्गाटमध्यस्था बिन्दुनाद-
कलाश्रया अ· पू· १।४
मूलाधारगता शक्तिः स्वाधारा..
तस्यामुत्पद्यते नादः यो· शि· ३।२
मूलाधारत्रिकोणस्था सुषुम्ना
द्वादशाङ्गुला । मूलार्धच्छिन्न-
वंशाभा ब्रह्मनाडीति सा स्मृता यो· शि· ५।१७
मूलाधारं यदा प्राणः प्रविष्टः
पण्डितोत्तम । तदाद्यं विष्णुवं
प्रोक्तं तापसैस्तापसोत्तम जा· द· ४।४३
मूलाधारं स्वाधिष्ठानं मणिपूरं
तृतीयकम् । अनाहतं विशुद्धं
च आज्ञाचक्रं च षष्ठकम् योगकुं· ३।९
मूलाधारादाब्रह्मरन्ध्रपर्यन्तं...ब्रह्म-
रन्ध्रादामूलाधारपर्यन्तं गता-
गतरूपेण प्रादक्षिण्यं भावनो· १०
मूलाधारादारभ्य ब्रह्मरन्ध्रपर्यन्तं
सुषुम्ना सूर्याभा मं· ब्रा· १।२
मूलाधारादिषट्चक्रं सहस्रारोपरि
स्थितम् । योगज्ञानैकफलकं
रामचन्द्रपदं भजे यो· चू· शीर्षकं
मूलाधारादिषट्चक्रं शक्तिस्थानमुदी-
रितम् । कण्ठादुपरि मूर्धान्तं
शाम्भवं स्थानमुच्यते वराहो· ५।५२

मूलाधारे स्मरेद्दिव्यं त्रिकोणं
तेजसां निधिम् कालिको. ४
मूलाविद्या प्रथमपादे, नान्यत्र.. त्रि. म. ना. १।४
मूले शून्यं विजानीयात् ।
शून्यं वै परं ब्रह्म ग.पू. ३।१
मूलेन म्रियते होता ध्रुवस्थानं
कथं भवेत् आत्मो. १
मूषास्थद्रुतहेमाभं स्फुरितं विमला-
म्बरे । सन्निवेशमथादत्ते
तत्तेजः स्वस्वभावतः महो. ५।१५५
मृगतृष्णाजलं पीत्वा तृप्तश्चेद्-
स्त्विदं जगत् ते. बिं. ६।७४
मृगाणां च मृगेन्द्रोऽहं भ. गी. १०।३०
मृगतृष्णाम्बुबुद्बुधादिशान्तिमात्रा-
त्मकस्त्वसौ महो. ५।४१
(तत्र) मृज्जलाभ्यां बाह्यं मनः
शुद्धिरान्तरम् शांडिल्यो. १।१।३
मृडाजरित्रे रुद्रस्तवानो अन्यत्ते
अस्मन्निवपन्तु सेनाः नृ. पू. २।४
[ऋ. मं. २।३३।११+ तै.सं. ४।५।१०।४
[अथर्व. १८।१।४०+
मृणालतन्तुसूक्ष्मा कुण्डलिनी मं. ब्रा. १।२
मृण्मयान्यप्सु(पात्राणि) जुहुयात् कठरु. २
मृतगात्रस्यशोभावैर्धनंजय उदाहृतः त्रि. ब्रा. २।८७
मृतश्चाहं पुनर्जातो जातश्चाहं
पुनर्मृतः । नानायोनिसहस्राणि
मया यान्युषितानि वै निरुक्तो. १।५
मृतसूतकजं देहं स्पृष्ट्वा स्नानं
विधीयते मैत्रे. २।७
मृतस्य मरणं कुतः यो. शि. १।४५
मृता मोहमयी माता जातो
बोधमयः सुतः। सूतकद्वयसम्प्राप्तौ
कथं सन्ध्यामुपास्महे मैत्रे. २।१३
मृते च नेदं शरीरं चेतनवत्प्रतिष्ठा-
पितं प्रचोदयिता चैषोऽस्येति मैत्रे. २।९
मृतो मोक्षमश्नुत इति गोपीचं. ८
मृत्तिकानां सहस्रेण चोदकुम्भशतेन
च । न शुद्ध्यन्ति दुरात्मानो
येषां भावो न निर्मलः मत्सं. ३।१९

मृत्तिके देहि मे पुष्टिं त्वयि सर्वं
प्रतिष्ठितम् महाना. ४।५
मृत्तिके प्रतिष्ठितं सर्वं तन्मे
निर्णुद मृत्तिके महाना. ४।७
मृत्तिके ब्रह्मदत्ताऽसि काश्यपेना-
भिमन्त्रिता महाना. ४।६
मृत्तिके हन मे पापं त्वयि सर्वं
प्रतिष्ठितम् यज्ञोप. ३
मृत्तिके हन मे पापं यन्मया
दुष्कृतं कृतम् महाना. ४।५
मृत्यवे त्वा ददानीति [मा.पा.] कठो. १।४
मृत्यवे त्वां ददामीति कठो. १।४
मृत्यवे स्वाहा मृत्यवे स्वाहा महाना. १४।१
मृत्युचक्रगतस्यापि तस्य
मृत्युभयं कुतः यो. शि. १।८३
मृत्युनैवेदमावृतमासीत् बृह. १।२।१
मृत्युमृत्युत्वान्नमामित्वात् नृसिंहो. ७।५
मृत्युमृत्युममृत्युमृत्युं (नारसिंहं) नृसिंहो. ६।१
मृत्युमृत्युं नवमं स्थानं (जानीयात्) नृ. पू. २।३
मृत्युमेवाप्येति यो मृत्युमेवास्तमेति सुबालो. ९।८
मृत्युरपानो भूत्वानाभिंप्राविशत् २ ऐत. २।४
मृत्युरस्यात्मा भवति बृह. १।२।७
मृत्युरेवाप पुनर्मृत्युं जयति बृह. १।२।७
मृत्युर्धावति पञ्चमः [कठो.६।३+ तैत्ति. २।८
मृत्युप्रोक्तां नचिकेतोऽथ लब्ध्वा
विद्यामेतां योगविधिं च कृत्स्नम्।
ब्रह्मप्राप्तो विरजोऽभूद्विमृत्युः कठो. ६।१८
मृत्युर्न जननाभावात् ते. बिं. ५।२०
मृत्युर्यस्योपसेचनं क इत्था
वेद यत्र सः कठो. २।२४
मृत्युर्वा असत्सदमृतम् बृह. १।३।२८
मृत्युर्वै तमो ज्योतिरमृतं बृह. १।३।२८
मृत्युर्वै परे देव एकीभवति
[सुबालो. ११।२+१३।४+ १४।१+१५।२
मृत्युसंसारवर्त्मनि भ. गी. ९।३
मृत्युसंसारसागरात् भ. गी. १२।७
मृत्युं चतुर्थस्याद्यार्धान्त्यं साम तु
जानीयाद्यो जानीते सोऽमृतत्वं
च गच्छति नृ. पू. १।५

मृत्युं च नाभिनन्देत जीवितं
  वा कथञ्चन — ना. प. ३।६०
मृत्युं यजे प्रथमजामृतस्य — चित्त्यु. १५।३
मृत्युं श्रुतिपरायणाः — भ. गी. १३।२७
मृत्युः सर्वहरश्चाहं — भ. गी. १०।३०
मृत्योर्माऽमृतं गमय [अक्ष्यु. २+ — चाक्षुषो. २
मृत्योर्माऽमृतं गमयामृतं मा
  कुर्वित्येतदाह — बृ. उ. १।३।२८
मृत्योर्मामृतं गमयेति...(मा.पा.) — बृ. उ. १।३।२८
मृत्योर्मृत्युमित्याह मृत्योर्वा अयं
  मृत्युरमृतत्वं प्रजानामन्नादानाम् — अव्यक्तो. ३
मृत्योस्तुल्यं त्रिलोकीं ग्रसितुमति-
  रसाभिःसृता किं नु जिह्वा...
  देवैर्देव्याखिशूलक्षतमहिषजुषो
  रक्तधारा जयन्ति — वज्रपं. ४
मृत्योः स मृत्युमाप्नोति य इह नानेव
  पश्यति [कठो. ४।१०+ — आ. प्र. १
  [बृ. उ. ४।४।१९+
मृत्योः स मृत्युमाप्नोति — नृसिंहो. ८।७
मृत्योः स मृत्युं गच्छति य इह
  नानेव पश्यति — कठो. ११
मृदभिन्नं हि कार्यकम् — पञ्चब्र. २९
मृदा तोयेन शुद्धिः स्यान्न क्लेशो
  न धनव्ययः — अवसं. ३।२०
मृदु श्लक्ष्णं वायोः — छांदो. २।२२।१
मृद्भस्मगोमयजलं पत्रपुष्पेन्धनं
  समित् । पर्याप्तमष्टकं होत-
  द्वैर्थं तु समाहरेत् — शिवो. ७।२६
मृद्वत्संस्थमयःपिण्डं यथाभ्यय-
  स्काराद्यो नाभिभवन्ति — मैत्रा. ६।२७
मृल्लोहवैस्फुलिंगैस्तु (लिङ्गाद्यैः) — अद्वैता. १५
मृषा वै किल मासं वदिष्ठा ब्रह्म
  ते ब्रवाणीति — कौ. त. ४।१८
मृषैवोदेति सकलं मृषैव प्रविलीयते । — योगकुं. १।८०
(ततः) मेघापायेऽंशुमानिवा-
  त्माविर्भवति [पैङ्गलो.३।४+ — कलिसं. ४
मेघा यथा व्योम न च स्पृशन्ति
  संसारदुःखानि न मां स्पृशन्ति — वराहो. ३।२

मेघे अमेघे वा विद्युतं पश्येत्,
  मेघे वा विद्युतं न पश्येत् — २ ऐत. २।४।६
मेघो जायते स प्रस्तावो वर्षति
  [छांदो. २।३।१+ — २।१५।१
मेघो भूत्वा प्रवर्षति त इह व्रीहि-
  यवा ओषधिवनस्पतयस्तिल-
  माषा इति जायन्ते — छांदो. ५।१०।६
मेघो यत्सम्प्लवते स हिङ्कारो य-
  द्वर्षति स प्रस्तावो याः प्राच्यः
  स्यन्दन्तेसउद्गीथो याःप्रतीच्यः
  स प्रतिहारः समुद्रो निधनम् — छांदो. २।४।१
मेढ्रादुपरि निक्षिप्य सव्यं गुल्फं
  ततोपरि । गुल्फान्तरं च
  संक्षिप्य मुक्तासनमिदं मुने — जा. द. ३।९
मेदसः स्नायवः — गर्भो. २
मेदसः स्नावा, स्नावोऽस्थीनि — निरुक्तो. १२
मेधया मनीषा — महाना. १७।१३
मेधया हि तपसाऽजनयत्पिता — बृह. १।५।२
मेधातिथिं काण्वमिन्द्रो जहार — बा. मं. १
मेधा इष्टिर्धृतिर्मतिर्मनीषा — २ ऐत. ५।२
मेधा देवी जुषमाणा न आगा-
  द्विश्वाची भद्रा सुमनस्यमाना — महाना. १३।१
मेधावी छिन्नसंशयः — भ. गी. १८।१०
मेधावी राजा सर्वेभ्यो मान्तेभ्य
  उदरौत्सीत् — बृह. ४।२।२३
मेधां म इन्द्रो दधातु — महाना. १३।३
मे बहुधा प्रजाः करिष्य इति — प्रश्नो. १।४
मेयहीनः शिवोऽस्म्यहम् — मैत्रे. ३।१३
मेरुमध्यगता देवाश्चलन्ते मेरु-
  चालनात् — वराहो. ५।६४
मेरुशृङ्गतटोल्लासिगङ्गाचलरयो-
  पमा । दृष्टायस्मिन्मुने मुक्ता
  हारस्योल्लासशालिता [याज्ञ.१०+ — महो. ३।४१
मेरुः शिखरिणामहम् — भ. गी. १०।२३
मेरुः सीम तरुण्डोऽस्या महारत्न-
  समाकुलः । — गुह्यका. ९
मेहन्ति बहुला८ श्रियम् — चित्त्यु. ११।६
मैत्रः करुण एव च — भ. गी. १२।१३

मोहिनीं सर्वलोकानां तां विद्यां शाम्बरीत्रयाम् । अभीष्टफलदां देवीं वन्दे तां जगदीश्वरीम् — वनदु. २२
मोहोऽयं विगतो मम — भ. गी. ११।१
मौनमात्मविनिग्रहः — भ. गी. १७।१६
मौनवाग्निरहम्भावो निर्मानोमुक्त-मत्सरः । यः करोति गतोद्वेगः स जीवन्मुक्त उच्यते — महो. २।५०
मौनं चैवास्मि गुह्यानां — भ. गी. १०।३८
मौनं योगासनं योगस्तितिक्षैकान्तशीलता । निस्स्पृहत्वं समत्वं च सप्तैतान्येकदंडिनाम् — ना. प. ४।२४
मौनं स्तुतिः — मं. ब्रा. २।५
मौर्ल्योन्मेषनिमेषाभ्यां कर्मणां प्रळयोदयौ । तद्विलीनं कुरु बलाद्गुरुशास्त्रार्थसङ्गमैः — अ. पू. ५।४२

य

य अणुर्यः श्रेष्ठः स वै वेगवान्भवति — ग. शो. २।३
य आकाशमन्तरे सञ्चरन् यमाकाशो न वेद — अध्यात्मो. १
य आकाशं ब्रह्मेत्युपास्ते — छांदो. ७।१२।२
य आकाशे तिष्ठन्नाकाशादन्तरो यमाकाशो न वेद — बृह. ३।७।१२
य आण्डकोशे भुवनं बिभर्ति — चित्त्यु. ११।४
य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः ।.. यस्य छायामृतं यो मृत्युमृत्युः.. — नृ. पू. २।१२
[ऋ.मं.१०।१२१।२+ — अथर्व. ४।२।१+
[वा. सं. २५।१३+ — तै. सं. ४।१।८।४
य आत्मदा बलदा यस्य विश्वे उपासते.. यस्य छायामृतं यस्य मृत्युः...स्तन्मे मनः शिव.. — २ शिवसं. ३४
य आत्मनि तिष्ठन्नात्मानमन्तरा यमयति — श. प. १४।५।३०
य आत्मन्येवावस्थीयते — प. हं. ९.
य आत्मानं क्रियाभि- (भिःसुगुप्तं) गुप्तं करोति मातरं पितरं भार्यां पुत्रान्बन्धूननुमोदयित्वा... वैश्वानरेष्टीर्निर्वपेत् [१सं.सो.१।२ +कठश्रु. १
य आत्माऽपहतपाप्मा... अविजिघत्सः (मा.पा.) — छांदो. ८।७।१३
य आत्माऽपहतपाप्मा सोऽन्वेष्टव्यः — छांदो. ८।७।१,३
य आत्माऽपः प्राश्याचम्यायं विधिः परिव्राजकानाम् — जाबालो. ५
य आत्मा सर्वान्तरस्तं मे व्याचक्ष्व [बृह. ३।४।१,२ — ५।१
(अथ) य आत्मा स सेतुर्विधृतिरेषां लोकानां... — छांदो. ८।४।१
य आदित्यमन्तरो यमयत्येष त आत्माऽन्तर्याम्यमृतः — बृह. ३।७।९
(अथ) य आदित्याख्यः स कालः सकलः — मैत्रा. ६।१५
य आदित्ये तिष्ठन्नादित्यादन्तरो यमादित्यो न वेद — बृह. ३।७।९
य आनन्दे यो हृद्याकाशे य एतस्मिन्सर्वस्मिन्नन्तरे सञ्चरति सोऽयमात्मा — सुबालो. ५।१
य आरण्याः पशवो विश्वरूपाः — चित्त्यु. ११।१२
य आविवेश भुवनानि विश्वा प्रजापतिः प्रजया संविदानः । त्रीणि ज्योतींषि स च ते सषोडशी.. — नृ.पू. २।६
[+वा.सं.८।३६ — तै.आ. १०।१०।२
य आवृणोत्यवितथेन कर्णावदुःखं कुर्वन्नमृतं सम्प्रयच्छन् । तं मन्येत पितरं मातरं च तस्मै न द्रुह्येत् — संहितो. ३।६
य आशां ब्रह्मेत्युपास्त आशयाऽस्य सर्वे कामाः समृद्ध्यन्त्यमोघा ह्यस्याशिषो भवन्ति — छान्दो. ७।१४।२
य आस्ते मनसा स्मरन् — भ. गी. ३।६
(अथ) य इच्छेत् पुत्रो मे कपिलः पिङ्गलो जायेत द्वौ

वेदावनुब्रुवीत सर्वमायुरियादिति दध्योदनं पाचयित्वा सर्पिष्मन्तमश्नीयातां बृह. ६।४।१५
(अथ) य इच्छेद्दुहिता मे पण्डिता जायेत सर्वमायुरियादिति तिलौदनं पाचयित्वा सर्पिष्मन्तमश्नीयाताम् बृह. ६।४।१७
(अथ) य इच्छेत् पुत्रो मे पण्डितोऽविगीतः समितिङ्गमः शुश्रूषितां वाचं भाषिता जायेत सर्वान्वेदाननुब्रुवीत सर्वमायुरियादिति माꣳसौदनं पाचयित्वा सर्पिष्मन्तमश्नीयाताम् बृह. ६।४।१८
(अथ) य इच्छेत्पुत्रो मे श्यामो लोहिताक्षो जायेत त्रीन्वेदाननुब्रुवीत सर्वमायुरियादित्यौदनं पाचयित्वा सर्पिष्मन्तमश्नीयातां बृह. ६।४।१६
य इति सदाशिवपुरुषः गायत्रीर. २
य इत्तद्विदुस्त इमे समासते ऋ.मं.१।१६४।३९
[नृ.पू.४।३] श्वेताश्व. ४।८+ सद्वै. १५
य इदमथर्वशिरो ब्राह्मणोऽधीते अश्रोत्रियः श्रोत्रियो भवति अ. शिरः. ३।१६
य इदमधीतेसोऽपिकृतकृत्यो भवति १ अवधू. ३३
(अथ) य इदमविद्वानधोपहासं चरत्यासाꣳ स्त्रीणाꣳ सुकृतं वृङ्क्ते बृह. ६।४।३
य इदमविद्वांसोऽधोपहासं चरन्ति बृह. ६।४।४
य इदं गायत्रीरहस्यमधीते तेन क्रतुसहस्रमिष्टं भवति गायत्रीर. ११
य इदं गायत्रीरहस्यमधीते दिवसकृतं पापं नाशयति गायत्रीर. ११
य इदं गायत्रीरहस्यं ब्राह्मणः पठेत् तेन गायत्र्याः षष्टिसहस्रलक्षाणि जप्तानि भवन्ति गायत्रीर. ११
य इदं त्रिसुपर्णमयाचितं ब्राह्मणाय दद्यात्। वीरहत्यां वा एते घ्नन्ति, ये ब्राह्मणास्त्रिसुपर्णं पठन्ति [महाना. १२।३+ त्रिसुप. ३
य इदं परमं गुह्यं (मा.पा.) कठो. ३।१७
य इदं विष्णुहृदयमधीते स ब्रह्महत्यायाः पूतो भवति विष्णुहृ. ३।१
य इदं शिवसङ्कल्पं सदा ध्यायन्ति ब्राह्मणाः। ते परं मोक्षं गमिष्यन्ति तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु २ शिवसं. २७
य इमं च लोकं परं च लोकꣳ सर्वाणि भूतानि योऽन्तरो यमयति बृह. ३।७।१
य इमं त्रिसुपर्णमयाचितं ब्राह्मणाय दद्यात्। भ्रूणहत्यां वा एते घ्नन्ति। ये ब्राह्मणास्त्रिसुपर्णं पठन्ति [महाना. १२।२+ त्रिसुप. २
य इमं परमं गुह्यं भ. गी. १८।६८
य इमं परमं गुह्यं श्रावयेद्ब्रह्मसंसदि। प्रयतः श्राद्धकाले वा तदानन्त्याय कल्पते कठो. ३।१७
य इमं मध्वदं वेद आत्मानं जीवमंतिकात्। ईशानं भूतभव्यस्य न ततो विजुगुप्सत एतद्वै तत् कठो. ४।५
य इमं सृष्टियज्ञं जानाति मोक्षप्रकारं च सर्वमायुरेति मुद्गलो. २।५
य इमान् लोकानीशत ईशनीभिः बटुको. २२
य इमा विश्वा भुवनानि चक्लृपे तस्मै रुद्राय नमोऽस्त्वग्नये [अ. शिरः. ३।१३+ अथर्व. ७।८७।१
य इमा वेद स सर्वान्कामानवाप्य सर्वाꣳल्लोकाञ्जित्वा मामेवाभ्युपैति अव्यक्तो. ४
य इमाꣳल्लोकानीशत ईशनीभिः [श्वेता. ३।२+ अ. शिरः. ३।७
य इमां चक्षुष्मतीविद्यां ब्राह्मणो नित्यमधीते नतस्याक्षिरोगो भवति चाक्षुषो. ३
य इमां न विन्दते नाधीयते सन्ध्याकाले नोपासते ते ह्यश्रोत्रिया भवन्ति सन्ध्यो. ३

य इमां परमरहस्यशिवतत्त्वविद्या-
मधीते स सर्वपापेभ्यो
मुक्तो भवति — द. मू. २३

य इमां बटुकोपनिषदं ब्राह्मणो-
ऽधीतेऽश्रोत्रियः श्रोत्रियोभवति — बटुको. २८

य इमां ब्रह्मविद्याममावास्यायां
पठेच्छृणुयाद्वा यावज्जीवं न
हिंसन्ति सर्पाः — गारुडो. २८

य इमां महोपनिषदं ब्राह्मणोऽधीते-
ऽश्रोत्रियः श्रोत्रियो भवति — चतुर्वे. ७

य इमां वैखरीं शक्तिं योगी
स्वात्मनि पश्यति । स वा-
क्सिद्धिमवाप्नोति सरस्वत्याः
प्रसादतः — यो. शि. ३।१०

य इमां विद्यामधीते स सर्वान्
वेदानधीते — अव्यक्तो. ६

य इमां वैष्णवीं निष्ठां परित्यजति
स स्तेनो भवति — शाट्याय. २६

य इमां सर्वाणि छन्दांसि वेद — अव्यक्तो. ६

(अथ) य इमे ग्राम इष्टापूर्ते
दत्तमित्युपासते ते धूममभि-
सम्भवन्ति — छांदो. ५।१०।३

य इमे पुंड्राः सुह्मा उल्लुम्भा दरदा
बर्बरा इति न ह वा असंविदा
एव द्रागिवाभि तत् पद्यंत इति — आर्षे. ६।१

य इह कपूयचरणा अभ्याशो ह
यत्ते कपूयां योनिमापद्येरन् — छांदो. ५।१०।७

य इह नानेव पश्यति — कठो. ४।१०
[बृ. उ. ४।४।१९+ — आ. प्र. १

(अथ) य इहात्मानमनुविद्य
व्रजन्त्येतां्श्च सत्यान्कामां्
स्तेषां्सर्वेषुलोकेष्वकामचारो
भवति — छांदो. ८।१।६

य ईशानः स भगवान् महेश्वरः
[अ. शिरः. ३।४+ — बटुको. १९

य ईं्शृणोत्यलकं्शृणोति नहि
प्रवेद सुकृतस्य पन्थाम् — ना. पू. ता. ४।८

य ईशेऽस्य जगतो नित्यमेव
नान्यो हेतुर्विद्यत ईशनाय — श्वेताश्व. ६।१७

य ईशेऽस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै
देवाय हविषा विधेम — श्वेताश्व. ४।१३
[ऋ. मं. +१०।१२१।३ — तै. सं. ४।१।८।४

य उ एनं् हिनस्ति स्वां् स
योनिमृच्छति — बृह. १।४।११

य उतारण्ये बलउतर वाचोत
तिष्ठन्नुत व्रजन्नुतासीन उत
शयानोऽधीयीतैव स्वाध्यायं
तपस्वी पुण्यो भवति — सहवै. १६

य उत्तरतः स ॐकारः
[अ. शिरः. ३।४+ — बटुको. १९

य उदानेनोदानिति स त आत्मा
सर्वान्तरः — बृह. ३।४।१

(अथखलु) य उद्गीथः स प्रणवो
यः प्रणवः स उद्गीथः — छांदो. १।५।१,५

य उपनयनादूर्ध्वं त्रिरात्रमक्षार-
लवणाशीगायत्रीमन्त्रीसगायत्रः — आश्रमो. १

य उपनिषत्सु धर्मास्ते मयि सन्तु — केनो. शां. पा.

य उपनिषद्ब्राह्मीं वाव त उपनिषद-
मब्रूमेति — केनो. ४।७

य उपस्थे, य आनन्दयितव्ये, यः
प्रजापतौ, यो नाड्यां...
सञ्चरति सोऽयमात्मा — सुबालो. ५।१४

य उ हैवं विदं् स्वेषु प्रतिपत्ति-
र्बुभूषतिनहैवालंभार्येभ्यो भवति — बृह. १।३।१८

य उ हैवंविदास्पर्धतेऽनुशुष्यत्यनु-
शुष्य हैवान्ततो म्रियत
इत्यध्यात्मम् — बृह. १।५।२१

य ऊष्माणः स प्राणः — १ ऐत. २।४।१

य एकः स रुद्रो यो रुद्रः स ईशानो
य ईशानः स भगवान्महेश्वरः
[अ. शिरः. ३।४+ — बटुको. १९

य एको जालवानीशत ईशनीभिः — श्वेता. ३।१

य एको देव आत्मशक्तिप्रधानः
सर्वज्ञःसर्वेश्वरःसर्वभूतान्तरात्मा — शाण्डि. ३।१।७

य एकोऽवर्णो बहुधा शक्तियोगा-
द्वर्णाननेकान्निहितार्थो दधाति ।
विचैति चान्ते विश्वमादौ स
देवः सनोबुद्ध्याशुभयासंयुनक्तु — श्वेताश्व. ४।१

य एतच्च धारयेद्गोपीचन्दनमृत्तिका- निरुक्त्यानि...धारणमात्रेण च ब्रह्मलोके महीयते	गोपीचं.६
य एतत्तारकं ब्रह्म ब्राह्मणो नित्य- मधीते, स पाप्मानं तरति	रामो.१।२
य एतदक्षरं गार्गि विदित्वाऽस्मा- ल्लोकात्प्रैति स ब्राह्मणः	बृह. ३।८।१०
य एतदथर्वशिरोऽधीते । प्रातर- धीयानो रात्रिकृतं पापं नाश- यति । सायमधीयानो दिवस- कृतं पापं नाशयति	महावा. ६
य एतदभिपद्येव गृह्णीयादथो विस्फुरन्तीव धावन्तीवोप- प्लवन्तीवोपश्लिष्यन्तीव ते हैवाभिपद्यन्ते	आर्षे. ५।४
य एतदस्मिन्नन्तरे हिरण्मयः पुरुषो...हिरण्यवर्णो..	आर्षे. ६।२
य एतदुपनिषदं नित्यमधीते सोऽग्निपूतोभवति [पैङ्गलो.४।२३ +मुद्गलो. ५।१	
य एतदेवं विद्वानक्षरमुद्गीथमुपास्ते	छां.१।१।७
य एतदेवं विद्वानक्षरं प्रणौति	छांदो. १।४।५
(अथ) य एतदेवं विद्वानग्निहोत्रं जुहोति	छांदो. ५।२४।२
य एतदेवं विद्वानात्मसम्मितमति- मृत्यु सप्तविधं सामोपास्ते	छांदो. २।१०।६
य एतदेवं विद्वानृतुषु पञ्चविधं सामोपास्ते	छांदो. २।५।२
य एतदेवं विद्वान्परोवरीयांसमु- द्गीथमुपास्ते	छांदो. १।९।२
य एतदेवं विद्वान्पशुषु पञ्चविधं सामोपास्ते	छांदो. २।६।२
य एतदेवं विद्वान्प्राणेषु पञ्चविधं परोवरीयः सामोपास्ते	छांदो. २।७।२
य एतदेवं विद्वान्वाचि सप्तविधं सामोपास्ते	छांदो. २।८।३
य एतदेवं विद्वान्वृष्टौ पञ्चविधं सामोपास्ते	छांदो. २।३।२
य एतदेवं विद्वाँल्लोकेषु पञ्चविधं सामोपास्ते	छांदो. २।२।३
य एतदेवं विद्वान् सर्वास्वप्सु पञ्चविधं सामोपास्ते	छांदो. २।४।२
य एतद्विदुरमृतास्ते भवन्ति [+श्वेता.३।१,१०,	कठो. ६।९ १३+४।१७
य एतन्मार्गे आसक्तास्ते रसरूपिणीं सृष्टिमन्तरुत्पद्यमाना भवन्ति	सामर. ३
य एतमेवमात्मानं वैश्वानरमुपास्ते [१३।२+१४।२+१५।२+	छांदो. ५।१२।२ १६।२+१७।२
य एतस्मिन्सर्वस्मिन्नन्तरे सञ्चरति सोऽयमात्मा तमात्मानमुपासी- तामृतमभयमशोकमनन्तम्	सुबालो. ५।१,१४
य एतं मंत्रराजं नारसिंहमानुष्टुभं नित्यमधीते स मृत्युं तरति	नृ. पू. ५।१०
य एतं मंत्रराजं नारसिंहमानुष्टुभं नित्यमधीतेसोऽग्निस्तम्भयति	नृ. पू. ५।११
य एतानि नारसिंहानि चक्राण्ये- तेष्वङ्गेषु बिभृयात् तस्यानुष्टुभ् सिद्ध्यति	नृ. षट्च. ७
य एतानेवं पञ्च ब्रह्मपुरुषान् स्वर्गस्यलोकस्य द्वारपान्वेद	छांदो. ३।१३।६
(अथ ह) य एतानेवं पञ्चाग्नीन् वेद न सह तैरप्याचरन्पाप्मना लिप्यते	छांदो. ५।१०।१०
य एतान्येवं विद्वानुद्गीथाक्षराण्यु- पास्त उद्गीथ इति	छांदो. १।३।७
य एतामुपनिषदमधीते सोऽव्रती व्रती भवति	राधिको.९
य एतामेव ब्रह्मोपनिषदं वेद	छांदो. ३।११।३
य एतामेवं साम्नामुपनिषदं वेद	छांदो. १।१३।४
य एतां महोपनिषदं वेद स कृत- पुरश्चरणो महाविष्णुर्भवति	नृ. पू. १।७
य एतां मायां शक्तिं वेद स पाप्मानं तरति	नृ. पू.३।२
य एतां विद्यां तुरीयां ब्रह्मयोनि- स्वरूपां तामिहायुषे शरणं प्रपद्ये	त्रि. ता. ५।२१
य एतेऽत्र समागताः	भ. गी. १।२३
य एतेन चतुर्थीषु पक्षयोरुभयो- रपि । लक्षं जपेदपूपानां तत्क्षणात् कृतको भवेत्	ग. पू. २।११

य एते ब्रह्मलोके तं वा एतं देवा
आत्मानमुपासते तस्मात्तेषा॰
सर्वे च लोका आत्ताः छांदो. ८।१२।६
(अथ) य एतौ पन्थानौ न
विदुस्ते कीटाः पतङ्गा यदिदं
दन्दशूकम् बृह. ६।२।१६
य एनमजमव्ययम् भ. गी. २।२१
य एतमेवं विदुरमृतास्ते भवन्ति श्वेता. ४।२०
य एनमेवं वेद तमनवरुद्धयैवामन्यत बृह. १।२।७
(अथ) य एनं द्विषन्ति यांश्च स्वयं
द्वेष्टि त एनं सर्वे परितो म्रियन्ते कौ. त. २।१३
(अथ) य एनं प्रत्याह तमिह
वृष्टिर्भूत्वा वर्षति कौ. त. १।२
य एनं मंत्रराजं गणपतेः सर्वदं
नित्यं जपति सोऽग्नि॰
स्तम्भयति, स उदकं स्तम्भयति गणेशो. ५।१
य एनं मंत्रराजंगाणेशं वेद सर्ववेद गणेशो. ५।४
य एनं मंत्रराजं नित्यमधीते स
विघ्नानाकर्षयति गणेशो. ५।२
य एनं मन्त्रराजं वैघ्नराजं नित्य-
मधीते स ऋचोऽधीते ग. शो. ५।४
य एनं विदुरमृतास्ते भवन्ति (मा.पा.) कठो.६।९
य एनं वेत्ति हन्तारं भ. गी. २।१९
य एनं वेद सत्येन भर्तु चित्सु. १४।१
य एनां विदुरमृतास्ते भवन्ति गुह्यका. ६३
य एवमेतच्छन्दसां छन्दस्त्वं वेद १ ऐत. १।६।१
य एवमेतच्छिरसः शिरस्त्वं वेद १ ऐत. १।४।२
य एवमेतददितेरदितित्वं वेद बृह. १।२।५
य एवमेतदर्कस्यार्कत्वं वेद बृह. १।२।१
य एवमेतत्सत्यस्य सत्यत्वं वेद १ ऐत. १।५।३
य एवमेतत्साम वेद बृह. १।३।२२,२८
य एवमेतत्साम्नः सुवर्णं वेद बृह. १।३।२६
य एवमेतत्साम्नः स्वं वेद बृह. १।३।२५
य एवमेतदनस्यान्नंवेदतद्विद्वा॰ सः
श्रोत्रिया अशिष्यन्त बृह. ६।१।१४
य एवमेतमात्मानं वैश्वानरमुपास्ते
(मा. पा.) छां. उ. ५।१३।२
य एवमेतं महद्यक्षं प्रथमजं वेद
सत्यं ब्रह्मेति बृह. ५।४।१

य एवमेता महासंहिता व्याख्याता
वेद सन्धीयते प्रजया पशुभिः तै. उ. १।३
य एवमेतां चक्षुषो विभूतिं वेद १ ऐत. १।७।४
य एवमेतां प्राणस्य विभूतिं वेद १ ऐत. १।७।३
य एवमेतां मनसो विभूतिं वेद १ ऐत. १।७।६
य एवमेतां वाचो विभूतिं वेद
प्राणेन सृष्टौ.. अनुचरन्ति १ ऐत. १।७।२
य एवमेतां श्रोत्रस्य विभूतिं वेद १ ऐत. १।७।५
य एवमेवं विद्वानुपास्ते
[छान्दो. ४।११।२+ १२।२+१३।
य एवं गणेशतापिन्युपनिषदं
वेद संसारं तरति... गणेशो. ५।८
य एवं नित्यं वेदयते गुहाशयं
प्रभुं पुराणं सर्वभूतं हिरण्मयम् एका. उ. १३
य एवंनिर्बीजएवभवति निर्बीजंवेद सुबालो. ९।१४
य एवं ब्रूयादहमदर्शमिति
तस्मा एवं श्रद्धाम बृह. ५।१४।४
य एवं विदित्वा सदा तमुपास्ते
पुरुषः स नारायणो भवति त्रि. म. ना. ७।९
य एवंविदि पापं कामयते यश्चैन-
मभिदासति स एषोऽश्माखण्डः छान्दो. १।२।८
य एवं विदुरमृतास्ते भवन्ति महाना. १।११
य एवंविदो ब्राह्मणस्य पुत्रो
जायत इति बृह. ६।४।२८
य एवं विद्वानधोपहासं चरति,
आसां स्त्रीणां सुकृतं वृङ्क्ते बृह. ६।४।३
य एवं विद्वानिमं ध्यानयज्ञमनु-
तिष्ठेत्स सर्वज्ञोऽनन्तशक्तिः
सर्वकर्ता भवति अव्यक्तो. ५
य एवं विद्वानुदगयने प्रमीयते महाना. १८।१
य एवं विद्वानेतद्वाक्यापयेत् गोपीचं. ६
य एवं विद्वानेतदुपास्ते [बृह.४।१।२, ३,४,५,६,७
य एवं विद्वान्यतिहस्ते दद्यादनु-
ग्रहार्थे मायापल्लवः सर्वमायुरेति गोपीचं. ८
य एवं विद्वान्गोपीचन्दनं धारये-
दश्वमेधफलमाप्नोति गोपीचं. ८
य एवं विद्वान्प्राणं वेद न हास्य
प्रजा हीयतेऽमृतो भवति प्रश्नो. ३।११

य एवं विद्वान्महारात्र उषस्युदिते... स्वाध्यायमधीते...सर्वांल्लोकाननृणोऽनुसञ्चरति	सहवै. १९
य एवं विद्वान् मेघे वर्षति विद्योतमाने स्तनयत्यवस्फूर्जयति पवमाने वायावमावास्यां स्वाध्यायमधीते तप एव तत्तप्यते	सहवै. १८
य एवं विद्वा१ंश्चिनुते नाचिकेतम् । स मृत्युपाशान्पुरतः प्रणोद्य शोकातिगो मोदते स्वर्गलोके	कठो. १।१८
य एवं वेत्ति पुरुषं	भ. गी. १३।२३
य एवं वेद तस्योपनिषन्नयाचेदिति	कौ. त. २।१,२
य एवं वेद निदानवान् भवति	नृ. पू. ४।३
य एवं वेद प्रजापतेः सोऽपि त्र्यंबक इमामृचमुद्गायन्नुद्ग्रथितजटाकलापः प्रत्यग्ज्योतिष्यात्मन्येव रन्तारमिति	अव्यक्तो. ७
य एवं वेद ब्रह्मणो महिमानमाप्नोति	महाना. १७।१
य एवं वेद विद्युद्ब्रह्मेति	बृह. ५।७।१
य एवं वेद, श्रिया हैवाभिषिच्यते	नृ. पू. ४।३
य एवं वेद स कैवल्यमनुभवति	द. मू. २३
य एवं वेद स गणेशो भवति	गणेशो. ४।९
य एवं वेद स तपोऽतप्यत	बृ. जा. १।३
य एवं वेद स देवीपदमवाप्नोति	देव्युप. ४
य एवंवेदसपरंब्रह्मधामक्षेत्रज्ञमुपैति	ब्रह्मो. १
य एवं वेद स पुरुषस्तदीयोपासनया तस्य सायुज्यमेति	त्रि. म.ना. १।६
य एवं वेद स महान्भवति	अक्ष्यु. ३
य वेद एवं समानानामधिको भवेद्	अव्यक्तो. ६
य एवं वेद स मुक्तिभाग्भवति	मं. ब्रा. १।१
य एवं वेद स मुक्तो भवति	ना. प. ९।२०
य एवं वेद स मुख्यो भवति	गणेशो. २।५
य एवं वेद स विष्णुरेव भवति	नारा. २
य एवं वेद स वैष्णवो भवति	तुलस्यु. २
य एवं वेद स शोकं तरति	देव्युप. १२
य एवंवेद स स्त्रीहत्यायाःप्रमुच्यते	तुलस्यु.१८
य एवं वेद सोऽमृतो भवति	वासुदे. १।३
य एवं वेदाहं ब्रह्मास्मीति स इदं सर्वं भवति	म. वा. १. १९
य एवं वेदेति महोपनिषत्	नृ. पू. १।७
य एवं वेदेति रहस्यं	नृसिंहो. ८।२,४,६
य एवायमग्नौ पुरुष एतमेवाहं ब्रह्मोपास इति	बृह. २।१।७
य एवायमप्सु पुरुष एतमेवाहं..	बृह. २।१।८
य एवायमप्सु पुरुषः स एष वदेव शाकल्य तस्य का देवतेति वरुण इति	बृह. ३।९।१६
य एवायमाकाशे पुरुषः, एतमेवाहं ब्रह्मोपास इति	बृह. २।१।५
य एवायमात्मनिपुरुषः, एतमेवाहं..	बृह. २।१।१३
य एवायमादर्शे पुरुषः, एतमेवाहं..	बृह. २।१।९
य एवायमादर्शे पुरुषः स एष वदेव शाकल्य तस्य का देवतेत्यसुरिति	बृह. ३।९।१९
य एवायं काममयः पुरुषः स एष वदेव शाकल्य तस्य का देवतेति स्त्रिय इति	बृह. ३।९।११
य एवायं छायामयः पुरुषः स एष वदेव शाकल्य तस्य का देवतेति मृत्युरिति	बृह. ३।९।१४
य एवायंछायामयः पुरुष एतमेवाहं ब्रह्मोपास इति	बृह. २।१।१२
यएवायं दिक्षुपुरुषः, एतमेवाहं..	बृह. २।१।११
य एवायं पुत्रमयः पुरुषः स एष वदेव शाकल्यतस्यकादेवतेति प्रजापतिरिति	बृह. ३।९।१७
य एवायं मुख्यप्राणः (मा.पा.)	छां. उ. १।५।३
य एवायं मुख्यः प्राणस्तमुद्गीथमुपासाञ्चक्रिरे	छान्दो. १।२।७
य एवायं मुख्यः प्राणस्तमुद्गीथमुपासीत	छान्दो. १।५।३
य एवायं यन्तं पश्चाच्छब्दोऽनूदेति, एतमेवाहं ब्रह्मोपासे	बृह. २।१।१०,१२
य एवायं वायौ पुरुषएतमेवाहं..	बृह. २।१।६
य एवायं शारीरः पुरुषः स एष वदेव शाकल्य तस्य का देवतेत्यमृतमिति	बृह. ३।९।१०

य एवायᳲ श्रोत्रः प्रातिश्रुत्कः
पुरुषः स एष वदैव शाकल्य
तस्य का देवतेति दिश इति बृह. ३।९।१३
य एवासावादित्ये पुरुष एतमेवाहं
ब्रह्मोपासे बृह. २।१।२
य एवासावादित्ये पुरुषः स एष
वदैव शाकल्य तस्य का
देवतेति सत्यमिति बृह. ३।९।१२
य एवासौ चन्द्रे पुरुष एतमेवाहं
ब्रह्मोपास इति बृह. २।१।३
य एवासौतपति तमुद्गीथमुपासीत.. छान्दो. १।३।१
य एवासौ विद्युति पुरुष एतमेवाहं.. बृह. २।१।४
य एवेतो यतःसम्भूतो भवति(मा.पा.) छां. उ. ५।९।२
य एवेदमप्रतिरूपᳲ संकल्पयति
स एव पाप्मा बृह. १।३।६
य एवैक उद्भवे सम्भवे च य
एतद्विदुरमृतास्ते भवन्ति श्वेता. ३।१
(अथ) य एवैतमनुभवति.. स
हैवालं भार्येभ्यो भवति बृह. १।३।१८
य एवैनं पुरस्तात्प्रत्याचक्षीरंस्त
एवैनमुपमन्त्रयन्ते ददामत इति कौ. त. २।१,२
य एवैष आकाशे पुरुषस्तमेवा-
हमुपास इति कौ. त. ४।६
य एवैष आदर्शे पुरुषस्तमेवाहं.. कौ. त. ४।१०
य एवैष आदित्ये पुरुषस्तमेवाह-
मुपासे कौ. त. ४।२
य एवैष चन्द्रमसि पुरुषस्तमेवाहं
ब्रह्मोपास इति कौ. त. ४।३
य एवैष च्छायायां पुरुषस्तमेवाह-
मुपास इति कौ. त. ४।३
य एवैष दक्षिणेऽक्षन् पुरुषस्तमेवाह-
मुपास इति कौ. त. ४।१६
य एवैष प्रतिश्रुत्कायां पुरुषस्तमेवाह-
मुपास इति कौ. त. ४।११
य एवैष प्राज्ञ आत्मा येनैतत्सुप्तः
स्वप्नमाचरति तमेवाह-
मुपास इति कौ. त. ४।१५
य एवैष वायौ पुरुषस्तमेवाहमुपासइति कौ. त. ४।७
य एवैष विद्युति पुरुष एतमेवाहं
ब्रह्मोपास इति कौ. त. ४।४

य एवैष शब्दः पुरुषमन्वेति तमे-
वाहमुपास इति कौ. त. ४।१२
य एवैष शारीरः पुरुषस्तमेवाह-
मुपास इति कौ. त. ४।१४
य एवैष सव्येऽक्षन् पुरुषस्तमेवाह-
मुपास इति कौ. त. ४।१७
य एवैष स्तनयित्नौ पुरुष एतमेवाहं
ब्रह्मोपास इति कौ. त. ४।५
य एवैषोऽग्नौ पुरुषस्तमेवाहमुपासे कौ. त. ४।८
य एवैषोऽप्सु पुरुषः तमेवाहमुपासे कौ. त. ४।९
य एष आदित्ये पुरुषः स परमेष्ठी
ब्रह्मात्मा महाना. १७।१२
य एष आदित्ये पुरुषो दृश्यते
सोऽहमस्मि छांदो. ४।११।१
य एष एतस्मिन्मण्डले पुरुषस्तस्य
भूरिति शिरः बृह. ५।५।३
य एष एतस्मिन्मण्डले पुरुष-
स्तस्य ह्येष रसः बृ. उ. २।३।३
(अथ) य एष एतस्मिन्मडले-
ऽर्चिर्दीप्यते तानि सामानि महाना. १०।१
(अथ) य एष एतस्मिन्मण्डले-
ऽर्चिषि पुरुषस्तानि यजूंषि महाना. १०।१
य एष चन्द्रमसि पुरुषो दृश्यते
सोऽहमस्मि छांदो. ४।१२।१
य एष तपति तस्य संवत्सर
आत्माऽयमग्निरर्कस्तस्येमे
लोका आत्मानः बृह. १।२।७
य एष तपति सतो ह्येष रसः बृह. २।३।२
य एष तपत्यग्निना पिहितः
सहस्राक्षेण हिरण्मयेनाण्डेन.. मैत्रा. ६।८
य एष देवोऽन्यदेवास्य सम्प्रसादो-
ऽन्तर्याम्यसङ्गचिद्रूपः पुरुषः परम. २
य एष विज्ञानमयः पुरुषः क्वैष
तदाऽभूत्कुत एतदागात् बृह. २।१।१६
य एष विज्ञानमयः... य एषोऽन्त-
र्हृदय आकाशस्तस्मिञ्छेते बृह. २।१।१७
य एष विद्युति पुरुषो दृश्यते
सोऽहमस्मि स एवाहमस्मि छांदो. ४।१३।१

(अथ) य एष सम्प्रसादोऽस्माच्छरीरात् समुत्थाय स्वेन रूपेणाभिनिष्पद्यते एष आत्मा ...एतद्ब्रह्म [मैत्रा. २।२+ छां. उ. ८।३।४
य एष स्तन इवावलम्बते सेन्द्रयोनिः [तैत्ति. १।६।१+ परब्र. २
य एष स्वप्ने महीयमानश्चरत्येष आत्मेति होवाच छान्दो. ८।१०।१
य एषोऽक्षिणि पुरुषो दृश्यत एष आत्मा [छान्दो. ४।१५।१ +८।७।४
य एषोऽनन्तोऽव्यक्त आत्मा तं कथमहं विजानामि जाबालो. २
य एषोऽनन्तोऽव्यक्त आत्मा सोऽविमुक्ते प्रतिष्ठितः जाबालो. २
य एषोऽनन्तोऽव्यक्तपरिपूर्णानन्दैकचिदात्मा रामो. ३।१
य एषोऽन्तरक्षिणि पुरुषो दृश्यत एष आत्मा (मा. पा.) छां. उ. ४।१९।१
(अथ) य एषोऽन्तरादित्ये हिरण्मयः पुरुषः... महाना. १०।१
(अथ) य एषोऽन्तरादित्ये... पुरुषो यः पश्यति मां हिरण्यवत्स एषोऽन्तरे हृत्पुष्कर एवाश्रितोऽन्नमत्ति मैत्रा. ६।१
(अथ) य एषोऽन्तरे हृत्पुष्कर एवाश्रितोऽन्नमत्ति स एषोऽग्निर्दिवि श्रितः सौरः कालाख्योऽदृश्यः सर्वभूतान्नमत्ति मैत्रा. ६।२
य एषोऽन्तर्हृदय आकाशस्तस्मिञ्छेते..[बृ. उ.२।१।१७+ बृह. ४।४।२२
य एषोऽन्तर्हृदय आकाशेऽथैनयोरेतदन्नम् बृह. ४।२।३
य एषोऽन्तर्हृदये लोहितपिण्डोऽथैनयोरेतत्प्रावरणम् बृह. ४।२।३
य एषो बाह्यावष्टम्भनेनोर्ध्वमुत्क्रान्तः..तमप्रणुहृत्येष आत्मा... मैत्रा. २।२
य ओषधीनां प्रभुर्भवति ताराधिपतिः सोमस्तत्साम्नस्तृतीयं पादं जानीयात् नृ. पू. १।४
य ओषधीषु यो वनस्पतिषु तस्मै नमः श्वेता. २।१७
यकारं प्राणबीजं च नीलजीमूतसन्निभम् ध्या. बिं. ५
यकारः परमात्मा भवति तारसा. १।४
यकारः पुरुषो भवति तारसा. १।४
यक्षगन्धर्वाप्सरोगणसेवितमन्तरिक्षं तत्साम्नो द्वितीयं पादं जानीयात् नृ. पू. १।२
यक्षगन्धर्वाप्सरोगणसेवितमंतरिक्षं द्वितीयंपादंजानीयान्निधिदातेति ग. पू. १।१२
यक्षरक्षांसि राजसाः भ. गी. १७।४
यक्षा नु जीवन्ति सर्वे जीवति गणेशो. २।५
यक्षोपासकाः सदा त्याज्याः सामर. २७
यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्ये भ. गी. १६।१५
यच्चक्षुषा न पश्यति येन चक्षूंषि पश्यति केनो. १।७
यच्च कालमकालं वा निश्चयः संशयो नहि ते. बिं. ५।१४
यच्च किञ्चिज्जगत्सर्वं दृश्यते श्रूयतेऽपि वा महाना. ९।५
(अथ) यच्चतुर्थममृतं तन्मरुत उपजीवन्ति छांदो. ३।९।१
यच्चतुष्पदा तेन जगती अव्यक्तो. ६
यच्चन्द्रमसि यच्चाग्नौ भ. गी. १५।१२
यच्चन्द्रमसोरोहितंरूपंतेजसस्तद्रूपं छांदो. ६।४।३
यच्च प्राणिति यच्च कस्मात्तानि न क्षीयन्तेऽद्यमानानि सर्वदा बृह. १।५।१
यच्चप्राणितियच्चनेतिपश्यस्त्रि हीदं९.. बृह. १।५।२
यच्च भव्यं सनातनम् (स विष्णुः) कैव. ९
यच्च माण्डूकेयीयमध्यायं प्रथमस्तेन नोणकारषकारावुपाप्ताविति ३ ऐत.२।६।२
यच्च यावच्च चिन्मात्रं यच्च यावच्च दृश्यते।...सर्वं चिन्मात्रम् ते. बिं. २।३८
यच्च सच्च त्यच्च बृह. २।३।१
यच्चयावच्चदूरस्थं सर्वंचिन्मात्रमेवहि ते. बिं. २।३९
यच्च यावच्च लक्ष्यते ते. बिं. २।३९
यच्च यावच्च वेदान्ताः सर्वंचिन्मात्रं ते. बिं. २।४०
यच्च स्थावरं सर्वं तत्प्रज्ञानेत्रं प्रज्ञाने प्रतिष्ठितम् २ ऐत. ५।३

यच्च स्वभावं पचति विश्वयोनिः
  पाच्यांश्च सर्वान्परिणामयेद्यः — श्वेताश्व. ५।५
यच्चान्यत्त्रिकालातीतं तदप्योङ्कार एव — मांडू. १
  [नृ. पू. ४।२+नृसिंहो. १।२+ — रामो. २।१
यच्चान्यदतिरिक्तं कालातीतं
  तदप्योङ्कार एव — राघोप. २।२
यच्चान्यद्द्रष्टुमिच्छसि — भ. गी. ११।७
यच्चापि सर्वभूतानां — भ. गी. १०।३९
यच्चाप्युत्क्रामतीश्वरः — भ. गी. १५।८
यच्चावहासार्थमसत्कृतोऽसि — भ. गी. ११।४२
यच्चास्येहास्ति यच्च नास्ति सर्वं
  तदस्मिन्समाहितम् — छांदो. ८।१।३
यच्चित्तस्वमनाख्येयं स आत्मा
  परमेश्वरः — महो. ४।११८
यच्चित्तस्तन्मयो भवति गुह्यमेतत्
  सनातनम् — मैत्रा. ६।३४
  [मैत्रे. १।१०+ — शाट्या. ३
यच्चित्तस्तेनैष प्राणमायाति — प्रश्नो. ३।१०
यच्चेदं दृश्यते किञ्चिज्जगत्स्थावर-
  जङ्गमम् । तत्सर्वमस्थिरं... — भवसं. १।१९
यच्छन्दोभिरात्मानं समधात्तस्मात्
  संहिता — ३ ऐत. २।६।१
यच्छरीरं सा पृथिवी — १ ऐत. ३।३।२
(अथ) यच्छान्तं तस्याऽऽधारं
  समथ यत्समृद्धमिदं तस्याग्नं — मैत्रा. ६।३६
यच्छिरस्तेन रुद्रः, मूर्ध्नि शतकुबेरः,
  सर्वदेवत्यास्ते प्रीणन्तु — आचम. ५
यच्छिरोऽश्रयत तच्छिरोऽभवत् — १ ऐत. १।४।२
यच्छुक्लं तदपां, यत्कृष्णं तदन्नस्या-
  पागाच्चन्द्राच्चन्द्रत्वं वाचारम्भणं
  विकारो नामधेयं त्रीणि रूपा-
  णीत्येव सत्यम् — छांदो. ६।४।३
यच्छुक्लं तदपां, यत्कृष्णं तदन्नस्या-
  पागादादित्यादादित्यत्वम् — छांदो. ६।४।२
यच्छुक्लं तदपां, यत्कृष्णं तदन्नस्या-
  पागाद्विद्युतो विद्युत्त्वम् — छांदो. ६।४।४
यच्छुक्लं तद्वैद्युतं यद्वैद्युतं तत्परं
  ब्रह्म [अ. शिरः. ३।४+ — वज्रको. १९

(अथ) यच्छुद्धे अक्षरे अभि-
  व्याहरति तत्प्रतृण्णत्याम उ
  एवोभयं,अन्तरेणोभयंव्याप्तंभवति — ३ ऐत. १।३।२
यच्छेद्वाङ्मनसी प्राज्ञस्तद्यच्छेज्ज्ञान
  आत्मनि । ज्ञानमात्मनि महति
  नियच्छेत्तद्यच्छेच्छान्तआत्मनि — कठो. ३।१३
यच्छोकमुच्छोषणमिन्द्रियाणाम् — भ. गी. २।८
यच्छ्रुतं यद्दृष्टं तत्तत्सर्वमविज्ञातमिव
  यो वसेत्तस्य स्वप्नावस्थायामपि
  तादृगवस्था भवति — ना. प. ९।११
यच्छ्रेय एतयोरेकं — भ. गी. ५।१
यच्छ्रेयसो देवानसृजताथ यन्मर्त्यः
  सन्नमृतानसृजत तस्मादतिसृष्टिः — बृह. १।४।६
यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे — भ. गी. २।७
यच्छ्रोत्रेण न शृणोति येन श्रोत्र-
  मिदं श्रुतम् । तदेव ब्रह्म त्वं
  विद्धि नेदं यदिदमुपासते — केनो. १।८
यजन्त इह देवताः — भ. गी. ४।१२
यजन्ते तामसा जनाः — भ. गी. १७।४
यजन्ते नामयज्ञैस्ते — भ. गी. १६।१७
यजन्ते श्रद्धयाऽन्विताः [भ.गी. — ९।२३+१७।१
यजन्ते सात्त्विका देवान् — भ. गी. १७।४
यजन्तो मामुपासते — भ. गी. ९।१५
यजन्त्यविधिपूर्वकम् — भ. गी. ९।२३
यजमानश्चिरन्नेतानग्नीनभिध्यायेत् — मैत्रा. १।१
यजमानाय वार्यम् — चित्सु. ७।१
यजमानो रजश्चापध्वस्यति श्रुति-
  श्चापध्वस्ताप्रतिष्ठति — २ प्रणवो. २०
यजमानो हविर्गृहीत्वा देवताभि-
  ध्यानमिच्छति — मैत्रा. ६।३४
यजुरात्मक उकारः — राघो. २।२
यजुरित्येष हीदं सर्वं युनक्ति — मुद्गलो. ३।१
यजुर्द्वितीयात् (पादादकल्पयत्) — मन्यको. ६
यजुर्निगदो वृथावाक्यदमितम् — १ ऐत. ३।६।४
यजुर्मयं ऋङ्मयं होता, ऋङ्मयं
  साममयमुद्गाता — कौ. ब्रा. २।६
यजुर्लक्ष्मी नृसिंहगायत्रीमित्यङ्गानि
  जानीयात् — नृ. पू. ४।१
यजुर्लक्ष्मी स्त्रीशूद्राय नेच्छन्ति — नृ. पू. १।२

यजुर्वेद एव पुष्पं ता अमृता आपः छान्दो. ३।२।१
यजुर्वेदे तिष्ठति मध्ये अहः सूर्यता. १।५
यजुर्वेदे दीर्घप्लुतोदात्त एकाक्षर ओङ्कारः २ प्रणवो. १२
यजुर्वेदोऽन्तरिक्षं च दक्षिणाग्निस्तथैव च । विष्णुश्च भगवान्देव उकारः परिकीर्तितः [ब्रह्मवि. ५+ १ प्रणवो. ५
यजुर्वेदो द्वितीयःपादः (गायत्र्याः) गायत्रीर. ३
यजुर्वै द्वितीयः पादः ग. पू. १।१३
यजुर्वै भुवः स शिवो भवति ग. पू. ३।१
यजुषः सायुज्य॰ सलोकतां जयति, य एवं वेद बृह. ५।१३।२
यजुषामेव तद्रसेन यजुषां वीर्येण यजुषां यज्ञस्य विरिष्ट॰ सन्दधाति छांदो. ४।१७।५
यजुषां वायुर्दैवतं तदेव ज्योतिः २ प्रणवो. २१
यजुषि यजुः, साम्निसाम, सूत्रे सूत्रं, ब्राह्मणे ब्राह्मणं, श्लोके श्लोकः, प्रणवे प्रणवः २ प्रणवो. ९
यजुस्तस्मादजायत [चित्त्यु.१२।४+ वा. सं. ३१।७ [ऋ.अ.८।४।१८=मं.१०।९०।९+
यजुः-प्राणो वै यजुः, प्राणे हीमानि सर्वाणि भूतानि युज्यन्ते बृह. ५।१३।२
यजुरुःसामशिरा असावमूर्तिरव्ययः कौ. त. १।७
यजूंष्येव मधुकृतो यजुर्वेद एव पुष्पं ता अमृता आपः छांदो. ३।२।१
यजूंषि यो वेद स वेद यज्ञम् इतिहा. ९
यजेत वाऽश्वमेधं वा लीलं वा वृषमुत्सृजेत् इतिहा. ९५
यजेत्सन्ध्यासु प्रतिपत्तिभिरुपचारैः गो. पू. ३।१
यज्जगद्भासकं भानं नित्यं भाति स्वतः स्फुरत् । स एव जगतः साक्षी सर्वात्मा विमलाकृतिः [अ. पू. ४।२६+ कठरु. १०४
यज्जरायु ते पर्वताः छांदो. ३।१९।२
यज्जाग्रतोदूरमुदैति...तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु वा. सं.३४।१ [१शि. सं. १+ २ शिवसं. ८

यज्जाग्रतो मनोराज्यं यज्जाग्रत्स्वप्न उच्यते महो. ५।१४
यज्जुहोषि ददासि यत् भ. गी. ९।२७
यज्ज्ञात्वा न पुनर्मोऽहं भ. गी. ४।३५
यज्ज्ञात्वा नेह भूयोऽन्यत् भ. गी. ७।२
यज्ज्ञात्वा मुनयः सर्वे भ. गी. १४।१
यज्ज्ञात्वाऽमृतमश्नुते भ. गी. १३।१२
यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात् [भ.गी. ४।१६+९।१
यज्ञ इति-यज्ञो हि देवाः, यज्ञेन हि देवा दिवं गताः । देवास्तस्माद्यज्ञे रमन्ते महाना. १६।१२
यज्ञ एव सविता छन्दांसि सावित्री स यत्र वेदस्तत्र छन्दांसि सावित्र्यु. ४
यज्ञक्षपितकल्मषाः भ. गी. ४।३०
यज्ञदानतपःकर्म [भ.गी.१८।३+ १८।५
यज्ञदानतपःक्रियाः भ. गी. १७।२४
यज्ञशिष्टाशिनः सन्तः भ. गी. ३।१३
यज्ञशिष्टामृतभुजः भ. गी. ४।३१
यज्ञश्च मे भूयात् चित्त्यु. ७।१
यज्ञसूत्रप्रणवब्रह्मयज्ञक्रियायुक्तो ब्राह्मणः पा. ब्र. ३
यज्ञसूत्रसम्बन्धी ब्रह्मयज्ञः पा. ब्र. ३
यज्ञस्तपस्तथा दानं भ. गी. १७।७
यज्ञस्तपांसि नियमास्तानि वै विविधानि च । गुरुवाक्ये तु सर्वाणि सम्पद्यन्ते न संशयः शिवो. ७।४०
यज्ञस्त्वमेवैकविभुः पुराणः एका. उ. २
यज्ञस्य पंक्तिः चित्त्यु. ९।१
यज्ञस्य प्रसृत्या अजिनं वासो वा दक्षिणत उपवीय दक्षिणं बाहुमुद्धरते सहवै. १
यज्ञस्यर्द्धिमनु संतिष्ठस्व महाना. १६।११
यज्ञं च नस्तन्वं च प्रजां च अरुणो. १
यज्ञं दानं जपं तीर्थं श्राद्धं वै देवतार्चनम् । तर्पणं मार्जनं चान्यन्न कुर्यात्तुलसीं विना तुलस्यु. १६
यज्ञं पाहि विभावसो स्वाहा महाना. ७।४
यज्ञं प्रतितिष्ठन्तं यजमानोऽनु प्रतितिष्ठतिसहस्र श्रेयान्भवति छान्दो. ४।१६।५

यज्ञ॰ रिष्यन्तं यजमानोऽनुरिष्यति
स दृष्ट्वा पापीयान्भवति छान्दो. ४।१६।३
यज्ञः कर्मसमुद्भवः भ. गी. ३।१४
यज्ञा इति च तद्विदः नैतव्य. २२
यज्ञाङ्गं ब्रह्मसम्पत्तिः पा. ब्र. ३
यज्ञाद्भवति पर्जन्यः भ. गी. ३।१४
यज्ञायाचरतः कर्म भ. गी. ४।२३
यज्ञार्थात् कर्मणोऽन्यत्र भ. गी. ३।९
यज्ञाश्च विहिताः पुरा भ. गी. १७।२३
यज्ञे तपसि दाने च भ. गी. १७।२७
यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि भ. गी. १०।२५
यज्ञेन दानेन तपसाऽनाशकेनैतमेव
विदित्वा मुनिर्भवति बृह. ४।४।२२
यज्ञेन द्विषन्तो मित्रा भवंति म.ना. १७।१
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः [ऋ. अ. ८।४।१९=
[मं. १०।९०।१६+ वा. सं. ३१।१६
[म. ना. २।४+पु.सू.१६+ चित्सु. १२।७
(यज्ञ इति) यज्ञेन हि देवा दिवं गताः म. ना. १७।१०
यज्ञेनासुरा नापानुदन्त म. ना. १७।१०
यज्ञेनेत्युपसंहारः सृष्टेर्मोक्षस्य
चेरितः । य एवमेतज्जानाति
स हि मुक्तो भवेदिति मुद्गलो. १।९
यज्ञेनैवोपजुह्वति भ. गी. ४।२५
यज्ञे सर्वं प्रतिष्ठितं तस्माद्यज्ञं
परमं वदन्ति म. ना. १७।१०
यज्ञैरिष्ट्वा स्वर्गतिं प्रार्थयन्ते भ. गी. ९।२०
यज्ञो दानं तपः कर्म भ. गी. १८।५
यज्ञो दानं तपश्चैव भ. गी. १८।५
यज्ञोपवीत बहिर्न निवसेः त्वमन्तः
प्रविश्य...मेधां प्रयच्छ ना. प. ४।४७
यज्ञोपवीतमेतदेव, विपरीतं
प्राचीनावीतम् आरुणे. १
यज्ञोपवीतं कृत्वाऽप आचम्य
त्रिदण्डपात्रं प्रसिच्योद्यन्त-
मादित्यमुपतिष्ठेत कौ. त. २।७
यज्ञोपवीतं निष्कृष्य पुत्रं दृष्ट्वा त्वं
ब्रह्मा त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कारस्त्व-
मोङ्कारस्त्वं स्वाहा...त्वं प्रति-
ष्ठाऽसीति वदेत् कठरु. १

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्य-
त्सहजं पुरस्तात् [ब्रह्मो. ५+ ना. प. ४।४६
[+पा. गृ. सू. २।२।१०
यज्ञोपवीतं यागं सत्रं स्वाध्यायं च
सर्वकर्माणि सन्न्यस्यायं ...
कौपीनं...परिग्रहेत् प. हं. २
यज्ञोपवीतं वेदांश्च सर्वंतद्वर्जयेद्यतिः कठरु. ५
यज्ञोपवीती धृतचक्रधारी यो
ब्रह्मवित्...वह्निसंयुक्तं स्त्रीशूद्रै-
र्बाहुभ्यां धारयेत् [यज्ञोप. १+ सुदर्श. १
यज्ञो भूत्वा यज्ञमासीद स्वां योनिं
जातवेदो भुव आजायमानः ना. प. ४।४३
यज्ज्ञात्वा मुच्यते जन्तुरमृतत्वं
च गच्छति कठो. ६।८
यज्ज्ञात्वाऽमृतमश्नुते गान्धर्वो. ४,११
यज्ज्ञानाग्निः स्वातिरिक्तभ्रमं भस्म
करोति तद् । बृहज्जाबाल-
निगमशिरोवेद्यमहं महः बृ. जा. शीर्षकं
यज्ज्ञानाद्यान्ति मुनयो ब्राह्मण्यं
परमाद्भुतम् । तत्पैपद्ब्रह्मतत्त्व-
महमस्मीति चिन्तये व.सू. शीर्षकं
यज्ज्ञानेन कृतार्थो भवति तन्नित्यं
शाम्भवीमुद्रान्वितम् मं. ब्रा. ३।१
यज्ज्योतिर्यदमृतं यदजय्यं तदक्षरमिति शौनको. २।२
यज्ज्योतिः स आदित्यः मैत्रा. ६।३
यत इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं
कृधि [महाना. ५।१+ वनदु. १५३
[ऋ. मं. ८।६१।१३+ अथर्व.१९।१५।१
[साम. १।२७४+ तै.आ. १०।१।९
यत एतस्य तस्यैष रसो य एष
एतस्मिन्मण्डले पुरुषस्तस्य
होष रस इत्यधिदैवतम् बृह. २।३
यत एतस्य त्यस्यैष रसो योऽयं
दक्षिणेऽक्षन्पुरुषस्तस्य होष रसः बृह. २।३।५
यत एवैतो यतः सम्भूतो भवति छांदो. ५।९।२
यत एवा यथा चैषा यथा नष्टेत्य-
खण्डितम् । तद्वया रोग-
शालाया अन्नं कुरु चिकित्सने महो. ५।११६

यतचित्तेन्द्रियक्रियः	भ. गी. ६।१२
यततामपि सिद्धानां	भ. गी. ७।३
यतते च ततो भूयः	भ. गी. ६।४३
यततो ह्यपि कौन्तेय	भ. गी. २।६०
यतन्तोऽप्यकृतात्मानः	भ. गी. १५।११
यतन्तो योगिनश्चैनं	भ. गी. १५।११
यतन्तश्च दृढव्रताः	भ. गी. ९।१४
यतयः केन दुःखिताः	१ सं. सो. २।९९
यतयः संशितव्रताः	भ. गी. ४।२८
यतयो भिक्षार्थं ग्रामं प्रविशन्ति पाणिपात्रमुदरपात्रं वा	आरुणि. ५
यतवाक्कायमानसः सूर्यभक्तो ब्रह्मचारी व्रतधरः	सूर्यता. २।१
यतवाक्कायमानसः	भ. गी. १८।५२
यतश्चोदेति सूर्योऽस्तं यत्र च गच्छति। तं देवाः सर्वेऽर्पिता-स्तदुनात्येति कश्चन। एतद्वै तत्	कठो. ४।९
यतः कुतश्च नैतमेकादश नव	तैत्ति. २।१०
यतः कुतश्चिदानीय नित्यं शास्त्राण्यवेक्षते	अक्ष्युप. ११
यतः पवमानपावकशुचिसङ्घातो हि जाठरस्तस्मादग्निर्यष्टव्य-श्रोतव्यः स्तोतव्योऽभिध्यातव्यः	मैत्रा. ६।३४
यतः प्रवृत्तिर्भूतानां	भ. गी.६ १८।४
यतः प्रवृत्तिः प्रसृता पुराणी	भ. गी. १५।४
यतः प्रसूता जगतः प्रसूतिः	महाना. १।४
यतः सर्वैः परित्यक्तं नरं धर्मोऽनुगच्छति	शिवो. ६।१६७
यतात्मा दृढनिश्चयः	भ. गी. १२।१४
यताहारो जितक्रोधो जितसङ्गो जितेन्द्रियः	ते. बिं. १।३
यतिर्नैकरात्रं वसेन्नकस्यापिनमेत्	ना. प. ५।८
यतिर्नरमधारणं त्यक्त्वैकदोपोष्य द्वादशसहस्रप्रणवं जप्त्वा शुद्धो भवति	भस्मजा. १।६
यतिर्यादृच्छिको भवेत् [ना.प.६।४४	वैतथ्य. ३७
यतिस्तर्जन्या शिरोललाटहृदयेषु प्रणवेन धारयेत्	गोपीचं. ४
यतीनां ज्ञानदं प्रोक्तं वनस्थानां विरक्तिदम् (भस्म)	बृ. जा. ५।६
यतीनां तु शतं पूर्णमेकमेकेन रुद्र-जापकेन तत्समम्	नृ. पू. ५।१६
यतीनां यतचेतसाम्	भ. गी. ५।२६
यतेन्द्रियमनोबुद्धिः	भ. गी. ५।२८
यतेः संव्यवहाराय पात्रलोपः स उच्यते	१ सं. सो. २।८१
यतोऽजरोऽमृतः स भवतीति	गायत्र्यु. ५
यतो जातानि भुवनानि विश्वा	श्वेताश्व. ४।४
यतो न क्रमते ज्ञानमसङ्गं तेन कीर्तितम्	अ. शां. ९६
यतो (निर्विषयो नाम) निर्विषय-स्यास्य मनसो मुक्तिरिष्यते। अतो (तस्मात्) निर्विषयं नित्यं मनः कार्यं मुमुक्षुणा	त्रि. ता. ५।१
यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु [प्रवर्ग्या. २२+	वा. सं. ३६।२२
यतो बभूव भुवनस्य गोपाः	नृ. पू. २।८
यतो यत आवर्तते तत्तद्गच्छति	छान्दो. ४।१७।९
यतो यतस्त्वाददीत लवणमेव	बृह. २।४।१२
यतो यतो निश्चरति	भ. गी. ६।२६
यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते। यतो वा यन्ति यत्रैवं यन्ति च। तदेतदक्षरं परं ब्रह्म	ग. पू. १।३
यतो वा इमानि... यतोऽग्निः पृथिव्यप्तेजोवायुः। यत्करात्मा-द्ब्रह्मविष्णुरुद्रा अजायन्त	गणेशो. ४।८
यतो वा इमानि..येन जातानि जीवन्ति, यत्प्रयन्त्यभिसं-विशन्ति, तद्विजिज्ञासस्व। तद्ब्रह्मेति	तैत्ति. ३।१
यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते... यत्प्रयन्त्यभिसंविशन्ति तं मामेवं विदित्वोपासीत	भ. जा. २।५
यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह	शांडि. २।३
[तैत्ति.२।४,९+शरभो.१८+	ब्रह्मो. २२

यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य...
आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान्न
बिभेति कदाचन (कुतश्चन)
[तैत्ति. २।४,५+ शरभो. १८

यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य...
आनन्दमेतज्जीवस्य यज्ज्ञात्वा
मुच्यते बुधः ब्रह्मो. २२

यतो वाचो निवर्तन्ते यो मुक्तैरव-
गम्यते । यस्य संज्ञाः कल्पिताः... महो. ४।५७

यतो वाचो निवर्तन्ते विकल्पकल-
नान्विताः । विकल्पसंक्षया-
ज्जन्तोः पदं तदवशिष्यते अ. पू. २।३३

यतो वाचो निवर्तन्ते निमित्ता-
नामभावतः (निमित्तं
किञ्चिदाश्रित्य खलु शब्दः
प्रवर्तते) कठरु. ३४

यतो विशन्ति तद्विजिज्ञासस्व तैत्ति. ३।११

यतो वीरः कर्मण्यः सुदक्षो युक्त-
ग्रावा जायते देवकामः नृ. पू. २।५

यतो वै समुद्राः सरितः पर्वताश्च,
यतो वै चराचरम् ग. शो. ४।८

यतो हरिं द्रावयति तच्छ्रीचूर्णं
श्रियावधृतं आदित्यवर्णं
श्रीफले धारयेत् कात्याय. १

यत्कठिनं सा पृथिवी, यद्द्रवं ता
आपः, (तदापो) यदुष्णं
तत्तेजः, यत्सञ्चरति स वायुः,
यत्सुषिरं तदाकाशमित्युच्यते
[गर्भो. १+ शारीरको. १

यत्करोषि यदश्नासि भ. गी. ९।२७

यत्कर्म कुरुते तदभिसम्पद्यते बृह. ४।४।५

यत्कर्मणाऽत्यरीरिचं यद्वा
न्यूनमिहाकरम् बृ. उ. ६।४।२४

यत्कर्मिणो न प्रवेदयन्ति रागात्ते-
नातुराः क्षीणलोकाश्च्यवन्ते मुण्ड. १।२।९

यत्कल्याणं जिघ्रति तदात्मने
ते विदुः बृह. १।३।३

यत्कल्याणं पश्यति तदात्मने
ते विदुः बृह. १।३।४

यत्कल्याणं वदति तदात्मने ते विदुः बृह. १।३।२

यत् कल्याणं शृणोति तदात्मने ,, बृह. १।३।५

यत्कल्याणं सङ्कल्पयति तदात्मने ,, बृह. १।३।६

यत्कामो भवति य एवं वेद बृ. जा. १।३

यत्किञ्च दुरितं मयि । इदमहं
मामममृतयोनौ सूर्ये (सत्ये)
ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा महाना. ११।३,४

यत्किञ्च प्रजाः साधु कुर्वन्ति,
यस्तद्वेद, यत्स वेद स मयैत-
दुक्त इति छांदो. ४।१।४,६

यत्किञ्च वाचो हुमिति स हिङ्कारो
यत्प्रेतिसप्रस्तावोयदेतिसआदिः छांदो. २।८।१

यत्किञ्च विजिज्ञास्यं मनसस्तद्रूपं बृह. १।५।९

यत्किञ्च विज्ञातं वाचस्तद्रूपम् बृह. १।५।८

यत्किञ्चाविज्ञातं प्राणस्य तद्रूपम् बृह. १।५।१०

यत्किञ्चिदपि सङ्कल्पस्तापत्रय-
मितीरितम ते. बिं. ५।९७

यत्किञ्चिदपि हीनोऽस्मि मैत्रे. ३।१७

यत्किञ्चिदिदमा श्वभ्य
आ शकुनिभ्य इति... छांदो. ५।२।१

यत्किञ्चिद्दृश्यते लोके... तत्सर्व-
मसदेव हि ते. बिं. ६।५२

यत्किञ्चिद्यन्न किञ्चिच्च सर्वं
चिन्मयमेव हि ते. बिं. २।२७

(अथ) यत्किञ्चेदमार्द्रं तद्रेतसो-
ऽसृजत तदु सोमः बृह. १।४।६

यत्किञ्चेदं प्राणिजङ्गमं च पतत्रि च २ ऐत. ५।३

यत्कुमारी मन्द्रयते यद्योषिद्यत्
पतिव्रता । अरिष्टं यत्किञ्च
क्रियते अग्निस्तदनुवेधति अरुणो. ५

यत्कुसीदमप्रतीतं मयेह येन
यमस्य निधिनाचरामि हि सद्वै. ४

यत्कृत्वा देवयानं वा पन्थानं
प्रतिपद्यन्ते । पितृयाणं वापि
न ऋषेर्वचः श्रुतम् बृह. ६।२।२

यत्केवलं ज्ञानगम्यम् (ब्रह्म) शांडिल्यो. २।१।३

यत्क्रतुर्भवति तत्कर्म कुरुते यत्कर्म
कुरुते तदभिसम्पद्यते बृह. ४।४।५

यत्खलु साधु तत्सामेत्याचक्षते छांदो. २।१।१

यत्तच्छान्तमजरममृतमभयं परम् प्रश्नो. ५।७
यत्तज्ज्ञानं मतं मम भ. गी. १३।२
यत्तत्पुरुषं प्रोक्तं वायुमण्डल-
संवृतम्। पञ्चाग्निना समायुक्तं... पञ्चब्र. १०
यत्तत्तामसमुच्यते भ. गी. १८।२५
यत्तत्त्वं तदसौ स्थितः(आत्मा ब्रह्म) अ.पू. ३।२२,२३
यत्तत्त्रिगुणमव्यक्तं नित्यं सदसदा-
त्मकम्। प्रधानं प्रकृतिं प्राहु-
रविशेषं विशेषवत् भवसं. २।१३
यत्तत्पदं पञ्चपदं तदेव स वासु-
देवो न यतोऽन्यदस्ति गो. पू. ४।३
यत्तत्सत्यं विज्ञानमानन्दं (ब्रह्म) म. र. १४।११
यत्तत्सात्त्विकमुच्यते भ. गी. १८।२३
(अथ) यत्तदजायत सोऽसा-
वादित्यः छांदो. ३।१९।२
यत्तदग्रेऽमृतोपमम् भ. गी. १८।३८
यत्तदग्रे विषमिव भ. गी. १८।३७
यत्तदद्रेश्यमग्राह्यमगोत्रंरूपवर्जितम् रुद्रहृ. ३१
यत्तदद्रेश्यमग्राह्यमगोत्रमवर्णमचक्षुः-
श्रोत्रं तदपाणिपादं...तद्भूतयोनिं
परिपश्यन्ति धीराः मुण्ड. १।६
यत्तदव्यक्तमजरमचिन्त्यमज-
मव्ययम् भवसं. ३।३
यत्तन्नस्तत्पञ्चमस्य, यत्सिंहः प्रचो-
दयादिति तत् षष्ठस्य नृ. षट्च. ५
यत्तपस्यसि कौन्तेय भ. गी. ९।२७
(अथ) यत्तपोदानमार्जवमहिंसा
सत्यवचनमिति वा अस्य
दक्षिणाः छांदो. ३।१७।४
यत्तप्यथा बहुधा मे पुराचित्तन्नु भुवे-
ऽहमुरणोबोभुवे। ऋतस्य पन्था-
मसि हि प्रपन्नोऽयसे स मे
सत्यमिदेकमेहि वा. मं. २२
यत्तत्सात्त्विकमुच्यते भ. गी. १८।२३
यत्तस्य ज्योतिरिव सम्पद्यती-
त्यतस्तद्ब्रावमचिरेणैति मैत्रा. ६।२७
यत्तस्य पीठं हैरण्याष्टपलाशमम्बुजं गो. पू. ३।१
यत्तानि तु मुग्धतरमुनिशब्दवाच्यैः
जीवन्मुक्तैः रचितानीतिमन्यन्ते स्वसंवे. १

यत्तारं तत्सूक्ष्मं यत्सूक्ष्मं तच्छुक्लं
यच्छुक्लं तद्वैद्युतं यद्वैद्युतं
तत्परं ब्रह्म [अ.शिरः.३।४+ बटुको. १९
यत्तासां दिशामन्तस्तद्रमयांचकार
(मा. पा.) बृ. उ. १।३।१०
यत्तु कामेप्सुना कर्म भ. गी. १८।२४
यत्तु कृत्स्नवदेकस्मिन् भ. गी. १८।२२
यत्तु चञ्चलवाहीनं तन्मनो-
ऽमृतमुच्यते महो. ४।१०१
यत्तु नो दृश्यते किञ्चिद्यन्नु किञ्चि-
दिव स्थितम्। मनः षष्ठेन्द्रिया-
तीतं तन्मयो भव वै मुने अ. पू. १।२१
यत्तु पौरुषयत्नेन कृतं तन्मध्यमं
भवेत् (रुद्राक्षच्छिद्रं) रु. जा. १३
यत्तु प्रत्युपकारार्थं भ. गी. १७।२१
यत्तुर्योङ्काराग्रपरास्थिरभूमिवरा-
सनम्। प्रतियोगिविनिर्मुक्तं
तुर्यतुर्यमहं महः नृ. पू. शीर्षकं
यत्तु होतर्गायत्रीं कथं हलीभूतो
वहसीति गायत्र्यु. ५
(अथ) यत्तृतीयममृतं तदादित्या
उपजीवन्ति वरुणेन मुखेन न
वै देवा अश्नन्ति छांदो. ३।८।१
यत्तृतीयं तच्छिखायां, यच्चतुर्थं
तत्सर्वेष्वङ्गेषु नृ. षट्च. ७
यत्तृतीयं तद्बाह्यं वलयं भवति नृ. षट्च. ३
यत्ते कश्चिदब्रवीत्तच्छृणवामेति बृह. ४।१।२
यत्ते रूपं कल्याणतमं तत्ते पश्यामि बृह. ५।१५।१
यत्तेसुसीमंहृदयमधिचंद्रमसिश्रितम् कौ. त. २।८
यत्ते सुसीमे हृदये हितमन्तः
प्रजापतौ। मन्येऽहंमांतद्विद्वांसं
माहं पौत्रमघं रुदम् कौ. त. २।१०
यत्तेऽहं प्रीयमाणाय भ. गी. १०।१
यत्त्वयोक्तं वचस्तेन भ. गी. ११।१
यत्पञ्चमं तत्सर्वेषु... यत् षष्ठं
तत्सर्वेषु देशेषु नृ. षट्च. ७
(अथ) यत्पञ्चमममृतं तत्साध्या
उपजीवन्ति ब्रह्मणा मुखेन न
वै देवा अश्नन्ति छांदो. ३।१०।१

यत्पदं विमलमद्वयं शिवं तत्सदा-
  हमिति मौनमाश्रय — वराहो. ३।६

यत्परं तेजस्त्वन्नेवाऽभिहितमग्ना
  आदित्ये प्राण एतद्वाव त-
  त्स्वरूपं नभसः खेऽन्तर्भूतस्य
  यदोमित्येवदक्षरम् — मैत्रा. ७।११

यत्परं नापरं त्यजति स
  जाग्रदभिधीयते — ब्रह्मो. १

यत्परं ब्रह्म स एकः, य एकः स
  रुद्रः, यो रुद्रः स ईशानः...स
  भगवान्महेश्वरः [अ.शिरः.३।४+ — बटुको. १९

यत्परं ब्रह्म सर्वात्मा विश्वस्यायतनं
  महत् । सूक्ष्मात्सूक्ष्मतरं नित्यं
  स त्वमेव त्वमेव तत् — कैव. १६

यत्परात्परतो ज्ञेयं तन्मे मनः शिव-
  सङ्कल्पमस्तु — २ शिवसं. १७

(अथ) यत्पशुभ्यस्तृणोदकं
  विन्दति तेन पशूनां (लोकः) — बृह. १।४।१६

यत्पश्यति तु तत्सर्वं ब्रह्म पश्यन्स-
  माहितः । प्रत्याहारो भवेदेष
  ब्रह्मविद्भिः पुरोदितः — जा. द. ७।२

यत्पश्यमानमात्माभिजुषाणमन्तः..
  सुषुप्त्यानभिगम्यमानाय स्वाहा — पारमा. १।८

यत्पादाम्बुरुहद्वन्द्वं मृग्यते विष्णुना
  सह । स्तुत्वा स्तुत्यं महेशान-
  मवाङ्मनसगोचरम् — शरभो. १७

यत्पितृभ्यो निपृणाति यत्प्रजा-
  मिच्छते तेन पितृणां (लोकः) — बृह. १।४।१६

यत्पितृभ्यः स्वधा करोत्यप्यपस्त-
  त्पितृयज्ञः सन्तिष्ठते — सुहवै. १४

यत्पिबति तदस्य सोमपानम्
  (शारीरयज्ञस्य) — महाना. १८।१

यत्पुण्डरीकं पुरमध्यसंस्थम् ।
  तत्रापि दहं गगनं विशोकस्त-
  स्मिन्यदन्तस्तदुपासितव्यम् — महाना. ८।१६

यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यक-
  ल्पयन् [ऋ.अ.८।४।१९ — =मं. १०।९०।११+
  [वा. सं. ३१।१०+पु.सू.११ — चित्सु. १२।५

यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत
  [ऋ. अ. ८।४।१८।६= — मं. १०।९०।६+
  [वा. सं. ३१।१४+पु.सू.१६ — चित्सु. १२।३

यत्पुरुषेणेत्यनया सृष्टियज्ञः समी-
  रितः । अनेनैव च मन्त्रेण
  मोक्षश्च समुदाहृतः — मुद्गलो. १।६

यत्पूर्णानन्दैकबोधस्तद्ब्रह्मैवाहम-
  स्मीति कृतकृत्यो भवति — प. हं. ९

यत्पृथिव्या५ रजस्वमान्तरिक्षे
  विरोदसी । इमा५स्तदापो
  वरुणः पुनात्वघमर्षणः — महाना. ६।४

यत्पौर्णमास्ये तत्पौर्णमास्यम् — कठरु. ३

यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्यो-
  तिरन्तरमृतं प्रजासु । यस्मान्न
  ऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे
  मनः... [१ शिवसं. ३+ — २ शि. सं. ४

यत्प्रत्यक्षं तद्दे इति — शौनको. ४।७

यत्प्रथमं तच्चतुररं यद्द्वितीयं तच्चतु-
  ररं यत्तृतीयं तदष्टारं यच्चतुर्थं
  तत्पञ्चारं यत्पञ्चमं तत्पञ्चारं
  यच्छष्ठंतदष्टारं तदेतानि षडेव
  नारसिंहानि चक्राणि भवन्ति — नृ. षट्च. १

यत्प्रथमं तदाचक्रं यद्द्वितीयं तत्सु-
  चक्रं यत्तृतीयं तन्महाचक्रं
  ...तदेतानि षडेव नार-
  सिंहानि चक्राणि भवन्ति — नृ. षट्च. २

यत्प्रथमं तदान्तरवलयं भवति ।
  यद्द्वितीयं तन्मध्यमं वलयं
  ...तदेतानि त्रीण्येव वलयानि
  भवन्ति — नृ. षट्च. ३

यत्प्रथमं तद्धृदये, यद्द्वितीयं
  तच्छिरसि, यत्तृतीयं तच्छि-
  खायां, यच्चतुर्थं तत्सर्वेष्वङ्गेषु
  यत्पञ्चमं तत्सर्वेषु यत् षष्ठं
  तत्सर्वेषु देशेषु — नृ. षट्च. ५

(सहोवाच-) यत्प्रथमं नाम्यकीर्तयो
  नामग्राहमथ नानुवत्स्य इति — शौनको. ३।५

(अथ) यत्प्रथमास्तमिते
  तन्निधनम् — छांदो. २।९।८

(अथ) यत्प्रथमोदिते स प्रस्तावः छान्दो. २।९।३
यत्प्रदक्षिणं प्रक्रमन्ति तेन पाप्मान-
मवधुन्वंति सहवै. २
यत्प्रपदाभ्यां प्रापद्यत ब्रह्मेमं पुरुषं
तस्मात्प्रपदे... १ ऐत. १।४।१
यत्प्रयन्त्यभिसंविशन्ति, तद्विजि-
ज्ञासस्व, तद्ब्रह्मेति तैत्ति. ३।१
यत्प्रयन्त्यभिसंविशन्ति, तं मामेव
विदित्वोपासीत भस्मजा. २।५
(अथ) यत्प्रशश्वत्तुः कर्म हैव
तत्प्रशश्वत्तुः पुण्यो वै पुण्येन
कर्मणा भवति पापः पापेन बृह. ३।२।१३
यत्प्राक्सवनेभ्यः सैकाविधा
त्रीणि सवनानि यदूर्ध्वं
सा पञ्चमी १ ऐत. ३।३।४
यत्प्राक्तृचाशीतिभ्यः सैकविधा १ऐत. ३।४।३
यत्प्राणेन न प्राणिति येन प्राणः
प्रणीयते । तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि
नेदं यदिदमुपासते केनो. १।९
यत्प्राणैः प्रतितिष्ठसि (मा.पा.) प्रश्नो. २।७
यत्प्रातरनुवाको यत्प्रउगं यदाज्यं
यन्मरुत्वतीयमिति छाग. २।२
यत्प्रातर्मध्यन्दिनं सायं च तानि
सवनानि महाना. १८।१
यत्प्रातः सोऽयं प्रातः (होमः) कठरु. ३
यत्प्रियमानन्दं तदेतत्सर्वाकारा
महात्रिपुरसुन्दरी बह्वृचो. ३
यत्र कालमकालं वा निश्चयः
संशयो नहि ते. बिं. ५।१४
यत्र काले त्वनावृत्तिः भ. गी. ८।२३
यत्र कुण्डलिनी नाम पराशक्तिः
प्रतिष्ठिता [यो. शि.९।६+ वराहो. ५।५१
यत्र कुत्र स्थितस्य शिरसि व्योम-
ज्योतिर्दृष्टं चेत्स तु योगी भवति अद्वयतां. ३
यत्र कुत्रापि म्रियते देहान्ते देवः
परमं ब्रह्म तारकं व्याचष्टे नृ. पू. १।७
यत्र कुत्रापि वा काश्यां मरणे स
महेश्वरः । जन्तोर्दक्षिणकर्णे तु
मत्तारं समुपादिशेत् मुक्तिको. १।२७
यत्र कुत्रापि वा नादे लगति प्रथमं
मनः । तत्रतत्र स्थिरीभूत्वा
तेन सार्धं विलीयते ना. बिं. ४८
यत्र क्व चार्या वाचो भाषन्ते
विदुरेनं तत्र ३ ऐत. २।५।३
यत्र क्व चैति तदेव प्रतितिष्ठत्येवं
विद्वान् बृह. १।२।३
यत्र क्वापि स्थितं च यत्तन्नहि धार्य
संस्कारसहितं धार्यम् (भस्म) बृ. जा. ३।१
यत्र गत्वा बाम्नि लयं यान्ति
योगीन्द्राः सामर. ५५
यत्र गत्वा न निवर्तन्ते योगिनः
(तत्परमं पदं) [नृ.पू.५।१६+ ना. प. ९।२२
यत्र गुरुस्तत्र शिवः । शिवगुरुस्व-
रूपो महेश्वरः रुद्रोप. ३
यत्र चतुर्धा मुक्तयः सेव्यमाना
आसते सामर. ९२
यत्र चन्द्रस्तन्नक्षत्राणि यत्र वा
नक्षत्राणि स चन्द्रमास्ते द्वे
योनिस्तदेकं मिथुनम् साविञ्यु. ७
यत्र च मथुरा गोकुलं द्वारका
वैकुण्ठपुरी श्वेतपुरी रामपुरी
यमपुरी नरसिंहपुरी नरनारा-
यणपुरी कुबेरपुरी गणेशपुरी
शक्रपुरी एता देवतास्तिष्ठन्ति राधोप. ४।१
यत्र चिन्मात्रकलना यात्यपह्नव-
मञ्जसा । तच्चिन्मात्रमखण्डैक-
रसं ब्रह्म भवाम्यहम् ते. बिं. शीर्षक
यत्रैवात्मनाऽऽत्मानं [यो.शि.३।१४+ भ.गी.६।२०
यत्र जाग्रति शुभाशुभं निरुक्त-
मस्य देवस्य...परापरं ब्रह्म ब्रह्मो. १
यत्र जीवन्ति मूढास्तु तत्रासौ
मृत एव वै (योगी) यो. शि.१।४६
यत्र ज्योतिरजस्रं यस्मिँल्लोके-
ऽभ्यर्हितं आ. प्र. १
यत्र तु व्यञ्जनवन्तः प्रयुञ्ज्येरन्
क्षोधुकात्रव्या इनावप्रजसा-
वुद्गातृयजमानौ स्याताम् संहितो. २।३

(अथ) यत्त्रिगुणं चतुरशीति-
लक्षयोनिपरिणतं भूतत्रिगुण-
मेतद्वै नानात्वस्य रूपम् मैत्रे. ३।३
यत्र त्वस्य सर्वमात्मैवाभूत्तत्केन
कं पश्येत्... बृह. ४।५।१५
(अथ) यत्र देव इव राजेवाह-
मेवेद५ सर्वोऽस्मीति मन्येत
सोऽस्य परमो लोकः बृह. ४।३।२०
यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये
धामान्यभ्यैरयन्त महाना. २।५
(अथ) यत्र द्वैतीभूतं विज्ञानं
तत्र हि शृणोति पश्यति
जिघ्रति रसयते चैव स्पर्शयति
सर्वमात्मा जानीतेति मैत्रा. ६।७
यत्र धर्ममधर्मं वा शुद्धं वाऽशुद्ध-
मण्वपि ते. बिं. ५।१३
यत्र धर्मा न वर्तन्ते विवेकस्तत्र
नोच्यते अ. शां. ६०
यत्र न चन्द्रमा भाति, यत्र न
नक्षत्राणि भान्ति, यत्र नाग्नि-
र्दहति, यत्र न मृत्युः प्रविशति,
यत्र न दुःखं...परमं पदं. नृ. पू. ५।१६
यत्र न जरा न मृत्युर्न कालो न
भङ्गो न जयो न विवादो न
हिंसा न शान्तिर्न स्वप्न एवं
लीलाकामशरीरी स्वविनो-
दार्थं भक्तैः सहोत्कण्ठितैस्तत्र
क्रीडति कृष्णः राधोप. ४।२
यत्र न मोहो न दुःखं ग. शो. ५।६
यत्र न सूर्यस्तपति, यत्रनवायुर्वाति नृ. पू. ५।१६
यत्र नान्यत्पश्यति नान्यच्छृणोति
नान्यद्विजानाति स भूमा छांदो. ७।२४।१
यत्र नाभ्युदितं चित्तं तद्वै सुख-
मकृत्रिमम् अ. पू. ५।४५
यत्र नासन्न सद्रूपो नाहं नाप्यन-
हङ्कृतिः । केवलं क्षीणमनन
आस्तेऽद्वैतेऽतिनिर्भयः
[अक्षुप. ४१+ वराहो. ४।१७

यत्र निशितासिशतपातनमुत्पल-
ताडनवत्सोढव्यं... नावहेल-
नया भवितव्यमेवं दृढवैराग्या-
द्बोधो भवति महो. ४।२६
(अथापि) यत्र नील इवाग्निर्दृश्यते
यथा मयूरग्रीवा ३ ऐत. २।४।६
यत्र नृसिंहादयो देवताआवरणानि राधोप. ४।२
यत्र पुरुषस्तत्स्त्री यत्र वा स्त्री
स पुरुषस्ते द्वे योनिस्तदेकं
मिथुनम् सावित्र्यु. ९
यत्र पार्थो धनुर्धरः भ. गी. १८।७८
यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः चित्त्यु. १२।७
[+महावा.४+पु.सू.१६+ ऋ.अ. ८।४।१९=
[मं. १०।९०।१६+ वा. सं. ३१।१६
यत्र बिन्दुश्च नादश्च सोमसूर्याग्नि-
वायवः। इन्द्रियाणि च सर्वाणि
लयं गच्छंति सुव्रत यो. शि. ३।११
यत्र (विद्यायां) ब्रह्म प्रतिष्ठितम्,
विश्वेदेवाः प्रतिष्ठिताः, यस्तां
न वेद किमन्यैर्वेदैः करिष्यति अव्यक्तो. ३
यत्र ब्रह्माण्डानि कोटिशो विराज-
मानानि राजन्ते सामर. ५५
यत्र ब्रह्माण्डान्युत्पद्यन्ते लीयन्ते सामर. ५
यत्र ब्रह्मा पवमानेति षट् ३ ऐत. २।४।४
यत्र भार्गवी यमुना समुद्रममृत-
मयं वृन्दावनानि नीलपर्वत-
गोवर्धनसिंहासनं प्रासादो
मणिमण्टपो विमलादिषोडश-
चण्डिकागोप्यः राधोप. ४।२
(अथापि) यत्र भूमिं ज्वलंतीमिव
पश्येत तदप्येवमेव विद्यादिति
प्रत्यक्षदर्शनानि ३ ऐत. २।४।६
यत्र मनस्तद्वाग्यत्र वा वाक् तन्म-
नस्ते द्वे योनिस्तदेकं मिथुनम् सावित्र्यु. ८
यत्र मनसमर्थं वा विद्याऽविद्या न. ते. बिं. ५।१४
यत्र यज्ञस्तत्र छन्दांसि यत्र वा
छन्दांसि स यज्ञस्ते द्वे योनि-
स्तदेकं मिथुनम् सावित्र्यु. ५

यत्र यत्र धृतो वायुरङ्गे रोगादि-
दूषिते । धारणादेव मरुतस्त-
त्तदारोग्यमश्नुते त्रि. ब्रा. १२०
यत्र यत्र मनो याति तत्र तत्र परं
पदम् [पैङ्गलो. ४।२१+ सौभाग्य. २३
यत्र यत्र मनो याति ब्राह्मणस्तत्र
दर्शनात् । मनसा धारणं चैव
धारणा सा परा मता ते. बिं. १।३५
यत्र यत्र मनो याति न निवार्य
मनस्तदा । अवारितं क्षयं
याति वार्यमाणं तु वर्तते (वर्धते) अमन. २।७०
यत्र यत्र मृतो ज्ञानी येन वा केन
मृत्युना । यथा सर्वगतं व्योम
तत्र तत्र लयं गतः पैङ्गलो. ४।१३
यत्र योगेश्वरः कृष्णः भ. गी. १८।७८
यत्र रश्मिसोमौ न तपतः ग. शो. ५।६
यत्र रसावात्मानमुपसंहृत्याजूगुपत् शौनको. ४।५
यत्र लक्ष्मीर्जाम्बवती राधिका
विरजा चन्द्रावली सरस्वती
ललितावित्येवमिति राधोप. ४।१
यत्र लोका न लोका देवा न देवा
वेदा न वेदा यज्ञा न यज्ञा
माता न माता...एकमेव तत्परं
ब्रह्म विभाति निर्वाणम् ब्रह्मो. ३
यत्र वरुणस्तदापो यत्र वा आप-
स्तद्वरुणस्ते द्वे योनिस्तदेकं
मिथुनम् सावित्र्यु. २
यत्र वर्णा न वर्तन्ते विवेकस्तत्र
नोच्यते अ.शां. ६०
यत्र वा अस्य सर्वमात्मैवाभूत्.. बृह. २।४।१४
(अथ) यत्र वायुश्चारयत्युपैव
तत्र ज्योतीत्येवमेवैतत् बृह. ४।३।५
यत्र वाऽन्यदिव स्यात्तत्रान्योऽन्यत्
पश्येत् बृह. ४।३।३१
यत्र वा पितुस्तत्पुत्रस्यैतत्पुत्रं
भवति १ ऐत. १।८।१
यत्र वायुर्न प्राणिनवाति(न)भाति ग. शो. ५।६

यत्र वायुस्तदाकाशो यत्र वा आ-
काशस्तद्वायुस्ते द्वे योनिस्तदेकं
मिथुनम् सावित्र्यु. ३
यत्र विद्याविद्ये न विद्यामः गोपालो. १।१२
यत्र विराण्नृसिंहोऽवभासते तत्र
खलूपासते अव्यक्तो. ९
यत्र विश्वं भवत्येकनीडम् । यस्मि-
न्निदं सं च विचैति सर्वं स
ओतः प्रोतश्च विभुः प्रजासु महाना. २।३
यत्र वृक्षा आधिदैविका देवा एव
भवन्ति सामर. ६
यत्र वैकुंठेऽनेकशो भक्ता जयन्त-
कुमुदजयविजयगरुडाद्याः शतशः
पार्षदाः राजमाना भवन्ति सामर. १२
यत्र सङ्कल्पनं तत्र मतोऽस्तीत्यव-
गम्यताम् महो. ४।५२
यत्र सप्तावरणानि तेजोमयानि सामर. ५
यत्र समुद्रतीरे च निरन्तरं काम-
धेनुवृन्दम् राधोप. ४।२
यत्र सर्वमात्मैवाभूत्तत्र कुत्र वा
मनुते । कथं वा गच्छतीति गोपालो. १।१०
यत्र सुप्ता जना नित्यं प्रबुद्धस्तत्र
संयमी । प्रबुद्धा यत्र ते विद्वान्सु-
षुप्तिं याति योगिराट् याज्ञव. २९
यत्र सुप्तो न कञ्चन कामयते
तत्सुषुप्तम् श्री. वि. ता. ३।९
यत्र सुप्तो न कञ्चन कामं कामयते
न कञ्चन स्वप्नं पश्यति बृह. ४।३।१९
यत्र सुप्तो न कञ्चन कामं कामयते
.... स्वप्नं (स्वप्ने) पश्यति तत्सुषुप्तम् मांडू. ५
[गणेशो. १।३+नृ. पू. ४।२ रामो. २।३
यत्र सुप्तो न कञ्चन कामं कामयते
न कञ्चन स्वप्नं पश्यति
न तत्र देवा न देवलोका यज्ञा न.. सुबालो. ४।४
यत्र सुहार्दः सुकृतो मदन्ते विहाय
यत्र रोगं तन्वाः स्वायाम् सहवै. १०
यत्र स्तनयित्नुस्तद्विद्युद्यत्र वा
विद्युत्तत्र स्तनयित्नुस्ते द्वे
योनिस्तदेकं मिथुनम् सावित्र्यु. ५

यत्र ह कस्य पुत्रस्य तत्पितुः, यत्र
वा पितुस्तत्पुत्रस्य — १ ऐत. १।८।१

यत्र हि द्वैतमिव भवति तदितर
इतरं जिघ्रति — बृह. २।४।१४

यत्राग्निर्मृत्युर्न दहति (न) प्रविशति — ग. शो. ५।६

यत्राग्निस्तत्र पृथिवी यत्र वै पृथिवी
तत्राग्निस्ते द्वे योनिस्तदेकं
मिथुनम् — सावित्र्यु. १

यत्रात्मना सृष्टिलयौ जीवन्मुक्ति-
दशागतः। सहजः कुरुते योगं
सेयं निष्पत्तिभूमिका.. — वराहो. ५।७५

यत्रादित्यस्तद्द्यौ यत्र वा द्यौस्तदा-
दित्यस्ते द्वे योनिस्तदेकंमिथुनम् — सावित्र्यु. ६

यत्राद्वैतीभूतं विज्ञानं कार्यकारण-
कर्मनिर्मुक्तं निर्वचनमनौपम्यं
निरुपाख्यं किं तदवाच्यम् — मैत्रा. ६।७

यत्रान्तर्याम्यादिभेदस्तत्त्वतो नहि
युज्यते। निर्भेदं परमाद्वैतं स्व-
मात्रमवशिष्यते — अध्यात्मो. शीर्षकं

यत्रान्यत्पश्यत्यन्यच्छृणोत्यन्य-
द्विजानाति तदल्पम् — छांदो. ७।२४।१

यत्रापह्नवतां याति स्वाविद्यापद-
विभ्रमः। तमिपाद्नारायणाख्यं
स्वमात्रमवशिष्यते — त्रि.म.ना. शीर्षकं

यत्रामृतः स पुरुषो ह्यव्ययात्मा — मुण्ड. १।२।११

यत्रायं पुरुषो म्रियते उदस्मात्
प्राणाः क्रामन्त्याहो ३ नेति.. — बृह. ३।२।११

यत्रायं पुरुषो म्रियते किमेनं न
जहातीति नामेत्यनन्तं वै
नामानन्ता विश्वेदेवा अनन्त-
मेव स तेन लोकं जयति — बृह. ३।२।१२

यत्रायं पुरुषो रमते तत्रायं रतो
भवति — नामर. ५

यत्रायं मणिमानं त्वेति — बृ. उ. ४।२।३६

यत्रारे ब्राह्मणस्यान्वेषणा
तदेनमन्वेति — छांदो. ४।१।७

यत्रालक्ष्यालक्ष्यभावो विद्यते न
कदाचन। अविज्ञातस्यज्ञातस्य
निरालम्बं हरिं भजे — निरा. शीर्षकं

यत्रासंभिन्नतां याति स्वातिरिक्त-
भिदामतिः। संविन्मात्रं परं
ब्रह्म तत्स्वमात्रं विजृम्भते — स्कन्दो. शीर्षकं

यत्रासां दिशामन्तस्तत्तन्मयाचकार — बृह. ३।३।१०

यत्रासौ केशान्तो विवर्तते — तैत्ति. १।६।१

यत्रासौ संस्थितः कृष्णः स्त्रीभिः
शक्त्या समाहितः — गोपालो. २।२

यत्रास्तमितशायी स्यान्निरग्नि-
रनिकेतनः। यथालब्धोपजीवी
स्यान्मुनिर्दान्तो जितेन्द्रियः — ना. प. ५।२६

यत्रास्ति वासना क्षीणा तत्सुखं
न सिद्धये — अ. पू. ५।१६

यत्रास्ते च गुरुर्ब्रह्मन्दिव्ययोग-
प्रदायकः।... तेनोक्तः
सम्यगभ्यासं कुर्यादादरसंहितः — योगकु. २।१४

यत्रास्य पुरुषस्य मृतस्याग्निं
वागप्येति — बृह. ३।२।१३

यत्रैतत् पञ्चदशः सप्तदश
एकत्रिंश इति कास्य तद्यत् — छांदो. २।२४।१२

यत्रैतत्कर्णावपिगृह्य निनदमिव
नदथुरिवाग्नेरिव ज्वलत उपशृ-
णोति तदेतद्दृष्टं च श्रुतं चेत्यु-
पासीत, चक्षुष्यः श्रुतो भवति — छांदो. ३।१३।८

यत्रैतत्पुरुष आर्तो मरिष्यन्नाबल्यं
न्येत्यसंमोहं नैति तदाहु-
रुदक्रमीच्चित्तम् — कौ. उ. ३।२

(अथ) यत्रैतत्पुरुषः पिपासति
तेज एव तत्पीतं नयते — छान्दो. ६।८।५

यत्रैतत्पुरुषः सुप्तः स्वप्नं न कञ्चन
पश्यत्यथास्मिन्प्राण एवैकधा
भवति — कौ. उ. ३।३

यत्रैतत्पुरुषः स्वपिति नाम सता
सोम्य नाम तदा संपन्नो भवति — छांदो. ६।८।१

यत्रैतत्पुरुषोऽशिशिष्यति नामाप
एव तदशितं नयन्ते — छांदो. ६।८।३

(अथ) यत्रैतदबलिमानं नीतो
भवति तमभित आसीना आहु-
र्जानासि मां जानासि मामिति — छांदो. ८।६।४

यत्रैतदभूयत एतस्मात् — कौ. उ. ४।१८

(अथ) यत्रैतदस्माच्छरीरादु-त्क्रामत्यथैतैरेव रश्मिभिरूर्ध्व-माक्रमते	छांदो. ८।६।५
यत्रैतदस्मिञ्छरीरे संस्पर्शेनोष्णि-मानं विजानाति तस्यैषाश्रुतिः	छांदो. ३।१३।८
यत्रैतदित्थेत्थेत्यभिपश्यति	आर्षे. ९।१
यत्रैतदूर्ध्वोच्छ्वासी भवति	बृह.४।३।३५,३८
यत्रैतद्देवास्तत्प्राप्य तदमृतो भवति, यदमृता देवाः	कौ. त. २।१४
(अथ) यत्रैतदाकाशमनु विषण्णं चक्षुः स चाक्षुषः पुरुषः	छांदो. ८।१२।४
(अथ) यत्रैनं घ्नन्तीव जिनंतीव हस्तीव विच्छाययति	बृह. ४।३।२०
यत्रैव जातं सकलेवरं मनस्तत्रैव लीनं कुरुते स योगात् । स एव मुक्तो हि निरहङ्कृतिःसुखी...	यो. शि. १।१२३
यत्रैवंविद् ह वा एषा ब्रह्मणा (मा.)	छां. उ.४।१७।९
यत्रैवंविद्ब्रह्मा भवति	छांदो.४।१७।८,९
यत्रैष एतद्बालाके पुरुषोऽशयिष्ट यत्रैतदभूयत एतदगाद्धिता नाम हृदयस्य नाड्यः	कौ. त. ४।१९
यत्रैव जगदाभासो दर्पणान्तः पुरं यथा । तद्ब्रह्माहमिति ज्ञात्वा कृतकृत्यो भवानघ	अध्यात्मो. १०
यत्रोपरमते चित्तं निरुद्धं योगसेवया । यत्र चैवात्मनात्मानं पश्यन्नात्मनि तुष्यति [यो. शि. ३।१४+	भ. गी. ६।२०
यत्रोपाकृते प्रातरनुवाकेन पुरा	छां. उ. ४।१६।४
यत्सकलोकरक्षणचक्रं यन्माया-त्मा तच्चतुर्थस्य	नृ. पदृव. ६
यत्सकृदुपस्पृशति तेन सामानि... प्रीणाति	षड्वं. १५
(अथ) यत्सङ्गववेलाया-स आदि-त्यस्तदस्यवयांस्यन्वायत्तानि	छान्दो. २।९।४
यत्सञ्चरति स वायुः [गर्भो.१+	शारीरको. १
यत्सञ्चरत्युपविशत्युत्तिष्ठते च स प्रवर्ग्यः	महाना. १८।१
यत्सत्यं ब्रह्म तद्विस्मृतं नृणाम्	महो. ४।१२२
यत्सत्यं तदुपास्यताम्	पैङ्गलो. ४।१७
यत्सत्यं वा विष्णुरयोगाः सूर्यो गौर्वा विष्णुर्विशत् विश्वं, विश्वं सन्दधानः तद्विश्वं विष्णवे विश्व-रूपाय स्वाहा	पारमा. ५।५
यत्सत्यं विज्ञानमानन्दं निष्क्रियं निरञ्जनं सर्वगतं सुसूक्ष्मं सर्वतोमुखमनिर्देश्यममृतमस्ति तदिदं निष्कलं रूपम्	शांडिल्यो. ३।२
यत्सत्स्वसुभयोरनुगोप्ता तत्सत्यं सत्यपदाय सत्याय स्वाहा	पारमा. ४।९
(अथ) यत्सत्त्रायणमित्याचक्षते ब्रह्मचर्यमेव तद्ब्रह्मचर्येण ह्येव सत आत्मनस्त्राणं विन्दते	छान्दो. ८।५।२
यत्सप्तभूमिकाविद्यावेद्यानन्दकले-वरम् । विकलेवरकैवल्यं राम-चन्द्रपदं भजे	अक्ष्यु. शीर्षक
यत्सप्तान्नानि मेधया तपसाऽजन-यत्पितेति मेधया हि तपसा जनयत्पितैकमस्य साधारणमि-तीदमेवास्य तत्साधारणमन्नं यदिदमद्यते	बृह. १।५।२
यत्सप्तान्नानि मेधया तपसाऽजन-यत्पिता । एकमस्य साधारणं द्वे देवानभाजयत् । त्रीण्यात्मने-ऽकुरुत पशुभ्य एकं प्रायच्छत्	बृह. १।५।१
यत्समत्वं तयोरत्र जीवात्मपरमा-त्मनोः...समाधिरभिधीयते	सौभाग्य. २०
यत्समाधौ परं ज्योतिरनन्तं विश्वतोमुखम् । तस्मिन्दृष्टे क्रियाकर्म यातायातो न विद्यते	यो. चू. ११३
यत्समूलमावृहेयुर्वृक्षं न पुनराभवेत्	बृह. ३।९।३३
(अथ) यत्समृद्धमिदं तस्यान्नं	मैत्रा. ६।३६
(अथ) यत्सम्प्रति मध्यन्दिने स उद्गीथस्तदस्य देवा अन्वायत्ताः	छान्दो. २।९।५
यत्सस्मितमनु संयन्ति प्राणिन-स्तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु	२ शिवसं. ३
यत्सर्वनिष्ठमजरं समस्तं	पारमा. ३।८
यत्सर्वस्य सोमोऽद्भुमेव जनिता विश्वाविको वहो महर्षिः	महाना. २।५

(अथ) यत्रैतदस्माच्छरीरादु-
क्रामत्यथैतैरेव रश्मिभिरूर्ध्व-
माक्रमते छांदो. ८।६।५
यत्रैतदस्मिञ्छरीरे संस्पर्शेनोष्णि-
मानं विजानाति तस्यैषाश्रुतिः छांदो. ३।१३।८
यत्रैतदित्थेत्थेत्यभिपश्यति आर्षे. ९।१
यत्रैतदूर्ध्वोच्छ्वासी भवति बृह.४।३।३५,३८
यत्रैतद्देवास्तत्प्राप्य तदमृतो
भवति, यदमृता देवाः कौ. त. २।१४
(अथ) यत्रैतदाकाशमनु विषण्णं
चक्षुः स चाक्षुषः पुरुषः छांदो. ८।१२।४
(अथ) यत्रैनं घ्नन्तीव जिनंतीव
हस्तीव विच्छाययति बृह. ४।३।२०
यत्रैव जातं सकलेवरं मनस्तत्रैव
लीनं कुरुते स योगात् । स
एव मुक्तोहिनिरहङ्कृतिःसुखी.. यो. शि. १।१२३
यत्रैवंविद् इहास्पृष्टा ब्रह्मणा (मा.) छां. उ.४।१७।९
यत्रैवंविद्ब्रह्मा भवति छांदो.४।१७।८,९
यत्रैष एतद्बालाके पुरुषोऽशयिष्ट
यत्रैतदभूयत एतद्गाद्धिता
नाम हृदयस्य नाड्यः कौ. त. ४।१९
यत्रैव जगदाभासो दर्पणान्तः पुरं
यथा । तद्ब्रह्माहमिति ज्ञात्वा
कृतकृत्यो भवानघ अध्यात्मो. १०
यत्रोपरमतेचित्तं निरुद्धंयोगसेवया ।
यत्रचैवात्मनात्मानंपश्यन्नात्मनि
तुष्यति [यो. शि. ३।१४+ भ. गी. ६।२०
यत्रोपाकृते प्रातरनुवाकेन पुरा छां. उ. ४।१६।४
यत्सकललोकरक्षणचक्रं यन्माया-
त्मा तच्चतुर्थस्य नृ. षट्च. ६
यत्सकृदुपस्पृशति तेन सामानि...
प्रीणाति ब्रह्वै. १५
(अथ) यत्सङ्गववेलायां स आदि-
त्यस्तदस्यवयांस्यन्वायत्तानि छान्दो. २।९।४
यत्सञ्चरति स वायुः [गर्भो. १+ शारीरको. १
यत्सञ्चरत्युपविशत्युत्तिष्ठते
च स प्रवर्ग्यः महाना. १८।१
यत्सत्यं ब्रह्म तद्विस्मृतं नृणाम् महो. ४।१२२
यत्सत्यं तदुपास्यताम् पैङ्गलो. ४।१७

यत्सत्यं वा विष्णुरुद्योगः सूर्यो
गौर्वा विष्णुर्विंशत् विश्वं, विश्वं
सन्दधानः तद्विश्वं विष्णवे विश्व-
रूपाय स्वाहा पारमा. ५।५
यत्सत्यं विज्ञानमानन्दं निष्क्रियं
निरञ्जनं सर्वगतं सुसूक्ष्मं
सर्वतोमुखमनिर्देश्यममृतमस्ति
तदिदं निष्कलं रूपम् शांडिल्यो. ३।२
यत्सत्त्वमुभयोरनुगोप्ता तत्सत्यं
सत्यपदाय सत्याय स्वाहा पारमा. ४।९
(अथ) यत्सत्रायणमित्याचक्षते
ब्रह्मचर्यमेव तद्ब्रह्मचर्येण ह्येव
सत आत्मनस्त्राणं विन्दते छान्दो. ८।५।२
यत्सप्तभूमिकाविद्यावेद्यानन्दकले-
वरम् । विकलेवरकैवल्यं राम-
चन्द्रपदं भजे अक्ष्यु. शीर्षके
यत्सप्तान्नानि मेधया तपसाऽजन-
यत्पितेति मेधया हि तपसा
जनयत्पितैकमस्य साधारणमि-
तीदमेवास्य तत्साधारणमन्नं
यदिदमद्यते बृह. १।५।२
यत्सप्तान्नानि मेधया तपसाऽजन-
यत्पिता । एकमस्य साधारणं द्वे
देवानभाजयत् । त्रीण्यात्मने-
ऽकुरुत पशुभ्य एकं प्रायच्छत् बृह. १।५।१
यत्समत्वं तयोरत्र जीवात्मपरमा-
त्मनोः...समाधिरभिधीयते सौभाग्य. २०
यत्समाधौ परं ज्योतिरनन्तं
विश्वतोमुखम् । तस्मिन्दृष्टे
क्रियाकर्म यातायातो नविद्यते यो. चू. ११३
यत्समूलमावृहेयुर्वृक्षं न पुनराभवेत् बृह. ३।९।३३
(अथ) यत्समृद्धमिदं तस्यान्नं मैत्रा. ६।२६
(अथ) यत्सम्प्रति मध्यन्दिने स
उद्गीथस्तदस्य देवा अन्वायत्ताः छान्दो. २।९।५
यत्सम्मितमनु संयन्ति प्राणिन-
स्तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु २ शिवसं. २
यत्सर्वनिष्ठमजरं समस्तं पारमा. १।८
यत्सर्वस्य सोमोऽहमेव जनिता
विश्वाधिको रुद्रो महर्षिः भस्मजा. २।५

यत्सर्वंहृदयागारं यत्र सर्वं प्रतिष्ठितम् । वस्तुनो यन्निराधारं वासुदेवपदं भजे — वासुदे. शीर्षकं
यत्सर्वशास्त्रसिद्धान्तं यत्सर्वहृदयानुगम् — अ. पू. ३।२१
यत्सर्वं चाप्यसर्वं च यत्तत्त्वं तदसौ स्थितः — अ. पू. ३।२३
यत्सर्वं तद्ब्रह्म — पं. ब्र. १
यत्सर्वं परिपश्यतीति सौक्ष्म्यात् — सूर्यता. १।२
यत्सर्वं सर्वगं वस्तु यत्तत्त्वं तदसौ स्थितः — अ. पू. ३।२२
यत्सङ्गरमभिधावाम्याशाम् — सहवै. ९
यत्संवत्सरं वत्स्यथ अथ वेदिष्यथेति । ते ह संवत्सरमूषुः — छाग. ४।३
यत्साक्षादपरोक्षाद्ब्रह्म य आत्मा सर्वान्तरस्तं मे व्याचक्ष्व — बृह. ३।४।१
यत्साङ्ख्यैः प्राप्यते स्थानं — भ. गी. ५।५
यत्साधुभवतिसाधुबतेत्येवतदाहुः — छान्दो. २।१।३
यत्साम्पराये महति ब्रूहिनस्तत्... — कठो. १।२९
यत्सामानि सोम एभ्यः पवते... तदेवास्तर्पयति — सहवै. १४
यत्सामानि सोमाहुतिभिः... तदेवास्तर्पयति — सहवै. १४
यत्साम्यज्ञानकालाग्निस्वातिरिक्तास्तिताभ्रमम् । करोति भस्म निश्शेषं तद्ब्रह्मैवास्मि केवलम् — भस्मजा.शीर्षकं
यत्सायं प्रातरत्ति तत्सभिवम् — महाना. १८।१
यत्सारभूतं सकलं बरिश्री मोदप्रायेणानुभूतमनुविधं सूक्ष्मः — पारमा. ८।१
यत्सारस्वतं तत्तृतीयस्य, यस्य यत्कामं देवं तच्चतुर्थस्य — नृ. षट्च. ४
यत्सीमिन्द्रो अकरोदनीकैः — बा. मं. १०
यत्सुचक्रं यदिप्रयास्मा तद्द्वितीयस्य — नृ. षट्च. ६
यत्सुवर्णस्य द्यौः — छान्दो. ३।१९।२
(शरीरे) यत्सुषिरं तदाकाशम् [गर्भो. १+ — शारीरको. १
यत्सुषुप्तश्च जाग्रतश्चैनश्चकृम तस्यावयजनमसि स्वाहा — महाना. १४।२
यत्सूक्ष्मं तच्छुक्लं [बदुको. १९+ — अ. शिरः. ३।४
यत्स्वपन्तश्च जाग्रतश्चैनश्चकृम तस्यावयजनमसि स्वाहा — महाना. १४।२
यत्स्वयं प्राक्तनं कर्म पितामातेति तत्स्मृतम् — शिवो. ७।१०९
यत्स्वरूपज्ञानिनः सर्वमविदितं विदितं भवति । तत्सर्वं परमरहस्यं कथितम् — त्रि. म. ना. ८।६
यत्स्वाध्यायमधीयीतैकामप्यृचं यजुः साम वा तद्ब्रह्मयज्ञः सन्तिष्ठते — सहवै. १४
यथा कटकशब्दार्थः पृथग्भावो न काञ्चनात् । न हेमकटकात्तद्वज्जगच्छब्दार्थता परा — महो. ४।४६
यथा करी करेणैव पानीयं प्रपिबेत् सदा । सुषुम्ना वज्रजालेन पवमानं ग्रसेत्तथा — यो. शि. १।११७
(ते होचतुः) यथाऽकला अवदन्तो वाचा प्राणन्तः प्राणेन पश्यन्तश्चक्षुषा शृण्वन्तः श्रोत्रेण विद्वांसः — बृह. ६।१।८
यथाकर्म यथाविद्यं (स...प्रत्याजायते) — कौ. स. १।२
यथा कला अवदन्तः प्राणन्तः प्राणेन पश्यन्तश्चक्षुषा शृण्वन्तः श्रोत्रेण ध्यायन्तो मनसैवमिति प्रविवेश ह वाक् — छां. ५।१।८
यथाकामं प्रश्नान्पृच्छथ यदि विज्ञास्यामः सर्वं ह वो वक्ष्याम इति — प्रश्नो. १।२
(अतः) यथाकामं जपित्वा पश्येम शरदः शतमिन्द्र जीवेत्याशिषः प्रार्थयते — सन्ध्यो. २
यथा कायस्तथा सर्वं चित्तदृश्यमवस्तुकम् — अ. शा. २६
यथाकारी यथाचारी तथा भवति, साधुकारी साधुर्भवति, पापकारी पापो भवति — बृह. ४।४।५
यथाऽऽकाशस्तथा देह आकाशादपि निर्मलः — यो. शि. १।४२

यथाऽऽकाशस्थितो नित्यं अ. गी. ९।६
यथाकाशं समुद्दिश्य गच्छद्भिः
पथिकैः पथि । नानातीर्थानि
दृश्यन्ते नानामार्गास्तु सिद्धयः यो. शि. १।१५७
यथाऽऽकाशे द्विचन्द्रत्वं तद्वत्सत्ये
जगत्स्थितिः यो. शि. ४।१६
यथाऽऽकाशो घटाकाशो महाकाश
इतीरितः । तथा भ्रान्तैः (न्तै-)
द्विधा प्रोक्तो ह्यात्माजीवेश्वरा-
त्मना [अ. पू. ५।७७+ जा. द. १०।३
यथा काश्यो वा वैदेहो वोग्रपुत्र
उज्ज्यं धनुरधिज्यं कृत्वा द्वौ
बाणवन्तौ सपत्नातिव्याधिनौ
हस्ते कृत्वोपोत्तिष्ठेदेवमेवाहं
त्वाद्वाभ्यां प्रश्नाभ्यामुपोदस्थां बृह. ३।८।२
यथा कुमारको निष्काम आनन्द-
मभियाति । तथैव देवः स्वयं
आनन्दमभियाति परम. २
यथा कुमारो निष्काम आनन्द-
मुपयाति.. महो. १
यथा कुर्वन्ति भारत म. गी. ३।२५
यथा कूपःशतधारःसहस्रमारोऽक्षितः महाना. १५।१
यथा कृताय विजितायाधरेयाः
संयन्त्येवमेनं सर्वं
तदभिसमेति छां. ४।१।४,६
यथा केशः सहस्रधाभिन्न एव-
मस्यैताहिता नामनाड्योऽन्त-
र्हृदये प्रतिष्ठिता भवन्ति बृह. ४।२।३
यथा केशः सहस्रधा भिन्नस्तथा
हिता नाम नाड्यो भवन्ति सुबालो. ४।४
यथा केशः सहस्रधा भिन्नस्तावता-
ऽणिम्ना तिष्ठन्ति
(हिता नाम नाड्यः) बृह. ४।३।२०
यथा कोशस्तथा जीवो यथा
जीवस्तथा शिवः त्रि. ब्रा. १९
यथा क्रतुरस्मिँल्लोके पुरुषो भवति
तथेतः प्रेत्य भवति स क्रतुं
कुर्वीत छान्दो. ३।१४।१

यथाक्रमोऽयं परलोकस्थाने भवति
तमाक्रममाक्रम्योभयान्पाप्मन
आनन्दांश्च पश्यति बृह. ४।३।९
(ते होचतुः) यथा क्लीबा
अप्रजायमाना रेतसा.. बृह. ६।१।१२
यथाक्षणं यथाशास्त्रं यथादेशं
यथासुखम् । यथासम्भवस-
त्सङ्गमिमं मोक्षपथक्रमम् ॥
तावद्विचारयेत् प्राज्ञो
यावद्विश्रान्तिमात्मनि महो. ४।२९
यथा क्षारमयत्नेन प्राप्यते लवणं
स्वयम् । ब्रह्मज्ञान्यप्ययत्नेन
निर्वाणं मनसस्तथा अमन. १।२०
यथा क्षुरः क्षुरधानेऽवहितः
स्याद्विश्वम्भरो वा विश्वम्भर-
कुलाये तं न पश्यन्ति बृ. उ. १।४।७
यथा खलु सोम्येमास्तिस्रो
देवताः...(मा. पा.) छां. उ. ६।८।६
यथा खं श्येनमाश्रित्य याति
स्वमालयमेवं सुषुप्तो ब्रूते ब्रह्मो. १
यथा गङ्गा शिवसङ्गात्तथैव न सूतकं
वा नाप्यशुचित्वमेषाम् शि. शि. १०
यथागन्धर्वनगरंयथावारिमरुस्थले अ. पू. १।२०
यथा गुरुस्तथैवेशो यथैवेशस्तथा
गुरुः । पूजनीयो महाभक्त्या
न भेदो विद्यतेऽनयोः यो. शि. ५।५८
यथाऽग्निगर्भा पृथिवी यथा द्यौ-
रिन्द्रेण गर्भिणी । वायुर्दिशां
यथा गर्भ एवं गर्भं दधामि ते बृह. ६।४.२२
यथाऽग्निनाऽयःपिण्डो वाऽभिभूतः
कर्तृभिर्हन्यमानो नानात्व-
मुपैत्येवं वाव खल्वसौ भूतात्मा-
न्तःपुरुषेणाभिभूतो गुणै-
र्हन्यमानो नानात्वमुपैति मैत्रा. ३।३
यथाऽग्निर्दारुमध्यस्थो नोत्तिष्ठेन्मथनं
विना । विना चाभ्यासयोगेन
ज्ञानदीपस्तथा नहि
[यो. शि. ६।७६+ योगकुं. ३।१४

यथा देहान्तरप्राप्तेः कारणं भावना नृणाम् । विषयं ध्यायतः पुंसो विषये रमते मनः — यो. शि. ३।२४
यथा द्यौरिन्द्रेण गर्भिणी, वायुर्दिशां यथा गर्भ एवं गर्भ दधामि ते — बृह. ६।४।२२
यथाधिकारवाक्यसेरपूर्णदीक्षांलभेत् — गुह्यषोढा. १
यथाऽधीमहे स्वर्ग्या देवस९ हिता भवति — संहितो. १।१
यथा ध्यानेन वैराग्यमैश्वर्यं स्वस्य पूजनात् — रा. पू. १।५
यथा न जायते किञ्चिज्जायमानं समन्ततः — अद्वैत. २
यथा नदी जायते सागर एकोऽपि सागरप्रतिभासितः । तथा ब्रह्म सर्वान्तरात्मा मध्ये प्रकाशितम् — अद्वैतो. ३
यथा नदीनां बहवोऽम्बुवेगाः — भ. गी. ११।२८
यथा नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रायणाः समुद्रं प्राप्यास्तं...(मा.) — मुण्डको. ३।२।८
यथा नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रे गच्छन्त्यस्तं नामरूपे विहाय । तथा विद्वान्नामरूपाद्विमुक्तः परात्परं जगद्व्याप्युपैति — गुह्यका. ३८
यथा नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रेऽस्तं गच्छन्ति नामरूपे विहाय । तथा विद्वान्नामरूपाद्विमुक्तः परात्परं पुरुषमुपैति दिव्यम् — मुण्ड. ३।२।८
यथा नद्यः किङ्किणी कांस्यचक्रकभेकविः कृन्विका वृष्टिनिवाते.. — मैत्रा. ६।२२
(स होवाच) यथा नस्त्वं गौतम मापराधास्तव च पितामहाः — बृह. ६।२।८
यथाऽनादिस्सर्वप्रपञ्चो दृश्यते, नित्योऽनित्यो वेति संशय्येते — त्रि. म. ना. ३।२
यथाऽनादिसिद्धोऽयं जीवसङ्घः, तथा मायाऽप्यनादिसिद्धा भवति, सा त्रिविधा... — सामर. ९८
यथा नामी वाचकेन नाम्ना योऽभिमुखो भवेत् । तथा बीजात्मको मन्त्रो मन्त्रिणोऽभिमुखो भवेत् — रा. पू. ४।३
यथा नास्ति नभोवृक्षस्तथा नास्ति जगत्स्थितिः — यो. शि. ४।१९
यथा निरंकुशो हस्ती कामान्प्राप्य निवर्तते । अवारितं मनस्तद्वत् स्वयमेव विलीयते — अमन. २।७१
यथा निरिन्धनो वह्निः स्वयमेव प्रशाम्यति । ग्राह्याभावे मनः-प्राणो निश्चलज्ञानसंयुतः.. — २ अवधू. ६
यथा निरिन्धनो वह्निः स्वयमेव प्रशाम्यति । ग्राह्याभावे... — त्रि. ब्रा. २।१६३
यथा निरिन्धनो वह्निः स्वयोनावुपशाम्यति । तथा वृत्तिक्षयाच्चित्तं स्वयोनावुपशाम्यति [मैत्रा. ६।३४+ — मैत्रे. १।७
यथा निर्मितको जीवो जायते म्रियतेऽपि वा । तथा जीवा अमी सर्वे भवंति न भवंति च — अ. शां. ७०
यथा निर्वाणकाले तु दीपो दग्ध्वा लयं व्रजेत् । तथा सर्वाणि कर्माणि योगी दग्ध्वा लयं व्रजेत् — क्षुरिको. २३
यथा नु खलु सोम्येमास्तिस्रो देवताः पुरुषं प्राप्य त्रिवृत्त्रिवृदेकैका भवति तन्मे विजानीहीति — छांदो. ६।४।७
यथा नु खलु सोम्येमास्तिस्रो देवतास्त्रिवृत्त्रिवृदेकैका भवति तन्मे विजानीहि — छांदो. ६।३।४
यथाऽनुशासनं यं यमन्तमभिकामा भवन्ति यं जनपदं यं क्षेत्रभागं तं तमेवोपजीवन्ति — छांदो. ८।१।५
यथान्तरं न भेदाःस्युः शिवकेशवयोस्तथा । देहो देवालयः प्रोक्तः स जीवः केवलः शिवः — स्कन्दो. १०
(ते होचुः) यथा अन्धा अपश्यन्तश्चक्षुषा प्राणन्तः प्राणेन..विद्वा९सो मनसा प्रजायमाना रेतसैवमजीविष्मेति प्रविवेश ह चक्षुः — बृह. ६।१।९
यथाऽन्धा अपश्यन्तः प्राणन्तः प्राणेन वदन्तो वाचा शृण्वन्तः

यथा देहान्तरप्राप्तेः कारणं भावना नृणाम् । विषयं ध्यायतः पुंसो विषये रमते मनः — यो. शि. ३।२४
यथा द्यौरिन्द्रेण गर्भिणी, वायुर्दिशां यथा गर्भ एवं गर्भं दधामि ते — बृह. ६।४।२२
यथाधिकारवाक्यसेत्पूर्णदीक्षांलमेत् — गुह्यषोढा. १
यथाऽश्वीमहे स्वर्ग्या देवस॰ हिता भवति — संहितो. १।१
यथा ध्यानेन वैराग्यमैश्वर्य स्तस्य पूजनात् — रा. पू. १।५
यथा न जायते किञ्चिज्जायमानं समन्ततः — अद्वैत. २
यथा नदी जायते सागर एकोऽपि सागरप्रतिभासितः । तथा ब्रह्म सर्वान्तरात्मा मध्ये प्रकाशितम् — अद्वैतो. ३
यथा नदीनां बहवोऽम्बुवेगाः — भ. गी. ११।२८
यथा नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रायणाः समुद्रं प्राप्यास्तं...(मा.) — मुण्डको. ३।२।८
यथा नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रे गच्छन्त्यस्तं नामरूपे विहाय । तथा विद्वान्नामरूपाद्विमुक्तः परात्परं जगदम्बामुपैति — गुह्यका. ३८
यथा नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रेऽस्तं गच्छन्ति नामरूपे विहाय । तथा विद्वान्नामरूपाद्विमुक्तः परात्परं पुरुषमुपैति दिव्यम् — मुण्ड. ३।२।८
यथा नद्यः किङ्किणी कांस्यचक्रकमेकाभिः कन्विका वृष्टिनिवाते.. — मैत्रा. ६।२२
(सहोवाच) यथा नस्त्वं गौतम मापराधास्तव च पितामहाः — बृह. ६।२।८
यथाऽनादिस्सर्वप्रपञ्चो दृश्यते, नित्योऽनित्यो वेति संशय्येते — त्रि. म. ना. ३।२
यथाऽनादिससिद्धोऽयं जीवसङ्घः, तथा मायाऽप्यनादिसिद्धा भवति, सा त्रिविधा... — सामर. १८
यथा नामी वाचकेन नाम्ना योऽभिमुखो भवेत् । तथा बीजात्मको मन्त्रो मन्त्रिणोऽभिमुखो भवेत् — रा. पू. ४।२

यथा नास्ति नभोवृक्षस्तथा नास्ति जगत्स्थितिः — यो. शि. ४।१९
यथा निरंकुशो हस्ती कामान्प्राप्य निवर्तते । अवारितं मनस्तद्वत् स्वयमेव विलीयते — अमन. २।७१
यथा निरिन्धनो वह्निः स्वयमेव प्रशाम्यति । ग्राह्याभावे मनःप्राणो निश्चलज्ञानसंयुतः.. — २ अवधू. ६
यथा निरिन्धनो वह्निः स्वयमेव प्रशाम्यति । ग्राह्यभावे... — त्रि. ब्रा. २।१६२
यथा निरिन्धनो वह्निः स्वयोनावुपशाम्यति । तथा वृत्तिक्षयाच्चित्तं स्वयोनावुपशाम्यति [मैत्रा. ६।३४+ — मैत्रे. १।७
यथा निर्मितको जीवो जायते म्रियतेऽपि वा । तथा जीवा अमी सर्वे भवंति न भवंति च — म. शां. ७०
यथा निर्वाणकाले तु दीपो दग्ध्वा लयं व्रजेत् । तथा सर्वाणि कर्माणि योगी दग्ध्वा लयं व्रजेत् — क्षुरिको. २३
यथा नु खलु सोम्येमास्तिस्रो देवताः पुरुषं प्राप्य त्रिवृत्त्रिवृदेकैका भवति तन्मे विजानीहीति — छांदो. ६।५।७
यथा नु खलु सोम्येमास्तिस्रो देवतास्त्रिवृत्त्रिवृदेकैका भवति तन्मे विजानीहि — छांदो. ६।३।४
यथाऽनुशासनं यं यमन्तमभिकामा भवन्ति यं जनपदं यं क्षेत्रभागं तं तमेवोपजीवन्ति — छांदो. ८।१।५
यथान्तरं न भेदाःस्युः शिवकेशवयोस्तथा । देहो देवालयः प्रोक्तः स जीवः केवलः शिवः — स्कन्दो. १०
(ते होचुः) यथा अन्धा अपश्यन्तश्चक्षुषा प्राणन्तः प्राणेन..विद्वांसो मनसा प्रजायमाना रेतसैवमजीविष्मेति प्रविवेश ह चक्षुः — बृह. ६।१।९
यथाऽन्धा अपश्यन्तः प्राणन्तः प्राणेन वदन्तो वाचा शृण्वन्तः

यथा सिद्धरसस्पर्शात्ताम्रं भवति काञ्चनम् । गुरूपदेशश्रवणाच्छिष्यस्तत्त्वमयो भवेत् अमन. २।४६

यथाऽसिधारां कर्तेव हिताम्वक्रामे युवे युवे वा विह्वयिष्यामि ...एवममृतात्मानं जुगुप्सेत् महाना. ७।९

यथा सिंहो गजो व्याघ्रो भवेद्वश्यः शनैः शनैः । तथैव सेवितो वायुरन्यथा हन्ति साधकम् [यो. चू. ११८+ शाण्डि. १।७।६

यथा सिंहो मृगो वाऽपि नीयमानो व्यवस्थितः...परिचीयमानस्य तथा वायुर्वै विश्वतोमुखः योगो. ११

यथा सुदीप्तात्पावकाद्विस्फुलिङ्गाः सहस्रशः प्रभवन्ते सरूपाः । तथाऽक्षराद्विविधाः सोम्य भावाः प्रजायन्ते मुण्ड. २।१।१

यथा सुनिपुणः सम्यक्परदोषेक्षणे रतः । तथा चेन्निपुणः स्वेषु को न मुच्येत बन्धनात् वराहो. ३।२५

यथा सुप्तोत्थितः कश्चिद्विषयान् प्रतिपद्यते । जागर्त्येव ततो योगी योगनिद्राक्षये तथा अमन. २।६२

यथा सुहयः पड्वीशशंकून्संखिदेदेवमितरान्प्राणान्समखिदत् छां. उ. ५।१।१२

यथा सोमꣳराजानमाप्यायस्वापक्षीयस्वेत्येवमेनाꣳस्तत्र भक्षयन्ति बृह. ६।२।१६

यथा सोम्य पुरुषं गान्धारेभ्योऽभिनद्धाक्षमानीय तं ततोऽतिजने विसृजेत् छांदो. ६।१४।१

यथा सोम्य मधु मधुकृतो निस्तिष्ठन्ति नानात्ययानां वृक्षाणाꣳरसान्समवहारमेकताꣳरसं गमयन्ति छांदो. ६।९।१

यथा सोम्य महतोऽभ्याहितस्यैकमङ्गारं खद्योतमात्रं परिशिष्टं तं तृणैरुपसमाधाय प्रज्वलयेत्तेन ततोऽपि बहु दहेत् छांदो. ६।७।५

यथा सोम्यैकेन नखनिकृंतनेन सर्वं कार्ष्णायसं विज्ञातꣳस्याद्वाचारम्भणं... कृष्णायसमित्येव सत्यम् छांदो. ६।१।६

यथा सोम्यैकेन लोहमणिना सर्वं लोहमयं विज्ञातꣳस्याद्वाचारम्भणं...लोहमित्येव सत्यम् छांदो. ६।१।५

यथा सोम्यैकेन मृत्पिण्डेन सर्वं मृन्मयं विज्ञातꣳस्याद्वाचारम्भणं विकारो नामधेयं मृत्तिकेत्येव सत्यम् छांदो. ६।१।४

यथा सौक्ष्म्याच्चिदाभास्य आकाशो नोपलक्ष्यते । तथा निरंशश्चिद्भावः सर्वगोऽपि न लक्ष्यते महो. ५।९१

यथाऽसौ दिव्यादिव्यादित्य एवमिदं शिरसि चक्षुः ३ ऐतरे. १।२।२

यथाऽसौ द्यावापृथिव्यावन्तरेणाकाशः, तस्मिन्हास्मिन्नाकाशे प्राण आयत्तः ३ ऐत. १।२।२

यथा सौम्य महतोऽभ्याहितस्यैकोऽङ्गारखद्योतमात्रः परिशिष्टः स्यात्तेन ततोऽपि न बहु दहेत् छांदो. ६।७।३

यथा स्तेनो यथा भ्रूणहैवमेष भवति सहवै. १२

यथा स्त्रीपुमाꣳसौ सम्परिष्वक्तौ स इममेवात्मानं द्वेधाऽपातयत्ततः पतिश्च पत्नी चाभवतां बृह. १।४।३

यथा स्थितमिदं यस्य व्यवहारवतोऽपि च । अस्तं गतं स्थितं व्योम स जीवन्मुक्त उच्यते वराहो. ४।२१

यथाऽस्या उदरमेवममुष्या अम्भणं ३ ऐत. २।५।२

यथाऽस्यास्तनाय एवममुष्या अङ्कुलयः ३ ऐत. २।५।२

यथाऽस्याःशिर एवममुष्याः शिरः ३ ऐत. २।५।२

यथाऽस्याः स्पर्शा एवममुष्याः स्पर्शाः ३ ऐत. २।५।२

यथाऽस्याः स्वरा एवममुष्याः स्वराः ३ ऐत. २।५।२

यथाऽस्यै जिह्वैवममुष्यै वादनं ३ ऐत. २।५।२

यथा स्वच्छन्दतः प्राणो निपतत्याशु गच्छतः ।...परिचीयमानस्य तथा वायुर्वै विश्वतोमुखः योगो. ११

यथा स्वप्नमयो जीवः...तथा जीवा
अमी सर्वे — अ. शां. ६८
यथा स्वप्ने तथा पितृलोके — कठो. ६।५
यथा स्वप्ने द्वयाभासं चित्तं चलति
मायया । तथा जाग्रद्द्वयाभासं
चित्तं चलति मायया — अ. शां. ६१
यथा स्वप्ने द्वयाभासं स्पन्दते
मायया मनः । तथा जाग्र-
द्द्वयाभासं स्पन्दते मायया मनः — अद्वैत.२९
यथाऽहनि तथा रात्रौ । नास्य नक्तं
न (वा) दिवा [१सं.सो.१।३+ — कठ . १०
यथाऽहमन्धो न स्यां तथा कल्पय
कल्पय, कल्याणं कुरु कुरु — चाक्षुषो. २
यथाऽहमेषां नैकञ्चन वेद — छांदो. ५।३।५
यथा ह वै बहवः पशवो मनुष्यं
भुञ्ज्युरेवमेवैकः पुरुषो देवान्
भुनक्ति — बृह. १।४।१०
यथा ह वै पदेनानुविन्देदेवं कीर्तिं
श्लोकं विन्दते — बृह. १।४।७
यथा हि वै सरसि पद्मं तिष्ठति
तथा भूम्यां तिष्ठति — गोपालो. १६
यथा ह्यग्निः काष्ठेषु, तिलेषु तैल-
मिव तं विदित्वा मृत्युमत्येति — हंसो. ४
यथा ह्येवेयं शब्दवती तर्द्मवत्येव-
मसौ शब्दवती तर्द्मवती — ३ ऐत. २।५।२
यथा ह्येवेयं लोमशेन चर्मणा
पिहिता भवत्येवमसौ लोमशेन
चर्मणा पिहिता — ३ ऐत. २।५।२
यथा ह्येवेह प्रजा अन्वाविशन्ति...
तं तमेवोपजीवन्ति — छांदो. ८।१।५
यथेक्षुरससंव्याप्ता शर्करा वर्तते
तथा । अद्वयब्रह्मरूपेण व्याप्तो-
ऽहं वै जगत्त्रयम् — आ. प्र. १४
यथेच्छया वसेद्विद्वानात्मारामः
सदा मुनिः — कुण्डिको. २८
यथेच्छसि तथा कुरु — भ. गी. १८।६३
यथेतमाकाशमाकाशाद्वायुं वायु-
र्भूत्वा धूमो भवति — छांदो. ५।१०।५
यथेतमेत्य जघनेनाग्निमासीनो
वंशं जपति — बृह. ६।३।६
यथेन्द्रगोपो यथाऽग्न्यर्चिर्यथा पुण्ड-
रीकं...वा अस्य श्रीर्भवति — बृह. २।३।६
यथेमे दंशमशकादयस्तृणवन्नश्य-
तयोद्भूतप्रध्वंसिनः — मैत्रा. १।५
यथेयंनप्राक्त्वत्तःपुराविद्या ब्राह्मणा-
न्गच्छति तस्मादु सर्वेषु लोकेषु
क्षत्रियस्यैव प्रशासनमभूत् — छांदो. ५।३।७
यथेयं न प्राक् त्वत्तु पुरा विद्या
ब्राह्मणान्...(मा. पा.) — छां. उ. ५।३।७
यथेयं विद्येतः पूर्वं न कस्मिंश्चन
ब्राह्मण उवास तां त्वहं तुभ्यं
वक्ष्यामि — बृह. ६।२।८
यथेरिणे बीजमुप्तं नरेन्द्र नास्य
वप्ता लभते बीजभागम् । एवं
श्राद्धमप्रतिष्ठितं विनश्यति — इतिहा. २९
यथेष्टधारणा-(णं वा) द्वायो रनलस्य
प्रदीपनम् । नादाभिव्यक्तिरा-
रोग्यं जायते नाडिशोधनात्
[यो. चू. ९९+ — शाण्डि. १।७।८
यथेष्टधारणाद्वायोः सिद्ध्येत्केवल-
कुम्भकः । केवले कुम्भके सिद्धे
रेचपूरविवर्जिते । न तस्य दुर्लभं
किञ्चित्त्रिषु लोकेषु विद्यते — १ यो. त. ५०
यथेष्टमेव वर्तेत यद्वा योगी महेश्वरः।
अभ्यासभेदतो भेदः फलं तु
सममेव हि — १ यो. त. १११
यथेह क्षुधिता बाला मातरं पर्यु-
पासते । एवं सर्वाणि भूता-
न्यग्निहोत्रमुपासते — छांदो. ५।२४।५
यथैकस्मिन्घटाकाशे रजोधूमादिभि-
र्युते । न सर्वे संप्रयुज्यन्ते
तद्वज्जीवाः सुखादिभिः — अद्वैतो. ५
यथैतत्कूबरस्तक्ष्णापोज्झितो
नेङ्गते मनाक् । परित्यक्तो-
पमात्मानस्तद्वद्देहो विरोचते — छाग. ६।४
यथैतं काष्ठभारमानद्धमनुपश्या-
मस्तथैवावशो भूत्वः स्पन्दते — छाग. ६।१

यथैतावेदस्याष्टावुपनिषदोभवन्ति ...
यथैधांसि समिद्धोऽग्निः भ. गी. ४।३७
यथैवमवमन्यन्ते जनाः...तथा युक्तश्चरेद्योगी ना. प. ६।१०
यथैव खल्वयं भगवोऽस्मिञ्छरीरे साध्वलङ्कृते साध्वलंकृतो भवति...एवमेवायमस्मिन्नन्धेऽन्धो भवति छांदो. ८।९।१
यथैव तु महासिंहः कुञ्जरो वाऽथदुर्मदः...परिचीयमानः कालेन वशत्वं चैव गच्छति। परिचीयमानयोगस्य वशत्वं याति मारुतः योगो. ८
यथैव तु स्मोपसन्ना अथानसूयवो यथोपश्रद्धिन इति छाग. ३।५
यथैव तेन न गुरुर्भोजनीयस्तथैव चान्नं न भुनक्ति श्रुतं तत् शाट्याय. ३५
यथैव द्विविधा रज्जुर्ज्ञानिनोऽज्ञानिनोऽनिशम्। यथैव मृन्मयः कुम्भस्तद्वद्देहोऽपि चिन्मयः यो. शि. ४।२१
यथैव निश्चिलः कालः सूर्यचन्द्रनिबन्धनात्। आपूर्य कुम्भितो वायुर्बहिर्नो याति साधके यो. शि. १।१२०
यथैव बिम्बं मृदयोपलिप्तं तेजोमयं भ्राजते तत्सुधातम्। तद्वात्मतत्त्वं प्रसमीक्ष्य देही एकः कृतार्थो भवते वीतशोकः श्वेता. २।१४
यथैव लोहकाराणां भस्त्रा वेगेन चाल्यते। तथैव स्वशरीरस्थं चालयेत्पवनं शनैः योगकुं. १।३४
यथैव वटबीजस्थः प्राकृतश्च महाद्रुमः। तथैव रामबीजस्थं जगदेतच्चराचरम् [रामर. ५।१०+ रा.पू.ता. २।२
यथैव व्योम्नि नीलत्वं यथा नीरं मरुस्थले। पुरुषत्वं यथा स्थाणौ तद्वद्विश्वं चिदात्मनि यो. शि. ४।१९
यथैव शून्यो वेतालो गन्धर्वाणां पुरं यथा। यथाऽऽकाशे द्विचन्द्रत्वं तद्वत्सत्ये जगत्स्थितिः यो. शि. ४।१६
यथैवेदं नभः शून्यं जगच्छून्यं तथैव हि ना. र. ४।२७
यथैवापाङ्गतः सेतुः प्रवाहस्य निरोधकः। तथा शरीरगा छाया ज्ञातव्या योगिभिः सदा वराहो. ५।४१
यथैवासावितश्चेतोऽमुतश्चामुतश्च सम्प्रद्रवत इवोपशुष्यत इवोपस्कन्दमभिगृह्णाताभियातयेदेव छाग. ५।३
यथैवासौ प्रतिसृत्वरेण समः समेन क्रीडेदेवं हैष संक्रीडतीति छाग. ५।३
यथैवासौ राजानं वा राजपुरुषं वा निलयनं प्रापयेदेवं हैवैष यन्ता (रं) निलयनं प्रापयतीति छाग. ५।३
यथैवेदमावां भगवः साध्वलङ्कृतौ सुवसनौ परिष्कृतौ च एवमेवेमौ भगवः साध्वलंकृतौ सुवसनौ परिष्कृतौ च छांदो. ८।८।३
यथैवेदं नभः शून्यं जगच्छून्यं तथैव हि महो. ५।१८४
यथैवेशस्तथा गुरुः। पूजनीयो महाभक्त्या यो. शि. ५।५८
यथैवेह बीजस्याङ्कुरा वाऽथ धूमार्चिर्विस्फुलिङ्गा इवाग्नेश्चेत्यत्रोदाहरन्ति मैत्रा. ६।३१
यथैवैष कपालाष्टकं सञ्चयति तमेव स्तन इव लम्बते वेददेवयोनिः प्रश्नो. १
यथैवैष देवदत्तो यष्ट्याऽपि ताड्यमानो नयतीत्येवमिष्टापूर्तैः शुभाशुभैर्न लिप्यते प्रश्नो. १
यथैवैषा वन्ध्यैवैषा रतिमात्रं फलमस्या वृत्तच्युतस्येव मैत्रा. ७।९
यथैवोत्पलनालेन तोयमाकर्षयेन्नरः। तथैवोत्कर्षयेद्वायुं योगी योगपथे स्थितः ध्या. बि. १८
यथैवोपकरणवतां जीवितं तथैव ते जीवितं स्यात् [बृह. २।४।२ +४।५।३
यथैवोपसृत्वरो वार्धिस्तिर्यगुह्यलन्तीभिरिव वीचीभिः शफरीभि-

रेवोपस्कन्दशुल्लवेदेवं हैवैषोऽभि-
सृत्वराणामेव धुर्याणां चंक्रम-
णामरीणामुत्प्लवतीति छाग. ५।३
यथैवैष देवदत्तो यष्ट्या च ताड्य-
मानो नयति, एवमिष्टापूर्तकर्मा
शुभाशुभैर्न लिप्यते परब्र. १
यथैषा जन्मदुःखेषु न भूयस्त्वां
नियोक्ष्यति । स्वात्मनि स्व-
परिस्पन्दैः स्फुरत्यच्छैरिवार्णवः महो. ५।११७
यथैषा देवतैव१ स यथैनां देवता२
सर्वाणि भूतान्यवन्त्येव१ हैवं-
विद्१ सर्वाणि भूतान्यवन्ति बृ. उ. १।५।२०
यथैषा पुरुषे छायैतस्मिन्नेतदातत
मनोधिकृते नायात्यस्मिञ्छरीरे प्रश्नो. ३।३
यथैषा वन्ध्यैवैषा रतिमात्रं फल-
मस्या वृत्तच्युतस्येव नारम्भ-
णीया मैत्रा. ७।९
यथोक्तं पर्युपासते भ. गी. १२।२०
यथोदकं गिरौ सृष्टं समुद्रेषु विधा-
वति । एवं धर्मान्पृथक्पश्यंस्ता-
मेवानुविधावति गुह्यका. ४३
यथोदकं दुर्गे वृष्टं पर्वतेषु विधा-
वति । एवं धर्मान्पृथक्पश्यं-
स्तानेवानुविधावति कठो. ४।१४
यथोदकं शुद्धे शुद्धमासिक्तं तादृगेव
भवति । एवं मुनेर्विजानत
आत्मा भवति गौतम कठो. ४।१५
यथोदके तोयमनुप्रविष्टं तथा-
त्मरूपो निरुपाधिसंस्थितः पैङ्गलो. ४।११
यथोन्मेषो जायते तथा चिरंतना-
तिदृढभवासनाबलात् पुनः-
निधाया उदयो भवति त्रि. म. ना. ४।६
यथोपपन्नचातुर्वर्ण्यभैक्षाचर्यं
चरन्त आत्मानं मोक्षयन्त इति आश्रमो. ४
यथोपयावमात्मैवाभिचक्षत इति आर्षे. ५।३
(अथ) यथोर्णनाभिस्तन्तुनोर्ध्व-
मुत्क्रान्तोऽवकाशं लभतीत्येवं
वाव खल्वसावभिध्यातोमित्यने-
नोर्ध्वमुत्क्रान्तः स्वातंत्र्यं लभते मैत्रा. ६।२२
यथोर्णनाभिः सूत्राणि सृजत्यपि
गिलत्यपि...उत्पद्यन्ते विलीयन्ते
तथा तस्यां जगत्यपि गुह्यका. २६
यथोर्णनाभिः सृजते गृह्णते च
यथा पृथिव्यामोषधयः सम्भ-
वन्ति । यथा सतः पुरुषात्केश-
लोमानि तथाऽक्षरात्सम्भवतीह
विश्वम् मुंड. १।१।७
यथोल्बेनाऽऽवृतो गर्भः भ. गी. ३।३८
यदक्षरं नारसिंहमेकाक्षरं तद्भवति नृ. पू. ५।७
यदक्षरं पञ्चविधं समेति युजो
युक्ता अभियत्संवहन्ति १ ऐत. ३।८।१
यदक्षरंपरंब्रह्म तत्सूत्रमितिधारयेत् ब्रह्मो. ६
[परब्र. ७+ ना. प. ३।७७
यदक्षरं प्राजापत्यं सौम्यं सूक्ष्मं
ग्राहं ग्राहेण भावं भावेन सौम्यं
सौम्येन सूक्ष्मं सूक्ष्मेण प्रसाति
तस्मै महाग्रासाय नमः चतुर्वे. ८
यदक्षरं वेदविदो वदन्ति भ. गी. ८।११
यदक्षरादक्षरमेति युक्तं युजो युक्ता
अभियत्संवहन्ति १ ऐत. ३।८।२
यदग्निर्ज्वलत्यथैतन्म्रियते यन्न
ज्वलति तस्यादित्यमेव तेजो
गच्छति कौ. त. २।१२
यदग्निर्वायुरिन्द्रस्ते ह्येनन्नेदिष्ठं
पस्पर्शुस्ते ह्येनत्प्रथमो विदां-
चकार ब्रह्मेति केनो. ४।२
यदग्निं न विन्देदप्सु जुहुयादापो
वै सर्वा देवताः सर्वाभ्यो
देवताभ्यो जुहोमि स्वाहा ना. प. ३।७७
यदग्नेरभिवर्तनानि [छाग. २।२+ ४।२
यदग्नौ जुहोत्यपि समिधं तद्देव-
यज्ञः सन्तिष्ठते सहवै. १४
यदग्रे चानुबन्धे च भ. गी. १८।३९
यदग्रे वेदशास्त्राणि तुलसीं तां
नमाम्यहम् तुलसु. १

रेवोपस्कन्दन्नुत्प्लवेदेवं हैवैषोऽभि-
सृत्वराणामेव धुर्याणां चंक्रम-
णामरीणामुत्प्लवतीति छांग. ५।३
यथैवैष देवदत्तो यष्ट्या च ताड्य-
मानो नयति, एवमिष्टापूर्तकर्मा
शुभाशुभैर्न लिप्यते परब्र. १
यथैषा जन्मदुःखेषु न भूयस्त्वां
नियोक्ष्यति। स्वात्मनि स्व-
परिस्पन्दैः स्फुरत्यच्छैश्चिदर्णवः महो. ५।११७
यथैषा देवतैव९ स यथैतां देवता९
सर्वाणि भूतान्यवन्त्येव९ हैवं-
विद९ सर्वाणि भूतान्यवन्ति बृ. उ. १।५।२०
यथैषा पुरुषे छायैतस्मिन्नेतदाततं
मनोधिकृते नायात्यस्मिञ्छरीरे प्रश्नो. ३।३
यथैषा वन्ध्यैवैषा रतिमात्रं फल-
मस्या वृत्तच्युतस्येव नारम्भ-
णीया मैत्रा. ७।९
यथोक्तं पर्युपासते भ. गी. १२।२०
यथोदकं गिरौ सृष्टं समुद्रेषु विधा-
वति। एवं धर्मान्पृथक्पश्यंस्ता-
नेवानुविधावति गुह्यका. ४३
यथोदकं दुर्गे वृष्टं पर्वतेषु विधा-
वति। एवं धर्मान्पृथक्पश्यं-
स्तानेवानुविधावति कठो. ४।१४
यथोदकं शुद्धे शुद्धमासिक्तं तादृगेव
भवति। एवं मुनेर्विजानत
आत्मा भवति गौतम कठो. ४।१५
यथोदके तोयमनुप्रविष्टं तथा-
त्मरूपो निरुपाधिसंस्थितः पैङ्गलो. ४।११
यथोन्मेषो जायते तथा चिरंतना-
तिसूक्ष्मवासनाबलात् पुनर-
विद्याया उदयो भवति त्रि. म. ना. ४।६
यथोपपन्नचातुर्वर्ण्यभैक्षाचर्य
चरन्त आत्मानं मोक्षयन्त इति आश्रमो. ४
यथोपयावमात्मैवाभिचक्षत इति आर्षे. ५।३
(अथ) यथोर्णनाभिस्तन्तुनोर्ध्व-
मुत्क्रान्तोऽवकाशं लभतीत्येवं
वाव खल्वसावभिध्यातोमित्यने-
नोर्ध्वमुत्क्रान्तः स्वातंत्र्यं लभते मैत्रा. ६।२२
यथोर्णनाभिः सूत्राणि सृजत्यपि
गिलत्यपि...उत्पद्यन्ते विलीयन्ते
तथा तस्यां जगत्यपि गुह्यका. २६
यथोर्णनाभिः सृजते गृह्णते च
यथा पृथिव्यामोषधयः सम्भ-
वन्ति। यथा सतः पुरुषात्केश-
लोमानि तथाऽक्षरात्सम्भवतीह
विश्वम् मुंड. १।१।७
यथोल्बेनाऽऽवृतो गर्भः भ. गी. ३।३८
यदक्षरं नारसिंहमेकाक्षरं तद्भवति नृ. पू. ५।७
यदक्षरं पञ्चविधं समेति युजो
युक्ता अभियत्संवहन्ति १ ऐत. ३।८।१
यदक्षरं परंब्रह्म तत्सूत्रमितिधारयेत् ब्रह्मो. ६
[परब्र. ७+ ना. प. ३।७७
यदक्षरं प्राजापत्यं सौम्यं सूक्ष्मं
ग्राहं ग्राहेण भावं भावेन सौम्यं
सौम्येन सूक्ष्मं सूक्ष्मेण ग्रसति
तस्मै महाग्रासाय नमः चतुर्वे. ८
यदक्षरं वेदविदो वदन्ति भ. गी. ८।११
यदक्षरादक्षरमेति युक्तं युजो युक्ता
अभियत्संवहन्ति १ ऐत. ३।८।२
यदग्निर्ज्वलत्यथैतन्म्रियते यन्न
ज्वलति तस्यादित्यमेव तेजो
गच्छति कौ. त. २।१२
यदग्निर्वायुरिन्द्रस्ते ह्येनन्नेदिष्ठं
पस्पर्शुस्ते ह्येनत्प्रथमो विदां-
चकार ब्रह्मेति केनो. ४।२
यदग्निं न विन्देदप्सु जुहुयादापो
वै सर्वा देवताः सर्वाभ्यो
देवताभ्यो जुहोमि स्वाहा ना. प. ३।७७
यदग्नेरभिवर्तनानि [छाग. २।२+ ४।२
यदग्नौ जुहोत्यपि समिधं तदेव-
यज्ञः सन्तिष्ठते सद्वै. १४
यदग्रे चानुबन्धे च भ. गी. १८।१९
यदग्रे वेदशास्त्राणि तुलसी तां
नमाम्यहम् तुलस्यु. ९

यदज्ञानात्त्रवेद्वैतमितरत्तत्प्रणश्यति यो. शि. ४।९
(अथ) यदतः परो दिवा ज्योतिर्दीप्यते विश्वतः पृष्ठेषु.. छांदो. ३।१३।७
यदत्र षष्ठं त्रिशतं सुवीरं यज्ञस्य गुह्यं नवनावमाय्यम् । दशपञ्च त्रिशतं यत्परं च तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु २ शिवसं. ७
यदत्रैनो अवतत्सुवामि सहवै. ९
यदथर्वाङ्गिरसो मधोः कूल्या यद्ब्राह्मणानितिहासान्पुराणानि कल्पान्गाथानाराशंसीर्मेदसः कूल्याअस्यपितॄन्त्स्वधाअभिवहंति सहवै. १४
यदथर्वाङ्गिरसो मध्वाहुतिभिः... तद्देवांस्तर्पयति, त एनं तृप्ता आयुषा...ब्रह्मवर्चसान्नाद्येन च तर्पयन्ति सहवै. १४
यददीव्यं नृणामहं बभूवादित्सन्वा- संजगरजनेभ्यः। अग्निर्मा तस्मादिन्द्रश्च संविदानौ प्रमुंचताम् सहवै. ५
(अथ) यदनाकाशायनमित्याचक्षते ब्रह्मचर्यमेव तत् छांदो. ८।५।३
यदनादि निरामयम् (ब्रह्म) महो. २।६८
यदनादिभूतं यदनन्तरूपं यद्विज्ञानरूपं यद्देवाः सर्वे ब्रह्म ज्येष्ठमुपासते गणेशो. ४।१
यदनु कुरुक्षेत्रं देवानां देवयजनं सर्वेषां भूतानां ब्रह्मसदनम् [रामो. १।१+जाबा. १।१+ जाबालो. १
यदनुकम्पनिष्पन्दंदीपकंतेजसामपि अ. पू. ३।२२
यदनुज्ञा समर्थयिता ह वै कामानां भवति य एतदेवं विद्वानक्षरमुद्गीथमुपास्ते छांदो. १।१।८
(अथ) यदनुब्रूते तेन ऋषीणां (लोकप्राप्तिः) बृह. १।४।१६
यदनुष्णमेव वा एष उपवसनेष हि सर्वत्र सर्वदा सर्वात्मासन्सर्वमत्ति नृसिंहो. ४।२
यदनेकमेकं नानावर्णं नानारूपं नानासत्त्वं... शौनको. १।५

यदन्तरा पितरं मातरं चेति नाहमत एकं च न वेद बृह. ६।२।२
यदन्तरिक्षं पृथिवीमुत द्यां यन्मातरं पितरंवाजिहिंसिम [सहवै.१० अथर्व. ६।१२०।१ [+तै. सं. १।८।५।३+ तै. आ. २।६।२
यदन्तरिक्षं यदाशसाऽतिक्रामामि सहवै. ४
यदन्तर्नोऽसाविह प्राहैयात् छाग. ३।९
यदन्तः पूर्णमवगत्य पूर्णः गुह्यका. ४६
यदन्ति यच्च दूरके [३ऐत.२।४।४+ वनदु. १२९ [ऋ. मं. ९।६७।२१
यदन्नमग्निर्बहुधा विराद्धि रुद्रैः प्रजग्धं यदि वा पिशाचैः। सर्वं तदीशानो अभयं कृणोतु प्रा. हो. १।६
यदन्नमद्मि बहुधा विरूपं वासो हिरण्यमुत गामजामविम् सहवै. १०
यदन्नमद्म्यनृतेन देवा दास्यन्न दास्यन्नुत वा करिष्यन् सहवै. १०
यदन्नेनातिरोहति [चित्यु.१२।१+ पु. सू. २ [+ऋ.मं.१०।९०।२+ वा. सं. ३१।२
यदन्यद्देवेभ्यश्च प्राणेभ्यश्च तत्सत् कौ. त. १।६
यदपां क्रूरं यदमेध्यं यदशान्तं तदपगच्छतात् महाना. ५।१८
यदपि बहुधाक्षीरन्न किंच प्रतिपद्यत इति तन्मे ब्रह्मेति आर्षे. ७।१
यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिव.. [१ शिवसं. २+ २ शिव. सं. ३
यदभावनमास्थाय यद्भावस्य भावनम्। तद्यथा वस्तुदर्शित्वं तदचित्तत्वमुच्यते अ. पू. ४।५०
यदमीषामदःप्रियम्,तदेतूपमामभि.. चित्यु. १५।२
यदमुत्र तदन्विह कठो. ४।१०
यदमुष्मिन्नादित्ये तपत्यग्नौ चाधूमके...यःपचत्यन्नमित्येवंह्याह मैत्रा. ६।१७
यदमुष्मिन्नादित्येऽथ सोमेऽग्नौ विद्युति विभात्यथ खल्वेनं दृष्ट्वाऽमृतत्वं गच्छति मैत्रा. ६।२४
यदमूर्तं तत्सत्यं तद्ब्रह्म मैत्रा. ६।३
यदयमास्माऽनेन ह्येतत्सर्वं वेद बृह. १।४।७

यदयमात्मामायामात्रएषएवोग्रः.. नृसिंहो. ५।१
यदयमेक इवैव पवते बृह. ३।९।९
यदयं शवशयितमशयिष्टेति छाग. ४।२
(अथ) यदरण्यायनमित्याचक्षते
ब्रह्मचर्यमेव तत् छांदो. ८।५।३
यदर्चिमद्यदणुभ्योऽणु च यस्मिꣳ-
ल्लोका निहिता लोकिनश्च मुण्ड. २।२।२
यदर्थप्रतिभानंतन्मनइत्यभिधीयते महो. ४।५१
यदर्पयेद्गुरुः किञ्चित्तदग्रः पुरतः
स्थितः । पाणिद्वयेन गृह्णीयात्
स्थापयेत्तच्च सुस्थिरम् शिवो. ७।११
यदर्वाचीनमेनो भ्रूणहत्यायास्त-
स्मान्मोक्ष्यध्व इति त एतैरजुहवुः सह्वै. ११
यदल्पं तन्मर्त्यꣳ स भगवः
कस्मिन्प्रतिष्ठित इति छांदो. ७।२४।१
यदवश्यं पराधीनैस्त्यजनीयं शरी-
रकम् । कस्मात्तेन विमूढात्मा
न साधयति शाश्वतम् शिवो. ७।१२१
यदवस्फूर्जति सोनु वषट्कारो
वायुरात्मा सह्वै. १८
(अथ) यदवोचं भुवः प्रपद्य
इत्यग्निं प्रपद्ये वायुं प्रपद्य
आदित्यं प्रपद्य इति छांदो. ३।१५।६
(अथ) यदवोचं भूः प्रपद्य इति
पृथिवीं प्रपद्येऽन्तरिक्षं प्रपद्ये
दिवं प्रपद्य इति छांदो. ३।१५।५
(अथ) यदवोचꣳ स्वः प्रपद्य
इत्यृग्वेदं प्रपद्ये यजुर्वेदं प्रपद्ये
सामवेदं प्रपद्य इति छांदो. ३।१५।७
यदश्नाति तद्धविः [त्रि. प. ४+ महाना. १८।१०
(अथ) यदश्नाति यत्पिबति य-
द्रमते तदुपसदैवेति छांदो. ३।१७।२
यदश्नीयाद्व्रतोमक्षी भवेत् भस्मजा. २।१०
यदश्रुमापातयेत्प्रजां विच्छिन्द्यात् कठरु. २
यदश्वत्तन्मेध्यमभूदिति तदेवाश्व-
मेधस्याश्वमेधत्वम् बृह. १।२।७
यदष्टाक्षरपदा तेन गायत्री अव्यक्तो. ६
यदसकं सर्वं स्वच्छं स्थितं तत्तुर्य-
मुच्यते अ. पू. ५।१०७

यदसाधु तदसामेति छांदो. २।१।१
यदसाधु भवत्यसाधु बतेत्येव तदाहुः छांदो. २।१।२
यदसुरान्तकचक्रं यत्सत्यात्मा
तत् षष्ठस्य नृ. षट्च. ६
यदस्ति तदस्ति यन्नास्ति नास्ति तत् स्वसंवे. २
यदस्ति सन्मात्रं यद्विभाति
चिन्मात्रं...तदेतत्सर्वाकारा
महात्रिपुरसुन्दरी बह्वृचो. २
यदस्तीह तदेवास्ति विज्वरो भव
सर्वदा । यथाप्राप्तानुभवतः
सर्वत्रानभिवाञ्छनात् महो. ६।१४
यदस्मान्नमस्कारेण मुच्येध्वं न वै
जातु युष्माकमिमं कश्चिद्ब्रह्मो-
द्यं जेतेति बृह. ३।८।१२
यदस्मिन्निद सर्वमध्यर्ध्नोत्तेनाध्यर्ध
इति कतम एको देव इति बृह. ३।९।९
यदस्य गृहेषु श्वापदा वयाꣳस्या-
पिपीलिकाभ्य उपजीवन्ति
तेन तेषां लोकः बृह. १।४।१६
यदस्य त्वं यदस्य च देवेष्वथ नु
मीमांस्यमेव ते मन्ये विदितम् केनो. २।१
यदस्य प्रथमयञ्चका युगमश्लोका
(क) त्रिका छाग. ७।१
यदस्यविज्ञानंतज्जुहोति [त्रि.सु.४+ म.ना.१८।१०
यदस्याग्रं तच्छान्तमशब्दमभय-
मशोकमानन्दं.. उपासीत.. मैत्रा. ६।२३
यदस्यान्तरं सूत्रं तद्ब्रह्म ब्र. मा. २
यदस्यान्यद्रश्मिशतमूर्ध्वमेव व्यव-
स्थितम् । तेन देवनिकायानां
स्वधामानि प्रपद्यते मैत्रा. ६।३०
यदहङ्कारमाश्रित्य भ. गी. १८।५९
यदहमायतनमस्मि त्वं तदायतन-
मसीति छांदो. ५।१।१४
यदहरेव विरजेत्तदहरेव प्रव्रजेत् जाबालो. ४+
[ना. प. ३।७७+प.हं.प.२+ याज्ञव. १
यदहरेव जुहोति तदहः पुनर्मृत्यु-
मपजयति बृह. १।५।२
यदहं वसिष्ठोऽस्मि त्वं वसिष्ठोऽसि छांदो. ५।१।१२

यदहं स त्वं ममैव रूपेण
न्यूङ्खयिष्यन्ति त्वामिति — शौनको. ३।४
यदहं सर्वं भवानि यद्गायत्री वै
पुरोगास्तत्किं मे स्यादिति — शौनको. २।२
यदहोरात्राभ्यां पापं करोति
स तद्धुङ्क्ते — कौ. व्र. २।७
यदह्नात् कुरुते पापं तदह्नात्
प्रतिमुच्यते — महाना. ११।६
यदह्ना पापमकार्षं मनसा वाचा
हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण
शिश्ना । अहस्तदवलुम्पतु — महाना. ११।३,४
यदा कर्ममार्गे रतिरसतां ते आसुरा
भवन्ति — सामर. २
यदा कर्मसु काम्येषु स्त्रियं स्वप्नेषु
पश्यति । समृद्धिं तत्र जानी-
यात्तस्मिन्स्वप्ननिदर्शने — छांदो. ५।२।९
यदाक्रन्दितमिव निष्क्रन्दितमिव
सा मित्रहूः — संहितो. १।२
यदा चक्रं यदात्मा तत्प्रथमस्य यत्सु-
चक्रं यत्प्रियात्मा तद्द्वितीयस्य
...यदसुरान्तकचक्रं यत्सत्यात्मा
तत् षष्ठस्य — नृ. षट्च. ६
यदा चन्द्रोऽस्तमेति वायुमेवाप्येति — छांदो. ४।३।१
यदा च बाह्यमार्गेण जिह्वा ब्रह्मबिले
व्रजेत् । तदा ब्रह्मार्गलं
ब्रह्मन्दुर्भेद्यं त्रिदशैरपि — योगकु. २।४०
यदा चर्मवदाकाशं वेष्टयिष्यन्ति
मानवाः । तदा देवमविज्ञाय
दुःखस्यान्तो भविष्यति — श्वेता. ६।२०
यदाद्यं यन्महत्तत्त्वतीयं [छाग. ५।२+ — ४।२
यदा सर्वैतद्वीजं यन्मध्यमं सा नार-
सिंहगायत्री.. — नृ. षट्च. ३
यदा तमस्तन्न दिवा न रात्रिर्न
सन्न चासच्छिव एव केवलः — श्वेता. ४।१८
यदा तमस्तन्न दिवा न रात्रिर्न सन्न
चासच्छिवत्येव गुहा — गुह्यको. ६।१
यदा तालुमूले गाढतमो दृश्यते,
तदभ्यासादखण्डमण्डला-
कारज्योतिर्दृश्यते — मं. ब्रा. २।२

यदा तु ध्यायते मन्त्रं गात्रकम्पो-
ऽभिजायते — यो. शि. १
यदा तु नाडीशुद्धिः स्यात्तदा
चिह्नानि बाह्यतः । जायन्ते
योगिनो देहे — १ यो. त. ४४
यदा तु राजयोगेन निष्पन्ना
योगिभिः क्रिया । तदा विवेक-
वैराग्यं जायते योगिनो ध्रुवम् — १ यो. त. २१
यदा तु विदितं तत्त्वं परं ब्रह्म
सनातनम् । तदैकदण्डं संगृह्य
सोपवीतां शिखां त्यजेत् — ना. प. ३।१८
यदा ते मोहकलिलं — भ. गी. २।५२
यदात्मतत्त्वेन तु ब्रह्मतत्त्वं दीपोप-
मेनेह युक्तः प्रपश्येत् । अजं
ध्रुवं सर्वतत्त्वैर्विशुद्धं ज्ञात्वा देवं
मुच्यते सर्वपापैः — श्वेता. २।१५
यदाऽऽत्मनाऽऽत्मानमणोरणीयांसं
द्योतमानं मनःक्षयात्पश्यति
तदात्मनाऽऽत्मानं दृष्ट्वा निरात्मा
भवति — मैत्रा. ६।२०
यदात्मनो न विजानीयस्तन्मे प्रब्रूत — छांदो. ८।८।१
यदात्माशुचिर्यदेशः समृद्धिर्देवतानि,
य एवंविद्वान्...स्वाध्यायमधीते
सर्वांल्लोकाञ्जयति — ब्रह्मे. १९
यदात्मैव जगत्सर्वमिति निश्चित्य
पूर्णता — अ. पू. २।३५
यदा त्वमभिवर्षस्यथेमाः प्राण ते
प्रजाः । आनन्दरूपास्तिष्ठन्ति
कामायान्नं भविष्यति — प्रश्नो. १०
यदादानं पदार्थस्य वासना सा
प्रकीर्तिता [अ.पू. ४।४६+ — मुक्तिको. २।५७
यदादानेन सह संयुज्यते तदा
पश्यति देवलोकान्देवान्स्कन्दं
जयन्तं चेति — सुबालो. ४।१
यदादित्यगतं तेजः — भ. गी. १५।१२
यदादित्यस्य मध्ये उदित्वा मयूखे
भवतः — मैत्रा. ६।३५
यदादित्यस्य मध्येऽमृतं...एतद्ब्रह्म — मैत्रा. ६।३५
यदादित्यस्य मध्ये यजुर्दीप्यति — मैत्रा. ६।३५

यदहं च त्वं ममैव रूपेण
 व्यूहयिष्यन्ति त्वामिति शौनको. ३।१
यदहं सर्वं भवानि यद्गायत्री वै
 पुरोगास्तत्किं मे स्यादिति शौनको. २।२
यदह्नोरात्राभ्यां पापं करोति
 स तद्धन्ते कौ. त. २।७
यदह्नात् कुरुते पापं तदह्नात्
 प्रतिमुच्यते महाना. ११।६
यदह्ना पापमकार्षं मनसा वाचा
 हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण
 शिश्ना । अहस्तदवलुम्पतु महाना. ११।३,४
यदा कर्ममार्गे रतिरसतां ते आसुरा
 भवन्ति सामर. २
यदा कर्मसु काम्येषु स्त्रियं स्वप्नेषु
 पश्यति । समृद्धिं तत्र जानी-
 यात्तस्मिन्स्वप्ननिदर्शने छांदो. ५।२।९
यदाक्रन्दितमिव निष्कन्दितमिव
 सा मित्रहूः संहितो. १।२
यदा चक्रं यदात्मा तत्प्रथमस्य यत्सु-
 चक्रं यत्प्रियात्मा तद्द्वितीयस्य
 ...यदसुरान्तकचक्रं यत्सत्यात्मा
 तत् षष्ठस्य नृ. षट्च. ६
यदा चन्द्रोऽस्तमेति वायुमेवाप्येति छांदो. ४।३।१
यदा च बाह्यमार्गेण जिह्वा ब्रह्मबिलं
 व्रजेत् । तदा ब्रह्मार्गलं
 ब्रह्मन्दुर्भेद्यं त्रिदशैरपि योगकुं.२।४०
यदा चर्मवदाकाशं वेष्टयिष्यन्ति
 मानवाः । तदा देवमविज्ञाय
 दुःखस्यान्तो भविष्यति श्वेता. ६।२०
यदाद्यं यन्महत्तरीयं [छाग.१।१२+ ४।२
यदा तदेतद्दीर्घं यन्मध्यमं तो नार-
 सिंहगायत्री.. नृ. षट्च. ३
यदा तमस्तत्र दिवा न रात्रिर्न
 सन्न चासच्छिव एव केवलः श्वेता. ४।१८
यदा तमस्तत्र दिवा न रात्रिर्न सन्न
 चासत्सान्तत्येव गुह्या गुह्यको. ६।१
यदा तालुमूले गाढतमो दृश्यते,
 तदभ्यासादखण्डमण्डला-
 कारज्योतिर्दृश्यते मं. ब्रा. २।२

यदा तु ध्यायते मन्त्रं गात्रकम्पो-
 ऽभिजायते यो. शि. १
यदा तु नाडीशुद्धिः स्यात्तदा
 चिह्नानि बाह्यतः । जायन्ते
 योगिनो देहे १ यो. त. ४४
यदा तु राजयोगेन निष्पन्ना
 योगिभिः क्रिया । तदा विवेक-
 वैराग्यं जायते योगिनो ध्रुवम् १ यो. त. २९
यदा तु विदितं तत्त्वं परं ब्रह्म
 सनातनम् । तदैकदण्डं संगृह्य
 सोपवीतां शिखां त्यजेत् ना. प. ३।१८
यदा ते मोहकलिलं भ. गी. २।५२
यदात्मतत्त्वेन तु ब्रह्मतत्त्वं दीपोप-
 मेनेह युक्तः प्रपश्येत् । अजं
 ध्रुवं सर्वतत्त्वैर्विशुद्धं ज्ञात्वा देवं
 मुच्यते सर्वपापैः श्वेता. २।१५
यदाऽऽत्मनाऽऽत्मानमणोरणीयांसं
 द्योतमानं मनःक्षयात्पश्यति
 तदात्मनाऽऽत्मानं दृष्ट्वा निरात्मा
 भवति मैत्रा. ६।२०
यदात्मनो न विजानीयस्तन्मे प्रब्रूत छांदो. ८।८।१
यदात्माशुचिर्यदेशः सर्वाणि व्रतानि,
 य एवंविद्वान्...स्वाध्यायमधीते
 सर्वाँल्लोकाञ्जयति बह्वृ. १९
यदात्मैव जगत्सर्वमिति निश्चित्य
 पूर्णता अ. पू. २।१५
यदा त्वमभिवर्षस्यथेमाः प्राण ते
 प्रजाः । आनन्दरूपास्तिष्ठन्ति
 कामायान्नं भविष्यति प्रश्नो. १०
यदादानं पदार्थस्य वासना सा
 प्रकीर्तिता [अ.पू. ४।१६+ मुक्तिको. २।५७
यदादानेन सह संयुज्यते तदा
 पश्यति देवलोकान्देवांस्कन्दं
 जयन्तं चेति सुबालो. ४।१
यदादित्यगतं तेजः भ. गी. १५।१२
यदादित्यस्य मध्ये उदित्वा मयूखे
 भवतः मैत्रा. ६।३५
यदादित्यस्य मध्येऽमृतं.. एतद्ब्रह्म मैत्रा. ६।३५
यदादित्यस्य मध्ये यजुर्दीप्यति मैत्रा. ६।३५

यदादित्यस्य रोहितᳫ रूपं तेजस-
स्तद्रूपं, यच्छुक्लं तदपां, यत्कृष्णं
तदन्नस्यापागादादित्यादादित्यत्वं वाचा-
रम्भणं विकारो नामधेयं त्रीणि
रूपाणीत्येव सत्यम् छांदो. ६।४।२

यदादिशेद्गुरुः किञ्चित्तत्कुर्याद-
विचारतः शिवो. ७।३०

यदादेवदत्तस्य द्रव्याद्विषयाजायते गर्भो. २

यदा द्रष्टाऽनुपश्यति भ. गी. १४।१९

यदा न कस्यचन वेद, हिता नाम
नाड्यो द्वासप्ततिसहस्राणि
हृदयात्पुरीततमभिप्रतिष्ठन्ते बृह. २।१।१९

यदा न कुरुते भावं सर्वभूतेषु
पापकम् । कर्मणा मनसा
वाचा तदा भवति भैक्ष्यभुक् ना. प. ३।२३

यदा न भाव्यते किञ्चिन्निर्वासन-
तयाऽऽत्मनि । बालमूकादिवि-
ज्ञानमिव च स्थीयते स्थिरम् ॥
तदा जाड्यविनिर्मुक्तमसंवेदन-
मावतम् । आश्रितं भवति
प्राज्ञो यस्मान्भूयो न लिप्यते अ. पू. ४।६१

यदा नभाव्यते किञ्चिद्धेयोपादेय-
रूपि यत् । स्थीयते सकलं
त्यक्त्वा तदा चित्तं न जायते अ. पू. ४।४७

यदा न भाव्यते भावः क्वचिज्जगति
वस्तुनि । तदा हृदम्बरे शून्ये
कथं चित्तं प्रजायते अ. पू. ४।४९

यदा न मनुते मनः, अमनस्ता
तदोदेति अ. पू. ४।४८

यदा न लभते हेतूनुत्तमाधम-
मध्यमान् । तदा न जायते
चित्तं हेत्वभावे फलं कुतः अ. शां. ७६

यदा न लीयते चित्तं न च वि-
क्षिप्यते पुनः । अनिङ्गनम-
नाभासं निष्पन्नं ब्रह्म तत्तदा अद्वैतो. ४६

यदानुध्यायते मंत्रं गात्रकम्पोऽथ
जायते यो. शि. १।७०

यदाप उच्छुष्यन्ति वायुमेवापि-
यन्ति । वायुर्ह्येवैतान्सर्वान्संवृङ्क्त
इत्यधिदैवतम् छांदो. ४।३।२

यदा पञ्चावतिष्ठन्ते ज्ञानानि मनसा
सह । बुद्धिश्च न विचेष्टते तामाहुः
परमां गतिम् [कठो.६।१०+ मैत्रा. ६।३०

यदा पश्यति चात्मानं केवलं
परमार्थतः । मायामात्रं
जगत्कृत्स्नंतदाभवतिनिर्वृतिः जा. द. १०।१२

यदा पश्यः पश्यते रुक्मवर्णं
कर्तारमीशं पुरुषं ब्रह्मयोनिम् ।
तदा विद्वान्पुण्यपापे विधूय
निरञ्जनः परमं साम्यमुपैति मुण्ड. ३।१।३

यदापस्स्रोतस्स्वरण्योरिवाग्निः ।
एवमात्मात्मनि जायते इतिहा. ४९

(सः) यदाऽपानेन सह संयुज्यते
तदापश्यतियक्षराक्षसगन्धर्वान् सुबालो. ४।२

यदा पिङ्गलया प्राणः कुण्डली-
स्थानमागतः । तदा तदा
भवेत्सूर्यग्रहणं मुनिपुङ्गव जा. द. ४।४७

(अथ) यदा प्रजाः सृष्टा न
जायन्ते प्रजापतिः कथं न्विमाः
प्रजाः सृजेयमिति चिन्तयन्नुप-
मितीमामृचं गातुमुपाक्रामत् अव्यक्तो. ७

यदा प्रस्पन्दते प्राणो नाडी संस्पर्श-
नोद्यतः । तदा संवेदनमयं
चित्तमाशु प्रजायते अ. पू. ४।४२

यदा भारं तन्द्रयते स भर्तुम् ।
निधाय भारं पुनरस्तमेति ।
तमेव मृत्युममृतं तमाहुः चित्यु. १४।४

यदाभासेन रूपेण जगद्भोग्यं
भवेत तत् । मानतः स्वात्मना
भातं भक्षितं भवति ध्रुवम् पा. ब्र. ४७

यदा भूतपृथग्भावं भ. गी. १३।११

यदा मनसि चैतन्यं भाति सर्वत्रगं
सदा । योगिनोऽव्यवधानेन
तदा सम्पद्यते स्वयम्
[अ. पू. ५।७८+ जा. द. १०।९

यदा मनसि वैराग्यं जातं सर्वेषु वस्तुषु । तदैव सन्न्यसेद्विद्वानन्यथा पतितो भवेत् मैत्रे. २।१९
यदा मनसि सञ्जातं वैतृष्ण्यं सर्ववस्तुषु । तदा सन्न्यासमिच्छेत पतितः स्याद्विपर्यये ना. प. ३।१२
यदा मन्मथकलादिर्भवति तदा निष्कीलिता भवेत् कामराज. १
यदा यत्र यथा यस्मात्स्थिरं भवति मानसम् । तदा तत्र तथा तस्मान्न तु चाल्यं कदाचन अमन. २।६९
यदा यदा परिक्षीणा पुष्टा चाहंकृतिर्भवेत् ।...प्रवर्तन्ते रुगादयः यो. शि. १।३६
यदा यदा हि धर्मस्य भ. गी. ४।७
यदा यात्यमनीभावं तदा तत्परमं पदम् मैत्रा. ६।३४
यदा यात्युन्मनीभावस्तदा तत्परमं पदम् । यत्र यत्र मनो याति तत्र तत्र परं पदम् पैङ्गलो. ४।२१
यदाऽलम्बुद्धिर्भवेत्तदा कुटीचको वा बहूदको वा...सर्वमप्सु विसृज्याथ जातरूपधरश्चरेत् प. हं. प. ८
यदा लेलायते ह्यर्चिः समिद्धे हव्यवाहने । तदाज्यभागावन्तरेणाहुतीः प्रतिपादयेच्छ्रद्धया हुतम् मुंड. १।२।२
यदा वाव ते स्मरेयुरथ शृणुयुरथमन्वीरन्नथ विजानीरन् स्मरेण वै पुत्रान्विजानाति स्मरेण पशून्स्मरमुपास्वेति छांदो. ७।१३।१
यदा विनियतं चित्तं भ. गी. ६।१८
यदा वै करोत्यथ निस्तिष्ठति नाकृत्वा निस्तिष्ठति छान्दो. ७।२१।१
यदा वै चेतयतेऽथ सङ्कल्पतेऽथ मनस्यथ वाचमीरयति छान्दो. ७।५।१
यदा वै निस्तिष्ठत्यथ श्रद्दधाति नानिस्तिष्ठञ्छ्रद्दधाति निस्तिष्ठन्नेव श्रद्दधाति छान्दो. ७।२०।१
यदा वै पुरुषोऽस्माल्लोकात्प्रैति, स वायुमागच्छति बृह. ५।१०।१
यदा वै बहिर्विद्वान्मनो नियम्येन्द्रियार्थांश्च प्राणो निवेशयित्वा निस्सङ्कल्पस्ततस्तिष्ठेत् मैत्रा. ६।१९
यदा वै मनुतेऽथ विजानाति नामत्वा विजानाति छांदो. ७।१८।१
यदा वै मिथुनौ समागच्छत आपयतो वै तावन्योन्यस्य कामम् छान्दो. १।१।६
(सः) यदा वैरम्भेण सह संयुज्यते तदा पश्यति दृष्टं च श्रुतं च भुक्तं चाभुक्तं च सच्चासच्च सर्वं पश्यति सुबालो. ४।२
यदा वै विजानाति, अथ सत्यं वदति नाविजानन्सत्यं वदति छान्दो. ७।१७।१
यदा वै श्रद्दधात्यथ मनुते नाश्रद्दधन्मनुते छान्दो. ७।१९।१
यदा वै सङ्कल्पयतेऽथ मनस्यथ वाचमीरयति छान्दो. ७।४।१
यदा वै सुखं लभतेऽथ करोति नासुखं लब्ध्वाकरोति सुखमेव लब्ध्वा करोति छान्दो. ७।२२।१
[सः] यदा व्यानेनसहसंयुज्यते तदा पश्यति देवांश्च ऋषींश्च सुबालो. ४।२
यदा शेते रुद्रस्तदा संहरते प्रजाः बटुको. २७
यदाऽस्य षोडशीकस्य सार्धत्रिकोटीर्जपतितदाब्रह्महत्यांतरति कलिसं. ५
यदा सङ्क्षीयते चित्तमभावात्यन्तभावनात् । चित्सामान्यस्वरूपस्य सत्तासामान्यता तदा अ. पू. १।२३
यदा सङ्क्षीयते प्राणो मानसं च प्रलीयते । तदा समरसत्वं यत्समाधिरभिधीयते सौभाग्य. १९
यदा सत्त्वे प्रवृद्धे तु भ. गी. १४।१४
यदा सद्गुरुकटाक्षो भवति तदा भगवत्कथाश्रवणध्यानादौ श्रद्धा जायते त्रि. म. ना. ५।४
(सः) यदा समानेन सा संयुज्यते तदा पश्यति देवलोकान्धनानि.. सुबालो. ४।२

यदा सर्वसमो जातो भवेच्चा-
पारवर्जितः । परे ब्रह्मणि
सम्बोधो योगी प्राप्तलयस्तदा अमन. १।२२
यदा सर्वाणि भूतानि समाधिस्थो
न पश्यति । एकीभूतः परेणासौ
तदा भवति केवलः
[अ. पू. ५।८०+ जा. द. १०।११
यदा सर्वाणि भूतानि स्वात्मन्येव
हि पश्यति । सर्वभूतेषु चात्मानं
ब्रह्म सम्पद्यते तदा
[अ. पू. ५।७९+ जा. द. १०।१०
यदा सर्वे प्रमुच्यन्ते कामा येऽस्य
हृदि श्रिताः (स्थिताः) । अथ
मर्त्योऽमृतोभवत्यत्रब्रह्म समश्नुते कठो. ६।१४
[+ बृ. उ. ४।४।७+ शाट्याय. २५
यदा सर्वे प्रभिद्यन्ते हृदयस्येह
ग्रन्थयः । अथ मर्त्योऽमृतो
भवत्येतावदनुशासनम् कठो. ६।१५
यदा संहरते चायं भ. गी. २।५८
यदा सँक्षम्यते शाक्तो तदा सिद्धिः
करे स्थिता । न शाक्तेण विना
सिद्धिर्दृष्टा चैव जगत्त्रये योगकुं. २।११
यदा सुवृष्टिर्भवत्यानन्दिनः
प्राणा भवन्ति छांदो. ७।१०।१
(अथ) यदा सुषुप्तो भवति यदा
न कस्यचन वेद हिता नाम
नाड्यो द्वासप्ततिसहस्राणि
हृदयात्पुरीततमभिप्रतिष्ठन्ते बृह. २।१।१९
यदा सूर्योऽस्तमेति वायुमेवाप्येति बृह. ४।३।१
यदा स्थास्यति निश्चला भ. गी. २।५३
यदाऽस्माच्छरीरान्मर्त्यादुत्क्राम-
न्त्यथ रोदयन्ति बृह. ३।९।४
(अथ) यदाऽस्य वाङ्मनसि सम्प-
द्यते मनः प्राणे प्राणस्तेजसि
तेजः परस्यां देवतायामथ न
जानाति छांदो. ६।१५।२
यदा हवनीये गार्हपत्येऽन्वाहार्य-
पचने सभ्यावसथयोश्च कठश्रु. ४

यदा हंसो नादे लीनो भवति, तदा
न तुर्यातीतमुन्मनमजपोप-
संहारमित्यभिधीयते हंसो. ६
यदा हि नेन्द्रियार्थेषु भ. गी. ६।४
यदा ह्येव श्रद्धत्तेऽथदक्षिणांददाति बृह. ३।९।२१
यदा ह्येवैष एतस्मिन्नल्पमप्यन्तरं
नरः । विजानाति तदा तस्य
भयं स्यान्नात्र संशयः कठरु. ३१
यदा ह्येवैष एतस्मिन्नदृश्येऽनात्म्ये-
ऽनिरुक्तेऽनिलयनेऽभयं प्रतिष्ठां
विन्दते । अथ सोऽभयं गतो
भवति तैत्ति. २।७
यदा ह्येवैष एतस्मिन्नल्पमप्यन्तरं
नरः । विजानाति तदा तस्य
भयंस्यान्नात्रसंशयः [महो.४।७९ कठरु. ३१
यदा ह्येवैष एतस्मिन्नदृश्यत्वादि-
लक्षणे । निर्भेदं परमाद्वैतं विंदते
च महायतिः कठरु. २९
यदा ह्येवैष एतस्मिन्नुदरमन्तरं
कुरुते, अथ तस्य भयं भवति तैत्ति. २।७
यदि कर्कोटकदूतोऽसि यदि वा
कर्कोटकः स्वयं गारुडो. १९
यदि काममनुरुध्यते सम्वरतां
इमां योनिं सन्दध्यादिदमत्र
मनः क्लेशरैससः सम्भवति निरुक्तो. ११
यदि खल्वश्नाति प्राणसमृद्धो
भूत्वा मन्ता भवति मैत्रा. ६।११
(अथ) यदि गन्धमाल्यलोक-
कामो भवति सङ्कल्पादेवास्य
गन्धमाल्ये समुत्तिष्ठतः छान्दो. ८।२।६
(अथ) यदि गीतवादित्रकामो
भवति सङ्कल्पादेवास्य गीत-
वादिते समुत्तिष्ठतः छान्दो. ८।२।८
यदि गुलिकदूतोऽसि
यदि वा गुलिकः स्वयम् गारुडो. २३
यदिचनार्चिषमेवाभि सम्भवन्त्यर्चि-
षोऽहरह्न आपूर्यमाणपक्षमापूर्य-
माणपक्षाद्यान्षडुदङ्ङेति छान्दो. ४।१५।५
यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति भ. गी. ८।११

यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते
पद॰ संग्रहेण ब्रवीम्योमित्येतत्
[कठो. २।१५+ गुह्यका. ३९
यदि ज्ञानमनुरुद्धयते तदमृतो
भवति निरुक्तो. १
(अथ) यदि तस्याः कर्ता भवति
तत एव ब्रह्मयमात्मानं कुरुते छां. ६।१६।२
यदि ते कर्मविचिकित्सा वा वृत्त-
विचिकित्सा वा स्यात् तैत्ति. १।११।३
यदि ते नेन्द्रियार्थश्रीः स्पन्दते
हृदि वै द्विज । तदा विज्ञात-
विज्ञेया समुत्तीर्णो भवार्णवात् महो. ५।१७४
यदितोऽयास्य अङ्गिरसोऽन्येनो-
द्गायदिति वाचा च ह्येव स
प्राणेन चोद्गायदिति बृह. १।३।२४
यदि त्वचा स्पृष्टं यदि मनसा
ध्यातं यद्यपानेनाभ्यपानितं २ ऐत. ३।११
यदिदमभिमिश्वेलन्ति पोप्लूयं-
न्त्यद्भिरभिषीवयन्ति आर्षे. १।२
यदिदमद्वैव पराः परावतोऽभि-
पद्यन्ते सरूपन्नमेवैतत् आर्षे. ५।३
यदिदमद्यते (अन्नं) तस्यैष भोषी
भवति [बृ. उ. ५।९।१+ मैत्रा. २।८
यदिदमन्तरिक्षमनारम्भमाणमिव
केनाक्रमेण यजमानः स्वर्गं
लोकमाक्रमत इति बृह. ३।१।६
यदिदमन्तरेणैनदुपयन्ति पर्यास
इवैष दिवस्पृथिव्योरिति आर्षे. २।१
यदिदमस्मिन्नन्तःपुरुषे हृदय-
मस्मिन्हीमे प्राणाः प्रतिष्ठिताः छांदो. ३।१५।२४
(अथ) यदिदमस्मिन्ब्रह्मपुरे दहरं
पुण्डरीकं वेश्म दहरोऽस्मिन्न-
न्तराकाशस्तस्मिन्यदन्तस्तद-
न्वेष्टव्यम् छांदो. ८।१।१,२
यदिदमाकाशमिवतश्वेतश्च स्तन-
यन्ति विद्योतमाना इव आर्षे. १।१
यदिदमितश्वेतब्राण्डकोशादुदयन्ति
नापयन्त इव आर्षे. ३।२

यदिदमिति द्यावापृथिव्योर्लारम्भ-
मिव नोपयन्ति नाभिपश्यते
नाश्नुवन्ति आर्षे. ३।१
यदिदमित्थामालिख्य चिदीक्षध्वे छाग. १।३
यदिदमृग्यजुर्षैरेवोपवत्वं होत्रु-
(यतो) पाग्रासीत् छाग.२।१
यदिदमृग्यजुर्षैरेवोपवत्वं नो जुहुवु-
र्येनैनमुपाग्रासिषुः छाग. १।३
यदिदमेक इदम एवाहुस्तम एके
ज्योतिरेकेऽवकाशमेके परमं
व्योमैक आत्मानमेक इति आर्षे. ३।३
यदिदं किञ्च जगत्सर्वं प्राण एजति
निःसृतम् । महद्भयं वज्रमुद्यतं
य एतद्विदुरमृतास्ते भवन्ति कठो. ६।२
यदिदं किञ्च तत्सत्यमित्याचक्षते तैत्ति. २।६
यदिदं किञ्च तत्सृष्ट्वा तदेवानु-
प्राविशत् तैत्ति. २।६
(एवमेव) यदिदं किञ्च मिथुन-
मापिपीलिकाभ्यस्तत्सर्वमसृजत बृह. १।४।४
यदिदं किञ्चर्चो यजूꣳषि सामानि
छंदाꣳसि यज्ञान् प्रजाः पशून् बृह. १।२।५
यदिदं किञ्च सर्वमसृजत ग. पू. १।६
यदिदं किञ्चाश्वभ्य आक्रमिभ्य
आकीटपतङ्गेभ्यस्तत्तेऽन्नमापो
वास इति बृह. ६।१।१४
यदिदंकुरुपञ्चालानां ब्राह्मणानस्य-
वादीः किं ब्रह्म विद्वानिति बृह. ३।९।१९
यदिदं दृश्यते किञ्चित्तत्नास्तीति
भावय । यथा गन्धर्वनगरं यथा
वारि मरुस्थले म. पू. १।२०
यदिदं दृश्यते सर्वं जगत्स्थावर-
जङ्गमम् । तत्सुषुप्ताविव स्वप्नः
कल्पान्ते प्रविनश्यति महो. ४।४४
यदिदं ब्रह्मपुच्छाख्यं सत्यज्ञाना-
द्वयात्मकम् । सारमेव रसं
लब्ध्वा..सुखी भवति सर्वत्र क. रु. २९
(अथ) यदिदं ब्रह्मपुरं पुण्डरीकं
तस्मात्तडिदाभमात्रं दीपवत्
प्रकाशम् आ. प्र. १

यदिदं लिङ्गं सकलं सकलनिष्कलं च स्थूलं सूक्ष्मं च तत्परं स्थूले स्थूलं सूक्ष्मे सूक्ष्मं कारणे तत्परं च — सद्वानं. १४
यदिदꣳ सर्वमप्स्वोतं च प्रोतं च — बृह. ३।६।१
यदिदꣳ सर्वमहोरात्राभ्यामाप्तꣳ सर्वमहोरात्राभ्याममिपन्नम् — बृह. ३।१।४
यदिदꣳ सर्वमाददाना यन्ति तस्मादादित्या इति — बृह. ३।९।५
यदिदꣳ सर्वं पूर्वपक्षापरपक्षाभ्यामाप्तꣳ सर्वं पूर्वपक्षापरपक्षाभ्याममिपन्नम् — बृह. ३।१।५
यदिदꣳ सर्वं मृत्युनाऽऽप्तꣳ सर्वं मृत्युनाऽभिपन्नम् — बृह. ३।१।३
यदिदꣳ सर्वं मृत्योरन्नं, का स्वित्सा देवता यस्या मृत्युरन्नम् — बृह. ३।२।१०
यदि दातुमपेक्षते पुत्राय शुश्रूषवे दास्यत्यन्यस्मै शिष्याय वा [नृ. पू. १।४+ — ग. पू. २।१
यदि दीर्घा भवति महतीं श्रियमाप्नुयादमृतत्वं च गच्छति — ग. पू. २।३
यदि दीर्घा भवति महतीं श्रियमाप्नोत्यमृतत्वं च गच्छति — नृ. पू. ३।३
(अथ) यदि द्विमात्रेण मनसि सम्पद्यते सोऽन्तरिक्षं यजुर्भिरुन्नीयते — प्रश्नो.५।४
यदि धर्मोऽनुरुद्ध्यते तद्देवो भवति — निरुक्तो. १
यदि नागकदूतोऽसि यदि वा नागकः स्वयम् — गारुडो. २५
यदिन्द्र पवोद्रीथस्तद्वृषभ इति — शौनको. ४।७
यदिन्द्रियान्तं तन्मूर्तिसारकम् — मं. ब्रा. १।४
यदिन्द्रियान्तं तन्मूर्तिमत् — अद्वयता. ६
यदि पद्मकदूतोऽसि यदि वा पद्मकः स्वयं सचरति सचरति... — गारुडो. २०
यदि पौण्ड्रकालिकदूतोऽसि यदि वा पौण्ड्रकालिकः स्वयं — गारुडो. २४

यदि प्लुता भवति ज्ञानवान्भवत्यमृतत्वं च गच्छति [ग.पू.२।३+ — नृ. पू. ३।३
यदि भाः सदृशी सा स्यात् — भ. गी. ११।१२
(अथ) यदि भ्रातृलोककामो भवति सङ्कल्पादेवास्य भ्रातरः समुत्तिष्ठन्ति — छांदो. ८।२।३
यदि मन्यसे सु वेदेति — केनो. २।१
यदि मन्येतोपपदस्यामीत्योदनं धानाः सक्तून्... — सहवै. १२
यदि महापद्मकदूतोऽसि यदि वा महापद्मकः स्वयं — गारुडो. २१
(अथ) यदि मातृलोककामो भवति सङ्कल्पादेवास्य मातरः समुत्तिष्ठन्ति — छांदो. ८।२।२
यदि मामप्रतीकारं — भ. गी. १।४६
यदिमास्तिस्रोऽथासाविति चत्वारीति — शौनको. ४।७
यदिमा विस्फूर्जयत एवाभिपद्यन्ते — आर्षे. ८।१
यदिमांस्त्रीनभिवत्ते तस्मिन्नेवेति — शौनको. ४।७
यदिमे द्वे एवाक्षरे त्रिभिरुपन्वन्ति तत्त्रय इति — शौनको. ४।७
(अथ) यदि यजुष्टो रिष्येद्भुवः स्वाहेति दक्षिणाग्नौ जुहुयात् — छांदो. ४।१७।५
यदि योन्याः प्रमुच्येऽहं — गर्भो.८,९
यदि लूतानां प्रलूतानां यदि वृश्चिकानां यदि घोटकानां यदि स्थावरजङ्गमानां.. — गारुडो. २६
यदि वा इममभिमꣳस्ये कनीयोऽन्नं करिष्य इति — बृह. १।२।५
यदि वा कुरुते रागादधिकस्य परिग्रहम्। रौरवं नरकं गत्वा तिर्यग्योनिषु जायते — ना. प. ३।३०
यदि वाचाऽभिव्याहृतं यदि प्राणेनाभिप्राणितं — २ ऐत. ३।११
यदि वा तक्षकः स्वयं, स चरति... — गारुडो. १८
यदि वा न महिम्नीति — छांदो. ७।२४।१
यदि वासुकिदूतोऽसि यदि वा वासुकिः स्वयम् — गारुडो. १७
यदि विचिन्वति स विष्णुहा भवति — तुलस्यु. २

यदि विज्ञास्यामः सर्वं ह वो
वक्ष्याम इति प्रश्नो. १।२
यदि वेतरथा ब्रह्मचर्यादेव प्रव्रजे-
द्गृहाद्वा वनाद्वा [ना.प. ३।७७ +प. हं. प. १
[याज्ञव. १+ जाबालो. ४
यदि शङ्कुकदूतोऽसि यदि
वा शङ्कुः स्वयम् गारुडो. २२
यदि शैलसमं पापं विस्तीर्णं बहु-
योजनम्। भिद्यते ध्यानयोगेन
नान्यो भेदः कदाचन ध्या. बिं. १
(अथ) यदिष्टमित्याचक्षते ब्रह्म-
चर्यमेव तत् । ब्रह्मचर्येण ह्येवे-
ष्ट्वात्मानमनुविन्दते छांदो. ८।५।१
(अथ) यदि सखिलोककामो
भवति सङ्कल्पादेवास्य सखायः
समुत्तिष्ठन्ति छांदो. ८।२।५
(अथ) यदि सामतो रिष्येत्स्वः
स्वाहेत्याहवनीये जुहुयात् छांदो. ४।१७।६
(अथ) यदि स्त्रीलोककामो
भवति सङ्कल्पादेवास्य
स्त्रियः समुत्तिष्ठन्ति छांदो. ८।२।९
यदि स्वाममत्तामो नैवैषोऽस्य
दोषेण दुष्यति छान्दो. ८।१०।२
यदि स्वदेहमुत्स्रष्टुमिच्छा चेदु-
त्सृजेत्स्वयम् १ यो. त. १०७
(अथ) यदि स्वसृलोककामो
भवति सङ्कल्पादेवास्य स्वस्रारः
समुत्तिष्ठन्ति छांदो. ८।२।४
यदिह वा अपि बह्विवाग्नावभ्या-
दधति सर्वमेव तत्संदहत्येवं
हैवंविद्यद्यपि बह्विव पापं कुरुते बृह. ५।१४।८
यदि ह वा अप्यनेवंविन्महत्पुण्यं
कर्म करोति तद्धास्यान्ततः
क्षीयते बृह. १।४।१५
यदिह वा अप्येवंविद्बह्विव प्रति-
गृह्णाति न हैव तद्गायत्र्या
एकं चन पदं प्रति बृह. ५।१४।५
यदिह सर्वं वेत्स्येत्येति वमूचिरे,
नास्य तद्रूपं पर्याप्तमिति आर्षे. ४।१
यदि हेतोः फलात्सिद्धिः फलसिद्धि-
श्च हेतुतः । कतरत्पूर्वनिष्पन्नं
यस्य सिद्धिरपेक्षया अ. शां. १८
यदि ह्यहं न वर्तेय भ. गी. ३।२३
यदि ह्रस्वा भवति सर्वं पाप्मानं
तर-(दह-) त्यमृतत्वं च गच्छति
[नृ. पू. ३।३+ ग. पू. २।३
यदीं शृणोत्यलकं शृणोति नहि
प्रवेद सुकृतस्य पन्थाम् सहवै. १९+
[ऋ.मं.१०।७१।६+तै.आ.१।३।१ ऐ. आ. ३।२।४।२
यदु किञ्चेमाः प्रजाः शोचन्त्य-
मैवासां तद्भवति पुण्यमेवामुं
गच्छति बृह. १।५।२०
यदु कृष्णमिवाभूदित्यन्नस्य रूप-
मिति तद्विदांचक्रुः छांदो. ६।४।६
यदु च नार्चिषमेवाभिसम्भवन्ति
(मा. पा.) छां. उ.४।१५।५
(अथ) यदुचैस्तच्छरीरं, तस्मा-
दाविरावीर्हि शरीरम् १ ऐत. ३।६।७
(अथ) यदुचैस्तच्छरीरं, तस्मा-
त्तिर इव तिर इव ह्यशरीरम् १ ऐत. ३।६।७
यदुच्छिष्टमभोज्यं यद्वा दुश्चरितं
मम । सर्वं पुनन्तु मामापोऽस-
तां च प्रतिग्रहं स्वाहा [महाना. ११।२+
[प्रा. हो. १।९ तै.आ.१०।२३ १
यदुच्छ्वासनिःश्वासावेतावाहुती
समं नयतीति स समानः प्रश्नो. ४।४
(अथ) यदुज्ज्वलत्येतद्ब्रह्मणो रूपं
चैतद्विष्णोः परमं पदम् मैत्रा. ६।२६
(अथ) यदुदक आत्मानं पश्येत्त-
दभिमंत्रयेत् मयि तेज इन्द्रियं
यशो द्रविणं सुकृतमिति बृह. ६।४।६
यदुदितं भगवति तत्सर्वं शमय
शमय स्वाहा वनदु. १११
यदुदिति स उद्गीथो यत्प्रतीति स
प्रतिहारो यदुपेति स उपद्रवो
यन्नीति तन्निधनम छांदो. २।८।२
यदुद्गीथं समभिरभिप्रपद्यन्ते
तत्क्षमेति शौनको. ४।७

यदुपमन्त्रयते स धूमः छांदो. ५।८।१
यदुपानेषत्तैवद्वाह्मणा इति छाग. ९।२
यदु लोहितमिवाभूदिति तेजस-
  स्तद्रूपमिति छांदो. ६।४।६
यदुल्ब१ स मेघो नीहारो या
  धमनयस्ता नद्यो यद्वास्तेय-
  मुदक१ स समुद्रः छांदो. ३।१९।२
यदु शुक्लमिवाभूदित्यपा१ रूपमिति
  तद्विदांचक्रुः छांदो. ६।४।६
यदुष्णं तत्तेजो यत्संचरति स
  वायुः [गर्भो. १+ शारीरको. १
(अथ) यदूर्ध्वमपराह्णात्प्रागस्त-
  मयात्स उपद्रवस्तदस्यारण्या
  अन्वायत्ताः छांदो. २।९।७
यदूर्ध्वं गार्गि दिवो यदवाक्
  ...इत्याचक्षत आकाशे तदोतं
  च प्रोतं चेति बृह. ३।८।४
(अथ) यदूर्ध्वं मध्यन्दिनात्प्रा-
  गपराह्णात्स प्रतिहारस्तदस्य गर्भा
  अन्वायत्ताः छांदो. २।९।६
यदूर्ध्वं याज्ञवल्क्य दिवो यदवाक्
  पृथिव्या यदन्तरा द्यावा पृथिवी
  इमे यद्भूतं च भवच्च भविष्य-
  च्चेत्याचक्षते कस्मि१स्तदोतं च... बृह. ३।८।३,६
यदेतद्यजमनुर्वक्तमेतत् सहवै. ५
यदृचोऽधीते पय आहुतिभिरेव
  तद्देवांस्तर्पयति सहवै. १४
यदृचोऽधीते पयसः कुल्या अस्य
  पितॄन्स्वधा अभिवहन्ति सहवै. १४
यदृच्छया चोपपन्नं भ. गी. २।३२
यदृच्छालाभतो नित्यं प्रीतिर्या
  जायते नृणाम्। तत्सन्तोषं विदुः
  प्राज्ञाः परिज्ञानैकतत्पराः जा. द. २।५
यदृच्छालाभसन्तुष्टः ४।२२
यदृच्छालाभसन्तुष्टः सुवर्णादीन्
  परिग्रहेत् [ना. प. ३।८७+ भ. गी. ४।२२
यदेकमक्षरं निष्क्रियं शिवं सन्मात्रं
  परं ब्रह्म म. उ. १७।३१
यदेकमद्वितीयम् शांडि. २।१
यदेकमव्यक्तमनन्तरूपं विश्वं
  पुराणं तमसः परस्तात् [म.ना. १।५ त्रि. म. ना. ४।२
यदेकं चाप्यनेकं च साञ्जनं च
  निरञ्जनम्। यत्सर्वं चाप्य-
  सर्वं च यत्तत्त्वं तदसौ स्थितः अ. पू. ३।२।३
यदेकादशपदा तेन त्रिष्टुप्।
  यच्चतुष्पदा तेन जगती अव्यक्तो. ६
यदेतत्कर्णावपिधाय शृणोति
  स यदोत्क्रमिष्यन्भवति नैनं
  घोषं शृणोति मैत्रा. २।८
(अथ) यदेतत्पुरुषो रेतो भवत्या-
  दित्यस्य तद्रूपम् १ ऐत. ३।७।३
यदैतदनुपश्यत्यात्मानं (मा.पा.) बृह. ४।४।१५
यदेतदस्तहृदये चालकमिवाथैन-
  योरेषा सृतिः बृह. ४।२।३
यदेतदन्तरेद्यावापृथिवीअनमुवदिव... आर्षे. १।१
यदेतद्गच्छतीव च मनोऽनेन चैत-
  दुपस्मरत्यभीक्ष्णं सङ्कल्पः केनो. ४।५
यदेतद्धृदयं मनश्चैतत् २ ऐत. ६।२
यदेतद्रेतस्तदेतत्सर्वेभ्योऽङ्गेभ्यस्तेजः
  संभूतं २ ऐत. ४।१
यदेतद्विद्युतो व्यद्युतदा३ इति
  न्यमीमिषदा३ इत्यधिदैवतम् केनो. ४।४
यदेतन्महदुक्थं तदेतत्पञ्चविधं
  त्रिवृत्पञ्चदशं सप्तदशमेकविंशं
  पञ्चविंशमिति १ ऐत. ३।४।२
यदेतस्मिञ्छरीरे सुखं भवति (मा.) प्रश्नो. ४।६
यदेतस्मिन्मण्डलेऽर्चिर्दीप्यते अभ्र-
  म्यमाणमिव...तदेव मे ब्रह्म आर्षे. ५।२
यदेन१ साधवो धर्मा आ च
  गच्छेयुरुप च नमेयुः छांदो. २।१।५
यदेभिरच्छादयंस्तच्छन्दसां छन्दस्त्वं छांदो. १।४।२
यदेभिः स्यात्त्रिभिर्गुणैः भ. गी. १८।४०
यदेव किंच प्रतिजग्राहमग्निर्मा
  तस्मादनृणं कृणोतु सहवै. १०
यदेव जाग्रद्भयं पश्यति तदत्रा-
  विद्यया मन्यते बृह. ४।३।२०

यदेव तीव्रसंवेगाद्दृढं कर्म कृतं पुरा । तदेव वासनाव्यूहो दैवशब्देन कथ्यते — भवसं. १।४६

यदेव ते कश्चिदब्रवीत्...मे वट्कुवार्ष्णः (मा. पा.) — बृ. उ. ४।१।४

यदेव ते कश्चिदब्रवीत्तच्छृणवामेत्यब्रवीन्म उदङ्कः शौल्बायनः प्राणो वै ब्रह्मेति [बृह. ४।१।३, ४,५,६,७

यदेव भगवान् वेद तदेव मे ब्रूहि — बृह. २।४।३

यदेव भगवान्वेद तदेव मे विब्रूहि — बृह. ४।५।४

यदेवमेतदन्वायत्तमुपास्ते सर्वमायुरेति वसीयान्भवति स य एतदेवमुपास्ते — आर्षे. ४।३

यदेव विद्यया करोति श्रद्धयोपनिषदा तदेव वीर्यवत्तरं भवति — छांदो. १।१।१०

यदेव साक्षादपरोक्षाद्ब्रह्म य आत्मा सर्वान्तरस्तं मे व्याचक्ष्व — बृह. ३।४।२+५।१

यदेवेदमप्रतिरूपं जिघ्रति स एव स पाप्मा — बृह. १।३।३

यदेवेदमप्रतिरूपꣳ शृणोति स एव स पाप्मा — बृह. १।३।५

यदेवेदमप्रतिरूपं पश्यति स एव स पाप्मा — बृह. १।३।४

यदेवेदमप्रतिरूपं वदति स एव स पाप्मा — बृह. १।३।२

यदेवेह तदमुत्र यदमुत्र तदन्विह । मृत्योः स मृत्युमाप्नोति य इह नानेव पश्यति — कठो. ४।१०

यदेष आकाश आनन्दो न स्यात् — तैत्ति. २।७

यदेष पुरोगा तदेष मे भागधेयी स्यादिति — शौनको. १।३

यदेष यन्निदꣳ सर्वं पुनाति तस्मादेष एव यज्ञस्तस्य मनश्च वाक्च वर्तनी — छांदो. ४।१६।१

यदेष सर्वाणि भूतान्यनुप्रविष्टस्तन्मर्त्यौ आविवेशेति — शौनको. ४।८

यदैतमनुपश्यत्यात्मानं देवमञ्जसा । ईशानं भूतभव्यस्य न ततो विजुगुप्सते — बृह. ४।४।१५

यदैनज्जरामाप्नोति प्रध्वꣳसते वा किं ततोऽतिशिष्यते — छांदो. ८।१।४

यदैवैनं समापयति तथा समापयितव्यो भवति — कौ. उ. २।१५

यदोङ्कारस्तस्माद्विद्वानेतेनैवायतनेनैकतरमन्वेति — प्रश्नो. ५।२

यदोमित्येतदक्षरम् — मैत्रा. ६।५

यदोषधीभिः पुरुषान् पशूꣳश्च विवेश भूतानि चराचराणि — महाना. १।४

यदौपयामानि [छाग. २।२+ ४।२

यदौष्ण्यं स पुरुषोऽथ यः पुरुषः सोऽग्निर्वैश्वानरः — मैत्रा. २।८

यद्गत्वा न निवर्तन्ते — भ. गी. १५।६

यद्गायत्री तद्गायत्रं, यद्वसवस्तद्वसव्यं — शौनको. २।१

यद्गायत्री वै पुरोगास्तत्किमेस्यादिति — शौनको. २।२

यद्गार्हपत्यात् प्रणीयते प्रणयनाद्दाहवनीयः प्राणः — प्रश्नो. ४।३

यद्दक्षिणां यत्प्रतीचीं यदुदीचीं यदूर्ध्वं यदन्तरा दिशो यत्सर्वं प्रकाशयति तेन सर्वान्प्राणान्रश्मिषु सन्निधत्ते — प्रश्नो. १।६

यद्दर्शे तद्दर्शम् , यत्पौर्णमास्ये तत्पौर्णमास्यं, यद्वसन्ते केशश्मश्रुलोमनखानि वापयेत्सोऽस्याग्निष्टोमः — कठश्रु. २१

यद्दस्रावपि कक्ष्यं वामिति — बृह. २।५।१७

यद्दिवा च नक्तं चैनश्चकृम तस्यावयजनमसि स्वाहा — महाना. १४।१

यद्दिशो वेत्थ सदेवाः सप्रतिष्ठाः — बृह. ३।९।१९

यद्दृश्यं तदसद्विद्धि वेदं सर्वमसत्सदा । शाक्तं सर्वमसद्विद्धि न मां विद्धि तथाविधम् — ते. बिं. ३।५२

यद्दृष्टं दृष्टमनुपश्यति...सच्चासच्च सर्वं पश्यति — प्रश्नो. ४।५

यद्देवादेवहेळनं देवासश्चकृमा वयं — सहैव. ३

यद्देवा देवहेळनं यददीव्यं नृणामहं बभूवायुष्टे विश्वतो दधदित्येतैराज्यं जुहुत — सहैव. ११

वाक्य	स्थान
यद्देवानां चक्षुष्या गौ अस्ति यदेव किंच प्रतिजग्राह- मग्निर्मा तस्मादनृणं कृणोतु	सहवै. १०
यद्देवाश्च प्राणाश्च तद्यं तद्देतया वाचाऽभिव्याह्रियते	कौ. त. १।६
यद्दोषा लवणमुदकेऽवाधा अङ्ग तदाहरेति तद्धावमृश्य नविवेद	छांदो. ६।१३।१
यद्द्रवं तदापः	शारीरको. १
यद्द्वात्रिंशदक्षरा तेनानुष्टुप्	अव्यक्तो. ६
(अथ) यद्द्वितीयममृतं तद्रुद्रा उपजीवन्तीन्द्रेण मुखेन न वै देवा अश्नन्ति न पिबन्त्ये- तदेवामृतं दृष्ट्वा तृप्यन्ति	छांदो. ३।७।१
यद्द्वितीयं तन्मध्यमं वलयं भवति	नृ. षट्च. ३
यद्द्विः परिमृजति तेन यजूंषि... प्रीणाति	सहवै. १५
(अथ) यद्द्वितीये स कोशे स्वपिति तदेमं च लोकं परं च लोकं पश्यति सर्वाञ्छब्दान्विजा- नाति स सम्प्रसाद इत्याचक्षते	सुबालो. ४।३
यद्ध किञ्चाश्रुतेत्येनं मन्यते यद- न्तरिक्षलोकमश्रुतेत्येनं मन्यते	१ ऐत. ३।३।१
यद्ध किञ्चेदं प्रेता ३ इ तदसौ सर्वसत्ति	१ ऐत. १।२।७
यद्धर्मस्तस्माद्धर्मात् परं नास्त्यतो अबलीयान् बलीयांसम- माशंसते	बृह. १।४।१४
यद्धविरग्नौ हूयते तदादित्यं गमयति तत्सूर्यो रश्मिभिर्वर्षति तेनान्नं भवत्यन्नाद्भूतानामुत्पत्तिः	मैत्रा. ६।३७
(अथ) यद्धसति यज्जक्षति य- न्मैथुनं चरति स्तुतशस्त्रैरेव तदेति	छांदो. ३।१७।३
यद्धस्ताभ्यां चकर किल्बिषा- ण्यक्षाणां वग्नुमुपजिघ्रमानः	सहवै. ५
यद्धि किञ्चाममयतेऽनेनैव तदद्यत इह प्रतितिष्ठति	बृह. १।३।१७
यद्धि किञ्चानुजानात्योमित्येव तदा हैषा एव समृद्धिर्यदनुज्ञा	छांदो. १।१।८
यद्धितं तदसद्विद्धि न मां विद्धि तथाविधम्	ते. बिं. ३।५३
यद्धि परं तपस्तद्दुर्धर्षं तद्दुराधर्षं	महाना. १६।१२
यद्धि भूतमात्रा न स्युर्न प्रज्ञा- मात्राः स्युः	कौ. त. ३।८
यद्धीरामयस्तस्माद्धिरण्मयः	१ ऐत. १।३।१
यद्ध्येतदन्यत्रास्मत्स्याच्छ्वानो वैनदद्युर्वयांसि वैनद्वि- मथ्नीरन्निति	बृह. ३।९।२५
यद्ध्येतदवेदिष्यन् कथं मे नावक्ष्य- न्निति भगवांस्त्वेव मे तद्ब्रवीत्विति	छांदो. ६।१।७
यद्भूतानस्य लभेमहि लभेमहि धनमात्राम्	छांदो. १।१०।६
यद्ब्राह्मं तन्मन्त्रः	नृ. षट्च. ३
यद्बिभर्ति तस्माद्भरद्वाजः	१ ऐत. २।२।१
यद्ब्रह्म तज्ज्योतिः	मैत्रा. ६।३
यद्ब्रह्म रुद्रहृदयमहाविद्याप्रका- शितम्। तद्ब्रह्ममात्रावस्थान- पदवीमधुना भजे	रुद्रहृ.शीर्षके
यद्ब्रह्मविदो वदन्ति परा चैवापरा च	मुण्ड. १।४
(यो ह वै) यद्ब्रह्माण्डस्यबहिर्व्याप्तम्	रामो. ४।२
यद्ब्राह्मणस्तस्मात्तर्हि तेक्षिणष्ठे तपति तदेषाऽभ्युक्ता	सहवै. १७
यद्ब्राह्मणानीतिहासान् पुराणानि कल्पान् गाथानाराशंसी- र्मेदसः कुल्या अस्य पितॄन् स्वधा अभिवहन्ति	सहवै. १४
यद्ब्राह्मणानीतिहासान् पुराणानि कल्पान् गाथानाराशंसीर्मेदा- हुतयो देवानामभवन् ताभिः क्षुधं पाप्मानमपाघ्नन्	सहवै. ११
यद्ब्राह्मणानीतिहासान् पुराणानि कल्पान्गाथानाराशंसीर्मेदाहु- तिभिरेव तद्देवांस्तर्पयति	सहवै. १४
यद्ब्राह्मणेभ्योऽन्नं ददाति तन्मनु- ष्ययज्ञः सन्तिष्ठते	सहवै. १४
यद्भद्रं तन्न आसुव [म.ना. १२।२+	त्रिसुप. २
यद्भद्रं इति च यजुर्वेदः	सन्ध्यो. २६

यद्भूतजालं निखिलं वै विसृष्ट-
मेवाहरं त्वां न विदन्ति केचि-
दृष्टयान्तरेण परिपश्यन्ति मूढाः — २ रुद्रो. ७३
यद्भूतयोनिं परिपश्यन्ति धीराः (मा.) — मुण्डको. १।१।६
यद्भूतं यच्च भव्यम् [चित्यु. १२।१ — ऋ.मं.१०।९०।२
यद्भूतेभ्यो बलिं हरति तद्भूतयज्ञः
सन्तिष्ठते — बृहद्वै. १४
यद्भूयुगातीतं तदमूर्तिं तारकमिति — मं. ब्रा. १।४
यद्भूयुगातीतं तन्मूर्तिमत् — अद्वयता. ५
यद्भूविक्षेपमापन्नो ह्यब्जयोनिस्त-
दितरे चामरमुख्याः सृष्टिचक्र-
प्रणेतारः सम्बभूवुः — लक्ष्म्यु. ९
यद्यग्निं न विन्देदप्सु जुहुयात् — जाबालो. ४
यद्यच्छरीरमादत्ते तेनतेन स युज्यते — श्वेताश्व. ५।१०
यद्यच्छुद्धमशुद्धं वा करोत्यामरणा-
न्तिकम् । तत्सर्वं ब्रह्मणे कुर्यात्
प्रत्याहारः स उच्यते — जा. द. ७।३
यद्यच्छृणोति कर्णाभ्यां तत्तदात्मेति
भावयेत् । लभते नासया
यद्यत्तत्तदात्मेति भावयेत् — १ यो.त. ७०
यद्यजूंषि घृतस्य कूल्याः...
अस्य पितॄन्स्वधा अभिवहति — बृहद्वै. १४
यद्यजूंषि घृताहुतयो यत्सामानि
सोमाहुतयो यदथर्वाङ्गिरसो
मध्वाहुतयो... ताभिः क्षुधं
पाप्मानमपाघ्नन् — बृहद्वै. १३
यद्यजूंषि घृताहुतिभिर्यत्सामानि
सोमाहुतिभिर्यदथर्वाङ्गिरसो
मध्वाहुतिभिर्यद्ब्राह्मणानीति-
हासपुराणानि कल्पान्गाथा-
नाराशंसीर्मेदाहुतिभिरेव
तदेवांस्तर्पयति — बृहद्वै. १४
(अथ) यद्यज्ञ इत्याचक्षते ब्रह्म-
चर्यमेव तत् — छांदो. ८।५।१
यद्यत्पश्यति चक्षुर्भ्यां तत्तदात्मेति
भावयेत् — १ यो. त. ६९
यद्यत्पश्यति तत्सर्वमात्मेविप्रत्याहारः — शांडि. १।८।१

यद्यत्प्रीतिकरं पुंसां वस्तु राजेन्द्र
जायते । तदेव दुःखवृक्षस्य
बीजत्वमुपगच्छति — भवसं. १।२९
यद्यत्सम्भाव्यते लोके सर्वसङ्कल्प-
सम्भ्रमः — ते. विं. ५।४९
यद्यत्संवेद्यते किञ्चित्तत्रास्थापरि-
वर्जनम् — महो. ४।११०
यद्यत्सावयवं तत्तदनित्यमित्यनु-
मानाच्चेति प्रत्यक्षेण दृष्टत्वाच्च — त्रि. म. ना. २।१
यद्यत्स्वाभिमतं वस्तु तत्त्यजन्
मोक्षमश्नुते — महो. ४।८८
यद्यदाचरति श्रेष्ठः — भ. गी. ३।२१
यद्यद्ध्यायति चित्तेन यद्यत्सङ्कल्पते
क्वचित्... सर्वं शशविषाणवत् — ते.विं. ५।८५-८९
यद्यद्विभूतिमत् सत्त्वं — भ. गी. १०।४१
यद्यनन्तकवृतोऽसि यदि वाऽनन्तकः
स्वयम्... इन्द्रस्य वज्रेण स्वाहा — गारुडो. १६
(अथ) यद्यन्नपानलोककामो
भवति सङ्कल्पादेवास्यान्नपाने
समुत्तिष्ठतस्तेनान्नपानलोकेन
सम्पन्नो महीयते — छां. उ. ८।२।७
यद्यपानेनाभ्यपानितम् — २ ऐत. ३।११
यद्यपि दशरात्रीर्नाश्नीयाद्यद्युह
जीवेदथवाऽद्रष्टाऽश्रोताऽमन्ता
ऽबोद्धाऽकर्ताऽविज्ञाता भवति — छां. उ. ७।९।१
यद्यपुत्रो भवत्यात्मानमेवेदं
ध्यात्वाऽनवेक्षमाणः प्राची-
मुदीचीं वा दिशं प्रव्रजेत् — १ सं. सो. १।२
यद्यपुत्रो भवत्यात्मानं ध्यात्वा-
ऽनवेक्षमाणः प्राचीमुदीचीं वा.. — कठश्रु. ५
यद्यपेक्षाऽस्ति तदनुरूपो भवति — ना. प. ५।१४
यद्यप्येतच्छुष्काय स्थाणवे (मा.) — छां. उ. ५।२।३
यद्यप्येते न पश्यन्ति — भ. गी. १।३८
यद्यप्येनच्छुष्काय स्थाणवे ब्रूया-
ज्जायेरन्नेवास्मिञ्छाखाः प्ररोहेयुः
पलाशानीति — छान्दो. ५।२।३
(अथ) यद्यप्येनानुत्क्रान्तप्राणा-
ञ्छूलेन समासं व्यतिषं दहेत्
नैनं ब्रूयुः पितृहाऽसीति — छां. उ. ७।१५।३

यद्यद्भवन्ति तत्तदा भवन्ति (मा.) छांदो. ६।९।३

(अथ) यद्यल्पविच्चित्तवान्भवति
तस्मा एवोत शुश्रूषन्ते चित्तꣳ
ह्येवैषामेकायनं चित्तमात्मा
चित्तं प्रतिष्ठा चित्तमुपास्स्वेति छान्दो. ७।५।२

यद्यशक्तो भवति योऽक्लेशः स
तपस्यते स तप इति कठश्रु. ८

यद्यहमिममवेदिषं कथं ते
नावक्ष्यमिति प्रश्नो. ६।१

यद्यहमिममवेदिष्यं (मा. पा.) प्रश्नो. ६।१

यद्यहमिमां न वेदिष्यं कथं ते
नावक्ष्यमिति छांदो. ५।३।५

यद्याज्या यदनुवाक्या यत्प्रात-
रनुवाको यत्प्रउगं यदाज्यं
यन्मरुत्वतीयमिति छाग. २।२

यद्यातुरः स्यान्मनसा वाचा (वा)
सन्न्यसेदेषपन्थाः [जाबालो.५ प. हं. प. ५

यद्यातुरो वाऽग्निं न विन्देदप्सु
जुहुयात् प. हं. प. ४

यद्युचरेत्समापिपयिषेत्तेनो एतस्यै
देवतायैसायुज्यꣳ सलोकतां
जयति बृ. उ. १।५।२३

यद्युत्तरोत्तराभावे पूर्वरूपं तु
निष्फलम् । निवृत्तिः परमा
तृप्तिरानन्दोऽनुपमः स्वतः अध्यात्मो. २९

यद्युवेयुवेह वा विह्वयिष्यामि कर्तुं
पतिष्यामीत्येवमनृतादात्मानं
जुगुप्सेत् महाना. ७।९

(अथ) यद्येनमुभयमन्तरे ब्रुवन्तं
पर उपवदेत् ३ ऐत. १।३।३

(अथ) यद्येनमूष्मसूपालभेत
प्रजापतिꣳ शरणं प्रपन्नोऽभूवं छांदो. २।२२।४

(अथ) यद्येनं निर्भुजं ब्रुवन्त-
मुपवदेत् ३ ऐत. १।३।१,१

(अथ) यद्येनं प्रतृण्णं ब्रुवन्तं
पर उपवदेत् ३ ऐत. १।३।२

(अथ) यद्येनꣳ स्पर्शेषूपालभेत
मृत्युꣳ शरणं प्रपन्नोऽभूवम् छांदो. २।२२।४

यद्येवं ब्रह्मणि स्यात्तत्को न मुच्येत
बन्धनात् मैत्रा. ६।३४

यद्व्यवहार्यमचिन्त्यमव्यपदेश्य-
मेकात्मप्रत्ययसारं प्रपञ्चोपशमं
शिवं शान्तमद्वैतं चतुर्थं
मन्यन्ते स ब्रह्मप्रणवः ना. प. ८।२४

यद्व्याचष्टे स आचार्यस्तेनैव स
मृतोऽधो गच्छति नृ. पू. १।३

(तत्र) यद्रक्तं तत्पुंसोरूपमभूत् ।
यद्धरितं तन्मायायाः अव्यक्तो. १

यद्रमते तदुपसदः महाना. १८।१

(शरीरे) यद्द्रवं ता आपः गर्भो. १

यद्राजाभिक्रयणानि [छाग.२।२+ ४।२

यद्राज्यसुखलोभेन भ. गी. १।४५

यद्रात्र्यात्कुरुते पापं तद्रात्र्यात्प्रति-
मुच्यते महाना. ११।६

यद्रात्र्या पापमकार्षं, मनसा वाचा
हस्ताभ्याम् , पद्भ्यामुदरेण
शिश्ना , रात्रिस्तदवलुम्पतु महाना. ११।४

यद्रूपं सद्रूपं तन्मायासंवलितोऽयं
जीवसञ्ज्ञः कर्मकाण्डरतो भवति सामर. ९९

(अथ) यद्वत्र कश्चिच्छून्यागारे
कामिन्यः प्रविष्टाः स्पृशतीं-
न्द्रियार्थांस्तद्वधो न स्पृशति
प्रविष्टान्सन्न्यासी योगी
चात्मयाजी चेति मैत्रा. ६।१०

यद्वन्मृदि घटभ्रान्तिः शुक्तौ हि
रजतस्थितिः । तद्वद्ब्रह्मणि
जीवत्वं वीक्षमाणे विनश्यति यो. शि. ४।१३

यद्वर्षति स प्रस्तावः छांदो. २।४।१

यद्वसन्ते केशश्मश्रुलोमनखानि
वापयेत्सोऽस्याग्निष्टोमः कठरु. ३

यद्वा अयं विद्वान्नेत्यमाचित्तः स्यात् छांदो. ७।५।२

यद्वा अहमायतनमस्मि, त्वं तदा-
यतनमसीति मनः (उवाच) बृह. ६।१।१४

यद्वा अहं प्रजातिरस्मि, त्वं तत्प्र-
जातिरसीति रेतः (उवाच) बृह. ६।१।१४

यद्वा अहं प्रतिष्ठाऽस्मि, त्वं तत्प्र-
तिष्ठोऽसीति चक्षुः (उवाच) बृह. ६।१।१४

यद्वा अहं वसिष्ठाऽस्मि, त्वं तद्व- सिष्ठोऽसि (इति वागुवाच) बृह. ६।१।१४
यद्वा अहं सम्पदस्मि, त्वं तत्सम्प- दसीति श्रोत्रं (उवाच) बृह. ६।१।१४
यद्वा ऋते प्राणाद्रेतः सिच्येत पूयेत सम्भवेत् ३ ऐत. २।२।२
(तदाहुः) यद्वा एतस्य वीर्यं यच्छुक्रं यज्ज्योतिर्यदमृतं यदजर्यं तदक्षरमिति शौनको. २।३
यद्वा एतेऽमुर्ह्यध्रियन्त तदेवाप्यय कुर्वन्ति बृह. १।५।२३
यद्वा कृतममृतश्वराणां यत्सर्वनि- ष्ठमजरं समस्तम् पारमा. १।८
(ह्रीं) यद्वाग्वदन्त्यविचेतनानि राष्ट्री देवानां निषसाद मन्द्रा। चतस्र ऊर्ध्वं(ऊर्जं) दुदुहे पयांसि क्वस्विदस्याः परमंजगाम हयग्री.६
[सरस्व. ७ ऋ.मं.८।१००।१
यद्वाच ओमिति यच्च नेति यच्चास्याः क्रूरं यदि चोल्बणिष्णु १ ऐत. ३।८।३
यद्वाचाऽनभ्युदितं येन वागभ्यु- द्यते । तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते केनो. १।४
यद्वाचा यन्मनसा बाहुभ्या- मूरुभ्यामष्ठीवद्भ्याꣳ शिश्नै- र्यदनृतं चकृम वयम् सहवै. ४
यद्वा जयेम यदि वा नो जयेयुः भ. गी. २।६
यद्वा प्रज्ञामात्रा न स्युर्न भूतमात्राःस्युः कौ. त. ३।८
यद्वायुरन्नमायुर्वा एष यद्वायुः २ऐत. ३।१०
यद्वाव विजिज्ञासितव्यम् छांदो. ८।१।२
यद्वां पूर्वे परिविष्टं यदग्नौ तस्मै गोत्रायेह जायापती सꣳरभेथाम् सहवै. १०
यद्विकारि यतश्च यत् भ. गी. १३।४
यद्विजृम्भते तद्विद्योतिते..(मा.पा.) बृ. उ. १।१।१
यद्विज्ञातमिवाभूदित्येतासामेव देवतानाꣳ समासः छांदो. ६।४।७
यद्विज्ञानरूपं यद्देवाः सर्वे ब्रह्म ज्येष्ठमुपासते ग. शो. ४।१
यद्विज्ञानात् पुमान् सद्यो जीव- न्मुक्तत्वमाप्नुयात् महो. २।३७
यद्विद्वाꣳसश्चाविद्वाꣳसश्चैनश्चकृम तस्यावयजनमसि स्वाहा महाना. १४।२
यद्विद्युतोरोहितं रूपꣳ तेजसस्तद्रूपं छांदो. ६।४।४
यद्विद्युद्विद्योतते ऽथैतन्म्रियते यच्च विद्योतते तस्य वायुमेव तेजो गच्छति कौ. त. २।१२
यद्विभाति चिन्मात्रम् बहृचो. ३
यद्विश्वमसृजन्त तस्माद्विश्वसृजः नृ. पू. १।७
यद्वृक्षो वृक्णो रोहति मूलान्नवतरः पुनः । मर्त्यः स्विन्मृत्युना वृक्णः कस्मान्मूलात्प्ररोहति बृह. ३।९।२८
यद्वेत्थ तेन मोपसीद तत ऊर्ध्वं वक्ष्यामीति छांदो. ७।१।१
यद्वेदविद्याधिगमः स्वधर्म- स्यानुचरणं... मैत्रा. ४।३
यद्वेदेषूक्तं तद्विद्वांस उपजीवन्ति मैत्रा. ७।१०
यद्वेव समः प्लुषिणा समो मशकेन समो नागेन सम एभिस्त्रिभि- र्लोकैः समोऽनेन सर्वेण तस्माद्वेव सामाश्नुते बृह. १।३।२२
यद्वै किञ्चानूक्तं तस्य सर्वस्य ब्रह्मेत्येकता बृह. १।५।१७
यद्वै किञ्चैतदध्यगीष्म नामैवैतत् छांदो. ७।१।३
यद्वै चतुर्थं तत्तुरीयं दर्शतं पदं बृह. ५।१४।३
यद्वै चतुर्थं तत्तुरीयं दर्शतं पदं परोरजाय एष तपतीति गायत्र्यु. २
यद्वै तत्पुरुषे शरीरमिदं वाव तद्य- दिदमस्मिन्नन्तःपुरुषे हृदयम- स्मिन्हीमे प्राणाः प्रतिष्ठिता एत- देव नातिशीयन्ते छांदो. ३।१२।४
यद्वैतत्सुकृतम् तैत्ति. २।७
यद्वै तन्न जिघ्रति जिघ्रन्वै तन्न जिघ्रति नहि घ्रातुर्घ्रातेर्विपरि- लोपो विद्यतेऽविनाशित्वात् बृह. ४।३।२४
यद्वै तन्न मनुते मन्वानो वै तन्न मनुते नहि मन्तुर्मतेर्विपरिलोपो विद्यतेऽविनाशित्वात् बृह. ४।३।२८

यद्वै तन्न रसयते रसयन्वै तन्न रसयते नहि रसयितू रसयतेर्विपरिलोपो विद्यतेऽविनाशित्वात् बृह. ४।३।२५

यद्वै तन्न वदति वदन्वै तन्न वदति नहि वक्तुर्वक्तेर्विपरिलोपो विद्यतेऽविनाशित्वात् बृह. ४।३।२६

यद्वै तन्न विजानाति विजानन्वै तन्न विजानाति नहि विज्ञातुर्विज्ञातेर्विपरिलोपो विद्यतेऽविनाशित्वात् बृह. ४।३।३०

यद्वै तन्न शृणोति शृण्वन्वै तन्न शृणोति नहि श्रोतुः श्रुतेर्विपरिलोपो विद्यतेऽविनाशित्वात् बृह. ४।३।२७

यद्वै तन्न स्पृशति स्पृशन्वै तन्न स्पृशति नहि स्प्रष्टुः स्पृष्टेर्विपरिलोपो विद्यतेऽविनाशित्वात् बृह. ४।३।२९

यद्वै तत्पुरुषेतीदं वाव तद्योऽयं बहिर्धा पुरुषादाकाशो यो वै स बहिर्धा पुरुषादाकाशः छांदो. ३।१२।७

यद्वै तत्परं ब्रह्म [अ.शिर. २।४+ बटुको. १९

यद्वैतत्पुरुषा... छाग. १।३

यद्वै प्राणिति स प्राणो यदपानिति सोऽपानोऽथ यः प्राणापानयोः सन्धिः स व्यानो यो व्यानः सा वाक् छांदो. १।३।३

यद्वै भूः स ऋग्वेदः, यद्भुव इति स यजुर्वेदः, स्वरिति स्वर्गो लोकः स सामवेदः, तदिति सोऽथर्ववेद इति सन्ध्यो. २०

यद्वै वाङ्क्रामति मनसा सह गणेशो. ३।२

यद्वो देवाश्चकृम जिह्वया गुरु मनसो वा प्रयुती देवहेडनम्। (हेळनं) [महाना. १४।२+ ऋ.मं.१०।३७।१२

यद्व्यज्यते तदव्यक्तस्य व्यक्तत्वम् अव्यक्तो. ४

यद्वैव सर्वं स्वबुद्ध्या वशीकृत्य स्वव्यतिरिक्तं सर्वं कृतकं नश्वरमिति मत्वा विरक्तः पुरुषः सर्वदा ब्रह्माहमिति व्यवहरेत् ना. प. ६।२

यन्त्रराजाय विद्महे महायन्त्राय धीमहि। तन्नो यन्त्रः प्रचोदयात् वनदु. १५०

यन्त्रस्यपूर्वद्वारे द्वारश्रियैक्षेत्रपालाय मायायै नमः सूर्यता. ४।१

यन्त्रं विना देवता च न प्रसीदति सर्वदा सूर्यता. ५।१

यन्त्रारूढानि मायया भ. गी. १८।६१

यत्र ज्वलति तस्यादित्यमेव तेजो गच्छति कौ. त. २।१२

यत्रत्यादेवपरंश्रत्कोपरशिवः सि. वि. ३

यन्नमस्यं चिदाख्यातं यत्सिद्धीनां च कारणम्। येन विज्ञातमात्रेण जन्मबन्धात्प्रमुच्यते यो. शि. ३।१

यन्न सन्तं न चासन्तं नाश्रुतं न बहुश्रुतम्। न सुवृत्तं न दुर्वृत्तं वेद कश्चित्स ब्राह्मणः ना. प. ४।३४

यन्नीलं परः कृष्णं तत्साम तदेतस्यामृच्यध्यूढ९ साम छां. उ. १।६।५,६

यन्नु इयं...कथं तेनामृता स्यामिति–(मा. पा.) बृ. उ. २।४।२

यन्नु म इयं भगोः सर्वा पृथिवी वित्तेन पूर्णा स्यात् [बृह. २।४।२+४।५।३

यन्नु हो तद्गायत्रीविदब्रूथाः, अथ कथ९ हस्तीभूतो वहसीति बृह. ५।१४।८

यन्नारसिंहं तत्प्रथमस्य, यन्महालक्ष्म्यं तद्द्वितीयस्य...यत्क्रोधदैवतं तच्छष्ठस्य। तदेतानि षण्णां नारसिंहचक्राणां षडान्तराणि वलयानि भवन्ति नृ. षट्च. ४

यन्नारसिंहाय तत्प्रथमस्य यद्विद्महे तद्द्वितीयस्य नृ. षट्च. ५

यन्नैष एतत्सुप्तोऽभूद्य एष विज्ञानमयः पुरुषः बृ. उ. २।१।१६

यन्मायार्थं तदसत्सदा। यद्भितं तदसद्विद्धि ते. बिं. ३।५३

यन्मदिमे विष्यति तन्म एकं ते मे अक्षमहसु तानन्वक्षम् बा. मं. ३।१

यन्मनसा न मनुते, येनाहुर्मनो मतम् । तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते केनो. १।६
यन्मनस्त्रिजगत्सृष्टिस्थितिव्यसनकर्मकृत् । तन्मनो विलयं याति तद्विष्णोः परमं पदम् [ध्या.बि.२५+ मं.ब्रा. ५।१
यन्मनुष्यान् वासयते यदेभ्योऽशनं ददाति, तेन मनुष्याणां (आत्मा) बृह. १।४।१६
यन्मनोऽनुविधीयते भ. गी. २।६७
यन्मन्त्रेक्षितलाञ्छिताभमनघं मृत्युश्च वज्राशिषो...वन्देऽभीष्टगणाधिपं भयहरं विघ्नौघनाशं परम् वनदु. ८६
यन्मन्युर्जायामावहदित्यध्यात्ममन्त्राञ्जपेत् कठश्रु. २२
यन्मया परिजनस्यार्थे कृतं कर्म शुभाशुभम् । एकाकी तेन दह्येऽहं गतास्ते फलभोगिनः गर्भो. ५
यन्मया पूरितं विश्वं महाकल्पाम्बुना यथा वराहो. २।३६
यन्मया भुक्तमसाधूनां पापेभ्यश्च प्रतिग्रहः महाना. ५।१५
यन्मयामनसावाचाकृतमेनःकदाचन सहवै. १०
यन्मयि माता यदा पिपेष सहवै. ४
यन्मरणं तदवभृथः (आत्मयज्ञस्य) महाना. १८।१
(अथ) यन्मर्त्यैः सन्नमृतानसृजत बृह. १।४।६
यन्महाचक्रयज्योतिरात्मातत्तृतीयस्य नृ. षट्च. ६
यन्महावाक्यसिद्धान्तमहाविद्याकलेवरम् । विकलेवरकैवल्यं रामचन्द्रपदं भजे महावा.शीर्षक
यन्महावीरसम्भरणानि [छाग.२।२+ ४।२
यन्महोपनिषद्वेद्यं चिदाकाशतया स्थितम् । परमाद्वैतसाम्राज्यं तद्राममात्रं मे गतिः महो. शीर्षकं
यन्मातरं पितरं वाजिर्हिंसिम सहवै. १०
यन्मायया मोहितचेतसो मामात्मानमापूर्णमलब्धवन्तः । परं विदग्धोदरपूरणाय भ्रमन्ति काका इव सूरयोऽपि मैत्रे. २।२५
यन्मां वदसि केशव भ. गी. १०।१४
यन्मुखं तदाहवनीयः महाना. १८।१
(अथ) यन्मूर्तं तदसत्यं, यदमूर्तं तत्सत्यं तद्ब्रह्म मैत्रा. ६।३
यन्मूलं सर्वलोकानां यन्मूलं चित्तबन्धनम् । मूलबन्धः सदा सेव्यो योग्योऽसौ ब्रह्मवादिनाम् ते. बि. १।२७
यन्मूले सर्वतीर्थानि यन्मध्ये ब्रह्मदेवताः तुलस्यु. ९
यन्मृत्युर्जयमावहमित्यध्यात्ममंत्रान्पठेत् कठरु. ४
यन्मृत्युर्नावपश्यति,यंब्रह्मानावपश्यति भस्मजा. २।१६
यन्मे छिद्रं चक्षुषो हृदयस्य मनसो वातितृण्णं बृहस्पतिर्मे तद्धातु [प्रवर्ग्या. २+ वा. सं. ३६।२
यन्मे त्वदन्येन न दृष्टपूर्वम् भ. गी. ११।४७
यन्मेऽद्य रेतः पृथिवीमस्कान्त्सीद्यदोषधीरप्यसरत् यदपः इदमहं तद्रेत आददे... बृह. ६।४।५
यन्मे मनसा वाचा कर्मणा वा.. महाना. ५।१६
यन्मौनमास्थनं शान्तं तच्छ्रेष्ठासङ्ग उच्यते अक्ष्युप. २९
(अथ) यन्मौनमित्याचक्षते ब्रह्मचर्यमेव तत्, ब्रह्मचर्येण ह्येवात्मानमनुविद्य मनुते छांदो. ८।५।२
यन्मौनं योगिभिर्गम्यं तद्भजेत्सर्वदा बुधः ते. बि. १।२०
यमघो निनीषति तमसाधु (कर्म) कारयति ...
यमध्वरे ब्रह्मविदः स्तुवन्ति सामैर्यजुर्भिः क्रतुभिस्त्वमेव एका. ७. १०
यमध्वर्युरमि लोकं पृणैधीत् वा. सं. १५
यमनियमयुतः पुरुषः सर्वसङ्गविवर्जितः शांडि. १।५।१
यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यानसमाधयोऽष्टाङ्गानि शाण्डि. १।१।२
यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यानसमाधयोऽष्टाङ्गयोग उच्यते २ अवधू. १

यमन्तस्समुद्रे कवयोऽवयन्ति महाना. १।३
यमन्वाह नभसो न पक्षी काष्ठा-
भिन्द्रगोभिरितोऽमुतश्च बा. मं. १५
यमप्येति भुवनं साम्पराये नृ. पू. २।८
यमराज्यमग्निष्टोमेनाभियजति मैत्रा. ६।३६
यमविषयस्थस्यैव बहुभयावस्थं मैत्रा. ४।२
यमव्यक्तं न वेद [सुबालो.७।१+ अध्यात्मो. १
यमश्च नियमश्चैव आसनं प्राण-
संयमः ॥ प्रत्याहारो धारणा
च ध्यानं भ्रूमध्यमे हरिम् ।
समाधिः समतावस्था साष्टांगो
योग उच्यते १ यो. त. २४
यमश्च नियमश्चैव तथैवासनमेव
च ॥ प्राणायामस्तथा ब्रह्मन्
प्रत्याहारस्ततः परम् । धारणा
च तथा ध्यानं समाधिश्चाष्टमं
मुने [जा. द. १।४,५+ वराहो. ५।११
यमभवन्न कुशिकासो अग्निं
वैश्वानरममृतजातं गमध्ययी आर्षे. १०।१
यमः कस्मिन्प्रतिष्ठित इति, यज्ञ इति बृह. ३।९।२१
यमाद्यष्टाङ्गयोगसङ्कल्पो बन्धः म. वा. र. २०
यमः संयमिनामहम् भ. गी. १०।२९
यमादित्या अंशुमाप्याययन्ति कौ. त. २।८
यमाद्यष्टांगसंयुक्तः शान्तं सत्य-
परायणः जा. द. ५।३
यमाद्यासनजायासहठाभ्यासात्पुनः
पुनः ।. सोऽपि मुक्तिं समाप्नोति
तद्विष्णोः परमं पदम् वराहो. ४।३९
यमात्वा न निवर्तते मैत्रा. ४।३
यमाय सोमं सुनुत यमाय जुहुता हविः
[वनदु. ४१,५४+ ऋ.मं.१०।१४।३
यमित्येकमक्षरमेति स्वर्ग लोकं
य एवं वेद बृह. ५।३।१
यमुक्त्वा मुच्यते योगी [नारा.४+ आ. प्र. ३ १
यमेतत्कर्णावपिधाय शृणोति स यदो-
त्क्रमिष्यन्भवति नैनं घोषं शृणोति बृह. ५।९।१
यमेव न प्रतिपद्यतेऽथो खल्वाहु-
र्जागरितदेश एवास्यैष इति बृह. ४।३।१४

यमेव विद्याश्रुतमप्रमत्तं मेधाविनं
ब्रह्मचर्योपपन्नम् ।(अस्मा) तस्मा
इमामुपसन्नाय सम्यक् परीक्ष्य
दद्याद्वैष्णवीमात्मनिष्ठाम्
[शाट्याय. ३४+ मुक्तिको. १।५२
यमेवैष वृणुते तेन लभ्यस्तस्यैष
आत्मा विवृणुते तनूं स्वाम्
[कठो. २।२२+ मुण्ड. ३।२।३
यमैश्च नियमैश्चैव आसनैश्च
सुसंयुतः । नाडीशुद्धिं च
कृत्वादौ प्राणायामं समाचरेत् त्रि. ब्रा. २।५३
यमो हि नियमस्त्यागः ते.बिं. १।१५
यया तु धर्मकामार्थान् भ.गी. १८।३४
यया त्यजेत्तयाऽऽपूर्य धारयेदविरोधतः १ यो. त. ३९
यया धर्ममधर्मं च भ.गी. १८।३१
यया स्वप्नं भयं शोकं भ.गी. १८।३५
ययेदं धार्यते जगत् भ. गी. ७।५
ययैरेतावद्भिरभिषिच्य सूर्यलोककामः
सूर्यलोकमवाप्नोति भस्मजा. २।१२
यशस्विनावेवं (उभौ) भवतः बृह. ६।४।८
यशस्विनीकुहूमध्ये वारुणी प्रति-
ष्ठिता भवति शांडि. १।४।६
यशस्विनी च वामस्य पादाङ्गु-
ष्ठान्तमिष्यते जा. द. ४।१९
यशस्विनी सौम्या च पादाङ्गुष्ठान्त-
मिष्यते शांडि. १।४।६
यशस्विन्या मुनिश्रेष्ठ भगवान्
भास्करस्तथा जा. द. ४।३७
यशस्विन्याः कुहोर्मध्ये वरुणा
सुप्रतिष्ठिता जा. द. ४।१६
यशोजनेऽसानि स्वाहा तैति. १।४।५
यशोदा इव बिन्दुः राधिको. २।२
यशो बलं ज्ञानं वैराग्यं मेधां प्रयच्छेति
यज्ञोपवीतं छित्त्वा ॐ भूः स्वाहे-
त्यप्सु वस्त्रं कटिसूत्रं च विसृज्य
संन्यस्तंमयेतित्रिवारमभिमन्त्रयेत् १सं. सो. २।६
यशोब्रह्मवर्चसमन्नाद्यंकीर्तिस्त्वा जुषतां कौ. त. २।१५
यशोदा मुक्तिगेहिनी कृष्णो. २

यशो राज्ञां यशो विशां यशोऽहमनु-
  प्रापत्सि स हाहं यशसां यशः   छांदो. ८।१४।१
यशोऽरिष्टंचचिन्मात्रंचिदानंदंविचिंतय मुक्तिको. २।५
यशोऽहं भवानि ब्राह्मणानां (मा.)   छांदो. ८।१४।१
यशोऽहं भवामि ब्राह्मणानां   छांदो. ८।१४।१
यश्चक्षुरन्तरो यमयत्येष त आत्मा-
  ऽन्तर्याम्यमृतः   बृह. ३।७।१८
यश्चक्षुर्गोप्तृ (वेद) गोप्तृमान् भवति कौ. त. २।१
यश्चक्षुषि तिष्ठंश्चक्षुषोऽन्तरो यं
  चक्षुर्न वेद यस्य चक्षुः शरीरम्   बृह. ३।७।१८
यश्चक्षुषि भोगस्तं देवेभ्य आगायत्   बृह. १।३।४
यश्चक्षुषि यो द्रष्टव्ये य आदित्ये
  (सोऽयमात्मा)   सुबालो. ५।१
यश्च नः शपतः शपात्   सूर्यता. २।१
यश्चन्द्रतारकमन्तरो यमयत्येष त
  आत्माऽन्तर्याम्यमृतः   बृह. ३।७।११
यश्चन्द्रतारके तिष्ठंश्चन्द्रतारकादन्तरो
  यं चन्द्रतारकं न वेद   बृह. ३।७।११
यश्चन्द्रमास्तं यत्प्रत्याह तमतिसृजते   कौ. त. १।२
यश्च विश्वं सृजति विश्वं बिभर्ति...
  स आत्मा   शांडि. २।१।४
यश्च श्रोत्रियोऽवृजिनोऽकामहतः   बृह. ४।३।३३
यश्च सर्वगतः साक्षी लोकस्यात्मेति
  कथ्यते । भूतग्रामशरीरेषु
  नश्यत्सु न विनश्यति   ना. महो. ११
यश्चाचारविहीनोऽपि यो वा पूजा
  न कुर्वते । यदि ज्येष्ठं न मन्येत
  नन्दते नन्दने वने   कौलो. ९
यश्चाप्सु वरुणः स पुनात्वघमर्षणः   महाना. ५।२०
यश्चायमध्यात्ममात्मा तेजोमयो-
  ऽमृतमयः (मा. पां.)   बृह. २।५।१४
यश्चायमन्तरात्मन्नाकाशः   बृह. २।३।४,५
यश्चायमस्मिन् धर्मे तेजोमयोऽमृत-
  मयः पुरुषो यश्चायमध्यात्मम्   बृह. २।५।११
यश्चायमस्मिन्नग्नौ तेजोमयोऽमृत-
  मयः पुरुषो यश्चायमध्यात्मं   बृह. २।५।३
यश्चायमस्मिन्नाकाशे...पुरुषः   बृह. २।५।१०
यश्चायमस्मिन्नात्मनि...पुरुषः   बृह. २।५।१४
यश्चायमस्मिन्नादित्ये...पुरुषः   बृह. २।५।५
यश्चायमस्मिन्मानुषे...पुरुषः   बृह. २।५।१३
यश्चायमस्मिन्वायौ...पुरुषः   बृह. २।५।४
यश्चायमस्मिन्सत्ये...पुरुषः   बृह. २।५।१२
यश्चायमस्मिन् स्तनयित्नौ...पुरुषः   बृह. २।५।९
यश्चायमस्मिँश्चन्द्रे...पुरुषः   बृह. २।५।७
यश्चायमस्यां पृथिव्यां...पुरुषः   बृह. २।५।१
यश्चायमस्यां विद्युति...पुरुषः   बृह. २।५।८
यश्चायमात्मा तेजोमयोऽमृतमयः
  पुरुषोऽयमेव स योऽयमात्मे-
  दममृतमिदं ब्रह्मेदꣳ सर्वम्   बृह. २।५।१४
यश्चायमासु दिक्षु...पुरुषः   बृह. २।५।६
यश्चायमास्वप्सु...पुरुषः   बृह. २।५।२
यश्चासावादित्य एकमेतदित्यवोचाम   ३ ऐत. २।४।३
यश्चासावादित्ये, स एकः   तैत्ति. २।८
यश्चित्तमन्तरे सञ्चरन्यं चित्तं न वेद   अध्यात्मो. १
यश्चित्तं ब्रह्मेत्युपास्ते   छांदो. ७।५।२
यश्चित्ते यश्चेतयितव्ये यः क्षेत्रज्ञे...
  (सोऽयमात्मा)   सुबालो. ५।९
यश्चेतनमात्रःप्रतिपुरुषःक्षेत्रज्ञः [मैत्रा. २।५+४।५
यश्चैनमभिदासति स एषोऽश्मा खणः   छांदो. १।२।८
यश्चैनं मन्यते हतम्   भ. गी. २।१९
यश्चैवं विद्वान् प्रयुज्यते यथा चाग्नि-
  चन्द्रसूर्याभास्वन्तोऽपहततमस्काः   संहितो. २।३
यश्चैवं वेद यस्यैते स्वरवन्तः प्रयुज्यंते   संहितो. २।३
यश्चैषोऽग्नौ, यश्चायं हृदये, यश्चा-
  सावादित्ये सएषएकः [मैत्रा. ६।१७ +७।७
यश्छन्दसामृषभो विश्वरूपश्छन्दो-
  भ्यश्छन्दांस्याविवेश   महाना. ७।६
यश्छन्दसामृषभो विश्वरूपः । छन्दो-
  भ्योऽध्यमृतात्सम्बभूव   तैत्ति. १।४।१
  [ना. प. ४।३८ तै. आ. ७।४।१+ १०।६।१
यष्टव्यमेवेति मनः   भ. गी. १७।११
यष्टिका कमलासनः   कृष्णो. ८
यष्ट्या वा पाणिना वोपहत्यातिक्रामेत्   बृह. ६।४।७
यस्तद्वेद यत आबभूव   चित्त्यु. १४।२
यस्तद्वेद यत्स वेद स मयैतदुक्त इति   छांदो. ४।१।४
यस्तद्वेद स पितुः पितासत्   महाना. २।४
यस्तद्वेद स वेद सर्वं सर्वा दिशो
  बलिमस्मै हरन्ति   छांदो. २।२१।१

यस्तन्तुनाभ इव तन्तुभिः प्रधानजैः
स्वभावतो देव एकः स्वमावृणोत् भवसं. २।४७
यस्तपसाऽपहतपाप्मा मैत्रा. ४।४
यस्तमसि तिष्ठंस्तमसोऽन्तरो यं
तमो न वेद यस्य तमः शरीरं.. बृह. ३।७।१२
यस्तमात्मानमनुविद्य विजानाति
[छां. उ. ८।७।१+ ८।१२।६
यस्तमोऽन्तरो यमयत्येष त आत्मा-
ऽन्तर्याम्यमृतः बृह. ३।७।१३
यस्तं वेद स वेदवित् [ध्या.बिं.३७+ भ. गी. १५।१
यस्तां (ब्रह्मविद्यां) न वेद
किमन्यैर्वेदैः करिष्यति अव्यक्तो. ३
यस्तां न वेद किमृचा करिष्यति गुह्यका. ५३
यस्तित्याज सचिविदं सखायं न तस्य
वाच्यपि भागो अस्ति [सह्वै.१९+ ३ऐत. २।४।१
[ऋ. मं. १०।७१।६+ तै.आ.१।३।१
यस्तु कर्मफलत्यागी स त्यागी-
त्यभिधीयते [भ.गी. १८।११ भवसं. १।५३
यस्तु द्वादशसाहस्रं प्रणवं जपते-
ऽन्वहम् । तस्य द्वादशभिर्मासैः
परं ब्रह्म प्रकाशते १सं.सो.२।१०४
यस्तु मूढोऽल्पबुद्धिर्वा सिद्धिजालानि
वाञ्छति । स सिद्धिसाधनैर्योगै-
स्तानि साधयति क्रमात् अ. पू. ४।५
यस्तु विज्ञानवान् भवति युक्तेन
मनसा सदा । तस्येन्द्रियाणि
वश्यानि सदश्वा इव सारथेः कठो. ३।६
यस्तु विज्ञानवान्भवति समनस्कः
सदा शुचिः । स तु तत्पद-
माप्नोति यस्माद्भूयो न जायते कठो. ३।८
यस्तु वेदोदितं धर्मं त्यक्त्वा ज्ञानं
समाश्रयेत् । स पाखण्डीति
विज्ञेयो नरकं चाधिगच्छति भवसं. १।३४
यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानु-
पश्यति । सर्वभूतेषु चात्मानं
ततो न विजुगुप्सते [ईशा.६+ वा. सं. ४०।६
यस्तूर्णनाभ इव तन्तुभिः प्रधानजैः
स्वभावतः । देव एकः स्वमा-
वृणोति स नो दधातु ब्रह्माव्ययम् श्वेता. ६।१०

यस्तेजसि तिष्ठंस्तेजसोऽन्तरो यं
तेजो न वेद..स त आत्मा.. बृह. ३।७।१४
यस्तेजोऽन्तरे सञ्चरन्यं तेजो न वेद अध्यात्मो. १
यस्तेजो ब्रह्मेत्युपास्ते तेजस्वी वै स
तेजस्वतो लोकान्भास्वतोऽप-
हततमस्कानभिसिद्ध्यति छांदो.७।११।२
यस्ते मन्योऽविधद्वज्र सायक सह
ओजः पुष्यति विश्वमानुषक् वनदु. १००
[ऋ. मं. १०।८३।१+ अथ. ४।३२।१
यस्ते स्तनः शशयो यो मयो भूर्येन
विश्वा पुष्यसि वार्याणि । यो
रत्नधा वसुविद्यः सुदत्रः सर-
स्वति तमिह धातवे करिति बृह. ६।४।२७
[ऋ. मं.१।१६४।४९+ अथर्व. ७।१०।१
[+वा. सं. ३८।५+ तै. आ. ४।८।२
यस्ते स्व इतरो देवयानात् चित्स्यु. १५।२
यस्त्वचमन्तरो यमयत्येष त
आत्माऽन्तर्याम्यमृतः बृह. ३।७।२१
यस्त्वचि तिष्ठंस्त्वचोन्तरो यं
त्वङ्न वेद यस्य त्वक् शरीरं.. बृह. ३।७।२१
यस्त्वचि यः स्पर्शयितव्ये यो वायौ
यो नाड्यां सोऽयमात्मा सुबालो. ५।५
यस्त्वधीते वा स सर्वपातकेभ्यः
पूतो भवति वासुदे. १७
यस्त्वमसि सोऽहमस्मि कौ. उ. १।६
यस्त्वविज्ञानवान्भवत्यमनस्कः सदा-
ऽशुचिः । न स तत्पदमाप्नोति
संसारं चाधिगच्छति कठो. ३।७
यस्त्वविज्ञानवान् भवत्ययुक्तेन
मनसा सदा । तस्येन्द्रियाण्य-
वश्यानि दुष्टाश्वा इव सारथेः कठो. ३।५
यस्त्वं भूत्वा पर्जन्यो विसेति पारमा. ३।१
यस्त्वात्मरतिरेव स्यात् भ. गी. ३।१७
यस्त्विन्द्रियाणि मनसा भ. गी. ३।७
यस्त्विमा अव्यतीरेवोपास्ते न परां.. आर्षे. ८।३
यस्त्वेवंविद्वाऽधीते सोऽप्येवमेव भवति का.रुद्रो. ५
यस्त्वेतमेवं प्रादेशमात्रमभिविमान-
मात्मानं वैश्वानरमुपास्ते स सर्वेषु

लोकेषु सर्वेषु भूतेषु सर्वेष्वात्म-
स्वन्नमत्ति छांदो. ५।१८।१
यस्त्वेतर्हि ब्रूयान्मूर्धाते विपतिष्यतीति छांदो. १।८।६
यस्त्वेनं परमतीवोद्यन्तं पश्य-
न्नुपास्ते पापीयान्भवति आर्षे. ६।३
यस्त्वेनं परमनूद्यन्तं वेदाथ ह्यथोपास्ते
परं ज्योतिरुपसम्पद्यते सर्वमायु-
रेति वसीयान्भवति आर्षे. ६।३
यस्त्वेवं विजानीयात्स नारायण-
सायुज्यमवाप्नोति ऊर्ध्वपुं. ६
यस्त्वेवं ब्राह्मणो विद्यात् चित्यु. १३।२
यस्त्वेवोभयमंतरेणाहतस्य वात्स्युपवादः ३ ऐत. १।३।१
यस्मा एवमुपतिष्ठतेऽहमदःप्रापमिति गायत्र्यु. ५
[बृ. उ. ५।१४।७+
यस्माक्षरमतीतोऽहं भ.गी. १५।१८
यस्माच्च बृहति बृंहयति च सर्वं
तस्मादुच्यते परं ब्रह्म शांडि. ३।२।१
यस्माच्छन्दोभिश्छन्नस्तस्माच्छंदांसी-
त्याचक्षते १ ऐत. १।६।१
यस्माच्छिवः सुसम्पूर्णः सर्वज्ञः
सर्वगः प्रभुः । तस्मात्स पाश-
रहितः स विशुद्धः स्वभावतः शिवो. १।१५
यस्माच्छ्रोत्रत्वगक्ष्यादि खादिकर्मे-
न्द्रियाणि च । व्यावृत्तानि परं
प्राप्तुं न समर्थानि तानि तु कठरु. ३३
यस्माज्जातमिदं विश्वं यस्मिन्नेव
विलीयते । स एव भगवान्
विष्णुः शास्ता सर्वेश्वरेश्वरः भवसं. ५।१५
यस्माज्जातो भगात्पूर्वं तस्मिन्नेव
भगे रमन्.. यो. त. १३२
यस्माज्ज्ञानोपदेशार्थं गुरुरास्ते
सदाशिवः शिवो. ७।४५
यस्मात्तदुपदेष्टाऽसौ तस्माद्गुरुतरो
गुरुः [द्वयो. ७+ अद्वयता. १२
यस्मात्तेज आत्मीयं कृत्वा सर्वा-
नस्मान् पालयिष्यसि स्वाहा पारमा. २।९
यस्मात्परमपरं परायणं च बृहद्बृहत्या
बृंहयति तस्मादुच्यते परं ब्रह्म अ. शिरः. ३।५

यस्मात्परं नापरमस्ति किञ्चित्
यस्मान्नाणीयो न ज्यायोऽस्ति
कश्चित् । वृक्ष इव स्तब्धो दिवि
तिष्ठत्येकस्तेनेदं पूर्णं पुरुषेण
सर्वम् [श्वेता. ३।९+ महाना. ८।१३
यस्मात्प्रपञ्चः परिवर्ततेऽयम् श्वेता. ६।६
यस्मात्सर्वमाप्नोति सर्वमादत्ते सर्व-
मत्ति च तस्मादुच्यते आत्मा शांडि. ३।२।१
यस्मात्सर्वस्मात्पुरतः सुविभातो-
ऽतश्चिद्घन एव नृसिंहो. ८।५
यस्मात् सर्वेषां भूतानां वा वीर्यतमः
श्रेष्ठतमश्च सिंहो वीर्यतमः
श्रेष्ठतमश्च तस्मान्नृसिंहः... नृ. पू. २।९
यस्मात्सुदुश्चरं तपस्तप्यमानायात्रये
पुत्रकामायातितरां तुष्टेन
भगवता ज्योतिर्मयेनात्मैव दत्तो
यस्माच्चानसूयायामत्रेस्तनयो-
ऽभवत्तस्मादुच्यते दत्तात्रेय इति शांडि. ३।२।१
यस्मात्स्वमहिम्ना सर्वांल्लोकान्सर्वा-
न्देवान्सर्वानात्मनः सर्वाणि
(भूतानि) स्वतेजसा ज्वलति
ज्वालयति ज्वाल्यते ज्वालयते...
तस्मादुच्यते ज्वलन्तम् नृ. पू. २।७
यस्मात्स्वमहिम्ना..सर्वानात्मनः
सर्वाणि भूतान्युद्गृह्यात्यजस्रं
सृजति तस्मादुच्यत उग्रम् नृ. पू. २।४
यस्मात्स्वमहिम्ना सर्वांल्लोकान्स-
र्वान्...विरमति विरामयत्यजस्रं
सृजति विसृजति वासयति
यतो वीरः कर्मण्यः सुदक्षो
युक्तग्रावा जायते नृ. पू. २।५
यस्मात्स्वमहिम्ना सर्वांल्लोकान्...
व्याप्नोति व्यापयति..तस्मादुच्यते
महाविष्णुम् नृ. पू. २।६
यस्मात्स्वमहिम्ना स्वभक्तानां स्मृत
एव मृत्युमपमृत्युं च मारयति.. नृ. पू. २।१२
यस्मात्स्वमहिम्ना...स्वयमनिन्द्रि-
योऽपि सर्वतः पश्यति..तस्मा-
दुच्यते सर्वतोमुखम् नृ. पू. २।८

यस्मात्स्वयं भद्रो भूत्वा सर्वदा भद्रं ददाति..तस्मादुच्यते भद्रम् — नृ. पू. २।११

यस्मादर्वाक्संवत्सरोऽहोभिः परिवर्तते । तद्देवा ज्योतिषां ज्योतिरायुर्होपासतेऽमृतम् — बृह. ४।४।१६

यस्मादुक्तो दर्शनाग्निर्नाम चतुराकृतिराहवनीयो भूत्वा मुखे तिष्ठति — प्रा. हो. २।४

यस्मादुच्चारितमात्र एव सर्वं शरीरं विद्योतयति तस्मादोमित्यनेनैतदुपासीतापरिमितं तेजः — मैत्रा. ७।११

यस्मादुच्चार्यमाण एव ऋग्यजुस्सामाथर्वाङ्गिरसं ब्रह्म ब्राह्मणेभ्यः प्रणामयति नामयति च तस्मादुच्यते प्रणवः — अ. शिरः. ३।५

यस्मादुच्चार्यमाण एव क्रन्दते क्लामयति च तस्मादुच्यते शुक्लम् — अ.शिरः. ३।५

यस्मादुच्चार्यमाण एव गर्भजन्मव्याधिजरामरणसंसारमहाभयात्तारयति त्रायते च तस्मादुच्यते तारम् — अ. शिरः. ३।५

यस्मादुच्चार्यमाण एवं तिर्यगूर्ध्वमधस्ताच्चास्यान्तो नोपलभ्यते तस्मादुच्यतेऽनन्तः — अ. शिरः. ३।५

यस्मादुच्चार्यमाण एव प्राणानूर्ध्वमुत्क्रामयति तस्मादुच्यते ॐकारः — अ. शिरः. ३।५

यस्मादुच्चार्यमाण एव व्यक्ते महति तमसि द्योतयति तस्मादुच्यते वैद्युतम् — अ.शिरः. ३।५

यस्मादुच्चार्यमाण एव सर्वांल्लोकान्व्याप्नोति स्नेहो यथा पललपिण्डमिव शान्तरूपमोतप्रोतमनुप्राप्तो व्यतिषक्तश्च तस्मादुच्यते सर्वव्यापी — अ. शिरः. ३।५

यस्मादुच्चार्यमाण एव सूक्ष्मो भूत्वा शरीराण्यधितिष्ठति सर्वाणि चाङ्गान्यभिमृशति तस्मादुच्यते सूक्ष्मं — अ. शिरः.३।५

यस्मादुत्पद्यते वायुर्यस्माद्वह्निः प्रवर्तते । यस्मादुत्पद्यते बिन्दुर्यस्मान्नादः प्रवर्तते । यस्मादुत्पद्यते हंसो यस्मादुत्पद्यते मनः ॥ तदेतत्कामरूपाख्यं पीठं कामफलप्रदम् [यो. शि. १।१७०+ — ९।६

यस्मादुत्पद्यते वायुर्यस्माद्वह्निः प्रवर्धते । यस्मादुत्पद्यते बिन्दुर्यस्मान्नादः प्रवर्धते ...मूलाधारादिषट्चक्रं शक्तिस्थानमुदीरितम् — वराहो. ५।५१।५२

यस्मादुत्पद्यते सर्वं यस्मिन्सर्वं प्रतिष्ठितम् । यस्मिन्विलीयते सर्वं परं तत्त्वं तदुच्यते — अमन. १।१०

यस्मादृषिभिर्नान्यैर्भक्तैर्द्रुतमस्य रूपमुपलभ्यते तस्मादुच्यते रुद्रः — अ. शिरः. ३।५

यस्माद्बीजसम्भवो हि पशवस्तस्माद्बीजं भोज्यमनेनैव प्रधानस्य भोज्यत्वं व्याख्यातम् — मैत्रा. ६।१०

यस्माद्भक्ता ज्ञानेन भजन्त्यनुगृह्णाति च वाचं संसृजति विसृजति च सर्वान्भावान्परित्यज्यात्मज्ञानेन योगैश्वर्येण महति महीयते तस्मादुच्यते भगवान्महेश्वरः — अ. शिरः. ३।७

यस्माद्भिक्षुर्हिरण्यं रसेन ग्राह्यं चेत्स आत्महा भवेत् — प. हं. ९

यस्माद्भिक्षुर्हिरण्यं रसेन दृष्टं चेत्स ब्रह्महा भवेत् — प. हं. ९

यस्माद्भिक्षुर्हिरण्यं रसेन स्पृष्टं चेत्स पौल्कसो भवेत् — प. हं. ९

यस्माद्भीषणं यस्य रूपं दृष्ट्वा सर्वे लोकाः सर्वे देवाः सर्वाणि भूतानि भीत्या पलायन्ते.. — नृ. पू. २।१०

यस्माद्यं सर्वे देवा नमन्ति मुमुक्षवो ब्रह्मवादिनश्च.. — नृ. पू. २।१३

यस्माद्वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह । यन्मौनं योगिभिर्गम्यं तद्भजेत्सर्वदा बुधः — ते. बिं. १।२०

यस्माद्व्रतमिदं पाशुपतं यद्भस्मनाऽङ्गानि संस्पृशेत्तस्माद्ब्रह्म [अ. शिरः. ३।१२+ — वटुको. २४

यस्मान्न ऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे मनः...[१शिवसं.१+ — २शि. सं.४

यस्मान्न जातः परो अन्योऽस्ति नृ. पू. २।६
यस्मान्नोद्विजते लोकः भ.गी. १२।१५
यस्मान्नोद्विजते..हर्षामर्षभयोन्मुक्तः
स जीवन्मुक्त उच्यते वराहो. ४।२६
यस्मिञ्छान्तिः शमः शौचं सत्यं
सन्तोष आर्जवम् । अकिञ्चन-
मदम्भश्च स कैवल्याश्रमे वसेत् ना. प.३।२१
यस्मिन्काले स्वमात्मानं योगी जानाति
केवलम् । तस्मात्कालात्समारभ्य
जीवन्मुक्तो भवेदसौ वराहो. २।४२
यस्मिन्क्रोधं यां च तृष्णां क्षमां च
[अ. शिरः. ३।११+ वटुको. २३
यस्मिन् गता न निवर्तन्ति भूयः भ.गी.१४।१५
यस्मिन्गृहे विशेषेण लभेद्भिक्षां च
वासनात् । तत्र नो याति यो भूयः
स यतिर्नेतरः स्मृतः ना. प. ६।१४
यस्मिन्देवा अधिविश्वे निषेदुः
[श्वेता.४।८+महाना.१।२+ बह्वृ. ४
[ऋ. मं. १।१६४।३९
यस्मिन्द्यौः पृथिवी चान्तरिक्षमोतं
मनः सह प्राणैश्च सर्वैः । तमेवैकं
जानथ आत्मानमन्या वाचो
विमुञ्चथामृतस्यैष सेतुः मुण्ड. २।२।५
यस्मिन्नयमात्माऽधिक्षियन्ति भुवनानि
विश्वा सुबालो. २।१
यस्मिन्नयमात्मा स्वपिति शब्दानां
च करोति सुबालो. ४।३
यस्मिन्नहमुत्क्रान्ते उत्क्रान्तो भवि-
ष्यामि कस्मिन्वा प्रतिष्ठिते प्रति-
ष्ठास्यामीति प्रश्नो. ६।३
यस्मिन्नात्मा समतृप्यच्छ्रुतेषि...
सर्वयुजो भवन्ति १ ऐत. ३।८।४
यस्मिन्नासेऽन्वेव मा भगवः शाधीति छांदो. ४।२।४
यस्मिन्निदमोतं प्रोतं च शांडि. २।१।२
यस्मिन्निदं विचिकित्सन्ति मृत्यो
यत्साम्पराये महति ब्रूहि नस्तत् कठो. १।२९
यस्मिन्निदꣳसर्वमव्याप्नोतेनाव्यर्धइति बृ. उ. ३।९।९
यस्मिन्निदं सर्वमव्यप्नोत् (मा.पा.) बृ. उ. ३।९।९
यस्मिन्निदं सर्वमोतप्रोतं तस्माद्-
न्यन्नपरं किञ्चनास्ति [वटुको.२९+ अ.शिरः.३।१४
यस्मिन्निदं सं च विचैति सर्वं यस्मिन्
विज्ञाते सर्वमिदं विज्ञातं भवति शांडि. २।१।२
यस्मिन्निदं सं च विचैति सर्वम् ।
तमीशानं वरदं देवमीड्यं
निचाय्येमां शान्तिमत्यन्तमेति श्वेता. ४।११
यस्मिन्निदꣳ सं च विचैति सर्वं
यस्मिन्देवा अधिविश्वे निषेदुः ।
तदेव भूतं तदु भव्यमा इदं महाना. १।१
यस्मिन्निदꣳ सं च विचैति सर्वꣳ
ओतः प्रोतश्च विभुः प्रजासु महाना. २।३
यस्मिन्निन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा
देवा ओकांसि चक्रिरे नृ. पू. २।१३
यस्मिन्नृचः साम यजूंषि यस्मिन्प्र-
तिष्ठिता रथनाभाविवाराः ।
यस्मिंश्चित्तं सर्वमोतं प्रजानां
तन्मे मनः.. [१ शिवसं. ५+ २ शि. सं. ६
यस्मिन्नेव पुरुषशरीरे विनाऽप्य-
ग्निहोत्रेण विनापि साङ्ख्य-
योगेन संसारविमुक्तिर्भवतीति प्रा. हो. १।१
यस्मिन् पञ्च पञ्चजना आकाशश्च
प्रतिष्ठितः । तमेव मन्य आत्मानं बृह. ४।४।१७
यस्मिन् प्राणः पञ्चधा संविवेश ।
प्राणैश्चित्तं सर्वमोतं प्रजानाम् मुण्ड. ३।१।९
यस्मिन् भावाः प्रलीयन्ते लीना-
श्चाव्यक्ततां ययुः मंत्रिको. १८
यस्मिन्युक्ता ब्रह्मर्षयो देवताश्च
तमेवं ज्ञात्वा मृत्युपाशांश्छिनत्ति श्वेताश्व. ४।१५
यस्मिँल्लयं याति पुरत्रयं च कैव.१४
यस्मिँल्लोका ओताश्च प्रोताश्च तस्य
हृत्पद्माज्जातोऽब्जयोनिः गोपालो. १।१४
यस्मिँल्लोका निहिता लोकिनश्च ।
तदेतदक्षरं ब्रह्म स प्राणस्तदु वाङ्मनः मुण्ड. २।२।२
यस्मिन्व उत्क्रान्त इदꣳ शरीरं
पापीयो मन्यते, स वसिष्ठ इति बृह. ६।१।७
यस्मिन्व उत्क्रान्ते शरीरं पापिष्ठ-
तरमिव दृश्येत स वः श्रेष्ठः छांदो. ५।१।७
यस्मिन्विज्ञाते सर्वमिदंविज्ञातंभवति शांडि. २।२

यस्मिन्विलीयते शब्दस्तत्परं ब्रह्म गीयते। धियं हि लीयते ब्रह्म सोऽमृतत्वाय कल्पते ब्र. वि. १३
यस्मिन् विशुद्धे विभवत्येष आत्मा मुण्ड. ३।१।९
यस्मिंश्च सर्वभूतानि प्रलयं यान्ति संक्षयम्। स मनः सर्वभूतानां प्रद्युम्नः परिपठ्यते ना. महो. २६
यस्मिंश्चित्तं सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः ...[१ शिवसं.५ २शि. सं. ६
यस्मिन्सर्वमिदं प्रोतं ब्रह्म स्थावरजङ्गमम्। तस्मिन्नेव लयं यान्ति स्रवन्त्यः सागरे यथा मंत्रिको. १७
यस्मिन्सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः। तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यतः ईशा. ७
यस्मिन्सलीयतेशब्दस्तत्परंब्रह्मगीयते १प्रणवो. १३
यस्मिन्स्थितो न दुःखेन गुरुणाऽपि विचाल्यते [यो. शि. ३।१३+ भ. गी. ६।२२
यस्मिंस्तदहरं पुण्डरीकं कुमुदमिवानेकधा विकसितं [सुबालो.४।१+ १।१।१
यस्मिंस्तु पच्यते कालो यस्तं वेद स वेदवित् मैत्रा. ६।१५
यस्मै वा एतदन्नं तस्मा एतन्न दत्तम् छांदो. ४।३।६
यस्मै वासि तस्मै वासीत् यद्वाः स आर्तयत्सर्वमीशमाशिषे स्वाहा पारमा. १०।८
यस्य कटाक्षात्समुत्पन्नाः (ब्रह्मादयः) लोकानां ब्रह्माण्डानामुत्पत्तिस्थितिलयान् कुर्वन्ति सामर. ५५
यस्य कस्य च धर्मस्यग्रहेण भगवानसौ अ. शां. ८२
यस्य किञ्चिदहं नास्ति...सर्वत्रपरिपूर्णात्मा...आनंदरतिरव्यक्तः ...शुद्धचैतन्यरूपात्मा स जीवन्मुक्त उच्यते ते.बिं.४।४–७
यस्य किञ्चिद्बहिर्नास्ति किञ्चिदन्तः कियन्न च। अजीवात्मा न संशयः ते. बिं. ५।९
यस्य चक्षुः शरीरं यश्चक्षुरन्तरो यमयत्येषतआत्माऽन्तर्याम्यमृतः बृह. ३।७।१८
यस्य चन्द्रतारकं शरीरं यश्चन्द्रतारकमन्तरो यमयत्येष तआत्मा बृह. ३।७।१२
यस्य चात्मादिकाः संज्ञाः कल्पिता न स्वभावतः (परमात्मनः) महो. ४।५७
यस्य चाद्यपदाद्भूमिर्द्वितीयात्सलिलोद्भवः।...पञ्चमादम्बरोत्पत्तिस्तमेवैकं समभ्यसेत् गो. पू. ४।१
यस्य चित्तं न चित्ताख्यं चित्तं चित्तत्वमेव हि। तदेव तुर्यावस्थायां तुर्यातीतं भवत्यतः अ. पू. ५।४६
यस्य चित्तं शरीरं, यश्चित्तमन्तरे सञ्चरन्यं चित्तं न वेद [सुबालो. ७।१+ अध्यात्मो. १
यस्य चित्तं स्वपवनं सुषुम्नां प्रविशेदिह १ यो. त. ८३
यस्य चेच्छा तथाऽनिच्छा ज्ञस्य कर्मणि तिष्ठतः। न तस्य लिप्यते प्रज्ञा पद्मपत्रमिवाम्बुभिः महो. ५।१७३
यस्य छायामृतं यो मृत्युमृत्युः नृ. पू. २।१२
(अथ) यस्य जायायै जारः स्यात्तं चेद्विष्यात्...शरभृष्टीः प्रतिलोमाः सर्पिषाक्ता जुहुयात् बृह. ६।४।१२
यस्य ज्ञानमयी शिखा। स शिखीत्युच्यते विद्वान्नेतरे केशधारिणः [ब्रह्मो. १२+ ना. प. ३।८३
यस्य ज्ञानेन सर्वरहस्यं विदितं भवति त्रि .म. ना. ३।२
यस्य तमः शरीरं यस्तमोन्तरो यमयत्येष त आत्मा बृह. ३।७।१३
यस्य तेजः शरीरं, यस्तेजोऽन्तरे सञ्चरन्यंतेजोनवेद [सुबालो.७।१ +अध्यात्मो. १
यस्य तेजः शरीरं यस्तेजोन्तरो यमयत्येष त आत्माऽन्तर्याम्यमृत इत्यधिदैवतम् बृह. ३।७।१४
यस्य त्वक् शरीरं यः.. एषतआत्मा बृह. ३।७।२१
यस्य दिशः शरीरं यो...एषतआत्मा बृह. ३।७।१०
यस्य देवे परा भक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ। तस्यैते कथिता ह्यर्थाः प्रकाशन्ते महात्मनः [सुबालो. १६।२+ श्वेता. ६।२३ यो.शि. २।२२

यस्य देवे परा... स ब्रह्मवित्परं
प्रेयादिति वेदानुशासनम् शाट्या. ३७
यस्य देव्यां परा भक्तिर्यथादेव्यां
तथा गुरौ। तस्यैते कथिता ह्यर्थाः गुह्यका. ७६
यस्य देशं न जानाति नामगोत्रे
त्रिपूरुषम्। कन्यादानं पितृ-
श्राद्धं नमस्कारं च वर्जयेत् इतिहा. ६४
यस्य देहादिकं नास्ति यस्य ब्रह्मेति
निश्चयः। परमानन्दपूर्णो यः
स जीन्मुक्त उच्यते ते. बिं. ४।३
यस्य द्यौः शरीरं, यो...एष
त आत्माऽन्तर्याम्यमृतः बृह. ३।७।८
यस्य नाहंकृतो भावः भ. गी. १८।१७
यस्य नाहंकृतो भावो बुद्धिर्यस्य
न लिप्यते। कुर्वतोऽकुर्वतो
वापि स जीवन्मुक्त उच्यते वराहो. ४।२५
यस्य नाहंकृतो भावो बुद्धिर्यस्य न
लिप्यते। यः समः सर्वभूतेषु
जीवितं तस्य शोभते १ सं. सो. २।३९
यस्य पृथिवी शरीरं, यः पृथिवी-
मन्तरे सञ्चरन्यं पृथिवीनवेद.. सुबालो. ७।१
यस्य पृथिवी शरीरं यः पृथिवी-
मन्तरो यमयत्येष त आत्मा बृह. ३।७।३
यस्य प्रतापकल्पा उत्पन्ना ब्रह्म-
विष्णुरुद्रादयो देवाश्च
दिक्पालाः कोटिश उत्पद्य-
माना लीयमानाश्च भवन्ति सामर. ५
यस्य प्रथमपदाद्भूमिर्द्वितीयपदाज्जलं
तृतीयपदात्तेजश्चतुर्थपदाद्वायु-
श्चरमपदाद्व्योमेति गो. पू. ३।१२
यस्य प्रपञ्चमानं न ब्रह्माकारमपीह
न। अतीतातीतभावो यो
वैदेही मुक्त एव सः म. र. २०
यस्य प्राणः शरीरं यः प्राणमन्तरो
यमयत्येष त आत्माऽन्तर्याम्यमृतः बृह. ३।७।१६
यस्य प्राणो विलीनोऽन्तःसाधके
जीविते सति। पिण्डो न पतित-
स्तस्य चित्तं दोषैः प्रबाधते यो. शि. १।६४

यस्य बुद्धिः शरीरं, यो बुद्धिमन्तरे
सञ्चरन्यं बुद्धिर्न वेद
[सुबालो. ७।१+ अध्यात्मो. १
यस्य ब्रह्म च क्षत्रं चोभे भवत
ओदनः। मृत्युर्यस्योपसेचनं
क इत्था वेद यत्र सः कठो. २।२५
यस्य मनः शरीरं यो मनोऽन्तरो
यमयत्येष त आत्मा बृह. ३।७।२०
यस्य मनः शरीरं यो मनोऽन्तरे
सञ्चरन् यं मनो न वेद
[सुबालो. ७।१+ अध्यात्मो. १
यस्य मृत्युः शरीरं, यो मृत्युमन्तरे
सञ्चरन्यं मृत्युर्न वेद
[सुबालो. ७।१+ अध्यात्मो. १
यस्ययोनिंपरिपश्यन्तिधीरास्तस्मे.. २ शिवसं. १५
यस्य रेतः शरीरं यो रेतोऽन्तरो
यमयत्येष त आत्मा बृह. ३।७।२३
यस्य लिङ्गं प्रपञ्चं वा ब्रह्मैवात्मा
न संशयः ते. बिं. ५।१०
यस्य वर्णाश्रमाचारो गलितः
स्वात्मदर्शनात्। स वर्णाना-
श्रमान्सर्वानतीत्यस्वात्मनि स्थितः ना. प. ६।१८
यस्य वाक् शरीरं, यो वाचमन्तरो
यमत्येष त आत्मा बृह. ३।७।१७
यस्य वाङ्मनसी शुद्धे सम्यग्गुप्ते च
सर्वदा। स वै सर्वमवाप्नोति
वेदान्तोपगतं फलम् ना. प. ३।४०
यस्य वायुः शरीरं यो वायुमन्तरो
यमयत्येष त आत्मा बृह. ३।७।७
यस्य वायुः शरीरं, यो वायुमन्तरे
सञ्चरन् यं वायुर्न वेद
[सुबालो. ७।१+ अध्यात्मो. १
यस्य वाऽस्तं गतं चित्तं षड्विंशति
दिनानि वै। लभते जगदीशत्वं
येन विश्वगुरुर्भवेत् अमन. १।७०
यस्य विज्ञानं शरीरं यो विज्ञान-
मन्तरो यमयत्येष त आत्मा बृह. ३।७।२२

यस्य वेदश्च वेदी च विच्छिद्येते त्रिपूरुषम् । स वै दुर्ब्राह्मणो नाम सर्वकर्मबहिष्कृतः	इतिहा. ६५
यस्य वैकङ्कत्यग्निहोत्रहवणी भवति	महाना. १०।१३
यस्य वैतत्कर्म, स वेदितव्य इति	कौ. त. ४।१८
यस्य श्रवणेन सर्वबन्धाः प्रविनश्यन्ति	त्रि. म. ना. १।२
यस्य श्रोत्रं शरीरं यः श्रोत्रमन्तरो यमयत्येष त आत्मा	बृह. ३।७।१९
यस्य सङ्कल्पनाशः स्यात्तस्यमुक्तिः करे स्थिता	मं. ब्रा. २।६
यस्य सर्वाणि भूतानि शरीरं, यः सर्वाणि भूतान्यन्तरो यमयत्येष त आत्मा	बृह. ३।७।१५
यस्य सर्वे समारम्भाः	भ. गी. ४।१९
यस्य स्त्री तस्य भोगेच्छा निःस्त्रीकस्य क्व भोगभूः । स्त्रियं त्यक्त्वा जगत्त्यक्तं जगत्त्यक्त्वा सुखी भवेत् [महो.३।४८+	याज्ञव. १७
यस्य स्मरणमात्रेण सर्वपापैः प्रमुच्यते	विश्रामो. ११
यस्य स्यादद्धा न विचिकित्साऽस्तीति ह स्माह शाण्डिल्यः	छांदो. ३।१४।४
यस्य स्वं भवति, भवति हास्य स्वं	बृह. १।३।२५
यस्य हि सोमः प्राणा वाप्ययङ्कुरा एतद्ब्रह्म...	मैत्रा. ६।३५
यस्या अन्तो न विद्यते तस्मादुच्यतेऽनन्ता	देव्यु. २०
यस्याकाशः शरीरं, य आकाशमन्तरे सञ्चरन् यमाकाशो न वेद [सुबालो. ७।१+	अध्यात्मो. १
यस्याकाशः शरीरं, य आकाशमन्तरो यमयत्येष त आत्मा	बृह. ३।७।१२
यस्याक्षरं शरीरं, योऽक्षरमन्तरे सञ्चरन्यमक्षरं न वेद [सुबालो. ७।१+	अध्यात्मो. १
यस्या गाथा ब्रह्ममार्गं वदन्ति	राधिको. ५
यस्या ग्रहणं नोपलभ्यते तस्मादुच्यतेऽलक्ष्या	देव्यु. २०
यस्याग्निहोत्रमदर्शमपौर्णमासमचातुर्मास्यमनाग्रयणमतिथिवर्जितं च	मुण्ड. १।२।३
यस्याग्निहोत्रमदर्शमनाग्रयणम्(मा.पा.)	मुण्डको.१।२।३
यस्याग्निः शरीरं योऽग्निमन्तरो यमयत्येष त आत्मा	बृह. ३।७।५
यस्या जननं नोपलभ्यते तस्मादुच्यतेऽजा	देव्यु. २०
यस्याण्डकोशं शुष्ममाहुःप्राणमुल्बम्	चित्यु. ११।४
यस्यात्मरतिरेवान्तः कुर्वन् कर्मेन्द्रियैः क्रियाः । न वशो हर्षशोकाभ्यां स समाहित उच्यते	अ. पू. १।३७
यस्यादित्यः शरीरं य आदित्यमन्तरो यमयत्येष त आत्मा	बृह. ३।७।९
यस्यादौ भयाद्भगवानुक्तस्ते स्वयं...	पारमा. २।९
यस्यानाणीयोनज्यायोऽस्ति किञ्चित्	गुह्यका. ४६
यस्यानुभवपर्यन्ता बुद्धिस्तत्त्वे प्रवर्तते । तद्दृष्टिगोचराः सर्वे मुच्यन्ते सर्वपातकैः	वराहो. ४।४३
यस्यानुवित्तः..ऽस्मिन्सन्देहे गहने(मा.)	बृह.४।४।१३
यस्यानुवित्तः प्रति बुद्धआत्माऽस्मिन्सन्देहे गहने प्रविष्टः । स विश्वकृत्स हि सर्वस्य कर्ता	बृह. ४।४।१३
यस्यानृचस्तु भुङ्क्ते तस्य विद्धि ब्रह्मैव वित्तं पुरुषस्य केवलम्	इतिहा. ४४
यस्यान्तरिक्षं शरीरं योऽन्तरिक्षमन्तरोयमयत्येष त आत्मा	बृह. ३।७।६
यस्यान्तस्थानि भूतानि	भ. गी. ८।२२
यस्यान्नमिदं सर्वं नच योऽन्नं भवति	सुबालो.९।१५
यस्यापः शरीरं योऽपोऽन्तरे सञ्चरन्यमापो न विदुः [सुबा.७।१+	अध्यात्मो. १
यस्यापः शरीरं, योऽपोऽन्तरो यमयति, एष त आत्मा	बृह. ३।७।४
यस्यामतं तस्य मतं मतं यस्य न वेद सः । अविज्ञातं विजानतां...	केनो. २।३
यस्याव्यक्तं शरीरं, योऽव्यक्तमन्तरे सञ्चरन्यमव्यक्तं न वेद [सुबालो. ७।१+	अध्यात्मो. १

यस्यास्त्यद्वैतमात्मज्ञानं तदेव
यज्ञोपवीतम् प. हं. प. ११
यस्याहङ्कारः शरीरं, योऽहङ्कार-
मन्तरे सञ्चरन्यमहङ्कारो
न वेद [सुबालो.७।१+ अध्यात्मो. १
यस्यां जाग्रति भूतानि भ. गी. २।६९
यस्यां देवा अधिरुद्रा निषेदुः।
यस्तां न वेद किमृचा करिष्यति गुह्यका. ५३
यस्यां मज्जन्ति बहवो मनुष्याः कठो. २।३
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं
पुरुषानहम् [श्री. सू.२+ ऋ.खि. ५।८७।२
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो
दास्योऽश्वान्...[श्री.सू.१५+ ऋ.खि.५।८७।१५
यस्याः परतरं नास्ति सैषा दुर्गा
प्रकीर्तिता। दुर्गात्संत्रायते
यस्माद्देवी दुर्गेति कथ्यते देव्यु. २२
यस्याः परं नापरमस्ति किञ्चित् गुह्यका. ४६
यस्याः स्वरूपं ब्रह्मादयो न
जानन्ति तस्मादुच्यतेऽज्ञेया देव्यु. २०
यस्येच्छा लोके वा प्रजायतिर्लोके
यस्मै वासितस्मैवासीत् यद्वाः
संज्ञातंयत्सर्वमीशमाशिषेस्वाहा पारमा. १०।८
यस्येच्छा विद्यते काचित् सा सिद्धिं
साधयत्यहो। निरिच्छोः परि-
पूर्णस्यनेच्छासम्भवति कचित् अ. पू. ४।७
यस्येदं जन्म पाश्चात्यं तमाश्वेव
महामते। विशन्ति विद्या
विमला मुक्ता वेणुमिवोत्तमम् महो. ६।१५
यस्येदं धीराः पुनन्ति कवयो
ब्रह्माणमेतं त्वा वृणुत इन्दुम्..
तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु २ शिवसं. १६
यस्येदं मण्डलं भित्वा मारुतो
याति मूर्धनि। यत्र यत्र म्रिये-
द्वाऽपि न स भूयोऽभिजायते अ. ना. ३९
यस्यैता ब्रह्ममूर्तयो बृहद्ब्रह्माणं
ब्रह्म आदधान...स्वाहा पारमा. ३।१०
यस्यैतानि सुगुप्तानि जिह्वोपस्थोदरं
करः। सन्न्यसेदकृतोद्वाहो
ब्राह्मणो ब्रह्मचर्यवान् ना. प. २।१५

यस्यैव निश्चितो भावस्तस्य
मुक्तिर्न दूरतः शिवो. ७।३८
यस्यैवं परमात्माऽयं प्रत्यग्भूतः
प्रकाशितः। स तु याति च
पुम्भावं स्वयं साक्षात्परामृतम् जा. द. १०।८
यस्यैवं भवति क्षान्तिः सोऽमृत-
त्वाय कल्पते अ. शां. ९२
यस्यै वा एषां वै तेषामेवैतस्मिन्
पर्वण्यग्निमुपसमाधायैतयैवा-
वृता आज्याहुतीर्जुहोति कौ. त. २।४
यस्यैष आत्मा वृणुते तनूं स्वां तस्य
प्रसादेन हि तस्य लाभः २ देव्यु. २०
यस्योदावोऽयनुथमुचमुचैरुरुगाय
स्वाहा पारमा. १०।७
यस्योपरि त्वं मुनयो न पश्यन्ति
तस्मै मुख्याय विष्णवे स्वाहा पारमा. २।१
यस्योपरिष्टादधितिष्ठदात्मा सर्वोप-
रिष्टात्परमात्मा मुक्तं तं विरजं
नित्यमनु सम्पराय स्वाहा पारमा. १०।३
यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षि-
यन्ति भुवनानि विश्वा नृ. पू. २।९+
[ऋ. मं.१।१५४।२ ना. पू.ता. ४।७
यस्त्वेवोभयमन्तरेणाहतस्यनास्त्युपवादः श्वेतरे. १।४।१
यं कामं कामयते सोऽस्य सङ्कल्पा-
देवसमुत्तिष्ठतितेनसंपन्नो महीयते छांदो.८।२।१०
यं कामं कामयेत तं स एष एवं-
विदुद्गातात्मने वा यजमानाय वा.. बृह. १।३।२८
यं कामं कामयेत तमागायति
तद्धैतल्लोकजिदेव न हैवालो-
क्यताया आशाऽस्ति य एवमेत-
त्साम वेद बृह. १।३।२८
यं गत्वा चतुर्धा मुक्तयो द्वारे तिष्ठन्ति रामर. ५४
यं चिन्तयन्तो निगमान्तरूपं...तं
देवमुख्यं सुरतं भवाय स्वाहा पारमा. ९।७
यं जनपदं यं क्षेत्रभागं तं तमेवो-
पजीवन्ति छांदो. ८।१।५
यं ज्ञात्वा मुच्यते जन्तुरमृतत्वं च गच्छति कठो. ६।८
यं तदेतयावाचा व्याह्रियतेसत्यमिति कौ. त. १।६

यं त्वमात्मानमुपास्से तस्मात्त्वं बहु-
लोऽसि प्रजया च धनेन च छांदो.५।१५।१
यं त्वमात्मानमुपास्से तस्मात्तव बहु
विश्वरूपं कुले दृश्यते छांदो.५।१३।१
यं त्वमात्मानमुपास्से तस्मात्तव सुतं
प्रसुतमासुतं कुले दृश्यते छांदो.५।१२।१
यं त्वमात्मानमुपास्से तस्मात्त्वं
रयिमान्पुष्टिमानसि छांदो.५।१६।१
यं त्वमात्मानमुपास्से तस्मात्त्वां
पृथग्बलय आयन्ति पृथग्रथ-
श्रेणयोऽनुयन्ति छांदो.५।१४।१
यं त्वं पालनयाभिभूतं देवाः सर्वे
विचरन्ति ते देवास्त्वमेव सर्वे माया
मायैशते स्वाहा पारमा. २।१०
यं त्वं मनुष्याय हिततमं मन्यसे इति कौ. त. ३।१
यं देवाः परमं पवित्रं भविष्यन्त्या-
त्रिषु प्रणताः प्रधानाः पारमा. १।१०
यं द्विष्यात्, असावस्मै कामो मा
समृद्धीति वा बृह. ५।१४।७
यं नत्वा मुनयः सर्वे निर्विघ्नं यान्ति
तत्पदम् । गणेशोपनिषद्वेद्यं
तद्ब्रह्मैवास्मि सर्वगम् गणप.शीर्षकं
यं प्रविश्य भवन्तीह मुक्ता वै द्विज-
सत्तमाः । स वासुदेवो विज्ञेयः
परमात्मा सनातनः ना. महो. १४
यं प्राप्य न निवर्तन्ते भ. गी. ८।२१
यं भावं दर्शयेद्यस्य तं भावं स तु
पश्यति वैतथ्य. २९
यं मां स्मृत्वाऽगाधतः स्पर्शरहितापि
सर्वा सरिद्गाधा भवति गोपालो. १।२
यं मां स्मृत्वाऽगाधा गाधा भवति...
अपूतः पूतो भवति.. अव्रती
व्रती भवति.. अश्रोत्रियः
श्रोत्रियो भवति..सकामो
निष्कामो भवति गोपालो. १।२
यं यज्ञैर्मुनयो जुषन्ति पारमा. १।१०
यं यमन्तमभिकामो भवति यं कामं
कामयते सोऽस्य सङ्कल्पादेव
समुत्तिष्ठति छांदो.८।२।१०

यं यं क्रतुमधीते तेन तेनास्येष्टं भवति,
अग्नेर्वायोरादित्यस्य सायुज्यं
गच्छति सहवै. १९
यं यं जजान स उ गोपो अस्य चित्स्यु. १४।४
यं यं वापि स्मरन् भावं [ना.प.५।१० +भ.गी. ८।६
यं लब्ध्वा चापरं लाभं मन्यते
नाधिकं ततः [यो.शि.३।१३+ भ. गी. ६।२२
यं लोकं मनसा संविभाति विशुद्ध-
सत्त्वः कामयते यांश्च कामान् ।
तं तं लोकं जयते तांश्च कामां-
स्तस्मादात्मज्ञं ह्यर्चयेद्भूतिकामः मुण्ड. ३।१।१०
यं(यत्) लोहितं श्लेष्मा रेतस्ता आपः १ ऐत. ३।३।२
यं वाव सा यदिदमस्मिन्पुरुषे शरीर-
मस्मिन्हीमे प्राणाः प्रतिष्ठिताः छांदो. ३।१२।३
यं वाव सा येयं पृथिव्यस्यां ह्वीदं
सर्वं भूतं प्रतिष्ठितम् छांदो. ३।१२।२
यं विश्वरूपं परमात्मपुण्यं पारमा. ९।७
यं विष्णुर्नावपश्यति भस्मजा. २।१६
यं वै सोम्यैतमणिमानं न निभा-
लयस एतस्य वै सोम्यैषोऽणिम्न
एवं महान्यग्रोधस्तिष्ठति छांदो.६।१२।२
यं सन्न्यासमिति प्राहुः भ. गी. ६।२
यं सूरयो जपन्तो योगिनः सूक्ष्मैः
सुप्रदर्शनैः पश्यन्तीश्वराय स्वाहा पारमा. १।१०
यं स्मृत्वा मुक्ता अस्मात्संसाराद्भवंति गोपालो.१।१४
यं हि न व्यथयन्त्येते भ. गी. २।१५
यः कर्ता सोऽयं वै भूतात्मा करणैः
कारयिताऽन्तःपुरुषः मैत्रा. ३।३
यः कवित्वं निरातङ्कं भुक्तिमुक्ती च
वाञ्छति । सोऽभ्यर्च्यैनां दश-
श्लोक्या नित्यं स्तौति सरस्वतीम् सरस्व. ३१
यः कश्च शब्दो वागेव सा बृह. १।५।३
यः कश्चिदात्मानमद्वितीयं जातिगुण-
क्रियाहीनं...करतलामलकवत्सा-
क्षादपरोक्षीकृत्य...दम्भाहङ्का-
रादिभिरसंस्पृष्टचेता वर्तत एव-
मुक्तलक्षणः स एव ब्राह्मण इति व. सू. उ. ९
(अथ) यः कश्चिद्विद्वानपहतपाप्मा-
ध्यक्षोऽवदातमनास्तन्निष्ठ आवृत्त-

चक्षुः सोऽन्तरात्मा गत्या बहिरात्मनोऽनुमीयते — मैत्रा. ६।१
यः काममोहितः शूद्र्यां पुत्रमुत्पादयेद्द्विजः । यावदुत्पाद्यते भूमौ तावत्तिष्ठेत्सुदारुणे — इतिहा. २४
यः कारणानि निखिलानि तानि कालात्मयुक्तान्यधितिष्ठत्येकः — ना. प. ९।२
[श्वेताश्व. १।३+
यः कालं ब्रह्मेत्युपासीत कालस्तस्यातिदूरमपसरति — मैत्रा. ६।१४
यः कुं धरमाणः कुं धरतां कुं धरतामित्यवोचत् तां सानुमन्तो विदधत्स्वतेजसा तस्मै..स्वाहा — पारमा. ६।५
यः क्रौद्धव्येन क्रुद्धस्तिष्ठति सोऽतिवाचं च दीक्षयति — इतिहा. १०
यः परः स महेश्वरः [महाना.८।१७
[ना. उ. ता. १।२+ — शु. र.उ. ३।१८
यः पश्यति तथाऽऽत्मानं — भ.गी. १३।३०
यः पश्यति स पश्यति [भ.गी.५।५+ — १३।२८
यः पश्यतीन्द्रियबिलेऽविवशः प्रणवाख्यं प्रणेतारं...सोऽपि प्रणवाख्यः प्रणेता — मैत्रा. ६।२५
यः पश्यतीमां हिरण्मयवस्थात् — मैत्रा. ६।१
यः पाति सोममृतस्य नाभिं कालातिगः पाति विश्वं सदैव — २ देव्यु. २९
यः पादे, यो गन्तव्ये, यो विष्णौ, यो नाड्यां...सोऽयमात्मा — सुबालो. ५।१०
यः पादौ प्रोक्षति, यश्चक्षुषी, यश्चन्द्रमादित्यौ, यन्नाभिं तेन पृथिवी — आचम. १।५
यः पायौ, यो विसर्जयितव्ये, यो मृत्यौ, यो नाड्यां...सोऽयमात्मा — सुबालो. ५।१३
यः पार्थिवानि विममे रजांसि — ना.पू. ता. ४।४
[ऋ.मं.१।१५४।१+वा.सं.५।१८+
[तै. सं. १।२।१३।३+ — अथर्व.७।२६।१
यः पिता स पुनः पुत्रो यः पुत्रः स पुनः पिता — यो. त. १३३
यः पिबेदमृतं विद्वान् सकलं भद्रमश्नुते — शांडि. १।७।४७
यः पुण्डरीकः परमान्तरात्मा कर्माङ्गरूपं कमलं दधार । सासिष्वसन्तं सरसे रसाय स्वाहा — पारमा. ७।८
यः पुनरेतत् त्रिमात्रेणोमित्येतेनैवाक्षरेण परं पुरुषमभिध्यायीत — प्रश्नो. ५।५
यः पुनरेतं त्रिमात्रेण [मा.पा.] — प्रश्नो. ५।५
(अथ) यः पुरुषः सोऽग्निः — मैत्रा. २।८
यः पूजयति मां भक्त्या सोऽहमेव न संशयः — १ बिल्वो. ३०
यः पूर्वं तपसो जातमद्भ्यः पूर्वमजायत । गुहां प्रविश्य तिष्ठन्तं यो भूतेभिर्व्यपश्यत, एतद्वैतत् — कठो. ४।६
यःपृथिवीमन्तरेसञ्चरन्यंपृथिवी नवेद — अध्यात्मो. १
यः पृथिव्यां तिष्ठन् पृथिव्या अन्तरो यं पृथिवी नवेद..एष त आत्मा — बृह. ३।७।३
यः प्रजानामेकराण्मानुषीणां मृत्युं यजे प्रथमजामृतस्य[चित्सु.१५।३+ — तै.आ.३।१५।२
यः प्रणवमधीते स सर्वमधीते — नृ. पू. ५।१९
यःप्रणवः स सर्वव्यापी[अ.शिरः.३,४+ — बटुको. १९
यःप्रणवः स उद्गीथः [छांदो.१।५।१+ — मैत्रा. ६।४
यः प्रदद्याद्गवां सम्यक् फलानि च विशेषतः..यावत्तत्पत्रकुसुमकन्दमूलफलानि च । तावद्वर्षसहस्राणि शिवलोके महीयते — शिवो. ७।९३
यः प्रयाति त्यजन् देहं — भ. गी. ८।१३
यः प्रयाति स मद्भावं — भ. गी. ८।५
यः प्रागादित्यात्सोऽकालोऽकलोऽथ य आदित्याद्यः सकालःसकलः — मैत्रा. ६।१५
यः प्राज्ञो विधरणः सर्वान्तरोऽक्षरःशुद्धः — मैत्रा. ७।६
यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव । य ईशे अस्यद्विपदश्चतुष्पदः..तन्मे मनः.. — २ शिवसं. ३३
यः प्राणपवनस्पन्दश्चित्तस्पन्दः स एव हि । प्राणस्पन्दजये यत्नः कर्तव्यो धीमतोच्चकैः — अ. पू. ४।८९
यः प्राणभोगस्तं देवेभ्य आगायत् — बृह. १।३।३
यः प्राणः स वायुः — १ पैंग. ३।३।२
(अथ) यः प्राणापानयोः सन्धिः स व्यानः — छांदो. १।३।३

यः प्राणे तिष्ठन् प्राणादन्तरो यं प्राणो न वेद.. बृह. ३।७।१६
यः प्राणेन प्राणिति स त आत्मा सर्वान्तरः बृह. ३।४।१
यः प्राणैः प्रतितिष्ठसि प्रश्नो. २।७
यः प्राणो व्यानोऽपानः समान उदानः स शिरःपक्षसी पृष्ठ-पुच्छवानेषोऽग्निः मैत्रा. ६।३३
यः शङ्खः स स्वयं विष्णुर्लक्ष्मीरूपो व्यवस्थितः कृष्णोप. १६
यः शतरुद्रियमधीते सोऽग्निपूतो भवति कैव. २।५
यः शतं च सहस्राणां सहस्रं श्राद्ध आचरेत् । एकस्मान्मन्त्रवित्पूतः सर्वमर्हति ब्राह्मणः इतिहा. ४६
यः शब्दस्तदोमित्येतदक्षरं मैत्रा. ६।२३
यः शरीरेन्द्रियादिभ्यो विहीनं सर्व-साक्षिणम् । पारमार्थिक-(परमार्थक-)विज्ञानं सुखात्मानं स्वय-म्प्रभम् । [ना. प. ६।१६+ वराहो. २।२९
यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य भ.गी. १६।२३
यः शिवं शिवमित्येवं द्व्यक्षरं मन्त्र-मभ्यसेत् । एकाक्षरं वा सततं स याति परमं पदम् शिवो. १।२१
यः शिवः स परं ब्रह्म तत्साम्नो-ऽन्त्यं पादं जानीयात् यो जानीते सोऽमृतत्वं च गच्छति परं ब्रह्मैव भवति ग. पू. २।१
यः शुचिः प्रयतो भूत्वा[श्रीसू.१६+ ऋ.खि.५।८७।१६
यः शृणोति सकृद्वाऽपि ब्रह्मैव भवति स्वयम् (ध्रुवम्) मैत्रे. ३।२५
यः श्राद्धानि कुरुतेऽसङ्गतानि न देवयानेन पथा स याति इतिहा. १९
यः श्रीकामः शान्तिकामः..भास्करं भगवन्तमुपासीत सूर्यता. १।८
यः श्रोत्रे संश्रावयितृ (वेद) संश्रावयितृमान्भवति कौ. त. २।१
यः श्रोत्रे तिष्ठञ्छ्रोत्रादन्तरो यꣳ श्रोत्रं न वेद बृह. ३।७।१९
यः श्रोत्रे भोगस्तं देवेभ्य आगायत् बृ. उ. १।३।५
यः श्रोत्रे यः श्रोतव्ये यो दिक्षु ...सोऽयमात्मा सुबालो. ५।२
यः स ईश्वर इत्युक्तः सर्वज्ञत्वादि-भिर्गुणैः सरस्व. ४१
यः सकृदुच्चारयति तस्य संसार-मोचनं भवति अद्वयता. १३
यः सकृदुच्चारणःसंसारविमोचनोभवति द्वयोप. ८
यः सङ्कल्पं ब्रह्मेत्युपास्ते छांदो. ७।४।३
यः सच्चिदानन्दाद्वैतैकचिदात्मा भूर्भुवः सुवस्तस्मै वै नमोनमः रामो.ता.५।४८
यः सञ्चरꣳश्चासञ्चरꣳश्च न व्यथतेऽथो न रिष्यति बृह. १।५।२०
यः सत्येनातिवदति छांदो.७।१६।१
यः सदा मुक्त एव सः भ. गी. ५।२
यः सदाऽहरहर्जपति स वै ब्राह्मणो भवति (सूर्यमन्त्रं) सूर्यो. ९
यः समः सर्वभूतेषु जीवितं तस्य शोभते १सं.सो.२।३९
यः समस्तार्थजालेषु व्यवहार्यपि निःस्पृहः (शीतलः)। परार्थेष्विव पूर्णात्मा स जीवन्मुक्त उच्यते [महो. २।६२+ वराहो. ४।२७
यः स मामेति पाण्डव भ.गी. ११।५५
यः सर्वज्ञः सर्वविद्यस्य ज्ञानमयं तपः । तस्मादेतद्ब्रह्म नाम रूपमन्नं च जायते मुंड. १।१।९
यः सर्वज्ञः सर्वविद्यस्यैष महिमा भुवि । दिव्ये ब्रह्मपुरे ह्येष व्योम्न्यात्मा प्रतिष्ठितः मुण्ड. २।२।७
यः सर्वत्रानभिस्नेहः भ. गी. २।५७
यः सर्वज्ञः सर्वविद्यो यस्य..तस्माद-न्नान्नरूपेण जायते जगदावलिः रुद्रहृ. ३३
यः स सर्वेषु भूतेषु भ. गी. ८।२०
यःसर्वव्यापीसोऽनन्तः [अ.शिरः.३।४ बटुको.१९
यः सर्वाणिभूतान्यन्तरोयमयत्येष त आत्माऽन्तर्याम्यमृतः बृह. ३।७।१५
यः सर्वान्देवानीशते ईशनीभिः अ.शिरः. ३।५
यः सर्वान्देवानीशते...तस्मादुच्यते ईशानः बटुको. २०

यः सर्वान् प्राणान्सम्भक्ष्य सम्भक्षणेनाजः संसृजति । विसृजति तीर्थमेके व्रजन्ति   अ. शिरः. ३।५
यः सर्वेषु भूतेषु तिष्ठन् सर्वेभ्यो भूतेभ्योऽन्तरो यं सर्वाणि भूतानि न विदुः   बृह. ३।७।१५
यः सर्वोपरमे काले सर्वानात्मन्युपसंहृत्य स्वात्मानन्दसुखे मोदते प्रकाशते वा स देवः   द.मू. २
यः सव्यं पाणिं पादौ प्रोक्षति... तेनाथर्वाङ्गिरसो...प्रीणाति   सह्वै. १५
यः साज्यसमिद्भिर्यजति स सर्वंलभते   गणप. १३
यः सावित्रं वेद, अहोनाह्याश्वध्यः   सूर्यता. ३।१
यः सुयुक्तोऽजस्रं चिन्तयति तस्माद्विद्यया...चोपलभ्यते ब्रह्म   मैत्रा. ४।४
यः सूक्ष्मान् सञ्चरमाणान्भावाभावान्भव्याभव्यान्कुर्वन्नात्मीयममितो धुनोति धुरंवहिष्यसेस्वाहा   पारमा. २।८
यः सूर्यः सोऽहमेव च   सूर्यो. ६
यः सेतुरीजानानामक्षरं ब्रह्म यत्परम्   कठो. ३।२
यः स्तनः पूर्वपीतस्तं निपीड्य मुदमश्नुते   १ यो. त.१३१
यः स्तन्यं पूर्वं पीत्वाऽपि निष्पीड्य च पयोधरान्   २ योगत. ३
यः स्मरं ब्रह्मेत्युपास्ते यावत्स्मरस्य गतं तत्रास्य यथा कामचारो भवति   छांदो. ७।१३।२
यः स्वजनान्नीलग्रीवो यः स्वजनान्हरिः   नीलरु. ३।१
यः स्वयं लोकमवधारमवधारयन्स्वाहा   पारमा. ६।१
यः स्वयं सृष्टमात्मना गुप्तमनुसन्धितानमचरंचरन्संस्वयंक्रीडं क्रीडयन्क्रीडान्तरमनुप्राविशत्स्वाहा   पारमा. ६।२
यः स्वरूपपरिभ्रंशश्चेस्यार्थे चितिमज्जनम् । एतस्मादपरो मोहो न भूतो न भविष्यति   महो. ५।४
(अथ) या अक्षन्नापस्ताभिः पर्जन्यः   बृह. २।२।२
(अथ) या अन्या आहुतयोऽनन्तवत्यस्ताः कर्ममयग्रो भवन्ति   कौ. उ. २।५
या इषवो यातुधानानां ये वा वनस्पतीनाम् । ये वाऽवेदेषु शेरते तेभ्यः सर्वेभ्यो नमः   नीलरु. २।११
[+वा. सं. १३।७+   तै.सं. ४।२।८।४
या इष्टका यावतीर्वा यथा वा   कठो. १।१५
या उमा सा स्वयं विष्णुर्यो विष्णुः स हि चन्द्रमाः   रु. हृ.५
या ओषधयः सोमराज्ञीर्बह्वीः शतविचक्षणाः । बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वंहसः   प्रा. हो. १।२
या ओषधीः सोमराज्ञीरितितिसृभिरन्नपत इति द्वाभ्यामनुमन्त्रयते   प्रा. हो. १।१
या कनीनका तयाऽऽदित्यः..   बृह. २।२।२
यक्ष्यमाणो वै भगवन्तोऽहमस्मि यावदेकैकस्मा ऋत्विजे धनं दास्यामि तावद्भगवद्भ्यो दास्यामि वसन्तु भगवन्त इति   छांदो. ५।११।५
याग-व्रत-तपो-दान-विधिविधान-ज्ञानसम्भवो बन्धः ।   निरा. उ. २१
या गौर्वरिष्ठा सह सोर्वरित्री... एजते स्वाहा   पारमा. १०।१
या च प्रागात्मनो माया तथाऽन्ते च तिरस्कृता । ब्रह्मवादिभिरुद्गीता सा मायेति विवेकतः   वराहो. २।५१
याचितायाचिताभ्यां च भिक्षाभ्यां कल्पयेत्स्थितम् (तिं)   १सं.सो. २।७१
या जाग्रति महीयते, तां वैखरीमाचक्षते   गान्धर्वो. २
या ज्या व्यानः शास्या   बृह. ३।१।१०
याज्ञवल्क्य अयज्ञोपवीती कथं ब्राह्मण इति   जाबालो. ५
(अथ ह) याज्ञवल्क्य आदित्यमण्डलपुरुषं प्रपच्छ   मं. ब्रा. २।१
याज्ञवल्क्य किंज्योतिरयं पुरुष इति   बृह. ४।३।२
याज्ञवल्क्यस्त्वां..अक्रता ३इति (मा.)   बृह. ३।९।१८
(अथ ह) याज्ञवल्क्योऽन्यद्वृत्तमुपाकरिष्यन्   बृह. ४।५।१
याज्ञवल्क्यो मण्डलपुरुषं पप्रच्छ   मं. ब्रा. ३।१
याज्ञवल्क्यो महामण्डलपुरुषंपप्रच्छ   मं. ब्रा. ३।१

याज्ञवल्क्यो ह वै महामुनिरादित्यलोकं जगाम	मं. ब्रा. ११
या त इषुः शिवतमा शिवं बभूव ते धनुः । शिवा शरव्या या तव तया नो मृड जीवसे [नीलरु.१।७	+तै.सं.४।५।१।१
या तदभिमानं कारयति साऽविद्या	सर्वसारो. २
यातयामं गतरसं	भ.गी.१७।१०
याति नास्त्यत्र संशयः	भ. गी. ८।५
याति पार्थानुचिन्तयन्	भ. गी. ८।८
या तिरश्ची निपद्यतेऽहं विधरणी इति तां त्वा घृतस्य धारया यजे	बृह. ६।३।१
यातुधानाश्च रक्षांसि पिशाचा असुरास्तथा । एते हरन्ति वै श्राद्धं दैवं यत्र निवर्तयेत्	इतिहा. ६१
या ते अग्ने यज्ञिया तनूस्तयेह्यारोहात्मात्मानम् । अच्छा वसूनि कृण्वन्नस्मेनर्या पूरूणि [तै. सं. ३।४।१०।५	ना. प. ४।४२+
या ते तनूर्वाचि प्रतिष्ठिता या श्रोत्रे या च चक्षुषि । या च मनसि सन्तता शिवां तां कुरु मोत्क्रमीः	प्रश्नो. २।१२
या ते रुद्र शिवातनूरघोरा पापकाशिनी [श्वेता. ३।५+ [लिङ्गोप.१+वा.सं.१६।२+	नीलरु.१।८+ तै.सं.४।५।१।१
यादृच्छिको भवेत्स भिक्षुः	प. हं.८
यादृच्छिको भवेद्यदृच्छालाभसन्तुष्टः सुवर्णादीन्न परिग्रहेत् (यतिः)	ना. प. ३।८७
यादृशं द्रव्यमभाति सात्त्विकं राजसं तु वा । तादृशं गुणमाप्नोति गुणैः कर्मगतिं तथा	भवसं. ४।८
यादृशा भक्तास्तादृशं सुखं तादृशो लीलाभावश्च भवेत्	सामर. ३०
या देवानां प्रभवा चोद्भवा च विश्वाधिपा सर्वभूतेषु गूढा । हिरण्यगर्भं जनयामास पूर्वं सा नो बुद्ध्या शुभया संयुनक्तु	गुह्यका. ५६
या धमनयस्ता नद्यः	छांदो.३।१९।२
यानि खानि स आकाशः	१ ऐत. ३।३।२
यानि दुःखानि या तृष्णा दुस्सहा ये दुराधयः । शान्तचेतस्सु तत्सर्वं तमोऽर्केष्विव नश्यति	महो. ४।२९
या नित्यं संवर्ते महीयते, तां पश्यन्तीमाचक्षते	गान्धर्वो. २
यानि पञ्चधा त्रीणि त्रीणि तेभ्यो न ज्यायः परमन्यदस्ति	छांदो.२।२१।३
यानि मम पूर्वजन्मोपार्जितानि चक्षुःप्रतिरोधकदुष्कृतानि सर्वाणि निर्मूलय..	चक्षुषो. २
या निशा सर्वभूतानां	भ. गी. २।६९
यानि ह्येव जाग्रत्पश्यति तानि सुप्त इत्यत्रायंपुरुषःस्वयञ्ज्योतिर्भवति	बृह. ४।३।१४
(अथ) यानीतराणि स्तोत्राणि तेष्वात्मनेऽन्नाद्यमागायेत्	बृह. १।३।२८
यानूष्मणोऽधिदैवतमवोचाम मज्जानस्तेऽध्यात्मम्	३ ऐत. २।२।२
यानूष्मणोऽवोचाम रात्रयस्ताः	३ ऐत. २।२।१
यानेव हत्वा न जिजीविषामः	भ. गी. २।६
यान्ति देवव्रता देवान्	भ. गी. ९।२५
यान्ति ब्रह्म सनातनम्	भ. गी. ४।३१
यान्ति मद्याजिनोऽपि माम्	भ. गी. ९।२५
(अतो) यान्यन्यानि वीर्यवन्ति कर्माणि यथाऽग्नेर्मन्थनमाजेः सरणं..तानि करोति	छांदो. १।३।५
यान्यनवद्यानि कर्माणि, तानि सेवितव्यानि, नो इतराणि	तैत्ति. १।११।२
यान्यक्षराण्यवोचामाहानितानि	३ ऐत. २।२।१
यान्यक्षराण्यधिदैवतमवोचामास्थीनि तान्यध्यात्मम्	३ ऐत. २।२।२
(अथ) यान्यष्टाचत्वारिंशद्वर्षाणि तृतीयसवनम्	छांदो. ३।१६।५
यान्यस्माकं सुचरितानि, तानि त्वयोपास्यानि नो इतराणि	तैत्ति. १।११।२
यान्येतानि देवजातानि गणश आख्यायन्ते वसवो रुद्रा आदित्या विश्वेदेवा मरुतइति	बृह. १।४।१२

यान्येतानि देवत्रा क्षत्राणीन्द्रो वरुणः सोमो रुद्रः पर्जन्यो यमो मृत्युरीशान इति — बृह. १।४।११
यान्सन्धीनधिदैवतमवोचाम पर्वाणि तान्यध्यात्मम् — ३ ऐत. २।२।२
यान् सन्धीनवोचामाहोरात्राणां ते सन्धयः — ३ ऐत. २।२।१
या परा सा परा गतिः — गान्धर्वो. ५
या पुरस्ताद्युज्यत ऋचोऽक्षरे परमे व्योमन्निति — २ प्रणवो. ५
या प्रतीतिरनागस्का तद्वि-द्ब्रह्मास्मि सर्वगम् — अ. पू. ५।२२
या प्रत्यग्दृष्टिभिर्जीवैर्व्यज्यमानानु-भूयते । ज्ञापिनी ज्ञप्तिरूपैका सा मां पातु सरस्वती — सरस्व. १५
या प्राणेन सम्भवत्यदितिर्देवता-मयी । गुहां प्रविश्य तिष्ठन्ती या भूतेभिर्व्यजायत — कठो. ४।७
या प्राणेन संविशति (मा. पा.) — कठो. ४।७
या बुद्धिर्गर्भमध्ये सा बुद्धिर्बाल्या-वस्था न भवति — अद्वैतो. २
या बुद्धिर्बाल्यावस्था भवति सा बुद्धिर्यौवनावस्था न भवति — अद्वैतो. २
या बुद्धिर्यौवनावस्था सा बुद्धि-र्यूनावस्था न भवति — अद्वैतो. २
या भार्या (जननी हि सा) मातरेवहि — १ योगत. १३२
याभिरादित्यस्तपति रश्मिभिस्ताभिः पर्जन्यो वर्षति — महाना. १७।१३
याभिरिदं भिनुयुर्दाशुषः प्रजाः — बा. मं. १७
याभिर्विभूतिभिर्लोकान् — भ. गी. १०।१६
या (अदितिः) भूतेभिर्व्यजायत, एतद्वैतत् — कठो. ४।७
या मनसि सन्तता (मा. पा.) — प्रश्नो. २।१२
या मन्द्रा स्वरवती सा देवहूः — संहितो. १।२
याममात्रं तु यो नित्यमभ्यसेत्स तु कालजित् — १ यो.त. १२६
याममात्रं प्रतिदिनं योगी यत्नाद-तन्द्रितः — १ यो. त. ७२
याममात्रं वासुदेवं चिन्तयेत् कुंभकेन यः । सप्तजन्मार्जितं पापं तस्य नश्यति योगिनः — त्रि. ब्रा. १४८
या माता सा पुनर्भार्या या भार्या मातरेव हि (जननी हि सा) — २ योगत. ४ [१ यो. त. १३२+
(अथ) यामिच्छेद्दधीतेति तस्या-मर्थं निष्ठाय मुखेन मुखं सन्धायापान्याभिप्राण्यात् — बृह. ६।४।११
(अथ) यामिच्छेन्न गर्भं दधीतेति तस्यामर्थं निष्ठाय...इत्यरेता एव भवति — बृह. ६।४।१०
यामिन्द्रसेनेत्याहुस्तां विद्यां ब्रह्म-योनिं सरूपामिहायुषे शरणं प्रपद्ये — नृ. पू. ३।४
यामिमां पुष्पितां वाचं — भ. गी. २।४२
यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्य-स्तवे । शिवां गिरित्र तां कुरु माहिंसीः पुरुषं जगत् [श्वेता. ३।६ +नीलरु. १।५ [+वा.सं. १६।३+ — तै.सं. ४।५।१।१
यामेव कुमारस्यान्ते वाचमभाष-थास्तामेव मे ब्रूहि — छांदो. ५।३।६
याम्यकर्णान्तं यशस्विनी भवति — शांडि. १।४।६
यायावरा यजन्तो...ददतः प्रति-गृह्णन्तः शतसंवत्सराभिः क्रिया-भिर्यजन्त आत्मानं प्रार्थयन्ते — आश्रमो. २
या योदेति मनोनाम्नी वासना वासितान्तरा । तांतांपरिहरे-त्प्राज्ञस्ततोऽविद्याक्षयो भवेत् — महो. ४।१०८
यावच्चित्तस्य गतं तत्रास्य यथा-कामचारो भवति — छांदो. ७।५।२
यावच्चोपाधिपर्यन्तं तावच्छुश्रूषये-द्गुरुम् । गुरुवद्गुरुभार्यायां तत्पुत्रेषु च वर्तनम् — पैङ्गलो. ४।८
यावज्जीवति तावच्च दुःखैर्नानाविधैः प्लुतः । तन्तुकारणपक्ष्मौघैरास्ते कार्पासबीजवत् — भवसं. १।८
यावतः खलु पिण्डान् स प्राश्नाति हविषो नृचः । तावतः शूलान् ग्रसति प्राप्य वैवस्वतं यमम् — इतिहा. २६

यावती दृश्यकलना सकलेयं विलो-
क्यते । सा येन सुष्ठु सन्त्यक्ता
स जीवन्मुक्त उच्यते महो. २।५३
(अथ) यावतीयं त्रयी विद्या
यस्तावत्प्रतिगृह्णीयात्सोऽस्या
एतद्द्वितीयं पदमाप्नुयात् बृह. ५।१४।६
यावतीर्वै देवतास्ताः सर्वा वेदविदि
ब्राह्मणे वसन्ति तस्माद्ब्राह्मणे-
भ्यो वेदविद्भ्यो दिवे दिवे
नमस्कुर्याम्.. सह्वै. १९
यावत्केवलसिद्धिः स्यात्तावत्सहित-
मभ्यसेत् योगकुं. १।२०
यावत्त एनं प्रजायामुद्गीथं वेदिष्यते
परोवरीयो हैभ्यस्तावदस्मिँल्लोके
जीवनं भविष्यति छांदो. १।९।३
यावत्तेजसो गतं तत्रास्य यथाकाम-
चारो भवति छांदो. ७।११।२
यावत्प्रयत्नलेशोऽस्ति यावत्सङ्कल्प-
कल्पना । श्रेयस्त्वं मनसा प्राप्तं
तावत्तत्त्वस्य का कथा अमन. २।९६
यावत्यो वै कालस्य कलास्तावतीषु
चरत्यसौ यः कालं ब्रह्मे-
त्युपासीत मैत्रा. ६।१४
यावत्सङ्कल्पस्य गतं तत्रास्य यथा-
कामचारो भवति यः सङ्कल्पं... छांदो. ७।४।३
यावत् सञ्जायते किञ्चित् भ. गी. १३।२७
यावत्सर्वं न सन्त्यक्तं तावदात्मा
न लभ्यते । सर्वसङ्गपरित्यागे
शेष आत्मेति कथ्यते अ. पू. १।४५
यावत्स्मरस्य गतं तत्रास्य यथा-
कामचारो भवति यः स्मरं
ब्रह्मेत्युपास्ते छांदो. ७।१३।२
यावदनुदिशो यावदनुचन्द्रमा-
स्तावानस्य लोको भवति १ ऐत. १।७।५
यावदनुद्यौर्यावदन्वादित्यस्तावानस्य
लोको भवति १ ऐत. १।७।६
यावदनु पृथिवी यावदग्निस्तावा-
नस्य लोको भवति १ ऐत. १।७।२
यावदन्तरिक्षं यावदनुवायुस्तावानस्य
लोको भवति १ ऐत. १।७।३
यावदन्नस्य गतं तत्रास्य यथाकाम-
चारो भवति योऽन्नंब्रह्मेत्युपास्ते छांदो. ७।९।२
यावदन्वापो यावदनुवरुणस्तावा-
नस्य लोको भवति १ ऐत. १।७।६
यावदपां गतं तत्रास्य यथाकाम-
चारो भवति, योऽपोब्रह्मेत्युपास्ते छांदो. ७।१०।२
यावदाकाशस्य गतं तत्रास्य यथा-
कामचारो भवति य आकाशं.. छांदो. ७।१२।२
यावदाशाया गतं तत्रास्य यथा-
कामचारो भवति य आशां
ब्रह्मेत्युपास्ते छांदो. ७।१४।२
यावदादहनश्चोर्ध्वमधस्तात्पावनं
भवेत् बृ. जा. २।८
यावदायुषं ब्रह्मलोकमभिसम्पद्यते
न च पुनरावर्तते छांदो. ८।१५।१
यावदितः पुरस्तादुदयति सूर्यः,
तावदितोऽमुं नाशय वनदु. १६०
(अथ) यावदिदं प्राणि, यस्तावत्
प्रतिगृह्णीयात्, सोऽस्या एत-
त्तृतीयं पदमाप्नुयात् बृह. ५।१४।६
यावदुन्मेषकालस्तावन्निमेषकालो
भवति त्रि.म. ना. ४।६
यावदुष्णंभवत्यन्नंतावद्दश्नीतवाग्यतः इतिहा. ८१
यावदेकैकस्मा ऋत्विजे धनं दास्यामि
तावद्भगवद्भ्यो दास्यामि छांदो. ५।११।५
यावदेतान्निरीक्षेऽहं भ. गी. १।२२
यावदेनो दीक्षामुपैति दीक्षित एतैः
सततं जुहोति सह्वै. १२
यावद्दृष्टिर्भ्रुवोर्मध्ये तावत्काल-
भयं कुतः यो. चू. ९१
यावद्ध्यानस्य गतं तत्रास्य यथा-
कामचारो भवति यो ध्यानं
ब्रह्मेत्युपास्ते छांदो. ७।६।२
यावद्धेतुफलावेशस्तावद्धेतुफलोद्भवः ।
क्षीणे हेतुफलावेशे नास्ति
हेतुफलोद्भवः मां. शां. ५५

यावद्धेतुफलावेशः संसारस्ताव-
दायतः । क्षीणे हेतुफलावेशे
संसारं न प्रपद्यते अ. शां. ५६
यावद्ध्यस्मिञ्छरीरे प्राणो वसति
तावदायुः कौ. त. ३।२
यावद्ध्रियते सा दीक्षा [महाना.१८।१ +त्रिसुप. ४
यावद्बलस्य गतं तत्रास्य यथाकाम-
चारोभवति योबलंब्रह्मेत्युपास्ते छांदो. ७।८।२
यावद्बिन्दुः स्थितो देहे तावन्मृत्यु-
भयं कुतः । यावद्बद्धानभोमुद्रा
तावद्बिंदुर्नगच्छति [ध्या.बि.८४ +यो. चू. ५८
यावद्वा मक्षिकायाः पत्रं
तावन्तरेणाकाशः बृह. ३।३।२
यावद्यावन्मुनिश्रेष्ठ स्वयं सन्त्यज्य-
तेऽखिलम् । तावत्तावत्पराळोकः
परमात्मैव शिष्यते अ. पू. १।४४
यावद्वाचो गतं तत्रास्य यथाकाम-
चारो भवति, यो वाचं
ब्रह्मेत्युपास्ते छांदो. ७।२।२
यावद्वायुः स्थितो देहे तावज्जीवो
न मुञ्चति यो. चू. ९०।९१
यावद्वा शक्यते तावद्धारयेज्जप-
तत्परः । पूरितं रेचयेत्पश्चा-
न्मकारेणानिलं बुधः जा. द. ६।५
यावद्विलीनंनमनोनतावद्वासनाक्षयः अ. पू. ४।७८
यावद्विज्ञानस्य गतं तत्रास्य यथा-
कामचारो भवति, यो विज्ञानं
ब्रह्मेत्युपास्ते छांदो. ७।७।२
यावद्धि पुरुषः प्राणिति न ताव-
द्भाषितुं शक्नोति कौ. त. २।५
यावद्धि पुरुषो भाषते न ताव-
त्प्राणितुं शक्नोति कौ. त. २।५
यावन्तस्तु कराद्भ्रष्टाः पतन्ति
जलबिन्दवः । भूत्वा वज्राणि
ते सर्वे पतन्ति ह्यसुरेषु वै । ततो
विभावसुस्तेषां प्रीतात्मा-
ऽभ्यायते वरम् सन्ध्यो. १२,१३
६६

यावन्तीह वै भूतान्यन्नमदन्ति
तावत् स्वन्तस्थोऽन्नमत्ति यो
हैवं वेद मैत्रा. ६।१३
यावन्तो देवास्त्वयि जातवेदस्ति-
र्यञ्चो घ्नन्ति पुरुषस्य कामान् बृह. ६।३।१
यावन्तो वैश्वदेवस्य निविद्युच्यन्ते बृह. ३।९।१
यावन्न चित्तोपशमो न तावत्तत्त्व-
वेदनम् । यावन्न वासनानाश-
स्तावत्तत्त्वागमः कुतः अ. पू. ४।८०
यावन्न तत्त्वविज्ञानं ताव-
च्चित्तशमः कुतः अ. पू. ४।७९
यावन्न तत्त्वसम्प्राप्तिर्न ताव-
द्वासनाक्षयः अ. पू. ४।८०
यावन्न लभ्यते शाम्भं तावद्वा
पर्यटेद्यतिः । यदा सँल्लभ्यते
शाम्भं तदा सिद्धिः करे स्थिता योगकु. २।११
यावन्नाम्नो गतं तत्रास्य यथाकाम-
चारो भवति यो नाम
ब्रह्मेत्युपास्ते छांदो. ७।१।५
यावन्निश्श्वसितो जीवस्ताव-
न्निष्कलतां गतः ब्र. वि. १९
यावन्नोत्पद्यते सत्या बुद्धिर्नतदहं
यथा । नैतन्मम च विज्ञाय ज्ञः
सर्वमतिवर्तते आयुर्वे. २९
यावन्मनसो गतं तत्रास्य यथा-
कामचारो भवति यो मनो
ब्रह्मेत्युपास्ते छांदो. ७।३।२
यावन्मनस्तत्र मरुत्प्रवृत्तिर्याव-
न्मरुच्चापि मनोनिवृत्तिः अमन. २।२७
यावन्ममेदमित्यास्था तावच्चिता-
द्विविभ्रमः अ. पू. ५।११
यावमुष्य गेष्णौ तौ गेष्णौ
यन्नाम तन्नाम छांदो. १।७।५
यावर्णपदवाक्यार्थस्वरूपेणैव वर्तते ।
अनादिनिधनानन्ता सा मां
पातु सरस्वती सरस्व. ९
यावल्लिङ्गस्य दैर्घ्यं स्यात्तावद्वेधाश्च
विस्तरः । लिङ्गतृतीयभागेन
भवेद्वेधाः समुच्छ्रयः शिवो. २।१२

याऽवसानेऽस्य चतुर्थ्यर्धमात्रा सा
सोमलोक ओङ्कारः नृ. पू. ३।१
याऽवसानेऽस्य चतुर्थ्यर्धमात्रा सा
विद्युमतीसर्ववर्णापुरुषदेवत्या अ. शिखो. १
यावन्तं ह वा इमा वित्तस्य पूर्णां
ददल्लोकं जयति
तावन्तं लोकं जयति सद्वै. १८
या वाक् सर्क् तस्मादप्राणन्ननपान-
न्नृचमभिव्याहरति छांदो. १।३।४
यावानर्थ उदपाने भ. गी. २।४६
यावानु वै रसस्तावानात्मा संहितो. ४।१
यावान् यश्चास्मि तत्त्वतः भ. गी. १८।५५
यावान्वा अयमाकाशस्तावानेषो-
ऽन्तर्हृदय आकाशः छांदो. ८।१।३
यावान् संवत्सरस्तमेतावतः कालस्य
परस्तादसृजत बृह. १।२।४
या वा प्रजा स प्राणः कौ. त. ३।३
या वाऽस्या अग्न्यास्तनवस्ता अभि-
ध्यायेदर्चयेन्निकुयात् मैत्री. ४।६
या वित्तैषणा सा लोकैषणा बृह. ३।५।१
या वेदादिषु गायत्री सर्वव्यापि-
महेश्वरी। ऋग्यजुःसामाथर्वश्च
तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु २शिवसं. १९
या वेदान्तार्थतत्त्वैकस्वरूपा
परमार्थतः। नामरूपात्मना
व्यक्ता सा मां पातु सरस्वती सरस्व. ५
या वै वरदा स्वोपाया सुप्रसन्ना
सुखयति सहस्रपुरुषान् लक्ष्म्यु. ५
या वै शिवा भगवती अणिमा-
सिद्धिस्तस्यै वै नमोनमः आथ. द्वि. २
या वै शिवा भगवती अणिमा-
सिद्धया विद्युत्कतस्यैव नमोनमः आथ. द्वि. १
या वै शिवा भगवती ईशित्वसि-
द्धिस्तस्यै वै नमो नमः आथ. द्वि. ५
या वै शिवा भगवती प्राकाम्यसि-
द्धिस्तस्यै वै नमो नमः आथ. द्वि. ७
या वै शिवा भगवती मुक्तिसिद्धि-
स्तस्यै वै नमो नमः आथ. द्वि. ८
या वै शिवा भगवती महिमासि-
द्धिस्तस्यै वै नमो नमः आथ. द्वि. ४
या वै शिवा भगवती लघिमासि-
द्धिस्तस्यै वै नमोनमः आथ. द्वि. ३
या वै शिवा भगवती वशित्व-
सिद्धिस्तस्यै वै नमोनमः आथ. द्वि. ६
या वै ता इमाः प्रजास्तिस्रो अत्या-
यमायन् १ ऐत. २।१।१
या वै विष्णुं पालने सन्नियुङ्क्ते रुद्रं
देवं संहृतौ चापि गुहा। तां वै
देवीमात्मबुद्धिप्रकाशां मुमुक्षुर्वै
शरणमहं प्रपद्ये गुह्यको. ७२
या वै सा गायत्रीयं पृथिव्यसा९
हीद९..(मा.) छांदो. ३।१२।२
या वै सा गायत्रीयं वाव सा येयं
पृथिव्यस्यां९ हीद९ सर्वं भूतं
प्रतिष्ठितमेतामेव नातिशीयते छांदो. ३।१२।२
या वै सा पृथिवीयं वाव सा यदि-
दमस्मिन्पुरुषे शरीरमस्मिन्हीमे
प्राणाः प्रतिष्ठिता एतदेव नाति-
शीयन्ते छांदो. ३।१२।३
या वै सा मूर्तिरजायताऽन्नं वै तत् २ ऐत. ३।२
या व्याहृतिराहुतिर्यदस्य विज्ञानं
तज्जुहोति [महाना. १८।१+ त्रिसुप. ४
या शक्तिस्तद्वशाद्ब्रह्म विकृतत्वेन
भासते। अत्राप्यावृतिनाशेन
विभाति ब्रह्मसर्गयोः सरस्व. ३३
या शतेन प्रतनोषि सहस्रेण विरोहसि।
तस्यास्ते देवीष्टके विधेम हविषा
वयम् [महाना. ४।३+ बृजाबा. २५
[+ वा. सं. १३।२१+ तै.सं.४।२।९।२
याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो
वप। अवतत्य धनुस्त्व९ सह-
स्राक्ष शतेषुधे [नीलरु. २।५+ वा.सं. १६।९
[+तै. सं. ४।५।१।३
याश्च देवता एतस्यां प्रतिवसन्त्ये-
ताभ्यश्च नमो नमः सद्वै. २२
याश्च मृत्योः प्राणवत्यस्ताभ्यो
नमो नमस्तेनैतं मृडयत २ अ. मा. ५

या श्रद्धा धारणा मेधा वाग्देवी
विधिवल्लभा । भक्तजिह्वाग्रसदना
शमादिगुणदायिनी सरस्व. २९
या साङ्गोपाङ्गवेदेषु चतुर्ष्वेकैव
गीयते । अद्वैता ब्रह्मणः शक्तिः
सा मां पातु सरस्वती सरस्व. ७
या सा तृतीया मात्रा ईशान-
देवत्या कपिला वर्णेन यस्तां
ध्यायतेनित्यंसगच्छेदैशानपदं
[अ. शिरः. ३।१०+ २ प्रणवो. १३
या सा द्वितीया मात्रा विष्णु-
दैवत्या कृष्णा वर्णेन यस्तां
ध्यायते नित्यं स गच्छे-
द्वैष्णवं पदं [२ प्रणवो. १३+ अ. शिरः. ३।१०
या सा प्रथमा मात्रा ब्रह्मदेवत्या
रक्ता वर्णेन यस्तां ध्यायते
नित्यं स गच्छेद्ब्राह्मं पदम् २ प्रणवो. १३
या साऽर्धचतुर्थी मात्रा सर्वदैवत्या
व्यक्तीभूता खं विचरति शुद्ध-
स्फटिकसन्निभा वर्णेन यस्तां
ध्यायते नित्यं स गच्छेत्पद-
मनामकम् २ प्रणवो. १३
या साऽर्धचतुर्थी मात्रा सर्वदेवत्या-
ऽव्यक्तीभूता खं विचरति...
यस्तां ध्यायते नित्यं स गच्छेत्
पदमनामयम् अ. शि:. ३।१०
यास्तिस्रो रेखाः सदनानि भूस्त्री-
स्त्रिविष्टपास्त्रिगुणास्त्रिप्रकाराः ।
एतत्त्रयं पूरकं पूरकाणां मन्त्री
प्रथते मदनो मदन्या त्रिपुरो. ५+
यास्ते सोम प्रजावत्सोऽभिसो अहं त्रिसुप. १
[महाना. १२।१+
यास्ते सोम प्राणा५ स्ताञ्जुहोमि त्रिसुप. १
[+महाना. १२।१
याऽस्य तृतीयारेखा साऽऽहवनीयो
मकारस्तमो द्यौलोकः परमात्मा
ज्ञानशक्तिः सामवेदस्तृतीयसवनं
महादेवो देवतेति [का.रुद्रो.४+ जाबाल्यु. ८
याऽस्य (भस्मनः) द्वितीया रेखा
सा दक्षिणाग्निरुकारः सत्त्व-
मन्तरिक्षमन्तरात्माचेच्छाशक्ति-
र्यजुर्वेदो माध्यन्दिनं सवनं
सदाशिवो देवतेति का.रुद्रो. ४
याऽस्य द्वितीया रेखा सा दक्षिणा-
ग्निः...माध्यन्दिनसवनं विष्णु-
र्देवो देवतेति जाबाल्यु. ८
याऽस्य प्रथमा रेखा सा गार्हपत्य-
श्चाकारो रजो भूर्लोकः स्वात्मा
क्रियाशक्तिर्ऋग्वेदः प्रातस्सवनं
महेश्वरो देवतेति का. रुद्रो. ४
याऽस्य प्रथमा रेखा सा गार्हपत्यः
...प्रजापतिर्देवो देवतेति जाबाल्यु. ८
या स्वप्ने महीयते, तां मध्यमा-
माचक्षते गान्धर्वो. १
या स्वच्छा समता शान्ता जीव-
न्मुक्तव्यवस्थितिः । साक्ष्यवस्था
व्यवहृतौ सा तुर्या कलनोच्यते म.पू. ५।१०६
या हुता अतिनेदन्ते पितृलोकमेव
ताभिर्जयत्यतीव हि पितृलोकः बृह. ३।१।८
या हुता अधिशेरते मनुष्यलोकमेव
ताभिर्जयत्यध इव हि मनुष्यलोकः बृह. ३।१।८
या हुता उज्ज्वलन्ति या हुता अति-
नेदन्ते या हुता अधिशेरते किं
ताभिर्जयतीति बृह. ३।१।८
या हुता उज्ज्वलन्ति देवलोकमेव
ताभिर्जयति दीप्यत इव हि
देवलोकः बृह. ३।१।८
या होता हृदयस्य नाड्यस्ताः पिङ्ग-
लस्याणिम्नस्तिष्ठन्ति छांदो.८।६।१
या ह्येव पुत्रैषणा सा वित्तैषणा
या वित्तैषणा सा लोकैषणा उभे
ह्येते एषणे एव भवतः [बृह.३।५।१+ ४।४।२२
यां कल्पयन्ति नोऽरयः क्रूरां कृत्यां
वधूमिव । तां ब्रह्मणे च निर्णुमः
प्रत्यक्कर्तारमृच्छतु वनदु. १२८
यां गामुशन्तीमुशतभिपूर्णां...
वरदाय पित्रे स्वाहा पारमा. ६।७

(अथ) यां चतुर्थी जुहुयात्तां जुहुयात्समानाय स्वाहेति समानस्तृप्यति छांदो. ५।२२।१
यां तु कुमारस्यान्ते वाचमभाषथास्तां मे ब्रूहीति बृह. ६।२।५
(अथ) यां तृतीयां जुहुयात्तां जुहुयादपानाय स्वाहेत्यपानस्तृप्यति छांदो. ५।२१।१
यां त्वमापः सत्यधृतिर्बतासित्वादृङ्नो भूयान्नचिकेतः प्रष्टा कठो. २।९
(अथ) यां द्वितीयां जुहुयात्तां जुहुयाद्व्यानाय स्वाहेति व्यानस्तृप्यति छांदो. ५।२०।१
(अथ) यां पञ्चमीं जुहुयात्तां जुहुयादुदानाय स्वाहेत्युदानस्तृप्यति छांदो. ५।२३।१
यां यामहं मुनिश्रेष्ठ संश्रयामि गुणाश्रयम्। तांतांकृन्तति मे तृष्णा तन्त्रीमिव कुमूषिका महो. ३।२२
यां यां वासनां प्राप्नोति तं तं लिङ्गशरीरं प्राप्नुवंस्तास्ते सामर. १००
यां यां वासनामात्मा विलापयमानो भवति तत्तद्भावेन तत्तलिङ्गं विलीयमानं भवति सामर. १०२
यां विदित्वाऽखिलंबन्धंनिर्मथ्याखिलवर्त्मना। योगी याति परं स्थानं सा मां पातु सरस्वती सरस्व. २१
याः प्राच्यः स्यन्दन्ते स उद्गीथो याः प्रतीच्यः स प्रतिहारः समुद्रो निधनम् छांदो. २।४।१
याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः [प्रा.हो. १।३ ऋ.मं.१०।९७।१९ [वा. सं. १२।८९
युक्त आसीत मत्परः [भ.गी.२।६१+ ६।१४
युक्त इत्युच्यते तदा भ. गी. ६।१८
युक्त इत्युच्यते योगी भ. गी. ६।८
युक्तचेष्टस्य कर्मसु भ. गी. ६।१७
युक्तस्वप्नावबोधस्य भ. गी. ६।१७
युक्तः कर्मफलं त्यक्त्वा भ. गी. ५।१२
युक्तं युक्तं त्यजेद्वायुं युक्तं युक्तं च (प्र) पूरयेत्। युक्तं युक्तं प्रबध्नीयादेवं सिद्धिमवाप्नुयात् शांडि. १।७।७ [यो. चू. ११९+
युक्तात्मानः सर्वमेवाविशन्ति मुण्ड. ३।२।५
युक्ताहारविहारस्य भ. गी. ६।१७
युक्तेन मनसा वयं देवस्य सवितुः सवे। सुवर्गेयाय शक्त्या.. श्वेता. २।२
युक्तो मन्येत तत्त्ववित् भ. गी. ५।८
युक्त्या वै चरतो ह्यस्य संसारो गोष्पदाकृतिः महो. ६।९
युक्त्या श्रुत्या स्वानुभूत्या ज्ञात्वा सार्वात्म्यमात्मना। (स्वात्मन्येव सदा स्थित्या मनो नश्यति योगिनः।) अध्यात्मो. ४
युक्त्वाय मनसा देवान् सुवर्यतो धियां दिवम्। बृहज्ज्योतिः करिष्यतः सविता प्रसुवाति तान् श्वेता. २।३
युगपत्सम्भवे यस्मादसम्बन्धो विषाणवत् अ. शां. १६
युजे वां ब्रह्म पूर्व्यं नमोभिर्विश्लोकायन्ति पथ्येव सूराः श्वेता. २।५
युज्यते नात्र संशयः भ. गी. १०।७
युज्यते वेष्टनं वायोराकाशस्य च खण्डनम्। ग्रन्थनं च तरङ्गाणामास्था नायुषि युज्यते महो. ३।११
युज्यन्ते हास्मै सर्वाणि भूतानि श्रैष्ठ्याय बृह. ५।१३।२
युञ्जते मन उत युञ्जते धियो विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चितः श्वेता. २।४
युञ्जतो योगमात्मनः भ. गी. ६।१९
युञ्जन्नेवं सदाऽऽत्मानं [भ. गी. ६।१५+६।२८
युञ्जानः प्रथमं मनस्तत्त्वाय सविता धियः श्वेता. २।१
युञ्जीत प्रणवे चेतः प्रणवो ब्रह्म निर्भयम्। प्रणवे नित्ययुक्तस्य न भयं विद्यते क्वचित् आगम. २५
युद्धाय कृतनिश्चयः भ. गी. २।३७
युद्धे चाप्यपलायनम् भ.गी. १८।४३

युद्धेन पौरुषेण च तं हेन्द्र उवाच
प्रतर्दन वरं ते ददानीति कौ. त. ३।१
युद्धे प्रियचिकीर्षवः भ. गी. १।२३
युद्धयस्व जेताऽसि रणे सपत्नान् भ. गी. ११।३४
युद्धयस्व विगतज्वरः भ. गी. ३।३०
युधामन्युश्च विक्रान्तः भ. गी. १।६
युनक्ति युञ्जते वाऽपि तस्माद्योग
इति स्मृतः मैत्रा. ६।२५
युयुत्सुं समुपस्थितम् भ. गी. १।२८
युयुधानो विराटश्च भ. गी. १।४
युवतिभगगतं बिन्दुमूर्ध्वं नयन्ति...
नैतेषां देहसिद्धिः अमन. २।३१
युवमस्मासु नियच्छतम् ।
प्र प्र यक्षपतिं तिर चित्त्यु. ११।१२
युवा भवति वृद्धोऽपि सततं मूल-
बन्धनात् ध्या. बिं. ७४
युवा यौवनवृत्तेषु दुःखितेषु
सुदुःखधीः अ. पू. २।३०
युवा सुवासाः [अरुणो. १+ ऋ. मं. ३।८।४
युवा स्यात्साधु-युवाध्यायकः तैत्ति. २।८
युवैव धर्मशीलः स्यादनिमित्तं
हि जीवितम् भवसं. १।४१
यूनश्च परदारादि दारिद्र्यं च कुटु-
म्बिनः । पुत्रदुःखस्य नास्त्यन्तो
धनी चेन्म्रियते तदा याज्ञव. २०
ये अन्यधर्मरहिता अन्यासक्तिरहि-
तास्ते तन्मण्डलं न प्राप्नुवन्ति सामर. ७५
ये अन्योपासका भक्ता आनन्दे-
नाश्रिताः कर्मजडाः कर्मकाण्डो-
पासका एव ते सामर. ७५
ये अर्वागुत वा पुराणे वेदं विद्वां-
समभितो वदन्ति । ते परि-
वदन्ति सर्वे अग्निं द्वितीयं तृतीयं
च हंसमिति [बह्वृ. १९+ अथर्व. १०।८।१७
[+तै. आ. २।१५।१
ये अहोरात्रे ते दर्शपूर्णमासौ त्रिसुप. ४
[महाना. १८।१+
ये अर्धमासे पशुबन्धाः [महाना. १८।१+त्रिसुप. ४

ये कण्ठलग्नतुलसीनलिनाक्षमालाः...
श्रीवैष्णवा भुवनमाशु पवित्रयन्ति सुदर्श. १३
ये कर्मणा देवानपियन्ति तैत्ति. २।८।१
ये केचन जगद्भावास्तानविद्यामया-
न्विदुः । कथं तेषु किलात्मज्ञस्त्य-
क्ताविद्यो निमज्जति वराहो. ३।२८
ये केचनैते ते सर्वेऽप्यज्ञानिनः स्वसंवे. ३
ये केचास्मच्छ्रेयांसो ब्राह्मणाः, तेषां
त्वयाऽऽसने न प्रश्वसितव्यम् तैत्ति. १।११।३
ये के चोभयादतः चित्त्यु. १२।६
ये ग्राम्याः पशवो विश्वरूपाः चित्त्यु. ११।११
[+अथर्व. २।३४।४ तै. आ. ३।११।१२
ये च सत्त्वानजा दोषा ये दोषा देह-
सम्भवाः । प्रैषाग्निर्निर्देहेत्सर्वांस्तु-
षाग्निरिव काञ्चनम् १ सं. सो. २।८
(अथ) ये चान्ये ह नित्यप्रमुदिताः...
तैः सह न संवसेत् मैत्रा. ७।८
(अथ) ये चान्ये ह पुरयाजका
अयाज्ययाजकाः... तैः सह न
संवसेत् मैत्रा. ७।८
(अथ) ये चान्ये ह यक्षराक्षस-
भूतगणपिशाचोरगग्रहादी-
नामर्थं पुरस्कृत्य शमयाम
इत्येवं ब्रुवाणाः...तैः सह
न संवसेत् मैत्रा. ७।८
(अथ) ये चान्ये ह वृथाकषाय-
कुण्डलिनः...तैः सह न संवसेत् मैत्रा. ७।८
(अथ) ये चान्ये ह वृथातर्क-
दृष्टान्तकुहकेन्द्रजालैर्वैदिकेषु
परिस्थातुमिच्छन्ति तैः सह
न संवसेत् मैत्रा. ७।८
ये चाप्यक्षरमव्यक्तं भ. गी. १२।१
ये चास्य ऋत्विजः पूर्ववद्वृणीत्वा
सर्वांस्तांश्च वैश्वानरेष्टीर्निर्वपेत्
सर्वस्वं दद्यात् कठश्रु. ३
ये चास्य विषमा केचिद्दिवि
सूर्यादयो ग्रहाः । तेचास्य सौम्या
जायन्ते शिवाः सुखकराः सदा सन्न्यो. ८

(अथ) ये चास्येह जीवा ये च प्रेता यच्चान्यदिच्छन्न लभते सर्वं तदत्र गत्वा विन्दते छांदो. ८।३।२
ये चैव सात्त्विका भावाः भ. गी. ७।१२
ये जनाः पर्युपासते भ. गी. ९।२२
ये तत्र ब्राह्मणाः समदर्शिनः, युक्ता आयुक्ता अलूक्षा धर्मकामाः स्युः, यथा ते तत्र वर्तेरन्, तथा तत्र वर्तेथाः तैत्ति. १।११।४
ये तद्विदुरमृतास्ते भवन्त्यथेतरे दुःखमेवापियन्ति बृह. ४।४।१४
ये तपःक्षीणदोषास्ते नैव पश्यन्ति भावितान् गुह्यका. ३५
ये तां विदुस्त इमे समासते गुह्यका. ५३
येऽतिरम्याण्यरण्यानि.. विहाया-विरता कामे..ते दैवमोहिताः शिवो. ७।१२९
ये तु ज्ञानिनो भवन्ति ये तत्त्वज्ञानिनश्च तैस्तेषां को विशेषः स्वसंवे. ३
ये तु धर्म्यामृतमिदं भ. गी. १२।२०
ये तु मोहार्णवात्तीर्णास्तैः प्राप्तं परमं पदम् महो. ५।४१
ये तु विद्यार्थविज्ञाने विद्वांस इति कीर्तिताः। आत्मतत्त्वं न जानन्ति दर्वी पाकरसं यथा अमन. २।१००
ये तु वृत्तिं विजानन्ति ज्ञात्वा वै वर्धयन्ति ये। ते वै सत्पुरुषा धन्या वन्द्यास्ते भुवनत्रये ते. बिं. १।४४
ये तु सर्वाणि कर्माणि भ. गी. १२।६
ये तु सूत्रविदो लोके ते च यज्ञोपवीतिनः परब्र. १३
ये तेऽष्टौ ग्रहा अष्टावतिग्रहाः कतमे त इति बृह. ३।२।१
ये ते सहस्रमयुतं पाशा मृत्यो मर्त्याय हन्तवे। तान्यज्ञस्य मायया सर्वानवयजामहे [महाना. १३।१९९+ तै.ब्रा.३।१०।८।२
येऽत्यांसस्ते पराबभूवुः १ पैल. १।१।१
ये त्वक्षरमनिर्देश्यं भ. गी. १२।३
ये त्वेतदभ्यसूयन्तः भ. गी. ३।३२
ये दर्भं हस्ते गृह्णन्ति, ते तं स्वं न प्राप्नुवन्ति सामर. ५१
ये देवा अन्तरिक्षषदस्तेभ्यो नमो... भ. मा. ५
ये देवा दिविषदस्तेभ्यो नमो भगवन्तोऽनुमदन्तु शोभायै... भ.मा.५
ये देवाः पृथिवीषदस्तेभ्यो नमो भगवन्तोऽनुमदन्तु शोभायै... भ. मा. ५
ये द्विषन्ति विरूपाक्षं ते द्विषन्ति जनार्दनम्। ये रुद्रं नाभिजानन्ति ते न जानन्ति केशवम् रुद्रहृ. ७
येन कर्माणि प्रचरन्ति धीरा यतो वाचा मनसा चारु यन्ति ...तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु २ शिवसं. २
येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः... तन्मे मनः [१ शिवसं. २+ २ शि. सं. ३
येन केन प्रकारेण सुखं धैर्यं च जायते। तत्सुखासनमित्युक्तमशक्तस्तत्समाश्रयेत् जा. द. ३।१२
येन केनाक्षरेणोक्तं येन केन विनिश्चितम्। येन केनापि गदितं येन केनापि मोदितम्॥...सर्वं मिथ्येति निश्चिनु [ते.बिं. ५।५६-५८
येन केनापि तेजसा तत्स्वगृह्योक्तमार्गेण प्रतिष्ठाप्य...वह्निं सोमाय स्वाहेति मन्त्रेण ततस्तिलव्रीहिभिः साज्यैर्जुहुयात् भस्मजा. १।२
येन केनासनेन सुखधारणं भवत्यशक्तस्तत्समाचरेत् शांडि. १।३।१२
येन चक्षूंषि पश्यति। तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते केनो. १।७
येन जातानि जीवन्ति यत्प्रयन्त्यभिसंविशन्ति। तं मामेव विदित्वोपासीत भस्मजा. २।५
येन जातानि जीवन्ति। यत्प्रयन्त्यभिसंविशन्ति। तद्विजिज्ञासस्व तैत्ति. ३।१
येन तपसा शिवः शिवोऽभूत् तत्र रुद्रशिवपुष्करिण्यां ये मज्जनं कुर्वन्ति ते तां क्रीडां प्राप्नुवन्ति सामर. ५१

येन ते संसारिण आत्मना विरागाश्च श्रीवि.ता.४।१
येन त्रिवी अर्णवान्निर्बभूव...
तेनाहं ज्योतिषा ज्योतिरान-
शान आक्षि सहवै. ४
येन दक्षिणाभिमुखः शिवोऽपरो-
क्षीकृतो भवति तत्परमरहस्य-
शिवतत्त्वज्ञानम् द. मू. १
येन देवा यान्ति येन पितरो येन
ऋषयः परमपरं परायणं च अ.शिर. ३।११
येन द्यौः पृथिवी चान्तरिक्षं...
येनेदंजगद्व्याप्तंप्रजानां तन्मे मनः २ शिवसं. ९
यन द्वारेण गन्तव्यं ब्रह्मद्वारमना-
मयम्। मुखेनाच्छाद्य तद्द्वारं
प्रसुप्ता परमेश्वरी यो. चू. ३७
येन धर्ममधर्मं च मनोमननमीहितम्।
सर्वमन्तः परित्यक्तं स जीव-
न्मुक्त उच्यते महो. २।५२
येन प्रकाशते विश्वं यत्रैव प्रविलीयते।
तद्ब्रह्म परमं शान्तं तद्ब्रह्मास्मि.. पञ्चब्र. २०
येन प्रजापतिः प्रजाः पर्यगृह्णीता-
रिष्टयै तेन त्वा परिगृह्णामि कौ. ब. २।११
येन प्राणः प्रणीयते, तदेव ब्रह्मत्वं विद्धि केनो. १।९
येन भूचरसिद्धिः स्याद्भूचराणां
जये क्षमः १ यो.त. ५९
येन भूतान्यशेषेण भ.गी. ४।३५
ये नमस्यन्ति गोविन्दं ते नमस्यन्ति
शङ्करम्। येऽर्चयन्ति हरिं
भक्त्या तेऽर्चयन्ति वृषध्वजम् रुद्रह. ६
येनमात्रामात्राविभजते सा संहिता १ ऐत. ३।५।२
येन मामुपयान्ति ते भ. गी. १०।१०
येन मार्गेण गन्तव्यं ब्रह्मस्थानं
निरामयम्। मुखेनाच्छाद्य
तद्द्वारं प्रसुप्ता परमेश्वरी ध्या. बि. ६५
येन मार्गेण गन्तव्यं तद्द्वारं मुखेना-
च्छाद्य प्रसुप्ताकुण्डलिनी कुटिला-
कारा सर्पवद्वेष्टिता भवति शाण्डि. १।७।३७
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता
तन्मे मनः.. [१शिवसं.४+ २ शि. सं. १
येन यत्र कृतं कर्म स तत्रैवप्रजायते शिवो. ७।११०

येन यमस्य निधिनाचरामि सहवै. ४
येन रुद्रेण जगदूर्ध्वं धारितं, पृथिवी
द्विधा त्रिधा धर्ता धारिता नागा
येऽन्तरिक्षे तस्मै रुद्राय नमोनमः अ. शिर. ३।११
येन रूपं रसं गन्धं... एतेनैव
विजानाति किमत्र परिशिष्यते कठो. ४।३
येनर्तवः पञ्चधोत कॢप्ताः चित्यु. ११।५
येन लोकास्तुष्टा भवन्ति गोपालो. १।१४
येन वागभ्युद्यते। तदेव ब्रह्मत्वंविद्धि केनो. १।५
येन वा पश्यति येन वा शृणोति
येन वा गन्धानाजिघ्रति येन
वा वाचं व्याकरोति येन वा
स्वादु चास्वादु च विजानाति २ ऐत. ३।१
येनवैताः शिरा अनुव्याप्ता एष स व्यानः मैत्रा. २।७
येन श्रेयोऽहमाप्नुयाम् भ. गी. ३।२
येन श्रोत्रमिदं श्रुतम्। तदेव
ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते केनो. १।८
येन सम्यक्परिज्ञाय हेयोपादेय-
मुज्झता। चित्तस्यान्तेऽर्पितं
चित्तं जीवितं तेन शोभते १सं.सो. २।४१
येन सर्वमिदं ततम् [भ. गी. २।१७+ १८।४६
येन सर्वमिदं प्रकाशितम्। कोऽन्य-
स्तस्मात्परः स्वसंवे. ४
येन सर्वमिदं प्रोतं पृथिवी चान्त-
रिक्षं च द्यौश्च दिशश्चावान्तर-
दिशश्च स वै सर्वमिदं जगत् महाना. १७।१३
येन सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा
इव। तत्सूत्रं धारयेद्योगी
योगवि-(द्ब्राह्मणोयतिः)तत्त्व-
(दर्शनः) दर्शिवान् ब्रह्मो. ८
[ना. प. ३।७९+ परम. १०
येन सूर्य तमसो निर्मुमोच सहवै. ४
येन स्यात्तेनेदृश एवातोऽन्यदार्तं बृह. ३।५।१
येन स्वराः स्वरं विजानाति येन
मात्रा मात्रां विभजते सा संहितेति २ ऐत. ३।५।२
येनाक्रमन्त्यृषयो ह्याप्तकामा यत्र
तत्सत्यस्य परमं निधानम् मुण्ड. ३।१।६
येनाक्षरं पुरुषं वेद सत्यं प्रोवाच
तां तत्त्वतो ब्रह्मविद्याम् मुण्ड. १।२।१३

येनाचिरात्सर्वपापं व्यपोह्य
परात्परं पुरुषमुपैति विद्वान् सद्वानं. ८
येनात्मैवात्मना जितः म. गी. ६।६
येनायं च लोकः परश्च लोकः
सर्वाणि च भूतानि सन्दृब्धानि
भवन्ति बृह. ३।७।१
येनावृतं खं च दिवं महीं च येना-
दित्यस्तपति तेजसा भ्राजसा च महाना. १।३
येनावृतं नित्यमिदं हि सर्वं ज्ञः
कालकालो गुणी सर्वविद्यः।
तेनेशितं कर्म विवर्तते ह श्वेता. ६।२
येनाश्रुतं श्रुतं भवत्यमतं मतम-
विज्ञातं विज्ञातमिति कथं नु
भगवः स आदेशो भवतीति छांदो. ६।१।३
येनासनं विजितं जगत्त्रयं तेन
विजितं भवति शांडि. १।३।१३
येनासावमृतीभूत्वा मोक्षी भवति।
तस्मादविमुक्तमेव निषेवेत।
अविमुक्तं न विमुञ्चेत्
[रामो. १।१+ तारसा. १।१
येनासावमृतीभूत्वा सोऽमृतत्वं
च गच्छति नृ. पू. १।७
येनासौ गच्छते मार्गं प्राणस्तेन हि
गच्छति। अतः समभ्यसेन्नित्यं
सन्मार्गगमनाय वै अ. ना. २६
येनाहं नामृता स्यां किमहं तेन कुर्यां बृह. २।४।३
येनाहुर्मनो मतम्। तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि केनो. १।५
येनेक्षते शृणोतीदं जिघ्रति व्याक-
रोति च। स्वाद्वस्वादु विजानाति
तत्प्रज्ञानमुदीरितम् शु. र. ३।१
येनेदमन्नं पच्यते यदिदमद्यते तस्यैष
घोषो भवति [बृह. ५।९।१+ मैत्रा. २।८
येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीत-
ममृतेन सर्वम्।...तन्मे मनः
शिवसङ्कल्पमस्तु [१शिवसं.४+ २ शि. सं. १
येनेदं भ्राम्यते ब्रह्मचक्रम् श्वेता. ६।१
येनेदं विश्वं जगतो बभूव ये देवा
अपि महतो जातवेदाः...तन्मे मनः २ शिवसं. १०

येनेदꣳ सर्वं विजानाति तं केन
विजानीयात् [बृह. २।४।१४+ ४।५।१५
येनेदं सर्वं सञ्चरति विचरति सर्वम्।
तमीशानं पुरुषं देवमीड्यं
निचाय्येमां शान्तिमत्यन्तमेति अ. शिरः. ३।८
येनेदं हित्वाऽऽत्मन्येव सायुज्यमुपैति मैत्रा. ४।१
येनेन्द्रो विश्वा अजहादरातीस्तेनाहं
ज्योतिषा ज्योतिरानशान आक्षि सह्वै. ४
येनेमा विश्वा भुवनानि तस्थुः
[चित्त्यु. ११।९+ तै.आ. ३।११।९
ये नैकरूपाश्चावस्ताद्रश्मयोऽस्य
मृदुप्रभाः। इह कर्मोपभोगाय
तैः संसरति सोऽवशः मैत्रा. ६।३०
येनैतद्विधमिदं चेतनवत्प्रतिष्ठापितं मैत्रा. २।३
येनैष भूतस्तिष्ठत्यन्तरात्मा महाना. ८।३
येनैष भूतैस्तिष्ठते ह्यन्तरात्मा मुण्ड. २।१।९
येऽन्नं ब्रह्मोपासते तैत्ति. २।२
(अथ) येऽन्यथाऽतो विदुरन्य-
राजानस्ते क्षय्यलोका भवन्ति छांदो. ७।२५।२
ये पचन्त्यात्मकारणात् भ. गी. ३।१३
ये पञ्च पञ्चदश शतं सहस्रमयुतं
न्यर्बुदं च...तन्मे मनः.. २ शिवसं. १४
ये पितॄन्यजन्ति तेपितृलोकंप्राप्नुवन्ति सामर. २७
येऽपि स्युः पापयोनयः भ. गी. ९।३२
ये पूर्वं देवा ऋषयश्च तद्विदुस्ते
तन्मया अमृता वै बभूवुः श्वेताश्व. ५।६
(अथ) ये प्रभवो ध्यानापादांशा
इवैव ते भवन्ति ध्यानमुपास्व छांदो. ७।६।१
येऽप्यन्यदेवताभक्ताः भ. गी. ९।२३
ये प्रत्ययापन्ना भक्तास्ते तं रसमनु-
भवन्ति व्रजलीलायाम् सामर. ३४
ये प्राणं ब्रह्मोपासते तैत्ति. २।३
ये प्राप्य परमां गतिं भूयस्ते न
निवर्तन्ते २सन्न्यासो. २१
ये प्रेमभजने निमग्नास्ते तां
लीलामापद्यन्त सामर. ४९
ये बाहुमूलपरिचिह्नितशङ्खचक्राः...
श्रीवैष्णवा भुवनमाशुपवित्रयन्ति मुक्ति. १३
ये बिन्दव इवाभ्युच्चरन्त्यजस्रं मैत्रा. ६।१५

ये ब्रह्मविष्णुरुद्रास्तेभ्यः सगुणेभ्य ॐ नमस्तद्वीर्यमस्याः प्रतिष्ठापयति — अ. मा. ५
ये ब्राह्मणा अन्यविद्योपासकाः कर्मजडाः कर्मकाण्डोपासकाः कालोपासकाः कर्मधर्मदेवपित्रु-पासका एव भवन्ति ते — सामर. ७५
ये ब्राह्मणा ब्रह्मचर्यं चरन्त्यथो खल्वाहुर्वेदसम्मितोऽयमितिहासः — इतिहा. ८
ये ब्राह्मणा ब्रह्मवर्चसमुपासमानास्ते.. — सामर. २७
ये ब्राह्मणास्त्रिसुपर्णं पठन्ति ते सोमं प्राप्नुवन्ति [महाना. १२+ — त्रिसुप. १,२,३
ये भजन्ति तु मां भक्त्या — भ. गी. ९।२९
ये भस्मधारणं त्यक्त्वा कर्म कुर्वन्ति मानवाः। तेषां नास्तिविनिर्मोक्षः संसाराज्जन्मकोटिभिः — बृ. जा. ५।१०
ये भस्मधारणं दृष्ट्वा नराः कुर्वन्ति ताडनम्। तेषां चाण्डालतो जन्म ब्रह्मन्नूह्यं विपश्चिता — बृ. जा. ५।१४
ये भूताः प्रचरन्ति दिवा नक्तं बलिमिच्छन्तो वितुदस्य प्रेष्ठाः.. [महाना. १५।६+ — तै.आ.१०।६७।२
ये भ्रान्त्वा भजनमार्गमविदुषः पण्डितमानिनस्तेषां सम्भाषणं स्पर्शनं च न कुर्यात् — सामर. २७
ये मनो हृदयं ये च देवा ये दिव्या आपो ये सूर्यरश्मिः.. तन्मेमनः.. — २ शिवसं. ११
ये मन्त्रा या विद्यास्तेभ्यो नमस्ताभ्यश्चोन्नमस्तच्छक्तिरस्याः प्रतिष्ठापयति — अ. मा. ५
ये मा नयन्ति मिथु चाकशानाः — बा. मं. ६
येमिथुनमुत्पादयन्तेतेषामेवैषब्रह्मलोकः — प्रश्नो. १।१५
ये मे मतमिदं नित्यं — भ. गी. ३।३१
(अथ) ये यज्ञेन दानेन तपसा लोकाञ्जयन्ति ते धूममभिसम्भवन्ति — बृह. ६।२।१६
ये यथा मां प्रपद्यन्ते — भ. गी. ४।११
येयं प्रेते विचिकित्सा मनुष्येऽस्तीत्येके नायमस्तीति चैके — कठो. १।२०

येयं पृथिवी यदन्तरिक्षं — छांदो. ७।१०।१
ये ये कामा दुर्लभा मर्त्यलोके सर्वान्कामाꣳश्छन्दतः प्रार्थयस्व मरणं माऽनुप्राक्षीः — कठो. १।२५
ये ये भावाः स्थिता लोके तान-विद्यामयान्विदुः। त्यक्त्वाविद्यो महायोगी कथं तेषु निमज्जति — अ. पू. ४।४
ये रसिकानन्दीमाज्ञां प्राप्तास्ते तां प्राप्नुवन्ति (लीलां) — सामर. ४३
ये रसिकानन्दोपासकास्ते सर्वात्मभावेन भजनं कुर्वते — सामर. २२
ये राजर्षयो ब्रह्मर्षयस्तेपि चासत्कृत्वा प्रागसन्त एव सुखमामनन्ति — लक्ष्म्यु. ७
येऽर्धमासाश्च मासाश्च ते चातुर्मास्यानि — महाना. १८।१
ये लोकाः सन्ततमामनन्ति शिरसा हृदयेन तामेकां लोकपूज्यां न ते दुर्गतिं यान्ति — लक्ष्म्यु. ९
(अथ) येऽल्पाः कलहिनः पिशुना उपवादिनस्तेऽथ ये प्रभवो ध्याना-पादाꣳशा इवैव ते भवन्ति — छांदो. ७।६।१
ये यथा मां प्रपद्यन्ते — भ. गी. ४।११
येऽवस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः — भ. गी. ११।३२
ये वामिरोचने दिवि ये च सूर्यस्य रश्मिषु। येषामप्सु सदस्कृतं तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः — नीलरु. २।१०
ये वा ललाटफलके लसदूर्ध्वपुण्ड्राः श्रीवैष्णवा भुवनमाशु पवित्रयन्ति — सुदर्श. ११
ये विदुर्यान्ति ते परम् — भ. गी. १३।३५
येवृन्दावनेवृक्षास्तेआधिभौतिकाःसिद्धाः — सामर. ५५
ये वृन्दावनोद्भवास्तुलसीकाष्ठाङ्कित-मालाः कण्ठे धारयन्ति, ते कृतार्थतां प्राप्नुवन्ति — सामर. ९५
ये वै के च यज्ञास्तेषाꣳ सर्वेषां यज्ञ इत्येकता — बृह. १।५।१७
ये वै के च लोकास्तेषांꣳ सर्वेषां लोक इत्येकता — बृह. १।५।१७
ये वैके चास्माल्लोकात् प्रयन्ति, चन्द्रमसमेव ते सर्वे गच्छन्ति — कौ. ब्रा. १।२

(अथ) ये शतमाजानदेवानामानन्दाः
स एकः प्रजापतिलोक आनन्दः बृह. ४।३।३३
(अथ) ये शतं कर्मदेवानामानन्दाः
स एक आजानदेवानामानन्दः बृह. ४।३।३३
(अथ) ये शतं गन्धर्वलोक आनन्दाः
स एकः कर्मदेवानामानन्दः ये
कर्मणा देवत्वमभिसम्पद्यन्ते बृ. उ.४।३।३३
(अथ) ये शतं पितॄणां जितलो-
कानामानन्दाः स एको गन्धर्व-
लोक आनंदः बृह. ४।३।३३
ये शतं प्रजापतिलोक आनन्दाः स
एको ब्रह्मलोक आनन्दः बृह. ४।३।३३
ये शतं मनुष्याणामानन्दाः स एकः
पितॄणां जितलोकानामानन्दः बृह. ४।३।३३
ये शरीराण्यकल्पयन्, ते ते देहं
कल्पयन्तु अरुणो. १
ये शास्त्रविधिमुत्सृज्य भ. गी. १७।१
ये शुद्धवासना भूयो न जन्मानर्थ-
भागिनः। ज्ञातज्ञेयास्त उच्यन्ते.. महो. २।४०
ये शैवा वैष्णवाः शाक्ताः...तेभ्यो
नमोनमो भगवन्तोऽनुमदन्तु... अ. मा. ५
ये शैवाः शाक्ताः..कौला जैनाः..
अन्यधर्मेदृढासक्ता भवन्ति सामर. ७९
ये श्रावयन्ति सततं शिवधर्म...
ते नमस्याः स्वभक्तितः शिवो. ७।१३८
ये षण्णवतितत्त्वज्ञाः...जटी मुण्डी
शिखी वाऽपि मुच्यते वराहो. १।१७
येषामनुग्रहात्सम्भवो भवति तेषां
शैवमार्गे रुचिरास्ते सामर. १०१
येषामर्थे काङ्क्षितं नो भ. गी. १।३३
येषामहोरात्रे सेवाकथायां नित्य-
मासक्तिस्तेषां भजनानन्दो भवति सामर. २२
येषामेव षडक्षराधिकारो वर्तते तेषां
प्रणवाधिकारः... सामर. १६
येषां कीर्णो भवेद्ब्रह्मँल्ललाटे भस्म-
दर्शनात्। तेषामुत्पत्तिधाङ्कर्य.. बृ. जा. ५।१२
येषांकोपोभवेद्ब्रह्मधारणे। तत्प्रमाणके
ते महापातकैर्युक्ताः .. बृ. जा. ५।१५
येषां च त्वं बहुमतः भ. गी. २।३५

येषां तपो ब्रह्मचर्यं येषु सत्यं
प्रतिष्ठितम् (तेषां ब्रह्म..प्राप्तिः) प्रश्नो. १।१५
येषां त्वन्तगतं पापं भ. गी. ७।२८
येषां नाशितमात्मनः भ. गी. ५।१६
येषां नास्ति मुने श्रद्धा श्रौते
भस्मनि सर्वदा। गर्भाधानादि-
संस्कारस्तेषां नास्तीति निश्चयः बृ. जा. ५।१२
येषां निमेषणोन्मेषौ जगतः प्रलयो-
दयौ। तादृशाः पुरुषा यान्ति.. महो. ६।२५
येषां निर्वाणमार्गे रुचिर्भवति ते
सन्यासिनो भवन्ति सामर. १०१
येषां मनसि निश्चयस्तेषां प्रीति-
रुत्पद्यते सामर. २२
येषां लोक इमाः प्रजाः भ. गी. १०।६
येषां वृत्तिः समा वृद्धा परिपक्वा...
ते वै सद्ब्रह्मतां प्राप्ताः, नेतरे ते. बिं. १।४५
येषां साम्ये स्थितं मनः भ. गी. ५।१९
येषां हृदयादूर्ध्वा नाड्युच्चरति यथा
केशः सहस्रधा..एवमस्यैता नाम
नाड्योऽन्तर्हृदये प्रतिष्ठिताः.. बृह. ४।२।३
येषु प्राणाः प्रतिष्ठिताः स यदा
प्राणेन सह संयुज्यते तदा
पश्यति नद्यो नगराणि.. सुबालो. ७।१
ये समुत्थाय शृण्वन्ति शिवधर्म
दिनेदिने। न ते प्रकृतिमानुषाः शिवो. ७।१३९
ये संवत्सराश्चपरिवत्सराश्च तेऽहर्गणाः महाना. १८।१
ये साङ्ख्यादितत्त्वभेदास्तेभ्यो नमो.. अ. मा. ५
(अथ) येऽस्य दक्षिणा रश्मयस्ता
एवास्य दक्षिणा मधुनाड्यो...
ता अमृता आपः छांदो. ३।२।१
(अथ) येऽस्य प्रत्यञ्चो रश्मयस्ता
एवास्य प्रतीच्यो मधुनाड्यः.. छांदो. ३।३।१
(अथ) येऽस्योदञ्चो रश्मयस्ता
एवास्योदीच्यो मधुनाड्यः.. छांदो. ३।४।१
(अथ) येऽस्योर्ध्वा रश्मयस्ता
एवास्योर्ध्वा मधुनाड्यो..ता
अमृता आपः छांदो. ३।५।१
ये हि पारं गता बुद्धेः संसाराडम्ब-
रस्य च। तेषां तदास्पदं ह्यकारः.. अ. पू. ४।२१

ये हि विज्ञानविज्ञेयाः..विच्छिन्नग्रन्थयः
सर्वे ते स्वतन्त्रास्तनौ स्थिताः अ. पू. ४।११
ये हि वृत्तिं विहायैनां ब्रह्माख्यां पावनीं
परामू । वृथैव ते तु जीवन्ति.. ते. बिं. १।४३
ये हि संस्पर्शजा भोगाः भ. गी. ५।२२
यैरेव जायते रागो मूर्खस्याधिकतां
गतैः। तैरेव भोगैः प्राज्ञस्य विरागः.. महो. ५।१६९
यैरेवाश्रितस्यासकृद्दिष्टा(दुपा)वर्तनं
दृश्यते इत्युद्धर्तुमर्हसि..
[मैत्रा. १।७+ मैत्रे. १।३
(अथो) यैः सन्निगच्छति सर्वा-
स्तानतिरोचते बृह. २।१।९
यो अपोन्तरे सञ्चरन्त्यमापो न विदुः अध्यात्मो. १
यो अस्कभायदुत्तर९ सधस्थं ना.पू.ता. ४।४
[+ऋ. मं. १।१५४।१+ वा. सं. ५।१८
[तै.सं.१।२।१३+ अथर्व.७।२६।१
यो अस्याध्यक्षः परमेव्योमन् ऋ.मं.१०।१२९।७
योऽकामो निष्काम...आत्मकामो
न तस्य प्राणा उत्क्रामन्ति बृह. ४।४।६
योग आत्मा, महः पुच्छं प्रतिष्ठा तैत्ति. २।४
योग आत्मा, चरणमस्य बन्धुर्दमः
प्रतिष्ठा विदुषो न भूमिम् इतिहा. ११
योगक्षेम इति प्राणापानयोः... तैत्ति. ३।१०।२
योगक्षेमं वहाम्यहम् भ. गी. ९।२२
योगज्ञानपरो नित्यं स योगी न
प्रणश्यति त्रि. ब्रा. २।२०
योगज्ञाने यत्पदाप्तिसाधनत्वेन
विश्रुते । तत् त्रैपदं ब्रह्मतत्त्वं
स्वमात्रमवशिष्यते यो.शि. शीर्षकं
योगज्ञाने न विद्येते तस्य भावो
न सिद्ध्यति त्रि. ब्रा. २।२१
योगज्ञानैकसंसिद्धशिवतत्त्वतयो-
ज्ज्वलम् । प्रतियोगिविनिर्मुक्तं
परं ब्रह्म भवाम्यहम् त्रि. ब्रा. शीर्षकं
योगज्ञो योगनिष्ठश्च सदा
योगात्मकः शुचिः । गुरुभक्ति-
समायुक्तः पुरुषज्ञो विशेषतः अद्वयता. ८

योगध्यानं सदा कृत्वा ज्ञानं
तन्मयतां व्रजेत् म. वि. ५९
योगनिर्मलधारेण क्षुरेणानल-
वर्चसा । छिन्देन्नाडीशतं धीरः.. क्षुरिको. १८
योगप्रकाशकं योगैर्ध्यायेच्चानन्य-
भावतः त्रि. ब्रा. २।२१
योगप्रवृत्तिं प्रथमां वदन्ति श्वेता. २।१३
योगभ्रष्टोऽभिजायते भ. गी. ६।४१
योगमात्मविशुद्धये भ. गी. ६।१२
योगमायासमावृतः भ. गी. ७।२५
योगयज्ञः सदैकाग्र्यभक्त्या सेवा
हरेर्गुरोः । अहिंसा तु तपोयज्ञो
वाङ्मनःकायकर्मभिः शाट्याय. १४
योगयज्ञास्तथाऽपरे भ. गी. ४।२८
योगयुक्तो भवार्जुन भ. गी. ८।२७
योगयुक्तो विशुद्धात्मा भ. गी. ५।७
योगयुक्तो मुनिर्ब्रह्म भ. गी. ५।६
योगयुक्त्या तु तद्भस्म प्लाव्यमानं
समन्ततः । शाक्तेनामृतवर्षेण
ह्यधिकारान्निवर्तते बृ. जा. २।१३
योगविघ्नकराहारं वर्जयेद्योगवित्तमः १ यो. त. ४६
योगशिखां महागुह्यं यो जानाति
महामतिः । न तस्य किञ्चिद्-
ज्ञातं त्रिषु लोकेषु विद्यते यो.शि.५।६०
योगश्चतुर्विधः प्रोक्तो योगिभि-
स्तत्त्वदर्शिभिः योगरा. २
योगश्चाष्टाङ्गसंयुतः भवसं. ३।१३
योगसन्न्यस्तकर्माणं भ. गी. ४।४१
योगसिद्धिं विना देहः प्रमादाद्यदि
नश्यति । पूर्ववासनया युक्तः
शरीरं चान्यदाप्नुयात् यो.शि. १।१४१
योगस्थः कुरु कर्माणि भ. गी. २।४८
योगस्थेनैव मार्गेण ह्येकाग्र-
मानसो भवेत् दुर्वासो. २।६
योगहीनं कथं ज्ञानं मोक्षदं भवति
ध्रुवम् (तीहभोः)। योगो हि(ऽपि)
ज्ञानहीनस्तु न क्षमो मोक्षकर्मणि
[१ यो. त. १५।४+ यो.शि.१।१३
योगं तं विद्धि पाण्डव भ. गी. ६।२

योगं निषेव्यमाणस्तु न दोषं प्राप्नुयात्कचित् योगो. ८

योगं युञ्जन् मदाश्रयः भ. गी. ७।१

योगं योगेश्वरात् कृष्णात् भ.गी. १८।७५

योगः कर्मसु कौशलम् भ. गी. २।५०

योगः प्रोक्तः पुरातनः भ. गी. ४।३

योगाच्चलितमानसः भ. गी. ६।३७

योगात्परतरं पुण्यं योगात्परतरं शिवम् । योगात्परतरं सूक्ष्मं योगात्परतरं नहि यो. शि. १।६७

योगात्संसारनिवृत्तिः जा. द. ६।३८

योगादेव विमुच्यते यो. शि. १।५५

योगानन्दस्वरूपोऽहं मुख्यानन्दमहोदयः ते. बिं. ६।६८

योगाभ्यासमनास्तिक्यं त्यागः कर्मफलस्य च भवसं. ५।२०

योगाभ्यासरतो नित्यं स्वधर्मनिरतश्च यः । प्राणसंयमनेनैव ज्ञानान्मुक्तो भविष्यति जा. द. ६।१२

योगाभ्यासेन मे रोग उत्पन्न इति कथ्यते । ततोऽभ्यासं त्यजेदेवं प्रथमं विघ्नमुच्यते योगकुं. १।५८

योगारूढस्तदोच्यते भ. गी. ६।४

योगारूढस्य तस्यैव भ. गी. ६।३

योगिध्येयं परमं पदं चिन्मात्रं ग.शो.ता. ५।६

योगिनश्चित्तशान्त्यर्थं कुर्वन्ति प्राणरोधनम् अ. पू. ४।४४

योगिनस्तत्त्वसम्पन्ना न जाग्रति न शेरते अमन. २।५९

योगिनं सुखमुत्तमम् भ. गी. ६।२७

योगिनः कर्म कुर्वन्ति भ. गी. ५।११

योगिनः पर्युपासते भ. गी. ४।२५

योगिनः सहजावस्था स्वयमेव प्रकाशते वराहो. २।७७

योगिनः सहजावस्था स्वयमेवोपजायते महो. ४।७८

योगिनामपि सर्वेषां भ. गी. ६।४७

योगिनामात्मनिष्ठानां माया स्वात्मनि कल्पिता । साक्षिरूपतयाभाति ब्रह्मज्ञानेन बाधिता पा. ब्र. ५०

योगिनां योगलक्ष्मीर्भवति ना. पू. ता. २।१

योगिनोऽङ्गे सुगन्धश्च जायते बिन्दुधारणात् १ यो. त. ६।२

योगिनो बिभ्यति ह्यस्मादभये भयदर्शिनः अद्वैता. ३९

योगिनो यतचित्तस्य भ. गी. ६।१९

योगी निमेषमात्रेण लयेन लभते ध्रुवम् । स्पर्शनं परतत्त्वस्याप्युत्थानं च पुनः पुनः अमन. १।३४

योगी नियतमानसः भ. गी. ६।१५

योगी परं स्थानमुपैति चाद्यम् भ. गी. ८।२८

योगी प्राप्य निवर्तते भ. गी. ८।२५

योगी ब्रह्मभूयाय कल्पते ना. प. ४।३२

योगी भवति कश्चन भ. गी. ६।२

योगी मुह्यति कश्चन भ. गी. ८।२७

योगी युञ्जीत सततं भ. गी. ६।१०

योगी विगतकल्मषः भ. गी. ६।२८

योगीश्वरः सर्वज्ञो मन्त्रोऽप्रमेयोऽनाद्यन्तः मैत्रा. ७।१

योगी संशुद्धकिल्बिषः भ. गी. ६।४५

योगेन ऊर्ध्वमन्थिनः सूर्यं भगवन्तमुपासते सूर्यता. १।७

योगेन योगं संरोध्य भावं भावेन चाञ्जसा सौ. ल. १६

योगेन योगो ज्ञातव्यो योगो योगात्प्रवर्धते । योऽप्रमत्तस्तु योगेन स योगी रमते चिरम् सौ. ल. ५

योगेन रहितं ज्ञानं न मोक्षाय भवेद्विधे यो. शि. १।५१

योगेन सदानन्दस्वरूपदर्शनम् निर्वाणो. ३

योगेनहिवै शब्दब्रह्म विजिज्ञासस्व गान्धर्वो. ५

योगेनाव्यभिचारिण्या भ. गी.१८।३३

योगेश्वर ततो मे त्वं भ. गी. ११।४

योगैश्वर्यं च कैवल्यं जायते यत्प्रसादतः । तद्वैष्णवं योगतत्त्वं रामचन्द्रपदं भजे १यो.त. शीर्षक

योगो नष्टः परन्तप भ. गी. ४।२

योगोऽनिर्विण्णचेतसा भ. गी. ६।२३

योगोऽपि ज्ञानहीनस्तु न क्षमो मोक्षकर्मणि — यो.शि. १।१३

यो गोपीचन्दनाभावे तुलसीमूलमृत्तिकाम्। मुमुक्षुर्धारयेन्नित्यमपरोक्षात्मसिद्धये — वासुदे. १५

योगो भवति दुःखहा — भ. गी. ६।१७

योगो मोक्षे च सर्वासां वेदनानामवर्तनम्। मोक्षे निवृत्तिर्निश्शेषा योगो मोक्षप्रवर्तकः — आयुर्वे. ९

योगो हि प्रभवाप्ययौ — कठो. ६।११

योगो हि बहुधा ब्रह्मन् भिद्यते व्यवहारतः — १ यो. त. १९

योगो ह्यष्टाङ्गसंयुतः — वराहो. ५।१०

योऽग्निमन्तरो यमयत्येष त आत्माऽन्तर्याम्यमृतः — बृह. ३।७।५

योऽग्नौ तिष्ठन्नग्नेरन्तरो यमग्निर्न वेद यस्याग्निः शरीरम्..एषत आत्मा.. — बृह. ३।७।५

योऽग्नौ रुद्रो योऽप्स्वन्तर्य ओषधीर्वीरुध आविवेश — अ.शिरः.३।१३

योऽग्नेऽस्याहन्याज्जीवन् स्रवेत्स एष जीवेनात्मनाऽनुप्रभूतः — छांदो. ६।११।१

यो घोषः स आत्मा — १ ऐत. २।४।१

यो जङ्गमानां सकलं बिभर्षि सर्वं वियद्विचरते शक्यन्, वन्नोकूले वान्तिकेऽजस्रं स्वाहा — पारमा. ८।९

(इति)यो जपति स भूतिमान्भवति — ग. पू.ता.१।१०

यो जागर्ति सुषुप्तिस्थो यस्य जाग्रन्न विद्यते। यस्य निर्वासनो बोधः स जीवन्मुक्त उच्यते — वराहो. ४।२३

यो जानीते सोऽमृतत्वं च गच्छति — त्रि. ता. २।२१
[+नृ.पू. १।३-७+२।३+४।१

यो जानीते सोऽमृतत्वं च गच्छति, परं ब्रह्मैव भवति — ग.पू.ता. २।१

यो जित्वा पवनं मोहाद्योगमिच्छति योगिनाम्। सोऽपक्वं कुम्भमादाय सागरं तर्तुमिच्छति — यो. शि. १।६३

यो जिह्वायां, यो रसयितव्ये, यो वक्ते यो नाड्यां...सञ्चरति, सोऽयमात्मा — सुबालो. ९।४

योऽज्ञानाद्वा शिवशब्दं गृणानः पापैर्घोरैर्मुच्यते — सि. शि. ८

योऽणिष्ठस्तन्मनः (अन्नस्य) — छांदो. ६।६।१

योऽणिष्ठः स प्राणः (अपां) — छांदो. ६।६।२

योऽणिष्ठः सा वाक् (तेजसः) — छांदो. ६।६।३

योऽतिवाचं नयति स वै सर्वं द्विजः खलु मानसं वेदेति — इतिहा. १०

योऽतीत्य स्वाश्रमान् वर्णानात्मन्येव स्थितः पुमान्। सोतिवर्णाश्रमी प्रोक्तः सर्ववेदार्थवेदिभिः — ना. प. ६।११

(अथ) योत्सृष्टा गुल्मीभूता सम्पूर्णा सम्सृष्टा संयता वाक् सा पुण्यपशव्या — संहितो. १।४

योत्स्यमानानवेक्षेऽहं — भ. गी. १।२३

यो दक्षयज्ञे सुरसङ्घान् विजित्य विष्णुं बबन्धोरगपाशेन वीरः। तस्मै रुद्राय नमो अस्तु — शरभो. १२

यो ददाति महाविद्यां हंसाख्यां पारमेश्वरीम्। तस्य दास्यं सदा कुर्यात्प्रज्ञया परया सह — ब्र. वि. २७

यो दिक्षु तिष्ठन् दिग्भ्योऽन्तरो यं दिशो न विदुः — बृह. ३।७।१०

यो दिवि तिष्ठन्दिवोऽन्तरो यं द्यौर्न वेद..एष त आत्मा.. — बृह. ३।७।८

यो दिशोऽन्तरो यमयत्येष त आत्माऽन्तर्याम्यमृतः — बृह. ३।७।१०

यो दूर्वाङ्कुरैर्यजति स वैश्रवणोपमो भवति — गणप. १३

यो देवानामधिपो यस्मिँल्लोका अधिश्रिताः। य ईशेऽस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम — श्वेताश्व. ४।१३

यो देवानां प्रथमं पुरस्ताद्विश्वाधियो रुद्रो महर्षिः। हिरण्यगर्भं पश्यति जायमानं स नो देवः शुभया स्मृत्या संयुनक्तु — महाना. ८।१२
[तै. आ. १०।१०।३

यो देवानां प्रभवश्चोद्भवश्च विश्वाधिपो रुद्रो महर्षिः। हिरण्य-

गर्भे जनयामास पूर्वं स नो
बुद्ध्या शुभया संयुनक्तु [श्वेताश्व. ३।४+४।१२
यो देवेभ्य आतपति यो देवानां
पुरोहितः। पूर्वो यो देवेभ्यो
जातः। नमो रुचाय ब्राह्मये चित्त्यु. १३।२
[वा.सं.३१।२०+ तै.आ.३।१२।२
यो देवोऽग्नौ योऽप्सु यो विश्वं भुवन-
माविवेश। य ओषधीषु यो
वनस्पतिषु तस्मै देवाय नमोनमः श्वेता. २।१७
यो दोषश्चतुरश्चतुर्थश्चतुरः पदार्थान्सर्व
लोकस्य सन्दधानस्ते सन्ते
सत्त्वमादधानाय स्वाहा पारमा. ३।९
योऽधुकामानवस्थितान् भ. गी. १।२२
योऽधीते नित्यं सर्वान्कामानवाप्नोति ना. उ.ता. ३।१
योऽधीते स सर्वं तरति ग.शो. ५।१
यो धूर्धुरं धूर्धुरं धूर्धुराणां सुधूर्धूरसि
धूर्धुराणां धूरसि धर्वङ्ग मे स्वाहा पारमा. ६।९
यो ध्यानं ब्रह्मेत्युपास्ते यावद्ध्यानस्य
गतं तत्रास्ययथाकामचारोभवति छांदो. ७।६।२
यो ध्यायति रसति भजति सोऽमृतो
भवति गो.पू. १।३
यो न इत्थमसक्तेऽत्ययमास्येन्तरति
सोऽयास्य आङ्गिरसोऽङ्गाना५
हि रसः बृह. १।३।८
यो न द्वेष्टि न काङ्क्षति भ. गी. ५।२३
योऽनन्तरतत्त्वारम् बटुको. १९
यो नन्दः परमानन्दो यशोदा
मुक्तिगेहिनी कृष्णो. ३
यो न वेद न हृतं हरन्तम् वा. मं. ९
यो नस्तद्वेद तद्वेद नो न वेदेति वेद च केनो. २।२
यो न स्वरूपज्ञः सज्येष्ठोऽपि कनिष्ठो
इत्वास्यां नद्युत्तरणं न कुर्यात् ना. प. ५।८
यो न हृष्यति न द्वेष्टि भ.गी.१२।१७
यो नः सपत्नो यो रणो मर्तो भिदा
सति देवाः सद्वै. ८
यो नाड्यां यः प्राणे यो विज्ञाने य
आनन्दे..सञ्चरतिसोऽयमात्मा सुबालो. ५।१
यो नाम ब्रह्मेत्युपास्तेऽस्ति भगवो
नाम्नो भूयः छांदो. ७।१।५

यो नासायां, यो घ्रातव्ये, यः
पृथिव्यां यो नाड्यां...सञ्चरति
सोऽयमात्मा सुबालो. ५।३
यो नित्यमधीते वाय्वग्निसोमादित्य-
ब्रह्मविष्णुरुद्रैः पूतो भवति दत्तात्रे. ३।१
(अथ) योनिद्वारं सम्प्राप्तो यन्त्र-
णापीड्यमानो महता दुःखेन
जातमात्रस्तु वैष्णवेन वायुना
संस्पृष्टस्तदा नस्मरति जन्ममरणानि गर्भो. १०
योनिमध्ये महाक्षेत्रे जपाबन्धूक-
सन्निभम्। रजो वसति जन्तूनां
देवीतत्त्वं समावृतम् यो.शि.१।१३६
योनिमध्ये स्थितं लिङ्गं पश्चिमाभि-
मुखं तथा। मस्तके मणिवद्भिन्नं
यो जानाति स योगवित्। तप्त-
चामीकराकारंतडिल्लेखेवविस्फुरत् ध्या. बिं. ४५
योनिमन्ये प्रपद्यन्ते शरीरत्वाय
देहिनः। स्थाणुमन्येऽनुसंयंति
यथाकर्म यथाश्रुतम् कठो. ५।७
(तस्याः) योनिरर्चिर्यदन्तः करोति
तेऽङ्गारा अभिनन्दा विस्फुलिङ्गाः
[छां. उ. ५।८।१+ बृह. ६।२।१३
योनिस्थानंद्वयोर्मध्येकामरूपंनिगद्यते यो. चू. ७
योनिं वामेन सम्पीड्य मेढ्रादुपरि
दक्षिणम्। भ्रूमध्ये च मनोलक्ष्यं
सिद्धासनमिदं भवेत् शांडि. १।३।७
यो नु कथ५ सयुग्वारैक इति छांदो.४।१।३,५
योऽनुक्रमेण सन्न्यस्यति स सन्न्यस्तो
भवति [१सं. सो. १।१+ कठश्रु. १
यो नूनं वासनात्यागी ध्येयो ब्रह्मन्
प्रकीर्तितः महो. ६।४३
योऽनृतमभिवदति तस्मान्नार्हा-
म्यनृतं वक्तुम् प्रश्नो. ६।१
यो नृसिंहः समाख्यातो ग्रहमारण-
कर्मणि राम. पू. ४।५६
योनेरिव प्रच्युतो गर्भः स वान्यथो
मनुष्य सद्वै. ९
यो नो भगवन्नभयं वेदयसे बृह. ४।२।४
योऽन्तकाले सर्वलोकान् सञ्जहार शरभो. ३

योऽन्तरिक्षमन्तरो यमयत्येष त आत्माऽन्तर्याम्यमृतः बृह. ३।७।६
योऽन्तरिक्षे तिष्ठन्नन्तरिक्षादन्तरो यमन्तरिक्षं न वेद बृह. ३।७।६
योऽन्तश्शीतलया बुद्ध्या रागद्वेषविमुक्तया। साक्षिवत्पश्यतीदं हि जीवितं तस्य शोभते १सं.सो. २।४०
योऽन्तस्तत्तारम् अ. शिरः. ३।४
योऽन्तस्सुखोऽन्तराराम: भ. गी. ५।२४
योऽन्नं ब्रह्मेत्युपास्तेऽस्ति भगवोऽन्नाद्भूय इति छांदो. ७।९।२
(अथ) योऽन्यां देवतामुपास्तेऽन्योऽसावन्योऽस्मीति बृह. १।४।१०
योऽपानप्राणयोरैक्यं स्वरजोरेतसस्तथा। ... एवं तु द्वन्द्वजालस्य संयोगो योग उच्यते यो.शि. १।६८
योऽपानेनापानिति स त आत्मा सर्वान्तरः बृह. ३।४।१
योऽपोन्तरो यमयत्येष त आत्माऽन्तर्याम्यमृतः बृह. ३।४।७
योऽपो ब्रह्मेत्युपास्त आप्नोति सर्वान्कामा५ स्तृप्तिमान्भवति छांदो. ७।१०।२
योऽप्सु तिष्ठन्नद्भ्योऽन्तरो यमापो न विदुर्यस्यापः शरीरं योऽपोऽन्तरो यमयत्येष त आत्मान्तर्याम्यमृतः बृह. ३।७।४
यो बलं ब्रह्मेत्युपास्ते यावद्बलस्य गतं तत्रास्ययथाकामचारोभवति छांदो. ७।८।२
यो बुद्धेः परतस्तु सः भ. गी. ३।४२
यो बुद्धौ यो बोद्धव्ये यो ब्रह्मणि यो नाड्यां..सञ्चरतिसोऽयमात्मा सुबालो. ५।७
यो बुद्ध्यन्तरस्थो ध्यायीह मनःशान्तिपदमनुसरत्यात्मन्येव वर्तते मैत्रा. ६।३४
यो ब्रह्मचार्यवकिरेदमावास्यायां रात्र्यामग्निं प्रणीयोपसमाधाय द्विराज्यस्योपघातं जुहोति सहवै. २२
यो ब्रह्मशब्दः प्रणवः प्रधानः शब्दः ...चराय स्वाहा पारमा. १।६
यो ब्रह्माणं विदधाति तस्मै शरभो. ३
यो ब्रह्माणं विदधाति पूर्वं [श्वेताश्व. ६।१८+ गो. पू. ४।१
यो ब्रह्मातत्साम्नश्चतुर्थपादं जानीयात् ग. पू. २।१
यो ब्रह्मा ब्रह्मविदामात्मास्यादात्मचक्षुषां भूतिर्भूतिमतां मुक्तं कृताय स्वाहा पारमा. ३।६
यो ब्रह्मेत्युपास्ते यावद्बलस्य गतं तत्रास्य यथाकामचारो भवति छांदो. ७।८।२
यो ब्राह्म(णोऽ)णःपापकृन्मन्त्रकृच्च स जीवति। ब्रह्मण्यो ब्रह्मकृच्छश्चब्रह्मलोके महीयते इतिहा. १३
यो ब्राह्मणो ब्रह्मविद्ब्रह्मविदां मनीषी सुदर्शं. १
यो भगवान्महेश्वरः स भगवान् बटुकेश्वरः बटुको. १९
यो भवेत्पूर्वसन्न्यासी तुल्यौ वै धर्मतो यदि। तस्मै प्रणामः कर्तव्यो नेतराय कदाचन याज्ञव.४
यो भाण्डीरवटःसएवदेवेन्द्रआसीत् सामर. ५०
यो भुङ्क्ते स्तेन एव सः भ. गी. ३।१२
यो भूतेभिर्व्यपश्यति (मा.पा.) कठो. ४।६
यो मत्स्यकूर्मादिवराहसिंहान् विष्णुं क्रमन्तं वामनमादिविष्णुम्। विविक्लवं पीडयमानं सुरेशं भस्मीचकार मन्मथं यमं च। तस्मै रुद्राय नमो अस्तु शरभो. १४
यो मद्भक्तः समेप्रियः [भगी.१२।१४ +१२।१६
यो मध्यमस्तन्मा५ सं, योऽणिष्ठस्तन्मनः (अन्नस्य) छांदो. ६।५।१
यो मध्यमस्तल्लोहितं, योऽणिष्ठः स प्राणः (अपां) छांदो. ६।५।२
यो मध्यमः स मज्जा योऽणिष्ठः सा वाक् (तेजसः) छांदो. ६।५।३
यो मध्येऽभ्याहन्याज्जीवन्स्रवेत् छांदो.६।११।१
यो मनसि तिष्ठन्मनसोऽन्तरो यं मनो न वेद,.. एष त आत्मा.. बृह. ३।७।२०
यो मनसि भोगस्तं देवेभ्य आगायत् बृह. १।३।६
यो मनसि यो मन्तव्ये यश्चन्द्रे यो नाड्यां..सञ्चरति सोऽयमात्मा सुबालो. ५।१

यो मनस्सुस्थिरीभावः सैवावस्था मनोन्मनी — म. र. १०।११
यो मनो ब्रह्मेत्युपास्ते यावन्मनसो गतं तत्रास्य यथाकामचारोभवति — छांदो. ७।२।२
यो मम महोपनिषदं मम गीतां मन्नामसहस्रं मद्विश्वरूपं...नित्यं स्तौति तत्सदृशो भवेत् — रामर. १।९
यो मा ददाति स इदेवमा ३वा — नृ. पू. २।१४ [+ तैत्ति. ३।१०।६
यो मानसं वेद स वेद ब्रह्म — इतिहा. ९
यो मामजमनादिं च — भ. गी. १०।३
यो मामेवमसम्मूढः — भ.गी. १५।१९
यो मा वेद निहितं गुहाचित् स इदित्याबोभवीदाशयध्यै — बा. मं. १८
यो मां द्वेष्टि जातवेदो यं चाहं द्वेष्मि येच माम् । सर्वांस्तानग्ने सन्दह — सहवै. ८
यो मां द्वेष्टि तं जहि — चित्सु. १४।३
यो मां नित्यं स्तौति समत्सदृशोभवेत् — रामर. १।९
यो मां वेद स सर्वान्देवान्वेद — अ. शिरः. १।१
यो मां पश्यति सर्वत्र — भ. गी. ६।३०
यो मां स्मरति नित्यशः — भ. गी. ८।१४
यो मुद्रां वेत्ति खेचरीम्...(पीडयते न च रोगेण) — यो. चू. ९३
यो मूलेऽभ्याहन्यान्जीवन् स्रवेत् — छांदो. ६।११।१
यो मे भक्त्या प्रयच्छति — भ. गी. ९।२६
यो मोदकसहस्रेण यजति स वाञ्छितफलमवाप्नोति — गणप. १३
यो मोहयन् भूतानां सर्गादिरक्षणाय यः सङ्कोचः सङ्कोचनाय स्वाहा — पारमा. ३।४
यो यच्छ्रद्धः स एव सः — भ. गी. १७।३
यो यज्ञस्य प्रसाधनस्तन्तुर्देवेष्वा-ततः, तमाहुतमशीमहि — इतिहा. २०
यो यज्ञस्योल्बणं पश्येत् — ३ ऐत.२।३।१
(अथ) यो यत्पूर्वां सन्ध्यामुपास्ते ब्रह्मायत्र्याः शिरः — सन्ध्यो. २३
यो यदिच्छति तस्य तत् — कठो. २।१६
(अयं वाव सः) योऽयमन्तः-पुरुष आकाशः — छां.३।१२।८,९
योऽयमन्तःपुरुषः, येनेदमन्नं पच्यते — मैत्रा. २।८
योऽयमन्नमयः सोऽयंपूर्णः प्राणमयेनतु — कठरु. २०
योऽयमन्नमयो ह्यात्मा भाति सर्वशरीरिणः । ततः प्राणमयो ह्यात्मा विभिन्नश्चान्तरः स्थितः — कठरु. २०
यो यमर्थं प्रार्थयते तदर्थं चेहते क्रमात् । अवश्यं स तमाप्नोति न चेदर्धान्निवर्तते — भवसं. १।४२
योऽयमवधूतमार्गस्थो लोके दुर्लभतरो न तु बाहुल्यो यद्येको भवति स एव नित्यपूतः — तुरीया. २
(अथ) योऽयमवाञ्चं सङ्क्रामत्येष वाव सोऽपानः — मैत्रा. २।७
योऽयमुक्तः स पुरुषो नामरूप-ज्ञानागोचरं संसारिणमतिदुर्ज्ञेयं विषयं विहाय...दृष्टमात्रेण मोक्षदं वेषमाददे — मुद्गलो. २।२
(अथ) योऽयमूर्ध्वमुत्क्रामतीत्येष वाव स प्राणः — मैत्रा. २।७
योऽयमेवंवित्पुरुषस्तस्य वित्तमेव पञ्चदश कला आत्मैवास्य षोडशी कला — बृह. १।५।१५
यो यस्यानुषक्त इत्येवं ह्याह — मैत्रा. ४।६
योऽयं दक्षिणेऽक्षन् पुरुषस्तस्य भूरिति शिर एकं शिर एक-मेतदक्षरम् — बृह. ५।५।४
योऽयं दक्षिणेऽक्षन्पुरुषस्तस्यैष रसः — बृह. २।३।५
योऽयं नकारः सोऽयमकारः स सद्योजातो भूर्ऋग्वेदःसम्पुटमुच्यते — सि. शि. २०
योऽयं परमहंसमार्गो लोके दुर्लभतरः, न तु बाहुल्यो यद्येको भवति स एव नित्यकूटस्थः स एव वेद-पुरुष इति विदुषो मन्यन्ते — प. हं. २
(अथ) योऽयं पीताशितमुद्गिरति निगिरति चैष वाव स उदानः — मैत्रा. २।७
योऽयं बहिर्धा पुरुषादाकाशः — छांदो. ३।१२।७
योऽयं भगवोऽप्सु परिख्यायते, यश्चायमादर्शे कतम एषः — छांदो. ८।७।४
योऽयं मकारः सोऽयमुकारः स वामदेव आपो यजुर्वेदोवक्त्रमुच्यते — सि. शि. २०

योऽयं मध्यमः प्राणस्तानि ज्ञातुं दध्रिरे बृह. १।५।२१
योऽयं मकारस्तदिदं समस्तमोमिति निर्विशेषप्रणवःससर्वोत्तम ईशान आकाश आगमो लिङ्गमुच्यते सि. शि. २०
योऽयं योगस्त्वया प्रोक्तः भ. गी. ६।३३
योऽयं वकारः सोऽयं नादः स तत्पुरुषः स तेजोऽथर्ववेदोऽघोरमुच्यते सि. शि. २०
योऽयं विज्ञानघन उत्क्रामन् प्राणं दहत्यपानं व्यानमुदानं समानं ...मृत्युर्वै परे देह एकीभवतीति परस्तान्न सन्नासन्न सदसदित्येतन्निर्वाणम् सुबालो. १९।२
योऽयं विज्ञानमयः प्राणेषु य एषोऽन्तर्हृदय आकाशस्तस्मिञ्छेते बृह. ४।४।२२
योऽयं विज्ञानमयः प्राणेषु हृद्यन्तर्ज्योतिः पुरुषः स समानः बृह. ४।३।७
योऽयं शिकारः सोऽयं मकारः स घोरः स वायुः सामवेदो गुण उच्यते सि. शि. २०
योऽयं शुद्धः पूतः शून्यः शान्तादिलक्षणोक्तः स्वकैर्लिङ्गैरुपगृह्यः मैत्रा. ६।३१
योऽयं सितासितैः कर्मफलैरभिभूयमानः सदसद्योनिमापद्यते(भूतात्मा) मैत्रा. ३।२
योऽयं स्थविष्ठमन्नधातुमपाने स्थापयत्यणिष्ठं चाङ्गेऽङ्गे समं नयत्येष वाव स समानः मैत्रा. २।७
यो याजयति प्रति वा गृह्णाति सहवै. २०
यो योनिं योनिमधितिष्ठत्येको येनेदं सर्वं विचरति सर्वम्। तमीशानं पुरुषं देवमीड्यं निचाय्येमां शान्तिमत्यन्तमेति अ. शिरः. ३।८
यो योनिं योनिमधितिष्ठत्येको यस्मिन्निदं सं च विचैति सर्वम्। तमीशानं वरदं देवमीड्यं निचाय्येमां शान्तिमत्यन्तमेति [श्वेता. ४।११+५।१
यो यो यां यां तनुं भक्तः भ. गी. ७।२१
यो यो ह्यस्येतः प्रैति न तमिह दर्शनाय लभते छांदो. ८।३।१

यो रहस्योपनिषदमधीते गुर्वनुग्रहात् सर्वपापविनिर्मुक्तः साक्षात्कैवल्यमश्नुते शु. र. २३
यो रत्नधा वसुविद्यः सुदत्रः.. सरस्वति तमिह धातवेऽकः बृह. ६।४।२७ [ऋ.मं.१।१६४।४९+वा.सं.३८।५+ तै.आ.४।८।२
यो रामं संस्मरेन्नित्यं भक्त्या मनुपरायणः। तस्याहमिष्टसंसिद्ध्यै दीक्षितोऽस्मि मुनीश्वराः रामर. ४।१२
यो रुद्रः स ईशानो य ईशानः स भगवान्महेश्वरः [अ.शिरः.३।४+ बटुको. १९
यो रुद्रः स स्वयं ब्रह्मा यो ब्रह्मा स हुताशनः रुद्रहृ. ६
यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु य ओषधीषु योरुद्रो विश्वा भुवनाविवेशैवमेव.. भस्मजा. २।५
यो रुद्रो अग्नौ यो अप्सु य ओषधीषु यो रुद्रो विश्वा भुवनाऽऽविवेश। तस्मै रुद्राय नमो अस्तु बनदु. २६ [२ शिवसं. ३५+
यो रुद्रोऽग्नौ यो रुद्रोऽप्स्वन्तर्यो रुद्र ओषधीर्वीरुध आविवेश। यो रुद्र इमा विश्वा भुवनानि चक्लृपे तस्मै रुद्राय नमो नमः अ.शिरः. ३।११
यो रुद्रोऽप्सु यो रुद्र ओषधीषु यो रुद्रो वनस्पतिषु...तस्मै.. अ. शिरः. ३।२२
यो रेतसि तिष्ठन् रेतसोऽन्तरो यं रेतो न वेद.. एष त आत्मा.. बृह. ३।७।२३
यो रेतः सिञ्चति तद्रूप एव भवति छांदो. ५।१०।६
योऽर्चयेत्प्रतिमां मां च स मे प्रियतरो भुवि गोपालो. २।६
यो लाजैर्यजति स यशोवान् भवति गणप. १२
यो लीलयैव त्रिपुरं ददाह विष्णुं कविं सोमसूर्याग्निनेत्रः। सर्वे देवाः पशुतामवापुः स्वयं तस्मात् पशुपतिर्बभूव शरभो. ११
यो लोकत्रयमाविश्य भ. गी.१५।१७
योऽवकाशः पूर्वरूपोत्तररूपे अन्तरेण सा संहितेति ऐ. उप. १।५।२
योऽवतिष्ठति नेङ्गते भ. गी.१४।२३

यो वंशीवटोऽयं साक्षाच्छिवोऽयम्	सामर. ५१
यो वः कामयते तं वः पृच्छामि सर्वान्वा वः पृच्छामि	बृह. ३।९।२७
यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयते ह नः । उशतीरिव मातरः	महाना.५।१३
[ऋ.मं.१०।९।२+प्रवर्ग्या.१५+	वा. सं.३६।१५
यो वा आयुः परमात्मा न मीढुषः.. परस्पराय स्वाहा	पारमा. ४।३
यो वा इदं कश्चिद्ब्रूयाद्वेदेति यथा वेत्थ तथा ब्रूहीति	बृह. ३।७।१
यो वा एतदक्षरं गार्ग्यविदित्वा- ऽस्माल्लोकात्प्रैति स कृपणः	बृह. ३।८।१०
यो वा एतदक्षरं गार्ग्यविदित्वा- ऽस्मिँल्लोकेजुहोति यजते तप- स्तप्यते बहूनि वर्षसहस्राण्य- न्तवदेवास्य तद्भवति	बृह. ३।८।१०
यो वा एवं नारसिंहं चक्रमधीते स सर्वेषु वेदेष्वधीतो भवति	षट्च. ८
यो वा एतामुपनिषदमेवंवेद (मा.पा.)	केनो. ४।९
यो वा एतामेवं वेद, अपहत्य पाप्मान- मनन्तः स्वर्गेलोकेऽज्येयेप्रतितिष्ठति	केनो. ४।९
यो वा एतां सावित्रीमेवं वेद स पुनर्मृत्युं जयति	साविश्यु. १०
यो वा एवं क्रमेण सम्पश्यति, यो वा एवं पश्यति, किमस्य यज्ञो- पवीतं, काऽस्य शिखा, कथं वास्योपस्पर्शनमिति	१ सं. सो.१।३
यो वा एवं क्रमेण सम्पश्यति, यो वोत्तिष्ठति, किमस्य यज्ञोपवीतं, का वाऽस्य शिखा, कथं वास्यो- पस्पर्शनमिति	कठश्रु.८
यो वा गविष्ठः परमः प्रधानः पदं वा यस्य सत्त्वमासीत्...तस्मै सुरूपाय विष्णवे स्वाहा	पारमा. २।१
यो वाचं परिवेष्ट्रीं वेद परिवेष्ट्री- मान्भवति	कौ. उ. २।१
यो वाचं ब्रह्मेत्युपास्ते यावद्वाचो गतं तत्रास्य यथाकामचारो भवति	छांदो. ७।२।२
यो वाचि तिष्ठन् वाचोऽन्तरो यं वाङ् वेद..एष त आत्मा..	बृह. ३।७।१७
यो वाचि भोगस्तं देवेभ्य आगायत्	बृह. १।३।२
यो वाचि यो वक्तव्ये योऽग्नौ यो नाड्यां...सञ्चरति सोऽयमात्मा	सुबालो. ५।१०
यो वा त्रिमूर्तिः परमः परश्च त्रिगुणं जुषाणः सकलं विधत्ते ।...त्रिधा त्रिरूपं सकलं धराय स्वाहा	पारमा. १।७
यो वा दशात्मा उपरिस्पृशन्वा देवानां जेनातिषामुत्तरः जेनाति- ज्योतिषे स्वाहा	पारमा. ३।५
यो वा दशानां प्रसूताः समस्तास्तां तां दधानाः समयात्सुबीजाः शब्दादि- रीत्यै स्वबलं बलाय स्वाहा	पारमा. ८।१०
यो वा नृसिंहो विजयं बिभर्षि साराजिमन्तं रयिदं कवीनां... तस्मै सुयन्त्रे सुखेवधये स्वाहा	पारमा. ७।२
यो वा परं ज्योतिः परं सन्दधानः परमात्मा पुरुषं सञ्जनयिष्यसे स्वाहा	पारमा. ३।८
या वाप्यहिंसीज्जरया जरस्तं... तस्मै नृसिंहाय सुरेशपित्रे स्वाहा	पारमा. ६।१०
यो वामपादार्चितविष्णुनेत्रस्तस्मै ददौ चक्रमतीव हृष्टः । तस्मै रुद्राय नमो अस्तु	शरभो. ११
यो वामपादेन जघान कालं घोरं पपेऽथो हालाहलं दहन्तम् । तस्मै रुद्राय नमो अस्तु	शरभो. १०
यो वा वायुर्द्विगुणोऽन्तरात्मा सर्वे- षामन्तश्चरतीह विष्णोः । स त्वं देवान्मनुष्यान्भूतान्परि सञ्जी- वसे स्वाहा	पारमा. २।२
यो वायौ तिष्ठन्वायोरन्तरो यं वायुर्न वेद..एष त आत्माऽन्तर्याम्यमृतः	बृह. ३।७।७
यो वासुदेवो भगवान् क्षेत्रज्ञो निर्गु- णात्मकः । ज्ञेयः स एव राजेन्द्र जीवः सङ्कर्षणः प्रभुः	ना. महो. २९
यो विज्ञानमन्तरो यमयत्येष त आत्माऽन्तर्याम्यमृतः	बृह. ३।७।२२

(स:) यो विज्ञानं ब्रह्मेत्युपास्ते विज्ञानवतो वै स लोकाञ्ज्ञानवतोऽभिसिद्धयति छांदो. ७।७।२
यो विज्ञाने तिष्ठन्विज्ञानादन्तरो यं विज्ञानं न वेद..एष त आत्मा.. बृह. ३।७।२२
यो विद्वान् ब्रह्मचारी गृही वानप्रस्थो यतिर्वा स महापातकोपपातकेभ्यः पूतो भवति जाबाल्यु. ९
योऽविमुक्तं पश्यति स जन्मान्तरितान्दोषान्वारयति रामो. ता. ४।९
यो विलङ्घ्याश्रमान्वर्णानात्मन्येव स्थितः सदा । अतिवर्णाश्रमी योगी अवधूतः स कथ्यते १ अवधू. २
यो विश्वर्षीन् ध्यायन्नकुर्वन्विश्वं ह्रीषद्विष्णवे याः प्रभविष्णवे ता अभितन्मरित्रे स्वाहा पारमा. ९।४
यो विस्फुलिङ्गेन ललाटजेन सर्वं जगद्भस्मसात्सङ्करोति । पुनश्च सृष्ट्वा पुनरप्यरक्षद्देवं स्वतन्त्रं प्रकटीकरोति, तस्मै रुद्राय नमो अस्तु शरभो. ९
यो वेद गहनं गुह्यं पावनं च तथोदितम् । अग्नीषोमपुटं कृत्वा न स भूयोऽभिजायते बृ. जा. २।१६
यो वेद निहितं गुहायां परमे व्योमन् [तैत्ति. २।१।१+ ना.उ.ता. १।५
यो वेदादौ स्वरः प्रोक्तो वेदान्ते च प्रतिष्ठितः । तस्य प्रकृतिलीनस्य यः परः स महेश्वरः महाना.८।१७
[शु. र. ३।१८+ ना. उ.ता. १।२
(अथ) यो वेदेदमभिव्याहराणीति स आत्मा, अभिव्याहाराय वाक् छांदो.८।१२।४
(अथ) यो वेदेदं जिघ्राणीति स आत्मा, गन्धाय घ्राणम् छांदो. ८।१२।४
(अथ) यो वेदेदं मन्वानीति स आत्मा, मनोऽस्य दैवं चक्षुः छांदो. ८।१२।५
(अथ) यो वेदेद९ शृणवानीति स आत्मा, श्रवणाय श्रोत्रम् छांदो. ८।१२।४
यो वेदो वेदानामाधारः वेदान्तरात्मा सरसो रससङ्घातो रसं रसमासीद्रसाय स्वाहा पारमा. ५।७
यो वै गान्धर्वविद्यामुपास्ते, सोऽग्निपूतो भवति गान्धर्वो. १२
यो वै तत्काप्य सूत्रं विद्यात्तं चान्तर्यामिणमिति स ब्रह्मवित्स लोकवित्स वेदवित्स सर्वविदिति बृह. ३।७।१
यो वै तमनु भार्यान् बुभूर्षति स हैवालं भार्येभ्यो भवति बृह. १।३।१८
यो वै तं पुरुषं विद्यात् सर्वस्यात्मनः परायणं स वै वेदिता स्यात् [बृह. ३।९।१०-१७
यो वैतामक्षितिं वेद सोऽन्नमत्ति प्रतीकेन स देवानपि यच्छति बृह. १।५।१
यो वै तामक्षितिं वेदेति, पुरुषो वा अक्षितिः बृह. १।५।२
यो वै तां ब्रह्मणो वेदामृतेनावृतां पुरीम् (रं)। तस्मै ब्रह्म च ब्रह्मा च आयुः कीर्तिं (ब्राह्माश्च चक्षुः प्राणं) प्रजांददुः अरुणो. २
[अथर्व. १०।२।२९+ तै.आ.१।२७।१
यो वैतां वाचं वेद यस्या एष विकारः स सम्प्रतिवित् । अकारो वै सर्वा वाक् १ ऐत. ३।३।७
यो वै देवं महादेवं प्रणवं पुरुषोत्तमम् । यः सर्वे सर्ववेदैश्च तन्मे मनः.. २ शिवसं. २०
(अथ) यो वै नारायणः स भगवान्परब्रह्मण आनन्दो भवति ना.पू.ता. १।१
यो वै प्राणः सा प्रज्ञा, या वा प्रज्ञा स प्राणः कौ.त. ३।३,४
यो वै बटुकः स भगवान्यश्च कालस्तस्मै वै नमो नमः (एवं सर्वत्र) बटुको. १७
यो वै बटुकः स भगवान्यश्च कृष्णः.. बटुको. १५
यो वै बटुकः स भगवान्यश्च मही.. बटुको. ६
यो वै बटुकः स भगवान्यश्च तेजः.. बटुको. १०
यो वै बटुकः स भगवान्यश्च दम्भः.. बटुको. १३
यो वै बटुकः स भगवान्यश्च द्यौः.. बटुको. ९
यो वै बटुकः स भगवान्यश्च ब्रह्मा.. बटुको. २
यो वै बटुकः स भगवान्यश्च भुवः.. बटुको. ७

यो वै बटुकः स भगवान्यश्च भूः.. बटुको. ७
यो वै बटुकः स भगवान्यश्च मृत्युः.. बटुको. ११
यो वै बटुकः स भगवान्यश्च रुद्रः.. बटुको. ३
यो वै बटुकः स भगवान्यश्च वायुः.. बटुको. ४
यो वै बटुकः स भगवान्यश्च विश्वं.. बटुको. १२
यो वै बटुकः स भगवान्यश्च विष्णुः.. बटुको. २
यो वै बटुकः स भगवान्यश्च शुक्लं.. बटुको. १३
यो वै बटुकः स भगवान्यश्च सत्यं.. बटुको. १६
यो वै बटुकः स भगवान्यश्च सर्वः.. बटुको. १६
यो वै बटुकः स भगवान्यश्च सूक्ष्मं.. बटुको. १४
यो वै बटुकः स भगवान्यश्च सूर्यः.. बटुको. ५
यो वै बटुकः स भगवान्यश्च सोमः.. बटुको. ५
यो वै बटुकः स भगवान्यश्च स्थूलं.. बटुको. १५
यो वै बटुकः स भगवान्यश्च स्वः.. बटुको. ८
यो वै बटुकः स भगवान्यश्चाकाशः.. बटुको. १२
यो वै बटुकः स भगवान्यश्चाकृष्णः.. बटुको. १६
यो वै बटुकः स भगवान्यश्चाग्निः.. बटुको. ४
यो वै बटुकः स भगवान्यश्चादम्भः.. बटुको. १४
यो वै बटुकः स भगवान्यश्चान्तरिक्षं.. बटुको. ८
यो वै बटुकः स भगवान्यश्चापमृत्युः.. बटुको. ११
यो वै बटुकः स भगवान्यश्चापः.. बटुको. ९
यो वै बटुकः स भगवान्यश्चेन्द्रः.. बटुको. ३
यो वै बटुकः स भगवान्यश्चोपमहाः.. बटुको. ६
यो वै बालाक एतेषां पुरुषाणां कर्ता, यस्य वैतत्कर्म स वेदितव्य इति कौ. ब. ४।१८
यो वै भूमा तत्सुखम्, नाल्पे सुखमस्ति, भूमैव सुखं, भूमा त्वेव विजिज्ञासितव्य इति छांदो. ७।२३।१
यो वै भूमा तदमृतम् छांदो. ७।२४।१
यो वै यजुर्वेदवाच्यस्तं साम जानीयाद्यो जानीते सोऽमृतत्वं च गच्छति नृ. पू. १।६
यो वै रुद्रः स भगवान् यच्च कृष्णं तस्मै वै नमोनमः* अ. शिरः. २९
यो वै रुद्रः स भगवान् यच्च कृत्स्नं.. अ. शिरः. ३०
यो वै रुद्रः स भगवान् यच्च तेजः.. [अ. शिरः. २।१९+ २ रुद्रो. २४
यो वै रुद्रः स भगवान् यच्च महः.. अ. शिरः. २।१४
यो वै रुद्रः स भगवान् यच्च विश्वं.. अ. शिरः. २।२५
यो वै रुद्रः स भगवान् यच्च शुक्लं अ. शिरः. २।२८
यो वै रुद्रः स भगवान् यच्च सत्यं २ रुद्रो. ३३ [अ. शिरः. २।३०+
यो वै रुद्रः स भगवान् यच्च सर्वं अ. शिरः. २।३१
यो वै रुद्रः स भगवान् यच्च सूक्ष्मं अ. शिरः. २।२७
यो वै रुद्रः स भगवान् यच्च स्थूलं अ. शिरः. २।२५
यो वै रुद्रः स भगवान्यश्च भविष्यत् २ रुद्रो. ४०
यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च भूतं २ रुद्रो. २।३९
यो वै रुद्रः स भगवान् यच्च स्वः अ. शिरः. २।१३
यो वै रुद्रः स भगवान् यच्चाकाशं अ. शिरः. २।२४
यो वै रुद्रः स भगवान् यच्चान्तरिक्षं अ. शिरः. २।१६
यो वै रुद्रः स भगवान् यच्चामृतं अ. शिरः. २।२३
यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च ईशानः २ रुद्रो. १४
यो वै रुद्रः स...यश्चैकादशरुद्राः.. २ रुद्रो. २१
यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च कालः २ रुद्रो. ३७ [अ. शिरः. २।२०
यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च कुबेरः २ रुद्रो. १५
यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च जनः २ रुद्रो. ३१
यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च तपः २ रुद्रो. ३२
यो वै रुद्रः स...यश्च द्वादशादित्याः २ रुद्रो. २०
यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च नक्षत्राणि २ रुद्रो. १६
यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च निर्ऋतिस्तस्मै वै नमोनमः २ रुद्रो. १३
यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च प्राणाः २ रुद्रो. ३४
यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च पृथिवी २ रुद्रो. २२
यो वै द्रुरुः स भगवान् यश्च ब्रह्मा २ रुद्रो. १ [अ. शिरः. २।१
यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च महः २ रुद्रो. ३०
यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च मृत्युः [अ. शिरः. २।२२+ २ रुद्रो. ३८
यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च मनः २ रुद्रो. ३५
यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च यमः २ रुद्रो. १२ [अ. शिरः. २।२१+
यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च रुद्रः २ रुद्रो. ३
यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च वरुणः २ रुद्रो. ११
यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च वर्तमानं २ रुद्रो. ४१

*अग्रपाठे मन्त्रास्तथैव सर्वे मंत्रास्तत्तद्देवतासहिता नमोनमोन्ताः पठनीयाः । एवमग्रेऽपि नृसिंहादिमंत्रेषु ज्ञातव्यम् ।

यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च वायुः
[अ. शिरः. २।६+ २ रुद्रो. ९,२९
यो वै रुद्रः स भगवान्यश्च विनायकः २ रुद्रो. ९
यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च विष्णुः २ रुद्रो. २
[अ. शिरः. २।२+
यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च सर्वं २ रुद्रो. ३६
यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च सुवः २ रुद्रो. २९
यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च सूर्यः २ रुद्रो. १०
[अ. शिरः. २।७+
यो वै रुद्रः स भगवान् यश्च सोमः अ.शिरः.२।८
यो वै रुद्रः स भगवान्यश्च स्कन्दः २ रुद्रो. ६
[अ. शिरः. २।३+
यो वै रुद्रः स भगवान् यश्चाकाशः २ रुद्रो. २६
यो वै रुद्रः स भगवान् यश्चाग्निः २ रुद्रो. ८
[अ. शिरः. २।९+
यो वै रुद्रः स भगवान् यश्चाष्टौ ग्रहाः २ रुद्रो. १७
यो वै रुद्रः स भगवान् यश्चेन्द्रः २ रुद्रो. ७
[अ. शिरः २।४+
यो वै रुद्रः स भगवान् या च द्यौः अ.शिरः.२।१७
यो वै रुद्रः स भगवान्या च पृथिवी अ.शिरः. २।१५
यो वै रुद्रः स भगवान् या च भूः २ रुद्रो. २७
[अ. शिरः. २।११+
यो वै रुद्रः स भगवान् या चोमा २ रुद्रो. ४
यो वै रुद्रः स भगवान् यच्च भुवः २ रुद्रो. २८
[अ. शिरः. २।१२+
यो वै रुद्रः स भगवान् याश्चापरतस्मै
वै नमोनमः [अ.शिरः.२।१८+ २ रुद्रो. २३
यो वै रुद्रः स भगवान्ये च ऋषयः २ रुद्रो. १८
यो वै रुद्रः स भगवान्ये चाष्टौ प्रतिग्रहाः अ.शिरः.२।१०
यो वै रुद्रः स भगवान्ये चाष्टौ वसवः २ रुद्रो. १९
यो वै रुद्रः स भगवान् यश्चाष्टौ ग्रहाः अ.शिरः. २।९
यो वै वेद स वेद ब्रह्म, ब्रह्मैवावाप्नोति ग.शो. ३।१
यो वै वेदांश्च प्रहिणोति तस्मै
तं ह देवमात्मबुद्धिप्रकाशं मुमुक्षुर्वै
शरणमहं प्रपद्ये श्वेताश्व. ६।१८
यो वै स बहिर्धा पुरुषादाकाशः छांदो. ३।१२।७
यो वै स संवत्सरः प्रजापतिः
षोडशकलोऽयमेव सः बृह. १।५।१५
यो वै सोऽन्तःपुरुष आकाशः छांदो. ३।१२।८

यो व्यानः सा वाक् तस्मादप्राण-
न्नपानन्वाचमभिव्याहरति छांदो. १।३।३
यो व्यानेन व्यानिति स त आत्मा
सर्वान्तरः बृह. ३।४।१
योऽशनायापिपासे शोकं मोहं जरां
मृत्युमत्येति बृह. ३।५।१
योषा वा अग्निर्गौतम तस्याः उपस्थ
एव समिल्लोमानि धूमो योनिरर्चि-
र्यदन्तः करोति तेऽङ्गारा अभि-
नन्दा विस्फुलिङ्गाः बृह. ६।२।१३
योषा वाव गौतमाग्निस्तस्या उपस्थ
एव समिद्यदुपमन्त्रयते स धूमः छांदो. ५।८।१
योऽष्टाचत्वारिंशद्वर्षाणि ब्रह्मचर्यं
चरेत्, प्रतिवेदं द्वादश वा याव-
द्ग्रहणान्तं वा वेदस्य, स ब्राह्मणः आश्रमो. १
योऽसा आदित्ये पुरुषः सोऽसा-
वहमिति मैत्रा. ६।३९
योऽसावसौ पुरुषः सोऽहमस्मि बृह. ५।१५।१
योऽसावसौ पुरुषः सोऽहमस्मि ईशा. १६
(ॐ) योऽसाविन्द्रियात्मा गोपालः.. गोपालो. ३।१३
(ॐ) योऽसावुत्तमपुरुषो गोपालः
ॐ तत्सत् गोपालो. ३।१५
योऽसि सोऽसि जगत्यस्मिंल्लीलया
विहरानघ महो. ६।१
योऽसौ सोऽहमस्मीति वा या भाव्यते
सैषा षोडशी बह्वृचो. ५
योऽसौ तपन्नुदेति सूर्यता. १।२
योऽसौ देवो भगवान् सर्वैश्वर्यसम्पन्नः
...मायया क्रीडति स ब्रह्मा स
विष्णुः स रुद्रः स इन्द्रः स
सर्वे देवाः शांडि. ३।१।३
योऽसौ परापरो देव ॐकारो नाम
नामतः । निःशब्दः शून्यभूतस्तु
मूर्ध्नि स्थाने ततोऽभ्यसेत् मैत्रा. ६।२३
(ॐ) योऽसौ प्रधानात्मा गोपालॐ
तत्सद्भूर्भुवः सुवस्तस्मै वैनमोनमः गोपालो. ३।१२
(ॐ) योऽसौ ब्रह्म, परं वै ब्रह्म
ॐ तत्सद्भूर्भुवः सुवः.. गोपालो. ३।१६

(ॐ) योऽसौ भूतात्मा गोपालः
ॐ तत्सद्भूर्भुवः सुवः... गोपालो. ३।१४
योऽसौ वेद यदिदं किञ्चात्मनि
ब्रह्मण्येवानुष्टुभं जानीयाद्यो
जानीते सोऽमृतत्वं च गच्छति नृ. पू. १।७
(ॐ) योऽसौ सर्वभूतात्मा गोपाल
ॐ तत्सद्भूर्भुवः सुवस्तस्मै वै
नमोनमः गोपालो. ३।१७
योऽसौ सर्वेषु भूतेष्वाविश्य तिष्ठति
भूतानि विदधाति स वो हि
स्वामी भवति गोपालो. १।१२
योऽसौ सर्वेषु वेदेषु पठ्यते ह्यज
ईश्वरः। तस्माच्चद्धारणादेतल्लिङ्ग-
देहमलौकिकम् सदानं. १०
योऽसौ सर्वेषु वेदेषु पठ्यते ह्यज
ईश्वरः। अकायो निर्गुणो ह्यात्मा
तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु २ शिवसं. २२
योऽसौ सर्वैर्गीयते...स वो हि
स्वामी भवति गोपालो. १।१२
योऽसौ सूर्ये तिष्ठति, योऽसौ गोषु
तिष्ठति, योऽसौ गोपान्पाल-
यति, योऽसौ सर्वेषु देवेषु
तिष्ठति।...सवोहिस्वामीभवति गोपालो. १।१२
योऽस्ति कल्पितसंवृत्या परमार्थेन
नास्त्यसौ अ. शां. ७३
योऽस्माकमविद्यायाः परं पारं तार-
यतीति नमः परमऋषिभ्यः प्रश्नो. ६।८
योऽस्मात्पूर्वो बुभूषति य एवं वेद बृह. १।४।१
योऽस्मान् द्वेष्टि, यं च वयं द्विष्मः कौ.उ. २।९
[वनदु.१६०+म.ना. ५।११+
[प्रवर्ग्या. २३+ वा. सं.३६।२३
योऽस्मि सोऽस्मि नमोऽस्तु ते १सं.सो.२।३१
(अथ) योऽस्य दक्षिणः सुषिः
स व्यानस्तच्छ्रोत्रं स चन्द्रमा-
स्तदेतच्छ्रीश्च यशश्चेत्युपासीत
श्रीमान्यशस्वी भवति छांदो. ३।१३।२
(अथ) योऽस्य निरुक्तानि वेद
स सर्वं वेद शांडि.३।१।२
(अथ) योऽस्य प्रत्यङ्सुषिः सोऽपानः
सा वाक् सोऽग्निस्तदेतद्ब्रह्मवर्चस-
मन्नाद्यमित्युपासीत ब्रह्मवर्च-
स्यन्नादो भवति छांदो.३।१३।३
योऽस्य भर्गः कं सञ्चिन्तयामी-
त्याहुर्ब्रह्मवादिनः मैत्रा. ६।७
योऽस्या एतदेवं पदं वेद गायत्र्यु. १,२
[बृ.उ. ५।१४।१,२+
(अथ) योऽस्योदङ्सुषिः स समान-
स्तन्मनः स पर्जन्यस्तदेतत्कीर्ति-
श्च व्युष्टिश्चेत्युपासीत कीर्ति-
मान्व्युष्टिमान्भवति छांदो.३।१३।४
(अथ) योऽस्योर्ध्वः सुषिः स
उदानः स वायुः स आकाशस्त-
देतदोजश्च महश्चेत्युपासीतौजस्वी
महस्वान्भवति छांदो.३।१३।५
यो ह खलु वाचोपरिस्थः श्रूयते स
एव वा एष शुद्धः पूतः शून्यः...
स्वे महिम्नि तिष्ठति मैत्रा. २।४
(अथ) योहखलुवावशरीरं...भूतात्मा मैत्रा. ३।२
(अथ) यो ह खलु वावास्य ताम-
सोंऽशोऽसौ स योऽयं रुद्रः मैत्रा. ५।५
(अथ) यो ह खलु वावास्य राज-
सोंऽशोऽसौ स योऽयं ब्रह्मा मैत्रा. ५।५
(अथ) यो ह खलु वावाऽस्य सात्त्वि-
कोंऽशोऽसौ स एव विष्णुः मैत्रा. ५।५
(अथ) यो ह खलु वावैतस्यांशोऽयं
यश्चेतनमात्रः प्रतिपूरुषं क्षेत्रज्ञः मैत्रा. २।५
योऽहङ्कारे, योऽहङ्कर्तव्ये, यो रुद्रे
यो नाड्यां..सञ्चरतिसोऽयमात्मा सुबालो. ५।८
योऽहमनेन न प्रेष्यामीति स ह
षोडशं वर्षशतमजीवत् छांदो.३।१६।७
योऽहमस्मि ब्रह्माहमस्मि [म.ना.६।७+ त्रि.म.ना.८।३
योऽहमसीतिवा सोऽहमस्मीति वा बह्वृचो. ४
यो हरिस्तत्साम्नः पञ्चमं पादं
जानीयात् ग. पू.ता. २।१
(अथ) यो ह वा अस्माल्लोकात्स्वं
लोकमदृष्ट्वा प्रैति, स एनमवि-
दितो न भुनक्ति बृह. १।४।१५

यो ह वा अस्मिन्नादित्ये निहित-
स्तारकेऽक्षिणि चैष भर्गाख्यः मैत्रा. ६।७
यो ह वा आत्मानं पञ्चविधमुक्थं
वेद, यस्मादिदं सर्वमुत्तिष्ठति, स
सम्प्रतिवित् १ ऐत. ३।१।१
यो ह वा आयतनं वेदायतनमह५
स्वानां भवति, मनो ह वा आयतनं छांदो. ५।१।५
यो ह वा एतमोङ्कारं न वेदावश्यः स्यात् २ प्रणवो. ९
यो ह वा एतस्य प्राणस्य ब्रह्मणो
मनो दूतं वेद, दूतवान्भवति कौ. त. २।१
यो ह वै प्रतिष्ठां वेद प्रति ह तिष्ठ-
त्यस्मि५श्च लोकेऽमुष्मि५श्च, चक्षु-
र्वाव प्रतिष्ठा छांदो. ५।१।३
यो ह वै ज्येष्ठं च श्रेष्ठं च वेद
ज्येष्ठश्च श्रेष्ठश्च स्वानां भवति छांदो. ५।१।१
यो ह वै त्वकामेन कामान्कामयते
सोऽकामी भवति गोपालो.१।१२
(ॐ)यो ह वै..नादस्वरूपोभरतो.. तारसा. ३।५
(ॐ) यो ह वै...स भगवांस्तत्पर:
...नित्यशुद्धबुद्धमुक्तसत्यपर-
मनन्ताद्वयपरिपूर्णः परमात्मा
ब्रह्मैवाहं रामोऽस्मि तारसा. ३।८
(ॐ) यो ह वै...स भगवान्बिंदु-
स्वरूपः शत्रुघ्नो..तस्मै वै नमोनमः तारसा. ३।४
यो ह वै नारायणस्याष्टाक्षरं पद-
मध्येति । अनपब्रुवन्सर्वमायुरेति नारा. ३
यो ह वै नृसिंहो देवो भगवान्यश्च
पुरुषो भूर्भुवःस्वस्तस्मै वै नमोनमः नृ. पू. ४।८
यो ह वै नृसिंहो देवो भगवान्या
च सरस्वती..तस्मै वै नमोनमः नृ. पू. ४।१०
योहवै नृसिंहोदेवोभगवान्यश्चविष्णुः नृ. पू. ४।६
यो ह वै नृसिंहो देवो भगवान्यश्च ब्रह्मा नृ. पू. ४।५
यो ह वै नृसिंहो देवो भगवान्यश्च
महेश्वरो भूर्भुवःस्वस्तस्मै वै नमोनमः नृ. पू. ४।७
यो ह वै नृसिंहो देवो भगवान्यश्चेश्वरः नृ. पू. ४।९
यो ह वै नृसिंहो देवो भगवान्यश्च कालः नृ. पू. ४।२६
यो ह वै नृसिंहो देवो भगवान्यश्च जीवः नृ. पू. ४।३५
यो ह वै नृसिंहो देवोभगवान्यश्च प्राणः नृ. पू. ४।३१
यो ह वै नृसिंहो देवो भगवान्यश्च मनुः नृ. पू. ४।२७

योहवै नृसिंहो देवो भगवान्यश्चमृत्युः नृ. पू. ४।२८
योहवै नृसिंहो भगवान्यश्च यमः नृ. पू. ४।२९
योहवै नृसिंहो देवो भगवान्यश्च
विराट् पुरुषः ... नृ. पू. ४।३४
योहवै नृसिंहो देवो भगवान्यश्च सर्वं नृ. पू. ४।३६
योहवै नृसिंहो देवो भगवान्यश्च सूर्यः नृ. पू. ४।३२
योहवै नृसिंहो भगवान्यश्च सोमः नृ. पू. ४।३३
योहवैनृसिंहोदेवोभगवान्यश्चान्तकः नृ. पू. ४।३०
योहवै नृसिंहो देवो भगवान्यश्चोङ्कारः नृ. पू. ४।१५
योहवै नृसिंहो देवो भगवान्याच गौरी नृ. पू. ४।१२
योहवै नृसिंहो देवो भगवान्यानि च
पञ्च महाभूतानि... नृ. पू. ४।२५
योहवैनृसिंहो देवोभगवान्याच प्रकृतिः नृ. पू. ४।१३
योहवै नृसिंहो देवो भगवान्याच विद्या नृ. पू. ४।१४
योहवै नृसिंहो देवो भगवान्याच श्रीः नृ. पू. ४।११
योहवै नृसिंहो देवो भगवान्याश्च
चतस्रो मात्राः नृ. पू. ४।१६
योहवै नृसिंहो देवो भगवान्याश्च
सप्त व्याहृतयः... नृ. पू. ४।१९
योहवै नृसिंहो देवा भगवान्ये च
द्वादशादित्याः... नृ. पू. ४।२३
योहवै नृसिंहो देवो भगवान्येचाष्टौ ग्रहाः नृ. पू. ४।२४
योहवै नृसिंहो देवो भगवान्ये चाष्टौ
लोकपालाः... नृ. पू. ४।२०
योहवै नृसिंहो देवो भगवान्ये चाष्टौ
वसवः भूर्भुवः स्वस्तस्मै नमोनमः नृ. पू. ४।२१
यो ह वै नृसिंहो देवो भगवान्
ये चैकादश रुद्राः... नृ. पू. ४।२२
यो ह वै नृसिंहो देवो भगवान्
ये च पञ्चाग्नयः... नृ. पू. ४।१८
योहवै नृसिंहो देवो भगवान्येच वेदाः
साङ्गाः सशाखाः सेतिहासाः... नृ. पू. ४।१७
(ॐ)यो ह वै परमात्मा नारायणः.. ता. सा. ३।३
यो ह वै प्रजापतिं वेद प्रजायते ह
प्रजया पशुभिः बृह. ६।१।६
यो ह वै प्रतिष्ठां वेद प्रतितिष्ठति बृह. ६।१।३
यो ह वै ब्रह्मो यज्ञं वेदाहन्यहर्देवेषु
देवमध्यूहं स सम्प्रतिवित् १ ऐत. ३।४।१
यो ह वै योऽन्तःकरणचतुष्टयात्मा रामो. ५।११

यो ह वै यो ब्रह्मा विष्णुर्महेश्वरो यः
सर्वदेवात्मा.. रामो. ५।५

यो ह वै वसिष्ठं वेद, वसिष्ठो ह
स्वानां भवति, वाग्वाव वसिष्ठः छांदो. ५।१।२

यो ह वै वसिष्ठां वेद वसिष्ठः स्वानां
भवति बृ. उ. ६।१।२

(अथ) यो ह वै विद्ययैनं परमु-
पास्ते सोऽहमिति स ब्रह्मविद्भवति शांडि. ३।२।२

यो ह वै शिशुं साधनं सप्रत्या-
धानं सस्थूणं सदामं वेद.. बृह. २।२।१

(ॐ) यो ह वै श्रीपरमात्मा...
उकार उपेन्द्रस्वरूपो हरिनायकः तारसा. ३।२

(ॐ) यो ह वै श्रीपरमात्मा...
कलातीता भगवती सीता
चित्स्वरूपा तारसा. ३।७

(ॐ) यो ह वै श्रीपरमात्मा नारा-
यणः स भगवान् कलास्वरूपो
लक्ष्मणोभूर्भुवःसुवस्तस्मैवैनमोनमः तारसा. ३।६

यो ह वै श्रीरामचन्द्रः स भगवानद्वैत-
परमानन्द आत्मा स ॐ नमो
भगवते वासुदेवाय भूर्भुवः सुव-
स्तस्मै वै नमो नमः रामो. ५।४४

यो ह वै श्रीरामचन्द्रः स...यच्च
त्रैलोक्यं भूर्भुवः सुवस्तस्मै.. रामो. ५।२६

यो ह वै श्रीरामचन्द्रः स...यच्च
ब्रह्मानन्दामृतं.. रामो. ५।३

यो ह वै...यच्च भूतं भव्यं भविष्यत् रामो. ५।३५

यो ह वै...यच्चामृतं भूर्भुवः रामो. ५।१६

यो ह वै...यत्तारकं ब्रह्म रामो. ५।४

यो ह वै...यद्ब्रह्माण्डस्य बहिर्व्याप्तं रामो. ५।३६

यो ह वै...यश्च प्राणो... रामो. ५।१२

यो ह वै...यश्च महादेवः... रामो. ५।४३

योहवै श्रीरामचन्द्रः...यश्च महेश्वर.. रामो. ५।४२

योहवै श्रीरामचन्द्रः...यश्च मृत्युः.. रामो. ५।१५

योहवै श्रीरामचन्द्रः...यश्च यमः.. रामो. ५।१३

योहवै श्रीरामचन्द्रः..यश्चाखंडैकरसात्मा रामो. ५।२

योहवै श्रीरामचन्द्रः...यश्चान्तकः रामो. ५।१४

योहवै श्रीरामचन्द्रः...यश्चोङ्कारः.. रामो. ५।३९

योहवै श्रीरामचन्द्रः...यः परमात्मा रामो. ५।४६

योहवै श्रीरामचन्द्रः...यःपरमपुरुषः.. रामो. ५।४१

योहवै श्रीरामचन्द्रः...यःसर्वभूतात्मा.. रामो. ५।८

योहवै श्रीरामचन्द्रः...यः सूर्यः रामो. ५।२७

योहवै श्रीरामचन्द्रः...यः सोमः रामो. ५।२८

योहवै श्रीरामचन्द्रः...यः स्थावर-
जङ्गमात्मा..भूर्भुवः सुवस्तस्मै.. रामो. ५।१८

योहवै श्रीरामचन्द्रः स भगवान-
द्वैतपरमानन्द आत्मा यत्परं ब्रह्म रामो. ५।१

योहवै श्रीरामचन्द्रः...या गौरी रामो. ५।२४

योहवै श्रीरामचन्द्रः...या जानकी.. रामो. ५।२५

योहवै श्रीरामचन्द्रः...यानि च
नक्षत्राणि..तस्मै वै नमोनमः रामो. ५।२९

योहवै श्रीरामचन्द्रः... यानि च
पञ्चमहाभूतानि.. रामो. ५।१७

योहवै श्रीरामचन्द्रः...या प्रकृतिः.. रामो. ५।३८

योहवै श्रीरामचन्द्रः...यो ब्रह्मा
विष्णुर्महेश्वरो यः सर्वदेवात्मा.. रामो. ५।५

योहवै श्रीरामचन्द्रः...या लक्ष्मी भूर्भु.. रामो. ५।२३

योहवै श्रीरामचन्द्रः...या विद्या.. रामो. ५।२१

योहवै श्रीरामचन्द्रः..याश्चतस्रोर्धमात्राः रामो. ५।४०

योहवै श्रीरामचन्द्रः...या सरस्वती.. रामो. ५।२२

योहवै श्रीरामचन्द्रः...याः सप्त
महाव्याहृतयः.. रामो. ५।२०

योहवैश्रीरामचन्द्रः..येच द्वादशादित्याः रामो. ५।३४

योहवै श्रीरामचन्द्रः...येच नव ग्रहाः.. रामो. ५।३०

योहवै श्रीरामचन्द्रः...ये चाष्टौ वसवः रामो. ५।३२

योहवै श्रीरामचन्द्रः...ये चाष्टौ
लोकपालाः... रामो. ५।३१

योहवै श्रीरामचन्द्रः..ये चैकादशरुद्राः रामो. ५।३३

योहवै श्रीरामचन्द्रः...ये देवासुर-
मनुष्यादिभावाः... रामो. ५।९

योहवै श्रीरामचन्द्रः...ये पञ्चाग्नयः.. रामो. ५।१९

योहवै श्रीरामचन्द्रः...ये मत्स्य-
कूर्माद्यवताराः... रामो. ५।१०

योहवै श्रीरामचन्द्रः...ये सर्वे वेदाः..
साङ्गाःसशाखाःसेतिहासपुराणाः.. रामो. ५।६

योहवै श्रीरामचन्द्रः...यो जीवान्तरात्मा.. रामो. ५।७

योहवै श्रीरामचन्द्रः...योऽन्तः-
करणचतुष्टयात्मा.. रामो. ५।११

योहवै श्रीरामचन्द्रः...यो महाविष्णुः.. रामो. ५।४५
योहवै श्रीरामचन्द्रः...यो विज्ञानात्मा.. रामो. ५।४७
योहवै श्रीरामचन्द्रः...यो हिरण्यगर्भः.. रामो. ५।३७
यो ह वै सम्पदं वेद, सꣳ हास्मै कामाः पद्यन्ते दैवाश्च मानुषाश्च, श्रोत्रं वाव सम्पत् छांदो. ५।१।४
यो ह वै सम्पदं वेद सर्वं हास्मै पद्यते (मा. पा.) बृ. उ. ६।१।४
यो ह वै सम्पदं वेद सꣳ हास्मै पद्यते बृह. ६।१।४
यो ह वै सुम्लोकमौले धर्माननु-तिष्ठमानोऽग्निना चक्रं योग्निर्वै... तप्ततनूः सायुज्यं सलोकता-माप्नोति सुदर्श.५
यो ह संयोगो ध्यानं जुषमाणः सिन्धुः सन्धुक्षणानां संयोगः सन्दधानः पुण्यः पुण्यानां पुण्याय स्वाहा पारमा. ४।६
यो हस्ते य आदातव्ये य इन्द्रे यो नाड्यां...सञ्चरति सोऽयमात्मा सुबालो. ५।११
यो ह्रीमानि न विद्यात्कथꣳ सोऽनु-शिष्टो ब्रुवीत छांदो. ५।३।४
यो हैवंवित्स सवित्स द्वैतवित्सैक-धामेतः स्यात्तदात्मकश्च मैत्रा. ६।३५
यो ह्येव प्रभवः स एवाप्ययः ३ऐत. २।६।४
यो हैवं वेद सन्यासी योगी चात्मयाजी चेति मैत्रा. ६।१०
यो ह्येष महिमा बभूव क एषः ब्रह्मो. १
यौवनस्था गृहस्थाश्चप्रासादस्थाश्च ये नृपाः । सर्वे एव विशीर्यन्ते शुष्क-स्निग्धान्नभोजनाः शिवो. ७।१२२

र

र इति—रञ्जयतीमानि भूतानि मैत्रा. ६।७
रकारमग्निबीजं च अपानादित्य-सन्निभम् ध्या. बिं. ९५
रकारोऽण्डं विराड् भवति तारसा. १।४
रकारोवह्निवचनःप्रकाशःपर्यवस्यति रामर. ५।४
रक्तमांसमयस्यास्य सबाह्याभ्यन्तरे मुने । नाशैकधर्मिणो ब्रूहि कैव कायस्य रम्यता महो. ३।३१
रक्तमूत्रलालास्वेदादिकमवंशाः पैङ्गलो. २।२
रक्तवर्णो मणिप्रख्यः प्राणवायुः प्रकीर्तितः अ. ना. ३७
रक्तशुक्लपदैकीकरणं पाद्यम् भावनो. ८
रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवास-सम्...एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः गणप. ९
रक्ता गायत्री । श्वेता सावित्री । कृष्णा सरस्वती गायत्रीर. ५
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवंति भ.गी. ११।३६
रक्षांसि ह वा पुरोनुवाके तपोग्रमति-ष्ठन्तत्तान्प्रजापतिर्वरेणोपामन्त्रयत सहवै.२ ६९
रक्षोहणो वो बलगहन इति तृतीयः पादः । साम वै तृतीयः पादः । वक्रतुण्डाय हुमिति चतुर्थः पादो-ऽथर्वश्चतुर्थः पाद इति ग. पू. १।१३
रघुवंश्याय विद्महे सीतावल्लभाय धीमहि । तन्नो रामः प्रचोदयात् वनदु. १४३
रजसस्तु फलं दुःखं भ.गी. १४।१६
रजसि प्रलयं गत्वा भ.गी. १४।१५
रजसो लोभ एव च भ.गी. १४।१७
रजस्तमश्चाभिभूय भ.गी. १४।१०
रजस्तमस्स्वरूपेण भावा यज्ञबहिष्कृताः भवसं. ४।७
रजस्तमोभ्यां विद्धस्य सुसमिद्धस्य देहिनः । पुत्रदारकुटुम्बेषु सक्तस्य न कदाचन मैत्रा. ६।२८
रजस्येतानि जायन्ते भ.गी. १४।१२
रजः कर्मणि भारत भ. गी. १४।९
रजः सत्त्वं तमश्चैव भ.गी. १४।१०
रजोगुणसमुद्भवः भ.गी. ३।३७
रजो भूमिस्त्वमा रोदयस्व प्रवदन्ति धीराः । आक्रान्समुद्रः प्रथमे विधर्मञ्जनयन्प्रजा भुवनस्य राजा महाना. ६।९

रजो रागात्मकं विद्धि — भ.गी. १४।७
रजो वसति जन्तूनां देवीतत्त्वं समावृतम् । रजसो रेतसो योगाद्राजयोग इति स्मृतः — यो.शि.१।१३७
रज्जुखण्डे परिज्ञाते सर्परूपं न तिष्ठति — ना. बिं. २७
रज्जुबद्धा विमुच्यन्ते तृष्णाबद्धा न केनचित् — महो. ६।३९
रज्जुबद्धो यथा श्येनो गतोऽप्याकृष्यते पुनः । गुणबद्धस्तथा जीवः प्राणापानेन कर्षति — यो. चू. २९
रज्जुरेवेति चाद्वैतं तद्वदात्मविनिश्चयः — वैतथ्य. १८
रज्जुर्माताऽदितिस्तथा — कृष्णोप. २१
रज्जुसर्पेण दष्टश्चेन्नरो भवतु संसृतिः — ते. बिं. ६।७७
[अज्ञानमिति च–]रज्जौ सर्पभ्रान्तिरिवाद्वितीये सर्वानुस्यूते सर्वमये ब्रह्मणि देवतिर्यङ्नरस्थावरस्त्रीपुरुषवर्णाश्रमबन्धमोक्षोपाधिनानात्मभेदकल्पितं ज्ञानमज्ञानं — निरा. उ. १६
रज्ज्वज्ञानात्क्षणेनैव यद्वद्रज्जुर्हि सर्पिणी । भाति तद्वच्चितिः साक्षाद्विश्वाकारेण केवला — यो. शि. ४।२
रथनाभिरिवाभिध्यायेत छिद्रां वा छायां वा पश्येत् — २ ऐत. २।४।५
रथन्तरमिति थकारणामेव दीप्तं दर्शयति — संहितो. २।४
रथन्तरं बृहत्साम सप्तवैधैस्तु गीयते — मंत्रिको. ९
रथन्तरे अन्वक्षरं (भ·) थकारान् स्वरवन्ति यथाक्षरं दर्शयेत् — संहितो. २।२
रथं स्थापय मेऽच्युत — भ. गी. १।२१
(अथ) रथान्रथयोगान्पथः सृजते न तत्रानन्दा मुदः प्रमुदो भवन्ति — बृह. ४।३।१०
(तद्यथा) रथेन धावयन्रथचक्रे पर्यवेक्षत एवमहोरात्रे पर्यवेक्षत — कौ. त. १।४
रथोपस्थ उपाविशत् — भ. गी. १।४७
रथो मे सर्वान् समुद्रान् संयाति — इतिहा. ८५
रथ्यायां बहुवस्त्राणि भिक्षा सर्वत्र लभ्यते । भूमिः शय्याऽस्ति विस्तीर्णा यतयः केन दुःखिताः — १सं.सो.२।९९
रमते तरिमस्तु जीर्णे शयाने नैनं जहात्यहः सुपूर्व्येषु — चित्सु. १४।२

रमते धीर्यथाप्राप्ते साध्वीवान्तःपुराजिरे । सा जीवन्मुक्ततोदेति स्वरूपानन्ददायिनी — महो. ४।२८
रमन्ते योगिनोऽनन्ते नित्यानन्दे चिदात्मनि । इति रामपदेनासौ परं ब्रह्माभिधीयते — रा. पू. १।६
रममाणः स्त्रीभिर्वा यानैर्वा ज्ञातिभिर्वा नोपजनꣳ स्मरन्निदꣳ शरीरꣳ स यथा प्रयोग्य आचरणे युक्त एवमेवायमस्मिञ्छरीरे प्राणो युक्तः — छां.उ. ८।१२।३
रमारमणो वैकुण्ठे नारायणः स्वयं ध्यानापन्नोऽभवत् — सामर. ३
रमिति–प्राणो वै रं, प्राणे हीमानि सर्वाणि भूतानि रमन्ते — बृ.उ. ५।१२।१
रम्भास्तम्भेन काष्ठेन पाकसिद्धौ जगद्भवेत् — ते. बिं. ६।७८
रम्यदेशे ब्रह्मघोषसमन्विते.. देवायतने...सुशोभनमठं...सर्वरक्षासमन्वितं कृत्वा तत्र वेदान्तश्रवणं कुर्वन्योगं समारभेत् — शांडि. १।५।१
रयिरिति मनुष्याः (देवमुपासते) — मुद्गलो. ३।२
रयिः ककुद्मान् दधद्भिनष्टं रयिमद्विधानं तस्मै ककुभे विकटाय पित्रे स्वाहा — पारमा. ७।३
रयीणां पतिं यजतं बृहन्तं रा रागमुक्तं गुरुं सश्रीकं तं रायिरूपं रयिभूतभूतं रयिमत्सुरत्रः स्वाहा — पारमा. ७।९
रमाऽरमेच्छाऽपुनर्भवति तत्र रमा पुण्येन पुण्यलोकं नयत्यरमा पापेन पापं — सुबालो. ११।१
रविमध्ये स्थितः सोमः सोममध्ये हुताशनः । तेजोमध्ये स्थितं सत्त्वं सत्त्वमध्ये स्थितोऽच्युतः — मैत्रा. ६।३८
रवेरुदयास्तमययोःकिलकर्म कर्तव्यम् — मं. ब्रा. २।४
(लौकिकाग्नेः) रश्मयो धूमोऽहर्चिश्चन्द्रमा अङ्गारा नक्षत्राणि विस्फुलिङ्गाः — बृह. ६।२।९

रश्मिभिरेषोऽस्मिन्प्रतिष्ठितः प्राणै- रयममुष्मिन्स यदोत्क्रमिष्यन् भवति शुद्धमेवैतन्मण्डलं पश्यति बृह. ५।५।२
रश्मिर्रिन्द्रः सविता मे नियच्छतु चित्त्यु. ११।७
रश्मि५ रश्मीनां मध्ये तपन्तं चित्त्यु. ११।४
रश्मीस्त्वं पर्यावर्तयाद्बहवो वै ते भविष्यन्ति छांदो. १।५।२
रश्मीस्त्वं पर्यावर्तयतात् (मा.पा.) छां. उ. १।५।२
रसनया भाव्यमाना मधुराम्लतिक्त- कटुकषायलवणभेदाः षड्रसाः, षड्ऋतवः क्रियाशक्तिः पीठम् भावनो. २
रसनं च रसयितव्यं च (मा.पा.) प्रश्नो. ४।८
रसनं घ्राणमेव च भ.गी. १५।९
रसनाद्वायुमाकृष्य यः पिबेत्सततं नरः । श्रमदाहौ तु न स्यातां नश्यन्ति व्याधयस्तथा शांडि. १।७।४५
रसना पीड्यमानेयं षोडशी वोर्ध्व- गामिनी ध्या. बि. ७३
रसनां तालुनि न्यस्य स्वस्थचित्तो निरामयः । आकुञ्चितशिरः- स्तस्मिन्भिवन्नन्योगमुद्रया । हस्तौ यथोक्तविधिनाप्राणायामंसमाचरेत् त्रि. ब्रा. २।९३
रसभाण्डमिवात्मानं सुस्थिरं धारयेत्सदा अमन. २।५५
रसयन्वै तन्न रसयते, नहि रसयितु रसयतेर्विपरिलोपो विद्यतेऽविना- शित्वात् बृह. ४।३।२५
रसयितव्यमेवाप्येति यो रसयित- व्यमेवास्तमेति सुबालो. ९।४
रसवत्य आपो रसाद्यथां भिन्नाः गोपालो. १।८
रसवर्जं रसोऽप्यस्य भ.गी. २।५९
रसस्य मनसश्चैव चञ्चलत्वं स्वभा- वतः । रसो बद्धो मनो बद्धं किं न सिद्धयति भूतले वराहो. २।७८
रसं रसानां परमास्वादनीयमनास्वादं रसवर्जं सुगुप्तम् २ देव्यु.२३
रसं सर्वमसन्मयम् ते. बिं. ३।५७
रस५ ह्येवायं लब्ध्वाऽऽनन्दी भवति तैत्ति. २।७
रसाच्छोणितं, शोणितान्मांसं, मांसान्मेदो मेदसः स्नायवः, स्नायुभ्योऽस्थीनि, अस्थिभ्यो मज्जा, मज्जातः शुक्रं गर्भो. २
रसाद्यो हि ये कोशा व्याख्याता- स्तैत्तिरीयके । तेषामात्मा परो जीवः खं यथा सम्प्रकाशितः अद्वैत. ११
रसानां शोषणं सम्यङ्महामुद्राभिधीयते ध्या. बिं. ९२
रसे वृद्धिंगते नित्यं वर्धन्तेधातवस्तथा वराहो. ५।४८
रसो वै सः, रस५ ह्येवायं लब्ध्वा- ऽऽनन्दी भवति तैत्ति. २।७
रसोऽहमप्सु कौन्तेय भ. गी. ७।८
रसौषधिक्रियाजालमन्त्राभ्यासादि- साधनात् । सिद्ध्यन्ति सिद्धयो यास्तु कल्पितास्ताः प्रकीर्तिताः यो.शि.१।१५२
रस्याः स्निग्धाः स्थिरा हृद्याः भ.गी. १७।८
रहस्यं रामतपनं वासुदेवं च मुद्गलम् मुक्ति. १।३५
रहस्यं ह्येतदुत्तमम् भ. गी. ४।३
रहस्योपनिषन्नाम्ना सषडङ्गमिहो- च्यते । यस्य विज्ञानमात्रेण मोक्षः साक्षान्न संशयः शु. र. १।१३
रहस्योपनिषद्ब्रह्म ध्यातं येन विप- श्चिता । तीर्थैर्मन्त्रैः श्रुतैर्जप्यैस्तस्य किं पुण्यहेतुभिः शु. र. १।१६
राकामह५ सुहवा५ सुष्टुती हुवे... वीर५ शतदायमुक्थ्यं स्वाहा पारमा. ७४
राकाह्वया तु या नाडी पीत्वा च सलिलं क्षणात् । क्षुतमुत्पादये- द्घ्राणे श्लेष्माणं सञ्चिनोति च यो.शि. ५।२४
राक्षसं भवति श्राद्धं दैवं यत्र निवर्तयेत् इतिहा. ६२
राक्षसान्मत्स्यरूपेण राहुर्मनसिजं यथा । प्रभाहीनांस्तथा कृत्वा.. रा. पू. १।३
राक्षसीमासुरीं चैव भ. गी. ९।१२
रागद्वेषभयादीनामनुरूपं चरन्नपि । योऽन्तर्व्योमवदच्छन्नः स जीव- न्मुक्त उच्यते वराहो. ४।२४
रागद्वेषवियुक्तात्मा समलोष्टाश्म- काञ्चनः । प्राणिहिंसानिवृत्तश्च मुनिः स्यात्सर्वनिःस्पृहः ना. प. ३।२५

राज्ञीनाम प्रतीची, सुभूतानामोदीची छांदो.३।१५।२
रात्रिर्दातुः परायणं तिष्ठमानस्य तद्विदः बृह. ३।९।२८
रात्रिं युगसहस्रान्तां भ. गी. ८।१७
रात्रेरपक्षीयमाणपक्षमपक्षीयमाण-
पक्षाद्यान्षण्मासान्दक्षिणादित्य
एति मासेभ्यः पितृलोकं पितृलोका-
च्चन्द्रं ते चन्द्रं प्राप्यान्नं भवन्ति बृह. ६।२।१६
रात्रेरपरपक्षमपरपक्षाद्यान्षड्दक्षिणैति
मासाꣳस्तान्नैते संवत्सरमभि-
प्राप्नुवन्ति छांदो.५।१०।३
रात्र्यागमे प्रलीयन्ते भ. गी. ८।१८
रात्र्यागमेऽवशः पार्थ भ. गी.८।१९
राधाकृष्णप्रियो भवति (भक्तः) राधिको. ९
राधाकृष्णयोरेकमासनम्.. एकं मनः,
एकं ज्ञानम् , एक आत्मा.. राधो. २।१
राधा कृष्णेनाराधिता, राधा कृष्ण-
माराधयत् राधिको. ४
राधा रासेश्वरी रम्या कृष्णमन्त्रा-
धिदेवता राधिको. ६
राम एव परं ब्रह्म राम एव परं
तपः। राम एव परं तत्त्वं
श्रीरामो ब्रह्म तारकम् रामर. १।६
रामचन्द्रश्चिदात्मकः रामो. २।४
रामस्त्वंपरमात्माऽसिसच्चिदानन्दविग्रहः मुक्तिको. १।४
रामनाम भुवि ख्यातमभिरामेण
वा पुनः। राक्षसान्मर्त्यरूपेण
राहुर्मनसिजं यथा रा. पू.ता. १।३
रामभद्र महेष्वास रघुवीर नृपोत्तम।
भो दशास्यान्तकास्माकं
(श्रियं दापयदेहि मे) रक्षां
(कुरु) देहि श्रियं च मे. रामर. २।८१
[रा. पू. ४।१५+ त्रि.म.ना.७।१०
राममन्त्रं यो जपेत् स रामो भवति रामर. १।७
रामं त्रिनेत्रं सोमार्धधारिणं
शूलिनं परम्। भस्मोद्धूलित-
सर्वाङ्गं कपर्दिनमुपास्महे रामर. २।३२
रामः शस्त्रभृतामहम् भ.गी. १०।३१
रामाभिरामां सौन्दर्यसीमां
सोमावतंसिकाम्। पाशाङ्कुश-
धनुर्बाणधरां ध्यायेत्त्रिलोचनाम् रामर. २।३३
रामोऽहमनिरुद्धोऽहमात्मानं
चार्चयेद्बुधः गोपालो. २।९
रायस्पोषस्य दाता चेति प्रथमः
पादो भवति, ऋग्वै प्रथमः
पादः, निधिदातान्नदो मत
इति द्वितीयः पादः, यजुर्वै
द्वितीयः पादः ग.पू.ता. १।१३
रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय
सुवीर्यायारण्याः पशवो विश्व-
रूपाः। विरूपाः सन्तु बहु-
धैकरूपाः [चित्स्यु. ११।१२,१३
रायामीशो रहितो भरन्त्यै रां रां
वहन्त्याहितः रायां पतिं रां रां
भरते भरिश्यै रां वहतोद्वहाय
स्वाहा पारमा. १।५
रायां पतत्रे रयिमादधात्रे रायो
बृहन्तं रयिमत्सुपुण्यं, राराः
जिमन्तं रतये रमन्तं तं
बिम्बवन्तं ककुदाय भद्रे स्वाहा पारमा. ७।१०
रिच्यत इव वा एष प्रेवरिच्यते
यो याजयति प्रति वा गृह्णाति सद्वै. २०
रिपुणा हन्यते रिपुः महो. ५।१११
रिपौ बद्धे स्वदेहे च समैकात्म्यं
प्रपश्यतः। विवेकिनः कुतः
कोपः स्वदेहावयवेष्विव याज्ञव. २२
रुक्माम्बरनिभाकाशं रक्तवर्णं
चतुर्भुजम् (गणेशं) ग. पू. २।५
रुचिरं रेचकं चैव वायोराकर्षणं
तथा। प्राणायामास्त्रयः प्रोक्ता
रेचपूरककुम्भकाः अ. ना. १०
रुजां हरत्वं भिषक् पापहीनो
ह्यपाणिपादो निर्विकारस्त्वमात्मा २ रुद्रो. ६२
रुद्र एवाग्निरिति संघट्टनाधीशो भवेत् पारायणो. १
रुद्रग्रन्थिं ततो भित्त्वा ततो याति
शिवात्मकम् यो.शि.१।११५

रुद्रजापकशतमेकमेकेनाथर्वशिर-
शिखाध्यापकेन तत्समं ताप-
नीयोपनिषदध्यापकशतं — नृ. पू. ५।१६

रुद्रपीठं च वर्यं च वज्रदण्डोन्नतं तथा।
इत्येतदासनं प्रोक्तं नानारूपगुणा-
न्वितम् — दुर्वासो. २।३

रुद्रमेकत्वमाहुः शाश्वतं वै पुराणं — अ. शिरः. ३।९

रुद्रमेवाप्येति यो रुद्रमेवास्तमेति.. — सुबालो. ९।१२

रुद्र यत्ते दक्षिणं मुखं तेन मां पाहि
नित्यम् — श्वेताश्व. ४।२१

रुद्ररूपे महायोगी संहरत्येव तेजसा।
नारायणे मनो युञ्जन्नारायण-
मयो भवेत् — यो.शि. ५।५४

रुद्रस्य दक्षिणे पार्श्वे रविर्ब्रह्मा
त्रयोऽमयः — रुद्रहृ.४

रुद्रस्य नयनादुत्पन्ना रुद्राक्षा इति
लोके ख्यायन्ते — रु. जा. ४४

रुद्रं लोहितेन — चित्त्यु. २१।१

रुद्रः पशूनां गुहया निमग्नः — एका. उ. ९

रुद्रः प्रणीती तमनः प्रजापतिः — बा. मं. २४

रुद्रः सूर्य उमा छाया तस्मै तस्यै
नमो नमः — रुद्रहृ. १९

रुद्रः सोम उमा तारा तस्मै तस्यै
नमो नमः — रुद्रहृ. १९

रुद्राक्षमूलं तद्ब्रह्मा तन्नालं विष्णुरेव
च। तन्मुखं रुद्र इत्याहुस्त-
द्विन्दुः सर्वदेवताः — रु. जा. ४२

रुद्राक्षं द्वादशमुखं महाविष्णु-
स्वरूपकम् — रु. जा. ३७

रुद्राक्षेभ्यः परं वीर्यं तद्ब्रह्म परि-
कीर्तितम् — बृ. जा. ५।१८

रुद्राणामेवावदाधिपत्यꣳ स्वाराज्यं
पर्येता — छांदो. ३।७।४

रुद्राणामेवैको भूत्वेन्द्रेणैव मुखेनैत-
देवामृतं दृष्ट्वा तृप्यति — छांदो. ३।७।३

रुद्राणां माध्यन्दिनꣳ सवनमा-
दित्यानां च विश्वेषां च
देवानां तृतीयसवनम् — छांदो. २।२४।१

रुद्राणां शङ्करश्चास्मि — भ. गी. १०।२३

रुद्रात्प्रवर्तते बीजं बीजयोनि-
र्जनार्दनः — रुद्रहृ. ८

रुद्रादयो यं ध्यायन्ति...तद्धाम
सर्वेषां देवादीनामपि दुर्लभतरम् — सामर. ९४

रुद्रादित्या वसवो ये च साध्याः — भ.गी. ११।२२

रुद्रानुवाकेन दिने दिने द्विजो-
ऽभिषिच्य मामर्चयत्यूर्ध्वरवेणबिल्वैः — १ बिल्वो

रुद्रेषु रौद्री, ब्रह्माणीषु ब्राह्मी,
देवेषु दैवी, मनुष्येषु मानवी
(मूर्तयः)...स्वपदे तिष्ठन्ति — गोपालो. ३।२

रुद्रो गन्ध उमा पुष्पं तस्मै
तस्यै नमो नमः — रुद्रहृ. २२

रुद्रोऽमीत्, बृहस्पतिरुपवक्ता — चित्त्यु. २।१

रुद्रोऽजीजनत्, सर्वे मरुद्गणा
अजीजनन् — बह्वृचो. १

रुद्रो दिवा उमा रात्रिस्तस्मै
तस्यै नमो नमः — रुद्रहृ. २०

रुद्रो नर उमा नारी तस्मै तस्यै
नमो नमः — रुद्रहृ. १७

रुद्रो ब्रह्मा उमा वाणी तस्मै
तस्यै नमो नमः — रुद्रहृ. १८

रुद्रो ब्रह्मोपनिषदो हंसज्योतिः
पशुपतिः प्रणवस्तारकः
स एवं वेद — पा. ब्र. ६

रुद्रो यज्ञ उमा वेदिस्तस्मै तस्यै
नमो नमः — रुद्रहृ. २०

रुद्रो यागदेवो विष्णुरध्वर्युर्होतेन्द्रो
देवता यज्ञभुक् — पा. ब्र. ३

रुद्रो येन कृतो वंशस्तस्य माया
जगत्कथम् — कृष्णो. ११

रुद्रो रुद्रश्च दन्तिश्च नन्दिः षण्मुख
एव च। गरुडो ब्रह्म विष्णुश्च... — मं. नां. ६।१२

रुद्रोऽर्थ अक्षरः सोमा तस्मै तस्यै
नमो नमः — रुद्रहृ. २३

रुद्रोलिङ्गमुमापीठंतस्मैतस्यैनमोनमः — रुद्रहृ. २३

रुद्रो वह्निरुमा स्वाहा तस्मै तस्यै... — रुद्रहृ. २१

रुद्रो विष्णुरुमा लक्ष्मीस्तस्मै तस्यै... — रुद्रहृ. १८

रुद्रो वृक्ष उमा वल्ली तस्मै तस्यै... — रुद्रहृ. २२

रुद्रो वेद उमा शास्त्रं तस्मै तस्यै... — रुद्रहृ. २१

रुद्रोहि शाश्वतेन वै पुराणेनेषमूर्जेण तपसा नियन्ता — अ. शिरः. ३।११
रूपकार्यसमाख्याश्च भिद्यन्ते तत्र तत्र वै — अद्वैत. ६
रूपग्रहणप्रयोजनस्यमनश्चक्षुरधीनत्वात् — अद्वयता. ६
रूपमत्यद्भुतं हरेः — भ.गी. १८।७७
रूपमिति गान्धर्वाः (उपासते) — मुद्गलो. ३।२
रूपवद्विज्ञेयं ज्ञानरूपमानन्दमयमासीत् — अव्यक्तो. १
रूपवदिदं तेजो रूपाभिभ्यां भिन्नं — गोपालो. १।७
रूपवान् भवति । अतिरूपवान्भवति — गणेशो. २।२
रूपस्थानां देवतानां पुंरुयङ्गास्त्रादिकल्पना — रा. पू.ता. १।८
रूपं नाहं नाम नाहं न कर्म ब्रह्मैवाहं सच्चिदानन्दरूपम् — सर्वसारो. ११
रूपं परं दर्शितमात्मयोगात् — भ.गी. ११।४७
रूपं महत्ते बहुवक्त्रनेत्रम् — भ.गी. ११।२३
रूपं रूपं जनुषा बोभवीमि मायाभिरेको अभिचाकशानः — बा. मं. ११
रूपं रूपं प्रतिरूपो बभूव [कठो.५।९+ — बृह. २।५।१९
रूपं रूपं प्रतिरूपो बहिश्च — कठो. ५।९,१०
रूपं शब्दस्तथा स्पर्शो रसो गन्धस्तथैव च । इन्द्रियार्थान्निजानीयात्पञ्चैव नृपसत्तम — भवसं. २।१७
रूपं सर्वमसद्विद्धि रसं सर्वमसन्मयम् — ते. बिं. ३।५७
(अथ) रूपाणां चक्षुरित्येतदेषामुक्थमतो हि सर्वाणि रूपाण्युत्तिष्ठन्ति — बृह. १।६।२
रूपाणि देवः कुरुते बहूनि — बृह. ४।३।१३
रूपाणि पञ्चतन्मात्राःपुरुषःप्रकृतिर्नव — गुह्यका. ७
रूपाण्येव यस्यायतनं चक्षुर्लोको मनो ज्योतिः — बृह. ३।९।१२
रूपाण्येव यस्यायतनं चक्षुर्लोको मनो ज्योतिर्यो वै तं पुरुषं विद्यात्सर्वस्यात्मनः परायणं स वै वेदिता स्यात् — बृह. ३।९।१५
रेखोपरेखा वलिता यथैका पीवरी शिला । तथा त्रैलोक्यवलितं ब्रह्मैकमिह दृश्यताम् — महो. ५।५७
रेचक-पूरक-कुम्भक-भेदेन स त्रिविधः (प्राणायामः) — शांडि. १।६।१
रेचकपूरकयुक्तः सहितः (कुम्भकः), तद्वर्जितः केवलः । केवलसिद्धिपर्यन्तं सहितमभ्यसेत् — शांडि. १।७।१४
रेचकं पूरकं चैव कुम्भमध्ये निरोधयेत् । दृश्यमाने परे लक्ष्ये ब्रह्मणि स्वयमाश्रितः — वराहो. ५।५७
रेचकं पूरकं मुक्त्वा कुम्भकं नित्यमभ्यसेत् — जा. द. ६।१८
रेचकं पूरकं मुक्त्वा कुम्भकेन स्थितः सुधीः — ब्र. बि. २१
रेचकं पूरकं मुक्त्वा कुम्भीकरणमेव यः । करोति त्रिषु कालेषु नैव तस्यास्ति दुर्लभम् — त्रि.ब्रा. २।१०८
रेचकं पूरकं मुक्त्वा वायुना स्थीयते स्थिरम् । नाना नादा प्रवर्तन्ते संस्रवेचन्द्रमण्डलम् — यो.शि. १।१२७
रेचकःपूरकश्चैव कुम्भकः प्रणवात्मकः। प्राणायामो भवेदेवं मात्रा द्वादशसंयुतः — यो. चू. १०१
रेचकेन तु विद्यात्मा ललाटस्थं त्रिलोचनम् ।...तत्रार्कचन्द्रवह्नीनामुपर्युपरि चिन्तयेत् — ध्या.बिं.३२-३४
रेचनं पूरणं वायोः शोधनं रेचनं तथा । चतुर्भिः क्लेशनं वायोः प्राणायाम उदीर्यते — त्रि. ब्रा. २।९४
रेचयेत्पिङ्गलानाड्या द्वात्रिंशन्मात्रया पुनः ।...शनैरशीतिपर्यन्तं चतुर्वारं समभ्यसेत् — १ यो. त. ४२
रेत एव यस्यायतनं हृदयं लोको मनो ज्योतिर्यो वै तं पुरुषं विद्यात्सर्वस्यात्मनः परायणं स वै वेदिता स्यात् — बृह. ३।९।१७
रेतस आपः (निरभिद्यन्त) — २ ऐत. १।४
रेतस इति मावोचत जीवतस्तत्प्रजायते — बृह. ३।९।३२
रेतसस्तेजोमयोऽमृतमयःपुरुषोऽयमेव — बृह. २।५।२
रेतसे स्वाहेत्यग्नौ हुत्वा मन्थे संस्रवमवनयति — बृह. ६।३।२

रेतो देवाः, देवानां रेतो वर्षं, वर्षस्य रेत ओषधयः, ओषधीनां रेतोऽन्नं, अन्नस्य रेतो रेतः, रेतसो रेतः प्रजाः, प्रजानां रेतो हृदयं, हृदयस्य रेतो मनः, मनसो रेतो वाक्, वाचो रेतः कर्म — १ ऐत. १।३।१
रेतोबुद्ध्यापमनस्स्वरूपमिति लिङ्गम् — लिङ्गोप. १
रेतो वै प्रजापतिः — बृह. ६।१।६
रेतो होच्चक्राम, तत्संवत्सरं प्रोष्यागत्योवाच कथमशकत मदृते जीवितुमिति — बृह. ६।१।१२
रेफारूढा मूर्तयः स्युः शक्तयस्तिस्र एव च — रा. पू.ता. २।३
रेफो ज्योतिर्मये तस्मात्कृतमाकारयोजनम् — रामर. ५।६
रैक्वेमानि षट्शतानि गवामयं निष्कोऽयमश्वतरीरथो नु म एतां भगवो देवतां शाधि यां देवतामुपास्स इति — छांदो. ४।२।२
रोगार्तां गां विहाय प्रशस्तगोमयमाहरेत् (भस्मार्थं) — बृ. जा. ३।१
रोचनाद्यमनं कुर्याद्धूपयेदात्मनस्तनुम् । अङ्गुलीयाक्षसूत्रं च कर्णमात्रे च धारयेत् — शिवो. ७।४४
रोचनो रोचमानः शोभनो शोभमानः कल्याणः — नृ. पू. २।११
रोचमानां त्वा सादयामि — चित्यु. १९।१
रोचिष्णुरिति वा अहमेतमुपास इति, स य एवमेतमुपास्ते रोचिष्णुर्ह भवति, रोचिष्णुर्हास्य प्रजा भवति — बृह. २।१।९
रोदनाद्रुद्रसंज्ञः (अभवत्) — गणेशो. ३।१३
रोदस्योरन्तर्देशेषु अपैतं मृत्युं जयति — सूर्यता. १।२
रोमहर्षश्च जायते — भ. गी. १।२९
रोहिणीतनयो विश्व अकाराक्षरसम्भवः — गोपालो. २।१९
रोहिणीः पिङ्गला एकरूपाः — चित्यु. ११।१०
रौक्मे फलके सूर्यवर्चसि मन्त्रमानुष्टुभं विन्यस्य तदस्य कण्ठे प्रत्यमुञ्चत् — अव्यक्तो. ८
रौद्री घोरा या तैजसी तनूः — बृ. जा. २।२
रौद्रेण त्वाऽङ्गिरसां मनसा ध्यायामि — वनदु. १६०
रौप्यबुद्धिः शुक्तिकायां स्त्रीपुंसोर्भ्रमतो यथा (मृषैवोदेति सकलं मृषैव प्रविलीयते) — योगकुं. १।८०
रौहिणीं लङ्घयेद्यस्तु ज्ञानादज्ञानतोऽपि वा । आसुरं तद्भवेच्छ्राद्धं पितॄणां नोपतिष्ठते — इतिहा. ६०

ल

लकारं पृथिवीरूपं ध्यानं बन्धूकसन्निभम् — ध्या. बिं. ९६
लक्षमात्रं तु प्रजपेत्स्वस्वरूपं भवेन्मनुः — ना.पू.ता.४।१६
लक्ष्मणप्राणप्रतिष्ठानन्दकर स्थलजलाग्निमर्मभेदिन्सर्वशत्रून्छिन्धि छिन्धि — लाङ्गूलो. ३
लक्ष्मणेन प्रगुणितमक्ष्णः कोणेन सायकम् ।...लक्ष्मणेन धृतच्छत्रमथवा पुष्पकोपरि ।...एवं लब्ध्वा जयार्थी तु वर्णलक्षं जपेन्मनुम् — रामर. २।१२
लक्ष्मीर्मूलप्रकृतिरिति विज्ञायते — ना.पू.ता. ५।६
लक्ष्मीसहायोऽद्भुतकुञ्जराकृतिश्चतुर्भुजश्चन्द्रकलाकलापः । मायाशरीरो मधुरस्वभावस्तस्य ध्यानात्पूजनात्तत्स्वभावाः — हेरम्बो. ६
लक्ष्मीं क्षीरसमुद्रराजतनयां श्रीरङ्गधामेश्वरीं...तां त्रैलोक्यकुटुम्बिनीं सरसिजां वन्दे मुकुन्दप्रियाम् — वनदु. ८४
लक्ष्यं तदेवाक्षरं सोम्य विद्धि — मुण्ड. २।२।२

लक्ष्यं सर्वगतं चैव शरः सर्वगतो-
मुखः। वेद्धा सर्वगतश्चैव शिव-
लक्ष्यं न संशयः   रुद्रह. ३९
लक्ष्यालक्ष्यमतिं त्यक्त्वा यस्तिष्ठे-
त्केवलात्मना। शिव एव स्वयं
साक्षादयं ब्रह्मविदुत्तमः   आत्मो. १९
[महो. ४।८९+
लक्ष्यालक्ष्यविहीनोऽस्मि लयहीन-
रसोऽस्म्यहम्   मैत्रे. ३।१३
लक्ष्येऽन्तर्बाह्यायां दृष्टौ निमेषोन्मेष-
वर्जितायां च इयं शाम्भवी
मुद्रा भवति   मं. ब्रा. १।४
लघुत्वमारोग्यमलोलुपत्वं वर्णप्रसादं
स्वरसौष्ठवं च। गन्धः शुभो मूत्र-
पुरीषमल्पं योगप्रवृत्तिं प्रथमां वदन्ति   श्वेताश्व. २।१३
लघ्वाशिना धृतिमता परिभावितव्यं
संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम्   यो. शि. १।९०
लघ्वाहारो यमेष्वेको मुख्यो भवति
नेतरः   १ यो. त. २८
लङ्कापुरीदाहन उदधिलङ्घन...सर्व-
शत्रून्छिन्धि छिन्धि   लाङ्गूलो. ३
लब्धा मतिस्तुष्टिरिष्टा च पुष्टा लक्ष्मी-
र्धमा ललिता लालपन्ती   त्रि. महो. ६
लब्धयोगनिद्रस्य योगिनः कालो नास्ति   शाण्डि. १।७।१८
लब्धयोगोऽथ बुद्ध्येत (लब्धयोगेन
बोद्धव्यं) प्रसन्नं परमेश्वरम्
(परमेष्ठिनम्)   यो. शि. १।७८
लब्धगोभिरमसौ चेदन्यगोक्षारं (वीर्य)   बृ. जा. ३।१
लभते च ततः कामान्   भ. गी. ७।२२
लभते धारणायोगं येन शुध्यति
वै क्षितिः। लब्ध्वा सर्वप्रयत्नेन
समस्थितस्वरो भवेत्   दुर्वासो. १।१३
लभते नान्यथा यद्यत्तत्तदाप्नोति
भावयेत्   १ यो. त. ७०
लभते पौर्वदेहिकम्   भ. गी. ६।४३
लभन्ते ब्रह्मनिर्वाणमृषयः क्षीणकल्मषाः   भ. गी. ५।२५
लभन्ते ब्रह्म निर्वाणं शुद्धा
ध्यानेन योगिनः   दुर्वासो. १।१०
लभन्ते युद्धमीदृशम्   भ. गी. २।३२

लम्बोदरोऽहं पुरुषोत्तमोऽहं विघ्ना-
न्तकोऽहं विजयात्मकोऽहम्   हेरम्बो. १३
लम्भुको ह वासो भवत्यनग्नो ह
वासो भवति   छान्दो. ५।२।२
लयमन्त्रहठा योगा योगो ह्यष्टाङ्ग-
संयुतः   वराहो. ५।१०
लययोगश्चित्तलयः कोटिशः
परिकीर्तितः   १ यो. त. २३
लयविक्षेपरहितं मनः कृत्वा
सुनिश्चलम्। यदा यात्यमनी-
भावं तदा तत्परमं पदम्   मैत्रा. ६।३४
लयस्तमश्च विक्षेपस्तेजः स्वेदश्च
शून्यता। एवं हि विघ्नबाहुल्यं
त्याज्यं ब्रह्मविशारदैः   तै. बिं. १।४१
लयात् (मनसः) सम्प्राप्यते
सौख्यं स्वात्मानन्दं परं पदम्   यो. शि. १।१३६
लयेन पलमात्रेण आसनस्थो न
खिद्यते। स्वल्पश्वासो भवे-
द्योगी स्वल्पोन्मेषयुतस्तथा   अमन. १।४१
लये सम्बोधयेच्चित्तं, विक्षिप्तं शम-
येत्पुनः। सकषायं विजानीयात्
समप्राप्तं न चालयेत्   अद्वैत. ४
ललाममेवोक्थं, यथा यौस्तथा   १ ऐत. २।१।६
ललाटाच्चैव मे रुद्रो देवः क्रोधा-
द्विनिस्सृतः   ना. महो. ४०
ललाटात्क्रोधजो रुद्रो जायते   सुबालो. १।१
ललाटे ऊर्ध्वपुण्ड्रं मध्यच्छिद्रं   सि. बि. ३
लवणमेतदुदकेऽवधायाथ मा
प्रातरुपसीदथाः   छान्दो. ६।१३।१
लवणं तोयसम्पर्काद्यथा तोय-
मयं भवेत्। मनोऽपि ब्रह्म-
सम्पर्कात्तथा ब्रह्ममयं भवेत्   अमन. १।९९
लवणेन सुवर्णं सन्दध्यात्सुवर्णेन
रजतं रजतेन त्रपु त्रपुणा
सीसं सीसेन लोहं लोहेन
दारु दारुणा चर्म   छान्दो. ४।१७।७
लवैकं न भावयेज्जन्तुसंरक्षणार्थं
वर्षवर्जमिति   कठरु. ४

लाङ्गलानामेवैते बहुलमनुदात्तानु-
 वृत्तं चानुदात्तमवृद्धं वृद्धं भवति संहितो. ३।२
लाभालाभयोः समो भूत्वा...
 सन्न्यासेन देहत्यागं करोति
 स परमहंसः जाबालो. ६
लाभालाभावसिद्धिश्च जयाजय-
 भयान्वयम् ते. बि. ३।५६
लाभालाभौ जयाजयौ भ. गी. २।३८
लाभालाभे समो भूत्वा...शरीर-
 त्रयमुत्सृज्य सन्न्यासेनैव देह-
 त्यागं करोति स कृतकृत्यो भवति ना. प. ३।८७
लाभालाभौ समौ कृत्वा गोवृत्त्या
 प्राणसन्धारणं कुर्वन्...प्रणवा-
 त्मकत्वेन देहत्यागं करोति
 यः सोऽवधूतः तुरीया. ३
लाभालाभौ समौ कृत्वा गोवृत्त्या
 भैक्षमाचरन्...सन्न्यासेन देह-
 त्यागं करोति स परमहंस-
 परिव्राजकः प. हं. प. ८
लाभे चैव न हर्षयेत्, प्राण-
 यात्रिकमात्रः स्यात् ना. प. ५।१८
लालनास्निग्धललना पालनात्
 पालकः पिता । सुहृदुत्तमवि-
 न्यासान्मनो मन्ये मनीषिणः महो. ५।८०
लिङ्गतृतीयभागेन भवेद्वेद्याः
 समुच्छ्रयः शिवो. २।२
लिङ्गनालात्समाकृष्य वायुमप्य-
 ग्रतो मुने ।...मूलाधारस्य
 विप्रेन्द्र मध्ये तं तु निरोधयेत् जा.द. ६।४०
लिङ्गमोङ्कारमिष्यते शिवो. १।२४
लिङ्गरूपिणं मां सम्पूज्य चिन्त-
 यन्ति सिद्धाः सिद्धिङ्गताः भस्मजा. २।१३
लिङ्गं प्रचरेच्छाखात् लिङ्गोप. २
लिङ्गं च कारणं चैव चिन्मात्रा-
 न्नहि विद्यते ते. बिं. २।३२
(अथ) लिङ्गात्संहृत्य तेजसा
 शरीरत्रयं संव्याप्य...मात्रा-
 भिरोतानुज्ञात्रनुज्ञाविकल्परूपं
 चिन्तयन्ग्रसेत् नृसिंहो. ३।४
लिङ्गाभावात्तु कैवल्यमिति ब्रह्मानु-
 शासनम् ना. प. ४।३७
लिङ्गाभिषेकं निर्माल्यं गुरोरभिषेक-
 तीर्थं महेश्वरपादोदकं जन्म-
 मालिन्यं प्रक्षालयति १ रुद्रोप. ३
लिङ्गे सत्यपि खल्वस्मिञ्ज्ञानमेव
 हि कारणम् ना. प. ४।३३
लिप्यते न स पापेन भ. गी. ५।१०
लीयते हि सुषुप्तौ तन्निगृहीतं
 न लीयते । तदेव निर्भयं ब्रह्म
 ज्ञानालोकं समन्ततः अद्वैत. ३५
लीलया कल्पयामास चित्राः
 सङ्कल्पतः प्रजाः । नानाचार-
 समारम्भा गन्धर्वनगरं यथा महो. ५।१६२
लीलयैव यदादत्ते दिक्कालकलितं
 वपुः । तदेव जीवपर्यायवासना-
 वेशतः परम् । मनः सम्पद्यते
 लोलं कलनाकलनोन्मुखम् महो. ५।१४५
(एवं) लीलाकामशरीरी स्व-
 विनोदार्थं भक्तैः सहोत्कण्ठितै-
 स्तत्र क्रीडति कृष्णः राधोप. ४।२
लुप्तपिण्डोदकक्रियाः भ. गी. १।४२
लुब्धो हिंसात्मकोऽशुचिः भ. गी.१८।२७
लेलायन्तीरिव सञ्जिहाना इव आर्षे. ७।१
लेलिह्यसे ग्रसमानः समन्तात् भ.गी. ११।३०
लेशतः प्राप्तसत्ताकः स एव घनतां
 शनैः । याति चित्तत्वमापूर्य
 दृढं जाड्याय मेघवत् महो. ५।१७९
लोकत्रयं प्रव्यथितं महात्मन् भ.गी. ११।२०
लोकत्रयेऽपि कर्तव्यं किञ्चिन्ना-
 स्त्यात्मवेदिनाम् जा. द. १।२४
लोकत्रयेऽप्यप्रतिमप्रभाव भ.गी. ११।४३
लोकवासनया जन्तोः शास्त्र-
 वासनयाऽपि च । देहवासनया
 ज्ञानं यथावन्नैव जायते मुक्तिको.२।२
लोकसंग्रहमेवापि भ. गी. ३।२०
लोकसङ्गहयुक्तानि नैवकुर्यान्नकारयेत् ना. प. ५।३३
लोकस्तदनुवर्तते भ. गी. ३।२१
लोकस्य द्वारमर्चिमत्पवित्रम् मुद्गलो.५

लोमशेन ह स्म वै चर्मणा पुरा
वीणा अभिवदति — ३ ऐत. २।५।२
लोम हिङ्कारस्त्वक्प्रस्तावो मांसमुद्गीथोऽस्थि प्रतिहारो मज्जा
निधनमेतद्यज्ञायज्ञीयमङ्गेषु प्रोतम् — छांदो. २।१९।१
लोमावरोष्ठमथर्ववेदः प्रीणातु — आचम. ४
लोमानि धूमो योनिरर्चिर्यदन्तः
करोति तेऽङ्गारा अभिनन्दा
विस्फुलिङ्गाः — बृह. ६।२।१३
लोमानि बर्हिः (यज्ञस्य) — महाना. १८।१
लोहानां काञ्चनं वरम् — इतिहा. ४९
लोहितशुक्लकृष्णगुणमयीगुणसाम्या-
निर्वाच्यामूलप्रकृतिरासीत् — पैङ्गलो. १।२
लोहितं तिलकं ध्यायेत् — शुरिका. ११
लोहिनी द्यौर्भवति — ३ ऐत. २।१।४
लौकिकवैदिकमप्युपसंहृत्य सर्वत्र
पुण्यापुण्यवर्जितो ज्ञानाज्ञान-
मपि विहाय...देहत्यागं
करोति यः सोऽवधूतः — तुरीया. ३
लौकिकवैदिकसामर्थ्यं स्वचतुर्दश-
करणप्रवृत्तिं च पुत्रे समारोप्य
तदभावे शिष्ये तदभावे स्वा-
त्मन्येव...तत्त्वमस्यादिवाक्यार्थ-
स्वरूपानुसन्धानं कुर्वन्नुदीचीं
दिशं गच्छेत् — प. हं. प. ५
लौकिकाग्नीनुदराग्नौ समारोपयेत् — आरुणि. २

व

वकारं बीजबीजं च उदानं
शङ्खवर्णकम् — ध्या. बिं. ९६
वक्तव्यमेवान्येति यो वक्तव्य-
मेवास्त्येति — सुबालो. ९।६
वक्ता चास्य त्वादृगन्यो न लभ्यो... — कठो. १।२२
वक्त्राणि ते त्वरमाणा विशन्ति — भ.गी. ११।२७
वक्त्रेण सीत्कारपूर्वकं वायुं गृहीत्वा
यथाशक्ति कुंभयित्वा नासाभ्यां
रेचयेत्, तेन क्षुत्तृष्णालस्य-
निद्रा न जायते — शांडि. १।७।१४
वक्त्रेणापूर्य वायुं हुतवहनिलये-
ऽपानमाकृष्य धृत्वा स्वाङ्गुष्ठा-
द्यङ्गुलीभिर्वरकरतलयोः षड्भि-
रेवं निरुध्य। ... पश्यन्ति
प्रत्ययांशं प्रणवबहुविधध्यान-
संलीनचित्ताः — सौभाग्य. ७
वक्त्रेणोत्पलनालेन तोयमाकर्षये-
न्नरः। एवं वायुर्ग्रहीतव्यः
पूरकस्येति लक्षणम् — अ. ना. १३
वक्तुमर्हस्यशेषेण — भ.गी. १०।१६
वक्रतुण्डाय हुमिति चतुर्थः पादः — ग. पू. ता. १।११
वक्षोन्यस्तहनुः प्रपीड्य सुचिरं
योनिं च वामाङ्घ्रिणा...रेचये
व्याधिविनाशिनी सुमहती
मुद्रा नृणां कथ्यते — यो. चू. ६६
वक्षोन्यस्तहनुर्निपीड्य सुषिरं योनेश्च
वामाङ्घ्रिणा हस्ताभ्यामनु-
धारयन्प्रविततं पादं तथा
दक्षिणम्। आपूर्य श्वसनेन
कुक्षियुगलं बध्वा शनै रेचये-
देषा पातकनाशिनी ननु महा-
मुद्रा नृणां प्रोच्यते — ध्या. बिं. ९३
वक्षो वसत्यस्य वरां वरिष्ठां वाकं
दधाना ववृधे समस्तं तस्मै
वरिष्ठाय वरप्रवृद्ध्यै स्वाहा — पारमा. ९।२
वक्ष्यन्ते कारणान्यष्टौ स्मृतिर्यै-
रुपचर्यते — आयुर्वे. २०
वक्ष्यामि भरतर्षभ — भ. गी. ८।२३
वक्ष्यामि हितकाम्यया — भ. गी. १०।१
वचनात्पुरुषो ह्यव्यक्तमुखेन
त्रिगुणं भुङ्क्ते — मैत्रा. ६।१०
वचनादानगमनविसर्गानन्द-
पञ्चकम् — वराहो. १।१२
वचनादानगमनविसर्गानन्दहासो-
पेक्षाबुद्धयोऽनङ्गकुसुमादित्त-
योऽष्टौ — भावनो. ३

वचनादानगमनविसर्गानन्दास्त-
  द्विषयाः (कर्मेन्द्रियाणां) पैङ्गलो. २।३

वचनादानगमनविसर्गानन्दाः
  पृथिवीकार्यकर्मेन्द्रियविषयाः त्रि. ब्रा. १।४

वचसा तज्जपेन्नित्यं वपुषा तत्सम-
  भ्यसेत् । मनसा तज्जपेन्नित्यं
  तत्परं ज्योतिरोमिति यो. चू. ८७

वचसो वाग्व्यापारः ना. प. ६।३

वज्रादण्डसमुद्भूता मणयश्चैक-
  विंशतिः । सुषुम्नायां स्थिताः
  सर्वे सूत्रे मणिगणा इव यो.शि. १।११८

वज्रदेह वज्रपुच्छ वज्रकाय... लांगूलो. ३

वज्रनखाय विद्महे तीक्ष्णदꣳष्ट्राय
  धीमहि । तन्नो नारसिꣳहः
  (नृसिंहः) प्रचोदयात् महाना. ३।९
  [त्रि. म. ना. ७।१०+ वनदु. १३७

वज्रपञ्जरनाम्नैव यः कुर्याद्भस्म-
  धारणम् । स सर्वभयनिर्मुक्तः
  साक्षाच्छिवमयो भवेत् वज्रपं. ६

वज्रपञ्जरेण भस्मधारणं कुर्यात् वज्रपं. १

वज्रशक्तिपाशाङ्कुशगदात्रिशूल-
  चन्द्रमुसलपद्मानि द्वादशे.. सूर्यता. ५।१

वज्रस्तम्भवदात्मानमवलम्ब्य
  स्थिरोऽस्म्यहम् १सं. सो.२।५०

वज्राङ्गं पिङ्गनेत्रं कनकमयलस-
  त्कुण्डलाक्रान्तगण्डं...
  ध्यायन्तं रामचन्द्रं प्लवगपरिवृढं
  सत्त्वसारं प्रसन्नम् लांगूलो. २

वज्रोली चामरोली च सहजोली
  त्रिधा मता १ यो. त. २५

वज्रोलीमभ्यसेद्यस्तु स योगी
  सिद्धिभाजनम् १ यो.त. १२६

वज्रोऽसि वार्ध्रः शर्म मे भव
  यत्पापं तन्निवारय आरुणि. ३

(तद्यथा) वटबीजसामान्यमेक-
  मनेकानस्वान्यतिरिक्तान्वटान्
  सबीजानुत्पाद्य तत्र तत्र पूर्णं
  सत्तिष्ठत्येवमेवैषा माया स्वा-
  व्यतिरिक्तानि पूर्णानि क्षेत्राणि
  दर्शयित्वा जीवेशावभासेन
  करोति माया चाविद्या च
  स्वयमेव भवति नृसिंहो. ९।३

वटबीजस्थमिव दत्तबीजस्थं
  सर्वं जगत् दत्तात्रे. १।१

वडवाग्निः शरीरस्थो ह्यस्थिमध्ये
  प्रवर्तते यो. शि. ५।३०

वडवेतराभवदश्ववृष इतरः बृह. १।४।४

वत्सरशतं ब्रह्ममानेन ब्रह्मणः
  परमायुःप्रमाणम् त्रि.म.ना. ३।४

वत्सस्तु स्मृतयश्चास्य तत्सम्भूतं तु
  गोमयम् । आगाव इति मन्त्रेण
  धेनुं तत्राभिमन्त्रयेत् बृ. जा. ३।१

(अथ) वत्सं जातमाहुरतृणाद इति बृह. १।५।२

वत्सं पयसा पुनानाः चित्यु. १७।२

वदन्तिबहुभेदेनवादिनोयोगभूमिकाः महो. ५।२२

वदन्ते चात्मनो भावं केचात्मोप-
  निषद्विदः अमन. २।२४

वदन्त्येव परं ब्रह्म बुद्धिमन्तस्तु सूरयः अमन. २।२५

वदन् वाक् पश्यंश्चक्षुः शृण्वन् श्रोत्रं
  मन्वानो मनस्तान्यस्यैतानि
  कर्मनामान्येव बृह. १।४।७

वदन्वै तन्न वदति न हि वक्तुर्वक्ते-
  र्विपरिलोपो विद्यतेऽविनाशित्वात् बृह. ४।३।२६

वदिष्यन्ति तवाहिताः भ. गी. २।३६

वदिष्याम्येवाहमिति वाग्दध्रे बृह. १।५।२१

वदेदुन्मत्तवद्विद्वान् गोचर्यां नैगमश्चरेत् ना. प. ५।३७

वधाय दत्तं तमहꣳ हतामि चित्यु. १४।३

वनभारामष्टादशजायन्ते पुरुषोत्तमात् सि. सि. २

वनस्पतयओषध्यो लोमानिपरिचक्षते शुकर. १७

वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः
  शान्ति...[वा. सं. ३६।१७+ प्रणवो. १७

वनावलिविहारेण चित्तोपशम-
  शोभिना । असङ्गसुखसौख्येन
  कालं नयति नीतिमान् अक्ष्युप. २०

वनितादिषु वाक्कर्ममनोभि-
  र्निःस्पृहः शुचिः हंसर. ४।२

वनी भूत्वा प्रव्रजेत् जाबालो. ४

वने शुष्कं शकृत् सङ्गृह्य कल्पोक्त-
विधिना कल्पितमुपकल्पं
स्यात् (भस्म) बृ. जा. ३।३४
वन्दे रुद्रप्रियां नित्यमुत्पन्नां
कामरूपिणीम् । उल्कामुखीं
रुद्रजटीं नागपुष्पशिरोरुहाम् वनदु. ८५
वन्ध्याकुमारवचने भीतिश्चेदस्ति
किञ्चन ते. बिं. ६।७३
वन्ध्यापुत्रो न तत्त्वेन मायया
वाऽपि जायते अद्वैत. २८
वपुर्वह्निकणाकारं स्फुरितं व्योम्नि
पश्यति महो. ५।१५२
वमनाहारमिव प्रवृत्तिं सर्वं हेय मत्वा
साधनचतुष्टयसम्पन्नो यः सन्न्य-
स्यति स एव ज्ञानसन्न्यासी १सं.सो. २।१३
वमनाहारवधस्य भाति सर्वेषणा-
दिषु । तस्याधिकारः सन्न्यासे
त्यक्तदेहाभिमानिनः मैत्रे. २।१८
वयमाद्यस्य दातारः पिता त्वं
मातरिश्व नः प्रश्नो. २।११
वयमेतद्बाणमवष्टभ्य विधारयामः प्रश्नो. २।२
वयं कृतार्था इत्यभिमन्यन्ति बालाः मुण्ड. २।९
वयं देवस्य भोजनमित्याचामति छांदो. ५।२।७
वयं नाम प्रब्रवामा घृतेना- (घृतस्या)
स्मिन्यज्ञे धारयामा नमोभिः महाना. ८।९
[+तै. आ. १०।१०।२+ऋ.मं. ४।५८।२
[+वा. सं. १७।९०
वयं ब्रह्मचारिभिरिदमुपास्महे (मा.पा.) छांदो. ४।३।७
वयं ब्रह्मचारिभिरिदमुपास्महे दत्तास्मै
भिक्षामिति छांदो. ४।३।७
वयं सोम व्रते तव मनस्तनुषु बिभ्रतः लिङ्गोप. १
[+ऋ.मं.१०।५७।६+वा.सं.३।५६
वयं स्वर्गलोकमेष्यामो वयमेष्यामः सहवै. १
(ॐ) वयः सुपर्णा उपसेदुरिन्द्रं
प्रियमेधा ऋषयो नाधमानाः महाना. १६।७
[वाष्कलो.९+ऋ.मं१०।७३।११
[+साम. १।३१९ तै.आ. ४।४२।३
वयांसि वैनद्धिमभीरजिति बृह. ३।९।२५

वयो दात्रे मयो मह्यमस्तु
प्रतिग्रहीत्रे चित्यु. १०।१,४
वरणायां ना-(-स्यां) श्यां च
मध्ये प्रतिष्ठितः [जाबालो. २+ रामो. ३।२
वरदं सर्वभूतानां सर्वं व्याप्यैव
तिष्ठति १ प्रणवो. ११
वराकृतप्राप्तिः स्नानम् आत्मपू. १
वराह एनं हन्ति, मर्कट एनमास्क-
न्दति (दुःस्वप्ने) ३ ऐत. २।४।७
वराहरूपिणं मां ये भजन्ति मयि
भक्तितः । विमुक्ताज्ञानतत्कार्या
जीवन्मुक्ता भवन्ति ते वराहो. १।१६
वरुण एव सविताऽऽपः सावित्री स
यत्र वरुणस्तदापो यत्र वा आप-
स्तद्वरुणस्ते द्वे योनिस्तदेकं मिथुनम् सावित्र्यु. २
वरुणमेवाप्येति यो वरुणमेवास्तमेति सुबालो. ९।४
वरुणस्य विराट् चित्यु. ९।१
वरुणेन मुखेन न वै देवा अश्नन्ति
न पिबन्ति छांदो. ३।८।१
वरुणेनैव मुखेनैतदेवामृतंदृष्ट्वातृप्यति छांदो. ३।८।३
वरुणोऽपामघमर्षणस्तस्मात् प्रमुच्यते महाना. ६।८
वरुणो यादसामहम् भ.गी.१०।२९
वरुणोऽर्यमाः चन्द्रमा कला कलि-
र्धाता...सर्वं नारायणः सुबालो. ६।१
वरेण्यं श्रेष्ठं भजनीयमक्षरं
नमस्कार्यम् त्रि. ता. १।६
वरो दक्षिणा, वरेणैव वरं स्पृणो-
त्यात्मा हि वरः सहवै. २०,२२
वर्गोऽसि पाप्मानं मे वृङ्ध्वीत्ये-
तयैवाऽऽवृता मध्ये सन्तमुद्वर्गो-
ऽसि पाप्मानं म उद्वृङ्धि कौ. त. २।७
वर्चोदास्त्वमसि सूर्यस्य महाना.१७।१५
वर्जयित्वा स्त्रियाः सङ्गं कुर्यादभ्यास-
मादरात् । योगिनोऽङ्गे सुगन्धश्च
जायते बिन्दुधारणात् १ यो. त. ६२
वर्णत्रयात्मकाः प्रोक्ता रेचपूरक-
कुम्भकाः । स एष प्रणवः प्रोक्तः
प्राणायामस्तु तन्मयः जा. द. ६।२

वर्णं रक्तं कामदं च सर्वाधिव्याधि-
भेषजम् । सृष्टिस्थितिलयादीनां
कारणं सर्वशक्तिधृक् पञ्चब्र. १२
वर्णं शुक्लं तमोमिश्रं पूर्णबोधकरं
स्वयम् । धामत्रयनियन्तारं
धामत्रयसमन्वितम् पञ्चब्र.८
वर्णः स्वरः । मात्रा बलम् । साम
सन्तानः तैत्ति. १।२।१
वर्णाक्षरपदाङ्कशो विभक्त्यामृषि-
निषेवितामिति वाचं स्तुवन्ति २ प्रणवो. १७
वर्णादिधर्मं हि परित्यजन्तः
स्वानन्दतृप्ताः पुरुषा भवन्ति मैत्रे. १।१८
वर्णानां ब्राह्मण एव प्रधान इति
वेदवचनानुरूपं स्मृतिभिरप्युक्तम् व. सू. २
वर्णाश्रमधर्मकर्मसङ्कल्पो बन्धः निरा. उ. २१
वर्णाश्रमं सावयवं स्वरूपमाद्यन्त-
युक्तं ह्यतिकृच्छ्रमात्रम् । पुत्रा-
दिदेहेष्वभिमानशून्यं भूत्वावसे-
त्सौख्यतमे ह्यनन्ते मैत्रे. १।१९
वर्णाश्रमाचारयुता विमूढाः
कर्मानुसारेण फलं लभन्ते मैत्रे. १।१८
वर्णाश्रमाचारविशेषाः पृथक्पृथक्
शिखावर्णाश्रमिणामेककैव परब्र. ६
वर्णाश्रमादयो देहे मायया परि-
कल्पिताः नात्मनो बोधरूपस्य
मम ते सन्ति सर्वदा । इति यो
वेद वेदान्तैः सोऽतिवर्णाश्रमीभवेत् ना. प. ६।१६
वर्णाश्रमेषु ये धर्माः शास्त्रोक्ता नृप-
सत्तम । तेषु तिष्ठन्नरो विष्णु-
माराधयति नान्यथा भवसं. २।६१
वर्णो ह वै पुरुषः स लोकाधि-
ष्ठितो भवत्यनुष्टुब्वै पुरुषः ग. पू. ३।१
वर्ण्यन्ते स्वस्तिकं पादतलयो-
रुभयोरपि । पूर्वोत्तरे जानुनी
द्वे कृत्वाऽऽसनमुदीरितम् त्रि. ब्रा. २।३५
वर्त एव च कर्मणि भ. गी. ३।२२
वर्तते कामकारतः भ.गी. १६।२३
वर्तते विदितात्मनाम् भ. गी. ५।२६
वर्तन्त इति धारयन् भ. गी. ५।९
वर्तमानानि चार्जुन भ. गी. ७।२६
वर्तेतात्मैव शत्रुवत् भ. गी. ६।६
वर्त्याधारस्नेहयोगाद्यथा दीपस्य
संस्थितिः । अन्तर्याण्डोपयोगा-
दिमौ स्थितावात्मशुची तथा मैत्रा. ६।३६
वर्षति स उद्गीथः [छां.उ.२।३।१+ २।१५।१
वर्षत्येष यथा धर्मामृतधाराःसहस्रशः अध्यात्मो. ३८
वर्षन्तं न निन्देत्तद्व्रतम् छांदो. २।१५।२
वर्षन्तु ते विभावरि दिवो अभ्रस्य
विद्युतः । रोहन्तु सर्वबीजान्यव
ब्रह्म द्विषो जहि [वनदु.३८,४०+ ऋ.खि.५।८४।१
वर्षस्य रेत ओषधयः १ ऐत. १।३।१
वर्षस्य संकॢप्त्या अन्नं सङ्कल्पयते छांदो. ७।४।२
वर्षा उद्गीथः छांदो. २।१६।१
वर्षाभ्योऽन्यत्र यत्स्थानमासनं तदु-
दाहृतम् । उक्तालाब्वादिपात्रा-
णामेकस्यापीह सङ्ग्रहः १सं.सो. २।८०
वर्षाभ्योऽन्यत्र वर्षासु मासांश्च
चतुरो वसेत् । द्विरात्रं वा
वसेद्ग्रामे भिक्षुर्यदि वसेत्तदा ना. प. ४।१५
वर्षासु ध्रुवशीलोऽष्टौ मासानेकाकी
यतिश्चरेत् आरुणि. ४
वर्षास्वेकत्र तिष्ठेत स्थाने पुण्य-
जलावृते (यतिः) ना.प. ४।२१
वल्मीकताडनादेव मृतः किंतु महोरगः वराहो. २।४०
वशः कौलेयकेनेव ब्रह्मन्मुक्तोऽस्मि
चेतसा महो. ३।१९
वशिन्येका निष्क्रियाणां बहूनामेकं
बीजं बहुधा या करोति गुह्यका. ७०
वशी सर्वस्य लोकस्य स्थावरस्य
चरस्य च श्वेताश्व. ३।१८
वशे सततनम्रः स्यात्संहृत्याङ्गानि
कूर्मवत् । तत्सम्मुखं च निर्गच्छे-
न्नमस्कारपुरःसरः शिवो. ७।६७
वश्यमायत्वमेकं सर्वज्ञत्वं च तस्य तु सरस्व. ३९
वश्याय पङ्कजैर्विद्वान् धनार्थी
मोदकैर्हुनेत् ग. पू. २।१३
वश्यां स्फुरन्तीमसतीं निपीड्य
सम्भक्ष्य सिंहेन स एव वीरः नृसिंहो. ४।३

वश्यौ वाणी रागः पाशः द्वेषोऽङ्कुशः भावनो. ६
वसन्तो अस्यासीदाज्यम् चित्यु. १२।३
[+ऋ.सं.१०।९०।६+ पु. सू.६,१४
वसन्तो हिङ्कारो ग्रीष्मः प्रस्तावो वर्षा
उद्गीथः शरत्प्रतिहारो हेमन्तो
निधनमेतद्वैराजमृतुषु प्रोतम्
[छांदो. २।५।१+ २।१६।१
वसापराणि द्वात्रिंशतं वर्षाणीति
सहापराणि द्वात्रिंशतं वर्षाण्युवास छांदो. ८।९।३
वसिष्ठवालखिल्यविश्वामित्रकश्यपा-
त्रिभरद्वाजाङ्गीरसजामदग्नि-
गौतमागस्त्यजाबालिकपिला
द्यावृषयः नां.पू. ता.६।१
वसिष्ठवैयासकिवामदेवविरिञ्चि-
मुख्यैर्हृदि भाव्यमानः ।
सनत्सुजातादिसनातनाद्यै-
रीड्यो महेशो भगवानादिदेवः शरभो. २०
वसिष्ठाय स्वाहेत्यग्नावाज्यस्य
हुत्वा मन्थे सम्पातमवनयेत् छांदो. ५।२।५
(यो ह वै) वसिष्ठां वेद, वसिष्ठः
स्वानां भवति, वाग्वै वसिष्ठा बृह. ६।१।२
वसीयान् भवति स य एतदेनमुपास्ते आर्षे. ४।३
वसुरण्वो विभुरसि प्राणे त्वमसि
सन्धाता ब्रह्मंस्त्वमसि.. महाना.१७।१५
वसुरुद्रादित्यैः सर्वैर्देवैः सेवितं
दिवं तत् साम्नस्तृतीयं पादं
जानीयात् [नृ. पू. १।२ ग.पू.ता. १।१२
वसूनामेव तावदाधिपत्यं स्वाराज्यं
पर्येता छांदो. ३।६।४
वसूनामेवैको भूत्वाऽग्निनैव मुखे-
नैतदेवामृतं दृष्ट्वा तृप्यति छांदो. ३।६।२
वसूनां पावकश्चास्मि भ. गी. १०।२३
वसूनां प्रातःसवनं रुद्राणां माध्यं-
दिनं सवनमादित्यानां च
विश्वेषां च देवानां तृतीयसवनम् छांदो. २।२४।१
वसेदेकान्तिको भूत्वा चैकान्ते
द्वैतवर्जिते । इत्येवमाचरे-
द्धीमान्स एवं मुक्तिमाप्नुयात्
[स्कन्दो. १३+ मैत्रे.२।३

वसोर्द्वाराणामिन्द्रनगरं तद्वसुराः
पर्यवारयन्त २ प्रणवो. ७
वसोः पवित्रमसि सवितुश्च रश्मयः
पुनन्त्वन्नं ममदुष्कृतं च यदन्यत् मैत्रा. ६।९
वस्तुतो नोपादानमत एव नोपादेयम् स्वसंवे. १
वस्त्रमपि भूमौ वाऽप्सु वा विसृज्य
....ब्रह्माहमस्मीति तत्त्वमस्यादि-
वाक्यार्थस्वरूपानुसन्धानं कुर्व-
न्नुदीच्यां दिशं गच्छेत् प. हं. प. ५
वस्त्रमुच्छिष्टपात्रमिव (त्यजेयति:) नां. प. ७।१
वस्त्वभावं सुषुप्त्यैव निःसङ्गं विनिवर्तते अ. शां. ७९
वस्त्वेकं परब्रह्म नारायणः सनातनः नां.पू.ता. ५।६
वस्त्वेतमेवं प्रादेशमात्रमभिविमान-
मात्मानं वैश्वानरमुपास्ते, स
सर्वेषु लोकेषु सर्वेषु भूतेषु सर्वे-
ष्वात्मस्वन्नमत्ति छांदो. ५।१८।१
वहन्ति ह वा एनं वन्हिसम्भवाः,
य एवं वेद १ ऐत. ३।६।१
वह्नित्रयं तच्च जगत्त्रयं यद्गुणत्रयं
तच्च शक्तित्रयं स्यात् शि. शि. १२
वह्निर्वक्त्रं चन्द्रसूर्यौ च नेत्रे दिशः
श्रोत्रे प्राणमाहुश्च वायुः विष्णुहृ. १४
वह्निस्त्रिकोणं एकं च रेफाक्षर-
समुद्भवम् यो. त. ९१
वह्निःश्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणानि त्रि. ब्रा. १।३
वह्नेर्यथा योनिगतस्य मूर्तिर्न दृश्यते
नैव च लिङ्गनाशः श्वेताश्व. १।१३
वह्नेश्च यद्वत्खलु विस्फुलिङ्गाः
सूर्यान्मयूखाश्च तथैव तस्य ।
प्राणादयो वै पुनरेव तस्माद-
भ्युच्चरन्तीह यथाक्रमेण [मैत्रा.६।२६ +६।३१
वह्नौ चानिलमारोप्य रेफाक्षर-
समुज्वलम् १ यो. त. ९९
वह्नौ विवर्धमाने तु सुखमक्षादि जीर्यते वराहो. ५।४७
वंशस्तु भगवान् रुद्रः शृङ्गमिन्द्रः
सगोसुरः कृष्णो. ८
वाको वा अनुवाको वाकं वाकं
सञ्जुषमाणी देवस्य स्वं स्वगुणर्यै
स्वयं अमाविये ज्योतिषे स्वाहा पारमा. ३।१

वाक् च वक्तव्यं च नारायणः सुबालो. ६।१
वाक्वा प्राणं रेल्ह्यथ यत्र तूष्णीं वा भवति स्वपिति वा तदा वाग्भवति ३ ऐत. १।६।६
वाक्पतिर्होता चित्यु. ११
वाक्पतिश्चक्षुष्पतिः, श्रोत्रपतिर्विज्ञानपतिः, एतत्ततो भवति तैत्ति. १।६।२
वाक्परस्ताच्चक्षुरारुन्धे कौ. त. २।२
वाक्पाणिपादपायूपस्थाख्यानि कर्मेन्द्रियाणि शारीरको. १
वाक्पाणिपादपायूपस्थास्तद्वृत्तयः (कर्मेन्द्रियाणां) पैङ्गलो. २।३
वाक् पूर्वरूपं, मन उत्तररूपं, प्राणः संहितेति शूरवीरो माण्डूकेयः ३ऐत. १।१।२
वाक्प्राविशदशयदेव १ ऐत. १।४।६
वाक्यमप्रतिबद्धं सत्प्राक्परोक्षावभासिते । करामलकवद्बोधमपरोक्षं प्रसूयते अध्यात्मो.४
वाक्यार्थस्य विचारेण यदाप्नोति शरच्छतम् । एकवारजपेनैव ऋग्वादिध्यानतश्च यत् शु. र. १।१७
(अथ) वाक्श्रोत्रं चक्षुर्मनः प्राण इत्येकेऽथ बुद्धिर्धृतिः स्मृतिः प्रज्ञानमित्येके मैत्रा. ६।३१
वाक् सन्धिः, जिह्वा सन्धानम् तै. उ. १।३।७
वाक्संहितेति पञ्चालचण्डः, वाचा वै वेदाः सन्धीयन्ते ३ ऐत. १।६।५
वागध्यात्मं,वक्तव्यमधिभूतं,अग्निस्तत्राधिदैवतं, नाडी तेषां निबन्धनम् सुबालो. ५।१०
वागष्टमी ब्रह्मणा संविदाना वाग्घ्यष्टमी ब्रह्मणा संवित्ते बृह. २।२।३
वागनुष्टुब्वेतद्वाचमनुक्रमः बृह. ५।१४।५
(तस्य) वागर्चिश्चक्षुरङ्गाराः श्रोत्रं विस्फुलिङ्गास्तस्मिन्नेतस्मिन्नग्नौ देवा अन्नं जुह्वति बृह. ६।२।१२
वागस्मात्सर्वाणि नामान्यभिविसृजते, वाचा सर्वाणि नामान्याप्नोति कौ. त. ३।४
वागुदक्रामदवदन्नश्नन्पिबन्नास्तैव १ऐत. ३।४।४
वागेव गीथोच्चगीथा चेति स उद्गीथः बृ. ह. १।३।२३
वागेवदेवाः,मनःपितरः,प्राणोमनुष्याः बृह. १।५।६
वागेव ब्रह्मणश्चतुर्थः पादः, सोऽग्निना ज्योतिषा भाति च तपति च कीर्त्या यशसा ब्रह्मवर्चसेन छांदो. ३।१८।३
वागेवर्क् प्राणः सामोमित्येतदक्षरमुद्गीथस्तद्वा एतन्मिथुनं यद्वाक् च प्राणश्चर्क् च साम च छांदो. १।१।५
वागेवर्क्, प्राणः साम, तदेतदस्यामृच्यध्यूढ५ साम तस्मादृच्यध्यूढ५ साम गीयते छांदो. १।७।१
वागेवर्ग्वेदो मनो यजुर्वेदः प्राणः सामवेदः बृह. १।५।५
वागेव सम्राडिति होवाच—वाचा वै सम्राड् बन्धुः प्रज्ञायते बृह. ४।१।२
वागेव ह्यनुजानाति चिन्मयो ह्ययमोङ्कारश्चिदेव ह्यनुज्ञाता नृसिंहो. ८।६
वागेवात्रिर्वाचा ह्यन्नमद्यतेऽत्ति ह वै नामैतद्यदत्रिरिति बृह. २।२।४
वागेवायतनमाकाशः प्रतिष्ठा प्रज्ञेत्येनदुपासीत बृह. ४।१।२
वागेवायं लोकः, मनोऽन्तरिक्षं, लोकः प्राणोऽसौ लोकः बृह. १।५।४
वागेवास्या एकमङ्गमुदूढं तस्यै नाम परस्तात्प्रतिविहिता भूतमात्रा कौ. त. ३।५
वागेवास्य ज्योतिर्भवतीति, वाचैवायं ज्योतिषास्ते पल्ययते... बृह. ४।३।५
वागेवेदं सर्वमनुजानाति चिन्मयो ह्ययमोङ्कारश्चिद्धीदं सर्वं निरात्मकमात्मसात्करोति नृसिंहो. ८।४
वागेवेदं सर्वं, न ह्यशब्दमिवेहास्ति, चिन्मयो ह्ययमोङ्कारश्चिन्मयमिदं सर्वम् नृसिंहो. ८।२
वागेवैतत्सर्वं विज्ञापयति वाचमुपास्वेति छांदो. ७।२।१
वागोजः सहौजो मयि प्राणापानौ [प्रवर्ग्या. १+ वा. सं. ३६।१

वाग्गीर्वाचो ह गिर इत्याचक्षते छांदो. १।३।६
वाग्घि बृहती, तस्या एष पतिः
(उद्गीथः) छांदो. १।२।११
वाग्घि विज्ञाता वागेनं तद्भूत्वाऽवति बृह. १।५।८
वाग्घोच्चक्राम, सा संवत्सरं प्रोष्या-
गत्योवाच कथमशकत मदृते
जीवितुमिति बृह. ६।१।८
वाग्घोता, दीक्षा पत्नी, वातोऽध्वर्युः चित्त्यु. ६।१
वाग्दण्डः कर्मदण्डश्च मनोदण्डश्च
ते त्रयः । यस्यैते नियता दण्डाः
स त्रिदण्डी महायतिः ना. प. ६।११
वाग्दण्डे मौनमातिष्ठेत्कायदण्डे
त्वभोजनम् । मानसे तु कृते
दण्ड प्राणायामो विधीयते १ सं.सो.२।९७
वाग्देवीं गायत्रीं शरणमहं प्रपद्ये गायत्रीर. १०
वाग्घ्यष्टमी ब्रह्मणा संविता...(मा.पा.) बृह. २।२।३
वाग्वा अनुष्टुप् वाचैव प्रयन्ति वा-
च्वो-(चैवो-) द्यन्ति, परमा वा
एषा छन्दसां यदनुष्टुबिति
[नृ. पू. १।१+ ग. पू. १।६
वाग्वा इदं सर्वं भूतं गायति च
त्रायते च छांदो. ३।१२।१
वाग्वा ऋग्वेदं विज्ञापयति यजुर्वेदं
सामवेदमाथर्वणं चतुर्थमिति-
हासपुराणं पञ्चमं वेदानां वेदं.. छांदो. ७।२।१
वाग्वा ओङ्कारो वागेव ह्यनुजानाति
चिन्मयो ह्ययमोङ्कारश्चिदेव
ह्यनुज्ञाता नृसिंहो. ८।६
वाग्वाओङ्कारोवागेवेदंसर्वमनुजानाति नृसिंहो. ८।४
वाग्वा ओङ्कारो वागेवेदं सर्वं,
न ह्यशब्दमिवेहास्ति नृसिंहो. ८।२
वाग्वा साम्नो भूयसी छांदो. ७।२।१
वाग्वेदिः, अधीतं बर्हिः, केतो अग्निः चित्त्यु. १।१
वाग्वै ग्रहः, स नाम्नाऽतिग्राहेण
गृहीतो वाचा हि नामान्य-
भिवदति बृह. ३।२।३
वाग्वै बृहती तस्या एष पतिस्त-
स्मादु बृहस्पतिः बृह. १।३।२०
वाग्वै ब्रह्म, तस्या एष पति-
स्तस्मादु ब्रह्मणस्पतिः बृह. १।३।२१
वाग्वै ब्रह्मेत्यवदतो हि किं स्यात् बृह. ४।१।२
वाग्वै माता, प्राणः पुत्रः ३ ऐत. १।६।६
वाग्वै यज्ञस्य होता तद्येयं वाक्
सोऽयमग्निः स होता स मुक्तिः
साऽतिमुक्तिः बृह. ३।१।३
वाग्वै रथन्तरस्य रूपं, प्राणो
बृहतः, उभाभ्यामु खलु संहिता
सन्धीयते वाचा च प्राणेन च ३ ऐत. १।६।१
वाग्वै वसिष्ठा, वसिष्ठः स्वानां भवति बृह. ६।१।२
वाग्वै सम्राट् परमं ब्रह्म, नैनं
वाग्जहाति बृह. ४।१।२
वाग्वै सामैष सा चामश्चेति
तत्साम्नः सामत्वम् बृह. १।३।२२
वाङ्मामंदेवतावरोधिनी सा
मेऽमुष्मादिदमवरुन्धाम् कौ. ब. २।३
वाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणरेतो-
बुद्ध्याकूतिसङ्कल्पा मे शुध्यन्तां
ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा
भूयासꣳ स्वाहा महाना. १४।८
वाङ्मनःकायसङ्क्षोभं प्रयत्नेन
विवर्जयेत् । रसभाण्डमिवा-
त्मानं सुस्थिरं धारयेत्सदा अमन. २।५५
वाङ्मनोगोचरश्चाहं सर्वत्र
सुखवानहम् ते. बिं. ३।३८
वाङ्मयस्तेजोमयोऽमृतमयः पुरुषो-
ऽयमेव स योऽयमात्मा बृह. २।५।३
वाङ्मयं तप उच्यते भ.गी. १७।१५
वाङ्मया ब्रह्मभूस्तस्मात्षष्ठं वक्त्र-
समन्वितम् । सूर्यो वामश्रोत्र-
बिन्दुः संयुताष्टतृतीयकः १ देव्यु. १६
वाङ्मे मनसि प्रतिष्ठिता मनो मे
वाचि प्रतिष्ठितमाविरावीर्मएधि २ ऐत. ६।१
वाच ऋग्रस ऋचः साम रसः
साम्न उद्गीथो रसः छांदो. १।१।२
वाचमष्टापदीमहमित्यष्टौ हि
चतुरक्षराणि भवन्ति १ ऐत. ३।६।२

वाचमुद्गीथमुपासाञ्चक्रिरे ताꣳ ह्यसुराः पाप्मना विविधुः छांदो. १।२।३
वाचमेवाप्येति यो वाचमेवास्तमेति सुबालो. ९।६
वाचस्पतिः सोममपात् चित्त्यु. ५।१
वाचस्पतिः सोमं पिबति चित्त्यु. २।१
वाचस्पतिः सोमं पिबतु चित्त्यु. १।२
वाचस्पते च्छिद्रया वाचा चित्त्यु. ४।१
वाचस्पते वाचो वीर्येण चित्त्यु. २।१
वाचस्पते विधे नामन् चित्त्यु. १।२
वाचस्पते हृद्विधे नामन् चित्त्यु. ५।१
(एवं) वाचं च नाम च मनोऽनुभवति स यदा मनसा मनस्यति मन्त्रानधीयीयेत्यथाधीते छांदो. ७।३।१
वाचं तदा प्राणे जुहोति कौ. त. २।५
वाचं ते मयि जुहोम्यसौ स्वाहा कौ. त. २।४
वाचं ते मयि दध इति पुत्रः कौ. त. २।१५
वाचं धेनुमुपासीत तस्याश्चत्वारः स्तनाः स्वाहाकारो वषट्कारो हन्तकारः स्वधाकारः बृह. ५।८।१
वाचं मे त्वयि दधानीति पिता कौ. त. २।१५
वाचं मे दिशतु श्रीर्देवी मनो मे दिशतु वैष्णवी लक्ष्म्यु. ३
वाचंयमोऽप्रसाहः स यदि स्त्रियं पश्येत्समृद्धं कर्मेति विद्यात् छांदो. ५।२।८
वाचंयमोऽभिप्रव्रज्य संस्पर्शं जिगमिषेत् कौ. त. २।४
वाचंयमोऽभिप्रवृज्यार्थं ब्रुवीत कौ. त. २।३
वाचं वदन्तीं सर्वे प्राणा अनुवदन्ति कौ. त. ३।२
वाचं वेदा हृदयं वै नभश्च रसा पादौ तारका रोमकूपाः। साङ्गोपाङ्गान्यधिदैवानि वा विद्यादुपस्थं च तथा समुद्रम् विष्णुहृ. १।५
वाचा च ह्येव स प्राणेन चोद्गायदिति बृह. १।३।२४
वाचा छन्दांसि, वाचा मित्राणि सन्दधति वाचा सर्वाणि भूतानि। अथो वागेवेदं सर्वमिति ३ ऐत. १।६।९
वाचामगोचरनिराकारपरब्रह्मस्वरूपोऽहमेव त्रि.म.ना. ८।१
वाचामगोचरानन्तदिव्यतेजोराश्याकारो भवति त्रि.म.ना. २।६
वाचामगोचरानन्तशुद्धबोधविशेषविग्रहं... चिद्रूपादित्यमण्डलं द्वात्रिंशद्व्यूहभेदैरधिष्ठितम् त्रि.म.ना. ७।८
वाचामगोचरानन्दब्रह्मतेजोराशिमंडलमखण्डतेजोमंडलविशेषं ...शिवाद्वैतोपासका भजन्ते सि. सा. ६।१
वाचामतीतविषयो विषयाशादशोज्झितः। परानन्दरसाक्षुब्धो रमते स्वात्मनाऽऽत्मनि अ. पू. ५।९६
वाचारम्भणं विकारो नामधेयं त्रीणि रूपाणीत्येव सत्यं [छांदो. ६।४।१२,३,४
वाचारम्भणं विकारो नामधेयं मृत्तिकेत्येव सत्यम् [छांदो.६।१।४ +परम. ५
वाचारम्भणं विकारो नामधेयं लोहमित्येव सत्यम् छांदो. ६।१।५
वाचारम्भणं विकारो नामधेयं कृष्णायसमेव सत्यम् छांदो. ६।१।६
वाचा वदति यत्किञ्चित्सङ्कल्पैः कल्प्यते च यत्। मनसा चिन्त्यते यद्यत्सर्वं मिथ्या न संशयः ते. बिं. ५।४५
वाचा वै वेदाः सन्धीयन्ते ३ ऐत. १।६।५
वाचा वै सम्राट् बन्धुः प्रज्ञायते बृह. ४।१।२
(अथ) वाचा व्याहरति, तस्मान्मन एव पूर्वरूपं, वागुत्तररूपम् ३ ऐत. १।१।२
वाचा सर्वाणि नामान्याप्नोति कौ. त. ३।४
वाचा ह स्मैव पूर्व उपयन्ति स होपायनकीर्त्योवास बृह. ६।२।७
वाचा हि नामान्यभिवदति बृह. १।२।३
वाचा होताऽध्वर्युरुद्गातान्यतरावꣳ स यत्रोपाकृते प्रातरनुवाके पुरा परिधानीयाया ब्रह्माव्यववदति छांदो. ४।१६।२
वाचा ह्यन्नमद्यतेऽत्रिर्ह वै नामैतद्यदत्रिः (मा. पा.) बृ. उ. २।२।४

वाचा ह्यन्नमयतेऽत्ति ह वै नामैत-
द्यदुत्रिरिति सर्वस्यात्ता भवति
सर्वमस्यान्नं भवति — बृह. २।२।४

वाचिकोपांशुरुच्चैश्च (जपः) द्विविधः
परिकीर्तितः। मानसो मनन-
ध्यानभेदाद्द्वैविध्यमाश्रितः — जा. द. २।१४

वाचि तृप्यन्त्यामग्निस्तृप्यति — छांदो.५।२१।२

वाचि वै तदैन्द्रं प्राणं न्यचायन्नित्ये-
तत्तदुक्तं भवति — १ ऐत. ३।५।२

वाचि हि खल्वेष एतत्प्राणः
प्रतिष्ठितो गीयते — बृह. १।३।२७

वाचि हि प्राणं जुहुमः, प्राणे वा वाचं — ३ऐत. २।६।३

वाचे स्वाहा प्रतिष्ठायै स्वाहेत्यग्नौ
हुत्वा मन्थे सꣳस्रवमवनयति — बृह. ६।३।२

वाचैव प्रयन्ति वाचो-(चैवो)द्यन्ति
[नृ. पू. १।१+ — ग. पू. १।६

वाचोऽग्निः (निरभिद्यत) — २ ऐत. १।४

वाचो यस्मान्निवर्तन्ते तद्वक्तुं केन
शक्यते — ते. बिं. १।२१

वाचो वाव भूयोऽस्तीति तन्मे
भगवान् ब्रवीतु — छांदो. ७।२।२

वाचो वीर्यं तपसाऽन्वविन्दन् — चित्यु. ११।२

वाचो ह गिर इत्याचक्षते — छां. उ. १।३।६

वाचो ह वाचꣳ स उ प्राणस्य
प्राणश्चक्षुषश्चक्षुरतिमुच्य धीराः
प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवन्ति — केनो. १।२

वाच्यं लक्ष्यमिति द्विधाऽर्थसरणी-
वाच्यस्य हि त्वम्पदे वाच्यं
भौतिकमिन्द्रियादिरपि यल्लक्ष्यं
त्वमर्थश्च सः। वाच्यं तत्पद-
मीशताकृतमतिर्लक्ष्यं तु सच्चि-
त्सुखानन्दब्रह्म तदर्थ एष च
तयोरैक्यं त्वसीदं पदम् — शु. र. ३।१०

वाजपेयः पशुहर्ता, अध्वर्युरिन्द्रो
देवता अहिंसा धर्मयागः परम-
हंसोऽध्वर्युः परमात्मा देवता
पशुपतिर्ब्रह्मोपनिषदो ब्रह्म — पा. ब्र. ५

वाञ्छाक्षणे तु या तुष्टिस्तत्र
वाञ्छैव कारणम्। तुष्टिस्तद-
तुष्टिपर्यन्ता तस्माद्वाञ्छां
परित्यज — अ. पू. ५।३७

वातरशना ह वा ऋषयः श्रमणा
ऊर्ध्वमन्थिनो बभूवुः — सह्वै. ११

वातं प्राणं मनसाऽन्वारभामहे
प्रजापतिं यो भुवनस्य गोपाः — महाना. १३।९

वातं प्राणः, द्यौः पृष्ठम् — चित्यु. ४।१

वातं प्राणः (अप्येति)चक्षुरादित्यं,
मनश्चन्द्रम् — बृह. ३।२।१३

वातापेर्ह्वनः श्रुतः स्वाहा — चित्यु. ३।१

वातोऽध्वर्युः — चित्यु. ६।१

(तद्यथा-)वातोऽप्सु शनैर्वाति
सुखीभवेति, एवं... — संहितो. १।४

वातो वाति, प्रजा निर्मुच्यते — संहितो. १।३

(तद्यथा-)वातो वाति शीघ्रं...बहु
विभग्नं प्रभग्नंदयेतैव ते मे वैतया — संहितो. १।४

वातोऽस्माद्भीतः पवते — ग.शो.ता. ४।२

वादः प्रवदतामहम् — भ.गी. १०।३२

वादा इति वादविदो भुवनानीति तद्विदः — वैतथ्य. २४

वानप्रस्थगृहस्थाभ्यां न संसृज्येत
कर्हिचित्। अज्ञातचर्यां
लिप्सेत न चैनं हर्ष आविशेत् — ना.प. ५।३०

वानप्रस्थशतमेकमेकेन यतिना
तत्समं यतीनां तु शतं पूर्णमेक-
मेकेन रुद्रजापकेन — नृ.पू.उ. ५।१६

वानप्रस्था अपि चतुर्धा भवन्ति
वैखानसा औदुम्बरा वाल-
खिल्या यायावराः... — आश्रमो. २

वामकर्णे संयमाद्वायुलोकज्ञानम् — शांडि.१।७।५२

वामचक्षुषि संयमाच्छिवलोकज्ञानम् — शांडि.१।७।५२

वामदक्षिणे सिद्धिर्बुद्धिः (गणेशस्य) — ग. पू.ता.२।१०

वामदेवं महाबोधदायकं पावकात्मकम् — पञ्चब्र. ५

वामदेवं येऽनुसरन्ति नित्यं मृत्वा
जनित्वा च पुनः पुनस्तत्। ते वै
लोके क्रममुक्ता भवन्ति योगैः
साङ्ख्यैः कर्मभिः सत्त्वयुक्तैः — वराहो. ४।३५

(ॐ) वामदेवः परमेश्वरं सृष्टि-
स्थितिलयकारणमुमासहितं
स्वशिरसा प्रणम्येति होवाच — बिल्वो. १

वामदेवात् क्षत्रिया वै विशश्च सि. शि. ९
वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः... महाना. १०।५
वामनं त्वां महादेवं सर्वे देवा उपासते । त्वत्तो जातं जगच्छम्भोस्थितंत्वय्येवलीयते २रुद्रो. ४६
वामपादपार्ष्णिं योनिस्थाने नियोज्य..स्वात्मानं भावयेत्। तेनापरोक्षसिद्धिः शांडि.१।७।४३
वामपादमूलेन योनिं सम्पीड्य दक्षिणपादं प्रसार्य...वायुं धारयेत् । तेन सर्वक्लेशहानिः शांडि. १।७।४३
वामबाहुर्दक्षिणकट्योरन्तश्चरति हंसः परमात्मा ब्रह्मगुह्यप्रकारो नान्यत्र विदितः पा. ब्र. ४
वामाङ्गेन समभ्यस्य दक्षाङ्गेन ततोऽभ्यसेत् । प्रसारितस्तु यः पादस्तमूरूपरि नामयेत् । अयमेव महाबन्धः.. १ यो.त. ११४
वामाभ्यां शत्रुजिह्वावज्रे दधानां... देवीमाहूय ध्यायेत् पीताम्बरो. १
वामांसदक्षकट्यंतं ब्रह्मसूत्रं तु सव्यतः परब्र. १६
वामांसादिदक्षिणकट्यन्तं विभाव्यावन्तग्रहसम्मेलनमेकं ज्ञात्वा मूलमेकंसत्यंमृण्मयंविज्ञातं स्यात् परब्र. ४
वामोरुमूले दक्षाङ्घ्रिं जान्वोर्वेष्टितपाणिना । वामेन वामाङ्गुष्ठं तु गृहीतं मत्स्यपीठकम् । योनिं वामेन सम्पीड्य मेढ्रादुपरि दक्षिणम् ॥ ऋजुकायः समासीनः सिद्धासनमुदीरितम् त्रि. ब्रा. २।४९
वायवो यत्र लीयन्ते, मनो यत्र विलीयते यो. शि. ३।१२
वायव्यस्तु द्विमात्रकः अ. ना. ३१
वायावभ्यसिते वह्निः प्रत्यहं वर्धते तनौ । वह्नौ विवर्धमाने तु सुखमन्नादि जीर्यते वराहो. ५।४७
वायुतो हृदयं प्राजापत्यात्क्रमात् गर्भो. २
वायुना गतिमावृत्य निभृतं कर्णमुद्रया । पुटद्वयं समाक्रम्य वायुः स्फुरति सत्वरम् १ यो.त. ११६
वायुना ज्वलितो वह्निः कुण्डलीमनिशं दहेत् यो. शि. १।८५
वायुना पालितो वह्निरपानेन शनैर्देहमध्ये ज्वलति शांडि. १।४।८
वायुना वै गौतम सूत्रेणायं च लोकः परश्च लोकः सर्वाणि च भूतानि सन्दृब्धानि भवन्ति बृह. ३।७।२
वायुना शक्तिचालेन प्रेरितं खे यथा रजः। रविणैकत्वमायाति (याति विन्दुः सदैकत्वं) भवेद्दिव्यंवपुस्तदा [ध्या. बिं. ९०+ यो. चू. ६१
वायुना सह चित्तं च प्रविशेच महापथम् १ यो.त. ८२
वायुना सह जीवोर्ध्वज्ञानान्मोक्षमवाप्नुयात् यो. शि. ६।१६
वायुना हि गौतम सूत्रेण सन्दृब्धानि भवन्ति बृह. ३।७।२
वायुपुत्र महाबाहो किं तत्त्वं ब्रह्मवादिनाम् रा. र. १।२
वायुपुत्रं विघ्नेशं वाणीं दुर्गां क्षेत्रपालकं सूर्यं चंद्रं नारायणं नारसिंहं...सीतां लक्ष्मणं... प्रणवमेतानि रामस्यांगानि रा. र. १।७
वायुभक्षोऽम्बुभक्षो वा विहिता नोत्तरैः फलैः । स्वशरीरे समारोपः पृथिव्यां नाश्रुपातकाः २ सन्न्यासो. ५
वायुभक्षोऽम्बुभक्षो वा विहितैः कन्दमूलकैः। स्वशरीरे समाध्याथपृथिव्यां नाश्रु पातयेत् कुंडिको. ४
(अथ) वायुमब्रुवन् वायवेतद्विजानीहीति केनो. ३।७
वायुमय आकाशमयः (आत्मा) बृह. ४।४।५
वायुमाकाशे चाकाशमहङ्कारे पैङ्गलो. २।३
वायुमेव भगवो राजन्निति होवाचैष वै पृथग्वर्त्मात्मा वैश्वानरो यंत्वमात्मानमुपास्से तस्मात्त्वां पृथग्बलय आयन्ति छांदो.५।१४।१

वायुमेवाप्येति यो वायुमेवास्तमेति सुबालो. ९।५
वायुरग्निरापः पृथिवी वाङ्मनश्चक्षुः
श्रोत्रं च ते प्रकाश्याभिवदन्ति.. प्रश्नो. २।२
वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तम्
शरीरम् [ईशा. १७+ बृह. ५।१५।१
वायुरस्मै पुण्यं गन्धमावहति १ ऐत. १।७।३
वायुराकाशे विलीयते सुबालो. २।२
वायुरात्माऽमावास्याः स्विष्टकृत् सहवै. १८
वायुरिति भस्म, जलमिति भस्म.. १ रुद्रोप. २
वायुरेव पवमानो दिशोहरितं प्रविष्टः १ ऐत. १।१।३
वायुरेव सविताऽऽकाशः सावित्री
स यत्र वायुस्तदाकाशो यत्र वा
आकाशस्तद्वायुस्ते द्वे योनि-
स्तदेकं मिथुनम् सावित्र्यु. ३
वायुर्गन्धानिवाशयात् भ. गी. १५।८
वायुर्दिशां यथा गर्भ एवं गर्भं
दधामि ते बृ. उ. ६।४।२२
वायुर्नावमिवाम्भसि भ. गी. २।६७
वायुर्भूत्वा धूमो भवति धूमो
भूत्वाऽभ्रं भवति छांदो. ५।१०।५
वायुर्यत्राभियुज्यते, सोमो यत्रा-
तिरिच्यते, तत्र सञ्जायते मनः श्वेताश्व. २।६
वायुर्यथैको भुवनं प्रविष्टो जन्ये-
जन्ये पञ्चरूपो बभूव गो. पू. २।३
वायुर्यथैको भुवनं प्रविष्टो रूपंरूपं
प्रतिरूपो बभूव। एकस्तथा
सर्वभूतान्तरात्मा रूपं रूपं
प्रतिरूपो बहिश्च कठो. ५।१०
वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः भ. गी. ११।३९
वायुर्वा अहमस्मीत्यब्रवीन्मातरिश्वा
वा अहमस्मीति केनो. ३।८
वायुर्वाऽसमाकाशोऽन्नादः सुबालो. १४।१
वायुर्वाव संवर्गो यदा वा
महाप्रलये... (मा.पा.) छांदो. ४।३।१
वायुर्वाव संवर्गो यदा वा अग्नि-
रुद्वायति वायुमेवाप्येति छांदो. ४।३।१
वायुर्वै गौतम तत्सूत्रं, वायुना वै
गौतम सूत्रेणायं च लोकः
परश्च लोकः सर्वाणि च
भूतानि सन्दृब्धानि भवन्ति बृह. ३।७।२
वायुर्व्यूहने आकाशमवकाश-
प्रदाने (शरीरस्य) गर्भो. १
वायुर्हा इकारः, चन्द्रमा अथकारः छां.उ. १।१३।१
वायुर्हायिकारः (मा. पा.) छां. उ. १।१३।१
वायुर्ह्येवैतान्सर्वान्संवृङ्क्त इत्यधिदैवतम् छांद. ४।३।२
वायुवत्स्फुरितं स्वस्मिंस्तत्रा-
हङ्कृतिरुत्थिता। पञ्चात्मक-
मभूत्पिण्डं धातुबद्धं गुणात्मकम् यो. शि. १।८
वायुवद्व्योमगो भवेत् १ यो. त. ९६
वायुवेग मनोवेग श्रीराम तारक
परब्रह्म विश्वरूपरूपदर्शन
लक्ष्मणप्राणप्रतिष्ठानन्दकर
स्थलजलादिमर्ममेदिन् सर्व-
शत्रून् छिन्धि छिन्धि लांगूलो. ३
वायुश्च वायुमात्रा च प्रश्नो. ४।८
वायुश्चाकाशश्चेत्यधिदैवतम् ३ ऐत. १।१।१
वायुस्ता९ अग्रे प्रमुमोक्तु देवः चित्यु. ११।१३
वायुं जित्वा विविधकरणैः क्लेश-
मूलैः कथञ्चित्कृत्वा यत्नं
निजतनुगतान् शोष्य नाडि-
प्रवाहान्। अभ्रद्धेयां परपुर-
गतिं साधयित्वाऽति नूनं
विज्ञानैकव्यसनसुखिनो
नास्ति मोक्षस्य सिद्धिः अमन. २।३०
वायुं निरुद्ध्य मेधावी जीवन्मुक्तो
भवत्ययम् १ यो.त. १०६
वायुं बिन्दुं तथा चक्रं चित्तं चैव
समभ्यसेत्। समाधिमेकेन
सममभृतं यान्ति योगिनः योगकु. ३।१३
वायुं भित्त्वाऽऽकाशं भिनत्ति सुबालो. ११।२
वायुः पञ्चहोता चित्यु. ७।२
वायुः परिचितो यत्नादग्निना
सह कुण्डलीम्। भावयित्वा
सुषुम्नायां प्रविशेदनिरोधतः १ यो. त. ८१
वायुः पश्चिमतो वेधं कुर्वन्नापूर्य
सुस्थिरम्। यत्र तिष्ठति सा
प्रोक्ता घटाख्या भूमिका बुधैः वराहो.५।७३,७४

वायुः प्राणस्तथाऽऽकाशस्त्रिविधो जीवसंज्ञकः	त्रि. वि. १४
वायुः प्राणो भूत्वा नासिके प्राविशत्	२ ऐत. २।४
वायुः प्राणो हृदयं विश्वमस्य पद्भ्यां पृथिवी ह्येष सर्वभूतान्तरात्मा	मुंड. २।१।४
वायुः षट्कोणकं कृष्णं यकाराक्षरभासुरम्। मारुतं मरुतां स्थाने...धारयेत्तत्र सर्वज्ञमीश्वरं विश्वतोमुखम्	१ यो. त. ९५
वायुःसमानोदानव्यानापानप्राणाः	त्रि. ब्रा. १।३
वायुः सर्वत्रगो महान्	भ. गी. ९।६
वायूनां गतिमावृत्त्य धृत्वा पूरककुम्भकौ।...पुटद्वयं समाकृष्य वायुः स्फुरति सत्वरम्। सोमसूर्याग्निसम्बधात्...	वराहो. ५।६१
वायोरग्निः (सम्भूतः) [+यो. चू. ७२+सुबालो.१।१	तैत्ति.२।१।१ पैङ्गलो. १।३
वायोरग्निरभवत्	गायत्रीर. १
वायोरग्निस्तथा चाग्नेराप अद्भ्यो वसुन्धरा	कठरु. १७
वायोरन्तरात्मा वहति समस्तः सपुण्यदेवेति स सूरिमुक्तः	पारमा. १०।२
वायोरात्मानं कवयो निचिक्युः	चित्सु. ११।४
वायोरायतनं चात्र नाभिदेशे समाश्रयेत्	क्षुरिको. ७
वायोरिव सुदुष्करम्	भ. गी. ६।२४
वायोरोङ्कारः [अ.शिरः. ३।१५+	बटुको. २७
वायोर्ज्योतिः, ज्योतिष आपः	२सन्न्यासो. १६
वायोर्बिम्बं तु षट्कोणं सङ्कर्षोऽस्याधिदेवता	यो. शि. ५।१४
वायौ तृप्यत्याकाशस्तृप्यति	छांदो. ५।२३।२
वायौ मनोलयं कुर्यादाकाशगमनं भवेत्	यो. शि. ९।५१
वाराणसीमहाप्राज्ञभ्रुवोर्घ्राणस्यमध्यमे	जा. द.४।४८
वाराणस्यां मृतो वाऽपि इदं वा ब्रह्म यः पठेत्। एकेन जन्मना जन्तुर्मोक्षं च प्राप्नुयादिति	प्रा. हो. ४।४
वाराही पितृरूपा कुरुकुल्ला बलिदेवता माता	भावनो. २
वारिजलोचनसहाये वारिगतिं वारयासुकरनिकरैः। पीडितमत्र भ्रान्तं मामनिशं पालय त्वमनवद्ये	वनदु. १६९
वारिवत्स्फुरितं तस्मिंस्तत्राहङ्कृतिरुत्थिता। पञ्चात्मकमभूत्पिण्डं धातुबद्धं गुणात्मकम्	१ यो. त. १०६
वारुणं त्वेव वर्जयेत्	छांदो. २।२२।१
वारुणे वायुमारोप्य वकारेण समन्वितम्। स्मरन्नारायणं देवं चतुर्बाहुं किरीटिनम्।...धारयेत्पञ्चघटिकाः सर्वपापैःप्रमुच्यते	१ यो. त. ८८
(तत्र) वार्ताकवृत्तयः कृषिगोरक्षवाणिज्यमगोर्हितमुपयुञ्जानाः शतसंवत्सराभिर्यजन्त आत्मानं प्रार्थयन्ते	आश्रमो. २
वालाग्रमात्रं हृदयस्य मध्ये विश्वं देवं जातरूपं वरेण्यम्। तमात्मस्थं ये नु पश्यन्ति धीरास्तेषां शान्तिर्भवति नेतरेषाम्	अ.शिरः.३।११
वालाग्रमात्रं हृदये प्रतिष्ठं जीवाभासं मन्यमानैश्च मूढैः। न त्वेष जीवो न शिवश्चादिकर्ता यस्मात्परं नापरमस्ति किञ्चित्	२ देव्यु. ३४
वालाग्रशतभागस्य शतधाकल्पितस्य च। भागो जीवः स विज्ञेयः स चानन्त्याय कल्पते [श्वेता.५।९+	अवधू. १।२६
वालाग्रशतसहस्रकल्पनादिभिः स लभ्यते (परमात्मा)	१ आत्मो. ३
वालाग्रशतसाहस्रं तस्य भागस्य भागिनः। तस्य भागस्य भागार्धं तत्क्षये तु निरञ्जनम्	ध्या. बि. ४
वाल्मीको वल्मीकात्, व्यासः कैवर्तकन्यायां, शशपृष्ठाद्गौतमः, वसिष्ठ उर्वश्यां, अगस्त्यः कलशेजातः	व. सू. ५
वाव किल नो भवान् पुराऽनुशिष्टानवोचत्	बृह. ६।२।३
वासनाक्षयविज्ञानमनोनाशो महामते। समकालं चिराभ्यस्ता	

भवन्ति फलदा मताः — अ. पू.४।८३
[+मुक्तिको. २।१०
वासनाजाले निश्शेषममुना प्रविलापिते कर्मसञ्चये पुण्यपापे समूलोन्मूलिते प्राक्परोक्षमपि करतलामलकवद्वाक्यमप्रतिबद्धापरोक्षसाक्षात्कारं प्रसूयते — पैङ्गलो. ३।३
वासनातन्तुबद्धोऽयं लोको विपरिवर्तते — महो. ५।८६
वासनातानवं ब्रह्मन्मोक्ष इत्यभिधीयते — महो. २।४१
वासनात्रयपूर्वकं निन्दानिन्दागर्वमत्सरदम्भदर्पद्वेषकामक्रोधलोभमोहहर्षामर्षासूयात्मसंरक्षणादिकं दग्ध्वा...देहत्यागं करोति यः सोऽवधूतः — तुरीया. ३
वासनाद्वासुदेवस्य वासितं हि जगत्त्रयम् । सर्वभूतनिवासोऽसि वासुदेव नमोऽस्तु ते — ना. उ.ता. १।४
वासना द्विविधा प्रोक्ता शुद्धा च मलिना तथा । मलिना जन्महेतुः स्याच्छुद्धा जन्मविनाशिनी — मुक्तिको.२।६१
वासनानुदयो भोग्ये वैराग्यस्य तदावधिः । अहम्भावोदयाभावो बोधस्य परमावधिः — अध्यात्मो. ४१
वासनाप्रक्षयो मोक्षः सा जीवन्मुक्तिरिष्यते — अध्यात्मो. १२
वासनामात्रसन्त्यागाज्जरामरणवर्जितम् । सवासनं मनो ज्ञानं ज्ञेयं निर्वासनं मनः — अ. पू. ५।६२
वासनामुक्तो महालीलायामासक्तः संसारे न निर्विण्णो नातिसक्तो भवति — शामर. १००
वासनायास्तथा वह्नेर्ऋणव्याधिद्विषामपि । स्नेहवैरविषाणां च शेषः स्वल्पोऽपि बाधते — अ. पू. ५।१७
वासनारहितैरन्तरिन्द्रियैराहरन् क्रियाः । न विकारमवाप्नोषि खमवक्षोभकैरपि — अ. पू. ५।३९
वासनावशतः प्राणस्पन्दस्तेन च वासना । क्रियते चित्तबीजस्य तेन चित्ताङ्कुरक्रमः — मुक्तिको. २।२६
वासनाविलये चेतः शममायाति दीपवत् — मुक्तिको. २।१७
वासनावेगवैचित्र्यात् स्वरूपं न जहाति तत् । भ्रान्तं पश्यति दुर्दृष्टिः सर्वं मदवशादिव — मुक्तिको. २।६०
वासनासम्परित्यागसमं प्राणनिरोधनम् — अ. पू. ४।८५
वासनासम्परित्यागः प्राणस्पन्दनिरोधनम् । एतास्ता युक्तयः पुष्टाः सन्ति चित्तजये किल — मुक्तिको. २।४५
वासनासम्परित्यागाच्चित्तं गच्छत्यचित्तताम् [अ.पू.४।८६+ — मुक्तिको. २।२८
वासनासम्परित्यागे यदि यत्नं करोषि भोः । यावद्विलीनं न मनो न तावद्वासनाक्षयः — अ. पू. ४।७८
वासनाहीनमप्येतच्चक्षुरादीन्द्रियं स्वतः । प्रवर्तते बहिः स्वार्थे वासनामात्रकारणम् — मुक्तिको. २।३२
वासनां वासितारं च...समूलमखिलं त्यक्त्वा... — महो. ६।७
वासनां सम्परित्यज्य मोक्षार्थित्वमपि त्यज — मुक्तिको. २।६८
वासनां सम्परित्यज्य मयि चिन्मात्रविग्रहे । यस्तिष्ठति गतव्यग्रःसोऽहं सच्चित्सुखात्मकः — मुक्तिको. २।१८
वासनाः कल्पयन्सोऽपि यात्यहङ्कारतां पुनः — महो. ५।१२४
वासनाविलयेनापि स्वात्मज्योतिः प्रकाशते । सूर्यो भाभिरिवादीप्तो योगी विश्वं प्रकाशते — अमन. १।४८
वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि । तथा शरीराणि विहाय संयाति नवानि देही [भवसं. २।३७+ — भ. गी. २।२२
वासुदेवमयोऽस्म्यहम् — विष्णुहृ. १।३
वासुदेवः सर्वमिति — भ. गी. ७।१९

वासुदेवादिचतुर्व्यूहसेवितं विष्णुलोकं तत्सान्तः पञ्चमं पादं जानीयात् ग. पू. १।१२
वासुदेवे मनो युञ्जन्सर्वसिद्धिमवाप्नुयात् यो. शि. ५।५४
वासुदेवोऽजरोऽमरः ते. बिं. ६।६९
वास्तुवेदो धनुर्वेदो गान्धर्वश्च तथा मुने। आयुर्वेदश्च पञ्चैते उपवेदाः प्रकीर्तिताः सीतो. २१
विकरोत्यपरान् भावानन्तश्चित्ते व्यवस्थितान्। नियताश्च बहिश्चित्त एवं कल्पयते प्रभुः वैतथ्य. १३
विकलेवरकैवल्यं त्रिपाद्राममहं भजे शु.र.शीर्षकं
विकलेवरकैवल्यं श्रीरामब्रह्म मे गतिः रा.पू.शीर्षकं
विकटाङ्गामुन्मत्तां महाखलां... पुनर्धेनुं...अशान्तामदुग्धदोहिनीं वत्सहीनां...नवप्रसूतां रोगार्तां गां विहाय प्रशस्तगोमयमाहरेत् बृ. जा. ३।१
विकल्पसङ्ख्याज्जन्तोः पदं तदवशिष्यते अ. पू. २।३३
विकल्पासहिष्णु, तत्सशक्तिकं गजवक्त्रं गजाकारं जगदेवावलम्बे गणेशो. ३।३
विकल्पो विनिवर्तेत कल्पितो यदि केनचित् आगमः १८
विकारजननीमज्ञामष्टरूपामजां ध्रुवाम्। ध्यायतेऽध्यासितातेन तन्यते प्रेर्यते पुनः। सूयते पुरुषार्थं च तेनैवाधिष्ठितं जगत् मंत्रिको. ३,४
विकारादिविहीनत्वाज्जागरो मे न विद्यते वराहो. २।६०
विकारांश्च गुणांश्चैव भ.गी. १३।२०
विकाराः षोडशापरे शारीरको. १२
विकिरं प्रकिरं दद्याद्विकिरं ह वै प्रकिरंमुखीतत्तृप्तिरूपाणिदर्शयन् इतिहा. ५३
विक्षिप्तं च गतायातं सुश्लिष्टं च सुलीनकं (मनः) अमन. २।९२
विक्षेपशक्तिर्लिङ्गादि ब्रह्माण्डान्तं जगत्सृजेत् सरस्व. ४२
विक्षेपो नास्ति यस्मान्मे न समाधिस्ततो मम। विक्षेपो वा समाधिर्वा मनसः स्याद्विकारिणः १ अवधू. २१
विगतेच्छाभयक्रोधः भ. गी. ५।२८
विग्रहमनुग्रहलिङ्गेषु शक्तिकपालेषु सर्वंवशङ्करं विद्यात् लिङ्गोप. २
विग्रहवानेष कालः सिन्धुराजः प्रजानाम् मैत्रा. ६।१६
विघ्नराजो ब्रह्मण्यमृते तेजोमये परंज्योतिर्मये सदानंदमये रमते गणेशो. ५।७
विघ्नराजश्चिदात्मकः सोऽहमोम् गणेशो. १।४
विघ्नान्यायान्ति वै बलात् ते. बिं. १।४०
विघ्नांस्तरति महोपसर्गं तरति गणेशो. ५।८
विचक्षणः पंचमुखोऽसि प्रजापतिर्ब्राह्मणस्त एकं मुखं तेन मुखेन राज्ञोऽत्सि कौ. त. २।९
विचक्षणादृतवो रेत आभृतं... कौ. त. १।२
विचारणा द्वितीया तु तृतीया तनुमानसी (ज्ञानभूमिः) महो. ५।२४
विचारणा द्वितीया स्यात्तृतीया साङ्गभावना (मोक्षभूमिका) अ. पू. ५।८२
विचारणाशुभेच्छाभ्यामिन्द्रियार्थेषु रक्तता। यत्र सा तनुतामेति प्रोच्यते तनुमानसी [महो.५।२९ +वराहो. ४।५
विचारेण परिज्ञातस्वभावस्य सतस्तव। मनः स्वरूपमुत्सृज्य शममेष्यति विज्वरम् अ. पू. १।४१
विचिकित्सीमे ऋज्वा बा. मं. २३
विचित्रघोषसंयुक्तानाहते श्रूयते ध्वनिः सौभाग्यल. ९
विचित्रं विधिचेष्टितम् भवसं. १।१२
विचित्राः शक्तयः स्वच्छाः समा या निर्विकारया। चिताः क्रियन्ते समया कलाकलनमुक्तया १सं.सो. २।२६
विचिन्वति ह्येवेमानि शरीराणीः १ ऐत. १।८।४
विचैति चान्ते विश्वमादौ स देवः स नो बुद्ध्या शुभया संयुनक्तु श्वेता. ४।१
वि चौमि सं च हि नु यो विरूपी (ष्टी) बा. मं. ९
विजरो विमृत्युर्विशोको विजिघित्सोऽपिपासः सत्यकामः सत्यसङ्कल्पः [छांदो. ८।१।५ +८।७।१

विज्ञानमेव सत्यं वदति विज्ञानं त्वेव विजिज्ञासितव्यमिति छांदो. ७।१७।१
विज्ञानन् विद्वान् भवते नातिवादी मुण्ड. ३।१।४
विजानन्वै तन्न विजानाति नहि विज्ञातुर्विपरिलोपो विद्यते-ऽविनाशित्वात् . बृह. ४।३।३०
विजानाम्यहं यत्प्राणो ब्रह्म, कं च तु खं च न विजानामि छांदो. ४।१०।५
विजातीयविशेषवर्जितं... शाश्वतं परमं पदं...स्वयम्प्रकाशमनिशं ज्वलति त्रि.म.ना. ७।७
विजितात्मा जितेन्द्रियः भ. गी. ५।७
विजिहीर्ष्व लोकान् कृधि बंधान्मुंचासिबद्धकम् सहवै. ९
विजेषकृदिन्द्र इवानवब्रवोऽस्माकं मन्यो अधिपो भवेह वनदु. १११
विजेष्यव्वे वावैतानन्विति शौनको. १।२
विज्वरत्वं गतं चेतस्तव संसारवृत्तिषु । न निमज्जति तद्ब्रह्मन् गोष्पदेष्विव वारणः अ. पू. १।४२
विज्ञातब्रह्मतत्त्वस्य यथा पूर्वं न संसृतिः । अस्ति चेन्न स-विज्ञातब्रह्मभावो बहिर्मुखः अध्यात्मो. ४८
विज्ञातमविजानताम् (ब्रह्म) केनो. २।३
विज्ञातं विजिज्ञास्यमविज्ञातमेत एव यत्किञ्च विज्ञातं वाचस्तद्रूपं, वाग्घि विज्ञाता, वागेनं तद्भूत्वाऽवति बृह. १।५।८
विज्ञानात्मा पुरुषः स परेऽक्षरे आत्मनि सम्प्रतिष्ठते प्रश्नो. ४।९
विज्ञातारमरे केन विजानीयात् [बृ. उ. २।४।१४+ ४।५।५
विज्ञाते स्पन्दमाने वै नाभासा अन्यतो भुवः अ. शां. ९१
विज्ञानघन एवास्मि शिवोऽस्मि किमतः परम् स्कन्दो. १
विज्ञानघन एवैतेभ्यो भूतेभ्यः समुत्थाय तान्येवानुविनश्यति बृ. उ. २।४।१२
विज्ञानघनस्वरूपमनन्तचिदादित्यसमष्ट्याकारं शिवाद्वैतोपासका भजन्ते सि. सा. ६।१
विज्ञानमयं ब्रह्मकोशम् । चतुर्जालं ब्रह्मकोशम् । यन्मृत्युर्नावपश्यति भस्मजा. २।१६
विज्ञानमयः कालात्माऽऽनन्दमयो लयात्मैकत्वं नास्ति, द्वैतं कुतः सुबालो. ५।१९
विज्ञानमयो मनोमयः प्राणमयश्चक्षुर्मयः बृह. ४।४।५
विज्ञानमात्ररूपोऽहं सच्चिदानन्दलक्षणः . ते. बिं. ३।३१
विज्ञानमात्रं विज्ञानविदां यदमलात्मकम् । पुरुषः साङ्ख्यदृष्टीनामीश्वरो योगवादिनाम् अ. पू. ३।२०
विज्ञानमानन्दं ब्रह्म रातिर्दातुः परायणं, तिष्ठमानस्य तद्विद इति बृ. उ. ३।९।३४
विज्ञानमानन्दं ब्रह्मरातेर्दातुः परायणम् । सर्वसङ्कल्पसन्न्यासश्चेतसा यत्परिग्रहः महो. २।९
विज्ञानमुपास्व छांदो. ७।७।१
विज्ञानमेवाप्येति, तदमृतमभयमशोकमनन्तनिर्बीजं.. सुबा. ९।३-१२
विज्ञानमेवाप्येति यो विज्ञानमेवात्तमेति [सुबालो.९।२, ७,१०,१३
विज्ञानवतो वै स लोकान्ज्ञानवतोऽभिसिद्ध्यति छांदो. ७।७।२
विज्ञानसारथिर्यस्तु मनःप्रग्रहवान्नरः । सोऽध्वनः पारमाप्नोति तद्विष्णोः परमं पदम् [कठो. ३।९+ भवसं. २।१२
विज्ञानं चाविज्ञानं च तैत्ति. २।६
विज्ञानं त्वेव विजिज्ञासितव्यम् छांदो. ७।१७।१
विज्ञानंदेवाःसर्वेब्रह्मज्येष्ठमुपासते तैत्ति. २।५
विज्ञानं प्रयन्त्यभिसंविशन्ति तैत्ति. ३।५
विज्ञानं ब्रह्म चेद्वेद तस्माच्चेन्न प्रमाद्यति । शरीरे पाप्मनो हित्वा सर्वान्कामान्समश्नुत इति तैत्ति. २।५

विज्ञानं ब्रह्मेति व्यजानात्। विज्ञानाद्ध्येव खल्विमानि भूतानि जायन्ते। विज्ञानेन जातानि जीवन्ति। विज्ञानं प्रयन्त्यभिसंविशन्तीति	तैत्ति. ३।५
विज्ञानं भगवो विजिज्ञासे	छांदो.७।१७।१
विज्ञानं यज्ञं तनुते। कर्माणि तनुतेऽपि च। विज्ञानं देवाः सर्वे ब्रह्म ज्येष्ठमुपासते	तैत्ति. २।५
विज्ञानं वाव ध्यानाद्भूयः	छांदो. ७।७।१
विज्ञानात्मा चिदाभासो विश्वो व्यावहारिको जाग्रत्स्थूलदेहाभिमानी कर्मभूरिति च विश्वस्य नाम भवति	पैङ्गलो. २।६
विज्ञानात्मा यथा देहे जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तितः। मायया मोहितः पश्चाद्बहुजन्मान्तरे पुनः	योगकुं. ३।२७
विज्ञानात्मा सह देवैश्च सर्वैः प्राणा भूतानि सम्प्रतिष्ठन्ति यत्र। तदक्षरं वेदयते यस्तु सोम्य स सर्वज्ञः सर्वमेवाविवेश	प्रश्नो. ४।११
विज्ञानादानन्दो ब्रह्मयोनिः	महाना.१७।१२
विज्ञानाद्वाव भूयोऽस्तीति तन्मे भगवान्ब्रवीतु	छांदो. ७।७।२
विज्ञानाद्ध्येव खल्विमानि भूतानि जायन्ते	तैत्ति. ३।५
विज्ञानाविज्ञानेऽहम्	१ देव्यु. १
विज्ञानेन वा ऋग्वेदं विजानाति यजुर्वेदꣳ सामवेदमाथर्वणम्	छांदो. ७।७।१
विज्ञानेनात्मानं वेदयति	महाना.१७।१३
विज्ञानेनेदꣳ सर्वं विदितम्	बृह. २।४।५
विज्ञाने स्पन्दमाने वै नाभासा अन्यतो भुवः	अ. शां. ५१
विज्ञानेऽपि तथैव स्युराभासस्याविशेषतः	अ. शां. ५०
विज्ञानोऽस्मि विशेषोऽस्मि सोमोऽस्मि सकलोऽस्म्यहम्	मैत्रे. ३।३
विज्ञायते ह्यास्ति हिरण्यस्योपात्तं गोअश्वानां दासीनां प्रवराणां..	बृह. ६।२।७
विज्ञायते ह्यास्ति...प्रवराणां परिधानस्य...[मा. पा.]	बृह. ६।२।७
विज्ञाय सेवितश्चोरो मैत्रीमेति न चोरताम्	महो. ५।७१
विज्ञेयः स शिवः शान्तो नरस्तद्भावभावितः। आस्ते सदा निरुद्विग्नः स देहान्ते विमुच्यते	शिवो. १।२३
विज्ञेयोऽक्षरतन्मात्रो जीवितं वापि चञ्चलम्। विहाय शास्त्रजालानि यत्सत्यं तदुपास्यताम्	पैङ्गलो. ४।१७
विण्मूत्रपित्तकफमज्जामेदोवसाभिरन्यैश्च मलैर्बहुभिः परिपूर्णे कोश इवावसन्नेति	मैत्रा. ३।४
विण्मूत्रवातपित्तकफमज्जामेदोवसाभिरन्यैश्चमलैर्बहुभिः परिपूर्णमेतादृशे शरीरे वर्तमानस्य भगवंस्त्वं नो गतिः	मैत्रे. १।३
विण्मूत्रादिविसर्जनमपानवायुकर्म	शांडि. १।४।९
वितता ब्रह्मणो मुखे	भ. गी. ४।३२
विततां भुवमासाद्य विहरामि यथासुखम्	१ सं.सो.२।५५
वितत्य बाणं तरुणार्कवर्णं व्योमान्तरे भासि हिरण्यगर्भः	एका. उ. ४
वितथैः सदृशाः सन्तोऽवितथा इव लक्षिताः	अ. शां. ३१
वितन्वमाना शमायान्तु ब्रह्मचारिणः स्वाहा	तै. उ. १।४।४
वितस्तिप्रमितं दैर्घ्यं चतुरङ्गुलविस्तृतम्। मृदुलं धवलं प्रोक्तं वेष्टनाम्बरलक्षणम्	यो. शि. १।८१
विशीर्णवस्त्रं वल्कलं वा प्रतिगृह्णीयान्नान्यत्प्रतिगृह्णीयात्	१ सं. सो.१।२
वित्तं बन्धुः प्रजातन्तुः कर्मरूपं बृहत्सखा। प्रज्ञाप्रतिष्ठा तन्तूनामिष्टापूर्तैः परायणम्	इतिहा. ६
वित्तिश्चोपस्तपश्च दमश्चाश्रद्धा च सपृश्च (?) चानाकाशी कर्णं च योगश्चाचार्यगुरुशुश्रूषा चेति	संहितो. ३।९
(अथ) वित्तं मे स्यादथ कर्म कुर्वीय	बृह. १।४।१७

विच्चेशो यक्षरक्षसाम् भ. गी. १०।२३
विदानाद्बिपुत् बृह. ५।७।१
विदाम देवं भुवनेशमीड्यम् श्वेता. ६।७
विद्विवाविदिन्नात्परः नृसिंहो. ९।८
विदिते तु परे तत्त्वे मन्तो नौ-
स्तम्भकाकवत् अन्न. २।७३
विदित्वा स्वात्मनो रूपं सम्प्रज्ञात-
समाधितः। शुकमार्गेण विरजाः
प्रयान्ति परमं पदम् वराहो. ४।३८
विदित्वा स्वात्मनो रूपं न बिभेति
कुतश्चन(कदाचन)[वराहो.२।२०+ महो. ४।७०
विदिशश्च नारायणः [तारा. २+ त्रि.म.ना. २।८
विदुर्देवा न दानवाः भ.गी. १०।१४
विदेहमुक्त एवासौ विद्यते
निष्कलात्मकः अ. पू. ४।१९
विदेहमुक्तताऽत्रोक्ता सप्तमी योग-
भूमिका। अगम्या वचसां
शान्ता सा सीमा सर्वभूमिषु अक्ष्युप. ४४
विदेहमुक्तौ नोदेति नास्तमेति न
शाम्यति महो. २।६४
विदेहमुक्तौ विमले पदे परमपावने।
...चित्तनाशे विरूपाख्ये न
किञ्चिदिह विद्यते अ. पू. ४।२०
विद्धि त्वमेतन्निहितं गुहायाम् कठो. १।१४
विद्धि नष्टानचेतसः भ. गी. ३।३२
विद्धि पार्थ बृहस्पतिम् भ.गी.१०।२४
विद्धि पार्थ सनातनम् भ. गी. ७।१०
विद्धि प्रकृतिसम्भवान् भ.गी. १३।२०
विद्धि मामसृतोद्भवम् भ.गी. १०।२७
विद्ध्यकर्तारमव्ययम् भ. गी. ४।१३
विद्ध्यनादी उभावपि भ.गी. १३।२०
विद्ध्येनमिह वैरिणम् भ. गी. ३।३७
विद्ययाऽमृतमश्नुते ईशा. ११
विद्यया वा विद्यां यः प्राह तानि
तीर्थानि षण्मयेति संहितो. ३।५
विद्यया विन्दतेऽमृतम् केनो. २।४
विद्यया साधयेत संहितो. ३।४
विद्यातपोभ्यां जीवात्मा बुद्धि-
शक्तिं शुक्रवति अवध. ३।१८

विद्यादानं च कुर्वीत भोगमोक्ष-
जिगीषया शिवो. ११३५
विद्या दिवा प्रकाशत्वादविद्या
रात्रिरुच्यते १सं.सो. २।८३
विद्याधरस्तृतीयायां गान्धर्वस्तु
चतुर्थिका ना. विं. १३
विद्याधीशः स्वर एको महेशस्त्वमेव
त्वं वेद योऽसीश एव २ रुद्रो. ६८
(शिष्य इति च)विद्याध्वस्तप्रपञ्चा-
वगाहितज्ञानावशिष्टं ब्रह्मैव शिष्यः निरा. २५
विद्यानन्दतुरीयाख्यपादत्रयममृतं
भवति त्रि.म.ना.४।४
(अथ च) विद्यानन्दतुरीयाणा-
ममेद एव श्रूयते त्रि.म.ना. २।१
विद्यानन्दतुरीयांशाः (ब्रह्मणः)
सर्वेषु पादेषु व्याप्य तिष्ठन्ति त्रि.म.ना. १।४
विद्यापादो द्वितीयः (ब्रह्मणः) त्रि.म.ना. १।४
विद्याप्रपञ्चस्य नित्यत्वं सिद्धमेव,
नित्यानन्दचिद्विलासात्मकत्वात् त्रि.म.ना. ३।२
विद्या भवच्छेदकरी मदीयसायुज्य-
सम्पादनहेतुभूता १ बिल्वो. १५
विद्याभीप्सितं नचिकेतसं मन्ये न
त्वा कामा बहवो लोलुपन्ते(न्तः)
[कठो. २।४+ मैत्रा. ७।९
विद्याऽभूद्रोमयं शुभम् बृ. जा. ३।२
विद्याभ्यासे प्रमादो यः स दिवा
स्वाप उच्यते १सं.सो. २।८४
विद्यामन्त्रैकसंश्रयो विद्यारूपो
विद्यामयो विश्वेश्वरोऽहमजरोऽहम् भस्मजा. २।७
विद्यामिमां प्राप्य गौरी महेशा-
दभीष्टसिद्धिं समवाप सद्यः हेरम्बो. १४
विद्याया मनसि संयोगः, मनसा-
ऽऽकाशश्चाकाशाद्वायुः, वायो-
र्ज्योतिः, ज्योतिष आपः,
अद्भ्यः पृथिवी, पृथिव्या इत्येषां
भूतानां ब्रह्म सम्पद्यते २सन्यासो. १६
विद्यालिङ्गं ज्ञानस्वरूपम् लिङ्गोप. २

विद्याविद्याभ्यां भिन्नो विद्यामयो हि यः स कथं विषयी भवति गोपालो.१।१२

विद्याविद्ये ईशते यस्तु सोऽन्यः श्वेता. ५।१

विद्याविनयसम्पन्ने भ. गी. ५।१८

विद्याशक्तिः समस्तानां शक्तिरित्यभिधीयते । गुणत्रयाश्रया विद्या सा विद्या च तदाश्रया बृ. जा. ३।१

विद्या सङ्कीर्तनीया हि येषां कर्म न विद्यते । ते चावर्त्य विमुच्यन्ते यावत्कर्म न विद्यते शिवो. १।३४

विद्या सन्धिः। प्रवचन९ सन्धानम् तैत्ति. १।३।५

विद्या सम्प्राप्यते ब्रह्मन् सर्वदोषापहारिणी महो. ५।११०

विद्यासहायवन्तं च आदित्यस्थं समाहितम्। कपिलं प्राहुराचार्याः.. ...

विद्याऽहमविद्याऽहम् १ देव्यु. १

विद्या ह वै ब्राह्मणमाजगाम, तवाहमस्मि, त्वं मां पालयानर्हते मानिने नैव माऽदाः । गोपाय मा श्रेयसे तेऽहमस्मीति संहितो. ३।४

विद्या ह वै ब्राह्मणमाजगाम गोपाय मां शेवधिष्टेऽहमस्मि । असूयकायानृजवे शठाय मा मा ब्रूया वीर्यवती तथा स्याम् [शाट्या.३३ मुक्तिको. १।५१

विद्याऽहम् । वेदाश्चाहम् अद्वै. भा. १

विद्या हि काण्डान्तरादित्यो ज्योतिर्मण्डलं ग्राह्यं नापरं महावा. २

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभय९ सह । अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा (मृत्युमेति) विद्ययाऽमृतमश्नुते [ईशा. ११+ मैत्रा. ७।९+ भवसं. ३।१

विद्युति तृप्यन्त्यां यत्किञ्च विद्युच्च पर्जन्यश्चाधितिष्ठतस्तत्तृप्यति तस्यानुतृप्तिं तृप्यति प्रजया पशुभिरन्नाद्येन तेजसा ब्रह्मवर्चसेनेति छांदो.५।२२।२

विद्युतोऽभिव्यद्युतदा ३ इति (मा.पा.) केनो. ४।४

विद्युतो व्यद्युतदा ३ इति केनो. ४।४

विद्युद्विभ्राजार्चिषः परमे व्योमन् मैत्रा. ६।३५

विद्युद्भिरहोरात्रं निमेषोन्मेषसंज्ञकम् गुह्यका. १८

विद्युद्वसितं (गायत्र्याः) सन्ध्यो. २१

विद्युद्ब्रह्मेत्याहुर्विदानाद्विद्युद्विद्यत्येनं पाप्मनो य एवं वेद विद्युद्ब्रह्मेति विद्युद्ध्येव ब्रह्म बृह. ५।७।१

विद्योतते स्तनयति स प्रतिहारः छांदो.२।३।११

विद्रुमद्रुमसङ्काशं योनिस्थाने स्थितं रजः ध्या. बिं. ८७

विद्वत्सन्न्यासी चेद्गुरोः सकाशात् प्रणवमहावाक्योपदेशं प्राप्य... पर्वतवनदेवतालयेषु सञ्चरेत् ना. प. ४।४८

विद्वत्सन्न्यासी ज्ञानसन्न्यासी विविदिषासन्न्यासी कर्मसन्न्यासी ना. प. ५।२

विद्वानप्यासुरश्चेत्स्यान्निष्फलं तत्त्वदर्शनम् वराहो. ३।२३

विद्वानेतेनैवायतनेनैकतरमन्वेति प्रश्नो. ५।२

विद्वान् त्रिवृत्सूत्रं त्यजेत् आरुणि. ३

(तथा) विद्वान्नामरूपाद्विमुक्तः मुण्ड. ३।२।८

विद्वान्नित्यं सुखे तिष्ठेद्धिया चिद्रसपूर्णया ते. बिं. १।५१

(तदा) विद्वान् ब्रह्मज्ञानाग्निना कर्मबन्धं निर्दहेत् पैङ्गलो. ४।११

विद्वान् ब्रह्मामृतोऽमृतम् बृ. ह. ४।४।१७

विद्वान्मनो धारयेताप्रमत्तः श्वेताश्व. २।९

विद्वान्युक्तः समाचरन् भ. गी. ३।२६

विद्वान्सर्वमैहिकामुष्मिकसुखश्रमं ज्ञात्वा..ब्रह्मचर्यसमाप्य गृहीभवेत् प. हं. प. १

विद्वांसस्तेनलयेनपश्यन्ति सुबालो. ८।१

विद्वान्स्वदेशमुत्सृज्य सन्न्यासानन्तरं स्वतः । कारागारविनिर्मुक्तचोरवद्दूरतो वसेत् मैत्रे. २।११

विद्वा९सो मनसा प्रजायमाना रेतसैवमजीविष्मेति [बृह.६।१।८ +६।१।९–१२

विधिदृष्टो य इज्यते भ.गी. १७।११

विधिवशादावनुपनीतोपनयनानन्तरं तत्सत्कुलप्रसूतः...साधनचतुष्टयसम्पन्नः सन्न्यस्तुमर्हति ना. प. २।१

विधिवत्प्राणसंयामैर्नाडीचक्रे विशोधिते । सुषुम्नावदनं भित्त्वा सुखाद्विशति मारुतः शांडि. १।७।९

विधिहीनमसृष्टान्नम् भ.गी. १७।१३

विधूमे च प्रशान्ताग्नौ यस्तु माधु-
करीं चरेत् । गृहे च विप्रमुख्यानां
यतिः सर्वोत्तमः स्मृतः ना. प. ६।१२
विधूमे सन्नमुसले व्यङ्गारे भुक्त-
वज्जने । कालेऽपराह्णे भूयिष्ठे
भिक्षाचरणमाचरेत् १सं.सो. २।७३
विधृतिरेषां लोकानामसम्भवाय छांदो. ८।४।१
विधेम ते नाम। विधेस्त्वमस्माकं नाम चित्त्यु. १।२
विध्युक्तकर्मसङ्क्षेपात् सन्न्यास-
स्त्वातुरः स्मृतः ना. प. ३।९
विध्युक्तकर्मसंयुक्तः कामसङ्कल्प-
वर्जितः । यमाद्यष्टाङ्गसंयुक्तः... जा. द. ९।२
विनर्दिसाम्नो वृणे पशव्यमित्यग्ने-
रुद्गीथोऽनिरुक्तः प्रजापतेर्निरुक्तः छांदो. २।२२।१
विनष्टदिग्भ्रमस्यापि यथापूर्वं विभाति
दिक् । तथा विज्ञानविध्वस्तं
जगन्नास्तीति भावय (जगन्मे
भाति तन्नहि) [महो. ४।२०+ वराहो. ३।१७
विनश्यत्स्वविनश्यन्तं भ.गी. १३।२८
विना कार्यं सदा गुप्तं योगसिद्धस्य
लक्षणम् यो.शि. १।१५६
विना तर्कप्रमाणाभ्यां ब्रह्म यो
वेद वेद सः पा. ब्र. २१
विना देहेन योगेन न मोक्षं लभते
विधे । अपक्वाः परिपक्वाश्च
देहिनो द्विविधाः स्मृताः यो. शि. १।२५
विना प्रमाणसुष्ठुत्वं यस्मिन्सति
पदार्थधीः । अयमात्मा नित्य-
सिद्धः प्रमाणे सति भासते २ आत्मो. ६
विनायकस्य यद्ध्यानं पूजनं भवमोचनं गणेशो. १।५
विनायकोऽहमित्येतत्तत्त्वतः प्रवदन्तिये।
न ते संसारिणो नूनं... गणेशो. १।५
विनाशमव्ययस्यास्य भ. गी. २।१७
विनाशस्तस्य विद्यते भ. गी. ६।४०
विना शक्तिं न मोक्षो न ज्ञानं न
सत्यं न धर्मो न तपो न हरिर्न
हरो न विरिञ्चिः श्रीचक्रो. २
विनाशं कालतो याति ततो-
ऽन्यत्सकलं मृषा (ब्रह्मात्मनः) शरभो. २४
विनाशाय च दुष्कृताम् भ. गी. ४।८
विनाशेन मृत्युं तीर्त्वा सम्भूत्या-
मृतमश्नुते ईशा. १४
विना श्रीतुलसीं विप्रा येऽपि श्राद्धं
प्रकुर्वते । वृथा भवति तच्छ्राद्धं
पितॄणां नोपगच्छति तुलस्यु. १४
विनियम्य समन्ततः भ. गी. ६।२४
विनोदतः कामिनीमध्ये कामिनी-
दृष्ट्या च सदानन्दरूपो भवेत् कामराज. २
विन्दते प्राजापत्यं रायस्पोषं
गौपत्यम् [भस्मजा. १।७+ नारा. ३
विन्दन्त्यात्मनि यत्सुखम् भ. गी. ५।२३
विन्ध्यस्योत्तरे तीरे मारीचो नाम
राक्षसः । तत्र मूत्रपुरीषाभ्यां
हुताशनं शमय.. वनदु. १६०
विन्ध्याटव्यां पायसान्नमस्ति
चेज्जगदुद्भवः ते. बिं. ६।७८
विपरीतं ब्रह्मचर्यमनुष्ठेयं मुमुक्षुभिः कठरु. १०
विपरीतानि केशव भ. गी. १।३०
विपर्यस्ते वा कन्यके जिह्मेन वा
दग्धयेयातां तदप्येवमेव विद्यात् ३ऐत. २।४।५
विपर्यस्तो निदिध्यासे किं ध्यान-
मविपर्यये । देहात्मत्वविपर्यासं
न कदाचिद्भजाम्यहम् अवधू. १७
विपर्यासाद्यथा जाग्रदचिन्त्यात्
भूतवत्स्पृशेत् । तथा स्वप्ने
विपर्यासाद्धर्मांस्तत्रैव पश्यति ब. शां. ४१
विपर्यासे तयोः क्षीणे तुरीयं पदमश्नुते आगम. १५
विपापो विरजो विचिकित्सो
ब्राह्मणो भवति बृह. ४।४।२३
विप्रयोगं प्रियैश्चैव संयोगं च तथा-
प्रियैः । जरया चाभिभवनं
व्याधिभिश्चोपपीडनम् ॥...
प्राप्यन्ते नारकै राजन् भवसं. १।४-६
विप्राणां विनयो ह्येष शमः
प्राकृत उच्यते । दमः प्रकृति-
दान्तत्वादेवं विद्वाञ्छमं व्रजेत् अ. शां. ८ ६
विभक्तमिव च स्थितम् भ.गी. १३।१७

विभागकलनां त्यक्त्वा सन्मात्रैकपरो भव — अ. पू. ४।६६
विभुरहमनवद्योऽहं निरवधिनिःसीमतत्त्वमात्रोऽहम् — आ. प्र. ८
विभुर्नित्यो निष्कलङ्को निर्विकल्पो निरञ्जनो निराख्यातः शुद्धो देव एको नारायणो न द्वितीयः — त्रि. म. ना. १।५
विभुर्विभूनां विभवोद्भवाय — पारमा. १।२
विभुं चिदानन्दमरूपमद्भुतम् — कैव. ७
विभुं प्रमितं विचक्षणासन्दी — कौ. त. १।३
विभुं सर्वगतं नित्यं विश्वयोनिमकारणम् । व्याप्यव्याप्यं यतः सर्वं तं वै पश्यन्ति सूरयः — भवसं. ३।४
विभुः साक्षी न संशयः — सर्वसारो. १०
विभूतिर्भसितं भस्म क्षारं रक्षेति भवन्ति पञ्चनामानि — बृ. जा. १।६
विभूतिं च जनार्दन — भ.गी. १०।१८
विभूतीनां परंतप — भ.गी. १०।४०
विभूतेर्विस्तरो मया — भ.गी. १०।४०
विभूतिं प्रसवं त्वन्ये मन्यन्ते सृष्टिचिन्तकाः । स्वप्नमायासरूपेति सृष्टिरन्यैर्विकल्पिता — आगम. ७
विभेदजनके ज्ञाने नष्टे ज्ञानबलान्मुने । आत्मनो ब्रह्मणो भेदमसन्तं किं करिष्यति — जा. द. ४।६३
विभ्राजदेतयतयो विशन्ति — महाना. ८।१४
विभ्राजमानं भूतवर्गेष्वसङ्गं विलातिगं स्वप्रभाभासमानम् — २ देव्यु. ३३
विभ्राजमानां हरिणीं यशसा सम्परीवृताम् । पुरीं हिरण्मयीं ब्रह्मा विवेशापराजिता — अरुणो. ३
विभ्राद् सम्राद् भूमधामा त्वमेव पिताऽसि माता भ्रातृकश्चादिदेवः — २ रुद्रो. ६२
विमलोत्कर्षिणी ज्ञाना क्रिया योगा.. — त्रि.म.ना.७।१२
विमुक्तश्च विमुच्यते — कठो. ५।१
विमुक्तं मन्येतात्मानं मुच्यते नात्र संशयः — अमन. २।४५
विमुक्तः सर्वपापेभ्यः कैवल्यायोपकल्पते । सर्वाभिः सिद्धिभिस्तस्य किं कार्यं कमलानने — गुह्यका. ८४
विमुक्तिपादपच्छायामृते कुत्र सुखं नृणाम् — भवसं. १।३०
विमुक्तिरिति पायौ — तैत्ति. ३।१०।२
विमुक्तो मामुपैष्यसि — भ. गी. ९।२८
विमुक्तोऽमृतमश्नुते — भ.गी. १४।२०
विमुच्य निर्ममः शान्तः — भ.गी. १८।५३
विमूढाः कर्तुमुद्युक्ता ये हठाच्चेतसो जयम् । ते निबध्नन्ति नागेन्द्रमुन्मत्तं बिसतन्तुभिः — मुक्तिको. २।४७
विमूढा नानुपश्यन्ति — भ.गी. १५।१०
विमूढो ब्रह्मणः पथि — भ. गी. ६।३८
विमृश्यैतदशेषेण — भ.गी. १८।६३
वियदाकारसंयुक्तं वीतिहोत्रसमन्वितम् । अर्धेन्दुलसितं देव्या बीजं सर्वार्थसाधकम् — १ देव्यु. १४
वियासाय स्वाहा — चित्यु. २०।१
वियोगायैव संयोगा आधयो व्याधयोऽधियाम् — अक्ष्युप. २६
वियोगोपदेशः — निर्वाणो. १
विरक्तस्य तु संसाराज्ज्ञानं कैवल्यसाधनम् — जा. द. ५।४७
विरक्तः पुरुषः सर्वदा ब्रह्माहमिति व्यवहरेत् — ना. प. ६।१
विरक्तः प्रव्रजेद्धीमान्सरक्तस्तु गृहे वसेत् । सरागो नरकं याति प्रव्रजन्हि द्विजाधमः — ना. प. ३।१४
विरक्तःसन् यो वर्षासु ध्रुवशीलोऽष्टौ मास्येकाकी चरन्नेकत्र निवसेत् — ना. प. १७।१
विरक्ता ज्ञानिनश्चान्ये देहेन विजिताः सदा । ते कथं योगिभिस्तुल्या मांसपिण्डाः कुदेहिनः — यो. शि. १।४८
विरजं निष्कलं शुभ्रमक्षरं यद्ब्रह्म विभाति स नियच्छति — ब्रह्मो. १
विरजः पर आकाशादज आत्मा महान्ध्रुवः — बृह. ४।४।२०

विरजानलजं चैव धार्यं प्रोक्तं
महर्षिभिः (भस्म) बृ· जा. ५।४
विरजा ब्रह्मरूपिणी क्षुरिको. १६
विरज्य सर्वभूतेभ्य आविरिञ्चि-
पदादपि । घृणां विपाट्य सर्व-
स्मिन्पुत्रमित्रादिकेष्वपि ॥
श्रद्धालुर्मुक्तिमार्गेषु वेदान्त-
ज्ञानलिप्सया । उपायनकरो
भूत्वा गुरुं ब्रह्मविदं व्रजेत् ना. प. ६।२२
विरलत्वंव्यवहृतेरिष्टंचेद्ध्यानमस्तु ते १ अवधू. २०
विरा आ आ आ आं हुं
आं आं आज्या (मा. पा.) छां.उ. २।२४।८
विरागमुपयात्यन्तर्वासनास्वनु-
वासरम् । क्रियासूदाररूपासु
क्रमते मोदतेऽन्वहम् अक्ष्युप. ७
विराजति प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन
सर्वमायुरेति, ज्योग्जीवति,
महान्प्रजया पशुभिर्भवति छांदो. २।१६।२
विराजमेवाप्येति यो विराज-
मेवास्तमेति सुबालो. ९।१
विराजा सुदर्शना जिता सौम्या
मोघा कुमाराऽमृता सत्या
मध्यमा नासीराशिशुरासूरा-
सूर्याभास्वराविज्ञेयानि नाडी-
नामानि दिव्यानि सुबालो. ६।१
विराजो अधिपूरुषः [पु. सू. ५+ चित्त्यु. १२।२
[ऋ. मं. १०।९०।५+ वा. सं. ३१।५
विराड्ध्यानं हि तज्ज्ञेयं महा-
पातकनाशनम् गुह्यका. ६
विराट्पुरुषेणोपदिष्टं रहस्यं तं
विविच्योच्यते ना. प. १।१
विराट्प्रणवः षोडशमात्रात्मकः
षट्त्रिंशत्तत्त्वातीतः ना. प. ८।३
विराट्प्रणवः षोडशमात्रान्वितः तुरीयो. १
विराट्स्थितिप्रलयौ मूलाविद्याण्ड-
परिपालकस्यादिनारायणस्या-
होरात्रिसंज्ञकौ त्रि.म.ना. ३।६
विराडेकर्षिर्भास्वती स्मृता चतुर्थी
पादो भवति नृसिंहो. ३।१

विराड्ढिरण्यगर्भश्च ईश्वरश्चेति ते
त्रयः । ब्रह्माण्डं चैव पिण्डाण्डं
लोका भूरादयः क्रमात् ॥ स्व-
स्वोपाधिलयादेव लीयन्ते
प्रत्यगात्मनि योगकु. ३।२२
विराड्ढिरण्यगर्भेश्वरा आधिविलया-
त्परमात्मनि लीयंते पैङ्गलो. ३।४
विराड्रूपे मनो युञ्जन्महिमानमवा-
प्नुयात् । चतुर्मुखे मनो युञ्ज-
ञ्जगत्सृष्टिकरो भवेत् यो. शि. ५।५२
विराड्विश्वः स्थूलश्चाकारः यो. चू. ७५
विरिञ्चिनारायणशङ्करात्मकं नृसिंह-
देवेश तव प्रसादतः । अचिन्त्य-
मव्यक्तमनन्तमव्ययं वेदात्मकं
ब्रह्म निजं विजानते स्कन्दो. १३
विरूपाक्षेण बभ्रुणा वाचं वदिष्यतीहतः नीलरु. ३।२
विरूपाश्च सरूपाश्च पशूनव-
रुन्धे सर्वमायुरेति छांदो. २।१६।२
विरूपाः सन्तो बहुधैकरूपाः
अग्निस्ताँ अग्रे प्रमुमोक्तु देवः चित्त्यु. ११।११
विरूपाः सन्तो बहुधैकरूपाः ।
तेषाँ सप्तानामिह
रन्तिरस्तु [चित्त्यु. ११।१२,१३
विरूपाः सन्तो बहुधैकरूपाः ।
वायुस्ताँ अग्रे प्रमुमोक्तु देवः चित्त्यु. ११।१३
विरोधो न विद्यते ब्रह्मा-
द्वितीयमेव सत्यम् त्रि.म.ना. ४।१
विलम्बिनीति या नाडी व्यक्ता
नाभौ प्रतिष्ठिता । तत्र नाड्यः
समुत्पन्नास्तिर्यगूर्ध्वमधोमुखाः यो.शि. ५।२०
विलापिनी (भूमिका) चतुर्थी
स्याद्वासना विलयात्मिका अ. पू. ५।४१
विलीना ज्ञानतत्कार्ये मयि निद्रा
कथं भवेत् वराहो. ३।५९
विवर्णं चतुर्मात्रं सर्वव्यापि...
सर्वाणि च भूतानि स्थावर-
जङ्गमान्यन्वभवत् २ प्रणवो. २

विवर्धयति ह्यमृदुं तस्मादेव जिता मही। प्राणवायोस्तु संरोधा-त्प्राणायामस्तु पठ्यते — योगो. ३०
विवस्वान् मनवे प्राह — भ. गी. ४।१
विविक्तदेशमासाद्य सर्वसम्बन्धवर्जितः — त्रि. ब्रा. २।८९
विविक्तदेशसेवित्वं — भ.गी. १३।११
विविक्तदेशे च सुखासनस्थः शुचिः — कैव. ५
विविक्तदेशे शुचि सन्निविष्टः समासनं किञ्चिदुपैति पश्चात् — अमन. १।१५
विविक्तसेवी लघ्वाशी — भ.गी. १८।५२
विविक्तेति वेदाः स्तुवन्ति — राधिको. ५
विविक्ते विजने देशे पवित्रेऽति-मनोहरे। समासीनः सुखासीनः पश्चात्किञ्चित्समाश्रितः॥ सुख-स्थापितसर्वाङ्गः सुस्थिरात्मा सुनिश्चलः। बाहुदण्डप्रमाणेन कृतदृष्टिः समभ्यसेत् — अमन. २।४८
विविक्ते विजने रम्ये पुष्पाश्रम-विभूषिते। स्थानं कृत्वा शिव-स्थाने ध्यायेच्छान्तं परं शिवम् — शिवो. ७।१२८
विविदिषासंन्यासी चेच्छतपथं गत्वा...दण्डं परिग्रहेत् — ना. प. ४।४९
विविधविचित्रस्थूलसूक्ष्मोत्कृष्ट-निकृष्टानन्तदेहान्परिगृह्य... पुनः पुनस्तत्तत्कर्मफलविषय-प्रवृत्तिरेव जायते — त्रि.म.ना. ५।३
विविधविचित्रानन्तजगदाकारो भवति — त्रि.म.ना. २।६
विविधविचित्रानन्तशक्तेः परब्रह्मणः स्वरूपज्ञानेन विरोधो न विद्यते — त्रि.म.ना. २।३
विविधं चास्ति वै प्रोक्तं प्राणायामस्य लक्षणम् — योगो. ६
विविधाश्च पृथक्चेष्टाः — भ.गी. १८।१४
विविधोपायैरपि अविद्याकार्याण्यंतः-करणान्यतीत्य कालानन्तानि जायन्ते — त्रि.म.ना. ४।९
विवृद्धं सत्त्वमित्युत — भ.गी. १४।११
विवृद्धे कुरुनन्दन — भ.गी. १४।१३
विवृद्धे भरतर्षभ — भ. गी. १४।१२

विवेकयुक्तिबुद्ध्याऽहं जानाम्या-त्मानमद्वयम्। तथापि बन्ध-मोक्षादिव्यवहारः प्रतीयते — आ. प्र. १२
विवेकरक्षा। विवेकलभ्यम् — निर्वाणो. १,२
विवेकं परमाश्रित्य बुद्ध्या सत्य-मवेक्ष्य च। इंद्रियारीनलं छित्त्वा तीर्णो भव भवार्णवात् — महो. ५।८४
विवेकिनः प्रशान्तस्य यत्सुखं ध्यायतः शिवम्। न तत्सुखं महेन्द्रस्य ब्रह्मणः केशवस्य वा — शिवो. ७।१३०
विवेकी सर्वदा मुक्तः संसार-भ्रमवर्जितः — यो. शि. १।१८
विवेश भूतानि चराचराणि — महाना. १।१
विशते तदनन्तरम् — भ. गी. १८।५५
विशन्ति नाशाय समृद्धवेगाः — भ. गी. ११।२९
विशन्ति वक्त्राण्यभिविज्वलन्ति — भ.गी. ११।२८
विशन्ति यद्यतयो वीतरागाः [सुदर्श. ६४ — भ. गी. ८।११
विशन्ति विद्या विमला मुक्ता वेणुमिवोत्तमम्। विरक्तमनसां सम्यक्स्वप्रसङ्गादुदाहृतम् — महो. ६।१६
विशीर्णं वस्त्रं वल्कलं वा प्रतिगृह्य नान्यत्प्रतिगृह्णीयात् — कठश्रु. ७
विशीर्णान्यमलान्येव चेलानि ग्रथितानि तु। कृत्वा कन्थां बहिर्वासो धारयेद्धातुरञ्जितम् — ना. प. ३।४१
विशुद्धिः कण्ठमूले च आज्ञाचक्रं च मस्तकम् — योगकुं. ३।११
विशेषहीनश्च कविः पुराण एष स्वतन्त्रः पुरुषः पुराणः — २ देव्यु. १५
विशेषं सम्परित्यज्य सन्मात्रं यद-लेपकम्। एकरूपं महारूपं सत्तायास्तत्पदं विदुः — अ. पू. ४।६५
विशेषेण न शूद्रस्त्रीपतितोदक्या सम्भाषणम् — ना. प. ५।१५
विशेषेणैव कर्तव्यं भस्त्राख्यं कुम्भकंत्विदम् [यो.शि.१।१०० — योगकुं. १।२९
विशोको विमृत्युरजिघत्सोऽपिपासः शरीरहीनोऽप्यजरः पुराणः — २ कठो. ६६

विश्लिष्टं च गतायासं विकल्पविषयमहम् । सुश्लिष्टं च सुलीनं च विकल्पविषयापहम् — अमन. २।९४

विश्लिष्टं नाम सम्प्रोक्तं राजसं तु गतागतम् । सुश्लिष्टं सात्त्विकं प्रोक्तं सुलीनं गुणवर्जितम् — अमन. २।९३

विश्वकर्मणः समवर्तताधि — चित्त्यु. १३।१

विश्वजित्प्रथमः पादः स्वप्रस्थानगतः प्रभुः — ना. प. ८।१२

विश्वतश्चक्षुरुतविश्वतोमुखो विश्वतो(हस्त उत)बाहुरुत विश्वतस्पात् — श्वेताश्व. ३।३
[महाना.२।२+२शिवसं.२६+ — त्रि.म.ना. ६।४
[वा. सं. १७।१९+ — १ रुद्रो. २

विश्वतः परमं नित्यं (परमान्नित्यं) विश्वं नारायणं हरिम्
[महो. १।५+चतुर्वे. २+ — महाना. ९।१

विश्वतः पादोऽपाणिर्विश्वतः पाणिरहमशिराः — भस्मजा. २।७

विश्वतः पृष्ठेषु सर्वतः पृष्ठेष्वनुत्तमेषूत्तमेषु लोकेष्विदं वाव तद्यदिदमस्मिन्नन्तः पुरुषे ज्योतिस्तस्यैषा दृष्टिः — छांदो. ३।१३।७

विश्वतैजसप्राज्ञतटस्थभेदैरेक एव एको देवः साक्षी निर्गुणश्च तद्ब्रह्माहमिति व्याहरेत् — ना. प. ६।६

विश्वतैजसप्राज्ञाः स्वस्वोपाधिलयात् प्रत्यगात्मनि लीयन्ते — पैङ्गलो. ३।४

विश्वतोऽहं विश्वात्मा तमेकमद्वैतं निष्कलं निष्क्रियं शान्तं — भस्मजा. २।४

विश्वतोहस्त उत विश्वतस्पात्
[महाना.२।२+२शि.सं. २६+ — १ रुद्रो. २

विश्वभृदे नामैषा तनूर्भगवतो विष्णोर्यदिदमन्नम् — मैत्रा. ६।१३

विश्वमयो ब्राह्मणः शिवं भजति — १ रुद्रोप. १

विश्वमविश्वं कृतमकृतं परमपरं परायणं च त्वम् — चतुर्वे. ८

विश्वमसि विश्वायुः सर्वमसि सर्वायुरभिभूरों गायत्रीमावाहयामि सावित्रीमावाहयामि सरस्वतीमावाहयामि — महाना. ११।७

विश्वमाभासि रोचनम् — चित्त्यु. १६।१

विश्वमिदं वृणाति — चित्त्यु. ११।३

विश्वमिन्नु समन्वालभध्वमिति — शौनको. १।४

विश्वमेनाननु प्रजायते — नृ. पू. १।७

विश्वमेवेदं पुरुषस्तद्विश्वमुपजीवति
[महाना. ९।२+ — महो. १।६

विश्वमेवेदं पुरुषः(तैत्तिरीयसंहिता) — तै.ना.उ. ११।१

विश्वमेवेदं पुरुषं तं विश्वमुपजीवति — चतुर्वे. ३

विश्वम्भरो वा विश्वम्भरकुलाये तं पश्यन्ति — बृह. १।४।७

विश्वम्भरो वा विश्वम्भरकुलाय एवमेवैष प्राज्ञआत्मेदं शरीरमनुप्रविष्ट आलोमभ्य आनखेभ्यः — कौ. ब्रा. ४।१९

विश्वयोनिं महाशक्तिमायुःप्रज्ञाविवर्धनीम् । मातङ्गीं मदिरामोदां वन्दे तां जगदीश्वरीम् — वनदु. २१

विश्वरूपधरं विष्णुं नारायणमनामयम् ।...मनसा संस्मरन्ब्रह्म तुष्टाव परमेश्वरम् — रामो.जा. ५।१

विश्वरूपस्य देवस्य रूपं यत्किञ्चिदेव हि ।... ध्यायतो योगिनो यस्तु साक्षादेव प्रकाशते — त्रि.ब्रा. २।१५९

विश्वरूपं करिणं जातवेदसं(मा.पा.) — प्रश्नो. १।८

(ॐ) विश्वरूपं घृणिनं जातवेदसं हिरण्मयं पुरुषं ज्योतीरूपं तपन्तम् । [अक्ष्यु. २+ — चाक्षुषो. ४

विश्वरूपं तृतीयेऽह्नि सद्यश्चैव नमोनमः — मृत्युला. ४

विश्वरूपं परं ज्योतिस्स्वरूपं रूपवर्जितम् — गोपालो. २।५

विश्वरूपं हरिणं जातवेदसं परायणं ज्योतिरेकं तपन्तम् [प्रश्नो.१।८+ — मैत्रा. ६।८

विश्वरूपोऽसि, ब्रह्मैकस्त्वं — अ. शिर. ३।१

विश्वव्यापी राघवो यस्तदानीमन्तर्दधे शङ्खचक्रे गदाब्जे — रा. पू. ता.५।९

विश्वशास्ता विधरणो विश्वरूपो रुद्रः प्रणीतीतमनः प्रजापतिः — बा. मं. २४

विश्वश्च तैजसश्चैव प्राज्ञश्चेति
च ते त्रयः — योगकुं. ३।२१
विश्वश्च तैजसः प्राज्ञ एव च,
जीवत्रयं सत्त्वरजस्तमांसि
च गुणत्रयम् — वराहो. १।११
विश्वसृज एतेन वै विश्वमिदमसृजन्त — नृ. पू. १।७
विश्वस्य चक्षुर्विश्ववक्त्रोरुबाहुर्विश्व-
स्पतिर्भुवनस्यास्य गोप्ता — २ रुद्रो. ७७
विश्वस्य चैकां परिवेष्टयित्रीं ज्ञात्वा
गुह्यां शान्तिमत्यन्तमेति — गुह्यका. ५७
विश्वस्य नेता विश्वभर्ता त्वमीशस्तव
ज्ञानात् सर्वमेव ह विन्देत्... — २ रुद्रो. ६५
विश्वस्य योनिं प्रतपन्तमुग्रं पुरः
प्रजानामुदयत्येष सूर्यः — चाक्षुषो. ४
विश्वस्य वैखरी ज्ञेया मध्यमा
तैजसात्मनः। प्राज्ञरूपा हि
पश्यन्ती तुरीयस्य परा मता — गान्धर्वो. १
विश्वस्य स्रष्टारमनेकरूपं विश्वस्यैकं
परिवेष्टितारम्
[श्वेता. ४।१४,१६+५।१३+ — २ देव्यु. ३२
विश्वस्यात्वविवक्षायामादिसामान्य-
मुत्कटम् — आगम. १९
विश्वस्यादिरहं हरः — गणेशो. ३।१३
विश्वस्यायतनं महत् [कैव. १६+ — महाना. ९।७
विश्वस्येशानं वृषभं मतीनाम्
[महाना. १३।११+ — चित्त्यु. १५।१
विश्वस्यैकं परिवेष्टितारमीशं तं
ज्ञात्वाऽमृता भवन्ति — श्वेताश्व. ३।७
विश्वस्यैकं परिवेष्टितारं ज्ञात्वा देवं
मुच्यते सर्वपाशैः [श्वेताश्व. ४।१४+५।१३
विश्वस्यैकं परिवेष्टितारं ज्ञात्वा
शिवं शान्तिमत्यन्तमेति — श्वेताश्व. ४।१४
विश्वं च विश्वातीतस्त्वं..(शिवः) — २ रुद्रो. ४२
विश्वं तु हृदयं प्रोक्तं पृथिवी
पाद उच्यते — गुह्यका. १८
विश्वं त्वाहुतयः सर्वा यत्र
ब्रह्मामृतोऽसि — प्रा. हो. २।१
विश्वं नारायणं देवमक्षरं परमं पदम् — महाना. ९।१
विश्वं न्यस्तं विष्णुरेको विजज्ञे — ग. पू. २।८
विश्वं पुराणं तमसः परस्तात् — महाना. १।५
विश्वं बिभर्ति प्रभुरोऽभूदन्तं
संराजयन्तं सकलं प्ररूढं स नो
वितस्य प्रहिणोतु पथे स्वाहा — पारमा. ८।४
विश्वं बिभर्ति भुवनस्य नाभिः — महाना. १।६
विश्वं भूतं भुवनं चित्रं बहुधा जातं
जायमानं च यत्। सर्वो ह्येष
रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो नमः — महाना.१०।११
विश्वं भूतं भुवनं...सर्वस्य
सोमोऽहमेव जनिता विश्वाधिको
रुद्रो महर्षिः — भस्मजा. २।५
विश्वं यः पाति विमलोऽमलाख्य-
स्तस्मै ककुभे वरदस्य पुष्ट्यै स्वाहा — पारमा. ८।२
विश्वं विचक्षे यमयन्नभीके नेशे मे
कश्च महिमानमन्यः — बा. मं. १२
विश्वं हीषद्विष्णवे याः प्रभविष्णवे
वा अभितं भरत्रे स्वाहा — पारमा. ९।४
विश्वाय स्वाहेत्यग्नौ हुत्वा मन्थे
सं९ स्रवमवनयति — बृह. ६।३।२
विश्वाधारस्त्वमनाधारोऽनाधेयो-
ऽनिर्देश्योऽप्रतर्क्यः व्याप्येदं
सर्वं तिष्ठसीति — गणेशो. ३।१३
विश्वाधिकं शङ्करं ये प्रमूढा हीन
विष्णोर्ब्रह्मणो वा वदन्ति। न
संसारात्प्रमुच्यन्ते कदाचिच्छतैः
कल्पैः कोटिभिर्वाथ दोषैः — सि. शि. २
विश्वाधिपः सर्वभूतेषु गूढः — श्वेताश्व. ४।१५
विश्वाधिपो रुद्रो महर्षिः। हिरण्य-
गर्भं जनयामास पूर्वं स नो
बुद्ध्या शुभया संयुनक्तु — श्वेताश्व. ३।४
विश्वाधिपो रुद्रो महर्षिः। हिरण्य-
गर्भं पश्यति जायमानं — श्वेताश्व. ४।१२
विश्वानि देव सवितर्दुरितानि
परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव — महाना. १२।२
[ऋक्सं. ४।४।२५।५+ — त्रिसुप. २
विश्वानि नो दुर्गहा जातवेदः
सिन्धुं न नावा दुरितातिपर्षि
[महाना. ६।१६+वनदु. ११७+ — ऋक्सं.१।८।१९।९
विश्वामित्रं ह्येतदहः संशिष्यन्त-
मिन्द्र उपनिषसाद — १ ऐत. २।३।१
विश्वार्चिर्विश्वतोमुखः — महाना. ९।९

विश्वेदेवा अनुष्टुबेकविंशो वैराजः शरत्समानो वरुणः साध्या उत्तरत उद्यन्ति तपन्ति वर्षन्ति स्तुवन्ति... मैत्रा. ७।४
विश्वे देवा ऊर्जा चित्यु. ८।२
विश्वेदेवा औडोयिकारः प्रजापति-हिंकारः प्राणः स्वरोऽन्नं या वाग्विराट् छांदो. १।१३।२
विश्वे निमग्नपदवीः कवीनां त्वं जातवेदो भुवनस्य नाथः एका. उ. २
विश्वेश्वर नमस्तुभ्यं विश्वात्मा विश्वकर्मकृत्। विश्वभुग्विश्व-मायस्त्वं विश्वक्रीडारतिः प्रभुः मैत्रा. ५।३
विश्वेश्वरोऽहमजरोऽहम् भस्मजा. २।७
विश्वेऽश्विनौ मरुतश्चोष्मपाश्च भ. गी. ११।२२
विश्वोत्तीर्णस्वरूपाय चिन्मया-नन्दरूपिणे। तुभ्यं नमो हयग्रीव विद्याराजाय स्वाहा (विष्णवे) [हयग्री. १+ त्रि.म.ना.७।१०
विश्वोदराभिधा नाडी कन्दमध्ये व्यवस्थिता जा. द. ४।२३
विश्वोदराभिधायास्तु भगवा-न्पावकः पतिः जा. द. ४।३९
विश्वोदरी तु या नाडी सा भुङ्क्तेऽन्नं चतुर्विधम् यो. शि. ५।२३
विश्वो वैश्वानरः पुमान् ना. प. ८।११
विश्वोऽसि वैश्वानरो विश्वरूपं त्वया धार्यते जायमानम् प्रा. हो. २।१
विश्वोऽसि वैश्वानरोऽसि विश्वं त्वया धार्यते जायमानम्। विशन्तु त्वामाहुतयश्च सर्वाः प्रजास्तत्र यत्र विश्वामृतोऽसीति मैत्रा. ६।९
विश्वो हि स्थूलभुङ्नित्यं तैजसः प्रविविक्तभुक्। आनन्द-भुक्तथा प्राज्ञः सर्वसाक्षीत्यतः परः (त्रिधा भोगं निबोधत) [यो. चू. ७२+ आगम. ३
विषभागो रविः, अमृतभागश्चन्द्रमाः शांडि. १।४।६
विषमश्चित्तनिग्रहः महो. ४।२०
विषमिव विषयादीन्मन्यमानो दुरन्त्वा जगति परमहंसो वासुदेवोऽहमेव वराहो. २।३७
विषमे समुपस्थितम् भ. गी. २।२
विषयव्यावर्तनपूर्वकं चैतन्ये चेत-स्स्थापनं धारणं भवति मं. ब्रा. १।१
विषयं ध्यायतः पुंसो विषये रमते मनः यो. शि. ३।२४
विषयः स हि बुद्धानां तत्साम्य-मजमद्वयम् अलातशां. ८०
विषयानन्दवाञ्छामेमाभूदानन्दरूपतः आ. प्र. १६
विषयानिन्द्रियैश्चरन् भ. गी. २।६४
विषयानुपसेवते भ. गी. १५।९
विषया विनिवर्तन्ते भ. गी. २।५९
विषयाशीविषासङ्गपरिजर्जर-चेतसाम्। अप्रौढात्मविवेका-नामायुरायासकारणम् महो. ३।१०
विषयी विषयासक्तो याति देहान्तरे शुभम् ब्र. वि. ५०
विषये गच्छति प्राणश्चेष्टते वाग्वदत्यपि पो. ब्र. १३
विषयेन्द्रियसंयोगात् भ. गी. १८।३८
विषयेभ्य इन्द्रियार्थेभ्यो मनो-निरोधनं प्रत्याहारः मं. ब्रा. १।१
विषयेषु विचरतामिन्द्रियाणां बला-दाहरणं प्रत्याहारः शांडि. १।८।१
विषयेष्वरतिर्मोक्षे व्यवसायः परा धृतिः आयुर्वे. १६
विषयेष्वात्मतां दृष्ट्वा मनसश्चित्त-रञ्जकम्। प्रत्याहारः स विज्ञेयो-ऽभ्यसनीयो मुहुर्मुहुः ते. बिं. १।३४
विषं दृष्ट्वाऽमृतं दृष्ट्वा विषं त्यजति बुद्धिमान्। आत्मानमपि दृष्ट्वा-हमनात्मानं त्यजाम्यहम् आ. प्र. १८
विषं वर्षति सूर्योऽसौ स्रवत्यमृत-मुन्मुखः। तालुमूले स्थितश्चन्द्रः सुधां वर्षत्यधोमुखः यो. शि. ५।३३
विषं विषयवैषम्यं न विषं विषमुच्यते महो. ३।५४
विषादं मदमेव च भ. गी. १८।३५
विषादी दीर्घसूत्री च भ. गी. १८।२८

विषासहिर्ह भवति विषासहिर्हास्य प्रजा भवति — बृह. २।१।७
विषीदन्तमिदं वचः — भ. गी. २।१०
विषीदन्तमिदं वाक्यं — भ. गी. २।१
विषीदन्निदमब्रवीत् — भ. गी. १।२
विषुवायनकालेषु ग्रहणेचान्तरे सदा। वाराणस्यादिके स्थाने स्नात्वा शुद्धो भवेन्नरः — जा. द. ४।५५
विषेन्द्रः पुर एतु नः स्वस्तिदा अभयंकरः — महाना.१३।१७
विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नं — भ.गी. १०।४२
विष्ठाश्च मे भूयात् — चित्यु. ७।२
विष्ठितो मूत्रितो वाऽज्ञैवहुधैवं प्रकल्पितः। श्रेयस्कामः कृच्छ्रगत आत्मनाऽऽत्मानमुद्धरेत् — ना. प. ५।३९
विष्णुक्रान्तं वासुदेवं विजानन्विप्रो विप्रत्वं गच्छते तत्त्वदर्शी — शाट्याय. ४
विष्णुक्रीडा विष्णुरतयो विमुक्ता विष्णवात्मका विष्णुमेवापियन्ति — शाट्याय. ११
विष्णुग्रन्थेस्ततो भेदात्परमानन्दसम्भवः — सौभाग्य. ११
विष्णुचन्दनं वैकुण्ठस्थानादाहृत्य द्वारकायां मया प्रतिष्ठितम्। चन्दनकुङ्कुमादिसहितं विष्णुचन्दनं ममाङ्गे प्रतिदिनमालिप्तं गोपीभिः प्रक्षालनाद्गोपीचन्दनमाख्यातम् — वासुदे. २
विष्णुविष्यादिशताभिधानलक्ष्यम् — निर्वाणो. ३
विष्णुपत्नीं महीं देवीं — ऊर्ध्वपुं. १
विष्णुप्रपञ्चबीजं च माया ईकार उच्यते — सीतो. २
विष्णुभक्ता ज्ञानवैराग्ययुक्ता अनन्याश्रययुक्तास्तेऽपि तं मार्गं न जानन्ति — तारसार. २७
विष्णुमविष्णुं ज्वलन्तमज्वलन्तं... तमात्मानमात्मन्यहमनहं नृसिंहानुष्टुभैव बुबुधिरे — नृसिंहो. ६।१
विष्णुभजनरता नारायणोपासकाः श्रवणकीर्तनस्मरणवन्दनरता मत्स्यकच्छपवराहनृसिंहवामनपरशुरामोपासका वैष्णवास्तेऽपि तं लोकं न जानन्ति — तारसार. २७
विष्णुमुखा वै देवाश्छन्दोभिरिमाँल्लोकाननपजय्यमभ्यजयन् — महाना. ४।८
विष्णुमुरुक्रमं ब्रह्माणमुत प्रजापतिं दधामि — देव्यु. ३
विष्णुमेवाप्येति यो विष्णुमेवास्तमेति — सुबालो. ९।७
विष्णुरजीजनत् — बह्वृचो. १
विष्णुरुवाच–न मे शक्तिः — गणेशो. ३।१२
विष्णुरूपमिदं पुण्यं पावनं पीतवर्णकम् — गोपीचं. २६
विष्णुरूपे महायोगी पालयेदखिलं जगत् — यो. शि. ५।५१
विष्णुर्नाम महायोगी महाकायो महातपाः — २ यो. त. २
विष्णुर्नाम महायोगी महाभूतो महातपाः — १ यो.त. १२०
विष्णुर्यज्ञेन — चित्यु. ८।२
विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिंशतु। आसिञ्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते [ऋक्सं. ८।८।४२।१+ — बृह. ६।४।२१
विष्णुर्ललाटं रुद्रश्चक्षुषी चन्द्रादित्यौ कर्णौ...निमेषोऽहोरात्रमिति वाग्देवीं गायत्रीं शरणमहं प्रपद्ये — गायत्री. १०
विष्णुर्वराहो रजनी रहश्च — एका. उ. ६
विष्णुलोकान्तरं गत्वा विष्णुलोकात्परा गतिः — दुर्वासो. १।१५
विष्णुर्वरिष्ठो वरदानमुख्यः — पारमा. ५।४
विष्णुर्विश्वजगद्योनिः स्वांशभूतैः स्वकैः सह। ममांशसम्भवो भूत्वा पालयत्यखिलं जगत् — शरभो. २३
विष्णुहृदयम् — सहवै. २३
विष्णुलिङ्गं द्विधा प्रोक्तं व्यक्तमव्यक्तमेव च। तयोरेकमपि त्यक्त्वा पतत्येव न संशयः — शाट्याय. ९

विष्णुश्च भगवान्देवउकारःपरीकीर्तितः अ. वि. ६
विष्णुं ध्यायतु धीर्यद्वा ब्रह्मानन्दे विलीयताम् । साक्ष्यहं किञ्चिदप्यत्र न कुर्वे नापि कारये अवधू. २५
विष्णुं प्रथमान्त्यं मुखं द्वितीयान्तं भद्रं तृतीयान्तं म्यहं चतुर्थान्तं साम जानीयाद्यो जानीते सोऽमृतत्वं च गच्छति नृ. पू. उ. १।७
विष्णुः पाति जगत्त्रयम् ते. बि. ५।८७
विष्णुः सर्वेषामधिपतिःपरमःपुराणः पारमा. १।१
विष्णोर्नुकमिति मर्दयेत् [गोपीचं.३ +ऊर्ध्वपुं. २
विष्णोर्नुकं वीर्याणि प्रवोचं ना. पू. ता. ४।४
[+ऋक्सं. २।२।२४।१ वा. सं. ५।१८
विष्वक्पुनानः पर्येमि लोकम् बा. म. १७
विष्णोर्दास्यपरा भक्तिर्येषां तु न भवेत्कचित् । तेषामेव हि संसृष्टं निरयं ब्रह्मणा नृप भवसं. २।५८
विष्णोर्मोक्षप्रदत्वं च कथितं तु तृतीयया । एतावानिति मन्त्रेण वैभवं कथितं हरेः मुद्गलो. १।३
विष्णोर्यत्परमं पदं [नृ.पू.५।१६+ सुबालो. ६।२
[ऋक्सं. १।२।७।६+ पैङ्गलो. ४।२४
[वराहो.५।७८+स्कन्दो.१५+ आरुणि. ५
विष्वङ्ङन्या उत्क्रमणे भवन्ति कठो. ६।१६
विष्वक्प्रपञ्चेषु पुरीशयं स्थितं वेदान्तवाक्यैरपिष्टुड्यमाणः (अभिस्तूयमानः) २ देव्यु. २२
विसर्गः कर्मसंज्ञितः भ. गी. ८।३
विसर्जयितव्यमेवाप्येति यो विसर्जयितव्यमेवास्तमेति सुबालो. ९।८
विसृजामि पुनः पुनः भ. गी. ९।८
विसृज्य जीव एतान् देहाभिमानेन जीवो भवति ना. प. ६।४
विसृज्य यज्ञोपवीतं भूस्स्वाहेत्यप्सु जुहुयात् क. रु. ३
विसृज्य सशरं चापं भ. गी. १।४७
विसृज्यैमानि सर्वाणि त्वं प्रकाशयसे ततः गुह्यका. ३१
विस्तरेणात्मनो योगं भ. गी. १०।१८
विस्फुरत्तारकाकारगाढतमोपमं पराकाशं भवति मं. ब्रा. १।३
विस्मयो मे महान् राजन् भ. गी. १८।७७
विस्मृतजाग्रद्वासनानुफलेन तेजस्तेऽस्मीति मं. ब्रा. २।७
विस्रसाहैवास्माल्लोकात् प्रेतीति ह स्माह महिदास ऐतरेयः १ ऐत. ३।७।१
विस्मृतपदार्थं पुनः प्राप्तहर्ष इव... स्वशरीरं शवमिव हेयमुपगम्य ...दूरतो वसेत् ना. प. ७।१
विस्फुरत्तारकाकारसन्दीप्यमानागाढतमोपमं परमाकाशं भवति अद्वयता. ४
विस्मृतात्मपितामहम् (मनः) महो. ५।१३४
विस्मृत्य विश्वमेकाग्रः कुत्रचिन्नहि धावति । मनो मत्तगजेन्द्रस्य विषयोद्यानचारिणः ना. बिं. ४४
विस्मृत्य सकलं बाह्यं नादे दुग्धाम्बुवन्मनः । एकीभूयाथसहसा चिदाकाशे विलीयते ना. बिं. ३९
विहङ्गानां तुन्दमध्यम् । देहमध्यं नवाङ्गुलं चतुरङ्गुलमुत्सेधायतमण्डलाकृति शांडि. १।४।४
विहङ्गानां वृत्ताकारम् (अग्निस्थानं) तन्मध्ये शुभा तन्वी पावकी शिखा तिष्ठति शांडि. १।४।३
विहरञ्जनतावृन्दे देवपूजनकीर्तनैः । खेदाह्लादौ न जानाति प्रतिबिम्बगतैरिव अ. पू. ५।९९
विहाय कामान् यः सर्वान् भ. गी. २।७१
विहाय योगशास्त्राणि नानागुरुमतानि च । निबोध स्वावबोधोऽयं सद्यः प्रत्ययकारकः अमन. २।२५
विहाय शास्त्रजालानि यत्सत्यं तदुपास्यताम् पैङ्गलो. ४।१७
विहायस्युच्चकैः केचिन्निपतन्त्युत्पतन्ति च महो. ५।१४२
विहारशय्यासनभोजनेषु भ. गी. ११।४२
विहोत्रा दधे वयुना विदेक इन्मही देवस्य सवितुः परिष्टुतिः श्वेताश्व. २।४

वीक्षन्ते त्वा विस्मिताश्चैव सर्वे — भ. गी. ११।२२
वीक्ष्यमाणे प्रपञ्चे तु ब्रह्मैवा-
  भाति भासुरम् — यो. शि. ४।२०
वीक्ष्यमाणैव नश्यति (माया) — महो. ५।११२
वीणायास्तु ग्रहणेन वीणावादस्य
  वा शब्दो गृहीतः — बृह. ४।५।१०
वीणां करैः पुस्तकमक्षमालां
  बिभ्राणमभ्राभगलं वराढ्यम् ।
  फणीन्द्रकक्ष्यं मुनिभिः शुकाद्यैः
  सेव्यं वटाधः कृतनीडमीडे — द. मू. ११
वीतमन्युर्गौतमो माभिमृत्यो — कठो. १।१०
वीतरागभयक्रोधः — भ. गी. २।५६
वीतरागभयक्रोधाः — भ. गी. ४।१०
वीतरागभयक्रोधैर्मुनिभिर्वेदपारगैः ।
  निर्विकल्पो ह्ययं दृष्टः
  प्रपञ्चोपशमोऽद्वयः — वैतथ्य. ३६
वीतष्स्तुके स्तुके । युवमस्मासु
  नियच्छतम् — चित्यु. ११।१२
वीरभद्रगिरिशशङ्करैकपादहि-
  र्बुध्न्यादीना भुवनाधिपतिविशां-
  पतिपशुपतिस्थाणुभवाः पञ्चमे — सूर्यता. ५।१
वीरमवीरं महान्तममहान्तं...
  नृसिंहानुष्टुभैव बुबुधिरे — नृसिंहो. ६।१
वीरमित्याह वीरो वा एष
  वीर्यवत्त्वात् — अव्यक्तो. ३
(अथातो) वीरशक्तिश्चतुर्भुजा-
  ऽभयवरदपद्मधरा — सीतो. २८
वीरहत्यां वा एते घ्नन्ति । ये
  ब्राह्मणास्त्रिसुपर्णं पठन्ति
  [महाना. १२।३+ — त्रिसु. ३
वीरं द्वितीयं स्थानं (जानीयात्) — नृ. पू. २।३
वीरं प्रथमस्याद्यार्धान्त्यं तं स
  द्वितीयस्याद्यार्धान्त्यं हंभी
  तृतीयस्याद्यार्धान्त्यं मृत्युं
  चतुर्थस्याद्यार्धान्त्यं साम
  तु जानीयात् — नृ. पू. १।५
वीराध्वने वा अनाशके वा अपां
  प्रवेशे वा अग्निप्रवेशे वा
  महाप्रस्थाने वा — जाबालो. ५

वीरान्मा नो रुद्र भामिनोऽवधीर्ह-
  विष्मन्तः (नमसा विधेम ते)
  सदमित्त्वा हवामहे
  [श्वेताश्व. ४।२२+ — महाना. १३।१५
वीरो वा एष वीर्यवत्वात् — अव्यक्तो. ३
वीव पद्यत आर्तिमृच्छति — आर्षे. ६।३
वीव पद्यते प्रमीयते — आर्षे. ८।३
वीवयन्ति मिथुचेति विचक्षते — आर्षे. ८।१
वृक्ष आविर्मूलः शुष्यति स उद्वर्तत ।
  एवमेवानृतं वदन्नाविर्मूल-
  मात्मानं करोति — १ ऐत. ३।६।५
वृक्ष इव तिष्ठासेत् । छिद्यमानो न
  ब्रूयात् — शाट्याय. १८
वृक्ष इव स्तब्धो दिवि तिष्ठत्येक-
  स्तेनेदं पूर्णं पुरुषेण सर्वम्
  [महाना. ८।१३+ — श्वेताश्व. ३।९
वृक्ष इव स्तब्धा दिवि तिष्ठत्येका
  यदन्तः पूर्णामवगत्य पूर्णः — गुह्यका. ४६
वृक्षधर्मे तौ तिष्ठतः, अतो भोक्त-
  भोक्तारौ । पूर्वो हि भोक्ता
  भवति । तथेतरोऽभोक्ता
  कृष्णो भवतीति — गोपालो. १।११
वृक्षमिव तिष्ठासेत् च्छिद्यमानोऽपि
  न कुप्येत — सुबालो. १३।२
वृक्षमूलनिकेतो वा त्यक्तसर्व-
  प्रियाप्रियः (यतिः) — ना. प. ५।२४
वृक्षमूले शून्यगृहेश्मशानवासिनो
  वा साम्बरा वा दिगम्बरा वा । न
  तेषां धर्माधर्मौ...द्वैतवर्जिता
  समलोष्टाश्मकाञ्चनाः.. ...
  सर्वत्रात्मैवेति पश्यन्ति — भिक्षुको. ५
वृक्षं तु सकलं विद्याच्छाया
  तस्यैव निष्कला । सकले
  निष्कले भावे सर्वत्रात्मा
  व्यवस्थितः — ध्या. बि. ८
वृजिनं संतरिष्यसि — भ. गी. ४।३६
वृत्तमष्टदलं तृतीयं, चतुर्थं द्वादश-
  दलम् ।...एवं यंत्रं समालिखेत् — ना. पू. ६।१

वृत्तमादौ विलिख्य साष्टपत्रं तत- त्रिकोणं वृत्तं षडस्रं वृत्तयुगलं सायुकोणं समालिखेदिति — सूर्यता. ५।१

वृत्तयश्चत्वारः–मनो बुद्धिरहङ्कार- श्चित्तं चेति — ना. प. ५।११

वृत्तयस्तु तदानीमप्यज्ञाता आत्म- गोचराः । स्मरणादनुमीयन्ते व्युत्थितस्य समुत्थिताः — अध्यात्मो. ३६

वृत्तं विहंगमानां तु षडस्रं सर्प- जन्मनाम् । अष्टास्रं स्वेदजानां तु तस्मिन्दीपवदुज्ज्वलम् — त्रि. ब्रा. २।५७

वृथा न छिन्द्यात् । दृष्ट्वा प्रदक्षिणं कुर्यात् (तुलसीं) — तुलस्यु. २

वृद्धायां मोहमायायां कः समा- श्वासवानिह — महो. ५।१६८

वृद्धावृद्धयोरवृद्धं, कष्टाकष्टयोर- कष्टमित्येवं स्तोत्र्यतमं भवति — संहितो. ३।३

वृद्धो वसूनि पुरोवाच पुत्रेभ्यः परमं निधिम् — इतिहा. ९९

वृन्दा भक्तिः क्रिया बुद्धिः सर्व- जन्तुप्रकाशिनी — कृष्णोप. २५

वृश्चिका दर्शनं यान्ति निराशाः पितरो गताः — इतिहा. ९२

वृषणापानयोर्मध्ये पाणी आस्थाय संश्रयेत — क्षुरिको. १८

वृषणौ हृष्टसुपर्णौ — निरुक्तो. २।१

वृषलीपतिभुक्तानि श्राद्धानि च हवींषि च । पितरौ न प्रति- गृह्णन्ति दाता स्वर्गं न गच्छति — इतिहा. ६८

(ॐ) वृषादर्विकुलꣳ ह वै शिबिकुलं बभूव — इतिहा. १

वृषा पवित्रे अधि सा नो अव्ये बृहत्सोमो वावृधे सुवान इन्दुः — महाना. ६।१०

वृषेन्द्रः पुर एतु नः स्वस्तिदा अभयङ्करः — महाना. ५।२

वृष्टिः सन्धिः, पर्जन्यः सन्धाता — ३. ऐत. १।३।१

वृष्टेरन्नं ततः प्रजाः — मैत्रा. ६।३७

वृष्टौ पञ्चविधं सामोपासीत — छांदो. २।३।१

वृष्णीनां वासुदेवोऽस्मि — भ. गी. १०।३७

वेणुनादविनोदाय गोपालाया हि- मर्दिने । कालिन्दीकूललोलाय लोलकुण्डलधारिणे ।। बल्लवी- वदनाम्भोजमालिने नृत्तशालिने । नमः प्रणतपालाय श्रीकृष्णाय... — गो. पू. ४।९

वेत्ताऽसि वेद्यं च परं च धाम — भ. गी. ११।३८

वेत्ति यत्र न चैवायं — भ. गी. ६।२१

वेत्ति लोकमहेश्वरम् — भ. गी. १०।३

वेत्ति सर्वेषु भूतेषु — भ. गी. १८।२१

वेत्थ त्वं पुरुषोत्तम — भ. गी. १०।१५

वेत्थ नु त्वं काप्य तत्सूत्रं, येनायं च लोकः परश्च लोकः सर्वाणि च भूतानि सन्दृब्धानि भवन्ति — बृह. ३।७।१

वेत्थ नु त्वं काप्य तमन्तर्यामिणं य इमं च लोकं परं च लोकꣳ सर्वाणि च भूतानि योऽन्तरो यमयतीति — बृह. ३।७।१

वेत्थ पथोर्देवयानस्य पितृयाणस्य च व्यावर्तना ३ इति — छांदो. ५।३।२

वेत्थ यदितोऽधि प्रजाः प्रयन्तीति... — छांदो. ५।३।२

वेत्थ यथा पञ्चम्यामाहुतावापः पुरुषवचसो भवन्तीति... — छांदो. ५।३।३

वेत्थ यथा पुनरावर्तन्ता ३ इति — छांदो. ५।३।२

वेत्थ यथाऽसौ लोको न सम्पूर्यत ३ इति — छांदो. ५।३।३

वेत्थ यथेमाः प्रजाः प्रयत्यो विप्रतिपद्यन्ता ३ इति — बृह. ६।२।२

वेत्थ यथेमाः प्रजाः प्रयन्त्यः विप्रतिपद्यन्ता ३...(मा. पा.) — बृह. उ. ६।२।२

वेत्थो यतिथ्यामाहुत्याꣳ हुतायां- मापः पुरुषवाचो भूत्वा समुत्थाय वदन्ती ३ इति — बृह. ६।२।२

वेत्थो यथाऽसौ लोकं एवं बहुभिः पुनः पुनः प्रयद्भिर्नसम्पूर्यता३इति — बृह. ६।२।२

वेत्थो यथेमं लोकं पुनरापद्यन्ता ३ इति ...(मा. पा.) — बृह. उ. ६।२।२

वेत्थो देवयानस्य वा पथः प्रतिपदं पितृयाणस्य वा यत्कृत्वा देवयानं वा पन्थानं प्रतिपद्यन्ते पितृयाणं वापि — बृह. ६।२।२

वेद एव परं ज्योतिः ब्रह्मो. १
वेदतत्त्वार्थविहितं यथोक्तं हि स्वयम्भुवा । निःशब्दं देशमास्थाय तत्रासनमवस्थितः ॥... मात्राद्वादशयोगेन प्रणवेन शनैः शनैः ॥ पूरयेत्सर्वमात्मानं.. क्षुरिको. २
वेदनानामधिष्ठानं मनो देहश्च सेन्द्रियः आयुर्वे. ८
वेदपुरुष इति यमवोचाम येन वेदान्वेद ३ ऐत. २।३।१
वेदपुरुषा इमे गोपाः सामर. ३२
वेदमनुब्रुवीत सर्वमायुरियादिति बृह. ६।४।१४
वेदमनूच्याचार्योऽन्तेवासिनमनुशास्ति तैत्ति. १।११।१
वेदलौकिकमार्गेषु कुत्सितं कर्म यद्भवेत् । तस्मिन्भवति या लज्जा ह्रीः सैवेति प्रकीर्तिता जा. द. २।१०
वेद वा अहं गौतम तत्सूत्रं तं चान्तर्यामिणम् बृह. ३।७।१
वेद वा अहं तं पुरुषꣳ सर्वस्यात्मनः परायणं यमात्थ.. [बृह. ३।९।१०,११, १२–१७
वेदवादरताः पार्थ भ. गी. २।४२
वेदवेदान्तयोर्गुह्यं पुराकल्पे प्रचोदितम् गुह्यका. ७५
वेदशास्त्रपुराणानि भूतानि सकलान्यपि । येनार्थवन्ति तं किंतु विज्ञातारं प्रकाशयेत् २ आत्मो. ९
वेदशास्त्रपुराणानि सामान्यगणिका इव अमन. २।९
वेदशास्त्रैरुपास्यमानो न च वेदशास्त्राण्युपास्यति सुबालो. ५।१५
वेदस्यमध्माणीस्थः, श्रुतं मे.. २ ऐत. शां.पा.
वेदस्वरूपोऽनुदितः सपर्यास्त्रिष्ठानि तच्चन्दनतद्दलानि १ बिल्वो. ७
वेदः शिखा (यज्ञस्य) महाना. १८।१
वेदा अवेदाः (भवन्ति) बृह. ४।३।२२
वेदा इति वेदविदो यज्ञा इति च तद्विदः वैतथ्य. २२

वेदाक्षराणि यावन्ति पठितानि द्विजोत्तमैः । तावन्ति हरिनामानि कीर्तितानि न संशयः ना.उ.ता. ३।४
वेदात्मनाय विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि । तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात् [महाना. ३।७+ वनदु. १३५
वेदादिशास्त्रहिंसकधर्माभिध्यानमस्त्विति वदन्ति मैत्रा. ७।९
वेदादेव विनिर्मोक्षः संसारस्य न चान्यथा । इति विज्ञाननिष्पत्तिर्धृतिः प्रोक्ता हि वैदिकैः जा. द. १।१८
वेदाध्यायीति यो विप्रः सततं ब्राह्मणः स्थितः । साचारः साग्निहोत्री च सोऽग्निर्वै कव्यवाहनः इतिहा. ५२
वेदानधीत्यानुज्ञात उच्यते गुरुणाऽऽश्रमी कुण्डिको. १
वेदानां वेदं पित्र्यꣳ राशिं... सर्पदेवजनविद्यामेतद्भगवोऽध्येमि छांदो. ७।१।२
वेदानां सामवेदोऽस्मि भ.गी. १०।२२
वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम् [कैव.२२+ भ.गी. १५।१५
वेदान्तविज्ञानसुनिश्चितार्थाः सन्न्यासयोगाद्यतयः शुद्धसत्त्वाः [मुण्ड.३।२।६+महाना.८।१५+ भवसं. ३।३३
वेदान्तवेद्यं शिवमप्रमेयम् १ बिल्वो. १०
वेदान्तश्रवणपूर्वकं प्रणवानुष्ठानं कुर्वन् ब्रह्ममार्गे सम्यक्सम्पन्नः ...भैक्षमाणो ब्रह्मभूयाय भवति प. हं. प. ६
वेदान्तसारभूतसिद्धान्तानन्तस्कन्धैर्विराजितं महावाक्यार्थस्वरूपानन्तशाखासमन्वितम् सि. सा. ६
वेदान्ताभ्यासनिरतः शान्तो दान्तो जितेन्द्रियः ना. प. ६।२९
वेदान्ते परमं गुह्यं पुराकल्पप्रचोदितम् । नाप्रशान्ताय दातव्यं (नापुत्रायाशिष्याय वा पुनः) न चाशिष्याय वै पुनः [श्वेता. ६।२२+ अ. पू. ५।११९

वेदाभ्यासस्तपो ज्ञानमिन्द्रियाणां च संयमः । अहिंसा गुरुसेवा च निःश्रेयसकरं परम् — भवसं. ५।८

वेदा महर्त्विजः (शारीरयज्ञस्य) — प्रा. हो. ४।१

वेदा वा एते अराः — नृ. पू. ५।६

वेदा वाचः स्यन्दमाना नदा नद्योऽमिता मताः । कलाः काष्ठा मुहूर्ताश्च ऋतवोऽयनमेव च — गुह्यका. २०

वेदाविनाशिनं नित्यं — भ. गी. २।२१

वेदास्तं परादुर्योऽन्यत्रात्मनो वेदान्वेद — बृह. ४।५।७

वेदाहमितिमन्त्राभ्यांवैभवंकथितंहरेः — मुद्गलो. १।८

वेदाहमेतमजरं पुराणं सर्वात्मानं सर्वगतं विभुत्वात् । जन्मनिरोधं प्रवदन्ति यस्य ब्रह्मवादिनो हि प्रवदन्ति नित्यम् — श्वेताश्व. ३।२१

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात् । तमेव विदित्वाऽतिमृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय — श्वेता. ३।७

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम् । आदित्यवर्णं तमसः परस्तात् । तमेवं विद्वानमृत इह भवति — त्रि.म.ना. ४।३

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात् । यस्य योनिं परिपश्यन्ति धीरास्तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु — २ शिवसं. १५

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसस्तु पारे । सर्वाणि रूपाणि विचित्य धीरः नामानि कृत्वाभिवदन्यदास्ते [पारमा.७।५ — +चित्यु. १२।७

वेदाहं समतीतानि — भ. गी. ७।२६

वेदा हि रसाः — छांदो. ३।५।४

वेदा ह्यमृतास्तेषामेतान्यमृतानि — छांदो. ३।५।४

वेदांश्च सर्वान् प्रहिणोति चाग्र्यं तं वै प्रभुं पितरं देवतानाम् — शरभो. ३

वेदाः प्राणा भगवतो वासुदेवस्य वै हरेः । तदुक्तकर्माकुर्वाणो प्राणहर्ता भवेद्धरेः — भवसं. १।३९

वेदाः सर्वाङ्गानि सत्यमायतनम् — केनो. ४।८

वेदाः स्वऋचाभिस्तस्मिन्स्थाने तस्या निकुञ्जदेव्यायशोगायन्ति — सामर. १०

वेदिकाकारवद्भूमो बलवान्भूतमारुतः । स्मर्तव्यः कुम्भकेनैव प्राणमारोप्य मारुतम् — त्रि.ब्रा. २।१४०

वेदेषु यज्ञेषु तपस्सु चैव — भ. गी. ८।२८

वेदैरनेकैरहमेव वेद्यो वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम् — कैव. २२

वेदैरशून्यस्त्रिभिरेति सूर्यः — सूर्यता. १.५

वेदैर्न तर्कोक्तिभिरागमैश्च नानाविधैः शास्त्रकदम्बकैश्च । ध्यानादिभिः सत्करणैर्न गम्यं चिन्तामणिं स्वैकगुरुं विहाय — अमन. २।३९

वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यः — भ.गी. १५।१५

वेदोक्तेन प्रकारेण कृच्छ्रचान्द्रायणादिभिः । शरीरशोषणं यत्तत्तप इत्युच्यते बुधैः — जा. द. २।३

वेदोक्तेन प्रकारेण विना सत्यं तपोधन । कायेन मनसा वाचा हिंसाऽहिंसा न चान्यथा — जा. द. १।७

वेदो यं ब्राह्मणा विदुर्वेदैनेन यद्वेदितव्यम् — बृह. ५।१।१

वेदोऽहंमवेदोऽहम् — देव्यु. १

वेद्यं पवित्रमोङ्कारः — भ. गी. ९।१७

वेद्योऽहमागमान्तैराराध्यः सकलभुवनहृद्योऽहम् — आ. प्र. ९

वेनस्तत्पश्यन् विश्वा भुवनानि विद्वान् यत्रविश्वंभवत्येकनीडम् — महाना. २।३

वेपथुश्च शरीरे मे — भ. गी. १।२९

(अथ) वेशान्तान् पुष्करिणीः स्रवन्तीः सृजते... — बृह. ४।३।१०

वेद्यंसमुद्धरेन्नित्यंसत्यसन्धानमानसः — वराहो. ५।५६

वैकुण्ठस्थानोद्भवं मम प्रीतिकरं मद्भक्तैर्ब्रह्मादिभिर्धारितं विष्णुचन्दनं...गोपीभिः प्रक्षालनाद्गोपीचन्दनमाख्यातं...मुक्तिसाधनं भवति [वासुदे. २+ — गोपीचं. १

वैकुण्ठः साकारो नारायणःसाकारश्च — त्रि.म.ना. ३।१

वैखरी सर्वविद्यासु प्रशस्ता ना.पू.ता. ५।८
वैखर्यां विकसीकृता योगकुं. ३।१९
वैखानसऋषेः पूर्वं विष्णोर्वाणी समुद्भवेत्। त्रयीरूपेण सङ्कल्प्य इत्थं देही विजृम्भते सीतो. २३
वैखानसमतस्तस्मिन्नादौ प्रत्यक्षदर्शनम्। स्मर्यते मुनिभिर्नित्यं वैखानसमतः परम् सीतो. १७
वैखानसाऔदुम्बरावालखिल्यःफेनपाः आश्रमो. ३
वैणवं दण्डं कौपीनं परिग्रहेत् आरुणि. ३
वैतथ्यं सर्वभावानां स्वप्न आहुर्मनीषिणः वैतथ्य. १
वैदिकेषु च सर्वेषु श्रद्धा या सा मतिर्भवेत् जा. द. २।१०
वैद्युतः सन्धानम् तै. उ. १।३।४
वैद्युतादिमयं तेजो मधुरादिमयो रसः। तेजोरसविभेदैस्तु वृत्तमेतच्चराचरम् बृ. जा. २।४
वैनतेयश्च पक्षिणाम् भ. गी. १०।३०
वैयाघ्रपद्य कं त्वमात्मानमुपास्से छांदो. ५।१४।१
वैरम्भमेवाप्येति यो वैरम्भमेवास्तमेति सुबालो. ९।६
वैराग्यजनकं श्रद्धाकलत्रं ज्ञाननन्दनम् (न त्यजेत्) मैत्रे. २।२३
वैराग्यतैलसम्पूर्णे भक्तिवर्तिसमन्विते। प्रबोधपूर्णपात्रे तु ज्ञप्तिदीपं विलोकयेत् द. मू. १७
वैराग्यमरणिं कृत्वा ज्ञानं कृत्वा तु चित्रगुम्। गाढतामिस्रसंशान्त्यै गूढमर्थं निवेदयेत् द. मू. १८
वैराग्यसन्न्यासी ज्ञानसन्न्यासी ज्ञानवैराग्यसन्न्यासी कर्मसन्न्यासीति चातुर्विध्यमुपागतः १ सं.सो. २।१३
वैराग्यसन्न्यासो ज्ञानसन्न्यासो ज्ञानवैराग्यसन्न्यासः कर्मसन्यासश्चेतिचातुर्विध्यमुपागतः ना. प. ५।२
वैराग्यस्य फलं बोधो बोधस्योपरतिः फलम्। स्वानन्दानुभवाच्छान्तिरेषैवोपरतेः फलम् अध्यात्मो. २८
वैराग्यं चन्दनं स्मृतम् शिवो. १।२६
वैराग्यं समुपाश्रितः भ.गी. १८।५२
वैराग्यात्पूर्णतामेति मनो नाशवशानुगम्। आशया रक्ततामेति शरदीव सरोऽमलम् महो. ६।७५
वैराग्याद्बुद्धिविज्ञानाविर्भावो भवति त्रि.म.ना. ५।४
वैराग्येण च गृह्यते भ. गी. ६।३५
वैराग्येणाथ शास्त्रेण महत्त्वादिगुणैरपि। यत्सङ्कल्पहरार्थं तत्स्वयमेवोन्नयन्मनः महो. ६।७४
वैराजः शरत्समानो वरुणः साध्या उत्तरत उद्यन्ति तपन्ति वर्षन्ति मैत्रा. ७।४
वैराजात्मोपासनया सञ्जातज्ञानवह्निना। दग्ध्वा कर्मत्रयं योगी यत्पदं याति तद्भजे ना. ब्रि. शीर्षकं
वैरूपवैराजे शाक्वररैवते कौ. त. १।५
वैवस्वतो नो अभयं कृणोतु महाना. १३।७
वैश्यकर्म स्वभावजम् भ.गी. १८।४४
वैशारद्यं तु वै नास्ति भेदे विचरतां सदा अलातशां. ९४
वैश्वानराय प्रतिवेदयाम इत्युपतिष्ठेत, यदर्वाचीनमेनो भ्रूणहत्यायास्तस्मान्मोक्ष्यध्वे सहवै. ११
वैश्वानराय प्रतिवेदयामो यदीनृणᳪ सङ्गरो देवतासु सहवै. ९
वैश्वानराय रथम् चित्यु. १०।४
वैश्वानराय विद्महे लालीलाय धीमहि। तन्नो अग्निः प्रचोदयात् [महाना. ३।११+ वनदु. १३९
वैश्वानरःकालमृत्यूजिह्वात्रयमिदंस्मृतम् गुह्यका. २२
वैश्वानरः पवयान्नः पवित्रैः सहवै. ९
वैश्वानरः प्रत्नथा नाकमारुहत् चित्यु. १०।४
वैश्वानरः प्रविशत्यतिथिर्ब्राह्मणो गृहान्। तस्यैताᳪ शान्तिं कुर्वन्ति हर वैवस्वतोदकम् कठो. १।७
वैश्वानरीं निर्वपेत् कठश्रु. ३
वैश्वानरेष्टिं निर्वपेत्सर्वस्वं दद्यात् १ सं.सो. १।२
वैश्वानरोऽप्यन्यत्राप्युक्तं, अयमग्निर्वैश्वानरः... मैत्रा. २।८

वैश्वानरो मे दब्धस्तनूपा अव-
बाधतां दुरितानि विश्वा सह्वै. ८
वैश्वानरोवासुदेवोविश्वतश्चक्षुरस्म्यहम् ब्र. वि. १०३
वैष्णवकलायुक्तां मातृकायुक्तां
वैष्णवीं न्यसेत् षोढोप. २
वैष्णवं धाम दिव्यगणोपेतं विद्रुम-
वेदिकामणिमुक्तागणाचितं लक्ष्म्यु. १
वैष्णवं पञ्चव्याहृतिमयं मन्त्रं
कृष्णावभासकं कैवल्यस्य
सृत्यै सततमावर्तयेत् गो. पू. ३।१२
वैष्णवी ब्रह्मनाडी च निर्वाण-
प्राप्तिपद्धतिः त्रि. ब्रा. २।६९
वैष्णवीं विष्णुवल्लभां मृत्युजन्म-
निबर्हणीं...घ्राणतर्पणादन्तर्मल-
नाशिनीं (तुलसीं) य एवं वेद
स वैष्णवो भवति तुलस्यु. २
वैष्णवो धर्महीनोऽपि याति विष्णोः
परं पदम् भवसं. ५।२३
व्यक्तमध्यानि भारत भ. गी. २।२८
व्यक्तमव्यक्तं वा विधृतं विष्णुलिङ्गं
त्यजन् शुद्धयेदखिलैरात्मभासा शाट्याय. २६
व्यक्तं वै विश्वं चराचरात्मकम् अव्यक्तो. ४
व्यक्तं सर्वमुमारूपमव्यक्तंतुमहेश्वरम् रुद्रहृ. १०
व्यक्ताव्यक्तगिरः सर्वे वेदाद्या
व्याहरन्ति याम् । सर्वकामदुघा
धेनुः सा मां पातु सरस्वती सरस्व. १९
व्यक्ताव्यक्तं भरते विश्वमीशः श्वेताश्व. १।८
व्यक्ताव्यक्तो ब्रह्माब्रह्माऽहं अ. शिरः. १
व्यञ्जनं निष्फलं ब्रह्म प्राणो
मात्रेति च स्वरः रामर. ५।५
व्यञ्जनैरेव रात्रीराप्नुवन्ति,
स्वरैरहानि १ ऐत. २।४।३
व्यञ्जनैः स्वरसंयोगं विद्धि
तत्प्राणयोजनम् रामर. ५।६
व्यतिरिक्तजडंसर्वंस्वप्नवच्चविनश्यति स्कन्दो. ३
व्यतिषिक्ता वा इमे लोकास्तस्मा-
द्व्यतिषिक्तान्यङ्गानि भवन्ति नृ. पू. २।२
व्यपगतकलनाकलङ्कशुद्धः स्वयम-
मलात्मनि पावने पदेऽसौ ।
सलिलकण इवाम्बुधौ महात्मा
विगलितवासनमेकतां जगाम महो. २।७७
व्यपेतभीः सुमनाः पुनस्त्वं भ.गी. ११।४९
व्यवधानवशादेव 'हंसः सोऽहं'
इति मन्त्रेणोच्छ्वासनिश्श्वास-
व्यपदेशेनानुसन्धानं करोति ना. प. ६।७
व्यवसायात्मिका बुद्धिः [भ.गी. २।४१+२।४४
व्यवहारमिदं सर्वं मा करोतु
करोतु वा अ. पू. २।१०
व्याकरणोऽस्याः प्रथमःशीर्षो भवति गायत्री. ३
व्याकुलितमनसोऽन्धाः खञ्जाः
कुब्जा वामना भवन्ति गर्भो. ३
व्याख्याने तत्समाप्तौ च सम्प्रश्ने
स्नानभोजने । भुक्त्वा च
शयनेस्वप्नेनमस्कुर्यात्सदा गुरुम् शिवो. ७।७
व्याघ्रबुद्ध्या विनिर्मुक्तो बाणः
पश्चात्तु गोमतौ । न तिष्ठति
भिनत्त्येव लक्ष्यं वेगेन निर्भरम् अध्यात्मो. ५४
व्याघ्रचर्मासने स्थित्वा स्वस्तिका-
द्यासनक्रमात् ॥...मातृका-
मालया मन्त्री मनसैव मनुं जपेत् रामर. ४।५
व्याघ्रमुखसर्ववृश्चिकाग्निज्वालाविषं
निर्गमय निर्गमय... लाङ्गूलो. ८
व्याघ्रो वा शरभो वाऽपि गजो
गवय एव वा । सिंहो वा
योगिना तेन म्रियन्ते
हस्तताडिताः १यो.त.५९।६०
व्याचक्षतां ते शास्त्राणि वेदान-
ध्यापयन्तु वा । येऽत्राधिका-
रिणो मे तु नाधिकारो-
ऽक्रियत्वतः १ अवधू. १३
व्याधिरग्निर्जलं शस्त्रं बुभुक्षाश्चा-
पदो विषम् । ज्वरश्च मरणं
जन्तोरुच्चाच्च पतनं तथा ॥
निर्माणे यस्य यद्दृष्टं तेन
गच्छन्ति हेतुना भवसं. १।१३

व्याचक्षाणस्य तु मे निदिध्यासस्व [बृ. उ. २।४।४+ ४।५।५
व्यात्ताननं दीप्तहुताशनेत्रं भ. गी. ११।२४
व्याधिशोकगणे घोरे ममत्वं हि शरीरके दुर्वासो. २।९
व्याधीयन्ते प्राणा अन्नं कनीयो भविष्यति छांदो. ७।१०।१
व्यानमेवाप्येति यो व्यानमेवास्तमेति सुबालो. ९।३
(अथ खलु) व्यानमेवोद्गीथमुपासीत छांदो. १।३।३
व्यानः प्रस्तोता (शारीरयज्ञस्य) प्रा. हो. ४।१
व्यानः श्रोत्राक्षिमध्ये च ककुद्भ्यां गुल्फयोरपि । प्राणस्थाने गले चैव वर्तते मुनिपुङ्गव जा. द. ४।२८
व्यानः श्रोत्रोरुकट्यां च गुल्फस्कन्धगलेषु च । नागादिवायवः पञ्च त्वगस्थ्यादिषु संश्रिताः त्रि. ब्रा. २।८२
व्यानः सर्वेषु चाङ्गेषु व्याप्य तिष्ठति सर्वदा अ. ना. ३६
(ॐ) व्यानात्मने ॐ तत्सद्भूर्भुवः सुवस्तस्मैवैव्यानात्मनेनमोनमः गोपालो. ३।६
व्याने तृप्यति श्रोत्रं तृप्यति छांदो. ५।२०।२
व्यानो दक्षिणः पक्षः तैत्ति. २।२
व्यानो विवादकृत्प्रोक्तो मुने वेदान्तवेदिभिः जा. द. ४।३२
व्यानो ह्यर्चिस्समप्रभः अ. ना. ३८
व्यापकतया जगद्व्याप्य तिष्ठति यत्तद्ब्रह्म वदन्तितराम् सामर. १
व्यापको हि भगवान् बटुको भोगायमानो यदा शेते रुद्रस्तदा संहरते प्रजाः बटुको. २७
व्यापको हि भगवान् रुद्रो भोगायमानो यदा शेते रुद्रस्तदा संहार्यते प्रजाः अ. शिरः.३।१५
व्यापनाद्व्यापी महादेवः अ. शिखो. २
व्याप्तं त्वयैकेन दिशश्च सर्वाः भ.गी. ११।२०
व्याप्यव्यापकता मिथ्या सर्वमात्मेति शासनात् । इति ज्ञाते परे तत्त्वे भेदस्यावसरः कुतः यो. शि. ४।४
व्याप्यव्याप्यं यतः सर्वं तं वै पश्यन्ति सूरयः भवसं. ३।४
व्याप्येदं सर्वं तिष्ठसीति गणेशो. ३।१३
व्यामिश्रेणैव वाक्येन भ. गी. ३।२
व्यावहारिकदृष्टिस्तु प्रकाशाव्यभिचारतः पा. ब्र. २४
व्यावहारिकदृष्ट्येयं विद्याविद्या न चान्यथा पा. ब्र. २३
व्यासप्रसादाच्छ्रुतवान् भ.गी. १८।७५
व्याहृतित्रयमकारोकारमकारेषु प्रविलाप्य...तत्त्वमस्यादिवाक्यार्थस्वरूपानुसन्धानं कुर्वन्नुदीचीं दिशं गच्छेत् प. हं. प. ५
व्याहृतिं जागतं छन्दः...,दर्शनमितीन्द्रियाण्यन्वभवन् २ प्रणवो. ३
व्याहृत्या गायत्र्यभवत् गायत्रीर. १
व्युत्थितस्य भवत्येषा समाधिस्थस्य चानघ । ज्ञस्य केवलमज्ञस्य न भवत्येव बोधजा अ. पू. १।२६
व्यूढं दुर्योधनस्तदा भ. गी. १।२
व्याहरन् मामनुस्मरन् भ. गी. ८।१३
व्यूढां द्रुपदपुत्रेण भ. गी. १।३
व्येव त्वा ज्ञपयिष्यामीति बृह. २।१।१५
व्येव त्वा ज्ञापयिष्यामि(मा.पा.) बृह. २।१।१५
व्योमज्वलनेन्दिराकलाबिन्दुमेलनरूपा तारोप. २
व्योमपञ्चकलक्षणं विस्तरेणानुब्रूहि मं. ब्रा. ४।१
व्योमपुष्पं सुगन्धकम् ते. बिं. ५।९७
व्योमरन्ध्रगतो नादो ध्या. बिं. १०३
व्योमवृत्तं च धूम्रं च हकाराक्षरभासुरम् १ यो. त. ९८
(अथ)व्योमानिलानलजलान्नानां पञ्चीकरणम् त्रि. ब्रा. १।६
व्योम्नि मारुतमारोप्य कुम्भकेनैव यत्नवान् त्रि.ब्रा. २।१४२
व्योम्नि व्योम न लक्षयेत् मैत्रा. ४।१६
व्योम्न्यात्मा सम्प्रतिष्ठितः(पा.मा.) मुण्डको. २।२।७
व्रजमण्डले गोवर्धनो गिरिरास्ते सामर. ९५

व्रजस्त्रीकृष्णसम्भूतः श्रुतिभ्यो ज्ञानसङ्गतः गोपालो. २।१८
व्रतमेतच्छाम्भवं सर्वेषु (देवेषु) वेदेषु वेदवादिभिरुक्तं भवति [का. रुद्रो. ३+ जाबाल्यु. ७
व्रतयज्ञतपोदानहोमस्वाध्याय-वर्जितम् । सत्यशौचपरिभ्रष्टं सन्न्यासं नैव कारयेत् १ सं. सो. २।५
व्रतं नाम वेदोक्तविधिनिषेधा-नुष्ठाननैयत्यम् शांडि. २।१
व्रतान्न प्रमदितव्यम् भस्मजा. २।८
व्रात्यस्त्वं प्राणैकऋषिरत्ता विश्वस्य सत्पतिः प्रश्नो. २।११
व्रात्यस्यापि गृहे भिक्षेच्छ्रद्धाभक्ति-पुरस्कृते १सं.सो. २।६४
व्रीहियवास्तिलमाषा अणुप्रियङ्गवो गोधूमाश्च मसूराश्च खल्वाश्च खलकुलाश्च तान्पिष्टान्दधनि मधुनिघृतउपषिञ्चत्यास्य जुहोति बृह. ६।३।१३
व्रीहेर्वा यवाद्वा सर्षपाद्वा श्यामाका-द्वा श्यामाकतण्डुलाद्वा एष म आत्मान्तर्हृदये ज्यायान् पृथिव्या ज्यायानन्तरिक्षाज्ज्यायान्दिवो ज्यायानेभ्यो लोकेभ्यः छांदो. ३।१४।३

श

(भगवन्) शकटमिवाचेतनमिदं शरीरं कस्यैष खल्वीदृशोमहि-मातीन्द्रियभूतस्य येनैतद्विधमिदं चेतनवत्प्रतिष्ठापितम् मैत्रा. २।३
शफाः खुरा इत्यन्येषां पशूनां तदूर्ध्वमुदसर्पत् । ता ऊरू अभवताम् १ऐत. १।४।१
शकुनवन्तं चेन्मन्येत प्राणवंशं समर्थां २... ३ ऐत. १।४।१
शक्तिद्वयं हि मायाया विक्षेपा-वृत्तिरूपकम् सरस्व. ४१
शक्तिः कुण्डलिनी नाम बिसतन्तु-निभा शुभा योगकुं. १।८२
शक्तिमध्ये मनः कृत्वा शक्तिं मानसमध्यगाम् । मनसा मन आलोक्य शाण्डिल्य त्वं सुखी भव शांडि. १।७।१८
शक्तियुक्तो भवेत् गुह्यषोढा. १
शक्तिसेना कल्पना च ब्रह्मण्येवं हि पञ्चधा रा. पू. १।१०
शक्त्यूर्ध्वं शक्तिमिति मानवी विद्या त्रि. ता. १।१६
शक्य एवंविधो द्रष्टुं भ. गी. ११।५३
शक्नोतीहैव यः सोढुं भ. गी. ५।२३
शक्योऽवाप्तुमुपायतः भ. गी. ६।३६
शक्रश्च नारायणः [त्रि.म.ना.२।८+ नारा. २
शक्रः प्रविद्वान् प्रदिशश्चतस्रः [महाना. ३+ चित्त्यु. १२।७
शक्रेण हैमं यक्षराजेन विश्वेदेवै रौप्यं वसुभिः कांस्यकं च । यद्दारु-कूटं वायुना पार्थिवं तदश्वि-भ्यामासीत्स्फाटिकं पाशिनाथ सि. शि. २२
शङ्करो भगवानाद्यो ररक्ष सकलाः प्रजाः शरभो. १६
शङ्कुना सर्वाणिपर्णानि संतृण्णा-न्येवमोङ्कारेण सर्वावाक्सन्तृ-ण्णोङ्कार एवेद५ सर्वम् छांदो. २।२३।३
शङ्खचक्रगदाखड्गधारिणं वन-मालिनम् ।...कर्मणा मनसा वाचा संस्मरेत्प्रजपेत्सुधीः ना.पू.ता. ४।१३
शङ्खचक्रगदापाणे द्वारकानिलया-च्युत । गोविन्द पुण्डरीकाक्ष रक्ष मां शरणागतम् [वासुदे.३ गोपीचं. ३
शङ्खचक्रमहामुद्रापुस्तकाढ्यं चतुर्भुजम् । सम्पूर्णचन्द्रसङ्काशं हयग्रीवमुपास्महे हयग्री. ४
शङ्खचक्रोर्ध्वपुण्ड्रादिधारणं स्मरणं हरेः । तदीयाराधनं चैव भक्ति-र्नवविधा स्मृता सुदर्श. ६

शङ्खतोयेन मूलेन भस्मना मिश्रणं भवेत् । योजितं चन्दनेनैव वारिणा भस्मसंयुतम् । चन्दनेन समालिम्पेज्ज्ञानदं चूर्णमेव तत् बृ. जा. ४।९
शङ्खदुन्दुभिनादं च न शृणोति कदाचन (मृतवत्तिष्ठते योगी स मुक्तो नात्र संशयः) ना. बिं. ५२
शङ्खस्य तु ग्रहणेन शङ्खध्मस्य वा शब्दो गृहीतः [बृह.२।४।८+ ४।५।५
शङ्खं चक्रं च संसिद्धिं बिन्दुं च सर्वमूर्धनि कृष्णो. २१
शङ्खं दध्मौ प्रतापवान् भ. गी. १।१२
शङ्खान्दध्मुः पृथक्पृथक् भ. गी. १।१८
शङ्खिनी चैव गान्धारी तदन-न्तरयोः स्थिते । उत्तरे तु सुषुम्नाया इडाख्या निवसत्यसौ वराहो. ५।२६
शङ्खिनी नाम या नाडी सव्य-कर्णान्तमिष्यते । गान्धारा सव्यनेत्रान्ता प्रोक्ता वेदान्तवेदिभिः जा. द. ४।२२
शङ्खिन्याश्चन्द्रमास्तद्वत्पयस्विन्याः प्रजापतिः जा. द. ४।३८
शठे शठ इव स्थितः अ. पू. २।२९
शठो नैष्कृतिकोऽलसः भ.गी. १८।२८
शतकृत्वः प्रयुक्ताशतपर्वणावज्रेण सम्मिता सर्वाꣳ ल्लोकानभिजयति सन्ध्यो. २
शतरुद्रियेणेत्येतान्येव ह वा अमृतस्य नामानि जाबालो. ३
शतरुद्रेण मन्त्रेण भस्मोद्धूलित-विग्रहाः । निर्धूतरजसः सर्वे तत्क्षणाच्च वयं मुने बृ. जा. ६।६
शतशो गोपभार्या वेदऋचः सामर. ३२
शतशोऽथ सहस्रशः भ. गी. ११।५
शतशोऽपि जलैर्धौतं सुराभाण्ड-मिवाशुचि (चित्तमन्तर्गतं दुष्टं तीर्थस्नानैर्न शुद्ध्यति) जा. द. ४।५४
शतं कुलानां प्रथमं बभूव तथा परार्णां त्रिशतं समग्रम् । एते भवन्ति सुकृतस्य लोके येषां कुले सन्न्यसतीह विद्वान् शाट्याय. ३०
शतंचदशचैकश्च सहस्राणिचविंशतिः छांदो. ७।२६।२
शतं च नव शाखासु यजुषामेव जन्मनाम् । साम्नः सहस्र-शाखाः स्युः पञ्चशाखा अथर्वणः सीतो. १६
शतं च दश चैकं च सहस्राणि च...(मा.पा.) छां.उ. ७।२६।२
शतं चैका च हृदयस्य नाड्यस्तासां मूर्धानमभिनिःसृतैका । तयो-र्ध्वमायन्नमृतत्वमेति विष्व-ङ्ङन्या उत्क्रमणे भवन्ति कठो. ६।१६
[छां. उ. ८।६।६+ यो. शि. ६।४
शतं नियुतः परिवेद विश्वा विश्ववारः चित्यु. ११।२
शतं मा पुर आयसीररक्षन्नधः श्येनो जवसा निरदीयमिति गर्भ एवैतच्छयानो वामदेव एवमुवाच २ ऐत. ५।५
शतं मालाहस्ताः शतमाञ्जनहस्ताः शतं चूर्णहस्ताः शतं वासो-हस्ताः शतं कणाहस्तास्तं ब्रह्मा-लङ्कारेणालङ्कुर्वन्ति कौ. ब्रा. १।४
शतं विज्ञानवतामेको बलवाना-कम्पयते स यदा बलीभवत्यथो-त्थाता भवति छांदो. ७।८।१
शतं शरद आयुषो जीव पुत्र कौ. ब्रा. २।११
शतꣳ शता अस्य युक्ता हरीणाम् चित्यु. ११।७
शतꣳ शुक्राणि यत्रैकं भवन्ति, सर्वे वेदा यत्रैकं भवन्ति, सर्वे होतारो यत्रैकं भवन्ति, स मानसीन आत्मा जनानाम् चित्यु. ११।१
शतꣳ सहस्राणि प्रयुतानि नाव्यानाम् चित्यु. ११।१०
शताक्षरी परमा विद्या त्रयीमयी साक्षार्णा त्रिपुरा परमेश्वरी त्रि. ता. १।४
शतायुषः पुत्रपौत्रान्वृणीष्व बहून् पशून्हस्तिहिरण्यमश्वान् । भूमे-र्महदायतनं वृणीष्व स्वयं च जीव शरदो यावदिच्छसि कठो. १।२३

शतारं शतपत्राढ्यं विकीर्णाम्बुजकर्णिकम् । तत्रार्कचन्द्रवह्नीनामुपर्युपरि चिन्तयेत्	ध्या. बिं. ३४
शताह्वशतशरः शतशक्रऋजीषिणाम् । शतं ब्रह्म तपस्विनां कूपोऽरण्यस्य तिष्ठति	इतिहा. १९
शतैर्महाप्रस्थैरखण्डैस्तण्डुलैरभिषिच्य चंद्रलोककामश्चंद्रलोकमवाप्नोति	भस्मजा. २।१२
शत्रूंनिहत्य गुरुषड्गणाभिपाताद्गन्धद्विपो भवति केवलमद्वितीयः	वराहो. २।६५
शनिराहुकेतूरगरक्षोयक्षनरविहगशरभेभादयोऽधस्तादुद्यन्ति	मैत्रा. ७।६
शनैरेवं प्रकर्तव्यमभ्यासं युगपन्न हि । युगपद्वर्तते यस्य शरीरं विलयं व्रजेत्	योगकुं. २।३९
शनैः पिङ्गलया तत्र द्वात्रिंशन्मात्रया पुनः । प्राणायामो भवेदेवं ततश्चैवं समभ्यसेत्	जा. द. ६।६
शनैः शनैरुपरमेत्	भ. गी. ६।२५
शनैः शनैर्यदा प्राणस्तुन्दसन्धि निगच्छति । तुन्ददोषं विनिर्धूय कर्तव्यं सततं शनैः	योगकुं. १।५०
शनैः समस्तमाकृष्य हृत्सरोरुहकोटरे । प्राणापानौ च बद्ध्वा तु प्रणवेन समुच्चरेत्	ध्या. बिं. १००
शनैः सुमथनं कुर्याद्भ्रूमध्ये न्यस्य चक्षुषी । षण्मासं मथनावस्था भावेनैव प्रजायते	योगकुं. २।४६
शबलाच्छ्यामं प्रपद्ये	छांदो. ८।१३।१
शब्द एक आकाशस्य (गुणः)	शारीरको. ४
शब्दकाललयेन दिवाराव्यतीतो भूत्वा सर्वपरिपूर्णज्ञानेनोन्मन्यवस्थावशेन ब्रह्मैक्यं भवति	मं. ब्रा. २।४
शब्दमायावृतो यावत्तावत्तिष्ठति पुष्करे(ले)। भिन्ने तमसि चैकत्वमे(क एवा-)कमेवानुपश्यति	ब्र. बिं. १५
शब्दब्रह्मणि निष्णातः परं ब्रह्माधिगच्छति	ब्र. बिं. १७
[मैत्रा. ६।२२+	त्रि. ता. ५।१७
शब्दब्रह्मातिवर्तते	भ. गी. ६।४४
शब्दब्रह्माहम् । क्रियायोगोऽहम् । ब्रह्माहम् । विष्णुरहम् । सौरोऽहम् । ब्राह्मोऽहम्	अद्वै. भा. १
शब्दवानाकाशः शब्दाकाशाभ्यां भिन्नः	गोपालो. १।४
शब्दस्पर्शमया येऽर्था अनर्था इव ते स्थिताः । तेषां सक्तस्तु भूतात्मा न स्मरेच्च परं पदम्	मैत्रे. १।५
शब्दस्पर्शरसरूपगन्धवर्जितो निर्विकल्पो निराकाङ्क्षः सर्वव्यापी सोऽचिन्त्यो निर्वर्णश्च पुनात्यशुद्धान्यपूतानि	१ आत्मो. ३
शब्दस्पर्शरूपरसगन्धा अग्निकार्यज्ञानेन्द्रियविषया अबाश्रिताः	त्रि. ब्रा. १।४
शब्दस्पर्शरूपरसगन्धा मे शुध्यन्तां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासᳫँ स्वाहा	महाना. १४।११
शब्दस्पर्श-रूप-रसाश्चापां गुणाः	शारीरको. ४
शब्दस्पर्शरूपरसगन्धास्तद्विषयाः	पैङ्गलो. २।४
शब्दस्पर्शरूपरसगन्धाः, पञ्चतन्मात्राः, पञ्चपुष्पबाणाः, मन इक्षुधनुः	भावनो. ६
शब्द-स्पर्श-रूप-रस-गन्धाः पृथिवीगुणाः	शारीरको. ४
शब्दस्पर्शरूपरसगन्धाः सुखदुःखहेतवः	सर्वसारो. ५
शब्द-स्पर्श-रूपाण्यग्निगुणाः	शारीरको. ४
शब्दस्पर्शस्वरूपाभ्यां सङ्घर्षाज्जन्यतेऽनलः	महो. ५।१४९
शब्दस्पर्शादयो येऽर्था अनर्था इव ते स्थिताः । येष्वासक्तस्तु भूतात्मा न स्मरेच्च परं पदम्	मैत्रा. ४।२
शब्द-स्पर्शाविति वायुगुणौ	शारीरको. ४
शब्दं बधिरवच्छृणु । काष्ठवत्पश्य वै देहं प्रशान्तस्येति लक्षणम्	अ. ना. १९
शब्दं सर्वमसद्विद्धि स्पर्शं सर्वमसत्सदा	ते. बिं. ३।५७
शब्दः खे पौरुषं नृषु	भ. गी. ७।८

शब्दाक्षरं परं ब्रह्म यस्मिन्क्षीणे यदक्षरम् । तद्विद्वानक्षरं ध्याये-द्यदिच्छेच्छान्तिमाप्नुयात् ब्र. बिं. १६
शब्दादिविषयान् पञ्च मनश्चैवातिचञ्चलम् । चिन्तयेदात्मनो रश्मीन्प्रत्याहारः स उच्यते अ. ना. ५
शब्दादिष्वनुरक्तानि निगृह्याक्षाणि योगवित् । कुर्याच्चित्तानुकारीणि प्रत्याहारपरायणः भवसं. ३।२७
शब्दादीन् विषयानन्ये भ. गी. ४।२६
शब्दादीन् विषयांस्त्यक्त्वा भ.गी. १८।५१
शब्दाद्यैर्विषयैस्त्यक्तो लयस्थो दृश्यते तथा (निर्वातस्थो यथा दीपो भासते निश्चलो यथा) अमन. १।२७
शब्दानां ज्ञानरूपिणी देव्यु. २१
शब्दार्णमक्षरं ब्रह्म तस्मिन्क्षीणे यदक्षरम् । तद्विद्वानक्षरं ध्याये-द्यदीच्छेच्छान्तिमात्मनः त्रि. ता. ५।१६
शब्देनैवाशब्दमाविष्क्रियते मैत्रा. ६।२२
शम इत्यरण्ये मुनयस्तस्माच्छमे रमन्ते महाना.१६।१२
(ॐ ऐं ह्रीं श्रीं) शमग्निरग्निभिः करच्छं नस्तपतु सूर्यः वनदु. ३३
[ऋ. मं. ८।१८।९+तै.ब्रा. ३।७।१०।५
शमदमादिदिव्यशक्त्याचरणे क्षेत्रपात्रपटुता निर्वाणो. ५
शमदमादिसम्पन्नो भावमात्सर्यतृष्णाशामोहादिरहितो दम्भाहङ्कारादिभिरसंस्पृष्टचेता वर्तत एवमुक्तलक्षणो यः स एव ब्राह्मणः व. सू. उ. ९
शमवान्याति मुक्तताम् महो. ५।९४
शमश्च स्वाध्यायप्रवचने च तैत्ति. १।९।१
शमं विषं विषेणैति रिपुणा हन्यते रिपुः । ईदृशी भूतमायेयं या स्वनाशेन हर्षदा महो. ५।१११
शमः कारणमुच्यते भ. गी. ६।३
शमादिषट्कसम्पत्तिर्मुमुक्षा, तां समभ्यसेत् वराहो. २।३
शमायान्तु ब्रह्मचारिणः स्वाहा तै. उ. १।४।४

शमेन शान्ताः शिवमाचरन्ति, शमेन नाकं मुनयोऽन्वविन्दन् , शमो भूतानां दुराधर्षः शमे सर्वं प्रतिष्ठितम् महाना. १७।४
शमेनापिहिता गुहा इतिहा. १६
शमो दमस्तपः शौचं भ. गी. १८।४२
शमो मित्रं सुदामा च सत्याक्रूरोद्धवो दमः कृष्णोप. १६
शरणागतदीनानां कृपां कुर्वन्तिसाधवः सामर. २३
शरत्प्रतिहारः छांदो. २।१६।१
शरदि क्रीडते तुभ्यं नम आनन्दशालिने सामर. ४२
शरं धनुषि सन्धाय तिष्ठन्तं रावणोन्मुखम् । वज्रपाणिं रथारूढं रामं ध्यात्वा जपेन्मनुम् रामर. २।७२
शरा जीवास्तदङ्गेषु भाति नित्यं हरिः स्वयम् । ब्रह्मैव शरभः साक्षान्मोक्षदोऽयं महामुने शरभो. २८
शरीरत्रयतादात्म्यात्कर्तृत्वभोक्तृत्वतामगमत् पैङ्गलो. १।५
शरीरत्रयसंयुक्तजीवः सङ्गी तृतीयकः (भ्रमः) अ. पू. १।१४
शरीरपुरुष इति यमवोचाम स एवाहं दैहिक आत्मा ३ ऐत. २।३।१
शरीरपुरुषश्छन्दःपुरुषो वेदपुरुषो महापुरुष इति ३ ऐत. २।३।१
शरीरपोषणादिकं समानकर्म शांडि. १।४।९
शरीरप्रादेशाङ्गुष्ठमात्रमणोरप्यणुं ध्यात्वाऽतः परमतां गच्छति मैत्रा. ६।३८
शरीरभेदा द्विविधाः सामर. १०१
शरीरमकृतं कृतात्मा ब्रह्मलोकमभिसम्भवामि छांदो. ८।१३।१
शरीरमन्नादम् तैत्ति. ३।७
शरीरमस्थिमांसं च त्यक्त्वा युक्तायशोभनम् । भूतमुक्तावलीतन्तुं चिन्मात्रमवलोकयेत् महो. ४।२३
शरीरमिदं मैथुनादेवोद्भूतं संविदपेतं निरय एव... मैत्रे. १।४
शरीरमिध्मम् (शारीरयज्ञस्य) महाना. १८।१

शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ — प्रवर्ग्या. ११
[+ऋ. मं. ७।३५।१+ — वा. सं. ३६।११
शं न इन्द्रो बृहस्पतिः शं नो विष्णुरुरुक्रमः [तैत्ति. १।१।१,१३+
[प्रवर्ग्या. ९+ — वा. सं. ३६।९
शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं पशुभ्यः
[प्रवर्ग्या. २२+ — वा. सं. ३६।२२
शं नः कौलिकः, शं नो वारुणी, शं नः शुद्धिः शं नोऽग्निः — कौलो. शां.
शं नः शीक्षा॰ सहनौ यशश्छन्दसां भूः स यः पृथिव्योमित्यृतं चाहं वेदमनूच्य शं नो द्वादश — तैत्ति. १।१३।१
शं नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे — सहवै. शां.पा.
[प्रवर्ग्या. ८+ ऋ. मं. १०।१६५।१
[+वा.सं.३६।८+अथर्व.६।२७।१
शं नो दिशतु श्रीर्देवी महामाया वैष्णवी शक्तिराद्या — लक्ष्म्यु. ४
शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये [प्रवर्ग्या. १२+ — ऋ.मं. १०।९।४
[वा.सं.३६।१२+अथर्व.१।६।१
'शं नो देवीरभिष्टये' इत्येवमादिं कृत्वाऽथर्ववेदमधीयते — २ प्रणवो. २१
शं नो भवतु भुवनस्य यस्पतिः
[प्रवर्ग्या. २+ — वा. सं. ३६।२
शं नो मह इत्यादयो नो इतराणि त्रयोविंशतिः — तैत्ति. १।१३।१
शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा — तैत्ति. १।१।१
[प्रवर्ग्या. ९+ — वा. सं. ३६।९
शंसन्तमनुशंसन्ति बह्वृचाः शास्त्रकोविदाः — मंत्रिको. ९
शाकल्येति होवाच याज्ञवल्क्यस्त्वां स्विदिमे ब्राह्मणा अङ्गारावक्षयणमक्रता ३ इति — बृह. ३।९।१८
शाकायन्यस्य चरणावभिमृश्यमानो राजेमां गाथां जगाद — मैत्रे. १।२
शाक्वरैवते तिरश्ची — कौ. त. १।५
शाखान्तरोपनिषत्स्वरूपमेव निरूपितम् — त्रि.म.ना. ४।२

शाङ्करीयं महाशास्त्रं न देयं यस्य कस्यचित् — ते. बिं. ६।१०८
शाटीद्वयं कुटीचकस्य, बहूदकस्यैकशाटी... — ना. प. ७।८
शाट्यायनीब्रह्मविद्याखण्डाकारसुखाकृति। यतिवृन्दहृदागारं रामचन्द्रपदं भजे — शाट्या. शीर्षकं
शाट्यायनी हयग्रीवं दत्तात्रेयं च गारुडम् — मुक्तिको. १।३९
शाण्डिल्यो ह वा अथर्वाणं पप्रच्छाऽऽत्मलाभोपायभूतमष्टाङ्गयोगमनुब्रूहीति — शांडि. १।१।१
शान्त एव चिदाकाशे स्वच्छे शमसमात्मनि। समग्रशक्तिखचिते ब्रह्मेति कलिताभिधे॥ सर्वमेव परित्यज्य महामौनी भवानघ — अ. पू. ५।११३
शान्तमेकं समृद्धं चैकम् (ब्रह्मरूपके) — मैत्रा. ६।३६
शान्तसङ्कल्पः सुमना यथा स्यात् — कठो. १।१०
शान्तसन्देहदौरात्म्यं गतकौतुकविभ्रमम्। परिपूर्णान्तरं चेतः पूर्णेन्दुरिव राजते — महो. ५।६८
शान्तसम्यक्प्रबुद्धानां यथास्थितमिदं जगत् — अ. पू. ९।११०
शान्तसंसारकलनः कलावानपि निष्कलः। यः सचित्तोऽपि निश्चित्तः स जीवन्मुक्त उच्यते — महो. २।६१
शान्तं तपो दमस्तपः शमस्तपो दानं तपो यज्ञं तपः — महाना. ७।८
शान्तं ब्रह्मेदमक्रमम् — अ. पू. ५।११२
शान्तं शिवमक्षरमव्ययं — भस्म. २।४
शान्तं शिवमद्वैतं चतुर्थं मन्यन्ते, स आत्मा स विज्ञेयः [माण्डू.७+ — रामो. २।४
शान्तः प्रसन्नवदनो ह्यक्रोधो भक्तवत्सलः। अनेन सदृशो मन्त्रो जगत्स्वपि न विद्यते — रामो.ता. ६।२७
शान्तः प्राणोऽनीशात्मा — मैत्रा. २।४
शान्ता दान्ता उपरतास्तितिक्षवः समाहिताः..आत्मानन्दाः.. — नृसिंहो. ६।३
शान्ता विद्वांसो भैक्ष्यचर्यां चरन्तः — मुण्ड. १।२।११

शान्ताशान्तादिहीनात्मा नादान्तज्योतीरूपकः	ते. बिं. ५।५
शान्तिमाप्नोति नैष्ठिकीम्	भ. गी. ५।१२
शान्तिसमृद्धममृतम्	तैत्ति. १।६।२
शान्तिं निर्वाणपरमां	भ. गी. ६।१५
शान्तिसंसृजन्तिपशुपाशविमोक्षणम्	अ. शिरः. ३।१०
शान्तिस्त्वं, पुष्टिस्त्वं	अ. शिरः. ३।११
शान्तो दान्त उपरतस्तितिक्षुर्योऽनूचानो ह्यभिजज्ञो समानः	शाट्याय. ५
शान्तो दान्त उपरतस्तितिक्षुः समाहितो भूत्वाऽऽत्मन्येवाऽऽत्मानं पश्यति	सुबालो. ९।१४
शान्तो दान्तोऽतिविरक्तः सुशुद्धो गुरुभक्तः	त्रि.म.ना. १।२
शान्तोऽपि व्यवहारस्थः कुर्वन्नपि न लिप्यते	१सं.सो. २।३३
शान्तोऽप्राणो निरात्माऽनन्तः	मैत्रा. ७।४
शान्तोऽस्मि पुरुषोत्तमः	मैत्रे. ३।२४
शान्तौ सुषुप्तविश्वः, शान्त्यतीते सुषुप्ततैजसः	प. हं. प. १०
शान्त्यतीते स्वराड्दृहिः	पं. ब्र. १५
शान्त्या चित्तं (शुद्धं भवति)	महाना. १७।१२
शाब्दः सौवरस्तेजोमयोऽमृतमयः पुरुषोऽयमेव स योऽयमात्मेदममृतमिदं ब्रह्मेद॰ सर्वम्	बृह. २।५।९
शाम्भवस्थानमेतत्ते वर्णितं पद्मसंभव	यो. शि. ५।१६
शाम्यतीदं कथं दुःखमिति तप्तोऽस्मि चेतसा	महो. ३।६
शारीरस्तेजोमयोऽमृतमयः पुरुषोऽयमेव स योऽयमात्मा	बृह. २।५।१
शारीरं केवलं कर्म	भ. गी. ४।२१
शारीरं तप उच्यते	भ.गी. १७।१४
शारीरोऽग्निर्नाम जराप्रणुदा हविरवस्कन्दति	प्रा. हो. २।४
शार्कराक्ष्य कं त्वमात्मानमुपास्से	छांदो. ५।१५।१
शालावंशे सर्वेऽन्ये वंशाः समाहिताः स्युः	३ ऐत. २।१।१
शाश्वतस्य च धर्मस्य	भ. गी. १४।२७
शाश्वतं पदमव्ययम्	भ. गी. १८।५६
शाश्वतोऽजः स्वतन्त्रः स्वे महिम्नि तिष्ठति	मैत्रे. २।४
शाश्वतं ध्रुवमच्युतम्	ते. बिं. १।८
शाश्वतं परमं पदम्	त्रि.म.ना. ७।७
शाश्वतं वै रुद्रमेकत्वमाहुः	बटुको. २३
शाश्वत॰ शिवमच्युतम्	महाना. ९।३
शाश्वतं सदाशिवं ब्रह्मादिवन्दितं योगिध्येयं परमं पदम्	गणेशो. ५।६
शास्ताऽच्युतो विष्णुर्नारायणः	मैत्रा. ७।७
शास्त्रज्ञानात्पापपुण्यलोकानुभवश्रवणात्प्रपञ्चोपरतः...साधनचतुष्टयसम्पन्नो यः संन्यस्यति स एव ज्ञानसंन्यासी [१ सं. सो. २।१३+	ना. प. ५।३
शास्त्रमेतत्प्रयत्नेन सदाऽभ्यस्यं मुमुक्षुभिः । यस्य धारणमात्रेण स्वयं तत्त्वं प्रकाशते	अमन. २।१०६
शास्त्रसज्जनसम्पर्कवैराग्याभ्यासरूपिणी । प्रथमा भूमिकैषोक्ता मुमुक्षुत्वप्रदायिनी	अ. पू. ५।८१
शास्त्रसज्जनसम्पर्कवैराग्याभ्यासयोगतः	शांडि. १।७।२६
शास्त्रसज्जनसम्पर्कवैराग्याभ्यासपूर्वकम् । सदाचारप्रवृत्तिर्या प्रोच्यते सा विचारणा [महो. ५।२८+	वराहो. ४।४
शास्त्रसज्जनसम्पर्कैः प्रज्ञामादौ विवर्धयेत्	अ. पू. ५।७१
शास्त्रं विनापि सम्बोद्धुं गुरवोऽपि न शक्नुयुः	योगकुं. २।१०
शास्त्रं सर्वमसद्विद्धि ह्यहं सत्यचिदात्मकः	ते. बिं. ३।५७
शास्त्राण्यधीत्यमेधावी अभ्यस्य च पुनः पुनः । परमंब्रह्म (विद्यायाः) विज्ञायउल्कावत्ता(न्या)न्यथोत्सृजेत्	अ. ना. १
शास्त्रीयेणैव मार्गेण वर्तेऽहं मम का क्षतिः	१ अवधू. २३
शास्त्रेण न स्यात्परमार्थदृष्टिः कार्यक्षमं पश्यति चापरोक्षम् ।	

प्रारब्धनाशात्प्रतिभाननाश एवं त्रिधा नश्यति चात्ममाया वराहो. २।६९
शान्ते मयि त्वयीशे च ह्यखण्डैक-रसो भवान् ते. विं. २।४२
शान्तैः सज्जनसम्पर्कपूर्वकैश्च तपो-दमैः। आदौ संसारमुक्त्यर्थं प्रज्ञामेव विवर्धयेत् महो. ४।४
शांडिल्यंपैङ्गलंभिक्षुंमहच्छारीरकंशिखा मुक्ति. १।३५
शिखरिणां प्रपतनं ध्रुवस्य प्रचलनं वृश्चनं वा तरूणां (वातरज्जूनां) मैत्रा. १।८
शिखण्डी च महारथः भ. गी. १।१७
शिखा च दीपसङ्काशा १ प्रणवो. ९
शिखा ज्ञानमयी यस्य उपवीतं च तन्मयम्। ब्राह्मण्यं सकलं तस्य इति ब्रह्मविदो विदुः (वेदानुशासनम्—नेतरेषां तु किञ्चन)[परब्र.१८+शाट्या.१७ +ना.प. ३।८६
शिखा ज्ञानमयी वृत्तिर्यमाद्यष्टांग-साधनैः त्रि. ब्रा. २।२३
शिखा तु दीपसङ्काशा ब्र. वि. ९
शिखा प्राणमयी वृत्तिर्यमाद्यष्टाङ्ग-साधनम्। देहेन्द्रियेषु वैराग्यं यम इत्युच्यते बुधैः २ अवधू. १
शिखायामेकरुद्राक्षं त्रिशतं शिरसा वहेत् रु. जा. १५
शिखा वर्णाश्रमिणामेककैव परब्र. ६
शिखाऽस्य मनस्तमोलक्षणं भित्त्वा तमोऽस्वमाविष्टमागच्छति मैत्रा. ६।२४
शिखां यज्ञोपवीतं छित्त्वा सन्न्यस्तं मयेति त्रिवारमुच्चरेत् याज्ञव. १
शिखां यज्ञोपवीतं...विसृज्यैव परिव्रजति ना. प. ३।७७
शिखी मुण्डी चोपवीती कुटुम्बी यात्रामात्रं प्रतिगृह्णन्मनुष्यात् शाट्याय. १८
शिथिलीकृतसर्वाङ्ग आनखाम-शिखाग्रतः।...स्वयं प्रकाशिते तदन्ते स्वानन्दस्तत्क्षणाद्भवेत् अमन. २।५०
शिरसि बाणं बाहुनाभिपीठ-प्रकृतिरूपकं देहे धारणं यस्य न विद्यते तद्देहं न पश्येत् लिङ्गोप. २
शिरसीशानमन्त्रेण कण्ठे तत्पुरुषेण तु। अघोरेण गले धार्यं तेनैव हृदयेऽपि च (रुद्राक्षधारणं) रु. जा. २१
शिरः कपालं केशान् न कुर्यात् लिङ्गोप. २
शिरःपीठं लिङ्गात्मकं सर्वम् लिङ्गोप. २
शिरःपाणिपादपायूपस्थं सर्वं लिङ्गस्वरूपम् लिङ्गोप. १
शिरःपाणिपादपार्श्वपृष्ठोरूदरजङ्घ-शिश्नोपस्थपायवो मे शुद्ध्यंतां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासं स्वाहा महाना.१४।१०
शिरा नद्योऽस्थीन्युपग्रहाः छाग. ६।२
शिरासु तत्पृष्ठगतासु नित्यं समातृकाः शक्तिगणा वसन्ति १ बिल्वो. ५
शिरोमध्यगते वायौ जा. द. ६।३७
शिरो रक्षतु वाराही चैन्द्री रक्षेत्तु-जद्वयम्। चामुण्डा हृदयं रक्षे-त्कुक्षिं रक्षतु वारुणी वनदु. ८९
शिरोव्रतं विधिवद्यैस्तु चीर्णम् (तेषामेवैतां ब्रह्मविद्यां वदेत) मुण्ड. ३।२।१०
शिव एकः स्वेन भासेदं सर्वं दृष्ट्वा तप्तायःपिण्डवदेकं भिन्नवदवभासते त्रि. ब्रा. १।१
शिव एको ध्येयः शिवंकरः अ. शिखो. १
शिव एव जङ्गमरूपः रुद्रोप. २
शिव एव प्राणलिङ्गी रुद्रोप. २
शिव एव रुद्रः प्राणलिङ्गी, नान्यो भवति रुद्रोप. २
शिव एव स्वयं साक्षादयं ब्रह्म-विदुत्तमः [महो. ४।८५+ २ आत्मो. २०
शिव एव सदा ध्येयः सर्वसंसार-मोचकः शरभो. ३२
शिवगुरुस्वरूपो महेश्वरः रुद्रोप. २
शिवज्ञानविदं तस्मात्पूजये-द्विभवैर्गुरुम् शिवो. १।६५

शिवज्ञानं परं ब्रह्म तदारभ्य न सन्त्यजेत् । ब्रह्मासाद्य च यो गच्छेद्ब्रह्महा स प्रकीर्तितः — शिवो. ७।६२

शिवज्ञानं समभ्यसेत् — शिवो. ७।६१

शिवज्ञानात्महस्तेन कस्तं न प्रतिपूजयेत् । (अज्ञानपङ्कनिर्मग्नं यः समुद्धरते जनम्) — शिवो. ७।४१

शिवज्ञानार्थतत्त्वज्ञं प्रसन्नमनसं गुरुम् । शिवः शिवं समास्थाय ज्ञानं वक्ति न हीतरः — शिवो. ७।४

शिवधर्माच्छिवज्ञानं प्राप्य मुक्तिमवाप्नुयात् — शिवो. १।३०

(यद्वा) शिवभक्तिसम्पुष्टं सदापि तत्रसितं देवताधार्यम् — रुद्रोप. १

शिवशक्तिसमायोगे जायते परमा स्थितिः — यो.शि. १।११७

शिवभक्तिविहीनश्चेत् स चण्डाल उपचण्डालः — रुद्रोप. १

शिवमक्षरमव्ययं हरिहरहिरण्यगर्भस्रष्टारं — भस्मजा. २।४

शिवमद्वैतं चतुर्थं मन्यन्ते[गणेशो.१।४ +रामो. २।४

शिवमात्मनि पश्यन्ति प्रतिमासु न योगिनः — जा. द. ४।५९

शिवयाऽनुषक्तो मध्ये दलेऽहं निवसामि नित्यम् — १ बिल्वो. ३

शिवयोगनिद्रा च — निर्वाणो. २

शिवयोगी शिवज्ञानी शिवजापी तपोधिकः । क्रमशः कर्मयोगी च पञ्चैते मुक्तिभाजनाः — शिवो. १।३६

शिवरूपः प्राणलिङ्गी — रुद्रोप. २

शिवलिङ्गधरं विप्रं विपन्नं न तु दाहयेत् । यदि ना दाहयेत्तस्य ब्रह्महत्या तदा भवेत् — सदानं. १३

शिवलिङ्गं त्रिसन्ध्यमभ्यर्च्यकुशेष्वासीनो ध्यात्वा (जुहुयात्) — भस्मजा. २।४

शिवलिङ्गार्चनयुतश्चाण्डालोऽपि स एव ब्राह्मणाधिको भवति — रुद्रोप. १

शिवव्रतधरं दृष्ट्वा समुत्थाय सदा द्रुतम् । शिवोऽयमिति सङ्कल्प्य हर्षितः प्रणमेत्ततः — शिवो. ७।७२

शिवशक्तिमयं मन्त्रं मूलाधारात्समुत्थितम् । तस्य मन्त्रस्य वै ब्रह्मञ्छ्रोता वक्ता च दुर्लभः — यो. शि. २।५

शिवशक्त्यमृतस्पर्शे लब्ध एव कुतो मृतिः — बृ. जा. २।१५

शिवशक्त्यात्मकं रूपं चिन्मयानन्दवेदितम् — पा. ब्र. ९

शिवश्च नारायणः शक्रश्च नारायणः — नारा. २+

[त्रि.म.ना. २।८+ — ना.पू.ता. ५।४

शिवश्चोर्ध्वमयः शक्तिरूर्ध्वशक्तिमयः शिवः — बृ. जा. २।१०

शिवसायुज्यमवाप्नोति — रु. जा. ४५

शिवस्य जीवरूपस्य स्थानं तद्धि प्रचक्षते । यत्र कुण्डलिनी नाम परा शक्तिः प्रतिष्ठिता — यो.शि. १।१६९

शिवस्य हृदयं विष्णुर्विष्णोश्च हृदयं शिवः — स्कन्दो. ८

शिवं तुरीयं यज्ञोपवीतम् — निर्वाणो. ६

शिवं प्रशान्तममृतं ब्रह्मयोनिम् — कैव. १।६

शिवं शक्तिं च सादाख्यामीशं विद्याख्यमेव च — बृ. जा. ४।२०

(यत्) शिवं शान्तमद्वैतं चतुर्थं मन्यन्ते स ब्रह्मप्रणवः... — ना. प. ८।२३

शिवः क्षरति लोकान् वै विष्णुः पाति जगत्त्रयम् — ते. बिं. ५।८७

शिवः पुरुष ईशानो नित्यमात्मेति कथ्यते — महो. ६।६१

शिवः शिव इमे शान्तनाम चाद्यं मुहुर्मुहुः । उच्चारयन्ति तद्भक्त्या ते शिवा नात्र संशयः — शिवो. १।९

शिवः शिवाय भूतानां यस्माद्दानं प्रयच्छति । गुरुमूर्तिः स्थितस्तस्मात्पूजयेत्सततं गुरुम् — शिवो. ७।२

शिवः शैवागमस्थानां कालः कालैकवादिनाम् — अ. पू. ३।२१

शिवः सर्वजगत्पतिः — शिवो. १।१४

शिवः संसारमोचकः पञ्चब्र. ३६
शिवाग्निना तनुं दग्ध्वा शक्तिसोमामृतेन यः। प्लावयेद्योगमार्गेण सोऽमृतत्वाय कल्पते बृ. जा. २।१
शिवाय विष्णुरूपाय शिवरूपाय विष्णवे.. स्कन्दो. ८
शिवालयस्थमकल्पं शतकल्पं च बृ. जा. ३।३४
शिवालयस्थं तल्लिङ्गलिप्तं वा मन्त्रसंस्कारदग्धं वा (भस्म) बृ. जा. ५।७
शिवां तां कुरु मोत्क्रमीः प्रश्नो. २।१२
शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि। यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मं सुमना असत् नीलरु. १६+ [वा. सं. १६।४+ तै.सं. ४।५।१।२
शिवे भक्तिं प्राप्य तद्भक्तसङ्गान्न संसृतौ घोरदुःखात्प्रमज्जेत् सि. शि. ७
शिवेन मे सन्तिष्ठस्व स्योनेन मे संतिष्ठस्व म. ना. १६।११
शिवो गुरुः शिवो वेदः शिवो देवः शिवः प्रभुः। शिवोऽस्म्यहं शिवः सर्वं शिवादन्यन्न किञ्चन वराहो. ४।३२
शिवोऽद्वैत ओङ्कार आत्मैव नृसिंहो. २।७
शिवो भवेदित्येकः गुह्यषोढा. १
शिवोमायुतः परमात्मा वरदो देवता ग. पू. २।८
शिवोमाविशाप्रदाहाय महाना. १६।३
शिवोऽयं परमं देवं शक्तिरेषा तु जीवजा। सूर्याचन्द्रमसोर्योगाद्धंसस्तत्पदमुच्यते त्रि. ता. १।११
शिवोऽहं, नाशाशकयोऽहम् अद्वै. भा. १
शिशिरे शिशिरं मथ्यमानं फेनं भवति अ.शिरः.३।१५
शिशुमेवाप्येति, यः शिशुमेवास्तमेति सुबालो. ९।१०
शिश्नं निरभिद्यत, शिश्नाद्रेतः २ ऐत. १।४
शिष्टसंवर्गवर्ज्यं तु दुर्वासो. २।५
शिष्टाहंकारवाञ्जन्तुः महो. ५।९४
शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम् भ. गी. २।७
शिष्याश्च स्वस्वकार्येषु प्रार्थयन्ति... स्वाभ्यासेऽविस्मृतौ... १ यो. त. ७८
शिष्याणां न तु कारुण्याच्छिष्यसङ्ग्रह ईरितः १सं.सो. २।८३
शीतवातोष्णत्राणकरं कौपीनमोमिति ना. प. ४।५०
शीतोष्णसुखदुःखदाः भ. गी. २।१४
शीतोष्णसुखदुःखमानावमानवर्जितः प. हं. प. ११
शीतोष्णसुखदुःखमानावमानं निर्जित्य...प्रणवात्मकत्वेन देहत्यागं करोति यः, सोऽवधूतः तुरीया. ३
शीतोष्णसुखदुःखाद्यैर्व्याधिभिर्मानसैस्तथा। अन्यैर्नानाविधैर्जीवैः शस्त्राग्निजलमारुतैः॥ शरीरं पीड्यते तैस्तैश्चित्तं संक्षुभ्यते ततः [यो. शि. १।२८,२९
शीतोष्णसुखदुःखेषु [भ.गी.६।७+ १२।१८
शीतोष्णसुखदुःखेच्छासत्त्वरजस्तमोगुणा वशिन्यादिशक्तयोऽष्टौ भावनो. ६
शीतोष्णाहारनिद्राविजयः सर्वदा शान्तिर्निश्चलत्वं विषयेन्द्रियनिग्रहश्चैते यमाः मं. ब्रा. १।१
शीतोष्णे क्षुत्पिपासे च सङ्कल्पकविकल्पकम्।...एतद्भावविनिर्मुक्तं तद्ग्राह्यं ब्रह्म तत्परम् ते.बिं.१।१३,१४
शीर्यन्ते तारका अपि महो. ३।४९
शीर्यते ह वा अस्य द्विषन् पाप्मा भ्रातृव्यः, परास्य द्विषन् पाप्मा भ्रातृव्यो भवति १ऐत. १।४।४
शीर्षकपालं भित्त्वा पृथिवीं भिनत्ति सुबालो. ११।२
शीर्षके च ललाटे च कर्णे कण्ठेऽसकद्वये। कूर्परे मणिबन्धे च हृदये नाभिपार्श्वयोः॥ पृष्ठे चैकं प्रतिस्थानं जपेत्तत्राधिदेवताः बृ. जा. ४।१९
शीर्षान्तर्गतमण्डलमध्यगं पञ्चवक्त्रमुमासहायं नीलकण्ठं प्रशान्तमन्तर्लक्ष्यमिति केचित् मं. ब्रा. १।५
शीर्षे कण्ठे वक्षसि कक्षदेशे नाभौ हस्ते सर्वदा प्राणलिङ्गम्। धार्यं यथासम्प्रदायं पुरस्ताद्गुरोर्विदित्वा हृदये मुख्यमुक्तम् सि. शि. १२

शीर्षोपरि द्वादशाङ्गुलिमानं ज्योतिः पश्यति तदाऽमृतत्वमेव — मं. ब्रा. १।३
शीर्षोपरि द्वादशाङ्गुलसमीक्षितुरमृतत्वं भवति — अद्वयता. ३
शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत [पु.सू. १३ — चित्त्यु. १२।६
शीर्ष्णो द्यौः (अजायत) — गणेशो. ३।११
शुक पश्यन्न पश्येस्त्वं साक्षी सम्पूर्णकेवलः — महो. २।७३
शुकमार्गे येऽनुसरन्ति धीराः सद्योमुक्तास्ते भवन्तीह लोके — वराहो. ४।३४
शुकश्च वामदेवश्च द्वेसृती देवनिर्मिते — वराहो. ४।३६
शुकेषु मे हरिमाणं रोपणाकासु दध्मसि — सूर्यता. २।१+ [ऋ. मं. १।५०।१२+तै.ब्रा. ३।७।६।२२
शुको नाम महातेजाः स्वरूपानन्दतत्परः — महो. २।१
शुको मुक्तो वामदेवोऽपि मुक्तस्ताभ्यां विना मुक्तिभाजो न सन्ति — वराहो. ४।३४
शुको विहङ्गमः प्रोक्तो वामदेवः पिपीलिका — वराहो. ४।३६
शुक्तिकायां यथा तारं कल्पितं मायया तथा । महदादि जगन्मायामयं मय्येव केवलम् — वराहो. ३।१५
शुक्तिकारजतंसत्यंभूषणंचेज्जगद्भवेत् — ते. बिं. ६।७६
शुक्रभिन्नेन यमो भवति — निरुक्तो. १।३
शुक्रमादाय पुनरेति स्थानं हिरण्मयः पुरुष एकहंसः — बृह. ४।३।११
शुक्रशोणितसंयोगादावर्तते गर्भः — गर्भो. २
शुक्रशोणितसंयोगान्मातृपितृसंयोगाच्च कथमिदं शरीरं परं संयस्यते — निरुक्तो. १।३
शुक्रः शुक्रस्य पुरोगाः — चित्त्यु. ३।१
शुक्रः शुशुक्वां उषो न जारः पप्रा समीची दिवो न ज्योतिः [वज्रदु. ३२+ — ऋ.मं. १।६९।१
शुक्रातिरेके पुमान् भवति । शोणितातिरेके स्त्री भवति । द्वाभ्यां समेन नपुंसको भवति — निरुक्तो. १।३

शुक्रेण ज्योतींषि समनुप्रविष्टः प्रजापतिश्चरति गर्भे अन्तः [महाना. १।१+ — तै.आ. १०।१।१
शुक्लकृष्णे गती ह्येते — भ. गी. ८।२६
शुक्लदन्तो भस्मदिग्धो मन्त्रेणानेन मन्त्रवित् । ॐ तद्ब्रह्मेति चोच्चार्य पौलकं भस्म सन्त्यजेत् — बृ. जा. ३।२४
शुक्लध्यानपरायणः... सन्न्यासेन देहत्यागं करोति स परमहंसपरिव्राजको भवति — प. हं. प. ८
शुक्लध्यानपरायणोऽध्यात्मनिष्ठोऽशुभकर्मनिर्मूलनपरः सन्न्यासेन देहत्यागं करोति स परमहंसो नाम — जाबालो. ६
शुक्लस्य कृष्णस्य पीतस्य लोहितस्येति तासु तदा भवति, यदा सुप्तः स्वप्नं न कञ्चन पश्यति — कौ. त. ४।१९
शुक्लस्य नीलस्य पिङ्गलस्य हरितस्य लोहितस्य पूर्णाः (नाड्यः) — बृह. ४।३।२०
शुक्लस्य नीलस्य पीतस्य लोहितस्येत्यसौ वा आदित्यः — छांदो. ८।६।१
शुक्लं चन्द्रेण संयुक्तं रजः सूर्यसमन्वितम् (सूर्येण सङ्गतम्) [यो. चू. ६४+ — ध्या. बिं. ९०
शुक्लो रक्तः कृष्णो धूम्रः पीतः कपिलः पाण्डर इति — गर्भो. २
शुचिर्वाऽप्यशुचिर्वाऽपि यो जपेत्प्रणवं सदा । न स लिप्यति पापेन पद्मपत्रमिवाम्भसा — यो. चू. ८८
शुचिःशुचौ देशे गुप्ततीर्थायतनेषु सुप्रक्षालितपाणिपादवदनः.. इत्यप उत्सृजेत् — सन्ध्यो. १
शुचीनां श्रीमतां गेहे — भ. गी. ६।४१
शुचौ देशेऽप्यासीनो दर्भान्धारयमाणः प्राङ्मुख उपविश्य.. — सूर्यता. १।८
शुचौ देशे प्रतिष्ठाप्य — भ. गी. ६।११
(ॐ) शुचौ देशे शुचिः सत्त्वस्थः सदधीयानः सद्वादी सद्ध्यायी सद्याजी स्यात् — मैत्रा. ६।३०

शुचौ देशे स्वाध्यायमधीयानः धार्मिकान्विदधदात्मनि सर्वेन्द्रियाणि सम्प्रतिष्ठाप्याहिꣳसन्सर्वभूतान्यन्यत्र तीर्थेभ्यः स खल्वेवं यावदायुषं ब्रह्मलोकमभिसम्पद्यते	छांदो. ८।१५।१
शुद्धचिदानन्दब्रह्मविलासानन्दाश्चानन्तपरमानन्दविभूतयश्चानन्तवैकुण्ठाश्चानन्तपरमानन्दसमुद्रादयः सन्त्येव	त्रि.म.ना. ८।३
शुद्धचेतन एवाहं कलाकलनवर्जितः	१सं.सो. २।२०
शुद्धज्ञानामृतं प्राप्य परमाक्षरनिर्णयम् । गुह्याद्गुह्यतमं गोप्यं ग्रहणीयं प्रयत्नतः	ब्र. बिं. ४६
(अथ) शुद्धबुद्धमुक्तसत्यानन्दस्वरूपत्वाच्च	त्रि.म.ना. ३।२
शुद्धबोधमनोदृशम् (पाठगतं)	अध्यात्मो. ६३
शुद्धबोधसौधावलिविशेषैरलङ्कृतं	त्रि.म.ना. ७।८
शुद्धबोधानन्दलक्षणं कैवल्यं भवति	त्रि.म.ना. ४।१
शुद्धबोधानंदविभूतिविशेषं... शाश्वतं परमं पदं...स्वयम्प्रकाशमनिशं ज्वलति	त्रि.म.ना. ७।७
शुद्धबोधानन्दविशेषाकारं (ब्रह्म)	त्रि.म.ना. ४।१
शुद्धब्रह्मास्मि सोऽस्म्यहम्	मैत्रे. ३।९
शुद्धमात्मानमालिङ्ग्य नित्यमन्तस्थया धिया । यः स्थितस्तं क आत्मेह भोगो बाधयितुं क्षमः	अ. पू. २।४२
शुद्धमानसः शुद्धचिद्रूपः सहिष्णुः सोऽहमस्मि	पैङ्गलो. ४।९
शुद्धमीश्वरचैतन्यं जीवचैतन्यमेव च । प्रमाता च प्रमाणं च प्रमेयं च फलं तथा ॥ इति सप्तविधं प्रोक्तं भिद्यते व्यवहारतः	कठरु. ४०
शुद्धरूपोऽस्म्यहं सदा	ते. बिं. ३।५
शुद्धशौचमिति प्रोक्तं मृज्जलाभ्यां तु लौकिकम्	मैत्रे. २।८
शुद्धसत्त्वप्रधानायां मायायां बिम्बितो ह्यजः	सरस्व. ३८
शुद्धसत्त्वे परे लीनो जीवः सैन्धवपिण्डवत्	त्रि.ना. २।१६४
शुद्धसन्मात्रसंवित्तेः स्वरूपान्न चलन्ति ये । रागद्वेषादयो भावास्तेषां नाज्ञत्वसम्भवः	महो. ५।३
शुद्धसंविन्मयानन्दरूपा भवति पञ्चमी (भूमिका)	अ. पू. ६।८३
शुद्धस्फटिकसङ्काशं केवलं मोक्षकाङ्क्षया । चिन्तयन्परमात्मानं भानुलक्षं जपेन्मनुम्	रामर. २।५
शुद्धस्फटिकसङ्काशं चन्द्रकोटिसमप्रभम् । एवं ध्यायेन्महाविष्णुमेवं वा विनयान्वितः	ध्या. बिं. २९
शुद्धस्फटिकसङ्काशं किञ्चित्सूर्यमरीचिवत् । लभते योगयुक्तात्मा पुरुषोत्तमतत्परः	२ योगत. ११
शुद्धस्फटिकसङ्काशं स वै ब्रह्म परमात्मेत्युच्यते	हंसो. ४
शुद्धं बुद्धमनीदृशम्	अध्यात्मो. ६३
शुद्धं बुद्धं सदामुक्तमनामकमरूपकम्	ते. बिं. ६।७०
शुद्धं ब्रह्म शुभाशुभम्	ते. बिं. ६।२७
शुद्धं शुद्धेनेतिसम्मृज्यसंशोध्य(भस्म)	भस्मजा. १।५
शुद्धं सदसतोर्मध्यं पदं बुद्ध्वाऽवलम्ब्य च । सबाह्याभ्यन्तरं दृश्यं मा गृहाण विमुञ्च मा	महो. ५।१७२
शुद्धं सूक्ष्मं निराकारं निर्विकारं निरञ्जनम् । अनन्तमपरिच्छेद्यमनूपममनामयम् ॥ आत्ममन्त्रसदाभ्यासात्परतत्त्वं प्रकाशते	यो. शि. २।१७
शुद्धः पूतः पुण्यलोको भवति	छां. ५।१०।१०
शुद्धः पूतः शून्यः शान्तोऽप्राणो निरात्माऽनन्तः [मैत्रा.	६।२८+७।४
शुद्धाकाशे घने जाते चलिते तु तदा जगत्	ते. बिं. ६।९८
शुद्धाकाशो मनुष्येषु पतितश्चेत्तदा जगत्	ते. बिं. ६।९७
शुद्धाद्वैतब्रह्माहमिति भिदागन्धं निरस्य स्वान्तर्विजृम्भितभानुमण्डलध्यानतदाकारा-	

कारितपरंब्रह्मकारितमुक्ति-
मार्गमारूढः परिपक्वो भवति मं. ब्रा. २।७

शुद्धाद्वैताजाड्यसहजामनस्कयोग-
निद्राखण्डानन्दपदानुवृत्त्या
जीवन्मुक्तो भवति मं. ब्रा. २।९

शुद्धा ध्यानेन योगिनः दुर्वासो. १।१०

शुद्धा नाडिगणा भवन्ति यमिनां
मासत्रयादूर्ध्वतः शांडि. १।७।१

शुद्धाभ्यासस्य शांतस्य सदैव
गुरुसेवनात् । गुरुप्रसादात्तत्रैव
तत्त्वज्ञानं प्रकाशते अमन. २।१११

शुद्धां संविदमाश्रित्य वीतरागः
स्थिरो भव अ. पू. ४।९०

शुद्धे चेतसि तस्यैव स्वात्मज्ञानं
प्रकाशते यो. शि. १।६९

शुद्धो ज्ञानमयोऽमलः । आत्माऽहं
सर्वभूतानां विभुः साक्षीनसंशयः सर्वसारो. १०

शुद्धो देव एको नारायणः । न
द्वितीयोऽस्ति कश्चित् [त्रि.म.ना. १।५+२।८

शुद्धो निरवयवात्मा...सो-
ऽचिन्त्यो निर्वर्ण्यश्च पुनात्य-
शुद्धान्यपूतानि आत्मोप. ६

शुद्धो बुद्धो नित्यो निरञ्जनः
शान्तः प्रकाशते हंसो. ११

शुद्धो बोधस्वरूपोऽहं केवलोऽहं
सदाशिवः अध्यात्मो. ६९

शुद्धो भास्वरो गुणभुग्भयो-
ऽनिर्वृतिः (आत्मा) मैत्रा. ७।१

शुद्धोऽस्मि परमोऽस्म्यहम् मैत्रे. उ. ३।२

शुद्धोऽस्मि शुक्रः शान्तोऽस्मि
शाश्वतोऽस्मि शिवोऽस्म्यहम् ब्र. वि. १०४

शुद्धोऽहमान्तरोऽहं शाश्वतविज्ञान-
समरसात्माऽहम् आ. प्र. ११

शुद्धोऽहमद्वयोऽहं संततभावोऽहमा-
दिशून्योऽहम् आ. प्र. १०

शुद्धो यदैव नाडीनां पूर्वोक्त-
ज्ञानसंयुतः त्रि. ब्रा. २।८९

शुना वीर्येण सिंहस्तु जितो
यदि जगत्तदा ते. बिं. ६।९९

शुनि चैव श्वपाके च भ. गी. ५।१८

शुभं यदशुभं विद्धि अशुभा-
च्छुभमिष्यते ते. बिं. ५।२३

शुभं वाऽशुभमन्यद्वा यदुक्तं गुरुणा
भुवि । तत्कुर्यादविचारेण
शिष्यः सन्तोषसंयुतः ब्र. वि. २७

शुभाशुभकर्मनिर्मूलनपरः सन्न्यस्य
...शरीरत्रयमुत्सृज्य सन्न्यासे-
नैव देहत्यागं करोति स
कृतकृत्यो भवति ना. प. ३।८७

शुभाशुभकर्मनिर्मूलनपरः सन्न्यासेन
देहत्यागं करोति स परमहंसः याज्ञव. ३

शुभाशुभपरित्यागी भ.गी. १२।१७

शुभाशुभफलं कर्ममनोवाग्देह-
सम्भवम् । कर्मजा गतयो
नृणामुत्तमाधममध्यमाः भवसं. ५।१

शुभाशुभफलैरेवं भ. गी. ९।२८

शुभाशुभं च कर्म विन्दति गर्भो. ३

शुभाशुभातिरिक्तः शुभाशुभैरपि
कर्मभिर्न लिप्यते परब्र. २

शुभाशुभाभ्यां मार्गाभ्यां बृहती
वासनासरित् । पौरुषेण प्रयत्नेन
योजनीया शुभे पथि भवसं. १।४७

शुभाशुभाभ्यां मार्गाभ्यां वहन्ती
वासनासरित् । पौरुषेण
प्रयत्नेन योजनीया शुभे पथि मुक्तिको. २।५

शुभाशुभैः कर्मभिर्यो न लिप्यति
कदाचन ना. महो. १५

शुभेच्छादित्रयं भूमिभेदाभेदयुतं
स्मृतम् । यथावद्वेद बुद्ध्येदं
जगज्जाग्रति दृश्यते वराहो. ४।११

शुभेच्छा प्रथमा भूमिका भवति वराहो. ४।१

शुभोऽस्मिशोकहीनोऽस्मि चैतन्यो-
ऽस्मि समोऽस्म्यहम् मैत्रे. ३।३

शुभ्रवर्णमाजायतेश्वरात् परब्र. २

शुष्कमृद्धारस्तद्गित्युपासीत कौ. उ. २।६

शुष्के मले तु योगी च स्याद्गति-
श्चलिता ततः । योगकुं. १।६१

शुष्को वृक्षः पल्लवैरेति शोभां द्रवीभावं गण्डशैला लभन्ते । निश्चेष्टाः स्युः शाद्वलस्था हरिण्यो गानानन्दे लीयते विश्वमेतत् गान्धर्वो. ९
शुष्यन्ते केवला भावाः महो. ३।५
शुष्यन्त्यपि समुद्राश्च ध्रुवोऽप्यध्रुवजीवनः महो. ३।५०
शूद्रस्यापि स्वभावजम् भ. गी. १८।४४
शूद्राणां च परन्तप भ.गी. १८।४१
शूद्राणां श्रोत्रियागारपचनाग्निसमुद्भवं (भस्म) बृ. जा. ५।५
शूद्रायां सृजते रेतः श्राद्धं भुक्त्वाऽथ यो द्विजः । स शूद्रयोनिसञ्छिन्नं रेतसा सिञ्चते पितॄन् इतिहा. २३
शूद्राः किमु स्वक्रियया विहीनाः भवसं. २।६४
शूद्रेण शूद्रः बृह. १।४।१९
शून्यं तत्प्रकृतिर्माया ब्रह्मविज्ञानमित्यपि महो. ६।६१
शून्यं न सङ्केतः परमेश्वरसत्ता निर्वाणो. ३
शून्यं वै परं ब्रह्म, तत्र सतारं समायं सामयसञ्चिरेखं भवति ग. पू. ता. ३।१
शून्याकृतिः शून्यभवः शब्दो नाहमचेतनः १ सं.सो.२।१५
शून्यागारदेव-(मंदिर-)वासिनः (परमहंसाः) आश्रमो. ४
शून्यागार-देवगृह-तृणकूट-वल्मीक-वृक्षमूलकुलालशालाग्निहोत्रगृह-नदीपुलिनगिरिकुहरकंदरकोटर-निर्झरस्थण्डिलेषु तेष्वनिकेतवास्यप्रयत्नो...सन्न्यासेन देहत्यागं करोति स परमहंसो नाम [जाबालो. ६+ याज्ञ. ३
शून्यागार-देवगृहतृणकूटवल्मीक-वृक्षमूलकुलालशालाग्निहोत्र-शालानदीपुलिनगिरिकन्दर-कुहरकोटरनिर्झरस्थण्डिले... परमहंसाचरणेन सन्न्यासेन देहत्यागं कुर्वन्ति ते परमहंसा नाम भिक्षुको. ६
शून्यागार-वृक्षमूल-देवगृह-तृणकूट-कुलालशालाग्निहोत्रशालाग्निदिग्-गन्तरनदीतटपुलिनभूगृहकंदर-निर्झरस्थण्डिलेषु...देहत्यागं करोति स कृतकृत्यो भवति ना. प. ३।८७
शून्यानां शून्यसाक्षिणी देव्यु. २१
शून्या प्रेतपुरी तत्र यावद्भूश्चिक-दर्शनात् इतिहा. ९२
शून्यात्मा सूक्ष्मरूपात्मा विश्वात्मा विश्वहीनकः ते. बिं. ४।४३
शून्याशून्यप्रभावोऽस्मि शोभनाशोभनोऽस्म्यहम् मैत्र. उ. ३।५
शून्येन शून्यमपि विप्र यथाऽम्बरेण, नीलत्वमुल्लसति चारुतराभिधानम् महो. ५।५२
शून्येष्वेवावकाशेषु गुहासु च वनेषु च । नित्ययुक्तः सदा योगी ध्यानं सम्यगुपक्रमेत् ना. प. ६।१८
शूरा नाम महानाडी यो. शि. ५।२२
शूरो वीरः पुरुषो भूतसंस्थो विश्वोविश्वेशःप्राणदश्चाव्ययात्मा २ रुद्रो. ५७
शृङ्गप्रोतान् पादान् स्पृष्ट्वा हत्वा तानमसात्स्वयम् । नत्वा च बहुधा दृष्ट्वा नृसिंहः स्वयमुद्बभौ नृसिंहो. ४।३
शृङ्गमिन्द्रः सखा सुरः कृष्णो. ८
शृङ्गं शृङ्गार्धमाकृष्य शृङ्गेणानेन योजयेत् । शृङ्गमेनं परे शृङ्गे समनेनापि योजयेत् नृसिंहो. ७।६
शृङ्गारकलेति विज्ञायते बहृचो. १
शृङ्गेष्वशृङ्गं संयोज्य सिंहं शृङ्गेषु योजयेत् । शृङ्गाभ्यां शृङ्गमाबध्य त्रयो देवा उपासते नृसिंहो. ६।३
शृणु मे भरतर्षभ भ. गी. १८।३६
शृणुयादपि यो नरः भ. गी. १८।७१
शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतम् [प्रवर्ग्या. २४+ वा. सं. ३६।२४
शृण्वतः श्रोत्रेण [बृह. ६।१।८, ९,११,१२

शृणु मे परमं वचः भ. गी. १८।६४
शृण्वतो नास्ति मेऽमृतम् भ. गी. १०।१८
शृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्रा आ ये धामानि दिव्यानि तस्थुः श्वेताश्व. २।५
शृण्वन्तोऽपि बहवो यं न विद्युः कठो. २।७
शृण्वन्त्वज्ञाततत्वास्ते जानन् कस्माच्छृणोम्यहम् । मन्यन्तां संशयापन्ना न मन्येऽहमसंशयः अवधू. १६
शृण्वन्वै तन्न शृणोति नहि श्रोतुः श्रुतेर्विपरिलोपो विद्यतेऽविनाशित्वात् बृह. ४।३।२७
शेमुषी दक्षिणा प्रोक्ता सा यस्याभीक्षणे मुखम् । दक्षिणाभिमुखः प्रोक्तः शिवोऽसौ ब्रह्मवादिभिः द. मू. २१
शेषकर्मप्रसिद्ध्यर्थं केशान्सप्राष्ट वा द्विजः । सङ्क्षिप्य वापयेत्पूर्वं केशश्मश्रुनखानि च ना. प. ४।३९
शेषनागोऽभवद्रामः कृष्णो ब्रह्मैव शाश्वतम् कृष्णो. १२
शेषस्थिरसमाधानो येन त्यजसि तत्यज । चिन्मनःकलनाकारं प्रकाशतिमिरादिकम् महो. ६।६
शेषायुतफणाजालविपुलच्छत्रशोभितं...निरतिशयाद्वैतपरमानन्दलक्षणमादिनारायणं ध्यायेत् त्रि.म.ना. ७।१२
शेषो ह वै वासुदेवात्सङ्कर्षणो नाम जात आसीत् सङ्कर्षणो. १
शैब्यश्च नरपुङ्गवः भ. गी. १।५
शैला अपि विशीर्यन्ते शीर्यन्ते तारका अपि महो. ३।४९
शैलूषो वेषसत्ताभावयोश्च यथा पुमान् । तथैव ब्रह्मविच्छ्रेष्ठः सदा ब्रह्मैव नापरः २ आत्मो. २१
शैशवे गुरुतो भीतिर्मातृतः पितृतस्तथा । जनतो ज्येष्ठबालाच्च शैशवं भयमन्दिरम् महो. ३।२३
शोकमोहविनिर्मुक्तो विष्णुं ध्यायन्न सीदति आ. प्र. १
शोकसंविग्नमानसः भ. गी. १।४७
शोकस्थानसहस्राणि हर्षस्थानशतानि च । दिवसे दिवसे मूढमाविशन्ति न पण्डितम् भवसं. १।९
शोकातिगो मोदते स्वर्गलोके कठो.१।१२,१८
शोणितातिरेके स्त्री भवति निरुक्तो. १।३
शोणितान्मांसं, मांसान्मेदः [गर्भो. १२+ निरुक्तो. १।२
शोधनं नाडिजालस्य चालनं चन्द्रसूर्ययोः । रसानां शोषणं चैव महामुद्राऽभिधीयते यो. चू. ६९
शोधनं मलजालानां घटनं चन्द्रसूर्ययोः । रसानां शोषणं सम्यङ्महामुद्राऽभिधीयते ध्या. बिं. ९१
शोभनः शोभमानः कल्याणः नृ. पू. २।७,११
शोभनाशोभनोऽस्म्यहम् मैत्रे. ३।५
शोषयाशु यथा शोषमेति संसारपादपः मुक्तिको. २।३८
शौचमिन्द्रियनिग्रहः [मैत्रे. २।२+ स्कन्दो. ११
शौचं नाम द्विविधं बाह्यमाभ्यन्तरं चेति शांडि. १।१।२
शौनको ह वै महाशालोऽङ्गिरसं भगवन्तं पिप्पलादमपृच्छत् ब्रह्मो. १
शौनको ह वै महाशालोऽङ्गिरसं विधिवदुपसन्नः पप्रच्छ मुण्ड. १।३
शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं भ. गी. १८।४३
श्मशानेषु दिगन्तेषु स एव ललनास्तनः । श्वभिरास्वाद्यते काले लघुपिण्ड इवान्धसः [महो.३।४२+ याज्ञव. ११
श्यामवर्णे मध्यदले यदा विश्राम्यते मनः । तदा सर्वगुणं ज्ञानं चैतन्यं च मतिर्भवेत् विश्रामो. १०
श्यामवर्णे वायुदले यदा विश्राम्यते मनः । निद्रालस्यभयं देवि मत्सरे च मतिर्भवेत् विश्रामो. ६
श्यामं वीरासनासीनं ज्ञानमुद्रोपशोभितम् ।...चिन्तयन्परमात्मानं भानुलक्षं जपेन्मनुम् रामर. २।४
श्यामाच्छबलं प्रपद्ये, शबलाच्छ्यामं... छांदो. ८।१३।१

श्यामां श्यामवपुर्धरां ऋक्स्वरूपां ...अक्षणाद्युनप्रक्तां...य एवं वेद स वैष्णवो भवति (तुलसी) — तुलस्यु. २
श्यालाः सम्बन्धिनस्तथा — भ. गी. १।३४
श्येतमदल्कमदल्कꣳ श्वेतं लिन्दुमाभिगाम् — छांदो. ८।१४।१
श्येनमेवाप्येति यः श्येनमेवास्तमेति — सुबालो. ९।१०
श्येनस्त एकं मुखं तेन मुखेन पक्षिणोऽत्सि तेन मुखेन मामन्नादं कुरु — कौ. त. २।९
श्येनो गृध्राणां स्वधितिर्वनानाꣳ सोमः पवित्रमत्येतिरेभन् [महाना. — ८।४+१२।३
श्रद्धदेव मनुते श्रद्धा त्वेव विजिज्ञासितव्या — छांदो. ७।१९।१
श्रद्दधाना मत्परमाः — भ. गी. १२।२०
श्रद्धया देयम्। अश्रद्धया देयम्। श्रिया देयम्। ह्रिया देयम्। भिया देयम्। संविदा देयम् — तैत्ति. १।११।३
श्रद्धया परया तप्तं — भ. गी. १७।१७
श्रद्धया परयोपेताः — भ. गी. १२।२
श्रद्धया मेधा — महाना. १७।१३
श्रद्धयार्चितुमिच्छति — भ. गी. ७।२१
श्रद्धत्स्व सोम्येति स य एषोऽणिमैतदात्म्यमिदꣳ सर्वं तत्सत्यꣳ स आत्मा — छांदो. ६।१२।३
श्रद्धानुरूपा धीर्देवता — भावनो. ७
श्रद्धा पत्नी (यज्ञस्य) — महाना. १८।१
श्रद्धा भवति भारत — भ. गी. १७।३
श्रद्धामयोऽयं पुरुषः — भ. गी. १७।३
श्रद्धा माता, पितरं सत्यमाहुः — इतिहा. ११
श्रद्धामेधे प्रजाः सन्ददातु स्वाहा — महाना. १४।५
श्रद्धामेधे प्रज्ञा तु जातवेदः सन्ददातु स्वाहा — महाना. १४।६
श्रद्धायामपाने निविश्यामृतꣳ हुतं, अपानमन्नेनाप्यायस्व... — महाना. १६।४
श्रद्धायामपाने निविष्टोऽमृतंजुहोमि — म. ना. १६।२,३
श्रद्धायामुदाने निविश्यामृतꣳ हुतं, उदानमन्नेनाप्यायस्व — महाना. १६।४
श्रद्धायामुदाने निविष्टोऽमृतं जुहोमि — म. ना. १६।२,३
श्रद्धायां प्राणे निविश्यामृतꣳ हुतं, प्राणमन्नेनाप्यायस्व — महाना. १६।४
श्रद्धायां प्राणे निविष्टोऽमृतंजुहोमि — म. ना. १६।२,३
श्रद्धायां व्याने निविश्यामृतꣳ हुतं, व्यानमन्नेनाप्यायस्व — महाना. १६।४
श्रद्धायां व्याने निविष्टोऽमृतं जुहोमि — म. ना. १६।२,३
श्रद्धायाꣳ समाने निविश्यामृतं हुतं, समानमन्नेनाप्यायस्व — महाना. १६।४
श्रद्धायाꣳ समानेनिविष्टोऽमृतंजुहोमि — म. ना. १६।२,३
श्रद्धायाꣳ ह्येव दक्षिणा प्रतिष्ठिता — बृह. ३।९।२१
श्रद्धालुर्मुक्तिमार्गेषु वेदान्तज्ञानलिप्सया। उपायनकरो भूत्वा गुरुं ब्रह्मविदं व्रजेत् — ना. प. ६।२३
श्रद्धावन्तोऽनसूयन्तः — भ. गी. ३।३१
श्रद्धावाननसूयश्च — भ. गी. १८।७१
श्रद्धावान् भजते यो मां — भ. गी. ६।४७
श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं — भ. गी. ४।३९
श्रद्धाविरहितं यज्ञं — भ. गी. १७।१३
श्रद्धा सत्यं ब्रह्मचर्यं विधिश्च — मुंड. २।१।७
श्रद्धासत्यौ महस्वान् तपसो वरिष्ठाः — महाना. १७।१४
श्रद्धां भगवो विजिज्ञासे — छांदो. ७।१९।१
श्रमणोऽश्रमणस्तापसोऽतापसोऽनन्वागतं पुण्येनानन्वागतं पापेन तीर्णो हि तदा सर्वाञ्छोकान्हृदयस्य भवति — बृह. ४।३।२२
श्रवणकीर्तनस्मरणवन्दनसेवनोपकरणदास्यभावेनात्मसमर्पणम् — रामर. २
श्रवणमननिर्विचिकित्सेऽर्थे वस्तुन्येकतानवत्तया चेतःस्थापनं निदिध्यासनं भवति — पैङ्गलो. ३।२
श्रवणं चिन्तनं सेवा सत्कृत्यकरणं तथा। असत्कृत्यपरित्यागो उपायान्तरवर्जनम्॥ ... आनृशंस्यं सतां सङ्गः पारमैकान्त्यहेतवः — भवसं. ५।१९
श्रवणं तु गुरोः पूर्वं मननं तदनन्तरम्। निदिध्यासनमित्येतत्पूर्णबोधस्य कारणम् — शु. र. ३।१३

श्रवणं नास्ति मे सिद्धेर्मननं च चिदात्मनि — ते. विं. ३।४६

श्रवणाङ्गुष्ठयोगेनान्तर्हृदयाकाशशब्दमाकर्णयन्ति — मैत्रा. ६।२२

श्रवणादेवं प्रतिपद्यन्ते — २ प्रणवो. १७

श्रवणायापि बहुभिर्यो न लभ्यः शृण्वन्तोऽपि बहवो यं न विद्युः — कठो. २।७

श्रातास्त इन्द्रसोमाः — चित्स्यु. ३।१

श्राद्धकर्ता परश्राद्धं यत्तु भुञ्जीत लोलुपः। नष्टं भवति तच्छ्राद्धं रौरवं नरकं व्रजेत् — इतिहा. ४१

श्राद्धं दत्त्वा च भुक्त्वा च अध्वानं योऽधिगच्छति। पितरस्तस्य तन्मासं भवन्ते पांसुभोजनाः — इतिहा. ३४

श्राद्धं दत्त्वा च भुक्त्वा च भारमुद्वहते द्विजः। पितरस्तस्य तन्मासं भवन्ते भारपीडिताः — इतिहा. ३३

श्राद्धं दत्त्वा च भुक्त्वा च सङ्गमं न समाचरेत्। पितरस्तस्य तन्मासं भवन्ते रेतभोजनाः — इतिहा. ३०

श्राद्धं दत्त्वा च भुक्त्वा च सपङ्क्तिः सहभोजनम्। षण्मासान्पितरोऽश्नन्ति कर्तुरुच्छिष्टभोजनम् — इतिहा. ३१

श्राद्धं भुक्त्वा पुनः श्राद्धं भुञ्जीयाल्लोभमोहितः। नष्टं भवति तच्छ्राद्धं रौरवं नरकं व्रजेत् — इतिहा. ३२

श्राद्धे सप्त पवित्राणि दौहित्रः कुतपस्तिलाः (उच्छिष्टं शिवनिर्माल्यं वमनं मृतकर्पटम्) — इतिहा. ५६

श्राम्यत्येव वाक्, श्राम्यति चक्षुः, श्राम्यति श्रोत्रम्.. — बृह. १।५।२१

श्रियं च लक्ष्मीं च पुष्टिं च कीर्तिं चानृण्यताम् — महाना. १४।५

श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् [श्रीसू. ३ — ऋ.खि.५।८७।३

श्रियं लक्ष्मीमौपलामम्बिकां गां षष्ठीं च यामिन्द्रसेनेत्युदाहुः। तां विद्यां ब्रह्मयोनिं सरूपामिहायुषे शरणं प्रपद्ये — नृ. पू. ३।४

श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् [श्रीसू.११+ऋ. — खि. ५।८७।११

श्रिया देयम्। ह्रिया देयम्। भिया देयम्। संविदा देयम् — तैत्ति. १।११।३

श्रिया ह्येवाऽभिषिच्यते [+नृ. पू. १।३+४।३ — सूर्यता. ३।१

श्रीकृष्ण रुक्मिणीकान्त गोपीजनमनोहर। संसारसागरे मग्नं मामुद्धर जगद्गुरो — गो. पू. ४।१४

श्रीकृष्णाख्यं परं ब्रह्म गोपिकाः श्रुतयोऽभवन्। एतत्सम्भोगसम्भूतं चन्दनं गोपिचन्दनम् — गोपीचं. २९

(ॐ) श्रीकृष्णाय गोविंदाय गोपीजनवल्लभाय ॐ तत्सद्भूर्भुवः सुवस्तस्मै वै नमो नमः — गोपालो. ३।३

(ॐ) श्रीकृष्णाय देवकीनन्दनाय ॐ तत्सद्भूर्भुवः सुवस्तस्मै वै नमो नमः — गोपालो. ३।९

(ॐ) श्रीकृष्णाय रामाय ॐ तत्सद्भूर्भुवः सुवस्तस्मै वै नमो नमः — गोपालो. ३।७

(ॐ) श्रीकृष्णायानिरुद्धाय ॐ तत्सद्भूर्भुवः सुवस्तस्मै वै नमो नमः — गोपालो. ३।५

श्रीकृष्णो भगवान् नारायणः परमात्मा पुरुषोत्तमः त्रिगुणरहितः स्वयम् — वि. सि. ३

श्रीकृष्णो वै परमं दैवतम् — गो. पू. १।१

श्रीगणपतेरेनं मन्त्रराजमन्योन्याभावात् प्रणवरूपस्यास्य परमात्मनोऽङ्गानि जानीते, स जानाति — ग. शो. ५।१

(ॐ)श्रीगुरुः सर्वकारणभूता शक्तिः — भावनो. २

श्रीचूर्णं श्रीकरं दिव्यं श्रियश्चाङ्गे समुद्भवम्। पुण्ड्रं च यस्य मध्ये तु धार्यं मोक्षार्थिभिः स्मृतम् — ऊर्ध्वपुं. ४

(ॐ) श्रीगोपालाय निजस्वरूपाय ॐ तत्सद्भूर्भुवः सुवस्तस्मै वै नमो नमः — गोपालो. ३।११

श्रीतुलस्यै विद्महे विष्णुप्रियायै धीमहि। तन्नो अमृता प्रचोदयात्	तुलस्यु. ३
श्रीतुलस्यै स्वाहा विष्णुप्रियायै स्वाहा। अमृतायै स्वाहा	तुलस्यु. २
श्रीदेवी त्रिविधं रूपं कृत्वा भगवत्सङ्कल्पानुगुण्येन लोकरक्षणार्थं रूपं धारयति	सीतो. ९
श्रीपरमधाम्ने स्वस्ति चिरायुष्योन्नम इति	स्कन्दो. १३
श्रीपर्वतं शिरस्स्थाने केदारं तु ललाटके। वाराणसी महाप्राज्ञ भ्रुवोर्घ्राणस्य मध्यमे	जा. द. ४।४८
श्रीभूमिर्नीलात्मिका भद्ररूपिणी प्रभावरूपिणी सोमसूर्याग्निरूपा भवति	सीतो. ८
श्रीमत्पुरुषसूक्तार्थं पूर्णानन्दकलेवरम्। पुरुषोत्तमविख्यातं परं ब्रह्म भवाम्यहम्	मुद्गलो. शीर्षकं
श्रीमदूर्जितमेव वा	भ. गी. १०।४१
श्रीमन्नारायणचरणौ शरणं प्रपद्ये	त्रि.म.ना.७।१०
श्रीमन्नारायणाकारमष्टाक्षरमहाशयम्। स्वमात्रानुभवात्सिद्धमात्मबोधं हरिं भजे	आत्मप्र.शीर्षकं
श्रीमन्नारायणाष्टाक्षरानुस्मरणेन गायत्र्याः शतसहस्रं जप्तं भवति	वारसा. ३।९
श्रीमन्नारायणे मय्यचला भक्तिश्च भवति	वासुदे. १७
श्रीमन्नारायणो ज्योतिरात्मा नारायणः परः। नारायणपरं ब्रह्म नारायण नमोऽस्तु ते	त्रि.म.ना.७।११
श्रीमहालक्ष्म्यै नम इति सप्ताक्षरो मन्त्रः	ना.पू.ता.२।१
श्रीमहाविष्णवे तुभ्यं नमो नारायणाय च। गोविन्दाय च रुद्राय हरये ब्रह्मरूपिणे	ना.पू.ता. ३।४
श्रीमानजो धीमाननिर्देश्यः सर्वसृक् सर्वस्यात्मा	मैत्रा. ७।१
श्रीरामचन्द्रसेवक ॐ ह्रां ह्रां ह्रां आसय आसय	लाङ्गूलो. ८
श्रीरामतापिनीयार्थं भक्तध्येयकलेवरम्। विकलेवरकैवल्यं श्रीरामब्रह्म मे गतिः	रा. पू. शीर्षकं
श्रीरामतारकपरब्रह्मविश्वरूपदर्शन..स्थलजलाग्निमर्ममेदिन् सर्वशत्रून् छिन्धि छिन्धि	लांगूलो. ३
श्रीरामसन्निधौ मौनी मन्त्रार्थमनुचिन्तयन्। व्याघ्रचर्मासने स्थित्वा स्वस्तिकाद्यासनक्रमात्॥ ...अभ्यर्च्य वैष्णवे पीठे जपेदक्षरलक्षकम्	रामर. ४।५
श्रीरामसान्निध्यवशाज्जगदा(नन्द) धारकारिणी। उत्पत्तिस्थितिसंहारकारिणी सर्वदेहिनाम्॥ सीता भगवती ज्ञेया मूलप्रकृतिसंज्ञिता [सीतो. ४+	रामो. १।५,६
श्रीरामस्य मनुं काश्यां जजाप वृषभध्वजः	रामो. ता. ३।४
श्रीरामः शरणं मम (अष्टारमन्त्रः)	रामर. २।३८
श्रीरामः सामात्मकोऽपि अकारः। श्रीकृष्णः अर्धमात्रात्मकोऽपि	राधो. २।२
श्रीरामो ब्रह्म तारकम्	रामर. १।६
श्रीरिति लक्ष्मीरिति लक्ष्यमाणा भगवतीति विज्ञायते	सीतो. ९
श्रीर्मे भजतु, अलक्ष्मीर्मे नश्यतु	महाना. ५।८
श्रीर्ह वा एषा स्त्रीणां यन्मलोद्वासाः, तस्मान्मलोद्वाससं यशस्विनीमभिक्रम्योपमंत्रयेत	बृह. ६।४।६
श्रीलक्ष्मीर्वरदा विष्णुपत्नी वसुप्रदा हिरण्यरूपा	सौभाग्य. ४
श्रीवत्सकौस्तुभवनमालाङ्कितवक्षसं...निरतिशयाद्वैतपरमानन्दलक्षणमादिनारायणं ध्यायेत्	त्रि.म.ना.७।१४
श्रीवत्सकौस्तुभोरस्कं मुक्तामणिविभूषितम्।...एवं ध्यायेन्महाविष्णुमेवं वा विनयान्वितः	ध्या. बिं. २८
श्रीवत्सस्य स्वरूपं तु वर्तते लाञ्छनैः सह। श्रीवत्सलक्षणं तस्मात्कथ्यते ब्रह्मवादिभिः	गोपालो. २।२७

श्रीविष्णुं सर्वेश्वरं भजन्ति गह्नोप. १
श्रीवैष्णवा भुवनमाशु पवित्रयन्ति सुदर्श. १३
श्रीश्च लक्ष्मीश्च पुष्टिश्च कीर्ति
चानृण्यतां ब्रह्मण्यं बहुपुत्रताम्।
श्रद्धामेधे प्रज्ञा तु जातवेदः
सन्ददातु स्वाहा महाना. १४।६
श्रीसखि त्वं सदानन्दे मुकुन्दस्य
सदा प्रिये। वरदाभयहस्ताभ्यां
मां विलोकय दुर्लभे! तुलस्यु. ५
श्रीसरस्वतिरूपा पदक्रममन्त्र-
ब्राह्मणकल्पशरीरा सावित्री
गोत्रे ब्रह्मदेया भवति सन्ध्यो. २३
श्री पावका नः सरस्वती वाजे-
भिर्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टु
धिया वसु [सरस्व. १०+ ऋ.मं. १।३।१०
श्री श्री सोऽहमर्कमहमहं ज्योतिरहं
शिवः। आत्मज्योतिरहं शुक्रः
सर्वज्योतीरसोऽस्म्यहम् वनदु. १२२
श्रुतं चाश्रुतं चानुभूतं चाननुभूतं
च सच्चासच्च सर्वं पश्यति प्रश्नो. ४।५
श्रुतं मे गोपाय [तैत्ति. १।४।१+ ना. प. ४।४५
श्रुतं मे मा प्रहासीः श्वेत. शां.पा.
श्रुतं श्रुतमेवार्थमनुशृणोति देश-
दिगन्तरैश्च प्रत्यनुभूतं पुनः
पुनः प्रत्यनुभवति प्रश्नो. ४।५
श्रुतं सर्वमसद्विद्धि वेदं सर्वम-
सत्तथा। शास्त्रं सर्वमसद्विद्धि,
ह्यहं सत्यचिदात्मकः ते. बिं. ३।५०
श्रुतꣳ ह्येव मे भगवद्दृशेभ्यः
[छांदो. ४।९।३+ ७।१।३
श्रुतिवाक्योदितं सूक्ष्मं तद्विष्णोः
परमं पदम् भवसं. ३।५
श्रुतिविप्रतिपन्ना ते भ. गी. २।५३
श्रुतिशास्त्राण्यहम्। मन्त्रोऽहम् अद्वै. भा. २
श्रुतिस्मृतिसदाचारधारणध्यान-
कर्मणः। मुख्यया व्याख्यया
ख्यातान्भूषयति श्रेष्ठपण्डितान् ब्रह्मोप. १४
श्रुतेनाविहिता शुद्रा इतिहा. १६

श्रुतो विस्तरशो मया भ. गी. ११।२
श्रुत्याचार्योपदेशेन मुनयो यत्पदं
ययुः। तत्स्वानुभूतिसंसिद्धं
स्वमात्रं ब्रह्म भावये मैत्रे. शीर्षकं
श्रुत्या यदुक्तं परमार्थमेव तत्संशयो
नात्र ततः समस्तम्। श्रुत्या
विरोधे न भवेत्प्रमाणं भवेद-
नर्थाय विनाप्रमाणम् ब्र. वि. ३२
श्रुत्युत्पन्नात्मविज्ञानप्रदीपो बाध्यते
कथम्। अनात्मतां परित्यज्य.. वराहो. २।४९
श्रुत्वा दृष्ट्वा न कम्पेत शोकहर्षौ
त्यजेद्यतिः ना. प. ४।१०
श्रुत्वाऽन्येभ्य उपासते भ. गी. १३।२६
श्रुत्वाऽप्येनं वेद न चैव कश्चित् भ. गी. २।२९
श्रुत्वा स्पृष्ट्वा च भुक्त्वा च दृष्ट्वा
घ्रात्वा च यो नरः। न हृष्यति
ग्लायतिवासविज्ञेयोजितेन्द्रियः ना. प. ३।३९
श्रुत्वा स्पृष्ट्वा च भुक्त्वा च दृष्ट्वा
ज्ञात्वा शुभाशुभम्। न हृष्यति
ग्लायति यः स शान्त इतिकथ्यते महोप. ४।३२
श्रूयते प्रथमाभ्यासे नादो नाना-
विधो महान्। वर्धमाने तथा-
भ्यासे श्रूयते सूक्ष्मसूक्ष्मतः ना. बिं. ३३
श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेतस्तौ
सम्परीत्य विविनक्ति धीरः।
श्रेयो हि धीरोऽभिप्रेयसो
वृणीते प्रेयोमन्दोयोगक्षेमाद्वृणीते कठो. २।२
श्रेयस्त्वं मनसा प्राप्तं तावत्तत्त्वस्य
का कथा अमन. २।५६
श्रेयः परमवाप्स्यथ भ. गी. ३।११
श्रेयान् द्रव्यमयाद्यज्ञात् भ. गी. ४।३३
श्रेयान् वस्यसोऽसानि स्वाहा तैत्ति. १।४।९
श्रेयान् स्वधर्मो विगुणः [भ. गी. ३।३५+१८।४७
श्रेयो धीरोऽभिप्रेयसो..(मा.पा.) कठो. २।२
श्रेयो भोक्तुं भैक्ष्यमपीह लोके भ. गी. २।५
श्रेयोविघ्नाः सर्वे प्रलयं यान्ति त्रि.म.ना. ५।४
श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासात् भ. गी. १२।१२
श्रेष्ठं सर्वेषातमित्याचामति छांदो. ५।२।७

श्रेष्ठा सर्वगता ह्येषा तृतीया
भूमिकाऽत्र हि — अक्ष्युप. ३२
श्रोतव्यमेवाप्येति यः श्रोतव्य-
मेवास्तमेति — सुबालो. ९।२
श्रोतव्यस्य श्रुतस्य च — भ. गी. २।५२
श्रोता मन्ता द्रष्टा देष्टा घोष्टा
विज्ञाता प्रज्ञाता । सर्वेषां
भूतानामन्तरपुरुषः स म
आत्मेति विद्यात् — ३ ऐत. २।४।८
श्रोता मन्ता द्रष्टा देष्टा स्प्रष्टा
घोष्टा विज्ञाता प्रज्ञाता सर्वेषां
पुरुषाणामन्तःपुरुषः स
आत्मा विज्ञेय इति — त्रि. ता. ५।१
श्रोता घ्राता रसयिता नेता कर्ता
विज्ञानात्मा पुरुषः — १ आत्मो. २
श्रोतुर्देहेन्द्रियातीतं वस्त्वत्र
त्वम्पदेरितम् — शु. र. ३।६
श्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणास्तद्वृत्तयः — पैङ्गलो. २।४
श्रोत्रपतिर्विज्ञानपतिः, एतत्ततो
भवति — तैत्ति. १।६।२
श्रोत्रमध्यात्मं शब्दश्रवणमिती-
न्द्रियाण्यन्वभवन् — २ प्रणवो. ३
श्रोत्रमयः पृथ्वीमय आपोमयः — बृह. ४।४।५
श्रोत्रमस्मात्सर्वाञ्छब्दानभि-
विसृजते — कौ. त. ३।४
श्रोत्रमाकाशे वायौ त्वगग्नौ चक्षु-
रप्सु जिह्वा पृथिव्यां घ्राणमिति — शारीरको. १
श्रोत्रमात्मनि चाध्यस्तं स्वयं
पशुपतिः पुमान् । अनुप्रविश्य
श्रोत्रस्य ददाति श्रोत्रतां शिवः — पा. ब्र. १६
श्रोत्रमुत्क्रामच्छृण्वन्नश्रन्पिबन्नास्तैव — १ ऐत. १।४।४
श्रोत्रमुद्गीथमुपासाञ्चक्रिरे तद्धा-
सुराः पाप्मना विविधुः — छांदो. १।२।५
(अथ ह) श्रोत्रमूचुस्त्वं न उद्गायेति
तथेति तेभ्यः श्रोत्रमुदगायद्यः
श्रोत्रे भोगस्तं देवेभ्य आगायत् — बृह. १।३।५
श्रोत्रमेव ब्रह्मणश्चतुर्थः पादः — छांदो. ३।१८।६
श्रोत्रमेवाप्येति यः श्रोत्रमेवास्तमेति — सुबालो. ९।२

श्रोत्रमेवायतनमाकाशः प्रतिष्ठानन्त
इत्येनदुपासीत — बृह. ४।१।५
श्रोत्रमेवास्या एकमङ्गमुदूढं, तस्य
शब्दः परस्तात्प्रतिविहिता
भूतमात्रा — कौ. त. ३।५
श्रोत्रयोः शब्दग्रहणं, जिह्वायाः... — ना. प. ६।३
श्रोत्रस्य श्रोत्रं मनसो मनो यद्वा-
चो ह वाचꣳ स उ प्राणस्य
प्राणश्चक्षुषश्चक्षुरतिमुच्य धीराः
प्रेत्यास्माल्लोकादमृता भवन्ति — केनो. १।२
श्रोत्रस्य श्रोत्रं मनसो ये मनो विदुः — बृह. ४।४।१८
श्रोत्रं चक्षुः स्पर्शनं च — भ. गी. १५।९
श्रोत्रं च श्रोतव्यं च नारायणः — सुबालो. ६।१
श्रोत्रं ते मयि जुहोम्यसौ स्वाहा — कौ. त. २।४
श्रोत्रं त्वक्चक्षुषी जिह्वा नासिका
चैव पञ्चमम् — दुर्वासो. २।११
श्रोत्रं त्वक्चक्षुषी जिह्वा घ्राणं चैव
तु पञ्चमम् (षोडश विकाराः) — शारीरको. १२
श्रोत्रं दैवꣳ श्रोत्रेण हि तच्छृणोति — बृह. १।४।१७
श्रोत्रं नाम देवतावरोधिनी सा मे-
ऽमुष्मादिदमवरुन्धां तस्यैवस्वाहा — कौ. त. २।३
श्रोत्रं परस्तान्मन आरुन्धे — कौ. त. २।२
श्रोत्रं प्राविशद्दशयदेव — १ ऐत. १।४।६
श्रोत्रं मे त्वयि दधानीति पिता,
श्रोत्रं ते मयि दध इति पुत्रः — कौ. त. २।१५
श्रोत्रं लोको मनो ज्योतिः, यो..
पुरुषं विद्यात्... — बृह. ३।९।१३
श्रोत्रं वाव सम्पत् — छांदो. ५।१।४
श्रोत्रं वै ग्रहः, स शब्देनातिग्रहेण
गृहीतः श्रोत्रेणहिशब्दाञ्छृणोति — बृह. ३।२।६
श्रोत्रं वै ब्रह्म — बृह. ४।१।५
श्रोत्रं वै सम्पत् — बृह. ६।१।४
श्रोत्रं वै सम्राट् परमं ब्रह्म — बृह. ४।१।५
श्रोत्रं शृण्वत् सर्वे प्राणा अनु-
शृण्वन्ति — कौ. त. ३।२
(यः)श्रोत्रं संश्रावयितृ संश्रावयितृ-
मान्भवति (प्राणस्य ब्रह्मणः) — कौ. त. २।१
श्रोत्रं सर्वैः शब्दैः सहाप्येति
(पुरुषं) [कौ. त. ३।३+ — ४।१९

श्रोत्र९ होचक्राम, तत्संवत्सरं प्रोष्य (आगत्य)पर्येत्योवाच... [छांदो. ५।१।१०+	बृह. ६।१।१०
श्रोत्रः प्रातिश्रुत्कस्तेजोमयोऽमृतमयः पुरुषः	बृह. २।५।६
श्रोत्राक्षिकटिगुल्फप्राणगलस्फिग्देशेषु व्यानः सञ्चरति	शांडि. १।४।७
श्रोत्रादीनि ज्ञानेन्द्रियाणि	शारीरको. १
श्रोत्रादीनीन्द्रियाण्यन्ये	भ. गी. ४।२६
श्रोत्राद्दिशः (निरभिद्यन्त)	२ ऐत. १।४
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च हृदयात्सर्वमिदं जायते	सुबालो. १।५
श्रोत्राय स्वाहाऽऽयतनाय स्वाहेत्यग्नौ हुत्वा मन्थे स९स्रवमवनयति...	बृह. ६।३।२
श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य, ते ये शतं मनुष्यगन्धर्वाणामानन्दाः	तैत्ति. २।८
श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य ते ये शतं देवगन्धर्वाणामानन्दाः	तैत्ति. २।८
श्रोत्रियस्य...ते ये शतमाजानजानां देवानामानन्दाः	तैत्ति. २।८
श्रोत्रियस्य...ते ये शतं देवानामानन्दाः	तैत्ति. २।८
श्रोत्रियस्य...ते ये शतं कर्मदेवानां देवानामानन्दाः	तैत्ति. २।८
श्रोत्रियस्य...ते ये शतं पितॄणां चिरलोकलोकानामानन्दाः	तैत्ति. २।८
श्रोत्रियस्य...ते ये शतमिन्द्रस्यानन्दाः	तैत्ति. २।८
श्रोत्रियस्य...ते ये शतं प्रजापतेरानन्दाः	तैत्ति. २।८
श्रोत्रियस्य...ते ये शतं बृहस्पतेरानन्दाः	तैत्ति. २।८
श्रोत्रियस्य वीरेण नोपहासमिच्छेत्	बृह. ६।४।१२
श्रोत्रियस्य...स यश्चायं पुरुषे । यश्चासावादित्ये । स एकः	तैत्ति. २।८
श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठं स्वगुरुं गच्छेद्यथाविधि	रुद्रह. ३५
श्रोत्रियान्नं न भिक्षेत श्रद्धाभक्तिबहिष्कृतम् । व्रात्यस्यापि गृहे भिक्षेच्छ्रद्धाभक्तिपुरस्कृते	१ सं.सो.२।६४
श्रोत्रे आघारौ (शारीरयज्ञस्य)	प्रा. हो. ४।२
श्रोत्रे चित्तस्य संयमाद्यमलोकज्ञानम्	शांडि. १।७।५२
श्रोत्रेण सर्वाञ्छब्दानाप्नोति	कौ. त. ३।४
श्रोत्रेण सृष्टा दिशश्च चन्द्रमाश्च	१ ऐत. १।७।५
श्रोत्रेण हि तच्छृणोति	बृह. १।४।१७
श्रोत्रेण हि शब्दाञ्छृणोति	बृह. ३।२।६
श्रोत्रे तृप्यति चन्द्रमास्तृप्यति	छांदो. ५।२०।२
श्रोत्रे पक्षसी चक्षुषी युक्ते	१ ऐत. ३।८।६
श्रोत्रे हीमे सर्वे वेदा अभिसम्पन्नाः	बृह. ६।१।४
श्रोष्याम्यहमिति श्रोत्रम्	बृह. १।५।२१
श्रौताश्रौतेषु धारणम् । वेदोक्तविधिना श्रौतं तद्रहितमश्रौतम्	लिङ्गोप. २
श्रौते स्मार्ते च विश्वासो यत्तदास्तिक्यमुच्यते	जा. द. २।६
श्लक्ष्णं बलवदिन्द्रस्य	छांदो. २।२२।१
श्लेष्मणो रसः । रसाच्छोणितम् । शोणितान्मांसम् । मांसान्मेदः । मेदसः स्नावा । स्नावोऽस्थीनि । अस्थिभ्यो मज्जा । मज्जातो रेतः	निरुक्तो. १।२
श्लेष्ममूत्रपुरीषेषु दुर्गन्धे जन्मसम्भवे । व्याधिशोकगणे घोरे ममत्वं हि शरीरके	दुर्वासो. २।८
श्लेष्मादि धनञ्जयकर्म	शांडि. १।४।९
श्लोकाः सूत्राण्यनुव्याख्यानानि व्याख्यानानि	बृह. ४।१।२
श्वयोनिं वा सूकरयोनिं वा चाण्डालयोनिं वा पापाचारा गच्छन्ति	छांदो. ५।१०।७
श्वशुरान् सुहृदश्चैव	भ. गी. १।२६
श्वःकार्यमद्य कुर्वीत पूर्वाह्णे चापराह्णिकम् । नहि प्रतीक्षते मृत्युः कृतं वाऽस्य न वा कृतम्	अवधू. १।३८
श्वानेन सागरे पीते निःशेषेण मनो भवेत्	ते. बिं. ६।९६
श्वानो वैनदस्युर्वया९सि	बृह. ३।९।२५

श्वासद्वयलयेनापि कूर्मवातादि-
वायवः । न वर्तन्ते च साधूनां
व्रणं कुर्वन्ति धातवः — अमन. १।३७
श्वासमात्रलयेनापि तेन प्राप्या
हि वायवः — अमन. १।३६
श्वाससूत्रसमोपेतमिन्द्रियालय-
सङ्कुलम् । त्रोटयित्वा मनोजालं
मीनवज्जायते सुखी — अमन. २।८५
श्वासोछ्वासविहीनस्तु निश्चितं मुक्त
एव सः — अमन. २।५८
श्वासोच्छ्वासात्मकः प्राणः षड्भिः
प्राणैः पलं स्मृतम् । पलैः
षष्टिभिरेव स्याद्घटिका
कालसम्मिता — अमन. १।३३
श्वित्री कुष्ठी तथा चैव कुनखी...
एते गुणा न वक्तव्याः श्राद्धकर्म-
बहिष्कृताः (ब्राह्मणाः) — इति. ७२-७६
श्वेतास्तु ब्राह्मणा ज्ञेयाः क्षत्रिया
रक्तवर्णकाः । पीतास्तु वैश्या
विज्ञेयाः कृष्णाः शूद्रा उदाहृताः — रु. जा. ९
श्वेतकेतु-ऋभु-निदाघ-ऋषभ-
दुर्वासःसंवर्तकदत्तात्रेयरैवतक-
प्रदव्यक्तलिङ्गः — ना. प. ३।८७

श्वेतकेतुर्ह वा आरुणेयः पाञ्चालानां
परिषदमाजगाम — बृह. ६।२।१
(ॐ) श्वेतकेतुर्हारुणेय आस तं
ह पितोवाच — छांदो. ६।१।१
श्वेतकेतुर्हारुणेयः पञ्चालानाꣳ
समितिमेयाय — छांदो. ५।३।१
श्वेतकेतो यन्नु सोम्येदं महामना
अनूचानमानी... — छांदो. ६।१।२
श्वेतकेतो वस ब्रह्मचर्यं, न वै
सोम्यास्मत्कुलीनोऽननूच्य
ब्रह्मबन्धुरिव भवतीति — छांदो. ६।१।१
श्वेतमेवाप्येति, यः श्वेतमेवास्तमेति — सुबालो. ९।१२
श्वेतमृद्देवि पापघ्ने विष्णुदेहसमुद्भवे ।
...धारणान्मुक्तिदा भव — ऊर्ध्वपुं. ३
श्वेतꣳ रश्मि बोभुज्यमानम् — चित्यु. ११।९
श्वेतः खुरविषाणाभ्यां मुखे पुच्छे
च पाण्डुरम् । रोहितो यस्तु
वर्णेन स लीलो वृष उच्यते — इतिहा. ९६
श्वेतो रश्मिः परि सर्वं बभूव — चित्यु. ११।१०
श्वोभावा मर्त्यस्य यदन्तकैतत्
सर्वेन्द्रियाणां जरयन्ति तेजः ।
अपि सर्वं जीवितमल्पमेव तवैव
वाहास्तव नृत्यगीते — कठो. १।२६

ष

षट्कोणेषु तारया हंसः सोऽहमिति — सूर्यता. ६।१
षट्चक्रवासिनि वागीश्वरि
जिह्वाग्रे वस — हंसषोढो. २
षट्चक्राणि परिज्ञात्वा प्रविशेत्
सुखमण्डलं (ले)
[यो. शि. ६।७४+ — योगकुं. ३।९,१२
षट्चक्रं षोडशाधारं त्रिलक्ष्यं
व्योमपञ्चकम् । स्वदेहे यो न
जानाति तस्य सिद्धिः कथं भवेत् — यो. चू. ३
षट्त्रिंशतं गले दद्याद्बाह्वोः
षोडश षोडश (रुद्राक्षान्) — रु. जा. १६
षट्पत्रं चक्रं भवति — नृ. पू. ५।२

षट्शतानि दिवारात्रौ सहस्राण्येक-
विंशतिः । एतत्सङ्ख्यान्वितं
मन्त्रं जीवो जपति सर्वदा ॥
अजपा नाम गायत्री योगिनां
मोक्षदा सदा — यो. चू. ३२
षट्शतान्यधिकान्यत्र सहस्राण्येक-
विंशतिः । अहोरात्रवहैः
श्वासैर्वायुमण्डलघाततः...
तत्पृथ्वीमण्डले क्षीणे वलिरा-
याति देहिनाम् — वराहो. ५।३,५
षट्शास्त्राणि जायन्ते पुरुषोत्तमात् — सि. वि. २
षट्सु पत्रेषु षडक्षरं सुदर्शनं भवति — नृ. पू. ५।२०

षड्स्वरारूढेन बीजेन, षडङ्गं
रक्ताम्बुजसंस्थितम् सूर्यो. २
षडक्षरं वा एतत्सुदर्शनं महाचक्रं नृ. पू. ५।२
षडर्णोऽयं महामन्त्रः सर्व-
सिद्धिप्रदायकः सूर्यता. २।४
षडाश्रयमिति कस्मात् ? मधुरा-
म्ललवणतिक्तकटुकषाय-
रसान्विन्दतीति गर्भो. १
षडूर्मिरहितः षड्भावविकारशून्यः
सत्यवाक्...गिरिकन्दरेषु
वसेदेक एव द्वौ वा चरेत्
ग्रामं त्रिभिर्नगरं चतुर्भिर्ग्राम-
मित्येकश्चरेत् ना. प. ७।२
षडूर्मिषड्भावेत्यादिसर्वदोषरहितं...
करतलामलकवत्साक्षादपरोक्षी-
कृत्य कृतार्थतया कामरागादि-
दोषरहितः...एवमुक्तलक्षणो
यः स एव ब्राह्मण इति व. सू. उ. ९
षड्ज-ऋषभ-गान्धार-मध्यम-
पञ्चम-धैवतनिषादाश्चेतीष्टा-
निष्ट-शब्दसंज्ञाः प्रणिधाना-
द्दशविधा भवन्ति गर्भो. १
षड्जमध्यमसंवाधा वेदान्
गायन्ति सामगाः गान्धर्वो. ७
षड्जोऋषभगान्धारौ मध्यमः पञ्चम-
स्तथा । धैवतोऽथ निषादश्च
स्वराः सप्त प्रकीर्तिताः गान्धर्वो. ३
षड्भावविकृतिश्चास्ति जायते
वर्धतेऽपि च । परिणामं क्षयं
नाशं षड्भावविकृतिं विदुः वराहो. १।८
षड्भिर्मासैस्तु युक्तस्य नित्यमुक्तस्य
देहिनः । अनन्तः परमो गुह्यः
सम्यग्योगः प्रवर्तते मैत्रा. ६।२८
षड्भिः संवत्सरैर्भूमेरखण्डं लय-
संस्थितः । वायुतत्त्वस्य सिद्धिः
स्याद्वायुतत्त्वमयो भवेत् अमन. १।७७
षड्भूमिकाचिराभ्यासाद्भेदस्यानु-
पलम्भनात् । यत्स्वभावैक-
निष्ठत्वं सा ज्ञेया तुर्यगा गतिः वराहो. २।१०

षड्लिङ्गं परित्यक्तः स्वाश्रमोक्त-
विधिं चरन् । वनितादिषु वा-
क्कर्ममनोभिर्निःस्पृहः शुचिः रामर. ४।२
षड्रात्रविलयेनापि महाबुद्धिः
प्ररोहति अमन. १।५६
षड्रात्रीर्दीक्षितो भवति सहवै. १२
षड्वक्त्रमपि रुद्राक्षं कार्तिकेयाधि-
दैवतम् । तद्धारणान्महाश्रीः
स्यान्महदारोग्यमुत्तमम् रु. जा. २९
षड्वा ऋतवः, ऋतुभिः सम्मितंभवति नृ. पू. ५।२
षड्वा ऋतवः संवत्सरः सहवै. १२
षड्वान्तराणि वलयानि भवन्ति नृ. षट्च. ४
षड्विकारविहीनोऽस्मि षट्कोश-
रहितोऽस्म्यहम् मैत्रे. ३।१८
षड्विंशकश्च पुरुषः पेशुरङ्गः
शिवागमे । सप्तविंश इति
प्रोक्तः शिवः सर्वजगत्पतिः शिवो. १।१४
षड्विंशको महाविष्णुः सदा
द्रष्टा भवति सामर. १०१
षड्विंशदङ्गुलिर्हंसः प्रयाणं कुरुते
बहिः । वामदक्षिणमार्गेण
प्राणायामो विधीयते यो. चू. ९३
षड्विंशः परमात्माऽहमिति निश्चया-
न्मुक्तो भवति मं. ब्रा. १।५
षड्वै नारसिंहानि चक्राणि भवन्ति नृ. षट्च. १
षड्वै बाह्यानि वलयानि भवन्ति नृ. षट्च. ६
षड्वै मध्यमानि वलयानि भवन्ति नृ. षट्च. ५
षड्वीमे लोकाः षड्वा ऋतवो भवन्ति ग. पू. ३।१
षण्ढोऽथ विकलोऽप्यन्धो बालक-
श्चापि पातकी । पतितश्च परद्वारी
वैखानसहरद्विजौ॥...एते नार्हन्ति
सन्न्यासमातुरेण विना क्रमम् ना. पं. ३।३
षण्णवतितत्त्वतन्तुवद्व्यक्तं चित्सूत्र-
त्रयचिन्मयलक्षणं चिद्ग्रन्थि-
बन्धनम् पा. ब्र. ३
षण्णां योगे षोढा भवेत् षोढोप. २
(अथ) षण्डः पतितोऽङ्गविकलः
स्त्रैणो बधिरोऽर्भको मूकः
पाषण्डश्चक्री लिङ्गी (कुष्ठी)

स

स आगच्छति विल्यं वृक्षं तं ब्रह्मगन्धः प्रविशति — कौ. त. १।५
स आगच्छत्यारं ह्रदं तन्मनसाऽत्येति — कौ. त. १।४
स आजगाम गौतमोयत्रप्रवाहणस्य जैवलेरास — बृह. ६।२।४
स आजगाम जैवलिं प्रवाहणं परिचारयमाणं... — बृह. ६।२।१
स आत्मन्येवात्मानं परंब्रह्म पश्यति — नृसिंहो. ६।३
स आत्मा तत्त्वमसि [छांदो. ६।८।७+९।४+
[१०।३+११।३+१२।३+ १३।३+१४।३
[+१५।३+१६।३
स आत्मानमभिध्यायन् बह्वीः प्रजा असृजत् — मैत्रा. २।६
स आत्मा परमेश्वरः — महो. ४।११८
स आत्मा प्रजापतेः सभां वेश्म प्रपद्ये यशोऽहं भवामि — छांदो. ८।१।१
स आत्मा स विज्ञेय ईश्वरग्रास-स्तुरीयः — नृसिंहो. १।६
स आत्मा स विज्ञेयः[माण्डू.७+नृ.पू.४।२ — रामो. २।४
स आत्मा विज्ञेयः — गणेशो. ५।७
स आदित्यस्तदेतदोजोऽन्नाद्यमि-त्युपासीत — छांदो. ३।१३।१
स आदित्यꣳ स वैश्वदेवꣳ सामाभिगायति — छां. २।२४।११
स आदित्यः कस्मिन्प्रतिष्ठित इति चक्षुषीति — बृह. ३।९।२०
स आदित्येन चक्षुषा भाति च तपति च — छांदो. ३।१८।५
स आदित्यो विष्णुश्चेश्वरश्च — ब्रह्मो. ३
स आदिनारायणोऽहमेव — त्रि.म.ना. ८।६
स आद्यः सोऽक्षरः सोऽनन्तः सोऽव्ययो महान्पुरुषः — गणेशो. २।४
स आपः प्रदुघे उभे इमे अन्त-रिक्षमथो सुवः — महाना. १।९
स आप्तोर्यामेण सर्वैः क्रतुभिर्यजते — ग. शो. ५।३
स आयुर्यशःकीर्तिज्ञानैश्वर्यवान्भवति — नृ. पू. १।३
स आहाग्नाभमिति तत्सत्यं भवति — बृह. ४।१।४

स इतः प्रयन्नेव पुनर्जायते तस्य तृतीयं जन्म — २ ऐत. ४।४
स इत्येकमक्षरं, तीत्येकमक्षरं, यमित्येकमक्षरं, प्रथमोत्तरेऽक्षरे सत्यं मध्यतोऽनृतं तदेतदनृत-मुभयतः सत्येन परिगृहीतꣳ सत्यभूयमेव भवति — बृह. ५।५।१
स इत्येकमेव परं ब्रह्म विभ्राजते निर्वाणम् — त्रि. ता. ५।१
स इदं विश्वं भुवनं विचष्टे — ३ऐत. १।६।७
स इदं सर्वमभ्यपत्रयत यदिदं किञ्च — १ ऐत. २।२।४
स इदं सर्वं पाप्मनो त्रायते यदिदं किञ्च — १ ऐत. २।१।६
स इदꣳ सर्वमभिप्रागायदिदं किञ्च — १ ऐत. २।२।३
स इदꣳ सर्वं भवति — बृह. १।४।१०
स इदं सर्वं मध्यतो दधे यदिदं किञ्च — १ ऐत. २।१।२
स इदं सर्वं स मे ददातु — चित्यु. ७।४
स इदित्था बोभवीदाशयध्यै — बा. मं. १८
स इद्देवो ऋतमन्व (ीत्य) यन्तं प्रभीमकर्मातपसोऽपविद्धात् — बा. मं. ४
स इन्द्रः स इन्दुः स सूर्यः स वायुः सोऽग्निः स ब्रह्मा अयम् (गणेशः) — गणेशो. २।१
स इममेवात्मानं द्वेधाऽपातयत्... — बृह. १।४।३
स इमाँल्लोकानसृजत (परमात्मा) — २ ऐत. १।२
स इरामयो यद्धीरामयस्तस्मा-द्धिरण्मयः — १ ऐत. १।३।१
स इह कीटो वा पतङ्गो वा शकुनि-र्वा शार्दूलो वा सिंहो वा मत्स्यो वा परः श्वा पुरुषो वाऽन्यो वैतेषु स्थानेषु प्रत्याजायते... — कौ. त. १।२
स ईक्षत कतरेण प्रपद्या इति — २ ऐत. ३।११
स ईक्षत कथं न्विदं मदृते स्यादिति — २ ऐत. ३।११
स ईक्षत यदि वाचाऽभिव्याहृतं यदि प्राणेनाभिप्राणितं...यदि शिश्नेन विसृष्टमथ कोऽहमिति — २ ऐत. ३।११
स ईक्षत लोकान्नु सृजा इति — २ ऐत. १।१

स ईक्षतेमे नु लोका लोकपालान्नु सृजा इति — २ ऐत. १।३
स ईक्षतेमे नु लोकाश्च लोकपालाश्चान्नमेभ्यः सृजा इति — २ ऐत. १।३
स ईक्षांचक्रे यस्मिन्नहमुत्क्रान्त उत्क्रान्तो भविष्यामि — प्रश्नो. ६।३
स ईयतेऽमृतो यत्र कामम् हिरण्मयः पुरुष एकहंसः — बृह. ४।३।१२
स ईश्वरो भवति — गणेशो. ५।८
स ई पाहि य ऋजीषी (तरुत्रः) तरुद्रः स श्रियं लक्ष्मीमौपलाम्बिकां गाम् । षष्ठीं च यामिन्द्रसेनेत्युदाहुस्तां विद्यां ब्रह्मयोनिस्वरूपाम् [नृ.पू.३।४+ — ग. पू. २।३
स उक्थेन यजते — नृ. पू. ५।१४
स उच्छ्वयत्याध्मायत्याध्मातो मृतः शेते — बृह. ३।२।११
स उत्क्रामन् म्रियमाणः पाप्मनो विजहाति — बृह. ४।३।८
स उत्तमः पुरुषः — छांदो. ८।१२।३
स उद्गाता, स मुक्तिः, साऽतिमुक्तिः — बृह. ३।१।५
स उद्गीथः प्रति स्त्री सह शेते — छांदो. २।१३।१
स उद्गीथोऽङ्गारा भवन्ति — छांदो. २।१२।१
स उद्गीथो विद्योतते, स्तनयति स प्रतिहारः [छांदो. २।३।१+ — २।१५।१
स उपपातकमहापातकेभ्यः पूतो भवति — ना.उ.ता. ३।१
स उ प्राणस्य प्राणः — केनो. १।२
स उल्बावृतो गर्भो दश वा नव वा मासानन्तः शयित्वा यावद्वाऽथ जायते — छांदो. ५।९।१
स उ ह तूष्णीमेव जिह्ये, तत उ हैनं यद्यथा विचिक्षेप — कौ. त. ४।१८
स ऊर्जमुपजीवतीति प्रश्न९ सा — बृह. १।५।२
स ऊर्जमुपजीवतीति श्लोकाः — बृह. १।५।१
स ऋग्भिर्मन्त्रर्ग्वेदो ब्रह्मा वसवो गायत्री गार्हपत्यः सा प्रथमः पादो भवति — नृसिंहो. ३।२
स ऋग्भिर्मन्त्रर्ग्वेदो ब्रह्मा वसवो गायत्री गार्हपत्यः सा साम्नः प्रथमो पादो भवति — नृ. पू. २।१
स ऋचोऽधीते स यजूंष्यधीते स सामान्यधीते सोऽथर्वणमधीते — नृ. पू. ५।१५
स एक आजानजानां देवानामानन्दः — तैत्ति. २।८
स एक आजानदेवानामानन्दः — बृह. ४।३।३३
स एक इन्द्रस्यानन्दः — तैत्ति. २।८
स एक एव वरोहवैद्वित्वनुर्नारायणोऽखिलब्रह्माण्डाधिपतिरेकः — राधिको. ३
स एकधा भवति, त्रिधा भवति — छांदो. ७।२६।२
स एकः कर्मदेवानामानन्दः ये कर्मणा देवत्वमभिसम्पद्यन्ते — बृह. ४।३।३३
स एकः पञ्चविंशतिः पुरुषः — महो. १।२
स एकः कर्मदेवानां देवानामानन्दः — तैत्ति. २।८
स एकः पितॄणां चिरलोकलोकानामानन्दः — तैत्ति. २।८
स एकः पितॄणां जितलोकानामानन्दः — बृह. ४।३।३३
स एकः प्रजापतिलोक आनन्दः — बृह. ४।३।३३
स एकः प्रजापतेरानन्दः — तैत्ति. २।८
स एकः श्रेष्ठश्च सर्वशास्ता स एव वरिष्ठश्च — शरभो. ५
स एकः स य एवंवित् — तैत्ति. २।८
स एकाकी नर एव — चतुर्वे. १
स एकाकी न रमते — महो. १।१
स एकैकः साधारः साधिष्ठानो नाधिष्ठानः कं कं कस्मै पदे पदे पातः पादाय पादिते स्वाहा — पारमा. ५।१०
स एको गन्धर्वलोक आनन्दः — बृह. ४।३।३३
स एको देवगन्धर्वाणामानन्दः — तैत्ति. २।८
स एको देवः शिवरूपी दृश्यत्वेन विकासते — त्रि. ता. १।५
स एको देवानामानन्दः — तैत्ति. २।८
स एको बृहस्पतेरानन्दः — तैत्ति. २।८
स एको ब्रह्मण आनन्दः — तैत्ति. २।८
स एको ब्रह्मलोक आनन्दः — बृह. ४।३।३३

स एको मनुष्यगन्धर्वाणामानन्दः	तैत्ति. २।८
स एको मानुष आनन्दः	तैत्ति. २।८
स एको रुद्रो ध्येयः सर्वेषां सर्वसिद्धये	शरभो. ८
स एतदेव रूपमभिसंविशत्ये- तस्माद्रूपादुदेति [+८।३+९।३+१०।३	छांदो. ३।७।३
स एतमानुष्टुभं मंत्रराजमपश्यत्	ग. पू. १।६
स एतमानुष्टुभं षट्पदं मन्त्रराजं कथयाञ्चक्रे	ग. पू. १।११
स एतमेव पुरुषं ब्रह्म ततममपश्य- दिदमदर्शमिति	२ ऐत. ३।१३
स एतमेव सीमानं विदार्यैतया द्वारा प्रापद्यत्	२ ऐत. ३।१२
स एतमेवंविद्वा॰श्चतुष्कलं पादं ब्रह्मणो ज्योतिष्मानित्युपास्ते	छांदो.४।७।४,४
स एतस्माज्जीवघनात्परात्परं पुरिशयं पुरुषमीक्षते	प्रश्नो. ५।५
स एतं देवयानं पन्थानमाप-(सा-) द्याग्निलोकमागच्छति, स वायु- लोकं स वरुणलोकं, स आदि- त्यलोकं, स इन्द्रलोकं, स प्रजा- पतिलोकं, स ब्रह्मलोकम्	कौ. ब. १।३
स एतं प्रा॰श्वं ग्रावाणमात्मन एव समुदपारयत् तेनैनामभ्यसृजत्	बृह. ६।४।२४
स एतं भुसुण्डः कालाग्निरुद्रमगमत्	बृ. जा. १।३
स एतं मंत्रराजं नारसिंहमानुष्टुभ- मपश्यत्तेन वै सर्वमिदमसृजत यदिदं किञ्च	नृ. पू. १।१
स एतं मंत्रराजं नारसिंहमानुष्टुभं प्रतिगृह्णीयात् स मृत्युं तरति, स पाप्मानं तरति, स संसारं तरति	नृ. पू. २।१
स एतान्पाशान् प्रमुंचन् प्रवेदः	सहवै. ९
स एवाश्चोपनिषद्वैवस्वतेन्तरे स गुणं ब्रह्म विधिनाऽऽनन्दैक- रूपं पुरुषोत्तमरूपेण मथुरायां वसुदेवसद्मन्याविर्भविष्यति	गोपीचं. २७
स एतास्तिस्रो देवता अभ्यतपत्, तासां तप्यमानाना॰ रसान्प्रा- बृहदग्नेर्ऋचो वायोर्यजू॰षि सामान्यादित्यात्	छांदो. ४।१७।२
स एतास्तेजोमात्राः समभ्याददानः	बृह. ४।४।१
स एतां त्रयीं विद्यामभ्यतपत्तस्या- स्तप्यमानाया रसान्प्रावृहद्भूरि- त्यृग्भ्यो भुवरिति यजुर्भ्यः स्वरिति सामभ्यः	छांदो. ४।१७।३
स एतेन प्रज्ञाने-(प्रज्ञे-)नात्मना- स्माल्लोकादुत्क्रम्यामुष्मिन् स्वर्गेलोके सर्वान्कामानाप्त्वा- ऽमृतः समभवत् [२ऐत.५।४+	आ. प्र. १
स एतेन रूपेण सर्वा दिशो विष्टोऽस्मि	१ ऐत. २।३।४
स एतेभ्यो भगवान्नीललोहितः प्रोवाच	सदानं. १
स एनमविदितो न भुनक्ति	बृह. १।४।१५
स एनं यजमानमहरहर्ब्रह्म गमयति	प्रश्नो. ४।४
स एनान् ब्रह्म गमयत्येष देवपथो ब्रह्मपथ एतेन प्रतिपद्यमाना इमं मानवमावर्तं नावर्तन्ते	छांदो. ४।१५।६
स एव कर्माणि करोति देवो ह्येको गणेशो बहुधा निविष्टः	हेरम्बो. १०
स एव काद्रवेयो...महावायो- रहङ्कारं निराचकार	सङ्कर्षणो. १
स एव कालातीतः स एवाखिल- कर्मातीतः	त्रि.म.ना. १।५
स एव काले भुवनस्य गोप्ता विश्वाधिपः सर्वभूतेषु गूढः	श्वेताश्व. ४।१५
स एव गुणातीतः स एव कालातीतः	त्रि.म.ना. १।५
स एव चिरन्तनः पुरुषः प्रणवाद्य- खिलमन्त्रवाचकवाच्य आद्यन्त- शून्य आदिदेशकालवस्तुतुरीय- संज्ञानित्यपरिपूर्णः	त्रि.म.ना. १।५
स एव जगद्गुरुः स एवाहं विद्धि	प. हं. प. ११
स एव जपकोट्या नादमनुभवति	हंसो. ६
स एव जाग्रत्परितृप्तिमेति	कैव. १२

स एव जातः स जनिष्यमाणः प्रत्यङ्जनास्तिष्ठति सर्वतोमुखः [श्वेता.२।१६+प्र.शिरः.२।६+ बटुको. २१
स एव जीवः स्वपिति प्रबुद्धः कैव. १४
स एव ज्योतिषां ज्योतिः स एव परमेश्वरः। स एव हि परब्रह्म तद्ब्रह्माहं न संशयः स्कन्दो. ५
स एव तुरीयं ब्रह्म त्रि.म.ना. १।५
स एव तुरीयातीतः स एव विष्णुः त्रि.म.ना. १।५
स एव द्विविधः प्रोक्तः सहितः (कुम्भकः) केवलस्तथा योगकुं. १।२०
स एव द्विविधो बिन्दुः पाण्डरो लोहितस्तथा ध्या. बिं. ८६
स एव नित्यकूटस्थः स एव वेदपुरुष इति विदुषो मन्यन्ते प. हं. २
स एव नित्यतृप्तः प्र. हं. प. ११
स एव नित्यपरिपूर्णः पादविभूतिवैकुण्ठनारायणः त्रि.म.ना. २।६
स एव नित्यपूतः स एव वैराग्यमूर्तिः स एव ज्ञानाकारः स एव वेदपुरुष इति ज्ञानिनोमन्यन्ते तुरीया. ३
स एव नित्यं सकलाः समूर्तयः सुरास्त्वनन्तास्ते जयन्तो नियति क्षयाणां वचनविचित्रे हरते पराय स्वाहा पारमा. ९।१०
स एव परमेश्वरः [त्रि.म.ना.१।५+ स्कन्दो. ५
स एव परंज्योतिः, स एव मायातीतः त्रि.म.ना. १।५
स एवबहुधाजायमानःसर्वान्परिपाति सङ्कर्षणो. १
स एव भगवान् शेषयुगे तुरीयेऽग्नि ब्राह्मण्यां जायमानो रामानुजो भूत्वा सर्वा उपनिषद उद्दिदीर्षति सङ्कर्षणो. ३
स एव भगवान् ब्रह्मा सर्वलोकपितामहः महो. ५।१९८
स एव भगवान्युगसन्धिकाले शरवृन्दसन्निकाशो रौहिणेयो वासुदेवः सर्वाणि गदायायुधशाखामण्डलमभिराचिकीर्षति कृत्स्नमखिलं निघ्नन् सङ्कर्षणो. २

स एव भगवान्युगसन्धिकाले स्वेन रूपेण युगे युगे तेनैव जायमानः ...चातुर्वर्ण्यधर्मान्प्रवर्तयति सङ्कर्षणो. २
स एव भगवान् विष्णुर्नारायण उदाहृतः। दासभूतमिदं तस्य ब्रह्मादिसकलं जगत् भवसं. ३।४१
स एव मन्त्रराजो भवति ना.पू.ता. २।३
स एव मायातीतः स एव गुणातीतः त्रि.म.ना. १।५
स एव मायापरिमोहितात्मा शरीरमास्थाय करोति सर्वम् कैव. १।१२
स एवमास्थाय शरीरमेकम्। मायामयं मोहयतीव सर्वम् हेरम्बो. ९
स एव यस्य प्रसीदति तस्य करतलामलकलितं धाम शाण्डिको. ५
स एव योगी स गुरुः स सेव्यः अमन. २।४३
स एव लययोगः स्यात् १ यो. त. २४
स एव वा एषशुद्धःपूतःशून्यः(आत्मा) मैत्रा. २।४
स एव विदितादन्यस्तथैवाविदितादपि। अन्येषामिन्द्रियाणां तु कल्पितानामपीश्वरः पा. ब्र. १८
स एव विष्णुः स एव समस्तब्रह्मवाचकवाच्यः त्रि.म.ना. १।५
स एव विष्णुः स प्राणः, स कालोऽग्निः, स चन्द्रमाः [कैव.८+ कालिको. ५
स एव वेदपुरुष इति विदुषो मन्यन्ते प. हं. २
स एव वेदपुरुषो महापुरुषो यस्तचित्तं मय्येवावतिष्ठते प. हं. प. ११
स एव शिवयोगीति कथ्यते भावनो. १०
स एव सत्योपाधिरहितः स एव परमेश्वरः त्रि.म.ना. १।५
स एव सर्वभूतात्मा नर इत्यभिधीयते। अः परः प्रकृतेः प्रोक्तः पुरुषः पञ्चविंशकः भवसं. २।३२
स एव सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यं सनातनम्। ज्ञात्वा तं मृत्युमत्येति नान्यः पन्था विमुक्तये कैव. १।९
स एव सर्वो भुवनस्य साक्षी हेरम्बो. ७

स एव संसारतारणाय गुरुमाश्रित्य कामादि त्यक्त्वा... नहि मदन्यदिति जातविवेकः ...परिपक्वो भवति	मं. ब्रा. २।७
स एव साक्षाद्विज्ञानी स शिवः स हरिर्विधिः	महो. ४।७६
स एव स्वीकृतवैराग्यात् कर्मफलजन्मालं संसारबन्धनमलमिति विमुक्त्यभिमुखो निवृत्तिमार्गप्रवृत्तो भवति	मं. ब्रा. २।७
स एव हि परब्रह्म तद्ब्रह्माहं न संशयः	स्कन्दो. ५
स एव हि महादेवः स एव हि महाहरिः	स्कन्दो. ४
स एवं जीवत्रिविधो भवति	सामर. ९८
स एवंवित्सर्वेषां भूतानामात्मा भवति	बृह. १।५।२०
स एवंविद्वानस्माच्छरीरभेदादूर्ध्व उत्क्रम्यामुष्मिन्स्वर्गे लोके सर्वान्कामानाप्त्वामृतः समभवत्	२ ऐत. ४।६
स एवाग्निः सलिले सन्निविष्टः, तमेव विदित्वाऽतिमृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय	श्वेताश्व. ६।१५
स एवात्मा भवति (गणेशः)	गणेशो. ५।७
स एवाद्य स उ श्व इति	बृह. १।५।२३
स एवाद्य स उ श्व एतद्वै तत्	कठो. ४।१३
स एवाधस्तात् स उपरिष्टात्	छांदो. ७।२५।१
स एवान्तःकरणसम्भिन्नबोधोऽस्मत्प्रत्ययावलम्बनस्त्वंपदवाच्यो भवति	पैङ्गलो. ३।१
स एवायं पुरुषः स्वयमेव समाराधनतत्परोऽभूत्	सामर. ३
स एवायं पुरुषः स्वरमणार्थे स्वस्वरूपं प्रकटितवान्	सामर. ३
स एवायं मया तेऽद्य	भ. गी. ४।३
स एवान्यकोऽनन्तो नित्यो गोपालः	गोपालो. २।४
स एवाहमस्मि [छांदो. ४।११।१+	१२।१+१३।१
स एवाहं विद्धि	प. हं. प. ११
स एवेद९ सर्वम्	छांदो. ७।२५।१
स एवेदमावरीवर्ति भूतम्	अ. शिरः ३।१४
स एवैष बालाकिर्य एवैष चन्द्रमसि पुरुषस्तमेवाहं ब्रह्मोपास इति	कौ. त. ४।३
स एष इन्द्रः सर्वे यद्गायत्री उद्गीथो वसवः प्रातः सवनमिति	शौनको. २।४
स एष इव एव लोकाद्‍यं स लोकः सम्प्रतिष्ठितः	संहितो. ४।१
स एष इह प्रविष्ट आनखाग्रेभ्यः	बृह. १।४।७
स एष कोशो वसुधानस्तस्मिन् विश्वमिद९ श्रितम्	छांदो. ३।१५।१
स एष गिरिश्चक्षुः श्रोत्रं मनो वाक् प्राणस्तं ब्रह्मगिरिरित्याचक्षते	१ ऐत. १।८।२
स एषचैतस्मादर्वाञ्चोलोकाः(मा.पा.)	छां.उ. १।७।६
स एष जगदाविर्भावतिरोभावहेतुः	सङ्कर्षणो. ३
स एष जीवेनात्मनाऽनुप्रभूतः पेपीयमानो मोदमानस्तिष्ठति	छांदो. ६।११।१
स एष देवः कृतभावभूतः स्वयं विशुद्धो विरजः प्रकाशते	रुद्र. हृ. ४०
स एष देवोऽम्बरगश्च चक्रे, अन्येऽभ्यधिष्ठेत तमो निरुन्ध्यः। हिरण्मयं यस्य विभाति सर्वे, व्योमान्तरे रश्मिमिवांशुनाभिः	एका. उ. ८
स एष निरञ्जनोऽकामत्वेनोज्जृम्भते	त्रि. ता. १।५
स एष नेति नेतीति व्याख्यातं निह्नुते यतः। सर्वमग्राह्यभावेन हेतुनाऽजं प्रकाशते	अद्वैत. २६
स एष नेति नेत्यात्माऽगृह्यो न हि गृह्यतेऽशीर्यो न हि शीर्यतेऽसङ्गो नहि सज्यते [बृह.३।९।२६+४।२।४+४।४।२२	+४।५।१५
स एष परमानन्दोऽप्यानन्दो ब्रह्म तत्परम्	२ देव्यु. ३६
स एष परोवरीयानुद्गीथः	छांदो. १।९।२
स एष पाङ्क्तो यज्ञः पाङ्क्तः पशुः पाङ्क्तः पुरुषः पाङ्क्तमिद९ सर्वं यदिदं किञ्च तदिद९ सर्वमाप्नोति	बृह. १।४।१७
स एष पुरुषः पञ्चविधः	१ ऐत. ३।३।२

स एष पुरुषः समुद्रः सर्वं लोकमत्ति १ ऐत. ३।३।१
स एष प्रहितां संयोगोऽध्यात्मम् १ ऐत. १।५।१
स एष प्राणस्त्रेधा विहितः बृह. १।२।३
स एष भस्म ज्योती रुद्राक्ष इति रु. जा. ४४
स एष मुमुक्षुभिर्ध्येयः सङ्कर्षणो. ३
स एष मृत्युश्चैवामृतं च १ ऐत. १।८।४
स एष मोक्षप्रदः; एतत्स्मृत्या सर्वेभ्यः पाप्मभ्यो मुच्यते सङ्कर्षणो. ३
स एष यज्ञः पञ्चविधोऽग्निहोत्रं दर्शपूर्णमासौ चातुर्मास्यानि पशुः सोमः १ ऐत. ३।३।४
स एष यज्ञानां सम्पन्नतमो यत्सोमः १ ऐत. ३।३।४
स एष ये चामुष्मात्पराञ्चो लोकास्ता५ श्चाप्नोति छांदो. १।७।७
स एष ये चामुष्मात्प्राञ्चो लोकास्तेषां चेष्टे छांदो. १।७।८
स एष ये चैतस्मादर्वाञ्चो लोकास्तेषां चेष्टे छांदो. १।७।६
स एष रसाना५ रसतमः परमः परार्ध्योऽष्टमो य उद्गीथः छांदो. १।१।३
स एष वाचश्चित्तस्योत्तरोत्तरिक्रमो यद्यज्ञः १ ऐत. ३।३।४
स एष वायुः पञ्चविधः–प्राणोऽपानो व्यान उदानः समानः १ ऐत. ३।३।३
स एष विसुकृतो विदुष्कृतो ब्रह्म विद्वान्ब्रह्मैवाभिप्रैति कौ. त. १।४
स एष वैश्वानरो विश्वरूपः प्राणोऽग्निरुदयते प्रश्नो. १।७
स एष सङ्कल्पः, सङ्कल्पमुपास्स्वेति छांदो. ७।४।२
स एष सर्वभूतान्तरात्माऽपहतपाप्मा दिव्यो देव एको नारायणः [सुबालो. ७।२+ अध्यात्मो. १
स एष सर्वस्येशानः सर्वस्याधिपतिः सर्वमिदं प्रशास्ति यदिदं किञ्च बृह. ५।६।१
स एष सर्वस्यै त्रयीविद्याया आत्मा कौ. त. २।६
स एष सर्वात्मकः, स एष... ध्येयः सङ्कर्षणो. ३
स एष सर्वेभ्यः पाप्मभ्य उदितः, उदेति छांदो. १।६।७
स एष सर्वेषां मोक्षदश्चासीत् मुद्गलो. २।३
स एष संवत्सरसमानश्चक्षुर्मयः श्रोत्रमयश्छन्दोमयो मनोमयो वाङ्मय आत्मा ३ ऐत. २।३।५
स एष संवत्सरः प्रजापतिः षोडशकलः बृह. १।५।१४
स एष ह्योङ्कारश्चतुरक्षरश्चतुष्पादश्चतुश्शिराश्चतुर्मात्रः स्थूलमेतद्ध्रस्वदीर्घप्लुत इति अ. शिखो. १
स एषोऽकलोऽमृतो भवति प्रश्नो. ६।५
स एषोऽक्षरसम्मानश्चक्षुर्मयः... वाङ्मय आत्मा ३ ऐत. २।२।३
स एषोऽक्षरोऽनन्तः रामो. ३।२
स एषोऽग्निर्दिविश्रितः सौरः कालाख्योऽदृश्यः सर्वभूतान्नमत्ति मैत्रा. ६।२
स एषोऽग्नेरिव प्रज्वलतो रथस्येवोपशब्दितस्तं यदा न शृणुयात्तदप्येवमेव विद्यात् ३ ऐत. २।४।६
स एषोऽनन्तः परोवरीयो हास्य भवति छांदो. १।९।२
स एषोऽन्तरे हृत्पुष्कर एवाश्रितोऽन्नमत्ति मैत्रा. ६।१
स एषोऽन्तश्चरते बहुधा जायमानः मुण्ड. २।२।६
स एषोऽप्सु प्रतिष्ठितो यत्र क्व चैति तदेव प्रतितिष्ठति बृह. १।२।३
स एषोऽध्वरथः प्रष्टिवाहनो मनो वाक्प्राणसंहतः ३ ऐत. १।१।३
स एषोऽसपत्नो न सपत्नो नास्य सपत्नो भवति बृह. १।५।१२
स एषोऽसुः, स एष प्राणः, स एष भूतिश्चाभूतिश्च १ ऐत. १।८।३
स एषोऽहः सम्मानश्चक्षुर्मयः... वाङ्मय आत्मा ३ ऐत. २।१।३
स ऐक्षत यदि वा इममभिम५स्ये कनीयोऽन्नं करिष्ये बृह. १।२।५
स ऐक्षत यदिह वाव इममभिम५स्ये... (मा. पा.) बृ. उ. १।२।५
स ओतः प्रोतश्च विभुः प्रजासु महाना. २।३

स ओमिति ग्रा ह्युद्गामीयते स यावत्क्षिप्येन्मनस्तावदादित्यं गच्छति छांदो. ८।६।५
स ओमित्येतदक्षरमपश्यत् २ प्रणवो. २
सकलतीर्थानि जायन्ते पुरुषोत्तमात् सिं. वि. २
सकलब्रह्माण्डमण्डलं स्वप्रकाशं ध्यायेत् भावनो. १
सकलभुवनमाता सन्ततं श्रीःश्रियैनः सौभाग्य. २
सकलविलीनतमोमयाभिमानः अ. पू. २।१६
सकलवेदशास्त्रसिद्धान्तरहस्य-जन्माभ्यस्तात्यन्तोत्कृष्टसुकृत-परिपाकवशात्सद्भिः सङ्गोजायते त्रि.म.ना. ५।४
सकलस्य वा एतद्रूपं यत्संवत्सरः मैत्रा. ६।१५
सकलं निष्कलं चैव पूर्णत्वाच्च तदेव हि यो. शि. १।१९
सकलं निष्कलं सकलनिष्कलं चेति शांडि. ३।१।२
(अथ) सकलः साधारोऽमृत-मयश्चतुरात्मा नृसिंहो. ३।३
सकलात्मकाय भीमकर पिङ्गलाक्ष ...स्थलजलाग्निममेमेदिन्सर्व-शत्रून् छिन्धि छिन्धि लाङ्गूली. ३
सकले निष्कले भावे सर्वत्रात्मा व्यवस्थितः ध्या. वि. ८
सकले सकलो भावो निष्कले निष्कलस्तथा ब्र. वि. ३९
सकलोपनिषन्मयः ना. प. ८।५
सकषायं विजानीयात् समप्राप्तं न चालयेत् अद्वैत. ४४
सकामभिर्जायते तत्र तत्र। पर्याप्त-कामस्य कृतात्मनस्तु इहैव सर्वे प्रविलीयन्ति कामाः मुंड. ३।२।२
सकाम्या निष्काम्या देवानां सर्वेषां भूतानां भवति गोपालो. १।१५
सकाम्या मेरोः शृङ्गे यथा सप्त पुर्यो भवन्ति, तथा निष्काम्याः सकाम्या भूगोपालचक्रे सप्त पुर्यो भवन्ति गोपालो. १।१९
स कारणं करणाधिपाधिपो न चास्य कश्चिज्जनिता न चाधिपः [श्वेता. ६।९+ भवसं. २।४३
सकारं च हकारं च जीवो जपति सर्वदा ब्र. वि. १६
सकारः खेचरी प्रोक्तः यो. चू. ८२
सकारः सत्यममृतं प्राप्तिः सोमश्च कीर्त्यते सीतो. २
सकारो ध्यायते जन्तुर्हकारी हि भवेद्ध्रुवम् यो. चू. ८३
स कालेनेह महता भ. गी. ४।२
स कालोऽग्निः स चन्द्रमाः कालिको. ७
स किं म एतदुपतपसि योऽहमनेन न प्रेष्यामीति छांदो. ३।१६।७
सकुसुको विकुसुको निर्ऋचो यश्च निस्स्वनः सहवै. ५
सकृज्जप्त्वैव शुचिः स पूतः कर्मण्यो भवति अ.शिर. ३।१६
सकृज्ज्ञानेन मुक्तिः स्यात् सम्य-ग्ज्ञाने स्वयं गुरुः ते. बिं. २।४३
स कृत्वा राजसं त्यागं भ. गी. १८।८
सकृदुच्चारितमात्रः स एष ऊर्ध्व-मन्नमतीत्योङ्कारः अ.शिखो. १
सकृदुच्चारितं येन शिव इत्यक्षर-द्वयम्। बद्धः परिकरस्तेन मोक्षोपगमनं प्रति शिवो. १।१८
सकृद्दिवा हैवास्मै भवति य एतामेव ब्रह्मोपनिषदं वेद छांदो. ३।११।३
सकृद्दिवा हैवास्मै भवति य एवं विद्वानेतेन.. संधत्ते १ सं.वो. १।३
सकृद्दिवा हैवास्य भवति। य एवं विद्वानेतेनात्मानं सन्धत्ते कठश्रु. ११
सकृद्विभात-सदानन्दानुभवैक-गोचरो ब्रह्मवित्तदेव भवति मै. ब्रा. २।६
सकृद्विभातो ह्येवैष धर्मो धातु-स्वभावतः अ. शां. ८१
सकृद्विभातो ह्येवैष ब्रह्मलोकः छांदो. ८।४।२
सक्तं तु दीर्घतपसा मुक्तमप्यति-बद्धवत् अ. पू. ३।५१

सङ्कल्पमात्रसम्भवो बन्धः निरा. उ. २१
सङ्कल्पमूलध्यानादिचिन्ताशत-
समाकुलाः । क्लेशेनापि न
विन्दन्ति प्राप्तव्यं स्थानमीप्सितम् अमन. २।३८
सङ्कल्पमेव यत्किञ्चित्तत्तन्नास्तीति
निश्चिनु ते.बिं. ५।१०५
सङ्कल्परहितोऽस्म्यहम् मैत्रे. ३।७
सङ्कल्पसङ्क्षयवशाद्गलिते तु चित्ते
संसारमोहमिहिका गलिता भवन्ति महो. ५।५३
सङ्कल्पात्मकानि सङ्कल्पे प्रतिष्ठितानि छांदो. ७।४।२
सङ्कल्पादिकं मनो बन्धहेतुः,
तद्वियुक्तं मनो मोक्षाय भवति मं. ब्रा. २।८
सङ्कल्पादेवास्य गन्धमाल्ये समु-
त्तिष्ठतस्तेन गन्धमाल्यलोकेन
सम्पन्नो महीयते छांदो. ८।२।६
सङ्कल्पादेवास्य गीतवादिते समु-
त्तिष्ठतस्तेन गीतवादितलोकेन
सम्पन्नो महीयते छांदो. ८।२।८
सङ्कल्पादेवास्य पितरः समुत्तिष्ठन्ति,
तेन पितृलोकेन सम्पन्नो
महीयते छांदो. ८।२।१
सङ्कल्पादेवास्य भ्रातरः समु-
त्तिष्ठन्ति, तेन भ्रातृलोकेन
सम्पन्नो महीयते छांदो. ८।२।३
सङ्कल्पादेवास्य मातरः समुत्तिष्ठन्ति,
तेन मातृलोकेन सम्पन्नो महीयते छांदो. ८।२।२
सङ्कल्पादेवास्य सखायः समु-
त्तिष्ठन्ति तेन सखिलोकेन
सम्पन्नो महीयते छांदो. ८।२।५
सङ्कल्पादेवास्य स्वसारः समु-
त्तिष्ठन्ति तेन स्वसृलोकेन
सम्पन्नो महीयते छांदो. ८।२।४
सङ्कल्पादेवास्यान्नपाने समुत्तिष्ठत-
स्तेनान्नपानलोकेन सम्पन्नो
महीयते छांदो. ८।२।७
सङ्कल्पादेवास्य स्त्रियः समुत्तिष्ठन्ति,
तेन स्त्रीलोकेन सम्पन्नो महीयते छांदो. ८।२।९
सङ्कल्पानुसन्धानवर्जनं चेत्प्रति-
क्षणम् । करोषि तदचित्तत्वं
प्राप्त एवासि पावनम् महो. ४।६
सङ्कल्पाः कल्पतरवः भावनो. २
सङ्कल्पाद्वाव भूयोऽस्तीति तन्मे
भगवान्ब्रवीतु छांदो. ७।४।३
सङ्कल्पोऽध्यवसायश्च अभिमानो-
ऽवधारणा (मनोधर्माः) वराहो. १।१३
(यः) सङ्कल्पाध्यवसायाभिमान-
लिङ्गःप्रजापतिर्विश्वाख्यः [मैत्रा.+ २।५+४।५
सङ्कल्पो वाव मनसो भूयान् छांदो. ७।४।१
संक्लेशयोपलब्धेश्च परतन्त्रा-
श्रिता मता अ. शां. २४
सङ्कोचविकासात्मकमहामाया-
विलासात्मक एव सर्वोऽप्य-
विद्याप्रपञ्चः त्रि.म.ना. ३।३
सङ्गत्यागं विदुर्मोक्षं सङ्गत्यागा-
दजन्मता । सङ्गं त्यज त्वं
भावानां जीवन्मुक्तो भवानघ अ. पू. ५।४
सङ्गरहितोऽभ्यानयत् गो. पू. ३।१०
सङ्गस्तेषूपजायते भ. गी. २।६२
सङ्गं त्यक्त्वा करोति यः भ. गी. ५।१०
सङ्गं त्यक्त्वाऽऽत्मशुद्धये भ. गी. ५।११
सङ्गं त्यक्त्वा धनञ्जय भ. गी. २।४८
सङ्गं त्यक्त्वा फलं चैव भ. गी. १८।९
सङ्गं त्यक्त्वा फलानि च भ. गी. १८।६
सङ्गात् सञ्जायते कामः भ. गी. १८।६२
सङ्गीततालयवाद्यवशं गताऽपि
मौलिस्थकुम्भपरिरक्षणधी-
र्नटीव (पुङ्खानुपुङ्खविषयेक्षण-
तत्परोऽपि ब्रह्मावलोकनधियं
न जहाति योगी) वराहो. २।८२
सङ्ग्रामं न करिष्यसि भ. गी. २।३३
सङ्घातश्चेतना धृतिः भ. गी. १३।६
सङ्घाताः स्वप्नवत्सर्वे आत्ममाया-
विव(स-)र्जिताः अद्वैत. १०
स चक्षुषः पंक्ति पुनाति अ.शिरः.३।१६
स चतुर्भिश्चतुर्भिरक्षरैरष्टौ वसू-
नजनयत् अव्यक्तो. ६
स चन्द्रमसमागच्छति बृह. ५।१०।१
स चन्द्रमाः स नक्षत्राणि स
चराचरात्मकं जगत् गान्धर्वो. २

स च प्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यानसमाधियोगानुमानात्मचिन्तकवटकणिका वा — १ आत्मो. ३
स च पादनारायणो जगत्स्रष्टुं प्रकृतिमजनयत् — मुद्गलो. २।४
स च मे न प्रणश्यति — भ. गी. ६।३०
स च यो यत्प्रभावश्च — भ. गी. १३।४
स च सर्वस्मान्महिम्नो ज्यायान् — मुद्गलो. २।३
स चाक्षुषः पुरुषः, दर्शनाय चक्षुः — छांदो. ८।१२।४
स चानन्तकोटिब्रह्माण्डानामुदयस्थितिलयाद्यखिलकार्यकारणजालपरमकारणकारणभूतो महामायातीतस्तुरीयः परमेश्वरो भवति — त्रि.म.ना. २।६
स चानन्तमहामायाविलासानामधिष्ठानविशेषनिरतिशयाद्वैतपरमानन्दलक्षणपरब्रह्मविलासविग्रहो भवति — त्रि.म.ना. २।६
स चानन्तशीर्षा पुरुष अनन्ताक्षिपाणिपादो भवति — त्रि.म.ना. २।६
स चानन्त्याय कल्पते [श्वेता.५।९+ — भवसं. २।३९
स चापि तत्प्रत्ययवद्यथोक्तमथास्य मृत्युः पुनरेवाह तुष्टः — कठो. १।१५
स (ओङ्कारः) चाष्टधा भिद्यते— अकारोकार-मकारार्ध-मात्रा-नाद-बिन्दु-कला-शक्तिश्चेति — ना. प. ८।२
स चा४ शिक्य पुरोवाचोपनिषत् — महाना. ७।६
सचेतनो निचेतनो भवति, सर्वं भवति — गणेशो. २।२
सचेताः प्रकृतिं गतः — भ.गी. ११।५१
सच्च त्यच्चाभवत् — तैत्ति. २।६
सच्च सद्धेतुकंनास्ति सद्धेतुकमसत्कुतः — अ. शां. ४०
(सः) सच्चासच्च सर्वं पश्यति — सुबालो. ४।२
सच्चासच्च सर्वः पश्यति सर्वः पश्यति — प्रश्नो. ४।५
सच्चित्सुखपरिपूर्णतात्मरणं गन्धः — भावनो. ८
सच्चिदानन्दघनज्योतिरभवत् — नृसिंहो. ६।१
सच्चिदानन्दघनज्योतिर्भवति — नृसिंहो. ६।१
सच्चिदानन्दपूर्णात्मसुभवात्मकं सच्चिदानन्दपूर्णात्मानं परं ब्रह्म सम्भाव्याहमित्यात्मानमादाय मनसा ब्रह्मणैकीकुर्यात् — नृसिंहो. ४।२
सच्चिदानन्दपूर्णात्मा सर्वप्रेमास्पदोऽस्म्यहम् — अ. वि. १०८
स चिदानन्दमद्वैतं सच्चिदानन्दमद्वयम् — ते. विं. ६।१
सच्चिदानन्दमात्मानमद्वितीयं ब्रह्म भावयेत् — व. सू. ९
सच्चिदानन्दमात्रमेकरसं पुरमेव ब्रह्म मकारेण जानीयात् — नृसिंहो. ५।७
सच्चिदानन्दमात्रं हि सच्चिदानन्दमन्यकम् — ते. बिं. ६।२
सच्चिदानन्दमात्रः स स्वराड्भवति — नृसिंहो. ७।१,४
सच्चिदानन्दमात्रोऽहं स्वप्रकाशोऽस्मि चिद्घनः — अ. वि. १०९
सच्चिदानन्दमात्रोऽहमनुत्पन्नमिदं जगत् [ते. बिं. ६।५८, — ६३,७१
सच्चिदानन्दमात्रोऽहमिति निश्चित्य तत्त्यज — ते. बिं. ६।१०७
सच्चिदानन्दमेव त्वं सच्चिदानन्दकोऽस्म्यहम् — ते. बिं. ६।३
सच्चिदानन्दरूपमिदं सर्वं सद्धीदं सर्वं सत्समिति चिद्धीदं सर्वं काशते प्रकाशते चेति — नृसिंहो. ७।३
सच्चिदानन्दरूपं तदवाङ्मनसगोचरम् — अ. पू. ४।२९
सच्चिदानन्दरूपाय सर्वधीवृत्तिसाक्षिणे । नमोवेदान्तवेद्याय ब्रह्मणेऽनन्तरूपिणे — ब. सू. शीर्षक
सच्चिदानन्दरूपाय ज्ञानायामिततेजसे। ब्रह्मस्वरूपाय नारायण नमोऽस्तु ते — ना. उ. २।१
सच्चिदानन्दरूपोऽस्य परमात्मार्थ उच्यते । व्यक्तं निष्कलं ब्रह्म प्राणो मायेति च स्वरः — रामर. ५।५
सच्चिदानन्दलक्षणः । सर्वतीर्थस्वरूपोऽस्मि परमात्मास्म्यहं शिवः — मैत्रे. ३।१२
सच्चिदानन्दलहरी महात्रिपुरसुन्दरी बहिरन्तरनुप्रविश्य स्वयमेकैव विभाति — बह्वृचो. २

वाक्यम्	स्थानम्
सच्चिदानन्दविग्रहः (श्रीरामः)	मुक्तिको. १।४
सच्चिदानन्दस्वरूपपरवस्तु भवति	ना.पू.ता. १।१
[सुखमिति च–] सच्चिदानन्दस्वरूपं ज्ञात्वाऽऽनन्दरूपा या स्थितिः सैव सुखम्	निरा. उ. १७
सच्चिदानन्दस्वरूपं ब्रह्मैव	अद्वयता. ६
सच्चिदानन्दस्वरूपाय महात्मने...	ना.उ.ता. २।३
सच्चिदानन्दं स्वप्रकाशं ब्रह्म	त्रि.म.ना. १।३
सच्चिदानन्दात्मकाः स्युर्विष्णौ नित्ये प्रकल्पिताः	ना.पू.ता. ५।७
(तथैव) सच्चिदानन्दात्मोपासकः सर्वपरिपूर्णाद्वैतपरमानन्दलक्षणे परब्रह्मणि नारायणे मयि सच्चिदानन्दात्मकोऽहमजोऽहं परिपूर्णोऽहमस्मीति प्रविवेश	त्रि.म.ना. ८।३
सच्छब्दवाच्यमविद्याशबलं ब्रह्म	त्रि. ब्रा. १
सच्छब्दः पार्थ युज्यते	भ. गी. १७।२६
स छन्दोभिश्छन्नो यच्छन्दोभिश्छन्नस्तस्माच्छन्दांसीत्याचक्षते छादयन्ति ह वा एनं छन्दांसि	१ ऐत. १।६।१
स जन्मान्तरितान् पापान्नाशयति	रामो. ४।४
स जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यवस्थाः प्राप्य घटीयन्त्रवदुद्विग्नो जातो मृत इव स्थितो भवति	पैङ्गलो. २।६
स जातश्शत्रून्सादुत जामिशंसात् ज्यायसश्शत्रून्सादुत वा कनीयसः	सहवै. ३
स जातीयप्रवाहश्च विजातीयतिरस्कृतिः। नियमो हि परानन्दः..	ते. बिं. १।१८
सजातीयविशेषविशेषितं निरवयवं निराधारं निर्विकारं...शाश्वतं परमं पदं निरतिशयानन्दानन्तसच्चित्सर्वतःकारमद्वितीयं स्वयम्प्रकाशमनिशं ज्वलति	त्रि.म.ना. ७।७
सजातीयं न मे किञ्चिद्विजातीयं न मे क्वचित्	ते. बिं. ३।४७
स जातो अत्यरिच्यत [ऋ. सं.+	१०।९०।५+
[वा.सं. ३१।५+	साम. ६।४।७
[अथर्व. १९।६।९+	त्रिसु. १२।३
स जातो भूतान्यभिव्यैख्यत् किमिहान्यं वावदिषदिति	१ ऐत. ३।१३
स जातो यावदायुषं जीवति तं प्रेतं दिष्टमितोऽग्नय एव हरन्ति यत एवेतो यतः सम्भूतो भवति	छांदो. ५।९।२
स जायमान उपजायमानो द्वादश त्रयोदश उपमासः	कौ. त. ४।२
स जीवति मनो यस्य मननेनोपजीवति	महो. ४।१४
स जीवति यावज्जीवत्यथ यदा म्रियते	बृह. ६।२।१३
स जीवन्मुक्तो भवतीत्याह भगवन्नारायणो ब्रह्माणम्	ब्रह्मबि. ३।१
स जीवः शिव उच्यते	यो. शि. १।११
स जीवः केवलः शिवः	मैत्रे. २।१
सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहञ्छूर विद्वान्	महाना. ५।११
सज्जन्ते गुणकर्मसु	भ.गी. ३।२९
स ज्ञायते येन तदस्तदोषं शुद्धं परं निर्मलमेकरूपम्। सन्दृश्यते वाप्यवगम्यते वा तज्ज्ञानमज्ञानमतो यदन्यत्	भवसं. २।५५
स ज्येष्ठाज्येष्ठव्यवधानरहितः(विष्णुः)	प. हं. प. ११
सञ्चरन्वनमार्गेण शुचौ देशे परिभ्रमन्। वायुभक्षोऽम्बुभक्षो वा विहितैः कन्दमूलकैः॥ स्वशरीरे समाप्याथ पृथिव्यां ताश्च पातयेत्	कठश्रुत्यु. ३
सञ्चारधर्मरहिते मयि स्वप्नो न विद्यते	वराहो. २।६१
सञ्चितकर्मणि चित्तसंयमात् पूर्वजातिज्ञानम्	शांडि. १।७।४२
सच्छब्दवाच्यमविद्याशबलं ब्रह्म	त्रि. ब्रा. १।१
सञ्छिन्नाध्यायिन आचार्याः पूर्वे बभूवुः	२ प्रणवो. १६
' सञ्ज्ञानमनन्तं ब्रह्म ' इत्यादिवाक्यविचारः	मठाम्ना. ७
सञ्ज्ञार्थं तान् ब्रवीमि ते	भ. गी. १।७
सञ्ज्ञानमाज्ञानं विज्ञानं प्रज्ञानं मेधा दृष्टिर्धृतिर्मतिर्मनीषा जूतिः	

स्मृतिः सङ्कल्पः क्रतुरसुः कामो वश इति...प्रज्ञानस्य नामधेयानि — २ ऐत. ५।२
स त एष रसो यश्चक्षुः, सतो ह्येष रसः — बृ. उ. २।३।४
स तज्ज्ञो बालोन्मत्तपिशाचवज्जड-वृत्त्या लोकमाचरेत् — मं. ब्रा. ५।२
स तत एव निववृते, नैतदशकं विज्ञातुं यदेतद्यक्षमिति — केनो. ३।६,१०
सततमनुभवेऽहं तौ बलाति-ब(क्लेशौ)ल्लान्तौ — सावित्र्यु. ११
सततमात्माभ्यासरतो भवेत् — अमन. २।४७
सततं कीर्तयन्तो मां — भ. गी. ९।१४
सततं पूजयेद्विष्णुं दिवारात्रं न पूजयेत् — शांडि. १।७।३८
सततं ब्रह्मवादिनाम् — भ.गी. १७।२४
सततं ह्येतद्ब्रह्मोग्रत्वाद्वीरत्वान्मह-त्त्वाद्विष्णुत्वाज्ज्वलत्वात्सर्वतो-मुखत्वान्नृसिंहत्वाद्भीषणत्वाद्भद्र-त्वान्मृत्युमृत्युत्वान्नमामित्वादिति — नृसिंहो. ७।५
स तत्र तपसा ब्रह्मचर्येण श्रद्धया सम्पन्नो महिमानमनुभवति — प्रश्नो. ५।३
स तत्र परमं तप आस्थायादित्य-मीक्षमाण ऊर्ध्वबाहुस्तिष्ठति [मैत्रा. १।२+ — मैत्रे. १।२
स तत्र पर्येति जक्षन्क्रीडन्नममाणः स्त्रीभिर्वा यानैर्वा ज्ञातिभिर्वा नोपजन९ स्मरन्निदं शरीर९.. — छांदो. ८।१२।३
स तदभिमानी स्पष्टवपुः सर्वस्थूल-पालकोविष्णुःप्रधानपुरुषोभवति — पैङ्गलो. १।३
स तन्मयो ह्यमृत ईशसंस्थो ज्ञः सर्वगो भुवनस्यास्य गोप्ता — श्वेता. ६।१७
स तपस्तप्त्वा इद९ सर्वमसृजत् — तैत्ति. २।६
स तपस्तप्त्वा स मिथुनमुत्पादयते — प्रश्नो. १।४
स तपोऽतप्यत [प्रश्नो. १।४+ [-५+नृ.पू.१।१+ग.पू.१।३+ — तैत्ति.२।६+३।१ बृ. जा. १।३
स तया वाचा तेनात्मनेद९ सर्वमसृजत — बृह. १।२।५
स तया श्रद्धया युक्तः — भ. गी. ७।२२

स तस्मिन्नेवाकाशे स्त्रियमाजगाम बहुशोभमानामुमां हैमवतीं ता९ होवाच किमेतद्यक्षमिति — केनो. ३।१२
स तस्या आद्यैर्द्वादशभिरक्षरै-र्ब्राह्मणमजनयत् — अव्यक्तो. ६
स तं परं पुरुषमुपैति दिव्यम् — भ. गी. ८।१०
सता सोम्य तदा सम्पन्नो भवति स्वमपीतो भवति तस्मादेन९ स्वपितीत्याचक्षते — छांदो. ६।८।१
सतां हि सत्यं तस्मात्सत्ये रमन्ते — महाना.१६।१२
सति दीप इवालोकः सत्यर्के इव वासरः । सति पुष्प इवामोद-श्चिति सत्यं जगत्तथा ॥ प्रति-भासत एवेदं न जगत् परमार्थतः — महो. ५।१०७
सति वज्रासने पादौ कराभ्यां धारयेद्दृढम्...कन्दंतत्रप्रपीडयेत् — योगकु. १।४८
सतीषु युक्तिष्वेतासु हठान्नियमयन्ति ये । चेतसो दीपमुत्सृज्य विचिन्वन्ति तमोऽञ्जनैः — मुक्तिको. २।४६
स तूष्णीं मनसा ध्यायन्कथमिमे-ऽम्नायाः स्युः — ग. पू. १।३,६
स तेजस्वतो लोकान्भास्वतोऽपहत-तमस्कानभिसिद्ध्यति — छांदो. ७।११।२
स तेजस्वी, स मे ददातु — चिक्ष्यु. ७।४
स तेनैव संवेदितस्तूर्णमेव जग-त्यामभिसम्पद्यते — प्रश्नो. ५।३
स ते प्राणा वाऽऽपो गृहीत्वा हृद-यमन्वालभ्य जपेत् — प्रा. हो. १।१२
स तेषां तुर्यभागेनकर्मेन्द्रियाण्यसृजत् — पैङ्गलो. १।४
स तेषां सत्त्वतुरीयभागेन ज्ञाने-न्द्रियाण्यसृजत् — पैङ्गलो. १।४
स तेषां सत्त्वांशं चतुर्धा कृत्वा भागत्रयसमष्टितः पञ्चक्रिया-वृत्त्यात्मकमन्तःकरणमसृजत् — पैङ्गलो. १।४
सतो बन्धुमसति निरविन्दन् हृदि प्रतीष्या कवयो मनीषेति उपैनं तदुपनमति यत्कामो भवति [बृ. जा. १।२+ — नृ. पू. १।१

सतोऽसत्ता स्थिता मूर्ध्नि रम्याणां मूर्ध्न्यरम्यता। सुखानां मूर्ध्नि दुःखानि किमेकं संश्रयाम्यहम् महो. ६।२४
सतो ह्येष रसः बृ. उ. २।३।४
सत्कर्मपरिपाकतो बहूनां जन्मनामन्ते नृणां मोक्षेच्छा जायते पैङ्गलो. २।९
सत्कर्मपरिपाकात्तु स्वविकारं चिकीर्षति। कोऽहं कथमयं दोषः संसाराख्य उपागतः योगकुं. ३।२८
सत्कारमानपूजार्थं भ.गी. १७।१८
सत्कुलभवोपनीतः सम्यगुपनयनपूर्वकं...शान्तो दान्तःसन्न्यासी...देहत्यागं करोति स मुक्तो भवति ना. प. १।१
सत्ता ब्रह्म न चापरा पा. ब्र. ४९
सत्तामात्रप्रकाशैकप्रकाशं भावनातिगम् (परमात्मानं ध्यायेत्) मैत्रे. १।१४
सत्तामात्रस्वरूपोऽहं शुद्धमोक्षस्वरूपवान् ते. बिं. ३।३०
सत्तामात्रं चित्स्वरूपं प्रकाशं व्यापकं तथा। एकमेवाद्वयं ब्रह्म गोपालो. २।१४
सत्तामात्रं हीदं सर्वं सदेव पुरस्तात्सिद्धम् नृसिंहो. ९।६
सत्ता सर्वपदार्थानां नान्या संवेदनादृते महो. ५।४७
सत्तासामान्यकोटिस्थेद्रागित्येव पदे यदि। पौरुषेण प्रयत्नेन बलात्संत्यज्य वासनाम्॥ स्थितिं बध्नासि तत्त्वज्ञ क्षणमप्यक्षयात्मिकाम्। क्षणेऽस्मिन्नेव तत्साधु पदमासादयस्यलम् अ. पू. ४।७४
सत्तासामान्यपर्यन्ते यत्तत्कलनवोज्झितम्। पदमाद्यमनाद्यन्तं तस्य बीजं न विद्यते अ. पू. ४।६८
सत्तासामान्यमेवैकं भावयन्केवलं विभुः। परिपूर्णः परानन्दी विश्वापूरितदिग्भरः अ. पू. ४।६७
सत्तासामान्यरूपे वा करोषि स्थितिमादरात्। तत्किञ्चिदुचितेनेह यत्नेनाप्नोषि तत्पदम् अ. पू. ४।७६
सत्तु व्यापकतयाऽस्ति, तेजोमयी चित् सामर. ९७
सत्परानन्दरूपोऽस्मि चित्परानन्दमस्म्यहम् ते. बिं. ३।८
सत्पुण्डरीकनयनं मेघाभं वैद्युताम्बरम्।..चिन्तयंश्चेतसा कृष्णं मुक्तो भवति संसृतेः गो. पू. १।५
सत्यकामः सत्यसङ्कल्पः (आत्मा) सोऽन्वेष्टव्यः [छांदो.८।१।५+ ७।१,३
सत्यकामोऽगुणो ह्येष बृहद्धामाऽयमीश्वरः २ देव्यु. २६
सत्यकामोहजाबालोजाबालां...(मा.) छांदो. ४।४।१
सत्यकामो ह जाबालो जबालां मातरमामंत्रयाञ्चक्रे ब्रह्मचर्यं भवति विवत्स्यामि किं गोत्रोऽहमस्मीति छांदो. ४।४।१
सत्यचिद्घनमखण्डमद्वयं सर्वदृश्यरहितं निरामयम्। यत्पदं विमलमद्वयं शिवं तत्सदाऽहमिति मौनमाश्रय वराहो. ३।६
सत्यज्ञानं सात्त्विकम्, धर्मज्ञानं राजसम्, तिमिरान्धं तामसम् शारीरको. ९
सत्यज्ञानानन्दपूर्णलक्षणं तमसः परम्। ब्रह्मानन्दं सदा पश्यन्कथं बध्येत कर्मणा वराहो. २।१६
सत्यज्ञानानन्दं परिपूर्णं सनातनमेकमेवाद्वितीयं ब्रह्म पैङ्गलो. १।१
सत्यज्ञानानन्दानन्तस्वरूपं (आत्मानमपरोक्षीकृत्य) वज्रसू. उ. ९
सत्यज्ञाने निबध्यन्ते पुरुषाः पाशबन्धनैः। मज्ञावाच विमुच्यन्ते ज्ञानिनः पाशपञ्जरात् शिवो. १।११
सत्यत्वमस्ति चेत्किञ्चिदसत्यं न च सम्भवेत् ते. बिं. ५।२२
सत्यत्वेन जगद्भानं संसारस्य प्रवर्तकम् २ आत्मो. ४
सत्यभामा वरेति वै कृष्णो. १५
सत्यभूयमेव भवति नैनं विद्वान्सऽनृत९ हिनस्ति बृह. ५।५।१

सत्यमभवत्, यदिदं किञ्च — तैत्ति. २।६
सत्यमवादिषं, तन्मामावीत् — तैत्ति. १।१२
सत्यमविनाशि। अविनाशि नाम देशकालवस्तुनिमित्तेषु विनश्यत्सु यन्नविनश्यतितदविनाशि — सर्वसारो. ६
सत्यमस्तिकर्तव्यमकर्तव्यमौदासीन्यनित्यात्मविलापनहोमः — भावनो. ६
सत्यानन्दरूपोऽहं चिद्घनानन्दविग्रहः। अहमेव परानन्दः — ते. बिं. ६।५९
सत्यमिति सत्यलोकः — गायत्री. २
सत्यमिति सत्यवचा राथीतरः — तैत्ति. १।९।१
सत्यमीशानं ज्ञानमानन्दमद्वय — जा. द. ९।३
सत्यमूढं स्वतस्सिद्धं शुद्धंबुद्धमनीदृशम्। एकमेवाद्वयं नेह नानास्ति किञ्चन — अध्यात्मो. ६३
सत्यमेकं ललिताख्यं वस्तु तदद्वितीयमखण्डार्थं परं ब्रह्म — बह्वृचो. ३
सत्यमेव जयते, नानृतं; सत्येन पन्था विततो देवयानः — मुण्ड. ३।१।६
सत्यमेव परंब्रह्म, सत्यंज्ञानमनन्तं ब्रह्म — त्रि.म.ना. ३।३
सत्यमों सत्यमों सत्यमोम् — अ.शिरः. ३।१६
सत्यवद्भाति तत्सर्वं रज्जुसर्पवदास्थितम्। तदेतदक्षरं सत्यं तद्विज्ञाय विमुच्यते — रुद्रहृ. ३४
सत्यवाक्छुचिरद्रोही...स्थिरमतिर्नानृतवादी गिरिकन्दरेषु वसेत् — ना. प. ७।२
सत्यवाग्ज्ञानवैराग्याभ्यां विशिष्टदेहावशिष्टो वसेत् (यतिः) — ना. प. ६।१
सत्यविज्ञानमात्रोऽहं सन्मात्रानन्दवानहम् — ते. बिं. ३।४१
सत्यसङ्कल्प आत्मारामः कालत्रयाबाधितनिजस्वरूपः — त्रि.म.ना. १।५
सत्यसङ्कल्पः सत्यकामः — मैत्रा. ७।७
सत्यसिद्धयोगो मठः — निर्वाणो. ३
सत्यस्य सत्यमनु यत्र युज्यते तत्र देवाः सर्व एकं भवन्ति — १ ऐत. ३।८।१
सत्यस्य सत्यम् [बृह.२।१।२०+ — मैत्रा. ६।३२
सत्यस्यात्मा विद्युत आत्मा तेजस आत्मेति वा अहमेतमुपास इति — कौ. त. ४।१७
सत्यहविरध्वर्युः — चित्यु. ५।१
सत्यं च नारायणः — ना. उ.ता. १।५
सत्यं चानृतं च [छांदो. १।२।३+७।२।१+७।१ — तैत्ति. २।६+
सत्यं च स्वाध्यायप्रवचने च — तैत्ति. १।९।१+
सत्यं ज्ञानमनन्तमानन्दं सर्वोपाधिविनिर्मुक्तं कटकमुकुटाद्युपाधिरहितसुवर्णघनवद्विज्ञानचिन्मात्रस्वभावात्मा यदा भासते तदा त्वंपदार्थः — सर्वसारो. ६
सत्यं ज्ञानमनन्तं च...वेदान्तश्रवणं [जा. द. २।९+ — दर्शनो. १।१२
सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म [सर्वसारो. ६+ना. उ. १।५ — तैत्ति. २।१।१ / त्रि.म.ना. ३।३
सत्यं ज्ञानमनन्तम् — गान्धर्वो. १
सत्यं ज्ञानमनन्तं यत्परं ब्रह्माहमेव तत् — वराहो. ३।२
सत्यं ज्ञानमनन्तं हि यज्ज्ञात्वाऽमृतमश्नुते — गान्धर्वो. ४
सत्यं ज्ञानं सच्चिदानन्दरूपं ध्यायेदेवं तन्महो भ्राजमानम् — शु. र. २।५
सत्यं तदेतत्पण्डिता एव पश्यन्ति — नृसिंहो. ९।९
सत्यं तु पञ्चमे मासे परं ब्रह्म चतुर्थके — मृत्युलां. ३
सत्यं त्वेव विजिज्ञासितव्यमिति सत्यं भगवो विजिज्ञासे — छांदो. ७।१६।१
सत्यं नाम मनोवाक्कायकर्मभिर्भूतहितयथार्थाभिभाषणम् — शांडि. १।१।३
सत्यं परं परꣳ सत्यꣳ सत्येन न सुवर्गाल्लोकाच्च्यवन्ते कदाचन — महाना. १६।१२
सत्यं प्राणो हंसः शास्ताऽच्युतो विष्णुर्नारायणः — मैत्रा. ७।७
सत्यं प्रियहितं च यत् — भ.गी. १७।१५
सत्यं ब्रह्म प्रभुर्हि सः — ते. बिं. ६।३५
सत्यं ब्रह्मेति सत्यꣳ ह्येव ब्रह्म — बृह. ५।४।१
सत्यं रसः स्वादुतमो रसानाम् — इतिहा. ४४
सत्यं वद, धर्मं चर, स्वाध्यायान्मा प्रमदः — तैत्ति. १।११।१
सत्यं वदन्त्यनृतमुद्वहन्ति क्षीरं पिबन्ति मधु ते पिबन्ति। सोमं

पिबन्त्यमृतेन सार्धं मृत्योः परस्तादमृता भवन्ति इतिहा. ७

सत्यं वदिष्यामि ऐतरे. शां. [तैत्ति. १।१।१+१।१२ कौषी. शां.

सत्यं वाचः प्रतिष्ठा, सत्ये सर्वं प्रतिष्ठितं, तस्मात्सत्यं परमं वदन्ति महाना. १७।१

सत्यं विज्ञानमनन्तं ब्रह्म यस्मिन्निदमोतं च प्रोतं च शांडि. २।२

सत्यं वै चक्षुरक्षिण्युपस्थितो हि पुरुषः सर्वार्थेषु वदति मैत्रा. ६।६

सत्यं वै तद्रसमापो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् वनदु. १२१

सत्यं वै तद्रसमापो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः सुवरोम् महाना. ११।१०

सत्यं शाण्डिल्य परं ब्रह्म निष्क्रियमक्षरमिति शांडि. ३।१।२

सत्यं श्रेष्ठं व्याहृतीनां तथैव प्रज्ञानं सप्तमं जीवानाम् इतिहा. ४४

सत्यं सत्यं ह्यमृतः सम्बभूव गुह्यका. ७४

सत्यं सम्मार्जनं स्मृतम् शिवो. १।२५

सत्यं सूक्ष्मं परिपूर्णमद्वयं (ब्रह्म) नृसिंहो. ९।९

सत्यं ह्येत्थं पुरस्ताद्योनि नृसिंहो. ९।६

सत्यं हीन्द्रः स होवाच मामेव विजानीहि कौ. ब. ३।१

सत्यꣳ ह्येव ब्रह्म बृह. ५।४।१

सत्यः सत्यं पुण्यमासीत् पुण्यो वा दैविकं सत्यं सत्त्वमार्षं सत्यं सत्त्वं सत्पथाय स्वाहा पारमा. ५।१

सत्यः सूक्ष्मः संविभुश्चाद्वितीयः मैत्रे. १।११

सत्यांकुरो दमोद्भवः कृष्णोप. १६

स त्यागः सात्त्विको मतः भ. गी. १८।९

स त्यागीत्यभिधीयते भ.गी. १८।११

सत्यात्तत्र कदाचिन्न प्रमदितव्यं भस्मोद्धूलनत्रिपुण्ड्राभ्याम् भ. जा. २।८

सत्यात्म प्राणारामं मनआनन्दम्, शान्तिसमृद्धममृतम् तैत्ति. १।६।४

सत्यादिरूपं शिवमेवंविद्वानो विश्वादिवुद्ध्या हीयतेऽज्ञानसङ्गात् सि. शि. ३

सत्यानन्दचिदात्मकं सात्त्विकं मामकं धामोपास्व दत्तात्रे. १।१

सत्यानन्दस्वरूपोऽहं ज्ञानानन्दघनोऽस्म्यहम् ते. बिं. ३।३१

सत्यानन्दोऽस्म्यहं सदा ते. बिं. ३।९

सत्यानृतोपभोगार्थो द्वैतीभावो महात्मनः मैत्रा. ७।११

सत्यान्न प्रमदितव्यम्। धर्मान्न प्रमदितव्यम्। कुशलान्न प्रमदितव्यम्। भूत्यै न प्रमदितव्यम्। स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम् तैत्ति. १।११।१

सत्यामेवाप्येति यः सत्यामेवास्तमेति सुबालो. ९।७

सत्यासत्याद्विहीनोऽस्मि सन्मात्रान्नास्म्यहं सदा मैत्रे. ३।२३

सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा महाना. ११।३

सत्येन तिष्ठासेत्, सत्योऽयमात्मा सुबालो. १३।२

सत्येन न सुवर्गाल्लोकाच्च्यवन्ते कदाचन महाना. १६।१२

सत्येन पन्था विततो देवयानः मुण्ड. ३।१।६

सत्येन लभ्यस्तपसा ह्येष आत्मा सम्यग्ज्ञानेन ब्रह्मचर्येण नित्यम् मुण्ड. ३।१।५

सत्येन वायुरावाति सत्येनादित्यो रोचते दिवि महाना. १७।१

सत्येनापिहिता गुहा इतिहा. १७

सत्येनैनं तपसा योऽनुपश्यति श्वेताश्व. १।१५

सत्येनैनं मनसा साधु पश्यति, सत्येनैनं मनसा वाचं नयति इतिहा. ५०

सत्ये सर्वं प्रतिष्ठितं, तस्मात्सत्यं परमं वदन्ति महाना. १७।१

सत्ये ह्येव दीक्षा प्रतिष्ठिता बृह. ३।९।२३

सत्यो जेनाविः सत्यान्तरात्मा सत्योद्योगः सत्यः सत्कर्मा सत्यं सत्यं वितानमासीत्सत्यं सत्याय स्वाहा पारमा. ४।१०

सत्यो ज्योतिः सत्त्वं प्राणाः सत्त्वाधाराः सत्त्वं संधानाः सत्यः सत्त्वप्रकाशो ज्योतिषेस्वाहा पारमा. ५।२

सत्यो नित्यः सर्वसाक्षी महेशो
नित्यानन्दो निर्विकल्पो निराख्यः शरभो. २१
सत्योऽसि सिद्धोऽसि सनातनोऽसि
मुक्तोऽसि मोक्षोऽसि मुदामृतोऽसि ते. बिं. ५।६१
सत्योऽहं गौरहं गोर्यहमृगहं
यजुरहं सामाहमथर्वाङ्गिरसोऽहं अ.शिरः. १।१
सत्रासाहमवसे जनानां पुरुहूत-
मृग्मिणं विश्ववेदसम् आर्षे. १०।२
स त्रेधात्मानं व्यकुरुत [बृह.१।२।३+ मैत्रा. ६।३
स त्रेधा व्यभजद्भूर्भुवः स्वरिति ग. पू. १।३
स त्वमग्निं स्वर्ग्यमध्येषि..प्रब्रूहि तं कठो. १।१३
स त्वमेव, त्वमेव तत् (ब्रह्म) कैव. १।१६
सत्त्वमोहो रजस्तमः भ.गी. १७।१
सत्त्वप्रधाना प्रकृतिर्मायेति
प्रतिपाद्यते सरस्व. ३८
सत्त्वमथास्य पुरुषस्यान्तःशिखो-
पवीतत्वं ब्राह्मणस्य परब्र. २
सत्त्वमध्ये स्थितोऽच्युतः मैत्रा. ६।३८
सत्त्वरजस्तमांसि च गुणत्रयम् वराहो. १।११
सत्त्वरूपपरिप्राप्तचित्तास्ते ज्ञान-
पारगाः । अचित्ता इति
कथ्यन्ते देहान्ते व्योमरूपिणः अ. पू. ४।९३
सत्त्वशुद्धयैव सत्कर्मनिरतो
वर्जयत्यसत् भवसं. ४।९
सत्त्वशुद्धौ ध्रुवा स्मृतिः, स्मृति-
लम्भे सर्वग्रन्थीनां विप्रमोक्षः छांदो. ७।२६।२
सत्त्वसमष्टित इन्द्रियपालका-
नसृजत् पैङ्गलो. १।५
सत्त्वं रजस्तमश्चेति गुणानेतान्
प्रचक्षते ना. महो. १६
सत्त्वं वा उद्रेकमासीद्यत्सत्त्व-
मुभयोरनुगोप्ता तस्मैत्यं सत्यं
पद्माय सत्याय स्वाहा पारमा. ४।९
सत्त्वं सत्त्ववतामहम् भ.गी. १०।३६
सत्त्वं सत्त्वात्मकं वा रजो रजस
आत्मकस्तमस्तमस आधारः
साकृतं निरीश्वरमीश्वराय स्वाहा पारमा. १०।६
सत्त्वं सुखे सञ्जयति भ. गी. १४।९
सत्त्वं स्थावरजङ्गमम् भ.गी. १३।२७
सत्त्वंगुणगुविश्वश्चेदमीशोमायात्मकं
जगत् रा. पू. ४।६
सत्त्वं प्रकृतिजैर्मुक्तं भ. गी. १८।४०
स त्वं प्रियान् प्रियरूपांश्च
कामानभिध्यायन्नचिकेतो-
ऽत्यस्राक्षीः कठो. २।३
सत्त्वं भवति भारत भ.गी. १४।१०
सत्त्वं रजस्तम इति भ. गी. १४।५
सत्त्वं रजस्तम इति अहङ्कार-
श्चतुर्भुजः गोपालो. २।२१
सत्त्वं रजस्तमश्चैव न गुणास्तं
भजन्ति वै । यश्च सर्वगतः
साक्षी लोकस्यात्मेति कथ्यते ना. महो. ११
सत्त्वात्सञ्जायते ज्ञानं भ. गी. १४।१७
सत्त्वात्सम्प्राप्यते मनः । मनसा
प्राप्यते ह्यात्मा [मैत्रे. १।७+ मैत्रा. ४।३
सत्त्वादधि महानात्मा महतो-
ऽव्यक्तमुत्तमम् कठो. ६।७
सत्त्वानुरूपा सर्वस्य भ. गी. १७।३
सत्त्वानुबन्धादभ्यासाज्ज्ञानयोगात्
पुनः श्रुतात् । दृष्टश्रुतानुभूतानां
स्मरणात्स्मृतिरुच्यते आयुर्वे. २१
सत्त्वान्तर्वर्तिनो देवाः कर्त्रहङ्कार-
चेतनाः त्रि. ब्रा. २।७
सत्त्वापत्तिश्चतुर्थी स्यात्ततोऽसं-
सक्तिनामिका । पदार्थभावना
षष्ठी सप्तमी तुर्यगा स्मृता महो. ५।२५
सत्त्वापत्तिस्तुरीया (भूमिका) वराहो. ४।१
सत्त्वावशेष एवास्ते पञ्चमीं
भूमिकां गताः अक्ष्युप. ३६
सदेव सोम्येदमग्र आसीदेक-
मेवाद्वितीयम् (ब्रह्म) छांदो. ६।२।२
सत्समृद्धं स्वतस्सिद्धं शुद्धं
बुद्धमनीदृशम् अध्यात्मो. ६१
सत्सम्प्रदायस्थं...सद्गुरुमासाद्य...
स्वकुलानुरूपामभिमतकन्यां
विवाह्य...गार्हस्थ्योचितपञ्च-

विंशतिवत्सरं तीर्त्वा...साधन-	
चतुष्टयसम्पन्नः सन्न्यस्तुमर्हति	ना. प. २।१
[स्वर्ग इति च-]सत्संसर्गः स्वर्गः	निरा. १९
स दक्षिणतः स उत्तरतः स	
एवेदꣳ सर्वम्	छांदो. ७।२५।१
सदसच्चामृतं च यत्	प्रश्नो. २।५
सदसच्चाहमर्जुन	भ. गी. ९।१९
सदसत्फलमयैर्हि पाशैः पशुरिव बद्धं	मैत्रा. ४।२
सदसत्सदसद्वापि न किञ्चिद्वस्तु	
जायते	अ. शां. २२
सदसद्देहहीनोऽस्मि सङ्कल्परहितो-	
ऽस्म्यहम्	मैत्रे. ३।७
सदसद्योनिजन्मसु	भ.गी. १३।२२
सदसद्वरेण्यं परं विज्ञानाद्यद्वरिष्ठं	
प्रजानाम्	मुण्ड. २।२।१
सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य	
काम्यम् । सनिं मेधामयासिषम्	महाना. २।८+
[ऋ. मं. १।१८।६+	वा.सं. ३२।१३
[+सा. वे. १।१०।१+	तै.आ. १०।१।४
सदा आनन्दमयोऽयं लोको	
वेदविदो यं वदन्ति	सामर. ५
सदाचाररतो भूत्वा द्विजो नित्य-	
मनन्यधीः ।। मयि सर्वात्मके	
भावो मत्सामीप्यं भजत्ययम् ।	
सैव सालोक्यसारूप्यसामीप्या	
मुक्तिरिष्यते	मुक्तिको. १।२२
सदाचारादखिलदुरितक्षयो भवति	त्रि.म.ना. ५।४
सदा चैतन्यरूपोऽस्मि चिदानन्द-	
मयोऽस्म्यहम्	ते. बिं. ३।४
सदा जनानां हृदये सन्निविष्टः	श्वेताश्व. ४।१७
सदा जाग्रदवस्थायां सुप्तवद्योऽव-	
तिष्ठति । श्वासोच्छ्वासविहीन-	
स्तु निश्चितं मुक्त एव सः	अमन. २।५८
सदा तद्भावभावितः	भ. गी. ८।६
सदात्मकत्वविज्ञानदग्धाविद्यादि-	
कर्मणः । अमुष्य ब्रह्मभूतत्वा-	
द्ब्रह्मणः कुत उद्भवः	२ आत्मो. २५
सदा दत्तोऽहमस्मीति प्रत्येतत्संवदंति	
ये, न ते संसारिणो भवन्ति	दत्तात्रे. १।१

सदादीप्तिरपारामृतवृत्तिः स्नानम्	मं. ब्रा. २।५
सदादीप्तिराचमनीयम्	आत्मपू. १
सदानन्दचिन्मात्रमात्मैवा-	
व्यवहार्य..ब्रह्मात्मैवात्र ह्येव न	
विचिकित्स्यमित्यों सत्यं तदेत-	
त्पण्डिता एव पश्यन्ति	नृसिंहो. ९।९
सदानन्दघना परिपूर्णस्वात्मैक-	
रूपा देवता	भावनो. ९
सदानन्दं परमानन्दꣳ समꣳ	
शाश्वतꣳ सदाशिवं ब्रह्मादि-	
वन्दितं योगिध्येयं परमं पदं	
चिन्मात्रं	गणेशो. ५।६
सदानन्दं परमानन्दं शान्तं शाश्वतं	
सदाशिवं ब्रह्मादिवन्दितं योगि-	
ध्येयं परमं पदं, यत्र गत्वा न	
निवर्तन्ते योगिनः	नृ. पू. ५।१६
सदा नादानुसन्धानात् सङ्क्षीणा	
वासना भवेत् (तु या)	
[ना. बिं. ४९+	यो. शि. ६।७१
सदा बुद्धिमता भाव्यं योगिना	
योगसिद्धये	१ यो. त. ७५
सदाभ्यासे स्थिरीभूते न विधिर्नैव	
च क्रमः	अमन. २।५२
सदाऽमनस्कमर्घ्यम् [मं.ब्रा. २।५+	आत्मपू. १
सदा योगं समभ्यसेत्	अ. ना. २३
सदा रसनया योगी मार्गं न	
परिसङ्क्रमेत्	यो. कुं. २।४८
सदा रामोऽहमस्मीति तत्त्वतः	
प्रवदन्ति ये । न ते संसारिणो	
नूनं राम एव न संशयः	रामो. २।९
सदाविचाररूपोऽस्मि निर्विचारो-	
ऽस्मि सोऽस्म्यहम्	मैत्रे. ३।१०
सदा वेदान्तवाक्यार्थं शृणुयात्सु-	
समाहितः	ना. प. ६।२४
सदाशिवः शक्त्यात्मा सर्वत्रा-	
वस्थितः स्वयञ्ज्योतिः शुद्धो	
बुद्धो नित्यो निरञ्जनः शान्तः	
प्रकाशत इति	हंसो. ११

(अथ) सदाशिवः संहारकाले संहारं कृत्वा संहाराक्षं मुकुलीकरोति	रु. जा. ४४
सदाशिवाय विद्महे सहस्राक्षाय धीमहि। तन्नः साम्बः प्रचोदयात्	वनदु. १४१
सदाशिवोऽहं, परमप्रकृतिरहम्	अद्वै. भा. १
सदाऽसङ्गस्वरूपोऽस्मि निर्विकारोऽहमव्ययः	ते. बिं. ३।६
सदा सच्चिन्मयोऽस्म्यहम्	मैत्रे. ३।१६
सदासन्तोषो विसर्जनम्	आत्मपू. १
सदा समाधिं कुर्वीत हंसमन्त्रमनुस्मरन्	ब्र. वि. ६९
सदा साक्षिस्वरूपत्वाच्छिव एवास्मि केवलः। इति धीर्या मुनिश्रेष्ठ स समाधिरिहोच्यते	जा. द. १०।५
सदा साङ्गहणेष्टयाऽश्वमेधमनन्तं योगं यजते, स महामखो महायोगः	अवधू. ६
स दिग्भिर्ज्योतिषा भाति च तपति च	छांदो. ३।१८।६
सदिति प्राणः, तीत्यन्नम्, यमित्यसावादित्यः। (तत्सत्यम्)	१ ऐत. १।५।३
सदित्येतत् स युज्यते	भ. गी. १७।२६
सदित्येवाभिधीयते	भ.गी. १७।२७
सदृशं चेष्टते स्वस्याः	भ. गी. ३।३३
सदृशं त्रिषु लिङ्गेषु सर्वासु च विभक्तिषु। वचनेषु च सर्वेषु यन्न व्येति तदव्ययम्	२ प्रणवो. १५
सदेतद्राधिका गान्धर्वीति	राधिको. ५
सदेव पुरस्तात् सिद्धं हि ब्रह्म	नृसिंहो. ९।६
सदेव समः स मुनिसमः स नागसमः	गणेशो. ५।४
सदेव सोम्येदमग्र आसीत् [छां. उ. ६।२।१+	पैङ्गलो. १।१
स देवानपि गच्छति स ऊर्जमुपजीवति	बृह. १।५।२
स देवानपि यच्छति स ऊर्जमुपजीवति	बृह. १।५।१
स देवानाकर्षयति, स यक्षानाकर्षयति, स नागानाकर्षयति, स ग्रहानाकर्षयति	नृ. पू. ५।१२
स देवानां निधनमनिधनम्	ब्रह्मो. १
सदैकरसरूपोस्मिसदाचिन्मात्रविग्रहः	ते. बिं. ३।७
सदैवात्मा विशुद्धोऽस्मि	यो. शि. ४।२०
सदैवानुज्ञैकरसो ह्ययमोङ्कारः,	नृसिंहो. ८।५
सदोज्ज्वलोऽविद्यातत्कार्यहीनः स्वात्मबन्ध-(रहितः)-हरः [गणेशो.१।४+नृसिंहो. २।८+	रामो. २।४
सदोपनिषदं विद्यामभ्यसेन्मुक्तिहेतुकीम्	ना. प. ३।७२
सदोषमपि न त्यजेत्	भ. गी. १८।४८
सद्गुरुसमीपे सकलविद्यापरिश्रमज्ञो भूत्वा... ब्रह्मचर्यं समाप्य गृही भवेत्	प. हं. प. १
सद्घनं चिद्घनं नित्यमानन्दघनमव्ययम्	अध्यात्मो. ६१
सद्धीदं सर्वं सत्सदिति	नृसिंहो. ७।३
सद्भावभावनादार्ढ्याद्वासनालयमश्नुते	अध्यात्मो. १३
सद्भावेन ह्यजं सर्वमुच्छेदस्तेन नास्ति वै	ब. शां. ५७
सद्भावे साधुभावे वा	भ. गी. १७।२६
सद्यःकुमारिकारूपैः पाके सिद्धे जगद्भवेत्	ते. बिं. ६।७९
सद्योजातमुत जहात्येषः	चित्यु. १४।१
सद्योजातशिशुज्ञानं	अ. पू. २।१६
सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः [महाना.१०।४+तै.	आ. १०।४३।१
सद्योजातं मही पूषा रमा ब्रह्मा त्रिवृत्स्वरः	पञ्चब्र. १
सद्योजाता तु या कन्या भोगयोग्या भवेज्जगत्	ते. बिं. ६।९१
सद्योजातात्पृथिवी	बृ. जा. १।५
सद्योजातादिपञ्चब्रह्ममंत्रैः परिगृह्य ...रेखाः प्रकुर्वीत	का. रुद्रो. २
सद्योजातादिपञ्चब्रह्ममन्त्रैर्भस्म सङ्गृह्य...रेखाः प्रकुर्वीत	जाबाल्यु. ६
सद्योजातादिभिर्मन्त्रैर्नमस्कृत्य पुनः पुनः। प्रदक्षिणत्रयं कृत्वा शिवरूपमिति स्फुटम्	१ शिवो. ८

सद्योजाताद्ब्राह्मणाः सम्बभूवुः	सि. शि. ९
सद्योजातेन वै पादान् सर्वाङ्गं प्रणवेन तु [बृ. जा. ३।३२+	४।१
सद्रूपत्वं सदा समं	वराहो. ३।९
सद्रूपया माययोत्पादिताः काम-क्रोधादयो गुणाः संसारोत्पत्ति-प्रयोजका भवन्ति	सामर. १०२
सद्रूपं परमं ब्रह्म त्रिपरिच्छेद-वर्जितम्	कठरु. ३०
सद्वाऽसद्वा स्थितिर्वापि यस्य नास्ति क्षराक्षरम्	ते. बिं. ५।११
सद्वैतमनिर्वाच्यं ब्रह्म	त्रि.म.ना. १।३
स द्वितीयमैच्छत्	बृह. १।४।३
सद्वृत्तमिव सर्वे देवास्तं सेवन्ते	त्रि.म.ना. ८।७
स ध्यातपूर्वामुखो भूत्वा भूरिति व्याहृतिर्गायत्रं छन्द ऋग्वेदः	चतुर्वे. १
स न इन्द्रः कामवरं ददातु	चिरयु. ११।८
सनत्सुजातादिसनातनाद्यैरीड्यो महेशो भगवानादिदेवः	शरभो. २०
स न वर्ततेऽथ मुच्यते	छांदो. ६।१६।२
स न साधुना कर्मणा भूयान्, नो एवासाधुना कनीयान्	बृह. ४।४।२२
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा क्षामेद्देवो अतिदुरितात्यग्निः	महाना. ६।१७
स नः सुवः संशिशाधि	महाना. ६।६
सनातनस्त्वं पुरुषो मतो मे	भ.गी. ११।१८
स नात्मनैकः स आत्मानम-भिध्यायन् बह्वीः प्रजा असृजत्	मैत्रा. २।६
स नारायणो भवतीत्युपनिषत्	त्रि.म.ना. २।९
स नारायणो विराट्पुरुषो भवति	ना.उ.ता. ३।१
स नाराशंसीरधीते स प्रणवमधीते	ग. शो. ५।४
स निधीनां त्वं निधिपतिः	ग. शो. २।१
स निन्दामर्षसहिष्णुः । स षडूर्मि-वर्जितः	प. हं. प. ११
स नियच्छति मधुकरः सेव विक्षोभकः	पैङ्ग. १
स निर्गुणः स निरहङ्कारः स निर्विकल्पः स निरीहः स निर्विकारः...	गणेशो. २।४
स निर्देष्टुमशक्यो यो वेदवाक्यै-रगम्यतः । यस्य किञ्चिद्बहि-र्नास्ति किञ्चिदन्तः कियन्न च	ते. बिं. ५।९
स निश्चयेन योक्तव्यः	भ. गी. ६।२३
स निष्कर्ममार्गीयो भवति	सामर. ९८
स नैव व्यभवत्, स शौद्रं वर्ण-मसृजत	बृह. १।४।१३
स नैव व्यभवत्, स विशमसृजत	बृह. १।४।१२
स नैव व्यभवच्छ्रेयोरूपमसृजत	बृ. उ. १।४।१४
स नोत्तस्थौ, तं पाणिनापेषं बोधयाञ्चकार	बृह. २।१।१५
स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा	महाना. २।५
स नो बुद्धया शुभया संयुनक्तु [श्वेता.	४।१+४।१२
स नो भूतो यो वाऽमृतात्मा सुपुष्टिमस्मत्पितरं पवित्रं स नोऽस्तु भूत्यैकमलं परायस्वाहा	पारमा. ९।९
स नो मुञ्चतु दुरितादवद्यात्	सहवै. ९
स नो मृत्योस्त्रायतां पात्वंहसो ...ज्योग्जीवा जरामशीमहि	महाना. १३।९
स नो हि मायया जन्म युज्यते न तु तत्त्वतः	अद्वैत. २७
सन्ततं शिलाभिस्तु लम्बत्या-कोशसन्निभम् । तस्यान्ते सुषिरं सूक्ष्मं तस्मिन्सर्वं प्रतिष्ठितम्	महाना. ९।८
सन्तमेनं ततो विदुः	तैत्ति. २।६
सन्ति पुत्राः सुबहवो दरिद्राणाम-निच्छताम् । नास्ति पुत्रः समृद्धानां विचित्रं विधिचेष्टितम्	भवसं. १।१२
सन्तिष्ठेन्नियमेन	लिङ्गोप. १
सन्तीन्द्रियाणि सन्त्यर्था...योगो न च नास्ति तत्र	आयुर्वे. ३
सन्तुष्ट इति कथ्यते	महो. ४।३४, १७
सन्तुष्टः सततं योगी	भ.गी. १२।१४
सन्तुष्टो येन केनचित्	भ.गी. १२।१९

सन्ते पयांसि समु यन्तु वाजाः कौ. त. २।८
सन्तोषामृतपानेन ये शान्ता-
  स्तृप्तिमागताः । आत्मारामा
  महात्मानस्ते महापदमागताः महो. ४।३५
सन्तोषामोदमधुरा प्रथमोदेति
  भूमिका । भूमिप्रोदितमात्रो-
  ऽन्तरमृताङ्कुरिकेव सा अक्ष्युप. ३०
सन्तोषो नाम यदृच्छालाभ-
  सन्तुष्टिः शांडि. १।२।१
सन्त्यक्तवासनान्मौनादृते
  नास्त्युत्तमं पदम् मुक्तिको. २।२१
सन्त्यजेत्सर्वकर्माणि लोकाचारं
  च सर्वशः । कृमिकीटपतङ्गांश्च
  तथा योगी वनस्पतीन् ना. प. ६।४१
सन्त्यज्य हृदुहेशानं देवमन्यं
  प्रयन्ति ये । ते रत्नमभिवा-
  ञ्छन्ति त्यक्तहस्तस्थकौस्तुभाः महो. ६।२०
सन्त्वा सिञ्चामि मन्त्रेण गोमूत्रं
  गोमये क्षिपेत् बृ. जा. ३।९
सन्दिग्धः सर्वभूतानां वर्णाश्रम-
  विवर्जितः । अन्धवज्जडवच्चापि
  मूकवच्च महीं चरेत् ना. प. ४।३६
सन्दिग्धायामपि भृशं शुभामेव
  समाचर । शुभायां वासना-
  वृद्धौ न दोषाय मरुत्सुत मुक्तिको. २।९
सन्दृश्यन्ते चूर्णितैरुत्तमाङ्गैः भ.गी. ११।२७
सन्देहस्त्वेष आत्मन इति होवाच छांदो. ५।१५।२
सन्देहस्ते व्यशीर्यद्यन्मां नाग-
  मिष्य इति छांदो. ५।१५।२
सन्धां त्र या९ सन्धे ब्रह्मणैषः चित्यु. १४।२
सन्धिनी तु ग्रामभूषणशय्यासना-
  दिमित्रभृत्यादिरूपेण वरीता राधिको. ९
सन्धिं कृत्वा तु मनसा चिन्तये-
  दात्मनाऽऽत्मनि अ. ना. ३२
सन्धिं समाधावात्मन्याचरेत् आरुणि. २
सन्धीयते प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसे-
  नान्नाद्येन सुवर्ग्येण लोकेन तैत्ति. १।३।९
सन्धुः सन्धुक्षणानां संयोगः
  सन्धानः पारमा. ४।६

सन्धौ जीवात्मनोरैक्यं सन्न्यासः
  परिकीर्तितः मैत्रे. २।१७
सन्धौ सन्धौ मिश्रितानां यदा
  विश्राम्यते मनः । तदा देहो
  गृहं राज्यं निर्दोषा च
  मतिर्भवेत् विश्रामो. ९
सन्ध्ययोर्ब्राह्मणः काले वायुमाकृष्य
  यः पिबेत् । त्रिमासात्तस्य
  कल्याणी जायते वाक्सरस्वती शांडि. १।७।४६
सन्ध्ययोर्ब्राह्मकालेऽपि मध्याह्ने
  वाऽथवा सदा । बाह्यं प्राणं
  समाकृष्य पूरयित्वोदरेण च ।
  नासाग्रे नाभिमध्ये च पादा-
  ङ्गुष्ठे च धारयेत् ॥ सर्वरोग-
  विनिर्मुक्तो जीवेद्वर्षशतं नरः जा. द. ६।२१
सन्ध्यं तृतीय९ स्वप्नस्थानम् बृह. ४।३।९
सन्ध्याक्रिया मनीयागस्य लक्षणम् पा. ब्र. २
सन्ध्यामुपास्य कुर्वीत नित्यं देह-
  प्रसाधनम् । स्पृशेद्वन्देच्च कपिलां
  प्रदद्याच्च गवां हितम् शिवो. ७।९२
सन्निधानात्समस्तेषु जन्तुष्वपि च
  सन्ततम् । सूचकत्वाच्च रूपस्य
  सूत्रमित्यभिधीयते यो. शि. २।१०
सन्नियम्येन्द्रियग्रामं भ. गी. १२।४
सन्मात्रमहमेव हि तै. बिं. ३।५१
सन्मात्रोऽस्म्यहं सदा मैत्रे. ३।२३
सन्मात्रो नित्यः शुद्धो बुद्धः
  सत्यो मुक्तो निरञ्जनो विभु-
  रव्ययानन्दः परः प्रत्यगेकरसः
  प्रमाणैरेतैरवगतः नृसिंहो. ९।५
सन्मात्रोनिरस्ताविद्यातमोमोहोऽहं. नृसिंहो. २।८
सन्मूलाः सोम्येमाः सर्वाः प्रजाः
  सदायतनाः सत्प्रतिष्ठाः छांदो. ६।८।४,६
सन्न्यस्तमिति यो ब्रूयात्कण्ठस्थ-
  प्राणवानपि । तारिताः
  पितरस्तेन इति वेदानुशासनम् शाट्याय. १९
सन्न्यस्तसर्वेन्द्रियवर्गोऽनेकजन्मा-
  र्जितपुण्यपुञ्जपक्वकैवल्यफलो-

ऽखण्डानन्दनिरस्तसर्वक्लेश-
कश्मलो ब्रह्माहमस्मीति
कृतकृत्यो भवति म. ब्रा. ३।३
सन्न्यस्तसर्वसङ्कल्पः समः शान्त-
मना मुनिः। सन्न्यासयोग-
युक्तात्मा ज्ञानवान्मोक्षवान्भव अ. पू. ५।४७
सन्न्यस्तं मया सन्न्यस्तं मया
सन्न्यस्तं मयेति मन्द्रमध्यम-
तारध्वनिभिस्त्रिवारं त्रिगुणीकृत-
प्रैषोच्चारणं कृत्वा...तत्त्वमस्या-
दिवाक्यार्थस्वरूपानुसन्धानं
कुर्वन्नुदीचीं दिशं गच्छेत् प. हं. प. ५
सन्न्यस्तं मया, सन्न्यस्तं मया,
सन्न्यस्तं मयेति त्रिरुक्त्वाऽभयं
सर्वभूतेभ्यो मत्तः प्रवर्तते आरुणि. ३
सन्न्यस्तं मयेति त्रिवारमभिमंत्रयेत् १ सं. सो. २।६
सन्न्यस्तं मयेति त्रिवारमुच्चरेत् याज्ञव. १
सन्न्यस्ता यद्यपि महावाक्योपदेशे
नाधिकारिणः [ना.प. ३।१+ १ सं. सो. २।३
सन्न्यस्यामि न पुनरावर्तनं यन्मृत्यु-
र्जायामावहदिति २सन्न्यासो. १०
सन्न्यस्यामि न पुनरावर्तयन्मृत्युर्जय-
मावहमित्यध्यात्ममन्त्रान्पठेत् कठरु. ४
सन्न्यस्यामि न पुनरावर्तयेत्।
यन्मृत्युर्जायामावहेदित्य-
ध्यात्ममन्त्राञ्जपेत् कठश्रु. २२
सन्न्यस्यास्ते सुखं वशी भ. गी. ५।१३
सन्न्यस्याध्यात्मचेतसा भ. गी. ३।३०
सन्न्यासकालेऽप्यलंबुद्धिपर्यन्तमधीत्य
तदूर्ध्वं कटिसूत्रं कौपीनं
दण्डं वस्त्रं कमण्डलुं सर्वमप्सु
विसृज्याथ जातरूपधरश्चरेत् ना. प. ५।६
सन्न्यासभेदैराचारभेदः कथं ?
इति चेत्—तत्त्वतस्त्वेक एव
सन्न्यासः, अज्ञानेनाशक्तिवशा-
त्कर्मलोपश्च त्रैविध्यमेत्य...
चातुर्विध्यमुपागतः ना. प. ५।२
सन्न्यासयोगयुक्तात्मा भ. गी. ९।२८
सन्न्यासयोगाद्यतयः शुद्धसत्त्वाः मुण्ड. ३।२।६
सन्न्यासयोगिनौ दान्तौ विद्धि
शान्तौ मुनीश्वर महो. ६।४७
सन्न्यासस्तु महाबाहो भ. गी. ५।६
सन्न्यासस्य महाबाहो भ. गी. १८।१
सन्न्यासं कर्मणां कृष्ण भ. गी. ५।१
सन्न्यासं कवयो विदुः भ. गी. १८।२
सन्न्यासं पातयेद्यस्तु पतितं न्यास-
येत्तु यः। सन्न्यासविघ्नकर्ता
च त्रीनेतान्पतितान्विदुः १ सं. सो. २।२
सन्न्यासः कर्मयोगश्च भ. गी. ५।२
(सः) सन्न्यासः षड्विधो भवति
कुटीचक-बहूदक-हंस-परम-
हंस-तुरीयातीतावधूताश्चेति १ सं.सो. २।१३
सन्न्यासः षड्विधो भवति—कुटी-
चको बहूदको हंसः परमहंसः
तुरीयातीतोऽवधूतश्चेति ना. प. ५।५
सन्न्यासिनं द्विजं दृष्ट्वा स्थानाच्चलति
भास्करः। एष मे मण्डलं
भित्त्वा परं ब्रह्माधिगच्छति १ सं. सो. २।६
सन्न्यासिनां पण्डितशास्त्रिणां च
पाण्डित्यमस्तीह परोपदेशे।
स्वयं न कुर्वन्ति विधिं न
सान्ध्यं भवन्तु लोकाः खलु
सावधानाः भवसं. १।५८
सन्न्यासिनोऽपि दृश्यन्ते देवस-
न्दूषिताशयाः याज्ञव. ५
सन्न्यासेन देहत्यागं करोति स
परमहंसपरिव्राजको भवति प. हं. प. ८
सन्न्यासेन देहत्यागं करोति स
परमहंसो नामेति याज्ञव. ३
सन्न्यासेनाधिगच्छति भ. गी. १८।४९
सन्न्यासे निश्चयं कृत्वा पुनर्न च
करोति यः। स कुर्यात्कृच्छ्रमात्रं
तु पुनः संन्यस्तुमर्हति १ सं. सो. २।१
सन्न्यासोपनिषद्वेद्यं संन्यासिपटला-
श्रयम्। सत्तासामान्यविभवं
स्वमात्रमिति भावये १सं.सो. शीर्षक
सन्न्यासेनैव देहत्यागं करोति स
कृतकृत्यो भवति ना. प. ३।८७

स पञ्चधाऽऽत्मानं प्रविभज्योच्यते यः प्राणोऽपानः समान उदानो व्यान इति — मैत्रा. २।६
स पञ्चभूतानां रजोंशांश्चतुर्धा कृत्वा भागत्रयात्पञ्चवृत्त्यात्मकं प्राणमसृजत् — पैङ्गलो. १।४
स परमहंसः सोऽवधूतः स ब्राह्मणः — निरा. ३२
स परमानन्दस्य ब्रह्मणो नाम ब्रह्मेति — नृसिंहो. ७।३
स परिव्राट् सर्वक्रियाकारकनिवर्तकः — ना. प. ९।२२
स परेऽक्षरे आत्मनि सम्प्रतिष्ठते — प्रश्नो. ४।९
सपर्परीरमतिं बाधमानां बृहन्मिमाय जमदग्निदत्ता । आ सूर्यस्य दुरिता ततानश्रवो देवेष्वमृत-मजुर्यम् [ऋक्सं.३।३।२२।१+ — हयग्री. ९
स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणं मस्ना-विर९ शुद्धमपापविद्धम् — ईशा. ८
स पश्चात् स पुरस्तात् स दक्षिणतः स उत्तरतः स एवेद९ सर्वम् — छांदो. ७।२५।१
स पुत्र-मित्र-कलत्राप्तबन्ध्वादीनि... संन्यस्य...कटिसूत्रं च कौपीनं दण्डं वस्त्रं कमण्डलुं सर्वमप्सु विसृज्याथ जातरूपधरश्चरेदा-त्मानमन्विच्छेत् — ना. प. ३।८७
स पुत्रेणैवास्मिँल्लोके प्रतितिष्ठति — बृह. १।५।१७
स पुत्रः प्रत्याहाहं ब्रह्माहं यज्ञोऽहं लोक इति — बृह. १।५।१७
स पुनर्द्विविधो बिन्दुः पाण्डरो लोहितस्तथा । पाण्डरं शुक्ल-मित्याहुर्लोहिताख्यं महारजः — यो. चू. ६०
स पूजितः सन् सुमुखोऽभिभूत्वा दन्तीमुखोऽभीष्टमनन्तशक्तिः — हेरम्बो. १०
स पूर्णः खलु वा अद्धाऽविकलः सम्पद्यते यज्ञः — मैत्रा. १।१
स पूर्ववज्जनयज्जन्तवे धनम् — चित्सु. १०।४
सप्त इमे लोका येषु चरन्ति प्राणा गुहाशया नि-(नि-)-हिताः सप्त सप्त [मुण्ड. २।८+ — महाना. ८।२
सप्तकोटियोजनविस्तीर्णोविष्णुलोकः — रामोप. १।३
सप्तकोटिमहामन्त्रं जन्मकोटि-शतप्रदम् — तै. बिं. ३।७३
सप्त च वै शतानि विंशतिश्च संवत्सरस्याहोरात्राः — ३ ऐत. २।१।२
सप्तजन्मकृतात्पापान्मुच्यते यस्तु पर्वभिः । कन्यागते यदा सूर्ये तिष्ठन्ति पितरो गृहे — इतिहा. ८८
सप्तद्वीपवती भूमिर्दक्षिणार्थं नाव-कल्पते तस्माच्छ्रद्धया यां काञ्चिद्गांदद्यात्सा दक्षिणाभवति — नृ. पू. ५।८
सप्तधातुमयं देहमग्निना रञ्जये-द्ध्रुवम् । व्याधयस्तस्य नश्यन्ति.. — यो. शि. १।५६
सप्त प्राणाः प्रभवन्ति तस्मात् सप्तार्चिषः समि(धा)-धः सप्त होमाः [मुण्ड. २।१।८+ — महाना. ८।२
सप्तभूमिषु जीवन्मुक्ताश्चत्वारः — वराहो. ४।१
सप्तमभूम्यां विहरन्ब्रह्मविद्वरिष्ठो भवति — वराहो. ४।१
सप्तमं परमं तत्त्वं यो जानाति स मोक्षभाक् — अमन. १।१३
सप्तमं भ्रूचक्रमंगुष्ठमात्रम् — सौभाग्य. ३०
सप्तमः सूर्यो भवति — ना.पू.ता. १।१
सप्तमी तुर्यगा स्मृता (ज्ञानभूः) — महो. ५।२५
सप्तमे गूढविज्ञानं परावाचा तथाऽष्टमे — हंसो. ९
सप्तमे चलनसमर्थो भवति — निरुक्तो. १।४
(ॐ) सप्तमे जम्बूद्वीपः सम्य-ग्ज्ञानं शिखा — मठाम्ना. ९
सप्तमे धामनि तृतीयमेतस्या एव पूर्वोक्तायाः कामाद्यं द्विधाधः-कं मदनकलाद्यं शक्तिबीजं वाग्भवाद्यं तयोरर्धावशिरस्कं कृत्वा नन्दिविधेयम् — त्रि. ता. १।१६
सप्तमेन तु पिण्डेन दीर्घमायुः प्रजायते — पिण्डो. ७
सप्तमे मासे जीवेन संयुक्तो भवति — गर्भो. ३
सप्तमे रक्तवर्णो विष्णुरिति द्वारपालः — रामोप. २।१
सप्तयुञ्जन्ति रथमेकचक्रम् — चित्सु. ११।८
[ऋ.मं.१।१६४।२+अथर्व.९।९।२+ — तै.आ. ३।११।८

सप्तरात्रलयेनापिपरेलीनस्य योगिनः। आ ब्रह्मविश्वनेतृत्वं श्रुतिज्ञानं च वर्तते अमन. १।५७
सप्तरात्रोषितं बुद्बुदं भवति गर्भो. ३
सप्तर्षीणां ध्रुवस्यापि लोका ऊर्ध्वं-रदावली गुह्यका. १६
सप्तवक्त्रं तु रुद्राक्षं सप्तमालाधि-दैवतम्। तद्धारणान्महाश्रीः स्यान्महदारोग्यमुत्तमम् रु. जा. ३१
(अथ) सप्तविधस्य वाचि सप्त-विधं सामोपासीत छांदो. २।८।१
सप्तविंश इति प्रोक्तः शिवः सर्व-जगत्पतिः शिवो. १।१४
सप्तशतं पुरुषस्य मार्गाणि निरुक्तो. २।१
सप्त सागरा जायन्ते पुरुषोत्तमात् शि. वि. २
सप्तस्वरमयो नादो लौकिका-लौकिकात्मकः। ब्रह्मानन्दानु-सन्धायी येनेदं धार्यते जगत् गान्धर्वो. २
सप्त ह द्विषतो भ्रातृव्यानवरुणद्धि बृह. २।२।१
सप्तहोता सप्तधा विक्लृप्तः चित्त्यु. ११।६
सप्तात्मानं चतुरात्मानं चतुस्सप्ता-त्मानमोङ्कारं (सर्वेश्वरं द्वाद-शान्ते) तुरीयमानन्दामृतरूपं षोडशान्ते नृसिंहो. ३।४
सप्तार्चिषः समिधः सप्त होमाः मुण्ड. २।१।८
सप्तात्मानं चतुरात्मानं मकारं ब्रह्माणं नाभौ नृसिंहो. ३।४
सप्तात्मानं चतुरात्मानं मकारं रुद्रं भ्रूमध्ये नृसिंहो. ३।४
सप्तात्मानं चतुरात्मानमुकारं विष्णुं हृदये नृसिंहो. ३।४
सप्तार्चिषः समिधा सप्त जिह्वाः महाना. ८।२
सप्तास्यासन् परिधयः [मुद्गलो. १।६+ [ऋ. सं. १०।९०।१५+ चित्त्यु. १२।३ वा. सं. ३१।१५
स प्रजानन्प्रतिगृह्णीत विद्वान् सहवै. ९
स प्रजापतिरानुष्टुभाभ्यामर्चा-भ्यामहोरात्रावकल्पयत् अव्यक्तो. ६
स प्रजापतिरेकः पुष्करपर्णे समभवत् [रु. जा. १।१+ त. पू. १।१
स प्रणवमधीते, यः प्रणवमधीते स सर्वमधीते नृ. पू. ५।१५
स प्रणवमेवास्याः पुरोगमकरोत् शौनको. १।३
स प्रणवया तयैवर्चा हविर्ध्यात्वा-ऽऽत्मानमात्मन्यग्नौ जुहुयात् अव्यक्तो. ५
स प्रणवं सर्वं पञ्चमं भवति नृ. पू. २।२
स प्रयोजनता तेषां स्वप्ने विप्रति-पद्यते [वैतथ्य. ७+ अ. शां. ३२
स प्रशान्तः सकृज्ज्योतिः समाधि-रचलोऽभयः अद्वैतो. ३७
स प्राणमसृजत, प्राणाच्छ्रद्धां खं वायुर्ज्योतिरापः पृथिवीन्द्रियम् प्रश्नो. ६।४
स प्राणस्तदु वाङ्मनः मुण्ड. २।२।२
स प्राणस्य प्राणः चित्त्यु. ७।३
स प्रियाणां त्वं प्रियपतिः गणेशो. २।१
स बाह्यमभ्यन्तरनिश्चलात्मा ज्ञानोल्कया पश्यति चान्तरात्मा पैङ्गलो. ४।१२
स बाह्याभ्यन्तरव्यापि निष्कलोऽहं निरञ्जनः १ सं.सो.२।२१
स बाह्याभ्यन्तरान्भावान् स्थूलान् सूक्ष्मतरानपि। तुर्यमालम्ब्य कायान्तस्तिष्ठामि स्तम्भितस्थितिः अ. पू. ३।१३
स बाह्याभ्यन्तरे देहे ह्यध ऊर्ध्वं च दिक्षु च। इत आत्मा ततो-ऽप्यात्मा नास्त्यनात्ममयं जगत् महो. ६।१०
स बाह्याभ्यन्तरेऽपरिमितद्युतिनिभं तत्त्वं महाकाशम् मं. ब्रा. ४।१
स बाह्याभ्यन्तरे सूर्यनिभंसूर्याकाशम् मं. ब्रा. ४।१
स बाह्याभ्यन्तरो ह्यजः मुण्ड. २।१।२
स बिन्दुः सोऽपि पुरुषः शिव-सूर्येन्दुरूपवान् रामर. ५।८
स बुद्धिमान्मनुष्येषु भ. गी. ४।१८
स ब्रह्म, अयमात्मा गणेशो. २।१
स ब्रह्मचारिवृत्तिश्च स्तम्भोऽथ फलितस्तथा मंत्रिको. ११
स ब्रह्मणः पर एता भवति मैत्रा. ४।४
स ब्रह्मयोगयुक्तात्मा भ. गी. ५।२१
स ब्रह्मवित्स लोकवित्स वेदवित्स भूतवित्स आत्मवित्स सर्वविदिति बृह. १।७।१

स ब्रह्मविद्यां सर्वविद्याप्रतिष्ठाम् मुण्ड. १।१।१
स ब्रह्मा स ब्रह्मा स ब्रह्मा गणेशः गणेशो. २।४
स ब्रह्मा स हरिः स इन्द्रः स कालाग्निरुद्रः गान्धर्वो. २
स ब्रह्माणमेव विवेश, स मानसान् सप्तपुत्रानसृजत् सुबालो. १।३
स ब्रह्मालङ्कारेणालङ्कृतो ब्रह्म विद्वान्ब्रह्मैवाभिप्रैति कौ. त. १।४
स ब्रह्मा स ईशानः (सेन्द्रः) सोऽक्षरः परमः स्वराट् [महो. १।९+ चतुर्वे. ६
स ब्रह्मा, स मुक्तिः, साऽतिमुक्तिः बृह. ३।१।६
स ब्रह्मा स विष्णुः स इन्द्रः स शमनः स सूर्यः स चन्द्रः निरालं. १०
स ब्रह्मा स विष्णुः स रुद्रः स इन्द्रः स सर्वे देवाः सर्वाणि भूतानि शांडि. ३।१।३
स ब्रह्मा स विष्णुः स शिवः स प्रजापतिः स इन्द्रः सोऽग्निः समभवत् ग. पू. १।३
स ब्रह्मा स शिवः स हरिः सेन्द्रः सोऽक्षरः परमः स्वराट् [कैव.८+ ना.पू.ता. ३।१ [कालिको. ६+ सूर्यता. १।२
स ब्रह्मा स शिवः....स्वराट् तस्माज्ञश्चतुर्थं पादं जानीयाद्यो जानीते सोऽमृतत्वं गच्छति नृ. पू. १।४
स ब्रह्मा स हरिः सेन्द्रः स कालाग्निरुद्रः स चन्द्रमाः स नक्षत्राणि स चराचरात्मकं जगत् गान्धर्वो. २
स ब्रह्मेति हि विज्ञेय ऋषिर्ब्रह्ममयो महान् कौ. त. १।७
स ब्रूयात्प्राणा वसव इदं मे प्रातःसवनम् छांदो. ३।१६।२
स ब्रूयाद्यावान् वा अयमाकाशस्तावानेषः छांदो. ८।१।३
स ब्रूयान्नास्य जरयैतज्जीर्यति, न वधेनास्य हन्यते छांदो. ८।१।५
स भगवान् युगसन्धिकाले स्वेन रूपेण युगे युगे तेनैव जायमानः स्वयमेव सौमित्रिरैक्ष्वाके वंशे जायमानो रक्षांसि सर्वाणि विनिघ्नंश्चातुर्वर्ण्यधर्मान्प्रवर्तयति सङ्कर्षणो. २
स भाणकरोत्सैव वागभवत् बृह. १।२।४
स भाणमकरोत्सैववागभवत्(मा.पा.) बृ. उ. १।२।४
सभास्थलं श्मशानमिव...कारागृहविनिर्मुक्तचोरवत्पुत्राप्तबन्धुभवस्थलं विहाय दूरतो वसेत् ना. प. ७।१
(एवं) स भिक्षुः सौवर्णादीनां नैव परिग्रहेत् प. हं. ९
स भूतꣳ स भव्यं जिज्ञासक्लृप्त ऋतजारयिष्ठा श्रद्धा सत्यो महस्वान् तपसो वरिष्ठा महाना. १७।१३
स भूतानामधिपतिः १ ऐत. ३।७।१
स भूतेषु च सर्वात्मा वासुदेवस्तथा स्मृतः भवसं. २।६३
स भूमिकावानित्युक्तः शेषस्त्वाय इति स्मृतः। विचारनाम्नीमितरामागतो योगभूमिकाम् अक्ष्युप. १३
स भूमिं विश्वतो (स्पृत्वा) वृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् [ऋ. मं. १०।९०।१ [वा.सं.३१।१+श्वेताश्व.३।१४+ त्रिस्यु. १।३।१
स भूय एवेन्धनयोर्निगृह्यः श्वेताश्व. १।१३
स भूतो भ्रियमाणो बिभर्ति त्रिस्यु. १४।१
स भो ३ इति प्रतिशुश्राव बृह. ६।२।१
सम आत्मा न संशयः ते. बि. ५।१२
सम आत्मेति विद्यात् कौ. त. ३।९
समक्लृपतां द्यावापृथिवी समकल्पेतां वायुश्चाकाशं च समकल्पन्तामापश्च तेजश्च तेषाꣳ सङ्क्लृप्त्यै वर्षꣳ सङ्कल्पते छांदो. ७।४।२
समग्रं प्रविलीयते म. गी. ४।२३
समग्रीवशिरोकायः संवृतास्यः सुनिश्चलः जा. द. ५।५
(विद्वान्) समग्रीवशिरोनासाग्रदृग्भ्रूमध्ये शशभृद्बिम्बं पश्यतु शांडि. १।५।२
(तद्यथा-)समञ्जनवता पूर्णरवेण (समाहितेन) रथेन यं कामं कामयते तमभ्यश्नुते... संहितो. १।६।७

(तद्यथा-)समञ्जनवता रथेन यं कामं कामयते तमभ्यश्नुते एवमेवैतया..	संहितो. १।५
समता सर्वभावेषु याऽसौ सत्यपरा स्थितिः। तस्यामवस्थितं चित्तं न भूयो जन्मभाग्भवेत्	महो. ६।४
समता स्वच्छता सौम्या सप्तमी भूमिका भवेत्	अ. पू. ५।८५
समतैवावशिष्यते	महो. ६।२,३
समत्वं योग उच्यते	भ. गी. २।४८
समदुःखसुखं धीरं	भ. गी. २।१५
समदुःखसुखः क्षमी	भ.गी. १२।१३
समदुःखसुखः क्षान्तो हस्तप्राप्तं च भक्षयेत्	ना. प. ५।४८
समदुःखसुखः स्वस्थः	भ. गी. १४।२४
स मनसा वाचं...अशनायां मृत्युः...(मा. पा.)	बृह. १।२।४
स मनसा वाचं मिथुनं समभवत्	बृह. १।२।४
स मनुष्याणां परम आनन्दः	बृह. ४।३।३३
स मनुष्यानाकर्षयति सर्वानाकर्षयति	नृ. पू. ५।१२
समन्ताद्देवताः सर्वाः सिद्धचारणपन्नगाः। यन्मूले सर्वतीर्थानि यन्मध्ये ब्रह्म देवताः॥ यदग्रे वेदशास्त्राणि तुलसीं तां नमाम्यहम्	तुलस्यु. ९
समप्रधानौ समसत्त्वौ समोजौ तयोः शक्तिरजरा विश्वयोनिः	त्रिपुरो. १४
समबुद्धिर्विशिष्यते	भ. गी. ६।९
समभ्यसेत्तथा ध्यानं घटिकाषष्टिमेव च	१ यो.त. १०४
समर्घं धनमुद्धृत्य महार्घं यः प्रयच्छति। स वै वार्धुषिको नाम ब्रह्मवादिषु गर्हितः	इतिहा. ७०
समर्प्य बिल्वं च सहस्रनामभिःसमर्चयन्पूर्वरवेण बिल्वैः..	१ बिल्वो. १०
समलं [illegible] च साभासं च सदा त्यज	अमन. २।२६
समलोष्टाश्मकाञ्चनः [भ. गी. ६।८+१४।२४	ना. प. ३।३५
समवस्थितमीश्वरम्	भ.गी. १३।२९
समवेतान् कुरूनिति	भ. गी. १।२५
समवेता युयुत्सवः	भ. गी. १।१
समस्तपातकोपपातक...समस्तपापहरणार्थं (गायत्रीं)संस्मरेत्	गायत्रीर. ९
समस्तभुवनस्याधोभागे जलाकारात्मिका मण्डूकमयेति भुवनाधारेति विज्ञायते	सीतो. १०
समस्तयातायातवर्ज्यं नैवेद्यम्	भावनो. ८
समस्तवेदशास्त्रेतिहासपुराणानि समस्तविद्याजालानि ब्रह्मादयः सुराः सर्वे त्वद्रूपज्ञानान्मुक्तिमाहुः	वराहो. १।१
समस्तवेदान्तसारसिद्धान्तार्थकलेवरम्। विकलेवरकैवल्यं रामचन्द्रपदं भजे	सर्वसा. शीर्षकं
समस्तसाक्षिं तमसः परस्तात्	कैव. ७
समस्तसाक्षिं सदसद्विहीनं प्रयाति शुद्धं परमात्मरूपम्	कैव. २४
समस्तसाक्षी सर्वात्मा सर्वभूतगुहाशयः	अ. वि. १०७
समस्तस्य खलु साम्न उपासनꣳ साधु	छांदो. २।१।१
समस्तस्वरूपविरोधकारिण्यपरिच्छिन्नतिरस्करिण्याकारा वैष्णवी महायोगमाया	त्रि.म.ना. ६।५
समस्तयागानां रुद्रः पशुपतिः कर्ता	पा. ब्र. २
समस्तविषयाणां मनसः स्थैर्येणानुसन्धानं कुसुमम्	भावनो. ८
समस्तं खल्विदं ब्रह्म सर्वमात्मेदमाततम्	महो. ६।१२
समस्तावयवेभ्यस्त्वं पृथक् भूप व्यवस्थितः	भवसं. २।२९
समस्ता वासनास्त्यक्त्वा निर्विकल्पसमाधितः। तन्मयत्वादनाद्यन्ते तद्व्यन्तर्विलीयते	अ. पू. ४।६२
समस्ताविद्याण्डव्यापको भवति	त्रि.म.ना. २।६
स महत्तत्त्वाभिमानी स्पष्टास्पष्टवपुर्भवति	पैङ्गलो. १।२

स मानसान्सप्त पुत्रानसृजत् सुबालो. १।३
समानस्तु द्वयोर्मध्ये गोक्षीर-
धवलप्रभः। आपाण्डर उदानश्च
व्यानो ह्यर्चिःसमप्रभः अ. ना. ३८
समानः सर्वगात्रेषु सर्वव्यापी
व्यवस्थितः त्रि. ब्रा. २।८१
समानः सर्वदेहेषु व्याप्य तिष्ठत्य-
संशयः जा. द. ४।२९
समानः सर्वसामीप्यं करोति
मुनिपुङ्गव जा. द. ४।३१
समानसीन आत्मा जनानाम् चित्यु.११।१।२
(ॐ) समानात्मने ॐ तत्सद्भूर्भुव-
स्तस्मै समानात्मने नमो नमः गोपालो. ३।१०
समाने तृप्यति मनस्तृप्यति छांदो. ५।२२।२
समाने वृक्षे पुरुषो निमग्नोऽनीशया
शोचतिमुह्यमानः[मुण्ड.३।१।२+ श्वेताश्व. ४।७
समाने वै तत्परिहृतो मेन
इत्यागस्त्यः ३ ऐत. १।१।१
समानो नाभिदेशे तु उदानः
कण्ठमाश्रितः अ. ना. ३५
समानो मैत्रावरुणः प्रा. हो. ४।१
समान्स्निग्धान्दृढान्स्थूलान्क्षौम-
सूत्रेण धारयेत् (रुद्राक्षान्) रु. जा. १३
स मा भग प्रविश स्वाहा तैत्ति. १।४।६
समासक्तं तथा (यथा-यदा-सदा)
चित्तं जन्तोर्विषयगोचरे (रं)।
यद्येवं ब्रह्मणि स्यात्तत्को न
मुच्येत बन्धनात् मैत्रा. ६।३४
[+शाट्या. २+भवसं. ३।१५ मैत्रे. १।१२
समासेनैव कौन्तेय भ.गी. १८।५०
समाहिता नित्यतृप्ता यथाभूतार्थ-
दर्शिनी। ब्रह्मन्समाधिशब्देन
परा प्रज्ञोच्यते बुधैः अ. पू. १।४८
समाः स्निग्धा दृढाः स्थूलाः कण्टकैः
संयुताः शुभाः (रुद्राक्षाः) रु. जा. ११
समित्पाणिः श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठम् मुण्ड. १।२।१२
समिदग्निसमुत्पन्नं धार्यं वै
ब्रह्मचारिणा (भस्म) बृ. जा. ३।५

समिद्धूमो धूमोऽर्चिरर्चिरङ्गारा
अङ्गारा विस्फुलिङ्गाः बृह. ६।२।१४
समिध५ सौम्याहरोप त्वा नेष्ये
न सत्यादगाः छांदो. ४।४।५
समीकरणोन्नयनग्रहणश्रवणोच्छ्वासा
वायुकार्यप्राणादिविषयाः त्रि. ब्रा. २।४
स मुक्तः परमेश्वरः महो. ६।८
स मुक्तः स पूज्यः स योगी स
परमहंसःसोऽवधूतः स ब्राह्मणइति निरा. ३२
स मुक्तो भवति, स स्वप्रकाशोभवति गणेशो. ५।८
स मुक्तो भवति तस्मै स्वात्मानं
तु ददामि वै गोपालो. २।३६
स मुक्तोऽहमस्मि गोपालो. २।१४
स मुखाच्च योनेर्हस्ताभ्यां चाग्नि-
मसृजत बृह. १।४।६
समुदस्ताश्रमितोऽहं प्रविततसुख-
पूर्णसंविदेवाहम् आ. प्र. ३
समुदेति परानन्दा या तनुः पारमे-
श्वरी। मनसैव मनश्छित्वा सा
स्वयं लभ्यते गतिः अ. पू. १।५३
समुद्धर मनो ब्रह्मन् मातङ्गमिव
कर्दमात् महो. ५।१३९
समुद्र एवास्य बन्धुः, समुद्रो योनिः बृह. १।१।२
समुद्रमापः प्रविशन्ति यद्वत् भ. गी. २।७०
समुद्रमेवाभिमुखा द्रवन्ति भ.गी. ११।२८
समुद्रवेलेव दुर्निवार्यमस्य मृत्यो-
रागमनम् मैत्रा. ४।२
समुद्रस्योत्तरे तीरे द्विविदो नाम
वानरः। चातुर्थिकं ज्वरं हन्ति
लिखित्वा यस्तु पश्यति वनदु. ९८
समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो
अजायत [महाना.६।२+ऋ.मं. १०।१९०।२
समुद्रादूर्मिर्मधुमा५ उदारदुपा५
शुना सममृतत्वमानः[महाना.८।८ ऋ.मं. ४।५८।१
[+वा. सं. १७।८९+तै. आ. १०।१०।२
समुद्रान्सरितः पर्वतान्वनानि मही
पातालं च...ततो वै सृष्टि-
मचीकरत् गणेशो. २।६

समुद्रे अन्तः कवयो विचक्षते चित्त्यु. ११।११
समूलोन्मूलिते पुण्यपापाख्ये
कर्मसञ्चये अध्यात्मो. ३९
समूलो वा एष परिशुष्यति
योऽनृतमभिवदति प्रश्नो. ६।१
स मृत्युं तरति स संसारं तरति
सोऽमृतत्वं च गच्छति नृ. पू. ३।२
स मृत्युं तरति स पाप्मानं तरति
स ब्रह्महत्यां तरति नृ. पू. ५।१०
स मृत्युं तरति स पाप्मानं तरति
स संसारं तरति नृ. पू. २।१
स मृत्युपाशान्पुरतः प्रणोद्य
शोकातिगो मोदते स्वर्गलोके कठो. १।१८
स मेन्द्रो मेधया स्पृणोतु
[तैत्ति. १।४।१+ ना. प. ४।४५
स मे युक्ततमो मतः भ. गी. ६।४७
समेष्यामि शिलासाम्यं निर्विकल्प-
समाधिना १ सं.सो. २।५३
स मोदते मोदनीयꣳ हि लब्ध्वा
विवृतꣳ सद्म नचिकेतसं मन्ये कठो. २।१३
समे शुचौ शर्करावह्निवालुका-
विवर्जिते शब्दजलाश्रया-
दिभिः। मनोनुकूले, न तु
चक्षुपीडने गुहानिवाताश्रयणे
प्रयोजयेत् [श्वेताश्व. २।१०+ भवसं. ३।२३
समोऽहं सर्वभूतेषु भ. गी. ९।२९
सम्पत्सुतस्त्रीप्रलये स्वगेहाद्वि-
निर्गता मुण्डितशीर्षका ये।
स्वार्चां द्विजैस्ते भुवि कारयन्ति
भवन्तु लोकाः खलु सावधानाः भवसं. १।५५
(यो ह वै) सम्पदं वेद सꣳ
हास्मै कामाः पद्यन्ते दैवाश्च
मानुषाश्च, श्रोत्रं वाव सम्पत् छांदो. ५।१।४
सम्पदः परमापदः अक्ष्युप. २६
सम्पदे स्वाहेत्यग्नावाज्यस्य हुत्वा
मन्थे सम्पातमवनयेत् छांदो. ५।२।५
सम्पन्नमेवैतत्सम्मितमेव आर्षे. ५।३
सम्परेतोऽस्यात्मा न चिरमिव
जीविष्यतीति विद्यात् २ ऐत. २।४।४

सम्पर्कादुदरे न्यस्तः शुक्रबिन्दु-
रचेतनः। स पित्रा केन यत्नेन
गर्भस्थः केन पालितः शिवो. ७।१०६
सम्पश्यध्वा एव मा प्रमदत छाग. २।४
सम्पश्यन्कर्तुमर्हसि भ. गी. ३।२०
सम्पीड्य सीविनीं सूक्ष्मां गुल्फेनैव
तु सव्यतः। सव्यं दक्षिण-
गुल्फेन मुक्तासनमुदीरितम् शांडि. १।३।९
सम्पूजकः पञ्चमहोपपातकैर्युक्तो
विमुक्तः शिवरूपमेति १ बिल्वो. १२
सम्पूर्ण इव शीतांशुरतिष्ठदमलःशुकः महो. २।२७
सम्पूर्णकुम्भवद्देहं कुम्भयेन्मातरिश्वना त्रि. ब्रा. २।९८
सम्पूर्णकुम्भवद्वायोर्धारणं कुम्भको
भवेत् जा. द. ६।१३
सम्पूर्णहृदयः शून्ये त्वारम्भे योग-
वान्भवेत् सौ. ल. १०
सम्पूर्णे परमात्मनि। भिन्नाभिन्नं न
पश्यन्ति तस्याहं पञ्चमाश्रयः तत्त्वो. ४
सम्पूर्णानन्दैकबोधो ब्रह्मैवाहमस्मि प. हं. प. ११
सम्प्रज्ञातसमाधिः स्याद्ध्याना-
भ्यासप्रकर्षतः मुक्तिको. २।५३
सम्प्रत्यवसितानां च महापातकिनां
तथा। व्रात्यानामभिशस्तानां
संन्यासं नैव कारयेत् १ सं. सो. २।४
सम्प्रसूतकलत्राणि गृहाण्युग्रा-
पदामिव महो. ३।७
सम्प्राप्यैनमृषयो ज्ञानतृप्ताः कृता-
त्मानो वीतरागाः प्रशान्ताः।
ते सर्वगं सर्वतः प्राप्य धीरा
युक्तात्मानः सर्वमेवाविशन्ति मुण्ड. ३।२।५
सम्प्रेक्ष्य नासिकाग्रं स्वं भ. गी. ६।१३
सम्बद्धासनमेढ्रमङ्घ्रियुगलं कर्णाक्षि-
नासापुटद्वाराद्यङ्गुलिभिर्नियम्य
पवनं वक्त्रेण वा पूरितम्। बध्वा
वक्षसि बह्वयानसहितं मूर्ध्नि
स्थिरं धारयेदेवं यान्ति विशेष-
तत्त्वसमतां योगीश्वरास्तन्मनः यो. चू. ११४

सम्बन्धे द्रष्टृदृश्यानां मध्ये दृष्टिर्हि यद्वपुः । द्रष्टृदर्शनदृश्यादिवर्जितं तदिदं पदम् महो. ५।४८
सम्बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः श्वेता. २।३
सम्बाहुभ्यां नमति सम्पतत्रैर्द्यावा पृथिवी जनयन्देव एकः त्रि. म. ना. ६।४
[२ शि. सं. २६+ महाना. २।२
सम्भक्ष्य सिंहेन स एष वीरः नृसिंहो. ४।३
सम्भवत्युत्तमे प्राज्ञः प्राणायामे सुखी भवेत् जा. द. ६।१५
सम्भवः सर्वभूतानां भ. गी. १४।३
सम्भवामि युगे युगे भ. गी. ४।८
सम्भवाम्यात्ममायया भ. गी. ४।६
सम्भवे हेतुफलयोरेषितव्यः क्रमस्त्वया अ. शां. १६
सम्भावितस्य चाकीर्तिः भ. गी. २।३४
सम्भाषणं च चिन्मात्रं यच्चिन्मात्रमेव हि ते. बिं. २।३०
सम्भाषणं सह स्त्रीभिरालापः प्रेक्षणं तथा । नृत्तं गानं सहासं च परिवादांश्च वर्जयेत् ना. प. ६।३८
सम्भूतिं च विनाशं च यस्तद्वेदोभय९ सह । विनाशेन मृत्युं तीर्त्वा सम्भूत्याऽमृतमश्नुते ईशा. १४
सम्भूतेरपवादाच्च सम्भवः प्रतिषिध्यते । को न्वेवं जनयेदिति कारणं प्रतिषिध्यते अद्वैत. प्र. २५
सम्भूर्वेर्वायुसंश्रावैर्हृदयं तप उच्यते कुंडिको. २१
सम्भृतमेनायक्ष्यसे चित्त्युप. २।१
सम्भृतं पृषदाज्यम् [चित्त्यु.१२।४+ पु. सू. ६
[ऋ. मं. १०।९०।८+ वा. सं. ३१।६
सम्भोजनी नाम पिशाचभिक्षा नैषा पितॄन्गच्छति नोत देवान् । इहैव सा चरति क्षीणपुण्या शालान्तरे गौरिव नष्टवत्सा इतिहा. २२
सम्माननं परां हानिं योगर्द्धेः कुरुते यतः । जनेनावमतो योगी योगसिद्धिं च विन्दति ना. प. ५।४०

सम्मानाद्ब्राह्मणो नित्यमुद्विजेत विषादिव । अमृतस्येव चाकाङ्क्षेदवमानस्य सर्वदा ना. प. ३।४१
सम्मायमग्निः सिंचत्वायुषा च बलेन चायुष्मंतं करोतमेति प्रतिहास्मै मरुतः प्राणान्दधति सहवै. २२
सम्मूढत्वादात्मस्थं प्रभुं भगवन्तं कारयितारं नापश्यत् मैत्रा. ३।२
सम्मा सिञ्चन्तु मरुतः समिन्द्रः सं बृहस्पतिः ना. प. ४।४१
सम्मोहमौली तृष्णेर्ष्याकुण्डली तन्द्रीराघवेत्र्यभिमानाध्यक्षः मैत्रा. ६।२८
सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः भ. गी. २।६३
सम्मोहो भयं विषादो निद्रा तन्द्री प्रमादो व्रणो जराशोकः क्षुत्पिपासा...नास्तिक्यमज्ञानं...निकृतत्वमुद्धतत्वमसमत्वमिति तामसान्वितः मैत्रा. ३।५
सम्यगालोकिते रूपे काष्ठपाषाणवाससाम् । मनागपि न भेदोऽस्ति क्वासि सङ्कल्पनोन्मुखः अ. पू. २।३८
सम्यगालोचनात्सत्याद्वासना प्रविलीयते । वासनाविलये चेतः शममायाति दीपवत् मुक्तिको. २।१७
सम्यगुपनयनपूर्वकं चतुश्चत्वारिंशत्संस्कारसम्पन्नः...सर्वविद्याभ्यासं कृत्वा... देहत्यागं करोति स मुक्तः ना. प. १।१
सम्यग्ज्ञानसमालोकः पुमान् ज्ञेयः समः स्वयम् । न बिभेति न चावृत्ते वैवश्यं न च दीनताम् अ. पू. ५।२
सम्यग्ज्ञानं च वैराग्यं धर्मोऽयं भिक्षुके मतः ना. प. ५।४५
सम्यग्ज्ञानावरोधेन नित्यमेकसमाधिना । साङ्ख्य एवावबुद्धा ये ते साङ्ख्या योगिनः परे अ. पू. ५।४९
सम्यग्बन्धत्रयस्थोऽपि लक्ष्यलक्षणकारणम् । वेद्यं समुद्धरेन्नित्यं.. वराहो. ५।५६

सम्यग्वासनया त्यक्तं मुक्तमि-
त्यभिधीयते मुक्तिको. २।१६
सम्यग्व्यवसितो हि सः भ. गी. ९।३०
सम्यङ्निमीलिताक्षः किञ्चिदुन्मी-
लिताक्षः...परं ब्रह्मावलोकयं-
स्तद्रूपो भवति (योगी) अद्वयता. १
सम्यक्न्यासःसन्न्यासः । न तु
मुण्डितमुण्डः [गुह्यषो. २+ पीतां. २
सम्यञ्चि ह्यस्मै सर्वाणि भूतानि
श्रैष्ठ्याय कल्पन्ते बृह. ५।१३।३
स य आकाशं ब्रह्मेत्युपास्ते
आकाशवतो वै स लोकान्प्रकाश-
वतोऽसम्बाधानुरुगायवतो-
ऽभिसिद्ध्यति छांदो. ७।१२।२
स य आत्मानमेव प्रियमुपास्ते न
हास्य प्रियं प्रमायुकं भवति बृह. १।४।८
स य आत्मानमेव लोकमुपास्ते न
हास्य कर्म क्षीयते बृह. १।४।१५
स य आशां ब्रह्मेत्युपास्ते आश-
याऽस्य सर्वे कामाः समृद्ध्यन्ति छांदो. ७।१४।२
स य इच्छेत्पुत्रो..अनुब्रवीत(मा.पा.) बृ. उ. ६।४।१४
स य इच्छेत्पुत्रो मे शुक्लो जायेत
वेदमनुब्रुवीत, सर्वमायुरियादिति बृह. ६।४।१४
स य इदमविद्वानग्निहोत्रं जुहोति
यथाऽङ्गारानपोह्य भस्मनि
जुहुयात्तादृक्तत्स्यात् छांदो. ५।२४।१
स य इमाँस्त्रींल्लोकान् पूर्णान्
प्रतिगृह्णीयात् सोऽस्या एत-
त्प्रथमं पदमाप्नुयात् बृह. ५।१४।६
स य इहान्वायत्तमिदमविद्वाने-
वैतदुपास्ते पापीयान्भव-
त्यार्तिमार्च्छत्यवम्रियते आर्षे. ४।३
स य एतद्ब्रह्मान्ने प्रतिष्ठितं वेद
प्रतितिष्ठति तैत्ति. ३।७,८,९
स य एतदुपास्ते न स पाप्मनो
व्यावर्तते बृह. १।५।२
स य एतदेवममृतं वेद वसूनामेवैको
भूत्वाऽग्निनैव मुखेनैतदेवामृतं
दृष्ट्वा तृप्यति छांदो. ३।६।३

स य एतदेवममृतं वेद रुद्राणा-
मेवैको भूत्वेन्द्रेणैव मुखेनैत-
देवामृतं दृष्ट्वा तृप्यति छांदो. ३।७।३
स य एतदेवममृतं वेद साध्याना-
मेवैको भूत्वा ब्रह्मणैव मुखेनैत... छांदो. ३।१०।३
स य एतदेवममृतं वेद मरुतामेवैको
भूत्वा सोमेनैव मुखेन... छांदो. ३।९।३
स य एतदेवममृतं वेदादित्या-
नामेवैको भूत्वा वरुणेनैव
मुखेनैतदेवामृतं दृष्ट्वा तृप्यति छांदो. ३।८।३
स य एतदेव रूपमभिसंविश-
त्येतस्माद्रूपादुदेति छांदो. ३।६।३
स य एतदेवं विद्वानक्षरं प्रणौ-
त्येतदेवाक्षरꣳ स्वरममृत-
मभयं प्रविशति छांदो. १।४।५
स य एतदेवं विद्वानादित्यं
ब्रह्मेत्युपास्ते...(मा. पा.) छांदो. ३।१९।४
स य एतदेवं विद्वान्साधु सामेत्यु-
पास्तेऽभ्याशो ह यदेनꣳ साधवो
धर्मा आ च गच्छेयुरुप च नमेयुः छांदो. २।१।४
स य एतदेवं वेदाऽभि हैनं सर्वाणि
भूतानि संवाञ्छन्ति केनो. ४।६
स य एतद्गायत्रं प्राणेषु प्रोतं वेद
प्राणी भवति छांदो. २।११।२
स य एतमेवमुपास्ते आत्मन्वी ह
भवत्यात्मन्विनी हास्य प्रजा
भवति बृह. २।१।१३
स य एतमेव उपास्ते; तेजस्वी ह
भवति तेजस्विनी हास्य
प्रजा भवति बृह. २।१।४,९
स य एतमेवमुपास्तेऽतिष्ठाः
सर्वेषां भूतानां मूर्धा राजा
भवति [बृह. २।१।२,३, ६,७,८,९
स य एतमेवमुपास्ते द्वितीयवान्ह
भवति नास्माद्गणश्छिद्यते बृह. २।१।११
स य एतमेवमुपास्तेऽहरहर्ह सुतः
प्रसुतो भवति नास्यान्नं क्षीयते बृह. २।१।३
स य एतानेवं पञ्च पुरुषान् स्वर्गस्य
द्वारपान्वेद छांदो. ३।१३।६

स य एतमेवं वायुं दिशां वत्सं वेद छांदो. ३।१९।२
स य एतमेवं विद्वानादित्यं
ब्रह्मेत्युपास्तेऽभ्याशो ह यदेन ५
साधवो घोषा आ च गच्छेयुरुप
च निम्रेडेरन् छांदो. ३।१९।४
स य एतमेवं विद्वानुपास्तेऽपहते
पापकृत्यां लोकी भवति, सर्व-
मायुरेति [छांदो. ४।११।२+ १२।२+१३।२
स य एतमेवं विद्वानुपास्ते छांदो. १।९।४
स य एतमेवंविद्वांश्चतुष्कलं पादं
ब्रह्मणोऽनन्तवानित्युपास्ते-
ऽनन्तवानस्मिँल्लोके भवति छांदो. ४।६।४
स य एतमेवं विद्वा९श्चतुष्कलं पादं
ब्रह्मण आयतनवानित्युपास्ते
आयतनवानस्मिँल्लोके भवति छांदो. ४।८।४
स य एतमेवं विद्वांश्चतुष्कलं पादं
ब्रह्मणः प्रकाशवानित्युपास्ते
प्रकाशवानस्मिँल्लोके भवति छांदो. ४।५।३
स य एतां संहितां वेद सन्धीयते
प्रजया पशुभिर्यशसा ब्रह्म-
वर्चसेन स्वर्गेण लोकेन सर्वमा-
युरेति [३ ऐत. १।५।४+ १।६।२+१।६।४
स य एनं प्राणं वंशमुपवदेत् ३ ऐत. १।४।१
स य एवमिमा महिम्न एवास्य
पश्यन्नुपास्ते महिम्न एवाश्नोति
सर्वमायुरेति वसीयान्भवति आर्षे. ८।२
स य एवमेतत्साम सर्वस्मिन्प्रोतं
वेद सर्वं ५ ह भवति छांदो. २।२१।२
स य एवमेतद्बृहदादित्ये प्रोतं
वेद तेजस्व्यन्नादो भवति छांदो. २।१४।२
स य एवमेतद्यज्ञायज्ञीयमङ्गेषु
प्रोतं वेदाङ्गी भवति छांदो. २।१९।२
स य एवमेतद्रथन्तरमग्नौ प्रोतं
वेद ब्रह्मवर्चस्व्यन्नादो भवति छांदो. २।१२।२
स य एवमेतद्राजनं देवतासु प्रोतं
वेदैतासामेव देवताना५
सलोकता ५ सार्ष्टिता५
सायुज्यं गच्छति छांदो. २।२०।२

स य एवमेतद्वामदेव्यं मिथुने प्रोतं
वेद मिथुनीभवति छांदो. २।१३।२
स य एवमेतद्वैराजमृतुषु प्रोतं वेद
विराजति प्रजया पशुभिर्ब्रह्म-
वर्चसेन सर्वमायुरेति छांदो. २।१६।२
स य एवमेतद्वैरूपं पर्जन्ये प्रोतं
वेद विरूपां५श्च सुरूपा५श्च
पशूनवरुन्धे छांदो. २।१५।२
स य एवमेतमक्षरसम्मानं चक्षुर्मयं
श्रोत्रमयं छन्दोमयं मनोमयं
वाङ्मयमात्मानं वेद अक्षराणां
सायुज्यं सरूपतां सलोकतामश्नुते ३ ऐत. २।२।३
स य एवमेतमहः सम्मानं चक्षुर्मयं
...आत्मानं वेद अह्ना सायुज्यं
सरूपतां सलोकतामश्नुते ३ ऐत. २।१।२
स य एवमेतमिन्द्रं भूतानामिन्द्रं
वेद विस्रसाहैवास्माल्लोकात्
प्रैतीति ह स्माह महिदास
ऐतरेयः १ ऐत. ३।७।१
स य एवमेतमुपास्ते रोचिष्णुर्ह
भवति बृह. २।१।९
स य एवमेता रेवत्यः पशुषु प्रोता
वेद पशुमान्भवति छांदो. २।१८।२
स य एवमेतं संवत्सरं समानं
चक्षुर्मयं श्रोत्रमयं छन्दोमयं
मनोमयं वाङ्मयमात्मानं परस्मै
शंसति ३ ऐत. २।३।९
स य एवमेतां संहितां वेद सन्धीयते
प्रजया पशुभिर्यशसा... ३ ऐत. १।१।३
[१।२।३+१।९।१,२+ १।६।७
स य एवमेताः शक्वर्यो लोकेषु
प्रोता वेद लोकी भवति छांदो. २।१७।२
स य एवमेनमुपास्तेऽतीव सर्वा
भूतानि तिष्ठति, सर्वमायुरेति आर्षे. ६।२
स य एवंवित् अस्माल्लोकात्प्रेत्य
एतमन्नमयमात्मानमुपसङ्क्रामति
[तैत्ति. २।८।१+ ३।१०।५
स य एवंविद्वानेते आत्मान५ स्पृणुते तैत्ति. २।९

स य एवायं दैहिक आत्मा ३ ऐत. २।३।१
स य एषोऽणिमा [छांदो. ६।८।७+ ९।४+१०।३
स य एषोऽन्तर्हृदय आकाशः तैत्ति. १।६।१
स यजुर्भिर्यजुर्वेदो विष्णुरुद्रास्त्रिष्टु-
ब्दक्षिणाग्निः [नृ. पू. २।१+ नृसिंहो. ३।२
स यजुषां मण्डलं, स यजुषां लोकः महाना. १०।१
स यज्जुहोति यद्यजते तेन
देवानां लोकः बृह. १।४।१६
स यज्ञः, स मे ददातु प्रजां
पशून् पुष्टिं यशः चित्त्यु. ७।१
स यत्करणीयं मन्येत तत्कुर्वीत ३ ऐत. २।४।४
स यत्कुमारं जन्मनोऽग्रेऽधि-
भावयत्यात्मानमेव तद्भावयति २ ऐत. ४।३
स यत्तत्र किञ्चित्पश्यत्यनन्वागत-
स्तेन भवत्यसङ्गो ह्ययं पुरुषः बृह. ४।३।१५
स यत्पूर्वोऽस्मात्सर्वस्मात् सर्वान्
पाप्मन औषत्तस्मात्पुरुषः बृह. १।४।१
स यत्प्रमाणं कुरुते भ. गी. ३।२१
स यत्प्राणो गृत्सोऽपानमदस्तस्मा-
द्गृत्समदः १ ऐत. २।१।३
स यत्र चन्द्रस्तन्नक्षत्राणि यत्र वा
नक्षत्राणि स चन्द्रमास्ते द्वे
योनिस्तदेकं मिथुनम् साविञ्यु. ७
स यत्र पुरुषस्तत्स्त्री यत्र वा स्त्री
स पुरुषस्ते द्वे योनिस्तदेकं
मिथुनम् साविञ्यु. ९
स यत्र प्रस्तुयात्तदेतानि जपेदसतो
मा सद्गमय तमसो मा ज्योति-
र्गमय मृत्योर्मामृतम् बृह. १।३।२८
स यत्र प्रस्वपिति, अस्य लोकस्य
सर्वावतो मात्रामुपादाय स्वयं
विहत्य स्वयं निर्माय स्वेन भासा
स्वेन ज्योतिषा प्रस्वपित्यत्रायं
पुरुषः स्वयंज्योतिर्भवति बृह. ४।३।९
स यत्र यज्ञस्तत्र छन्दांसि, यत्र वा
छन्दांसि स यज्ञस्ते द्वे योनि-
स्तदेकं मिथुनम् साविञ्यु. ४

स यत्र मनस्तद्वाक् , यत्र वा
वाक्तन्मनस्ते द्वे योनिस्तदेकं
मिथुनम् साविञ्यु. ८
स यत्र वरुणस्तदापो यत्र वा
आपस्तद्वरुणस्ते द्वे योनि-
स्तदेकं मिथुनम् साविञ्यु. २
स यत्र वायुस्तदाकाशो यत्र वा
आकाशस्तद्वायुस्ते द्वे योनि-
स्तदेकं मिथुनम् साविञ्यु. ३
स यत्र स्तनयित्नुस्तद्विद्युत् , यत्र
वा विद्युत्तत्र स्तनयित्नुस्ते द्वे
योनिस्तदेकं मिथुनम् साविञ्यु. ५
स यत्राग्निस्तत्पृथिवी, यत्र वै पृथिवी
तत्राग्निस्ते द्वे योनिस्तदेकंमिथुनम् साविञ्यु. १
स यत्रादित्यस्तद्द्यौर्यत्र वा
द्यौस्तदादित्यस्ते द्वे योनि-
स्तदेकं मिथुनम् साविञ्यु. ६
स यत्रायमणिमानं न्येति जरया
वोपतपता वाऽणिमानं निगच्छति बृह. ४।३।३६
स यत्रायमात्माऽबल्यं न्येत्य
सम्मोहमिव न्येत्यथैनमेते
प्राणा अभिसमायन्ति बृह. ४।४।१
स यत्रैतत्स्वप्नायाचरति
ते हास्य लोकाः बृह. २।१।१८
स यत्रैष चाक्षुषः पुरुषः पराङ्
पर्यावर्ततेऽथारूपज्ञो भवति बृह. ४।४।१
स यत्रोपाकृते प्रातरनुवाके पुरा
परिधानीयाया ब्रह्मा व्यव-
वदति छांदो. ४।१६।२
स यत्सर्वमोक्षुर्याद्रिच्यादात्मानं
सकामेभ्यो नालं स्यात् १ ऐत. ३।६।६
स यत्सर्वं नेति ब्रूयात् , पापिका-
ऽस्य कीर्तिर्जायेत १ ऐत. ३।६।६
स यथाकामो भवति तत्क्रतुर्भवति,
यत्क्रतुर्भवति तत्कर्म कुरुते,
यत्कर्म कुरुते तदभिसम्पद्यते बृह. ४।४।५
स यथा कुमारो महाराजो वा
महाब्राह्मणो वातिघ्नीमानन्दस्य
गत्वा शयीतैवमेष एतच्छेते बृह. २।१।१९

स यथा तत्र...ऽधराक्षो प्राध्मायीत-(मा. पा.) छां.उ. ६।१४।१

स यथा तत्र नादा छ्येतैतदात्म्य-मिद९ सर्वं तत्सत्य९ स आत्मा तत्त्वमसि श्वेतकेतो छांदो. ६।१६।३

स यथा तत्र प्राङ्वोदङ्वाऽधराङ्वा प्रत्यङ्वा प्रध्मायीताभिनद्धाक्ष आनीतोऽभिनद्धाक्षो विसृष्टः छांदो. ६।१४।१

स यथातुरा भिषग्ग्रहणकाले बाला अपथ्याहितगुडादिना जनन्या वञ्चिता इति नाना-देवता गुरुकर्मतीर्थनिष्ठाश्च ते भवन्ति स्वसंवे. ३

स यथा दुन्दुभेर्हन्यमानस्य न बाह्याञ्छब्दान् शक्नुयाद्ग्रहणाय दुन्दुभेस्तु ग्रहणेन दुन्दुभ्या-घातस्य वा शब्दो गृहीतः [बृह. २।४।७+४।५।८

स यथा प्रचोदयित्रापोज्झितो नेङ्गेमरुरवीवैवं हैष प्राज्ञेनात्म-नापोज्झितो न भूते छाग. ६ ३

स यथा प्रयोग्य आचरणे युक्त एवमेवायमस्मिञ्छरीरे प्राणो युक्तः छांदो. ८।१२।३

स यथा महाराजो जानपदान् गृहीत्वा स्वे जानपदे यथाकामं परिवर्तेतैवमेवैष एतत्प्राणान् गृहीत्वा स्वेशरीरे यथाकामं परिवर्तते बृह. २।१।१८

स यथा मृत्पिण्डे घटानां तन्तौ पटानां तथैवेति भवति स्वसंवे. १

स यथार्द्रैन्धाग्नेरभ्याहितात् (मा. पा.) बृह. २।४।१०

स यथाऽऽर्द्रैधाग्नेरभ्याहि(तात्) तस्य पृथग्धूमा...विनिश्वर-न्त्येवं वा अरेऽस्य महतो भूतस्य निःश्वसितमेतदृग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्वाङ्गिरस इतिहासः [बृह. २।४।१०+ ४।५।११

स यथा वीणायै वाद्यमानायै न बाह्याञ्छब्दाञ्छक्नुयाद्ग्रहणाय वीणायै तु ग्रहणेन वीणावादस्य वा शब्दो गृहीतः [बृह.२।४।९+ ४।५।१०

स यथा शकुनिः सूत्रेण प्रबद्धो दिशंदिशं पतित्वाऽन्यत्रायतन-मलब्ध्वा बन्धनमेवोपश्रयते एवमेव खलु सोम्य तन्मनो दिशं दिशं पतित्वाऽन्यत्रायतन-मलब्ध्वा प्राणमेवोपश्रयते छांदो. ६।८।२

स यथा शकुनिः...बन्धनमेवो-पाश्रयते (मा. पा.) छांदो. ६।८।२

स यथा शङ्खस्य ध्मायमानस्य न बाह्याञ्छब्दाञ्छक्नुयाद्ग्रहणाय शङ्खस्य तु ग्रहणेन शङ्खध्मस्य वा शब्दो गृहीतः [बृह. २।४।८+४।५।९

स यथाऽश्मानमृत्वा लोष्ठो विध्वंसतैवं (मा. पा.) बृ. उ. १।३।७

स यथा सर्वासामपा९ समुद्र एकायनमेव९ सर्वेषा९ स्पर्शानां त्वगेकायनं [बृह. २।४।११+ ४।५।१२

स यथा सुहयः पड्वीशशङ्कून्सङ्खिदे-देवमितरान्प्राणान्समखिदत् छांदो. ५।१।१२

स यथा सैन्धवखिल्य उदके प्रास्त उदकमेवानुविलीयेत, न हास्य ग्रहणायेव स्यात् बृह. २।४।१२

स यथा सैन्धवघनोऽनन्तरोऽबाह्यः कृत्स्नो रसघन एवैवं वा अरेऽयमात्मा बृह. ४।५।१३

स यथा सोम्य वयांसि वासो वृक्षं सम्प्रतिष्ठन्ते, एवं ह वै तत्सर्वं पर आत्मनि सम्प्रतिष्ठते प्रश्नो. ४।७

स यथेमा नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रायणाः समुद्रं प्राप्यास्तं गच्छन्ति भिद्येते चासां नामरूपे समुद्र इत्येवं प्रोच्यते प्रश्नो. ६।५

स यथैकपाद्व्रजन्रथो वैकेन चक्रेण वर्तमानो रिष्यत्येवमस्य यज्ञो रिष्यति छांदो. ४।१६।३

(एवं) स यथैतां देवता९ सर्वाणि भूतान्यवन्त्येव९ हैवंविद९ सर्वाणि भूतान्यवन्ति — बृह. १।५।२०

स यथैषां प्राणानां मध्यमः प्राणः, एवमेतासां देवतानां वायुः — बृह. १।५।२२

स यथोभयपाद्व्रजन्रथो वोभाभ्यां चक्राभ्यां वर्तमानः प्रतितिष्ठत्येवमस्य यज्ञः प्रतितिष्ठति — छांदो. ४।१६।५

स यदवोचं प्राणं प्रपद्य इति, प्राणो वा इद९ सर्वं भूतं यदिदं किञ्च, तमेव तत्प्रापत्सि — छांदो. ३।१५।४

स यदशिशिषति यत्पिपासति यन्न रमते ता अस्य दीक्षाः — छांदो. ३।१७।१

स यदा तेजसाऽभिभूतो भवत्यत्रैष देवः स्वप्नान्न पश्यत्यथ तदैतस्मिञ्छरीरे एतत्सुखं भवति — प्रश्नो. ४।६

स यदा प्रतिबुध्यते — कौ. त. ३।३

स यदा प्रतिबुध्यते तदेतत्सर्वमस्मादेवोत्तिष्ठति — नृसिंहो. ७।६

स यदा प्राणेन सह संयुज्यते तदा पश्यति नद्यो नगराणि बहूनि विविधानि च — सुबालो. ४।२

स यदा बली भवत्यथोत्थाता भवति — छांदो. ७।८।१

स यदा मनसा मनस्यति मन्त्रानधीयीयेत्यथाधीते — छांदो. ७।३।१

स यदा मृत्युमत्यमुच्यत स वायुरभवत्सोऽयं वायुः परेण मृत्युमतिक्रान्तः पवते — बृह. १।३।१३

स यदा विजज्ञावथ हत्वाऽसुरान्विजित्य सर्वेषां भूतानां श्रैष्ठ्यं स्वाराज्यमाधिपत्यं पर्येति — कौ. त. ४।२०

स यदाऽस्माच्छरीरादुत्क्रामति, वागस्मात्सर्वाणि नामान्यभिविसृजते, वाचा सर्वाणि नामान्याप्नोति — कौ. त. ३।४

स यदाहासतो मा सद्गमयेति मृत्युर्वा असत्सदमृतं मृत्योर्मामृतं गमयामृतं मा कुरु — बृ.उ. १।३।२८

स यदि तस्य कर्ता भवति (मा.पा.) — छां.उ. ६।१६।२

स यदिदमत्रान्वायत्तं वेदाथ तथैवोपास्तेऽत्रैवान्वायत्तो भवति — आर्षे. ४।३

स यदिदमेतस्मिन्नन्वायत्तं वेदाथ तथोपास्तेऽन्वायत्तो हैवास्मिन् भवति — आर्षे. २।३

स यदिदं सर्वमभिप्रागाद्यदिदं किञ्च तस्मात्प्रगाथाः — १ ऐत. २।२।३

स यदिदं सर्वमभ्यपवयत यदिदं किञ्च तस्मात्पावमान्यः — १ ऐत. २।२।४

स यदिदं सर्वं पाप्मनो त्रायत यदिदं किञ्च तस्मादत्रयः — १ ऐत. २।१।६

स यदि परेण वोपसृतः स्वेन वाऽर्थेनाभिव्याहरेत् । अभिव्याहार्षमेव विद्यात् — ३ ऐत. १।६।४

स यदि पितरं वा मातरं वा भ्रातरं वा स्वसारं वाऽऽचार्यं वा ब्राह्मणं वा किञ्चिद्भृशमिव प्रत्याह धिक्त्वास्त्वित्येवैनमाहुः — छांदो. ७।१५।२

स यदि पितृलोककामो भवति सङ्कल्पादेवास्य पितरः समुत्तिष्ठन्ति, तेन पितृलोकेन सम्पन्नो महीयते — छांदो. ८।२।१

स यदिमानि भूतानि सर्वाणि भूतानि पादि तस्मात्पदम् — १ऐत. २।२।९

स यदि विचिकित्सेत्स णकारं ब्रवाणी३ँ अणकारा३ँ इति — ३ ऐत. २।६।२

स यदि स्त्रियं पश्येत्समृद्धं कर्मेति विद्यात् — छांदो. ५।२।८

स यदि ह वा अपि मृषा वदति सत्यं हैवास्योदितं भवति — १ ऐत. १।५।३

स यदेभ्यः सर्वेभ्यो भूतेभ्योऽर्चत, तस्मादृक् — १ ऐत. २।२।७

स यदेभ्यः सर्वेभ्योऽर्वेभ्योऽर्चत तस्मादर्धर्चः — १ ऐत. २।२।८

स यदेभ्यः सर्वेभ्यो भूतेभ्यः क्षरति, न चैनमतिक्षरन्ति — १ ऐत. २।२।१०

स यदेवंविदस्माल्लोकात्प्रैत्यथैभिरेव प्राणैः सह पुत्रमाविशति — बृह. १।५।१७

स यदैतत्सर्वमपेक्षते तदैतत्सर्वमस्मिन्प्रविशति — नृसिंहो. ७।६

स यदोत्क्रमिष्यन् भवति, नैनं घोष९ शृणोति [बृह. ५।९।१+ — मैत्रा. २।८

स यद्धैनच्चक्षुषाऽग्रहैष्यद्दृष्ट्वा हैवान्नमत्रप्स्यत् — २ ऐत. ३।५

स यद्धैनच्छिश्नेनाग्रहैष्यद्विसृज्य हैवान्नमत्रप्स्यत् — २ ऐत. ३।९

स यद्धैनच्छ्रोत्रेणाग्रहैष्यच्छ्रुत्वा हैवान्नमत्रप्स्यत् — २ ऐत. ३।६

स यद्धैनत्त्वचाऽग्रहैष्यत्स्पृष्ट्वा हैवान्नमत्रप्स्यत् — २ ऐत. ३।७

स यद्धैनत्प्राणेनाग्रहैष्यदभिप्राण्य हैवान्नमत्रप्स्यत् — २ ऐत. ३।४

स यद्धैनद्वाचाऽग्रहैष्यदभिव्याहृत्य हैवान्नमत्रप्स्यत् — २ ऐत. ३।३

स यद्धैनन्मनसाऽग्रहैष्यद्ध्यात्वा हैवान्नमत्रप्स्यत् — २ ऐत. ३।८

स यद्यगदः स्यात् पुत्रस्यैश्वर्ये पिता वसेत् — कौ. उ. २।१५

स यद्यदेवासृजत तत्तदत्तुमध्रियत — बृह. १।२।५

स यद्यनुरुद्ध्यते तद्भवति — निरुक्तो. १

स यद्यनेन किञ्चिदक्ष्णया कृतं भवति तस्मादेन९ सर्वस्मात्पुत्रो मुञ्चति — बृह. १।५।१७

स यद्येकमात्रमभिध्यायीत स तेनैव संवेदितस्तूर्णमेव जगत्यामभिसम्पद्यते — प्रश्नो. ५।३

स यद्येतेषां (स्वप्ने) किञ्चित् पश्येत् , उपोष्य पायसं स्थालीपाकं श्रपयित्वा रात्रिसूक्तेन प्रत्यृचं हुत्वाऽन्येनान्नेन ब्राह्मणान्भोजयित्वा चरुं स्वयं प्राश्नीयात् — ३ ऐत. २।४।७

स यश्चन्द्रमसो देवानां भूर्भुवःस्वरादीनां सर्वेषां लोकानां च — भस्मजा. २।५

स यश्च सङ्क्रामत्येकपञ्चाशत् — तैत्ति. २।१०

स यश्चायमशरीरः प्रज्ञात्मा यश्चासावादित्य एकमेवतदिति — ३ ऐत. २।३।२

स यश्चायं पुरुषे । यश्चासावादित्ये स एकः [तैत्ति. — २।८+३।१०।४

स यश्चित्तं ब्रह्मेत्युपास्ते चित्तान्वै स लोकान्ध्रुवान्ध्रुवः प्रतिष्ठितान् प्रतिष्ठितोऽव्यथमानानव्यथमानोऽभिसिद्ध्यति — छांदो. ७।५।३

स यस्तान् पुरुषान्निरुह्य प्रत्यूह्य (मा. पा.) — बृह. ३।९।२६

स यस्तान्पुरुषान्निरुह्य प्रत्युह्यात्यक्रामत् — बृह. ३।९।२६

स यस्तं न विद्यात्कथं कुर्यादथ विद्वान्कुर्यात् — छांदो. २।२४।२

स यः सङ्कल्पं ब्रह्मेत्युपास्ते क्लृप्तान्वै स लोकान्ध्रुवान्ध्रुवः प्रतिष्ठितान् प्रतिष्ठितोऽव्यथमानानव्यथमानोऽभिसिद्ध्यति — छांदो. ७।४।३

स यः स पाप्मा — बृह. १।३।२

स यः स्मरं ब्रह्मेत्युपास्ते यावत् स्मरस्य गतं तत्रास्य यथाकामचारो भवति — छांदो. ७।१३।२

स यः कामयेत महत्प्राप्नुयामित्युदगयन आपूर्यमाणपक्षस्य पुण्याहे...पु९सा नक्षत्रेण मन्थ९ संनीय जुहोति — बृह. ६।३।१

स यः कामयते महत्प्राप्नुयां(मा.पा.) — बृह. ६।३।१

स याति परमां गतिम् — भ. गी. ८।१३

स यामिच्छेत्कामयेत मेति... — बृह. ६।४।९

स यामेवामु९ सावित्रीमन्वाहैषैव स यस्मा अन्वाहतस्य प्राणा९स्त्रायते — बृह. ५।१४।४

स यावतीयं त्रयी विद्या तावद्ध जयति — बृह. ५।१४।५

स यावत्क्षिप्येन्मनस्तावदादित्यं गच्छति — छांदो. ८।६।५

स यावदप्येतेषामेकैकं न प्राप्नोत्यकृत्स्न एव तावन्मन्यते — बृह. १।४।१७

स यावदस्माच्छरीरादनुत्क्रान्तो भवति तावज्जानाति — छांदो. ८।६।४

स यावदादित्य उत्तरत उदेता दक्षिणतोऽस्तमेता छांदो. ३।१०।४
स यावदादित्यः पश्चादुदेता पुरस्तादस्तमेता छांदो. ३।९।४
स यावदादित्यः पुरस्तादुदेता पश्चादस्तमेता [छांदो. ३।६।४+७।४
स यावदादित्यो दक्षिणत उदेतोत्तरतोऽस्तमेता छांदो. ३।८।४
स यावदिदं प्राणि तावद्ध जयति बृह. ५।१४।३
स यावदेषु त्रिषुलोकेषु तावद्ध जयति बृह. ५।१४।१
स यावद्ध वा इन्द्र एतमात्मानं न विजज्ञेतावदेनमसुरा अभिबभूवुः कौ. त. ४।२०
स यावन्मनसोगतंतत्रास्य..(मा.पा.) छां. उ. ७।३।२
स यावान् ह वै वाजपेयेन यजमानस्य लोको भवति तावानस्य लोको भवति बृह. ६।४।३
स यां प्रथमामाहुतिं जुहुयात्तां जुहुयात्प्राणाय स्वाहेति प्राणस्तृप्यति छांदो. ५।१९।१
स युक्तः कृत्स्नकर्मकृत् भ. गी. ४।१८
स युक्तः स सुखी नरः भ. गी. ५।२३
स येन यज्ञक्रतुना याजयेत्सोऽरण्यं परेत्य शुचौ देशे स्वाध्यायमेवैनमधीयन्नासीत् सहवै. २१
स योगी परमो मतः भ. गी. ६।३२
स योगी ब्रह्मनिर्वाणं भ. गी. ५।२४
स योगी मयि वर्तते भ. गी. ६।३१
स योत एकैकमुपास्ते न स वेद बृह. १।४।७
स योऽतोऽश्रुतोऽगतोऽमतोऽनतोऽदृष्टोऽविज्ञातोऽनादिष्टः श्रोता मन्ता द्रष्टा देष्टा घोष्टा विज्ञाता प्रज्ञाता सर्वेषां भूतानामन्तरपुरुषः स म आत्मेति विद्यात् ३ ऐत. २।४।८
स यो ध्यानं ब्रह्मेत्युपास्ते यावद्ध्यानस्य गतं तत्रास्य यथाकामचारो भवति छांदो. ७।६।२
स यो नाम ब्रह्मेत्युपास्ते यावन्नाम्नो गतं तत्रास्य यथाकामचारो भवति छांदो. ७।१।५

स योऽन्नं ब्रह्मेत्युपास्तेऽन्नवतो वै स लोकान्पानवतोऽभिसिद्ध्यति छांदो. ७।९।२
स योऽन्यमात्मनः प्रियं ब्रुवाणं ब्रूयात्प्रियꣳ रोत्स्यतीश्वरः बृह. १।४।८
स योऽपो ब्रह्मेत्युपास्ते आप्नोति सर्वान्कामाꣳ स्तृप्तिमान्भवति छांदो. ७।१०।२
स यो बलं ब्रह्मेत्युपास्ते यावद्बलस्य गतं तत्रास्य यथाकामचारो भवति छांदो. ७।८।२
स यो म आयुरमृतमित्युपास्ते सर्वमायुरस्मिँल्लोक एत्याप्नोति कौ. त. ३।२
स यो मनुष्याणाꣳ राद्धः समृद्धो भवत्यन्येषामधिपतिः बृह. ४।३।३३
स यो मनो ब्रह्मेत्युपास्ते यावन्मनसो गतं तत्रास्य यथाकामचारो भवति छांदो. ७।३।२
स यो मां विजानीयान्नास्य केन च कर्मणा लोको मीयते कौ. त. ३।१
स यो वाचं ब्रह्मेत्युपास्ते यावद्वाचो गतं तत्रास्य यथाकामचारो भवति छांदो. ७।२।२
स यो विज्ञानं ब्रह्मेत्युपास्ते विज्ञानवतो वै स लोकाञ्ज्ञानवतोऽभिसिद्ध्यति छांदो. ७।७।२
स यो ह वै तदच्छायमशरीरमलोहितं शुभ्रमक्षरं वेदयते यस्तु सोम्य स सर्वज्ञः सर्वो भवति प्रश्नो. ४।१०
स यो ह वैतद्भगवन्मनुष्येषु प्राणान्तमोङ्कारमभिध्यायीत प्रश्नो. ५।१
स योऽस्य प्राङ्सुषिः स प्राणस्तच्चक्षुः स आदित्यस्तत्तेजोऽन्नाद्यमित्युपासीत छांदो. ३।१३।१
स यो हवै परमंब्रह्मवेद ब्रह्मैवभवति मुण्ड. ३।२।९
स यो ह वै मनुष्याणां राद्धः समृद्धो भवति.— (मा. पा.) बृह. ४।३।३३
स यो ह वै तत्परमं ब्रह्म यो वेद वै मुनिः रुद्रहृ. ५२
स यो ह वै सावित्रस्याष्टाक्षरं पदं श्रियाभिषिक्तंतत्साम्नोऽङ्गं वेद श्रिया हैवाभिषिच्यते नृ. पू. ९।३

स यो हैतमेवमुपास्त एतेषां सर्वेषामात्मा भवति	कौ.त.४।१६।१७
स यो हैतमेवमुपास्ते जिष्णुर्ह वाऽपराजिष्णुरन्यतस्तज्ज्यायान् भवति	कौ. त. ४।७
स यो हैतमेवमुपास्तेऽतिष्ठाः सर्वेषां भूतानां मूर्धा भवति	कौ. त. ४।२
स यो हैतमेवमुपास्ते तेजस आत्मा भवति	कौ. त. ४।४
स योहैतमेवमुपास्तेनाम्नआत्माभवति	कौ. त. ४।९
स यो हैतमेवमुपास्तेऽन्नस्यात्माभवति	कौ. त. ४।३
स यो हैतमेवमुपास्ते पूर्यते प्रजया पशुभिर्नो एव स्वयं नास्य प्रजा पुरा कालात्प्रवर्तते	कौ. त. ४।६
स यो हैतमेवमुपास्ते प्रतिरूपो हैवास्य प्रजायामाजायते नाप्रतिरूपः	कौ. त. ४।१०
स यो हैतमेवमुपास्ते प्रजायते प्रजया पशुभिः	कौ. त. ४।१४
स यो हैतमेवमुपास्ते विन्दते द्वितीयाद्द्वितीयवान्भवति	कौ. त. ४।११
स यो हैतमेवमुपास्ते विषासहिर्वा एष भवति	कौ. त. ४।८
स यो हैतमेवमुपास्ते सर्वं हास्मा इदं श्रैष्ठ्याय यम्यते	कौ. त. ४।१५
स यो हैतमेवमुपास्ते नो एव स्वयं नास्य प्रजा पुरा कालात्सम्मोहमेति (कालात्प्रमीयते)	कौ.त.४।१२,१३
स यो हैतं महद्यक्षं प्रथमजं वेद सत्यं ब्रह्मेति	बृह. ५।४।१
स यो हैतानन्तवत उपास्तेऽन्तवन्त॰ स लोकं जयति	बृह. १।५।१३
(अथ) स यो हैताननन्तानुपास्तेऽनन्त॰ स लोकं जयति	बृह. १।५।१३
स यो हैतामवरपरां संहितां वेद	३ ऐत. १।६।३
स यो हैतां दैवीं वीणां वेद श्रुतवदनो भवति	३ ऐत. २।५।३
स यो हैतौ णकारषकारावनुसंहितमृचो वेद सबलां सप्राणां संहितां वेदायुष्यमिति विद्यात्	३ ऐत. २।६।१
सरसामस्मि सागरः	भ.गी. १०।२४
सरसा॰ सपिष्टान् गन्धार मम चित्ते रमन्तु स्वाहा	महाना. १४।५
सरस्वती कुहूश्चैव सुषुम्नापार्श्वयोः स्थिते । गान्धारा हस्तिजिह्वा च इडायाः पृष्ठपार्श्वयोः	जा. द. ४।१४
सरस्वती तथा चोर्ध्वगता जिह्वा तथा मुने । हस्तिजिह्वा तथा सव्यपादाङ्गुष्ठान्तमिष्यते	जा. द. ४।२१
सरस्वती तु या नाडी सा जिह्वान्तं प्रसर्पति	यो. शि. ५।२३
सरस्वती रत्नरूपं च दुर्गा हैमं लिङ्गं पूजयामास भक्त्या	सि. शि. २५
सरस्वत्याः सर्वे वेदा अभवन्	गायत्रीर. १
सराणां सप्तकं वापि बिभृयात् कण्ठदेशतः । मुकुटे कुण्डले चैव कर्णिकाहारकेऽपि वा	रु. जा. १८
स रात्रिभिरेवा च पूर्यते अप च क्षीयते	बृह. १।५।१४
स राम इति लोकेषु विद्वद्भिः प्रकटीकृतः	रा. पू. ता. १।२
स रावण इति ख्यातो यद्वा रावाच्च रावणः	रा.पू.ता. ४।१८
स-रि-ग-म-प-ध-नि-स-संज्ञै-र्वैराग्यबोधकरैः...परमहंसाश्रमेणास्खलितस्वस्वरूपध्यानेन देहत्यागंकरोति समुक्तोभवति	ना. प. ३।१
सरूपोऽसौ मनोनाशो जीवन्मुक्तस्य विद्यते	अ. पू. ४।१८
स रौद्र॰ सामाभिगायति	छांदो. २।२४।७
सर्गाणामादिरन्तश्च	भ. गी. १०।३२
सर्गादिकाले भगवान् विरिञ्चिरुपास्यैनं सर्गसामर्थ्यमाप्य । तुतोष चित्ते वाञ्छितार्थांश्च लब्ध्वा धन्यः सोपास्यैपासको भवति धाता	द. मू. २२

सर्गेऽपि नोपजायन्ते — भ. गी. १४।२

सर्गे यान्ति परन्तप — भ. गी. ७।२७

सर्प इति सर्पविदः (उपासते) — मुद्गलो. ३।२

सर्पत्वेन यथा रज्जू रजतत्वेन शुक्तिका। विनिर्णीता विमूढेन देहत्वेन तथाऽऽत्मता — यो. शि. ४।२२

सर्पा गन्धर्वाः पितरस्तन्निधनमेतत्साम सर्वस्मिन्प्रोतम् — छांदो. २।२१।१

सर्पाणामस्मि वासुकिः — भ. गी. १०।२८

सर्पादौ रज्जुसत्तेव ब्रह्मसत्तैव केवलम्। प्रपञ्चाधाररूपेण वर्ततेऽतो जगन्नहि — आ. प्र. १३

सर्व आत्मा जायते पुरुषोत्तमात् — सि. वि. २

सर्व इन्मामुपयन्ति विश्वतः — बा. मं. २०

सर्व ऊष्माणः प्रजापतेरात्मनः — छांदो. २।२२।३

सर्व एते पुण्यलोका भवन्ति — छांदो. २।२३।१

सर्व एते विष्णुलिङ्गिनः शिखिन उपवीतिनः शुद्धचित्ताः... पुण्यश्लोका भवन्ति — शाट्याय. ११

सर्व एव त आयुर्यन्ति — तैत्ति. २।३

सर्व एव महारथाः — भ.गी. १।६

सर्व एव विमुच्यन्ते ये नराः शिवमाश्रिताः — शिवो. १।३२

सर्वकरणानि मनसि सम्प्रतिष्ठाप्य ध्यानम् — अ. शिखो. ३

सर्वकरणोपसंहाराद्धार्यधारणा ब्रह्म तुरीयम् — अ. शिखो. ३

सर्वकर्ता च योगीन्द्रः स्वतन्त्रोऽनन्तरूपवान् — यो.शि. १।१५०

सर्वकर्मकृदप्यहम् — मैत्रे. ३।१५

सर्वकर्मनिराकरणमावाहनम् [मं. ब्रा. २।५+ — अ. पू. १

सर्वकर्मपरित्यागी नित्यतृप्तो निराश्रयः। न पुण्येन न पापेन नेतरेण च लिप्यते — अ. पू. ५।९७

सर्वकर्मफलत्यागं [भ.गी.१२।११ +१८।२

सर्वकर्मफलादीनां मनसैव न कर्मणा। निपुणो यः परित्यागी सोऽसंन्यस्त इति स्मृतः — अ. पू. २।६

सर्वकर्मविनिर्मुक्तः काम-क्रोध-लोभ-मोह-मद-मात्सर्यादिकं दग्ध्वा त्रिगुणातीतः...स्थिरमतिर्नानृतवादी गिरिकन्दरेषु वसेत् — ना. प. ७।२

सर्वकर्माणि मनसा — भ. गी. ५।१३

सर्वकर्माण्यपि सदा — भ.गी. १८।५६

सर्वकर्मा सर्वकामः सर्वगन्धः सर्वरसः सर्वमिदमभ्यात्तः — छांदो. ३।१४।४

सर्वकारणकार्यात्मा कार्यकारणवर्जितः — ते. बिं. ५।१

सर्वकारणं परं ब्रह्म — मं. ब्रा. ३।१

सर्वकालं हंसं प्रकाशकम् — पा. ब्र. ४

सर्वकालाबाधितं ब्रह्म — त्रि.म.ना. १।२

सर्वक्षेत्रेषु भारत — भ. गी. १३।३

सर्वगं सच्चिदात्मानं ज्ञानचक्षुर्निरीक्षते। अज्ञानचक्षुर्नेक्षेत भास्वन्तं भानुमन्धवत् — वराहो. २।१८

सर्वगः सर्वसम्बन्धो गत्यभावान्न गच्छति। नास्त्यसावाश्रयाभावात्सद्रूपत्वादथास्ति च — महो. २।८

सर्वगुह्यतमं भूयः — भ. गी. १८।६

सर्वगो ह्येष ईश्वरः क्रियाज्ञानात्मा — नृसिंहो. ९।४४

सर्वचिन्तावधिर्गुरुः — ते. बिं. ५।१

सर्वचिन्तां परित्यज्य चिन्मात्रपरमो भव — शांडि. १।७।२०

सर्वचिन्तां परित्यज्य सावधानेन चेतसा। नाद एवानुसन्धेयो योगसाम्राज्यमिच्छता — वराहो. २।८३

सर्वचिन्तां समुत्सृज्य सर्वचेष्टाविवर्जितः। नादमेवानुसन्दध्यान्नादे चित्तं विलीयते — ना. बिं. ४१

सर्वजगदात्मत्वेन पश्यंस्त्यक्ताहङ्कारो ब्रह्माहमस्मीति चिन्तयन्निदं सर्वं यदयमात्मेति भावयन्कृतकृत्यो भवति — मं. ब्रा. २।८

सर्वजनविश्वजनशत्रुजनवश्यजनसर्वजनस्य दृशं लं लां श्रीं ह्लां ह्रीं मनः स्तम्भय स्तम्भय — लाङ्गूलो. ८

सर्वज्यानीं यास्यतीति विद्याद्य-
स्तथाऽधीते संहितो. १।२
सर्वज्वरोच्चाटनीं च सर्वमन्त्रप्रभञ्ज-
नीम् ।...मातङ्गीं मदिरामोदां
वन्दे तां जगदीश्वरीम् वनदु. २०
सर्वज्ञता हि सर्वत्र भवतीह
महाधियः अ. शां. ८९
सर्वज्ञत्वं परेशत्वं सर्वसम्पूर्ण-
शक्तिता । अनन्तशक्तिमत्त्वं
च मदनुस्मरणाद्भवेत् यो. शि. ३।२५
सर्वज्ञं महामायं महाविभूतिं नृसिंहो. ५।६
सर्वज्ञं सर्वगं शान्तं सर्वेषां हृदये
स्थितम् । सुसंवेद्यं गुरुमतात्
सुदुर्बोधमचेतसाम् यो. शि. ३।२०
सर्वज्ञः पञ्चकृत्यसम्पन्नः सर्वेश्वर
ईशः पशुपतिः जाबाल्यु. २
सर्वज्ञः सर्वेश्वरः सर्वभूतान्तरात्मा
सर्वभूताधिवासः सर्वभूतनि-
गूढो भूतयोनिर्योगैकगम्यः शांडि. २।१।४
सर्वज्ञानविमूढांस्तान् भ. गी. ३।३२
सर्वज्ञानानिव्याकरणमुद्रं(गायत्र्याः) सन्ध्यो. २३
सर्वज्ञानित्वतृप्त्यनादिबोधस्वतन्त्र-
नित्यमलुप्तानन्तं षट्कोणशक्तयः ना.पू.ता. ६।१
सर्वज्ञेशो मायालेशसमन्वितो
व्यष्टिदेशं प्रविश्य तया
मोहितो जीवत्वमगमत् पैङ्गलो. १।५
सर्वज्ञो मघोऽप्रमेयोऽनाद्यन्तः मैत्रा. ७।१
सर्वज्ञोऽसौ भवेत्कामरूपः पवन-
वेगवान् यो शि. १।१४८
सर्वतत्त्वमसद्विद्धि ह्यहं भूमा
सदाशिवः ते. बिं. ३।५१
सर्वतन्त्रेषु गोप्यमहाविद्या भवति मं. ब्रा. १।४
सर्वतः खल्वयं मुखवान्विश्व-
रूपत्वात् अव्यक्तो. ३
सर्वतः पाणिपादं तत्सर्वतोऽक्षि-
शिरोमुखम् । सर्वतः श्रुति-
मल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति
[श्वेताश्व. ३।१६+ भ.गी. १३।१४
सर्वतः पाणिपादान्ता सर्वतोऽक्षि-
शिरोमुखा । सर्वतः श्रुतिमत्येषा
सर्वमावृत्य तिष्ठति गुह्यका. ४८
सर्वतः श्रुतिमल्लोके भ. गी. १३।१४
सर्वतः सम्प्लुतोदके भ. गी. २।४६
सर्वतः स्वरूपमेवपश्यञ्जीवन्मुक्ति-
मवाप्य प्रारब्धप्रतिभासनाश-
पर्यन्तं चतुर्विधं स्वरूपं ज्ञात्वा
देहपतनपर्यन्तं स्वरूपा-
नुसन्धानेन वसेत् ना. प. ७।३
सर्वतीर्थस्वरूपोऽस्मि परमात्मा-
स्म्यहं शिवः मैत्रे. ३।१२
सर्वतेजःप्रकाशात्मा नादानन्द-
मयात्मकः ते. बिं. ५।३
सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम् भ. गी. १३।१४
सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात् गणप. ३
सर्वतोमुखत्वान्नृसिंहत्वाद्भीषण-
त्वाद्भद्रत्वात्...मनआदि-
साक्षिणमन्विच्छेत् नृसिंहो. ७।५
सर्वतो मुखमसर्वतोमुखं नृसिंह-
मनृसिंहं भीषणमभीषणं..
नृसिंहानुष्टुभैव बुबुधिरे नृसिंहो. ६।१
सर्वतोमुखमित्याह—सर्वतः खल्वयं
मुखवान् विश्वरूपत्वात् अव्यक्तो. ३
सर्वतोमुखं पञ्चमं स्थानं (जानीयात्) नृ. पू. २।३
सर्वतो वितता दृष्टिः प्रत्यग्भूता
शनैः शनैः अमनं. २।६३
सर्वत्र गतास्तोभावः सर्वत्रनिवृत्ताः
सर्वत्र प्रवृत्ताः संहितो. २।१
सर्वत्रगमचिन्त्यं च भ. गी. १२।३
सर्वत्र चतुर्थस्वरा मन्द्रस्वराश्च
प्रस्तावा चतुर्थमन्द्रातिस्वार्याश्च
स्वराश्च भवन्ति संहितो. २।२
सर्वत्र जडहीनात्मा सर्वेषा-
मन्तरात्मकः ते. बिं. ३।३४
सर्वत्र तृप्तिरूपोऽहं परामृत-
रसोऽस्म्यहम् ते. बिं. ३।३९
सर्वत्र दानप्रतिग्रहः सोमयाज्यपूतो
भवति संहितो. ५।१

सर्वत्रानिकेतः स्थिरमतिः...कटि-
सूत्रं च कौपीनं दण्डं वस्त्रं
कमण्डलुं सर्वमप्सु विसृज्याथ
जातरूपधरश्चरेदात्मान-
मन्विच्छेत् — ना. प. ३।८७
सर्वत्रनीरसमिह तिष्ठत्यात्मरसंमनः — अ. पू. २।९
सर्वत्र पुण्यापुण्यवर्जितः ज्ञानाज्ञान-
मपि विहाय...प्रणवात्मकत्वेन
देहत्यागं करोति यः सोऽवधूतः — तुरीया. ३
सर्वत्र भानुवन्मुमुक्षूणामाधारः
स्वयञ्ज्योतिर्ब्रह्माकाशः सर्वदा
विराजते — ना. प. ८।२३
सर्वत्र भावना गन्धः — मं. ब्रा. २।५
सर्वत्र युग्मकृत्या ब्राह्मणानर्चयेत् — ना. प. ४।३९
सर्वत्र रोहपूर्वेष्ववरोहपूर्वाण्यु-
दात्तेष्वनुदात्तान्यभिगीते-
ष्वनभिगीतानि — संहितो. २।१
सर्वत्र वर्तते जाग्रत्स्वप्नं जाग्रति
वर्तते । सुषुप्तं च तुरीयं च
नान्यावस्थासु कुत्रचित् — त्रि.ब्रा. १।२।१०
सर्वत्र विगतस्नेहो यः साक्षिवदव-
स्थितः । निरिच्छो वर्तते कार्ये
स जीवन्मुक्त उच्यते — महो. २।५१
सर्वत्र विचरेन्मौनी वायुवद्वीत-
कल्मषः । समदुःखसुखः क्षांतो
हस्तप्राप्तं च भक्षयेत् — ना. प. ५।४८
सर्वत्र विनामितप्रणामितेष्वविना-
मितेष्वविनामितान्यप्रणामितानि — संहितो. २।१
सर्वत्र विसर्गोपगृहेष्वविसृष्टान्यनुप-
गृहीतानि — संहितो. २।२
सर्वत्रशुभाशुभयोरनभिस्नेहः[तुरीया. ३+प. हं. ९
सर्वत्र समदर्शनः — भ. गी. ६।२९
सर्वत्र समबुद्धयः — भ. गी. १२।४
सर्वत्र सर्वतः सर्वब्रह्ममात्रावलो-
कनम् । सद्भावभावनादार्ढ्या-
द्वासनालयमश्नुते — अध्यात्मो. १३
सर्वत्र सुखवानहम् — ते. बिं. ३।३८
सर्वत्र सौक्ष्म्यं लुप्तेषु रेफसन्धयः — संहितो. २।१

सर्वत्र ह्रस्वकर्षणेषु दीर्घकर्षणानि
दीर्घकर्षणेषु मन्द्रकर्षणानि — संहितो. २।२
सर्वत्रान्तःपदार्थविवेचने
मनोयुक्ताभ्यास इष्यते — अद्वयता. ६
सर्वत्रावस्थितं शान्तं चिद्ब्रह्मे-
त्यनुभूयते — अ. पू. ५।२१
सर्वत्रावस्थितो देहे — भ. गी. १३।३३
सर्वत्राहमकर्तेति दृढभावनया-
ऽनया । परमामृतनाम्नी सा
समतैवावशिष्यते — महो. ६।२
सर्वथा वर्तमानोऽपि [भ.गी.६।३१+ १३।२३
सर्वदहनोऽयमात्मेत्याचक्षते — सुबालो. ९।१४
सर्वदा द्वैतरहित आनन्दरूपः
सर्वाधिष्ठानः...परं ब्रह्मानु-
सन्दध्यात् — नृसिंहो. २।८
सर्वदाऽनवच्छिन्नं परं ब्रह्म तस्मा-
ज्जाता परा शक्तिः स्वय-
ञ्जोतिरात्मिका — यो. चू. ७।२
सर्वदा पूर्णरूपोऽस्मि नित्यतृप्तो-
ऽस्म्यहं सदा — ते. बिं. ३।१५
सर्वदा मनोवाक्कायकर्मभिः सर्व-
संसारमुत्सृज्य प्रपञ्चावाङ्मुखः
स्वरूपानुसन्धानेन भ्रमरकीट-
न्यायेन मुक्तो भवति — ना. प. ५।९२
सर्वदा यमामनन्ति यन्नमस्यन्ति
देवाः स ब्रह्मा स शिवः — सूर्यता. १।२
सर्वदा शुचिरशुचिर्वा पठन्ब्राह्मणः
सलोकतां समीपतां सरूपतां
सायुज्यतामेति — कलिसं. ५
सर्वदा समरूपोऽस्मि शान्तोऽस्मि
पुरुषोत्तमः — मैत्रे. ३।२४
सर्वदा समस्तेन साम मां प्रति मां
प्रतीति सर्वेण समस्तेन साम — छांदो. २।९।१
सर्वदा सर्वशून्योऽहं सर्वात्मा-
ऽऽनन्दवानहम् — ते. बिं. ३।२७
सर्वदा सर्वसोम्येति प्रणवपूर्वकं
कमण्डलुं परिगृह्य...स्वाश्रमा-
चारपरो भवेत् — ना. प. ४।५०

सर्वदा सुलभोऽस्म्यहम् मैत्रे. ३।१५
सर्वदा ह्यजरूपोऽहं नीरागोऽस्मि
निरञ्जनः ते. बिं. ३।४२
सर्वदिव्यदेहमध्ये परमात्मा प्रकाशितः
विनिर्मुक्तभवसागरः स्वर्गे
देवमध्ये उत्तमस्वरूपस्य
बुद्धिप्रकाशः अस्मिन्मध्ये
मायामोहं परित्यजेत् अद्वैतो. ४
सर्वदुष्टप्रशमनं सर्वैश्वर्यफलप्रदम् ।
वामदेवं महाबोधदायकं
पावकात्मकम् पञ्चब्र. ५
सर्वद्वयविहीनोऽहं दृग्रूपो-
ऽस्म्यहमेव हि ते. बिं. ३।१९
सर्वदेवमयं ब्रह्म तथा प्रीणाति
विश्वभुक् गान्धर्वो. ७
सर्वदेवमयं शान्तं शान्त्यतीतं
स्वराद्बहिः पञ्चब्र. १५
सर्वदेवमयः सर्वप्रपञ्चाधारगर्भितः ।
सर्वाक्षरमयः कालः सदस-
द्व्यक्तिवर्जितः तुरीयो. ३
सर्वदेवस्य मध्यस्थो हंस एव
महेश्वरः ब्र. वि. ६२
सर्वदेवात्मकं रुद्रं नमस्कुर्यात्
पृथक्पृथक् । एभिर्मन्त्रपदैरेव
नमस्यामीशपार्वतीम् रुद्रहृ. २४
सर्वदेवात्मको रुद्रः सर्वे देवाः
शिवात्मकाः रुद्रहृ. ४
सर्वदेवात्मा वै स एकः गणेशो. ४।९
सर्वदेशिकवाक्योक्तिर्येन केनापि
निश्चितम् । दृश्यते जगति
यद्यत्सर्वं मिथ्येति निश्चिनु ते. बिं. ५।५४
सर्वदेशेष्वनुस्यूतः चतूरूपः
शिवात्मकः । यथा महाफले
सर्वे रसाः सर्वप्रवर्तकाः त्रि.ब्रा. १।२।११
सर्वदेहेषु लिङ्गधारणं भवति लिङ्गोप. २
सर्वदोषरहित आनन्दरूपः गणेशो. १।४
सर्वदोषैर्वृतो जीवः कथं ज्ञानेन
मुच्यते यो. शि. १।१६
सर्वद्रष्टा सर्वानुभूरहम् ब्र. वि. १।१०
सर्वद्वन्द्वैर्विनिर्मुक्तो ब्रह्मण्येवाव-
तिष्ठते ना. प. ३।५४
सर्वद्वाराणि संयम्य भ. गी. ८।१२
सर्वद्वारेषु देहेऽस्मिन् भ. गी. १४।११
सर्वधर्मान् परित्यज्य भ. गी. १८।६६
सर्वधर्मान्परित्यज्य निर्ममो
निरहङ्कारो भूत्वा ब्रह्मेष्टं
शरणमुपगम्य तत्त्वमसि...
इत्यादिमहावाक्यार्थानुभवज्ञाना-
द्ब्रह्मैवास्मीति निश्चित्य निर्वि-
कल्पसमाधिना स्वतन्त्रो यति-
श्चरति स सन्न्यासी निरा. ३२
सर्वध्यानयोगज्ञानानां यत्फल-
मोङ्कारः ब्र. शिखो. ३
सर्वनयनः प्रशस्तान्नमयो भूतात्मा
प्राणमय इन्द्रियात्मा सुबालो. ५।१५
सर्वनादमयः शिवः ते. बिं. ५।२
सर्वनिरामयपरिपूर्णोऽहमस्मीति
मुमुक्षूणां मोक्षैकसिद्धिर्भवति आत्मपू. १
सर्वपरिपूर्णतुरीयातीतब्रह्मभूतो
योगी भवति मं. ब्रा. २।९
सर्वपरिपूर्णं ब्रह्म त्रि. म. ना. १।३
सर्वपरिपूर्णानन्तचिन्मयस्तम्भाकारं
(ब्रह्म) त्रि.म.ना. ४।१
सर्वपरिपूर्णो नारायणस्त्वनया
निजया क्रीडति स्वेच्छया सदा त्रि.म.ना. ४।१०
सर्वपरिपूर्णोऽहमेव त्रि. म. ना. ८।६
सर्वपरोक्षा देवस॰ हिता भवति संहितो. १।१
सर्वपर्वसु यत्नेन ह्येषु सम्पूजये-
च्छिवम् शिवो. ७।७५
सर्वपापविशुद्धात्मा परंब्रह्माधि-
गच्छति । मासि मासि
कुशाग्रेण जलबिन्दुं च यः पिबेत् योगो. १७
सर्वपापैः प्रमुच्यते भ. गी. १०।३
सर्वपूर्णस्वरूपोऽस्मिसच्चिदानन्दलक्षणः मैत्रे. ३।१२
सर्वप्रकाशरूपोऽस्मि मैत्रे. ३।२१
सर्वप्रकाशरूपोऽहं परावरसुखो-
ऽस्म्यहम् ते. बिं. ३।१०
सर्वप्रत्यक्षाऽसुरसंहिता भवति संहितो. १।१

सर्वप्रपञ्चभ्रमवर्जितोऽसि, सर्वेषु भूतेषु च भासितोऽसि	ते. बिं. ५।६३
सर्वप्रयत्नेन कुर्याच्छ्राद्धं महालयम्	इतिहा. ९१
सर्वबन्धाः प्रविनश्यन्ति	त्रि. म. ना. ५।४
सर्वभावपदातीतं, ज्ञानरूपं निरञ्जनम्	यो. शि. १।७
सर्वभावान्तरस्थाय चैत्यमुक्त-चिदात्मने । प्रत्यक्चैतन्यरूपाय मह्यमेव नमोनमः	१सं. सो. २।२५
सर्वभावेन भारत [भ. गी. १५।१९	+१८।६२
सर्वभूतस्थमात्मानं	भ. गी. ६।२९
सर्वभूतमसत्सदा	ते. बिं. ३।१
सर्वभूतातिगश्चात्मा	२रुद्रो. ५२
सर्वभूतस्थमात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि । सम्पश्यन्ब्रह्म परमं याति नान्येन हेतुना	कैव. १०
सर्वभूतस्थमेकं (वै) नारायणं कारणपुरुषमकारणं परं ब्रह्मो [आ. प्र. १+	नारा. ४
सर्वभूतस्थितं देवं सर्वेशं नित्यमर्चयेत्	ब्र. वि. ७७
सर्वभूतस्थितं यो मां	भ. गी. ६।३१
सर्वभूतहितः शान्तस्त्रिदण्डी सकमण्डलुः । एकारामः परिव्रज्य भिक्षार्थी ग्राममाविशेत्	ना. प. ३।५५
सर्वभूतहिते रताः [भ.गी.५।२५+	१२।४
सर्वभूतातिगश्चात्मा कोशातीतः परात्परः	२रुद्रो. ५२
सर्वभूतात्मभूतात्मा	भ. गी. ५।७
सर्वभूतात्मभूतो हि वासुदेवो महाबलः	ना. महो. २२
सर्वभूताधिवासं च यद्भूतेषु वसत्यधि	ब्र. बिं. २२
सर्वभूताधिवासः सर्वभूतनिगूढो भूतयोनिर्योगैकगम्यः	शांडि. २।४
सर्वभूताधिवासोऽहं सर्वव्यापी स्वराडहम्	ब्र. बिं. १०६
सर्वभूतानां माता मेदिनी	महाना. १०।१४
सर्वभूतान्तरस्थाय नित्यमुक्त-चिदात्मने । प्रत्यक्चैतन्यरूपाय मह्यमेव नमोनमः	वराहो. २।३३
सर्वभूतान्तरात्माऽहमहमस्मि सनातनः	ब्र. बिं. १०९
सर्वभूतान्तर्वर्ती हंस इति प्रतिपादनम्	निर्वाणो. १
सर्वभूतानि कौन्तेय	भ. गी. ९।७
सर्वभूतानि चात्मनि	भ. गी. ६।२९
सर्वभूतानि सम्मोहं	भ. गी. ७।२७
सर्वभूताशयस्थितः	भ. गी. १०।२०
सर्वभूतेभ्योऽभयं दत्त्वाऽरण्यं गत्वा...स्वाच्छरीरादुपलभ्यै-तैनम् (आत्मानम्)	मैत्रा. ६।८
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते । यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति	ईशा. ६
सर्वभूतेषुचात्मानं ब्रह्म सम्पद्यतेतदा	जा. द. १२।१०
सर्वभूतेषु येनैकं	भ. गी. १८।२०
सर्वमग्राह्यभावेन हेतुनाजं प्रकाशते	अद्वैत. २६
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ-साधिके । शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते	वनदु. १५,९१
सर्वमजीजनत् (दैवी शक्तिर्माया)	बह्वृचो. १
सर्वमनुष्टुप् । एतं मन्त्रराजं यः पश्यति, स पश्यति	ग. पू. ३।६
सर्वमन्तः परित्यज्य शीतलाशय-वर्ति यत् । वृत्तिस्थमपि तच्चित्तमसद्रूपमुदाहृतम्	अ. पू. ४।५१
सर्वमन्त्रान् समुत्सृज्य एतं (अहं ब्रह्मास्मि) मन्त्रं समभ्यसेत् । सद्यो मोक्षमवाप्नोति नात्र सन्देहमणवपि	ते. बिं. ३।७४
सर्वमन्यत्परित्यज्य समस्तार्थव-शिखैतामधीत्य द्विजो गर्भवासा-द्विमुक्तो विमुच्यते	अ. शिखो. ३
सर्वमयस्तद्यदेतदिदम्मयोऽदोमय इति यथाकारी यथाचारी तथा भवति	बृह. ४।४।५

सर्वमस्तीति नास्तीति निश्चयं त्यक्त्वा तिष्ठति — ते. बिं. ४।३९
सर्वमस्मीत्युपासीत, तद्व्रतम् — छांदो. २।२१।४
सर्वमस्यान्नं भवति य एवमेतददितेरदितित्वं वेद — बृह. १।२।५
सर्वमस्यान्नं भवति य एवं वेद — बृह. २।२।४
सर्वमहोरात्राभ्यामभिपन्नम् — बृह. ३।१।४
सर्वमाकाशतामेति नित्यमन्तर्मुखस्थितेः — अ. पू. १।३२
सर्वमात्ममयं जगत् — ते. बिं. ६।४६
सर्वमात्मा जानीत — मैत्रा. ६।७
सर्वमात्मानं पश्यति नैनं पाप्मा तरति — बृह. ४।४।२३
सर्वमात्माऽहमात्माऽस्मि परमात्मा परात्मकः। नित्यानन्दस्वरूपात्मा वैदेही मुक्त एव सः — ते. बिं. ४।६२
सर्वमात्मेदमत्राहं किं वाञ्छामि त्यजामि किम् — अ. पू. २।३
सर्वमात्मेदमाततम्। अहमन्य इदं चान्यदिति भ्रांतिं त्यजानघ — महो. ६।१२
सर्वमात्मैव कौ दृष्टौ भावाभावौ क्व वा स्थितौ — अ. पू. २।३६
सर्वमात्मैव शुद्धात्मा सर्वं चिन्मात्रमद्वयम् — ते. बिं. ६।३९
सर्वमायुरस्मिँल्लोक एवाप्नोति — कौ. त. ३।२
सर्वमायुरेति [३ ऐत. १।१।३+ १।५।१ [आर्षे.४।३+६।२,३+८।२,४+ — गोपीचं. ८
सर्वमायुरेति ज्योग्जीवति महान् प्रजया पशुभिर्भवति महान् कीर्त्या.. [छांदो. २।११।२+ — २।१२।२।
सर्वमावृत्य तिष्ठति — भ.गी. १३।१४
सर्वमित्याकाशे, तत्प्रतिष्ठेत्युपासीत — तैत्ति. ३।१०।३
सर्वमिदमभ्यात्तोऽवाक्यनादरः — छां. ३।१४।२,३
सर्वमिदं तस्त्वदितो वदामि — बा. मं. २१
सर्वमिदं प्रशास्ति, यदिदं किञ्च — बृह. ५।६।१
सर्वमिदं रक्षति (माया) सर्वमिदं संहरति [नृ. पू. ३।२+ — ग. पू. २।३
सर्वमिदं शिव एव विजानीहि... — त्रि. ब्रा. १।१
सर्वमु ह्येवैष रज उपर्युपरि तपति — बृह. ५।१४।३
सर्वमु ह्येष रज उपर्युपरि तपति — गायत्र्यु. २
सर्वमेकमजं शान्तमनन्तं ध्रुवमव्ययम्। पश्यन्भूतार्थचिद्रूपं शान्त आस्व यथासुखम् — अध्युप. ५
सर्वमेकमिदं शान्तमादिमध्यान्तवर्जितम्। भावाभावमजं सर्वमिति मत्वा सुखी भव — अ. पू. ५।६७
सर्वमेकं परं व्योम को मोक्षः कस्य बन्धता — अ. पू. २।३७
सर्वमेतत्सन्दहति एवंविद्यद्यपवहीव पापं करोति — गायत्र्यु. ९
सर्वमेतदृतं मन्ये — भ.गी. १०।१४
सर्वमेतद्धिया त्यक्त्वा यदि तिष्ठसि निश्चलः। तदाहङ्कारविलये त्वमेव परमं पदम् — अ. पू. ५।५४
सर्वमेतद्विश्वमधितिष्ठत्येको गुणांश्च सर्वान्विनियोजयेद्यः — श्वेताश्व. ५।५
सर्वमेव तत्सम्प्साय शुद्धः पूतोऽजरोऽमृतः संभवति — बृह. ५।१४।८
सर्वमेव परित्यज्य महामौनी भवानघ। निर्वाणवान्निर्मननः क्षीणचित्तः प्रशान्तधीः — अ. पू. ५।११४
सर्वमोङ्कार एव — माण्डू. १
सर्वमौनफलोऽस्म्यहम् — मैत्रे. ३।१६
सर्वयोनिषु कौन्तेय — भ. गी. १४।४
सर्वरोगनिवृत्तिः स्यान्नाभिमध्ये तु धारणात् — जा. द. ६।२४
सर्वलिङ्गं स्थापयति पाणिमन्त्रं पवित्रम् — लिङ्गोप. १
सर्वलोकगुरुश्चास्मि सर्वलोकेऽस्मि सोऽस्म्यहम् — मैत्रे. ३।१
सर्वलोकमध्ये ब्रह्म द्विधारूपं विचरति — अद्वैतो. १
सर्वलोकमहेश्वरम् — भ. गी. ५।२९
सर्वलोकस्तुतिपात्रः सर्वदेशसञ्चारशीलः...जीवन्मुक्तो भवति — मं. ब्रा. २।९
सर्वलोका आत्मनि ब्रह्मणि मणय इवोताश्च प्रोताश्चेति — सुबालो. १०।१
सर्वलोकात्मकः कस्मादनुतिष्ठामि किं कथम् — १ वराह. १२

सर्वलोकानां सृष्टिस्थित्यन्तकृद्वि- भुरीशः कथं जीवत्वमगमदिति	पैङ्गलो. २।१
सर्वलोकेषु विहरन्नणिमादिगुणा- न्वितः। कदाचित्स्वेच्छया देवो भूत्वा स्वर्गे महीयते	१ यो.त. १०९
सर्ववर्णे महादेवि सन्ध्याविधे सरस्वति	महाना. ११।६
सर्ववर्णेषु धारणं कैलाससिद्धिर्भवति	लिङ्गोप. २
सर्ववस्तुन्युदासीनभाव- (आसनमुच्यते) मासन- मुत्तमम् [त्रि. ब्रा. २।२९+	२ अवधू. २
सर्ववस्तुपरित्यागे शेष आत्मेति कथ्यते	अ. पू. १।४५
सर्ववाचोऽवधिर्ब्रह्म सर्वचिन्ता- वधिर्गुरुः	ते. बिं. ५।१
सर्ववाच्यवस्तु प्रणवात्मकम्	अ. शिखो. १
सर्वविघ्नहरश्चायं प्रणवः सर्वदोषहा	वराहो. ५।७१
सर्वविघ्नहरो मन्त्रः प्रणवः सर्वदोषहा	१ यो. त. ६४
सर्वविद्यारूपोविघसःप्रसरणः(आत्मा)	आर्षे. ९।२
सर्वविद्यापाण्डित्यप्रपञ्चं भस्मीकृत्य स्वरूपं गोपयित्वा..प्रणवात्मक- त्वेन देहत्यागं करोति यः सोऽवधूतः	तुरीया. ३
सर्वविषयपराङ्मुखत्वं प्रत्याहारः	शांडि. १।८।१
सर्ववेदान्ततृप्तोऽस्मि सर्वदा सुलभोऽस्म्यहम्	मैत्रे. ३।१५
सर्ववेदवेदान्तानां नारायणपरब्रह्म- ण्येव तात्पर्यम्	ना.पू.ता. ५।११
सर्ववेदसं वा एतत्सर्वं	महाना. १८।१
सर्ववेदान्तसंलक्ष्यं तद्ब्रह्मेत्य- भिधीयते	ना.उ.ता. १।९
सर्ववेद्यः सर्वज्ञः सर्वसिद्धिदः सर्वेश्वरः सोऽहम्	ना. प. ९।१२
सर्वव्यापिनमात्मानं क्षीरे सर्पिरि- वार्पितम् [श्वेताश्व. १।१६+	ब्रह्मो. २३
सर्वव्यापिनमोङ्कारं मत्वा धीरो न शोचति	आगम. २८
सर्वव्यापी स भगवाँस्तस्मात् सर्वगतः शिवः	श्वेताश्व. ३।११
सर्वव्यापी सर्वभूतानां हृदये सन्निविष्टः मायावी मायया क्रीडति	शांडि. ३।१।३
सर्वव्यापी सर्वभूतान्तरात्मा [श्वेता. ६।११+	गोपालो. ३।१९
सर्वव्यापी सोऽचिन्त्यो निर्वर्ण्यश्च पुनात्यशुद्धान्यपूतानि	१ आत्मो. ३
सर्वशक्तेर्महेशस्य विलासो हि मनो भवेत्। संयमासंयमाभ्यां च संसारः शान्तिमन्वगात्	महो. ४।८७
[उपास्य इति च] सर्वशरीरस्थ- चैतन्यब्रह्मप्रापको गुरुरुपास्यः	निरा. उ. २३
सर्वशरीरिणां जीवस्यैकरूपत्वात्। तस्माज्ञ जीवो ब्राह्मणः	व. सू. ३
सर्वशरीरेषु चैतन्यैकतानताध्यानम्	मं. ब्रा. १।१
सर्वशः पृथिवीपते	भ. गी. १।१८
सर्वशून्यस्वरूपोऽहं सकला- गमगोचरः	ते. बिं. ३।४०
सर्वश्रुत्युत्तमो मृग्यः सकलोप- निषन्मयः	ना. प. ८।६
सर्वसङ्कल्परहितःसर्वनादमयः शिवः	ते. बिं. ५।२
सर्वसङ्कल्परहिता सर्वसंज्ञाविव- र्जिता। सैषा चिदविनाशात्मा स्वात्मेत्यादिकृताभिधा	महो. ५।१०७
सर्वसङ्कल्पशून्यत्वात्सर्वकार्यवि- वर्जनात्। केवलं ब्रह्ममात्र- त्वान्नास्त्यनात्मेति निश्चिनु	ते. बिं. ५।१६
सर्वसङ्कल्पसन्यासश्चेतसा यत्परिग्रहः	महो. २।९
सर्वसङ्कल्पसन्यासी	भ. गी. ६।४
सर्वसङ्कल्पसंशान्तं प्रशान्त- घनवासनम्। न किञ्चिद्भा- वनाकारं यत्तद्ब्रह्म परं विदुः	अ. पू. ५।४८
सर्वसङ्कल्पहीनात्मा चिन्मात्रो- ऽस्मीति सर्वदा	ते. बिं. ४।४४
सर्वसङ्कल्पहीनात्मा वैदेही मुक्त एव सः। निष्कलात्मानिर्म- लात्मा बुद्धात्मा पुरुषात्मकः	ते. बिं. ४।६८

सर्वसंक्षोभिण्यादिचतुर्दशारगा देवताः — भावनो. ४
सर्वसङ्गनिवृत्तात्मा स मामेति न संशयः — वराहो. २।३६
सर्वसन्तोषो विसर्जनम् — मं. ब्रा. २।५
सर्वसन्धिस्थ उदानः — शांडि. १।४।७
सर्वसंसारदुःखानां तृष्णैका दीर्घदुःखदा । अन्तःपुरस्थमपि या योजयत्यतिसङ्कटे — महो. ३।२५
सर्वसंसारेषु विरक्तो ब्रह्मचारी गृही वानप्रस्थो वा...तदु तथा न कुर्यात् — प. हं. प. २
सर्वसंहारसमर्थः परिभवासहः प्रभुर्व्याप्तः...निरस्ताविद्या-तमोमोहोऽहमेवेति — नृसिंहो. २।८
सर्वसाक्षिणमात्मानं वर्णाश्रमवि-वर्जितम् । ब्रह्मरूपतया पश्यन्ब्रह्मैव भवति स्वयम् — वराहो. २।१२
सर्वसारं निरालम्बं रहस्यं वज्रसूचिकम् — मुक्तिको. १।३३
सर्वसिद्धिप्रदा देव्यो बहिर्दशारगा देवताः — भावनो. ४
सर्वसौख्यैरुपास्यमानो न च सर्व-सौख्यान्युपास्यति — सुबालो. ५।१५
सर्वसौभाग्यदं नृणां सर्वकर्मफल-प्रदम् । ...अष्टाक्षरसमायुक्त-मष्टपत्रान्तरस्थितम् — पञ्चब्र. ९
(ततः) सर्वस्मादन्यो विलक्षण-श्चक्षुषः साक्षी — नृसिंहो. २।२
सर्वस्माद्व्यतिरिक्तोऽहं वालाग्राद-प्यहं तनुः । इति यः संविदो ब्रह्मन् द्वितीयाऽहंकृतिः शुभा — महो. ५।९०
सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टः — भ. गी. १५।१५
सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूपम् — भ. गी. ८।९
सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूपमादित्य-वर्णं परं ज्योतिस्तमस उपरि विभाति — त्रि.म.ना. ४।३
सर्वस्य धातारमचिन्त्यशक्ति सर्वागमान्तार्थविशेषवेद्यम् — ना. प. ९।१६
सर्वस्य प्रभुमीशानं सर्वस्य शरणं बृहत् — श्वेता. ३।१७
सर्वस्य प्रणवो ह्यादिर्मध्यमन्त-स्तथैव च — आगम. २७
सर्वस्य प्रभवाप्ययौ (आत्मा) — ना. प. ८।१७
सर्वस्य मेदोमांसक्लेदावकीर्णे शरीरमध्येऽत्यन्तोपहते चित्रभित्तिप्रतीकाशे गान्धर्व-नगरोपमे कदलीगर्भवन्निस्सारे जलबुद्बुदवच्चञ्चले निस्सृतं आत्मानं...पश्यन्ति विद्वांसः — सुबालो. ८।१
सर्वस्य वशी सर्वस्येशानः सर्वस्या-धिपतिः स न साधुना कर्मणा भूयान्नो एवासाधुना — बृह. ४।४।२२
सर्वस्य वशी सर्वस्येशानः सर्वमभिक्षिपन् — आर्षे. ९।२
सर्वस्यात्मनः परायणं यमात्थ — बृह. ३।९।१०
सर्वस्यात्मा भवति य एवं वेद — सुबालो. ९।१४
सर्वस्याऽऽत्मा सर्वभुक् — मैत्रा. ७।१
सर्वस्याभिमतं वक्ता चोदितः पेशलोक्तिमान् । आशयज्ञश्च भूतानां संसारे नावसीदति — महो. ६।६५
सर्वस्येशानः सर्वस्याऽऽन्तरान्तरः — मैत्रा. ७।१
सर्वस्यैतस्याप्ता भवति — बृह. १।२।५
सर्वस्यैतस्यैव कालस्य विभागविशेषाः प्रकाशरूपाः कालरूपा भवन्ति — सीतो. ७
सर्वं कर्माखिलं पार्थ — भ. गी. ४।३३
सर्वं कार्ष्णायसं ज्ञातं तदभिन्नं स्वभावतः — पञ्चब्र. ३१
सर्वं कारणवद्दुःखमस्वं चानित्य-मेव च । न चात्मकृतकं तद्धि तत्र चोत्पद्यते स्वता — आयुर्वे. २४
सर्वं किञ्चिदिदं दृश्यं दृश्यते य-(चि) ज्जगद्गतम् । चिन्नि-ष्पन्दांशमात्रं तन्ना(न्यदस्तीति-भावयम्)न्यत्किञ्चन शाश्वतम् [महो. ४।१०+ — अ. पू. १।४७
सर्वं खल्विदं ब्रह्म [निरा. ११+ — त्रि. म. ना. १।१, गान्धर्वो. ६

सर्वं खल्विदं ब्रह्म तज्जलानिति शान्त उपासीत छांदो. ३।१४।१
सर्वं च खल्विदं ब्रह्म नित्यचिद्घन-मक्षतम् महो. ४।११९
सर्वं च न परं शून्यं न परं नापरात्परम् । अचिंत्यमप्रबुद्धं च न सत्यं न परं विदुः तै. बिं. १।११
सर्वं च मयि पश्यति भ. गी. ६।३०
सर्वं च मे भूयात् चिरञ्जु. ७।४
सर्वं च सद्रूपमसत्यनाशात् वराहो. ३।४
सर्वं चाप्यहमेवेति निश्चयो यो महामते । समादाय विषादाय न भूयो जायते मतिः महो. ६।६०
सर्वं चिन्मात्रमद्वयम् तै. बिं. ६।३९
सर्वं चिन्मात्रमेव हि [तै.बिं.२।२५, २७–२९
सर्वं चेदं क्षयिष्णु पश्यामः मैत्रा. १।५
सर्वं चोदरपोषणस्य नटनं न श्रेयसः कारणम् अमन. १।६
सर्वं जगदानुष्टुभ एवोत्पन्नमनुष्टु-प्प्रतिष्ठितं प्रतितिष्ठति यश्चैवं वेद अन्यक्तो. ६
सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति गणप. ५
सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते गणप. ५
सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति गणप. ५
सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति गणप. ५
सर्वं जगद्धितं वा एतदक्षरं प्राजापत्यम् अ. शिरः. ३।३
सर्वं जनयति प्राणश्चेतोंऽशून्पुरुषः पृथक् आगम. ६
सर्वं जहाति सर्वः शुध्यति छांदो. ६।११।२
सर्वं ज्ञानप्लवेनैव भ. गी. ४।३६
सर्वं तदत्र गत्वा विन्दतेऽत्र छांदो. ८।३।२
सर्वं तदभिसमेति छांदो. ४।१।४
सर्वं तं परादाद्योऽन्यत्रात्मनः सर्वं वेद बृह. ४।५।७
सर्वं तं परादाद्योऽन्यत्रात्मनो ब्रह्म वेद बृह. २।४।६
सर्वं देवी सृजते विश्वमेतत् गुह्यका. ५४
सर्वं नश्वरमेव तत् महो. ३।५३
सर्वं नारायण एव भवतीति विज्ञायते ना. उ. ता. ३।१
सर्वं पञ्चात्मकं विद्यात्पञ्चब्रह्मात्म-तत्त्वतः पञ्चब्र. २५
(अतः) सर्वं परित्यज्य तत्प्रसक्तं मनोदण्डं करपात्रं दिगम्बरं दृष्ट्वा परिव्रजेद्भिक्षुः ना. प. ५।११
सर्वं पश्यति सर्वः पश्यति प्रश्नो. ४।५
सर्वं पाप्मानं तपति बृह. ४।४।२३
सर्वं पाप्मानं तरति बृह. ४।४।२३
सर्वं पाहि शतक्रतो स्वाहा महाना. ७।४
सर्वं पुनातु मामापोऽसतां च प्रतिग्रहं स्वाहा महाना. ११।२
सर्वं पूर्वपक्षापरपक्षाभ्यामभिपन्नम् बृह. ३।१।५
सर्वं प्रतिष्ठितं तस्मिन् सर्वगं विश्वतोमुखम् । तस्य मध्य-गताः सूर्यसोमाग्निपरमेश्वराः यो. शि. ६।१०
सर्वं प्रकृतिजैर्गुणैः भ. गी. ३।५
सर्वं प्रशान्तमजमेकमनादिमध्यमा-भास्वरं स्वदनमात्रमचैत्यचिह्नम् । सर्वं प्रशान्तमिति शब्द-मयी च दृष्टिर्बाधार्थमेव हि मुधैव तदोमितीदम् महो. ४।९
सर्वं प्रोक्तं त्रिविधं ब्रह्ममेतत् श्वेताश्व. १।१२
सर्वं ब्रह्ममयंप्रोक्तं सर्वं ब्रह्ममयंजगत् तै. बिं. ६।१८
सर्वं ब्रह्मेति यस्यान्तर्भावना सा हि मुक्तिदा । भेददृष्टिरविद्येयं सर्वथा तां विसर्जयेत् महो. ५।११३
सर्वं ब्रह्मेति वै ज्ञानादिन्द्रियग्राम-संयमः । यमोऽयमिति सम्प्रोक्तो-ऽभ्यसनीयो मुहुर्मुहुः तै. बिं. १।१७
सर्वं ब्रह्मेति सङ्कल्पात्सुदृढा-न्मुच्यते मनः महो. ४।१२५
सर्वं ब्रह्मैव केवलम् तै. बिं. ६।४
[+६।६५+६।१०५,६+ यो. शि. ४।१८
सर्वं ब्रह्मैव सततं सर्वं ब्रह्मैव केवलम् तै. बिं. ६।६५
सर्वं ब्रह्मोपनिषदं माहं ब्रह्म निराकुर्यां केनो. शां. पा.
सर्वं भूतमयं चेति त्यक्त्वा नास्तीति भावयेत् अमन. १।१७
सर्वं भूतं भव्यं जायमानं च गणेशो. ३।१

सर्वं भृग्वङ्गिरोमयं अन्तरैते
  त्रयो वेदा भृगूनङ्गिरसः श्रिताः — २ प्रणवो. २१
सर्वं मृत्युनाऽभिपन्नम् — बृह. ३।१।३
सर्वं वा अत्तीति तददितेरदितित्वम् — बृह. १।२।५
सर्वं वा एतदिन्द्रो यज्जगद्यथैवेति — शौनको. २।४
सर्वं वा एष सर्वमश्नोतीति — शौनको. १।५
सर्वं विश्वमिदं नारायणः, य एवं वेद — ना.उ.ता. २।५
सर्वं वै तेऽन्नमाप्नुवन्ति, येऽन्नं
  ब्रह्मोपासते — तैत्ति. २।२।२
सर्वं शाक्तमजीजनत् — बह्वृचो. १
सर्वं शान्तं निरालम्बं व्योमस्थं
  शाश्वतं शिवम् — महो. ५।४५
सर्वं सच्चिन्मयं ततम् [महो.६।११+ — ते. बिं. ६।१,९
सर्वं सच्चिन्मयं विद्धि सर्वं सच्चि-
  न्मयं ततम् — ते. बिं, ६।१
सर्वं सत्यं परं ब्रह्म न चान्यदिति
  या मतिः। तच्च सत्यं वरं
  प्रोक्तं वेदान्तज्ञानपारगैः — जा. द. १।१०
सर्वं सन्त्यज्य दूरेण यच्छिष्टं
  तन्मयो भव — अ. पू. १।४६
सर्वं सन्मात्ररूपत्वात्सच्चिदानन्द-
  मात्रकम् — ते. बिं. ६।३०
सर्वं समतया बुद्ध्या यः कृत्वा
  वासनाक्षयम्। जहाति निर्ममो
  देहं नेयोऽसौ वासनाक्षयः — महो. ६।४४
सर्वं सर्वमयं सर्वे जीवाः सर्वमयाः — नृसिंहो. ९।४
सर्वं समाप्नोषि ततोऽसि सर्वः — भ. गी. ११।४०
सर्वंसहाः समलोष्टाश्मकाञ्चना
  यथोपपन्नचातुर्वर्ण्यभैक्षाचर्यं
  चरन्त आत्मानं मोक्षयन्त इति — आश्रमो. ४
सर्वं सुखं विद्धि सुदुःखनाशात्
  सर्वं च सद्रूपमसत्यनाशात्।
  चिद्रूपमेव प्रतिभानयुक्तं तस्मा-
  दखण्डं मम रूपमेतत् — वराहो. ३।४
सर्वं सौभाग्यदं नृणां सर्वकर्म-
  फलप्रदम् — पं. ब्र. ९
सर्वं ह पश्यः पश्यति सर्वमाप्नोति — छांदो. ७।२६।२
सर्वं ह वा एतदिदं भस्म — भस्मजा. १।४
सर्वं हि पश्यन्पश्यति सर्वमाप्नोति
  सर्वशः — मैत्रा. ७।११
सर्वं हीदं नामानी३ँ सर्वं वाचा-
  ऽभिवदति — १ ऐत. १।६।१
सर्वं हीदं प्राणेनावृतं सोऽयमाकाशः
  प्राणेन बृहत्या विष्टब्धः — १ ऐत. १।६।३
सर्व९ हैवास्मिँल्लोक आयुरेति नैनं
  पुराकालात्प्राणो जहाति — बृह. २।१।१०
सर्व९ हैवास्मिँल्लोक आयुरेति नैनं
  पुराकालान्मृत्युरागच्छति — बृह. २।१।१२
सर्वं ह्ययमात्मा हि सर्वान्तरः — नृसिंहो. ७।२
सर्वं ह्येतद्ब्रह्म [मांडू. २+ — रामो. २।१+
  [नृ. पू.४।२+नृसिंहो. १।२+ — गणेशो. १।१
सर्वं ह्येतद्ब्रह्म आत्मा — राधोप. २।२
सर्वः (शर्वः) सर्वस्य जगतो
  विधाता धर्ताहर्ताविश्वरूपत्वमेति — त्रि. म. १५
सर्वाक्षरमयःकालःसदसद्व्यक्तिवर्जितः — तुरीयो. ३
सर्वाक्षरमयः कालः सर्वागममयः
  शिवः। सवश्रुत्युत्तमो मृग्यः
  सकलोपनिषन्मयः — ना. प. ८।५
सर्वाजीवे सर्वसंस्थे बृहन्ते (वहते
  अस्मिन्) तस्मिन्हंसो भ्राम्यते
  ब्रह्मचक्रे[श्वेता.१।६+ना.प.९।५+ — भवसं. २।४
सर्वाज्ञानमसन्मयम् — ते. बिं. ३।५८
सर्वाञ्छब्दान्विजानाति, स
  सम्प्रसाद इत्याचक्षते — सुबालो. ४।३
सर्वाणि च भूतानि प्रज्ञायते(मा.पा.) — बृह. ४।१।२
सर्वाणि च भूतानि वाचैव सम्राट्
  प्रज्ञायन्ते; वाग्वै सम्राट् परमं ब्रह्म — बृह. ४।१।२
सर्वाणि च भूतानि...यदेनज्जरा-
  मवाप्नोति (मा. पा.) — छां. उ. ८।१।४
सर्वाणि च भूतानि च सर्वे च
  कामास्तस्मात्तस्योदयं प्रति
  प्रत्यायनं प्रति घोषा उल्लवः — छांदो. ३।१९।३
सर्वाणि च भूतानि सर्वे च कामा
  यदेनज्जरामाप्नोति — छांदो. ८।१।४
सर्वाणि चेन्द्रियाणि सहभूतैर्न
  कारणं कारणानां ध्याता कारणं — अ. शिखो. ३
सर्वाणि छन्दांसि, आपः स्थानं — २ प्रणवो. २१

सर्वाणि छन्दांसि नारायणादेव समुत्पद्यन्ते	नारा. १
सर्वाणि जगन्ति नारायणमयानि प्रविभान्ति	त्रि. म. ना. ५।५
सर्वाणि तत्र भूतानि वसन्ति परमात्मनि	भवसं. २।५३
सर्वाणि धर्मशास्त्राणि विस्तारयिष्णुः	सङ्कर्षणो. २
सर्वाणि बृंहयतीति ब्रह्मा	ब. शिखो. २
(एवं) सर्वाणि भूतानि मणौ सूत्र इवात्मनि। स्थिरबुद्धिरसम्मूढो ब्रह्मविद्ब्रह्मणि स्थितः	ध्या. बिं. ६
सर्वाणि भूतानि रमन्ते सर्वाणि ह वा अस्मिन्भूतानि विशन्ति	बृह. ५।१२।१
सर्वाणि भूतानीत्येव पञ्चमं मुखं तेन मुखेन सर्वाणि भूतान्यत्सि	कौ. त. २।९
सर्वाणि भूतान्यभ्यात्तं यदनेकमेकं नानावर्णं नानारूपं नानाशब्दं नानागन्धं नानारसं नानास्पर्शमिति	शौनको. १।५
सर्वाणिभूतान्यस्यैवैतानि सर्वाणि निश्श्वसितानि	बृह. ४।५।११
(एवं) सर्वाणि भूतान्यापिपीलिकाभ्यो बृहत्या विष्टब्धानीत्येव विद्यात्	१ ऐत. १।६।३
सर्वाणि भौतिकानि कारणे भूतपञ्चके संयोज्य भूमिं जले.. क्रमेण विलीयते	पैङ्गलो. ३।३
सर्वाणि रूपाणि विचित्य धीरः नामानि कृत्वाऽभिवदन् यदास्ते [+चित्त्यु. १२।७+	महावा. ३ पारमा. ७।९
सर्वाणि ह वा इमानि भूतानि प्रणव एव प्रतितिष्ठन्ति	शौनको. ४।५
सर्वाणि ह वा इमानि भूतानि प्राणमेवाभिसंविशन्ति	छांदो. १।११।५
सर्वाणि हास्मै भूतानि श्रैष्ठ्याय सन्नमन्ते तच्छ्रीत्युपासीत	कौ. त. २।६
सर्वाणि ह वा इमानि भूतान्यन्नमेव प्रतिहरमाणानि जीवन्ति	छांदो. १।११।९
सर्वाणि ह वा इमानि भूतान्यहरहः प्रपतन्त्यन्नमभिजिघृक्षमाणानि	मैत्रा. ६।१२
सर्वाणि ह वा इमानि भूतान्याकाशादेव जायन्ते [त्रि. ता. ९।२२+	नृ. पू. ३।५ ग. पू. २।९
सर्वाणि ह वा इमानि भूतान्याकाशादेव समुत्पद्यन्ते	छांदो. १।९।१
सर्वाणि ह वा इमानि भूतान्यादित्यमुच्चैः सन्तं गायन्ति	छांदो. १।११।७
सर्वाणि ह वा इमानि भूतान्येतदक्षरमन्वायत्तानि	शौनको. १।५
सर्वाणि हास्मै भूतानि श्रैष्ठ्याय सन्नमन्ते तच्छ्रीत्युपासीत तत्सामेत्युपासीत	कौ. त. २।६
सर्वाणि हास्मै भूतानि श्रैष्ठ्यायाभ्यर्च्यन्ते तद्यजुरित्युपासीत	कौ. त. २।६
सर्वाणीत्युपधारय	भ. गी. ७।६
सर्वाणीन्द्रियकर्माणि	भ. गी. ४।२७
सर्वाण्डेष्वनन्तलोकाश्चानन्तवैकुण्ठाः सन्तीति सर्वेषां खल्वभिमतम्	त्रि. म. ना. ८।२
सर्वाण्येनं भूतान्यभिरक्षन्ति	बृह. ४।१।२,३
सर्वाण्येनं वामान्यभिसंयन्ति	छांदो. ४।१५।२
सर्वाण्येवैतानि प्रज्ञानस्य नामधेयानि भवन्ति	२ ऐत. ६।२
सर्वातीतपदालम्बी परिपूर्णैकचिन्मयः। नोद्वेगी न च तुष्टात्मा संसारे नावसीदति	महो. ६।६३
सर्वातीतोऽस्म्यहं सदा	ते. बिं. ३।१२
सर्वात्मकत्वमात्माधारो भवति	आ. पू. १
सर्वात्मकत्वं दृश्यविलयो गन्धः	आ. पू. १
(तस्मात्) सर्वात्मकेनाकारेण सर्वात्मकमात्मानमन्विच्छेत्	नृसिंहो. ७।२
सर्वात्मकोऽहं सर्वोऽहं	कुण्डिको. २६
सर्वात्मवेदनं शुद्धं यदोदेति तवात्मकम्। भातिप्रसृतिदिक्कालबाह्यं चिद्रूपदेहकम्	महो. ४।४२
सर्वात्मा समरूपात्मा शुद्धात्मा त्वहंमुत्थितः। एकवर्जित एकात्मा सर्वात्मा स्वात्ममात्रकः	ते. बिं. ४।३४

सर्वा दिशश्चोर्ध्वमधश्च तिर्यक्
प्रकाशयन्ती भ्राजते गुह्यकाली गुह्यका. ६४
सर्वा दिशो बलिमस्मै हरन्ति छांदो. २।२१।४
सर्वाद्या सर्वविधा च वृंदावन-
विहारिणी राधिको. ७
सर्वाधारमनाधारमनिरीक्ष्यं भस्मजा. २।९
सर्वाधिव्याधिभेषजम् पं. ब्र. १२
सर्वाधिष्ठानरूपोऽस्मि सर्वदा
चिद्घनोऽस्म्यहम् ते. बिं. ३।१३
सर्वाधिष्ठानमद्वन्द्वं परं ब्रह्म
सनातनम् । सच्चिदानन्दरूपं
तदवाङ्मनसगोचरम् [रुद्रहृ.२६+ अ. पू. ४।२९
सर्वाधिष्ठानमद्वयपरब्रह्मविहार-
मण्डलं...चिद्रूपादित्यमण्डलं
द्वात्रिंशद्व्यूहभेदैरधिष्ठितम् त्रि.म.ना. ७।८
सर्वाननशिरोग्रीवः सर्वभूत-
गुहाशयः । सर्वव्यापी स भगवां-
स्तस्मात्सर्वगतः शिवः श्वेताश्व. ३।११
सर्वानपि वैष्णवान्धर्मान्विजृम्भयन्
सर्वानपि पाखण्डान्भिवखान सङ्कर्षणो. २
सर्वानिन्द्रियकृतान्पापान्नाशयतीति
तेन नाशी (वरणा) भवति
[जाबालो. २+ रामो. ३।१
सर्वानुग्रहार्थाय तेषां (रुद्राक्षाणां)
नामोच्चारमात्रेण दशगोप्रदानफलं
दर्शनस्पर्शनाभ्यां द्विगुणं फलम् रु. जा. १
सर्वानुग्राहकत्वेन तदस्म्यहं वासुदेवः ब्र. बिं. २३
सर्वानन्दमयः परः ते. बिं. ५।२
सर्वान्कामान् समश्नुते तैत्ति. २।५
[विद्वानिति च–] सर्वान्तरस्थ-
स्वसंविद्रूपविद्विद्वान् निरा. २५
सर्वान् पार्थ मनोगतान् भ. गी. २।५५
सर्वान्तर्यामिरूपोऽहं सर्वसाक्षित्व-
लक्षणः ते. बिं. ६।६६
सर्वान्तरः स्वयं ज्योतिः सर्वाधि-
पतिरस्म्यहम् ब्र. बि. १०६
सर्वान्पाप्मन औषत्समात्पुरुष
औषति बृह. १।४।१

सर्वान्प्राणानसद्विद्धि सर्वान्भोगा-
नसदित्यति ते. बिं. ३।५४
सर्वान् बन्धूनवस्थितान् भ. गी. १।२५
सर्वापदां पदं पापा भावा विभव-
भूमयः महो. ३।४
सर्वारम्भपरित्यागी[भ.गी.१२।१६+ १४।२५
सर्वारम्भा हि दोषेण भ. गी. १८।४८
सर्वार्थवासनोन्मुक्ता तृष्णा
मुक्तेति भण्यते महो. ६।५०
सर्वार्थान् विपरीतांश्च भ. गी. १८।३१
सर्वाश्चर्यमयं देवं भ. गी. ११।१२
सर्वांस्तथा भूतविशेषसंघान् भ. गी. ११।१५
सर्वाः प्रजा ब्राह्मणत्वं नरेन्द्र न
ब्राह्मणत्वात्परमस्ति किञ्चित् इतिहा. १४
सर्वाः प्रजा यत्रैकं भवन्ति चित्यु. ११।२
सर्वाभिलापविगतः सर्वचिन्ता-
समुत्थितः । सुप्रशान्तः
सकृज्ज्योतिः समाधिरचलोऽभयः अद्वैत. ३७
सर्वा भूतानि तिष्ठन्ति सर्वमायुरेति
वसीयान्भवति आर्षे. ६।२
सर्वावस्थाविनिर्मुक्तः सर्वचिन्ता-
विवर्जितः ना. बिं. ५१
सर्वावस्थासु साक्षी त्वेक एवावतिष्ठते ना. प. ६।७
सर्वा वृद्धा वायोः, सर्ववृद्धेन्द्रस्यो-
त्सेधपरोक्षवृद्धाऽग्नेः संहितो. १।८
सर्वाशासङ्क्षये चेतःक्षयो मोक्ष
इतीष्यते अ. पू. २।२३
सर्वाश्च मधुमतीः सर्वाश्च
व्याहृतीः (मा. पा.) बृह. ६।३।६
सर्वाश्रयं हि चिन्मात्रं देहं
चिन्मात्रमेव हि ते. बिं. २।३२
सर्वाश्रयोऽहमेव त्रि.म.ना. ८।६
सर्वासत्त्वविहीनोऽस्मि सात्त्विको-
ऽस्मि सदाऽस्म्यहम् मैत्रे. ३.६
(स यथा) सर्वासामपाᳬ समुद्र
एकायनं, एवᳬ सर्वेषाᳬ
रसानां जिह्वैकायनम् बृह. ४।५।१२

सर्वासामेव नाडीनामेष बन्धः प्रकीर्तितः — वराहो. ५।४२
(एवं) सर्वासां विद्यानाᳫ हृदयमेकायनमेवᳫ सर्वेषां कर्मणाᳫ हस्तावेकायनम् — बृह. ४।५।१२
सर्वास्वप्सु पञ्चविधᳫ सामोपासीत — छांदो. २।४।१
सर्वा ह्यस्मिन्देवताः शरीरेऽभिसमाहिताः — ग्रा. हो. ४।४
सर्वा ह्येवेमाः सर्वस्यै वाच उपनिषद इमां त्वेवाचक्षते — ३ ऐत. २।५।१
सर्वां च सावित्रीमन्वाह, सर्वाश्च मधुमतीरहमेवेदᳫ सर्वं भूयासं भूर्भुवः स्वः स्वाहा — बृह. ६।३।६
सर्वांश्च वेदान् सर्वांश्च यज्ञान् सर्वांश्च शब्दान्सर्वाश्च व्युष्टीः सर्वाणि च भूतानि स्थावरजङ्गमान्यनुभवेयमिति — २ प्रणवो. २
सर्वांश्च वेदान् साङ्गानपि ब्रह्म ब्राह्मणैश्च...सत्यं धर्मेण धर्मं तर्पयामि स्वेन तेजसा — अ. शिरः. १।१
सर्वे आनन्दरसा यस्मात्प्रकटिता भवन्ति — सामर. ३
सर्वे ऊष्माणोऽग्रस्ता अनिरस्ता विवृत्ता वक्तव्याः प्रजापतेरात्मानं परिददातीति — छांदो. २।२२।५
सर्वे कामा मनोगता व्यावर्तन्ते — प. हं. ९
सर्वे कुर्वन्ति कर्माणि विवशाः पूर्वकर्मभिः — शिवो. ७।१२५
सर्वेच्छाकलनाशान्तावात्मलाभोदयाभिधः। स पुनः सिद्धिवाञ्छायां कथमर्हत्यचित्ततः — वराहो. ३।३०
सर्वेच्छाजालसंशान्तावात्मलाभो भवेन्मुने। स कथं सिद्धिजालानि नूनं वाञ्छत्यचित्तकः — अ. पू. ४।८
सर्वेच्छाः सकलाः शङ्काः सर्वेहाः सर्वनिश्चयाः। धिया येन परित्यक्ताः स जीवन्मुक्त उच्यते — महो. २।५८
सर्वे जीवाश्च स्वस्वरूपं भजन्ते — त्रि.म.ना. ३।७
सर्वे जीवाः सुखैर्दुःखैर्मायाजालेन वेष्टिताः। तेषां मुक्तिः कथं देव कृपया वद शङ्कर — यो. शि. १।१
सर्वे जीवाः सुखैर्दुःखैर्मायाजालेन वेष्टिताः। तेषां मुक्तिकरं मार्गं मायाजालनिकृन्तनम् — १ यो. त. ४
सर्वे तु शक्तिजालेन रोगा नश्यन्ति निश्चयम् — योगकुं. १।१८
सर्वे देवा ऋषयो मुनयः सिद्धगन्धर्वयक्षरक्षःपिशाचाः सर्वे नारायणः — ना.पू.ता. ५।६
सर्वे देवाः शिवात्मकाः — रुद्रहृ. ४
सर्वे देवाः संविशन्तीति विष्णुः — अ. शिखो. ७
सर्वे धर्मा मृषा स्वप्ने कायस्यान्तर्निदर्शनात्। संवृतेऽस्मिन्प्रदेशे वै भूतानां दर्शनं कुतः — अ. शां. ३३
सर्वे धर्मास्तथा ज्ञानं नैतद्बुद्धेन भाषितम् — अ. शां. ९९
सर्वे धर्माः सदाभिन्ना अजं साम्यं विशारदम् — अ. शां. ९३
सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसङ्घाः — भ.गी. ११।३६
सर्वे नादसमुद्भवाः — यो. शि. ३।८
सर्वे निमेषा जज्ञिरे विद्युतः पुरुषादधि — महाना. १।८
सर्वेन्द्रियगुणाभासं सर्वेन्द्रियविवर्जितम्। सर्वस्य प्रभुमीशानं सर्वस्य शरणं बृहत् — श्वेताश्व. ३।१७
सर्वेन्द्रियगुणाभासं — भ. गी. १३।१४
सर्वेन्द्रियगुणाभासः सर्वेन्द्रियविवर्जितः — ब्र. वि. १०७
सर्वेन्द्रियगुणाभासा सर्वेन्द्रियविवर्जिता। सर्वेषां प्रभुरीशानी सर्वेषां शरणं सुहृत — गु. का. ४९
सर्वेन्द्रियविवर्जितम् — भ. गी. १३।१४
सर्वेन्द्रियविहीनोऽस्मि सर्वकर्मकृदप्यहम् — मैत्रे. ३।१५
सर्वे पाप्मानोऽतो निवर्तन्ते — छांदो. ८।४।१
सर्वेऽप्येते यज्ञविदः — भ. गी. ४।३०

सर्वे बन्धाः प्रविनश्यन्ति त्रि. म. ना. ८।७
सर्वे ब्रह्म वदिष्यन्ति सम्प्राप्ते तु कलौ युगे। वैदिके नानुतिष्ठन्ति शिश्नोदरपरायणाः भवसं. १।५७
सर्वेभ्यः पापकृत्तमः भ. गी. ४।३६
सर्वेभ्योऽन्तस्स्थानेभ्यो ध्येयेभ्यः प्रदीपवत्प्रकाशयतीति प्रकाशः अ. शिखो. २
सर्वेभ्यो लोकेभ्यः सर्वे प्राणिनोऽभवन् गायत्रीर. १
सर्वेभ्यो वेदेभ्यः सर्वे लोका अभवन् गायत्रीर. १
सर्वे मरुद्गणा अजीजनन् (देव्याः) बह्वृचो. १
सर्वे युद्धविशारदाः भ. गी. १।९
सर्वे वयमतः परम् भ. गी. २।१२
सर्वे वाक्यात्मका मन्त्रा वेदशास्त्राणि कृत्स्नशः यो. शि. ३।७
सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति तपा९सि सर्वाणि च यद्वदन्ति [कठो. २।१५+ गुह्यका. ३९
सर्वे वेदा यत्रैकं भवन्ति चित्त्यु. ११।१
सर्वे वेदाः प्रणवादिकास्तं प्रवणं तस्मान्नोऽङ्गं वेद स आयुर्यशःकीर्तिज्ञानैश्वर्यवान्भवति नृ. पू. १।३
सर्वे वेदाः सर्वं यज्ञा इत्यथ खल्विन्द्रमन्वायत्तं शौनको. १।५
(तदनु) सर्वेशमप्रमेयमजं शिवं परमाकाशं निरालम्बमद्वयं... परं ब्रह्म प्राप्नोति मं. ब्रा. ३।१
सर्वेशः सर्वसाक्षी च २ रुद्रो. ४४
सर्वेश्वरं सर्वदेवैरुपास्यम् ना. प. ९।१७
सर्वेषणाविनिर्मुक्तश्छित्त्वा तं तु न बध्यते क्षुरिको. २५
(तस्मात्) सर्वेषामधिकारिणामनधिकारिणांच भक्तियोग एव प्रशस्यते त्रि. म. ना. ८।४
(एवं) सर्वेषामध्वनां पादावेकायनमेव९ सर्वेषां वेदानां वागेकायनम् [बृह. २।४।११+ ४।५।१२
सर्वेषामपि पापानां प्रायश्चित्तं त्वमेव हि तुलस्यु. १३
सर्वेषामात्मानुसन्धानं विधिरित्येव ना. प. ७।११
(एवं) सर्वेषामानन्दानामुपस्थ एकायनम्९ सर्वेषां विसर्गाणां पायुरेकायनम् [बृह. २।४।११+ ४।५।१२
सर्वेषामिन्द्रियाणां गतिरुपरमते य आत्मन्येवावस्थीयते प. हं. ९
सर्वेषामेव गतीनामव्यक्तं हृदयम् सुबालो. १३।४
सर्वेषामेव गन्धानां पृथिवी हृदयं सुबालो. १३।४
सर्वेषामेव पापानां सङ्घाते समुपस्थिते। तारं द्वादशसाहस्रमभ्यसेच्छेदनं हि तत् १सं.सो.२।१०३
सर्वेषामेव भूतानां महासौभाग्यदायिनी। महालक्ष्मीर्महादेवी.. ना. पू. ता. २।२
सर्वेषामेव भूतानां विष्णुरात्मा.. रुद्रहृ. १३
सर्वेषामेव रूपाणां तेजो हृदयम् सुबालो. १३।४
सर्वेषामेव शब्दानामाकाशं हृदयम् सुबालो. १३।४
सर्वेषामेव रसानामापो हृदयम् सुबालो. १३।४
सर्वेषामेव शर्म भवान् २ प्रणवो. १९
सर्वेषामेव सत्त्वानां मृत्युर्हृदयम् सुबालो. १३।४
सर्वेषामेव स्पर्शानां वायुर्हृदयम् सुबालो. १३।४
सर्वेषामेव त्रीणि शरीराणि वर्तन्ते यो. चू. ७२
(एवं) सर्वेषां कर्मणां हस्तावेकायनम् [बृह. २।४।११+ ४।५।१२
सर्वेषां खलु भूतानामात्मा सत्ये प्रतिष्ठितः (मा. पा.) छां.ब. ६।१७
(एवं) सर्वेषां गन्धानां नासिके एकायनम् बृह. ४।५।१२
सर्वेषां च महीक्षिताम् भ. गी. १।२५
(तस्मात्) सर्वेषां जीवानामिष्टविषये...सुखबुद्धि... त्रि.म.ना. ५।३
सर्वेषां ज्योतिषां ज्योतिस्तमसः परमुच्यते त्रि.म.ना. ४।३
सर्वेषां दिव्यानां (विद्यानां) प्रेरयिता ईशानः पञ्चब्र. १
सर्वेषां देवानां सार्ष्टितां सालोक्यतां सायुज्यतां गच्छति कठश्रु. १३
सर्वेषां देवालयस्थं भस्म शिवाग्निजं शिवयोगिनाम् बृ. जा. ५।७

सर्वेषां दोषरत्नानां सुसमुद्रिकया- ऽनया । दुःखशृङ्खलया नित्य- मलमस्तु मम स्त्रिया [याज्ञव.१६+ महो. ३।४७
सर्वेषां पुरुषाणामन्तःपुरुषः स आत्मा स विज्ञेयः त्रि. ता. ५।१
सर्वेषां पूर्वोक्तब्रह्मयज्ञक्रमं मुक्ति- क्रममिति ब्रह्मपुत्रः प्रोवाच पा. ब्र. ५
सर्वेषां प्रणवो बीजं हंसः शक्तिः प्रकीर्तिता गुह्यका. ८।१
सर्वेषां प्राणिनां प्रारब्धसञ्चिता- गामिकर्मसाधर्म्यदर्शनात्कर्मा- भिप्रेरिताः सन्तो जनाः क्रियाः कुर्वन्ति व. सू. ७
(ॐ) सर्वेषां प्राणिबुद्बुदानां निरञ्जनाव्यक्तामृतनिधौ विलयविलासः स्थितिर्विजृम्भते स्वसंवे. १
सर्वेषां बीजानां हयग्रीवैकाक्षर- बीजमनुत्तमं मन्त्रराजात्मकंभवति हयग्री. ६
सर्वेषां ब्रह्मादीनां देवर्षीणां मनुष्याणां मूर्तिरेका परब्र. ६
सर्वेषां भूतानामन्तरपुरुषः स म आत्मेति विद्यात् ३ ऐत. २।४।८
सर्वेषां भूतानां मूर्धा भवति कौ. त. ४।२
सर्वेषां भूतानां मूर्धा राजा भवति बृह. २।१।२
सर्वेषां भूतानां मूर्धेति वा अहमेत- मुपास इति कौ. त. ४।२
(एवं) सर्वेषां रसानां जिह्वै- कायनम् [बृह. २।४।११+ ४।५।१२
(एवं) सर्वेषां रूपाणां चक्षु- रेकायनम् [बृह. २।४।११+ ४।५।१२
सर्वेषां वस्तूनां मुख्यवस्तु भवति ना.उ.ता. ३।१
सर्वेषां वा एतद्भूतानामाकाशः परायणम् [नृ.पू.३।६+त्रि.ता. ५।२२+ग.पू.२।९
(एवं) सर्वेषां विसर्गाणां पायु- रेकायनम् [बृह. २।४।११+ ४।५।१२
(एवं) सर्वेषां वेदानां वागेकायनं [बृ. उ. २।४।११+ ४।५।१२
(एवं) सर्वेषां शब्दानां श्रोत्र- मेकायनम् [बृह. २।४।११+ ४।५।१२

सर्वेषां शरीराणां समानगुणाभवन्ति सामर. १०१
(एवं) सर्वेषां सङ्कल्पानां मन एकायनम् [बृह. २।४।११+ ४।५।१२
सर्वेषां समवायेन सिद्धिः स्या- द्योगरक्षणा योगो. ३२
(एवं) सर्वेषां स्पर्शानां त्वगेकायनम् [बृह.२।४।११+ ४।५।१२
सर्वे स्पर्शा मृत्योरात्मानः छांदो. २।२२।३
सर्वे स्पर्शा लेशेनानभिनिहिता वक्तव्या मृत्योरात्मानं परिहराणीति छांदो. २।२२।५
सर्वेऽस्मै देवा बलिमावहन्ति तैत्ति. १।५।३
सर्वे स्वरा इन्द्रस्यात्मानः छांदो. २।२२।३
सर्वे स्वरा घोषवन्तो बलवन्तो वक्तव्या इन्द्रे बलं ददानीति छांदो. २।२२।५
सर्वे होतारो यत्रैकं भवन्ति चित्यु. ११।१
सर्वेषु कालेषु लाभालाभौ समौ कृत्वा...ध्रुवशीलोऽष्टौ मास्ये- काकी चरेत् (?) प. हं. प. ७
सर्वेषु तीर्थेषु स्नातो भवति ऊर्ध्वपुं. ६
सर्वेषु भूतेषु गणेशमेकं विज्ञाय तं मृत्युमुखात् प्रमुच्यते हेरम्बो. ८
सर्वेषु भूतेष्वेतमेव ब्रह्मेत्याचक्षते ३ ऐत. २।३।५
सर्वेषु वेदेष्वारण्यकमावर्तयेत् आरुणि. २
सर्वे सहैवावनिपालसङ्घैः भ. गी. ११।२६
सर्वैरेव (अक्षरैः) स इन्द्रोऽभवत् अव्यक्तो. ६
सर्वैरेव (अक्षरैः) स विष्णुरभवत् अव्यक्तो. ६
सर्वोत्कृष्टपरमद्युतिप्रद्योतमानं तत्त्वाकाशं भवति अद्वयता. ४
सर्वोत्कृष्टपरमाद्वितीयप्रद्योतमानं तत्त्वाकाशं भवति मं. ब्रा. २।३
सर्वोपनिषदभ्यासं दूरतस्त्यक्त्व सादरम् । तेजोबिन्दूपनिषद- मभ्यसेत्सर्वदा मुदा । सकृदभ्यास- मात्रेणब्रह्मैवभवतिस्वयम् [ते.बिं. ६।११०,११
सर्वोपकारी मोक्षी भवति दत्तात्रे. १६
सर्वोपनिषदां मध्ये सारमष्टोत्तरं शतम् । सकृच्छ्रवणमात्रेण सर्वाघौघनिकृन्तनम् मुक्तिको. १।४४

सर्वोपसंहारेण संहारप्रणवः	तुरीयो. १
सर्वोपाधिविनिर्मुक्तं स्वात्मानं भावयेत्सुधीः	कठरु. ४४
सर्वोपाधिविनिर्मुक्तं परं तत्त्वं तदुच्यते	अमन. १।११
सर्वो योगाग्निना देहो ह्यजडः शोकवर्जितः	यो. शि. १।२६
सर्वो वै रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु	महाना.१०।११
सर्वोऽसि सर्वहीनोऽसि शान्ताशान्तविवर्जितः	ते. बिं. ५।६८
सर्वो ह्येष रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमोऽस्तु [+महाना. १०।११	शिव. सं. ३१
सर्वौषधस्य मन्थं दधिमधुनोरुपमथ्य ज्येष्ठाय श्रेष्ठाय स्वाहेत्यग्नावाज्यस्य हुत्वा मन्थे सम्पातमवनयेत्	छांदो. ५।२।४
सलिल एको द्रष्टाऽद्वैतो भवति	बृह. ४।३।३२
सलिल एवेदं सलिलं वनं भूयस्तेनैव मार्गेण जाग्राय धावति	सुबालो. ४।४
सलिलकण इवाम्बुधौ महात्मा विगलितवासनमेकतां जगाम	महो. २।७७
सलिलमिति लौहित्यकारणं सत्त्वम्	भावनो. ७
सलिलात्फेनमभवत्	गायत्रीर. १
सलिलेधारयेद्विसंनाम्भसापरिभूयते	यो.शि. ५।५०
सलिले सैन्धवं यद्वत्साम्यं भवति योगतः। तथाऽऽत्ममनसोरैक्यं समाधि-(रिति कथ्यते) रभिधीयते [सौभाग्य. १८+	वराहो. २।७९
स लोकमागच्छत्यशोकमहिमं तस्मिन्वसति शाश्वतीः समाः	बृह. ५।१०।१
सवतात्सविता	मैत्रा. ६।७
सवस्तु सोपलम्भं च द्वयं लौकिकमिष्यते। अवस्तु सोपलम्भं च..	म. शां. ८७
स वा अयमात्माऽनन्तोऽजरोऽपारो न वारे बाह्यो नांतरः	आर्षे. ९।२
स वा अयमात्मा ब्रह्म	बृह. ४।४।५
स वा अयमात्मा सर्वेषां भूतानामधिपतिः	बृह. २।५।१५
स वा अयं पुरुषः सर्वासु पूर्षु पुरिशयः	बृह. २।५।१८
स वा अयं पुरुषो जायमानः शरीरमभिसम्पद्यमानः पाप्मभिः संसृज्यते	बृह. ४।३।८
स वा ऋषे तृतीयं शंस	१ ऐत. २।३।३
स वा ऋषे द्वितीयं शस	१ ऐत. २।३।२
स वा एवं प्रवरणीय आत्मकामेनेत्याहुर्ब्रह्मवादिनः	मैत्रा. ६।७
स वा एष आत्मा परः	नृसिंहो. ९।१
स वा एष आत्मा हृदि	छांदो. ८।३।३
स वा एष आत्मेत्यदो वशं नीत एव सितासितैः कर्मफलैरभिभूयमान इव प्रतिशरीरेषु चरति	मैत्रा. २।१०
स वा एष एकस्त्रिधाभूतोऽष्टधैकादशधा द्वादशधाऽपरिमितधा वोद्भूत उद्भूतत्वाद्भूतेषु चरति प्रतिष्ठा सर्वभूतानामधिपतिर्बभूवेत्यसावात्मान्तर्बहिश्चान्तर्बहिश्च	मैत्रा. ४।५
स वा एष एतस्मिन्बुद्धान्ते रत्वा चरित्वा दृष्ट्वैव पुण्यं च पापं च पुनः प्रतिन्यायं प्रतियोन्या द्रवति स्वप्नान्तायैव	बृह. ४।३।१७
स वा एष एतस्मिन्सम्प्रसादे रत्वा..	बृह. ४।३।१५
स वा एष एतस्मिन्स्वप्नान्ते रत्वा चरित्वा दृष्ट्वैव पुण्यं पापं.,	बृह. ४।३।३४
स वा एष एतस्मिन्स्वप्ने रत्वा...	बृह. ४।३।१६
स वा एष एतेन दैवेन चक्षुषा मनसैतान्कामान्पश्यन्रमते	छांदो. ८।१२।५
स वा एष एवं पश्यन्नेवं मन्वान एवं विजानन्नतिवादी भवति	छांदो. ७।१५।४
स वा एष एवं पश्यन्नेवं मन्वान एवं विजानन्नात्मरतिरात्मक्रीड आत्ममिथुन आत्मानन्दः स स्वराट् भवति	छांदो. ७।२५।२
स वा एष ओमित्येतदात्मा, स त्रेधाऽऽत्मानं व्यकुरुत	मैत्रा. ६।३
स वा एष दिव्यः शाकरः शिशुमारस्तस्य ह य एवं वेदाप पुनर्मृत्युं जयति	सद्वै. २१

स वा एष निरिन्द्रियो विमुक्तो-ऽस्माल्लोकात्प्रैति बृह. ६।४।१२
स वा एष पञ्चधाऽऽत्मानं प्रविभज्य निहितो गुहायां मनोमयः प्राणशरीरो बहुरूपः सत्यसङ्कल्प आत्मेति मैत्रा. २।६
स वा एष पुरुषविध एव तैत्ति. २।२
स वा एष पुरुषः पञ्चधा पञ्चात्मा महाना. १७।१४
स वा एष पुरुषोऽन्नरसमयः तैत्ति. २।१।१
स वा एष भूतानीन्द्रियाणि विराजं देवताः कोशांश्च सृष्ट्वा प्रविश्यामूढो मूढ इव व्यवहरन्नास्ते नृसिंहो. ९।५
स वा एष महानज आत्माऽजरोऽमरोऽमृतोऽभयो ब्रह्माभयं वै ब्रह्माभयं हि वै ब्रह्म भवति बृह. ४।४।२५
स वा एष महानज आत्माऽन्नादो वसुदानो विन्दते वसु बृह. ४।४।२४
स वा एष महानज आत्मा योऽयं विज्ञानमयः प्राणेषु य एषो-ऽन्तर्हृदय आकाशस्तस्मिञ्छेते बृह. ४।४।२२
स वा एष यज्ञः प्रादक्षिणोऽनन्तदक्षिणः समृद्धतरः सहवै. २१
स वा एष यज्ञः सद्यः प्रतायते सद्यः सन्तिष्ठते सहवै. १७
स वा एष वाचः परमो विकारः, यदेतन्महदुक्थम् १ ऐत. ३।६।३
स वा एष शुद्धः स्थिरोऽचलश्चालेपोऽव्यग्रो निःस्पृहः प्रेक्षकवदवस्थितः मैत्रा. २।११
स वा एष सूक्ष्मोऽग्राह्योऽदृश्यः पुरुषसंज्ञो बुद्धिपूर्वमिहैवावर्तते मैत्रा. २।५
स वा एषा देवता दूर्नाम दूरं ह्यस्या मृत्युर्दूरं ह वा अस्मान्मृत्युर्भवति बृह. १।३।९
स वा एषोऽभिभूतः प्राकृतैर्गुणैः मैत्रा. ३।२
स वा एषोऽस्मद्धृदन्तरे तिष्ठन्कृतार्थोऽमन्यत मैत्रा. २।९
स वाजपेयेनसोऽतिरात्रेणसोऽप्तोर्यामेण स सर्वैः क्रतुभिर्यजते ग. शो. ५।३
स वायुना ज्योतिषा भाति च तपति च, भाति च तपति च कीर्त्या यशसा ब्रह्मवर्चसेन छांदो. ३।१८।४
स वायुपूतो भवति, स आदित्यपूतो भवति। अरोगी भवति। श्रीमांश्च भवति मुद्गलो. ५।१
स वायुप्रतिष्ठा, आकाशात्मा स्वरेति स तद्भवति कौ. व्र. २।१४
स वायुमिवात्मानं कृत्वाऽभ्यन्तरं प्राविशत् मैत्रा. २।६
स वायुः स आकाशस्तदेतदोजश्च महश्चेत्युपासीत छांदो. ३।१३।५
स वासुदेवो न यतोऽन्यदस्ति गो. पू. ४।२
स वां मधु प्रवोचदृतायन्त्वाष्ट्रं यद्दस्रावपि कक्ष्यं वामिति बृह. २।५।१७
सविकल्पो निर्विकल्पः समाधिर्द्विविधो हृदि (कुर्यात्) सरस्व. ४९
सविकारमुदाहृतम् भ. गी. १३।७
सविकारस्तथा जीवो निर्विकारस्तथा शिवः। कोशास्तस्य विकारास्ते ह्यवस्थासु प्रवर्तकाः त्रि. ब्रा. २।१३
स विजायमानः स जनिष्यमाणः प्रत्यङ्मुखस्तिष्ठति विश्वतोमुखः महाना. २।१
[+तै.आ.१०।१।३+ सूर्यता. १।२
स विज्ञानो भवति स विज्ञातमेवान्ववक्रामति तं विद्याकर्मणी समन्वारभेते पूर्वप्रज्ञा च बृह. ४।४।२
सविता पश्चात्तात्सविता पुरस्तात्सवितोत्तरात्तात्सविताऽधरात्तात्। सविता नः सुवतु सर्वतातिं सविता नो रासतां दीर्घमायुः [सूर्यो.८+ ऋ.मं.१०।३६।१४
सविता प्रसविता दीप्तो दीपयन् दीप्यमानः नृ. पू. २।७
सविता प्राणिनः सूते प्रसूते शक्तिम् त्रि. ता. १।६
सविता वै देवस्ततो योऽस्य भर्गाख्यस्तं चिन्तयामि मैत्रा. ६।७

सविता श्रियः प्रसविता श्रियमेवाप्नोति । अथो प्रज्ञातयैव प्रतिपदा छन्दांसि प्रतिपद्यते — सद्वै. १५
सवितुरिति सविता, सावित्रमादित्यो वै — गायत्रीर. २
सवितुर्वा योग्यो जीवात्मपरमात्मसमुद्भवस्तं प्रकाशशक्तिरूपं जीवाक्षरं स्पष्टमापद्यते.. — त्रि. ता. १।१४
स वित्तेनैवा च पूर्यतेऽप च क्षीयते — बृह. १।५।१५
सवित्रा प्रसवेन जुषेत ब्रह्म पूर्व्यम् — श्वेताश्व. २।७
स विशृङ्ग एवाभवत् — शौनको. २।३
स विश्वकृद्विश्वविदात्मयोनिर्ज्ञः कालकालो गुणी सर्वविद्यः । प्रधानक्षेत्रज्ञपतिर्गुणेशः संसारमोक्षस्थितिबन्धहेतुः — श्वेता. ६।१६ [भवसं. २।४६
स विश्वकृत् स हि सर्वस्य कर्ता तस्य लोकाः स उ लोक एव — बृह. ४।४।१३
स विश्वरूपस्त्रिगुणस्त्रिवर्त्मा प्राणाधिपः सञ्चरति स्वकर्मभिः — श्वेताश्व. ५।७
सविषयं मनो बन्धाय, निर्विषयं मुक्तये भवति — मं. ब्रा. ५।१
स विष्णुःसशिवःसब्रह्मासेन्द्रःसेन्दुः स सूर्यः स वायुः सोऽग्निः स ब्रह्म — ग. शो. २।१
स वेत्ति वेद्यं न च तस्यास्ति वेत्ता तमाहुरग्र्यं पुरुषं महान्तम् — श्वेता. ३।१९ [+ना. प. ९।१४+ — भवसं. २।४९
स वेदैतत्परमं ब्रह्म धाम यत्र विश्वं निहितं भाति शुभ्रम् । उपासते पुरुषं ये ह्यकामास्ते शुक्रमेतदतिवर्तन्ति धीराः — मुण्ड. ३।२।१
(अथ) संवेश्यजायायै हृदयमभिमृशेत् — कौ. त. २।१०
स वृक्षकालाकृतिभिः परोऽन्यो यस्मात्प्रपञ्चः परिवर्ततेऽयम् । धर्मावहं पापनुदं भगेशं ज्ञात्वाऽऽत्मस्थममृतं विश्वधाम — श्वेता. ६।६
स वै खलु प्रस्तोता साम प्रस्तौति — बृह. १।३।२८
स वै गणेशः सर्वात्मा विज्ञेयः — गणेशो. ४।१०
स वै गौतम तीर्थेनेच्छसीति इत्युपैम्यहम् (मा. पा.) — बृह. ६।२।७
स वै त्रिविधः—सात्त्विको राजसस्तामसश्चेति । सात्त्विकी ज्ञानशक्तिः, राजसी क्रियाशक्तिः, तामसी द्रव्यशक्तिः — गणेशो. ४।३
स वै दैवः प्राणो यः सञ्चरंश्चासञ्चरंश्च न व्यथते न रिष्यति — बृह. १।५।२०
स वै नैव रेमे तस्मादेकाकी न रमते — बृह. १।४।३
स वै ब्रह्म परमात्मेत्युच्यते — हंसो. ४
स वै बलं बलिनामग्रगण्यः पुण्यः शरण्यः सकलस्य जन्तोः । तमेकदन्तं गजवक्त्रमीशं विज्ञाय दुःखान्तमुपैति सद्यः — हेरम्बो. ११
स वै ब्रह्मण आनन्दः — गान्धर्वो. ६
स वै वाचमेव प्रथमामत्यवहत् सा यदा मृत्युमत्यमुच्यत — बृह. १।३।१२
स वै वेदिता स्याद्याज्ञवल्क्य वेद वा [बृह. ३।९।१०,११, — १२–१७
स वैष्णवं धाम भित्वा परं ब्रह्म प्राप्नोति — त्रि. ता. १।१५
सव्यदक्षिणनाडीस्थो मध्ये चरति मारुतः । तिष्ठतः खेचरी मुद्रा तस्मिन्स्थाने न संशयः — शाण्डि.१।७।४०
सव्यहस्त आज्यस्थाली (शारीरयज्ञस्य) — प्रा. हो. ४।२
सव्याहृतिं सप्रणवां गायत्रीं शिरसा सह । त्रिः पठेदायतप्राणः प्राणायामः स उच्यते — अ. ना. ११
सव्ये तु शङ्खं बिभृयादिति ब्रह्मविदो विदुः — सुदर्श. ११
सव्ये दक्षिणगुल्फं तु पृष्ठपार्श्वे नियोजयेत् । दक्षिणेऽपि तथा सव्यं गोमुखं गोमुखं (गोमुखं) यथा [त्रि. ब्रा. २।३६+ — शाण्डि. १।३।२
सव्ये दक्षिणगुल्फं तु पृष्ठपार्श्वे नियोजयेत् । दक्षिणेऽपि तथा सव्यं गोमुखं तत्प्रचक्षते — जा. द. ३।४

सव्ये दले तिष्ठति पद्मयोनिः स्वरान्वितो दक्षिणपत्रगो हरिः । श्रिया समेतः शिवयाऽनुषक्तो मध्ये दलेऽहं निवसामि नित्यम् — १ बिल्वो. ३

सव्योरुदक्षिणे गुल्फे दक्षिणं दक्षिणेतरे । निदिध्याद्दृजुकायस्तु चक्रासनमिदं मतम् — वराहो. ५।१७

स शब्दस्तुमुलोऽभवत् — भ. गी. १।१३

सशरीरं समारोप्य तन्मयत्वं तथोमिति । त्रिशरीरं तमात्मानं परं ब्रह्म विनिश्चिनु — ना. प. ८।८

स शान्तिमधिगच्छति — भ. गी. २।७१

स शान्तिमाप्नोति न कामकामी — भ. गी. २।७०

सशिखं वपनं कृत्वा बहिस्सूत्रं त्यजेद्बुधः । यदक्षरं परं ब्रह्म तत्सूत्रमिति धारयेत् — ब्रह्मो. ६ [+ना. प. ३।७८+ — परब्र. ७

सशिखान् केशान् निकृत्य विसृज्य यज्ञोपवीती निष्क्रम्य पुत्रं दृष्ट्वा त्वं ब्रह्मा त्वं यज्ञस्त्वं सर्वमित्यनुमन्त्रयेत् — कठश्रु. ४

सशिखान् केशान्निष्कृष्य विसृज्य यज्ञोपवीतं भूः स्वाहेत्यप्सु जुहुयात् — कठरु. ३

स शिखान्केशान्विसृज्य यज्ञोपवीतं छित्त्वा पुत्रं दृष्ट्वा त्वं यज्ञस्त्वं सर्वमित्यनुमन्त्रयेत् — १ सं. सो. १।२

स शिवः सच्चिदानन्दः सोऽन्वेष्टव्यो मुमुक्षुभिः — पै. ब्र. ३५

स शिवः स शिवः स शिवो गणेशः — गणेशो. २।४

स शीतोष्ण-सुखदुःख-मानावमानवर्जितः — प. हं. प. ११

स शुकः स्वकया बुद्ध्या न वाक्यं बहु मन्यते — महो. २।१७

स शुद्धः स शुद्धः स शुद्धो गणेशः — गणेशो. २।४

स शुष्यति स उद्वर्तते तस्मादनृतं न वदेत् — १ ऐत. ३।६।५

स शौद्रं वर्णमसृजत — बृह. १।४।१३

स षकारं भ्रवाणीइँ अषकाराइँ इति, स षकारमेव ब्रूयात् — ३ ऐत. २।६।२

स षट्पदो भवति, साम एव षट्पदः — ग. पू. १।११

स षडूर्मिवर्जितः । षड्भावविकारशून्यः — प. हं. प. ११

स षोडशिना यजते, स वाजपेयेन यजते, सोऽतिरात्रेण यजते, सोऽप्तोर्यामेण यजते, सोऽश्वमेधेन यजते, स सर्वैः क्रतुभिर्यजते — नृ. पू. ५।१४

स सकलभोगान् भुङ्क्ते देहं त्यक्त्वा शिवसायुज्यमेति — का. रुद्रो. ५

स सच्चिदानन्दाद्वयचिद्घनः सम्पूर्णानन्दैकबोधो ब्रह्मैवाहमस्मीत्यनवरतं ब्रह्मप्रणवानुसन्धानेन यः कृतकृत्यो भवति स हि परमहंसपरिव्राट् — प. हं. प. ११

स सततं सकलरुद्रमन्त्रजापी भवति, स सकलभोगान्भुङ्क्ते, देहं त्यक्त्वा शिवसायुज्यमेति, न स पुनरावर्तते — का. रुद्रो. ५

स सत्याभिसन्धः सत्येनात्मानमन्तर्धाय परशुं तप्तं प्रतिगृह्णाति, स न दह्यतेऽथ मुच्यते — छांदो. ६।१६।२

स सन्यासी च योगी च — भ. गी. ६।१

स सन्यासी शिव एव सर्वदेवमयो भवति — तारोप. ४

स समानः सन्नुभौ लोकावनुसञ्चरति — बृह. ४।३।७

स समुद्र एव भवति (मा. पा.) — छां. व. ६।१०।१

स समृद्धकायः सन् सृष्टिकर्म न जज्ञिवान् — मुद्गलो. २।४

स सम्यग्ज्ञानं च लब्ध्वा विष्णुसायुज्यमवाप्नोति — वासुदे. १७

स सर्वकर्मकृत् स ब्राह्मणः — प. हं. प. ११

स सर्वकारणमूलं विराट्स्वरूपोभवति — त्रि. म. ना. २।६

स सर्वज्ञः सर्वमेवाविवेश — प्रश्नो. ४।११

स सर्वज्ञः सर्ववित् यस्य ज्ञानमयं तपः । तस्यैषाऽऽहुतिर्दिव्याऽऽस्ततत्वाय कल्पतामिति — २ सन्यासो. १

स सर्वभयनिर्मुक्तः साक्षाच्छिवमयो भवेत् वज्रपं. ६
स सर्वलोकस्य शुभाशुभस्य तं वै ज्ञात्वा मृत्युमत्येति जन्तुः हेरम्बो. ८
स सर्वविद्भजति मां भ. गी. १५।१९
स सर्ववेत्ता भुवनस्य गोप्ता ताभिः प्रजानां निहिता जनानाम्। प्रोता त्वमोता विचितिः क्रमाणां प्रजापतिश्छन्दमयो विगर्भः एका. ९
स सर्ववेदव्रतचर्यासु चरितो भवति पैङ्गलो. ४।२४
स सर्वशः सर्वं भवति (मा. पा.) प्रश्नो. ४।१०
स सर्वसम्पत्तिभूतं प्रथमं...महाविद्येश्वरीविद्यां..त्रिपुरेश्वरीं.. त्रि. ता. २।२
स सर्वं चानिकेतः स्थिरमतिरेवं स भिक्षुः सौवर्णादीनां नैव परिग्रहेत् प. हं. ९
स सर्वं लोकाञ्जित्वा ब्रह्म परं प्राप्नोति अव्यक्तो. ५
स सर्वान्वेदानधीतो भवति का. रुद्रो. ५
स सर्वा वाचो विजृम्भयति त्रि. ता. १।१५
स सर्वांश्च लोकानाप्नोति सर्वांश्च कामान्यस्तमात्मानमनुविद्य विजानाति छांदो.८।७।१,३
[८।१२।६+पैङ्गलो. ४।२४+ महो. ६।८
स संसारं तरति, सोऽमृतत्वं च गच्छति, महतीं श्रियमश्नुते नृ. पू. ३।२
स संस्तुतो दैवतदेवसूनुः सुतं भृगोर्वाक्यमुवाच तुष्टः। अवेहि मां भार्गव वक्रतुण्डमनाथनाथं त्रिगुणात्मकं शिवम् ग. पू. ता. १।९
स साक्षी भवति, स एव भवति, स सर्वो भवति गणेशो. ५।८
ससागरां सपर्वतां सप्तद्वीपां वसुन्धरां तत्साम्नः प्रथमं पादं जानीयात् नृ. पू. १।२
ससागरां सप्तद्वीपां सपर्वतां वसुन्धरां तत्साम्नः प्रथमं पादं जानीयात् रायस्पोषस्य दातेति ग. पू. १।१२
स साम भवति, ऋग्वै गायत्री, यजुरुष्णिक्, अनुष्टुप् साम ग. पू. १।११

स सामभिः सामवेदो रुद्रा आदित्या जगत्याहवनीयः सा साम्नस्तृतीयो पादो भवति नृ. पू. २।१
स सामभिः सामवेदो रुद्रादित्या जगत्याहवनीयः सा तृतीयः पादो भवति नृसिंहो. ३।२
स सिद्धिसाधनैर्योगैस्तानि साधयति क्रमात् अ. पू. ४।५
स सारः सर्वसाराणां तस्मात्सारो न विद्यते अ. पू. ४।७०
स सार्वभौमवव्यवहाराच्छ्रान्तोऽन्तर्भवनं प्रवेष्टुं मार्गमाश्रित्य तिष्ठति पैङ्गलो. २।७
स सूर्यः स चन्द्रः सुरास्ते ते असुराः (परमात्मैव) निरा. १०
स सूर्यः स वायुः सोऽग्निः स ब्रह्म गणेशो. २।१
स सूर्यो भगवान्सहस्रांशुः, तं सूर्यं भगवन्तं सर्वस्वरूपिणं निगमा बहु वर्णयन्ति सूर्यता. १।२
स सोमलोके विभूतिमनुभूय पुनरावर्तते प्रश्नो. ५।४
स सोमः कस्मिन्प्रतिष्ठित इति। दीक्षायामिति बृह. ३।९।२३
स स्त्रियं ससृजे, तां सृष्ट्वाऽध उपास्ते बृह. ६।४।२
स स्त्रियं ससृजे तां सृष्ट्वाऽथ उपास्ते...(मा. पा.) बृह. ६।४।२
सस्यमिव मर्त्यः पच्यते सस्यमिवाजायते पुनः कठो. १।६
स स्वराड्भवति, तस्य सर्वेषु लोकेषु कामचारो भवति छांदो. ७।२५।२
स स्वर्ग्यो भवति ब्रह्मचारी वेदमधीत्य वेदोक्ताचरितब्रह्मचर्यो दारानाहृत्य पुत्रानुत्पाद्य ताननुपाधिभिर्वितत्येष्ट्वा च शक्तितो यज्ञैः कठरु. ५
स स्वर्लोकं स महर्लोकं स जनोलोकं, स तपोलोकं, स सत्य-

लोकꣳ स सप्तलोकꣳ स सर्वलोकꣳ सर्वलोकं जयति	ग. शो. ५।२
स स्वव्यतिरेकेण नान्यद्रष्टा	प. हं. प. ११
स स्वाधीनमायः सर्वज्ञः सृष्टिस्थितिलयानामादिकर्ता जगदङ्कुररूपो भवति	पैङ्गलो. १।२
स ह अविदूर एव शवशयितमात्रेयमच्छावदमुपदर्शयन्नुवाच	छाग. २।१
स य एषोऽणिमैतदात्म्यमिदं सर्वम्	छांदो. ६।१२।३
स ह कामप्रश्नमेव वव्रे, तꣳ हास्मै ददौ	बृह. ४।३।१
स ह कृच्छ्री बभूव तꣳ ह चिरं वसेत्याज्ञापयाञ्चकार	छांदो. ५।३।७
स ह क्षत्ताऽविदमिति प्रत्येयाय	छांदो. ४।१।८
स ह क्षत्ताऽन्विष्य नाविदमिति प्रत्येयाय	छांदो. ४।१।७
स ह गवाꣳ सहस्रमवरुरोध दश दश पादा एकैकस्याः शृङ्गयोराबद्धा बभूवुः	बृह. ३।१।१
स ह क्षत्तान्विष्याविदमिति प्रत्येयाय (मा. पा.)	छां. उ. ४।१।८
स ह गायत्रीमेव प्रतिसन्दिदेश	शौनको. १।२
सहजं कर्म कौन्तेय	भ. गी. १८।४८
(एवं) सहजानन्दे यदा मनो लीयते तदा शान्तो भवी भवति	मं. ब्रा. २।३
सहजेनामनस्केन मनश्शल्यं वियोजयेत्	अमन. २।८१
स ह तेनैव वज्रेणासुरान् पराभावयन्	शौनको. ४।४
स ह त्रिष्टुभमेव प्रतिसन्ददत्	शौनको. ३।२
स ह द्वादशवर्ष उपेत्य चतुर्विꣳशतिवर्षः सर्वान्वेदानधीत्य महामना अनूचानमानी स्तब्ध एयाय	छांदो. ६।१।२
स ह नाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै	शांतिपाठः
स ह नौ यशः । सह नौ ब्रह्म वर्चसम्	तैत्ति. शा. पा.
स ह पञ्चदशाहानि नाशाथ हैनमुपससाद	छांदो. ६।७।२
स ह पुत्रं श्वेतकेतुं प्रजि-(गाय-) घाय याजयेति	कौ. त. १।१
स ह प्रजापतिरीक्षांचक्रे, हन्तास्मै प्रतिष्ठां कल्पयानीति	बृह. ६।४।२
स ह प्रणव उवाच—यदहं सर्वभवानि	शौनको. २।२
स ह प्रणवपर्यन्तदीर्घनिःस्वनतन्तुना । जहाविन्द्रियतन्मात्रजालं खग इवानिलः	अ. पू. ३।१४
स ह प्रणवमेवोवाच—पुरोगायमेवारभस्वेति	शौनको. ३।२
स ह प्रवाहणो जैवलिरुवाच भगवन्तावग्रेवदतां ब्राह्मणयोर्वदतोर्वाचꣳ श्रोष्यामीति	छांदो. १।८।२
स ह प्रातः सञ्जिहान उवाच—न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः । नानाहिताग्निर्नाविद्वान्न स्वैरी, स्वैरिणी कुतः	छांदो. ५।११।५
स ह प्रातः सञ्जिहान उवाच-यद्बताऽन्नस्यलभेमहि धनमात्राꣳ राजासौ यक्ष्यते सर्वैरार्त्विज्यैर्वृणीतेति	छांदो. १।१०।६
स ह प्रातः सभाग उदेयाय तꣳ होवाच मानुषस्य भगवन्गौतम वित्तस्य वरं वृणीथा इति	छांदो. ५।३।६
सहमाना नाम दक्षिणा, राज्ञी नाम प्रतीची, सुभूता नामोदीची, तासां वायुर्वत्सः, स य एवमेवं वायुं दिशां वत्सं वेद न पुत्ररोदꣳ रोदिति	छांदो. ३।१५।२
सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा	भ. गी. ३।१०
स ह रक्षांसि यद्देवाः सप्तदश	सहवै. २५
स हरिर्वसुवित्तमः	चित्सु. ११।७
स ह वा एतस्य स्वधा न यजुषा न साम्नामर्थोऽस्ति	सूर्यता. ३।१
स ह वै देवानां चासुराणां च यज्ञौ प्रततावास्ताम्	सहवै. १

स ह व्याधिनाऽनशितुं दध्रे, तमाचार्यजायोवाच-ब्रह्मचारिन्नशान, किं नु नाश्नासीति छांदो. ४।१०।३
स ह शान्तहृदय एव विरोचनोऽसुराञ्जगाम तेभ्यो हैतामुपनिषदं प्रोवाचात्मैवेह मह्य्य आत्मा परिचर्यः... छांदो. ८।८।४
स ह श्वोभूते गा अभिप्रस्थापयाञ्चकार, ता यत्राभिसायं अभूवुस्तत्राग्निमुपसमाधाय गा उपरुध्य समिधमाधाय पश्चादग्नेः प्राङुपोपविवेश [छांदो.४।६।१ +७।१+८।१
स ह षोडशं वर्षशतमजीवत् , प्र ह षोडशं वर्षशतं जीवति यएवंवेद छांदो. ३।१६।७
स ह षोडशं वर्षशतं जीवति(मा.पा.) छां.उ.३।१६।७
स ह सञ्जिहान एव क्षत्तारमुवाचाङ्गारे ह सयुग्वानमिव रैक्वमात्थेति यो नु कथ५ सयुग्वा रैक्व इति छांदो. ४।१।५
स ह समित्पाणिश्चित्रं गार्ग्यायणिं प्रतिचक्राम उपायानीति कौ. त. १।१
स ह सम्पादयाञ्चकार प्रक्ष्यन्ति मामिमे महाशाला महाश्रोत्रियाः छांदो. ५।११।३
स ह सम्पायास्त्वमाशिषमाशिभूताभूतमाशिषमाशिराशीराशिरनुभूमिः स्वाहा पारमा. ४।५
स ह सर्वत आवसथान्मापयाञ्चक्रे छांदो. ४।१।१
स ह सर्वमेवात्मानमुपसंहृत्य शृङ्ग एवागूहयत् शौनको. ३।४
स ह सहस्रं समा ब्रह्मचर्यमध्युवास अव्यक्तो. २
सहसैवाभ्यहन्यन्त भ. गी. १।१३
स ह स्मयमान उवाच सम्पश्यध्वा एव मा प्रमदत छाग. २।४
स ह स्मान्यानन्तेवासिनःसमावर्तयंस्त५ ह स्मैव न समावर्तयति छांदो. ४।१०।१
स ह स्माह पाणिना मा मातृदः बृह. ५।१२।१
स ह स्मैभ्यः कामानागायति छांदो. १।५।१३
सहस्रकमले शक्तिः शिवेन सह मोदते । सैवावस्था परा ज्ञेया.. योगकु. १।८६
सहस्रकलावयवकल्याणं दृष्टमात्रेण मोक्षदं वेषमाददे मुद्गलो. २।२
सहस्रकृत्वः प्रयुक्ताग्निष्टोमाप्तोर्यामादीनां फलमवाप्नोति सन्ध्यो. २
सहस्रदलसंख्यातं ब्रह्मरन्ध्रे महापथिम् । आधारं प्रथमं चक्रं स्वाधिष्ठानं द्वितीयकम् यो. चू. ६
सहस्रधा नैकधा चाप्तमत्र । मया ततमितीदमश्नुते तदन्यथा सद्यदि मे असद्विदुः बा. मं. १९
सहस्रपरमा देवी शतमूला शताङ्कुरा । सर्वं हरतु मे पापं दूर्वा दुःस्वप्ननाशिनी महाना. ४।१
[वनदु. १५९
सहस्रपादेकमूर्ध्ना व्याप्तं स एवेदमावरीवर्तिभूतम् अ.शिर. ३।१४
सहस्रबाहो भव विश्वमूर्ते भ. गी. ११।४६
सहस्रमेकं व्ययुतं षट्शतं चैव सर्वदा । उच्चरन्पठितो हंसः सोऽहमित्यभिधीयते ब्र. वि. ७९
सहस्रयुगपर्यन्तं भ. गी. ८।१७
सहस्ररश्मिः शतधा वर्तमानः प्राणः प्रजानामुदयत्येष सूर्यः प्रश्नो. १।८
[+मैत्रा. ६।८+ अक्ष्यु. २
सहस्रशीर्षं देवं विश्वाक्षं विश्वशम्भुवम् । विश्वं नारायणं देवमक्षरं परमं पदम् महाना. ९।१
सहस्रशीर्षं देवं सहस्राक्षं विश्वशम्भु (सम्भ) वम् [महो.१।५+ चतुर्वे. २
सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् [ऋक्.मं.१०।९०।१+ श्वेता. ३।१४
[+चित्यु.१२।१सुबालो. १।२+ पु. सू. १+
सहस्रसङ्ख्यया जाताः शाखाः साम्नः परन्तप मुक्तिको. १।१३
सहस्रं दद्मस्त एतस्यां वाचि जनको जनक इति वा उ जना धावन्तीति कौ. त. ४।१

सहस्रं वा यस्य वै वितानमादधानः सहस्रं वा आशिषः सहस्रं यस्य वै सासिकाः सहस्रं सहस्रायस्त्राहा पारमा. ४।७
सहस्रं समा आद्यन्तनिहितोङ्कारेण पदान्यगायत् अव्यक्तो. ३
सहस्राङ्कुरशाखात्म-फल-पल्लव-शालिनः। अस्य संसारवृक्षस्य मनोमूलमिदं स्थितम् मुक्तिको. २।३७
सहस्रारे जलज्योतिरन्तर्लक्ष्यम् मं. ब्रा. १।५
सहस्रार्णमतीवात्र मन्त्र एष प्रदर्शितः। एवमेतां समारूढो हंसयोगविचक्षणः॥ न भिद्यते कर्मचारैः पापकोटिशतैरपि ना. विं. ५
सहस्व मन्यो अभिमातिमस्मे रुजन्मृणन्प्रमृणन्प्रेहि शत्रून् वनदु. १०९ [ऋ. मं. १०।८४।३+ अथर्व. ४।३१।३
स ह स्वेनैव रूपेणादित्यानगच्छत् शौनको. ४।४
स ह खेतावस्मिञ्छरीरे वसतः कौ. त. ३।४
स हान्तत एवात्मानमुपसंहृत्य तावदेवाग्राहयत शौनको. २।३
स हान्नमित्यभिव्याहृत्य बृहतीसहस्रं शशंस १ ऐत. २।३।१
स हापश्यत्-सर्व एव न्यूङ्खयन्तो मामभिचक्षीरन्निति शौनको. ३।३
स हापश्यदादित्यो वा उद्गीथोऽसौ खल्वादित्यो ब्रह्म शौनको. ४।३
स हापश्यन्नेतद्‌ऋजसैवसर्वारूपाण्येव-मभिचक्षीरन् शौनको. २।२
स हाग्राप्यैव देवानेतद्भयं ददर्श छांदो. ८।१०।१
स हायमीक्षाञ्चक्रे यन्मदन्यन्नास्ति कस्मान्नु बिभेमीति बृह. १।४।२
स हायस्तः पितुरर्धमेयाय छांदो. ५।३।४
स हाविपरिहृतो मेने न मेऽस्य पुत्रेण समगादिति ३ ऐत. १।१।१
सहास्मदीयैरपि योधमुख्यैः भ. गी. ११।२६
स हाहं यशसां यशः छांदो. ८।१४।१
स हाशाथ हैनमुपससाद तꣳह यत्किञ्च पप्रच्छ सर्वꣳह प्रतिपेदे छांदो. ६।७।४

स हि खादित्वाऽतिशेषाञ्जायाया आजहार छांदो. १।१०।५
स हि ज्येष्ठः श्रेष्ठो राजाऽधिपतिः छांदो. ५।२।६
स हि प्रज्ञानेन सम्पन्नतमो विज्ञातं वदति १ ऐत. ३।२।३
स हि सर्वकाममयः पुरुषोऽध्यवसायसङ्कल्पाभिमानलिङ्गो बद्धोऽतस्तद्विपरीतो मुक्तः मैत्रा. ६।३०
स हि स्वप्नो भूत्वेमं लोकमतिक्रामति मृत्यो रूपाणि बृह. ४।३।७
स हिंकारो मघो जायते छांदो. २।१९।१
स हीदमन्नं धियाधिया जनयते बृह. १।५।२
स हीदमन्नं पुनः पुनर्जनयते बृह. १।५।२
स हेभ्यं कुल्माषान् खादन्तं बिभिक्षे छांदो. १।१०।२
सहेलं सलीलं वा स्मरणाद्वरदानेषु चतुरा गुह्यषोढा. २
सहेश्वरो यशस्वी कल्याणकीर्तिर्भवितोरीश्वरो ह तु पुरुषायुषः प्रैतोरिति ह स्माह १ ऐत. ३।५।२
स हैतयैव निविदा प्रतिपेदे बृह. ३।९।१
स हैतावानास यथा स्त्रीपुमाꣳसौ सम्परिष्वक्तौ स इममेवात्मानं द्वेधा पातयत्ततः पतिश्च पत्नी चाभवताम् बृह. १।४।३
स हैतैः सर्वैरस्माच्छरीरादुत्क्रामति कौ. त. २।१४
स हैनं पप्रच्छ त्वं नु खलु नो याज्ञवल्क्य ब्रह्मिष्ठोऽसी३ति बृह. ३।१।२
स हैव सन्तं न विजानन्ति देवाः इन्द्रस्यात्मानꣳ शतधा चरन्तम् चित्यु. ११।५
स हैवालं भार्येभ्यो भवति बृह. १।३।१८
स होता स मुक्तिः साऽतिमुक्तिः बृह. ३।१।३
स होवाच-आर्तमिवेदं ते विज्ञानमपिस्विदेनद्रोद्रस्योरेव पर्यायेणोपवन्वीमहि आर्षे. ४।२
स होवाचकिंमेप्रतीवाहोभविष्यतीति २ प्रणवो. ८
स होवाच किं मेऽन्नं भविष्यतीति छांदो. ५।२।१
स होवाचकिंमे वासो भविष्यतीति छांदो. ५।२।२

स होवाच–कुरुक्षेत्र एवोपसमेत्य ये बालिशास्तानुपाध्वै ते व इदं प्रवक्ष्यन्तीति छाग. ३।१
स होवाच–कैषा त्वं ब्रह्मवाग्यदसि शंसात्मानमिति अव्यक्तो. २
स होवाच–गार्गि माऽतिप्राक्षी-र्मा ते मूर्धा व्यपप्तत् बृह. ३।६।१
स होवाच–गार्ग्य उप त्वा यानीति बृह. २।१।१४
स होवाच–गार्ग्योयएवासावादित्ये पुरुष एतमेवाहं ब्रह्मोपास इति बृ. उ. २।१।२
स होवाच–जनको वैदेहोऽभयं त्वागच्छताद्याज्ञवल्क्य यो नो भगवन्नभयं वेदयसे बृह. ४।२।४
स होवाच–जपध्वमानुष्टुभं मंत्रराजं षट्पदं सषडक्षरम् ग. पू. १।१०
स होवाच–तपस्यन्तं सिद्धारण्ये भृगुपुत्रं पृच्छध्वमिति ग. पू. १।६
स होवाच–तां हि वै पूर्वं नारायणो यस्मिँल्लोका ओताश्च प्रोताश्च तस्यहृत्पद्माज्जातोऽब्जयोनि-स्तपस्तप्त्वा तस्मै ह वरं ददौ गोपालो. १।१४
स होवाच–त्वामेव जानीयामिति १ ऐत. २।३।४
स होवाच नारदः...निर्वैरः शान्तो दान्तः सन्यासी परमहंसा-श्रमेणास्खलित-स्वस्वरूपध्यानेन देहत्यागं करोति स मुक्तो भवति ना. प. १।१
स होवाच पितरं, तत कस्मै मां दास्यसीति। द्वितीयं तृतीयं तꣳ होवाच, मृत्यवे त्वा ददामीति कठो. १।४
स होवाच– प्रजापतिः स यो ह वै सावित्रस्याष्टाक्षरं पदं श्रिया-भिषिक्तं तत्साम्नोऽङ्गं वेद श्रिया हैवाऽभिषिच्यते नृ. पू. १।३
स होवाच प्रतर्दनस्त्वमेव वृणीष्व यं त्वं मनुष्यायहिततमं मन्यस इति कौ. त. ३।१
स होवाच– बहव इमेऽस्मिन्पुरुषे कामा नानात्ययाः छांदो. ४।१०।३
स होवाच–बालाकिर्य एवैष आदित्ये पुरुषस्तमेवाहमुपास इति कौ. त. ४।२
स होवाच–ब्रह्मपुत्रस्तपस्तेपे सिद्ध-क्षेत्रे महायशाः ग. पू. १।६
स होवाच– भगवंतो यदिदं सब-माध्वै यदृचोऽधीध्वै यद्यजूंषि यत्सामानि कस्यायं महिमेति छाग. १।२
स होवाच भगवान् ब्रह्मा आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान्सच्चिदानन्द-स्वरूपो भवति ना. उ. ता. १।१
स होवाच भगवान् ब्रह्मा नारायण-यन्त्रमन्त्रावरणपूजामाचचक्षे ना. पू. ६।१
स होवाच भगवान् उपासनविधिं व्याचष्टे ना. पू. ४।११
स होवाच यदिदमिच्छाचिदिच्छा-चिदीक्षध्वै किं तद्येन ब्राह्मण इति छाग. १।३
स होवाच–यदेतदस्मिन्मण्डले-ऽर्चिर्दीप्यते बम्भ्रम्यमाणमिव, चाकश्यमानमिव, जाज्वल्य-मानमिव, देदीप्यमानमिव, लेलिहानं तदेव मे ब्रह्म आर्षे. ५।२
स होवाच– याज्ञवल्क्यः प्रिया बतारे नः सती बृ. उ. २।४।४
स होवाच याज्ञवल्क्यः – सो-ऽविमुक्त उपास्यः.. जाबालो. २
स होवाचाजातशत्रुं काश्यं ब्रह्म ते ब्रवाणीति बृह. २।१।१
स होवाचाजातशत्रुः सहस्रमेतस्यां वाचि दद्मो जनको जनक इति वै जना धावन्तीति बृह. २।१।१
स होवाचेन्द्रो यत्स्वामुद्गीथेनोपाव-नेष्यन्ते तेनैवते कल्पयिष्यन्तीति शौनको. ४।२
स होवाचोषस्तश्चाक्रायणो यथा विब्रूयादसौ गौरसावश्व इत्येव-मेवैतद्व्यपदिष्टं भवति बृह. ३।४।२
स होहं वैतद्भगवन्मनुष्येषु (मा.पा.) प्रश्नो. ५।१
स ह्येनन्नेदिष्ठं पस्पर्श, स ह्येनं प्रथमो विदाञ्चकार ब्रह्मेति केनो. ४।३
संपूर्ण कुम्भवदेहं कुम्भये-न्मारुतेन्धना त्रि. ब्रा. २।९८

सं मा सिञ्चन्तु मरुतः समिन्द्रः
सं बृहस्पतिः सह्वै. २२
संयमासंयमाभ्यां च संसारः
शान्तिमन्वगात् महो. ४।८७
संयमाग्निषु जुह्वति भ. गी. ४।२६
संयुक्तमेकतां याति तथाऽऽत्म-
न्यात्मविन्मुनिः २ आत्मो. २५
संयुक्तमेतत्क्षरमक्षरं च व्यक्ताव्यक्तं
भरते विश्वमीशः । अनीशश्चात्मा
बध्यते भोक्तृभावाज्ज्ञात्वा देवं
मुच्यते सर्वपाशैः श्वेता. १।८
[+ भवसं. २।५+ ना. प. ९।७
संयोग एषां न त्वात्मभावादात्मा
ह्यनीशः सुखदुःखहेतोः ना. प. ९।१
संयोगो योग इत्युक्तो जीवात्म-
परमात्मनोः भवसं. ३।१३
संवत्सर आत्माऽश्वस्य मेध्यस्य बृह. १।१।१
संवत्सरत्रयादूर्ध्वं प्राणायामपरो नरः त्रि. ब्रा. १०२
संवत्सरत्रयेणाऽपि लयस्थस्यापि
योगिनः । तेजस्तत्त्वस्य सिद्धिः
स्याच्चोयतत्त्वमयो भवेत् अमन. १।७६
संवत्सरश्च यजमानश्च लोकाः
सोमो यत्र पवते यत्र सूर्यः मुण्ड. २।१।६
संवत्सरस्य तेजोभूतस्य भूतस्यात्म-
भूतस्य त्वमात्माऽसि कौ. त. १।६
संवत्सरं दीक्षितो भवति संवत्सरा-
देवात्मानं पुनीते सह्वै. १२
संवत्सरं पयसा जुह्वदपपुनर्मृत्युं
जयतीति बृह. १।५।२
संवत्सरं मज्जो नाश्नीयात्तद्व्रतम् छांदो. २।१९।२
संवत्सरः प्रजननम् सह्वै. २३
संवत्सरात्खल्वेताः प्रजाः प्रजायन्ते
संवत्सरेणेह वै जाता विवर्धन्ते
संवत्सरे प्रत्यस्तं यन्ति मैत्रा. ६।१५
संवत्सरादादित्यमादित्याच्चन्द्रमसं
चन्द्रमसो विद्युतं तत्पुरुषो-
ऽमानवः [छांदो. ४।१५।५+ ५।१०।२
संवत्सरादेवात्मानं पुनीते सह्वै. १२

संवत्सरो वै प्रजापतिः, तस्यायने
दक्षिणं चोत्तरं च प्रश्नो. १।९
संवत्सरोऽसावादित्यः म. ना. १७।१३
संवर्गोऽसि पाप्मानं मे संवृङ्धि कौ. त. २।७
संवर्चसा पयसा संतनूभिरगन्महि
मनसा स९ शिवेन सह्वै. ५
संवर्तकोऽग्निर्मरुतो विराडेकर्षि-
र्भास्वती स्मृता सा साम्न-
श्चतुर्थः पादो भवति नृ. पू. २।१
संवादमिममद्भुतम् भ.गी. १८।७६
संवादमिममश्रौषं भ.गी. १८।७४
संविद्ध सदसच्चापि चाहं
विश्वमिदं ध्रुवम् २ देव्यु. ४
संवित्संरोधनं श्रेयः प्राणादि-
स्पन्दनं वरम् अ. पू. ४।४१
संविदपेतं निरय एव मूत्रद्वारेण
निष्क्रान्तम् (शरीरं) मैत्रे. १।३
संविदा देयम् तैत्ति. १।११।३
संविदितमनोन्मन्यनुभवः मं. ब्रा. ३।१
संविद्भ्रूयाश्च तन्मध्ये शक्तिरुद्धा
स्थिता परा । तत्र पूर्णां गिरौ
पीठे शक्तिं ध्यात्वा विमुच्यते योगरा. १८
संविद्वस्तुदशालम्बः सा यस्येह
न विद्यते । सोऽसंविदजडः
प्रोक्तः कुर्वन्कार्यशतान्यपि अ. पू. ४।९८
संविन्मात्रपरोऽस्म्यहम् १ सं.सो. २।४७
संविन्मात्रमहं महत् महो. ६।८१
संविन्मात्रस्थितश्चाहमजोऽस्मि
किमतः परम् । व्यतिरिक्तं
जडं सर्वं स्वप्नवच्च विनश्यति स्कन्दो. ३
संविन्मात्रं परं ब्रह्म तत्त्वमात्रं
विजृम्भते स्कन्दो. शीर्षकं
संविभज्य सुतानर्थं ग्राम्यकामान्
विसृज्य च कुण्डिको. ३
संविभज्य सुतानर्थैर्ग्राम्यकामा-
न्विसृज्य च । चरेत वाममार्गेण
शुचौ देशे परिभ्रमन् २ सन्यासो. ४
संविशत्यात्मनाऽऽत्मानं य एवं वेद नृसिंहो. २।७

संवृत्त्या जायते सर्वं शाश्वतं नास्ति तेन वै अ. शां. ५७
संवेद्य वर्जितमनुत्तममाद्यमेकं संवित्पदं विकलनं कलयन् महात्मन् । हृद्येव तिष्ठ कलनारहितः क्रियां तु कुर्वन्नकर्तृपदमेत्य शमोदितश्रीः अ. पू. ४।९१
संवेद्यसम्परित्यागात्प्राणस्पन्दनवासने । समूलं नश्यतः क्षिप्रं मूलच्छेदादिव द्रुमः अ. पू. ४।५४
संवेद्येन हृदाकाशे मनागपि न लिप्यते । यस्यासावजडा संवित् जीवन्मुक्तः स कथ्यते अ. पू. ४।५९
संशयात्मा विनश्यति भ. गी. ४।४०
संशये समनुप्राप्ते ब्रह्मनिश्चयमाश्रयेत् ते. बिं. ६।१०१
संशान्तदुःखमजडात्मकमेकमुत्तमानन्दमन्थरमपेतरजस्तमो यत् । आकाशकोशतनवोऽतनवो महान्तस्तस्मिन्पदे गलितचित्तलवा भवन्ति अ. पू. ४।२४
संशान्तसर्वसङ्कल्पः प्रशान्तसकलेषणः । निर्विकल्पपदं गत्वा स्वस्थो भव मुनीश्वर महो. ६।८२
संशान्तसर्वसङ्कल्पा या शिलावदवस्थितिः । जाग्रन्निद्राविनिर्मुक्तासा स्वरूपस्थितिः परा [महो.५।६+ मैत्रे. २।३०
सं॰ शाम्यति तन्निधनम् छांदो. २।१२।१
संशितं मे ब्रह्म संशितं वीर्यं बलं सहवै. ८
संशितं क्षत्रं मे जिष्णु यस्याहमस्मि पुरोहितः सहवै. ८
संसार एव दुःखानां सीमान्त इति कथ्यते । तन्मध्ये पतिते देहे सुखमासाद्यते कथम् महो. ६।२६
संसारदुःखानि न मां स्पृशन्ति वराहो. ३।३
संसारदोषदृष्ट्यैव विरक्तिर्जायते सदा । विरक्तस्य तु संसारात् सन्न्यासः स्यान्न संशयः ना. प. ६।२६
संसारनिवृत्तिमार्गप्रवृत्तिः कदापि न जायते त्रि. म. ना.५।३

संसारपारं मुनयोऽपि यान्ति हेरम्बो. ७
संसारमण्डलं दुःखं पच्यन्ते यत्र जन्तवः इतिहा. १२
संसारमेव निस्सारं दृष्ट्वा सारदिदृक्षया । सन्न्यसेद्बन्धनाशाय परं वैराग्यमाश्रितः[भवसं.१।१+ नार. प. ३।१५
संसाररात्रिदुस्स्वप्ने शून्ये देहमये भ्रमे । सर्वमेव पवित्रं तदृष्टं संसृतिविभ्रमम् महो. ६।२२
संसाराडम्बरमिदं कथमभ्युदितं मुने । कथं च प्रशमं याति किं यत्कस्य कदा वद महो. २।१५
संसाराडम्बरमिदं कथमभ्युत्थितं गुरो । कथं प्रशममायाति यथावत्कथयाशु मे महो. २।३०
संसाराम्बुनिधावस्मिन् वासनाम्बुपरिप्लुते । ये प्रज्ञानावमारूढास्ते तीर्णाः पण्डिताः परे महो. ५।१७६
संसारार्णवसञ्जातं सेवितं मम मानसे । चन्द्रसूर्यविषो दिव्यां ध्वजा मेरुर्हिरण्मयः गोपालो. २।२६
संसारितोऽयमानन्दमयो रस आत्मानमानन्दमयतया प्रपद्यते सामर. १०२
संसारे च गुहावाच्ये मायाज्ञानादिसंज्ञके । निहितं ब्रह्म यो वेद परमे व्योम्नि संज्ञिते ॥ सोऽश्नुते सकलान्कामान्क्रमेणैव द्विजोत्तमः कठश्रु. १३
संसारेषु नराधमान् भ. गी. १६।१९
संसिद्धिमपि गच्छेद्द्वियया सह ज्ञानवान् संहितो. ३।८
संसिद्धिं परमां गताः भ. गी. ८।१५
संसिद्धिं लभते नरः भ. गी. १८।४५
संसिद्धोऽयं जीवसञ्ज्ञो मायोपाधिभेदेन नानाशरीरभावमाप्नोति सामर. १००
संसिद्धौ कुरुनन्दन भ. गी. ६।४३
संसृज्य विश्वा भुवनानि गोपाः श्वेताश्व. ३।२
संसृज्य विश्वा भुवनानि गोप्ता बटुको. २२

(अथ) संसृतिबन्धमोक्षयोर्विद्याविद्ये चक्षुषी उपसंहृत्य — महावा. १
संस्कारसहितं धार्यम् (भस्म) — बृ. जा. ३।१
संसृष्टं धनमुभयं समाकृतमस्मभ्यं दत्तां वरुणश्च मन्युः — वनदु. ११३
[ऋ. मं. १०।८४।७+ — अथर्व. ४।३१।७
संस्तभ्य सिंहं स्वसुतान्गुणार्थान् संयोज्य शृङ्गैर्ऋषभस्य हत्वा । वश्यां स्फुरन्तीमसतीं निपीड्य सम्भक्ष्य सिंहेन स एष वीरः — नृसिंहो. ४।३
संस्तभ्यात्मानमात्मना — भ. गी. ३।४३
संस्थितानि पूर्वाणि दारुपात्राण्यग्नौ जुहुयात् (यतेः) — कठरु. २
संहारप्रणवः सृष्टिप्रणवश्चान्तर्बहिश्चोभयात्मकत्वात्त्रिविधो ब्रह्मप्रणवः — ना. प. ८।१
संहाररूपा रुद्राणी भवति — ना. पू. ता. २।१
संहारो निर्गुणप्रणवः — तुरीयो. १
सं हास्मै पद्यते यं कामं कामयते, य एवं वेद — बृह. ६।१।४,४
सा कलहंसी सृष्टयादौ ब्रह्मणः पुत्री सरस्वती — सामर. ९२
सा कारणं कारणकारणाधिपा नास्याश्च कश्चिज्जनिता न चाधिपः — गुह्यका. ६८
साकारमनित्यं नित्यं निराकारं — त्रि. म. ना. २।१
साकारस्तु द्विविधः सोपाधिको निरुपाधिकश्च — त्रि. म. ना. २।१
साकारः सावयवो निरवयवं निराकारम् — त्रि. म. ना. २।१
सा कालपुत्रपदवी सा महावीचिवागुरा । सासिपत्रवनश्रेणी या देहेऽहमिति स्थितिः — ना. प. ३।५०
साकं स एको भूतश्चरति प्रजानां तस्मादुच्यत एकः — वटुको. २०
सा काष्ठा सा परा गतिः — कठो. ३।११
सा कुण्डलिनी कण्ठोर्ध्वभागे सुप्ता चेद्योगिनां मुक्तये भवति — शाण्डि. १।७।३७

साक्षाच्छक्तिर्भगवतः स्मरणमात्ररूपाविर्भावप्रादुर्भावात्मिका — सीतो. २५
साक्षात् कथयतः स्वयम् — भ. गी. १८।७५
साक्षादपरोक्षाद्ब्रह्म — बृह. ३।४।२,२
साक्षाद्विधिमुखो ह्येष समाधिः पारमार्थिकः — मुक्तिको. २।५६
साक्षान्नारायणो देवः परं ब्रह्माभिधीयते — ना. पू. ता. ५।७
(अहो) साक्षान्नारायणोऽयं परं ब्रह्म — सामर. ५४
साक्षाद्ब्रह्म गोपालपुरी भवति — गोपालो. १।१५
साक्षाद्ब्रह्मस्वरूपो जगन्नाथः — राधोप. ४।१
साक्षाद्ब्रह्मैव, नान्योऽस्तीत्येवं ब्रह्मविदां स्थितिः — वराहो. २।२१
साक्षाद्भूयात्तु मङ्गलम् — शिवो. ७।८०
साक्षिण्येषा केवला निर्गुणा च — गुह्यका. ६९
साक्षिभूते समे स्वच्छे निर्विकल्पे चिदात्मनि । निरिच्छं प्रतिबिम्बन्ति जगन्ति मुकुरे यथा — महो. ५।५५
साक्षी चेता केवलो निर्गुणश्च — श्वेता. ६।११
[+राधोप. ४।३+ब्रह्मो. १६+ — गोपालो. २।१९
साक्षी सम्पूर्णकेवलः — महो. २।७३
साक्षी स्वप्रकाशः — नृसिंहो. ९।६
साक्ष्यनपेक्षोऽहं निजमहिम्नि संस्थोऽहमचलोऽहम् — आ. प्र. ४
साक्ष्यविशेषोऽनन्योऽसुखदुःखोऽद्वयः परमात्मा — नृसिंहो. ९।७
साक्ष्यहं किञ्चिदप्यत्र न कुर्वे नापि कारये — १ अवधू. १५
साक्ष्यहं सर्वदा नित्यश्चिन्मात्रोऽहं न संशयः — सर्वसारो. ८
सा गतिर्लोक एव सः — मैत्रा. ६।२४
सा गौरभवदृषभ इतरस्तां समेवाभवत् — बृह. १।४।४
साग्निका अग्निव्रतधारकाः कर्मजडास्तैः सह कदाचित्तद्धर्मालापनं न कुर्यात् — सामर. २२

साऽग्र एव सुभिक्षा बभूव तान्प्रति- गृह्य निदधौ	छांदो. १।१०।५
साङ्ख्य एवाववुद्धा ये ते साङ्ख्या योगिनः परे	अ. पू. ५।४९
साङ्ख्ययोगौ पृथग्बालाः	भ. गी. ५।४
साङ्ख्यं योगं समभ्यस्ये पुरुषं पञ्चविंशकम्	निरुक्तो. १।७
साङ्ख्ये कृतान्ते प्रोक्तानि	भ. गी. १८।१३
सा चेदस्मै न दद्यात् काममेना- मवक्रीणीयात्, सा चेदस्मै नैव दद्यात्काममेनां यष्ट्या वा पाणिना वोपहत्यातिक्रामेत्	बृह. ६।४।७
सा चेदस्मै दद्यादिन्द्रियेण ते यशसा यश आदधामीति	बृह. ६।४।८
सा चैवाग्निः, सा च सूर्यः, सा वायुः, सा च चन्द्रमाः	गुह्यका. ५२
सा जीवन्मुक्ततोदेति स्वरूपानन्द- दायिनी	महो. ४।३८
साज्यं हविरनामयं मोदमिति शिखां यज्ञोपवीतं पितरं पुत्रं कलत्रं कर्म चाध्ययनं मन्त्रान्तरं विसृज्यैव परिव्रजत्यात्मवित्	ना. प. ३।७७
सा तु (सुषुम्ना) मूलाधारादारभ्य ब्रह्मरन्ध्रगामिनी भवति	अद्वयता. २
सा त्वं वीरवती भव याऽस्मान् वीरवतोऽकरत्	बृह. ६।४।२८
सात्यकिश्चापराजितः	भ. गी. १।१७
सा त्याज्या सर्वयत्नेन सर्वनाशे- ऽप्युपस्थिते। स्प्रष्टव्या सा न भव्येन सश्वमांसेव पुल्कसी	ना. प. ३।५०
सा त्रिविधा व्याप्य तिष्ठति (माया)	सामर. ९८
सात्त्विकत्वात् समष्टित्वात् साक्षि- त्वाज्जगतामपि। जगत्कर्तुमकर्तुं वा चान्यथा कर्तुमीशते...	सरस्व. ४०
सात्त्विकमायात्मको विष्णुः	पा. ब्र. २
सात्त्विक-राजस-तामस-लक्षणानि त्रयो गुणाः	शारीरको. ५
सात्त्विकं निर्मलं फलम्	भ. गी. १४।१६
सात्त्विकं परिचक्षते	भ. गी. १७।१७
सात्त्विकांशेन जायन्ते कर्मण्या द्रव्यसम्पदः। रजस्तमः- स्वरूपेण भावा यज्ञबहिष्कृताः	भवसं. ४।७
सात्त्विकी ज्ञानशक्तिः। राजसी क्रियाशक्तिः। तामसी द्रव्यशक्तिः	ग. शो. ४।३
सात्त्विकी राजसी चैव	भ. गी. १७।२
सात्त्विकोऽस्मि सदाऽस्म्यहम्	मैत्रे. ३।६
सात्त्विक्या दिशो वायुःसूर्योवरुणो- ऽश्विनाविति ज्ञानेन्द्रियदेवताः	गणेशो. ४।४
सार्धकार्णद्वयं रामो रमन्ते यत्र योगिनः	रामर. ५।४
सा देवी त्रिधा भवति, शक्त्यासना इच्छाशक्तिः क्रियाशक्तिः साक्षाच्छक्तिरिति	सीतो. ६
साधकः साधयेत्सर्वमिह लोके परत्र च	सूर्यता. ६।३
साधनचतुष्टयसम्पन्नः सन्न्यस्तुमर्हति	ना. प. २।१
साधनचतुष्टयसम्पन्नः सर्वसंसारोपरि मनोवाक्कायकर्मभिर्यथाशानिवृत्तः	ना. प. १।१
साधनचतुष्टयसम्पन्नो यः सन्न्यस्यति स एव ज्ञानसन्न्यासी	१ सं. सो. २।१३
साधनसम्पन्न एव सन्न्यस्तुमर्हति	१ सं. सो. २।१
साधनं प्रभवेत्पुंसां वैराग्यादि- चतुष्टयम्	वराहो. २।२
साधयन् वज्रकुम्भानि नव द्वाराणि बन्धयेत्	ब्र. वि. ७५
साधवो दीनवत्सला एवासते	सामर. ३७
साधिभूताधिदैवं मां	भ. गी. ७।३०
साधियज्ञं च ये विदुः	भ. गी. ७।३०
साधुकारी साधुर्भवति	बृह. ४।४।५
साधुत्वे नियोगं सुलभं पवित्रं सुलभं सुकरं तद्विष्णुक्षेत्रं	नारदो. १
साधुनैनमुपागादित्येव तदाहुः	छांदो. २।१।२
साधुभिः पूज्यमानोऽस्मिन् पीड्य- मानेऽपि दुर्जनैः। समभावो भवेद्यस्य स जीवन्मुक्त उच्यते	अध्यात्मो. ४७
साधुरेव स मन्तव्यः	भ. गी. ९।३०

साधुवेशं समाश्रित्य जीवन्ति बहवो नराः । नरके रौरवे घोरे कर्मत्यागात्पतन्ति ते — भवसं. १।५४
साध्या उत्तरत उद्यन्ति तपन्ति वर्षन्ति स्तुवन्ति — मैत्रा. ७।४
साधुष्वपि च पापेषु — भ. गी. ६।९
साध्यानामेव तावदाधिपत्यं स्वाराज्यं पर्येता — छांदो. ३।१०।४
साध्या मनुष्याः पशवो वयांसि । प्राणापानौ व्रीहियवौ तपश्च — मुण्ड. २।१।७
सानन्दं निश्चलं चेतस्ततः सुश्लिष्ट-मुच्यते । अतीव निर्मलीभूतं सानन्दं च सुलीनकम् — अमन. २।५७
सा निशा पश्यतो मुनेः — भ. गी. २।६९
सान्निध्ये विषयाणां यः समर्थो विकलेन्द्रियः । सुप्तवद्वर्तते नित्यं स भिक्षुर्मुग्ध उच्यते — ना. प. ३।६८
सान्नेनोपसमाहिता प्राज्वालीत्तयै-तर्हि वेदाननुभवति — छांदो. ६।७।६
सा पुनर्विकृतिं प्राप्य सत्त्वोद्रिक्ता-ऽव्यक्ताख्यावरणशक्तिरासीत् — पैङ्गलो. १।२
सा प्रसिद्धाऽतिदुःखाय सुखा-योच्छेदमागता (वासना-तन्तुबद्धोऽयं लोको विपरिवर्तते) — महो. ५।८७
साऽब्रवीत्तपसा मां विजिज्ञासस्वेति — अव्यक्तो. २
साऽब्रवीदज्ञेयं हि तत्सौम्य तेजः । यदविज्ञेयं तदव्यक्तम — अव्यक्तो. २
साऽब्रवीदहं ब्रह्मस्वरूपिणी — देव्यु. १
साऽब्रवीद्विमेमि वा एतदेभ्यो ययोजीयांसो बलीयांस इमे पराभवन्निति — शौनको. ३।२
साऽब्रवीद्विमेमि वा एतदेतेभ्यो ययोजीयांसो बलीयांस इमे परावृतन्निति — शौनको. ४।२
सा ब्रह्मणः पुत्री आप्तयौवनैवास्त — सामर. ९२
सा ब्रह्मेति होवाच ब्रह्मणो वा एतद्विजये महीयध्वमिति — केनो. ४।१
सा भक्तिस्त्रिविधैव भवति — सामर. २
सा भावयित्री भावयितव्या भवति — २ ऐत. ४।३

साम तु जानीयाद्यो जानीते सोऽमृतत्वं च गच्छति — नृ. पू. १।५
सामतो गायत्र्युष्णिग्बृहती त्रिष्टु-ब्विद्वपदेति — १ ऐत. ३।४।२
सामन्तश्चेन्द्रियाक्रान्तैर्मनो मन्ये विवेकिनः — महो. ५।७९
साम प्राणं प्रपद्ये [प्रवर्ग्यः. १+ — वा. सं. ३६।१
साम-प्राणो वै साम, प्राणे हीमानि सर्वाणि भूतानि सम्यञ्चि — बृह. ५।१३।३
सामर्थ्यशक्तिः सर्वसिद्धिप्रदा भवति — सौभाग्य. २६
सामवेद एवोद्यजुर्वेदो गीः ऋ-ग्वेदस्थं दुग्धेऽस्मै वाग्दोहम् — छांदो. १।३।७
सामवेदस्तथा द्यौश्चाहवनीयस्तथैव च । ईश्वरः परमो देवो मकारः परिकीर्तितः — ब्र. वि. ६
सामवेदेनास्तमये महीयते — सूर्यता. १।५
सामवेदे ह्रस्वोदात्त एकाक्षर उकारः — २ प्रणवो. १२
साम वै स्वः, स हिरण्यगर्भो भवति — ग. पू. ३।१
सामहंसकूजितैरतिशोभित-मानन्दमयानन्तशिखरै-रलङ्कृतं..प्रणवाख्यं विमानं विराजते — त्रि. म. ना.७।९
सामाथो यः कश्च गेष्णः स स्वरः — १ ऐत. ३।६।४
सामानि यो वेद स वेद सर्वं, यो मानसं वेद स वेद ब्रह्म — इतिहा. ९
सामानि सम्राड्सुरन्तरिक्षम् — एका. ७
सामान्येव मधुकृतः, सामवेद एव पुष्पं, ता अमृता आपः — छांदो. ३।३।१
सा माया स्ववशोपाधिः सर्व-ज्ञस्येश्वरस्य हि । वश्यमायत्व-मेकत्वं सर्वज्ञत्वं च तस्य तु — सरस्व. ३९
सामैवाहं संहितां मन्य इति — ३ ऐत. १।५।३
सामैश्चिदन्तो विरजश्च बाहुं हिरण्मयं वेदविदां वरिष्ठम् — एका. १०
सामोत्तरः पक्षः, आदेश आत्मा — तैत्ति. २।३
साम्न उद्गीथो रसः — छांदो. १।१।२
साम्नः सहस्रशाखाः स्युः, पञ्च-शाखा अथर्वणः — सीतो. १६

साम्नः सायुज्यꣳ सलोकतां जयति, य एवमेतत्साम वेद — बृह. १।३।२२
साम्नः सायुज्यꣳ सलोकतां जयति, य एवं वेद — बृह. ५।१३।३
साम्नामादित्यो दैवतं तदेव ज्योतिः — २ प्रणवो. २१
साम्नामेव तद्रसेन साम्नां वीर्येण साम्नां यज्ञस्य विरिष्टꣳ सन्दधाति — छांदो. ४।१७।६
साम्बरा वा दिगम्बरा वा न तेषां धर्माधर्मौ, न मेध्यामेध्यौ — १ अवधू. ६
साम्बं मामव वृषभारूढं...पशुपाशविमोचकं पुरुषं... — भस्मजा. २।४
साम्येन मधुसूदन — भ. गी. ६।३३
साम्राज्यदायिनी नित्यं सर्ववेदस्वरूपिणी। महाविद्या जगन्माता मुनीनां मोक्षदायिनी — ना. पू. ता.२।३
सा यदा मृत्युमत्यमुच्यत सोऽग्निरभवत् — बृह. १।३।१२
सायंप्रातस्तु यः सन्ध्यामरकन्यामुपविष्ठते। स तया पावितो देव्या ब्राह्मणः पूतकिल्बिषः — सन्ध्यो. ७
सायं प्राश्नीयात्सोऽयं सायंहोमः यत्प्रातः सोऽयं प्रातः (होमः) — कठश्रु. २१
सायं ये नोपतिष्ठन्ति ब्राह्मण्यं प्राप्य दुर्लभम्। अब्राह्मणांस्तु तान्विद्याद्यथा शूद्रास्तथैव ते — सन्ध्यो. १५
सायं सन्ध्यामुपासीत कृतवीरासनो द्विजः। कृतोत्थानस्तथा प्रातः प्राञ्जलिः सुसमाहितः — सन्ध्यो. ५
सायं सन्ध्या सरस्वती वृद्धा कृष्णाङ्गी कृष्णवासिनी — गायत्रीर. ६
सा या दीनतयाऽसम्पूर्णाऽसंसृष्टाऽसंव्यता वाक् सा पुरुषपशव्या — संहितो. १।३
सा या ब्रह्मणि चितिर्या व्यष्टिस्तां चितिं जयति तां व्यष्टिं व्यश्नुते — कौ. त. १७
सा या यदा मृत्युमत्यमुच्यत[मा.पा.] — बृ.ह. १।३।१२
सारमेव रसं लब्ध्वा...सुखी भवति — कठरु. २६
सारस्वतो वा एष देवो न हि पारमात्मिकः ह योऽभयो वा सर्वे सन्धुषे स्वाहा — पारमा. ३।७
सारादपि महासारं शिवोपनिषदं परम्। अल्पग्रन्थं महार्थं च प्रवक्ष्यामि जगद्धितम् — शिवो. १।८
सार्धत्रिकोटितीर्थेषु स्नात्वा गृहमुपागतः। स्वोदन्तं कथयामास ऋभुं नत्वा महायशाः — महो. ३।२
सार्धत्रिकोटितीर्थेषु स्नानपुण्यप्रभावतः। प्रादुर्भूतो मनसि मे विचारः सोऽयमीदृशः — महो. ३।३
सार्धसंवत्सरेणापि लयस्थस्यापि योगिनः। तोयतत्त्वस्य सिद्धिः स्यात्तोयतत्त्वमयो भवेत् — अमन. १।७५
सार्धं श्रविष्ठार्धान्तं सौम्यम् — मैत्रा. ६।१४
सार्वकामिकं मोक्षद्वारमृङ्मयं यजुर्मयं साममयं ब्रह्ममयममृतमयं भवति — नृ. पू. ५।७
सार्वकामिकं मोक्षद्वारमुद्योगिन उपदिशन्ति — नृ. पू. ५।१
सालज्यं संस्थानमपराजितमायानं — कौ. त. १।३
सालम्बस्तु समस्तकर्मातिदूरतया करचरणादिमूर्तिविशिष्टं मण्डलाद्यालम्बनं सालंबयोगः — त्रि. म. ना.८।४
सालोक्यादिविभागेन चतुर्धा मुक्तिरीरिता — मुक्तिको. १।१७
सावधानो भव त्वं च ग्राह्यग्राहकसङ्क्रमे। अजस्रमेव सङ्कल्पदशाः परिहरञ्छनैः — अ. पू. ५।१०३
सावयवत्वादवश्यमनित्यं भवत्येव — त्रि. म. ना. २।१
सा वा एषा देवतैतासां देवतानां पाप्मानं मृत्युमपहत्य यत्रासां दिशामन्तस्तद्गमयाञ्चकार — बृह. १।३।१०
सा वा एषा सर्वाणि छंदांसि — अव्यक्तो. ६
सा वाक् संवत्सरं प्रोष्यागत्योवाच कथमशकत मदृते जीवितुमिति — बृह. ६।१।८
सा वाक्—सोऽग्निस्तदेतद्ब्रह्मवर्चसमन्नाद्यमित्युपासीत — छांदो. ३।१३।२

(अथ) सावित्री गायत्र्या यजुषा प्रोक्ता तया सर्वमिदं व्याप्तं नृ. पू. ४।३
सावित्री प्रवेशपूर्वकमप्सु...वेदमातरं क्रमाद्व्याहृतिषु त्रिषु प्रविलाप्य ...ब्रह्माहमस्मीति तत्त्वमस्यादिवाक्यार्थस्वरूपानुसन्धानं कुर्वन्नुदीचीं दिशं गच्छेत् प. हं. ५
सावित्रीं प्रणवं यजुर्लक्ष्मीं स्त्रीशूद्राय नेच्छन्ति नृ. पू. १।३
सावित्रीं लक्ष्मीं यजुः प्रणवं यदि जानीयात् स्त्री शूद्रः स मृतोऽधो गच्छति नृ. पू. १।३
सावित्र्यात्मा पाशुपतं परं ब्रह्मावधूतकम् मुक्तिको. १।३७
सावित्र्याः सरस्वत्यभवत् गायत्रीर. १
सा वेत्ति वेद्यं न च तस्यास्तु वेत्ता तामाहुरग्र्यां महतीं महीयसीम् गुह्यका. ५१
सा वै दैवी वाग्यया यद्यदेव वदति तत्तद्भवति बृह. १।५।१८
सा शक्तिर्येन चालिता स्यात्स तु मुक्तो भवति [शाण्डिल्यो. १।७।३७
सा शिखा नीरैः सर्वत्रावस्थितैः कार्यं निवर्तयेत् कठश्रु. ९
(अथ) सा शुध्यति द्वितीयां जहाति, अथ सा शुध्यति तृतीयां जहाति, अथ सा शुध्यति सर्वं जहाति,सर्वैः शुध्यति छांदो. ६।११।२
सा षोडशी सषोडशीकं पुरमध्यं बिभर्ति त्रि. म. ना. १०
सा सत्यता सा शिवता साऽवस्था पारमात्मिकी। सर्वज्ञता सा सन्तुष्टिर्न तु यत्र मनः क्षतम् १सं. सो. २।४६
सा (सीता) सर्ववेदमयी सर्वदेवमयी सीतो. ६
सा (वाक्) संवत्सरं प्रोष्य पर्येत्योवाच कथमशकतर्ते मज्जीवितुमिति छांदो. ५।१।८
सा साम्नश्चतुर्थपादो भवति (क्षकारात्मिका पृथिवी) नृ. पू. २।१
सा साम्नस्तृतीयः पादो भवति नृ. पू. २।१
सा साम्नः प्रथमः पादो भवति नृ. पू. २।१
सा साम्नो द्वितीयः पादो भवति नृ. पू. २।१
सा सृष्टिर्द्विभेदा भवति; एका संसिद्धा, अन्या साधनसिद्धा सामर. ६
साऽस्यै तमात्मानमत्र गतं भावयति २ ऐत. ४।३
साहङ्कारेण वा पुनः भ. गी. १८।२४
साऽहं ब्रह्म न संसारी न मत्तोऽन्यः कदाचन। यथा फेनतरङ्गादि समुद्रादुत्थितं पुनः जा. द. १०।६
सा हि वाचामगम्यत्वादसत्तामिव शाश्वतीम्। नैरात्मसिद्धात्मदशामुपयातैव शिष्यते १ सं.सो. २।२८
सा हि सर्वगता संवित् प्राणस्पन्देन चाल्यते। चित्तैकाग्र्यादतो ज्ञानमुक्तं समुपजायते मुक्तिको. २।४१
सा हि सर्वगता संवित् प्राणस्पन्देन बोध्यते। संवित्संरोधनं श्रेयः प्राणादिस्पन्दनं वरम् अ. पू. ४।४२
सा हेयमीक्षाञ्चक्रे कथं नु माऽऽत्मान एव जनयित्वा सम्भवति बृह. १।४।४
सा हैषा गयांस्तत्रे, प्राणा वै गयास्तत्प्राणांस्तत्रे बृह. ५।१४।४
सा हैषा गायंस्तते प्राणा वै गायास्तान्प्राणांस्तते तद्गायंस्तते तस्माद्गायत्री नाम गायत्र्यु. ३
सा होवाच गान्धर्वी कथं वाऽस्मासु जातो गोपालः कथं वा ज्ञातोऽसौ त्वया मुने कृष्णः गोपालो. १।१२
सा होवाच नमस्तेऽस्तु याज्ञवल्क्य यो म एतं व्यवोचोऽपरस्मै धारयस्वेति बृह. ३।८।५
सा होवाच–बिभेमि वा एतद्देतेभ्यो यथैतत्परावृतमिति शौनको. १।३
सा होवाच मैत्रेयी–यन्नु म इयं भगो सर्वा पृथिवी वित्तेन पूर्णा स्यात्कथं तेनामृता स्यामिति बृह. २।४।२
सा होवाच– यदूर्ध्वं याज्ञवल्क्य... यद्भूतं च भवच्च भविष्यच्चेत्याचक्षते कस्मिंस्तदोतं च प्रोतं चेति बृह. ३।८।६

सा होवाच—यदेष पुरागा उदेष मे भागधेयी स्यादिति — शौनको. १।३

सा होव काले भुवनस्य गोप्त्री विश्वाधिपा सर्वभूतेषु गूढा। यस्यां युक्ता ब्रह्मर्षयोऽपि देवा ज्ञात्वा तां मृत्युपाशाश्छिनत्ति — गुह्यका. ५८

सांसारिकक्रियायुक्तं ब्रह्मज्ञोऽस्मीति वादिनम्। कर्मब्रह्मोभयभ्रष्टं तं त्यजेदन्त्यजं यथा — अमन. २।१०१

सांसिद्धिकी स्वाभाविकी, सहजा अकृता च या। प्रकृतिः सेति विज्ञेया स्वभावं न जहाति या — अ. शां. ९

सिक्त्वा ततः स्वाभिमुखं च कृत्वा लिङ्गेऽर्पयेत्पृष्ठमध्यं दलानाम् — १ बिल्वो. ८

सितया शर्करयाऽभिषिच्य सर्वजीववधात्पूतो भवति — भस्मजा. २।११

सितासिता च रक्ता च सर्वकामदुघा विभोः — मंत्रिको. ५

सिद्धत्वासिद्धत्वाभ्यां स्वतन्त्रास्वतन्त्रत्वेन सैषा वटबीजसामान्यवदनेकवटशक्तिरेकैव — नृसिंहो. ९।२

सिद्धमन्नं यदानीतं ब्राह्मणेन मठं प्रति। उपपन्नमिति प्राहुर्मुनयो मोक्षकाङ्क्षिणः — १सं. सो. २।७०

सिद्धये सर्वकर्मणाम् — भ. गी. १८।१३

सिद्धये सर्वभूतादि विश्वाधिष्ठानमद्वयम्। यस्मिन् सिद्धिंगताः सिद्धास्तत् सिद्धासनमुच्यते — ते. बिं. १।२६

सिद्धलक्ष्मी राजलक्ष्मीर्जयलक्ष्मीः सरस्वती। श्रीलक्ष्मीर्वरलक्ष्मीश्च प्रसन्ना मम सर्वदा — वनदु. ४

सिद्धविद्यानामासां फलं दक्षिणावत् — तारोप. ५

(ततः) सिद्धस्य कृपया योगी भवति, नान्यथा — यो. शि. १।५०

सिद्धं पद्मं तथा सिंहं भद्रं चेति चतुष्टयम् — १ यो. त. २९

सिद्धं हि ब्रह्म न ह्यत्र किञ्चानुभूयते — नृसिंहो. ९।६

सिद्धा अपि विनश्यन्ति जीर्यन्ते दानवादयः — महो. ३।५०

सिद्धानां कपिलो मुनिः — भ. गी. १०।२६

सिद्धानां सिद्धलक्ष्मीर्भवति — ना. पू. ता. २।१

सिद्धा नित्या महावीर्या इच्छारूपाः स्वयोगजाः। चिरकालात् प्रजायन्ते वासनारहितेषु च — यो. शि.१।१५५

सिद्धान्तश्रवणंनाम वेदान्तार्थविचारः — शांडि. १।२।१

सिद्धान्तोऽध्यात्मशास्त्राणां सर्वापह्नव एव हि। नाविद्याऽस्तीह नो माया शान्तं ब्रह्मेदमक्रमम् — अ. पू. ५।११२

सिद्धासने स्थितो योगी मुद्रां सन्धाय वैष्णवीम्। शृणुयाद्दक्षिणे कर्णे नादमन्तर्गतं सदा — ना. बिं. ३१

सिद्धा हि ते महाभागा नरा होकान्तिनोऽभवन्। तमोरजोभ्यां निर्मुक्ताः प्रवेक्ष्यन्ति च मां मुने — ना. महो. ३८

सिद्धिभिर्लक्षयेत्सिद्धं जीवन्मुक्तं तथैव च — यो. शि.१।१५९

सिद्धिभिः परिहीनं तु नरं बद्धं तु लक्षयेत् — यो. शि.१।१६०

सिद्धिमार्गेण लभते, नान्यथा पद्मसम्भव। नानामार्गैस्तु दुष्प्रापं कैवल्यं परमं पदम् — यो. शि. १।४

सिद्धिर्भवति कर्मजा — भ. गी. ४।१२

सिद्धिं प्राप्तो यथा ब्रह्म — भ. गी. १८।५०

सिद्धिं विन्दति मानवः — भ. गी. १८।४६

सिद्धिं समधिगच्छति — भ. गी. ३।४

सिद्धोऽहं बलवान् सुखी — भ. गी. १६।१४

सिद्धो चित्तं न कुर्वीत चञ्चलत्वेन चेतसः — यो. शि. ५।६२

सिद्धौदनं त्रिमासं तु जुह्वदमावनन्यधीः। तावज्जुह्वत्पृथुकान्हि साक्षाद्वैश्रवणो भवेत् — ग. पू. २।१२

सिद्ध्यन्ति सिद्धयो यास्तु कल्पितास्ताः प्रकीर्तिताः — यो.शि. १।१५२

सिद्ध्यसिद्ध्योर्निर्विकारः — भ. गी. १८।२६

सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा — भ. गी. २।४८

सिंहनादं विनद्योच्चैः — भ. गी. १।१२

सिन्दुरव्रातसङ्काशं रविस्थान-
स्थितं रजः। शशिस्थान-
स्थितं शुक्लं तयोरैक्यं सुदुर्लभम् योगचू. ६१
सिन्दूरवर्णः पुरुषः पुराणः हेरम्बो. ५
सिंहारूढां श्यामकान्तिं शङ्ख-
चक्रधरां हृदा। दुर्गां देवीं तथा
ध्यायेच्छरचापौ च बिभ्रतीम् वनदु. ७
सिंहो वा कुञ्जरो वाऽपि तथाऽन्यो
वा मृगो वने। नवग्राहो
दुराधर्षो विश्वस्तश्च प्रजायते योगो. ७
सीता इति त्रिवर्णात्मा साक्षा-
न्मायामयी भवेत् सीतो. २
सीता भगवती ज्ञेया मूलप्रकृति-
संज्ञिता सीतो. ५
सीतारामौ तन्मयावत्र पूज्यौ
जातान्याभ्यां भुवनानि द्विसप्त रा. पू. ३।१
सीदन्ति मम गात्राणि भ. गी. १।२८
सीवनीपार्श्वमुभयं गुल्फाभ्यां
व्युत्क्रमेण तु। निपीड्यासन-
मेतच्च मुक्तासनमितीरितम् त्रि. ब्रा. २।४६
सीवनीं गुल्फदेशाभ्यां निपीड्य
व्युत्क्रमेण तु। प्रसार्य जानुनो-
र्हस्तावासनं सिंहरूपकम् त्रि. ब्रा. २।४४
(एवं) सुकृतदुष्कृते सर्वाणि च
द्वन्द्वानि कौ. त. १।४
सुखदं संविदः स्वास्थ्यं प्राण-
संरोधनं विदुः अ. पू. ४।४५
सुखदुःखदशाधीरं साम्यान्न प्रो-
द्धरन्ति यम्। निःश्वासा इव
शैलेन्द्रं चित्तं तस्य मृतं विदुः अ. पू. ४।१२
सुखदुःखबुद्ध्या श्रेयोऽन्तःकर्ता
यदा तदा इष्टविषये बुद्धिः
सुखबुद्धिरनिष्टविषये बुद्धि-
र्दुःखबुद्धिः सर्वसारो. ५
सुखदुःखमोहसंज्ञं ह्यन्नभूतमिदं
जगत् मैत्रा. ६।१०
सुखदुःखं यथा यत्तु बोद्धव्यं
तत्तथोच्यते आयुर्वे. ५
सुखदुःखादिमोहेषु यथा संसारिणां
स्थितिः॥ तथा ज्ञानी यदा
तिष्ठेद्वासनावसितस्तदा। तयो-
र्नास्ति विशेषोऽत्र समा
संसारभावना [यो. शि. १।२२,२३
सुखदुःखे मे त्वयि दधानीति पिता,
सुखदुःखे ते मयि दध इति पुत्रः कौ. त. २।१५
सुखदुःखे समे कृत्वा भ. गी. २।३८
सुखमक्षयमश्नुते भ. गी. ५।२१
सुखमात्यन्तिकं यत्तद्बुद्धिग्राह्यमती-
न्द्रियम्। एतत्क्षराक्षरातीत-
मनक्षरमितीर्यते यो. शि. ३।१५
सुखमात्यन्तिकं यत्तत् भ. गी. ६।२१
सुखमानन्त्यमुत्तमम् शिवो. ७।११८
सुखमाप्रियते नित्यं दुःखं विप्रियते
सदा। यस्य कस्य च धर्मस्य
ग्रहेण भगवानसौ म. शां. ८२
सुखमेव लब्ध्वा करोति सुखं त्वेव
विजिज्ञासितव्यमिति छांदो. ७।२२।१
सुखरूपत्वमस्त्येतदानन्दत्वं सदा
मम (निरुपाधिकनित्यं
यत्सुप्तौ सर्वसुखात्परम्) वराहो. ३।१०
सुखरूपः स्वयम्प्रभः (आत्मा) जा. द. ५।१३
सुखसङ्गेन बध्नाति भ. गी. १४।६
सुखसंसेवितं स्वप्नं सुजीर्णमित-
भोजनम्। शरीरशुद्धिं कृत्वाऽऽदौ
सुखमासनमास्थितः॥ प्राणस्य
शोधयेन्मार्गं रेचपूरककुम्भकैः यो. शि. ५।३६
सुखस्थापितसर्वाङ्गः सुस्थिरात्मा
सुनिश्चलः। बाहुदण्डप्रमाणेन
कृतदृष्टिः समभ्यसेत् अमन. २।४९
सुखस्यानन्तरं दुःखं दुःखस्या-
नन्तरं सुखम्। न नित्यं लभते
दुःखं न नित्यं लभते सुखम् भवसं. १।१०
सुखस्यैकान्तिकस्य च भ. गी. १४।२७
सुखं त्विदानीं त्रिविधं भ. गी. १८।३६
सुखं दुःखं न जानाति शीतोष्णे
च न विन्दति। विचारं चेन्द्रि-
याणां च न वेत्ति हि लयं गतः अमन. १।२४

सुखं दुःखं भवोऽभावः म. गी. १०।४
सुखं बन्धात्प्रमुच्यते भ. गी. ५।३
सुखं भगवो विजिज्ञासे छांदो. ७।२२।१
सुखं मोहनमात्मनः भ. गी. १८।३९
सुखं वा यदि वा दुःखं भ. गी. ६।३२
सुखं ह्यवमतः शेते सुखं च प्रतिबुद्ध्यते । सुखं चरति लोकेऽस्मिन्नवमन्ता विनश्यति ना. प. ३।४२
सुखादिं दुःखनिधनां प्रतिमुञ्चस्व स्वां पुरम् अरुणो. १
सुखाद्यनुभवो यावत्तावत्प्रारब्धमिष्यते । फलोदयः क्रियापूर्वो निष्क्रियो नहि कुत्रचित् अध्यात्मो. ४९
सुखानां मूर्ध्नि दुःखानि किमेकं संश्रयाम्यहम् । (सतोऽसत्तास्थिता मूर्ध्नि रम्याणां मूर्ध्न्यरम्यता) महो. ६।२४
सुखाभ्युदयिकं चैव नैःश्रेयसिकमेव च । प्रवृत्तं च निवृत्तं च द्विविधं कर्म वैदिकम् भवसं. ५।६
सुखासनवृत्तिश्चीरवासाश्चैवमासनियमो भवति मं. ब्रा. १।१
सुखासनस्थो दक्षनाड्या बहिस्थं पवनं समाकृष्य केशमानखाग्रं कुम्भयित्वा सव्यनाड्यारेचयेत् शांडि. १।७।१४
सुखासने समासीनस्तत्त्वाभ्यासं समाचरेत् । सदाऽभ्यासेन तत्कुर्यात्परतत्त्वप्रकाशनम अमन. १।१६
सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ भ. गी. २।३२
सुखिनः स्याम माधव भ. गी. १।३७
सुखेन ब्रह्मसंस्पर्शं भ. गी. ६।२८
सुखेनैव भवेद्यस्मिन्नजस्रं ब्रह्मचिन्तनम् । आसनं तद्विजानीयादन्यत्सुखविनाशनम् ते. बिं. १।२९
सुखेषु विगतस्पृहः भ. गी. २।५६
सुघोषमणिपुष्पकौ भ. गी. १।१६
सुजीर्णोऽपि सुजीर्णासु विद्वांस्त्रीषु न विश्वसेत् । सुजीर्णास्वपि कन्यासु सज्जते जीर्णमम्बरम् १ सं. सो. २।९०
सुदर्शनदिव्यतेजोन्तर्गतः सुदर्शनपुरुषो यथा सूर्यमण्डलान्तर्गतः सूर्यनारायणोऽमितापरिच्छिन्नाद्वैतपरमानन्दलक्षणतेजोराश्यन्तर्गत आदिनारायणस्तथा सन्दृश्यते त्रि. म. ना. ३।४
सुदर्शनपुरुषो महाविष्णुरेव त्रि. म. ना. ७।४
सुदर्शनामेवाप्येति यः सुदर्शनामेवास्तमेति सुबालो. ९।२
सुदर्शनाय विद्महे हेतिराजाय धीमहि । तन्नश्चक्रः प्रचोदयात् त्रि.म.ना. ७।१०
सुदामा नारदो मुनिः कृष्णोप. २४
सुदुर्दर्शमिदं रूपं भ. गी. ११।५२
सुपर्णोऽसि गरुत्मांस्त्रिवृत्ते शिरोगायत्रं चक्षुः स्तोम आत्मा साम ते तनू वामदेव्यम् गारुडो. १४
सुपर्णोऽसि गरुत्मान्दिवं गच्छ सुवः पत ओमी... गारुडो. १५
सुपुण्यं पुण्यात्मकं वितानं दाधार देवाय स्वाहा पारमा. ६।३
सुप्तेरुत्थाय सुप्त्यन्तं ब्रह्मैकं प्रविचिन्त्यताम् वराहो. २।६४
सुभगां त्रिगुणितां मुक्तासुभगां... बीजसप्तकमुच्चार्य बृहद्भानुजायामुच्चरेत् कालिका. १
सुभूतेन मे सन्तिष्ठस्व ब्रह्मवर्चसेन मे सन्तिष्ठस्व महाना. १६।११
सुमित्रा न आप ओषधयः सन्तु दुर्मित्रास्तस्मै भूयासुर्योऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः महाना. ६।११
सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु [प्रवर्ग्या. २३+ वा. सं. ३६।२३
सुरभिविद्या अक्षमालाश्रुतिरिव परमा सिद्धा सात्त्विकी राधो. ४।१
सुरेशः सकलं बिभर्ति तस्मै सुरेशाय सकलं सुपुण्यं स्वाहा पारमा. ८।१
सुलभश्चायमत्यन्तं सुज्ञेयश्चाप्तबन्धुवत् । शरीरपद्मकुहरे सर्वेषामेव षट्पदः १ सं. सो. २।१४
सुवन्मह्यं पशून् विश्वरूपान् । पतङ्गमक्तमसुरस्य मायया (?) चित्यु. ११।१०

सुवरमादित्याय दिवे स्वाहा महाना. ७।१
सुवरिति प्रतिष्ठा, द्वे प्रतिष्ठे (मा.पा.) बृह. ५।५।३
सुवरिति यजूंषि, महरिति ब्रह्म तैत्ति. १।५।२
सुवरिति व्यानः, मह इत्यन्नम् तैत्ति. १।५।३
सुवरित्यसौ लोकः, मह इत्यादित्यः तैत्ति. १।५।१
सुवरित्यादित्यः, मह इति चन्द्रमाः तैत्ति. १।५।२
सुवरादित्याय दिवे स्वाहा महाना. ७।२
सुवरादित्याय च दिवे च महते स्वाहा महाना. ७।३
सुवर्णं कालकूटमिव सभास्थलं स्मशानस्थलमिव...कारागृहविनिर्मुक्तचोरवत्पुत्राप्तबन्धुभवस्थलं विहाय दूरतो वसेत् (यतिः) ना. प. ७।१
सुवर्णं कालकूटमिव सभास्थलं स्मशानस्थलमिव...न देवताचैनम् । प्रपञ्चवृत्तिं परित्यज्य जीवन्मुक्तो भवेत् (यतिः) १सं. सो. २।७९
सुवर्णं कोशं रजसा परीवृतम् [चित्यु. ११।४+ तै.आ. ३।११।४
सुवर्णं खादित्वाऽपगिरति (दुःस्वप्ने) ३ ऐत. २।४।७
सुवर्णं घर्मं परिवेदवेनम् [चित्यु. ११।१+ तै.आ. ३।११।१
सुवर्णाज्जायमानस्य सुवर्णत्वं च शाश्वतम् । ब्रह्मणो जायमानस्य ब्रह्मत्वं च तथा भवेत् यो. शि. ४।७
सुवसने सुवसनः परिष्कृते परिष्कृत एवमेवायमस्मिन्नन्धेऽन्धो भवति छांदो. ८।९।१
सुविभातं सकृद्विभातं पुरतोऽस्मात्सर्वस्मात्सुविभातमद्वयम् नृसिंहो. ९।९
सुशेवमिवक्रमसि प्रपश्यन्नित्था न कश्चोरणमाचचक्षे बा. मं. २
सुशोभनमठं नात्युच्चनीचायतमल्पद्वारं गोमयादिलिप्तं सर्वरक्षासमन्वितं कृत्वा तत्र वेदान्तश्रवणं कुर्वन्योगं समारभेत् शांडि. १।९।१
सुशोभनं मठं कुर्यात्सूक्ष्मद्वारं तु निर्व्रणम् १ यो. त. ३२
सुश्लिष्टं सात्त्विकं प्रोक्तं सुलीनं गुणवर्जितम् अमन. २।९३
सुश्लिष्टं च सुलीनं च विकल्पविषयापहम् (मनः) अमन. २।९४

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव । हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः.. [१शिवसं.६+२शि.सं.५ +वा.सं. ३४।६
सुषिरं मण्डलं विदुः अ. ना. २७
सुषिरो ज्ञानजनकः पञ्चस्रोतःसमन्वितः शांडि. १।७।३९
सुषुप्तस्थान एकीभूतः प्रज्ञानघन एवानन्दभुक्चेतोमुखः प्राज्ञस्तृतीयः पादः गणेशो. १।३
सुषुप्तस्थान एकीभूतः प्रज्ञानघन एवा-(एका-) नन्दमयो ह्यानन्दभुक्चेतोमुखः प्राज्ञस्तृतीयः पादः [माण्डू. ५+ नृ. पू. ४।२
सुषुप्तस्थानश्चतुरात्मा प्राज्ञ ईश्वरश्चतूरूपो मकार एव नृसिंहो. २।६
सुषुप्तस्थान एकीभूतः प्रज्ञानघन एवानन्दमयो ह्यानन्दभुक्चेतोमुखश्चतुरात्मा प्राज्ञ ईश्वरस्तृतीयः पादः नृसिंहो. १।३
सुषुप्तस्थानः प्राज्ञो मकारस्तृतीया मात्रा, मितेरपीतेर्वा; मिनोति ह वा इदं सर्वमपीतिश्च भवति माण्डू. ११
सुषुप्तस्थैर्यमासाद्य तुर्यरूपमुपाययौ । निरानन्दोऽपि सानन्दः सद्यासद्य बभूव सः अ. पू. ३।१८
सुषुप्तं च तुरीयं च नान्यावस्थासु कुत्रचित् त्रि. ब्रा. २।१०
सुषुप्तं हृदयस्थं तु तुरीयं मूर्ध्नि संस्थितम् ना. प. ६।१३
सुषुप्तिकाले सकले विलीने तमसावृते । स्वरूपं महदानन्दं भुङ्क्ते विश्वविवर्जितः वराहो. २।६२
सुषुप्तिकाले सकले विलीने तमोऽभिभूतः सुखरूपमेति कैवल्यो. १।१३
सुषुप्तिमात्राचतुष्टयं मकारांशं तुरीयमात्राचतुष्टयमर्धमात्रांशम् प. ह. प. १०
सुषुप्तिवच्चरति स्वभावपरिनिश्चलः । निर्वाणपदमाश्रित्य योगीकैवल्यमश्नुते[त्रि.ब्रा.२।१६५+ २ अवधू. ८

सुषुप्तिसमाध्योर्मनोलयाविशेषेऽपि महद्वस्त्युभयोर्भेदः मं. ब्रा. २।६
सुषुप्ते जाग्रतमस्वप्नं (आत्मानं) नृसिंहो. २।१
सुषुप्ते सुषुप्त्यादिचतस्रोऽवस्थाः, न त्वेवं तुरीयातीतस्य ना. प. ९।७
सुषुप्तौ सुखमात्राया भेदः केनावलोकितः अध्यात्मो. २५
सुषुप्तौ सुषुप्त्यादिचतस्रोऽवस्थाः प. हं. प. ९
सुषुप्त्यवस्थायां प्राज्ञस्य चातुर्विध्यं प्राज्ञविश्वः प्राज्ञतैजसः प्राज्ञप्राज्ञः प्राज्ञतुरीय इति प. हं. प. ९
सुषुप्त्यैव बुद्धिपूर्वं निबोधयति मैत्रा. २।५
सुषुम्णा पश्चिमे चारे स्थिता नाडी सरस्वती वराहो. ५।२५
सुषुम्ना कालभोक्त्री भवति शांडि. १।४।६
सुषुम्ना तु परे लीना विरजा ब्रह्मरूपिणी । इडा तिष्ठति वामेन पिङ्गला दक्षिणेन च क्षुरिको. १६
सुषुम्नान्तर्गतं विश्वं तस्मिन्सर्वं प्रतिष्ठितम् । नानानाडीप्रसवगं सर्वभूतान्तरात्मनि यो. शि. ६।१३
सुषुम्ना पिङ्गला तद्वदिडा चैव सरस्वती । पूषा च वरुणा चैव हस्तिजिह्वा यशस्विनी ॥ अलम्बुषा कुहूश्चैव विश्वोदरी तपस्विनी । शङ्खिनी चैव गान्धारा इति मुख्याश्चतुर्दश जा. द. ४।७
सुषुम्ना पूर्वभागे मेढ्रान्तं कुहूर्भवति शांडि. १।४।५
सुषुम्नापृष्ठपार्श्वयोः सरस्वतीकुहू (?) भवतः शांडि. १।४।६
सुषुम्नाया इडा सव्ये दक्षिणे पिङ्गला स्थिता जा. द. ४।१३
सुषुम्नायां यदा प्राणः स्थिरो भवति धीमताम् । सुषुम्नायां प्रवेशेन चन्द्रसूर्यौ लयं गतौ ॥ तदा समरसं भावं यो जानाति स योगवित् यो. शि. ६।३६
सुषुम्नायां यदा यस्य म्रियते मनसो रयः ।...भिद्यते च तदा ग्रन्थिः...तेयान्तिपरमां गतिम् यो. शि. ६।३७
सुषुम्नायां यदा योगी क्षणार्धमपि तिष्ठति ।...भिद्यते च तदा ग्रंथिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः यो. शि. ६।३८
सुषुम्नायां यदा हंसस्त्वध ऊर्ध्वं प्रधावति । सुषुम्नायां यदा प्राणं भ्रामयेद्यो निरन्तरम्... तदासमरसंभावं यो जानाति स योगवित् यो. शि. ६।३५
सुषुम्नायां सदा गोष्ठीं यः कश्चित्कुरुते नरः । स मुक्तः सर्वपापेभ्यो निःश्रेयसमवाप्नुयात् यो. शि. ६।४४
सुषुम्नायाः पृष्ठभागे इडा तिष्ठति, दक्षिणभागे पिङ्गला.. शांडि. १।४।६
सुषुम्नायाः शिवो देव इडाया देवता हरिः जा. द. ४।३५
सुषुम्नायाः सव्यभागे इडा तिष्ठति शांडि. १।४।६
सुषुम्नायै कुण्डलिन्यै सुधायै चन्द्रमण्डलात् । मनोन्मन्यै नमस्तुभ्यं महाशक्त्यै चिदात्मने यो. शि. ६।१
सुषुम्नावज्रनालेन पवमानं प्रसेत्तथा यो.शि. १।११८
सुषुम्ना शाम्भवी शक्तिः यो. शि. ६।१८
सुषुम्नैव परं तीर्थं सुषुम्नैव परो जपः । सुषुम्नैव परं ध्यानं सुषुम्नैव परा गतिः यो. शि. ६।४५
सुष्वपे श्येनाकाशवत् प्रश्नो. १
सुसमो यः परित्यागी सोऽसंसक्त इति स्मृतः अ. पू. २।५
सुसंवेद्यं गुरुमतात्सुदुर्बोधमचेतसाम् यो. शि. ३।२०
सुसुखं कर्तुमव्ययम् भ. गी. ९।२
सुसूक्ष्मः सार्वः सर्वेषामन्तरात्मा तस्थुस्तस्थुषां जङ्गमो जङ्गमानां विभुर्विभूनां विभवोद्भवाय स्वाहा पारमा. १।२
सुस्निग्धमधुराहारश्चतुर्थांशविवर्जितः । भुञ्जते शिवसम्प्रीत्यै मिताहारीसउच्यते [यो.चू. ४३+ योगकुं. १।३
दं सर्वभूतानां भ. गी. ५।२९

सुहृन्मित्रार्युदासीन-मध्यस्थ-द्वेष्यबन्धुषु	भ. गी. ६।९
सुहृष्टः सुदृढः स्वच्छः सुक्रान्तः सुप्रबोधितः । स्वगुणेनार्जितो भाति हृदि हृद्यो मनोमणिः	महो. ५।८२
सूक्तं बतावोचतेति तत्सूक्तमभवत्	१ ऐत. २।२।६
सूक्ष्म इति सूक्ष्मविदः स्थूल इति च तद्विदः	वैतथ्य. २३
सूक्ष्मतन्मात्राणि भूतानि स्थूलीकर्तुं सोऽकामयत	पैङ्गलो. १।४
सूक्ष्मत्वात्कारणत्वाच्च लयनाद्गमनादपि । लक्षणात्परमेशस्य लिङ्गमित्यभिधीयते	यो. शि. २।९
सूक्ष्मत्वात्तदविज्ञेयं	भ. गी. १३।१६
सूक्ष्मभुक् चतुरात्माऽथ तैजसो भूतराडयम् । हिरण्यगर्भः स्थूलोऽन्तर्द्वितीयः पाद उच्यते	ना. प. ८।१३
सूक्ष्मं सावित्रं स्वयमादधानः सावित्ररूपं परमं सुपुण्यं स्वाहा	पारमा. ७।७
सूक्ष्माङ्गं कर्मेन्द्रियाणि प्राणांश्च ज्ञानेन्द्रियाण्यन्तःकरणचतुष्टयं चैकीकृत्य...क्रमेण विलीयते	पैङ्गलो. ३।१
सूक्ष्माच्च तत्सूक्ष्मतरं विभाति [मुण्ड. ३।१।७+	गुह्यका. ३६
सूक्ष्मातिसूक्ष्मं सलिलस्य मध्ये विश्वस्य स्रष्टीमनेकाननाख्याम् । विश्वस्य चैकां परिवेष्टयित्रीं ज्ञात्वा गुहां शान्तिमत्यन्तमेति	गुह्यका. ५७
सूक्ष्मातिसूक्ष्मं कलिलस्य मध्ये विश्वस्य स्रष्टारमनेकरूपम् । विश्वस्यैकं परिवेष्टितारं ज्ञात्वा शिवं शान्तिमत्यन्तमेति	श्वेताश्व. ४।१४
सूक्ष्मात्सूक्ष्मतरं नित्यं स त्वमेव त्वमेव तत्	कैव. १६
सूक्ष्मात्सूक्ष्मतरं ज्ञेयं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु	२शिवसं. १२
सूक्ष्मांशो वत्तैजसः	वराहो. ४।१
सूचनात्सूत्रमित्याहुः सूत्रं नाम परं पदम् । तत्सूत्रं विदितं येन स विप्रो वेदपारगः	ब्रह्मो. ७
सूचनात्सूत्रमित्युक्तं सूत्रं नाम परं पदम् । तत्सूत्रं विदितं येन स मुमुक्षुः स हि भिक्षुकः (स विप्रो वेदपारगः) [परब्र.८+	ना. प. ३।७९
सूचिवद्गुणमादाय व्रजत्यूर्ध्वं सुषुम्नया । उद्घाटयेत्कपाटं तु यथा कुञ्चिकया हठात्	ध्या. विं. ६७
सूते त्रिपुरा शक्तिराद्येयं त्रिपुरा परमेश्वरी । महाकुण्डलिनी देवी..	त्रि. ता. १।६
सूत्रमन्तर्गतं येषां ज्ञानयज्ञोपवीतिनाम् । ते वै सूत्रविदो लोके ते च यज्ञोपवीतिनः [ब्रह्मो.१०+	ना. प. ३।८३
सूत्रात्माऽक्षर उच्यते, अक्षरं परमं ब्रह्म	यो. शि. ३।१६
सूत्रे मणिगणा इव	भ. गी. ७।७
सूदितस्वातिरिक्तारिसूरिनन्दात्मभावितम् । सूर्यनारायणाकारं नौमि चित्सूर्यवैभवम्	सूर्यो. शीर्षकं.
सूयते पुरुषार्थं च तेनैवाधिष्ठितं जगत्	मंत्रिको. ४
सूयते सचराचरम्	भ. गी. ९।१०
सूरिः सुराणां सुरसोऽप्यसुन्दः समूह्य देवा वरदाय पित्रे स्वाहा	पारमा. १०।२
सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्चेत्येतदुहैवो पेक्षेतोपेक्षेत	१ ऐत. २।४।२
सूर्य आत्माजगतस्तस्थुषश्च [सूर्यो.३+ [+ऋग्वे.१८ऋ.मं.१।११९।१+ [+तै. सं. १।४।४३।१ अथर्व.	२ ऐत. २।३।२ वा. सं. ७।४२ १३।२।३५
सूर्यकोटिद्युतिरथं नित्योदितमधोक्षजम् । हृदयाम्बुरुहासीनं ध्यायेद्वा विष्णुरूपिणम्	त्रि.ब्रा.२।१५३
सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमासन्निधौ वा जप्त्वा सिद्धमन्त्रो भवति	गणप. १४
सूर्यद्वारेण ते विरजाः प्रयान्ति यत्रामृतः स पुरुषो ह्यव्ययात्मा	मुण्ड. १।२।११
सूर्यमण्डलमध्येऽथ ह्यकारः शङ्खमध्यगः	अ. विं. ७

सूर्यमण्डलमाभाति हकार-
  श्चन्द्रमध्यगः — १ प्रणवो. ७

सूर्यराज्यं षोडशिना (यजति) — मैत्रा. ६।३६

सूर्यश्चक्षुर्वातः प्राणो व्यात्तमग्नि-
  र्वैश्वानरः संवत्सर आत्माऽश्वस्य
  मेध्यस्य — बृह. १।१।१

सूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च
  मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम् — महाना. ११।४

सूर्यस्त्वं ज्योतिषां पतिः — प्रश्नो. २।९

सूर्यस्यग्रहणंवत्सप्रत्यक्षयजनंस्मृतम् — ब्र. वि. ९७

सूर्यस्योपासनंकार्यंगच्छेत्सूर्यस्य॰वदम् — सूर्यता. ६।५

सूर्यनाड्या समाकृष्य वायुमभ्यास-
  योगिना । विधिवत्कुम्भकं
  कृत्वा रेचयेच्छीतरश्मिना — यो. शि. १।९१

सूर्यं ते चक्षुः — चित्त्यु. ४।१

सूर्याचन्द्रमसोरनेन विधिनाऽभ्यासं
  सदा तन्वतां शुद्धा नाडिगणा
  भवन्ति यमिनां मासत्रयादूर्ध्वतः — शांडि. १।७।१

सूर्याचन्द्रमसोरैक्यं हठ
  इत्यभिधीयते — यो.शि. १।१३३

सूर्याचन्द्रमसोर्योगो जीवात्म-
  परमात्मनोः — यो. शि. १।६८

सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वम-
  कल्पयत् [महाना.६।३+ऋ.मं. — १०।१९०।१

सूर्यात्मकत्वं दीपः — आत्मपू. १

सूर्यादिसकलभुवनप्रकाशिनी — सीतो. ७

सूर्याद्भवन्ति भूतानि सूर्येण
  पालितानि तु । सूर्ये लयं
  प्राप्नुवन्ति यः सूर्यः सोऽहमेव च — सूर्यो. ६

सूर्याद्भवः पर्जन्योऽन्नमात्मा, नमस्त
  आदित्य त्वमेव प्रत्यक्षं
  कर्मकर्ताऽसि — सूर्यो. २

सूर्याद्वै खल्विमानि भूतानि जायन्ते — सूर्यो. ३

सूर्यान्मयूखाश्च तथैव तस्य ।
  प्राणादयो वै पुनरेव तस्मात् — मैत्रा. ६।३१

सूर्यमिवाप्येति यः सूर्यमिवात्मेति — सुबालो. ९।११

सूर्यालोकपरिस्पन्दशान्तौ व्यव-
  हर्तियथा । शास्त्रसज्जनसम्पर्क-
  वैराग्याभ्यासयोगतः — शांडि. १।७।२६

सूर्याश्चन्द्रमसो नक्षत्राणि — गणेशो. ३।६

सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो
  म आवह [श्रीसू. १३+ — ऋ. खि.८७।१३

सूर्ये चित्तसंयमाद्भुवनज्ञानम् — शांडि. १।७।५२

सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा — महाना. ११।४

सूर्येण रेचयेद्वायुं सरस्वत्यास्तु चालने — योगकुं. १।१६

सूर्येण सयुजोषसः — अरुणो. १

सूर्योदये नवखेटस्तृतीये — सूर्यता. ५।१

सूर्यो न तत्र भाति न शशाङ्कोऽपि
  न स पुनरावर्तते — ना. प. ९।२२

सूर्यो यथा सर्वलोकस्य चक्षुर्न
  लिप्यते चाक्षुषैर्बाह्यदोषैः ।
  एकस्तथा सर्वभूतान्तरात्मा
  न लिप्यते लोकदुःखेन बाह्यः — कठो. ५।११

सूर्यो योनिः कालस्य — मैत्रा. ६।१४

सूर्यो रश्मिभिरादत्तात्यन्नं — मैत्रा. ६।१२

सूर्योऽस्माद्भीत उदेति — गणेशो. ४।२

सृण्येव सितया विश्वचर्षणिः
  पाशेनैव प्रतिबध्नात्यभीकाम् — त्रिपुरो. १३

सृष्टिनिमित्ताय तस्मै परब्रह्मणे
  परज्योतिषे स्वाहा — पारमा. १०।४

सृष्टिरूपा सरस्वती भवति — ना. पू. २।१

सृष्टिस्थितिलयानामादिकर्ता
  जगदङ्कुररूपो भवति — पैङ्गलो. १।२

सृष्टिस्थितिलयादीनां कारणं(सद्गुरुस्तु) — पं. ब्र. १२

सृष्टिस्थित्यन्तकरणाद्ब्रह्मविष्णु-
  शिवात्मिकाम् । स संज्ञां याति
  भगवानेक एव जनार्दनः — भवसं. २।५४

सृष्टेः परिमितानि भूतान्येकमेकं
  द्विधा विधाय...तत्तद्भुवनो-
  चितगोलकस्थूलशरीराण्यसृजत् — पैङ्गलो. १।४

सृष्ट्यां ह्यस्यैतस्यां भवति,
  य एवं वेद — बृह. १।४।५

सृंकां स्वर्णमयीं मालां (मा.पा.) — कठो. १।१६

सृंकां च माऽनेकरूपां गृहाण — कठो. १।१६

सेनयोरुभयोर्मध्ये [भ.गी.१।२१+ — १।२४+२।१०

सेनान्यास्तु प्रथमजानाध्याय-
  विष्यद्दीत्योमिति — शौनको. १।४

सेनानीनामहं स्कन्दः भ. गी. १०।२४
सेनान्यो हि तर्ह्याविर्त्यान-
कल्पयंस्तस्माज्जागतं.. शौनको. ४।३
सेन्द्रः सोऽक्षरः परमः स्वराट् महो. १।९
सेयं देवतेमास्तिस्रो देवता अनेनैव
जीवेनात्मनाऽनुप्रविश्य
नामरूपे व्याकरोत् छांदो. ६।३।३
सेयं देवतैक्षत, हंताहमिमास्तिस्रो
देवता अनेन जीवेनानुप्रविश्य
नामरूपे व्याकरवाणीति छांदो. ६।३।२
सेयं षट्कला परा परात्परा परात्परा-
तीता चित्परा चित्परात्परा
चित्परात्परातीता षोढो. १
सेवनान्मृत्युनाशिनीं वैकुण्ठार्चना-
द्विपद्धन्त्रीं...य एवं वेद स
वैष्णवो भवति तुलस्यु. २
सेवादिभिः परितोष्यैनं (गुरुं).. ना. प. ६।२४
सेवायां पाशुपाल्ये च वाणिज्ये
कृषिकर्मणि । तुल्ये सति परि-
क्लेशे वरं क्लेशो विमुक्तये शिवो. ७।११९
सैवर्क्तत्साम तदुक्थं तद्यजुस्तद्ब्रह्म छांदो. १।७।९
सैव कौबेरी (पञ्चमे धामन्युक्ता)
षष्ठे धामनि व्याचक्षते त्रि. ता. १।१६
सैव पुरत्रयं शरीरत्रयं व्याप्य
बहिरन्तरवभासयन्ती देश-
कालवस्त्वन्तरसङ्गान्महा-
त्रिपुरसुन्दरी वै प्रत्यक्चितिः बह्वृचो. २
सैव प्रकृतिरिति गणेश इति प्रधान-
मिति च माया शबलमिति च गणेशो. ४।२
सैव सायुज्यमुक्तिः स्याद्ब्रह्मा-
नन्दकरी शिवा मुक्तिको. १।२५
सैव सालोक्यसारूप्यसामीप्या
मुक्तिरिष्यते मुक्तिको. १।२३
सैवात्मा ततोऽन्यदसत्यमनात्मा बह्वृचो. २
सैवावस्था परा ज्ञेया सैव
निर्वृतिकारिणी योगकु. १।८६
सैवाविद्यारूपेण जीवबन्धभूता
क्रियाशक्तिश्च लीलाशक्तिश्चरति राधिको. ९
सैवेयं भगवती त्रिपुरेति व्यापठ्यते त्रि. ता. १।१

सैषा क्षत्रस्य योनिर्यद्ब्रह्म बृह. १।४।११
सैषा गणेशविद्या गणप. ७
सैषा गान्धर्वमयी महाविद्या गान्धर्वो. २
सैषा गायत्र्येतस्मिꣳस्तुरीये दर्शते
पदे परो रजसि प्रतिष्ठिता बृह. ५।१४।४
सैषा ग्रहा नक्षत्रज्योतींषि कला-
काष्ठादिकालस्वरूपिणी देव्यु. १२
सैषा चतुष्पदा षड्विधा गायत्री छांदो. ३।१२।५
सैषा चित्रा सुदृढा बह्वङ्कुरा स्वयं
गुणभिन्नाऽङ्कुरेष्वपि गुणभिन्ना
सर्वत्र ब्रह्मविष्णुशिवरूपिणी
चैतन्यदीप्ता नृसिंहो. ९।३
सैषा चिदमलाकारा निर्विकल्पा
निरास्पदा महो. ५।१०३
सैषा दशान्नं न निन्द्यात् प्राणः
शरीरमन्नं न परिचक्षीतापो
ज्योतिरन्नं बहु कुर्वीत तैत्ति. ३।११
सैषा देवता प्रतिहारमन्वायत्ता
तां चेदविद्वान् प्रत्यहरिष्यो
मूर्धा ते व्यपतिष्यति छांदो. १।११।९
सैषा देवता प्रस्तावमन्वायत्ता तां
चेदविद्वान् प्रास्तोष्यो मूर्धा
ते व्यपतिष्यति छांदो. १।११।५
सैषा देवतोद्गीथमन्वायत्ता तां
चेदविद्वानुदगास्यो मूर्धा
ते व्यपतिष्यति छांदो. १।११।७
सैषा द्वादशादित्या १ देव्यु. १२
सैषाऽऽनन्दस्य मीमाꣳसा भवति तैत्ति. २।८
सैषा परा शक्तिः बह्वृचो. २
सैषाऽनस्तमिता देवता यद्वायुः बृह. १।५।२२
सैषा नास्तमिता देवता
यद्वायुः (मा. पा.) बृह. १।५।२२
सैषा प्रजापतीन्द्रमनवः १ देव्यु. १२
सैषा प्राणे सर्वाप्तिः, यो वै प्राणः
सा प्रज्ञा, या वा प्रज्ञा स प्राणः कौ. ब्रा. ३।४
सैषा ब्रह्मणोऽतिसृष्टिर्यच्छ्रेयसो
देवानसृजत बृह. १।४।६
सैषा भार्गवी वारुणी विद्या तैत्ति. ३।६

सोऽन्तरिक्षं यजुर्भिरुन्नीयते स सोमलोकं स सोमलोके विभूतिमनुभूय पुनरावर्तते	प्रश्नो. ५।४
सोऽन्तवेलायामेतत्त्रयं प्रतिपद्येत	छांदो. ३।१७।६
सोऽन्ते वैश्वानरो भूत्वा सन्दग्ध्वा सर्वाणि भूतानि	सुबालो. २।२
सोऽन्वेष्टव्यः स विजिज्ञासितव्यः स सर्वा५ श्च लोकानाप्नोति	छांदो. ८।७।१
सोऽन्वेष्टव्यो मुमुक्षुभिः	पञ्चब्र. ३५
सोऽपश्यदात्मनाऽऽत्मानं गजरूपधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्	ग. पू. १।३
सोऽपि प्रणवाख्यः प्रणेता भारूपो विगतनिद्रो विजरो विमृत्यु-र्विशोको भवति	मैत्रा. ६।२५
सोऽपि मुक्तः शुभाँल्लोकान्	भ. गी. १८।७१
सो पुनरेकैव देवता भवति	बृह. १।२।७
सोऽपोऽभ्यतपत्ताभ्योऽभितप्ताभ्यो मूर्तिरजायत	२ ऐत. ३।२
सोऽबिभेत्तस्मादेकाकी बिभेति	बृह. १।४।२
सोऽब्रवीत् कबन्ध आथर्वण इति	बृह. ३।७।१
सोऽब्रवीत्–किं मेऽतः स्यादिति	शौनको. ३।३
सोऽब्रवीदहमेकः प्रथममासं वर्तामि च भविष्यामि च नान्यः कश्चिन्मत्तो व्यतिरिक्त इति	अ. शिरः. १।१
सोऽब्रवीद्वरदोऽस्म्यहमिति	ग. पू. १।६
सोऽभयस्यास्य देवस्य विग्रहो यन्त्रकल्पना । विना यन्त्रेण चेत्पूजा देवता न प्रसीदति	रा. पू. १।१३
सोऽभयं गतो भवति	तैत्ति. २।७
सोऽभिजिज्ञासत किं मे कुलं किं मे कृत्यमिति	अव्यक्तो. १
सोऽभिमानादूर्ध्वमुत्क्रमत इव तस्मिन्नुत्क्रामत्यथेतरे सर्व एवोत्क्रामन्ते	प्रश्नो. २।४
सोऽभिमानो यया निवर्तते सा विद्या	सर्वसारो. २
सोऽमन्यत पृथिवीमपि कथमपां जयेयमिति	अव्यक्तो. ८
सोऽमन्यतैतासां प्रतिबोधनाया-भ्यन्तरं प्राविशानीति	मैत्रा. २।६
सोममध्ये हुताशनः (स्थितः)	मैत्रा. ६।३८
सोमराज्यमुक्थेन (यजति)	मैत्रा. ६।३६
सोमरूपकला सूक्ष्मा विष्णोस्तत् परमं पदम्	ते. बिं. १।५
सोम संज्ञोऽयं भूतात्माऽग्निसंज्ञो-ऽप्यव्यक्तमुखः	मैत्रा. ६।१०
सोमसूर्यद्वयोर्मध्ये निरालम्बतले पुनः । संस्थिता व्योमचक्रे सा मुद्रा नाम्ना च खेचरी	शांडि. १।७।४२
सोमसूर्यपुरस्तात् सूक्ष्मः पुरुषः	अ. शिरः. ३।२
सोमसूर्यपूर्वजगदधीतं वा यदक्षरं प्राजापत्यं...सूक्ष्मं सूक्ष्मेण ग्रसति तस्मै महाग्रासाय नमः	चतुर्वे. ८
सोमं पिबन्त्यमृतेन सार्धं मृत्योः परस्मादमृता भवन्ति	इतिहा. ७
सोमः पवित्रमत्येति रेभन् [महाना. ८।४+ [+ऋ. मं. ९।९६।६+	त्रिसुप. ४ तै.आ.१०।१०।१
सोमःशक्त्यमृतमयः शक्तिकरीतनूः	बृ. जा. २।२
सोमः सोमस्य पुरोगाः	चित्त्यु. ३।१
सोमात्पर्जन्य ओषधयः पृथिव्याम्	मुण्ड. २।१।५
सोमात्मकः परः प्रोक्तः सदा साक्षी सदाऽच्युतः	यो. शि. ५।२९
सोमात्मिका ओषधीनां प्रभवति	सीतो. ७
सोमान५ स्वरणं कृणुहि ब्रह्मणस्पते [+ऋ.मं.१।१८।१+वा.सं.३।२८+	महाना. ५।९ तै.आ.१०।१।११
सोमा पूषणा जनना रयीणां जनना दिवो जनना पृथिव्याः [लिङ्गोप.१ [+तै. सं. १।८।२२।५	ऋ.मं. २।४०।१
सोमाय वासः, रुद्राय गां, वरुणा-याऽश्वं, प्रजापतये पुरुषम्	चित्त्यु. १०।२
सोमाय स्वाहेत्यग्नौ हुत्वा मन्थे सम्स्रवमवनयति	बृह. ६।३।२
सोमाय स्वाहेति मन्त्रेण ततस्तिल-व्रीहिभिः साज्यैर्जुहुयात्	भस्मजा. १।२
सोमायेति शिवं नत्वा ततः प्रक्षाल्य तद्भस्मापः पुनन्त्विति पिबेत्	भस्मजा. १।५
सोमा रुद्रा युवमेतान्यस्मे विश्वा तनूषु भेषजानि धत्तम् [ऋ. मं. ६।७४।३+	लिङ्गोप. १+ अथर्व. ७।४२।२

सोऽमावास्याः रात्रिमेतया षोडश्या कलया सर्वमिदं प्राणभृदनुप्रविश्य ततः प्रातर्जायते — बृह. १।५।१४
सोऽमृतत्वाय कल्पते — भ. गी. २।१५
सोमेन मुखेन न वै देवा अश्नन्ति, न पिबन्त्येतदेवामृतं दृष्ट्वा तृप्यन्ति — छांदो. ३।९।१
सोमेनैव मुखेनैतदेवामृतं दृष्ट्वा तृप्यति — छांदो. ३।९।३
सोमोऽत एव योऽहं सर्वेषामधिष्ठाता, सर्वेषां च भूतानां पालकः — भस्मजा. २।६
सोमो धेनुं सोमो अर्वन्तमाशुं सोमो वीरं कर्मण्यं ददाति — वनदु. ४५,५८, [७०,८१+ऋ.मं. १।९१।२०+ — वा. सं. ३४।२१
सोमो भूत्वा रसात्मकः — भ. गी. १५।१३
सोमो यत्र पवते यत्र सूर्यः — मुंड. २।१।६
सोमो राजाऽन्नस्यात्मेति वा अहमेतमुपासे — कौ. त. ४।३
सोमो यत्रातिरिच्यते तत्र सञ्जायते मनः — श्वेताश्व. २।६
सोमोऽस्मि सकलोऽस्म्यहम् — मैत्र. ३।३
सोमोऽहमेव जनिता स यश्चन्द्रमसो देवानां भूर्भुवःस्वरादीनां सर्वेषां लोकानां च — भस्मजा. २।५
सोमोऽहं जनिताऽग्नेः — भस्मजा. २।५
सोमोऽहं जनितेन्द्रस्य — भस्मजा. २।५
सोमोऽहं जनिता पृथिव्याः — भस्मजा. २।५
सोमोऽहं जनिता मतीनां — भस्मजा. २।५
सोमोऽहं जनितोत विष्णोः — भस्मजा. २।५
सोमोऽहं जनिता सूर्यस्य — भस्मजा. २।५
सोम्य शुङ्गेन तेजोमूलमन्विच्छ — छांदो. ६।८।६
सोऽयमग्निः परेण मृत्युमतिक्रान्तो दीप्यते — बृह. १।३।१२
सोऽयमात्मा चतुष्पात् — माण्डू. २
सोऽयमात्मा चतुष्पाज्जागरितस्थानः स्थूलप्रज्ञः सप्ताङ्ग एकोनविंशतिमुखः स्थूलभुक् चतुरात्मा विश्वो वैश्वानरः प्रथमः पादः — नृसिंहो. १।३
सोऽयमात्मा तमात्मानमुपासीत — सुबालो. ५।१
सोऽयमात्मा... बहिःप्रज्ञः सप्ताङ्गः... स्थूलभुग्वैश्वानरः प्रथमः पादः [गणेशो. १।१+ — रामो. २।१
सोऽयमात्मा चतुष्पाज्जगतः (?) स्थानं न बहिःप्रज्ञं नोभयतःप्रज्ञं सप्ताङ्ग एकोनविंशतिमुखः — श्रीवि. ता. १।७
सोऽयमात्मा सर्वतः शरीरैः परिवृतः — १ ऐत. ३।५।३
सोऽयमात्माऽध्यक्षरमोङ्कारोऽधिमात्रं पादा मात्रा मात्राश्च पादा अकार उकार मकार इति — माण्डू. ८
सोऽयमात्मेममात्मानममुष्या आत्मने सम्प्रयच्छति — १ ऐत. ३।७।३
सोऽयमितिहासो धन्यः पुण्यः पुत्रीयः पशव्य आयुष्यः स्वर्ग्यः — इतिहा. १
सोऽयमुशीनरेषु संवसन्मत्स्येषु कुरुपाञ्चालेषु काशीविदेहेष्विति स हाजातशत्रुं काश्यमेत्योवाच ब्रह्म ते ब्रवाणीति — कौत. ४।१
सोऽयं मनुष्यलोकः पुत्रेणैव जय्यो, नान्येन कर्मणा — बृह. १।५।१६
सोऽयं वायुः परेण मृत्युमतिक्रान्तः पवते — बृह. १।३।१३
सोऽयं विश्वात्मा देवता — ग. पू. २।८
सोऽरण्यं परेत्य द्वादशरात्रं पयसाऽग्निहोत्रं जुहुयात् — कठरु. २
सोऽर्चन्नचरत्तस्यार्चत आपोऽजायन्त — बृह. १।२।१
सो वा स्वरूपः समदृक् समग्रो विधुदं तुदन् यो विभवपदं वा वियति प्रकाशं बृहते गुहेन तं विम्बवन्तं समदं समग्रं स्वाहा — पारमा. ८।५
सोऽविकम्पेन योगेन — भ. गी. १०।७
सोऽविद्याग्रन्थिं विकिरतीह सोम्य — मुण्ड. २।१।१०
सोऽविमुक्त उपास्य इति — जाबालो. २
सोऽविमुक्त उपास्योऽयम् — रामो. ३।१
सोऽविमुक्त उपास्यो य एषोऽनन्तोऽव्यक्त आत्मा सोऽविमुक्ते प्रतिष्ठित इति — जाबालो. २
सोऽविमुक्तं ज्ञानमाचष्टे यो वैतदेवं वेद — जाबालो. २

सोऽविमुक्तं ज्ञानमाचष्टे, यो वा एतदेवं वेद — रामो. ३।४
सोऽविमुक्तः कस्मिन्प्रतिष्ठितः — जाबालो. २
सोऽवेदहं वाव सृष्टिरस्मि — बृह. १।४।५
सोऽश्नुते सर्वान् कामान् सह ब्रह्मणा विपश्चितेति — तैत्ति. २।१।१
सोऽश्राम्यत्स तपोऽतप्यत तस्य श्रान्तस्य तप्तस्य यशो वीर्यमुदक्रामत् — बृह. १।२।६
सोष्यन्यसोष्टेति पुनरुत्पादनमेवास्य तन्मरणमेवास्यावभृथः — छांदो. ३।१७।५
सोष्यन्तीमद्भिरभ्युक्षति। यथा वायुः पुष्करिणीं समिङ्गयति सर्वतः — बृ. उ. ६।४।२३
सोऽसङ्ग इति सम्प्रोक्तो ब्रह्मास्मीत्येव सर्वदा — अ. पू. २।४
सोऽसावादित्यः परेण मृत्युमतिक्रान्तस्तपति — बृह. १।३।१४
सोऽसौ चन्द्रः परेण मृत्युमतिक्रान्तो भाति — बृह. १।३।१६
सोऽस्तुवत नमो ब्रह्मणे नमो ब्राह्मणेभ्यः — ग. पू. १।५
सोऽस्मादान्तं महाभूमिकावच्छरीराग्निमेषमात्रैः प्रक्रम्य... पुनरिमं लोकं प्रतिपद्यते — निरुक्तो. २।२
सोऽस्या एतत्तृतीयं पदमाप्नुयात् — बृह. ५।१४।६
सोऽस्या एतत्प्रथमं पदमाप्नुयात् — बृह. ५।१४।६
सोऽस्या एतद्द्वितीयं पदमाप्नुयात् — बृह. ५।१४।६
सोऽस्यायमात्मा पुण्येभ्यः कर्मभ्यः प्रतिधीयते — २ ऐत. ४।४
सोऽहमपापो विरजो निर्मुक्तो मुक्तकिल्बिषः — महाना. ५।१९
सोऽहमर्कः परं ज्योतिः — महावा. ५
सोऽहमस्मि इति धीमहि चिन्तयेमहि — राधोप. २।२
सोऽहमस्मि स एवाहमस्मि — छांदो. ४।११।१
सोऽहमस्मि सहिष्णुः सोऽहमस्मीति प्राप्ते ज्ञानेन विज्ञाने ज्ञेये परमात्मनि हृदिसंस्थिते देहे लब्धाशान्तिपदं गते तदा प्रभामनोबुद्धिशून्यं भवति — पैङ्गलो. ४।९
सोऽहमस्मीति वा या भाष्यते सैषा षोडशी श्रीविद्या — बह्वृचो. ४
सोऽहमस्मीति जानीयाद्विद्वान् ब्रह्मामृतो भवेत् — पञ्चब्र. २३
सोऽहमस्मीति निश्चित्य यः सदा वर्तते पुमान्। शब्दैरुच्चावचैर्नीचैर्भाषितोऽपि न लिप्यते — योगकुं. ३।२०
सोऽहमस्मीति प्रथमं सोऽहमस्मि द्वितीयकम्। तदस्म्यहं तृतीयं च महावाक्यत्रयं भवेत् — गुह्यका. ७९
सोऽहमस्मीत्यग्रे व्याहरत् — बृह. १।४।१
सोऽहं पृथिवी सोऽहमापः, सोऽहं तेजः, सोऽहं वायुः, सोऽहं कालः, सोऽहं दिशः, सोऽहमात्मा। मयि सर्वं प्रतिष्ठितम् — भस्मजा. २।६
सोऽहमिति यावदास्थितिः स निष्ठा भवति — द. मू. १६
सोऽहमित्येतद्विधेऽस्मिन्संसारे किं कामोपभोगैः — मैत्रे. १।२
सोऽहमेकोऽपि देहारम्भभेदवशाद्बहुजीवः — निरा. ७
सोऽहमेतमेवं वायुं दिशां वत्सं वेद मा पुत्ररोदं रुदम् — छांदो. ३।१५।२
सोऽहम्भावेन पूजयेत् — स्कन्दो. १०
सोऽहम्भावो नमस्कारः [मं. ब्रा. २।५+ — आत्मपू. १
सोऽहं चिन्मात्रमेवेति चिन्तनं ध्यानमुच्यते [त्रि.ब्रा.२।३१+ — २ अवधू. ४
सोऽहं नित्यानित्यो व्यक्ताव्यक्तो ब्रह्मा ब्रह्माहं — अ. शिरः. १
सोऽहं ब्रह्म न संसारी न मत्तोऽन्यः कदाचन — जा. द. १०।६
सोऽहं भगवते विदेहान् ददामि — बृह. ४।४।२३
सोऽहं भगवते सहस्रं ददामि [बृह.४।३।१४,१५,१६,३३+ — ४।४।७
सोऽहं भगवः शोचामि तं मा भगवाञ्छोकस्य पारं तारयतु — छांदो. ७।१।३

सोऽहं भगवः सत्येनातिवदानीति
सत्यं त्वेव विजिज्ञासितव्यमिति छांदो. ७।१६।१
सोऽहं सोऽहमिति प्रोक्तो
मंत्रयोगः स उच्यते यो.शि. १।१३२
सोऽहेयमीक्षांचक्रे कथं नु मात्मान
एव जनयित्वा सम्भवति बृ. उ. १।४।४
सोहम् । ह्रौं (ह्रौं) ॐनमो भग-
वते हयग्रीवाय सर्ववागीश्वरे-
श्वराय सर्ववेदमयाय सर्वविद्यां
मे देहि स्वाहा त्रि.म.ना.७।१०
सोऽशोऽयं यश्चेतनमात्रः प्रतिपुरुषं
क्षेत्रज्ञः सङ्कल्पासङ्कल्पाध्यव
सायाभिमानलिङ्गः प्रजापतिः मैत्रा. ९।५
सौक्ष्म्यत्वादेतत्प्रमाणमनेनैव
प्रमीयते हि कालः मैत्रा. ६।१४
सौभद्रश्च महाबाहुः भ. गी. १।१८
सौभद्रो द्रौपदेयाश्च भ. गी. १।६
सौमदत्तिस्तथैव च भ. गी. १।८
सौम्यामेवाप्येति यः सौम्या-
मेवास्तमेति सुबालो. ९।४
सौम्ये आदित्याय ईशान्ये
नमो महसे.. सूर्यता. ४।१
सौवर्णं राजतं ताम्रं चेति
सूत्रत्रयम् (मालायाः) अ. मा. २
सौवर्णाम्बुजमध्यगां त्रिणयनां
सौदामिनीसन्निभां...ध्याये-
द्विन्ध्यनिवासिनीं शशिमुखीं
पार्श्वस्थपञ्चाननाम् वनदु. ६
सौवर्णे राजते ताम्रे धारयेन्मृण्मये
घटे (उत्थाप्य गां प्रयत्नेन
गायत्र्या मूत्रमाहरेत्) बृ. जा. ३।६
स्तनयति स प्रतिहार उद्गृह्णाति.. छांदो. २।१५।१
स्तनयित्नुरेव सविता, विद्युत्सावित्री,
स यत्र स्तनयित्नुस्तद्विद्युत् ,
यत्र वा विद्युत्तत्र स्तनयित्नुस्ते
द्वे योनिस्तदेकं मिथुनम् सावित्र्यु. ५
स्तनयित्नुरेवेन्द्रो यज्ञः प्रजापतिरिति
कतमः स्तनयित्नुरित्यशनिरिति
कतमो यज्ञ इति पशव इति बृह. ३।९।६

स्तनयत्येषाऽस्य तनूः मैत्रा. ६।५
स्तनं वाऽनुधापयन्त्यथ वत्सं
जातमाहुरतृणाद इति बृह. १।५।२
स्तम्भशाखेवेतराण्यनेनोर्ध्वभाग्भव-
त्यन्यथाऽधः पतति मैत्रा. ४।३
स्तम्भिनी मोहिनी वशीकरिणी
तन्त्रैकसारावयवनगरराजमुख-
बन्धनवलमुखमकरमुखसिंह-
मुखजिह्वामुखानि बन्धय बन्धय लाङ्गूलो. ८
स्तुतोमया वरदा वेदमाता महाना. ११।९
स्तुवते सततं यस्तु सोऽवतीर्णो
महीतले । वने वृन्दावने
क्रीडन्गोपगोपीसुरैः सह कृष्णो. ७
स्तुवन्ति त्वां स्तुतिभिः पुष्कलाभिः भ. गी. ११।२१
स्तुहि श्रुतं गर्तसदं युवानं मृगं न
भीममुपहत्नुमुग्रम् नृ. पू. २।४
[ऋ. मं. २।३३।११+अथर्व. १८।१।४०
स्तूयते मंत्रसंस्तुत्यैरथर्वविदितैर्विभुः मंत्रिको. १३
स्तूयमानो न तुष्येत (तु)
निन्दितोनशपेत्परान् [कुंडिको.१२ +कठरु. ७
[२ सन्यासो. १४+ कठश्रु. २७
स्तेनः सुरापो गुरुतल्पगामी मित्र-
ध्रुगेते निष्कृतेर्यान्ति शुद्धिम् शाट्याय. २६
स्तेनो हिरण्यस्य सुरां पिबंश्च
गुरोस्तल्पमावसन्ब्रह्महा च छांदो. ५।१०।९
स्तेयमकार्षीत् परशुमस्मै तपतेति छांदो. ६।१६।१
स्तोकेनानन्दमायाति स्तोके-
नायाति खेदताम् महो. ३।२६
स्तोमतो गायत्रं रथन्तरं बृहद्भद्रं
राजनमिति १ ऐत. ३।४।२
स्तोमं महदुरुगायं प्रतिष्ठां दृष्ट्वा
धृत्या धीरो नचिकेतोऽत्यस्राक्षीः कठो. २।११
स्त्रिय-(स अ-) न्नपानादिविचित्र-
भोगैः स एव जाग्रत्परितृप्तिमेति कैव. १२
स्त्रियमहिमिव त्यजेत् ना. प. ७।१
[१ सं. सो. २।७९+
स्त्रियं त्यक्त्वा जगत्यक्तं
जगत्त्यक्त्वा सुखी भवेत्
[महो. ३।४८+ याज्ञव. १७

स्त्रियं नपुंसकं...विडालं...
स्पृष्ट्वा...भस्मस्नानं समाचरेत् बृ. जा. ४।७
स्त्रियः किमिव शोभनम् महो. ३।३९
स्त्रिया सह शेते स उद्गीथः छांदो. २।१३।१
स्त्रियो हि नरकाग्नीनामिन्धनं
चारु दारुणम् [महो. ३।४४+ याज्ञव. १३
स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्राः भ. गी. ९।३२
स्त्री चैव पुरुषश्च प्रजनयतो यो
वा एतां सावित्रीमेवं वेद
स पुनर्मृत्युं जयति सावित्र्यु. ११
स्त्रीणामवाच्यदेशस्य क्लिन्ननाडी-
व्रणस्य च। अभेदेऽपि मनो
भेदाज्जनः प्रायेण वञ्च्यते ना. प. ४।२९
स्त्रीपुन्नपुंसकं लैङ्गाः परापरमथापरे वैतथ्य. २७
स्त्रीपुंसयोर्वा इहैव स्थातुमपेक्षते
तस्मै सर्वैश्वर्यं ददाति नृ. पू. १।७
स्त्रीप्रज्ञैव तर्हि कात्यायनी बृह. ४।५।१
स्त्रीभिर्वा यानैर्वा ज्ञातिभिर्वा
नोपजनं स्मरन् छांदो. ८।१२।३
स्त्रीलिङ्गं भगवत्युमा रुद्रह. ९
स्त्रीशूद्रबालिशादिभ्य उच्छिष्टं न
प्रदापयेत्। यदि दद्यात्प्रमादेन
न तद्गच्छति तान्पितॄन् इतिहा. ३६
स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय भ. गी. १।४१
स्थाणुभूतेन ळकारेण ज्योतिर्लिङ्ग-
मात्मानं धियो बुद्धयः परे
वस्तुनि ध्यानेच्छारहिते निर्वि-
कल्पके प्रचोदयात्प्रेरयेत् त्रि. ता. १।९
स्थाणुमन्येऽनुसंयन्ति यथाकर्म
यथाश्रुतम् कठो. ५।७
स्थाणुरयमच्छेद्योऽयं योऽसौ सूर्ये
तिष्ठति योऽसौ गोषु तिष्ठति गोपालो. ११२
स्थाणुर्नित्यः सदानन्दः शुद्धो
ज्ञानमयोऽमलः। आत्माऽहं सर्व-
भूतानां विभुः साक्षी न संशयः सर्वसारो. १०
स्थानत्रय-(या)-व्यतीतस्य पुनर्जन्म
न विद्यते [अ. बि. ११+ त्रि. ता. ५।११
स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम् भ. गी. १८।६२

स्थानं वीरासनं चैषां पृथ्वी चैव
प्रदक्षिणाम्। अग्निहोत्रं हुतं
चैषां ये वै सन्ध्यामुपासते सन्ध्यो. ९
स्थानादपसरणं सुराणां मैत्रा. १।८
स्थानानि स्थानिभ्यो यच्छति सुबालो. ५।१
स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या भ. गी. ११।३६
स्थापयित्वा रथोत्तमम् भ. गी. १।२४
स्थाप्यासनं गुरोः पूज्यं शिव-
ज्ञानस्य पुस्तकम्। तत्र तिष्ठेत्
प्रतीक्षंस्तद्गुरोरागमनं क्रमात् शिवो. ७।३५
स्थालीपाकस्योपघातं जुहोति बृह. ६।४।१९
स्थावरस्वरूपवान् भवति,
जङ्गमस्वरूपवान्भवति गणेशो. २।२
स्थावरं जङ्गमं बीजं तैजसं
विषमायुधम्। षडेतानि न
गृह्णीयाद्यतिर्मूत्रपुरीषवत् १ सं. सो. २।९१
स्थावराणां हिमालयः भ. गी. १०।२५
स्थितधीर्मुनिरुच्यते भ. गी. २।५६
स्थितधीः किं प्रभाषेत भ. गी. २।५४
स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते भ. गी. २।५५
स्थितप्रज्ञस्य का भाषा भ. गी. २।५४
स्थितप्रज्ञो यतिरयं यः
सदानन्दमश्नुते अध्यात्मो. ४३
स्थितश्चलति तत्त्वतः भ. गी. ६।२१
स्थितः किं मूढ एवास्मि
प्रेक्षेऽ(क्ष्योऽ)हं शास्त्रसज्जनैः।
वैराग्यपूर्वमिच्छेति शुभेच्छे-
त्युच्यते बुधैः [महो. ५।२७+ वराहो. ४।३
स्थिता देवी च मध्यतः शिवो. २।५
स्थितिरिच्छाक्रियान्वितम् पञ्चब्र. ४
स्थितिरिरिति स्थितिविदः सर्वे
चेह तु सर्वदा वैतथ्य. २८
स्थितिरित्येनदुपासीत बृह. ४।१।७
स्थितिरूपा महालक्ष्मीर्भवति ना. पू. २।१
स्थितिः सदिति चोच्यते भ. गी. १७।२७
स्थितोऽस्मि गतसन्देहः भ. गी. १८।७३
स्थितवन्ते आदिविराट् पुरुषः स्वांश-
मायोपाधिकनारायणमभ्येति त्रि. म. ना. ३।५

स्नानं कुर्यात्परेच्छया (यतिः) ना. प. ५।१५

स्नानं कृत्वा शिवतीर्थे च देहं सर्वं भस्मोद्धूलनात्पावयित्वा । त्रिपुण्ड्रं धार्यं भर्त्सनात्पातकौघगिरेर्भस्म प्राहुरत्यर्थमेतत् सि. शि. १३

स्नानं त्रिपुण्ड्रस्य शिरोललाटवक्षस्स्कन्धमणिबन्धेषु कूर्पे । नाभिप्रदेशे पार्श्वयोर्गण्डदेशे गुदप्रदेशे गुल्फयोश्च क्रमात्स्यात् सि. शि. १४

स्नानं त्रिषवणं प्रोक्तं बहूदकवनस्थयोः । हंसे तु सकृदेव स्यात्परहंसे न विद्यते ना. प. ४।२३

स्नानं दानं (पानं)तथा शौचमद्भिः पूताभिराचरेत् । स्तूयमानो न तुष्येत निन्दितो न शपेत्परान् [कुंडिको. १२+ २सन्न्यासो. १४

स्नानं पानं तथा शौचमद्भिः पूताभिराचरेत् । नदीपुलिनशायी स्याद्देवागारेषु वा स्वपेत् कठरु. ६

स्नानं मनोमलत्यागः शौचमिन्द्रियनिग्रहः [मैत्रे. २।२+ स्कन्दो. ११

स्नायुभ्योऽस्थीनि गर्भो. २

स्नुहिपत्रनिभं शस्त्रं सुतीक्ष्णं स्निग्धनिर्मलम् । समादाय ततस्तेन रोममात्रं समुच्छिनेत् योगकुं. २।२९

स्नेहप्रणयगर्भाणि पेशलान्युचितानि च । देशकालोपपन्नानि वचनान्यभिभाषते अक्ष्युप. १०

स्नेहः स्नेहेन भवति सामर. ९५

स्नेहो यथा पललपिण्डं शान्तमूलमोतं प्रोतमनु व्याप्तं व्यतिषिक्तो व्याप्यते व्यापयते.., नृ. पू. २।६

स्पन्दाच फलसम्प्राप्तिस्तस्मादेवं निरर्थकम् भवसं. १।४४

स्पर्शनेन्द्रियसंस्पर्शः स्पर्शो मानस एव च । द्विविधः सुखदुःखानां वेदनानां प्रवर्तकः आयुर्वे. ४५

स्पर्शयति सर्वमात्मा जानीत मैत्रा. ६।७

स्पर्शयितव्यमेवाप्येति यः स्पर्शयितव्यमेवास्तमेति सुबालो. ९।५

स्पर्शवान्वायुः स्पर्शवायुभ्यां भिन्नः गोपालो. १।४

स्पर्शः सर्वमसत्सदा ते. बि. ३।५७

स्पर्शं रूपं रसं गन्धं कोशाः पञ्च मनोभवाः । जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यादि मनोमयमितीरितम् ते. बि. ५।१०३

स्पर्शान् कृत्वा बहिर्बाह्यान् भ. गी. ५।२७

स्पृहां गोमांसमिव...कारागृहविनिर्मुक्तचोरवत्पुत्राप्तबन्धुभवस्थलं विहाय दूरतो वसेत् ना. प. ७।१

स्प्रष्टव्या सा न भव्येन सश्वमांसेव पुल्कसी (अहंता) ना. प. ३।५१

स्फटिकरजतवर्णं मौक्तिकीमक्षमालाममृतकलशविद्यां ज्ञानमुद्रां कराग्रे । दधतमुरगकक्ष्यं चन्द्रचूडं त्रिनेत्रं विधृतविविधभूषं दक्षिणामूर्तिमीडे द. मू. ४

स्फटिकः प्रतिबिम्बेन यथा नायाति रञ्जनम् । तज्ज्ञः कर्मफलेनान्तस्तथा नायाति रञ्जनम् अ. पू. ५।९८

स्फुरत्प्रज्वलसज्ज्वालापूज्यमादित्यमण्डलम् । ध्यात्वा हृदि स्थितं योगी प्राणायामे सुखी भवेत् यो. चू. ९७

स्फुरत्यात्मभिरात्मैव चित्तैरब्धीव वीचिभिः अ. पू. २।४१

स्फुरन्ति हि न भोगाशा मृगतृष्णासरस्स्वपि महो. ३।५६

स्मरन् मुक्त्वा कलेवरम् भ. गी. ८।५

स्मरन्नारायणं देवं चतुर्बाहुं किरीटिनम् । शुद्धस्फटिकसङ्काशं पीतवाससमच्युतम् ॥ धारयेत् पञ्च घटिकाः सर्वपापैः प्रमुच्यते १ यो. त. ८९

स्मराद्वाव भूयोऽस्तीति तन्मे भगवान्ब्रवीतु छांदो. ७।१३।२

स्मरेण वै पुत्रान्विजानाति, स्मरेण पशून् , स्मरमुपास्स्वेति छांदो. ७।१३।१

स्मरो वावाकाशाद्भूयस्तस्माद्यद्यपि बहव आसीरन्नस्मरन्तो नैव ते कञ्चन शृणुयुः.. छांदो. ७।१३।१

स्मरो वै आकाशाद्भूयान्-(मा.पा.) छां.उ. ७।१३।१
स्मशाने अनाहताङ्गी निर्वाणो. ६
स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशः भ.गी. २।६३
स्मृतिर्जायते पुरुषोत्तमात् सि. वि. २
स्मृतिर्दया क्षान्तिरहिंसा पत्नी
संयाजाः प्रा. हो. ४।३
स्मृतिर्मेधा धृतिः क्षमा भ. गी. १०।३४
स्मृतिलम्भे सर्वग्रन्थीनां विप्रमोक्षः छांदो. ७।२६।२
स्मृतिः सत्सेवनाद्यैश्च धृत्यन्तै-
रुपलभ्यते। स्मृत्या स्वभावं
भावानां स्मरन् दुःखात्
प्रमुच्यते आयुर्वे. १९
स्मृतेनापिहिता गुहा, शमेनापि-
हिता गुहा इतिहा. १६
स्मृत्या स्मार९ स्मारेण विज्ञानं
विज्ञानेनात्मानं वेदयति महाना. १७।१२
स्यातां हिमाद्रिकैलासौ तस्या
देव्यास्तु कुण्डले। स्वर्लोकश्च
भुवर्लोको देव्या ओष्ठाधरौ मतौ गुह्यका. १३
स्यां न्वहं तेनामृताऽऽहो ३ बृह. ४।५।३
स्योनापृथिवि(नो) भवा नृक्षरा
निवेशनी। यच्छा नः शर्म
सप्रथाः [महाना.५।६+ प्रवर्ग्या. १३
[+ऋ.सं.१।२२।१५+वा.सं. ३५।२१+३६।१३
स्योनेन मे सन्तिष्ठस्व महाना. १६।११
स्रवत्यमप्राम्बुवत् (ज्ञानं) शाट्याय. ३६
स्रष्टुकामो जगद्योनिस्तमोगुण-
मधिष्ठाय सूक्ष्मतन्मात्राणि
भूतानि स्थूलीकर्तुं सोऽकामयत पैङ्गलो. १।४
स्रामे स्रामः परिवृक्णे परिवृक्णः छांदो. ८।९।१
स्रुतौ मया वरदेति विसृज्योदीरणा
वत सूर्यस्यावृत्तमसम्पन्नं पुरस्ता-
यस्मात्कोशादिति यथार्थमुपतिष्ठते संध्यो. ३
स्रुवेण वा चमसेन वा कंसेन वैता
आहुतीर्जुहोति कौ. त. २।३
स्रोतसा नीयते दारु यथा निम्नोन्नत-
स्थलम्। दैवेन नीयते देहो
तथा कालोपभुक्तिषु २ आत्मो. १८
स्रोतसामपि जाह्नवी भ. गी. १०।३०

स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य भ. गी. १८।४६
स्वकर्मनिरतः सिद्धिं भ. गी. १८।४५
स्वकं रूपं दर्शयामास भूयः भ. गी. ११।५०
स्वकायं घटमित्युक्तं यथा जीवो
(दीपो) हि तत्पदम्। गुरुवाक्य-
समाभिन्ने ब्रह्मज्ञानं प्रकाशते
(स्फुटीभवेत्)[यो.शि.६।७८+ योगकुं. ३।१६
स्वकुलानुरूपामभिमतकन्यां
विवाह्य...साधनचतुष्टय-
सम्पन्नः सन्न्यस्तुमर्हति ना. प. २।१
स्वगतं च न मे किञ्चिन्न मे
भेदत्रयं क्वचित् ते. बिं. ३।४७
स्वगमननिरोधग्रहणं न कुर्यात् ना. प. ७।१
स्वगृह्योक्तविधानेन प्रतिष्ठा-
प्याग्निमीजयेत् बृ. जा. ३।११
स्वचित्तबिलसंस्थेन नानाविभ्रम-
कारिणा। बलात्कामपिशाचेन
विवशः परिभूयते महो. ३।३४
स्वचैतन्ये स्वयं स्थास्ये स्वात्मराज्ये
सुखे रमे। स्वात्मसिंहासने
स्थित्वा स्वात्मनोऽन्यन्न चिन्तये ते. बिं. ३।२५
स्वच्छतोर्जितता सत्ता हृद्यता
सत्यता ज्ञता १ सं. सो.२।५६
स्वच्छं स्वतःसिद्धमित्याचमनीयम् भावनो. ८
स्वच्छं विभाति शरदीव खमाग-
तायां चिन्मात्रमेकमजमा-
द्यमनन्तमन्तः महो. ५।५३
स्वच्छं निराकारमसङ्गमद्भुतम् १ बिल्वो. ११
स्वजनं हि कथं हत्वा भ. गी. १।३७
स्वज्ञोऽपि यत्प्रसादेन ज्ञानं तत्फल-
माप्नुयात्। सोऽयं हयास्यो
भगवान्हृदि मे भातु सर्वदा हयग्री. शीर्षकं
स्वतः पूर्णः परात्माऽत्र ब्रह्मशब्देन
वर्णितः शु. र. ३।४
स्वतः शिवः पशुपतिः साक्षी
सर्वस्य सर्वदा पा. ब्र. १२
स्वव्यतिरिक्तं सर्वं त्यक्त्वा मधुकर-
वृत्त्याऽऽहारमाहरन्कृशीभूत्वा
मेदोवृद्धिमकुर्वन्विहरेत् १ सं.सो. २।५९

स्वतेजसा विश्वमिदं तपन्तम् — भ. गी. ११।१९

स्वतो वा परतो वाऽपि न किञ्चि-
द्वस्तु जायते। सदसत्सदस-
द्वापि न किञ्चिद्वस्तु जायते — अ. शां. २२

स्वदारनिरत ऋतुकालाभिगामी
सदा परदारवर्जी प्राजापत्यः — आश्रमो. १

स्वदेशमुत्सृज्य ज्ञातचरदेशं
विहाय विस्मृतपदार्थं पुनः
प्राप्तहर्ष इव...विहाय
दूरतो वसेत् — ना. प. ७।१

स्वदेहमरणिं कृत्वा प्रणवं चोत्तरा-
रणिम्। ध्याननिर्मथनाभ्यासा-
द्देवं पश्येन्निगूढवत् — श्वेताश्व. १।१४

स्वदेहमलनिर्मोक्षो मृज्जलाभ्यां
महामुने। यत्तच्छौचं भवेद्बाह्यं
मानसं मननं विदुः — जा. द. १।२०

स्वदेहस्य तु मूर्धानं ये प्राप्य परमां
गतिम्। भूयस्ते न निवर्तन्ते
परावरविदो जनाः — कुण्डिको. २२

स्वदेहाशुचिगन्धेन न विरज्येत यः
पुमान्। विरागकारणं तस्य
किमन्यदुपदिश्यते — मुक्तिको. २।६६

स्वदेहे यो न जानाति तस्य सिद्धिः
कथं भवेत्। षट्चक्रं षोडशाधारं
त्रिलक्ष्यं व्योमपञ्चकम् — यो. चू. ४

स्वधर्म एव सर्वं धत्ते — मैत्रा. ४।३

स्वधर्ममपि चावेक्ष्य — भ. गी. २।३१

स्वधर्मे निधनं श्रेयः — भ. गी. ३।३५

स्वधाऽहमहमौषधम् — भ. गी. ९।१६

स्वधां पितृभ्यः, आशां मनुष्येभ्यः,
तृणोदकं पशुभ्यः — छांदो. २।२२।२

स्वधेति पितरः (उपासते) — मुद्गलो. ३।२

स्वपूर्णात्मातिरेकेण जगज्जीवेश्व-
रादयः। न सन्ति नास्ति माया
च तेभ्यश्चाहं विलक्षणः — वराहो. २।११

स्वपूर्वापराश्रमाचारविद्याधर्म-
प्राभवमननुस्मरंस्त्यक्त-
वर्णाश्रमाचारः...प्रणवात्मकेन
देहत्यागं करोति यः सोऽवधूतः — तुरीया. ३

स्वपौरुषैकसाध्येन स्वेप्सितत्याग-
रूपिणा। मनःप्रशममात्रेण
विना नास्ति शुभा गतिः — महो. ४।९०

स्वप्न इव मिथ्यादर्शनम् (पुण्यापुण्ये) — मैत्रा. ४।२

स्वप्न इव यः पश्यतीन्द्रियबिले — मैत्रा. ६।२५

स्वप्नजगद्भ्रमराजादितुल्यम् — निर्वाणो. ३

स्वप्नजागरणोपेता जन्तवो जागृतिं
गताः। योगिनस्तत्त्वसम्पन्ना
न जाग्रति न शेरते — अमन. २।५९

स्वप्नजागरिते स्थाने ह्येकमाहुर्मनी-
षिणः। भेदानां हि समत्वेन
प्रसिद्धेनैव कर्मणा — वैतथ्य. ५

स्वप्नजाग्रदिति प्रोक्तं जाग्रत्यपि
परिस्फुरत्...सौषुप्तिःसोच्यते गतिः — महो. ५।१८

स्वप्नदृक्चित्तदृश्यास्ते न विद्यन्ते
ततः पृथक्। तथा तद्दृश्यमेवेदं
स्वप्नदृक्चित्तमिष्यते — अ. शां. ६४

स्वप्नदृक्प्रचरन्स्वप्ने दिक्षु वै दशसु
स्थितान्। अण्डजान्स्वेदजान्वा-
ऽपि जीवान्पश्यति यान्सदा — अ. शां. ६३

स्वप्नदृष्टं च यद्वस्तु जागरे चेज्जग-
द्भवेत्। नदीवेगो निश्चलश्चेत्
केनापीदं भवेज्जगत् — ते. बिं. ६।८८

स्वप्नदेहो यथाऽध्यस्तस्तथैवायं
हि देहकः — ना. बिं. २४

स्वप्ननिद्रायुतावाद्यौ प्राज्ञस्त्वस्वप्न-
निद्रया। न निद्रां नैव च
स्वप्नं तुर्ये पश्यन्ति निश्चिताः — आगम. १४

स्वप्नमाये यथा दृष्टे गन्धर्वनगरं
यथा। तथा विश्वमिदं
दृष्टं वेदान्तेषु विचक्षणैः — वैतथ्य. ३१

स्वप्नवृत्तावपि त्वन्तश्चेतसा
कल्पितं त्वसत् — वैतथ्य. ९

स्वप्नस्थ-राज्यभिक्षाभ्यां प्रबुद्धः
स्पृशते खलु — वराहो. २।५८

स्वप्नस्थानश्चतुरात्मा तैजसो
हिरण्यगर्भश्चतूरूप उकार एव — नृसिंहो. २।५

स्वप्नस्थानस्तैजस उकारो द्वितीया मात्रोत्कर्षादुभयत्वाद्वोत्कर्षति ह वै ज्ञानसन्ततिं समानश्च भवति माण्डू. १०

स्वप्नस्थानः सूक्ष्मप्रज्ञः सप्ताङ्ग एकोनविंशतिमुखः सूक्ष्मभुक् चतुरात्मा तैजसो हिरण्यगर्भो द्वितीयः पादः नृसिंहो. १।३

स्वप्नस्थानेऽनन्तः संज्ञासप्ताङ्ग एकोनविंशतिमुखः प्रविभक्तोऽभूत् श्रीवि. ता. २।१

स्वप्नस्थानोऽन्तःप्रज्ञः सप्ताङ्ग एकोनविंशतिमुखः प्रविविक्त-भुक् तैजसो द्वितीयः पादः माण्डू. ४ [+ रामो. ता. २।२+ ग.शो. १।२

स्वप्नस्थानो बहिःप्रज्ञः सप्ताङ्ग एकोनविंशतिमुखः प्रविविक्त-भुक् तैजसो द्वितीयः पादः नृ. पू. ४।२

स्वप्नान्त उच्चावचमीयमानो रूपाणि देवः कुरुते बहूनि बृह. ४।३।१३

स्वप्नान्तं जागरितान्तं चोभौ येनानुपश्यति । महान्तं विभु-मात्मानं मत्वा धीरो न शोचति कठो. ४।४

स्वप्नावस्थायां तैजसस्य चातुर्विध्यं तैजसविश्वस्तैजसतैजसस्तैजस-प्राज्ञस्तैजसतुरीय इति प. हं. प. ९

स्वप्ने चावस्तुकः कायः पृथगन्यस्य दर्शनात् । यथा कायस्तथा सर्वं चित्तदृश्यमवस्तुकम् अ. शां. ३६

स्वप्ने चिदंशशून्यत्वं जागरे विषयग्रहः । स्वप्नजागरणा-तीता अवस्तत्त्वं विदुर्बुधाः अमन. २।६०

स्वप्ने जागरितं नास्ति जागरे स्वप्नता नहि । द्वयमेव लये नास्ति लयोऽपि ह्यनयोर्न च यो. शि. ४।११

स्वप्नेन शारीरमभिप्रहत्याऽसुप्तः सुप्तानभिचाकशीति बृह. ४।३।११

स्वप्नेऽपि यो हि युक्तः स्याज्जाग्रतीव विशेषतः । ईदृक्चेष्टः स्मृतः श्रेष्ठो वरिष्ठो ब्रह्मवादिनाम् ना. प. ५।१६

स्वप्ने स जीवः सुखदुःखभोक्ता स्वमायया कल्पितजीवलोके । सुषुप्तिकाले सकले विलीने तमोभिभूतः सुखरूपमेति कैव. १३

स्वप्रकाशचिदानन्दं स हंस इति गीयते ब्र. वि. २१

स्वप्रकाशब्रह्मतत्त्वे शिवशक्ति-सम्पुटितप्रपञ्चच्छेदनम् निर्वाणो. ५

स्वप्रकाशमधिष्ठानं स्वयम्भूय सदात्मना । ब्रह्माण्डमपि पिण्डाण्डं त्यजतां मलभाण्डवत् अध्यात्मो. ८

स्वप्रकाशं तमात्मानमप्रकाशः कथं स्पृशेत् वराहो. २।९

स्वप्रकाशं विश्वेश्वराभिधं पातालमधितिष्ठति भस्मजा. २।१०

स्वप्रकाशः परं ज्योतिः स्वानु-भूत्यैकचिन्मयः । तदेव राम-चन्द्रस्य मनोराद्यक्षरः स्मृतः रामो. ५।१

स्वप्रकाशापरोक्षत्वमयमित्युक्तितो मतम् । अहङ्कारादिदेहान्तं प्रत्यगात्मेति गीयते शु. र. ३।७

स्वप्रकाशे निरानन्दे तमो मूढस्य जायते आ. प्र. २६

स्वप्रकाशैकसंसिद्धे नास्ति माया परात्मनि । व्यावहारिकदृष्ट्येयं विद्याविद्या न चान्यथा पा. ब्र. २३

स्वप्रकाशोऽप्यविषयज्ञानत्वाज्जान-न्नेव ह्यन्यत्रान्यन्न विजानाति नृसिंहो. ९।१

स्वप्रकाशोऽस्मि चिद्घनः ब्र. वि. १०९

स्वप्रभं सच्चिदानन्दं भक्त्या जानाति चाव्ययम् वासुदे. ८

स्वभावजेन कौन्तेय भ. गी. १८।६०

स्वभावनियतं कर्म भ. गी. १८।४७

स्वभावप्रभवैर्गुणैः भ. गी. १८।४१

स्वभावमेके कवयो वदन्ति कालं तथाऽन्ये परिमुह्यमानाः । देवस्यैष महिमा तु लोके येनेदं भ्राम्यते ब्रह्मचक्रम् श्वेताश्व. ६।१

स्वभावस्तु प्रवर्तते भ. गी. ५।१४

स्वभावं भावसङ्काशमसङ्कातं पदाच्युतम् ते. बिं. १।७
स्वभावेनामृतो यस्य भावो (धर्मो) गच्छति मर्त्यताम् । कृतके- नामृतस्तस्य कथं स्थास्यति निश्चलः [अद्वैत. २२+ म. शां. ८
स्वभावोऽध्यात्ममुच्यते भ. गी. ८।३
स्वमसङ्गमुदासीनं परिज्ञाय नभो यथा । न श्लिष्यते यतिः किञ्चित्कदाचिद्भाविकर्मभिः अध्यात्मो. ५१
स्वमात्मनि स्वयं तृप्तः स्वमात्मानं स्वयं चर । आत्मानमेव मोदस्व वैदेहीमुक्तिको भव ते. बिं. ४।८१
स्वमानन्दमनुस्मरन् स्वशरीरा- भिमानदेशविस्मरणं मत्वा... दूरतो वसेत् (यतिः) ना. प. ७।१
स्वमायावैभवान्सर्वान्संहृत्य स्वात्मनि स्थितः । पञ्चब्रह्मात्मकातीतो भासते स्वस्वतेजसा पञ्चब्र. १७
स्वमुखेन सदा-(समा-) वेष्ट्य ब्रह्मरन्ध्रमुखं मुने । सुषुम्नाया इडा सव्ये दक्षिणे पिङ्गला स्थिता जा. द. ३।१३
स्वमेव सर्वतः पश्यन्मन्यमानः स्वमद्वयम् । स्वानन्दमनु- भुञ्जानो निर्विकल्पो भवाम्यहम् कुण्डिको. २७
स्वयंज्योतिर्ब्रह्माकाशः सर्वदा विराजते परं ब्रह्मत्वात् ना. प. ८।२४
स्वयंज्योतिः प्रकाशः सर्ववेद्यः सर्वज्ञः सर्वसिद्धिः सर्वेश्वरः सोऽहमिति ना. प. ९।२२
स्वयमनिन्द्रियोऽपि सर्वतः पश्यति सर्वतः शृणोति सर्वतो गच्छति सर्वतआदत्तेसर्वगःसर्वगतस्तिष्ठति नृ. पू. २।८
स्वयमनुभूयत एव देवदेवः अ. पू. १।५५
स्वयममनस्कमश्रोत्रमपाणिपादं ज्योतिर्विदितम् ब्रह्मो. ३
स्वयमवतीर्णो ह्ययमात्मा ब्रह्म सोऽहमात्मा चतुष्पात् ग. शो. ५।६
स्वयमादिः सर्वान्तरात्मा देवस्य स्वयं क्रीडात्मकमवासृजत् । यः

स्वयं लोकमवधारमवधारयन्स्वाहा पारमा. ६।१
स्वयमिन्द्रः स्वयं शिवः अध्यात्मो. २०
स्वयमीश्वरः स्वयम्प्रकाशश्चतुरात्मो- तानुज्ञात्रनुज्ञाविकल्पैरोतो ह्ययमात्मा नृसिंहो. २।७
स्वयमुच्चलिते देहे देही नित्य- समाधिना । निश्चलं तं वि- जानीयात्समाधिरभिधीयते सौभाग्य. २२
स्वयमेव कृतं द्वारं रुद्राक्षं स्यादिहोत्तमम् रु. जा. १२
स्वयमेव तु सम्पश्येद्देहे बिन्दुं च निष्कलम् ब्र. वि. ५१
स्वयमेव त्वया ज्ञातं गुरुतश्च पुनः श्रुतम् । स्वसङ्कल्पवशाद्बद्धो निःसङ्कल्पाद्विमुच्यते महो. २।७०
स्वयमेव परं ब्रह्म पूर्णमद्वयमक्रियम् अध्यात्मो. २१
स्वयमेव प्रजायन्ते लाभालाभ- विवर्जिते । योगमार्गे तथैवेदं सिद्धिजालं प्रवर्तते यो. शि. १।१५७
स्वयमेव मया पूर्वमभिज्ञातं विशेषतः । एतदेव हि पृष्टेन पित्रा मे समुदाहृतम् महो. २।३२
स्वयमेव सच्चिदानन्दस्वरूपो भवेन्न किम् रामर. १।९
स्वयमेव सौमित्रिरैक्ष्वाके वंशे जायमानो रक्षांसि सर्वाणि वि- निघ्नंश्चातुर्वर्ण्यधर्मान्प्रवर्तयति सङ्कर्षणो. २
स्वयमेव स्वयं भामि स्वयमेव सदात्मकः । स्वयमेवात्मनि स्वस्थः स्वयमेव परा गतिः ते. बिं. ३।२२
स्वयमेव स्वयं भुञ्जे स्वयमेव स्वयं रमे । स्वयमेव स्वय- ञ्ज्योतिः स्वयमेव स्वयं महः ते. बिं. ३।२३
स्वयमेव स्वयं हंसः...स्वात्मानन्दं.. स जीवन्मुक्त उच्यते ते. बिं. ४।३१
स्वयमेवाऽऽत्मनाऽऽत्मानमानन्दं पदमाप्स्यसि महो. ६।७८
स्वयमेवाऽऽत्मनाऽऽत्मानं भ. गी. १०।१५

स्वयमेवात्मनि स्वस्थः स्वयमेव
  परा गतिः ते. बिं. ३।२२
स्वयमेवैकवीरोऽग्रे स्वयमेव प्रभुः
  स्मृतः। स्वस्वरूपे स्वयं स्वप्स्ये-
  त्स जीवन्मुक्त उच्यते ते. बिं. ४।३२
स्वयम्प्रकाशमनिशं ज्वलति त्रि. म. ना.७।७
स्वयम्प्रकाशः स्वयं ब्रह्म भवति ब्र. शिखो. ३
स्वयं कल्पिततन्मात्रा जालाभ्य-
  न्तरवर्ति च। परां विवशतामेति
  शृङ्खलाबद्धसिंहवत् महो. ५।१२९
स्वयं गुणभिन्नाऽङ्कुरेष्वपि गुणभिन्ना
  (माया) सर्वत्र.. नृसिंहो. ९।३
स्वयं चैव ब्रवीषि मे भ. गी. १०।१३
स्वयंज्योतिर्ब्रह्माकाशः सर्वदाविराजते ना. प. ८।२३
स्वयं तस्मात्पशुपतिर्बभूव शरभो. १३
स्वयं कर्ता स्वयं भोक्ता स्वयं
  देवो महेश्वरः। निर्विकल्पं
  स्वयं ब्रह्म तस्याहं पञ्चमाश्रयः २ तत्त्वो. ८
स्वयं धीराः पण्डितं मन्यमानाः।
  दन्द्रम्यमाणाः (जङ्घन्यमानाः)
  परियन्ति मूढा अन्धेनैव नीय-
  माना यथान्धाः [कठो.२।५+ मुण्ड. २।८
स्वयं निर्विकल्पमशेषकल्पाधार-
  मशेषभूतान्तर्यामित्वेन...दम्भा-
  हङ्कारादिभिरसंस्पृष्टचेता वर्तत
  एवमुक्तलक्षणो यः स एव
  ब्राह्मण इति व. सू. ९
स्वयं प्रकाशिते तत्त्वे तत्क्षणा-
  त्तन्मयो भवेत् अमन. २।५४
स्वयं ब्रह्म न सन्देहः स्वस्मादन्यन्न
  किञ्चन। सर्वमात्मैव शुद्धात्मा
  सर्वं चिन्मात्रमद्वयम् ते. बिं. ६।३९
स्वयं प्रकाशिते तत्त्वे स्वानन्द-
  स्तत्क्षणाद्भवेत् अमन. २।५१
स्वयं ब्रह्मात्मकं विद्धि स्वस्मा-
  दन्यन्न किञ्चन ते. बिं. ६।५२
स्वयं ब्रह्मा स्वयं विष्णुः स्वयमिन्द्रः
  स्वयं शिवः। स्वयं विश्वमिदं
  सर्वं स्वस्मादन्यन्न किञ्चन अध्यात्मो. २०

स्वयं भातं निराधारं ये जानन्ति
  सुनिश्चितम्। ते हि विज्ञान-
  सम्पन्ना इति मे निश्चिता मतिः वराहो. २।१०
स्वयंभानः पर एको ज्योतिरेव.. २ रुद्रो. ६२
स्वयं मृत्वा स्वयं भूत्वा स्वयमेवा-
  वशिष्यते कठरु. ४६
स्वयं यतः कुतश्च न बिभेति नृ. पू. २।१०
स्वयं विहत्य स्वयं निर्माय स्वेन
  भासा स्वेन ज्योतिषा प्रस्व-
  पित्यत्रायं पुरुष स्वयंज्योतिर्भवति बृह. ४।३।९
स्वयैव सूक्ष्मया बुद्धया स्वयं
  विज्ञातवाञ्छुकः महो. २।१२
स्वयोनावुपशान्तस्य मनसः सत्य-
  (गामिनः) कामतः। इन्द्रियार्थ-
  विमूढस्यानृताः कर्मवशानुगाः
    [मैत्रा. ६।३४+ मैत्रे. १।९
स्वर इति प्रत्यास्वर इत्यमुं तस्माद्वा
  एतमिमममुं चोद्गीथमुपासीत छांदो. १।३।२
स्वरवतां रथन्तरस्य स्तोभानां
  स्वरवन्तः प्रयोक्तव्या इति संहितो. २।४
स्वरस्य का गतिरिति प्राण
  इति होवाच छांदो. १।८।४
स्वरान्वितो दक्षिणपत्रगो हरिः।
  श्रियासमेतः... १ बिल्वो. ३
स्वरितलिङ्गविभक्तिवचनानि च २ प्रणवो. १६
स्वरिति स्वर्गो लोकः स सामवेदः सन्ध्यो. २०
स्वरित्यस्याः (व्याहृत्याः) शिरः,
  नाभिर्भुवो भूःपादा आदित्यश्चक्षुः मैत्रा. ६।६
स्वरूपध्यानेन निरालम्बमवलम्ब्य
  स्वात्मनिष्ठानुकूलेन सर्वं
  विस्मृत्य... प्रणवात्मकत्वेन
  देहत्यागं करोति यः सोऽवधूतः तुरीया. ३
स्वरूपव्याप्तदेहस्य ध्यानं कैवल्य-
  सिद्धिदम् त्रि. ब्रा. २।१४८
स्वरूपसूर्येऽभ्युदिते स्फुटोक्ते-
  र्गुरोर्महावाक्यपदैः प्रबुद्धः शु. र. ३।९
स्वरूपाज्ञानमानन्दमयकोशः पैङ्गलो. २।५
स्वरूपानुसन्धानब्रह्मप्रणवध्यान-
  मार्गेणावहितः सन्न्यासेन देह-

त्यागं करोति स परमहंस-
परिव्राजको भवति प. हं. प. ८
स्वरूपानुसन्धानव्यतिरिक्तान्य-
शास्त्राभ्यास उष्ट्रकुङ्कुमभार-
वद्व्यर्थः [ना. प. ५।१५+ १ सं.सो. २।५९
स्वरूपानुसन्धानं कुर्वन्सर्वमनन्य-
बुद्ध्या स्वस्मिन्नेव मुक्तो भवति ना. प. ९।२१
स्वरूपानुसन्धानेन सर्वप्रपञ्चं
विदित्वा...देहत्यागं करोति
यः सोऽवधूतः तुरीया. ३
स्वरूपावस्थितिर्मुक्तिस्तद्भ्रंशो-
ऽहन्त्ववेदनम् महो. ५।२
स्वरेण सन्धयेद्योगमस्वरं
भावयेत्परम् ब्र. बिं. ७
स्वरेण सर्वाणि व्यञ्जनानि
व्याप्तानि एवं सर्वान्का-
मानवाप्नोति संहितो. २।३
स्वरेणसंल्लयेद्योगीस्वरंसम्भावयेत्परम् त्रि. ता. ५।७
स्वर्गकामः प्रतृण्णं उभयकाम
उभयमन्तरेण ३ ऐत. १।३।२
स्वर्गद्वारमपावृतम् भ. गी. २।३२
स्वर्गस्य स्तावं हि सामेति छांदो. १।८।५
स्वर्गलोकं गच्छति यस्तथाऽधीते संहितो. १।१
स्वर्गं लोकं यजमानायाऽऽत्मन
आगायानीत्येतानि मनसा
ध्यायन्नप्रमत्तः स्तुवीत छांदो. २।२२।२
स्वर्गं वयं लोकस्य सामाभि-
संस्थापयामः छांदो. १।८।५
स्वर्गापवर्गयोरेकं यः शीघ्रं न
प्रसाधयेत् । याति तेनैव
देहेन स मृतस्तप्यते चिरम् शिवो. ७।१२०
स्वर्गाल्लोकाच्च्यवतेऽश्राद्धमित्रः इतिहा. १९
स्वर्गांल्लोकान् कामानवाप्नुहि कौ. ब. २।१५
स्वर्गे लोके न भयं किञ्चनास्ति कठो. १।१२
स्वर्णं पर्णाशना हिविचरः पयोभक्षः संहितो. ४।१
स्वर्णजां रौप्यजां वापि लोहजां
वा शलाकिकाम् । नियोज्य
नासिकारन्ध्रं दुग्धसिक्तेन

तन्तुना ॥ ...षण्मासं मथना-
वस्था भावेनैव प्रजायते योगकुं. २।४४
स्वर्णाभामम्बुजकरां रामालोकन-
तत्पराम्... रामर. २।९७
स्वर्गो लोको ज्योतिषाऽऽवृतः अरुणो. १
स्वर्भूर्ज्योतिर्मयोऽनन्तरूपी
स्वेनैव भासते रा. पू. २।१
स्वर्लोकश्च भुवर्लोको देव्या
ओष्ठाधरौ मतौ गुह्यका. १३
स्वल्पमप्यन्तरं कृत्वा जीवात्मपर-
मात्मनोः । यस्तिष्ठति विमू-
ढात्मा भयं तस्यापि भाषितम् यो. शि. ४।८
स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य भ. गी. २।४०
स्वल्पस्पन्दो द्रव्यनिष्ठो रसो
नाहमचेतनः १ सं. सो. २।१७
स्वल्पाऽपि दीपकलिका बहुलं
नाशयेत्तमः । स्वल्पोऽपि बोधो
निबिडं बहुलं नाशयेत्तमः आ. प्र. २९
स्ववर्णाश्रमधर्मेण तपसा गुरुतोष-
णात् । साधनं प्रभवेत्पुंसां
वैराग्यादिचतुष्टयम् वराहो. २।२
स्ववपुः कुणपमिव दृश्यते प. हं. ३
स्ववपुः कुणपाकारमिव पश्यन्...
प्रणवात्मकत्वेन देहत्यागं
करोति यः सोऽवधूतः तुरीया. ३
स्ववपुः शवाकारमिव स्मृत्वा...
जातरूपधरश्चरेदात्मानमन्विच्छेत् ना. प्र. ३।८७
स्ववंशवृद्धिकामः पुत्रमेकमासाद्य
...साधनचतुष्टयसम्पन्नः
सन्न्यस्तुमर्हति ना. प. २।१
स्वव्यतिरिक्तवस्तुसङ्गरहितं स्मरणं
विभूषणम् भावनो. ८
स्वव्यतिरिक्तं सर्वमन्तर्बहिरमन्य-
मानः कस्यापि वन्दनमकृत्वा
...जातरूपधरश्चरेदात्मान-
मन्विच्छेत् ना. प. ३।८७
स्वव्यतिरिक्तं सर्वं कृतकं नश्वरमिति
मत्वा विरक्तः पुरुषः सर्वदा
ब्रह्माहमिति व्यवहरेत् ना. प. ६।२

स्वव्यातिरिक्तं सर्वं त्यक्त्वा मधुकरवृत्त्याहारमाहरन्कृशो भूत्वा मेदोवृद्धिमकुर्वन्नाज्यं रुधिरमिव त्यजेत् — ना. प. ७।१

स्वशब्देन भवेत्प्राणः स्वाधिष्ठानं तदाश्रयः (म्) [यो. चू. ११+ — ध्या. बिं. ४७

स्वशरीरव्यतिरिक्तं सर्वं त्यक्त्वा षट्पदवृत्त्या स्थित्वा स्वरूपानुसन्धानं कुर्वन्सर्वमनन्यबुद्ध्या स्वस्मिन्नेव मुक्तो भवति — ना. प. ९।२१

स्वशरीरं शवमिव हेयमुपगम्य कारागृहविनिर्मुक्तचोरवत् पुत्राप्तबन्धुभवस्थलं विहाय दूरतो वसेत् — ना. प. ७।१

स्वशरीरे यज्ञं परिवर्तयामि — प्रा. हो. २।३

स्वशरीरे यथाकामं परिवर्तते — बृह. २।१।१८

स्वशरीरे स्वयञ्ज्योतिस्स्वरूपं (पारमार्थिकम्) सर्वसाक्षिणम्। क्षीणदोषाः प्रपश्यन्ति, नेतरे माययाऽऽवृताः — अ. पू. ४।३६
[पा. ब्र. ३८+ — रुद्रहृ. ४९

स्वशाखानुगतमंत्रैरष्टश्राद्धान्यष्टदिनेषु — ना. प. ४।३९

स्वशिरश्छेदः सुखनिद्रेव मूकीकरणमाननमुद्रेव बाधिर्यं महानुपचय इवं नावहेलनया भवितव्यमेवं दृढवैराग्याद्बोधो भवति — महो. ४।२६

स्वसङ्कल्पवशाद्बद्धो निःसङ्कल्पाद्विमुच्यते — महो. २।७०

स्वसङ्कल्पे क्षयं याते समतैवावशिष्यते — महो. ६।३

स्वसमानाधिकरणशून्यः स्वसमानाधिकशून्यः...शुद्धो देव एको नारायणः, न द्वितीयोऽस्ति कश्चित् — त्रि.म.ना. १।५

स्वसिद्धान्तव्यवस्थासु द्वैतिनो निश्चिता दृढम्। परस्परं विरुध्यन्ते तैरयं न विरुध्यते — अद्वैत. १७

स्वसृहा वै त्वमस्याचार्यहा वै त्वमसि ब्राह्मणहा वै त्वमसीति — छांदो. ७।१५।२

स्वस्ति सर्वजीवेभ्य इत्युक्त्वाऽऽत्मानमनन्यं ध्यायंस्तदूर्ध्वबाहुर्विमुक्तमार्गो भवेत् — कठरु. ४

स्वस्थक्रमेणैव चेदात्मश्राद्धं विरजाहोमं कृत्वा...तत्त्वमस्यादिवाक्यार्थस्वरूपानुसन्धानं कुर्वन्नुदीचीं दिशं गच्छेत् — प. हं. प. ५

स्वस्थं शान्तं सनिर्वाणमकथ्यं सुखमुत्तमम्। अजमजेन ज्ञेयेन सर्वज्ञं परिचक्षते — अद्वैतो. ४७

स्वस्तिक-गोमुख-पद्म-वीर-सिंह-भद्रमुक्तमयूराख्यान्यासनान्यष्टौ — शांडि. १।३।१

स्वस्तिकं गोमुखं पद्मं वीरसिंहासने तथा। भद्रं मुक्तासनं चैव मयूरासनमेव च॥ सुखासनसमाख्यं च नवमं मुनिपुङ्गव — जा. द. ३।१

स्वस्तिकं नाम-जानूर्वोरन्तरे सम्यक्कृत्वा पादतले उभे। ऋजुकायः समासीनः स्वस्तिकं तत्प्रचक्षते — शांडि. १।३।१

स्वस्तिकासनमास्थाय समाहितमनास्तथा... — जा. द. ६।१२

स्वस्तिको दक्षिणं पादं वामपादं तु कुञ्चिताम्। प्राञ्जलीकृतदोर्युग्मं गरुडं हरिवल्लभम् — गारुडो. १

स्वस्तिदा विशस्पतिर्वृत्रहा विमृधो वशी। वृषेन्द्रः पुर एतु नः स्वस्तिदा अभयङ्करः
[महाना. ५।२+१३।१७+ — वनदु. १५४
[ऋ. मं. १०।१५२।२+ — अथर्व. १।२१।१
तै. आ. १०।१।९

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु [शां. पा. — म. ना. ५।३
[+ऋ.मं.१।८९।६+सा.वे. — २।१२।२५
[+वा. सं. २५।१९+ — तै. आ. १।१।१

स्वस्ति नो मघवा करोतु हन्तु
  पाप्मानं योऽस्मान्द्वेष्टि   महाना. ५।९
  [तै. सं. १।४।४१+तै. आ.   १०।१।११
स्वस्ति नो मिमीतामश्विना भगः   महाना.
  [+ऋ. मं. ५.५१।११
स्वस्ति वः पाराय तमसः परस्तात्   मुण्ड. २।२६
स्वस्ति सर्वजीवेभ्य इत्युक्त्वा
  दीक्षामुपेयात्   कठश्रु. २२
स्वस्ति सर्वजीवेभ्य इत्युक्त्वा-
  ऽऽत्मानमनन्यं ध्यायंस्त-
  दूर्ध्वबाहुर्विमुक्तमार्गो भवेत्   कठरु. ४
स्वस्तीत्युक्त्वा महर्षिसिद्धसङ्घाः   भ. गी. ११।२१
स्वस्मिन्विलीनं सकलं जगदा-
  विर्भावयति (प्रकृतिः)   पैङ्गलो. १।२
स्वस्यात्मनि स्वयं रंस्ये स्वात्मन्येव
  विलोकये । स्वात्मन्येव सुखा-
  सीनः स्वात्ममात्रावशेषकः   ते. बिं. ३।२४
स्वस्वरूपतया सर्वं वेद स्वानु-
  भवेन यः । स धीरः स तु
  विज्ञेयः सोऽहं तत्त्वं ऋभो भव   वराहो. २।३०
[अग्राह्यमिति च—] स्वस्वरूप-
  व्यतिरिक्तमायामयबुद्धी-
  न्द्रियगोचर-जगत्सत्यत्व-
  चिन्तनमग्राह्यम्   निरा. ३१
स्वस्वरूपज्ञः परिव्राट् परिव्राडे-
  काकी चरति भयत्रस्तसारङ्ग-
  वत्तिष्ठति   ना. प. ९।२१
स्वस्वरूपं तु चिन्मात्रं सर्वदा
  सर्वदेहिनाम् । नैव देहादि-
  सङ्घातो घटवद्दृष्टिगोचरः   वराहो. २।२४
स्वस्वरूपं स्वयं भुङ्क्ते नास्ति
  भोज्यं पृथक्स्वतः   वराहो. २।२६
स्वस्वरूपानुसन्धानान्नृत्यन्तं सर्व-
  साक्षिणम् । मुहूर्तं चिन्तयेन्मां
  यः सर्वबन्धैः प्रमुच्यते   वराहो. २।३२
स्वस्वेतरद्वितीयांशैः पञ्चधा
  संयोज्य पञ्चीकृतभूतैरनन्त-
  कोटिब्रह्माण्डानि   पैङ्गलो. १।४

स्वहृदि चैतन्ये तिष्ठति
  त्रिविधं ब्रह्म   परब्रह्मो. ७
स्वस्वं विषयमुद्दिश्य प्रवर्तन्ते
  निरन्तरम् । प्रवर्तकत्वं
  चाप्यस्य मायया, न स्वभावतः   पा. ब्र. १५
स्वरूपं ध्यायन्पुनः पृथक् प्रणव-
  व्याहृतिपूर्वकं...तत्त्वमस्यादि-
  वाक्यार्थस्वरूपानुसन्धानं
  कुर्वन्नुदीचीं दिशं गच्छेत्   प. हं. प. ५
स्वꣳ ह्यपीतो भवति   छांदो. ६।८।१
स्वः पश्यन्त उत्तरम्   छांदो. ३।१७।७
स्वः स्वाहेत्यग्नौ हुत्वा मन्थे
  सꣳस्रवमवनयति   बृह. ६।३।३
स्वः प्रपद्येऽमुनाऽमुनाऽमुना   छांदो. ३।१५।३
स्वाचाग्ने तनुवं पिप्रयस्वास्मभ्यं
  च सौभगमायजस्व[म.ना.६।१८   ऋ.मं.८।१०।१०
  [+अथर्व.६।११०।१+   तै.आ. १०।२।१
स्वातीका गुप्तयो गुप्तिः सत्त्वं
  सत्त्वानां(सत्यं सत्यानां)सात्त्वं-
  पदं तत्सत्त्वं सत्त्वमासीत् सात्त्वं
  सात्त्वं वै सत्त्वमादधानाय स्वाहा   पारमा. ४।८
स्वाज्ञानासुरराड्ग्रासस्वज्ञान-
  नरकेसरी । प्रतियोगिविनि-
  र्मुक्तं ब्रह्ममात्रं करोतु माम्   अध्यात्मो. शीर्षकं
स्वात्मनि व्योमनि स्वस्थे
  जगदुन्मेषचित्रकृत्   महो. २।६
स्वात्मनिष्ठानुकूलेन सर्वं विसृज्य
  तुरीयातीतावधूतवेषेणाद्वैत-
  निष्ठापरः प्रणवात्मकत्वेन देह-
  त्यागं करोति यः सोऽवधूतः   तुरीया. ३
स्वात्मनि स्वपरिस्पन्दैः
  स्फुरत्यच्छैरिवार्णवः   महो. ५।११७
स्वात्मनैव सदा तुष्टः स्वयं सर्वात्म-
  ना स्थितः । निर्धनोऽपि सदा
  तुष्टोऽप्यसहायो महाबलः   १ आत्मो. १२
स्वात्मनैव सदानन्दरूपेणास्मि
  स्वलक्षणः   अध्यात्मो. ६७
स्वात्मन्यवस्थितः सम्य-
  ग्ज्ञानिभिश्च सुशिक्षितः   ना. दु. ५।३

स्वात्मन्यारोपिताशेषाभासवस्तु-निरासतः । स्वयमेव परं ब्रह्म पूर्णमद्वयमक्रियम् अध्यात्मो. २१
स्वात्मन्येवं सदा स्थित्या मनो नश्यति योगिनः अध्यात्मो. ४
स्वात्मन्येव स्वयं सर्वं सदा पश्यति निर्भयः । तदा मुक्तो न मुक्तश्च बद्धस्यैव विमुक्तता पा. ब्र. ३६
स्वात्मन्येवावतिष्ठेऽहं तुर्यरूपपदेऽनिशम् । अन्तरेव शशामास्य क्रमेण प्राणसन्ततिः अ. पू. ३।१०
स्वात्मबन्धहरः (रहितः) [रामो. ता. २।४+ गणेशो. १।४
स्वात्ममंत्रं सदा पश्येत्स्वात्म-मन्त्रं सदाऽभ्यसेत् ते. बिं ३।५९
स्वात्मयोगैकनिष्ठेषु स्वातन्त्र्यादीश्वरप्रियाः । प्रभूताः सिद्धयो यास्ताः कल्पनारहिताः स्मृताः यो.शि. १।१५४
स्वात्मप्रकाशरूपं तत् किं शास्त्रेण प्रकाश्यते यो. शि. १।५
स्वात्मराज्ये त्वमेवासि स्वयम्भाव-विवर्जितः ते. बिं. ५।७३
स्वात्मवत्सर्वभूतेषु कायेन मनसा गिरा । अनुज्ञा या दया सैव प्रोक्ता वेदान्तवेदिभिः जा. द. १।१५
स्वात्मसिंहासने स्थित्वा स्वात्मनोऽन्यन्न चिन्तये ते. बिं. ३।२५
स्वात्मानन्दानुभवतरङ्गिण्याः प्रवाहैरविमङ्गलं...चिद्रूप-विलासनिभचिन्मयासनं विराजते सि. सा. ४।१
स्वात्मानमेवैषा ददाति नृसिंहो. ७।६
स्वात्मानं च श्रियं ध्यायेदमृत-प्लावनं ततः [वराहो. ५।३४,३९
स्वात्मारामः सुखासनः ते. बिं. ४।४७
स्वाधिष्ठानं ततश्चक्रं मेढ्रमेव निगद्यते । मणिवत्तन्तुना यत्र वायुना पूरितं वपुः ध्या. बिं. ४८
स्वाधिष्ठानं द्वितीयं स्याच्चक्रं योगरा. ७
स्वाधिष्ठानाह्वयं चक्रं लिङ्गमूले षडस्रके । (कम्) । नाभिदेशे स्थितं चक्रं दशा(स्रं)रं मणिपूरकम् [यो. शि. १।१७२+ ५। ८
स्वाध्यायज्ञानयज्ञाश्च भ. गी. ४।२८
स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम् तैत्ति. १।११।१
स्वाध्यायप्रवचने एवेति नाको मौद्गल्यः तैत्ति. १।९।१
स्वाध्याययुक्ता ब्राह्मणाश्चरन्ति पा. ब्र. ९
स्वाध्याय-शौच-सन्तोष-तपांसि नियतात्मवान् । कुर्वीत ब्रह्मणि तथा परस्मिन्प्रवणं मनः भवसं. ३।१७
स्वाध्यायसंयमाभ्यां स दृश्यते पुरुषोत्तमः । तत्प्राप्तिकारणं राजंस्तदेतदिति पठ्यते भवसं. ३।६
स्वाध्यायस्तप आर्जवम् भ. गी. १६।१
स्वाध्यायान्मा प्रमदः तैत्ति. १।११।१
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव भ. गी. १७।१५
स्वानन्दमयानन्ताचिन्त्यविभव आत्माऽन्तरात्मा परमात्मा ज्ञानात्मा तुरीयात्मा..शुद्धो देव एको नारायणः त्रि. म. ना.१।५
स्वानन्दानुभवाच्छान्तिरेषैवोपरतेः फलम् अध्यात्मो. २८
स्वानुभूतेश्च शास्त्रस्य गुरोश्चैवैकवाक्यता । यस्याभ्यासेन तेनात्मा सततं चावलोक्यते महो. ४।५
स्वानुभूत्या स्वयं ज्ञात्वा स्वमात्मानमखण्डितम् । स सिद्धः... अध्यात्मो. ६४
स्वानुभूत्यैकमानं च यत्तत्त्वं तदसौ स्थितः । यदेकं चाप्यनेकं च साञ्जनं च निरञ्जनम् ॥ यत्सर्वं चाप्यसर्वं च यत्तत्त्वं तदसौ स्थितः अ. पू. ३।२१
स्वान्तर्विजृंभितभानुमण्डलध्यानतदाकाराकारितपरब्रह्माकारितमुक्तिमार्गमारूढः परिपक्वो भवति मं. ब्रा. २।७

स्वान्तःस्थितः स्वयमेवेति य एवं वेद स मुक्तो भवति — ना. प. ९।२०
स्वाम्यं परस्वरूपं स्याद्दास्यं जीवस्य सर्वदा । प्राक्प्रत्यगात्मनो रूपं स्वाम्यं दास्यमिति स्थितिः — भवसं. २।५७
स्वायत्तमेकान्तहितं स्वेप्सित-त्यागवेदनम् । यस्य दुष्करतां यातं धिक्तं पुरुषकण्टकम् — महो. ४।८९
स्वाय लोकायारिष्टिमिच्छेदेवम् हैवंविदे सर्वाणि भूतान्य-रिष्टिमिच्छन्ति — बृह. १।४।१६
स्वाराज्यमतिरात्रेण (यजति) — मैत्रा. ६।३६
स्वार्थसंयमात्पुरुषज्ञानम् — शांडि. १।७।५२
स्वार्थे स्वाभाविकेऽर्थे च बहुधा संस्थितिस्त्वयि — मैत्रा. ५।२
स्वालोकतः शास्त्रदृशा स्वबुद्ध्या स्वानुभावतः । प्रयच्छति परां सिद्धिं त्यक्त्वात्मानं मनःपिता — महो. ५।८१
स्वावगम्यो लयः कोऽपि यो मनोवागगोचरः (जायते वाग-गोचरः) [वराहो. २।८१+ — अमन. २।२२
स्वावबोधकलालापकुशला दुर्लभा भुवि — अमन. २।२३
स्वाविद्यातत्कार्यजातं यद्विद्यापहवं गतम् । तद्ध्वंसविद्यानिष्पन्नं रामचन्द्रपदं भजे — अ. वि. शीर्षकं
स्वाविद्याद्वयतत्कार्यापह्नवज्ञान-भासुरम् । मन्त्रिकोपनिषद्वेद्यं रामचन्द्रमहं भजे — मन्त्रिको. शीर्षकं
स्वाश्रमेष्वेवानुक्रमणं स्वधर्मे एव सर्वं यत्ते — मैत्रा. ४।३

स्वाहान्ते जुहुयात्तत्र वर्णदेवाय पिण्डकान् । आघारावाज्यभागौ च प्रक्षिपेद्वयाहृतीः सुधीः — बृ. जा. ३।१३
स्वाहा स्वधा यश्च वषट्करोति रुद्रः पशूनां गुहया निमग्नः — एका. उ. ५
स्विष्टम् सुहुतं यज्ञक्रतूनां प्रायणम् सुवर्गस्य लोकस्य ज्योति-स्तस्मादग्निहोत्रं परमं वदन्ति — महाना. १७।९
स्वेच्छाचारस्वस्वभावोमोक्षःपरं ब्रह्म — निर्वाणो. ८
स्वेदजाः क्रिमिकीटादयः — ना. पू. ता. ५।६
स्वेन भासा स्वेन ज्योतिषा प्रस्वपि-त्यत्रायंपुरुषःस्वयंज्योतिर्भवति — बृह. ४।३।९
स्वेन रूपेणाभिनिष्पद्यते एष आत्मेति [छांदो. ८।३।४+ — मैत्रा. २।२
स्वेनावृतं सर्वमिदं प्रपञ्चं पञ्चात्मकं पञ्चसु वर्तमानम् । पञ्चीकृता-नन्तभवप्रपञ्चं पञ्चीकृतस्वा-वयवैरसंवृतम् — ना. प. ९।१८
स्वे महिम्नि तिष्ठमानं दृष्ट्वाऽऽवृत्त-चक्रमिव संसारचक्रमालोकयति — मैत्रा. ६।२८
स्वे महिम्नि सदा समासते तस्मादेनमकारार्थेन परेण ब्रह्मणैकीकुर्यात् — नृसिंहो. ७।६
स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः — भ. गी. १८।४५
स्वैरं न विगायेत्तन्महाव्रतम् । न स मूढवल्लिप्यते — अवधू. ६
स्वैरं स्वैरविहरणं तत्संसरणम् — अवधू. ६
स्वौजसा सर्वमादधाति यः पापीयां-समनुपदमाहिंसत्सुपुण्यं पुण्यात्मकं पुण्यं वितान्त दाधार देवाय स्वाहा — पारमा. ६।३

ह

हकारं वियत्स्वरूपं च समानं स्फटिकप्रभम् । हन्नाभिनासा-कर्णं च पादाङ्गुष्ठादिसंस्थितम् — ध्या. बिं. ९७
हकारः परमेशः स्यात्तत्पदं चेति निश्चितम् । सकारो ध्यायते जन्तुर्हकारो हि भवेद्ध्रुवम् — यो. चू. ८३

हकारेण तु सूर्यः स्यात्सकारेणे-न्दुरुच्यते । सूर्याचन्द्रमसो-रैक्यं हठ इत्यभिधीयते — यो.शि. १।१३३
हकारेण बहिर्याति सकारेण विशेत् पुनः । हंस हंसेत्यमुं मन्त्रं जीवो जपति सर्वदा । हंस हंसेति

मन्त्रोऽयं सर्वैर्जीवैश्च जप्यते
[ध्या. बि. ६१+ यो. शि. १।१३०
हकारो सकारोमकारो
त्रयमेकस्वरूपं भवति हयग्री. ६
हठेन ग्रस्यते जाड्यं सर्वदोष-
समुद्भवम् । क्षेत्रज्ञः परमात्मा
च तयोरैक्यं यदा भवेत् ॥
तदैक्ये साधिते ब्रह्मंश्चित्तं
याति विलीनताम् यो.शि. १।१४
हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं भ. गी. २।३७
हत्वाऽपि स इमाँल्लोकान् भ. गी. १८।१७
हत्वाऽर्थकामांस्तु गुरूनिहैव भ. गी. २।५
हत्वा स्वजनमाहवे भ. गी. १।३१
हत्वैतानाततायिनः भ. गी. १।३६
हनिष्याम वा एतद्यो यद्देवान्न
पराभावयिष्यथ शौनको. १।१
हनिष्ये चापरानपि भ. गी.१६।१४
हन्तकारं मनुष्याः स्वधाकारं
पितरः (उपजीवन्ति) बृह. ५।८।१
हन्त चित्तमहत्तायां कैषा विश्वासता
तव (चित्तमूलं हि संसारः) वराहो. ३।२१
हन्त त इदं प्रवक्ष्यामि गुह्यं ब्रह्म
सनातनम् कठो. ५।६
हन्ततर्हिभवत्येतद्व्याख्यास्यामि ते
व्याचक्षाणस्य तु मे निदिध्यासस्वेति बृह. ४।५।५
हन्त ते कथयिष्यामि भ. गी. १०।१९
हन्त तेऽनया कात्यायन्याऽन्तं
करवाणि बृह. २।४।१
हन्ता चेन्मन्यते हन्तुं हतश्चेन्मन्यते
हतम् । उभौ तौ न विजानीतो
नायं हन्ति न हन्यते कठो. २।१९
हन्ताहमेतद्भगवतो वेदानीति छांदो. १।८।७
हन्ताहमेतद्भगवतो वेदानीति(मा.पा.) छांदो. १।८।७
हन्ति पाप्मानं जहाति च य एवं वेद बृह. ५।५।३,४
हन्तुं स्वजनमुद्यताः भ. गी. १।४५
हन्तेन्द्रियगणा यूयं त्यजताकुलतां
शनैः । चिदात्मा भगवान्सर्व-
साक्षित्वेन स्थितोऽस्म्यहम् अ. पू. ३।८
हन्यान्मुष्टिभिराकाशं क्षुधार्तः
खण्डयेत्तुषम् । नाहं ब्रह्मेति
जानाति तस्य मुक्तिर्न जायते पैङ्गलो. ४।२२
हयग्रीवैकाक्षरजपशीलाज्ञया
सूर्यादयः स्वतः स्वस्वकर्मणि
प्रवर्तन्ते हयग्री. ६
हयो भूत्वा देवानवहत् बृह. १।१।२
हरन्ति प्रसभं मनः भ. गी. २।६०
हरमायात्मकेन ह्रीङ्कारेण हृल्लेखाख्या
भगवती त्रिपुरेति व्यापठ्यते त्रि. ता. १।१
हरमुवाच-कुरु हर संहारम् ।
जगद्धरणाद्धरो भव गणेशो. ३।११
हरितस्य नीलस्य पीतस्य लोहितस्य
श्वेतस्य नाड्यो रुधिरस्य पूर्णाः सुबालो. ४
हरिहरहिरण्यगर्भस्रष्टारमप्रमेय-
मनाद्यन्तं रुद्रसूक्तैरभिषिच्य भस्मजा. २।४
हरिं हरन्तं पादाभ्यामनुयान्ति
सुरेश्वराः शरभो. ६
हरिꣳ हरन्तमनुयन्ति देवा विश्व-
स्येशानं वृषभं मतीनाम्
[महाना. १३।११+ चित्त्यु. १५।१
हरिः पतङ्गः पटवी सुपर्णः चित्त्यु. ११।८
हरे राम हरे राम राम राम हरे
हरे । हरे कृष्ण हरे कृष्ण
कृष्ण कृष्ण हरे हरे कलिसं. २
हरो वै विलोक्य रुदति
स्म । रोदनाद्रुद्रसंज्ञः गणेशो. ३।१२
हर्षशोकान्वितः कर्ता भ. गी. १८।२७
हर्षामर्षभयक्रोधकामकार्पण्यदृष्टिभिः।
न परामृश्यते योऽन्तः स जीव-
न्मुक्त उच्यते महो. २।४४
हर्षामर्षभयक्रोधकामकार्पण्य-
दृष्टिभिः । न हृष्यति ग्लायति
यः परामर्शविवर्जितः महो. ६।४९
हर्षामर्षभयोद्वेगैः भ. गी. १२।१५
हविर्गुणा न वक्तव्याः पितरो
यावदर्पिताः । तृप्तैस्तु पितृभिः
पश्चाद्वक्तव्यं शोभनं हविः इतिहा. ८२
हविर्मेऽजस्रं विलहति इतिहा. ८९
हसत्युल्लसति प्रीत्या क्रीडते मोदते
तदा । तनोति जीवनं प्रीत्या
बिभेति सर्वतो भयात् यो. शि. ६।६७

हसन्ति लोकायतिका हसन्ति कुटिला जनाः — सूयंता. १।१२
हसौं हयग्रीवस्वरूपो भवति — हयग्री. ६
हस्तप्राप्तं च भक्षयेत् (यतिः) — ना. प. ५।४८
हस्तमेवाप्येति यो हस्तमेवास्तमेति — सुबालो. ९।६
हस्तं हस्तेन सम्पीड्य दन्तैर्दन्ता-न्विचूर्ण्य च। अङ्गान्यङ्गैः (इवाक्रम्य) समाक्रम्य जयेदादौ स्वकं मनः [महो. ५।७५+ — मुक्तिको. २।४२
हस्ताभावात्क्रिया न च — ते. बिं. ५।१९
हस्ताभ्यां चाग्निमसृजत — बृह. ६।४।६
हस्ताभ्यां नद्युत्तरणं न कुर्यान्न (वृक्षारोहणमपि)वृक्षमारोहेत् — ना.प.५।८+७।१
हस्तावध्यात्मं, आदातव्यमधिभूतं, इन्द्रस्तत्राधिदैवतं, नाडी तेषां निबन्धनम् — सुबालो. ५।११
हस्तावेवास्या एकमङ्गमुदूढं, तयोः कर्म परस्तात्प्रतिविहिता भूतमात्रा — कौ. त. ३।५
हस्तिजिह्वा तथा सव्यपादाङ्गुष्ठान्त-मिष्यते — जा. द. ४।२१
हस्तिजिह्वाभिधायास्तु वरुणो देवता भवेत् — जा. द. ४।३६
हस्ति हिरण्यं दासभार्यं क्षेत्राण्या-यतनानीति — छांदो. ७।२४।२
हस्तिनि सिंहे दंशे मशके नकुल-सर्पराक्षसगन्धर्वे मृत्यो रूपाणि विदित्वा न बिभेति कुतश्चनेति — सुबालो. १३।२
हस्तेन दक्षिणेनैव पीडयेन्नासिकापुटम् — त्रि. ब्रा. २।९५
हस्तौ च दातव्यं च –(मा. पा.) — प्रश्नो. ४।८
हस्तौ चादातव्यं च — प्रश्नो. ४।८
हस्तौ चादातव्यं च नारायणः — सुबालो. ६।१
हस्तौ पादावुपस्थं च जिह्वा पायुस्तथैव च। कर्मेन्द्रियाणि पञ्चैव राजन्नस्मिञ्छरीरके — भवसं. २।१८
हस्तौ वै ग्रहः, स कर्मणाऽतिग्राहेण गृहीतो हस्ताभ्याꣳ हि कर्म करोति — बृह. ३।२।८
हस्त्यृषभꣳ सहस्रं ददामीति होवाच जनको वैदेहः — बृह. ४।१।२-७
हं नमः शिरसि प्रोक्तं वेदु शिवो भवेत् — हंसषोढो. २

हंमी तृतीयस्याद्यार्धान्त्यं मृत्युं चतुर्थस्याद्यार्धान्त्यं साम तु जानीयाद्यो जानीते सोऽमृतत्वं च गच्छति — नृ. पू. १।५
हंस एव परं वाक्यं हंस एव तु वादिकम्। हंस एव परो रुद्रो हंस एव परात्परम् — ब्र. वि. ६१
हंसज्योतिरनूपम्यं मध्ये देवं व्यव-स्थितम्। दक्षिणामुखमाश्रित्य ज्ञानमुद्रां प्रकल्पयेत् — ब्र. वि. ६४
हंसपरमहंसयोरान्तरप्रणवः, तुरीयातीतावधूतयोर्ब्रह्म प्रणवः — ना. प. ७।१०
हंसपरमहंसयोर्ध्यानाधिकार-स्तुरीयातीतावधूतयोर्न — ना. प. ७।९
हंसपरमहंसयोर्मननं, तुरीया-तीतावधूतयोर्निदिध्यासः — ना. प. ७।११
हंसपरमहंसयोर्मानसार्चनं, तुरीया-तीतावधूतयोः सोऽहम्भावना — ना. प. ७।९
हंसप्रणवयोरभेदः — पा. ब्र. ३
हंसविद्यामिमां लब्ध्वा गुरुशुश्रूषया नरः॥ आत्मानमात्मना साक्षा-द्ब्रह्म बुद्ध्वा सुनिश्चलम्। देह-जात्यादिसम्बन्धान्वर्णाश्रम-समन्वितान्॥ वेदशास्त्राणि चान्यानि पदपांसुमिव त्यजेत् — ब्र. वि. २८
हंसविद्यामृते लोके नास्ति नित्यत्वसाधनम् — ब्र. वि. २६
हंसस्य तपोलोकः परमहंसस्य सत्य-लोकः [ना. प. ५।९+ — १सं. श्रो. २।५९
हंसस्य प्रार्थनाखिकालाः — पा. ब्र. ३
हंसस्याष्टगृहेष्वष्टकवलं परमहंसस्य पञ्चगृहेषु करपात्रं फलाहारो गोमुखं तुरीयातीतस्याजगरवृत्तिः — ना. प. ५।७
हंस हंस वदेद्वाक्यं प्राणिनां देह-माश्रितः। स प्राणापानयो-र्ग्रन्थिरजपेत्यभिधीयते — ब्र. वि. ७८
हंसहंसाय विद्महे सोहं हंसाय धीमहि। तन्नो हंसः प्रचोदयात् — वनदु. १४९

हंसहंसेति मन्त्रोऽयं सर्वैर्जीवैश्च
जप्यते । गुरुवाक्यात्सुषुम्नायां
विपरीतो भवेज्जपः — यो.शि. १।१३१
हंसहंसेति यो ब्रूयाद्धंसो
ब्रह्मा हरिः शिवः — ब्र. वि. ३४
हंसहंसेति सदा ध्यायन्सर्वेषु
देहेषु व्याप्य वर्तते — हंसो. ४
हंसहंसेत्यमुं मंत्रं जीवो जपति सर्वदा
[ध्या. बिं. ६२+ यो. चू. ३१+ — यो. शि. ६।५४
हंसः कं खं गं घं ङं महामुण्ड-
मालाधारिणि महाकालप्रिये
मां रक्ष रक्ष — हंसषोढो. २
हंसः चं छं जं झं ञं महात्रिपुर-
भैरवि पुस्तकाक्षमालाधारिणि
शत्रुमुखस्तम्भनं कुरु कुरु
स्वाहेति महापद्मे — हंसषोढो. २
हंसः टं ठं डं ढं णं डां डीं डं
डाकिनि मां रक्ष रक्ष
स्वाहेत्यनाहते न्यसेत् — हंसषोढो. २
हंसः तं थं दं धं नं महामारि
मारहारिणि हुं हुं दारिद्र्यं
हर हर स्वाहा — हंसषोढो. २
हंसः परमहंसो भूत्वा स्वरूपानु-
सन्धानेन सर्वप्रपञ्चं विदित्वा
...प्रणवात्मकत्वेन देहत्यागं
करोति यः सोऽवधूतः — तुरीया. ३
हंसः पं फं बं भं मं मार्जारि वीरा-
वलि ममालस्यं नाशय नाशय — हंसषोढो. २
हंसः यं रं लं वं शं षं सं हं
लम्बोदरि मातर्महामङ्गलप्रिये
मम जाड्यं छेदय छेदय — हंसषोढो. २
हंसःशक्तेरधिष्ठानं चराचरमिदंजगत् — वराहो. ५।५५
हंसः शिखा, प्रणव उपवीतम् — परब्र. ६
हंसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता
वेदिषदतिथिर्दुरोणसत् — कठो. ५।२
[महाना. ८।६+१२।३+ — नृ. पू. ३।६+
[ना. प. ५।४+ ग. पू. ता. २।९+ — ऋ.मं.४।४०।५
हंसा एकदण्डधराः शिखावर्जिता
यज्ञोपवीतधारिणः शिक्यकम-
ण्डलुहस्ता ग्रामैकरात्रवासिनो
नगरे तीर्थेषु पञ्चरात्रं वसन्त
एकरात्रद्विरात्रकृच्छ्रचांद्राय-
णादि चरन्त आत्मानं प्रार्थयन्ते — आश्रमो. ४
हंसात्मकं ते विरजा भवन्ति — ध्या. बिं. २४
(अथ) हंसा नाम ग्राम एकरात्रं
नगरे पञ्चरात्रं क्षेत्रे सप्तरात्रं
तदुपरि न वसेयुः-गोमयाहा-
रिणो नित्यं चान्द्रायणपरायणा
योगमार्गे मोक्षमेव प्रार्थयन्ते — भिक्षुको. ३
(अथ ह) हंस निशायामतिपेतुः — छांदो. ४।१।२
हंसेति वर्णद्वयेनान्तःशिखोपवीतित्वं
निश्चित्य...चतुर्विंशतितत्त्वा-
पादनतन्तुकत्वं नवतत्त्वमेकमेव — परब्र. ९
हंसे तु सकृदेव स्यात्
परमहंसे न विद्यते (स्नानं) — ना. प. ४।२३
हंसो जटाधारी त्रिपुण्ड्रोर्ध्वपुण्ड्र-
धारी असङ्कॢप्तमाधुकरान्नाशी
कौपीनखंडतुंडधारी [ना.प.५।५+ — १ सं.सो. २।१३
हंसो भगवाञ्छुचिरप्रतिरूपः — चाक्षुषो. २
हंसो भगवाञ्छुचिरूपः प्रतिरूपः — अक्ष्यु. २
हंसो विशोको अजरः पुराणो
ऋतीयमानो ब्रह्मस्मि नाम — बा. मं. २४
हंसो हंसमभ्युवाद हो होऽयि
भल्लाक्ष भल्लाक्ष जानश्रुतेः
पौत्रायणस्य समं दिवा ज्योति-
राततं तन्मा प्रसाङ्क्षीः — छांदो. ४।१।२
हानिरस्योपजायते — भ. गी. २।६५
हानोपादानचेष्टादि ध्यानकर्म — शांडि. १।४।९
हारे त्वा शूद्र तवैव सह गोभि-
रस्त्विति — छांदो. ४।२।३
हास्यनिष्ठीवनास्फोटमुखभाष्य-
विजृम्भणम् । पादप्रसारणं
गीतं न कुर्याद्गुरुसान्निधौ — शिवो. ७।१३
हिक्का कासस्तथा श्वासः शिरः-
कर्णाक्षिवेदनाः । भवन्ति
विविधा रोगाः पवनव्यत्यय-
क्रमात् — यो. चू. ११७

हिङ्कार इति त्र्यक्षरं प्रस्तार इति त्र्यक्षरं तत्समम् छांदो. २।१०।१
हितं मितं च भोक्तव्यं स्तोकं स्तोकमनेकधा वराहो. ५।९
हिता नाम नाड्यो द्वासप्ततिसहस्राणि हृदयात्पुरीततमभिप्रतिष्ठन्ते ताभिः प्रत्यवसृप्य पुरीतति शेते (आत्मा) बृह. २।१।१९
हितानाम हृदयस्य नाड्यो हृदयात् पुरीततमभिप्रतन्वन्ति कौ. त. ४।१९
हिताहितं मनोरामं वचः शोकावहं तु यत्। श्रुत्वाऽपि न शृणोतीव बधिरः स प्रकीर्तितः ना. प. ३।६७
हित्वा पापमवाप्स्यसि भ. गी. २।३३
हित्वैकारं तुरीयस्वरं सर्वादौ सूर्याचन्द्रमस्केन कामेश्वर्येवागस्त्यसंज्ञा त्रि. ता. १।१६
हिरण्मयं पुरुषं ज्योतीरूपं तपन्तम् चाक्षुषो. ४
हिरण्मयं यस्य विभाति सर्वं व्योमान्तरे रश्मिमिवांशुनाभिः एका. उ. ८
हिरण्मयं वेदविदां वरिष्ठं यमध्वरे ब्रह्मविदः स्तुवन्ति एका. उ. १०
हिरण्मयं सौम्यतनुं स्वभक्तायाभयप्रदम् गोपालो. २।२३
हिरण्मयः पुरुष एकहंस: बृह.४।३।११,१२
हिरण्मयः सर्वेभ्यो भूतेभ्यो ददर्श १ ऐत. १।३।१
हिरण्मयी अरणी याभ्यां निर्मन्थतामश्विनौ बृह. ६।४।२२
हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्। तत्त्वं पूषन्नपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये [बृह.५।१५।१+ मैत्रा. ६।३५
हिरण्मये परे कोशे विरजं ब्रह्म निष्कलम्। तच्छुभ्रं ज्योतिषां ज्योतिस्तद्यदात्मविदो विदुः मुण्ड. २।२।९
हिरण्मयो ह वा अमुष्मिँल्लोके सम्भवति १ ऐत. १।३।१
हिरण्मयोऽहं शिवरूपमस्मि [कैव. २० +२बिल्वो. १३
हिरण्यगर्भस्तदाज्ञया सूक्ष्माण्यपालयत् पैङ्गलो. १।५
हिरण्यगर्भस्त्रिरूप ईश्वरवद्व्यक्तचैतन्यः नृसिंहो. ९।४
हिरण्यगर्भस्तैजसः सूक्ष्मश्च उकारः यो. चू. ७५
हिरण्यगर्भः स्थूलोऽन्तर्द्वितीयः पाद उच्यते ना. प. ८।१३
हिरण्यगर्भस्य कारणं परमात्मानमण्डपरिपालकनारायणमभ्येति त्रि. म. ना. ३।४
हिरण्यगर्भं जनयामास पूर्वं स (सा) नो बुद्ध्या शुभया संयुनक्तु [श्वेताश्व. ३।४+ गुह्यका. ५६
हिरण्यगर्भं पश्यति जायमानं स नो देवः शुभया स्मृत्या संयुनक्तु महाना. ८।१२
हिरण्यगर्भं पश्यति जायमानं स नो बुद्ध्या शुभया संयुनक्तु श्वेताश्व. ४।१२
हिरण्यगर्भः स्थूलोऽन्तर्द्वितीयः पाद उच्यते ना. प. ८।१४
हिरण्यगर्भादीनहं जायमानान् पश्यामि भस्मजा. २।५
हिरण्यगर्भाधिष्ठितविक्षेपशक्तितस्तमोद्रिक्ताऽहङ्काराभिधा स्थूलशक्तिरासीत् पैङ्गलो. १।३
हिरण्यगर्भो भगवानेव च्छन्दसि सुष्टुतः। सोऽहं योगरतिर्ब्रह्मन्योगशास्त्रेषु शब्दितः ना. महो. ५८
हिरण्यगर्भो लोकादिश्चतुर्वक्त्रो निरुक्तगः। ब्रह्मा सनातनो देवो मम बह्वर्थचिन्तकः ना. महो. ३९
हिरण्यज्योतिर्यस्मिन्नयमात्माऽधिक्षियंति भुवनानि विश्वा सुबालो. २।१
हिरण्यज्योतिः शरीरस्य मध्ये चित्त्यु. ११।८
हिरण्यदन्तो बभसोऽनसूरिमहान्तमस्य महिमानमाहुः छांदो. ४।३।७
हिरण्यबाहुं हिरण्यरूपं हिरण्यवर्णं हिरण्यनिधिमद्वैतं... भगवन्तं शिवं प्रणम्य मुहुर्मुहुरभ्यर्च्य... कृताञ्जलिपुटः पप्रच्छ भस्मजा. १।१
हिरण्यबाहुं हिरण्यवर्णं हिरण्यरूपं पशुपाशविमोचकं पुरुषं कृष्ण-

पिङ्गलमूर्ध्वरेतं विरूपाक्षं...
रुद्रसूक्तैरभिषिच्य... भस्मजा. २।४
हिरण्ययोवेतसोमध्यआसाम्[त्रिसु.३ महाना. १२।३
हिरण्यवर्णः शकुनो हृद्यादित्ये
प्रतिष्ठितः मैत्रा. ६।३४
हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजत-
स्रजाम् । चन्द्रां हिरण्मयीं
लक्ष्मीं जातवेदो ममावह श्री. सू. १
[ऋ. खि. ५।८७।१
हिरण्यवर्णो हिरण्यश्मश्रुरानखा-
ग्रेभ्यो दीप्यमान इव आर्षे. ६।२
हिरण्यशृङ्गं वरुणं प्रपद्ये तीर्थं मे
देहि याचितः महाना. ५।१५
(तत्र) हिंसा नाम मनोवाक्काय-
कर्मभिः सर्वभूतेषु सर्वदा
क्लेशजननम् शांडि. १।१।३
हीनान्नपानवस्त्रः स्यान्नीचशय्या-
सनो गुरोः । न यथेष्टश्च सन्तिष्ठे-
त्कलहं च विवर्जयेत् शिवो. ७।१४
हीयतेऽर्थाद्य उ प्रेयो वृणीते कठो. २।१
हुतमन्नं समं नयति
(समुन्नयति मा. पा.) प्रश्नो. ३।५
हुतमहुतं दत्तमदत्तं सर्वमसर्वं
विश्वमविश्वं कृतमकृतं परमपरं
परायणं च त्वम् [अशिरः.३।१+ चतुर्वे. ८
हुताशनश्चापि हि सर्वभक्षः ...
हृ इत्येकमक्षरमभिहरन्ति...(मा.पा.) बृ. ह. ५।३।१
हृत्पद्मं वेदिकातत्रलिङ्गमोङ्कारमिष्यते शिवो. १।२४
हृत्पद्मकर्णिकामध्ये स्थिरदीप-
निभाकृतिम् । अङ्गुष्ठमात्र-
मचलं ध्यायेदोङ्कारमीश्वरम् ध्या. बिं. १९
हृत्पद्ममध्ये सर्वं यत्तत्प्रज्ञाने
प्रतिष्ठितम् आ. प्र. १
हृत्पुण्डरीकमध्यस्थं चैतन्यज्योति-
रव्ययम् त्रि. ब्रा. २।१५६
हृत्पुण्डरीकमध्यस्थां प्रातःसूर्यसम-
प्रभाम् । पाशाङ्कुशधरां सौम्यां
वरदाभयहस्तकाम् ॥ त्रिनेत्रां
रक्तवसनां भक्तकामदुघां भजे १ देव्यु. १८

हृत्पुण्डरीकमध्ये तु भावयेत्परमे-
श्वरम् । साक्षिणं बुद्धिवृत्तस्य
परमप्रेमगोचरम् मैत्रे. १।१३
हृत्पुण्डरीकं विरजं विशुद्धं
विचिन्त्य मध्ये विशदं विशोकम् कैव. ६
हृत्स्थं ज्ञानासिनाऽऽत्मनः भ. गी. ४।४२
हृदयग्रन्थिरस्तित्वे छिद्यते ब्रह्म-
चक्रकम् । संशये समनुप्राप्ते
ब्रह्मनिश्चयमाश्रयेत् ते. बिं. ६।१०१
हृदयग्रन्थिहीनोऽस्मि हृदया-
म्भोजमध्यगः मैत्रे. ३।१७
हृदयज्ञं चाहृदयज्ञं च यद्वै
वाङ्नाभविष्यन्न धर्मो नाधर्मो
व्यज्ञापयिष्यत् छांदो. ७।२।१
हृदयज्ञं चाहृदयज्ञं चान्नं च रसं
चेमं च लोकममुं च विज्ञाने-
नैव विजानाति छांदो. ७।७।१
हृदयमेव सम्राडिति होवाच बृह. ४।१।७
हृदयमेवान्ववक्रामति बृह. ४।४।१
हृदयमेवायतनमाकाशः प्रतिष्ठा बृह. ४।१।७
हृदयस्त्वं भूतभव्यः पुराणो ह्येको
वीरो वेदगुणैकवेद्यः २ रुद्रो. ६०
हृदयस्य दश छिद्राणि भवन्ति
येषु प्राणाः प्रतिष्ठिताः सुबालो. ४।१
हृदयस्य मध्ये लोहितं मांसपिण्डं,
यस्मिंस्तद्दहरं पुण्डरीकं कुमुद-
मिवानेकधा विकसितं सुबालो. ४।१
हृदयस्य रेतो मनः १ ऐत. १।३।१
हृदयं कुण्डली भस्म रुद्राक्ष-
गणदर्शनम् मुक्तिको. १।३७
हृदयं न हि सत्यं जानाति हृदये
ह्येव सत्यं प्रतिष्ठितं भवति बृह. ३।९।२३
हृदयं निरभिद्यत २ ऐत. १।४
हृदयं निर्मलं कृत्वा चिन्तयित्वा-
ऽप्यनामयम् । अहमेव परं
सर्वमिति पश्येत्परं सुखम् पैङ्गलो. ४।९
हृदयं यूपः (यज्ञस्य) महाना. १८।१
हृदयं वै ब्रह्मेति बृह. ४।१।७
हृदयं ब्रह्मेत्याक्षणेयः १ ऐत. १।४।१

हृदयं विश्वमस्य मुण्ड. २।१।४
हृदयं वै सम्राट् परमं ब्रह्म नैनं॰
हृदयं जहाति बृ. उ. ४।१।७
हृदयं वै सम्राट् सर्वेषां भूताना-
मायतनम् बृह. ४।१।७
हृदयं वै सम्राट् सर्वेषांभूतानांप्रतिष्ठा बृह. ४।१।७
हृदयं ह्यष्टकपालानि निरुक्तो. २।१
हृदयाकाशे महोज्ज्वलाज्ञानरूपा भवति शांडि. १।४।५
हृदयात्सम्परित्यज्य सर्ववासन-
पङ्क्तयः । यस्तिष्ठति गतव्यग्रः
स मुक्तः परमेश्वरः महो. ६।८
हृदयात्सर्वमिदं जायते सुबालो. १।९
हृदयादायता तावच्चक्षुष्यस्मिन्
प्रतिष्ठिता । सारणी सा तयो-
र्नाडी द्वयोरेका द्विधा सती मैत्रा. ७।११
हृदयादिकण्ठपर्यन्तं सस्वनं
नासाभ्यां शनैः पवनमाकृष्य
यथाशक्तिः कुम्भयित्वा इडया
विरेच्य गच्छंस्तिष्ठन्कुर्यात् । तेन
श्लेष्महरं जठराग्निवर्धनं भवति शांडि. १।७।१४
हृदयादिव सृप्तो हृदयादिव निर्मित
इति हृदये ह्येव रेतः प्रतिष्ठितं
भवति बृह. ३।९।२२
हृदयाद्धृदयं मृत्योः चित्यु. १५।२
हृदयानि व्यदारयत् भ. गी. १।१९
हृदयान्मनः (निरभिद्यत) २ ऐत. १।४
हृदयाम्बुरुहासीनं ध्यायेद्वा
विष्णुरूपिणम् त्रि. ब्रा. १५३
हृदयेन हि रूपाणि जानाति बृह. ३।९।२०
हृदयेन हि श्रद्धां जानाति हृदये
ह्येव श्रद्धा प्रतिष्ठिता भवति बृह. ३।९।२१
हृदयेनात्तसर्वेहो मुक्त एवोत्तमाशयः मुक्तिको. २।१९
हृदये व्यज्यते घोषो गर्जत्पर्जन्य-
सन्निभः । तत्र स्थिता सुरेशान
मध्यमेत्यभिधीयते यो. शि. ३।४
हृदये ह्येव रूपाणि प्रतिष्ठितानि
भवन्ति बृह. ३।९।२०
हृदये ह्येव रेतः प्रतिष्ठितम् बृह. ३।९।२२
९०

हृदये ह्येव श्रद्धा प्रतिष्ठिता भवति बृह. ३।९।२१
हृदये ह्येव सत्यं प्रतिष्ठितं भवति बृह. ३।९।२३
हृदये ह्येव सम्राट् सर्वाणि भूतानि
प्रतिष्ठितानि भवन्ति बृह. ४।१।७
हृदयोर्ध्वभागे चित्तसंयमात्
महर्लोकज्ञानम् शांडि. १।७।५२
हृदाकाशे चिदादित्यः सदा भासति
भासति । नास्तमेति न चोदेति
कथं सन्ध्यामुपास्महे मैत्रे. २।१४
हृदा पश्यन्ति मनसा मनीषिणः चित्यु. ११।११
हृदा मनीषा मनसाऽभिक्लृप्ता ये तां
विदुरमृतास्ते भवन्ति गुह्यका. ६०
हृदा मनीषा मनसाऽभिक्लृप्तां य एनां
विदुरमृतास्ते भवन्ति गुह्यका. ६३
हृदा मनीषी मनसाऽभिक्लृप्तो य
(एवं एनं-विदुः) एतद्विदु-
रमृतास्ते भवन्ति [कठो.६।९+ श्वेताश्व. ४।१३
+४।१७+ म. ना. १।११+ त्रि. म.ना. ६।४
हृदासन-नाभि-कण्ठ-सर्वाङ्गानि
स्थानानि पैङ्गलो. २।३
हृदा हृदिस्थं मनसा य एनमेवं
विदुरमृतास्ते भवन्ति श्वेताश्व. ४।२०
हृदि चित्तस्य संयमात्स्वर्लोकज्ञानम् शांडि. १।७।५२
हृदि दक्षिणाग्निः (शारीरयज्ञस्य) गर्भो. ११
हृदि प्रतीष्या कवयो मनीषेति
उपैन... [बृ. जा. १।२+ नृ. पू. १।१
हृदिस्था देवताः सर्वा हृदि प्राणाः
प्रतिष्ठिताः । हृदि प्राणः स्थितो
नित्यमपानो गुदमण्डले यो. चू. २१
हृदिस्था देवताः सर्वा हृदि प्राणे
प्रतिष्ठिताः । हृदयं पुरुषोऽस्मि
त्वं तिस्रो मात्राः परश्च सः २ ब्रह्मो. ५४
हृदिस्था देवताः सर्वा हृदि
प्राणाः प्रतिष्ठिताः । हृदि
प्राणाश्च ज्योतिश्च त्रिवृत्सूत्रं
च तद्विदुरिति ब्रह्मो. ४
हृदि सर्वस्य धिष्ठितम् भ. गी. १३।१८

हृदिस्था देवताः सर्वा हृदि प्राणाः
प्रतिष्ठिताः । हृदि त्वमसि
यो नित्यं तिस्रो मात्राः परस्तु
सः [अ. शिरः. ३।४+ — बटुको. १८

हृदिस्थाने अष्टदलपद्मं वर्तते — ध्या. बिं. ६४

हृदि स्थाने स्थितं पद्मं तस्य
वक्त्रमधोमुखम् — १ यो. त. १३७

हृदिस्थाने स्थितं पद्मं तच्च पद्म-
मधोमुखम् । ऊर्ध्वनालमधो
बिन्दुस्तस्य मध्ये स्थितं मनः — २ योगत. ९

हृदि ह्येष आत्मा । अत्रैतदेकशतं
नाडीनां — प्रश्नो. ३।६

हृदीन्द्रियाणि मनसा सन्निरुध्य
ब्रह्मोडुपेन प्रतरेत विद्वान् — श्वेताश्व. २।८

हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति — भ. गी. १८।६१

हृद्द्वारं वायुद्वारं च मूर्ध्नि द्वारमथा-
परम् । मोक्षद्वारं बिलं चैव
सुषिरं मण्डलं विदुः — अ. ना. २७

हृद्यन्तःकरणं ज्ञेयं शिवस्यायतनं
परम् । हृत्पद्मं वेदिका तत्र
लिङ्गमोङ्कारमिष्यते — शिवो. १।२४

हृद्याकाशमयं कोशमानन्दं परमा-
लयम् । स्वं योगश्च ततोऽस्माकं
तेजश्चैवाग्निसूर्ययोः — मैत्रा. ६।२७

हृद्याकाशस्तेजोमयोऽमृतमयः
पुरुषोऽयमेव सः योऽयमात्मेद-
ममृतमिदं ब्रह्मेद१ सर्वम् — बृह. २।५।१०

हृद्याकाशे परे कोशे दिव्योऽय-
मात्मा स्वपिति । यत्र सुप्तो
न कञ्चन कामं कामयते
न कञ्चन स्वप्नं पश्यति — सुबालो. ४।४

हृद्यादित्यमरीचीनां पदं षण्णवतिः — पा. ब्र. ४

हृद्येव तिष्ठ कलनारहितः क्रियां तु
कुर्वन्नकर्तृपदमेत्य शमोदितश्रीः — अ. पू. ४।९१

हृद्रोगं मम सूर्य हरिमाणं च
नाशय [सूर्यता. २।१+ — ऋ.मं. १।५०।११

हृ इत्येकमक्षरमभिहरन्त्यस्मै
स्वाश्चान्ये च य एवं वेद — बृह. ५।३।१

हृषीकेशं तदा वाक्यं — भ. गी. १।२१

हृष्टरोमा धनञ्जयः — भ. गी. ११।१४

हृष्यामि च पुनः पुनः — भ. गी. १८।७७

हृष्यामि च मुहुर्मुहुः — भ. गी. १८।७६

हे कृष्ण हे यादव हे सखेति — भ. गी. ११।४१

हेतुद्वयं हि चित्तस्य वासना च
समीरणः । तयोर्विनष्ट एकस्मिं-
स्तद्द्वावपि विनश्यति — योगकुं. १।१

हेतुनाऽनेन कौन्तेय — भ. गी. ९।१०

हेतुमद्भिर्विनिश्चितैः — भ. गी. १३।५

हेतुर्न जायतेऽनादेः फलं चापि
स्वभावतः । आदिर्न विद्यते
यस्य तस्य ह्यादिर्न विद्यते — अ. शां. २३

हेतुस्तु सुखदुःखस्य योगो दृष्ट
श्चतुर्विधः — आयुर्वे. २

हेतुः प्रकृतिरुच्यते — भ. गी. १३।२१

हेतोरादिः फलं येषामादिर्हेतुः
फलस्य च । हेतोः फलस्य
चानादिः कथं तैरुपवर्ण्यते — अ. शां. १४

हेतोरादिः फलं येषामादिर्हेतुः
फलस्य च । तथा जन्म भवेत्तेषां
पुत्राज्जन्म पितुर्यथा — अ. शां. १५

हेतोः किं नु महीकृते — भ. गी. १।३५

हेमप्रख्यामिन्दुखण्डान्तमौलिं
शङ्खारिष्टाभीतिहस्तां त्रिने-
त्राम् । हेमाब्जस्थां पीतवस्त्रां
प्रसन्नां देवीं दुर्गां दिव्यरूपां
नमामि — वनदु. २

(अथ ह) हेममासन्यं प्राण-
मूचुस्त्वं न उद्गायेति, तथेति ।
तेभ्य एष प्राण उदगायत — बृह. १।३।७

हेमाभया द्विभुजया सर्वालङ्कृतया
चिता । श्लिष्टः कमलधारिण्या
पुष्टः कोसलजात्मजः — रा. पू. ४।९

हेरम्बतत्त्वे परमात्मसारे नो वै
योगान्नैव तपोबलेन । नैवायुध-
प्रभावतो महेशि दग्धं पुरा
त्रिपुरं दैवयोगात् — हेरम्बो. ३

हैरण्यो गोपवेषमभ्राभं
कल्पद्रुमाश्रितम् गो. पू. १।५
होता ऋग्भूय साममयमुद्गाता.. कौ. त. २।६
होता भोक्ता हविर्मन्त्रो यज्ञो विष्णुः
प्रजापतिः। सर्वः कश्चित्प्रभुः
साक्षी योऽमुष्मिन्भाति मण्डले मैत्रा. ६।१६
होतृषदनाद्धैवापि दुरुद्गीथ-
मनुसमाहरति छांदो. १।५।५
होत्रर्त्विजाऽग्निना वाचा, वाग्वै यज्ञस्य
होता, तद्येयं वाक्सोऽयमग्निः स
होता स मुक्तिः साऽतिमुक्तिः बृह. ३।१।३
होमशेषं तु निर्वृत्य पूर्णपात्रोदकं
तथा। पूर्णमसीति यजुषा
जलेनान्येन बृंहयेत् बृ. जा. ३।१७
ह्रस्वो दहति पापानि दीर्घः सम्पत्प्रदो
ऽव्ययः। अर्धमात्रा समायुक्तः
प्रणवो मोक्षदायकः ध्या. बिं. १७
(तस्य) ह्रादुनयो विस्फुलिङ्गाः
[छां. उ. ५।५।१× बृह. ६।२।१०
ह्रियते ह्यवशोऽपि सः भ. गी. ६।४४
ह्रिया देयम्। भिया देयम्।
संविदा देयम् तैत्ति. १।११।३
ह्रीर्नाम वेदलौकिकमार्गकुत्सित-
कर्मणि लज्जा शांडि. १।२।१
(श्री-) ह्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यौ।
अहोरात्रे पार्श्वे। नक्षत्राणि
रूपम्। अश्विनौ व्यात्तम त्रिसु. १३।२
[+वा. सं. ३१।२२+ तै. आ. ३।१३।२
ह्रीं आनो दिवो बृहतः पर्वतादा
सरस्वती यजतागन्तु यज्ञम् सरस्व. ८
ह्रीं पद्मावत्यन्नपूर्णे माहेश्वरी स्वाहा त्रि. म. ना. ७।९
ह्रौं (ह्सौं) हयग्रीवाय नमो
ह्रौं (ह्सौम्) त्रि. म. ना. ७।९
ह्वयामि वां ब्रह्मणा तूर्तमेतम् त्रिसु. १४।२

अयं कोश आमोददैः पूर्णगात्रो मनोहारिसिद्धान्तवाक्यैः श्रुतीनाम्।
ददात्वात्मतोषं विपश्चिद्वरेभ्यो यथा हेमकुम्भोऽमरेभ्योऽमृतासः॥

इत्युपनिषद्वाक्यमहाकोशस्योत्तरार्धः समाप्तः।

*परिशिष्टम् ।

—:०:—

ॐ

ॐकार ज्वलद्रूपं मन्मस्तकम् — २ तारो. १
ॐ क्रतो स्मर कृतं स्मर — ईशा. १७
ॐ खं ब्रह्म खं पुराणं वायुरं खमिति — बृह. ५।१।१
ॐ चत्वारिंशत्संस्कारसम्पन्नः सर्वतो विरक्तः...साधन-चतुष्टयसम्पन्न एव सन्न्यस्तुमर्हति — १ सं. सो. २।१
ॐ जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तितुरीय-तुरीयातीतोऽन्तर्यामी — गोपालो. ३।१८
ॐ जानश्रुतिर्ह पौत्रायणः श्रद्धा-देयो बहुदायी बहुपाक्य आस — छांदो. ४।१।१
ॐ तत्सद्ब्रह्मतद्रूपं प्रकृतिपरं गगनाभं — २ तारो. १
ॐ तत्सद्भूर्भुवः सुवस्तस्मै प्राणात्मने नमो नमः — गोपालो. ३।२
ॐ वयः सुपर्णा उपसेदुरिन्द्रं प्रिय-मेधा ऋषयो नाधमानाः — म. ना. १६।७
[चाक्षुषो. ५+ ऋ. मं. — १०।७३।११
[+ साम.१।३।१९+ — तै.आ. ४।४२।३
ॐ देवा ह वै सत्यं लोकमायन् — नृ. षट्च. १
ॐ नमो विश्वरूपाय विश्व-स्थित्यन्तहेतवे — गो. पू. ४।४
ॐ नमोऽस्तु शर्व शम्भो त्रिनेत्र चारुगात्र — २ शिवो. १
ॐ नित्यं शुद्धं बुद्धं निर्विकल्पं निराख्यातमनादिनिधनमेकं ...सर्वदाऽनवच्छिन्नं परं ब्रह्म — यो. चू. ७२
ॐ नृसिंहाय विद्महे वज्रनखाय धीमहि । तन्नः सिंहः प्रचोदयात् — नृ. पू. ४।३
ॐ परोरजसे सावदोम् — त्रि.म.ना. ७।११
ॐ पृथिवी वाग्नमापोऽन्नादाः — सुबालो. १४।१
ॐ भूमिरन्तरिक्षं द्यौरित्यष्टा-क्षराणि [बृ. ५।१४।१+ — गायत्र्यु. १
ॐ भूर्भुवः सुवरिति व्याहृतयः — २ प्रणवो. १८
ॐ योऽसाविन्द्रियात्मा गोपाल ॐ तत्सत् भूर्भुवः सुवस्तस्मै वै नमो नमः — गोपालो. ३।१३
ॐ योऽसावुत्तमपुरुषो गोपाल ॐ तत्सत् — गोपालो. ३।१५
ॐ योऽसौ प्रधानात्मा गोपाल ॐ तत्सत् — गोपालो. ३।१२
ॐ योऽसौ ब्रह्म परं वै ब्रह्म ॐ तत्सत् — गोपालो. ३।१६
ॐ योऽसौ भूतात्मा गोपाल ॐ तत्सत् — गोपालो. ३।१४
ॐ योऽसौ सर्वभूतात्मा गोपाल ॐ तत्सत् — गोपालो. ३।१७
ॐ यो ह वै श्रीवेङ्कटेश्वरो देवो भगवा-न्भूर्भुवः सुवस्तस्मै वै नमो नमः — व्यङ्कटेशो. ३
ॐ यो ह वै श्रीवेङ्कटेश्वरो देवो भगवान्यश्च ब्रह्मा तस्मै वै नमो नमः — व्यङ्कटेशो. ३
ॅ वृषादर्विकुलॅ ह वै शिविकुलं बभूव — इतिहा. १
ॐ श्रीगुरुः सर्वकारणभूता शक्तिः — भावनो. २

---

* पश्चादुपलभ्यमानान्युपनिषदां वाक्यानि पूर्वापरोत्तरार्धयोश्चानवधानतया गलितानि वाक्यान्यस्मिन्परिशिष्टे सन्निवेशिता-नीति विदाङ्कुर्वन्तु विपश्चितः ।

अकार उकारमध्ये ब्रह्म परिपूर्णं अद्वैतो. ५
अग्रावाज्यस्य हुत्वा मन्थे सम्पातमवनयेत् छांदो. ५।२।४
अग्राह्यः सर्वभूतेषु सर्वेन्द्रिय-गुणातिगः २ रुद्रो. ४५
अग्र्यश्च धाम्नां त्वमेव ऋग्भिः सुभाण्ड इज्योऽसि विष्णू. ५
अज त्वन्नाभौ जगदेतद्विचित्रं मध्ये-ऽर्पितं यस्मिन्विश्वं भुवनं च त्वमेव २ रुद्रो. ७
अजस्त्वेको जुषमाणोऽनुशेते जहा-त्येनां भुक्तभोगामजस्त्वम् २ रुद्रो. ४७
अजां मायां लोहितशुक्लकृष्णां बह्वीःप्रजाःजनयन्तीं सरूपाम् २ रुद्रो. ४७
अजो नित्यः शाश्वतश्च निर्गुणो निष्कलस्तथा ना. म. १२
अणोरणीयान्महतो महीयानात्मा गुहायां निहितोऽस्य जन्तोः वे. सारो. २४
अतिरात्राग्निहोत्रभस्मनाग्नेर्भसित-मिदं...प्रणवेनोद्धूलनं कुर्यात् वासु. १६
अत्याश्रमस्थाः परिमुच्यन्ति धीरा-स्तेषां सुखं शाश्वतं नेतरेषाम् वे. सारो. ३
अत्याश्रमस्थो हि हिरण्यगर्भः वे. सारो. ५
अथ परमात्मा नाम यथाक्षर-मुपासनीयः आत्मोप. ७
अथ येनैताः शिरा अनुव्याप्ता एष वाव स व्यानः मैत्रा. २।७
अथान्तरात्मा नाम पृथिव्याप... कर्मविशेषणं करोति आत्मोप. २
अद्वैतं कथितं येन पुरुषोऽमूढो भवति अद्वैतो. ५
अन्यत्तपन्तु हेतयो घोररूपा भक्तेषु त्वं शिवो भव शत्रूनस्माकं जहि.. २ रुद्रो. ६९
अदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् [प्रवर्ग्यो. २४+ वा. सं. ३६।२४
अयमग्निर्वैश्वानरो योऽयमन्तः पुरुषः वे. पू. ३।७
अयमेव परा काष्ठा स ब्रह्म स शिवः स्वयम् २ देव्यु. ३५
अयं वाव खल्वस्य प्रतिनिधिः वे. पू. ४।८
अरजोऽयममृतो वै विशोकः २ देव्यु. २७
अवधूतानां परमहंसानां शीतोष्ण-सुखदुःखमानावमानसहनं बहु-जन्मान्तरेषु योगसिद्धानाम् भक्तियो. १
अवस्थातीतः पर आत्मा त्वमेव २ रुद्रो. ६६
अव्यक्तैकाक्षरं पूर्णा सूर्याख्य-ध्यात्मकुण्डिका मुक्तिको. १।२६
अस्मिन्मूर्तिश्चतुर्थी या साऽसृज-च्छेषमव्ययम् । स हि सङ्कर्षणः प्रोक्तः... अनिरुद्धात्तथा ब्रह्मा तन्नाभिकमलोद्भवः । ब्रह्मणः सर्वभूतानि चराणि स्थावराणि च ना. म. ६०
अहमेव वात इव प्रवाम्यारभमाणा भुवनानि विश्वा [२देव्यु.६+ऋ.मं. १०।१२५।८
अहमेव स्वयमिदं वदामि ज्ञानमैश्वरम् (देवी) २ देव्यु. ५
अहमेवाखिलाराध्या ह्यहं ध्येयाऽखिलैरपि (देवी) २ देव्यु. ३
अहं दधामि द्रविणं हविष्मते (सुप्राव्ये) सुवीर्याय सुन्वते [२ देव्यु. ७+ऋ. मं. १०।१२५।२
अहं विश्वं भुवनं चेतयामि २ देव्यु. ६
अहं विश्वेभि(रुद्रेभि-)र्वसुभि-श्चराम्यह-मादित्यैरुत विश्वदेवैः[२देव्यु.६+ऋ.मं. १०।१२५।१
अहं सर्वत्रगो ब्रह्मन् भूत-ग्रामान्तरात्मकः ना. म. ३७
अहं हयशिरा भूत्वा समुद्रे पश्चि-मोत्तरे । पिबामि सुहुतं हव्यं कव्यं च श्रद्धयाऽन्वितम् ना. म. ४९
अहं हि जीवसंज्ञातो मयि जीवः समाहितः ना. म. ३६
अहं हि पुरुषो ज्ञेयो निष्क्रियः पञ्चविंशकः । निर्गुणो निष्कल-श्चैव निर्द्वन्द्वो निष्परिग्रहः ना. म. ३२
अहानि शं भवतु नः शꣳ रात्रीः प्रतिधीयताम् [प्रवर्ग्यो. ११ वा. सं. ३६।११
आपो वा इदमासन् सलिलमेव वेङ्कटो. १
आपो हि ष्ठा मयोभुवः... [वा. सं. ३६।१४+ प्रवर्ग्यो. १४ ऋ. मं. १०।९।१

आर्जवं नाम मनोवाक्कायकर्मणां विहिताविहितेषु जनेषु... एकरूपत्वम् शांडि. १।१।३
आवहन्ती वितन्वाना कुर्वाणा चीरमात्मनः । वासांसि मम गावश्चान्नपाने च सर्वदा । तै.आ. ७।४।१
ततो मे श्रियमावह वे. सारो. ३१
आश्रमेष्वेवावस्थितस्तपस्वी मुच्यते वें. पू. ४।८
आह्लादिनी गरीयसीयमन्तरे भूत्वा राधा कृष्णेनाराधिता राधाकृष्णमाराधयत् राधिको. ४
इदं सार्वकामिकं मोक्षद्वारं यद्योगिन उपदिशन्ति वेङ्कटो. ३
इन्द्रो विश्वस्य राजति [प्रवर्ग्या. ८+ वा. सं. ३६।८
ईशानो भगवो भगवान् रुद्रो महादेवस्त्वमीश्वरः । परंब्रह्म परं धाम परः पारः परायणः २ रुद्रो. ५६
उभयात्मको विराट् प्रणवः ना. प. ८।१
उत्पन्न एव भवति शरीरं चेष्टयन् प्रभुः ना. म. २४
ऋचं वाचं प्रपद्ये [प्रवर्ग्या. १+ वा. सं. ३६।१
ऋचो अक्षरे परमे व्योमन् यस्मिन्देवा अधि विश्वे निषेदुः । यस्तं न वेद किमृचा करिष्यति.. वेङ्कटो. ३
ऋतं सत्यं नामरूपातिगत्वं २ रुद्रो. ६७
एकमेवाद्वितीयं यद्गुरोर्वाक्येन निश्चितम् । एतदेकान्तमित्युक्तं न मठो न वनान्तरम् मैत्रे. २।१५
एको रुद्रस्त्वं हि सर्वस्य कर्ता.. २ रुद्रो. ५१
एतत्खलु वाव सर्ववरिष्ठः श्रूयते उत्तमपुरुषः वें. पू. ३।५
एतत्त्वया न विज्ञेयं रूपवानिति दृश्यते । इच्छन्मुहूर्तान्मर्त्येय-मीशोऽहं जगतो गुरुः ना. म. ३४
एतदमृतमभयमेतत्परायणमेतद्ब्रह्मेति वें. पू. ३।२
एतद्रूपेवाक्षरं ब्रह्म वे. सारो. १९
एतद्विराटकं वपुः मङ्गलं सत्त्वं बिन्दुस्वरूपं महाकारस्वरूपं ज्योतिर्मयं विद्धि २ तारो. १
एनमात्मानं गूढमनुप्रविष्टं २ देव्यु. ८
एवं विदित्वा परमात्मलिङ्गमस्या-श्रमस्थाः परिमुच्यन्ति सर्वे वे. सारो. ४१
एवं स्थित्वा संसृतौ वर्तमानः संसारीव सुखदुःखादिभोक्ता । उन्मत्तमूकबधिरान्धवत्सदा विभाव्यमानो मूढधीभिर्विमुक्तः निर्लेपो. १३
एष आत्मा तपसाऽऽलोक-नीयो नान्यैर्धर्मैः.. २ देव्यु. १९
एष आत्माऽपहत पाप्मा विरजो विशोको विमृत्युरजिघृत्सो-ऽपिपासः २ देव्यु. २९
एष आदित्ये तपति तेजसेद्धः २ देव्यु. २८
एष एव हि भूतात्मा भूते भूते व्यवस्थितः २ देव्यु. १२
एष धाता विधाता च स्वराट् सम्राट् प्रजापतिः २ देव्यु. १०
एष दिव्यो देव एकः पुराणः २ देव्यु. ११
एष देवः शीर्यमाणैर्न शीर्णः २ देव्यु. २६
एष देवैर्वेदसङ्घैश्च विप्रैरभिष्टुतो-ऽप्रतर्क्यो ह्यतीन्द्रियैश्च २ देव्यु. २७
एष ब्रह्मैष एवेन्द्र एष सर्वं चराचरम् २ देव्यु. २५
एष भूतपतिरेव सेतुर्विधरणो... २ देव्यु. ९
एष सुप्तेषु जागर्ति भूतंभूतं.. २ देव्यु. ९
एषोऽनन्तश्चेष्टते देहजालैर्यथो-र्णनाभिः सृजते तन्तुजालम्.. २ देव्यु. २८
एषोऽनन्तो महिमाधार ईशो भूमा.. २ देव्यु. २४
एषोऽन्तरादित्ये ह्यमृतो दृश्यते हिरण्मयः पुरुषः शिवः २ देव्यु. १०
एषोऽन्तर्याम्यमृतः पुराणः सदा जनानां हृदये सन्निविष्टः २ देव्यु. ८
एषोऽशरीरो विश्वकर्ता गुणेशः २ देव्यु. २६
एषो हि देवः प्रदिशो नु सर्वाः पूर्वो हि जातः स उ गर्भे अन्तः । स एव जातः स जनिष्यमाणः प्रत्य-ङ्मुखस्तिष्ठति विश्वतोमुखः श्रुतिर. ४.
ओङ्कारः प्रणवो व्यापी ह्यनन्तो-ऽनन्तविक्रमः । तारं सूक्ष्मं वैद्युतस्त्वं शुक्लं सर्वशरीरगम् २ रुद्रो. ९५

लोकाध्यक्षत्वमेव च ॥ अहङ्कार-
कृतं चैव नाम पर्यायवाचकम् — ना.म. ४९–५१
महाग्रासस्त्वमेवेश मृत्युस्त्वदुपसेचनः — २ रुद्रो. ५२
मायां चाहं ह्येष मायी महेशः — २ देव्यु. १८
मायावी परमानन्दस्त्यक्त्वा
वैकुण्ठमुत्तमम् । स्वामि-
पुष्करिणीतीरे रमया सह मोदते — वें. पू. ५।२
माया ह्येषा मया सृष्टा यन्मां
पश्यसि नारद — ना. म. ३४
मायां तु प्रकृतिं विद्यान्मायिनं
तु महेश्वरम् — २ रुद्रो. ४८
मां प्रविश्य भवन्तीह मुक्ता
भक्तास्तु ये मम — ना. म. ३२
मोक्षोऽसि योगोऽसि सृजसि धाता
परमयज्ञोऽसि — विष्णू. ६
य इमं विश्वं भुवनं यासि जुह्वदृषिः.. — २ रुद्रो. ७०
य एनं विदुरमृतास्ते भवन्ति
अथेतरे दुःखमेवाविशन्ति — २ देव्यु. ३५
य एष एतस्मिन्मण्डले पुरुषो यश्चायं
दक्षिणेऽक्षन्पुरुषस्तावेतावन्यो-
न्यस्मिन्प्रतिष्ठितौ — बृह. ५।५।२
य एष सम्प्रसादोऽस्माच्छरीरात्समुत्थाय
परं ज्योतिरुपसम्पद्य स्वेन
रूपेणाभिनिष्पद्यत एष आत्मा — वें. पू. ३।३
य एषोऽव्यवष्टम्भेनेत्यूर्ध्वमुत्क्रान्तो
व्ययमानो व्ययनप्रीतस्तस्य तमः
प्रणुदत्येष आत्मा — वें. पू. ३।२
यतो वाचो निवर्तन्ते... आनन्दं
प्राप्नुवन्त्येते पुनरावृत्तिवर्जितम् — वे. सारो. ७
यथा बिम्बाद्विद्योद्भूतं बिम्बं तद्ना-
रायणाद्वेङ्कटेशः — वें. पू. ५।२
यथा लोहपिण्डस्त्वग्निसम्पर्काल्लोहमयो
लोहगतप्रहारादीननुभवतीति
तद्वदेवेन्द्रियभूतगुणैरयं
पुरुषोऽभिभूयत इव — वें. पू. ४।३
यदा चर्मवदाकाशं वेष्टयिष्यन्ति
मानवाः । एकदैवमकरश च... — वे. सारो. ४२
यदा तमस्तन्न दिवा न रात्रिर्न सन्न
चासच्छिव एव केवलः । तदक्षरं
तत्सवितुर्वरेण्यं प्रज्ञा च
तस्मात्प्रसृता पुराणी — श्रुतिर. २
यदा पश्यन्ति मनसा मनीषिणो ये
ब्रह्म मन्वान उपासते त्वाम् — २ रुद्रो. ७७
यदेतत्कर्णौ च पिधाय शृणोति च,
यदाक्रमिष्यन् भवति नैनं
घोषं तं शृणोति — वें. पू. ३।८
यद्भूतजालं निखिलं वै विसृष्टमेता-
दृशं त्वां न विदन्ति केचित्... — २ रुद्रो. ७४
यन्नारायणताराार्थसत्यज्ञानसुखा-
कृति । त्रिपान्नारायणाकारं
तद्ब्रह्मैवास्मि केवलम् — तारसा. शीर्षकं
यश्छन्दसामृषभो विश्वरूपः...
स मेन्द्रो मेधया स्पृणोति ।
अमृतस्य देवधारिणो भूयासम् — वे. सारो. २८
यस्मात्परं नापरमस्ति किञ्चिद्यस्मा-
न्नाणीयो न ज्यायोऽस्ति कश्चित् ।
वृक्ष इव स्तब्धो दिवि तिष्ठत्येक-
स्तेनेदं पूर्णं पुरुषेण सर्वम् — श्रुतिर. ७
यस्य त्रिपुण्ड्रं लसते ललाटे तत्र
त्रिलोके लसते च सत्यम् — चिदम्बरो. ८
यो देवानां प्रथमं पुरस्ताद्विश्वाधिको
रुद्रो महर्षिः — वे. सारो. ५४
यो देवानां प्रथमश्चोद्भवश्च
विश्वाधिको देवो महर्षिः ।
हिरण्यगर्भं जनयामास पूर्वं — श्रुतिर. ५
योनौ रेतः सिञ्चति यदर्वाचीन-
मेनो भ्रूणहत्यायास्तस्मान्मुच्यते — सहवै. १२
यो ह खलु वा वाशितामात्रः
प्रतिपुरुषं क्षेत्रज्ञः सङ्कल्पाध्यव-
सायाभिमानलिङ्गः प्रजापति-
र्विश्वोऽक्षरस्तेन चेतनेनेदं शरीरं
चेतनवत्प्रतिष्ठापितम् — वें. पू. ३।५
यो ह खलु वाव अशरीर इत्युक्तः
स भूतात्मा — वें. पू. ४।१
यो ह वै भगवानात्मा यथाऽन्तर्बहि-
र्व्याप्तः प्रसिद्धस्तथा स्वं रूपं
परमं द्वेधा चकार — वें. पू. ५।२

लीलामूर्ते रुद्रसंज्ञस्य शम्भोरक्ष्युत्पन्नो
बीजकोशो पुराणः । रुद्राक्षाख्यः
सर्वदेवर्षिजुष्टो यस्मिञ्जुष्टे
सर्वसंसारमुक्तिः चिदम्बरो. ७

लिङ्गं सत्यं निष्कलं ब्रह्मरूपं धार्यं
पूज्यं हृदये ज्योतिराद्यम् ।
सत्तामात्रं वाङ्मनोतीतमेतत्
पञ्चात्मकं भासते येन मुक्तः निर्लेपो. ३

विमुक्तो विशुद्धाद्वैतभावमाश्रित्य
न द्रष्टा नाद्रष्टा न श्रोता
नाश्रोता न वक्ता नावक्ता न
कर्ता नाकर्ता नाभिमानो
नानावमानः सोऽवधूतः भक्तियो. १

विश्वभूत विश्वं त्वमेव विश्वगोप्ताऽसि
पवित्रमसि विष्णू. ८

वेदा मद्वस्ताश्चन्द्रार्कानला मन्नेत्राः २ तारो. १

वेदपर्वतजालोत्थमन्त्रैः
कूर्मोऽयमेव हि २देव्यु. ३७

वेदशास्त्रपुराणानि पर्यवस्यन्ति
शङ्करे । तावत्तेषां समभ्यासो
यावत्तद्भक्तिसम्भवः चिदम्बरो. ११

वेदान्तसारसर्वस्वं यो जानाति स
ईश्वरः वे. सारो. ५९

व्यष्टिस्वरूपः प्रणवस्तदेतत्संसेवमानो
न पुनर्भवे स्यात् चिदम्बरो. ९

शकटमिवाचेतनमिदं शरीरं वैं. पू. ३।४

शब्दस्पर्शादयो ह्यर्था अनर्था इव ते.. वैं. पू. ४।६

शम्भुः साक्षाद्द्वयात्मा स एव
रहस्यमेतन्न विदन्ति लोकाः चिदम्बरो. १०

शरीरमिदं मैथुनादेवोद्भूतं... वैं. पू. ४।४

शरीरमेनत्कूटव छिदित्वा चिदम्बरं
नियमीशं विदित्वा । मृत्युं तीर्त्वा
सर्वपापं विहृत्य शिवे परब्रह्मणि
यो...तेजः चिदम्बरो. १२

शरीरं मे विचर्षणं जिह्वा मे मधु-
मत्तमा । कर्णाभ्यां भूरि विश्रुवम् वे. सारो. २९

शं न इन्द्रा पूषणा वाजसातौ
शमिन्द्रा सोमा सुविताय शं योः
[प्रवर्ग्या. ११+ वा. सं.३६।११ ऋ. मं.

शं नः कनिक्रदद्देवः पर्जन्यो प्रवर्ग्या. १०

शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयंनः पशुभ्यः प्रवर्ग्या. १२

शाश्वतश्च स्थिर ईशः स्वतन्त्रः
स्वमहिम्नि तिष्ठत्यनेनेदं शरीरं
चेतनवत्प्रतिष्ठापितम् वैं. पू. ३।५

शांतिरेव शांतिः सा मा शांतिरेधि प्रवर्ग्या. १७

शिवद्रोही शिवभक्तैर्विनिन्द्यः शिव-
प्रसादे च पराङ्मुखेन । दात्रोरस्त-
स्मिन्मद्मात्सर्यं एताभियुञ्जीत
भगवान्नीलकण्ठः निर्लेपो. १२

शिवध्याने शिवपूजाप्रसङ्गे
रुद्राक्षाणां धारणे भस्म धार्यम् निर्लेपो. ११

शिवः प्राणः शिवभक्तस्य सेवा
शिवप्रसङ्गे मतिरस्य सर्वदा ।
शिवप्रसादस्य धृतिर्निरन्तरं
शिवादन्यद्देवविचिन्तनं न भक्तियो. २

शिवे भक्तिर्जायते पुण्यलेशाद्भक्ति-
मूलं सर्वसंसारमुक्तेः चिदम्बरो. ५

शिवो हि कर्ता जगतामनादिर्नं
जानते यं श्रुतयोऽपि सम्यक् चिदम्बरो. २

स एव काले भुवनस्य मध्ये विश्वस्य
स्रष्टारमनेकरूपम् । विश्वस्यैकं
परिवेष्टितारं ज्ञात्वा शिवं
शांतिमत्यन्तमेति श्रुतिर. १०

स एव दहराकाशमादित्यरूपः
शरीरमित्थं रथीकृत्य स्वयं
रथिको भूत्वैवमेव पिण्डब्रह्माण्ड-
रथरथिको बभूव वैं. पू. ३।१०

स एष पञ्चधात्मानं विभज्य निहितो
गुहायां मनोमयोऽशरीरो
भारूपः सत्यसङ्कल्प आत्मा
दिव्यशरीरः श्रीवेङ्कटेश इति वैं. पू. ३।८

स एष शुद्धः पूतः शान्तो प्राणो-
ऽनिशमात्मा नो ह्येयः वैं. पू. ३।९

स ओङ्कारो महादेवः स विष्णुः स
च तारकः । नातः परं जगन्नाति
यस्य भासा निरन्तरम् चिदम्बरो. ११

स जीवः परिसंख्यातः शेषः सङ्कर्षणः प्रभुः	ना. म. २५
सदानन्दं परमानन्दं...परमपदं वेङ्कटेशाख्यं वैष्णवं यद्गत्वा न निवर्तन्ते योगिनः	वेङ्कटो. ५
स प्रजापतिरेकः पुष्करपर्णे समभवद्भगवतोऽस्यान्तर्मनसि कामः समवर्तत इदं सृजेयमिति	वेङ्कटो. १
समग्रीवशिरःकायः संवृतास्यः सुनिश्चलः	वराहो. ५।३२
स यः सायं प्राश्नीयात्सोऽस्य सायं होमः	कठश्रु. २१
सर्वमोङ्कार एव [माण्डू. १+	नृ. पू.२।२+४।२
[+नृसिंहो. १।२+	रामो. २।१
सर्वाननशिरोग्रीवः सर्वभूतगुहाशयः	श्रुतिर. ८
स वा एष आत्मेहात्मनिवसितानि तैः कर्मफलैः परिभूयमान इव शरीरे वा विचरति	वैं. पू. ३।११
स वा एष शुद्धः स्थिरो चलसालेपोऽव्यग्रो प्रेक्षकवदवस्थितः	वैं. पू. ३।१२
स वा एषोऽभिभूतः परकृतैर्गुणैरित्यंशाभिभूतत्वात्सम्मूढः प्रयातः सम्मूढत्वाद्वात्मानं प्रभुं भगवन्तं कारयितारं नापश्यत्	वैं. पू. ४।२
स वा एषोऽस्य हृदन्तरे तिष्ठन्नकृतार्थो मन्यते	वैं. पू. ३।९
स वा योऽयं हृद्यन्तःपुरुषो भगवान् वेङ्कटेशः रीयो वासुदेवात्मा	वैं. पू. ३।१०
स विश्वकृद्विश्वविदात्मयोनिर्यः..	निर्लेपो. १२
स सोमः स सत्यं स विष्णुः स रुद्रः स देवः स सर्वम्	वेङ्कटो. ५
सहस्रबाहो सहस्रमूर्ते सहस्रास्य सहस्रसम्भव विश्वं त्वामाहुः	विष्णू. १
सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः...	श्रुतिर. ९
सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु	प्रवर्ग्या. २३
सोऽहं ममेदमित्येवं मन्यमानो निबद्धो ह्यात्मनाऽऽत्मानं जानन्नेव खचरः कृतस्वानुचरैः पञ्चैरभिभूयमानः परिभ्रमति	वैं. पू. ४।२
स्वधर्म एव सर्वं धत्ते	वैं. पू. ४।८
स्थविर हिरण्यगर्भ नारायण... स्वयम्भूर्भूतादिर्महाभूतोऽसि	विष्णू. ७

इति परिशिष्टं समाप्तम् ।